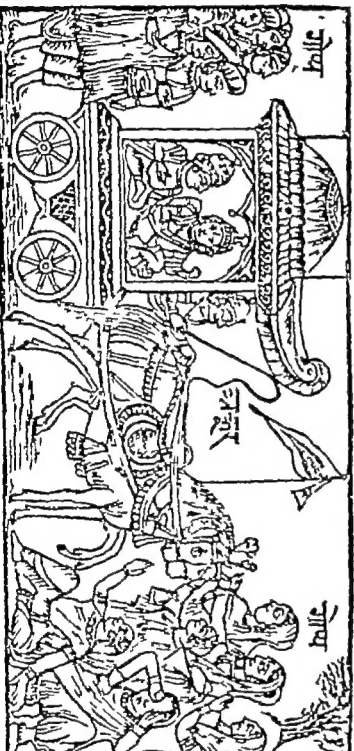




दशमस्कन्ध पुराणे







श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ दशमस्कन्धप्रारम्भः (तत्रनुप्रथमेकसः स्वप्नच्युदेवकीमुतात् ॥ श्रुत्वाभीतोऽवधीतस्याः पद्मगर्भानितिवर्णयते ? तहां पहिलै आख्यायमें कंस देवभी के पुत्रसे अपनी मृत्यु सुनकर डरकर तिसके छः बालकोंको मारता भयाहै यह वर्णनहै ? ) श्रीराजा परीक्षित शुकदेवजी से प्रश्न करते हैं कि हे महाराज ! आपने पूर्व्व नवमस्कन्धमें चन्द्रवंश और सूर्यवंश विस्तारपूर्व्वक कथो और दोनों वंशके राजानको आश्चर्य्य चरित्रकथो ? हे मुनिनर्म श्रेष्ठ ! धर्मशील महाराज यदुके वंशमें परिपूर्ण रूपते अवतार लेकर श्री कृष्णचन्द्र महाराज ने जो लीला चरित्रकरे सो हमारे सम्मुख वर्णन कीजिये सम्पूर्ण प्राणिके रक्षा करनेवारे भगवान् ने यदुवंशमें अवतार लेकर जो २ लीलाकरी तिनको हमारे आगे विस्तार पूर्व्वक कथन कीजिये २। ३ संसारमें तीन प्रकारके मनुष्यहैं एक तो ज्ञानी द्वितीय मुमुक्षु तृतीय विषयी इन तीनों प्रकारके मनुष्यनको उत्तमश्लोक भगवान् के चरित्र प्रियहैं ज्ञानीनको परमेश्वरके चरित्र

नमोभगवतेवासुदेवाय ॥ राजोवाच ॥ कथितोवंशविस्तारो भवतासोमसूर्ययोः ॥ राज्ञोचोभयवंश्यानां चरितंपरमाद्भुतम् १ यदोश्चधर्मशीलस्य नि तरांमुनिसत्तम ॥ तत्राशेनावतीर्णस्य विष्णोर्वीर्याणिशंसनः २ अवतीर्य्यदोर्वंशे भगवान्भूतमावनः ॥ कृतवान्प्रयानिविश्वात्मा तानिनोवदविस्तरा त् ३ निवृत्ततैर्परुषर्गीयमानाद्भवौपधाब्धोत्रमनोऽभिरामात् ॥ कउत्तमश्लोकगुणानुवादात्पुमान्विरज्येतविनापशुधनात् ४ पितामहामेसमेऽमरञ्जयैदेव व्रताद्यातिरथैस्तिमिद्भिलैः ॥ दुरत्ययंकौरवसैन्यसागरं कृत्वातरन्वत्सपदंस्मयत्क्षवाः ५ द्रौण्यस्तबिलुष्टमिदंमदङ्गं सन्तानवीजंकुरुपाण्डवानाम् ॥ जुगोप कुक्षिज्ञतआतचक्रो मातुश्चमेयःशरणंगतायाः ६ वीर्याणितस्याखिलदेहभाजामन्तर्वह्निःपुरुषकालरूपैः ॥ प्रयच्छतोमृत्युमुतामृतंच मायामनुष्यस्यवद स्वविद्वन् ७ रोहिण्यास्तनयःभोक्तो रामःसङ्कर्षणस्त्वया ॥ देवकयागर्भसम्बन्धःकुतोदेहान्तरंविना न कस्मान्मुकुन्दोभगवान् पितुर्गेहाद्ब्रजंगतः ॥ क्व दासंज्ञातिभिःसार्धं कृतवान्सत्तावतांपतिः ८ व्रजेयसन्तिकमकरोन्मधुर्यांचकेशवः ॥ भ्रातरंचावधीत्कंसं मातुरद्धातदर्हणम् १० देहमानुपभाशित्य कतिव श्रवण करनेसे संसारभी वासना दूरहुई और मोक्षकी इच्छाहै जिनको ऐसे नारद उद्धवादिभक्त को संसाररूपी रोग के दूर करनेको औपय है और विषयों में चित्त है जिनको ऐसे मनुष्यनके चित्तको और काननको आनन्दके देनवारे हैं ऐसी आत्मवाती कौन सों मनुष्यहैं जो परमेश्वर के गुणानुवाद सुनकर उपरामको प्राप्तहोय ४ संग्राम विषे देयतानको पराजय करनवारे भीजसदृश श्राद्धान करि अतिदुस्तर कौरवन की सेनारूपी सागर ताको भरे पितामह युधिष्ठिरादिक जैसे बछराके खुर के जलको मनुष्य उल्लंघन करिजाय है तैसे श्रीकृष्णरूपी नौका को आश्रय करिके पार उत्तरिगये ५ कौरव और पाण्डवन की सन्तान को वीजरूपजो मेरो अङ्ग सो अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र के तेज से दग्ध देखकर मेरीमाता उत्तरा अति भू को प्राप्त होकर श्रीकृष्णकी शरण प्राप्तहुई तासमय श्रीकृष्ण चक्र ग्रहणकर मेरी माताकी कुक्षि में प्रविष्ट होकर रक्षा करतभये ६ हे विद्वन् ! सम्पूर्ण प्राणिको पुरुष कालरूप संसार मोक्षके देनवारे अतिकृपाकरिके मनुष्यरूप धारण क्रियेजो श्री कृष्णचन्द्र तिनकी लीला हमारे आगे कथो ७ और राम संकर्षण रुपने नवमस्कन्ध में रोहिणी के पुत्र कहे फिरि तिनको देवकी के पुत्र कहे इसमें सन्देह होतहै कि एक देहते दो उनके पुत्र कैसे

भये ८ अपने पिता बहुदेव के घर से मुक्ति के दिन वारे भगवान् व्रज में व्योमये और भक्तन के रत्न न भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपनी हातिके मनुष्यन को संगले कर कहा वसे ९ व्रज में वसिने भगवान् कहा करत भये और पदुरा में वसिके कहा करत भये और माता के आता दंसको सम्मुख ठाढ़े होकर अपने हाथ से कैसे मारन को योग्य होत भये १० हे प्रभो ! मनुष्य देह धारण करिके श्रीकृष्ण चन्द्र यादवन सहित मधुपुरी में कितने वर्ष पर्यन्त वसे और कितनी स्त्री भई भरे आगे कहे ११ जो प्रथम मैने वृको है सो और जो श्रीकृष्ण को चरित्र बूझिने में वाकी रहो है सो सब श्रद्धा वान् जो मै हों ताके आगे विस्तार ते कहो कहे से कि हे मुनि ! आप सम्पूर्ण के जानिबारे हो १२ तुम्हारे कमलरूपी मुख से निकसो जो हरिकी कथारूपी अमृत तिसको पान क्रिये हों या से जल पानादि त्याग करे हों परन्तु नहीं सहने के योग्य जो धुआँ है सो मोको बाधा नहीं करै है १३ सूतजी महाराज कहत हैं कि हे धृगुनन्दन शौनक ! या प्रकार व्यासपुत्र श्री बुद्धदेवजी महाराज राजा पीण्डिष्णिभिः ॥ यह पुर्यासहावासी तपन्यः कृत्य भवन् प्रभोः ११ एतदन्यच्च सर्वमे मुने कृष्ण विचेष्टितम् ॥ वक्तुमर्हसि सर्वज्ञ श्रद्धा नाना य विस्तनम् १२ नै पाऽतिदुःसहान् ममां त्यक्तो दमपि बाधते ॥ पिवन्तं तन्मुलाम् भोज्यन्तं हरिकथा श्रुतम् १३ सूत उवाच ॥ एतं निशम्य भृगुनन्दन साधुना दं वैयासकिः स भगवान् नथ विष्णुरातम् ॥ प्रत्यर्च्य कृष्ण चरितं कलि कल्मषघ्नं व्याहृतुं भारभत भागवत प्रधानः १४ श्रीशुक उवाच ॥ सम्यग्यवसिता बुद्धिस्तव राजर्षि सत्तम ॥ वासुदेव कथायान्ते यज्जातानैष्ठिकीमतिः १५ वासुदेव कथाप्रश्नः पुरुषास्त्रीन्पुनः तिहि ॥ वक्तां पृच्छकं श्रोतुं तत्पदादसंलियथा १६ भूमिर्हस्तनुपव्या जदैत्यानीकशतायुतैः ॥ आक्रान्ताभूरिभारेण ब्रह्माणंशरण्ययौ १७ गौर्भूत्वाऽश्रुमुखी खिन्ना क्रन्दन्ती करुणं विभोः ॥ उपस्थितान्तिकेतसमै व्यसनं स्वमवोचत १८ ब्रह्मा तदुपधार्यथ सहदैवस्तया सह ॥ जगाम स त्रिनयनस्तीक्ष्णरपयोनिधेः १९ तत्र गत्वा जगन्नाथं देवदेवं दृष्ट्वा कपिम् ॥ पुरुषं पुरुषम् केन उपतस्थे समाहितः २० गिरं समाधौ गगने समीरितां निशम्य वेधास्त्रिदशानुवाच ह ॥ गांपौरुषीं गेभृणुतामराः पुनर्विधीयतामाशु तथैव माचिरम् २१ को पूजन करिके कलियुग के पापन को नाश करन वारो श्रीकृष्णचन्द्र को चरित्र तिसके कहिने को प्रारम्भ करत भये १४ हे राजन् राजकृष्णपिन मैं श्रेष्ठ राजा परीक्षित ! तुम्हारी बुद्धिने भले प्रकार निरचय कियो है या बुद्धिने तुम्हारी कृष्णकथान मैं अति उत्कृष्ट प्रीति भई १५ वासुदेव भगवान् की कथा को प्रश्न कीनि मनुष्यन को पवित्र करै है कहन वारे प्रश्न करन वारे और सुनन वारे को जैसे श्रीगंगाजी को जल पुरोहित यजमान और ग्रहण करन वारे को पवित्र करै है १६ गर्ववन्त दैत्यराजान की सेना के समूह सैकरान हजारन के भार से दुःखी हुई पृथ्वी ब्रह्माजी की शरण जाति भई १७ पृथ्वी गौ को रूप धारण करिके और रुदन करती हुई और करुणा जायें उपजे ऐसे वचनों को कहती पुकारती ब्रह्मा के पास जायके अपना सम्पूर्ण दुःख कहत भई १८ ब्रह्मा जी तब पृथ्वी को दुःख श्रवण करिके देवतानको संग लेके पृथ्वी को सन्न लेके और शिवजी को संग ले करत भये १९ चौरसमुद्र के समीप जायके जगत् के नाथ सम्पूर्ण मनोरथ पूरण करन वारे ऐसे भगवान् नारायण तिनकी सहस्रशीर्षी पुरुष इन पौंड्रश ऋचानते स्तुति करत भये २० ब्रह्माजी ने समाधि लगई ता समय आकाशवाणी हुई ता वाणी

को श्रवणनर ब्रह्माजी देवतान से बोले हे देवताओ ! मोको ईश्वरकी आज्ञा भई है तिसको तुम श्रवणकरो और श्रवण करि वैठि मतहो शीघ्र वैसाही करो २१ हगारी मार्यनासे प्रथम परमेश्वरने या पृथ्वीको बुल दूरि करतो विचारो है सो तुम अपने अंशन करिके यादवनके कुलमें जायकर जन्म धारण करो और पृथ्वी में विचरें तावत्पर्यन्त पृथ्वीपर रहो २२ साक्षात् परमपुरुष भगवान् पृथ्वी में आयके प्रकट होथे तिनके संग विहार करिवे के लिये देवतानकी स्त्री हैं तो जायके यज्ञमें जन्म धारण करो २३ एवार जिनके मुख वाहुदेवकी अंशकला ऐसे शेषजी बलभद्र श्रीकृष्ण के संग क्रीडा करिवे के लिये प्रकट होथे २४ देवकी के गर्भमें स्त्रीचिवे के लिये और यशोदाको मोह करिवे के लिये परमेश्वरकी माया सम्पूर्ण जगत् को मोद करायवेवारी ताको आज्ञा देतभये सो वह माया अंश करिके सहित यशोदाके प्रकट होयगी २५ या प्रकार प्रजापतिन के पति श्रीब्रह्माजी देवतान पुरैवपुंसाऽवधृतो धराज्वरो भन्नाहिरैशैयदुपजन्यताम् ॥ सयावद्वर्ग्यभरमीश्वरेश्वरः स्वकालाशक्याक्षपयंश्चेरुवि २२ वसुदेवगृहे साक्षाद्भगवान्पुरुषः परः ॥ जनिष्यते तत्प्रियार्थं सम्भवन्तु सुरस्त्रियः २३ बासुदेवकलाऽनन्तः महस्रवदनः स्वराट् ॥ अन्नतो भविता देवो हरेः प्रियचिकीर्षया २४ विष्णोर्मया भगवती यया सग्मो हितं जगत् ॥ आदिष्टा भभुणंशेन कार्यार्थे संभविष्यति २५ श्रीशुक उवाच ॥ इत्यादिरयामरणान् प्रजापतिपतिर्विभुः ॥ आश्वास्य चमर्द्दीर्गीभिः स्वधाम परमं ययौ २६ शूरसेनो यदुपतिर्मथुराभावसन्परीक्ष ॥ माथुराञ्छूरसेनांश्च विपयाचनुभुजे पुरा २७ राजधानी ततः साभूत्सर्वयादवभूसु जाश्च ॥ मथुराभगवान्यत्र नित्यं सन्निहितो हरिः २८ तस्य तनुं कर्हि चिच्छौरिर्वसुदेवः कृतोद्ग्रहः ॥ देवक्यामूर्यया सार्द्धं मया ऐश्वर्यमारुहत् २९ उग्रसेनमुतः क्रं सः स्वसुगमिचिकीर्षया ॥ रश्मीन् हयानां जग्राह रौक्मैश्च शतैर्वृतः ३० चतुःशतं पारिग्रहं गजानां हि ममालिनाम् ॥ अश्वानामयुतं सार्द्धं स्थानां च त्रिपदशतम् ३१ दासीनां सुकुमारीणां दशते समलङ्कृते ॥ दुहित्रे देवकः प्रादाद्याने दुहितवत्सलः ३२ शङ्खतूर्यमुदङ्गारश्च नेहुर्द्वन्द्वभयः समश्च ॥ प्रयाण प्रक्रमे तावद्वरवध्वोः सुमङ्गलम् ३३ पथि प्रग्रहिणं कंसमागाध्याहाशरीखाक् ॥ अस्यास्त्वामष्टमोगर्भो हन्तायां वदहमेऽबुध ३४ इत्युक्त्वा सखलः पापो भोजानां कुके गणनको आज्ञादेके और पृथ्वीको समाधान करिके अपने सत्पत्नीक को जातभये २६ यादवन के राजा शूरसेन मथुरापुरी में बसिके माथुरदेश शूरसेनदेशनको राज्य करतभये २७ जा मथुरापुरी में भगवान् हरि नित्य विराजमान रहे हैं सो सम्पूर्ण पृथ्वी के भोग करनवारे यादवन की राजधानी होतभई २८ एकसमय मथुरापुरीमें शूरसेन के पुत्र वसुदेवजी विवाह करिके नव वधू देवकीको संग लेके रथमें बैठतभये २९ उग्रसेन को पुत्र कंस अपनी भगिनी देवकीके प्यार करिवे के लिये सैक्रान सुवर्ण से जडित रथनको संगलेकर वहिनिके रथके घोडन की वागडोरी पर करिके हाकिमे को बैठागयो ३० अपनी कन्यापै आग्रिकहै प्रीति जाती ऐसी देवक ताने विदा के समय सुवर्ण की माला पहिरैभये चारसौठाथी और दशहजार घोडा अठारहसौ रथ दाइजे में दिधे ३१ सुकुमार जिनके अंग ऐसे दास और दासी दो सौ शृङ्गार करिके देतभये ३२ यात्राके समय वरवधूके मंगल के लिये शङ्ख भेरी नगाड़े यहसव वरातके संग वाजे वाजतभये ३३ मार्गमें देवकी



के रथके घोड़नकी वागडोर पकड़े जो कंस ताको आकाशवाणी सम्बोधन देकर बोली ओरे मूर्ख ! जाको तू पढ़े चाहे कूं जाय है यही देवकी तेरी वहिनि ताको आठवों बालक तोको मारेगो ३४ या विवि आकाशवाणी के वचन श्रवण करतेही भोजयशीन के कुलको कलङ्क लगावनवारो दुष्ट पापी कंस वहिनि के मारिये को हाथमें तरार लेकर केश पकरतभयो ३५ निन्दा के योग्य है नर्म जाको ऐमो मूर्ख निर्लिज्ज कंस है ताको वड़े ऐश्वर्यवान् वसुदेवजी समभावत यह बोले ३६ अहो कंस तुम वड़े गुणवान् और शरीर भोजयशीन के यशके करनारो हो विवाह के उत्तममें एकतो स्त्री जाति दूसरे तुम्हारी वहिनि ताहि कैसे पारो हो ३७ और मृत्युके डरते मारोहो तो मृत्यु तो जन्यारी मनुष्यन को जिसदिन मनुष्य जन्मो है उसी दिन संग मृत्युको जन्म है आज अथवा सौ वर्ष पाछे देहधारी को मरण निश्चय है ३८ जा समय या देहको अन्तकाल आवे है ता समय देहमें जो जीवात्मा है सो अपने कर्मानुसार और देहको प्रथम पायके अपने देहको त्यागै ३९ जैसे चलती

लपांसनः ॥ भगिनीहन्तुमारब्धः खड्गपाणिः कवेऽग्रहीत् ३५ तं जुगुप्सितकर्माणं नृशंसं निरपत्रपम् ॥ वसुदेवो महाभाग उवाच परिसान्त्वय च ३६ ॥ वसुदेव उवाच ॥ श्लाघनीयगुणः शूरैर्भवान् भोजयशस्करः ॥ सकथं भगिनीहन्यात्स्त्रियमुद्राहर्षयिणि ३७ मृत्युर्जन्मवतां विर देहेन सह जायते ॥ अथ वाऽवदशतान्तेवा मृत्युर्भ्राणिनां ध्रुवः ३८ देहे पञ्चत्वमाप्नो देही कर्मानुगोऽवशः ॥ देहान्तरमनुभाष्य प्राक्तनं त्यजते वपुः ३९ वृजं स्तिष्ठन्पदैकेन यथैवैकेन गच्छति ॥ यथा तृणजलौ कैवं देही कर्मगतः ४० स्वमेयथा पश्यति देहमीदृशं मनोरथेनाभिनिविष्टचेतनः ॥ दृष्टश्रुताभ्यां मनसानुचिन्तयन् प्रपद्यते तस्मिन्पि ह्यपस्मृतिः ४१ यतो यतो धावति देवचोदितं मनो विकारात्मकमापद्यसु ॥ गुणे पुमायारचिते पुदेह्यसौ प्रपद्यमानः सह तेन जायते ४२ ज्योतिर्यथैवोदकपार्थिवेष्वदः समीखे गानुगतं विभाव्यते ॥ एवं स्वमायारचितेष्वसौ पुमान् गुणेषु गानुगतो विमुह्यति ४३ तस्मान्न कस्यचिद्बोहमाचरेत्स तथा विधः ॥ आत्मनः क्षेममन्विच्छन् द्रोणुं परतो भयम् ४४ एपातवान् जावालाकृपणपुत्तिकोपमा ॥ हन्तुं नार्हसि कल्याणी भिमांस्वंदीनवत्सलः ४५ ॥ श्री

वैर मनुष्य अगिले पांवको धरिलेय है तब पिछले पांवको उठावै और जैसे जोंक चलते समय पहिले अगिले टुणको पकड़िले तब पीछिले टुणको छोड़ै है ऐसही देहस्थ जीवात्मा कर्मभनके वशते और देहको प्रथम ग्रहण करिते तब या देहको त्यागकरै है ४० स्वप्नमें मनुष्य जैसे देखे सुने संस्कारके वश जो मने ताके चिन्तनते संसारमें सोचत देहको भूलिके अपने को राजा और इन्द्रादिक रूपके अभिमान को बाधिलेय है ऐसही मनोरथ देहमें भूलिके और देहमें अभिमान बाधिलेय है ४१ फलके देनवार कर्मभन करि प्रेरित विकारनको भरो जो मने सो मायारचिन पंचभूतनके वने जो शरीर तिनमें जा जा शरीरमें दौरे है और अभिमानको बाधे है बाही शरीर में जीवकों संगले के जन्म है ४२ जैसे सूर्य चन्द्रमादिकनकी ज्योति जलभेधे वटादि पात्रनमें प्रतिबिम्बित होयके पवनके वेगते जलमें कम्पित प्रतीत होय है ऐमे जो पुरुष अपनी अवियारचित जो देह तिनमें अभिमान करि मोहको प्राप्त होइ है ४३ ता कारण ते अपने आत्माको कल्याण करनवारो पुरुष चाहै वैरभावको न करै ऐसे मनुष्य को दूसरे ते भय नहीं होय ४४ जाते यह तेरी छोटी वहिनि है और बालक है और कृपण है काष्ठकी पुतरी की नाई तेरे सम्मुख बाड़ी है तुम तो दीनन के हितकारी

हो या भंगलरूपी को मारिने योग्य नहीं हो ४५ श्रीशुकदेवजी महाराज कहत हैं कि हे कुरुक्षेत्री राजा परीक्षित! ऐसे प्रिय वचन कहिके वसुदेवजी ने समझाया तो आपही दुष्ट दूसरे असुरन को संग एकदु वचन मान्यो नहीं ४६ वसुदेवजी कंसके हठको जानि विचारि के देवकीभी प्राप्तभई जो मृत्यु ताहि दूर करिके लिये ता समय यह विचार करतभये ४७ जवताई बुद्धि भो बलहोइ तजताई मृत्यु दूरिकरे याहू में मृत्यु निवृत्त न होय तो या पुरुष को दोष नहीं है ४८ मृत्युरूप कंसको पुत्र देने कहिके या रूपणा देवकी के प्राण वचाजं कदाचित् कहो कि पुन देके देवकी के प्राण वचावने यह तो नीति नहीं है तथा वसुदेवजी विचार करै है कि जा समय देवकी के पुत्र होथे तो समय जो होनहार होयगी सो होय रहैगी तवताई तो याके प्राण नचैगे ४९ पुत्र उत्पन्न होने ते पहले यही कस मरजाय तौ कतू भी अनीति नहीं है और जो भरे पुत्रहोइ वाको कस न मारे तौ भरो पुत्रही या कंसकुं मारेगो ऐसे उलटी बात तो न होजाय वदाचित् कहो कि

शुकउवाच ॥ एवंसमामभिर्भेद्वैध्यामानोऽपिदारुणः ॥ नन्यवर्त्ततकौरव्यपुरुषादाननुव्रतः ४६ निर्वन्वतस्यतंज्ञात्वा विचिन्त्यानकडुन्दुभिः ॥ प्राप्तंरालं प्रतिव्योदुभिदंतत्रान्वपद्यत ४७ मृत्युर्वुद्धिमतापोहोयावदबुद्धिबलोदयम् ॥ यद्यसौननिर्वर्त्तनापराधोऽस्तिदेहिनः ४८ प्रदायमृत्यवेपुत्रान्मोचयेच्छृणवा मिमाम् ॥ सुताभेयदिजायेरन्मृत्युर्वानम्रियेतचेत् ४९ विपर्ययोवाकिनस्याद्भुतिर्धातुर्हृत्यया ॥ उपस्थितोनिर्वर्त्तत निवृत्तःपुनरापतेत् ५० अग्नयेथादारु वियोगयोगोरष्टतोऽन्यन्ननिमित्तमस्ति ॥ एवंहिजन्तोरपिदुर्विभाव्यः शरीरसंयोगवियोगहेतुः ५१ एवंविमृश्यनंपापं यावदात्मानिदर्शनम् ॥ पूजया मासर्वैशौर्बिहुमानपुरःसरम् ५२ प्रसन्नवदनाम्भोजो नृशंसंनिरपत्रपम् ॥ मनसादूयमानेन विहसन्निदमब्रवीत् ५३ वसुदेवउवाच ॥ नह्यस्यास्नेभयंसौ म्य यद्धिसाहाशरीरवाक् ॥ पुत्रान्समर्पिष्येऽस्या यतस्तेभयमुत्थितम् ५४ श्रीशुकउवाच ॥ स्वसुर्वथान्निवृत्ते कंसस्तद्वाक्यसारावित् ॥ वसुदेवोऽपितंभी

तुम्हारे पुत्र वालक या तरुण बलवान् कंस कू कैसे मारेंगे तथा वसुदेवजी कहै हैं विधाताकी गति काहू के जानिये में नहीं आवै है जे पुरुष मरिये योग्यहैं ते नहीं मरें हैं और जो मरिये योग्य नहीं हैं तिनको मृत्यु होजाय है ५० जैसे अग्नि ऋणन में वियोगयोगकों केवल अष्टप के विना और कोई कारण प्रतीत नहीं होयहै जैसे वनमें अग्निलगै है तो जो वृक्ष जलनहार नहीं है ते समीप के वचिजाय है और जलनहार है ते दूरिके जरिजाय है और जैसे गावमें पास के घर वचिजाय है दूरके जरिजाय है ऐसेही माखिन के जन्म मृत्युको कारण हूं विचारिये में नहीं आवै है ५१ श्रीशुकदेवजी महाराज राजा परीक्षित से कहै हैं कि या प्रकार जहाताई अपनी बुद्धि चली तथा ताई वसुदेवजी ने विचार करिके कंसको पूजन करयो ५२ कंस के विस्वास के कारण ऊपरतें प्रफुल्लित है मुख कमलरूपी जिनको ऐसे वसुदेवजी क्रूर निलिज्ज कंसतें दुःखित मन मुसकाय के यह बोले ५३ हे सौम्य ! जैसे आकाशवाणी ने कही वैसे निश्चय या देवकी ते तुम कूं भय नहीं है जिन पुनन ते तुम्हें भयभयो है सो याके पुत्र लायकै तुम्हारे अर्पण करि देखैगो ५४ वसुदेवजीके वाक्यको सत्य मानिके कंस अपनी वहिनिके मारिये ते निवृत्तभयो वसुदेवजीहू प्रसन्नहोइ कंस की चडाई

करिके अपने घर जातभये ५५ समस्त प्राणीन के आत्मा भगवान् है देवता जिनके ऐसी जो देवकी तिनने जव पुत्र जन्मको समय आयो तत्र वर्ष वर्ष प्रति एक एक पुत्र और एक कन्या ऐसे नव बालक उत्पन्न किये ५६ प्रथम कीर्तिमान् पुत्रभयो ताको वसुदेवजी वड़े कष्टे कंसके समीप लोग्ये क्योंकि मिथ्या बोलिने तें वसुदेवजी डरे हैं ५७ कदाचित् कठो कि कंस भगवतो तव लेजाते वसुदेवजी आपही तें कंसपे क्यों लेगये तदा कहैं कि साधु महात्मा जो हैं ते कौनमी बात न सहिसकैं हे और पुत्रके लाइ करियेको आनन्द वसुदेवजी पै कैसे त्यागो गयो तहां कहैं हे विद्वाननको कौन बात अपेक्षित है कदाचित् कहो कि वसुदेवजी या कारण आप लोग्ये कि मैं लैजाउँगे तो दया विचार कंस न मारैगो तहां कहैं कि दुष्टजन कहा नहीं करैं कंस सह्य दुष्टन कूं दया कव आवै वसुदेवजी पुत्र कूं लैगये परन्तु देवकी पै पुत्र कैसे दियोगयो तहां कहैं कि देवकी ने मनमें विचार करि राख्यो है कि ऐसे पुत्र तो बहुत होयगे भरे संचि पुन तो श्रीकृष्णचन्द्र हैं यह जानिके तः प्रशस्यप्रविराद्भ्य ५५ अथकालउपावृत्ते देवकीसर्वदेवता ॥ पुत्रान्प्रपुत्रेवाशौ कन्यांचैवानुवत्सस्य ५६ कीर्तिमन्तं प्रथमं वंसायानकहुन्नुभिः ॥

अर्पयामासकृच्छ्रेण सोऽनुनादतिविबलः ५७ किन्तुः सहन्तुसाधूनां विदुषां किमपेक्षितम् ॥ किमकार्यं कदर्याणां दुस्त्यजं किंचिन्नात्मनाम् ५८ दृष्ट्वा सम त्वंतच्छौरेः सत्ये चैव व्यवस्थितिम् ॥ कंसस्तुष्टगनाराजन्यहसिन्नदमव्रीत् ५९ प्रतियातुकुमारोऽयं न ह्यस्मादस्ति मे गयम् ॥ अष्टमाद्युचयोगोर्भान्मृत्युर्भविहि तः किल ६० तथेति सुतमादाय ययावानकहुन्नुभिः ॥ नाभ्यनन्दतद्वाक्यमसतो विजितात्मनः ६१ नन्दाद्यायेन जे गोपाया आर्षीपात्रयोपितः ॥ वृष्णयो वसुदेवाद्या देवक्याद्यायदुस्त्रियः ६२ सर्वै देवताप्राया उभयोरपि भास्त ॥ ज्ञातयो वन्धुमुहदो ये च कंसमनुवताः ६३ एतत्कंसाय भगवाञ्शंसाभ्येत्य नारदः ॥ धूमैर्भारायमाणानां दैत्यानाञ्च वधोद्यमम् ६४ ऋषेर्विनिर्गमेकसोमदून्मत्वा सुनानिति ॥ देवक्यागर्भसम्भूतं विष्णुञ्च स्ववधं प्रति ६५ देन कीं वसुदेवञ्च निगृह्यानिर्गहे गृहे ॥ जातं जातमहन्पुत्रं तयो रजनशङ्कया ६६ मातरं पितरं भ्रातृन् सर्वान्श्च मुहदस्तथा ॥ द्यन्ति ह्यमुहपोलुञ्चा राजानः

दियो ५८ वसुदेवजीकी समता देखिके हे राजन् परीक्षित् ! सन्तुष्ट जाको मन ऐसो रंता सो मुसतायके यह वचन बोल्यो ५९ या पुत्रको नरको फेरि ले जावो यातें सो हूं भय नहीं है आपके आठनें पुत्रते धेरी मृत्यु निश्चय रची है ६० तथास्तु ऐसे कृषिके वसुदेवजी पुत्र कूं लै के घरको आगतभये परंतु कंस के वचनको विश्वास न करयो अज फेरि दियो हे परचात् फिरी चारों धेगाइ लेइ असा मुहे या के वचनको कुछ विश्वास नहीं कंसने वसुदेवजी को पुत्र फेरि दियो यह बात श्रवण करि नारदजीने प्रायक कंसते कही ६१ व्रजमें नन्दजी ते आदिलेके जे गोप हैं और गोपनकी स्त्री हैं और वसुदेवजी ते आदिलेके छुणियात और देवकी ते आदिलेके यादवनकी स्त्री जे गुरुहारे सभीपवर्ती ६२ ते तम्पूछे हे कंस ! वसुदेवजी और नन्दजी के कुलमें ज्ञाति वन्धु मुहद ये समस्त देवता प्रकटभये हैं पृथिवी में दैत्यनको बार बढ़यो है ताके उद्धार के निमित्त भगवान् ते यह उपाय रच्यो है सो तुम जानिलीजो ६३ ६४ ऐसे उपदेश करि नारदजी तो जातभये अत्र अंसने यादवन कूं देवता मानिके और देवकी के गर्भ ते विष्णु भगवान् प्रकट होयके गोर्ध्न पौरुष यह मानिके ६५ देवकी और वसुदेव कूं वन्दोघर में रोकि पावन में बेडी डारिदई और जो जो इनके पुत्रभये



ताई कूं विष्णु भगवान् की शंका मानिकै मारत भयो ६६ अपने प्राणन के लोभी राजा पृथ्वी में माता पिता भयगा और सम्पूर्ण भिन्नको मारि डारे हैं ६७ पहले या जगत् में कालनेमि बड़े असुर भयो ताकूं विष्णुने माखो और ताही अयुरते अपने जन्म जो है ताही जानिकै यादवन से वैर करत भयो ६८ यदुवंशी भोजवंशी अन्धवंशीन के राजा उग्रसेन ऐसे अपने पिता तिनके प्राणन में बड़ी डारिकै बड़ो बलवान् कंस सो आणी शूरसेन देशनको राज्य करत भयो ६९ इति श्रीमद्भागवतार्थकृष्णपादशमस्कन्धे पूर्वोद्धृष्टी कृष्णवतारोपक्रमे प्रथमोऽन्यायः १ ॥ ५ ॥

( द्वितीयः सर्गः ) सत्राताय देवयगर्भगोहरिः ॥ ब्रह्मादिभि स्तुतः सावसान्तिव्देति निरूप्यते १ दूसरे अध्यायमें कंस के मारनेके लिये देवकीजी के गर्भ में प्राप्त भगवान् ब्रह्मादिक देवताओं से स्तुति किये गये और देवकीजी सपत्नी गई यह वर्णन है ) प्रलम्भः सुर वक्रासुर चणूर तृणावर्च अघासुर मुष्टिक आरिष्ट द्विविद वन्दर पूतना केशी धेनुकासुर १ और असुरन के राजा वाणासुर भौ-

प्रायशो भुवि ६७ आत्मानमिह सञ्जातं जानन् रात्रिं पणुनाहनम् ॥ महासुरं कालनेमिं यदुभिः सव्यरुच्यत ६८ उग्रसेनञ्च पितरं यदुभोजान् च काधिपम् ॥

स्वयं निगृह्य वसुजे शूरसेनान् महाबलः ६६ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वोद्धृष्टी कृष्णवतारोपक्रमे प्रथमोऽन्यायः १ ॥ ५ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ प्रलम्बवक्त्राणू तृणावर्तमहाशनैः ॥ मुष्टिकारिष्टद्विविदपूतनाकोशिवेनुमैः १ अन्यैश्चासुरभूपालैर्भाणभौमादिभिर्भुनः ॥ यदूनाक दनंचक्रे वलीमागधसंश्रयः २ तेपीडतानि विविशुः कुरुपाञ्चालकेकयान् ॥ शास्त्वान् विदर्शान्निपयान् विदेहान् कोसलानपि ३ एकेन मनुरुन्वानो ज्ञातयः ४ युष्पासने ॥ हनेपुष्टमुवालेषु देवक्या औग्रवेनिना ४ सप्तमो वैष्णवं वाम यमनन्तं प्रचक्षते ॥ गर्भो बभूव देवक्या हर्षशोकविवर्द्धनः ५ भगवानपि विप्रवात्मा निदित्वा कंसजम्भयम् ॥ यदूनां निजनाथानां योगमायां समादिशत् ६ गच्छद्देवि व्रजं भद्रे गोपगोशिरलङ्कृतम् ॥ रोहिणीवसुदेवस्य भार्थ्याऽस्तेन नन्दगो कुले ॥ अन्याश्च कंससंविग्ना विवरेषु वसन्ति हि ७ देवक्या जठरे गभं शेपाख्यं धाम मामकम् ॥ तत्सन्निकृष्य रोहिण्या उदरे मन्निवेशय ८ अथाहं भंशभागेन

मासुर इनको संग लेके और मगधदेशको राजा जरासन्ध ससुरके वलते वली कंस यादवन कूं कष्ट देत भयो २ ते यादव दुःखित होकरे कंसके भय ते कुरुदेश पञ्चाव केसय शाहव विदर्भ निपय विदेह कोसल इन देशन में जायके वास करत भये ३ एक अक्रूरादिक यादव ४ सके आज्ञाकारी सर्वकार्य में लागि रहे हैं जब उग्रसेन के वेदा मंसने देवकी के छः बालक मारे ४ तब विष्णु भगवान् की कला अनन्त जिनकूं बड़े हैं ऐसे सातवों गर्भ देवकी के भयो सो कंसो है कि आनन्दरूपको अवतार होइगो याते तो यममें हर्ष भयो और पहले कीती नई याहू को कंस मारेगो याते मल्लु शोकभी है ५ तब विश्व के आत्मा भगवान् ने जानी कि मेरे यादवन कूं कंस दुःख देइहै ता समय अपनी योगमाया कूं आज्ञा देत भये ६ हे देवि ! हे मङ्गलरूपिणी ! जो गोप और गीवनकरि शोभा यमान व्रज है तहा तुम जायके नन्दरायजी के गोकुल में यमुदेवजी की स्त्री रोहिणी है ७ कंस के डरते और हू स्त्री गुप्तस्थानमें वास करै हैं सो देवकी के उदरमें मेरी कला शेषस्वरूप है तिनहै

निकासि रोहिणी के उदर में प्राप्तकरो ८ तू गर्भकू लैवेगी याके पीछे हे मङ्गलरूपिणी ! अपने परिपूर्णरूप करि के मैं देवकी के पुत्रभावकू प्राप्त होउंगे और तूम नन्दरायजी की पत्नी यशोदा के प्रकट होउ ९ हे मङ्गलरूपिणी ! तैसी तूमहो सम्पूर्ण पुत्रादिकनकी कामना करनचारे पुरुषनकी ईश्वरी पूर्ण करोगी और सर्वज्ञमानकू देनवारी तू होगी और सम्पूर्ण मनुष्य धूप दीप सामग्री बलि प्रदान भेटनकरि तेरो पूजन करेंगे तू जनके सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करेगी १० पृथ्वी में मनुष्य तुम्हारे स्थापन करेगे और दुर्गा भद्रकाली विजया वैष्णवी ११ कुमुदा चण्डिका कुप्पा माथमी कन्यका माया नारायणी ईशानी शारदा अम्बिका ये नाम धरेंगे १२ गर्भ में तैं लैचिके निकासेगी याते पृथ्वी में मनुष्य या बालकको संकल्पण कहेंगे लोकनकू स्मायेंगे यातें राम कहेंगे बल अधिक कहैं यातें बलभद्र कहेंगे १३ या प्रकार योगमाया कू भगवान् ने आज्ञा दीन्हीं तब कही ऐसेही करुंगी या प्रकार भगवान् की परिक्रमाकरिके वचनकू ग्रहण करि पृथ्वी में आयके तैसेई करत भई १४

देवक्याः पुत्रतांशु मे ॥ प्राप्स्यामित्यंशोदायां नन्दपत्न्यां भविष्यसि ९ अर्चिष्यन्ति मनुष्यास्त्वां सर्वकामवशेषरीम् ॥ धूपोपहारबलिभिः सर्वकाम वरप्रदाम् १० नामधेयानि कुर्वन्ति स्थानानि च नराभुवि ॥ दुर्गेति भद्रकालीति विजयावैष्णवीति च ११ कुमुदाचण्डिकाकृष्णा माधवीकन्यकेति च ॥ मानानारायणीशानी शारदेत्यम्बिकेति च १२ गर्भसङ्कषणात्तैव प्राहुः सङ्कर्षणं भुवि ॥ रामेति लोकमणाद्बलं बलवदुच्छयात् १३ सन्दिष्टैव भगवता तथेत्यो मिति तद्वचः ॥ प्रतिगृह्यपरिक्रम्य गाङ्गतातत्थाऽकरोत् १४ गर्भे प्रणीते देवक्या रोहिणी योगनिद्रया ॥ अहो विस्मितिगर्भ इति पौराविचुक्रुशुः १५ भगवानपि विश्वात्मा भक्तानामभयङ्करः ॥ आविवेशांशमागेन मनआनकदुन्दुभेः १६ सविभ्रतपौरुषधाम भ्राजमानो यथाश्रविः ॥ दुर्गसदोऽनिदुर्बो भूना नांसम्बभूवह १७ ततो जगन्मङ्गलमच्युतांशं समाहितं शूरसुतेन देवी ॥ दधारसर्वतमकमात्मभूतं काण्डायथाऽनन्दकरं मनस्तः १८ सादेवकी सर्वजगन्निवासनिवासभूतानि तरंजरे ॥ भोजेन्द्रगेहं गनिशिखेरुद्धा सरस्वतीज्ञानखले यथासती १९ तार्वीक्ष्यकंसः प्रभयाऽजितान्तरां विरोचयन्ती भवनं

वह योगमाया देवकी के उदर में ते बालककू रोहिणी के उदर में लै गई तासमय समस्त पुरवासी मनुष्य याँपुकार उठे कि अक्की कंसने अपनी बहिन ऐसी धमकाई यातें याको गर्भगिरिपरचो १५ और उनमें विश्वके आत्मा भगवान् भक्तनके भयकू दूरि करनचारे सो अपने परिपूर्ण रूपकारि वसुदेवजी के मनमें आयके प्रकट होतभये १६ जब वसुदेवजी के मनमें भगवान् आयें तब सूर्यके तेजके तुल्य तेज होतभयो कोई मनुष्य तेजके प्रकाश के मारे सम्मुख आवें नहीं ऐसे वसुदेवजी होतभये १७ ताके अनन्तर जगतकू प्रतिमान् मंगलरूप भगवान्को स्वरूप वसुदेवजी मनमें अर्पण करचो तब देवकी ने भले प्रकार धारण करचो जैसे पूर्वदिशा चन्द्रमाकू धारण करै १८ जैसे बके दीपकको प्रकाश नहीं होई है और जैसे ज्ञानमन्त्रकू विद्या सुन्दर नहीं लगै है तैसे सय ब्रह्माण्ड जि नके उदरमें ऐसे भगवान् अपनी कान्तियुक्त देवकी के उदरमें आयें तथापि कंसके कारागारमें रुकै है याते सम्पूर्ण मनुष्यनको जैसे निरन्तर आनन्द होय तैसे देवकी शोभाको प्राप्त होती भई १९

अजित भगवान् जाकी कुत्तिके धिये अपनी कातिकरि दन्दीघर कूं प्रकाशमान करें स्फुटर जाकी मुसफानि ऐसी देनकीकूं देखि कंस यह बोल्यो कि भरे प्राणन की हसनवारो हरिली सिद्ध निश्चय या देवकी के उदरली गुफा में आय बैठयो है प्रथम याको तेज ऐसो नहीं हो २० कसराय अपने मनमें विचार करै है कि अप मैं जल्दी याके लिये कहा उपायकल यह तो देवतानके का- २१ करिये को आयो है याते निश्चय मोकूं मारैगो अथ या देवकी कूं मैं मारूं तो एक तो स्त्रीजाति दूसरे मेरी बहिन तीसरे गर्धिणी याके मारेतें हमारो यश लक्ष्मी आयुर्बल ये सब हीनताको प्राप्त होईगे २१ जो मनुष्य संसार में दुष्टता करे सो मनुष्य जीवतही मरयो है देहधरे पीके समस्त मनुष्य वाहि कोसे हैं कि इस पापीको प्रिकार है निश्चय घोरतरु में परैगो २२ ऐसे विचार क- २३ रिके घोर पापरूप जो देवकी को बय ताते सामर्थवान् कस आपही निवृत्त होतभयो भगवान् के जन्मदोषये की वाट देखै है २३ तब बैठते सोचते ठाढ़े भोजन करते पृथ्वीमें विचरेते इन्द्रियनके ईश्वर

शुचिस्मिताम् ॥ आहैपमेप्राणहारागुहां श्रुतिश्रतोयन्नप्रेरयमीदृशी २० किमद्यतस्मिन्फणीयमाशुमे यदर्थतन्त्रोनिविहन्तिविक्रमम् ॥ स्त्रियाःस्वमु- २१ गुरुमरयावधोऽयं यशःश्रयंहन्यनुकालमायुः २१ सपूजविनखलुसम्पेतोवर्तेतयोऽन्यन्ननुशंसितेन ॥ देहेष्टेतेतमनुजाःशपन्ति गन्तानमोऽन्धतनुमा- २२ निनोभ्रुमम् २२ इतिघोरतमाद्वावात्सन्नितृप्तःस्वयंप्रभुः ॥ आस्तेप्रतीक्षंसजन्म हेर्वैरातुवन्वृत् २३ आसीनःसंविशंस्तिष्ठन् भुञ्जानःपर्यटन्महीम् ॥ चिन्तयानोहृषीकेशमपश्यत्तन्मयंजगत् २४ ब्रह्माभवश्चतैत्रय मुनिभिर्नारदादिभिः ॥ देवैःसानुचरैःसाकं गीर्भिवृणमैडयन् २५ सत्यव्रतंसत्यपरं- २६ त्रिमत्त्वं सत्यस्ययोनिनिहितञ्चसत्ये ॥ सत्यस्यसत्यमृतसत्यनेत्रंसत्यात्मकंत्वांशरणंप्रपन्नाः २६ एकायनोऽमौद्विफलसिमूलश्चतुसःपञ्चविधः- २७ पट्ठात्मा ॥ सप्ततगष्टविटपोनवाक्षोदशच्छदीद्विखगोह्यादिवृक्षः २७ त्वमेकएवाऽस्यसतःप्रसूतिस्तृप्तसन्निधानंत्वमनुग्रहश्च ॥ तन्माययासंवृत्तचेतसस्तयां- २८ पश्यन्तिनानाविपरिचिनोये २८ विभिर्पुरुषाण्यवबोधआत्मा क्षोगायलोकस्यचराचरस्य ॥ सत्त्वोपपन्नानिसुखावधानि सतामभदाणिमुहुःखलाना

भगवान्हीकी चिन्ता करत सम्पूर्ण जगत्में हरिरूपही देखत भयो २४ इतनेहीमें नारदादिक मुनीश्चरनकूं सगले और गन्धर्ववादिक सहित देवतानकूं संगलै कै ब्रह्माजी और महादेवजी आयके गर्भहीमें वर्णनकरि स्तुति करत भये २५ सत्य है संकल्प जिनको सत्यपरायण और भूत भविष्यत् वर्तमान तीनोंकालमें पृथ्वी अप तेज वायु आकाश ये पञ्चभूतनके कारणरूपही और पञ्चभूतनके नाशमें आप ही याकी रहौहो और मनोहर जिनकी वाणी ज्ञानिन के प्रेरणा करनवारि सत्यरूप जो तुम तिनकी हय शरण प्राप्त भये हैं २६ एक मायाही जाको धामरो सुख दुःख जामें फल सत्त्वगुण रजो- २७ गुण तमोगुण जाकी जड़ धर्म अर्थ काम मोक्ष जामें रस हैं पांच इन्द्रियन ते जामें ज्ञान होई है सुत्रा पिपासा शोक मोह मृत्यु दुःखगो ये जाके सभाव हैं तच्चा लोहित मेद मास स्नायु आस्थि मज्जा रेत ये जाके बलतल पृथ्वी जल तेज पवन आकाश मन बुद्धि अहङ्कार ये जाकी शाखा नव इन्द्रियन के दरवाजे जामें कोटर अर्थात् खोतारि प्राण आपान दगान उदान समाप्त नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनञ्जय ये दश प्राण जामें पत्ता और जीव ईश्वर ये दोनों पञ्चिन को जोसला ऐसो यह देह आदिदृष्ट है इसहु काटिये से कटे है ऐसीही देह भी मरै है जन्मै है २७ या संसार ते उत्पत्ति

पालन संसार करनवारे तुमहीं हो। तुम्हारी मायामें भूले है चित्त जिनके ते पुरुष तुम्हें नानाप्रकार जानै है और जे विवेकी पुरुष है ते एक रूप करि जानै है ॥ २८ एकस्वरूप जो भगवान् हो सो तुम ब्रह्मरूप होयके वतन और विष्णुरूप करि पालन शिवरूप करि संसार करोहो सतो गुण करिके सयुक्त सत्यपुरुष नू सुख देनवारे दृष्टनकू टण्ड देनवारे जे रू है तिन्हें धारण करोहो ॥ २९ ॥ वमलदललोचन ! सपस्त जीवन के आश्रय तुमहीं हो। ताते तुम्हारे विषे विवेकी महात्मा समाधिद्वारा चित्तकू लगाय के महत् पुरुष नै सिद्ध करयो ऐसी जो तुम्हारे चरणारविन्दरूपी नौका ताको आश्रय करिके यह संसाररूप समुद्रको अवगाहन करि वखराके खुरकी बाराबरी करिके तरि जाई है ३० हे स्वम्पकाश ! जे करुणावान् पुरुष है ते अतिगुण करिके तरिवेमें न आने ऐसी महाभयङ्कर संसारसमुद्र ताहि पार उतरिके और भजनभावना सम्पदाय यह जो तुम्हारे चरणारविन्दरूपी नाव है ताकू औरन के पार उतरिये के निमित्त या संसार में राखिके आप पार लगि जाई है हे ईश्वर ! आप कैसेहो सन्तन के ऊपर कृपा करनवारेहो ॥ ३१ ॥ हे कमलदललोचन ! जे ज्ञानीपुरुष अपनेपेकू मुक्त मानै है ते तुम्हारे विषे भाव नहीं करै है याते अविशुद्धजुद्धी है और वहे वृत्ते है हे ईश्वर !

म २६ त्वय्यम्बुज। क्षाखिलसत्त्वधासि समाधिनावेशितचेतसैके ॥ त्वत्पादोतेनमदहृत्तेन कुर्वन्निगोत्रत्पदं भवात्त्रिभू ३० स्वयंमुतीर्यमुदुस्तंष्टुमन् भवार्णवभीममदभ्रौहदाः ॥ भवत्पदोम्भोरुहनावमत्रने निधाययाताः सदनुग्रहो भवान् ३१ येऽन्येऽरविन्दक्षान्त्रिमुक्कमानिनस्त्वय्यस्तथावादविशुद्धजुद्धयः ॥ आरुह्यकृच्छ्रेण परम्पदं तनः पतन्त्यत्रोऽमाहृत्युष्मदङ्घ्रयः ३२ तथानेते माधवतावकाः क्वचिदु अश्रयन्ति मार्गस्त्वयिवद्धसौहृदाः ॥ त्वयाऽभिगुप्ता विचरन्ति निर्भया विनायकानीकपमूर्द्धसुप्रभो ३३ सत्त्वं विशुद्धं श्रयते भवान् स्थितौ शरीरिणां श्रेयउपायनं वपुः ॥ वेदक्रियायोगतपःसमाधियस्य न वार्हण्ये न जनः समीहते ३४ सत्त्वं न चेद्धातरिदं निजं भवेद्विज्ञानमज्ञानमिदापमार्जनम् ॥ गुणप्रकाशौ नुमीयते भवान् प्रकाशने यस्य च येन वा गुणः ३५ न न ग रूपा गुणजनकर्मभिर्निरूपितव्येन वतस्य साक्षिणः ॥ मनोवचोभ्यामनुमेयवर्त्मनो देवक्रियायां प्रतिन्यथापि हि ३६ शृण्वन् गृणन् संस्मरन् शचिन्ति

ऊचे पदकू पास होइहे तथा कहै है ऊंचोपद कहा सुन्दर कुज में जन्म और तप करिके शास्त्र पढ़ियो ताकू पायके तुम्हारे चरणकमल को आदर नहीं करै है और नीचोपद कहा कि विद्वान करिके कष्टकू पास हाईहैं ३० हे माधव ! जैसे ज्ञानी निर्विद्व होईहैं तैसे आपके भक्तनको विद्वान नहीं होईहैं काहे ते कि तुममें जिनने स्नेह बोधो है तुम जिनकी रक्षा करोहो हे प्रभो ! याते तुम्हारे भक्त नि भय होईहैं कि विद्वान के माथे पार पान धरिके आनन्दपूर्वक विचरै हैं ३३ हे प्रभो ! पालनसमय समस्त देवधारीन को पालन करनवारे जो रूप ताहि धारण करोहो या स्वरूप करि ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी ये चारों आश्रमी वेद कर्म योग तप समाधि इन उपायन तें आपकोही पूजन करै हैं ३४ हे विगता ! तुम्हारे सत्त्वगुणयुक्त दशमसुन्दर स्वरूप मकट न होतो तो अज्ञान को कारचो भेद ताको नाश क विज्ञान है सोऊ ईश्वरको प्रेम्बो भयो सुख्यादिक गुणन को प्रकाश है और जो ईश्वर गुणनको साक्षी है ऐसे इन्द्रियन के प्रकाश करके तुम अनुमान करिके में आचो हो ३५ हे प्रकाशमान ! या विद्वान के साक्षी तुमहीं हो और तुम्हारे नागरूप गुण कर्म जन्म कश्चित् में नहीं आवै हैं मन वाणी द्र रा अनुपम करिवेमें जिनको स्वरूप नहीं आवै तो भी तुम्हारे



होतभयो और ता समय ब्रह्माजी को नक्षत्र रोहिणी आवतभयो और शान्तियुक्त शुभग्रह तारागण होतभये ? ता समय सम्पूर्ण दिशा प्रसन्नहोतभई और आकाश निर्मल होतभयो और समस्त निर्मल तारागण उदय होतभये पृथ्वी मङ्गलरूपिणी होतभई पुर ग्राम वन आकर वन वाटिका श्रीकृष्णचन्द्र के जन्म समय अत्यन्त शोभायमान होतभये २ जा समय श्रीकृष्णचन्द्रको जन्मभयो ता समय नदीन के जल निर्मल होतभये सरोवरन में कमल प्रफुल्लितभये सम्पूर्ण पक्षी मनोहर शब्दकरतभये और अमर बहुत सुन्दर पुष्पनकी सुगन्धि सूँघिके गुंजार करनलगे ३ और वा समय सुवदायक शीतल मन्द सुगन्धियुक्त पवन चलतभई और ब्राह्मणन की शान्त होमकी अग्नि प्रज्वलित होतभई ४ और तासमय कर्मादिकन के विना सम्पूर्ण महात्मान के मन प्रसन्न होतभये प्रभु के प्रकट होनेके समय आपही तें स्वर्ग में नगरे वाजतभये ५ किन्नर गन्धर्व गान करतभये सिद्धचारण स्तुति करनलगे अप्सरान कुं सग लैके विद्याधर नृत्य करनलगे ६ वड़े आनन्द तें देवता

जलभूषिष्ठपुरग्रामव्रजा करा २ नद्यःप्रसन्नसलिलाद्गदाजलरुहश्रियः ॥ द्विजालिकुलसन्नादस्नवकावनराजयः ३ ववौवायुःमुखस्पर्शः पुण्यगन्धवहःशुचिः ॥ अग्नयश्चद्विजातीनां शान्तास्नत्रसन्निवृत्त ४ मनास्यासन्नप्रसन्नानि साधूनाममुद्गुहाम् ॥ जायमानेजनेतस्मिन्नेदुन्दुभयोदिवि ५ जगुःकिन्नरगन्धर्वास्तुष्टुवुःसिद्धचारणाः ॥ विद्याधर्यश्चननुतामसरोभिःसमन्तदा ६ मुमुचुर्मुनयोदेवाःसुमनांसिमुदान्विताः ॥ मन्दमन्दजलधराजगर्जनुसागरम् ७ निशीथेतमउद्धते जायमानेजनार्दने ॥ देवक्यादेवरूपिण्यां विष्णुःसर्वगुहाशयः ॥ आविरासीद्यथाप्राच्यां दिशीन्दुरिवपुष्कलः ८ तमद्भुतं बालकमम्बुजे क्षणं चतुर्भुजंशङ्खगदाद्युदायुधम् ॥ श्रीवत्सलक्ष्मज्जलशोभिकौस्तुभंपीताम्बंसान्द्रपयोदसौ भगम् ९ महाहवैदृश्यंकिरीटकुण्डलत्विपापरिष्वक्तमहस्रकुन्तलम् ॥ उदामकार्ज्व्यद्गदकङ्कणदिभिर्विरोचमानं वसुदेवपेशन १० सविस्मयोत्फुल्लिविलोचनोहरि सुतं विलोकयानकड्डुहभिस्नदा ॥ कृष्णवनारोत्सवसं भ्रमोऽस्पृशन्मुदादिजेभ्योऽयुतमाप्नुनोगवाम् ११ अथैनमस्तौदवधार्यपरुषंपरंनताङ्गःकृन्धीःकृन्नाञ्जलिः ॥ स्वरोचिपाभारतमूतिकामृहंविरोचयन्तंगतभीः

मुनीश्वर पुष्पन की वर्षा करतभये पेष मन्द मन्द गर्जनलगे ७ अर्द्धरात्रि के समय सबकी प्रार्थनाभई तब तो देवरूपिणी देवकी की कोखमें मक्के अन्तर्यामी भगवान् प्रकट होतभये जैसे पूर्वदिशा में चन्द्रमा उदय होयहै ८ कमल से हैं नेत्र जिनके चारि जिनके भुजा और शङ्ख चक्र गदा पद्मकं धारण करे हृदयमें भृगुलताको चिह्न जिनके कण्ठविषेशोभायमान कौस्तुभमणि पीताम्बरकी धोती उपरना पहिरे वर्षनी घटाकी तुल्य श्यामसुन्दर जिनको अङ्ग ९ महुत श्रेष्ठ वैदर्यमणि जटित किरीट मस्तक पे शोभायमान है उज्ज्वल कुण्डलन की कान्ति करि शोभायमान जिनके केश भुजान में सुन्दर वाङ्मवन्द पहिरे और उत्तम वङ्कण धारण करे और अनेक प्रकारके आभूषणन करि परमशोभायमान अद्भुत नाल क वसुदेवकी देखतभये १० हरि भगवान्क अपने पुत्र देखिके आश्चर्य तें वसुदेवकी के नेत्र प्रफुल्लित होयगये श्रीकृष्णचन्द्र के प्रकटहोयवे के प्रकटहोयवे के समय हरनारायण के समस्त दशहजार गौतमको सङ्कल्प करयो पुत्र कुं परब्रज नारायण जानिके नम्र जिनके अङ्ग शुद्ध



जिनकी बुद्धि प्रथम जितको जातहो प्रभाव के जाननयारे वसुदेवजी सूतिकाण्ड कं शोभायमान करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कं हाथ जोरिके वसुदेवजी स्तुति करतभये १।१२ तुम कूं मैंने जानी आप माया ते परे म ज्ञात् परमपुरुष हौ केवल अनुभव आनन्द स्वरूपहौ सम्पूर्ण प्राणीन की बुद्धि के सान्नी हौ १३ अपनी मायाते सत्तगुण रजोगुण तमोगुण रूप यह विश्वहै ताकूं पहिले रचौ हौ तामें प्रविष्ट नहीं हौ और प्रविष्ट से देखिये मैं आवो हौ १४ तामें दृष्टान्त है जैसे विकार कूंमास न भये महत्तत्वादिक याव जैसे ये विकारी महदादिक भाव जैसे तेसे दृष्टान्त कूं गिस्तारहै १५ जैसे महत्तत्त्व अहंकार पञ्चतन्मात्रा ये सातौ पदार्थ पञ्चभेदिय और मन पञ्च महायुत अर्थात् पृथ्वी अप् तेज वायु आकाश इन मोलहौ विकारन ते संग मिलके समस्त ब्रह्माण्ड उत्पन्न करै हौ और पृथक् २ ब्रह्माण्ड बनाइवे मैं असमर्थ है १६ ऐसेही तुम्हारो स्वरूप बुद्ध्यादिक इन्द्रियनकरिके जानिये मैं आवै है विषयन मैं अपारहौ परन्तु विषयन के संग लुप्त ग्रहण करिये मैं नहीं

आवौ हौ जैसे एक दूधमें शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ये पाचौ वस्तुहू नेत्रन तई रूप जानिबे में आवै है रसको ज्ञान नहीं होइ है ऐसी विषयन के ग्रहण में तुम्हरो प्रहण नहीं होय है अपरिच्छिन्न पत्ता को घोंसला में प्रवेश होइ है तुम परिच्छिन्न हौ यते बाहर भीतर भेद नहीं है गर्भ में प्रवेश कहां ते आवरण करिके रहित कहाते हौ सर्वस्वरूपहौ सम्पूर्ण में व्यापकहौ सत्यवस्तुरूपहौ १७ आत्माके जो दृश्यगुण देहादिक तिनकूं आत्मा के विना जो पुरुष सत्य मौन है वह अज्ञानी है विचारि के बेलो तो कथनमात्र विना देहादिक सब झूठी है याते झूठ देहादिकनकू जो पुरुष सत्य माने है सो अज्ञानी है १८ हे विभो ! निरीह निर्गुण निर्विकार तुमहौ तुमहीं ते या विश्व को जन्म पालन संहार होइ है तुम ईश्वर ब्रह्म जिन में कछु प्रियोय नहीं है तुम्हरो आश्रय लैके तीनों गुण करै है याते तुम कर्त्ता कर्हिबे में आवौहौ १९ त्रिलोकी के पालन बरिबेके लिये अपनी माया करिके सतोगुणी शुद्धवर्ण विष्णुरूप तुम धारण करौहौ और सृष्टि की उत्पत्ति के समय रजोगुणी रक्तवर्ण ब्रह्मारूप धारण करौहौ संहारके समय तमोगुणी कृष्णवर्ण रुद्ररूप धारण करौहौ २० हे समर्थ श्रीकृष्ण ! हे ब्रह्मादिकन के ईश्वर ! तुम या लोककी रक्षा करिबे के कारण



हमारे यह में प्रकटभये हौ और क्षत्रिय जिनको नाम ऐसे असुरन की सेनाके किरोड़ों यूय जिततित चलायमान तिनकुं मारौगे २१ हे देवतान के ईश्वर ! या दुष्ट कंस ने तुम्हारे जन्मकुं हमारे घर में श्रवण करि तुम्हारे बहुत आता मारे हैं अथ जो कोई कहि देयगो तो सुनि के शत्रु लेके सम्मुख चलयो आवैगो २२ श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित ते कहै हैं कि हे राजन् ! या प्रभार वसुदेवजी स्तुति करि चुके पश्चात् देवकी पुत्रमें महपुरुष भगवान् के लक्षण देखि सुन्दर जिनकी मुसिकानि कंसके भय ते स्तुति करन लागीं २३ अनादि व्यापक ज्योतिःस्वरूप निर्गुण निर्विकार सत्तामात्र चरणदिकन करिके रहित चैष्टारहित जो तुम सो काहु प्रकार जानिये में नहीं आवौ हौ वेद जो हैं सो तुम्हारे स्वरूप को वर्णन करे हैं सो तुम ज्ञानके प्रकाश करनवारे साक्षात् विष्णुहौ २४ जा समय ब्रह्माजी की सौ वर्ष की अवस्था होयहै तब प्रलयकाल में सम्पूर्ण लोक नष्टहोइ हैं पृथ्वी अप् तेज वायु आकाश ये पंचतत्त्व अपने कारख में मिलि जाइहैं ता समय केवल एक

श्वर ॥ सनेवतारंपुरुषैःसमर्पितं श्रुत्वाऽधुनैवाभिसरत्युदायुधः २२ श्रीशुकउवाच ॥ अथैनमात्मजंवीक्ष्य महापुरुषलक्षणम् ॥ देवकीतमुपाधावत्कंसाद्भौ ताशुचिस्मिता २३ देवक्युवाच ॥ रूपंयत्तत्प्राहुर्व्यक्तामाद्यं ब्रह्मज्योतिर्निर्गुणंनिर्विकारम् ॥ सत्तामात्रंनिर्विशेषंनिरीहं सत्त्वंसाक्षाद्विष्णुरध्यात्मदीपः २४ नष्टलोकेद्विपराद्धावसाने महाभूतेष्वदिभूतज्ञतेषु ॥ व्यक्तेऽव्यक्तकालवेगेनयाते भवानेकःशिष्यतेशेषसंज्ञः २५ योयंकालस्तस्यतेव्यक्त्वन्धो चेष्टामाहुश्चेष्टेयेनविश्वम् ॥ निमेषादिवत्सरान्तोमहीयांस्तत्त्वेशानेक्षेमधामप्रपद्ये २६ मर्त्योमृत्युव्यालभीतःपलायल्लोकान्सर्वान्निर्भयंनाध्यगच्छत् ॥ त्वत्पादाब्जंप्राप्ययहच्छयाऽद्य स्वस्थःशेतेमृत्युरस्मादपैति २७ सत्वंघोरादुग्रसेनात्मजान्ब्रह्माहित्रस्तान्मृत्युवित्रासहासि ॥ रूपंचंदंपौरुषंध्यानधिषण्यं माप्रत्यक्षंमांसदृशांकृषीष्ठाः २८ जन्मतेमर्थसौपापो माविद्यान्मधुसूदन ॥ समुद्विज्रेभवद्वेतोः कंसादहमधीरधीः २९ उपसंहारविश्वात्मन् दोरूपमलौकिकम् ॥ शङ्खचक्रगदापद्माश्रयाजुष्टंचतुर्भुजम् ३० विश्वंयदेतस्त्वन्तोनैनिशान्ते यथाऽवकाशंपुरुषःपरोभवान् ॥ विभर्तिसोयंममगर्भगो

आपही अजन्मा शेष रहो हौ २५ हे मायाके मेरक ! यह जो काल है ताकुं तुम्हारी लीला वर्णन करै हैं या काळते विश्वहोय है पळते आदि लोकै वर्णपर्यन्त जाकी गिनती होयहै यह पराद्ध रूप करिके बहो है ऐसे तुम निर्भयरूप तिनकी में शरणागतहू २६ अत्र ये सम्पूर्ण मनुष्य मृत्युरूपी सर्प के भय ते समस्त लोकन में भाज्यो फिरै हैं जाकुं निर्भय स्थान कहूं प्राप्त नहीं होयहै कोई एक पुण्य के फल तें आपके चरणारविन्दकुं प्राप्त होइजायहै तब निर्भय होयके शयन करै हैं मृत्युहू याको पीछो छोड़ि देय है २७ और महाराज अतिभयंकर जाको स्वरूप उग्रसेन को पुत्र कंस ताते हम डरैयैहै सो आप हमारी रक्षाकरो भक्तन के भय के दूरि करनवारे हौ ध्यानकरिये योग्यहौ यह जो आपको स्यामसुन्दर स्वरूप ताको चर्म चतुर्वारेनकुं मति दिखौ २८ हे मधुसूदन ! तुम्हारी जन्म भरे यहां भयो है यह मति जानो तुम्हारे लिये अधोर याको चित्त स्त्रीजाति जो मैं हू सो या कंसके भयते डरपू हूं २९ हे विश्वके आत्मा ! शङ्ख चक्र गदा पद्म करि शोभायमान जो आपको चतुर्भुज स्वरूप याकुं आप क्षिपाइलेव ३० जो तुम पहिले परमपुरुष भगवान् प्रलयसमय विना परिश्रमही समस्त विश्वको अपने उदर में राखौ हौ सो तुम भरे गर्भ

में प्राप्तभये हो यातें या संसारमें बड़ी हांसी होगी ३१ आ१ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् कहें हैं अहो माता तुम अपने पूर्वजन्म की कथा सुनो तुम तो पहिले जन्ममें पृथिनर्भई और ये बसुदेवजी तास-  
मय पापनकरि रहित सुतपा जिनको नाम ऐसे प्रजापतिभये ३२ सो तुम दोउन कुं छष्टिउत्पन्न करिवे के निमित्त जब ब्रह्माजी ने आधाकरी तप तुमने इन्द्रियनको रोकिके के बड़ो तप कियो ३३  
वर्षा पवन धूप जाड़ो गरमी ये कालके गुण तिनकुं सखो और श्वासको रोकिके मनके मैल जिनके दूरिभये ३४ शुष्कपत्र पवनको भोजन करिके मोसे कामनाकुं चाहिके तुमने चित्त शान्तकरि मेरो  
आराधन करयो ३५ हे माता ! मोमें चित्त लगाय करि तुम दोऊन ने बड़ो तीव्र तप कस्यो तपकरत करत बारह हजार वर्ष देवतानके व्यतीत भये ३६ हे निष्पागे ! ताही समय याही देह तें तु-  
म्हारे ऊपर प्रसन्न भयो तप श्रद्धा भक्तिकरि नित्य मेरो हृदयमें ध्यानकरत भये ही ३७ तुम दोनोंकी कामना पूरी करिवे के लिये प्रकट होत भयो जब मैंने कही कि वरमागो तब तुमने यह वर  
भूदहोनुलोकस्यविडम्बनंहितत् ३१ श्रीभगवानुवाच ॥ त्वमेवपूर्वसर्गेभूःपृथिनःस्वायम्भुवेसति ॥ तदायंमुतपानाम प्रजापतिरकल्मषः ३२ युवांविब्रह्म  
णादिष्टौ प्रजासर्गेयदाततः ॥ सन्नियमेन्द्रियभ्रामं तेपाथेपरमंतपः ३३ वर्षवातानपहिमधर्मकालगुणाननु ॥ सहमानौश्वासोधविनिर्धूतमनोमलौ ३४  
शीर्षिपणानिलाहारावुशान्तेनचेतसा ॥ मत्तःकामानभीगसन्तौ मदाराधनमीहतुः ३५ एवंवांतप्यतोस्तीव्रतंपःपरमहुष्करम् ॥ दिव्यवर्षसहस्राणिदाद  
शेयुर्मदारमनोः ३६ तदावांपरितुष्टोहममुनावपुषानधे ॥ तपसाश्रद्धयानित्यंभक्त्याचहृदिभावितः ३७ प्राहुगसंवरदराद्भ्युवयोःकामदितस्या ॥ त्रियतां  
वस्यत्युक्ते मादृशोवांघृतःभुतः ३८ अजुष्टग्राम्यविषयावनवत्यौचदम्पती ॥ नवब्राथेऽपवर्गमे मोहितौदेवमायया ३९ गतेमयियुवांलब्ध्वा वरंसत्सदृ  
शंसुतम् ॥ ग्राम्यान्भोगानभुञ्जथां युवांप्राप्तमनोरथौ ४० अट्टान्यतमंलोकै शीलौदार्यगुणैःसमम् ॥ अहंसुतोवामभवं पृथिनगर्भइतिश्रुतः ४१  
तयोर्वापुनेरवाहमदित्यामासकश्यपात् ॥ उपेन्द्रइतिविख्यातो वामनत्वाच्चवामनः ४२ तृतीयैस्मिन्भवेहंवै तेनैववपुपाथवाम् ॥ जातोभूयस्तयोरेव  
सत्यमेन्याहृतंसति ४३ एतद्वांदांशितंरूपं प्रागजन्मस्मरणायमे ॥ नान्यथामद्भवंज्ञानं मर्त्यलिङ्गेनजायते ४४ युवांमांपुत्रभावेन ब्रह्मभावेनचासकृत् ॥  
मांयो महाराज जो वर देनकी इच्छाहै तो तुम सदृश हमारे पुत्रहोय ३८ विषय जिनने भोगे नहीं और कोऊ पुत्र जिनके नहीं सो तुम मेरी मायामें मोहितहोय के मोतें मुक्तिके न मागो ३९ तासमय  
मैंने तुमकुं वर दियो कि तुम्हारे मोसरीखो पुत्रहोयगो ऐसेकहिके मैं जात भयो और प्राप्त भयो है मनोरथ जिनको ऐसे जो तुमहां सो विषयनको मोह करत भये ४० जब मैंने शील उदारता इन  
गुणनयुक्त अपनी सदृश दूसरो पुरुष या लोक में न देख्यो तब मैं पृथिनगर्भ नाम करि विख्यात तुम्हारे आय के पुत्र भयो ४१ दूसरे जन्म में तुम कश्यप अदिति रूप रहे मैं फिरि अदिति माता  
विप्रे उपेन्द्रनाम करिके विख्यात भयो और तबहीं वामनरूप धरिके वामन विख्यात भयो ४२ तीसरे जन्म में ताही रूप करिके फिरि तुम्हारे जन्मो हों हे माता ! मेरो वचन सत्य जानो देखो तुमने  
एक वर पुत्रको वर मांग्यो मैं तुम्हारे तीन वर पुत्र भयो ४३ पहिले जन्मको स्मरणकरायवे के लिये यह स्वरूप तुम्हें दिलायो है और प्रकार मनुष्य के बालक को रूप धारण करि प्रकट होतो

तौ तुम कहा जानते कि यह परमेश्वर के घर जन्मले है ४४ अब तुम चाहौ पुत्रभाव करि मेरो ध्यान करो मोमें स्नेह करौगे तौ मेरी परमगति कू प्राप्त होउगे ४५ और जो तुमको कंस ते भय है कि या कू मारो तो तुम मो कू गोकुल में नन्दरायजी के घर प्राप्त करो और यशोदा के गर्भ ते प्रकट भई जो मेरी माया ताहि शीघ्र अपने घर कू लै आवो ४६ श्रीशुकदेवजी महाराज राजा परीक्षित ते कहैं कि हे राजन् ! इतनी वार्ता कहि के भगवान् चुप है गये अपनी माया करिके माता पिता के देखत शीघ्रही साधारण वालक होइ गये ४७ जब भगवान् ने वसुदेव जी ते कही तब वसुदेवजी सूतिकाघर ते श्रीकृष्णचन्द्रकू वाहर निकारि वकी इच्छा करत भये ताही समय श्रीनन्दरानी यशोदा के घर योगमाया जन्मलेत भई ४८ ता समय योगमाया ने सम्पूर्ण दारपालन के पुरवासीन के ज्ञान हरिलीने और सबकू सुवाय दीनो जब श्रीकृष्णचन्द्रकू लैके चले तब द्वारन के बड़े बड़े कियारन की लोहकी सांकल आपस आप खुलिये जैव सूर्य के उदय चिन्नयन तौ कृष्णस्नेहौ यास्मैथेमद्रति पराम् ४५ यदि कंस दावि भेषित्वं तहि मांगो कुलनय ॥ मन्माया मानयाशुत्वं यशोदागर्भसम्भवाम् ४६ श्रीशुक उवाच ॥ इत्युक्तासीद्धिरिस्तूष्णी भगवानात्ममायया ॥ पित्रोः संपश्यतोः सद्यो वभूव प्रमाकृतः शिशुः ४७ ततश्च शौरिर्भगवत्प्रचोदितः सुतं समादाय ससूतिका गृहात् ॥ यदा वहिर्गन्तुमिप नर्ह्य जा या योगमायाऽजनि नन्दजायया ४८ तया हतप्रत्यय सर्ववृत्तिपुद्गाः स्थेषु पौरेष्वपि शायितेष्वथ ॥ द्वारस्तु सर्वार्थः पिहि ताडित्यया बृहत्कपाटाय सकीलशृङ्खलैः ४९ ताः कृष्णवाहे वसुदेव आगते स्वयं व्यर्थं न तथा तमोखे ॥ वर्षपर्वजं न्युपांशुगर्जितः शेषोऽन्वगाढा शिनिवार यन्फलैः ५० मघो निवर्पय मक्रुद्यमानुजा गम्भीर तो यौघजवो भि फे निला ॥ भयानकावर्तशताकुलानदी मार्गदौ सिन्धुखिविश्रियः पतेः ५१ नन्दव्रजं शौरिरेष्यत त्रतान् गोपान् प्रसुप्तानुपलभ्य निद्रया ॥ सुनं यशोदाशयने निधाय तत्सुतामुपादाय पुनर्गृहानगात् ५२ देवक्याः शयनेन्यस्य वसुदेवोऽथ दा रिधास ॥ प्रतिमुच्य पदोलोहमास्ते पूर्वं वदाधृतः ५३ यशोदानन्दपत्नी च जातं परमबुध्यत ॥ नतल्लिङ्गं परिश्रान्ता निद्रया पगतस्मृतिः ५४ इति श्री मद्भागवतमे महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे कृष्णजन्मनिवृत्तौ योऽध्यायः ३ ॥

होत अन्वगाढा दूरिहोत है और मन्द मन्द मेव गर्जना करि वर्पत भये पीछे पीछे शेषजी फणकी छाया तें वृन्दकू निवारण करत भये ४९ ५० निरन्तर इन्द्रके वर्धने तें ता समय अतिगम्भीर जाको जल तरंग जामें उठै असंख्यात अपर जामें परें ऐसी श्रीयमुनाजी भगवान् के चरणछुई श्रीवसुदेवजी कू मार्ग देत भई जैसे जानकी के पति श्रीरामचन्द्रजी कू समुद्र या देत भयो ५१ वसुदेवजी गोकुल जाय सम्पूर्ण गोप गोपिनकू सोवते देखिके श्रीकृष्णकू यशोदाजी की शय्या पर सोवाय और उनकी कन्याकू लैके फिर श्रीमथुराजी कू आवत भये ५२ वा कन्याकू देवकी जी की शय्या पें सोवाय के वसुदेवजी चाहौ स्थानमें जाय पावनमें वेड़ी पहिरिलीनी मानो यहा ते गयेई नहीं हैं ५३ अब नन्दरानी श्रीयशोदाजी ने जानी कि कछु भरे वालक भयो और होन समय कछु दुःख न भयो यातें पुत्र भयो कि पुत्री यह न जानी निद्रा में मगन यातें कछु सुवि न रही ५४ ॥ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे कृष्णजन्मनिवृत्तौ योऽध्यायः ३ ॥

(चतुर्थचण्डिकावाक्यमात्रपर्यातिथयः कुलः ॥ दुर्गात्रिभिर्हिभिर्ने कंसो गालादिहिंसनम् ? चौधेअध्यायमेंचण्डिकाजीके वचन सुनकर अत्यन्त भायसे व्याकुल कंस द्रुपदप्रतिग्रहों से बालक आदिकों का मारना ही हित मानता भया ? ) श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित ते कहे है कि हे राजन् ! ता समय बाहर भीतर के सम्पूर्ण पुरके दरवाजे हैं सो पहिले कीमी नाई बन्द हैगये ता पीछे वा बालक मो रुदन श्रवण करिके छयो दीवान उठे उठिके शीघ्र आप देवकी के आठवें गर्भको जन्म जायके कंस ते कछो उद्विग्न जाको मन सो याही गर्भको पीडो देखिरह्यो हो १।२ श्रवण करिके उसी समय शय्याते जल्दी उठिके कंस शीघ्र सूतिकागृह में आवत भयो यवदायके जल्दीमें मार्गमाँ गिरि पत्न्यो मस्तकके वारखुलियये ३ देवकी कंसकुं देखिके दीन हैगई और करुणा जैसे उपजिआवे तैसे वचन कंसते बोली हे मङ्गलरूप ! या कन्या कू मतिमारे जो कदाचित् जीवैगी तो बेरही पुत्रकू व्याहि देखैगी और अग्निको सो जिनको तेज ऐसे बहुत तैने भरे पुत्रमारे पगन्तु बूझा करै दैवने तेरी ऐसी ही दुष्टि

श्रीशुकउवाच ॥ बहिरन्तःपुरद्वारः सव्याः पूर्ववदधृताः ॥ ततो बालध्वनिं श्रुत्वा गृहपालाः समुत्थिताः १ तत्तुर्णमुपव्रज्य देनक्यागर्भजन्मनत् ॥ आचर्युर्भोजराजाय यदुद्विग्नः प्रतीक्षते २ सतल्पाचूर्णमुत्थाय कालोयमिति विब्रलः ॥ सूतीगृहमगाचूर्णं प्रखलन्मुक्कमूर्छजः ३ तमाहभ्रातरं देवी कृपणा करुणं मती ॥ स्तुपेयंतव कल्याण सियं माद्वन्तुमहसि ४ बहवो हिंसाभ्रातः शिशवः पात्रकोपमाः ॥ तया दैवनिमृष्टेन पुत्रिकैका प्रदीयताम् ५ नन्वहं ते ह्यवरा दीना हतसुताप्रभो ॥ दातुमहसिमन्दाया अङ्गेमांचरमांप्रजाम् ६ शशिरुउवाच ॥ उपगुह्यात्मजाभवं रुद्रयादीनदीनवत् ॥ याचितस्त्वं निमित्तस्य हस्तादाचिच्छिदेखलः ७ तागृहीत्वा चरणयोजं तमात्रां स्वसुः सुताम् ॥ अपोथयच्छिलापृष्ठे स्वार्थेन्मूलितसौहृदः ८ सातच्छस्तारमसुरस्य सव्यो देव्यम्बरंगता ॥ अट्टशयतानुजाविष्णोः सायुवाष्टमहाभुजा ९ दिव्यस्रग्भराले परलाभरणभूषिता ॥ धनुःशूलोपचर्माभिः शङ्खचक्रगदाधरा १०

सिद्धचारुणगन्धर्वस्रः किन्नरोरगैः ॥ उपाहतो रुत्रलिभिः स्तूयमाने दमवतीत् ११ किंमयाहनयामन्द जातः खलु तवान्तकृत् ॥ यत्र कंचापूर्वशत्रुमर्हिंसीः करि दीनी अत्र या एक कन्याकू मागे दे मतिमारे ४। ५ हे सामर्थ्यवान् ! बहुत पुत्र जाके भरे ऐसी पै दीन तेरी छोटी बहिन मन्दयागिनी कू अन्तकी पीठयोछनी कन्याकू दू दे ६ श्रीशुकदेवजी महा- राज परीक्षित ते कहे है कि हे राजन् ! या प्रकार देवकी कंसते कहिके कन्या कू छाती ते लगाइ के अतिदीनकी नाई रुदन करै कछु दीन तो नहीं है किन्तु मनमें मसन्न है जानै है कि मेरो पुत्र तो और स्थान पै पहुँच गयो है और यह कन्या योगमाया है याके हाथ लगे नहीं याते रुदन करै है तथागि देवकी के हाथ में ते दुष्टने हठते कन्या भयकिल्लीनी अत्यन्त नम्रहोईके नह्यो तोऊँ दुष्टने न मागी ७ तुरतकी उत्पन्न भई बहिन की कन्या के चरण पकरिके जोर से शिला के ऊपर देमारी अपने मतलब के छिये भीतिको न गिन्यो ८ वह कन्या कंसके हाथते उछेदिके, कंसके भाये में लातेके तत्काल ही देवी को रूपधरिके आकाशकू जात भई शङ्खन सहित आठ जाती महाभुजा ऐसी विष्णुकी छोटी बहिन देखिने में आई ९ दिव्यमाला पहिरे चन्दन जाके लगिरह्यो दिव्यरत्न नदित आ-

भूषण करि शोभायमान धनुष त्रिशूल ढाल तरवार शंख चक्र गदा इनकुं धारण करे १० सिद्ध चारण गन्धर्व अप्सरा किन्नर नागन ने वड़ी बड़ी भेंट दीनी और स्तुतिकरी तब वह यह बोली ११ अरे मूर्ख ! मेरे मारे ते तेरे हाथ कहा लगेगो तेरे मारिवेचारी पहिलेई यह जहां तहां प्रकट है डुक्यो है अरे छुपण ! बालकनकुं दृष्टा क्यों मारै है १२ यामकार भगवानकी देवी योगमाया कंस ते कहति भई और बहुत स्थानन पर दुर्गा भद्रकाली इत्यादिक नामन करि प्रकाशित होतयई १३ या प्रकार योगमायाको वचन श्रवणकरि कंसको वड़ो विस्मयभयो देवकी वसुदेव के पांइन में ते वड़ी खुलवाइ डारी हाथ जोरि करिके यह वचन कहतिभयो १४ अहो वहिना ! अहो पापी ने तुम्हारे बहुत बालक मारे जैसे कोऊ राजस अपने पुत्रन कूं मारै है १५ और देलो करुणा मैने छोड़िदीनी जाति के हितकारी सम्पूर्ण छोड़ि दिये अहो मैं दुष्ट कौन लोकमें जाऊंगो ब्रह्महत्यारे की नाई जीवतेही मरे बराबर हों १६ और केवल मनुष्यही मिथ्या बोलैं यह बात कृपणान्दथा १७ इतिप्रभाष्यतेदेवी मायाभगवतीभुवि ॥ बहुनामानिकेतेपु बहुनामावभूवह १८ तथाऽभिहितमाकर्ण्य कंसःपरमविस्मितः ॥ देवकीव सुदेवश्च विमुच्यप्रश्रितोऽव्रीत् १९ अहोभागिन्यहोभाम मयावां वतपाप्माना ॥ पुरुषादइवापत्यं बहवोहिंसिताःसुताः १५ सत्वहत्यक्रकारुण्यस्य

कृत्नातिसुहृत्खलः ॥ काल्लोकान्वैगमिष्यामि ब्रह्मेहवमृतःश्वसन् १६ दैवमप्यनुतंवाक्कि नमर्त्याएवकेवलम् ॥ यद्विश्रम्भादहंपापः स्वमुनिहतवाञ्छा शून्य १७ माशोचतंमहाभागावात्मजान्स्वकृतंभुजः ॥ जन्तवोनसदैकत्र दैवाधीनाःसहासते १८ भुविभौमानिभूतानि यथायान्यपयान्तिच ॥ नायमा त्मातैथैतेपु विपर्यैतितथैवभूः १९ यथाऽनेवंविदोभेदो यतआत्माविपर्ययः ॥ देहयोगवियोगौच संसृतिर्ननिवर्तते २० तस्माद्भेदस्वतनयान्मयाव्यापा दितानपि ॥ मानुशोचयतःसर्वः स्वकृतंविन्दतेऽवशः २१ यावद्धतोऽस्मिहन्ताऽस्मीत्यात्मानंमन्यतेस्वहृक् ॥ तावत्तदभिमान्यज्ञोबाध्यवाधकतामिया

त २२ क्षमध्वंममदौरात्म्यं साधवोदीनवत्सलाः ॥ इत्युक्त्वाऽशुमुखःपादौश्यालःस्वस्तोऽथाग्रहीत् २३ मोचयामासनिगडाद्विश्रब्धःकन्यकागिरा ॥ दे नहीं किन्तु देवताह मिथ्या बोलैहै देखो आकाशनागी के कहे तें मोपापी ने वहिनके पुत्र मारे १७ अहो वधुभागियो ! तुम पुत्रनको शोक मतिकरो ये जीव अपने करे को भोगभोगैं दैव के अधीन जीवहै सर्वदा इनको एकत्र नहीं रखै है १८ जैसे पृथ्वी के विकार घट पट इत्यादिक उत्पन्न होइ हैं और फूटिजाई हैं इनके होवे में पृथ्वी को विकार नहीं आवै है तैसेही देहतेही जन्मै है और मरे है देहन के संग आत्मा नहीं मारै है १९ जे पुरुष ऐसे नहीं जानैं हैं वे देहकूं आत्मा मानैं है और देहकूं आत्मा माने तें अहन्तवं ये नाना बुद्धिभेद उदय होइ हैं या भेद तें पुत्रादिकनेके देहनमें योग वियोग होइ है यते उनके अज्ञान की निवृत्ति नहीं होइ है २० हे मङ्गलरूपिणी ! मैने तुम्हारे पुत्र मारे हैं तोऊ तुम उनको शोच मतिकरो सम्पूर्ण जीव वेवश होयके अपने कर्म के फलको भोगैं हैं २१ यावत्पर्यन्त अज्ञानीपुरुष अपने कूं मानैं है कि मरूं हूं मारूं हूं तावत्पर्यन्त देहाभिपानी अज्ञानी पुरुष मारै हैं मारै हैं २२ अब तुम मो दुष्ट पर जपारो साधु मनुष्य दीनपर दयाही करै

है यह कहिके अशु जाके नेत्रमें भरिआये ऐसे कंस देवकी वसुदेव के चरणों में गिरिपरथो २३ तेरो मारनवारो कहूँ उत्पन्न होय चुक्यो है यह वाक्य आकाशवाणीको श्रवण करि विश्वास जाको आइगयो ऐसो कंस ताने देवकी वसुदेवजी के पावन में तें बेड़ी काटिदीनी और अपनी सहृदता स्नेह जतावतभयो २४ देवकी भयया कंसकूँ अतिव्याकुल देखिके जमाकरि अपने रोपकूँ त्यागतभई और वसुदेवजी भी मुसिकाय के कसते यहबोले २५ हे महाभाग कंस! जैसे तुम बहो हो यह बात तैतेही है देहधारीनकूँ अज्ञानते अहङ्कार होयहै या अहङ्कारने मेरो तेरो भेट कराय दियो है २६ शोक हर्ष भय द्वेष लोभ मोह जिनकूँ लगिरहे हैं वे पुरुष इन चोरो करिके आपही मरै हैं उन्हें कौन मारै है ईश्वर परमात्माकूँ नहीं देखै हैं यत्ने में मरूँ हूँ ऐसे मानै हैं २७ अत्र श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् ते कहै हैं कि हे राजन्! या प्रकार प्रसन्नहै श्रद्धायुक्त-जिनको मन ऐसे देवकी वसुदेवजी तें कंस आज्ञा ग्रहणकरि अपने स्थानकूँ गयो २८ जैसे तैसे वह रात्री व्यतीतभई, पश्चात् मातःकाक

वर्कवसुदेवश्च दर्शयन्नात्मसौहृदम् २४ आतुःसमनुतप्तस्य ज्ञान्तरोपाचदेवकी ॥ व्यसृजद्धसुदेवश्च प्रहस्यतमुवाचह २५ एवमेतन्महाभाग यथावद्व सिद्धेहिनाम् ॥ अज्ञानप्रभवाऽहंघीः स्वप्रेतिभिदायतः २६ शोकहर्षभयद्वेषलोभमोहमदान्विताः ॥ मिथोघ्नन्तेनपश्यन्ति भावैर्भावपृथग्दृशः २७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ कंसएवंप्रसन्नाभ्यां विशुद्धंप्रतिभाषितः ॥ देवकीवसुदेवाभ्यामनुज्ञातोऽविशद्वहम् २८ तस्यांराज्यंव्यतीतायां कंसआह्वयमन्त्रिणः ॥ तेभ्यआचष्टतत्सर्वं यदुक्तंयोगनिद्रया २९ आकर्ण्यभर्तुर्गदितं तमूचुर्देवरात्रवः ॥ देवान्प्रतिकृतामर्षां देतेयानातिकोविदाः ३० एवंचेत्तर्हिभोजेन्द्रपुरा मन्त्रजादिषु ॥ अनिर्दशान्निर्दशांश्च हनिष्यामोऽद्यवैशिशून् ३१ किमुद्यमैः करिष्यन्ति देवाः समरभीरवः ॥ नित्यमुद्विग्नमनसो ज्याघोर्पैर्धनुस्तव ३२ अस्यतस्तेशरात्रौर्हन्यमानाः समन्ततः ॥ जिजीविषवत्सृज्य पलायनपराययुः ३३ केचित्प्राञ्जलयोदीनान्यस्तशस्त्रादिवौकसः ॥ मुक्तकञ्चशिखाः केचिद्भिताः स्मद्विवादिनः ३४ नत्वंविस्मृतशस्त्रास्त्रान् विरथान्भयसंवृतान् ॥ हंस्यन्यासंक्रविसुखान् भग्नचापानशुध्यंतः ३५ किंक्षेमशूरैर्विविधैरसंयु

भयो ता समय कंसने मंत्री बुलाये और योगमायने कही तेरे मारनवारो उत्पन्न होय चुक्यो है सो यह बातो सम्पूर्ण मंत्रीन प्रति कही २६ कंसको बंचन श्रवणकरि मंत्री कहै हैं कि हे भोजवंशीन के इन्द्र! तुम्हरो मारनवारो कहूँ है चुक्यो है तो कहा चिन्ताहै पुर ग्राम त्विरक इत्यादिक जितने स्थानहैं तिनमें दश दश पाँच पाँच दिन के बालकनकूँ हम मारिआवैगे इनहीं में तुम्हरो मारनवारो भी आया जायगो ३० ३१ रणके विषे हरपनहारिजे देवता ते कहा पराक्रम करैगे तुम्हारे धनुष की टंकार सुनिके मन जिनके कंपायमानकूँ प्राप्त होयैगे ३२ जासमय धनुषमें लगायके बाणनकी चारोओर ते मारदेचहौ तासमय देवता आपनो नीच लैके मार्ग छोडि के भाजि जायहैं भाजनेही जिनके अष्टहै ३३ कोई देवता रणमें शस्त्र त्याग करि अपने को दीन जानिके हाथ जोरिलेयह और कोई देवता हम तें द्रै हैं ऐसे कहै हैं ३४ आपके सम्मुख शस्त्रन की गति धुक्किगये रथ जिनके दृष्टिगये भय करिके भाजनमें जिनके मन लगे संग्रामते विमुख धनुष जिनके दृष्टिगये युद्ध न करै ऐसे देवतानकूँ तो तुम



मारौही नहींहो ३५ संग्रामके विना निर्भय स्थानमें बैठिके चक्रवाद् करनवारे देवता कहा पराक्रम करैगो इलाहृत खंडको रहनवारो जहां पुरूप जायके स्त्रीरूप होयजाय ऐसो महादेव कहाकरैगो ३६ थोड़ो जाको पराक्रम और यत्किंचित् विपत्ति परै तो भगवान्के पास भाज्यो जाय ऐसो इन्द्र कहा करैगो वेदनको वांचनवारो ब्रह्मा कहा करैगो तेहु देवता चैरी हैं छोड़िने लायक नहीं हैं यह जानि देवतानकी जड़ उखरिवे के लिये आज्ञाकारी हम हैं तिनकुं आप आज्ञाकरो या प्रकार समस्त मंजीन ने कही ३७ जैसे शरीर में रोग बिना उपायकरे जड़ पकरि जाय है पश्चात् मनुष्यते वाको उपाय नहीं होय सकै है और जैसे योगीजन प्रथम इन्द्रियन करि विषय भोग करिके पश्चात् विषयन ते इन्द्रियन को रोकौ चाहै तो नहीं रुकि सकै हैं ऐसेही शत्रु छोड़ो जानि छोड़े पीछे प्रवल होने ते जीतिवे में नहीं आवै है ३८ समस्त देवतानके मूल अर्थात् जड़ विष्णु हैं और विष्णुको मूल गविकरथनै ॥ रहोजुपाकिंहरिणा शम्भुनावान्नो कसा ३६ किमिन्द्रेणाल्पवीर्येण ब्रह्मणवातपस्यता ॥ तथाऽपिदेवाःसापत्न्यान्त्रोपेक्ष्यादितिमन्महे ॥

ततस्तन्मूलखने नियुङ्क्ष्वास्माननुव्रतान् ३७ यथामयोऽद्वैतसमुपेक्षितो न भिर्नाशकयतेरूपदश्चिकित्सितुम् ॥ यथेन्द्रियग्रामउपेक्षितस्तथा सिधुर्महान् बद्धबलोनचाल्यते ३८ मूलंहिविष्णुर्देवानां यत्रधर्मःसनातनः ॥ तस्यचब्रह्मगोविप्रास्तपोयज्ञाःसदक्षिणाः ३९ तस्मात्सर्वोत्तमनाराजन् ब्राह्मणान्ब्रह्मवा दिनः ॥ तयस्विनोयज्ञशीलान् गाश्चहन्मोहविह्वलाः ४० विप्रागावश्चवेदाश्च तपःसत्यं दमःशमः ॥ श्रद्धादयातितीक्षाच क्रतवश्चहरेस्तनूः ४१ सहिसर्वसुराध्यक्षो बभूवुरादिगुहाशयः ॥ तन्मूलादेवताः सर्वाः सेश्वराः सचतुर्मुखाः ॥ अयं वै तद्वधोपायो यदृपीणां विहिंसनम् ४२ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवं दुर्मन्त्रिभिः कंसः सहसंमन्यदुर्मतिः ॥ ब्रह्महिंसां हितं मेने कालपाशावृतोऽसुरः ४३ सन्दिश्य साधुलोकस्य कदने कदनाप्रियाच ॥ कामरूपधराच्छु दानवान् गृहमाविशत् ४४ तैर्वैजः प्रकृतयस्तमसा मूढचेतसः ॥ सतां विद्वेषमाचेरुरारादागतमृत्यवः ४५ आयुः श्रियं यशोधर्मं लोकानाशिप एव च ॥ हन्ति श्रेयां सि सत्सर्वाणि पुंसो महदतिक्रमः ४६ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥ ॥ ॥ ॥

सनातन धर्म है और वेद गौ ब्राह्मण तप तथा दक्षिणा सहित यज्ञ ये समस्त धर्म के मूल हैं ३९ हे राजन् ! कंस ता कारण ते सर्वप्रकार करिके वेद पढ़नवारे और तपस्वी और यज्ञ करनवारे ब्राह्मणन को और होम के द्रव्यकी पूर्ण करनवारी गऊनको हम मारेंगे ४० विप्र गऊ वेद तप सत्य दम शम श्रद्धा दया तितित्ता यज्ञ ये समस्त हरि भगवान् के शरीर हैं ४१ सो हरि सम्पूर्ण देवतान में मुख्य असुरनके द्रोही सबके अन्तःकरणमें विराजमान हैं और समस्त देवता महादेव ब्रह्मा इन सबको मूल ऋषीश्वर इनको वध करिवो यही वाको वध करिवे को उपाय है ४२ अब श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित ते कहै हैं कि हे राजन् ! दुष्ट जाकी बुद्धि कालकांसी में बँध्यो ऐसो असुर कंस सो दुष्ट मन्त्रीन सहित ऐसे विचार करिके ब्राह्मणनके मारिवेतें अपनो कल्याण मानत भयो ४३ साधुन के कष्ट देवे में कष्ट जिनकुं प्यारो इच्छापूव्वक रूपकुं धारण करै ऐसे दानवनकु पठवायके अपने घरकुं कंस आवतभयो ४४ रजोगुणी तमोगुणी जिनके स्वभाव अज्ञान





यमान जिनके कुच ऐसी गोपिका दायन में भंटे लैलैके शीघ्रही नन्दरायजी के घर जात भई १० उज्ज्वल मणिन के जड़ाऊ कुण्डल कानन में पहिरे अतिसुन्दर मोतीन के हार हृदयके ऊपर विराजमान तिन करिके परमशोभायमान स्तन जिनके ऐसी गोपीन के समूह नन्दरायजी के मन्दिरकूं जाती भई तासमय मार्ग में अतिशोभा प्राप्त होत भई ११ तब गोपिका नन्दरायजी के घर आईके श्रीकृष्णचन्द्रकूं आशीर्वाद देत भई अहो कृष्ण ! तुम चिरंजीव २ और लाला तुम बहुत दिन पर्यन्त हमारी रक्षाकरो या प्रकार बालककूं आशीर्वाद देत दृष्टी चूण तेल जलसूं आपुस में खिरकत श्रीकृष्णचन्द्रके चरित्रकूं गावत भई १२ विश्वके ईश्वर भगवान् अन्त जिनको नहीं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र जा समय व्रज में आये ता समय मनुष्यनके बड़े उत्सवमें मन यातें नाना प्रकार के बाजे बजावत भये १३ व्रजवासी प्रसन्न होयके दही दूध घृत जलनकूं आपुसमें खिरकत गावत भये और माखन के लोढ़ा फैंकत भये १४ अतिउदार है चित्त जिनको ऐसे नन्दरायजी सूत जागा बन्दीजननकूं और जे कोऊ गुणीजन हैं गवैया तिनको वस्त्र आपूषण गऊन को दान करत भये १५ विष्णु भगवान् मोपै प्रसन्न होई और यह मेरो पुत्र चिरंजीवरदे या कारणते अति उदार है चित्त जिनको ऐसे नन्दरायजी के समीप जे मनुष्य गुणीजन जा जा वस्तुकी कामना करिके आये हैं उनकूं उही वस्तुदैंके यथायोग्य सयको पूजन करत भये १६ ॥

सुमृष्टमणिकुरण्डलनिष्ककण्ठयश्चित्राम्बराः पथिशिताच्युतभाल्यवर्षाः ॥ नन्दालयंसवलयाव्रजतीर्विरेजुर्व्यालोलकुण्डलपयोधरहारशोभाः ११ ता आशिपः प्रशुआनाश्चिरं पाहीति बालके ॥ हरिद्राचूर्णतैलाद्भिः सिञ्चन्त्योजनमुज्जगुः १२ अवाद्यन्तं विचित्राणि वादित्राणि महोत्सवे ॥ कृष्णे विश्वेश्वरेन गोधनम् ॥ सूतमागधवन्दिभ्यो येन्ये विद्योपजीविनः १५ तैस्तैः कामैरदीनात्मा यथोचितमपूजयत् ॥ विष्णोराधनार्थं स्वपुत्रस्योदयाय च १६ ॥

अथ श्रीकृष्णचन्द्रस्य जन्मपत्रमाह ॥

आत्मारामो मथुराचरितो भक्तियोगविधायकः । नानालीलारसरचनयानन्दयिष्णन्स्वभक्तान् । दैत्यानीकैर्भुवमंतिभारं वीतभारां करिष्यन् । मूर्तानन्दो ब्रजपतिर्युहजतवत्पादुरासीत् ॥ १ ॥ स० ॥ पूत सपूत जन्यो जसुधा इतनी सुनिकै वसुधा सब दौरी । देवनकोहि अनन्द भयो सुनि धावत गावत भंगल गौरी ॥ नन्द कछु इतनो जो दियो धनपल कुवेरहु की गति बौरी । देखतही जो लुटाय दियो न बची बखिया बखिया न पिबौरी ॥ २ ॥ ब्रह्मादयोपि निजधामगंत निशम्य कोलाहल ब्रजपरे परमदुस्तबोत्यम् । तत्रागताः कवि विचित्र विरक्तवेशा नन्दात्मजस्य सुखदर्शनमर्थयन्ति ॥ ३ ॥ गई विधि लोकमौह परम उच्चाह धुनि देवनके साथ सुनि छटिनाय आपैह । ज्योतिषी को स्वांग घाल तिलक विशाल भाल शीश में सुपाग लाल जाया भयकायेह ॥ कटि करफंटा बाधे कालमें सुपोथी साधे सभाभीध राजे अज आशिप जतायेह । कांखसों सुपोथी काढ़े मन्त्रमें विचार बाढ़े जनमसुपन्न फल सबही सुनायेह ॥ ४ ॥ स्वस्तिश्रीसौख्यदात्री सुतजनननीपुष्टि तुष्टिमदात्री पाश्र्व्योत्साहकर्त्री गतभवसदसत्कर्मणां व्यञ्जयित्री । नानासंपदिसात्री धनकुलयशसापायुषो बर्द्धयित्री । सर्वापदि ब्रह्मन्त्री गुणगणमहि तोलियते जन्मपत्री ॥ ५ ॥ अथ शुभसंवत्सरोत्स



तुल भाहि तुल्यो नहि तुल्य लखावे ॥ पुत्र प्रपौत्रन व्याह वरै बहु खर्च करै खलु कोहि नशावे । जानि परै जनु पूरण ब्रह्म धख्यो अवतार धरा में सुहावे ॥ ६ ॥ रानि समेत सुन्यो फल को बजराज खुशी मनमोद मचायो । पूजनको सब साज सज्यो द्विजराज को पूजि महामुद पायो ॥ आशिप दै अज लोक गयो यहँ आनहुँ स्वाग भयो मन भायो । लालको गोद लये नंदराजी चली द्विज शक्तिको भक्ति दिलायो ॥ १० ॥ दो० ॥ शक्ति कलितहै ललित यह पढ़ै मुनै मनलाय । ताके करतल चारि फल दुर्लभ कछु न लखाय ॥ १ ॥ नन्दरायजी के घर सम्पूर्ण ब्रजव्यू आई परन्तु रोहिणीजी नहीं आई किस कारण ते कि इनके पति मथुरा में हैं जा स्त्री को पति परदेशमें हो सो स्त्री अपना शृङ्गार न करै और पराये घर न जाय यह शास्त्रको आज्ञा है ता समय नन्दरायजी जायके रोहिणीजी ते कही कि तुम तौ बड़ी भागिनी हो चलो क्यों न आज हमारे बधाई भई है ऐसे नन्दरायजी की आज्ञा मानिके अच्छे सुन्दर वस्त्र और मोतिन के हार सुन्दर धुकधुकी पहिरि शृङ्गार करि बनिठनि के आवति भई १७ जब तें या ब्रज में श्रीकृष्णचन्द्र प्रकटभये तब तें नन्दरायजी सम्पूर्ण सम्पत्तिन करिके परिपूर्ण होइगये हैं हे राजन् परीक्षित ! जहा

रोहिणीचमहाभागानन्दगोपाभिनिन्दता ॥ व्यचरहिद्विवासाःस्रक्कण्ठाभरणभूषिता १७ ततआरभ्यनन्दस्यब्रजःसर्वसमृद्धिमात्र ॥ हरेर्निवासात्मगुणैर  
माक्रीडमभूद्रूप १८ गोपानगोकुलारक्षायां निरुभ्यमथुराङ्गतः ॥ नन्दःकंसस्यवार्पिक्यं करंदातुंकुरुदह १६ वसुदेवउपश्रुत्य आतंरनन्दमागतम् ॥ ज्ञा  
त्वादत्तकराज्ञे ययौतदवमोचनम् २० तंहृष्टासहसोत्थाय देहःप्राणमिवागतम् ॥ प्रीतःप्रियतमंदोभ्यां सस्वजेप्रेमविह्वलः २१ पूजितःसुखमासीनःपृष्ट्वा  
नामयमादृतः ॥ प्रसक्तधीःस्वात्मजयोरिदमाहविशांपते २२ दिष्ट्याभ्रातःप्रवयसइदानीमप्रजस्यते ॥ प्रजाशायानिवृत्तस्य प्रजायत्समपद्यत २३ दि  
ष्ट्यासंसारचक्रेऽस्मिन् वर्त्तमानःपुनर्भवः ॥ उपलब्धोभवानद्य दुर्लभांप्रियदर्शनम् २४ नैकत्राप्रियसंवासः सुहृदांचित्रकर्मणाम् ॥ ओघैनव्यूहमानानां

हरि नारायण प्रकट भये ता ब्रज में लक्ष्मी आप क्रीड़ा करत भई १८ अहो राजन् परीक्षित ! नन्दरायजी गोपनको सर्वप्रकार गोकुलकी रक्षाकरिवे में नियुक्त करिके आप कंसकूं वर्ष दिनको कर देवे के लिये मथुराजी कूं जातभये १६ अब नन्दरायजी आये हैं और कंस कूं कर दैचुके हैं यह वाची वसुदेवजी अवण करिके नन्दरायजी के स्थानपै वसुदेवजी मिलिवे कूं आवत भये २० अब जैसे देहमें प्राण आये ते देह उठै है ऐसे वहे प्यारे वसुदेवजी कू आये देखिके नंदराय जी शीघ्र उठिके आप हाथन तें पकरिके प्रेममें विह्वल होइके अपनी छाती मूं लगायके मिले २१ नन्दराय जी ने वसुदेवजी की पूजाकरी और सुखपूर्वक आसनपै वैठारिके कुशलत्तैम पूछतभये सो हे राजन् परीक्षित ! पुत्रनमें मन जिनको लय्यो ऐसे वसुदेवजी नन्दजी ते यह बोले २२ अहो भैया नन्दजी ! तुम्हारे पुत्र नहीं होत रहो पुत्र होइवेको आसरो नहीं हो सो अब बहुत अवस्थायें तुम्हारे पुत्र भयो यह बड़ो मंगलभयो २३ या ससारमें रहिके पुनर्जन्मकी नाई तुम्हारे मिलाप भयो यह बड़ो मंगल भयो अपने प्यारेनको दर्शन या समयमें बड़ो दुर्लभ है २४ अहो प्यारे ! प्यारे जिनके कर्म ऐसे अपने प्यारे मित्रहैं तिनको एक ठौर वास नहीं होय है जैसे नदीके प्रवाहमें बहते



देखकर तिसकी मृत्यु सुनकर विस्मितहुये ? ) श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित ते कहै हैं कि हे राजन् ! अब नन्दजी मार्गमें यह विचार करतभये भाई वसुदेवजीको वचन मिथ्या तो नहीं होइ है उ-  
त्पातके आइये तें डरपिके नारायणकी शरण होतभये कि महाराज यह तुमने पुत्र दियो है तुमहीं याकी रत्नाकरोगे ? घोर जाको रूप बालकनकी मारनवारी पूतना कंसकी पठाई पुर ग्रामकूं आदि  
लैके बालकन कूं मारत डोलै है २ यह बात श्रवण करिके राजा परीक्षित के मनमें एंका भई कि महाराज वह पूतना नन्दजी के महल में गई होइगी तथा शुकदेवजी कहै हैं कि राजा चिन्ता मति  
करो उहां जायगी तौ परैगी राजसन के नाश करनवारे जा स्थान में यज्ञादिक कर्म और परपेश्वरकी कथा स्मरण कीर्तनादिक नहीं होई है तथा राजासिनी मृदुच होइके अपनो पराक्रम करै है  
और जिन भगवान् के नाम स्मरण को यह प्रभावहै तहां साक्षात् आपही है तहां पूतना की कहा सामर्थ्य जो उनकूं मारे ३ आकाश की विचरनवारी इच्छापूर्वक रूप धरनवारी ऐसी वह पूतना  
मायाते अपनो स्त्री रूप बनाय के श्रीनन्दरायजी के गोकुल में जातभई ४ चोटी में मल्लिका के फूल जाने गुहै हैं वड़े नितम्ब स्तन जाके सूक्ष्म जाकी कमर सुन्दर बदन कूं धारण करे और हलैं जो  
कानन के कर्णफूल तिनकी कान्तिते शोभायमान जो केरु तिनकेशनकरि शोभायमान जाको मुखहै ५ वनवासीन के मनकूं मोहै ऐसी जाकी मुसिकाति सुन्दर जाकी चितवनि ता चितवनि करि व्रजवा-

चारनिधनन्ती पुरग्रामग्रजादिपु २ नयत्रश्रवणादीनि रक्षोघनानिस्वकर्मसु ॥ कुर्वन्ति सात्वतां भर्तुर्यातुधान्यश्च तन्नहि ३ साखेत्र्यैकदोषेत्य पूतनानन्दगो  
कुलम् ॥ योपित्वामाययात्मानं प्राविशत्कामचारिणी ४ तां केशन्धव्यतिपक्कमल्लिकां बृहन्नितम्बस्तनकृच्छ्रमध्यमाम् ॥ सुवासंसंकास्पितकरणभूषणत्वयो  
स्तत्कुन्तलभूपिताननाम् ५ वल्लुस्मितापाह्नविसर्गवीक्षितैर्मनोहर्त्तां पतिनां ब्रजौकसां ॥ अमं सताम्भोजकरणरूपिणीं गोप्यः श्रयद्रुमित्रागतां प  
तिम् ६ बालग्रहस्तत्र विचिन्वती शिशून् यदृच्छयानन्दगृहेऽसदन्तकम् ॥ बालं प्रति चञ्चलनिजोरुतेजसं ददर्श तत्पेऽग्निमिवाहितं भसि ७ विबुध्यान्तर्बाल  
कमारिकाग्रहश्चारात्मासनिमीलितेक्षणः ॥ अनन्तमारोपयदङ्कमन्तं यथोरंगं सुसमबुद्धिरञ्जुधीः ८ तां तीक्ष्णचित्तामतिवामचेष्टितां वीक्ष्यान्तराको

सिनी मोहितहोइके बा पूतना कूं मने न करतभई और हाथमें कमल फिरावत आई याते गोपीन ने जानी कि अपने पति नारायण के देखिये कूं लक्ष्मी आई है यातें यशोदा रोहिणी और गोपीन ने  
मने न करी ६ बालकन कूं ग्रहरूप जो पूतना सो छोटे छोटे बालकन कूं दूइत अकस्मात् गोकुल में श्रीनन्दरायजी के महल में आवतभई दुष्टन के मारनवारे भगवान् भस्ममें ढकी अग्निकीसी नाई  
बालकरूप में अपनो तेज जिनने छिपाय राख्यो है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शय्या ऊपर सोवै हैं तिनहें देखतभई ७ स्थावर जंगम जीवनके अन्तर्यामी श्रीकृष्णचन्द्र पूतना कूं बालकन के मारनवारी नाई  
रूपी जानिके नेत्र मूंदतभये भगवान् के नेत्र मूंदिये को कारण कहा कि मेरी शुद्ध दृष्टि जाके ऊपर परैगी तो याको शुद्ध मन होइ जायगो स्तननमें विप लागय के मारियेकूं आई है यह मनोरथ (सद्  
भयानकी तरवार होइ है तैसे भीतरतें जाको चित ऊपरतें मनोहर जाकी चेष्टा ऐसी सुन्दर स्त्री पूतना नन्दरायजी के घरके भीतर आई देखि वाके तेजको रोहिणी यशोदा चकित होयके ठाढ़ी



देखतरहीं कछु न कही ९ तरां गोर जाको रूप ऐसी पूतना श्रीकृष्णचन्द्रकू गोदमें लैके और भयानक विप जाँमें लग्यो ऐसी स्तन मुखमें देतभई श्रीकृष्णचन्द्र भी क्रोय करिके दोनों हाथन ते कसिके पकारि के प्राणसहित स्तनकू औपधरूप मानिके पीवतभये १० पूतना यह कहतभई अरे लाल ! छोटिदे छोटिदे वसकर वसकर ऐसे पुकारनलगी मर्मस्थलनमें पीड़ा जाके होती भई नेत्र जाके फटि गये हाथ पाँव बेर पटकत देहमें पसीना जाके आय गयो पुकारि के रुदन करतभई ११ पूतनाके रुदन को वझो शब्द भयो ता शब्द तें पर्वतन सहित पृथ्वी कंपनलगी ग्रह तारागण रसातल ये सम्पूर्ण हलनलगे और दिशानमें गर्जनाभई मानो इन्द्रके वज्रगिरिवे की शङ्काकरिके मनुष्य पृथ्वी में गिरतभये १२ दुःखित जाको शरीर प्राण जाके जातरहे ऐसी पूतना हे राजन् परीक्षित ! मुख जाने फारिदियो हाथ पाँव फैलाय दिये मरती समय कपट जाने अपनी त्यागदियो राज्ञसीरूप प्रकट करिके जैसे इन्द्रके वज्र को पारो वज्रासुर गिरो है तैसे पृथ्वी पर गिरतभई १३ हे राजन्

शपदिच्छदासिवत् ॥ वरस्त्रियंतप्रभयाचधर्षिते निरीक्षमाणे जननीह्यतिष्ठताम् ६ तस्मिन्स्तनंदुर्जस्वीर्यमुत्पणं घोराल्क्ष्मादाय शिशोर्दिवाय ॥ गाढं कराभ्यां भगवान्प्रपीडयत् प्राणैः समं रोषमन्विताऽपिवत् १० सामुञ्जमुञ्जालमिति प्रभापिणी निष्पीडयमानाऽखिलजीवमर्माणि ॥ निवृत्त्यनेत्रचरणैर्भुजो मुहुः प्रस्विन्नगात्राक्षिपतीरुोदह ११ तस्याः स्वनेनातिगभीरं हंसासादिर्महीद्यौश्च चालसग्रहा ॥ रसादिशश्रप्रतिनेदिरजनाः पेतुः क्षितौ वज्रनिपातशङ्कया १२ निशाचरीत्यं व्यथितस्तनव्यमुन्यादाय के शांश्चरणौ भुजावपि ॥ प्रसार्य गोष्ठे निजरूपमास्थिता वज्राहतो वृत्रइवापतन्तुप १३ पतमानोपि न देहस्त्रिगव्यूत्यन्तरदुमान् ॥ चूर्णयामास राजेन्द्र महदासीत्तदद्भुतम् १४ ईषामात्रो ग्रंदप्रास्यं गिरिकन्दरनासिकम् ॥ गण्डशैलस्तनैरौद्रं प्रकीर्णां रणसूद्धं जम् १५ अन्धकूपगभीराक्षं पुलिनारोहभीषणम् ॥ बद्धसेतुभुजोर्विद्विशून्य तोयद्रदोदरम् १६ सन्तत्रसुःस्मृतद्वीक्ष्य गोपागोप्यः कलेवरम् ॥ पूर्वन्तुतन्निःस्वनि तभिन्नहृत्कर्णमस्तकाः १७ बालञ्च तस्या उगसि क्रीडन्तमकुतोभयम् ॥ गोपस्तूर्णसमभ्येत्य जगृहुर्जातिसम्भ्रमाः १८ यशोदारोहिणी

परीक्षित ! जा समय पूतना को देह गिख्यो ता समय बः कोस के बीचमें जो दृत्त हैं तिनको चूर्ण होतभयो १४ हलके दण्ड की बराबर भयङ्कर मुखमें जाके डाढ़े और पर्वत की गुफासी जाकी नाक घोर पर्वत के समान जाके स्तन और भयानक अरुण फैले भये जाके केश हैं १५ अधेरे कुआ की नाई आँखें जाक्री बैठ गई जैसे पुल बंधो होर तैसे हाथ पाँव जंवा जाके और शुष्क सरोवर के समान जाको बदर है १६ ऐसी भयङ्कर पूतना को देह देखि के गोप गोपीनके वझो भय होत भयो पहलोही वाके रुदन के शब्द तें गोप गोपीन के हृदय कान मस्तक विदीर्ण होई गये है १७ ता पूतना की छाती पर निर्भय श्रीकृष्णचन्द्र क्रीड़ा करै हैं तिन कू हरचराय के शीत्र जाय के गोपीन ने उठाय लियो १८ सम्पूर्ण गोपी और यशोदा रोहिणी श्रीकृष्णचन्द्र कों गो-



पुच्छ को भारी दैके फूँक मारि रत्ता करत भई १९ श्रीकृष्णचन्द्र कौ गोमूत्रसूं स्नान कराय के गोरजमें लुटाय गोबर लगाय करि द्वादश अंगनमें केशवादि द्वादश नागन करि रत्ता करत भई २० गोपी हाथ पोंव धोइके आचमन करिके अपने अंगनमें तथा करनमें न्यारो न्यारो न्यास करिके बालकन को विजयन्यास करत भई २१ हे श्रीकृष्णचन्द्र ! अजन्मा भगवान् तुम्हारे चरण की रत्ता करो मणिमान् भगवान् तुम्हारे ऊरुन की रत्ता करो यत्न भगवान् तुम्हारे जङ्घान की रक्षा करो अच्युत भगवान् तुम्हारे कमर की रत्ता करो हयग्रीव भगवान् तुम्हारे उदर की रत्ता करो केशव भगवान् तुम्हारे हृदय की रक्षा करो विष्णु भगवान् तुम्हारी भुजान की रक्षा करो उरुकुम्भ भगवान् तुम्हारे मुखारविन्द की रत्ता करो ईश्वर भगवान् तुम्हारे मस्तक की रत्ता करो २२ चक्रवर्ती भगवान् तुम्हारे अग्रभागकी रत्ता करो गदा धारण करिके भगवान् तुम्हारे पीछे तें रत्ता करो धनुषकूँ धारण करिके मधुनामा दैत्य के मारनवारि भगवान् और

भ्यांताः समं बालस्य सर्वतः ॥ रक्षां विदधिरे सम्यग् गोपुच्छ भ्रमणादिभिः १९ गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गौरजसाऽर्भकम् ॥ रत्नाञ्च कुशशकृताद्वा दशाङ्गैः पुनामभिः २० गोप्यः संस्पृष्ट सलिलाञ्जैः पुकरयोः पृथक् ॥ न्यस्यात् मन्यथ बालस्य बीजन्यासमकुर्वत २१ अव्यादजोऽङ्घ्रिमणिमांस्तव जान्वथोरू यज्ञोऽच्युतः कटिनटं जठरं ह्यास्यः ॥ हृत्केशवस्त्वहुर्यश इनस्तु कण्ठं विष्णुर्भुजं मुखसुरकण्ठ ईश्वरः कम २२ चक्रयग्रतः सहगदो हरिस्तु पश्चात्स्वत्पाश्वर्ययोर्धनु रसी मधुहाञ्जनश्च ॥ कोणेषु शङ्ख उरुगाय उपर्युपेन्द्रस्ताक्षर्यं क्षितौ हलधरः पुरुषः समन्तात् २३ इन्द्रियाणि हृषीकेशः प्राणान्ना रायणोऽयत् ॥ श्वेतर्दीपपतिश्च तं मनो योगेश्वरोऽयत् २४ पृथिवीगर्भस्तुते बुद्धिमात्मानं भगवाच परः ॥ क्रीडन्तं पातु गोविन्दः शयानं पातु माधवः २५ व्रजन्तमव्याद्धैरुण्ठ आसीनं त्वां श्रियः पतिः ॥ भुजानं यज्ञभृक्ष्पातु सर्वग्रह भयङ्करः २६ डाकिन्यो यातु धान्यश्च कूष्माण्डो येऽर्भकग्रहाः ॥ भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षरक्षो विनायकाः २७ कौट

खड्ग धारण करनवारि अजन्मा भगवान् यह दोनों तुम्हारे दाहिने और बायें तें रक्षा करो और शङ्ख धारण करनवारि उरुगाय भगवान् चारों कोणन तें रक्षा करो उपेन्द्र भगवान् त्रिहारे ऊपर रहो ताक्षरी भगवान् पृथ्वी में रत्ता करो हलधर भगवान् सर्वत्र रत्ता करो २३ हृषीकेश भगवान् तुम्हारी इन्द्रियनकी रत्ता करो और नारायण भगवान् प्राणनकी रत्ता करो श्वेतर्दीप के पति भगवान् तुम्हारे चित्तकी रत्ताकरो और योगेश्वर भगवान् तुम्हारे मन की रत्ता करो २४ पृथिवीगर्भ भगवान् तुम्हारी बुद्धि की रत्ताकरो परम भगवान् तुम्हारी आत्माकी रत्ताकरो क्रीडा करते समय गोविन्द भगवान् तुम्हारी रत्ताकरो सोवत समय माधव भगवान् तुम्हारी रत्ताकरो २५ वैकुण्ठ भगवान् तुम्हारी चलती वर रत्ताकरो लक्ष्मीपति भगवान् बैठते रत्ताकरो समस्त ग्रहन के भय के करनहारि यज्ञभोक्ता भगवान् भोजन समय रत्ताकरो २६ डाकिनी यातुधान और जे बालकनके ग्रहते भूतप्रेत पिशाच यक्ष राक्षस विनायक गण हैं ते २७ और कौटरा रेवती ज्येष्ठा

पूतना और मातृकानकू आदिलैके राज्ञसी हैं ते और उन्माद हैं ते और जे अपस्मार रोग के कत्तनवारे देह प्राण इन्द्रियनके द्रोही २८ और ओ स्वम में देखे उरताहैं और दृढ़ग्रह बालग्रह हैं ते समस्त नाशकू प्राप्तहोउ विष्णु भगवान् के नाम लिये त समपूर्ण नष्ट होइ जाय है २९ श्रीशुकदेवजी कहै हैं या प्रकार हाथ जोरि गोपीन ने विष्णु भगवान् की प्रार्थना करि रक्षा करिके श्रीकृष्णचन्द्र कू माताकू सौगि दियो तम यशोदाजी ने स्तनपान कराय के श्रीकृष्णचन्द्र कू शय्यापर पौढाय दीनो ३० तवताई नन्दादिक ब्रजवासी यशुदा तें गोकुलमें आयि तत्र मार्ग में मृत्युकू प्राप्तभई पूतनाको देखिके उडो आश्चर्य्य मान्यो ३१ नन्दजी कहै हैं कि वसुदेवजी निश्चय कोई श्रुति है कि योगेश्वरहैं वसुदेवजी ने कही भीया तुम शीघ्र प्रभुता ते गोकुलको जावो गोकुल में उत्थात होइगो सोई सोई नेवन ते देख्यो ३२ अथ सम्पूर्ण गोकुल के मनुष्य पूतनाके शरीर कू फरसान ते काटि फाटि घरनके दूरि लकड़ियान में धरिके दाइ करत भये ३३

रारेवतीज्येष्ठा पूतनामातृकादयः ॥ उन्मादयेह्यपस्मारा देहप्राणेन्द्रियदुहः २८ स्वग्रहप्रमहोत्पाता बृद्धबालग्रहाश्चये ॥ सर्वेनश्यन्तुतेविष्णोर्नामग्रह  
णभीरवः २९ श्रीशुकउवाच ॥ इतिमणयवद्धाभिर्गोपीभिःकृतरक्षणाम् ॥ पाययित्वास्तनंमाता संन्यवेशयदात्मजम् ३० तावन्नन्दादयोगोपा मधुगया  
ब्रजंगताः ॥ विलोक्यपूतनादेहं वभूवुरतिविस्मिताः ३१ नूनंभवतर्पिःसञ्जातोयोगेशोवासमासतः ॥ सप्तवदृष्टोद्युत्पातो यदाहानकहुन्दुभिः ३२ कलेवरं  
परशुभिश्छत्त्वातत्तेव्रजौ रुसः ॥ दूरेक्षिप्त्वाऽवयवशोन्यदहन्काष्ठधिष्ठितम् ३३ दह्यमानस्यदेहस्य धूमश्चागुरुसौरभः ॥ उत्थितःकृष्णनिर्मुक्तसपद्याहत  
पाप्मनः ३४ पूतनालोकबालधनी राक्षसीरुधिराशना ॥ जिघांसयाऽपिहरेयस्ननंदत्ताऽऽपसद्गतिम् ३५ किंपुनःश्रद्धयाभक्त्याकृष्णायपरमात्मने ॥ यच्छ  
नृप्रियतमंकिंनु रक्तास्तन्मातरोयथा ३६ पद्भ्यांभक्तहृदिस्थाभ्यां वन्द्याभ्यालोकवन्दितैः ॥ अङ्गयस्याःसमाक्रम्य भगवानपिवस्तनम् ३७ यातुवान्यपि  
सास्वर्गमवापजननीगतम् ॥ कृष्णमुक्तस्तनक्षीराः किमुगावोनुमातरः ३८ पयांसियासामपिवत्पुत्रस्नेहस्तुनान्यलम् ॥ भगवान्देवकीपुत्रः कैवल्यद्य

जा समय पूतनाको देह जराथो तो जरावे देहमें ते अग्रकी सी सुगन्धि कैसो धुआं उठत भयो श्रीकृष्णचन्द्र ने याके स्तन पान किये यातें सम्पूर्ण पाप तत्काल दूर होशये ३४ संसार के बालकन की मारनवारी रुधिरकी पीवनवारी राज्ञसी पूतना भगवान् कू मारियेकू आई स्तन पान करायके सुन्दर गतिकू प्राप्त भई ३५ श्रद्धाभक्ति करिके श्रीकृष्णचन्द्र परमात्मा कू माता अतिथ्यारी बस्तु दैके बहुत सुन्दर गति कू पावैगी यामें कहा कहनो है ३६ भक्तन के हृदय में विराजें और लोकनकरिके वन्दित ऐसे जो ब्रह्मादिक देवता जिनकू प्रणाम करे ऐसे चरणारविन्दन रूं पूतना को अद्भुत दावि के भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र स्तन पान करत भये ३७ माताकी गति स्वर्ग है ताहि वह पूतना राज्ञसी पावतभई और कहो जिन गजन के गोपिनके स्तन को श्रीकृष्णचन्द्रने उत्तम द्रव्य पान करो वे सुन्दरगति कू प्राप्त होयें यामें कहा कहनो है ३८ मोक्ष कू आदि लैके समस्त पदार्थन के देनवारे देवकी के पुत्र भगवान् पुत्र स्नेहतें गऊ गोपीन जो दुग्ध परिपूर्ण होय के पीयन

भये ३६ श्रीकृष्णचन्द्र में पुत्रभाव माने जो गोपी हैं तिन कूं हे राजन् परीक्षित ! अज्ञानते जाकी उत्पत्ति ऐसो जौ संसार सो न होइगो ४० ब्रजवासी मनुष्य श्मशान के धुआं की सुगन्ध सूंघि के गह-कह । भये कि यह कहा है कहा ते आवै है ऐसो कहत कहत गोकुल कूं आवत भये ४१ गोकुलमें ब्रजवासीने पतना को आयबो और आय के मृत्यु होइवो श्रवण करिके और श्रवणों अल्पाण श्रवण करिके नन्द ते आदि लेके ब्रजवासी बढ़ो आश्चर्य मानत भये ४२ हे कौरवन्के कुल कूं आनन्द देनवारे राजन् परीक्षित ! उदार जिनकी बुद्धि ऐसे नन्दरायजी मथुरा तें गोकुल कूं प्राप्त होइ के पुत्र कूं गोदमें लैके वड़े आनन्द कूं प्राप्त होत भये ४३ यह जो श्रीकृष्णचन्द्रको परमश्रद्धत चरित पतना को मोक्ष जो कोई श्रद्धा करिके श्रवण करै तो वा पुरूप की गोविन्द भगवान् में प्रीति होइहै ४४ इति श्रीमद्भागवतार्थकृष्णार्थदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेपूतनामोक्षानामपष्ठोऽध्यायः ६ ॥ \* \* \* ॥

खिलप्रदः ३६ तासामविरतं कृष्णे कुर्वतीनामुतेक्षणम् ॥ नपुनः कल्पते राजन् संसारोऽज्ञानसम्भवः ४० कटुधूमस्य सौरभ्यमवधाय ब्रजौकसः ॥ किमिदं कुपयेति वदन्तो ब्रजमाययुः ४१ ते तत्र वर्णितं गोपैः पूतनागमनादिकम् ॥ श्रुत्वा तन्निधनं स्वस्ति शिशोश्चासन्सुविस्मिताः ४२ नन्दः स्वपुत्रमादाय भेत्यागनमुदारधीः ॥ मूर्धन्युपाध्नाय परमां मुदं लेभे कुरुदह ४३ यत्पतपूतनामोक्षं कृष्णस्यार्भकमद्भुतम् ॥ शृणुयाच्छृद्धयामर्त्यो गोविन्दे लभते रतिम् ४४ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे पूतनामोक्षानामपष्ठोऽध्यायः ६ ॥ \* \* \* ॥

राजोवाच ॥ येन येनावतारेण भगवान्हरिरीश्वरः ॥ करोति कर्णभ्याणि मनोज्ञानि च नः प्रभो १ यच्छृण्वतोऽप्येत्यतिर्विदुषा सत्त्वं च शुद्धत्यचिरेण पुंसः ॥ भक्तिर्हरौ तत्पुरुषसख्यं तदेव हारं वदमन्यसे चेत् २ अथान्यदपि कृष्णस्य तोकाचरितमद्भुतम् ॥ मानुषं लोकमासाद्य तज्जातिमनुरुन्धतः ३

( उक्तिपञ्चकटं वयोस्त्रिगुणावर्तमयः क्षिपन् ॥ दर्शयन् विश्वमाख्येव कृष्णः क्रीडति सप्तमे १ कृष्णार्भकमुथासिन्धुसंज्ञानन्दनिर्भरः ॥ भूयस्ते देवसंमष्टु राजा गृह्यदभिनन्दति २ सातर्थे अध्याय में गाढा को पावधे ऊपर फेंककर और तृणावर्तको नीचे गिराकर माता को मुग्धमें संसार दिखाकर क्रीडा करते भये १ कृष्णजीकी बाललीलारूप अद्भुतके समुद्रमें स्नानकर आनन्दयुक्त राजा परीक्षित फिर और चरित्र पूंछने को प्रारम्भ करते भये २ ) महाराज परीक्षित कहैं कि हे प्रभो ! छः प्रकार के ऐश्वर्य करिके परिपूर्ण समस्त प्राणिन के कष्टन के हरनवारे श्रीकृष्णचन्द्र जिन जिन अवतारन कूं तैके जो जो लीला करी हैं ते ते हमारे काननकूं रगणीय मनोहर हैं ? जे पुरुष श्रीकृष्णचन्द्र के चरित्र श्रवण करै हैं तिनके मनकी ग्लानि जाय है और अनेक प्रकारकी तृष्णा दूरे नोड जाय है शीघ्र सम्पूर्ण अन्तःकरण शुद्ध होइ है हरिमें भक्ति होइ है और हरिभक्तन ते मित्रवा होइ है याते आपकी इच्छा में आवै तो श्रीकृष्णचन्द्र को मनोहर चरित्र कहो २ याके अनन्तर मनुष्य देह धारण करि मनुष्यन की सी लीला धारण करै जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनको मनोहर श्रद्धत बालचरित्र हमारे आगे वर्णन करो ३ श्रीशुकदेवजी महाराज राजा परीक्षित ते

कहें हैं कि हे राजन्! एकसमय श्रीकृष्णचन्द्र के वर्षप्रस्थि के उत्सव को दिन प्राप्त भयो और बाही दिन जन्मनक्षत्र को आईवो भयो यात अतिमंगल भयो ता दिन सम्पूर्ण गोपिका आवत भई और जाने वाजत भये गीत गान होत भये ब्राह्मणन पै स्वतिवाचन पदवाय के श्रीयशोदाजी श्रीकृष्णचन्द्र को अभिषेक स्नान करावति भई ४ अत्र नन्दराजी यशोदाजी ने अथादिक नख मोतिन के हार सुन्दर शृंगार करिके गो पूजन करि ब्राह्मणन कूं दीनी और ब्राह्मणन तें स्वस्तिवाचन पढ़ाय स्नान करवायो ता समय निद्रा जिन के नेत्रन में झुकिआई तव तो श्री कृष्णचन्द्र कूं हौलै ते गाड़ा के नीचे पालने में नन्दराजी सुवावत भई ५ करवटे लेवे की बघाई में हर्ष जिनके मन में भयो और उदार जिनको मन ऐसी यशोदा के घर आई जे गोपी तिनकी गु-थूपा करत पुत्र जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनके रोवो को शब्द न सुनत भई स्तन पीवे की इच्छा भई तव रोवत रोवत चरण ऊपर कू उठावत भये ६ गाड़ा के नीचे पालने में जो कृष्णचन्द्र तिनको छोड़ो अतिकोमल मूंगा कीसी कान्ति ऐसी जो चरणारविन्द ताकी ठोकर ते गाड़ा गिरत भयो अनेक प्रकारके रसन के भरे तावे पीतर के वासन गिरिपरे पैहा न्यारे न्यारे गिरिपरे धुरी निकसि

श्रीशुकउवाच ॥ कदाचिदौत्थानि कौतुकाले जन्मक्षयोगे समवेतयोपिताम् ॥ वादित्रगीतद्विजमन्त्रवाचकैश्चकारसूनोरभिषेचनं सती ४ नन्दस्यप

त्वीकृतमञ्जनादिकं विभ्रैकृतस्वस्त्ययनं मुपूजितैः ॥ अन्नाद्यवासः सगभीष्टेभ्यः ५ औत्थानिकौत्सुक्यमनामनस्विनी

समागतान्पूजयतीव्रजौकंसः ॥ नैवाश्रुणोदैरुदितं सुतस्य सा रुदन्स्तनार्थी चरणवुदक्षिपत् ६ अधःशयानस्य शिशोः स्तोऽल्पकप्रवालमुदङ्घ्रिहृतं यवर्त्त

त ॥ विध्वस्तनानारसकुप्यभाजनं व्यत्यस्तचक्राक्षिविभिन्नकूरम् ७ दृष्ट्वा यशोदा प्रमुखा ब्रजस्त्रिय औत्थानिके कर्मणि याः समागताः ॥ नन्दादयश्चाद्भुत

दर्शनाकुलाः कथं स्वयं वैशक्रदं विपर्यगात् ॥ इति बुन्तोऽतिविवादमोहिता जनाः समन्तात्परिविव्रुर्गतवत् ८ ऊचुरव्यवसितमतीव गोपाच गोपीश्च बालकाः ॥

रुदताऽनेन पादेन क्षिप्तमेतन्नसंशयः ९ न ते श्रद्धा भिरगोपा बालभापितमित्युत ॥ अप्रमेयं वलंतस्य बालकस्य न ते विदुः १० रुदन्तं सुतमादाय यशोदा ग्रहशङ्कि

गई जुआ दूटि गयो ७ यशोदा ते आदिले जे ब्रजकी स्त्री हैं ते और करवट देवेके उत्सवमें आई हैं ते और नन्दजीतें आदि लैके जे ब्रजवासी हैं ते आश्चर्य कूं देखिके व्याकुल भये कि आ-पहीते गाड़ा कैसे उलटि परयो इसप्रकार विवाद में मोहित मनुष्य चारों ओर पीडित की नाई बोलते भये ८ नहीं हैं निश्चय मन जिनको ऐसे उन गोप गोपीन तें श्रीकृष्णचन्द्र के समीप के बालक कदन लागे कि तुम क्यों सन्देह करो हो रोवत रोवत या श्रीकृष्णचन्द्र ने पांय की ठोकर मारी याते यह गाड़ा उलटिके गिरि परयो थामें कुछ सन्देह मति जानो ९ बालक जो श्रीकृष्ण-चन्द्र तिनके अनन्त वलकूं ब्रजवासी नहीं जानें हैं याते बालकन की बात को विश्वास न करत भये और कहत भये कि ये बालक है कदाजानें कहे बालक की ठोकर ते गाड़ा कैसे गिरि परयो १० पालने में रोवत जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूं गोदमें लैके यशोदाजीने जानी कि आज या घरी कोई खोदो ग्रह आयो यह शंका मानि के ब्राह्मणन कूं बुलाय स्वस्तिवाचन कराय स्तन प्यायो जो

स्तन आछे पिये तो जानिये दरयो महीं ११ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के प्रभाव को न जानिके ब्रजवासीन ने ब्राह्मणन के ऊहे तें आठदिशान में बलिदान कूं करिके सम्पूर्ण वस्तु धरिके गाढा धरि दियो ब्राह्मणने नवग्रहादिकन को होम कियो और दही अक्षत कुश जल ते गाड़ा की पूजा करी और पूजा करी १२ निन्दा भूठ पाखण्ड ईषा और हिंसा गर्व ये जिनके नहीं हैं और सत्यवादी ऐसे जो ब्राह्मण तिनके आशीर्वाद निष्फल नहीं होइ हैं १३ या प्रकार मनमें विचार करि नन्दरायजी श्रीकृष्णचन्द्रकूं गोद में लैके जल में पवित्र ओषधि डरवायके सामवेद ऋग्वेद यजुर्वेद के मन्त्र उत्तम ब्राह्मणन ते पढ़वायके अभिषेक करावत भये १४ स्वस्तिवाचन कराय और अग्नि में होम कराय केनन्दरायजी और सम्पूर्ण गोप गोपी सावधान होइके वड़े जिनमें गुण ऐसे अबको दान ब्राह्मणन को करतभये १५ बहुत सुन्दर जिनमें गुण ऐसी बहुत गौ वस्त्रनकूं उड़ाय फूलनकी माला तथा सुवर्ण ते झुंग मढ़ाय सोनेकी माला पहिराय ऐसी बहुत गऊ पुत्र के कल्याण के निमित्त देतभये ब्राह्मण आशीर्वाद देतभये १६ मन्त्रन के जानिवारे योग्य ब्राह्मणन ने जो जो आशी-

ता ॥ कृतस्वस्त्ययनंविप्रैः सूक्तैःस्तनमपाययत् ११ पूर्ववत्स्थापितंगोपर्वलिभिःसपरिच्छदम् ॥ विप्राहुत्वाऽर्चयाश्चक्रुर्दद्वयक्षतकुशाश्वभिः १२ येऽसूयाऽनु तदभेष्यार्हाहिसामानविवर्जिताः ॥ नतेपांसत्यशीलानामाशिपोविफलाःकृताः १३ इतिवालकमादाय सामर्ग्यजुरुपाकृतैः ॥ जलैःपवित्रौषधिभिरभिषिच्य द्विजोत्तमैः १४ वाचयित्वास्वस्त्ययनं नन्दगोपःसमाहितः ॥ हुत्वाचारिगिद्विजातिभ्यः प्रादादन्नमहागुणम् १५ गावःसर्वगुणोपेता वासःस्रक्कुम मालिनीः ॥ आत्मजाभ्युदयार्थाय प्रादात्तेचान्वयुञ्जत १६ विप्रामन्त्रविदोयुक्तास्तैर्थाःप्रोक्तास्तथाशिपः ॥ तानिष्फलाभिव्ययन्ति नकदाचिदपिस्फुट म् १७ एकदारोहमारूढं लालयन्तीसुतंसती ॥ गरिमाणंशिशोर्वोढुं नसेहेगिरिक्षुद्वत् १८ भूमौनिधायतंगोपी विस्मिताभारपीडिता ॥ महापुरुषमाहूयौ जगतामासकर्मसु १९ दैत्योनाम्राट्णवर्तः कंसभृत्यःप्रणोदितः ॥ चक्रवातस्वरूपेण जहारासीनमर्भकम् २० गोकुलंसर्वमाहूयवन्मुष्णंरचवर्षि

र्वाद दिये ते ताही प्रकार होतभये ब्रह्मवाक्य किसी समय निष्फल नहीं होइ हैं यह बात प्रकट है १७ एक दिन नन्दरानी श्रीकृष्णचन्द्र को लाइ करहीं ता समय श्रीकृष्णचन्द्र ने पर्वतकी समान अपने शरीरको बोझ वढ़ायो सो यशोदाजी पै सम्भारखो न गयो वोफ वढ़ायवे को कारण यह है कि श्रीकृष्णचन्द्र ने जानी कि जो मैं माताकी गोद में रहूंगो तो यह उपस्थितजो तुणावर्त है सो मेरी माता सहित उठायकै ले जायगो याते मोकूं कष्टहोउ तो होउ भरे कारण मेरी माताकूं कष्ट न होय १८ जब तो यशोदाजी अतिआश्चर्य को प्राप्त होयके और बोझतें अतिपीडित होयके श्रीकृष्णचन्द्र कूं पृथ्वी में वैठाय के नारायण को ध्यान करतभई और कहतभई कि आज कृष्ण मैं बोझ क्यों भयो ऐसे विचारिके घरके काममें लगि गई १९ इतनेही में कंसको दहलुवा कंसको पठायो तुणावर्त जाको नाम ऐसो दैत्य पवनके वज्रू को रूप धरिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं उड़ाय कै लैगयो २० सम्पूर्ण गोकुल धुरिते ठक्तिदियो मनुष्यन के धुरिते नेत्र मुंदिये और जाके दोर

शब्द ते दिश विदिश भुदतर्ध २१ दो घड़ीताई उर्को जो रेत ताके अन्धकार ते सम्पूर्ण गोकुल ठकियायो अब जहाँ श्रीयशोदाजी श्रीकृष्णकू बैठारि गईहीं तहाँ आयके देखें तो हैई नार्ही २२  
तृणावर्त ने ककरी ठीकरीनकी वर्षाकरी तावूं पीडितभये गोकुलवासी मोहकू प्राप्त होइके अपने आत्माकूं न देखत भये २३ या प्रकार महातीक्ष्ण पवन चली धूर बरसी ता पीछे फल्लु दीखिवे  
लम्बो तब बल करिके रहित जो माता यशोदा हैं सो करुणा जाम होइ आवै ऐसे प्यारे अपने पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र तिनकी सुधि करिके रोबतर्भा और अतिदुःखित होइके पृथ्वी में गिरि परी  
जैसे बकरा जाको मरिजाय वह गौ रम्हावै है तैसे यशोदा पुकारत भई २४ ता समय यशोदाजीको रुदन श्रवण करिके अति पीडित बहुत व्याकुल भई नेत्रन में अश्रुपात जिनके आयगये  
ऐसी जो गोपिका सो श्रीकृष्णचन्द्र के देखे विना सम्पूर्ण रुदन करतभई इतनेही में धूरि वर्षतो पवन धामगयो २५ तृणावर्त वबरेको रूपधरिके श्रीकृष्ण कू आकाशताई दूरि लै गयो जब देखको

रेणुभिः ॥ ईरयन्मुमहाघोरशब्देनप्रदिशोदिशः २१ मुहूर्त्तमभवद्गोष्ठं रजसातमसावृतम् ॥ सुतंयशोदानापरयस्त्वयंन्यस्तवतीयतः २२ नापश्यत्क  
श्चनात्मानं परंचापिविमोहितः ॥ तृणावर्चनिमृष्टाभिः शर्कराभिरुद्धतः २३ इतिखरपवनचक्रपांसुवर्षे सुतपदवीमबलाऽविलक्ष्यमाता ॥ अतिकरुण  
मनुस्मरन्त्यशोचञ्चुविपतितामृतवत्सकायगावौः २४ रुदितमनुनिशम्यतत्रगोप्योभृशमनुतसधियोऽश्रुपूर्णमुख्यः ॥ रुद्धरनुपलभ्यनन्दसूनुं पवनउपार  
तपांसुवर्षवेगे २५ तृणावर्तःशान्तरयोवात्यारूपधरोहरन् ॥ कृष्णंनभोगतोगन्तुं नाशकोद्धरिभारभृत् २६ तमश्मानंमन्यमानआत्मनोगुरुमत्तया ॥ गले  
गृहीतउत्सङ्गनाशकोदद्भुतार्भकम् २७ गलग्रहणनिश्चयो दैत्योनिर्गतलोचनः ॥ अव्यक्तरावोन्यपतत्सहचालोव्यसुव्रजे २८ तमन्तरिक्षारपतितंशिला  
यां विशीर्णैःसर्वाविषवंकरालम् ॥ पुंरयथारुद्रशरेणविद्धं स्त्रियोरुदत्योददृशुःसमेताः २९ प्रादायमात्रेप्रतिहृत्यविस्मिताः कृष्णश्चतस्योरसिलम्बमानम् ॥  
तंस्वस्तिमन्तंपुरुषादनीतं विहायसामृत्युमुलात्प्रमुक्कम् ॥ गोप्यश्चगोपाःकिलनन्दमुख्या लब्ध्वापुनःप्रापुरतीवमोदम् ३० अहोवतात्यद्भुतमेपरक्षसा वा

बल घटिगयो सम्पूर्ण जगत् जिन भगवान् के हृदय में ऐसे कृष्ण तिनके वोभू कूं सहि न सकयो २६ श्रीकृष्णचन्द्र तृणावर्त के गरे में मूठी चांधिके छटकिये पर्वत समान कण्ठ में लटकिये  
को जाके वोभूभयो ऐसे अद्भुत बालक श्रीकृष्णचन्द्र जिनकी मूठी छुड़ाइ न सकयो २७ कण्ठके छुटे तें चेष्टा जानी हतभई नेत्र जाके निकसिपरे बोल जाको बन्द होपगयो प्राण जाके जात  
रहे ऐसी वह तृणावर्त दैत्य श्रीकृष्णचन्द्र सहित गोकुल में गिरतभयो २८ जैसे शिवजी के वाणको मारयो त्रिपुरदैत्य गिरयो तैसे आकाश तें शिलाके ऊपर गिरिपरयो श्रंग जाको दृडिययो  
महाभयंकर रूप जाको ऐसी तृणावर्त ताकूं देखिवे कूं सम्पूर्ण स्त्री जुरिके रुदन करती आवतीभई २९ ता तृणावर्त के ऊपर छाती पै श्रीकृष्णचन्द्र निर्भय खेले हैं तिनकूं उठाय के गोपिका यशोदाजीकूं  
देतभई और वड़े आश्चर्य कों मानिके यह कहतभई कि या बालक कू उठाय के राजस आकाशमें लैगयो हो सो यह बालक मृत्यु के मुखमें ते फिरि निकसि आयो है नन्दरायजी मुख्य जिनमें ऐसे  
गोप और गोपिका सो सम्पूर्ण फिरि श्रीकृष्णचन्द्र कूं प्राप्त होइके निरचय वड़े आनन्द कूं प्राप्तहोतभये ३० अहो बड़ो आश्चर्य है देखो या राजसने या बालक के मारिवे में कलु कसरि नार्ही





देसिके प्रसन्नहोतभये और छठिके हाथ जोरि प्रथम करिके भगवान् के तुल्य जानिके पूजन करतभये २ गर्गाचार्यजी कूं सुन्दर आसन पैं बैठारि के भोजन करायो और मुर मधुर वाक्य सुनाये आनन्ददैके नन्दरायजी यह बोले अहो ब्रह्मन् ! आपतो परिपूर्ण हो कहो आपको कहा पूजनकरै ३ हे भगवन् ! दीन जिनके चित्त ऐसे गृहस्थ पुरुषनके कल्याण करिवे के निमित्त तुम स-  
रीखे महान् अपने आश्रम ते घरजार्यहैं और उनकूं बहुत प्रयोजन नहीं है ४ देखिये सुनिवेमं नहीं आवै ऐसो जो ज्ञान ताको जनावनयारो और सूर्य चन्द्रमा नक्षत्रादिकन को मन्त्रिपादन करनवारो ज्योतिषशास्त्र तुमने कबो है जाके पढ़ेते पुरुष अगिले पिछले जन्मकी बात जानिलेइ है ५ ब्रह्मवेदान पैं श्रेष्ठ जो तुमहो सो हमारे पुत्रन को नामकरणादि संस्कार करो तब गर्गाचार्यजी ने कही तुम्हारे गुरु आचार्य्य होइ तिनते क्यों न करायेउ तब नन्दजी बोले कि महाराज ये ब्राह्मण मनुष्यनके जन्मनेही गुरु कहै हैं ६ अब श्रीगर्गाचार्य्य कहै हैं कि मैं यादवन को पुरो-

नर्चाधोक्षजधियाप्रणिपातपुरःसरम् २ सूपचिष्टं कृत्वा तिष्ठं गिरासूनुतयामुनिम् ॥ नन्दयित्वा ब्रवीद्ब्रह्मन् पूर्णस्य करवामभिम् ३ महद्विचलनं नृणां गृहिणां दीनचेतसाम् ॥ निःश्रेयसाय भगवन् कल्पते नान्यथा क्वचित् ४ ज्योतिषमयनं साक्षाच्च ज्ञानमतीन्द्रियम् ॥ प्रणीतं भवता येन पुमान् न वेद पराव-  
रम् ५ त्वंहि ब्रह्माविदां श्रेष्ठः संस्कारान् कर्तुमर्हसि ॥ बालयोः स्तनयोर्नृणां जन्मना ब्राह्मणो गुरुः ६ ॥ गर्ग उवाच ॥ यदूनामहमाचार्य्यः ख्यातश्च क्षुभिसर्व-  
दा ॥ सुतं मया संस्कृतं ते मन्यते देवकी सुतम् ७ कंसः पापमतिः सख्यं तव चान्न कहुन्दुभे ॥ देवक्या अष्टमो गभोनस्त्री भवितुमर्हति ८ इति संचिन्तय जङ्घुत्वा देवक्यादारिकावचः ॥ अपिहन्ता गताशङ्कस्तर्हितस्त्रोऽनयो भवेत् ९ ॥ नन्द उवाच ॥ अलक्षितोऽस्मि न रहसि मामकैरपि गोब्रजे ॥ कुरुद्विजाति संस्कारं स्वस्तिवाचनपूर्वकम् १० ॥ श्रीशुक उवाच ॥ एवं संप्रार्थितो विप्रः स्वचिकीर्षितमेव नत् ॥ चकारानामकरं गूढो रहसि बालयोः ११ ॥ गर्ग उवाच ॥ अयं हिरौहिणी पुत्रो रमयन् सुहृदो गुणैः ॥ आख्यास्यते राग इति वलाधिका यद्वा त्वं विदुः ॥ यदूनामपृथग्भावात् सङ्कर्षणमुशान्त्युत १२ आसन्वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृह्णोऽनुयुगंतनूः ॥ शुक्लो रक्तस्तथा पीत इहानीकृष्णतागतः १३ प्रागयं वसुदेवस्य क्वचिज्जातस्तनवात्मजः ॥ वासुदेव इति श्रीमान् भिद्वाः संप्रचक्षते १४  
इति समस्त पृथ्वी पैं विख्यात हूं मैं जो तुम्हारे पुत्रनको नाम धरंणो तौ दुष्ट जाकी बुद्धि ऐसो कंस इन बालकनकूं देवकी के पुत्र मानेगो और तुम्हारी वसुदेवजी की परस्पर भिन्नता भी या कारण ते, और हू एक बात है देवकी के आठवें गर्भ में कन्या होइवे की नहीं है ७ ८ और देवकी की कन्याकी बात सुनी है दूसरी यह बाचा सुनेगो कि गर्गाचार्य्य ने नाम धरयो याते निरचय वसुदेवको पुत्र है यह शङ्का मानिके जो वर कंस या बालक कूं आय मारे तो वही अनर्थ होइगो ९ भरे ब्रजवासीनके देखिये भैं नहीं आवै एकान्त गजनके स्वरक में घैठिके स्वस्ति-  
वाचन पढ़िके दिननको संस्कार पुत्रनको नाम धरिदेउ १० अब शुभदेवजी राजा परीक्षित ते कहै हैं कि हे राजन् ! या प्रकार नन्दजीने मारना करी तो आपही करो चोई सो एकान्त में गर्गाचार्य्य जी छिपिके नामकरण करतभये ११ यह रोहिणी को पुत्र अपने गुणन करि सुहृदन कूं स्पर्षेगो याते याको राम नाम होइगो बल अधिक होइगो याते बलदेव नाम होइगो चिहुरे यादवनकूं मि-

लावैगो याते संकल्पण वहेगे १२ और या वालिक के तीन रंग होत भये युग युगमें जाने रूप धर्यो है सत्ययुग में याको शुक्लरूपहो जेता में लाल वर्णहो द्वापर में अलसी के पुष्प कैसो रंगहो  
अब इन्द्र नीलपणिकी नाई श्यामसुन्दर रूप धारण कर्योहै १३ काहूसमय नन्दरायजी यह तुम्हारोपुत्र पहले वसुदेवजी के भी जन्मलेतभयो है याते वासुदेव या प्रकार विषकी जन याकू कहै  
है १४ तुम्हारे पुत्र के गुण कर्मनके अनुसार बहुत नाम है और रूपभी बहुत हैं तिनकू मैं नहीं जानूँ हूँ और पुरुष नहीं जानैहै १५ गौवनकू और गोपीनकू और तुमकू आनन्ददेनवारो तुम्हारो  
पुत्र होइगो और नन्दरायजी तुम्हारे ऊपर वड़े बड़े कष्टआयके पास होइगे तिनकू याकी कृपाते सहजमें तरि जावोगे १६ हे वजराज! पहिले इस बालक ने पृथ्वीपै दुष्ट चोरन करि पीड़ित जो  
साधु महात्मा तिनकी रक्षा करी १७ और ये ऐश्वर्यवान् पुरुष पुत्रन में प्रीति करै है तिनकू दुष्टशत्रु नहीं सतावै है जैसे विष्णु भगवान् जिनकी सहाय करनवारे ऐसे जे देवता तिनकू असुर नहीं  
बहूनि सन्तिनामानि रूपाणि च सुतस्यते ॥ गुणकर्मानुरूपाणि तान्यहंवदनोजनाः १५ एषवः श्रेयआधास्यद्रोपगोकुलनन्दनः ॥ अनेन सर्वदुर्गाणि यूय  
मञ्जस्तरिण्यथ १६ पुराऽनेन ब्रजपते साधवोदस्युपीडिताः ॥ अराजकैरक्ष्यमाणानि गृह्यमाणाः प्रीतिकुर्वन्तिमान  
वाः ॥ नारयोऽभिभवन्त्येतान् विष्णुपक्षानिवासुराः १८ तस्मान्नन्दात्मजोऽयं ते नारायणसमोगुणैः ॥ श्रियाकीर्त्याऽनुभावैर्न गोपायस्वसमाहितः १९  
इत्यात्मानं समादिश्य गर्गे च स्वगृहं गते ॥ नन्दः प्रसुदितो मेने आत्मानं पूर्णमाश्रयाम् २० कालेन ब्रजताऽल्पेन गोकुले रामकेशवौ ॥ जानुभ्यां सहपाणि  
भ्यां रिङ्गमाणौ विजह्रतुः २१ तावद्विद्युग्ममनुरुष्यसरीसृपन्तौ घोषघोषरुचिर्ब्रजकर्मभू ॥ तन्नादहृष्टमनसावनुभृत्यलोकं सुगन्धप्रभीतवदुपेयतुरन्तिमा  
त्रोः २२ तन्मातरौ निजमुतौ घृणयास्तुवन्तौ पङ्काङ्गरागक्षिराबुग्गृहादोभ्याम् ॥ दत्त्वास्तनं प्रपिबतोऽस्ममुखानिरीक्ष्य सुगन्धस्मिताऽल्पदशनं ययतुः प्रमोदम्  
२३ यद्वाङ्मनादर्शनीयकुमारलीलावन्तर्ब्रजतदवलाः प्रगृहीतपुच्छैः ॥ वत्सैरितस्तनउभावनुकृष्यमाणौ प्रेक्षन्त्यउज्जिम्भतगृहाजहदुर्हसन्त्यः २४ शृङ्गयग्नि  
सतावै १८ हे नन्द ! तुम्हारो यह पुत्र गुणन करिके कीचि करिके प्रभाव करिके नारायणकी समानहै सावधान होइके याकी तुम रक्षाकरो १९ या प्रकार श्रीकृष्ण के गुणनकू गार्गाचार्यजी  
नन्दरायजीतें वर्णन करिके अपने घरकू जातभये उनके गये पीछे नन्दजी आनन्दयुक्त होयके मनोरयनकरि अपने आत्माकू परिपूर्ण मानतभये २० अब कुछ थोड़ेदिन व्यतीतभये तब श्रीनोकुल  
में श्रीकृष्णचन्द्र तथा बलदेवजी दोऊ भैया हाय देकि के मुदुवन चलिबेकी लीला करत भये २१ जा समय श्रीकृष्ण बलदेव दोनों भैया ब्रजकी कीच में बिचैहैं ते ता समय वह पांवनकी पैजनी  
जाकी भनकार को सुन्दर शब्द सुनिके श्रीयशोदाजी और रोहिणीजी वड़े आनन्दकू प्राप्त होतभई और जो कोई रस्तागीर पुरुष निकसै है तो ताही के पीछे घुडुवन ते चलै निकसै हैं जब वह  
पुरुष इनके साहू देखै है तब डरायिके अपनी मातान के पास भजि आवै हैं २२ माता यशोदा रोहिणी श्रीकृष्ण व बलदेव कू देखैहैं कहां तो ब्रजकी कीचमें लपिदि रहे है और कहां प्रसाद  
की केशर जिनके अंगमें लागि रही है तिन पुत्रनकू पुचकारतभई और स्नेह ते स्तन जिनके दूध ते खसि आवे ऐसी माता हाथन तें उठाय छाती तें लगाय स्तन देके गिलावती भई स्तन पीवै



गहनो मैं उत्तारि लेऊँगी तहां कहै है कि याके अंगको प्रकाश कैसो है यावत्पर्यन्त हम घरमें बैठेहैं हैं तावत्पर्यन्त आवै तो देखिके भाजिजाय जब हम घरके काममें लगैं तब आइधुमैहै ३० कबहुँ हम आयके कहै कि घरमें चोरहो मै तो घरको मालिक हूँ ऐसे हंसिके बात करै है और हमारे लिपे पुते घरनमें हगिजायहै मूतिजाय है सब दिन चोरिके उपायमें फिरघो करै है अब देखो तुम्हारे आगे गरीब सों ठाढ़ो है या प्रकार गोपीनेने दरपायो ता समय भयसंयुक्त नेत्रतिनमें श्रीमुखकी शोभा देखिवे के निमित्त श्रीयशोदाजी ते आयके गोपी उलाहनों देत भई तब श्रीयशोदाजी ने हंसि दियो श्रीकृष्णकूँ डाख्यो नहीं ३१ एकसमय वलदेवजी ते आदिलैके गोपन के बालक क्रीड़ा करतरहे तहां जाय श्रीकृष्णचन्द्रमृत्तिका स्वातभये तब सम्पूर्ण बालकन ने कही कि आज कृष्णकूँ मर्यापै पिटबावेंगे और यह कहेंगे मैयाजी आज श्रीकृष्णचंद्र ने माटी खाई है यह विचार करत सम्पूर्ण बालक वलदेवजी सहित श्रीकृष्णचन्द्र की माता ते कहतभये ३२ तब दितकी चाहनवारी श्रीकृष्णकी माता यशोदा ने श्रीकृष्णकूँ हाथ पकरि के डरपायो तब डरके मारे चंचल नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्ण ते यह बोली ३३ हे चपलगात्र चंचल ! किनीभिव्याख्यातार्थप्रहसितमुखीनह्युपालब्धुमैच्छत् ३१ एकदार्काडिमानास्ते रामाद्यागोपदारकाः ॥ कृष्णोऽष्टदंभक्षितवानितिमात्रेन्यवेदयन् ३२ सागृहीत्वाकरेकृष्णमुपालभ्यहितैपिणी ॥ यशोदाभयसम्भ्रान्तप्रेक्षणाक्षमभापत ३३ कस्मान्मृदमदान्तात्मन् भवान्भक्षितवान्नुहः ॥ वदन्तितावकाहो ते कुमारस्तेऽग्रजोऽप्ययम् ३४ नाहंभक्षितवानन्व सर्वमिथ्याभिर्शंसिनः ॥ यदिस्त्यगिरस्तर्हि समक्षं पश्यमेमुखम् ३५ यद्येवंतर्हि वयादेहीत्युक्तः स भगवान्हरिः ॥ व्यादत्ताव्याहृतैश्चर्यः क्रीडामनुजबालकः ३६ सातत्रददशोविश्वं जगत्स्थास्तु च खंदिशः ॥ साद्विदीपाब्धिभूगोलं सवाध्वगर्नोन्दुतारकम् ३७ ज्योतिश्चक्रं जलं तेजो न भस्वान्वियदेवच ॥ वैकारिकानीन्द्रियाणि मनोमात्रागुणास्त्रयः ३८ एतद्विचित्रं स हजीवकालस्वभावकर्ममार्गशयलिङ्गभेदम् ॥ सुनोऽननौवीक्ष्यविदारितास्ये ब्रजं सहात्मानमवापशङ्काम् ३९ किं स्वप्न एतदुत देवमाया किं वामदीयो वतवृद्धिमोहः ॥ अथोऽमुष्यैवममार्भकस्य यः कञ्चरे वेदा ! तैने अकेले में जाय के माटी क्यों खाई ये तेरे संग के बालक कहै हैं और तेरो मैया वलदेवजी कहै हैं ३४ हे मर्या ! मैने माटी नहीं खाई है और जो तुम इनकी बात मानो हो तो तेरे आगे मेरो मुखहै ताकूँ तू देखिले ३५ यह सुनि करि मर्याबोली तैने माटी नहीं खाईहै तो अपनो मुख दिखाइदे या प्रकार जब माताने कही तब छः प्रकारके दुःखके दूरि करनवारे जिन को अखण्ड पेशचर्य ऐसे परमेश्वर क्रीड़ा करिये के लिये मनुष्यबालक भये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र अपनो मुखारविन्द उधारिके माता कूँ दिखायो ३६ तब यशोदाजी ने श्रीकृष्ण के मुख में स्थावर जंगम सम्पूर्ण विश्व देख्यो ताहीं को आगे विस्तार है अन्तरिक्ष लोक दिशा पर्वत द्वीप समुद्र सहित भूलोक देख्यो और पवन अग्नि चन्द्रमा तारागणसहित समस्त देख्यो ३७ ज्योतिश्चक्र देख्यो जल पवन तेज आकाश ये समस्त देखे इन्द्रियन के अधिष्ठाता देवता इन्द्रिय मन और इनके विषय शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ये पाँचों सतोगुण रजोगुण तमोगुण ये समस्त देखत भई ३८ ज्योतिश्चक्र जीव काल स्वभाव कर्म अन्त करण इन सहित चित्रविचित्र विश्व कूँ श्रीकृष्णचन्द्र के उधारे मुखमें देखत भई सम्पूर्ण ब्रज देख्यो और



अपने आत्मार्क देख्यो यह समस्त देवि भालिके यशोदाजीके मनमें शंकाभई ३९ अब यशोदाजी कहैं कि यह समस्त विश्व श्रीकृष्ण के मुखमें देख्यो सो कहा कछु समो तो न देख्यो फिर कहतलगां कि स्वप्नो तो सोवतमें आवैं है भे तो जागूँ अथवा कोई ईश्वरकी मायाहै अथवा भेरे पुत्र कृष्णको यह वेर दिखाइवे को राभाव वहि गयो है ४० चित्त मत वाणी इन करिके अनायासपूर्वक भलेप्रकार विचारमें नही आवैं है जाके आश्रय जाकारिके संसार प्रतीत होइहै स्नेह करिके भावना में नही आवैं ऐसो जो अचिन्तनीय स्वरूप ताहि में नमस्कार करूँ ४१ मैं यशोदाहूँ और यह व्रजराज भेरो प्रति है यह कृष्ण भेरो पुत्रहै और यह व्रजराज के सम्पूर्ण धनकी मैं रक्षा करनवारीहूँ और ये समस्त गोप गोपिका भेरे है ये सम्पूर्ण जाकी माया करिके कुबुद्धि लगिरही है सो अब भगवान् तुम्हारी शरणहूँ ४२ याप्रकार यशोदाजी के कृष्णमें ईश्वर की बुद्धि होइगई तम कृष्णने विचार कियो कि भेरो लाफु कौन के गो तम पुत्रस्नेहरूपा वैष्णवीमाया अपनी यशोदा वै फैलायदीनी ४३ ता समय यशोदाजी की श्रीकृष्णचन्द्र में ते ईश्वरत्वबुद्धि हटिगई और पुत्रभाव मानिके गोदमें वैठारि के अतिस्नेह में

श्चनौरपत्तिकृआत्मयोगः ४० अथोयथावन्नवितर्कगोचरं चेतोमनःकर्मवचोभिरञ्जसा ॥ यदाश्रययेनयतःप्रतीयते मुहुर्बिभाव्यप्रणताऽस्मितत्पदम् ४१

अहंममासौपतिरेपमेसुतोत्रजेश्वरस्याखिलवित्पासती ॥ गोप्यश्चगोपाःसहगोधनाश्चये यन्मायेत्यंकुमतिःसमेगतिः ४२ इत्थंविदिततत्त्रायां गोपि

कायांसईश्वरः ॥ वैष्णवीव्यतनोन्मायां पुत्रस्नेहमयीविभुः ४३ सद्योवष्टस्मृतिर्गोपी सारोयारोहमात्मजम् ॥ प्रवृद्धस्नेहकलिलहृदयासीद्यथापुरा ४४

त्रय्याचोपनिपद्मिश्च साङ्ख्ययोगैश्चसात्वतैः ॥ उपगीयमानमाहात्म्यंहरिसामन्यतात्मजम् ४५ राजोवाच ॥ नन्दःकिमकरोब्रह्मञ्छ्रयएवंमहो

दयम् ॥ यशोदाचमहाभाग पपौयस्याःस्तनंहरिः ४६ पितरौनान्वविन्देतांरुष्णोदारार्भकेहितम् ॥ गायन्त्यद्यापिकवयोयत्नोऽकशमलापहम् ४७

श्रीशुकउवाच ॥ द्रोणोऽनूनां प्रवरोधरयासहभार्यया ॥ करिष्यमाण आदेशान्ब्रह्मणस्तमुवाचह ४८ जातयो नोमहादेवे भुवि विश्वेश्वरे हरौ ॥ भक्तिः स्या

त्परमालोके ययाऽङ्गोदुर्गतिरेत् ४९ अस्मिन्त्युक्तः स भगवान् ब्रजे द्रोणो महायशः ॥ जज्ञेनन्द इति ख्यातो यशोदासाधराऽभवत् ५० ततो भक्तिर्भगवति पुत्री

मग्न होइके पहिले भीती नाई नात्सल्यभाव करत भई ४४ ऋग् यजुः साम यह तीनों वेद सांख्य योग समस्त निरन्तर जिन भगवान् की महिमा कूं गावैं हैं तिनकूं यशोदाजी अपने पुत्र मानैं हैं ४५ अब श्रीराजा परीक्षित होयके श्रीशुकदेवजी ते प्रश्न करैं हैं कि हे ब्रह्मन् ! नन्दरायजी ने ऐसो कहा पुण्य कखो हो याते इनको ऐसो उदयभयो और यशोदाजीने कौन पुण्य करयो

हो याते श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् ने स्तन पान कियो ४६ और समस्त लोकन के पापके दूरि करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र को वालचरित्र ताहि अब पर्यन्त कवीश्वर वर्णन करैं हैं सो माता देवकी और वसुदेवजी को प्राप्त न होत भयो ऐसे आनन्द को भोग्यो ४७ अब श्रीशुकदेवजी कहैं हैं आठ वसुन में श्रेष्ठ द्रोण नाम नन्दजी अपनी धरा स्त्रीकूं सङ्ग लीके ब्रह्माकी आज्ञा करिने के लिये

ब्रह्माजी ते बोले ४८ हमारो जन्म पृथ्वी में होय परन्तु विश्वके ईश्वर देवनके देव वड़े देव भगवान् हरि तिनमें हमारी भक्ति होइ जा भक्ति के प्रभाव तें यह जीव संसारके पार लागि जाइ



जाय हैं इतनेही में चूल्हे के ऊपर अँटिखे कूँ धरयो जो दूध सो बहुत आचलगी तब उफनि चलयो इतने में श्रीकृष्णचन्द्रको पेट तो भरयो नहीं परन्तु गोदमें ते पृथ्वी वै उत्तारि दूध उत्तारिबे कूँ शीघ्रता तें चली ५ पूतने दूध प्यारो लाग्यो याते श्रीकृष्णचाद्र कूँ क्रोधभयो ता क्रोधते अरुण आँठ तिनकूँ दातन ते काटते जाइहै और एक चासन मटा धिलोमन को फोरि हारयो नेन में झूठे आसू लगाय मालन को एकलौदा लै के भीतर घरके झोनमें बैठिके खानलगे ६ यशोदाजी बहुत आँटे दूध कूँ चूल्हे ते नीचे उत्तारिके फिरि दही मयिबे की जगह आयके दही मयिबे के चासनकूँ फूटयो देलिके विचार सरतभई कि यह कृष्णकेही कौतुक हैं वाके धिना और कौन फोरि उहा देखैं तो श्रीकृष्ण हैई नाहि तब तो हँसिके रुहनलगी कि एत तो काम विगारयो दूसरे भागिययो ७ देखें तो घरके भीतर उलूलत औ गी करिके वाके ऊपर बैठिके झीके पै धरयो जो मालन ताहि निकासिके चन्दरान कूँ खनचै है और मैया तो न आय जावे या भयपे दूत उत दैस्त जायहै इतनेही में पुत्र कूँ दूढ़त २ श्रीयशोदाजी आवत भई ८ लकरिया हाथमें लिये माताकूँ आदति देखिके शीघ्रही उलूलत ते कूदिके हरे कीसी नाई भाजतभये एकाग्र ध्यान करिके योगि-  
संदरयदद्धिदधिमन्थभाजनम् ॥ भित्वासृपाऽश्रुद्विपदश्मनारहोजवासैयङ्गमन्तरंगतः ६ उत्तार्योगीसुश्रुतंपयःपुनः प्रविश्यसंहृद्यचदभ्यगमत्रम् ॥  
भर्तृवलोक्यस्वमुतस्यकर्मतज्जहासतंचापिनतत्रप्रश्यती ७ उलूललाङ्घुरपरिव्यवस्थितं मर्कटिकामंददंतं शिचिस्थितम् ॥ हैयङ्गवंचौर्यविशिक्षितं क्षणं  
निरीक्ष्यपश्चात्सुतमागमच्छनैः ८ तामात्तयष्टिप्रसमीक्ष्यसत्वरस्ततोऽवरुह्यापससारं गतवत् ॥ गोप्यन्वधवन्नयमापयोगिनां क्षमंप्रवेष्टुं न पसेरितं मनः ९  
अन्यच्चमानाजननीबृहच्चलच्छ्रेणीभराक्रान्तगतिःसुगमया ॥ जवेनविस्त्रसितकेशावन्वनच्युनप्रसूनोत्पुगतिःपरास्तुशत् १० कृनागसंतं प्ररुदन्तमक्षिणी  
कपन्तमञ्जन्मपिणीस्वपाणिना ॥ उद्रीक्ष्यमाणं भयविह्वलक्षणं हस्तेगृहीत्वाभिव्यन्यवागुत् ११ त्यक्त्वायष्टिसुतं भीतं विज्ञयार्थकवत्सला ॥ इमेपक्षिल  
तंबुदं दाम्नाऽनद्वीर्यकोविदा १२ न चान्तर्नवहिर्गस्य न पूर्वान्नापिचापस्य ॥ पूर्वापरं वदित्वा न्तर्जगतो योजगच्चयः १३ नमस्त्वात्तमजमव्यक्तं मर्त्यलिङ्गमधो  
ल्लजम् ॥ गोपिकोलूलेलदाम्नावन्धप्रकृतं यथा १४ तद्दामवन्धमानस्य स्वार्थकस्य कृतागमः ॥ द्रव्यलूनमभुत्तेन संदधेऽन्यच्चगोपिका १५ यदासीत्तद्

राज जिनकी गतिकूँ नहीं जानै हैं तप करिके मन नहीं पड़ुचै है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के पीछे श्रीयशोदाजी भाजति भई तथापि हाथ नहीं आवतभये ६ श्रीकृष्णचन्द्र के पीछे चली जायें जो यशोदाजी तिनकी पुष्ट कभर जाके बोझते शिथिल जिनकी गति होइ गई दीरिबे ते केशन के वन्धन खुलियगे तिन केशन में ते गिरे जे पुण्य हैं तिनके ऊपर पाव धरती जाय हैं या मकार श्रीकृष्णचन्द्र कूँ गये पकरि लियो १० अपराध जिनने कियो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र रोवते जायें हैं और काजर जिनमें लग्यो ऐसे जिनके नेत्र तिनकूँ हाथते भीड़तजाय है और वारंवार यशोदाजी कूँ देखतेजाय रके मारे चञ्चल जिनके नेत्र तिन श्रीकृष्णचन्द्र को हाथ पकरिके यशोदाजी हरगवति भई ११ पुत्रमैं है हित जाको ऐसी यशोदाजी श्रीकृष्णचन्द्र कूँ अतिभयभीत देखिके ल करी हाथ ते भई पुत्र के पराक्रम कूँ नहीं जानिके रस्सी ते बांधिबे की इच्छा करतिभई १२ जाके भीतर जाके बाहिर नहीं जगत् के जो पूर्ण अयतार हैं बाहिर और भीतर हैं और जगत्स्वरूप हैं मनुष्य

रूप धारण करेगी है ? इन्द्रियन की जिनमें पहुँच नहीं ऐसे अन्यक्त भगवान् कूँ पुत्र मानिके यशोदाजी छोरि लैके उलूखल तैं चांचनलगीं जैसे कोई साधारण मनुष्य बालक कूँ चाँचै है ? १४ अपराध जिनने कियो ऐसे अपने पुत्र श्रीकृष्ण तिनकूँ चांचनलगीं ता समय वह रस्सी दो अंगुल ओछी भई ता समय और दूसरी जोरी १५ जो और रस्सी जोरी सो भी ओछी भई या प्रकार जो रस्सी जोरी सो सम्पूर्ण अंगुल २ ओछी होत भई १६ ऐसे यशोदाजी ने सम्पूर्ण घर की रस्सी लायके जोरी परन्तु श्रीकृष्ण कूँ न बँधे देखिके हँसतभई और मुसिकाय के आप यशोदा जी विस्मित होत भई १७ अंगमें पसीना जाके आगयो और माला कण्ठ ते दृष्टि के गिरतभई ऐसी यशोदा माता कूँ अमित देखिके करुणामय जो श्रीकृष्णचन्द्र आपही कृपा करिके वनमें आगये १८ हे राजन् परीक्षित् ! ऐसे कष्ट के हरनवारें ब्रह्मसहित विश्व जिनके अधीन ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ने अपने भक्तन को बश होइवो दिखायो कि जो मेरे भक्त मोहूँ बाँधवो चाहें तो पिन्यून तेनान्यदपिसंदेह ॥ तदपिद्वयङ्गुलंन्यूनं यद्यदादत्तवन्धनम् १६ एवंस्वगेहदामानि यशोदासंदधत्यपि ॥ गोपीनांसुस्मयन्तीनां स्मयन्तीविसिप्तमवत् १७ स्वमातुःस्विन्नगात्रायाविस्सस्तकवरलजः ॥ दृष्ट्वापरिश्रमंकृष्णःकृपयाऽऽसीत्स्ववन्धने १८ एवंसंदर्शिताह्लाद्गहरिणाभृत्यवश्यता ॥ स्ववशेनापिकृष्णेन यस्येदंसेश्वरवंशे १९ नेमंविजिञ्चोनभवोनश्रीरग्यङ्गसंश्रया ॥ प्रसादंलेभिरगोपी यत्तत्प्रापविमुक्तिदात् २० नायंसुखापोभगवान् देहिनांगोपिकासुतः ॥ ज्ञानिनांचात्मभूतानां यथाभक्तिमतामिह २१ कृष्णस्तुगृहकृत्येषु व्यग्रायामातरिप्रभुः ॥ अद्रक्षीदर्जुनौपूर्वं गुह्यकौधनदात्मजौ २२ पुरा नारदशापेन वृक्षतांप्रापितौमदात् ॥ नलकूवरमणिग्रीवावितिख्यातौश्रियाऽन्वितौ २३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वाद्धिगोपीप्रसादोनामनवमोऽध्यायः ६ ॥

राजोवाच ॥ कथ्यतांभगवन्नेतत्तयोःशापस्यकारणम् ॥ यत्तद्विगर्हितंकर्म येनवादेवर्पेस्तमः १ श्रीशुकउवाच ॥ रुद्रस्यानुचरोभूत्वा सुहृत्सौधन

बधिभी जाऊं हूँ ऐसी अधीन हूँ १९ भक्ति के देनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् ते पुत्रके सम्बन्ध ते जो प्रसाद गोपीन ने पायो सो कृपा ब्रह्मा पै न भई और शिवजी आत्मा है तिन पै न भई लक्ष्मी सर्वदा अंगमें रही आवे है और पत्नी है तथापि न भईशुकदेवजी राजा ते कहें हैं कि हे राजन् ! जो कृपा यशोदाजी पै भई गोपिकानन्दन श्रीकृष्ण भगवान् भक्तनकूँ सुख ते नहीं प्राप्त होइ है आत्मरूप जो ज्ञानी हैं तिनकूँ नहीं मिलें हैं सो भगवान् अनायासपूर्वक गोपीन कूँ मिले २० । २१ मैया यशोदाजी तो घरके काम में लागि रही हैं इतने में श्रीकृष्णचन्द्र समर्थ भगवान् कुँवरके वेदा जो प्रथम जन्ममें गुह्यक रहे ते आवेके यमलार्जुन वृक्ष होतयये तिनके पास जातभये २२ सुन्दर जिनकी शोभा ऐसे नलकूवर मणिग्रीव नाम करिके प्रसिद्ध कुँवरके पुत्र प्रथम जन्म के मदते नारदजी के शाप ते वृक्षयोनि पावतभये २३ इति श्रीभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वाद्धिगोपीप्रसादोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

( दशमेऽपातयद्रिक्कनन्तरायमलार्जुनौ ॥ तत्रत्याभ्याचदंवाभ्या कृष्णःस्तुतइतीर्यते १ दशमं अध्यायं कृष्णजी ओखली घसीदतेकृपे यमलार्जुन के बीचमें निकल कर यमलार्जुन गिरादेते ॥

भये तब वहाँ के देव नलकूवर मणिग्रीवने कृष्णजीकी स्तुतिकी है यह वर्णन है १) अब राजा परीक्षित श्रीशुकदेवजी ते प्रश्न करै हैं कि हे भगवन् ! नलकूवर मणिग्रीव के शापको कारण कहो ऐसो कहा निन्दितकर्म करया जाते नारदजी कृं क्रोधभयो १ शिवजी के अनुचर अतिगर्ववन्त मतवारे कुबेर के पुत्र मन्दार्किनी के तटपै रमणीय कैलास के उग्रीचामै २ वारुणी मदिरा कू पातकरे और मदते चलायमान जिनके नेत्र सो पुष्पजामै, फूलिरहे और वाग में स्त्री गानकरे कमल जहां फूलिरहे ऐसी श्रीगङ्गाजी के मध्यमें जायके स्त्रीनकू संगलैके विहार करतभये जैसे हयिनीन के संगमें हाथी विहार करै तैसे ३ । ४ हे कौरववंश में भये राजा परीक्षित ! अनायास पूर्वक देवर्षि भगवान् नारदजी तहां इनकू देखि के मतवारो जानस भये ५ अब श्रीनारदजी कू देखिके नन्म जो देवाकृता सो लडिजत होयके शापके दस्ते शीघ्र वस्त्रनकू पहिरिकेत भई और नलकूवर मणिग्रीवने बख न पहिरे नगही ठाढ़े रहे ६ तब नारदजी कुबेर के बैठानकू मतवारो देखिके मददरि कारिधेके लिये और श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन के निमित्त शाप देत यह गान करनलगे ७ अब नारदजी कहै हैं भिय विपयनके भोग करनवारो जो पुरुष तिनकी बुद्धि कौ धन मदके बिना

दात्मजौ ॥ कैलासोपवनेरम्ये मन्दाकिन्यामदोत्कटौ २ चारुणीमदिगपीत्वामदाघूर्णितलोचनौ ॥ स्त्रीजनैरनुगायद्भिश्चेतुःपुष्पितेवने ३ अन्तःप्रविश्यग

ङ्गायामम्भोजवनराजिनि ॥ चिकीडतुयुवतिभिर्गजाविवकरोणुभिः ४ गृहच्छयाचवर्षिर्भगवांस्तत्रकौत्स ॥ अपश्यन्नारदोदेवोक्षीवाणौसमवुच्चत ५ तं

दृष्ट्वात्रीडितादेव्योविवस्त्राःशापशङ्किताः ॥ वासांसिपर्यधुःशीघ्रं विवस्त्रौनैवगुह्यकौ ६ तौदृष्ट्वा मदिरामत्तौ श्रीमदान्धौसुरात्मजौ ॥ तयोरनुग्रहार्थाय

शापंदास्यन्निदंजगौ ७ नारदउवाच ॥ नह्यन्योजुषतो जोग्यान् बुद्धिभ्रंशोरजोगुणः ॥ श्रीमदादिभिरात्यादिर्यत्रस्त्रीद्युतमासवः ८ हन्यन्तेपरा

वोयत्र निर्दयैरजितात्मभिः ॥ मन्यमानैरिमन्देहमजरामृत्युनश्वरम् ९ देवसंज्ञितमप्यन्ते कृमिविद्भस्मसंज्ञितम् ॥ भूतक्षुक्रतृकृतेस्वार्थं क्रिवेदनिरयोयतः

१० देहः किमन्नदातुःस्वं निपेक्षुर्मातुरवच ॥ मातुःपितुर्वावलिनः केतुरग्नेःशुनोऽपिवा ११ एवंसाधारणं देहमव्यक्तप्रभवाप्ययम् ॥ कोविद्वानात्मसात्कृ

त्वा हन्तिजन्तून्तुतेऽमृतः १२ असतःश्रीमदान्धस्य दारिद्र्यं परमाञ्जनम् ॥ आत्मौपम्येनभूतानिदरिद्रः परमीक्षते १३ यथाकृगटकविद्धाङ्गो जन्तोर्निच्छति

और जो वियापद कुलपद और हास्य हर्षादिक रजोगुण ये नाश नहीं करै हैं धनपद जाके होइ है तब वह स्त्रीनको संगकरै है जुग्रा खेतै है मदिरा को पान करै है ८ जा धनकू पायके मन जिन ने जीतयो नहीं ऐसे निर्दयी पुरुष पशून कू मारै हैं और नाशवान् या देहकू पायके यह जानै है कि कबहुं दृढ न होइगे न परेगे ऐसे मानै हैं ९ राजाह के देहकी मृत्यु भये पीछे तीन गति होय है कृमि होय जाय अथवा परवादि जीव खाई तो विण्डाहोय जाय अग्नि दग्धकरै भस्म होय है या कारण देहके निमित्त प्राणीन ते विरोध करिवो अपनो श्रेयस्कर नहीं होय है किन्तु जीवनके दोहते जाकू नरक होइ है १० जो अब देकर या देहकू पालन करै है वह पुरुष कहै है कि यह देह मेरोही है और माता पिता कहै है कि हमरो है नाना कहै कि मेरोही मोल लेनवारो कहै कि हमरो है अग्नि कहै कि मेरोही कुत्ता कहै मेरोही है ११ या प्रकार देह मायाते होइके मायाही में लीन होइजाय है पाच तथा सातनको जामें बिबादहै ऐसे देहकू पायके एक अज्ञानी के बिना ऐसो विवेकी



पुरुष कौन है जो जीवनको बध करे १२ द्रव्यके मद करिके अन्यो जो पुरुष ताकू दरिद्र श्रेष्ठ अन्न है दरिद्रीपुरुष समस्त प्राणीन कं सुख दुःख समान देइ है क्योंकि अपने मन में विचार करि लेइ है कि या प्रकार मोकू दुःख बाधा करै है ऐसेही और पुरुषनकू भी बाधा करत होइगो जैसे आपकू सुख होइ है तैसे औरनकू भी सुख होइ है १३ जा पुरुषके पाँच में कष्टो लगै है वह पुरुष दूसरे के काटे लगिवे की इच्छा नहीं करै है अपने मनमें विचार करै है कि जैसे मोकू कांटे लागिये को दुःख भयो ऐसेही सबको होइ है और जाके काटो लागो नहीं वह काटे के दुःखकू हा जानेगो कि काटेको कहा दुःख होइ है १४ दरिद्रीपुरुषको अहंकार मद सम्पूर्ण गर्व नष्ट होइ जाइ है और जो कष्ट आयके प्राप्त होइ है तो वह वाकू तपस्या समान होइ जाय है तपमें व्रत होइ है एक अन्नके बिना भूखो प्यासो रहे है ऐसे दरिद्रीकू अन्न न मिले तो वही व्रत होइ जाय है १५ अबकी आकांक्षा करन गये दरिद्री के नित्य कडाके होथे है याते देह सूखिनाय है इन्द्रिय शिथिल होइ जाइ है याते हिंसा नहीं करै है जो आपुही मरै है वह कौनकू मारेगो १६ दरिद्रीपुरुष सबकू समान देखै है और दरिद्रीकू साधु महात्मा भी मिलि जाय है जा समय दरिद्री क्षुभित होइ के अन्न २

तांड्ययाम् ॥ जीवसाम्यंगतोलिङ्गैर्न तथा विद्वक्कण्टकः १४ दरिद्रो निरहंस्तम्भो मुक्तः सर्वमदैरिह ॥ कृच्छ्रं गृहच्छयाऽऽप्नोति तद्धितस्य परंतपः १५ नित्यं क्षु  
त्क्षामदेहस्य दरिद्रस्यान्नकाङ्क्षिणः ॥ इन्द्रियाण्यनुशुष्यन्ति हिंसापिविनिवर्त्तते १६ दरिद्रस्यैव युज्यन्ते साधवः समदर्शिनः ॥ सद्भिः क्षिणोति तंतप तत आ  
रादिशुद्ध्यति १७ साधूनां समाचिचानां मुकुन्दचरणौ पिणाम् ॥ उपेक्ष्यैः किं धनस्तम्भैरसद्भिः सदाश्रयैः १८ तदहं मत्तयोर्माध्या वारुण्या श्रीमदान्धयोः ॥  
तमो मदंहरिष्यामि स्त्रिणयोरजिनात्मनोः १९ यदि मौलोकपालस्य पुत्रो भूत्वा तमः भुतौ ॥ न विवासमात्मानं विजानीतः सुदुर्मदौ २० अतोऽहं तः स्थाव  
रतां स्याता नैवं यथा पुनः ॥ स्मृतिः स्यान्मत्प्रसादेन तत्रापि मदनुग्रहात् २१ वासुदेवस्य सान्निध्यं लब्ध्वा दिव्यशरच्छन्ते ॥ धृत्सेव लोकां भूयो लब्ध्वा भक्तीम  
विष्यतः २२ श्रीशुक उवाच ॥ एवमुक्त्वा स देवर्षिर्गतो नारायणश्रमम् ॥ नलकूबरमणिग्रीवावासुर्धुमलार्जुनौ २३ ऋषेर्भागवतमुख्यस्य सत्यं कर्तुं  
वचोहरिः ॥ जगाम शनैः स्तत्र यत्रास्तां यमलार्जुनौ २४ देवर्षिर्मे प्रियतमो यदि मौ धनदा तमजौ ॥ तत्तथा साधयिष्यामि यद्गीतं तन्महात्मना २५ इत्यन्तरे

पुकारै है तब साधु महात्मा कहै है अरे कृष्ण २ पुकारो कर या प्रकार वे महात्मा याकी अन्नकी वृष्णा दूरि करि देइ है तब शीघ्र सन्ताप छूटि जाई है १७ समान है चित जिनको ऐसे साधु महा-  
त्मान को श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द में चित लगिरहो है दुष्टनको संग जिनकू ऐसे धन करि मदोन्मत्त पुरुषन ते प्रयोजन कहा १८ वरुण जाके देवता ऐसी मदिरा कू पीके मदोन्मत्त होय गये  
धनमद मूं श्रमे होयके खीनके वशवर्ती और मन जिनने जीत्यो नहीं ऐसे ये नलकूबर मणिग्रीव तिनकू अज्ञानते मदभयो ताकू दूरि कलंगो १९ ये कुंजरे के पुत्र होय के अज्ञान में बूढि गये हैं यन्त्र  
नहीं जानै है कि हम नष्ट हैं इनकू कलु खरन न रही अतिमद होय गयो है २० याते ये दोनों वृत्तयोनियो हो जावो जो फिर इनकू मद न होय और वृत्तयोनियो भी मेरी कृपाते सुधि वनीरहै २१ और  
वासुदेव भगवान् की समीपताकू प्राप्त होउ ता पीछे फिरि स्वर्ग में जाय देवता होय जाइंगे और भगवान् में इनकी भक्ति होयगी २२ श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित ते कहै है कि हे राजन् ! देवतान

में ऋषि नारदजी या प्रकाश कहिके वदरिकाश्रम कूँ जातभये अब नलकूर मणिग्रीव दोनों यमलार्जुन होतभये २३ अपने भक्तन में मुख्य श्रीनारदजी तिनको वचन सत्यकरिवे के निमित्त श्री कृष्णचन्द्र महाराज यमलार्जुन वृत्त जहा है तहा ही होले जातभये २४ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहै हैं श्रीनारदजी भरो प्यारो भक्तहै और ये कुवेर के दोनों पुत्र हैं सो नारद महात्मा ने गाये जो गीतहैं सो वैसेही करुंगो २५ ऐसे विचार करिके यमलार्जुन जो हुँचहैं तिनके वीचमें होय के निकसे और वृत्तके वीचमें आयके उलूखल को तिरछो करिदियो २६ रस्सी ते कगर में ध्वयो जो उलूखल है ताकूँ बालक श्रीकृष्णचन्द्रने भट्टीका मारिके खींच्यो ता समय जडते उखारि के वे वृत्त पृथ्वी पै गिरतभये श्रीकृष्णके पराक्रम ते डार पतौबा सब हलतभये बडो शब्द भयो २७ जैसे सकर्पण भये तें वृत्तन में तें अग्नि निकसे तैसे अतिशोभायमान और दिशान कूँ प्रकाश करत दोनों पुरुष निकसत भये तब भगवान् त्रिलोकी के नाथ श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूँ शिरते प्रणाम

एणार्जुनयोः कृष्णस्तुयमयोर्थयो ॥ आत्मनिर्वेशमात्रेण तिर्यग्गतमुलूखलम् २६ बालेननिष्कर्षयताऽन्वगुलूखलंतदा।मोदरेणतस्मोत्कलिताङ्घ्रियन्धौ ॥

निष्पेततुःपरमविक्रामितातिवेपस्कन्धप्रवालविटपैकृतचण्डशब्दौ २७ तत्रश्रियापरमयाककुभःस्फुरन्तौसिद्धाबुपेत्यकुजयोरिवजातवेदाः ॥ कृष्णं प्रणम्य

शिरसाऽखिललोकनाथं बद्धाञ्जलीविरजसाविदमूचतुःस्म २८ कृष्णकृष्णमहायोगिस्त्वमाद्यः पुरुषः परः ॥ व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्वं रूपं ते ब्राह्मण।विदुः २९

त्वमेकः सर्वभूतानां देहस्वात्मोन्द्रियेश्वरः ॥ त्वमेव कालो भगवान् विष्णुरव्यय ईश्वरः ३० त्वं महान् प्रकृतिः सूक्ष्मा रजः सत्त्व तमो मयी ॥ त्वमेव पुरुषोऽध्यक्षः

सर्वक्षेत्रविकारावित् ३१ गृह्यमाणैस्त्वमग्राह्यो विकारैः प्राकृतैर्गुणैः ॥ कोन्निहार्हातिविज्ञातुं प्राक्सिद्धिगुणसंवृतः ३२ तस्मै तुभ्यं भगवते वासुदेवाय वेधसे ॥

आत्मद्योतगुणैश्च न्नगहिम्रे ब्रह्मणे नमः ३३ यस्यावताराज्ञायन्तेशरीरेष्वशरीरिणः ॥ तैस्तैरतुल्यातिशयेनैवेदं हि ष्वसद्भूतैः ३४ स भवान्सर्वलोकस्य

भवाय विभवाय च ॥ अवतीर्णोऽशभागेन साम्प्रतंपतिराश्रियाम् ३५ नमः परमकल्याण नमः परमजल ॥ वासुदेवाय शान्ताय यदूनांपतये नमः ३६ अनु

करत भये मद जिनको जात रहो ऐसे हाथ जोरिके यह बोले २८ हे कृष्ण ! हे महायोगिन् ! तुम बालक नहीं हो किन्तु परम कारण रूप हो और स्थूल सूक्ष्मरूप जो तुमहो तिनकूँ ब्रह्म वेत्ता जानै हैं २९ समस्त प्राणीनके देह प्राण अहंकार इन्द्रियनके तुमहीं एक ईश्वरहो और सम्पूर्ण में व्यापक भगवान् कालरूप तुमहो ३० तुमहीं महान् रूपहो रजोगुण सत्तोगुण तमोगुण और सूक्ष्म माया रूप तुमहीं हो समस्त देहन के विकार के जाननचारे साक्षी पुरुष तुमहीं हो ३१ प्रकृति के गुण जो बुद्धि अहंकार इन्द्रियादिक तिन करिके ग्रहण करिवे में नहीं आवो हो उत्पचिते पहिले स्वयंप्रकाश ता करिके वर्त्तमान हो या कारण गुणनकरि आच्छादित जो जीव सो तुमकों कैसे जानिवे कूँ समर्थ होय ३२ अपने आप है प्रकाश जिनको ऐसे गुणन करि महिमा जिनकी प्रकाशमान वासुदेव भगवान् ज्ञानस्वरूप जो ब्रह्म तिनकूँ नमस्कार है ३३ प्राकृतदेह कारिके रहित जो तुमहो तिनके अवतार देहधारीन पै वनै नहीं और देहधारीन की सामर्थ्य ते अधिक जो लीलाचरित तिन मूँ जानिवे में आवोहो ३४ समस्त लोकन के ऐश्वर्य्य और विभव अर्थात् मोक्षके निमित्त परपूर्ण रूप होयके प्रकटभयेहो ३५ परमकल्याण रूप हे मंगल रूप ! तुमकूँ

नमस्कार है शान्तरूप जो हो तिनहुं नमस्कार है यादवनके रत्ना करनवारे जो तुमहो तिनहुं नमस्कार है ३६ हे परिपूर्ण भगवान् ! तुम्हारे अनुचर दास जो हम हैं सो हमने भगवान् नारद महाराज की कृपा करिके आपको दर्शन पायो और आपहुं जान्यो ३७ सो महाराज हमारी वाणी तो तुम्हारे गुणानुवादक कबो करै और कान आपकी कथानक श्रवण करै और हाथ आपके सेवन पूजन में लागेरहैं हमारो मन आपके चरणारविन्द में लागेरहै हमारो मस्तक जामें आपकों वास रहै तासे जगत् कूं प्रणाम करै हमारी दृष्टि तुम्हारी साधुमूर्ति तिनको दर्शन करयो करै हे महाराज ! आप तें यह वर मागे हैं ३८ श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित ते कहै है कि हे राजन् ! या प्रकार नलकूर मणिग्रीवने गोकुलनाथ भगवान् की स्तुतिकरी तव रस्सी ते उलूखल जिनकी कमरमें बंधो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र मुसिकायके यह बोले ३९ करुणामय श्रीनारदजीने लक्ष्मी के मदकरि अन्ध तुमकों देखिके शापदेके लक्ष्मीतें अष्ट करिके तुमपै अनुग्रह किया यह बात हमने पहिलेही जानी ४० जानीहिनौ भूमस्तवानुचरकिङ्करी ॥ दर्शननौ भगवत ऋषेरासीदनुग्रहात् ३७ वाणीगुणानुक्तने श्रवणौ कथायाहस्तौ च कर्मसुमनस्नवनपादयोर्नः ॥ स्मृत्यां शिरस्तवनिवासजगत्प्रणामे दृष्टिः सतादर्शनेऽस्तु भवत्तनूनाम् ३८ श्रीशुकउवाच ॥ इत्थं संकीर्तितस्ताभ्यां भगवान् गोकुलेश्वरः ॥ दाम्नाचो लूखलेन छः प्रहसन्नाहुह्यकौ ३६ श्रीभगवानुवाच ॥ ज्ञातं ममैवैतद्विषणकरुणात्मना ॥ यच्छ्रीमदान्धयोर्वाग्भिर्भ्रंशोऽनुग्रहः कृतः ४० साधूनां समचिन्तानां सुतरां मत्कृतात्मनाम् ॥ दर्शनान्नो भवेद्बन्धः पुंसोऽध्वणोः सवितुर्यथा ४१ तद्वच्छतं मत्परमौ नलकूरसादनम् ॥ सज्जातो मयि भावो वागी गिसतः परमो भवः ४२ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युक्तौ तौ परिक्रम्य प्रणम्य च पुनः पुनः ॥ बद्धोलूखलमामन्त्र्य जग्मतुर्दिशमुत्तराम् ४३ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे नारदशापोनाम दशमोऽध्यायः १० ॥

श्रीशुकउवाच ॥ गोपानन्दादयः श्रुत्वा तुमयोः पतनोत्सवम् ॥ तत्राजगमुः कुरुश्रेष्ठ निर्घातभयशङ्किताः १ भूम्यां निपतितौ तत्र ददृशुर्यमलार्जुनौ ॥ वसमान जिनको चित्त और निरन्तर मन जिनको मोमें लग्यो ऐसे साधुनके दर्शनतें या पुरुषको बन्धन जाय है जैसे सूर्यके दर्शनते नेत्रको अन्धकार जाय है ४१ हे नलकूर मणिग्रीव ! मत्पराया प्रकार भगवान् के वाक्य श्रवण करि नलकूर मणिग्रीव वारंवार परिक्रमा प्रणाम करत भये उलूखलते बंध ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तिन ते आज्ञा माँगि के उत्तरदिशकूं जात भये ४३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे नारदशापोनाम दशमोऽध्यायः १० ॥

( एकादशे समागम्य दृष्ट्वा नमथार्थकैः ॥ वत्सान्पालयता नैनौ हौ वत्सवकासुरौ १ ग्यारहवें अध्यायमें बकरों की पालना करतेहुये कृष्णजी बालकों समेत दृन्दावन में आकर वत्सासुर और बकासुरको मारतेभये १ ) अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं कि हे कुरुवंशीन मैं श्रेष्ठ राजा परीक्षित ! नन्दरायजी मैं आदिलैके समस्त गोप जब वृत्त गिरे तिनको शब्द सुनिके कहनलगे कि कोई वज्रगिखो

कहा या भयते शङ्का मानिके जहाँ वृत्त गिरे तदा आवतभये १ पृथ्वीमें यमलार्जुन वृत्तनकूँ उखरिके गिरयो देखिके गिरिवे को कारण आगे दिखाये हैं ताके जाने विना गोपन कूँ भ्रमभयो आंधी वयारि विना ये वृत्त आपसूँ आप कौन कारणतें उखरि परे २ रस्सीते कपमें बँध्यो जो उलूलल ताकूँ खँचे डोळें वालक श्रीकृष्णचन्द्र तिननेही वृत्त पटकेँ यह व्रजवासीनने नहाँ जानिके कहन लगेकि कौन राजसको कर्महै कहा ते आश्चर्यरूप उपागतभयो ऐसे व्रजवासीहरये ३ उसस्थानपे जो छोटे कोटे वालक खेलत रहे ते बोले कि यह श्रीकृष्णचन्द्र उलूललकूँ खँचेसँचे वृक्षनके वीचमें आयो तव उलूलल तिरछो होइके अडिगयो तव याने भटका मारिके खँच्यो तासूँ गिरि परे इनमें ते दो पुरुष निकसे तेऊ हमने देखे ४ वालकन की बात व्रजवासीन ने न मानी ततक सौ वालक इतने बड़े वृत्तनको कैसे उखारोगो कोई व्रजवासीनकूँ या प्रकार सन्देह भयो और कोई कहतभये किया वालकने जन्मतेही ऐसे और उपाय किये हैं वालकसेने पूतनामारी और तुणावर्त माख्यो गाड़ा पटक दियो ये वृत्तहू पटक दिये होइगे ५ कपमें बँध्यो जो उलूलल ताको खँचे डोले ऐसे अपने पुत्र श्रीकृष्ण विनकूँ नन्दरायजी हँसिके यह बोले तेरे उलूलल कौनने भँध्यो है तव श्रीकृष्ण

अमुस्तदविज्ञाय लक्ष्यपतनकारणम् २ उलूललं विकर्पन्तं दाम्नावद्धं चालकम् ॥ कस्येदंकुत आश्रयमुत्पातइति मतराः ३ वाला ऊचुननेति तिर्यग्ग तमुलूलम् ॥ विकर्पतामध्यगेन पुरुषावप्यवक्षमहि ४ नतेतदुक्कं जगद्गुर्न घटेतेतितस्यतत् ॥ बालस्योत्पातनंतवोः केचित्सिदिग्यत्रेतसः ५ उलूललं विकर्प न्तं दाम्नावद्धं स्वमात्मजम् ॥ विलोक्यनन्दः प्रहसद्वदनो विमुमोच ह ६ गोपीभिः स्तोभितोऽनृत्यङ्गवान् बालवत्कचिन् ॥ उद्गायति कचिन्मुग्धस्तद्वशो दा रुयन्त्रवत् ७ विभक्तिकचिदाज्ञसः पीठकोन्मानपाडुकम् ॥ बाहुशेपंचक्रुरुत्ते स्वानांच प्रीतिमावहन् ८ दर्शयंस्तद्विदालो कआत्मनो भृत्यवश्यताम् ॥ ब्र जस्योवाहवैहर्ष भगवान् बालवेषिटैः ९ सरितीरगतं कृष्णं भग्नार्जुनमथाह्वयत् ॥ जन्मक्षमद्य भवतो विभ्यो दिहि गाः शुचिः १० पश्य पश्य वयस्यांस्ते मातृ मुष्टान्स्वलङ्कृतान् ॥ त्वञ्जस्नातः कृताहारो विहरस्वस्वलङ्कृतः ११ नोपेयातां यदाहूतौ कीडासज्जेन पुत्रकौ ॥ यशोदां प्रेयामास रोहिणीपुत्रवत्सला

ये कसो पैया ने पाँध्यो है चल तेरी पैया कूँ कैसे डायें हों यों कहिके उलूलल खोलि दियो ६ गोपी कहै हैं कि हम तारी बजावें तुम नाचौ तव छः प्रकारको जिनको ऐश्वर्य ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् कभई बालक गोरी नई नाचन लगे हैं कभजें भोरे वनिकर गावैं हैं जैसे काष्ठकी पुतरी बाजीगर के वश जितमें कर केरे तितमें मुरिजाय ऐसे गोपीन के प्रेमके वश हैं ७ कभजें यशोदाजी कहैं हैं ताला पीया खेआ व बाबाकी लड़ाक ले आउ तव पीडा लावैं हैं खड़ाक लावैं हैं कभजें वस्तु न उठै है तव दाय नचावैं हैं या प्रकार अपने व्रजवासीन कूँ लीलाकारिके आनन्ददेतैं ८ संसार में ऐश्वर्यके जागनपारे हैं तितभई भगवान् गिरायें हैं किमें भक्तन के ऐसे वशमें हों जैसे नचावैं तैसेही नाचैं हूँ या प्रकार बाललीला करिके व्रजवासीनकूँ आनन्ददियो है सो विधिपूर्वक मयन न भिधानद होतभयो ९ यमलार्जुन मत्तम धूँ धरागिरिके श्रीकृष्णचन्द्र यमुना तीर पै बालकनके संग बलदेवजी सहित खेलैं हैं तिनकूँ रोहिणीजी बुलावनलगीं आज तेरे जन्मको नलत्रहै न भन कहिके प्रामागान भो गजलके तान कर १० मुभाये ते ग आयें तव कहैं हैं तेरी वरावर के बालकन कूँ मैंने स्नान करायो है सुन्दर कपड़ा गहने पहिरायें हैं तू देख तो सही इन

के आगे बुरी ही लागत है या ते तू भी स्नानकरिके भोग लगायके सुन्दर गहने पहिरके अच्छे सुखपूर्वक स्नान करि लगेयके खेलोकर ? ? रोहिणीजीके बुलाये ते पुत्र कृष्ण और बलदेव खेलमें लगे रहे हैं तारों न आये तब पुत्रमें है हित जिनको ऐसी यशोदाजी बुलायके भेजी ? २ बालकनके संग भैया बलदेवसहित खेलत खेलत दिन बहुत आय गयो ता समय पुत्रके स्नेह ते स्नानमें जिनके दूखेवै ऐसी यशोदाजी श्रीकृष्णचन्द्रके बुलावनलगी ? ३ हे कृष्ण ! हे कमलदललोचन ! तू आउ स्तनपीले धुयके मारे पेट तेरो लगिगयो है हे पुत्र ! खेलत खेलत हरिगयो होइगो अप तो खेलिनो रहन दे ? ४ या प्रकार यशोदाजीके बुलाये श्रीकृष्ण न आये तब कहै हैं कि कृष्ण न आवै तो याहू जान दे हे राम ! हे पुन ! हे कुल के आनन्द देनपारे ! तू शीघ्र आउ और छोटे भैया के भी हाथ पकारिके लै आउ प्रातःकाल ही कलेवा करौ है अप आयके भोजन करिवे कुंवे हैं तेरे आयकेको पैडो देखें इ तो को बूढ़े बाबाकी दया नहीं आवै है तू आउ हमको प्रसन्न कर या प्रकार कहै हैं श्रीकृष्ण आपनलगे तब बालक गले जैसे तैसे करिके तो खेल जम्यो है अब श्रीकृष्ण जाय है याको कथक न खिलावै ऐसे अवग करिके फिर खेलन

म १२ श्रीकृष्णसुतं चालेरतिवेलंसहायजम् ॥ यशोदाजो हवीरुष्णं पुत्रस्नेहस्तुतस्तनी १३ कृष्णकृष्णारविन्दान्न तात एहिस्तनं पिव ॥ अलंविद्वारैः क्षुत्क्षान्तः क्रीडाश्रान्तोऽसि पुत्रक १४ हे रामागच्छतातागुप्तानुजः कुलनन्दन ॥ प्रातेरवकृताहारस्तद्वानुभोक्तुमर्हसि १५ प्रतीक्षतेत्वांदासाहं भोक्ष्यमाणो ब्रजाधिपः ॥ एहावयोऽपि यं येहि स्वगृहानयात बालकाः १६ इत्थं यशोदातमशेषोत्तरं मत्वा सुतस्नेहनिबद्धधीर्नृप ॥ हस्ते गृहीत्वा सहस्रमभ्यनुतं नीत्वा स्वचाटुकुनवत्यथोदयम् १७ श्रीशुकुवाच ॥ नन्दादयः सगाम्य ब्रजकार्यगमन्त्रयन् १८ तत्रोपनन्दनामाह गोपो ज्ञानवयोऽधिकः ॥ देशकालार्थतत्त्वज्ञः प्रियद्वन्द्वमकृष्णयोः १९ उत्थातव्यमितोऽस्माभिर्गोकुलस्य हि तैपिभिः ॥ आग्रान्त्यत्र महोत्पाता बालानां न शहेतवः २० मुक्तः कथञ्चिद्ब्रक्षस्या बालधन्या बालको ह्यसौ ॥ हरेरनुग्रहाच्चूनमनस्योपरि नापतत् २१ चक्रवातेन नीतोऽयं दैत्येन विपदं विपद्यत् ॥ शिलायां प

लगे तब यशोदा जी बोली बालको तुम्हारे घरवार है कि नहीं जाव अपने घरन कुं ? ६ हे राजन् परीक्षित ! स्नेह ते बुद्धि जिनकी बड़ी ऐसी यशोदा ब्रह्मादिकन के मुकुटमणि श्रीकृष्ण के अपनो पुत्र मानिके बलदेव सहित श्रीकृष्णचन्द्र को हाथ पकारिके घरमें लै आई उवटन करि स्नान करायो गौवनको दान करायो ब्राह्मण भोजन कराये बलदेव पहिरये या प्रकार उत्सव करायो १७ नन्दजी ते आदिलै के जो बूढ़ ब्रजवासीन ने महावन में बड़े बड़े उत्पात देखे तब सम्पूर्ण क्षुरि मिलिके गोकुल के हितको विचार करनलगे ? ८ ज्ञान और अवस्था करिके अधिक देशकाल की बातको जाननवारो बलदेव और कृष्णचन्द्र ते अतिह स्नेह जाको ऐसी उपनन्द नाम गोप तहा बोल्यो १९ गोकुल के हितकी इच्छाकरै ऐसे उपनन्द कहै हैं कि हम यहा ते उठिके और जगह बास करैये यहा बालकन के पारिवे के कारण बड़े बड़े उत्पात आवै हैं २० बालकन की मारनवारी पूतना राक्षसी पै जैसे तैसे यह बालक वच्यो है और हरिके अनुग्रहते एक समय गाढ़ा याके ऊपर ते वचिगयो न गिरयो २१ और एकसमय तुणावत्त वधूको स्वरूप धरिके या बालक कुं आकाश में उड़ाय के लै गयो तब शिलाके ऊपर गिरयो बड़ा ह देवनाने याको



रत्नाकरी २२ यह बालक और कोई बालक दृष्टान के बीचमें आयके मल्लो नहीं वहा भी अच्युत भगवान् ने रत्नाकरी २३ यावत् पर्यन्त उत्पत्त को करनवारो अरिष्ट प्रज्म न आवै तावत् पर्यन्त बालरुन के लैके और जगह जायकरि वैसेगे २४ पशून को हितकारी और नये जायें वाग गयीचा ऐसो वृन्दावन नाम वनहै गोप गोपी गजन के रहिये लायक ठिकानो है पवित्र जहा गोवर्द्धन पर्वत है सुन्दर घास जल और लताहै २५ ता वृन्दावनमें अवर्षा चलि वसै तुम कूं अच्छी लगे तो गाढ़ान कूं जोतो गायन को आगे हाकि लेउ हील मतिकरो २६ या प्रकार उपनन्द गोपको वचन सुनिके गरु जिनकी बुद्धि ऐसे गोप भले २ ऐसे वृद्धाई करिके अपने अपने गाढ़ान कों जोरि चीज वस्तु लादिके जातभये २७ हे राजन् परीक्षित् ! वृद्ध गलक हीन कूं और सन यस्तुन कूं गाढ़ान में कादिके धनुष् कू हाय में लैके समस्त व्रजवासी साव मान होय के गजन कूं आगे करिके बड़ी नड़ी तुरही उगाय कैं पुरोहितन कूं संग लैके सम्पूर्ण गोकुल तैं वृन्दावन कूं जातभये २८ । २६

तितस्तत्रप्रसिन्नातःपुरेस्वरैः २२ यन्नम्रिथेतदुमयोरन्तरं प्राप्य बालकः ॥ असावन्यतमोवापि तदप्यच्युतक्षणम् २३ यावदौत्पातिकोऽरिष्टो व्रजनाभिभवे दितः ॥ तावद्बालानुपादाय यास्यामोऽन्यत्र सातुगाः २४ वनं वृन्दावनं नाम पशव्यनं वनाननम् ॥ गोपगोपीगवांसिव्यं पुण्याद्रितृणवीरुधम् २५ तत्तत्रा द्यैवयास्यामः शनैदानुयुक्तपाचिरम् ॥ गोधनान्यत्रतोयान्तु भवतां यदिरोगे चते २६ तच्छ्रुत्वैकधियोगोपाः साधुतां ध्वतिवादिनः ॥ व्रजान्स्वान्स्वान् मायुज्ययथूरुढपरिच्छदाः २७ वृद्धा वृन्दावनं स्त्रियोरान्जन् सर्वोपकरणानि च ॥ अनस्वारोग्यगोपाला गत्वा आत्तशरासनाः २८ गोधनानि पुग्मकृत्य श्रु ज्ञायथापूर्यमर्वतः ॥ तुर्यघोषेण महता ययुः सह पुरोहिताः २९ गोप्योरुदथा नृल कुचकुम्भकान्तयः ॥ कृष्णलीलाञ्जगुः प्रीत्या निष्ककण्ठ्यः सुवाससः ३० तथा यशोदारो हि श्यावेकं शरुदमास्थिते ॥ रेजतुः कृष्णरामाभ्यां तत्तथा अवणोत्सु हे ३१ वृन्दावनं संभविश्य सर्वकालसुखावहम् ॥ तत्र च कुर्वन् जावासं शकटैर्द्धचन्द्रवत् ३२ वृन्दावनं द्रोवर्द्धनं यमुनापुलिनानि च ॥ वीक्ष्यासीदुत्तमाप्रीती राममाधवयोर्नृप ३३ एवं व्रजौकसां प्रीतिं यच्छन्तौ बालचेष्टितैः ॥ कलवाक्यैः स्वकालेन वतसपालौ वभूवतुः ३४ अविदूरे व्रजभुवः सह गोपालदारकैः ॥ चारयामास तुर्वत्सानानाकीडापरिच्छदौ ३५ कञ्चिद्वादयो वेणुं

गोपी नवीन के शर कुचन में लगाय के घुक्कुकीन कूं रुएउ में पहिर के सुन्दर मल्लन कूं पहिर के रथन में वैठिके कृष्ण की लीला गावतभई ३० ताही प्रकार रोहिणी यशोदा एक गाढ़ामैं वैठिके श्रीकृष्णचन्द्र और बलदेवजी कूं साथ लैके तिनके लीला चरित्र अवण करत शोभा कूं मास होतभई ३१ समस्त ऋतुनमें सुखप्रो देनवारो जो वृन्दावन है तागें आयके गाढ़ान कूं घरावर ठाढ़ो करिके आधे चन्द्रमा वी दुख्य गौवन के रहिये कूं स्त्रिक वनावत भये ३२ वृन्दावन कूं देखिके गोवर्द्धन पर्वत कूं देखिके यमुनाजी को सुन्दर तट देखिके हे राजन् परीक्षित् ! कृष्ण बलदेव कूं वृद्धो आनन्द होतभयो ३३ या प्रकार बाललीलान स और तोतली वातन सूं व्रजवासीन कूं आनन्द देइ हैं आप जा समय देखरा चरावन लायक भये तत्र वृद्धरान के पालकभये ३४ व्रजभूमि के निकट

ही गोपालन के लडकान कूं संग लैके श्रीकृष्ण बलदेव दोनों भैया बछरान कूं चरावत भये और तरह की क्रीड़ा कूं करत भये ३५ ताही समय एक वासुरी कूं वजाने हे और ३५ अं आसन के केके हे कभज पावनमें शुंमुख वाधिके नाचै हे और कभज द्रजवासीन के बालकन कूं कवल बढाय के कृष्ण बलदेव दोनों भैया बल वनाने हे ३६ और उनके संग आपहू बल वनिके शब्द करै हे कभज परस्पर शुद्ध करै हे कभज पत्नीन की बोली की नकल करै हे आ प्रकार बालक खेलै हे ३७ एक समय यमुनाजी के किनारे पै श्रीकृष्ण बलदेवजी अपनी बराबर के पित्रन कूं संग लैके बछरान कूं चरावत हे तदा इनके मारन की इच्छा करिके दैत्य आवत भयो ३८ बछरा को रूप धरिके बछरान के समूह में आयके मिल्यो तासमय बलदेव जी की को दिखाय के होले होले बाके पास जात भये ३९ जाय के श्रीकृष्णचन्द्र ने पूंखसहित वा दैत्य के पिछिले पांव पकरि के खून घुमायके कैथके पेड़के ऊपर फोंकिदियो घुमाइवे में प्राय निकरि

क्षेपणैः क्षिपतः क्वचित् ॥ क्वचित्पादैः किङ्किणीभिः क्वचित्कृत्रिमगोवृषैः ३६ वृषायमाणैर्नर्दन्तौ युयुधाते परस्परम् ॥ अनुकृत्य रुनैर्जन्तूश्चैतुः प्राकृतौ यथा ३७ कदाचिद्यमुनातीरे वत्साश्चारयतोः स्वकैः ॥ वयस्यैः कृष्णवलयोर्जिघांसुर्दैत्य आगमत् ३८ तंवत्सरूपिणं वीक्ष्य वत्सशृगं तं हरिः ॥ दर्शयन् बलदेवा यशनेर्मुग्धवत्सदत् ३९ गृहीत्वाऽपरपादाभ्यां सहलाङ्गुलमच्युतः ॥ भ्रामयित्वा कपित्थाग्नेप्राहिणो द्रुतजीवितम् ॥ सकपित्यैर्महाकायः पात्यमानैः पपान ह ४० तं वीक्ष्य विस्मितावालाः शशंसुः साधुसाध्विति ॥ देवाश्च परिसन्तुष्टावभूवुः पुष्पवर्षिणः ४१ तौ वत्सपालकौ भूत्वा सर्वलोकैकपालकौ ॥ सप्रातरा शौगो वत्सांश्चारयन्तौ विचैतुः ४२ स्वं स्वं वत्सकुलं सर्वे पाययित्वा पशुर्जलम् ४३ ते तत्र ददृशुर्वाला महासत्त्व मवस्थितम् ॥ तत्र मुर्वज्रानि भिन्नगिरेः शृङ्गमिव च्युतम् ४४ सर्वैव कोनाम महानसुरो वक्ररूपधृक् ॥ आगत्य सहस्राकृष्णं तीक्ष्णतुण्डोऽग्रसद्वली ४५ कृष्ण महावक्रग्रस्तं दृष्ट्वा रामादयोऽर्भकाः ॥ वभूवुरिन्द्रियाणीव विना पूर्णं विचेतसः ४६ तं तालुमूलं पृथुदहन्त मग्निवद्गोपालमूनुपितरं जगद्गुरां ॥ चञ्चदसद्यो

गयो बड़ी जाकी देह ऐसो वत्सासुर दैत्य कैथके दृत्तन कों संगलैके पृथी में गिरत भयो ४० ताको गिरयो देखिके सम्पूर्ण बालक आश्चर्य मानिके भली करी २ ऐसे बड़ाई करत भये देव ता सन्तुष्ट होयके पुण चरसावत भये ४१ समस्त लोकन के पालन करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र और बलदेवजी महाराज बछरान के पालक होयके मातः काल को कलेवा लेके वनमें जायके बछरान कूं चरावत लीला विहार करत भये ४२ एकदिन समस्त बालक अपने अपने बछरान के समूहन को श्रीयमुनाजी के तटपै जल पिवाइवे के निमित्त गये तहां बछरान कों जल प्याय के आप जल पीवत भये ४३ ते बालक यमुनाजी के तीर पै वज्र ते काठिन पर्वत की शिलाके मानिन्द बड़ो जाको मुख ऐसो जानवर देखत भये बाकूं देखिके बड़ो आस मानत भये ४४ बड़ो बली तीक्ष्ण जाकी बाँव ऐसो वत्सासुर दैत्य बगुलाको रूप धरिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं आय के शीघ्रही निगलि गयो ४५ श्रीकृष्णचन्द्र कूं वत्सासुर निगलिययो ता समय बलदेवजीसुं आदि लैके समस्त

बालक प्राणमके पिना इन्द्रिय जैसे अचेत होय जाय है तैसे अचेत होय गये ५६ गऊन के पालन करनवारे नन्दरायजी तिनके पुत्र जगत के गुरु जो ब्रह्मा ताके पिता ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ते अग्नि के अंगार के तुल्य वाके तालुये कूं जरावत भये तासमय वकासुर तुरत उगलित भयो तनकहू जिनके अंगमें घाउ न आयो तव तो अतिकोथ करि श्रीकृष्णचन्द्र कूं फिरि वकासुर मारिबे कूं आवत भयो ४७ साधुन के पालन करनवारे देवतान कूं आनन्द देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र सो चलयो आवै जो कंस को सखा वकासुर ताकी दोनो हाथन तें चोंच पकरिके बालकनके देखत देखतही जैसे तृणको चीरिहारें ता प्रकार चीरतभये ४८ ता समय सुरलोक के देवता वकासुर के वैरी श्रीकृष्णचन्द्र के पुष्पनकी वर्षा करत भये और नगाड़े शंख बजाय के स्तुति करतभये श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर पुष्पनकी वर्षा स्तुति देखि के वृजवासीनके बालक आश्चर्य मानतभये ४९ जैसे इन्द्रिय प्राण आये ते सुखी होय है तैसे वलदेवजी

ऽतिरुपाक्षतं वस्तु गडेन हन्तुं पुनरभ्यपद्यत ४७ तमापतन्तं सनिगृह्यतु गडयोर्दोभ्यां कंससखं सतां पतिः ॥ पश्यत्सु बाले पुददार ललितया मुदा बहो वरिण्यव द्विवौकसाम् ४८ तदा वकारिं सुरलोकवासिनः समाकिञ्चनन्दनमस्त्रिकादिभिः ॥ समीडिरे चानकशङ्खसंस्तवैस्तद्वीक्ष्य गोपालमुताविसिस्मिरे ४९ मुक्तं वकास्यादुपलभ्य बालका रामादयः प्राणमिवैन्द्रियोगणः ॥ स्थानागतं तं परिरभ्य निर्वृताः प्रणीय वत्सान् ब्रजमेत्यतज्जगुः ५० श्रुत्वा तद्विस्मिता गोपा गोप्यश्चातिप्रियाहताः ॥ प्रेत्यागतमिवौत्सुक्यादैक्षन्त तृपितेक्षणाः ५१ अहो वतास्य बालस्य बहवो मृत्यवोऽभवन् ॥ अध्यासीद्विप्रियेतेषां कृतपूर्वयतो भयम् ५२ अथाप्यभिभवन्त्येनं नैव ते घोरादर्शनाः ॥ जिघांसयेन मासाद्य नश्यन्त्यग्नौ पतद्भवत् ५३ अहो ब्रह्माविदां वाचो नासत्याः सन्ति कर्हिचित् ॥ गगो यदा ह भगवानन्वभावितथैव तत् ५४ इति नन्दादयोगोपाः कृष्णरामकथां मुदा ॥ कुर्वन्तो रममाणान् ५५ एवं विहारैः कौमारैः कौमारं जह तुर्व्रजे ॥ निलायनैः सेतुबन्धैर्मर्कटोत्सवनादिभिः ५६ इति श्रीमद्भागवत महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वाध्यायः ११ ॥ ॐ ॥

ते आदि लैंके समस्त बालक वकासुर के मुखमें ते निकसि के श्रीकृष्णचन्द्र अपने पास आये तिन तें छाती लगाय के सम्पूर्ण बालक मिलिके सुखी भये बछरान कों इकठौरो करिके वृज में लैंके आये और आज या श्रीकृष्णकूं वगुला निगलि गयो यह बात कहतभये ५० वड़े प्यार ते जिनके आदर गोप गोपिन के बालकन की बात सुनि सुनि के आश्चर्य मानिके जैसे मृत्यु होय के वगदि आवै है ताकूं उतरगठा सूं मिलै तैसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखनलगे देखत देखत आनन्द तें नेत्र वृप्त न भये ५१ और सम्पूर्ण गोप कहन लगे वढ़ो आश्चर्य है यह वढ़ो दुःख है या बालक के बहुत मृत्यु के उपाय भये परन्तु जो मारिबे को आये तिनकोही बुरो होय गयो क्यों पहिले उनने और कूं भय दियो हो ५२ घोर जिनको रूप ऐसे असुर राजस या कृष्णको कहु झिगार न करि सके आप मरिबे के कारण याके पास आवै है जैसे आगिमें पतझ जरि जाय है तैसे आपही मरि जाय है ५३ अहो वेद के पढ़नवारे ब्राह्मणन की वाणी कभऊं भिख्या नहीं होय है जो बात गर्वाचार्य कहिये रहैं सो वैसेही देखि परै है ५४ नन्दजी सूं आदि लैंके समस्त ब्रजवासी श्रीकृष्ण वलदेव जी की बातनकों कहि कहिके आनन्वित होयके सुखमानै हैं यह जिनको खबरि न भई ५५ या



और कोई बालक मोरन के संग नाचते है ८ और कोई बालक बन्दरान की पूंछ पक़रि के फैलै है और पूंछ पक़रि के उत्तनने चढ़ि गाय है और कोई बालक अपने ज्ञान चढे करि के आलें घुनाय के बन्दरान के सम्मुख घुड़ के है कोई उत्तनने ते कूटै है ९ और कोई मँडुक्रान के संग फुटके है जब वे गोता गौर तब आपसी यमुनाजी में गोता मारै है और कोई बालक अपनी परछाई की हँसी करै है कोई बालक कुआ गायरी में जो ध्वनि होय है तिनकू गारी देत है १० या प्रकार ब्रह्मज्ञानीन कू न्हास्वरूप करि के जानिये में आवै है दासभाव के करनवारे जो भक्त है ते परदेवना स्वामी जानै है माया जिनकू लपिरही है वे पुरुष पतुष्य के बालक जानै है जाकी जैसी भावना ताको तैसही दिखी देत है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् जिनके संग बड़े बले पुरयन के समूह जिनने करे उन ब्रजवासीन के बालक खेलै है ११ जिनके चरणारविंद की धूरि बहुतजग्य तपस्या करि के मनकू रोकै ऐसे योगीश्वरन कू भी नहीं पास होय है सो श्रीकृष्णचन्द्र आप

विलिङ्घन्तः सतिप्रसन्नवसंभुताः ॥ विहसन्तःप्रतिच्छायाः शपन्तश्चप्रतिस्ननाच्च १० इत्थं सतां ब्रह्ममुखानुभूत्या दास्यंगतानां परदैवतेन ॥ मायाश्रितानां नर  
दारैश्चैव साकं विजहः कृतपुरुषपुञ्जाः ११ यत्पादपां सुर्वहुजन्मकृच्छ्रतोष्टनात्मभिर्योगिभि रप्यगम्यः ॥ स एव यद्वृत्तिपयः स्वयं स्थितः किं वरयेत्तदि  
ष्टमतो ब्रजौकसाम् १२ अथावनामाऽभ्यपतन् महासुरस्ते पासु खकी वक्रानुजः ॥ निरयं यदन्तर्निजजीवितेषुभिः पीतामृतैरप्यमैः प्रतीक्ष्यते  
१३ दृष्ट्वाऽर्धकान् कृष्णमुखानघासुरः कंसानुशिष्टः सवकीवक्रानुजः ॥ अयन्तु ये सोदरनाश हृत्तयोर्द्वयो र्थेन सवलं हनिष्ये १४ एते यदा मत्सुहृदो  
स्ति लापः कृतास्तद्दानं प्रसमात्रजौकसः ॥ प्राणैर्गते वर्णसुक्रानुचिन्ताप्रजाऽसवः प्राणभृतो हि येते १५ इति वयस्य राजगर्वं बृहदपुः सयोजनाया ममहा  
द्विपीवसम् ॥ धृत्वा ह्रुतं व्यात्तगुहाननंतदा पथिव्यशेतयसनाशया खलः १६ धराधरोष्ठो जलदोत्तरोष्ठो दर्याननान्तो गिरिशृङ्गदंष्ट्रः ॥ ध्वान्तान्नरास्यो वि  
तताध्वजिह्वः परपानिलश्चासदवैक्षणोष्णः १७ दृष्ट्वा तं तादृशं सर्वे गत्वा वृन्दावनं श्रियम् ॥ व्यात्ता जगरतु गेडेन ह्युत्प्रेक्षन्ते स्म लीलया १८ अहो मित्रा

इनके सम्मुख ठाढ़े रहे हैं अहो इन ब्रजवासीन के भाग्य कहा वर्णन करै १२ बालक वनमें खेलै हैं इतने में एक दिन अघासुर दैत्य आवत भयो तिन बालकन कू मुखपूर्वक खेलत देखि के कुछ मरयो अपने जीविकी इच्छा करै अमृत जिनने पियो ऐसे देवता कैसे कब मरेंगे या प्रकार पैंडो देख्यो करै १३ पूतना और वकासुर को छोड़ो भय्या वंसको पठायो अघासुर आयो कृष्ण त्रिन में मुख्य ऐसे बालकन कू देखि ते मन में विचार प्रसत भयो कि या कृष्ण ने मेरे भय्या और बहिन मारे हैं तिन दोनों के बदले बालक बखरान सहित या कृष्ण कू मारुंगो १४ और अपने भय्या वनि कू इन बालकन की तिलाञ्जली देख्यो तब सब ब्रजवासी नष्ट होइ जाथेगो गायगेय पीछे देहनकी कहा चिन्ता है प्राणशरीर पुरुषन को प्राण है १५ ऐसे मनमें निश्चय करि के चारकोस की लक्ष्यो बड़े पर्वत कीसी नाई मोटो अजगर सर्पको अद्भुत बड़ी देह धारण करि के गुफा की तुल्य मुख पसारि के बखरा बालकन के निगलिये के लिये मार्ग में दृष्ट सोवत भयो १६ धरती में नीचलो ओष्ठ और वादल में ऊपरलो ओष्ठ फैलाय दियो है पर्वत की गुफा की तुल्य जाके मुखको अन्त है पर्वत के शिखर के समान डाढ़ें हैं धरके अंधरे सों जाके मुख



में अन्यकार है वड़े रास्ता कीसी नाई जाकी जीयहै कठोर पवनकी तुल्य जाकी स्वासहै अग्निकी तुल्य जाकी दृष्टि है १७ सपस्त बालक अथासुर को देखिके घुन्दावन की शोभा पानिके फूलयो जो अजरसो मुख ताके समान लीला करतभये १८ आपुसमें कहतभये अहो मित्र ! तुम कहौ आगे यह जानवर सौ ठाढ़ो है कि नहीं हमारे निगलिवे के लिये सर्प कीसी नाई मुख पसारै है कि नहीं १९ सत्य है सूर्य की किरणन सूलाल वादर ऐसे लगै है मानों सर्प को ऊपरलो ओष्ठहै और सूर्य की परछाई ते लाल भई जो धरती सो ऐसी लगै है कि मानों सर्प के नीचे की ठोड़ी है २० वायें दाहिने पर्वत की गुफा ऐसी लगै है मानों या सर्प के मुखको अन्तहै ऊँचे ऊँचे पर्वतन की शिखर हयै ऐसी लगै है मानों सर्प की डाढ़है यह देखो तुम २१ चौडो लम्बो रास्ता यह हम कूँ ऐसी लगै है मानों या सर्प की जीयहै और शिखरन के भीतर जो अन्यकार है सो हमको ऐसी लगै है मानों सर्प के मुख के भीतर अन्यकार है २२ दाव सौ उण्ण तीक्ष्ण पवन ऐसी लगेहै

णिगदतसत्त्वकूटपुरःस्थितम् ॥ अस्मत्संश्रमनव्यात्तव्यालतुण्डायतेनवा १६ सत्यमर्ककराक्रमुत्तराहनुवद्वधनम् ॥ अघराहनुवद्वधनत्पतिब्ध्या ययाऽरुणम् २० प्रतिस्पद्धेनेसृक्किभ्यां सव्यासव्येनगोदरे ॥ तुङ्गशृङ्गालयोप्येतास्तदंष्ट्राभिश्चपश्यत २१ आस्ततायाममार्गोयं रसनाप्रतिगर्जति ॥ पामन्तर्गतं ध्वान्तमेतदप्यन्तराननम् २२ दावोण्णखरवानोऽयं स्वासवद्भ्रतिपश्यत ॥ तद्गन्धसत्त्वहुर्गन्धोऽप्यन्तराभिपगन्धवत् १३ अस्मान्किमत्रग्रंथिता निविष्टानयंतथात्रेवकवद्धिनङ्कुमति ॥ चाणदनेनेतिवकार्युशन्मुखं वीक्ष्योद्धमन्तःकरताडनैर्ययुः २४ इत्थंमिथोतथ्यमतज्ज्ञभापितं श्रुत्वाविचिन्त्येत्यमृपा सुपायते ॥ रक्षोविदित्वाऽखिलभूतहस्तिथतः स्वानां निरोद्धुं भगवान्मनोदधे २५ तावत्प्राविष्टास्त्वसुरोदरान्तरं परं नगीर्णाः शिशवः सवस्ताः ॥ प्रतीक्षमाणेन वकारिवेशनं हतस्वकान्तरमरणे न रक्षसा २६ तान् वीक्ष्य कृष्णः सकलाभयप्रदो ह्यनन्याथान् स्वकरादवच्युतान् ॥ दीनांश्च मृत्योर्जिताग्निवासान् धृष्टिर्दि तोदिष्टकृतेन विस्मितः २७ कृत्यं किमत्रास्य खलस्य जीवने नवाअमीपांचसतां विहिंसनम् ॥ द्रयंकथं स्यादिति संविचिन्त्य तज्ज्ञात्वाऽविशसुराडमशोपहृद्य मानों सर्प को स्वासहै दाव में जीव जरै है तिनकी दुर्गन्ध ऐसी लगै है मानों सर्प के मुखमें धंसगे तो कहा यह हमको निगलिजायगो और जो निगलेगो तो यह श्रीकृष्ण याहि क्षणभरमें वक्रासुर कीसी नाई मारि डारैगो या प्रकार कहिके वक्रासुरको कैरी श्रीकृष्णचन्द्र तिनको सुन्दर मुख देखिके हंसिके तारी वजाय के बालक आगे को जातभये तारी वजायवे को कारण यह है कि जो सर्प होयगो तो सरकि जायगो और जो घुन्दावन की शोभा होयगी तो लेलैगे २४ छठो अज्ञानीनको वचन सुनिके हो तो सर्पको स्वरूप बरिंदी असुर परन्तु बालकन कूँ घुन्दावनकी शोभा सौ लगैहै सपस्त प्राणीन के हृदय में विराजमान ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रने मनमें, विचारिफियो कि राजस जानिके बालकन कूँ मनाकरुं कि याको मुखमें न जाय २५ ऐसे मनमें विचार करै तन ताई वक्रानकूँ लै के बालक सर्प के मुखमें चलेगये परन्तु ता सर्पने निगले नहीं काहे ते कि मनमें विचार करयो वक्रासुर को मारनचारो मेरो दावादार कृष्ण तो आयो नहीं जे अपने भय्या बहिन मरे है तिनकी छुाँवकरै है याते राजसने निगले नहीं २६ सबके अभयके देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र और जिनको पालन करनचारो नहीं मेरे हाथ ते निजसिगये

दीन हैं अघासुर के पेट की अग्नि करि जारि जार्थमे या प्रकार तालकन कूँ देखिके छुगाकरि पीड़ित भये दैवने कहा करडारो ऐसे आश्चर्य मानतभये २७ प्रब श्रीकृष्णचन्द्र मनमें विचार नरै हैं कि या दुष्टको जीवन न होय और साधु मेरे भिजन को नाश न होय ये दोनों बातें कैसे होयें यह विचार करि के तिन दोनोंन कूँ जानिके सम्पूर्ण के देवनगरे भगवान् अघासुर के मुख में धंसै क्योंकि भित्रता को यह धर्म नहीं है कि भित्र मुस में गये आप बाहिर ठाढ़े रहै जो होयगी सो भित्रन के संग होयगी याते आप बैसे २८ ता समय बाहर नहीं ओट में देवता ठाढ़े रोय के दाय दाय करनलगे और निर्कृति के वंशके अघासुर के भयगा बन्धु बंसकूँ आदिलै के राजस हैं तिनकूँ आनन्द भयो २९ अविनाशी श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् देवतान जो दाहाकार गवद सुनि के बालक वधरान सहित अपने आत्मकूँ चुर्य करि के निगलो चाहै अघासुर ताके गिरे में जब्दी घसत भये ३० वड़ो जाको देश कण्ठ जाको रुकिगयो-आखि जाकी निकस आई इत एत अमै अवा-

रिः २८ तदाघनन्धदोदेवाभयाद्धाहेतिचुकुणुः ॥ जहपुर्वेचकंसाद्याःकौणपास्त्वघवानधवाः २९ तच्छ्रुत्वाभगवान्कृष्णस्त्वव्ययःसार्भतसकम् ॥ चूर्थो चिकीर्षोरत्मानंतर्सावधुवेगले ३० ततोऽतिक्रायस्यनिरुद्धमार्गिणोबुद्धीर्दृष्टभ्रमतस्त्वतस्ततः ॥ पूर्णोऽनर्ज्ञेपवनोनिरुद्धो मूर्धन्निनिष्पाटयविनिर्गतोबहिः ३१ तेनैवसर्वैपुत्रद्विर्गतेषु ग्राणेषु रासाचमुहदःपेतान् ॥ दृष्ट्वास्वयोत्थाप्यतदन्वितःपुनर्वक्रान्मुकुन्दोभगवान्विनिर्गम्यौ ३२ पीनाहिभोगोत्थितमद्भुतंमहज्ज्योतिःस्वधाम्नाज्वलयद्विशोदरा ॥ गतक्षिप्त्वेऽवस्थितमीशानिर्गमं विवेशतस्मिन्मिपतादिवौकसाश्च ३ ततोऽतिदृष्टाःस्वश्रुतोऽहृनाहृणंप्रुढपैः सुराअप्सरसश्चनर्तनैः ॥ गीतैःसुगावाद्यधराश्चवाद्यैःस्तवैश्रविभ्राजयनिःस्वनैर्गणाः ३४ तदद्भुतस्तोत्रमुवाद्यगीतिकाजयादिनैकोत्सवगङ्गलस्वनाम् ॥ श्रुत्वास्वधाश्चोऽन्त्यजआगतोऽचिराद्दृष्ट्वाभहीरास्यजगामानिस्मयम् ३५ राजन्नाजगं चर्म शुष्कं दृष्ट्वा ननेद्रुतम् ॥ ब्रजौकसांगुतिथं वसूवाक्कीडगङ्गासुर ताके देह में श्वास रुकिगयो बाहिर निरुसिधे को रस्ता न पायो तत्र ब्रह्मन्धू को फोरिके बाहिर निरुसिधे तत्र दृष्ट्वा गालक मरे देखिके अपनी दृष्टि में ते अमृतकी दृष्टि करिके सबको जियायो तिनको संगलै के फेरि मुकुन्द भगवान् अघासुर के मुल में ते बाहिर निकसत भये ३२ दुष्ट सर्फ के देह में ते निरुसी बड़ी ज्योति अद्भुत अपने तेजते दश दिशान में प्रकाश करि के आकाश में ठाढ़ी श्रीकृष्णचन्द्र के निरुसिधे को पैड़ो देखै है जा समय श्रीकृष्ण बाहिर निकसे तत्र सब देवतान के देवता देखतही बाड़ी क्षण के समय स्वरूप में धंसिगई ३३ ता समय समस्त देवतान को आनन्द भयो और फूलनसों श्रीकृष्णचन्द्र की पूजा करी अप्सरा नृत्य करतभई सुर गन्धर्व गावतभये वाजेवारे वा ने वजावनभये ब्राह्मणन ने स्तुति करिके जयजय शब्द कस्यो ३४ वह अद्भुत स्तुति और सुन्दर वाजे गीत जय आदि लै के अनेक उत्सव भगलशब्दन कूँ ब्रह्माजी अपने ब्रह्मलोक में अथवा चरि के श्रीघ्री चने आये श्रीकृष्णचन्द्र की महिमा देखिके आश्चर्य मानत भये ३५ हे राजन् परीक्षित् वा अजगर की शुष्क अद्भुत चर्म दृष्ट्वावन में बहुत दिनपर्यन्त ब्रजवारीन के बालकन को सेलिके कूँ इड़ी





प्रकार यमुनाजी की रेती में शोभा को प्राप्त होत भये जैसे कवल की कली के चारों ओर पखुरी सुन्दर लगी है श्रीकृष्णचन्द्र कली की समान है चान्त पखुरी के समान है ८ है ई वालक फूलन श्री पातरि बनाय के भोजन को बैठे कोई बालक पखुरी की पातरि बनाई वालक ने पत्तन की पातरि बनाई और कोई बालक ने कंठुगली पातरि बनाई कोई ने फूलन की पातरि और कोई बालक छीकने में भोजन करिने को बैठे कोई बालक ने बहुत सुन्दर दृष्टन के बकलानकी पातरि बनाई कोई बालक गिलाने परोलिने भोजन करने लगे ९ समस्त बालक अपनी सामग्रीन कूं न्यारे न्यारे चगावत जाय है और आपस में हैसे है हैसावत जाय है या प्रहार श्रीकृष्णचन्द्र भगवाय के संग पुरावृत्त भोजन करत भये १० फेट में बासुरी उरशालिनी शृङ्गेत की छी हो फास में धरिलीनी दही भातसों लाण्डो ग्रास वायें हायमें धरिलियो और बेर आपरे नीवू इत्यादिक फल श्रुतलीन में भरिलिये चारों ओर अपने मित्र बैठे हैं तिनकूं हँसी की बात कहि करि के हैसावत जाय है स्वर्ग में देवता ठाढ़े होय करि तपाशो देखे हैं हम यज्ञमें अपरस होयके भाग देखे हैं हमारी भाग नहीं तोय है यदा यज-

भाजनाः ६ सर्वेपिथोदर्शयन्तःस्वस्वशोऽयस्वचिपृथक् ॥ हसन्तोहासयन्तश्चाभ्यवजहःसेहश्चराः १० विभ्रद्रेणुं जठरपटयोःशृङ्गैश्चैत्रकक्षे वागेपाष्णौ ग  
मृणकवलं तरुलान्यहुलीपु ॥ निष्ठन्मध्येस्तपसिहृदोहासयन्नर्मभिःस्रैः स्वर्गलोकेमिपतिवुभुजे यज्ञसुखालकेलिः ११ भारतैर्वत्सपेषु भुञ्जानेष्व  
च्युतात्पशु ॥ वत्सास्त्यन्तर्वनेदूरं विविगुस्तृणलोभिताः १२ तान्दृष्ट्वाभयसंज्ञानूंचैकुण्ठोऽस्यभीभयम् ॥ मित्राख्याशान्माविरमतेहानेभ्येवत्नकाल  
हम् १३ इत्युक्त्वाऽद्विद्रीकुञ्जगह्वरेष्वात्मागतत्सत्त्वा ॥ विचिन्वनगवान्कुण्ठःसपाणिकवलयौ १४ अम्भोजन्मजनिस्तदन्तरगतोऽथायाऽभ्रस्येशितुं  
पटुमञ्जुमहितमन्यदपितद्वत्सानितोवत्सपान् ॥ नीलाऽन्यत्रकुल्लहान्तरदधात्वेऽवस्थितोयःपुग दह्वाऽवासुरमोक्षणं प्रभवतःप्रासःपरंविस्मयम् १५ ततो

वासीन के बालकनकी जूउन छिनाय छिनायके लायें हैं यज्ञके योग करनयारे भगवान् बालकन के खेल करिके भोजन करत भये ११ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित् ! श्रीकृष्णचन्द्र में विनकी मन वे ग्वालबाल भोजन करिवे को बैठे तप बखरा हरी हरी घासके लोभते दूर वनके भीतर चले गये १२ बखरानकों दूरिगये देखिके बालक हरे तप उनको भय दूरि करत श्रीकृष्णचन्द्र बोलत भये हे मित्रो ! तूम बैठे भोजन करो छोटोपति क्यों ऐसी मण्डली फिर न वैधी में सनते बीच में बैठोहूं अलगदेसी उठिके बखराले आऊंगो १३ या प्रकार बालकन ने नदी श्रीकृष्णचन्द्र पर्वत की गुफा गडर वन इनमें अपने बखरान कूं हूँबते हाथ में दही भातको लौर लिये चले गये १४ हे राजन् परीक्षित् ! कपलते जाकों जन्मवत् ब्रह्मा प्राप्त जड़ और पाप जड़ दादो जड़ प्रथम तो बल जड़ जलते कमलभयो सो जड़ कमलते ब्रह्मा भयो सो जड़ क्यों भोजन सगय आयके दुःख टियो माया करिके मनुष्य के बालक ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र तिनकी औरह मंगेदर मरिधा देखिवे के कारण मोहमें आयके यमुनाजी की रेतीमें ते बखरान सहित बालकन कूं और स्थान में लेजाय के दमकगयो जो ब्रह्मा परले आकाश में बाढोहो श्रीकृष्णचन्द्र ते अमासुरकी

मुत्तु देखिके वड़े आश्चर्य के प्राप्तमयो १५ ताके पीछे वज्रगनकों न देख्यो वन वगडिके यमुना तीर पै आये यहाँ ग्यालागलहू न देखे ता समय वजरा वालकन कुँचारी और धुँड़न भये १६ वनमें वहु वज्रगहन न देखे वालरहू न देखे सय विश्वती गालके जाननयारे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् तत्काल सम्पूर्ण ब्रह्माके फलें जानतभये १७ ताके पीछे श्रीकृष्णचन्द्र ने निवार दियो कि चुप बैठि रहोगे तो वालरहन की माता रोवैगी ब्रह्मा के पासले ले आयोगे तो बाको मोद न होयगो वालकन की मातान हूँ आनन्द देखेके लिने और ब्रह्माहूँ मोह करिने के लिने विरह के रतन न करनयारे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् अपने रूप वरतभये वजराहूँ आप भये और ग्यालवालहूँ आपभये १८ जाके जा वजराको जैसा छोटी देहहो और जैसा जा वालक के हाथ पावने काहूँ के अंगुरीही जैसी जा वालरही छड़ी सींगी वासुरी छीको हो जैसा जा वालकके गहने कपड़ये काहूँ के जड़ाऊ गहने काहूँ के सादा हे काहूँ की कटुंगी पागही काहूँ की हरी पीरी गुथारीही जैसी

वत्सानद्वैष्टैर्युलिनेऽपि च तस्मान् ॥ उभात्रापि नेरुणो विचित्रा यममन्ततः १६ काप्यदृष्टाऽन्तर्विपिने वत्सान्पालांश्च विश्ववित् ॥ सर्वविधिकुनं कृष्णः

सहसाऽवजगामह १७ ततः कृष्णो मुदं कर्तुं तन्मातृणां च क्रस्य च ॥ उभयायितमात्मानं च क्रै विश्वकृदीश्वरः १८ यावद्वत्सपत्नस्तकाल्य कनपुयनित रुगङ्कया दिकं यावद्यष्टिविषाणवेणुदलशिखयावद्विशूयाम्बरम् ॥ यावच्छीलुण्णाभिवाकृतिवयोगावद्विहारादिकं सर्वविष्णुमयं गिरोऽङ्गवदजः सर्वस्वरूपो नयौ १९ स्वयमात्मात्मगोवत्सान् प्रतिवार्यात्मवत्सपैः ॥ क्रीडन्नात्मविहरैश्च सर्वात्माप्राविशद्भजम् २० तच्च दत्सान्पृथङ्गीत्वा तच्च दोषे निवेश्य सः ॥ तत्सत्त्वात्मा

ऽभवदाजं रतत्तत्सद्वाप्रविष्टवान् २१ तन्मातरो वेणुरवत्तरोत्थिता उत्थाप्यदोभिः परिभ्यनिर्भस्य ॥ स्नेहस्नुनस्तन्यपयः सुधासनं मत्वा पञ्चद्वहसुतानपाययन्

२२ ततोऽप्युन्मर्दनमज्जले पनालङ्कारक्षतिलकाशनादिभिः ॥ संलालितः स्वाचरितैः प्रहर्षयन् सायंगतो यामयेन माधवः २३ गावस्तनो गोष्ठयुपेत्य

सत्वरं हुङ्कारघोषैः परिहृतसंगतान् ॥ स्वकान् स्वकान् च वत्सलानां पाययन् मुष्टुर्निहन्यः सवदौघसम्पयः २४ गोगोपीनां पातुताऽस्मिन् गर्वास्नेहद्विक्तां वि

जा वालक को स्वभावहो कोई सतेगुणी कोई रजोगुणी कोई तमोगुणी जैसा जा वालक में गुणहो और जो जा वालकको नामहो जैसा जा वालकको रूपहो कोई गोरो कोई सायरो और जैसी जा वालक को खेलहो श्रीकृष्ण समरूप होइके समखा धरिके सुन्दर लगत भये १६ आप आत्मा श्रीकृष्णचन्द्र आपुही ग्यालरूप वगे आपुही वजरा वगे तिनहो धेरि धेरि के अपने खेलसू खेलत भये २० तिन तिन वजवासीन के वजरा समूह में ते न्यारे करिके तिन तिन के खिरक में करिके तिन तिन वजवासीन के वालक होयके हे राजन् परीक्षित् ! वजवासीन के मनमें जातभये २१ तिन गालकन की माता वाँसुरी वंजी अण करिके शीत्रता से उठिके घरन ते बाहर निरुसिके वालकन को हाथनते उठाव छाती तें लगावें हैं रनेह ते स्तनन में दूध धरि आवैं हैं नही जानुन ही तुल्य स्वाद करिके परब्रह्म श्रीकृष्णचन्द्र कुं आपनो पुन गाविके प्यावत भई २२ आपे पीछे उवटनो करैं हैं मज्जन रनान करावें हैं चन्दन केशर लगावें हैं गहने पहगवें हैं तिलक लगावें हैं भोजन करावें हैं या प्रकार समस्त गोपी श्रीकृष्णचन्द्र को लाइ लड़ावें हैं तब अपने सुन्दर चरितन सँ उनको आनन्द देखैं हैं ता समय के खेलको नियम सायके सन्ध्याकाल लून गे आये





ज न होय है तब नेत्रनमें आसू जिनके धरिआये ३४ स्तन पीवतो जिनने त्यागदियो ऐसे वड़े बालकनकी क्षणक्षणमें वृद्धि कूं देखिके कारण कूं न जानें ऐसे बालदेवजी मनमें विचारत भये ३५ सम्पूर्ण के आत्मा शुद्ध अन्तःकरण को प्रकाश ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र में आश्चर्य सो कहा है गो सहित ब्रजवासीन के बालकनमें कहा है कभऊँ ऐसो प्रेम न वढ़ी है ३६ यह कहा है कहाँ ते आये हैं देवतान की माया है अयमा मनुष्यन की माया है यहूया भरे स्वामी श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् की माया है और माया मोकों मोह करनारी नहीं है ३७ दाशाईशोतन श्रीबलदेवजी या प्रकार विचार करिके सम्पूर्ण बाल बाल वखान सहित जो हैं तिनकूं ज्ञानदृष्टि ते श्रीकृष्णरूप देखत भये ३८ सम्पूर्ण देवता बाल भये है और ऋषीश्वर वखरा भये है यह भैं जान हूं परन्तु अब तो देवता नहीं हैं और ये वखरा कृपि नहीं हैं हे ईश्वर ! या भेद कों प्रकाशो यह भेद कैसे है सो तुम सम्पूर्ण न्यारी न्यारी संक्षेप तें विचार के कहो या प्रकार श्रीबलदेवजी

नुरसृष्टयुदश्र १ : ३ ब्रजस्य गमः प्रेमर्द्धवीक्ष्यैरिगलथयमनुक्षणम् ॥ मुक्तस्तेनैष पत्येष्वप्यहेतुविदचिन्तयत् ३५ किमेतद्वृत्तिमिवामुदेऽखिलात्मनि ॥ ब्रजस्यभारतभनस्तोकेष्वपूवपेगवर्द्धने ३६ केयं वाकुन आयाता दैवीवानाश्रयतासुरी ॥ प्रायोमायाऽस्तुमेभर्तुनन्यामेऽपि विमोहिनी ३७ इतिसंचिन्तयदाशाहो वत्सात्सवयसानपि ॥ सर्वानाचष्टैरुण्डं वक्षुपात्रयुनेनमः ३८ नैते सुरेशाश्रुपयो न वै त्वमेव गामसीशभिदाश्रेयऽपि ॥ सर्वपृथक्कनिगमात्कथं वदेयुक्कन वृत्तं प्रभुणा बलोऽथैत् ३९ तावदेत्यात्मभूरात्ममानेन नुटयनेहमा ॥ पुरोवदवदं क्रीडन्तं ददृशे सकलं हरिम् ४० यावन्तो गोकुले बालाः सवत्साः सर्वेष्वपि ॥ मायाशये शयानां नाद्यापि पुनरुत्थिताः ४१ इतपन्ऽत्र कुत्रत्या मन्माया मोहितेरे ॥ तावन्त एव तत्रावदं क्रीडन्तो विष्णुना समम् ४२ एवमेतेषु भेदेषु चिरंध्यात्वास आत्मभूः ॥ सत्याः केकतनेनेति ज्ञातुनेष्टे रुथश्चन ४३ एवं संमोहयन् विष्णुं विमोहं विश्वमोहनम् ॥ स्वयैव मायायाऽजोऽपि स्वयमेव विमोहि तः ४४ तर्क्यांतमोवब्रह्मं वदोता ॥ निरिवाहनि ॥ महतीतरमायैर्यं निहन्त्यात्मानियुजतः ४५ तावत्सर्ववत्सपालाः पश्यतोऽजस्य तत्क्षणात् ॥ व्यदृश्यन्त

ने श्रीकृष्णचन्द्र तें कही ता समय श्रीकृष्णने समस्त वृत्तान्त ब्रह्मो कि दाज तुमको आज खबरि भई है ब्रह्मा वखरा और बालकन को चुराय के लैगयो हैं वखरा बालकनयो हो या प्रकार श्री कृष्णके कहे ते बलदेवजी जानत भये ३९ तावत्पश्यन्त ब्रह्माक्षी आयुकी गिनती सूं एक क्षण भर काल बीतो तब आयके देखे तो पहले कीसी नाई वखरा बालकन को लिखे श्रीकृष्ण खेलै है तिनकूं ब्रह्मा देखत भयो इतने में यदा वर्ष व्यतीत होय गयो है ४० जितने गोकुल में वखरा बालक है ते सम्पूर्ण मेरी मायाकृपी शयामें सोवत है अदताई फेरि जगे नहीं है ४१ यदा वखरा बालक कहा ते आयें मैं चुरायके लैगयो हो तिनते न्यारे है जितने मैं चुरायके लैगयो तितनेही वर्षदिनपर्यन्त श्रीकृष्णचन्द्र के संग खेलै हैं ४२ आपही ते भयो है गोह जिसने ऐसो ब्रह्मा इन भेदन में बहुत वेरताई विचार करिके कौन से वखरा बालक सत्य हैं और कौन से मिथ्या हैं मैं लैगयो चुरायके ते सत्य हैं ये श्रीकृष्णके संग खेलै हैं ते सत्य हैं या प्रकार जानिने के कूं समर्थ न होत भयो ४३ गोह जिनके नहीं विश्वके मोह करनारी ऐसे विष्णु भगवान् को मोहित करै हैं परन्तु ब्रह्मा अपनी माया सूं आपही मोहित होय गयो ४४ जैसे औरी राति में

कोल कहा अंधेरो करैगो दिन में पटवीजना कहा प्रकाश करैगो ऐसे बड़े पुरुषान को नीचमाया नहीं मोहित करै है ४५ ब्रह्मा के देसत जग भरमें तनताई समस्त बखग ग्वाल मेरुनीमी नाई सापरे पीरे रेशमी बखन कुं पहिरे चार चार जिनके भुजा शङ्ख चक्र गडा पद्म इनको हाथमें लिये माये वं किंगीट पहिरे कान में कुण्डल मोतीन के डार वनमाला पहिरे दिस्पाई देन भये ४६ । ४७ भुलता की कान्ति जिनमें परे कपूर में कोंधनी हाथन में धुंदरी पहरे कोमल तुलसी की नई माला चरणन ते लेहर मस्तक पर्यन्त पहरे हैं समस्तनयन में बड़े पुण्यवान् पुरुषने पहारये हैं चादनी कीसी नाई सुन्दर मुसिकानि भरी अरुण गुणलिये कटाक्ष भरी चितवन तिनमें अपने भक्तनके मनोथनकुं रजोगुणते उरान् वरनारै सत्त्वगुण ते पालन करने हरे ४८ । ४९ ब्रह्मा ते आदि ले ६ वृणपर्यन्त स्याम जंगम समस्तप्राणी मूर्तिमान् होय के एक एक उदरा के सम्पुग नावें गावें ६ अनेकप्रकार की पूजा करै हैं ५ ? अग्निका ते आदि लेके महिमादिक विभूति मायाते आदिलेके महिमादिक विभूति चौबीस तत्त्व हैं ते चारों ओर ठाढ़े हैं ५२ वाटकनके तेजते जिनको तेज दूरि होयगयो ऐसे गाल स्वभाव संस्कार काम कर्म सत्त्वगुण

घनश्यामाः पीतकौशेयवाससः ४६ चतुर्भुजाः शङ्खचक्रगदाराजीवपाणयः ॥ किरीटिनः कुण्डलिनो हरिणो वनमालिनः ४७ श्रीवत्मान् ददोश्चरन् मधुक  
ङ्गणपाणयः ॥ नृपैः ऋटैर्भाताः क्रिमुन्मूत्राङ्गुलीयकैः ४८ अङ्गिपस्नकमाणूणस्तुलसीनवदामभिः ॥ कोमलैः सर्वगात्रेषु भूरिपुण्यवदपितैः ४९ चन्द्रिका  
विशदम्भैः सारुणापाङ्गुवीक्षितैः ॥ स्वकार्थानामिव रजः सत्वाभ्यासपटु गालकाः ५० आत्मादिस्तम्बपर्यन्तैर्मूर्तिमद्भिश्चराचरैः ॥ नृत्यगिताद्यनेकैः प्रय  
कृत्यगुणपासिताः ५१ अपि मार्द्यैर्महिमभिरजाद्याभिर्विभूतिभिः ॥ चतुर्भिः शतिभिस्तत्त्वैः परीतामहदादिभिः ५२ कालस्वभावसंस्कारकामकर्मगुणादिभिः  
स्वमाहिष्यस्तमहिर्मूर्तिमद्भिरुपासिताः ५३ सत्यज्ञानानन्तानन्दमात्रैकसमूर्त्तयः ॥ अस्पृष्टभूरिमाहात्म्या अपि ह्युपनिषद्शाम् ५४ एवं सकृददर्शजः  
पद्मवत्सामनोखितान् ॥ यस्य गामासर्वमिदं विभानि सचराचरम् ५५ ततोऽतिकृतकोट्यस्ति स्मितैकादशेन्द्रियः ॥ तद्धामाऽभूदजस्तूष्णीं पूर्वे व्यन्तीव  
पुत्तिका ५६ इतीशेऽर्धे निजमहिमनिस्वप्रभितिके पराजातोऽन्निरसनमुखवत्सकमितौ ॥ अनीशेऽपि द्रष्टुं किमिति वा मुह्यति सति च छादाजो ज्ञा

रजोगुण तमोगुण ये रूप धरिके ५३ सत्य ज्ञानरूप आनन्दमान एकरस जो ब्रह्म सोई है रूप जिनको ऐसे परमेश्वर की उत्कृष्ट महिमा मूँ नहीं जानै है ५४ या प्रकार ब्रह्माजी एक संग समस्त बखरा बालकन कुं परब्रह्म देसत भये या परब्रह्म की कान्ति करि सम्पूर्ण स्याम जंगम विश्व प्रकाशे हैं ५५ ताके पीछे बड़े आश्चर्य ते हंसपै ते ब्रह्मा गिरि परयो इन्द्रिय जाकी शिथिल होगई बाल-  
कन के तेज ते ब्रह्मा जुग होयगयो जैसे ग्रामकी रत्नाकरनचारी पुतरीके आगे चार पुष्पकी सोनेकी प्रतिमा ठाढ़ी होय या प्रकार ठाढ़ो भयो ५६ या प्रकार सरस्वती के स्वामी ब्रह्माजी के विचार में न आवै असाधारण जिनकी महिमा याते परे कछुहू नहीं कछुहू नहीं या प्रकार मिथ्या वस्तुको निषेध करिके श्रुतिन को शिरोभाग कौन उपनिषद् तिनसों जानिये में आवै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की महिमा देखिके मोहित होयगये पीछे यह कहा है ऐसे देखिये कीहू सामर्थ्य न रही तब श्रीकृष्णचन्द्र ने दुरत जानिके आश्चर्य दिखायो वह मायारूपी परदा ब्रह्मापै ते लेंचलीनों शयवा



भये ? ) ब्रह्माजी कहें हैं हे स्तुति यरिवे योग्य ! तुम्हारे प्रसन्नकरिये के लिये तुम्हारी स्तुति करो हों उसका उ घटा सों जिनको देह है विजुरी सों चटकीले पीताम्बर कूं पहिरे हैं गुंजान के तुल्य मय्यपुच्छ के मुकुट तिनसों शोभायमान जिनको युगारोन्दि है वनमाला कूं पहिरे दही भातको ग्रास वेतकी ब्रूरी सींग वासुरी इनको लिये अति सुन्दर होयल गिनके चरण गौवनको चराये मे नन्दरायजी तिनके वंशधे ? हे देव प्रशङ्गवान् ! भरे ऊपर कृपा जातेभई अपने भक्तकी जैसी इच्छा तैसो होयजाय है पञ्चभूतको मनो नहीं ऐसो तुम्हारी यह शरीर ताकी पहिया होई भी जानिये को समर्थ भयो अर्थात् मैं ब्रह्मा भी जानिये को नहीं समर्थ भयो तब साक्षात् आत्मसुन्दर अनुभवरूप अवतारी तुमको तिनकी पहिया कूं पनको रोकिते कौन जानसके अथवा दूसरो अर्थ पञ्चभूतको वनो ब्रह्माण्ड तुम्हारी पहिया जानिये में नहीं आवे हैं भरे ऊपर कृपा जाते भई अपने भक्त की जैसी इच्छा तैसो होयजाय तुम्हारी भांवरो सच्चिदानन्द वनवन्दु है नाकी मद्रिया कूं पन रोकिते कौन जानिसकै है परोक्ष जानिये में नहीं आवे हैं ते अज्ञानी संसार कूं कैसे करिके तरेगे तब ब्रह्माजी कहें हैं २ जानिये के लिये जो परिश्रम है ताको छोड़िके नाजुन के मुग्धने निकारी

अस्यापिदेववपुषोमदनुग्रहस्य स्वेच्छामयस्यनतुभूतमयस्यकोऽपि ॥ नेशमहित्ववमितुंमनसान्तरेण साक्षात्तैवकिमुनातगमुखानुभूतः २ ज्ञानेगाममु दपास्यनगन्तएव जीवन्निमन्मुवरितांभदीयवात्ताम् ॥ स्थानेस्थिताःश्रुतिगतांनुवाच्यानोभिर्धेप्रायशोऽजितजिनोऽगसिनेसिलोक्याम् ३ श्रेयःस्तु तिर्वाक्किमुदस्यतेविभो क्लिश्यन्तिनेकेवलवोधलव्ये ॥ तेषामसौक्लेशलएवशिष्यते नान्यथास्थूलतुपावघातिनाम् ४ पुरेहसूम्बह्नोऽपियोगिनस्त्व दर्पितेहानजकर्मलव्यया ॥ विबुद्ध्यभक्त्यैव कथोपनीनया प्रपेदिरेऽजोऽज्युततेगतिंपराम् ५ तथापिधूमन्महिमाऽगुणस्यते विबोद्धमहर्षयमलान्तरा तमभिः ॥ अविक्रियात्स्वानुभवादरूपतोह्यनन्यबोध्यारमतयानत्रान्यथा ६ गुणात्समस्तेऽपिगुणान्विमालुं हितावतीर्णस्यकईशिरैऽस्य ॥ कालेनयेवां

जो तुम्हारी कथा सो कानमें आयके परी ताकी देह वाणी मनते पड़ाई करतये पुरुष जीवें हैं हे अजित अर्थात् काहूके जीतेवें नहीं आयो हौ ! वे बहुतया बिलोभी में तुमको जीतिलेइहें ३ हे विभो ! भक्ति मुक्तिभी देनवारी तुम्हारीमाया ताकूं रगगिके जे पुरुष अकेले जानी होयवे के लिये रोद करे हैं तिन पुरुषनको सेदही शेष रहि जाय है और क बहुतही मिले हैं जे पुरुष थोने तुम कूं रुड़ उनों जैसे दुःख याकी रहि जाय और कछु हाथ नहीं लगै ४ हे व्यापक ! या संसारमें पहिले बहुतसे योगीश्वर योग करते जय ज्ञान न मिलो तुममें समर्पण करी जो अपनी चेष्टा और कर्म तिनके प्रभाव से श्रवण करिये को मिली जो तुम्हारी कथा तांने प्राप्त कराई भक्ति तासूं तुमको जानि के हे ग्रन्थुत भगवन् ! श्रेष्ठ तुम्हारी गतिकों प्राप्तभये ५ या प्रकार केवल प्रेमभक्तिही करिके तुम्हारी साक्षात् यह स्वरूप अनुभव होय ती भी केवल ज्ञानीकोही सम्मन्यहै ताते भक्तिमिश्रित ज्ञानहू तुम्हारी निर्वैय व्याप्स्वरूप अनुभव विपे कारणरूपही सोई कहतैं जो केवल भक्ति ६ तो हे भगवन् ! हे मन्दमुखयुक्त यह प्रकट करनहार प्राकृतगुणरहित जो तुम सो तुम्हारी पहिया महत्त्व वदन्त रूपक कर्म भरे पहिया पर हे ब्रह्म ! हेय कहतैं सम्मकप्रकार प्रजन करिके निस्वार्गितभयो यदभरो अनुग्रह जानेगे हृदयों या प्रकार तुम्हारी उचनहै सो भक्तिमग्न ब्रह्ममें नहीं या भाति दुर्गजा को वचन महिमा शब्द मसिद्ध परें हैं ब्रह्महै आपही ते विशेष जानिये के योग्यहै अवापक आपही ते

होत है ऐसे कर्मही कर्त्ता होता है जैसे कुठारी आपही ब्रह्मको छेदनकर है या प्रसार या ठौरमें कारणको कर्त्ता करिके अर्थ करिये कहा ते कौन निमित्त ते अप्रमत्त शुद्ध अन्तरात्मा करिके अपने अनुभव ते न्यायी अनुभव निश्चय अन्तरवत्न सो सूक्ष्मदेव निम्नरूप निर्विकार ब्रह्म कैसे अनुभव विषय होय ताते विशेषण करिके निर्विकारते विकारमायाको धर्म सो मायारहित होय जब वे सो होय तदा लिंगशरीर वासनामय शरीरको नाश जायवो जनावतथये वर्याजी तज ब्रह्मको अविषय करि कहिये अनुभव निषय करिके कहियो उचित नहीं ताते फेरि विशेषण देत है द्विषय आकाश रहित जो ब्रह्मा आकार ते ब्रह्मको ब्रह्म आकार अनुभवविषय होयवो दोष नहीं वर्याजी ताके जानिये में कहा प्रकारान्तर है तदा कहत है नहीं है और कोई ज्ञान आत्मस्वरूप जाको ता आत्मा करिके वही और प्रकार ज्ञान होयवे के योग्य या भाति जानिये जैसे विषय आकार अनुभव निश्चय शब्द स्पर्श आदि करनेको विषयकरे नहीं तैसेई ब्रह्म आकार अनुभव निश्चय ब्रह्म विषयकरे नहीं करिके वही आदिकनकोकरे इत्यर्थः ६ या विश्व के कल्याण करिवे के लिये अवतार लिये सतोगुण रजोगुण तमोगुण इनके साक्षी तुमहो तिनके इत्यने गुण है जिनके गिनिये के लिये कौन पुरुष मामर्थ-शब्द आदिकनकोकरे इत्यर्थः ६ या विश्व के कल्याण करिवे के लिये अवतार लिये सतोगुण रजोगुण तमोगुण इनके साक्षी तुमहो तिनके इत्यने गुण है जिनके गिनिये के लिये कौन पुरुष मामर्थ-वान् होयगो पुरुष बहुत दिनमें बहुतसे जन्म धरिके पृथ्वीके रेणुकी गिनती करिलेय आकाशके हिमके कण गानही गिनती करिसके परन्तु तुम्हारे गुण गिनियेमें

विमिताः मुकल्यैर्भूपांसवः खिमिहिकाद्युभासः ७ तत्तेऽनुभूपांसमीक्षमाणो भुञ्जान एवात्मकृत्तं विपाकम् ॥ हृद्वाग्बुभुभिर्बिदधन्नमस्ते जीवितयोः सुक्लिपदे सदायभाक् ८ पश्येशमेऽनार्थमनन्न आद्ये परात्मनि त्वय्यपि माधियायिनि ॥ मायां वितत्येक्षितुमात्मवैभवं ह्यहं क्रियानैच्छमिवाचिरनौ ९ अतः क्षमस्वाच्युतमेरजो भुवो ह्यजानतस्त्वत्पृथगीशमानिनः ॥ अजाऽवलेपान्धतमोऽन्धचक्षुषोऽनुभूयामयिनाथवानिति १० क्वाहन्नमो महदहं च चराग्निं वार्षभूमेर्वेष्टिताऽवधटमसवितस्ति क्षायः ॥ क्वादग्निधाविगणिताऽवधराणुचर्यावाताधरोमविवरस्य च ते महित्वम् ११ उत्क्षेपाणंगर्भगतस्य पादयोः किं कल्पते

नहीं आवें हैं ७ ता कारण ते गो दीनके ऊपर कव कृपा करोगे याप्रकार तुम्हारी कृपाको पैहो देखो कलहू अपने क्रिये जे कर्म तिनको फल सुख दुःख है ताको भोग करने हे हृदय चाणी देहते दे-एहवत् करत जो जीव है वह पुरुष मुक्तिपदमें भाग पावे है ८ हे ईश्वर ! मेरी दुष्टता देखो तो अन्त जिनको नहीं सबको कारण माया है तिनके मोहन करनेवारे परमात्मा तुमहो तिनके ऊपर माया फैलाय के अपने वैभवं देखिये की मैंने इच्छा करी सो कितनो कहु देख्यो जैसे अग्निमें पतहा कहा प्रकाश करैगो ९ हे अन्त्युत ! हे अखण्डरूप ! या प्रकार ते रजोगुण ते जाकी उत्पत्ति तुम्हारे स्वरूपको न जानो तुम ते न्यारो ईश्वरको मानूं जगत्को करनेवारी मैं हूं या मदते अंधरोहूं मैं ब्रह्माको नाथ हूं यह मेरो दहलुआ है याही ते यह कृपाकरिवे लायक है यह मानिके मेरे ऊपर कृपाकरो अहो ब्रह्मा ब्रह्माण्ड जाकी देह तू तो ईश्वर है ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र कहैं तहां ब्रह्मा कहैं हैं १० माया महत्तर अहङ्कार आकाश पवन अग्नि जल पृथ्वी इनको बनो ब्रह्माण्ड तापें सात विलसत भी जाकी देह ऐसी मैं कहा या ब्रह्माण्ड सरिवे गिनती में न आये अनेक ब्रह्माण्ड तुम्हारे रोपनमें वसे तुम्हारी महिमा कहा सो मैं और आप में बड़ो अन्तर है ११ हे अथोक्षज अधर्वात् इन्द्रियन करि जानिये मैं न आवो ! गोदमें बालक बैठिके पाव उछारे अथवा लात लगिनाय तो कहा या संसार मैं वाको अपराध मानैं हैं तब श्रीकृष्णचन्द्र ने कही ब्रह्मा जो तेरी माया होय जाते



जायके कहै मोते कहाकहै छोटो बड़ो कार्य करत जितनो कछु विषय है सो सब तुम्हारे पेटमें है या विश्व में बँहै है आयगयो आप मेरी मायाही में तुम्हारी बालकहों मोयै अपराध वन्यो ताइ तुम ज्ञापकरो या रीतिते तुम्हारी पुत्र होय यह कहै है १२ भूलोक भुवर्लोक इन तीनोंको नाश होय जाय है तब चारों ओरते समुद्र उगई है तिनके भीतर नारायण सोवै है तिनकी नाभि में ने कमलभयो तामें ते ब्रह्मा निकसो यह वेद ही वाणी कहा पिथ्याहै ईश्वर ! तुम कहो मैं नहीं जानो तुमहीं ते जन्मोहूँ तब श्रीकृष्णचन्द्र कहै हैं ब्रह्मा तू अपने वापही को भूलि जाय है नारायण को पुत्र होययो मोको कहा तदा कहै है १३ तुम कहा नारायण नहीं हो किन्तु तुमहीं नारायण हो समस्त देहगरीन के आत्माहो है अथीश अर्थात् सबके प्रेरणा करनेवारे ! समस्त लोकन कुं साक्षात् देखो हो नरते भयो जो जल तिसमें तुम्हारी वास है तिस कारण नारायण प्रसिद्ध हैं सो तुम्हारी मूर्ति हैं और जल में वासहू सत्य नहीं है किन्तु तुम्हारी मायाहै १४ जगत् हों आ-

मातुरधोक्ष जागसे ॥ किमस्तिनास्तिव्यपदेशभूषिर्न तवास्ति कुक्षेऽपि कियदप्यनन्तः १२ जगज्जगन्तोदधिसंलुयोदे नारायणस्योदरनाभिनालात् ॥ विनिर्गतोऽजस्तिवतिवाङ्मैसुपा किंस्वीश्वरस्त्वन्नविनिर्गतोऽस्मि १३ नारायणस्त्वनहिमर्वदेहिनामात्माऽस्य श्रीशोऽखिललोकासाक्षी ॥ नारायणोऽङ्गनरभू जलायनात्तच्चापिसत्यंनतैवमाया १४ तच्चेज्जलस्थं तवसज्जगद्गुः किमेन दृष्टं भगवंस्तदेव ॥ किंवासुदृष्टं हृदि मेतदेव किन्नोसपद्येव पुनर्व्यदर्शि १५ अत्रैवमायाधमनावारो ह्यस्य प्रपञ्चस्य बहिः स्फुटस्य ॥ कृत्स्नस्य चान्तर्जटोजनन्या मायात्वमेव प्रकटीकृतं १६ यस्य कुक्षविदं सर्वसात्मं भानियथा तथा ॥ तत्स्थप्यपीह तत्सर्वं किमिदं मायाया विना १७ अद्यैव त्वद्वदेऽस्य किममनेतायात्वमादर्शितमेकोऽसि प्रथमेततो ब्रजसुहृदस्ताः समस्ता अपि ॥ तावन्तोऽसि चतुर्भुजास्तदखिलैः साकं मयोपासितास्तावन्त्येव जगन्गभूस्तदमिदं ब्रह्माद्वयं शिष्यते १८ अजानतं तत्पदवीमनात्मन्यात्मात्मना भासि विवर्तय मायाम् ॥ सृष्टा विवाहं जगतो विधान इव त्वमेवोऽन्त इव त्रिनेत्रः १९ सुरेष्णुष्विष्वीश तथैव नृण्यपि निर्यक्षुयादस्त्वपि तेऽजनस्य ॥ जन्मासतां भुंभदनिग्रहाय प्रभो विधा

श्रयभूत तुम्हारी रूप जल के भीतर सत्य है तो जा समय मेंने कमल के भीतर साधिकर दूँहो तब क्यों नहीं दिसाई दियो हृदय में भी नहीं देखो तो क्यों न होयगो तहां कहै हैं हे ब्रह्मा ! तपकरे पीछे ताही समय नहीं होतो फिर कैसे दिखाय दियो या प्रकार कहत भये है १५ हे माया के करनेवारे चाहिर भीतर समस्त विश्व के प्रकाश करनेवारे ! या श्रीकृष्ण अवतार में ही यशोदा माताके पेटमें प्रतिविम्ब परचो सर्वथा माया कैसे होय तहां कहै है १६ या तुम्हारे उदर के भीतर तुम सहित यह विश्व प्रकाश है तैसही चाहिर प्रकाश है चाहिर भीतर एकसौ प्रकाश तो माया भी कहाँ वनै है १७ अत्रहीं तुम विना मोकों यह विश्व कहा माया न दिखाई किन्तु मायाही दिसाई अत्र मायाही को कहै हैं प्रथम तुम अकेले ऐ पीछे सम्पूर्ण ब्रज के ब्रह्मरूप भये तिनमें ही समस्त चतुर्भुज रूप भये ता पीछे मैंने समस्त तत्त्वन को लैके एक एक बख्ता बालककी स्तुतिकरी तिनमें ही तुम ब्रह्माण्डरूप होयगये ता पीछे प्रणाम करिवे में नहीं आये ऐसे आद्वितीय ब्रह्मरूप वाक्की रहे १८ व्यापक जो तुम सो तुम्हारे स्वरूपको माया में स्थित होयके नहीं जानै हैं तिन पुरुषन के ऊपर माया फैलाय के स्वतंत्रता करिकै प्रकाशो हो जगत् के उत्पन्न करिवे के समय

मो ब्रह्मा से होय जाउ और पालनसमय विष्णु से होय जाउ और संहारसमय तीन जिनके नेत्र ऐसे रुद्र से होय जाउही हे ईश ! देवतानमें ऋषीश्वरानमें मनुष्यनमें पशु पक्षीनमें जलके जीवनमें अजन्मा तुम साधुनके ऊपर कृपाकरिवेकेलिये दुष्टनके मददकरिवेकेलिये हे प्रभु ! जन्म लेख हो १६। २० हे व्यापक ! हे षडगुण ! हे ख प्रकार के ऐश्वर्यकरि पूर्ण ! हे समस्त जीवन के आत्मा ! हे योगके ईश्वर ! त्रिलोकी तुम्हारी लीला कहा है कैसे होय है कितनी है कौन समय है ऐसे कौन जानि सकै है योगमाया की विस्तार करिके खेलो ही २१ ता कारण ते मिथ्या जाको स्वरूप स्वप्न की तुल्य प्रकाश आप ते प्रकाश जॉम नहीं अति है दु ख जॉम ऐसेो यह समस्त जगत् और चिच स्वरूप जो तुम देह अन्त जिनको नहीं तिनमें पाया ते जनित जो जन्म मरण सो सत्य सों दिखार्ई देई है २२ एक आत्मा कहिये व्यापक पुरातन पुरुष अपने करिके प्रकाशवान् अन्त जिनको नहीं नित्य और नाशकरिरहित सर्वदा सुखस्वरूप निर्मल

तःसदनुग्रहायच २० कोवेत्तिभूमन्भगवन्परमात्मन्योगेश्वरोतीर्भवतास्त्रिलोक्याम् ॥ कवाकथंवाकतिवाकदेति विस्तारयन्कीडिमियोगमायाम् २१ त स्मादिदंजगदशेषमसत्स्वरूपं स्वप्नायमस्तधिपणंपुरुहुःखडुःखम् ॥ त्वयैव नित्यसुखबोधतनावनन्ते मायातद्यदपियत्सदिव्यावभाति २२ एतद्वत्स्वमात्मा पुरुषपुराणः सत्यःस्वयञ्ज्योतिरनन्तआद्यः ॥ नित्योऽक्षरोऽजस्रसुखोनिश्चलःपूर्णोऽद्वयोमुक्तउपाधितोऽमृतः २३ एवंविधंत्वांसकलात्मनामपि स्वात्मान मात्मात्मतयाविचक्षते ॥ गुर्वकलब्धोपनिपत्सुचक्षुषा येतेतरन्तीवभानृताम्बुधिम् २४ आत्मानमेवात्मतयाऽविजानतां तेनैवजानंनिखिलंप्रपञ्चिनम् ॥ ज्ञानेनभूयोऽपिचतत्पत्नीयते रज्ज्वामहेर्भोगभवाभवौयथा २५ अज्ञानसंज्ञौभवबन्धमोक्षौ द्वौनामनान्यौस्तच्छ्रुतज्ञभावात् ॥ अज्ञसंचिन्त्यात्मनिकेवले परे विचार्यमाणेतरेणाविवाहनी २६ त्वामात्मानंपरमत्वा परमात्मानमेवच ॥ आत्मापुनर्वाहिर्भृग्यस्त्वहोऽज्ञजनताऽज्ञाना २७ अन्नर्भवेऽनन्तभवन्त मेव ह्यतत्त्यजन्तोमृगयन्ति सन्तः ॥ असन्तमप्यन्यहिमन्तरेण सन्तंगुणंतेकिमुयन्ति सन्तः २८ अथापितेदेवपदाम्बुजद्वयप्रसादलेशानुगृहीतपृथ्वि ॥

परिपूर्ण अद्वितीय उपाधिरहित अमृतरूप जो तुम हो सो सत्यही २३ समस्त जीवन के आत्मा पीछे स्वरूप जिनको कस्यो ऐसे तुमहो तिनकूं गुरुरूप सूर्य ते आयो जो ज्ञानरूपी नेत्र तामूं यह जीवके अन्तर्यामीरूप करिके नहीं जाने तिन पुरुषन को ताही अज्ञानसूं सत्र संसार होय है ज्ञान भये तें समस्त संसार दूर होयजाय है यावत्पृथ्वी अज्ञान है तावत्पृथ्वी रस्सी कूं सर्प जाने है परचात् ज्ञानभये ते रस्सी की रस्सीही जानिवे में आवे है २४। २५ संसार में बन्धन और मोक्ष दोनों अज्ञान सों है सत्य ज्ञानरूप जो आत्मा तामूं पृथक् नहीं है निरन्तर चैतन्यरूप आत्मा केवल परमेश्वररूप तुमहो तिनको विचारे पीछे अज्ञानहू नहीं वन्धनहू नहीं ज्ञानहू नहीं मोक्षहू नहीं जैसे सूर्य में रात दिन नहीं २६ तुम जो आत्मा हो तिनकूं देह मानिके और देहों आत्मा मानिके आत्माको फिरि बाहिर दूढ़ है आश्चर्यरूप अज्ञानीनको अज्ञान है २७ साधु जो है येहु आत्मा नहीं येहु आत्मा ऐसे जड़ पदार्थ को निषेध करिके देहके भीतर तुमहीं को दूढ़ है नहीं जो सर्प है ताके निषेध बिना समीप जो रस्सी परी है ताको कहा सत्य जानै है अपितु नहीं जानै है सर्प के निषेध भये पीछे रस्सी जानिवे में आवे है २८ ज्ञान से मुक्ति होय जाय है मुक्तिको

क्यों वड़ाई करी तहां ब्रह्मा कहै है जो वैकुण्ठ में प्राप्त होय सो विष ज्ञान कबो तथापि कहै हैं चरणारविन्दन के प्रसाद के ऋणिकान को अनुग्रह जायै भयो है वही तुम्हारी महिमा के स्वरूप को जानै है जायै तुम्हारे चरणारविन्दकी कृपाही नहीं है यह और कोई पुरुष बहुत दिन पर्यन्त ढूँढ़े करै तौभी तुम्हें व तुम्हारी महिमावो नहीं जानै २६ हे नाथ ! या ब्रह्मा के जन्म में अथवा और कोई जन्म होय तामें अथवा पशु पक्षीन में जन्म होय जायै वह मेरो बड़ो भाग्य होय जा भाग्य सौ तुम्हारे ब्रजवासीन में कोई एक होयके तुम्हारे चरणारविन्द को सेवनकरौ ३० देवता के जन्म ते जाकाहू के जन्म ते तुम्हारी भक्तिहोय वह जन्म श्रेष्ठ है या प्रकार उत्कण्ठापूर्वक सात श्लोक करि स्तुति करै है अहो आश्चर्य ब्रजकी गऊ गोपी धन्य हैं हे प्रभु ! जिन गौ गोपीन के स्तनन को दूध रूप अमृत बखरा होयके बालक होयके तुमने आनन्द सूं पेट भरि के पियो तुम्हारी दृष्टि के लिये अवतारि यज्ञहू पूर्ण नहीं होय हैं कहा यज्ञमें हूं तुम्हारी पेट नहीं भरै हे भगवान् के सत्त्वानकी महिमा कहिवे में जानिवे में नहीं आयै है ३१ ब्रह्माजी कहै हैं नन्दरायजी के ब्रजवासीन की आश्चर्य रूप बड़ो भाग्य है परमानन्द पूर्णब्रह्म सनातन जिन ब्रजवासीन को जानाति तत्त्वं भगवन्महिम्नो न चान्यए कोपि चिन्विन्वन् २६ तदस्तु मेनाथमभूरि भागो भवेऽत्रवान्यत्र तुवातिरश्चास् ॥ येनाहमे कोऽपि भवज्जनानां भूत्वानि पेयेतवपादप्लवम् ३० अहोऽनिधन्या ब्रजगोरमणयः स्तन्यामृतं पीतमतीव ते मृदा ॥ यासां विभो वत्सरात्मजा त्मना यत्तृतेऽद्यापि न चालमध्वराः ३१ अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्दगोपत्रजौ कसास् ॥ यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णब्रह्म मनाननम् ३२ एपांतु भाग्यमहिमाच्युता वदास्नामं कादृशैव हि वं वत भूरिभागाः ॥ एनद्धृषीकचपैरैरसकृतिषामः शर्वादयोऽद्भ्युदजमध्वमृता सवन्ते ३३ तद्धरिभाग्यमिह जन्म किमप्यटव्यां यज्ञां कुलेऽपि कतमाङ्घ्रि रजोभिपेकम् ॥ यजत्रीवितंतु निखिलं भगवान्मुकुन्दस्त्वद्यापि यत्पदरजः श्रुतिभृग्यमेव ३४ एपांचोपनिवासिनामुनभवाच्च किंदेवराते निनश्चेतो

सर्वदा मित्र होय रहो है ३२ इन ब्रजवासीन के भाग्यकी महिमा रहो ताके कहिवे की बौन की सामर्थ्य है इन्द्रियन के अग्रिष्ठाता महादेव बुद्धि के अधिष्ठाता मैं ब्रह्मा ऐसे तेरह देवता महादेव ते आदि लोक के हम बड़भागी हैं कोई ब्रजवासी इन्द्रियरूप दोनोन सैं तुम्हारे चरणारविन्द को मकरन्द अमृतकी तुल्य मधुर ताहि पीवै है जा समय ब्रजवासी तुम्हारे दर्शन नेत्रन ते करै हैं ता समय नेत्रनको अधिष्ठाता मूर्त्य कृतार्थ होय जाय है कानन ते तुम्हारी वात सुनै हैं तव कानन के देवता दिशा कृतार्थ होय जाय है नाक ते तुम्हारी मसादी तुलसी मूँघे है तव नाक के देवता आरिर्नाकुमार कृतार्थ होय जाय है हाथ ते तुम्हारी सेवा करै तव हाथ के देवता कृतार्थ होय जाय हैं याही प्रकार समस्त इन्द्रियन के जानि लीजो ३२ या मनुष्यलोक में कदाचित् जन्म होय तो हुन्दवान में होय ताहू में गोकुल में जन्महोय यह मेरे भाग्यहोय तव श्रीकृष्णचन्द्र कहै है ब्रह्मा सत्यलोकको कोहिके यहां जन्म भये ते तोको कहा लाभहोय गो तव ब्रह्मा कहै हैं जा जन्म में ब्रजवासीन के चरणनकी रज मेरे माथे पै परेगी वही मोको एक बड़ो लाभ होय गो तव श्रीकृष्णचन्द्र कहै हैं ब्रजवासी कोहै ते धन्य है तव ब्रह्मा कहै हैं इन ब्रजवासीनको पूर्ण जीवन है काहे ते कि मुकुन्दपरायण हैं जिनके चरणारविन्दकी रजकू वेद ढूँढ़ो करै उनकूं नहीं मिले ३४ इन ब्रजवासीन की कृतार्थता कहा वर्णन करौ जिनकी भक्तिते तुमहूं ऋणी से होय रहेहो तव श्रीकृष्णचन्द्र कहै है

सर्वदा मित्र होय रहो है ३२ इन ब्रजवासीन के भाग्यकी महिमा रहो ताके कहिवे की बौन की सामर्थ्य है इन्द्रियन के अग्रिष्ठाता महादेव बुद्धि के अधिष्ठाता मैं ब्रह्मा ऐसे तेरह देवता महादेव ते आदि लोक के हम बड़भागी हैं कोई ब्रजवासी इन्द्रियरूप दोनोन सैं तुम्हारे चरणारविन्द को मकरन्द अमृतकी तुल्य मधुर ताहि पीवै है जा समय ब्रजवासी तुम्हारे दर्शन नेत्रन ते करै हैं ता समय नेत्रनको अधिष्ठाता मूर्त्य कृतार्थ होय जाय है कानन ते तुम्हारी वात सुनै हैं तव कानन के देवता दिशा कृतार्थ होय जाय है नाक ते तुम्हारी मसादी तुलसी मूँघे है तव नाक के देवता आरिर्नाकुमार कृतार्थ होय जाय है हाथ ते तुम्हारी सेवा करै तव हाथ के देवता कृतार्थ होय जाय हैं याही प्रकार समस्त इन्द्रियन के जानि लीजो ३२ या मनुष्यलोक में कदाचित् जन्म होय तो हुन्दवान में होय ताहू में गोकुल में जन्महोय यह मेरे भाग्यहोय तव श्रीकृष्णचन्द्र कहै है ब्रह्मा सत्यलोकको कोहिके यहां जन्म भये ते तोको कहा लाभहोय गो तव ब्रह्मा कहै हैं जा जन्म में ब्रजवासीन के चरणनकी रज मेरे माथे पै परेगी वही मोको एक बड़ो लाभ होय गो तव श्रीकृष्णचन्द्र कहै हैं ब्रजवासी कोहै ते धन्य है तव ब्रह्मा कहै हैं इन ब्रजवासीनको पूर्ण जीवन है काहे ते कि मुकुन्दपरायण हैं जिनके चरणारविन्दकी रजकू वेद ढूँढ़ो करै उनकूं नहीं मिले ३४ इन ब्रजवासीन की कृतार्थता कहा वर्णन करौ जिनकी भक्तिते तुमहूं ऋणी से होय रहेहो तव श्रीकृष्णचन्द्र कहै है



वतभये इतने दिन पर्यन्त बालक कैसे यमुना तीरपे बैठे रहे भूल प्यास भूलिगये या प्रकार राजाने शङ्काकरी तहां शुक्रदेवजी कहै हैं ४२ हे राजन् परीक्षित् ! अपने प्राणनाथ श्रीकृष्णचन्द्र विना एक वर्ष वीतगयो तथापि श्रीकृष्णचन्द्र की माया करि मोहित भये बालकनकुं आधोक्ष्य व्यतीत होतभयो ऐसे मानत भये ४३ माया करि मोहित जिनके चित्त वे पुरुष या संसार में कहा नहा नहीं भूलेहैं सो समस्त जगत् मायासे मोहित होयके बारवार अपने आत्माकुं भूलि रह्यो हैं ४४ अब सम्पूर्ण ग्वालबाल श्रीकृष्णचन्द्र तें बोले तू भलो जल्दी आयो हमने तो तेरे विना एक ग्रासहू नहीं खायो है अब आवो हम भोजन करै ४५ ऐसे बालकन ने कही ताके पीछे इन्द्रियनके प्रेरणा करनेवारे श्रीकृष्णचन्द्र श्रवण करिके ऐसे वर्ष दिनको ग्रास करिगये और कहै हैं एक ग्रास भी नहीं खायो बालकन के संग भोजन करिके रास्ता में जो शुष्क अघासुर को देह परोहो ताकुं दिलावत ब्रजमें बगदिके आवत भये ४६ मोर मुकुट को पहिरे पुष्पनके तुरी दागे नवीन

राजन् क्षणार्द्धमेनिरुधकाः ४३ किंकिनविस्मरन्तीह मायामोहितचेतसः ॥ यन्मोहितंजगत्सर्वमभिक्षिणंविस्मृतात्मकम् ४४ ऊचुश्चमुहदःकृष्णं स्वागतं तेतिरंहसा ॥ नैकोऽप्यभोजिकवलण्हीतःसाधुभुज्यताम् ४५ ततोहसनहृषीकेशोऽभ्यवहृत्यसहार्भकैः ॥ दर्शयंश्चर्मजिगरंन्यवर्त्तवनाद्वज्रम् ४६ बर्हप्रसूननवधातुविचित्रिताङ्गः प्रोद्दामवेणुपलशृङ्गस्त्रवोत्सवाढ्यः ॥ वत्सान्गुणन्ननुगमीतपवित्रकीर्त्तिर्गोपीहगुत्सवहृशिःप्रविवेशगोष्ठम् ४७ अद्यानेनमहा व्यालोयशोदानन्दमूनुना ॥ हतोऽवितावयंचास्मादितिवालात्रजेजुगुः ४८ राजोवाच ॥ ब्रह्मन्परोद्भवेकृष्णे इयान्प्रेमाकथंभवेत् ॥ योऽभूत्पूर्वस्तोकेपु स्वोद्भवेष्वपिकथ्यताम् ४९ श्रीशुकउवाच ॥ सर्वेषामपिभूतानां नृपस्वात्मैववल्लभः ॥ इतरेऽपत्यवित्ताद्यास्तद्वल्लभतयैवहि ५० तदाजेन्द्रयथास्नेहः स्वस्वकात्मनिदेहिनाम् ॥ नतथाममतालम्बिषुत्रवित्तगृहादिषु ५१ देहात्मनादिनांपुंसामपिराजन्यसत्तम ॥ यथादेहःप्रियतमस्तथानह्यनुयेचतम् ५२ दे

धातु खरिया गेरु मनशिल तिनकी विचित्र खौरि लगी है वड़ी सुन्दर बांसुरी सींगी को शब्द करतहैं तासूं जो उत्सव होय रहे तासूं शोभायमान जिनकी दृष्टि वे श्रीकृष्णचन्द्र बखरानकुं नाय लै लैके बुलावत ब्रजमें आवतभये ४७ कोई कहै यशोदा को वेढाहै कोई कहै नन्दराय जी को वेढाहै एक तो यह अर्थ है दूसरो अर्थ यह है यशोदाको आनन्दके देनवारे पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र आज वड़ी सर्प मारो है हमारी रक्षा वातेकरी या प्रकार समस्त ग्वालबाल ब्रजमें कहतभये ४८ अब राजापरीक्षित् प्रश्न करै हैं कि हे ब्रह्मन् शुक्रदेवजी ! परायें पुत्र श्रीकृष्णचन्द्रमें इतनो प्रेम ब्रजवासीन को कैसे भयो आपते भये जो पुत्र तिनमें भी इतनो प्रेम न भयो यह परे आगे कहो ४९ अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित् ! समस्त प्राणीन के साक्षात् आत्मा है याते श्रीकृष्णचन्द्र में प्रेम भयोही चाहै और जो स्त्री पुत्र वित्तादिक हैं ते आत्माके सुखदायी हैं याते प्रिय हैं ५० ताकारण ते हैं राजेन्द्र परीक्षित् ! देहधारीनको जैसे अपने आत्मामें प्यारहै तैसे अपने पुत्र वित्त घर इन स्रं आदिलैके जो वस्तु हैं तिनमें नहीं है ५१ हे क्षत्रियन में श्रेष्ठ राजन् परीक्षित् ! देहको आत्मा कहै ऐसे पुरुषन कूं भी देह अतिप्रिय है और देहके अलुनर्त्ती जो स्त्रीपुत्रादिक हैं ते देहकी

अपेक्षा प्यारे नहीं लगें हैं ५२ और देहक भी मेरो देह है या प्रकार मानिले हैं तथापि यह देह आत्माकी तुल्य प्यारो नहीं लगै है जा समय यह देह जीर्ण होय जायहै तब निश्चय करिलेय है कि यह देह न रहैगो और जीवनकी आशा बलवान् रहै है ५३ ता प्रकार समस्त देहधारीन को अपनो आत्माही प्यारो लगै है ता आत्माही के लिये समस्त रागर जंगम प्यारो लगै है ५४ तुमने पूछी राजा परीक्षित् व्रजवासी को विरोध पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र में इतने प्रेम क्यों भयो ताको जगत् दियो अब आगे को प्रसंग कहै हैं समस्त देहधारीन के आत्मा जगत् के सदृश गुण करिबे के लिये अपनो माया करिके प्रकाश करो हौ ५५ या विद्वत् के कारण श्रीकृष्णचन्द्र हैं या प्रकार जे पुरुष मानै हैं तिन पुरुषन कूं स्थावर काहिये ब्रह्मादिक जंगम काहिये मनुष्यादिक जो सम्पूर्ण हैं सो सब भगवान् कोही रूप हैं कछु या संसारमें न्यारो नहीं है ५६ समस्त वस्तुन को परमार्थरूप कारण में रहै है जैसे घट को रूप माटी में रहै है वा कारणहू को कारण श्रीकृष्ण भगवान् आप हैं श्रीकृष्णचन्द्र ते न्यारी वस्तु कहा है राजा तुमहीं करो ५७ पवित्र है यश जिनको ऐसे मुरनामा दैत्य के शत्रु श्रीकृष्णचन्द्र तिनको महत् पुरुषन कूं आश्रय करिबे को योग्य

होऽपिममताभाक्चेत्तर्ह्यसौनात्मवत्प्रियः ॥ यज्जीयत्यपिदेहोऽस्मिन् जीविताशावलीयसी ५३ तस्मात्प्रियतमःस्वात्मा सर्वेपामपिदेहिनाम् ॥ तदर्थमे वसकलं जगदेतच्चाचरम् ५४ कृष्णमेनमवेहित्वमात्मानमखिलात्मनाम् ॥ जगद्धितायसोऽप्यत्रदेहीवाभातिमायया ५५ वस्तुतो जगतामत्र कृष्णंस्था स्तुचरिषणु च ॥ भगवद्रूपमखिलं नान्यदस्त्वहर्किंचन ५६ सर्वेपामपिवस्तूनां भावार्थो भवतिस्थितः ॥ तस्यापिभगवान्कृष्णः किमतद्वस्तुरुप्यताम् ५७ समाश्रितोपदपल्लवप्लवंमहत्पदं पुण्ययशोमुरोः ॥ भवास्वधिर्वत्सपदं परंपदं यद्विपदानंतेपांम् ५८ एतत्सर्वमाख्यातं यत्पृष्टोहि मिह द्रव्या ॥ यत्कौमारोह रिक्तपौगण्डेपरिकीर्तितम् ५९ एतत्सहस्रश्रितिमुरोरघार्दनंशाद्वलजेमनंच ॥ व्यक्तेतद्रूपगजोर्वभिष्टवं श्रृगवन्गुणक्षेत्रितिनरोऽखिलार्थान् ६० एवंविहारैः कौमारैः कौमारं जहतुर्व्रजे ॥ निलायनैः सेतुवन्धैर्मर्कटोत्सवनादिभिः ६१ इति श्रीमद्भगवत्समापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वोद्ध्वस्तुतिर्नाम चतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

ऐसी चरणारविन्दरूपी नौका को जिन पुरुषन ने आश्रय लियो है उनकूं संसाररूपी समुद्र बखरा के खुर के जलकी सपान होय है और वैकुण्ठधाम में वास होय है कथक विपत्ति नहीं होय है वे पुरुष वगादि कै संसार में नहीं आवैं हैं ५८ पाँच वर्ष की उमर में जो श्रीकृष्णचन्द्र ने लीला करी सो छठे वर्ष में आय के बालकन ने कही जो राजा तुम ने पूछी हमते इहाँ सो सम्पूर्ण हमने तेरे आगे कही ५९ मुरनामा दैत्य के शत्रु श्रीकृष्णचन्द्र तिनको भिन्न के संग यह चरित्रहै कहा अघासुर को मारयो यमुना तीर पै ग्वालचालन के संग भोजन कस्यो जइ प्रपञ्च तें न्यारो शुद्ध सतो गुणी रूप बखरा ग्वालवाल रूप धरयो ब्रह्मा ने वही स्तुति करी या चरित्र को जो कोई पुरुष कहै अथवा श्रवण करै वा पुरुषको सर्व अर्थ की प्राप्ति होय श्रीकृष्णचन्द्र में भक्ति होय ६० ओंस्त्रिभिचौनी में छिपि जानो नदीन के पुल बंधने बन्दरन की सी नाई कूदने या प्रकार कौमार अवस्था के खेल करिके व्रज में श्रीकृष्ण बलदेव कौमार अवस्था वितानत भये ६१ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे पूर्वोद्ध्वस्तुतिर्नाम चतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥



(ततः पञ्चदशेधनुपालनं धेनुकार्दनम् ॥ कालियक्षेत्रतो गोपरत्तणं च निरुध्यते ? अदिवक्त्रभूभवेशनवृथा विधानसखीनतः ॥ कृष्णः भावेशयत्नफलं तालालिकाननम् २ पन्द्रहवें अध्यायमें गउओं का पालन धेनुकासुरका नाश और कालीनाग के विप से गोपों की रक्षा वर्णन है ? सर्प के मुल में भवेश से वृथाविन्न पित्रों को कृष्णजी पके हुये ताल के वन में भवेश करावने भये २ ) अब श्रीशुद्धदेव जी राजा परीक्षित् ते कहै हैं कि हे राजन् ! कौमारअवस्था बीती ताके पीछे पागण्डश्वस्था लगी अर्थात् छठो वर्ष जब लगे तब व्रज में गाय चरायने लायक कृष्ण बलदेव दोनों भय्या भये तब पालन कूं सग लै के गऊन कूं चरावत अपने चरणन सू टुन्दावन कूं अत्यन्त पवित्र करत भये ? मधुवंश में प्रकट भये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र अपने यशकों गावें जे भवान बाल तिनकों सग लै के और बलदेव भय्या को संग लै के वॉसुरी को वजावन गऊन कों आगे करिके गऊन की हितकारी पुण्यवाटिका जाँमें फूलि रही वा टुन्दावन में विहार करिये को जात भये २ मधुर जिनकी बोली ऐसे भौरा पशु पत्नी जाँमें वास करै महवपुष्पन के मनकी तुल्य निर्मल जल जाँमें भरयो ऐमे सरोवर ते स्पर्श करिके कमल की सुगन्धित पवन जाँमें चलै श्रीशुकउवाच ॥ ततश्च पौगण्डवयः श्रितौ ब्रजे वभूवतुस्तौ पशुपालसंमतौ ॥ गाथारयन्तौ सखिभिः समपदे टुन्दावनं पुरयमतीव चक्रतुः १ तन्मायवो वे

पुमुदीरयन्वृत्तौ गोपैर्गृणद्भिः स्वयशो वलान्नितः ॥ पशून् पुरस्करय पशव्यमाविशद्भिर्हत्तुं कागः कुसुमाङ्गवनम् २ तन्मञ्जुवोपालिभृगुर्दिजाकुलं महन्मनः स्वच्छपयः सरस्वता ॥ वातेन जुष्टं शतपत्रगन्धिना निरीक्ष्य रन्तुं भगवान् मनोदधे ३ सतत्र न त्राकृष्णगल्लवथिया फलप्रसूनोरुभरेण पादयोः ॥ स्पृशच्छिखा न्वीक्ष्य वनस्पतीन् मुद्रा स्मयन्निनाहाग्रजमादिपूरुषः ४ श्रीभगवानुवाच ॥ अहो अभीदेव रामरात्रे तं पादाम्बुजन्ते सुमनः फलार्हणम् ॥ नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मनस्तमोपहत्यैत रुजमयस्कन्धम् ५ एतेऽलिनस्तव यशोऽखिललोकनीर्थं गायन्त आदिपुरुषानुपदं भजन्ते ॥ प्रायो अभीमुनिगणाभवदीय मुख्या गूढं एतेऽपि न जहरयन् घातमदैवम् ६ नृत्यन्त्यमीशिखिन ईड्य मुद्रा हरिणः कुर्वन्ति गोप्यद्वयतो ग्रियमिक्षणेन ॥ सूक्ष्मैश्च कोकिलगणानुहमागताय ध

ऐसे टुन्दावन को देखि के श्रीकृष्णचन्द्र के मन में खेल्निये की आवृत्ति भई ३ जहा तहां अरुण पृष्ठय निकसे है तिनकी शोभा है कली फल फूलन के वोभतें झुकि झुकि के चरणन में जिनकी शाखा लगी ऐसे वृत्तनकूं देखि के बड़े आनन्दित हैं मुमिकाय के आदिपुरुष श्रीकृष्णचन्द्र बड़े भय्या बलदेव जी ते यह बोलत भये ४ श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र कहै हैं हे देवतान में श्रेष्ठ पलदेव जी ! बड़ी आश्चर्य है ये टुन्दावन के वृत्त देवता जिनको पूजन करै ऐसों तुम्हारी चरणारविन्द है तो ये फल फूल भेंट लै लै के अपनी शाखान सों झुकि २ के प्रणाम करै हैं काहे के लिये कि जा अज्ञान ते हमारी वृत्तजन्य भयो है वह अज्ञान दूरि होय जाय इस कारण ५ है आदिपुरुष ! मन्त्रलोचनको पवित्र करनवारी तुम्हारी यश है ताय भौरा निरन्तर गावत तुम्हारी भजन करै हैं बहुधा ये भौरा तुम्हारे मुख्य भक्तन में मुनिजन हैं हे पापरहित ! या वन के निषे मनुष्यरूप धरे छिये जो तुम देव हो तिन ईंधे मुनिजन नहीं छोड़ै हैं भौरा वंश में छिये के तुम्हारी भजन करै हैं ६ हे स्तुति करिये के योग्य ! आनन्द ते ये टुन्दावन के पोर तुम्हारे आगे नृत्य करै हैं और ये हरिणी गोपीन की तुल्य चितवन ते तुम पै प्यार करै हैं और ये कोकिलान

के समूह इनको दृग्दावन घर है ताँय आये जो मुम हो तिनको सुन्दर बोलन सौ सत्कार करै है ये दृग्दावनवासी धन्य है साधुनको यही स्वभाव है वड़े पुरुष अपने घर आवैं तो जो कतु अपने पास फूल फल होय ताय उनकी भेंट करै ७ यह पृथ्वी अब बड़ी धन्य है तुम्हारे चरणारविन्द कूं स्पर्श करै है और ये ठण भी धन्य है तुम्हारे नल को स्पर्श करै है और ये तता दत्त धन्य है नदी पर्वत पत्नी वन के पशु धन्य है तुम्हारी दयापूर्वक चितवन परै है और जा वलःस्थल की लक्ष्मी चाहना करै ताको स्पर्श गोपीन कूं होय है याते गोपी भी धन्य है ८ या प्रकार शोभायमान दृग्दावन है ताँमे प्रसन्न जिनको मन वे श्रीकृष्णचन्द्र पर्वत के समीप यमुना जी के तीर है तिन में गजन को चरावत ग्वालमलन को संग लेके खेलत भये ९ मदनोन्मत्त भौरा जा समय गुजार करै है तब श्रीकृष्णचन्द्र आप गावैं हैं और ग्वालवाल जिन के चरित्रन को गावैं हैं वलदेवकी जिनके संग हैं १० कहं राजहसन में योई

न्यावनौ कसइया नहि सतां नि सर्गः ७ धन्ययमद्वधराणी तृणवीरुधस्तपादस्पृशो दुमलताः करजा भिमृष्टाः ॥ नद्योऽदयः खगमुगाः सदयावलोकैर्गोप्यन्त रेण भुजयोरपि यत्स्पृहाश्रीः ८ श्रीशुक उवाच ॥ एवं दृग्दावनं श्रीमत् कृष्णः प्रीतमनःपशून् ॥ रेमे संचारयन्नेदः सारिधौ स्सुसानुगः ९ क्वचिद्गाय तिगायत्सु मदन्धालिष्वनुव्रतैः ॥ उपगीयमानचरितः सग्रीसंकर्षणा न्वितः १० क्वचिच्च कलहं सानामनुकूजतिकूजितम् ॥ अभिनृत्यति नृत्यन्तं बहिणं हासयन् क्वचित् ११ मेघगम्भीरयावाचा नामभिर्दूरगानपशून् ॥ क्वचिदाह्वयति प्रीत्या गोपालमनोज्ञया १२ चकोरकौञ्चवक्त्राह्वयन् भारद्वाजांश्च बहिणः ॥ अनुगौतिस्मसत्तानां भीतवद्व्याघ्रसिंहयोः १३ क्वचित् क्रीडापरिश्रान्तं गोपोत्सङ्गोपवर्हण्य ॥ स्वयं निश्रमयत्यर्थपादसंवाहनादिभिः १४ नृत्यतोमाय तः क्वापि वलगतो युद्धचतो मिथः ॥ गृहीतहस्तौ गोपालान् हसन्तौ प्रशशंसतुः १५ क्वचित्पल्लवतल्पेषु नियुद्धश्रमकथितः ॥ वृक्षमूलाश्रयः शेते गोपोत्सङ्गोपवर्हणः १६ पादसंवाहनं चक्रुः केचित् तस्य महात्मनः ॥ अपरे हतपाप्मानो व्यजनैः समवीजयन् १७ अन्येतदनु रूपाणि मनोज्ञानि महारगनः ॥ गाय

इंस बोलै है ताके पीछे श्रीकृष्णचन्द्र आप बोलै है कभऊँ अपने संग के भिजनको हँसाये के लिये भोर नाचतो देखिके चाके सम्मुख आपहू जाया फैलायकै नाचै है ११ कभऊँ एक गज जब दूर निकसि जाय है तब भैरव जैसे गरज के प्रसन्न होय के उनको नाम लैलै के बुलावैं है वह बोली गजन को ग्वालवालन कू बहुत प्यारी लगै है १२ चकई चकोर चकवा भडरिया भोर इंसकी सी बोली बोलै है कभऊँ एक व्याघ्र सिंह ते डरपि के और सब जानवर भाजैं है तब आपहू भाजैं है या प्रकार लीला करै है १३ काहूसमय रोलत रोलत चलदेवजी थकजायैं तब ताहू गोपकी गोदको तक्रिया वनाय के सोई जाइ है तब श्रीकृष्णचन्द्र आय उनके चरण दाविके पंखा करिके श्रम दूर करै है १४ कभऊँ एकसमय ग्वालवाल नाचैं गावैं दौरैं है आपस में कुरतीलइ तब उनके हाथ पकरिके हँसिके कृष्ण बलदेव दोनों भख्या कहै हैं भले नाचे भले गाये या प्रकार बड़ाई करै है १५ काहू समय जब कुरती में परिश्रम होय है तब श्रीकृष्णचन्द्र दृक् दृक् की जड़में पत्तान की शय्या पै गोपों की गोदकी तक्रिया करिके सोवैं हैं हे राजा परीक्षित् ! कोई ग्वाल बाल महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र के चरण दावतये पाप जिनके दूरिभये ऐसे जे ग्वाल है ते पत्तान के

पंखान ते वयारि करतभये और स्नेह भरी जिनकी बुद्धि ऐसे जे ग्वाल हैं ते महात्मा श्रीकृष्णचन्द्रकों नोंद जिनते आय जाय ऐसे प्यारे प्यारे मलारके पद होखे होखे गातभये १६। १७। १८  
या प्रभार अपनी माया सँ अपनो ईश्वररूप जिनने छिपायो चरित्रकरिके गोपालक को अनुकरण करै लक्ष्मी जिनके चरण पलोंते वे श्रीकृष्णचन्द्र ग्रामके रहनवारे व्रजवासीन के संग उन्हीं की  
तुल्य खेलतभये बीच बीच कभऊँ ईश्वरपने की चेष्टा दिखाय देईहै १९ ईश्वरपने की चेष्टा दिखायवे के लिये कहै हैं रामकृष्णके मित्र श्रीदापा नाम गोपहो सुवल स्तोक कृष्ण आदिलैके और  
गोपहै ते भ्रम ते यह बोलतभये २० हे राम ! हे राम ! हे वड्डे भुजावारे ! हे दुष्टन के मारनवारे श्रीकृष्णचन्द्र ! यहा ते थोड़ी सी दूरि पै तालवन है २१ वा तालवन में बहुत से तालन के फल टूटे  
परै हैं औरहुट्टिके गिरे हैं परन्तु दुष्ट धेनुकासुर वहाँरहै है ताने रोकि राखो है न वह आप खाय है न काहू को खान देय है २२ हे राम ! हे श्रीकृष्णचन्द्र ! गधाको रूप धरे वह असुर वड्डो पराक्रमी है  
नितस्ममहाराज स्नेहक्लिन्नधियःशूनैः १८ एवंनिगूढात्मगतिःस्वमायया गोपात्मजत्वंचरितैर्विडम्बयन् ॥ रेमेरमालालितपादपल्लवोशाभ्यैःसमंग्राम्य

वदीशचेष्टितः १९ श्रीदामानामगोपालो रामकेशवयोःसखा ॥ सुवलस्तोककृष्णाद्यागोपाःप्रेम्णेदमब्रुवन् २० रामराममहाबाहो कृष्णदुष्टनिवर्हण ॥ इ  
तोविद्वेसुमहद्वन्तालालिसंकुलम् २१ फलानितत्रभूरीणिपतन्तिपतितानिच ॥ सन्तिकित्ववरुद्धानि धेनुकेनदुहात्मना २२ सोऽतिवीर्योऽसुरो राम हेकृ  
ष्णत्वरूपधृक् ॥ आत्मतुल्यवलैरन्यैर्ज्ञातिभिर्वहुभिर्वृतः २३ तस्मात्कृतनराहाराद्भूतैर्नृभिर्मित्रहन् ॥ नसेव्यतेपशुगणैःपक्षिमण्डैर्विधार्जितम् २४ विद्यन्ते  
भुक्तपूर्वाणि फलानिसुरभीणिच ॥ एषैसुरभिर्गन्धोविपूचीनोऽवगृह्यते २५ प्रयच्छतानिनःकृष्ण गन्धलोभितचेतसाम् ॥ वाञ्छाऽस्तिमहनीराम गम्य  
तांयदिरोचते २६ एवंसुहृदचःश्रुत्वा मुहुरित्यचिकीर्षया ॥ प्रहस्य जगमनुगोपधृतौतालवनंशभू २७ वलःप्रविश्यबाहुभ्यां तालान्संपरिक्रमयन् ॥ फ  
लानिपातयामास मतङ्गजइवौजसा २८ फलानांपततांशवदं निशम्यासुरासभः ॥ अभ्यधावत्क्षितितलं सनगंपरिक्रमयन् २९ समेततरसाप्रत्यग्दा  
भ्यांपद्भ्यांवलंवली ॥ निहत्योरसिकाशवदं मुञ्चन्पर्यसरत्खलः ३० पुनरासाद्यसंरब्धउपकोष्ठापराक्स्थितः ॥ चरणावपरैराजन् बलायप्राक्षिपदुपा ३१

और अपनी बराबर बल जिनके ऐसे ज्ञाति भाई बहुत जाके संग हैं २३ हे दुष्टनके मारनवारे ! कैसो वह दुष्ट है मनुष्यनकुं खाय जाय वाके भय तें मनुष्य वहाँ नहीं जाय हैं पशुनके समूह और पक्षीन  
के समूह कोई भी वहाँ नहीं जाय हैं २४ काहूने पहिले खाये नहीं ऐसे सुगन्धियुक्त वा वनमें फल हैं न मानो तो ताकूँ संधिलेख चारों ओर सुगन्धि फैलिरही है २५ हे श्रीकृष्णचन्द्र ! सुगन्धि  
से लोभित जिनके चिच ऐसे हम हैं तिनकों वे फलदेउ हमारी वही बाञ्छा है तुमकों अच्छी लगै तो वा तालवन में चले २६ या प्रकार मित्रनको वचन श्रवण करिके हंसिके मित्रन के मित्र  
करिवेके लिये मित्रन को संग लैके सपर्य श्रीकृष्णचन्द्र दलदेव दोनों भय्या तालवन में जात भये २७ वहाँ जायके बलदेवजी ने ताल बजाय के भुजान ते फल पटके जैसे बल ते मतवारो हा-  
थी पटकै है २८ पृथ्वी पै फल जो गिरे तिनको शब्द श्रवण करिके गर्दभरूप धेनुकासुर पर्वतन सहित पृथ्वीको कंपायमान करत दौरिके सम्मुख आवत भयो २९ बली जोरावर धेनुकासुर शी

प्रता हूँ आय के पिछले दोनों पांवनों को छाती में मारि के शब्द करिके दुष्ट भाजत भयो ३० हे राजन् परीक्षित ! क्रोध में भरो भयो धेनुकासुर फेरि आय के मुख फेरिके ठाढ़ो भयो क्रोध करिके वलदेवजी कू पिछले पांवन की दुलसी फँकत भयो ३१ वलदेवजी धेनुकासुर के दोनों पांव पकारिके एक हाथ ते फिराय के दृत्त के ऊपर फँकत भये फिरावत में वाके प्राण निकसिगये ३२ धेनुकासुर को मारि दृत्त पै फँकयो तादूँ वड़ो भारी तालदृत्त दृटि के गिरयो तासूँ दूसरो पास में तालदृत्त हो सो गिरो ताकी चोट सँ और शिलि के तालदृत्त गिरे या प्रकार अनेक ताल दृत्त गिरतभये ३३ वलदेवजी ने खेल करिके फँको जो गधाकी देह ताकी चोट जो लगी तासूँ सवरे तालके दृत्त हिलत भये जैसे वड़ो आंगी मेह चलेहै ३४ अन्त जिनको नहीं जगतके ईश्वर भगवान् वलदेवजी हैं तिनमें यह कतु आश्चर्य नहीं है जिन वलदेवजी में यह सब बिश्व ओतभोत होय रहोहै जैसे कपड़ा ताने वाने में ओतभोतहै ३५ जम धेनुकासुर गधानमें मुलिया मारयो

संतगृहीतांप्रदोभ्रांमयित्वैकपाणिना ॥ विक्षेपदृष्टराजाग्रे आमणत्यक्कजीवितम् ३२ तेनाहतोमहातालोवेपमानोबृहच्चिराः ॥ पार्श्वस्थं कम्पयन् भग्नः सचान्यंसोऽपिचापरम् ३३ वलस्यलीलायामृष्टखरदेहहताहताः ॥ तालाश्रकम्पिरेसर्वे महावातेरिताइव ३४ नैतच्चित्रं भगवति ह्यनन्तेजगदीश्वरे ॥ ओतप्रोतमिंदयस्मिंस्तनुष्वङ्गयथापटः ३५ ततः कृष्णश्चरामश्च ज्ञातयोधेनुकस्यये ॥ कोशरोऽभ्यद्रन्सर्वे संख्याहतबान्धवाः ३६ तांस्तानापततः कृष्णो रामश्चनृपलीलाया ॥ गृहीतपश्चाच्चरणान्प्राहिणोचृणराजसु ३७ फलप्रकरसंकीर्णा दैत्यदेहेर्गतासुभिः ॥ राजभूः सतालार्धैर्वनैरिवनभस्तलम् ३८ तयोस्तत्सुमहत्कर्मनिशम्यविविधादयः ॥ मुमुचुः पुष्पवर्पाणि चक्रुर्वीद्यानितुष्टुवुः ३९ अथतालफलान्यादन् मनुष्यागतसाध्वसाः ॥ तृणश्चपशवश्चेरुहं तथेनुकक्रानने ४० कृष्णः कमलपत्राक्षः पुरयश्चवर्णकीर्तनः ॥ स्तूयमानोऽनुगैर्गणैः सायोजव्रजमाव्रजत् ४१ तंगोरजश्छुरितकुन्तलवद्धवर्हयन्प्रमून रुचिरक्षेणचारुहासम् ॥ वेणुकणन्तमनुगैरनुगीतकीर्त्ति गोप्योदिदृक्षितदृशोभ्यगमन्समेताः ४२ पीतवामुकुन्दमुखसारधमक्षिभृङ्गैस्तापंजहुर्विरहजं व्रज

गयो तव धेनुकासुर की जाति के सम्पूर्ण गथा क्रोधमें भरिके कृष्ण वलदेव के सम्मुख दौरिके आवत भये ३६ हे राजन् परीक्षित ! कृष्ण वलदेव दोनों भय्या जे जे गथा आयै तिनके पाव पकरिके तालके दृक्षन के ऊपर फँकत भये ३७ छाल लाल फल दृटि के गिरै हैं श्वेत श्वेत गदहनके मारे देह जो परे हैं लीलीलीली लतानकी द्रुसी जो परी तासों धरती बहुत शोभायमान लगति भई जैसे लाल सुपेद लीली घटानमूँ आकाश सुन्दर लगेहै ३८ देवता या प्रकार उत्कृष्टकर्म श्रीकृष्ण वलदेव जीको सुनिके प्रसन्न होय के फूल वर्षावत भये वड़े नाना प्रकारके वाजे वाजत भये देवता स्तुति करत भये ३९ जव धेनुकासुर मारो गयो ताके पीछे भय जिनको दूर होय गयो तब बहुत मनुष्य तालके फल खातभये तब वा वनमें गऊ घासकूँ चरत भई ४० कमलपत्र से विशाल जिनके नेत्र और पवित्र जिनकी कथान को श्रवण हरे कृष्ण गोविन्द नामकी कीर्तन वे श्रीकृष्णचन्द्र जब भालवालन ने स्तुति करी तब वलदेवजी सहित व्रज में आवत भये ४१ गजन के खुरनकी रज जो उड़ी है तासों अलकैं जिनकी घूसरी होय रही हैं मोरपुन्खन के मुकुटन कूँ पहिरे वनके फूलन के तुरी टांगे सुन्दर जिनकी चितवन मनोहर जिनकी हंसनि वासुरी



(पोडोशेकालियस्योक्तो निग्रहोयमुनाद्वे ॥ तत्तत्तानीभिःरतुतेनाथ कृष्णेनानुग्रहःकृतः १ हत्वारारासर्भदेतेयान् जग्धनातालफलान्यलम् ॥ गतिोऽदृश्यत्फणारद्रे कालियस्यकलागितिः २ सोल-  
ह्वं अध्यायमें यमुनाके दहमें कालीनागता दण्ड कहाहै फिर तिसकी बियासे स्तुति कियेगये कृष्णजी ने कृपाकीहै १ गथाके स्वरूपबारे दैत्योंको मारकर तालके फलों को भोगनकर मला-  
धि कृष्णजी मसल होकर काली के फणमें नाचते भये हैं २ ) श्रीशुकदेवजी कहै है कि हे राजन् परीक्षित् ! प्रभु श्रीकृष्णचन्द्र कालीसर्प से कालिन्दी यमुना को विगरी देखिके शुद्ध करि के  
कारण वा कालीसर्प कूं निकासत भये १ अथ राजा परीक्षित् पूछै है कि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अगाध जल के भीतर कैसे काली कूं दण्ड देतभये यह गाली बहुत युगन तें आयके वास जैसे  
करत भयो हे शुकदेवजी ! यह मेरे आनेकहिये २ राजा कहै हैं हे श्रीशुकदेवजी ! व्यापक अपनी इच्छापूर्वक वतें जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र तिनको गोवन के पालन करिके जो बड़ो चरित्र है  
सोही अमृतहै ताय श्रवण करिके कौन तुम होय ३ श्रीशुकदेवजी कहै हैं कि हे राजन् परीक्षित् ! कालिन्दी यमुना में कालीनागको कोई एक दह होत भयो विपकी अग्नि मूं जल जामें ओढो

श्रीशुकउवाच ॥ विलोकयद्वृषिताकृष्णां कृष्णःकृष्णाहिनाविभुः ॥ तस्याविशुद्धिमन्विच्छन् सर्पन्तमुदवासयत् १ राजोवाच ॥ कथमन्तर्जलेऽ  
माधे न्यगृह्णाद्भगवानहिम् ॥ सवैवदृष्टुगावासं यथाऽऽसीद्विप्रकथ्यताम् २ ब्रह्मन्भगवतस्तस्य भूम्नःस्वच्छन्दवर्त्तिनः ॥ गोपालोदारचरितं कस्तप्ये  
तामृतंजुपन् ३ श्रीशुकउवाच ॥ कालिन्यांकालियस्यासीद्ददःकश्चिद्विपाग्निना ॥ अथमाणपयोग्यसिगन् पतन्त्युपरिगाःखगाः ४ विप्रुभगता  
विषोदोर्भिमार्त्तनाभिमर्शिताः ॥ अयन्तेतीरगायस्य प्राणिनःस्थिरजङ्गमाः ५ तंचण्डवेगविपवीर्यमवेक्ष्यतेन दुष्टानर्दीचखलसंयमनावतारः ॥ छ  
णःकदम्बमधिरुखततोऽतितुङ्गमास्फोट्यगाढराशनोन्यपतद्विपोदे ६ सर्पद्रदःपुरुषसारनिपातवेगसंक्षोभितोगविषोच्छ्वसिताम्बुराशिः ॥ पर्यङ्कुनो  
विषकपायविभीषणोर्भिर्धोवन्धनुःशतमनन्तचलस्यकिंतत् ७ तस्यद्रदेविहरतोभुजदण्डघूर्णवार्धोपमङ्गवरवारणविक्रमस्य ॥ आश्रुत्यतस्त्वसदनशिभि

करै आकाश के उहे पक्षी जामें गिरिपरै ४ झीटान कूं लिये विपके जलसूं स्पर्श करिके जो पवन चलै है ताके स्पर्श करे ते किनारे के वृत्त शुष्क होयगये ५ बड़ो जाको वेग ऐसे विपको जाके  
बल ऐसे कालीसर्प कूं देखिके और ताते विगरी जो यमुना ताकूं देखिके दुष्ट को दण्ड दैवे के लिये जिनको अवतार ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कदम्ब पै चढ़िके सौचिकरि पीताम्बर ते फेंड वायि के  
ऊंचो कदम्ब है तापै ते सरग ठाँकिके विपके जलमें कूदत भये अथ राजा कहै हैं कि महाराज अवहीं तो तुम ने कही कि तटने सपस्त वृत्त सूख गये अथ कहो हौ कि कदम्ब पै चढ़िके कूदत भये  
कदम्ब कहाते आयो तहा कहै हैं या कदम्ब के भाग्य में कृष्णचन्द्र के चरणारविन्द को स्पर्श लिखो हो याते यह नहीं सूखो अथवा और पुराण में कथा है गरुड़जी ने स्वर्ग ते लायके अमृत  
को कलश एक समय याके ऊपर धरचो हो सो अमृतकी बूंद परी याते यह अमर होयगयो ६ पुरुषन में श्रेष्ठ श्रीकृष्णचन्द्र जा समय वामें कूदे तब उनके चोभ ते खेद को प्राप्त भयो जो सपर्य  
ताके विपते ऊपर कों जल जाको उखरो विपमूं कसेली भयानक जामें लहरैं उठैं वह काली भयानक सर्प को देह जल्दीदेसी सो धनुष चारों ओर फैलियो अनन्त जिनको बल तिन श्रीकृष्णचन्द्र



को यह कितनी पराक्रम है ७ हे राजन् परीक्षित ! श्रेष्ठ हाथी केसो जिनको पराक्रम जा समय काली के दह में परे ता समय श्रीकृष्णचन्द्र के हाथन ते जो जलशब्द भयो ताकुं श्रवण करिके और तिन श्रीकृष्णचन्द्र तें अपने घर को नाश देखिके ऐसो जोरावर कौन है जो भरे घरमें आयके थूप करै जब वापै न सम्भारो गयो तब श्रीकृष्णचन्द्र के सम्मुख आवत भयो ८ देखिवे योग्य सुकुमार मेघकी तुल्य निर्मल जिनको स्वरूप भृगुलता को जिनके चिह्न पीतम्बरको पहिरे मुसिकानिते सुन्दर जिनको मुख निर्भय खेलै कमल से जिन के चरणारविन्द तिन श्रीकृष्णचन्द्र के वक्षःस्थल में दर्शन करिके वह काली क्रोधकरिके वनमाली के अंग में लिपटि गयो ९ सर्पदेह में लिपटि गयो नहीं दीसै है चेष्टा जिनकी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को देखिके तिन के प्यारे मित्र ग्वालमाल बहुत दुःखित होतभये श्रीकृष्णचन्द्र में देह मित्र घन स्त्री समस्त कामना जिन ने अर्पण करि दीनी और दुःख शोक भय सों सुधि बुधि जिनकी विसरि गई ऐसे वे गोप

वंनिरीक्ष्य चक्षुःश्रवाःसमसरत्तदमृष्यमाणः ८ तंप्रेक्षणीयसुकुमारघनावदातंश्रीवत्सपीतवसनंस्मितमुन्दरास्यम् ॥ क्रीडन्तमप्रतिभयंकमलोदराङ्घ्रिं संदश्यमर्मसुरपुंभुजयाचञ्चाद ९ तन्नागभोगपरिवीतमदृष्टचेष्टमालोक्यतत्प्रियसखाःपशुपाभृशार्त्ताः ॥ कृष्णेऽर्पितात्मसुहृदर्थकलत्रकामाडुःखानुशोकभयमूढधियोनिपेतुः १० गावोवृपावत्सतयःकन्दमानाःमुहुःखिताः ॥ कृष्णेन्यस्तेक्षणाभीतारुदन्यइवतस्थिरे ११ अथब्रजेमहोत्पातास्त्रिविधाह्यतिदारुणाः ॥ उत्पेतुर्भुविदिव्यात्मन्यासन्नभयशंसिनः १२ तानालक्ष्यभयोद्धिग्ना गोपानन्दपुरोगमाः ॥ विनाराभेणगाःकृष्णं ज्ञात्वाचारयितुंगतम् १३ तैर्दूर्ध्निमित्तैर्निधनं मत्वाप्राप्तमत्तद्विदः ॥ तत्पाणास्तन्मनस्कास्ते दुःखशोकभयातुराः १४ आत्रालवृद्धवनिताः सर्वेऽङ्गपशुवृत्तयः ॥ निर्जग्मुर्गोकुलादीनाः कृष्णदर्शनलालसाः १५ तांस्तथाकातरान्वीक्ष्य भगवान्मानवाधोवनः ॥ प्रहस्यकिञ्चिन्नोवाच प्रभावज्ञोऽनुजस्यसः १६ तेऽन्वेपमाणादयितं कृष्णं सूचितयापदैः ॥ भगवल्लक्षणैर्जग्मुः पदव्यायमुनातटम् १७ तेतत्रत्राजयवाङ्मशाशनिध्वजोपपन्नानिपदानिब्रिष्टपतेः ॥ मार्गोवागमन्यपदान्तरान्तेरोनि

पृथ्वी में पखार खाय खाय के गिरत भये १० गौ बैल छोटी बछियां अतिदुःखित होय के रम्हावैं हैं कृष्णकी ओर टकटकी लगाय के देखि रहे हैं डरके मारे रोवत से ठाढ़े हैं ११ ताके पीछे बड़े बड़े हीन तरहके उत्पात उठतभये धरती हालाँ हीलाँ आकाशतें तोरे दूटतभये पुरुषनक्षी वाई भुजा वाई आखि फरकत भई यह उत्थात शीघ्र भयको जतावे है १२ नन्दजी जिनमें मुख्य वे गोप उन उत्पातन को देखिके भयतें व्याकुल होतभये बलदेवजी विना कृष्ण अकेलो आज गायचारायेन को गयो १३ उन खोंटे उत्पातन सँ कृष्णचन्द्र को नित्रन मानिके श्रीकृष्णचन्द्र के प्रभावको नहीं जानें और तिन श्रीकृष्णचन्द्र में जिनके प्राण और मन लगी रहे हैं दुःख शोक भय के मारे अतिपीड़ित बाल छद्म स्त्री ममस्त पशुकी तुल्य बड़ो जिनके मोह श्रीकृष्णचन्द्र के देखिने की जिनको उत्कण्ठा वे समस्त दीनहोय गोकुल सों हृदिये को निकसत भये १४ १५ मधुवंश में भये ऐरो भगवान् बलदेवजी ब्रजवासीन कं व्याकुल देखिते होंसि के कछु न बोलत भये काहे ते कि वे अपने छोटे भय्या श्रीकृष्णचन्द्रके प्रभाव को जानै हैं इनके हँसनेही ते सबके प्राण वचे क्योंकि जाको बड़ो भय्या हँसै है तो जानि परै है कि कछु कुशल है १६ ते सम्पूर्ण



जाकी चितवनि वा काली कूं खेलत खेलत फिरावत भये जैसे गरुड़ सर्प को फिरावे है काली भी श्रीकृष्णचन्द्र के पकरिवे को अवसर देखत फिरत है श्रीकृष्ण अपनो दाँड़ विचारै काली अपनो दाँड़ विचारै श्रीकृष्णचन्द्र को मन तो यह है कि हमारो दाँड़ लगे तो याके फणन पै चढ़ि के नृत्य करै काली के मन में यह है कि मेरो दाँड़ लगे तो मैं याके लिपटि जाऊँ ऐसे अपनो अपनो दाँड़ विचारै है २५ ऐसे फिरै तें बल जाको घटिगयो काली के ऊँचे फणनको लचाय के ऊपर चढ़ि के कृष्णचन्द्र नाचत भये काली के फणन में जो मणिरत्न लगे हैं तिन मूलगि के चरणारविन्द अरुण होयगये फदाचित् कहो कि चञ्चल सर्प के फणन पै कैसे नृत्य करत भये तहाँ कहै हैं ये श्रीकृष्णचन्द्र समस्तकलान के आप गुरु हैं कोई तरवारन की धार पै नाचै कोई बोंस पै चढ़ के नाचै हम देखो काली के शिरपै नाचै है २६ कृष्णचन्द्र काली के फणन पै नृत्य करवे को ठाढ़े भये तिनको देखि के ता समय गन्धर्व सिद्ध सुरगण चारण देवागना ये सन मसल होय के मृदङ्ग होलरु नगाड़े लै लै के वजावत गावत भये पुष्प वर्षावत भँटलै के स्तुति करत शीघ्र आवत भये २७ मुख्य है शिर जाके ऐसो जो काली है ताको

रुद्राद्यः ॥ तन्मूर्द्धरलनिकरस्पर्शातिताम्रपादाम्बुजोऽखिलकलादिगुरुर्नर्त २६ तन्नर्तुमुद्यतमेक्ष्यतदादीयगन्धर्वसिद्धसुरचारणदेववध्वः ॥ श्री  
त्यामुदङ्गाणवानकवाद्यगीतपुष्पोपहारानुतिभिःमहसोपसेढुः २७ यद्यन्विखरोननमतेऽङ्गशैवैकशीर्ष्णस्तत्तनममर्दबलदण्डधरोऽङ्घ्रिपातैः ॥ क्षीणायुषो  
भ्रमतउल्लवणमास्यतोऽमृद्वनस्तोवमचपरमकश्मलमापनागः २८ तस्याक्षिभिर्गलमुद्रमतःशिरस्सु यद्यत्समुन्नमतिनिःश्वसतोरुपोच्चैः ॥ नृत्यन्पदाऽनु  
नमयन्दमयाम्बभूव पुष्पैःप्रपूजितैश्चहपुमानचुराणः २९ तच्चित्रताण्डवविरुणफणातपत्रोरक्कमुखिरुक्मचतृपभग्नगात्रः ॥ स्मृत्वाचराचरगुरुं पुरुषं पुरा  
णं नारायणं तमरणं मनसा जगाम ३० कृष्णस्य गर्भजगतोऽतिभरावसन्नं पाष्णिप्रहारपरिरुणफणातपत्रम् ॥ दृष्ट्वाऽहिमाद्यमुपसेढुःसुख्यपत्न्यआर्त्ताः  
शलथद्धस्तनभूषणकेशवन्धाः ३१ तास्तं सुविग्नमनसोऽथपुरस्कृतार्भाः कार्यनिधाय भुविभूतपतिं प्रणेषुः ॥ साध्यः कृताञ्जलिपुटाः शमलस्य भर्तुर्मोक्षेऽपसवः

जो जो शिर ऊँचो उठै है ताय ताय दुष्टन के दण्ड देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र पाँव की ठोकर सों नवावत भये क्षीण भई है अवस्था जाकी इत उत भ्रमत होलै जो काली ताके मुख ते नासिका ते भयङ्कर रुधिर निकसो या प्रकार काली दुष्ट सर्प कों मर्दन करत भये २८ नेत्रन ते विप जाके निकसो क्रोधकरिके बड़े बड़े श्वासन कों लेइ जो काली है ताको जो जो शिर ऊँचो उठै है ताके ऊपर नृत्य करिके चरण की ठोकर सों नचाय के दण्ड देत भये या समय गन्धर्व देवतान के आनन्द जो भयो सो शेषनाग की शरणा पै शयन करै जो नारायण हैं तिनकी तुल्य यशोदा-नन्दन श्रीकृष्णचन्द्र की पुष्पन करिके पूजा करत भये अथवा दूसरो अर्थ देवता गन्धर्व अप्सरानने ता समय फूलन करिके पूजन करो और व्रजवासीन ने नारायण की तुल्य श्रीकृष्णचन्द्रको दर्शन करो अथवा याही पद को तीसरो अर्थ फूलन सों पूजन करै से प्रसन्न होयके काली को दण्ड देत भये यह वाको भलो करत भये २९ हे राजन् परीक्षित् ! श्रीकृष्णचन्द्र ने जो चित्र विचित्र ताडव नृत्य करो तामूं फणरूपी छत्र जाके ढाले होय गये देख की नस नस दौली होयगई ऐसो काली मुख ते रुधिर वमन करत स्थावर जङ्गम के गुरु पुराणपुरुष नारायण की

सुधि करिके मन ते नारायण की शरण लेत भयो ३० ब्रह्माण्ड जिनके गर्भमें उन श्रीकृष्ण के वोफते दबो पैड़ीन की ठोकरन के मारे फणखी छत्र जाकी ढीली होयगयो ऐसे कालीनाग को देखिके गहने कपड़े जिनके अस्वयस्त होयगये केश जिनके खुलि गये ऐसी या काली की स्त्री पीड़ित होय के श्रीकृष्णचन्द्र की शरण लेत भई ३१ अतिव्यग्र जिनके मन छोटे छोटे अपने बचान को आगे करिके हाय जोरि के जे नाग की पतिव्रता पत्नी हैं ते साष्टाङ्ग धरती में गिरि के समस्त प्राणीन के पति श्रीकृष्णचन्द्र कूं प्रणाम करत भई पतिके पाप छुडायवे के लिये श्री कृष्णचन्द्र भगवान् की शरण लेति भई ३२ अब नागपत्नी कहती हैं या अपराधी कौ तुमने दण्ड दियो सो योग्य है तुम्हारी अवतार दुष्टन के दण्ड देवे कू है वरी और पुत्रन कूं वरावर देलौहो दुष्ट विचार के दण्ड देउ हो और पुत्रन के ऊपर अनुग्रह करोहो दुष्टन कौ दण्ड देवो यह तुम्हारे विपमता नहीं है ३३ या सर्प को तुमने दण्ड दीनो याके ऊपर बड़ो अनुग्रह कियो तुम्हारे दण्ड दिये ते दुष्टन के समस्त पाप जात रहे हैं या अपराध ते याकी सर्पयोनि भई वह अपराध दूर होयगयो तुम्हारी क्रोध है सो कृपालु है ३४ दूरि भयोहै मान जाको औरन कूं भी देय

शरणदंशरंप्रपन्नाः ३२ नागपत्न्यऊचुः ॥ न्याय्योहिदण्डः कृतकिल्विपेडस्मिस्तवावतारः खलनिग्रहाय ॥ रिपोः सुतानामपितुल्यदृष्टैर्धत्सेदगं फलमेवा नुशंसन् ३३ अनुग्रहोऽयं भवता कृतो हि नो दण्डोऽसत्तान्ते खलु कलमपापहः ॥ यद्वन्दशूकत्वममुष्यदेहिनः क्रोधोऽपितेऽनुग्रहएव संमतः ३४ तपः सुतसंकिमने नपूर्वं निरस्तमानेन च मानदेन ॥ धर्मोऽथ वा सर्वजनानु कम्पया यतो भवांस्तुष्यति सर्वजीवः ३५ कस्यानुभावोऽस्य न देवविज्ञेहे तवाङ्घ्रिणुस्पर्शाधि कारः ॥ यद्वाञ्छया श्रीलिलनाचरत्तपोविहाय कामान्मुचिंश्चतव्रता ३६ ननाकपृष्ठं न च सार्वभौमं न पारमेष्ठ्यं न रसाधिपत्यम् ॥ नयोगसिद्धीरपुनर्भवा वा ज्जन्ति यत्पादरजः प्रपन्नाः ३७ तदेतन्नाथा पदुरापमन्यैस्तमोजनिः क्रोधवशोऽग्रहीशः ॥ संसारचक्रेऽप्रमतः शरीरिणो यदिच्छतः स्याद्विभवः समक्षः ३८ न मस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महात्मने ॥ भूतावासाय भूताय पराय परमात्मने ३९ ज्ञानविज्ञाननिधये ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥ अगुणायैविकाराय नमस्ते प्राकृता पेसो जो काली है ताने पूर्वजन्म में कहा तप करो है अथवा समस्तजनन के ऊपर कृपा करिके धर्म कहा करयो है या कारण ते सम्पूर्ण के जिवानवतारे तुम या काली के ऊपर सन्तुष्ट भये ३५ हे प्रकाशवान् ! यह सर्प तुम्हारे चरणारविन्द की रजके स्पर्श करिवेको अधिकारी भयो सो कौन तपस्या को फल है यह हम नहीं जानें हैं जिन चरणारविन्द के स्पर्श के लिये लक्ष्मी जो उत्तम स्त्री है सो कामनान को छोड़िके व्रतको धारण करिके बहुत दिनपर्यन्त तप करत भई ३६ जिन पुरुषन ने तुम्हारे चरणारविन्द की रजको शरण लियो है वे पुरुष काहु वस्तुकी चाह नहीं करे हैं पृथ्वी को चक्रवर्ची राज्य चाहै हैं अणिमादिक अष्टसिद्धिन की चाह नहीं करै हैं और मोक्षकूं भी नहीं चाहै है ३७ हे नाथ ! लक्ष्मी ते आदिलै के बड़े बड़े जो हैं तिनको दुर्लभ ऐसी तुम्हारे चरणारविन्द की रज है ताहुं तमोगुण ते जाको जन्म भयो क्रोधके रज ऐसो सर्पन को राजा काली सो विना उपाय पावत भयो अपने कर्मन के वशते संसारचक्र में भ्रमे तुम्हारे चरणार विन्दकी रजको शरण चाहै ऐसे शरीरधारी कू मनभी चाहती सम्पत्ति मिलै है ३८ छः प्रकार के ऐश्वर्ययुक्त समस्त देह में अन्तर्यामी रूप करिके रहित उनमें रहो हो तथापि उनमें ठकि

नहीं जावो हौ पृथ्वी अप तेज वायु आकाश इनके आश्रय पङ्चभूतन ते पहिले रहौ समस्त के कारण आप कारण करिके रहिन ऐसे तुमहौ तिनको नमस्कार है ३९ ज्ञान विज्ञान कहा चैतन्य-शक्ति तिन करिके परिपूर्ण हौ व्यापक हौ अनन्तशक्ति जिनमें रहै निर्गुण निर्विकार माया के प्रवर्तक जो तुमहो तिनकू नमस्कार है ४० कालरूप हौ कालशक्ति के आश्रय हौ कालके अंग जौन जण लवादिक तिनके देखनवारे हौ और विश्वके उत्पन्न करनवारे हौ विश्वके कारण हौ ४१ पृथ्वी जल वायु आकाश शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध और दश इन्द्रिय प्राण मन बुद्धि चित्त इन रूपही और तीन प्रकारको जो अहंकारतासूं अपने अंशरूप जे जीव तिनकू अपने स्वरूप को भय जिन छिपाय राखो है ४२ अहंकार ते आच्छादित नहीं याते अनन्त हौ दृष्टिगोचर नहीं याते सूक्ष्महौ उपाधि के करे विकार नहीं याते निर्विकार हौ सर्वज्ञहौ कोई कहै नहीं है कोई कहै सर्वज्ञहौ कोई कहै अचिन्तनीय है कोई कहै वज्र है कोई कहै मुक्त है कोई कहै एक है अनेकहौ इत्यादिक जो अनेक नानाविध भगवै हैं तिनमें माया ते जो जैसे कहै है तामें तैसेही होयजाय है नाम नामी यह जो एक शक्तिको भेद ताते अनेक

यत्र ४० कालायकालनाभाय कालावयवसाक्षिणे ॥ विश्वायतदुपद्रष्टे तत्कर्त्रे विश्वहेतवे ४१ भूतमात्रेन्द्रियप्राणमनोबुद्ध्याशयात्मने ॥ त्रिगुणेनाभिमानेन गूढस्वात्मानुभूतये ४२ नमोऽनन्तायमूढमायकूटस्थायविपश्चिते ॥ नानावादानुरोधायवाचकशक्तये ४३ नमःप्रमाणमूलायकवयेशास्त्रियो नेये ॥ प्रवृत्तायनिवृत्ताय निगमायनमोनमः ४४ नमःकृष्णायरामाययमुदेवसुतायच ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतांपतयेनमः ४५ नमोगुणप्रदीपाय गुणात्मच्छादनायच ॥ गुणवृत्त्युपलक्षाय गुणद्रष्टृस्वसंविदे ४६ अव्याकृतविहाराय सर्वव्याकृतसिद्धये ॥ हृषीकेशनमस्तेऽस्तु मुनेयेमौनशीलिने ४७ परावरगतिज्ञाय सर्वाध्यक्षाप्येतेनमः ॥ अविश्वायच विश्वाय तद्द्रष्टृस्यचहेतवे ४८ त्वं ह्यस्य जन्मस्थिति संयमान् प्रभो गुणैरनीहोऽकृतकालशक्ति

रूप करिके प्रतीक्षा करिवे योग्य जो तुमहौ तिनकू नमस्कार है ४३ नेत्रन सौ आदिलेके जे इन्द्रिय है तिनके प्रकाशके करनवारे हौ और उनके ज्ञानके विषयीहो वेद जिनके स्वास ते भयो है प्रवृत्त रूप निवृत्तरूप वेदरूप जो तुमहो तिनको नमस्कार है ४४ शुद्ध अन्तःकरण में प्रकाश करनवारे भक्तन के रत्नरुहौ और कृष्ण संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध रूप तुमहो तिनकू नमस्कार है ४५ सतोगुण रजोगुण तमोगुण के प्रकाश करनवारे मन बुद्धि चित्त अहंकारके प्रकाश करनवारे अर्थात् इनके अधिष्ठाता हो ताही ते चाररूप हो तिन गुणनसूं उपसना कूं चित्र विचित्र फलदेवके लिये अपने आत्मा कूं ढाँकेके अनेकरूप करिके प्रकाशौ हौ मन बुद्धि चित्त अहंकार करि चैतन्य निश्चयकूं आदिलेके जो वृत्ती हैं तिन करिके जानिवे में आचोहौ मन बुद्धि चित्त अहंकार के साक्षी जो तुमहो तिनकू नमस्कार है ४६ नहीं विचार करिवेमें आवै महिमा जिनकी और सम्पूर्ण विश्वको उत्पात्ति करिनो प्रकाश करियो यह जो कारणहै तिनसौ जानिवे में आचोहौ इन्द्रियन के प्रेरक आत्मा में रमण करीहौ सत्स्वभाव जिनको ऐसे जो तुमहो तिनको नमस्कार है ४७ छोटि वड़े सम्पूर्ण जीवनके स्वरूप को जानौहौ समस्त विश्वके साक्षीहो विश्व जिनके स्वरूपमें नहीं और विश्वके स्वरूपमें आप नहीं विश्वके निषेधके अवधिहो जैसे सर्पके प्रकाशको जेवरी आश्रय तैसे आप विश्व प्रकाशविके आश्रयहो आरोप और निषेध के साक्षीहो विश्वको आरोप

और निषेध तिनके ज्ञान अज्ञान सों कारणहो यावत्पर्यन्त अज्ञान है तावत्पर्यन्त त्रिस्व मानिषे में आवै है या प्रकार नागपत्नी काली के दण्ड की प्रशंसा करिके कृष्णचन्द्र को प्रमत्त करिके कदतभई अब तुम्हारे अंगीन प्राणी है तिनको कदा अपराध है ऐसे मनमें विचार के प्रार्थना करै हैं ४८ हे प्रभो ! चेष्टा करिके रहित जो तुमहो सो कालशक्ति कू धारण करिके सतोगुण रजोगुण तमोगुण स्रु या विश्वको उत्पन्न करी ही पालनकरौ हौ प्रलयकरौ हौ हे अमोघविहार अर्थात् सफल है विहार कीड़ा जिनकी ! ऐसे जो तुमहो सो यात योर मूढ़ स्वभाव है तिनहैं चैतन्य वरिके खेलौ हौ ४९ त्रिलोकी में शात स्वभाव घोरस्वभाव मूढ़स्वभाव या प्रकार तीन स्वभाव के जे प्राणी है ते तुम्हारे खेलिवेके रिलौनाहैं साधुनकी रक्षा करिवेके लिये ऊपर वाग्निके इन्ध्रा करो हौ तासुं अब तुमको शात जिनके स्वभाव वे प्राणी प्यारे लगै हैं ५० स्वायीको यह धर्म है कि एकवार अपनी प्रजापै अपरा ७ वांनि आवै ताकू एक वेर सहिलेय है हे शान्तस्वरूप ! मूढ़ तुम्हारे स्वरूप कूं नहीं जाने ऐसो जो काली ताके ऊपर रक्षा करिवे के योग्य हौ ५१ हे भगवन् ! या सर्प के प्राण निकसे जाय है आपके बोक के मारे सो अत्र याके ऊपर कृपा करो साधु जिनको

धृक् ॥ तत्तत्स्वभावान्प्रतिबोधयन्सतःसमीक्षयाऽमोघविहारहस्ये ४९ तस्यैवतेऽमूस्तनवस्त्रिलोक्यांशान्ताअशान्ताउतमूढयोनयः ॥ शान्ताःप्रियास्नेह्य  
धुनाऽविवृतं सतां स्थातुश्चैतधर्मपरीणमेहतः ५० अपराधःसकृद्भ्रासोढव्यःस्वप्रजाकृतः ॥ शन्तुमहसि शान्तात्मन् मूढस्यत्वामजानतः ५१ अनुगृहीष्वम  
गवन्प्राणांस्त्यजतिपन्नगः ॥ स्त्रीणांनःसाधुशोच्यानां पतिःप्राणःप्रदीयताम् ५२ विधेहितेकिङ्करीणामनुष्ठेयंतवाज्ञया ॥ यच्छ्रद्धयाऽनुतिष्ठन्वैमुच्यते  
सर्वतोभयात् ५३ श्रीशुकउवाच ॥ इत्थंसनागपत्नीभिर्भगवान्समभिष्टुतः ॥ मूर्च्छितैर्भग्नशिरसं विससर्जाङ्घ्रिकुट्टनैः ५४ प्रतिलब्धेन्द्रियप्राणःकालियः  
शनकैर्हैरिम् ॥ कृच्छ्रात्समुच्छ्वसन्दीनः कृष्णंप्राहकृताञ्जलिः ५५ वयंखलाःसहोत्पत्त्या तामसादीर्घमन्यवः ॥ स्वभावोदुस्त्यजोनाथ लोकांनायदसद्गदः  
५६ त्वयामृष्टमिदंविश्वं धातुर्गुणविसर्जनम् ॥ नानास्वभाववीर्योऽजोयोनिवीजाशयाकृतिः ५७ वयञ्चतत्रभगवन् सर्पांजात्युरुमन्यवः ॥ कथंत्यजायस्त्व

शोच करै ऐसी जो स्त्रीजाति हम हैं तिनको यह पति है सोई प्राण है याते यह पतिरूप प्राण हम कूं कृपा कारिदीजिये ५२ तुम्हारी हम दासी हैं तुम्हारी आज्ञा करिवे लायक हैं जो आप आज्ञा करैगे ताई हम श्रद्धापूर्वक करैगे तो सम्पूर्ण भय ते छूट जायैगे तुम आज्ञा करोगे तो प्राणीन कूं न काट्ये ५३ श्रीशुकदेवजी कहै हैं कि हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार नागपत्नीन ने श्रीकृष्णचन्द्र की स्तुतिकरी तव भगवान् मूर्च्छा जाको आय गई चरणन की ठोकर ते पायो जाको फूटि गयो ऐसे काली सर्प कूं छोड़त भये ५४ इन्द्रियनमें प्राणनमें चेत जन भयो तत्र काली सर्प हौले हौले वहे श्वास लेतभयो वड़ो गरीब होय के हाथ जोरि के यह वोलौ ५५ हे नाथ ! जाते हम उत्पन्न भये हैं तवतेही हम दुष्ट हैं तापसी हमारो स्वभाव है वड़ो हमारो क्रोधहैं लोहन को खोदो आग्रहरूप जो स्वभाव है सो छूटे नहीं अथवा दूसरो अर्थ जा स्वभाव ते मिथ्या देह में आग्रह हैं सो नहीं छूटै है ५६ हे सम्पूर्ण के रचनवारे ! सतोगुण रजोगुण तमोगुण अनेक प्रकार सृजवे में आवै ऐसो जो यह विश्व तुमने रचो है तामें सब के न्यारे २ स्वभाव पराक्रम तेज योनि बीज आणयरूप हैं ५७ हे भगवन् ! ता निम्न में हम सर्प वनाये जन्मतेही हमारे वड़ो कोय भयो



माया करि मोहित होय रहे हैं हम से छोड़ी न जाय ऐसी अपनी मायाकूँ आपुही की कृपा ते छेद ५८ सम्पूर्ण के जाननवारे जगत् के ईश्वर तुमहो सो तुमहीं माया के छुड़ायने के कारणहो जो काम तुमने सौंयो तापे हम ऐसे दुष्ट रहे सो तुमहूँ से न चूके यह मानिके हमारे ऊपर कृपाकरो चाहो दण्डदेउ आप परमेश्वर सब करिवे योग्यहो ५९ पुत्री को वोभ उतारिवे के लिये मनुष्यरूप जिनने धरो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् या काली सर्प को वचन श्रवण करिके बोलत भये हे सर्प ! या दह में मति रही समुद्रको जावो देर मतिकरो अपनी जाति के सर्प बालक स्त्रीन कूँ संग लै समुद्र को जावो गरु मनुष्य यमुनाजल पीवंगे ६० जो मैने तोको आज्ञा करी याहि जो कोई मनुष्य ग्यान करै अथवा प्रातःकाल या चरित्रको पाठकरै वाको तो ते भय नहीं होय यह हमारी आज्ञा है भरे खेतिवे को ठिकानो यह दह है यामें जो मनुष्य स्नानकरै पितृ देवतान कूँ तर्पण करै व्रत करिके भरो पूजन करै वह पुरुष समस्त पापन ते

नमायां दुस्त्यजामोहिताःस्वयम् ५८ भवान्हिकारणंतत्र सर्वज्ञो जगदीश्वरः ॥ अनुग्रहं निग्रहं वा मन्यसे न द्विदेहिनः ५९ श्रीशुक उवाच ॥ इत्याकर्ण्य वचः प्राह भगवान् कार्ण्यमानुषः ॥ नात्र स्थेयं त्वया सर्प समुद्रं ग्राहिमा विरम् ॥ स्वज्ञात्पत्यदा राढ्यो गोमृभिर्भुज्यतां नदी ६० यष्टत संस्मरेन्मर्त्यस्तु भ्यं मदनुशासनम् ॥ कीर्त्तयन्तु भयोः सन्ध्योर्नियुष्मद्भयमाप्नुयात् ६१ योऽस्मिन्स्नात्वा मदाक्रीडे देवादीस्तर्पयेज्जलैः ॥ उपोष्य मां स्मरन्नेतत्सर्वपापैः प्रमुच्यते ६२ द्वीपं रमणकंहित्वा द्रुदेमेतमुपाश्रितः ॥ यद्भयात्समुपार्णस्त्वां नाद्यान्मत्पदलाञ्छिनम् ६३ श्रीशुक उवाच ॥ एवमुक्तो भगवता कृष्णेनाद्भुतकर्मणा ॥ तंपूजयामासमुदा नागपत्न्यश्च सादरम् ६४ दिव्याम्बरसङ्घाणिभिः परार्थैरपि मूर्पणैः ॥ दिव्यगन्धानुलैपैश्च महत्योत्पलमालया ६५ पूजयित्वा जगन्नाथं पूसाद्य गरुडध्वजम् ॥ ततः प्रीतोऽभ्यनुज्ञातः परिक्रम्या भिवन्द्यतम् ६६ सकलत्रमुह्युत्रोर्द्वीपमवधेर्जगामह ॥ तदैव साऽमृतजला यमुनानिर्विषाऽभवत् ॥ अनुग्रहाद्भगवतः क्रीडामानुपलूणिः ६७ इति श्रीमद्भगवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे कालियनिर्यापणं नाम षोडशोऽध्यायः १६ ॥ ॐ ॥

छूटि जाय है ६१ । ६२ गरुड के भय ते रमणकद्वीप कूँ छोड़िके या दह में आयके रह्यो है वह गरुड तो कूँ न स्थायगो तेरे माथे पै भरे चरणन को चिह्न है या कारण ते ६३ श्रुमीश्वर कहै है कि अद्भुत जिनके कर्म ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ने या प्रकार काली सर्प कूँ कही तब काली सर्प वहे आनन्द सँ श्रीकृष्णचन्द्र की पूजा करत भयो और कालीकी स्त्री है ते आनन्द ते पूजा करत भई ६४ दिव्य वस्त्र माला मणि और वड़े मोलके गहने दिव्य जिनमें सुगन्धि ऐसे केशर कस्तूरी चन्दन वड़े वड़े कमलनसं गरुड जिनकी ध्वजामें ऐसे जगत् के नाथ श्रीकृष्ण तिनकी पूजा करिके प्रसन्न करिके पीछे आज्ञा जाकूँ दई वह काली सर्प प्रसन्न होयके परिक्रमा करि प्रणाम करिके ६५ । ६६ अपनी स्त्री बालकन कूँ संग लैके समुद्र के द्वीपमें जात भयो क्रीड़ा करिवे के निमित्त मनुष्यरूप जिनने धरो ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की कृपा तें ताई समय यमुनाजी को त्रिप दूरि होयके अमृत सों जल होत भयो ६७ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिया दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे कालियनिर्यापणं नाम षोडशोऽध्यायः १६ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

( नागसहृद्देशेनागालग्रंथेनिरयापयत् ॥ वदन्स्वदुःखतःश्रान्तान्सुप्तस्तत्रदवादापात् ? सत्रद्वे अध्याय में कृष्णजी कालीनाग को यमुनाजी से निषाल देतेभये और अपने दुःख से श्रान्त सोतेहुए वन्धुओं को अग्नि से रक्षा करते भये ? ) अब राजा परीक्षित मरन करे हैं कि सर्पन के रहिये को स्थान रमणकद्वीप है ताकू काली सर्प कौन कारण ते छोड़त भयो और गरुड को अकेले कालीनेही अपराध करो अथवा और सर्पन ने भी यह कथा हमारे श्रोगे वर्णन कीजिये ? शुक्रदेवजी राजा से कहें हैं महाबाहु राजा परीक्षित ! गरुड नित्यप्रति रमणकद्वीप में सर्पन कूं भक्षण करिवे को आवै हो तब सम्पूर्ण सर्पनने आपुस में विचार करि मास मास को अपनी दुःख निवृत्त करिवे के लिये वृत्तकी जड़ में एकान्त गरुड की भेंट निश्चय करि दीनी २ सो अपनी अपनी वारी सूं गेट रहि आवैं और पर्व पर्व में महात्मा गरुड को भेंट देय हैं ३ विपके पराक्रम को जाके मद ऐसो वद को पुत्र काली सो गरुड को तुच्छ मानि के सर्पांत्र जो गरुड

राजोवाच ॥ नागालयंरणकं कस्मात्तत्याजकालियः ॥ कृतं किंवासुपर्णस्य तेनैकेनासमञ्जसम् १ श्रीशुकउवाच ॥ उपहार्यैः सर्पजनैर्मसिमासी हयोबलिः ॥ वानस्पत्योमहाबाहो नागानां प्राणनिरूपितः २ स्वस्वं भागं प्रयच्छन्ति नागाः पर्वणि पर्वणि ॥ गोपीथायाऽऽत्मनः सर्वमुपणयमहात्मने ३ विपत्तीर्थमदाविष्टः काद्रवेयस्तु कालियः ॥ कदर्थकृत्यगरुडं स्वयं ननु भजेवल्लिम् ४ तच्छ्रुत्वा कुपितो राजन् भगवान् भगवत्प्रियः ॥ विजिघांसुर्महावेगः कालियं समुपाद्रवत् ५ तगापतन्तं तरसा विपयुधः प्रत्यभयादुच्छिन्नैकमस्तकः ॥ दक्षिः सुपर्णव्यदशददयुधः करालजिह्वोच्छ्वसितोऽश्लोचनः ६ तं ताक्ष्यपुत्रः सानिरस्यमन्युमान् प्रवण्डवेगो मधुमूदनामजः ॥ पक्षेण सव्येन हिरण्यरोचिषा जघान कद्रुमुतमुग्रविक्रमः ७ सुपर्णपक्षाभिहतः कालियोऽनीव विह्वलः ॥ द्रुदं विवेश कालिन्यास्तदगम्यं दुःसासदम् ८ तत्रैकदा जलचरं गरुडो भक्ष्यमीदृशतम् ॥ निवारितः सौभरिणा प्रसह्य धिनोऽहरत् ९ मीनान्मुहुः खितान् दृष्ट्वा दीनान्मीनपतौहते ॥ दृपयासौभरिः प्राह तत्रत्यक्षेममाचरन् १० अत्र प्रविश्य गरुडो यदि मस्यान्सखादति ॥ सद्यः प्राणैर्विगुज्येत सत्य

को भोग है ताहि एक दिन आपही खात भयो ४ हे राजन् परीक्षित ! भगवान् के प्यारे ऐसे भगवान् गरुडजी हैं सो हमारो भोजन काली खाय गयो यह बात श्रवण करिके क्रो उकरि काली कूं मारिवे के लिये दौरिके काली के पास आवत भयो ५ निपही जाके शस्त्र ऐसो काली सर्प ऊंचे फणन कूं उठाय के दौरि के आयो जो गरुड है ताके सम्मुख जात भयो दन्त जाके आयुष भयानक जाकी जीय पलक जिन में लगें ऐसी भयानक जाकी आखें ऐसो काली दौतन ते गरुड को काटत भयो ६ अति है क्रोधजिनके जलही चले वढो पराक्रम जिनके ऐसे भगवान् के वाहन ताक्षि के पुत्र गरुडजी सर्प कूं अपने अग में ते छुड़ाय के सुवर्ण के सो जाको प्रकाश ऐसे वायें पंख सूं कद्रु के पुत्र काली कूं मारत भये ७ गरुड को पंख जाके लगे वढ काली सर्प व्याकुल होय के सौभरिच्छपीश्वरके शाप ते यहाँ आय भी न सके जल में पराक्रमहू न चले ऐसो यमुनाजी को दह है ८ ता दह में एक समय गरुड जल में डोले मछरीन को खान की इच्छा करिके तब सौभरिच्छपिने मने करो तथापि क्षुधा के मारे जोरावरी खाय गयो ९ जब मछरीन को राजा एक वडो मच्छ मरिगयो तब और मछरीन कूं दीन देखि के उनके वचिने के

लिये सौभरिच्छिपि यह कहत भये १० या दह में गरुड आयके जो मखरीन कू खाय तो तुरत गरुड के प्राण निकसि जायें यह बात में सत्य कहूं या प्रकार प्राणीमात्र की रक्षा में है ता-  
त्पर्य जिनको ऐसे सौभरिच्छिपि यह शापदेतभये ११ गरुड को सौभरिच्छिपि को शाप भयो यह बात कालीही जानै है और कोई नहीं जानै है इसलिये गरुड के भय ते काली वास करे  
हो सो श्रीकृष्णचन्द्र ने निकासि दिया १२ सुन्दर माला पहिरे केशरि लगाये वनन कूं पहिरे मणिन के जड़ाऊ सुवर्ण के गहने पहिरे श्रीकृष्णचन्द्र दह में ते वाहर निकसे तब उनको देखि  
के सपस्त ब्रजवासी ठाढ़े होय गये जैसे प्राण आये ते इन्द्रिय चैतन्य होय जायें हैं या प्रकार आनन्द में भरे ब्रजवासी प्रसन्न होय के छाती लगाय के भिन्नत भये १३ । १४ हे कुरंग में  
भये राजा परीक्षित ! यशोदाजी रोहिणीजी नन्दजी गोपी गोप समस्त श्रीकृष्णचन्द्र कूं आयें देखि के चेष्टा जिनकी वगद आई मनोरंज जिनके पूरे भये या प्रकार होतभये १५ श्रीकृष्णचन्द्र

मेतद्व्रवीम्यहम् ११ तं कालियः परं वेद नान्यः कश्चन लेलिहः ॥ अवात्सी इरुडा द्रुतिः कृष्णेन च विवासितः १२ कृष्णं हृदा क्षिप्त्वा नन्तं दिव्यस्रगन्धवास  
सम् ॥ महामणिगणाक्रीर्णं जाम्बूनदपरिष्कृतम् १३ उपलभ्योत्पिताः सर्वे लब्धप्राणा इवामयः ॥ प्रमोदनिभृतात्मानो गोपाः प्रीत्याऽभिरेभिरे १४ यशोदा  
रोहिणीनन्दो गोपयोगोपाश्च कौरव ॥ कृष्णं समेत्य लब्धेहा आसल्लब्धमनोरथाः १५ रामश्चान्युतमालिङ्ग्य जहासास्यानुभाववित् ॥ नगामावोद्युपव  
त्सालेभिरेपरमांसुदम् १६ नन्दं विप्राः समागत्य गुरवः सकलत्रकाः ॥ ऊचुस्ते कालियभस्तो दिष्ट्या मुकुस्तवाऽऽत्मजः १७ देहिदानं द्विजानीनां कृष्णनिमुक्ति  
हेतवे ॥ नन्दः प्रीतमनाराजश्चाभ्युत्तर्य तदाऽदिशत् १८ यशोदाऽपि महाभागा नष्टलब्धप्रजासती ॥ परिष्वज्याङ्कमारीप्य सुमोचाश्रुकलां मुहुः १९  
तागत्रितत्राजेन्द्रक्षुद्रभ्यां श्रमकर्षिताः ॥ ऊर्ध्वजौ कसोगावः कालिन्या उपकूलतः २० तदा शुचिवनोद्धृतो दावाग्निः सर्वतो ब्रजम् ॥ सुसंनिशीथश्चा  
वृत्य प्रदग्धुमुपचक्रमे २१ तत उत्थाय सम्भ्रान्ता दहयाना ब्रजौ क्रसः ॥ कृष्णं ययुस्ते शरणं मायामनुजमीश्वरम् २२ कृष्णकृष्णमहाभाग हे रामामिति वि

के प्रभान के जाननवारै बलदेवजी छाती ते लगाय के हंसत भये वृत्त गऊ बेल बछरान को देखि के वड़े प्रसन्न होत भये १६ स्त्रीन कूं संग लैके गुरु पुरोहित ब्राह्मण नन्दजी के पास आय के  
पहत भये कि काली ने इस्यो तुम्हारी पुन श्रीकृष्ण सो बोले अत्र नृपते वड़ो मंगल भयो १७ जामयय श्रीकृष्णचन्द्र नाग ते छूटि के आये ता समय की वधाई में नन्दरायजी प्रसन्न होय के  
हे राजन् परीक्षित ! गौ सुवर्ण दान करि ब्राह्मणन को देत भये १८ पतिव्रता श्रीयशोदा जी नष्ट भये ऐसे पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र हूं प्राप्त होय के छाती ते लगाय गोद में बैठार वेर वेर नेत्रनगें ते आँसू  
छोड़त यह १९ नष्ट भये ऐसे पुत्र कूं पाय के हे राजन् परीक्षित ! धूँय प्यास करिके पीड़ित ब्रजवासी गऊ सम्पूर्ण वा दिन राति कूं यमुनाजी के किनारे वास करत भये २० एक दिन अर्द्धरात्र समय  
गरमी की वस्तु में शुष्कवन में ब्रजवासी सब सोयगये तब चारों ओर ते घेर के दैत्य जराइये तौ उपाय करत भयो २१ ता पीछे सब ब्रजवासी जरन लगे तब छठिके हरवरान लगे माया करिके  
मनुष्य रूप धरो ऐसे समर्थ श्रीकृष्ण तौ शरण लेत भये २२ हे कृष्ण ! हे महाभाग ! हे राम ! हे वड़े पराक्रमी ! तेरे हम ब्रजवासीन को भयानक यह अग्नि जरानै है हे समर्थ ! सन्हारी

न जाय ऐसी यह कालूप अग्नि है ताम्बू हम तेरे भिन है तिनकूं वचाय काऊ और ते कामें भय नहीं छोड़े जायँ अग्नि में जरिने ते भी हम नहीं डरै हैं किन्तु तेरे चरगुन के वियोग ते डरै हैं २३ । २४ या प्रकार विश्व के ईश्वर अनन्तशक्तिन कूं धारण करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र अपने वज्रवासीन की व्याकुलता देखि के भयानक अग्नि कूं पान करत भये २५ इति श्रीधनवाभागनतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेर्वृद्धिदावाग्निमोचनपसदशोऽध्यायः १७ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

( अष्टादशैततोऽग्निमोचनगुणलक्षिते ॥ अघातयद्वलेनालं भलमालीलाधारिः १ कृत्वाद्युत्थं फणायैषु कालियस्य सकौलुकम् ॥ इलं पलम्बतुङ्गासमारोहयदरातिङ्गा २ अठारहवें अध्यायमें वसन्तऋतुके गुणों से लक्षित श्रीलक्ष्मणमै कृष्णजी बलदेवजी से लीलापूर्वक पलम्बासुरको नाश करा देते भये १ कौतुहलसेत कृष्णजी कालियनाग के फणोंके अग्रों में नाचकर बलदेवजी

क्रम ॥ एषघोरतमोवाह्निस्तावकान् असते हि नः २३ सुदुस्तरान्नः स्वाचूपाहि कालाग्नेः सुहृदः प्रभो ॥ नशक्नुमस्त्वच्चरणं संत्यक्तुमकुतो भयम् २४ इत्थं स्व

जनवैक्लवं निरीक्ष्य जगदीश्वरः ॥ तमग्निमपि चोन्नमन्तोऽनन्तशक्तिश्च २५ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धेर्वृद्धिदावाग्निमोचननामस

सदशोऽध्यायः १७ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथ कृष्णः परिबृत्तो ज्ञातिभिर्मृदितात्मभिः ॥ अनुगीयमानोन्यविशद्रजंगो कुलमण्डितम् १ व्रजे विक्रीडतो रवं गोपालच्छद्ममायया ॥

श्रीष्मो नाम नृसंभवन्नातिप्रेयाञ्चरी रिणाम् २ सच वृन्दावनगुणैर्वसन्तइव लक्षितः ॥ यत्राऽऽस्ते भगवान् साक्षाद्भामेण सह केशवः ३ यत्र निर्भरनिर्झादिनिष्ठ

तस्वनभिक्षिकम् ॥ शश्वत्तन्ध्रीं करजिपद्ममण्डलमण्डितम् ४ सरित्सरः प्रसवणोर्भिवायुना कल्लारकञ्जोत्पलेरणुहारिण ॥ न विद्यते यत्र वनौकसां द्वौ

निदाघवह्न्यर्कमवोऽतिशादले ५ अगाधतोये ह्रदिनीतौर्भिर्भद्रैः तृणीभ्याः पुलिनैः समन्ततः ॥ न यत्र चण्डांशुकरा विपोल्वणा भुवोरसंशोऽलितश्च गृह्णे ६

को पलम्बासुर के ऊंचे कापेर चढ़ादेते भये २ ) श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित ते कहै हैं कि हे राजन् ! प्रसन्न है मन जिनको ऐसे जाति के व्रजवासीन कूं संग लैके आगि पिये के पीछे व्रजवासी जिनके चरित्रन कू गावत आवै ऐसे श्रीकृष्ण गऊनके समूह सूं शोभायमान जो व्रजहै तामें आवतभये १ गौवन को चरायवे कौ है मिय जायँ ऐसी याया करिके या मकार वनमें खेलै जो श्री-कृष्णचन्द्र नलदेव हैं गरमीऋतु आवत भई यह गरमी की ऋतु देहधारीन कूं बहुत प्यारी नहीं लागै है २ गरमी की ऋतु वृन्दावन के गुणन सूं वसन्तऋतु की तुल्य दिख्य है देय है या वृन्दावन में साक्षात् केशव भगवान् बलदेवजी कू सगलैके रहै हैं ३ जा वृन्दावन में भरना भरै है तिनके शब्द सूं भर्गुर जे बोले हैं तिनकी बोली नहीं सुनाई देय है सदा भरता जो भर्ग है तिनके ब्रीटान सों हरे जो वृक्ष हैं तिनके समूहन सों शोभायमान वृन्दावन होय रह्यो है ४ हरी हरी घास जायँ होय रही है वा वृन्दावन में कल्लार कञ्ज उत्पल यह जो कमलकी जाति हैं तिनकी गन्धयुक्त नदी सरोवर भरनान सूं स्पर्श करिके जो पवन चलै है तामें वृन्दावनवासीन कूं गरमी की ऋतु में अग्निकी तथा सूर्यकी गरमाई नहीं सतावै है ५ वडों जिनमें जल ऐसे सरोवरन ते

किनारे में लगिके जो लहरें उठे हैं तिनमें टापूनकी तथा किनारेनभी पृथ्वी में सजलताई आवे है वा पृथ्वी की सजलताई कूं और हरियाली कूं विपकी तुल्य भयानक सूर्यकी विरहो नहीं सुन्याये है ६ पुण्य जहां फूलि रहे अनेक जातिके जीव जन्तु पक्षी जिनमें बोलें और जहा गावें कोकिला सारस पक्षी जायें बोलें ऐमो शोभायमान दृन्दावन है तामें श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र बलदेवजी कूं संग लैके और गोप गजन कूं भंगलैके बांसुरी वजायके खेलिवे कूं जातभये ७। ८ पचा मोरपुच्छ फूलन के गुन्दा माला खरिया गेरु मनसिलमूं शृंगार करिके राम कृष्णमूं आदिलैके व्रजवासी कभजें नाचत भये कभजें गावत भये कभजें कुरती लड़तभये ९ कृष्णचन्द्र जब नृत्य करै हैं तब कोई ग्वालवाल गावतभये और वासुरी हथेरी सींगी इन वाजेनकूं वजावत भये कोई भले नाचे या प्रकार बढ़ाई करतभये १० हे राजन् परीक्षित्! गोपरूप में छिपे देवता और गोपालरूप जो श्रीकृष्णचन्द्र बलदेव तिनकी बढ़ाई करै है ११ मृडनो जिनको भयो

वनंकुसुमितं श्रीमन्नदचित्रमृगद्विजम् ॥ गायन्मयूरध्रमं कूज्रत्कोकिलसारसम् ७ क्रीडिष्यमाणस्तत्कृष्णो भगवान् बलसंयुतः ॥ वेणुविरण्यनगोपैर्गो-  
धनैः संवृतोऽविशत् ८ प्रवालवर्हस्तवकस्रग्धातुकृतभूषणाः ॥ रामकृष्णादयोगोपाननृत्युधुर्जगुः ९ कृष्णस्य नृत्यतः केचिजगुः केचिदवादयन् ॥  
वेणुपाणितलैः शृङ्गैः प्रशशंमुरथापरे १० गोपजातिप्रतिच्छन्ना देवा गोपालरूपिणः ॥ इडिरेकृष्णरामौ च नटा इवनटं नृप ११ भ्रामणैर्लङ्घनैः क्षेपैरास्फोटन  
विक्रपणैः ॥ विक्रीडतुर्निगुह्येन काकपक्षधरैकचित् १२ कचिन्नृत्यसुचान्येषु गायकौवादकौस्वयम् ॥ शशंसर्तुमहाराज साधुसाधिविनादिनौ १३ क  
चिद्विल्वैः कचित्कुम्भैः कचामलकमुष्टिभिः ॥ अस्पृश्यनेत्रवन्ध्याद्यैः कचिन्मृगखगेहया १४ कचिच्चर्दुग्धप्लावैर्विविधैरुपहासकैः ॥ कदाचित्स्पन्दोलिकया क  
हिचिन्नृपवेषया १५ एवंतौ लोकसिद्धाभिः क्रीडाभिश्चरतुर्वने ॥ नद्यद्विद्रोणिकुञ्जेषु काननेषु सरस्सुच १६ पशूंश्चारयतोगोपैस्तदनेरामकृष्णयोः ॥ गोप  
रूपी प्रलम्बोऽगादसुरस्तज्जिह्वीर्षया १७ तं विद्वानपि दाशार्हो भगवान्सर्वदर्शनः ॥ अन्वमोदततस्त्वं वधंतस्य विचिन्तयन् १८ तत्रोपाहूय गोपालान्

नहीं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी दोनों भयंका कभजें छाई मांई खेलै हैं कभजें कूदे हैं कभजें धका धकी करै हैं कभजें लैचाखैची करै हैं या प्रकार क्रीडा करिके खेलत भये १२ हे राजन् परीक्षित्! कभजें एक ग्वालवाल नाचै हैं तब श्रीकृष्णचन्द्र बलदेव दोनों भयंका आप गावें हैं और वाजे वजायके भले नाचे भले नाचे या प्रकार बढ़ाई करतभये १३ कभजें बेलके फलन कूं फेंके हैं कभजें कुम्भ दृन्तके फलन कूं फेंके हैं कभजें छुआ छुई कभजें आखिभिचौनी आदिलैके खेल खेलत भये कभजें एक पशुपक्षी वनिके खेलै हैं १४ कभजें एक भेड़काकी तुल्य फुदकें हैं कभजें टेढ़ी पाग करिके भाँड़न कीसी नकल करै हैं कभजें दृढ में झुना डारि के झुले हैं कभजें श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी राजा बने हैं ग्वालवालन को सिपाही बनावें हैं ग्वालिन दही लैके आपे हैं तिनमूं करलेय है १५ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी दोनों भयंका भंसार में प्रसिद्ध जो खेलै हैं तिनकूं करिके नदीनमें गोपार्जन पर्वतकी गुफान में कुंजन में वनन में सरोवरन में विचरत भये १६ ता दृन्दावन में गोपनकूं संग लैके गजनकूं चरावें जे श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी हैं तिनको लैके के कारण प्रलम्बासुर गोपगोख्य

धरिके आनतभयो १७ दाशार्द्वश में प्रसटभये समस्त वातन के जानननारे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् मनमें जाने हैं कि यह असुर आयो याहि मारै तथापि वाके न जानिवे के लिये चड्ढाई करत भये भलीयई भलीयई मिन तू अथ जल्दरी आयगयो १८ खेलके जाननवारे श्रीकृष्णचन्द्र ता समय ग्वालचालन कूं बुलायके कहतभये हे ग्वालचालो ! हम चरावरके दोनों मिलिके खेलखेलैगे १९ ता समय ग्वाल हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजी दोनोंन कों मुख्य वनावतभये कोई ग्वाल श्रीकृष्णचन्द्रकी ओर होतभये और कोई ग्वाल वलदेवजी की ओर होतभये पीठियै चडिगे और चड्ढायके ले चलिगो यह जिनके स्वरूप ऐसे अनेकप्रकार के खेल खेलतभये या खेलमें जे ग्वाल खेलतभये या खेलमें जे वलदेवजी की ओर होतभये पीठियै चडै हैं और जे हारे ते चडाय के ले चलै हैं चडत चडावत गायनमूं चरावा श्रीकृष्ण जिनमें मुख्य वे ग्वाल भाहीर वनमें जातभये २० । २१ । २२ हे राजन् परीक्षित ! वलदेवजीकी ओरके श्रीदामा वृषभकूं आदिलैके गालकजा समय खेलमें जीते तब श्रीकृष्णचन्द्रकूं आदिलैके

कृष्णः प्राह विहारवित् ॥ हे गोपाविहरिष्यामोदन्दीभूयथायथम् १६ तत्र चक्रुः परिवृढा गोपारामजनार्दनौ ॥ कृष्णसङ्घट्टिनः त्रिदासन् रामस्य चापरे २०  
आचेरुर्विविधाः क्रीडावाह्यवाहकलक्षणाः ॥ यत्रारोहन्ति जेतारोहन्ति च पराजिताः २१ वहन्तो वाह्यगानाश्च चारयन्तश्च गोधनम् ॥ भारडीरं कं नाम वटं जग्मुः  
कृष्णपुरोगमाः २२ रामसङ्घट्टिनोयहि श्रीदामवृषभादयः ॥ क्रीडायां जयिनस्नांस्तानूः कृष्णादयो नृप २३ उवाह कृष्णो भगवाञ्छ्रीदामानं पराजितः ॥  
वृषभं भद्रसेनस्तु प्रलम्भो रोहिणीमुतम् २४ अविपह्यं मन्यमानः कृष्णं दानवपुङ्गवः ॥ वहन्तु तं रंभागादवरोहणतः परम् २५ तमुद्रहन् धृगिणो भेन्द्रगौरवं  
महासुरो विगतस्यो निजं वपुः ॥ स आस्थितः पुरटपरिच्छदो वभौ तडिदृष्टमानु दुपतिवाडिवाभ्युदः २६ निरीक्षयत द्रुपलमम्बरो चारु दीप्तदृग्भृकुटितटो ग्रहद्वरु  
म् ॥ ज्वलच्छिखं कटककिरीटकुण्डलत्रिपाऽद्भुतं हलधरिपदत्रयसत् २७ अथागतस्मृतिरभयोरिषु मन्वलो विहाय साऽर्थमिव हस्तमात्पानः ॥ रुपाऽह न च्छिगमिह

जे बालक ते पीठियै चडायके चलतभये २३ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जब हारे तब श्रीदामा गोपकूं ऊपर अपने चडायके चलतभये भद्रसेन ग्वाल वृषभकूं चडावतभयो प्रलम्भासुर रोहिणीपूत्र वलदेवजी कूं चडावत भयो २४ दानवनमें श्रेष्ठ प्रलम्भासुर है सो श्रीकृष्णचन्द्र कूं जोरावर मानिके वलदेवजीकूं पीठियै चडाय के शीघ्रता ते दौरिके उतरिये को करारहो तदा ते आगे जातभयो २५ महाअसुर पर्वत के समान भारी वलदेवजी तिनको पीठ पै चडायके भज्यो तासूं वल जाको यकिमयो तब अपने असुररूप को धरिके सुवर्णके गहने पहिरे सुन्दर लगतभयो चन्द्रमासाहित त्रैसे भेग सुन्दर लगै है इहा चन्द्रमा समान वलदेवजी हैं और भेघ समान असुर हैं विजुरी सदृश वाके गहने हैं २६ आकाशपट्यन्त प्रकाशमान ऊंचे जाके तेव भौंहन सूं लगी भयानक जाकी दाढ़ है लाल ताअवर्ण जाके वार हैं बड़ा कुण्डल मुकुट की शोभा है तासूं अद्भुत असुरको रूप देखिके हलके धारण करनवारे वलदेवजी यह कैसो गोप ऐसे कछु मनमें डरपतभये २७ पहिले तो किंचित् भय मानो ता पीछे सुधि आय गई कि यह तो असुर है भय जिनको दूरि होयगयो ऐसे वलदेवजी अपने गोपन ते छुड़ाय के आपकूं ले जाय जोरावरी असुर है ताके मूडमें कोन करिके जोरिने मुक्ता मा





जिनको लगी दूँदिवे को खेड जिनको भयो वे ब्रजवासी उलटेही बगदत भये ५ भेय फीसी जाकी गर्जन ऐसी वाणी सुं भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने बुलाई जे गऊँह ते अपने २ नामकूं श्रवण करिके हर्षित होयके ररुहात भई यामें यह जतावैं हे तुम्हारी बोल्ली तो सुनी है परन्तु मार्ग में अग्नि जो लागि रही है तासूं आय नहीं सके हैं ६ ता पीछे वनमें भूम है ब्रजा जाको ऐसो वक्रो अग्नि अ नायास वनवासी जीवन कूं जरायये के लिये लागत भयो और पवन जो चली तासों भक्त गयो ७ सुलगती जे लकड़िया हैं तिनसूं दहनकूं प्राणीन कूं जरावे है गोप गऊ चारों ओर ते लगी जो अग्निहैं ताकूं देखिके भयभीत होय बलदेवजी सहित जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनकी शरण आयके बोलतभये जैसे गृह्यके भयते व्याकुल होयके प्राणी हरिको शरण लेइहैं ८ हे कृष्ण २ ! बड़े पराक्रमी नहीं प्रमाण करिये में आवै है पराक्रम जाको ऐसे हे राम ! वनकी अग्नि हमको जरावै है तुम्हारी शरण आवै हैं हमारी रक्षाकरो ९ हे कृष्ण ! हे समस्त वर्मन के जाननवारे !

नौकसाम् ॥ समीरितः सारथिनोऽस्वणोऽसु कैर्विलेलिहानः स्थिरजङ्गमानम् महान् ७ तमापतन्तं परितो दवाग्निं गोपाश्च गावः प्रसमीक्ष्य भीताः ॥ ऊचुश्चक्रुः  
ष्णंसर्वलंप्रपन्ना यथाहर्मित्युभयाद्विताजनाः ८ कृष्णकृष्णमहावीर्यं हे रामामितविक्रम ॥ दावाग्निना दह्यमानान् प्रपन्नांश्चातुर्महं ९ नूनं त्वद्वान्धव ॥  
कृष्ण न चार्हन्त्यवसीदितुम् ॥ वयं हि सर्वधर्मज्ञ त्वन्नाथास्तत्परायणाः १० श्रीशुक्र उवाच ॥ वचोनिशम्य कृपणं बन्धूनां भगवान् बहुरिः ॥ निमीलयत मा  
भेष्ट लोचनानीत्यभाषत ११ तथेति भीलितोऽक्षेपु भगवानग्निमुत्त्वणम् ॥ पीत्वा मुखेन तान् कृच्छ्राद्योगाधीशो व्यमोचयत् १२ ततश्च तेऽक्षीरयुग्मीत्य पु  
नर्भाण्डीरमापिताः ॥ निशाम्य विस्मिता आसन्नात्मानं गान्श्च मोचिताः १३ कृष्णस्य योगवीर्येन तद्योगमायानुभावितम् ॥ दावाग्नेरारमनः क्षेमं वीक्ष्य ते मे  
निरेऽपरम् १४ गांस्त्रिवर्त्यसायाङ्गे सह रागो जनाहर्दनः ॥ वेयुर्विरण्य न गौष्ठमगाहोऽपैरभिष्टुतः १५ गोपीनां परमानन्द आसीद्गोविन्ददर्शने ॥ क्षण्युग  
शतमिव यासां येन विनाऽभवत् १६ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वोद्धे दावाग्निपानं नामैकोनविंशोऽध्यायः १६ ॥

हम ते रे मित्र कष्ट पायवे योग्य नहीं हैं निश्चय करिके तुमहीं हमारे नाथहो तुम्हारी हमको आसरो है १० अब श्रीशुक्रदेवजी कहै हैं सरके दुःखनके हरनवारे भगवान् मित्रनको दीनत्रचन सुनिके कहतभये भय मतिकरो नेन अपने अपने मूँदिलेउ ११ ता प्रकार सब गोपनके नेत्र मुँदवायके योगके ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र भयानक अग्नि कूं मुखते पीके मित्रनकूं कष्ट ते हुआवत भये १२ ता पीछे वे गोप नेन खोलैं तो फिर भाहीर वनेग लायके वैठारदिये अपनेकूं और गौवन कूं अग्नि ते छूटे देखिके विस्मित होतभये १३ योगमायाते बनायो ऐसो अग्नि ते छूटिवो रूप गां श्रीकृष्णचन्द्रको प्रभावहैं ताकूं देखिके कृष्ण हमसे मन्युय नहीं हैं देवता हैं ऐमे सब गोप घान्तभये १४ बलदेवजी सहित श्रीकृष्णचन्द्र सन्ध्यासमय वन ते गौपनको लेके वासुरी ब्रजावन गोप जिनकी स्तुतिकरै ऐसे ब्रजमें आवतभये १५ कृष्णचन्द्र के दर्शनकरै ते गोपीनको परमआनन्द होतभयो दर्शन विना एकक्षण सौयुगकी वारावर वीतत भयो १६ इति श्रीमद्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे पूर्वोद्धे दावाग्निपानं नामैकोनविंशोऽध्यायः १६ ॥

(विशेषप्रादृशश्चोभावर्णनेनवनोचिताः ॥ प्रादृशक्रीडानिरूप्यन्ते गोपरागण्युजोदरेः १ हेयोपादेयमानेनप्रादृशश्चतुश्रियोः ॥ वर्णनेत्त्वद्वैतेश्वर्यकृष्णलीलाविवक्षया २ वीसयं अध्यायमें वर्षाऋतु और शरदऋतुकी शोभा वर्णन से गोप और वलदेवजीसंयुक्त कृष्णगीकी वनके उचित वर्षाकी क्रीडा निरूपणहै १ त्यागने और ग्रहण करने के योग्य मानसे वर्षा और शरदऋतु का शोभा वर्णन में कृष्णलीला कहने की इच्छा से अद्भुत ऐश्वर्य वर्णित है २) अग्नि ते अपने को लुहायो यह जो श्रीकृष्ण वलराम को अद्भुतकर्म है ताय गोप स्त्रीन ते कहत भये प्रलम्बासुरको वध ताय भी कहत भये १ दृढदृढ गोप गोपी यह बात सुनि के विस्मय मनि के दज में आये जो श्रीकृष्ण वलदेव हैं तिन्हें मुख्य देवता मानत भये २ गरमी की ऋतु के पीछे वर्षाऋतु आवत भई ता वर्षा ऋतु में कितनेहू जीव उत्पन्न होय हैं और कितनेहू जीव नष्ट होय हैं और कितनेहू जीवन की जीविका होय है सूर्य चन्द्रमा के भण्डल प्रकाशित होय हैं आकाश में क्षोभ होय है ऐसी वर्षा ऋतु मास भई ३ विजुली जिनमें चमक के गर्जन जिन में होय ऐसे सघन नीले बादर हैं सूर्य चन्द्रमा तारागणन को प्रकाश जामें ढकि रहयो ऐसो आकाश वर्षाऋतु में सुन्दर लगत भयो

श्रीशुकउवाच ॥ तयोस्तदद्भुतं कर्म दावाग्नेर्मोक्षमात्मनः ॥ गोपाः स्त्रीभ्यः समाचख्युः प्रलम्बवधमेव च १ गोपवृद्धाश्च गोप्यश्च तदुपाकर्यविस्मिताः ॥ मेनिरेदवप्रवरौ कृष्णरामौ ब्रजंगतौ २ ततः प्रावर्त्तत प्रादृश सर्वसत्त्वसमुद्रवा ॥ विद्योतमानपरि धिर्विस्फूर्जितनभस्तला ३ सान्द्रनीलाम्बुदैव्योमसविद्यु तस्तनयिलुभिः ॥ अस्पष्टज्योतिराच्छन्नं ब्रह्मैवसगुणंबभौ ४ अष्टौमासानिपीतं यद्धृम्याश्चोदमयंवसु ॥ स्वर्गोभिर्मोक्तुमारंभे पर्जन्यः कालआगते ५ तडित्वन्तो महाभेघाश्च गडश्च वसनवेपिताः ॥ प्रीणनं जीवनं ह्यस्य मुमुचुः करुणा इव ६ तपः कृशादेवमीढा आसीद्वर्षीयसीमही ॥ यथैव काम्यतपस्तनुः सम्प्राप्य तत्फलम् ७ निशामुखे पुत्रयोः तास्तमसाभान्तिनग्रहाः ॥ यथापापेन पात्रगुहा नहि वेदाः कलौ युगे ८ श्रुत्वा पर्जन्यनिनन्दं मण्डूकाव्यमृज

जैसे सतोगुण रजोगुण तमोगुण स्रुं दबयो जीव ऐसे सुन्दर लगै हैं विजुली गर्जन बादरन कू सतोगुण रजोगुण तमोगुण की उपमा है यह त्यागिबे योग्य दृष्टान्त है जीव को ऐसी नहीं चाहिये जो गुणन करि आवृत होई जाय ४ आठ महीनापर्यन्त सूर्य ने अपनी किरणन करि पृथ्वी को जल रूप द्रव्य सोको है ताय वर्षाऋतु आई तव वर्षायिबे को प्रारम्भ करत भयो या श्लोक में राजा की उपमा जताई जो अपनी मजा स्रुं सुकाल में कर लेई है और अकाल में उनको अन्न दैके पालन करै यह ग्रहण करिबे योग्य दृष्टान्त है राजा कूं ऐसीही उचित है ५ बड़ी पवन ने चलायमान किये विजुली जिनमें चमके ऐसे बड़े भेघ या विश्वको पुष्ट करनेवारे जीवन जल को वर्षावतभये जैसे करुणायुक्त पुरुष दुःस्त्रीन को देखि के बोले ऊपर कृपा करिके ताके सुख के लिये अपने प्राणतक देई हैं तैसे बड़े भेघ अपनी विजुली रूप नेत्रन तें सन्तप्त विश्वको देखिके पवनस्रुं चलायमान होय के जल कूं वर्षावै हैं यह ग्राह्य दृष्टान्त है महान् पुरुषन को ऐसीही चाहिये ६ गरमी की धूप सों सूख गई इन्द्र ने वर्षा करि सींची ऐसी पृथ्वी वर्षाऋतु में फूलत भई यह वर्षाऋतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे कोई पुरुष पुत्र की अथवा वनकी इच्छा करिके तप करै तव वाको देह सूख जाय है तप को फल मिले पीछे फिरि देख जैसे पुष्ट होय है यह त्याग्य दृष्टान्त है पुरुष को ऐसी उचित नहीं है जो सकाम तप करै ७ वर्षाऋतु में सन्ध्यासमय पटबीजना

प्रकाश करै हैं तारागण नहीं प्रकाश करै हैं यामें दृष्टान्त देखै हैं जैसे कलियुग में पाप मू पाखण्ड मार्ग चले है वेदमार्ग अस्त होय है यह त्याज्य दृष्टान्त है पुरुषन कं ऐसो उचित नहीं है जो पाखण्डमार्ग में प्रवृत्त होय ८ वर्षाश्रुतु में मेघ की गर्जन सुनि के मेघक बोलत भये यामें दृष्टान्त है जैसे विद्यार्थी पहिले जुप बैठ रहै हैं गुरु जब सन्ध्यापासन कर चुकै हैं तब पाठ लैके पढ़ै हैं यह ग्राह्य दृष्टान्त है विद्यार्थी को यही उचित है गुरु जब बुलावै तब पाठ लेय ९ जल शीघ्र सूखजाय ऐसी क्षुद्रनदी जब वर्षाश्रुतुमें जल बरै है तब मर्याद छोड़ २ के उपड २ के वहत भई—जैसे इन्द्रियन के दृष्टते पुरुष के देह द्रव्य सम्पत्ति खेडे मार्गमें लगै हैं यह त्याज्य दृष्टान्त है ऐसो न चाहिये जो कुमार्ग में लगावै १० वर्षाश्रुतु में हरे २ घास जा में उत्पन्न भये लाल लाल नीरवट्टी डोलै छलौना फूलि आयै ऐसी पृथ्वी शोभित होत भई यह तो वर्षाश्रुतु वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे राजानकी सेना डेरा तम्बूनसँ हरे लाख बनाती बिबोनान सँ सुन्दरलगै हैं यह ग्राह्य दृष्टान्त है राजान कूं ऐसोही चाहिये जो बनाती बिबोना विखावै फटे दूटे न राखै ११ वर्षाश्रुतु में हरे २ अन्न जो उपजै है तिनकूं देखिके खेतवारन कूं आनन्द होतहै देवकी दातकूं नहीं

चरिगरः ॥ नृणां शयानाः प्राग्यद्ब्रह्माणानियमात्यये ६ आसन्नृतपथवाहिन्यः क्षुद्रनदोऽनुशुण्यतीः ॥ पुंसो यथा स्वतन्त्रस्य देहद्विणसम्पदः १० हरिता हरिभिः शब्दैरिन्द्रगोपैश्च लोहिता ॥ उच्छिलीन्ध्रकृतच्छाया नृणां श्रीरिव भूभूत ११ क्षेत्राणिसस्यसम्पद्भिः कर्पकाणामुदन्ददुः ॥ धनिनामुपतापश्च देवा धीनमजानताम् १२ जलस्थलौकराः सर्वे नववारिनिपेयया ॥ अविभ्रदुचिररूपं यथा हरिनिपेयया १३ सरिद्धिः संगतः सिन्धुश्चुक्षुभेश्वसनोर्मिमान् ॥ अपक्व योगिनश्चित्तं कामाङ्गणयुग्मया १४ गिरयो वर्षधाराभिर्हन्यमानानिविषयः ॥ अभिभूयमानान्यसनैर्यथाऽधोक्षजचेतसः १५ मार्गाविभूतुः सन्दिग्धास्तृणैश्छन्नाह्य संस्कृताः ॥ नाभ्यस्यमानाः श्रुतयोद्धिजैः कालहता इव १६ लोकवन्धुपुमेधेषु विद्युतश्चलसौहृदाः ॥ स्थैर्यनचक्रुः कामिन्यः पुरुषेषु गृणिष्विव १७ धनु

जानिकर जिन मनुष्यन ने अन्न की भरती करी तिनकूं दुःख होतमयो—इय तो यह जानीही कि एक के दो करेगे पर यहां तो आधी जमा रहिगई यह त्याज्य दृष्टान्त है ऐसो व्यवहार करनो न चाहिये जामें सबको बुरो विचारको आवै १२ समस्त प्राणीन के वर्षाश्रुतुके नये जलको सेवन है तासूं सुन्दर रूप होत भये यह तो वर्षाश्रुतुको वर्णन है जैसे हरि भगवान् को सेवन करे ते सुन्दर रूप होय जायहै यह ग्राह्य दृष्टान्त है मनुष्य को ऐसोही उचित है १३ वर्षाश्रुतु में नदी जो आयके मिर्की पवन चले तासूं लहर जामें उठै ऐसे समुद्रको जल चलायमान होत भयो यह तो वर्षाश्रुतु को वर्णन है यामें दृष्टान्तहै जैसे विषयी मनुष्यको चित्त विषयन में चलायमान होयहै यह त्याज्य दृष्टान्त है योगीन को ऐसो न चाहिये जो विषयनते चलायमान होय १४ वर्षाश्रुतु में पर्वतन के ऊपर मेघ वर्षे तासूं यतिश्चित्तहू उनको खेद नहीं होयहै गुरु के उनकी शिला स्वच्छ होयजाय है यह तो वर्षाश्रुतु को वर्णन यामें दृष्टान्तहै जैसे जिन पुरुषन के चित्त भगवान्में लगै हैं उनके ऊपर कैसोहू कष्ट आने अर्थात् पुत्र मरिजाय धननष्ट होय जाय यामें कष्ट नहीं मानै है यह ग्राह्य दृष्टान्तहै दुःख में मनुष्य व्याकुल न होयजाय १५ वर्षाश्रुतु में दृष्टान्त है जैसे जिन पुरुषन के चित्त भगवान्में लगै हैं उनके ऊपर होयगये अर्थात् या आपको कौन मार्ग है यह जानिये में नहीं आवै यह वर्षाश्रुतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे ब्राह्मण एक बेर वेद पढ़िके पोथी बाँधिके धरिदेई हैं फिर बहुत दिन में खोलिके

देखें तब उनको सन्देह होय है या श्रुतिको अर्थ कैसे है यह त्याज्य दृष्टान्त है ब्राह्मणन को ऐसी उचित नहीं है जो बहुत दिनमें पोथी खोलै किन्तु खोलिके देखो करे १६ लोकनके दिनकामी येष्ट है तिनमें चलायमान मिजुरी स्थिरता न करत भई कथञ्च काह वादरमें जाय चमके है कथञ्च काह वादरमें जाय चमके है जैसे विवेकी पुरुषनमें व्यभिचारिणी स्त्री स्थिर नहीं रहै यह ग्राह्य दृष्टान्त है जो व्यभिचारिणी स्त्रीन को विस्वास न करे १७ वर्षीकृतुमें गर्जनको शब्द जागें भयो करे हेसे आकाशमें प्रत्यंचा रोदा विना इन्द्रको अनुष्णोभाको प्राप्त होतभयो यह वर्षीकृतुको वर्णनहै यामें दृष्टान्त है गुणनको उनो जो संसार तामें निर्गुण पुरुष जैसे सुन्दर लागै है १८ वर्षीकृतुमें अपनी चादनी स्रं प्रकाशमान जे वादरहैं तिनसू आद्यन होयके चन्द्रमा सुन्दर नहीं लागै है यह तो वर्षीकृतुको वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे भैं पण्डितदंतादाह सर्ववहं शूरवीरहं ऐसी जो अभिमान मानै है तासूं पुरुष सुन्दर नहीं लागै है यह त्याज्य दृष्टान्त है पुरुषको ऐसी उचित नहीं है १९ वर्षीकृतुमें मेघनके आयवेको जो आनन्द है तामूं हर्षित होयके मोर शब्द करतभये यह तो वर्षीकृतुको वर्णनहै यामें दृष्टान्त है घरनमें खेद जिनकां रह्योआवे याही

वियतिमाहेन्द्रनिर्गुणश्चगुणिन्य मात् ॥ व्यक्तेगुणव्यतिकरेऽगुणवान्पुरुषोयथा १८ नरराजोऽनुपशब्दः स्वज्योत्स्नाराजितैर्धनैः ॥ अहंमत्याभासितयास्व  
भासापुरुषोयथा १९ मेघागोत्सवाहुष्टाः प्रत्यनन्दञ्छिखण्डिनः ॥ गृहेषुतमानिर्विषा यथाऽव्युतजनगमे २० पीत्वाऽपःपादपाःपद्मिरासन्नानात्मभूते  
यः ॥ ग्राक्क्षामास्नपसाथान्तायथाकामानुमेवया २१ सरस्वशान्तरोधस्सुन्यपुङ्गापिसारसाः ॥ गृहेष्वशान्तकृत्येषु ग्राम्याडवहुराशयाः २२ जलौघिर्नि  
रभिद्यन्त सेतवोवर्षतीश्वरे ॥ पाखण्डिनामसद्बादेवदमार्गाः कलौयथा २३ व्यमुञ्चन्वायुभिर्नुन्नाधनेभ्योऽथासुतघनाः ॥ यथाऽऽशिपोविरपतयः कलिका  
लेद्विजेरिताः २४ एवंवनन्तद्वर्षिष्ठं पक्षखर्जूरजम्बुमत् ॥ गोगोपालैर्धृतोरन्तुंसवलः प्राविशद्धरिः २५ धेनवोमन्दराभिन्त्य ऊधोभारेणभूयसा ॥ ययुर्भगव

ते वैराग्यवान् को चित्त ऐसे पुरुष साधुन के आये ते हर्षित होय है यह ग्राह्य दृष्टान्तहै दृष्टस्थीनकूं यही चाहिये जो अपने यहां साधु सज्जन आवें तो यह न कहै कि हमहीं भूखे मरे हैं याकूं कहां ते  
जावें २० वर्षीकृतु में वृत्त अपनी जड़नसूं जलपीके हरे हरे लाल लाल पत्तान करि शोभित भये यह वर्षीकृतुको वर्णन है यामें दृष्टान्त है तपके करतें मनुष्यन के मथम देह दुर्बल होय जाईजं जव  
फिरि पुष्टिकारक भोजन मिले ते पुष्ट होयके लाल होयजाय हैं यह त्याज्य दृष्टान्त है मनुष्य स्वाने पीने के किये तप न करे २१ वर्षीकृतु में काटे कीच जिनके किनारे पर रहे आवें ऐसे सरोवरनमें  
चक्रवा चक्री वास करतभये यह वर्षीकृतुको वर्णन है यामें दृष्टान्त है काहसमय काम निवैनहीं ऐसे घरन में दुष्ट जिनके चित्त ऐसे विषयीपुरुष वास करे है यह त्याज्य दृष्टान्त है मनुष्यनको  
ऐसी न चाहिये जो सर्वदा घरमें शिर दिखे रहै कछु भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को भी भजन करेजायें जागें उनको कल्याण होय २२ वर्षीकृतु में इन्द्र वर्षे तप खेतकी मयीदा दृष्टि जातभई यइ तो वर्षी-  
कृतुको वर्णनहै यामें दृष्टान्त है पाखण्डीन के शब्द सुनिके जैसे वेदमार्ग दूर होयजाय है यह त्याज्य दृष्टान्त है मनुष्य पाखण्डीन के शब्द सुनिके वेदमार्ग को त्याग न करे २३ वर्षीकृतु में चादर  
पवन सूं चलायमान होयके प्राणीन कां अमृत जल वर्षावत भये यह वर्षीकृतुको वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे समय समयमें राजा पुरोहित के कहे ते दान पुण्य करे है यह ग्राह्य दृष्टान्त है पुरो-

हितन कूं ऐसीही चाहिये जो कहिके राजाते दानकराय सरदीनन कूं दिवावें २४ जम्बूफलन की तुल्य खदूर जामें पकी ऐसे ऋषु दृन्दावन में श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी कूं रंगलैके और गऊ गोपन कूं रंगलैके रमण करिवे को जातभये २५ वडेवड़े जो ऐननके वोफहैं तिनमूं हौलैहौले चलै ऐसी गजनकू श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् भीति करिके नाग लैके दुलाई ता स्तनन में ते दूध जिनके टपके ऐसी गऊ दौरिदौरिके आवतिभई २६ वननकी रहनवारी जो भीलिनी हैं तिनकूं श्रीकृष्णचन्द्र प्रसन्न देखतभये मकरंद जगमें सुचाय ऐसे दृन्दनकी लतानकूं और गोचर्द्धनपर्वत में ते भगना भरे हैं तिनकूं देखतभये और भरनान के जलके शब्दको सुनतभये निहट जो गुफा है तिनकूं देखतभये २७ कभजै एक वर्षा होयहैं तब श्रीकृष्णचन्द्र दृन्तकी स्रोतरि में गिरिराज की गुफा में जाय वैठहैं वन के कन्द मूल फलन के भोजन करिके भिन्न के संग खेलात भये २८ इतने में यशोदाजीकी पठाई गवालिन की दही भात लैके आपतभई ताई जलके समीप शिलाके ऊपर परोसिके भोजन करायने योग्य जे गोपहैं तिनकूं और बलदेवजी कूं संग लैके भोजन करत भये २९ हरी हरी वासन के ऊपर बैठिके नेत्र नीचके रोयें पेट जिनके भरे ऐसे वैल वकरान कूं और अपने ऐन के वोफते जिनके

ताहूता द्रुतंभीत्यास्तुनस्तनीः २६ वनौकसः प्रसुदिता वनराजीर्मधुच्युतः ॥ जलधारागिरेर्नादानासन्नाददृशेगुहाः २७ कचिद्वनस्पतिकोडे गुहायांना भिवर्पति ॥ निर्विशयभगवानरेमे कन्दमूलफलाशनः २८ दृढचोदनं समानीतं शिलायांसलिलान्तिके ॥ सम्भोजनीयैर्विशुभे गोपैः सङ्कर्षणान्वितः २९ शाद्वलोपरिसंविश्य चर्वतोभीलितेक्षणान् ॥ तृप्ताचवृषान्वस्तरान् गाश्चस्वोद्योभरथमाः ३० गावृट्श्रियंचतावीक्ष्य सर्वसूत्रसुदावहाम् ॥ भगवान्पूजयाञ्चक आत्मशक्त्युपवृंहिताम् ३१ एवं निवसतोस्तस्मिन्नामकेशवयोत्रजे ॥ शरत्समभगवद्व्यव्ध्रा स्वच्छाम्बवपरुषानिला ३२ शरदानिरीजोरपर्या नारीणाप्रकृतिययुः ॥ अष्टानामिवचेतांसि पुनर्योगानिपेवया ३३ व्योम्नोऽब्दभूतशान्त्यं सुतः पङ्कमपांगलम् ॥ सारजहारश्रमिणां कृष्णेभक्तिर्यथाऽशु

श्रम ऐसी गौवनकूं देखिके ३० सब प्राणीन कूं आनन्द की देनवारी वर्षाकृतुकी शोभाहैं ताकूं देखिके अपनी शक्ति ते वही ऐसी वर्षाकृतुको देखिके श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् प्रशसा करतभये या दृन्दावनमें कैसी वर्षाकृतु सुन्दरलने है ३१ या प्रकार व्रजमें श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी वास करतसन्ते वादर जामें दूरि होयगये निर्मल जामें जल मंद जामें पवन चले ऐसी शरद्वृक्षतु प्राप्तहोतभई ३२ कमल जामें उपजे ऐसी शरद्वृक्षतुमें जल निर्मल होतभये जैसे विगरे योगीन के चित्त फिरि योग करते शुद्ध होयजायहैं यह ब्रह्म दृष्टान्तहैं योगिन कूं यही चाहिये विगरे चित्तको योग करि के सुधारि लेंवें ३३ वर्षाकृतुमें आकाशमें वादर गजों करै हैं शरद्वृक्षतुमें वादरनकी गर्जन जातरहैं है वर्षाकृतु में प्राणी मिलिके एक स्थान में रहै हैं शरद्वृक्षतु में न्यारे न्यारे बिछुरि जायहैं पृथ्वी की कीच शुष्क होइगई जलनको मैल दूरि होयगयो यह तो शरद्वृक्षतु को वर्णन है यामें दृष्टान्तहैं जैसे ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी इन चारों आश्रमीन को भगवान् की भक्ति भये मूं क्लेश जातरहैं हैं ब्रह्मचारी गुरुन के लिये जल जमताई भरो करै यावत्पर्यन्त भक्ति उदय नहीं होय भक्ति भये पीछे जल भरिवे को परिश्रम नहीं रहे है गुरुभी जव वाके भक्ति होयजाय है तब वाको दहलकी आज्ञा नहीं करै हैं ऐसे आकाशकी गर्जन शरद्वृक्षतु में दूरि होयगई गृहस्थी के जमताई भक्ति उदय नहीं होयहैं तबताई अपने संतानादिकुनमें रहै आवै हैं भक्ति भये पीछे एकान्त



वास करिवे की इच्छा होय है तब उनको संग छोड़ि देई ताही प्रकार प्राणीनको जो एक वास है सो छूटत भयो ऐसेही वानप्रस्थ जवताई भक्ति उदय नहीं होय है तवताई देह मलिन रहै है भक्ति भये पीछे जैसे वाकी मलिनता दूरि होय जाय है ऐसे पृथ्वी की कीच शुष्क होय जाय है और जैसे संन्यासीन को कामवासनारूप मैल श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् में भक्ति भये ते दूरि होय है ऐसे शरद्वृक्षतु में जलको मैल दूरि होत भयो या प्रकार शरद्वृक्षतुको वर्णन है ३४ वादर में ते जलही वर्षा होय चुकी तब शरद्वृक्षतु में श्वेतश्वेत रुईकेसे पहल सुन्दर लगत भये यह तो शरद्वृक्षतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे द्रव्य पुत्र और लोकावासना जिनकी दूरि होय गई और पापदूरि होय गये शान्त जिनके स्वभाव ऐसे मुनीश्वर सुन्दरलगे हैं यह ग्राह्य दृष्टान्त है मुनीश्वरनको यही उचित है जो वासनानकू दूरि करे ३५ पर्वत कहं पंगलरूप तोय फलान सँ वहावे हैं और कहूं नहीं वहावे हैं यह शरद्वृक्षतुको वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे ज्ञानी पुरुष समय समय ज्ञानरूप अमृतके पात्र कू देखिके उपदेश करै हैं समकूं नहीं करै है यह ग्राह्य दृष्टान्त है विवेकीन कूं यही योग्य है पात्र देखिके उपदेशकरै सबकूं नहीं करै ३६ शरद्वृक्षतु में सरोवरन के थोड़े जलके रहनवारे जीव

भम् ३४ सर्वस्वं जलदाहिता विभेजुः शुभ्रवर्षसः ॥ यथात्यक्लैपणाः शान्तामुनयो मुक्ताकिल्वपाः ३५ गिरयो मुमुक्षुस्तोयं क्वचिन्नमुमुक्षुगशिवम् ॥ यथा ज्ञानासृत्तं काले ज्ञानिनो ददेत न वा ३६ नैवा विन्दन्क्षीयमाणं जलं गाधजले चराः ॥ यथायुरन्वहं शयं नरामूढाः कुटुम्बिनः ३७ गाधवारिचरास्तापमविन्दन् शरद्वृक्षतुर्कजम् ॥ यथादरिद्रः कृपणः कुटुम्ब्य विजितेन्द्रियः ३८ शनैः शनैर्जहुः पङ्कं स्थलान्यामं च वीरुधः ॥ यथाऽहंगमतांधीराः शरीरादिष्वनात्मसु ३९ निश्चला म्बुरभूत्सूष्णीं समुद्रः शरदागमे ॥ आत्मन्युपरते सम्यङ्मुनिर्व्युपरतागमः ४० केदारैः प्रस्तृप्तोऽष्टलङ्घनं कर्पकादृढतेतुभिः ॥ यथाप्राणैः स्रवज्ज्ञानं तन्निरोधेन योगिनः ४१ शरद्वृक्षांशुर्जांस्तापान् भूतानामुदुपोऽहस्त ॥ देहाभिमानजं बोधो मुकुन्दो ब्रजयोपिताम् ४२ खमशो भतनिर्भयं शरद्विभल

नित्य नित्य जो जल घटत जाय है ताकूं नहीं जानत भये यह तो शरद्वृक्षतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे अज्ञानी कुटुम्बी पुरुष घरनमें रहिके नित्य नित्य जो आयुर्वल घटै है ताकूं नहीं जाने है यह त्याज्य दृष्टान्त है पुरुष को ऐसी भूल न चाहिये जो आयुर्वल की खरि न राखे ३७ शरद्वृक्षतु में थोड़े जलके रहनवारे जीव सूर्यके तेजते जल गरम होय जाय है तासूं क्लेशित होत भये यह शरद्वृक्षतु को वर्णन है जैसे कुटुम्बी पुरुष इन्द्रियन के नहीं जीतने सँ दरिद्री कृपण घर में रहिके क्लेश कूं पावे है यह त्याज्य दृष्टान्त है जो धामें क्लेश होय तो निकसि जाय ३८ शरद्वृक्षतु में स्थलनकी हौले हौले कीच शुष्क होत गई लतानकी कचाई जातरही यह तो शरद्वृक्षतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे मिथ्या देह गेह में विवेकी पुरुष मायाकृत अहन्ता ममता कू त्यागि देई है यह ग्राह्य दृष्टान्त है विवेकीन कूं यही उचित है जो अधिमान कूं त्यागें ३९ शरद्वृक्षतु जग आई तब समुद्र को जल निर्मल भयो यह तो शरद्वृक्षतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे आत्मज्ञान भये पीछे मुनीश्वरनको पादबो लिखिवो छटि जाय है यह ग्राह्य दृष्टान्त है आत्माके जाने, पीछे पढ़िये मुनिबे सँ कहा काम है ४० शरद्वृक्षतु में खेतवारे मनुष्य गेतही जग जवर में बंध बांधिके जल कूं रोकत भये यह शरद्वृक्षतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे योगिराज इन्द्रियन की रस्ता ज्ञानकू रोययो करै है इन्द्रियन कूं रोकिके रोकौ करै है यह ग्राह्य दृष्टान्त है योगीन कूं यही उचित है ज्ञान कूं निकसन न देई

इन्द्रियन कूं रोकिके राखें ४१ शरद्वृक्षतु में सूर्य की किरणन सूं गरभी जो होय है ताकूं रात्रिसमय चन्द्रमा उदय होयके हरत भयो यह शरद्वृक्षतुकी वर्णन है यामें दृष्टान्तहै जैसे ज्ञानभये पीछे देखे को अभिमानरूप जो ताप है सो दूरि होय है और जैसे वज्रकी स्त्रीनके ताप मुकुन्द भगवान् दूरि करै हैं ४२ शरद्वृक्षतुमें पेघ दूरि होयये आकाश निर्मल होययो तारागण जामें निकसे ऐसो आकाश शोभाकूं प्राप्त होत भयो यह शरद्वृक्षतुकी वर्णनहै जैसे वेदके अर्थको दिखायें ऐसो सत्त्वगुणीचित्त सुन्दर लगै है यह ग्राह्य दृष्टान्तहै चित्त वही सुन्दर है जामें वेदके अर्थ को ज्ञान होय ४३ शरद्वृक्षतुमें समस्त जाकी मण्डल ऐसो चन्द्रमा आकाशमें तारागणन सहित सुन्दर लगत भयो यह शरद्वृक्षतु की वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे पृथ्वी में यादवन के पति श्रीकृष्णचन्द्र यादवन सहित सुन्दर लगै हैं ४४ शरद्वृक्षतु में जाड़ो गरभी भी नहीं सतावै हैं और पुष्पन को स्पर्श करिते जो पवन चलै वैं ताके स्पर्श ते मनुष्य ताप को त्यागत भये यह शरद्वृक्षतु की वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे गोपी श्रीकृष्ण कूं आलिंगन करिके ताप कूं त्यागत भई यह ग्राह्य दृष्टान्तहै मनुष्यको यही उचित है भगवान् को स्पर्श करिके संसारिक तापन कों त्यागे ४५ शरद्वृक्षतु

तारकम् ॥ सत्त्वयुक्त्रयथाचित्तं शब्दब्रह्मार्थदर्शनम् ४३ अखण्डमण्डलोव्योम्नि राजोद्गुणैःशशी ॥ यथाग्रहुपतिःकृष्णो वृष्णिचक्रावृतोभुवि ४४ आ  
श्लिष्यसमशीतोष्णं प्रमूनवनमारुतम् ॥ जनास्तापजहुर्गोष्यो नक्षुण्हनेचेतसः ४५ गावोमृगाःखगानार्यःपुष्पिययःशरदाऽभवन् ॥ अन्वीयमा  
नाःस्ववृषैःफलैरीशक्रियाइव ४६ उद्रहृष्यन्वारिजानिमूर्यौत्यनिकुमुदिना ॥ राज्ञातुर्निर्भयालोका यथादस्यून्विनानृप ४७ पुरग्रामेष्वग्रणैरैन्द्रियैश्चम  
होत्सवैः ॥ बभौभूःपकुप्तस्य दुग्धा कलाभ्यांनितगंहरेः ४८ वाणिज्यानिनृपस्नाता निर्गम्यार्थान्नप्रोदेरे ॥ वर्षरुद्धायथासिद्धाः स्वपिरुडान्कालाआग  
ते ४९ इति श्रीमद्भागवतेपहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वाध्यायेऽष्टादशोऽध्यायः २० ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

में गऊ हरिणी पक्षिणी स्त्री पुण्यवती होत भई इनके पति इनके पीछे लागे होलैं है यह शरदूच्छतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे ईश्वर की प्रसन्नताके लिये पुरुष योग यज्ञ तप करे है तिनके पीछे फल लग्यो होलैं है ४६ शरदूच्छतु में कुमोदनी बिना सरोवरन में कमल फूलतभये यह शरदूच्छतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है हे राजन् परीक्षित ! जैसे चोरन बिना लोक निर्भय होय के आनन्द पावे है ४७ शरदूच्छतु में पुर ग्राममें नवीन अन्न के भोजन के जे वैदिक उत्सवहैं और इन्द्रियन के पुष्ट करिये के जे विवाहादिक लौकिक उत्सव है तिनसूं और अन्न जामें पके हरि भगवान् के अंश कलारूप श्रीविलदेव कृष्णचन्द्रजी क्रीडाकरै है ऐसी पृथ्वी अतिसुन्दर लागति भई ४८ वर्षाच्छतु के रुके जैसे बनिया मुनीस्वर राजा बलचारी शरदूच्छतु में अपने अपने कर्मन में लगत भये वनियों अपने व्यापार कूं गये संन्यासी विचरिवेकूं गये राजा विजय करिवे कूं गये ब्रह्मचारी विद्या पढ़िवे कूं गये भित्र योगादिकन सूं सिद्ध होय जाये तें जव ताई आयुर्वन रहे तव ताई रहे आवै है पीछे जव ससय आवै तव योगादिकनके अनुसार जे देवतानके देह हैं तिनकूं जैसे पावे हैं ४९ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपियाटशमस्कन्धेपूर्वाद्धेशरक्षणं नानामविशतितमोऽध्यायः २० ॥

(एकविंशशतस्यष्टद्वन्द्वानगतैरहो ॥ तद्देणुस्वनमाकर्ण्य गोपीभिर्गीतभीयते ? इक्कीसवें अध्याय में शरद्वृत्त में सुन्दर द्वन्दावन में प्राप्तहुये कृष्णचन्द्रजी ने वंशी बजाई तब तिसका शब्द सुनकर गोपियों ने गीत गाये हैं ? ) शरद्वृत्त में निर्मल भये और कमलन की सुगन्धियुक्त पवन चले ऐसो जो द्वन्दावन है तामें गौ ग्वालन कूं संग लैके श्रीकृष्णचन्द्र जात भये ? फूली जो वन की पंक्ती तिनकी सुगन्धि ते मतचारे भौरा पत्नीन के समूहन की बोली सूं सरोवर नदी पर्वत गूंजे ऐसे द्वन्दावन में ग्वालवाल बलदेव जी सहित श्रीकृष्णचन्द्र गऊन को चरावत बोंसुरी बजावत भये २ प्रमादात्मक काम को जामें उदय होय ऐसो वंशी को शब्द अवण करिके कई एक व्रज की स्त्री कृष्णचन्द्र के पीछे अपनी सखीन के आगे कहत भई ३ जा समय कटु कहन को प्रारम्भ करो ता समय कृष्णचन्द्र के रूपको स्मरण होय आयो तामूं कामदेव के वेगसूं मन जिनके चलायमान होय गये वे व्रजकी स्त्री हे राजन परीक्षित ! कहि कूं समर्थ न होत भई ४

श्रीशुकउवाच ॥ इत्थं शरत्स्वच्छजलं पद्माकरसुगन्धिना ॥ न्यविशद्वायुनावातं सगोगोपालकोऽव्युतः १ कुसुमितवनराजिशुषिमभृङ्गाद्विजकुललुप्तसः सरिन्महीध्रम् ॥ मधुपतिरवगाह्यचारयन्गाः सहपशुपालबलश्चूकजवेणुम् २ तद्वजस्त्रिय आश्रुत्य वेणुगीतं स्मरोदयम् ॥ काश्चित्परोक्षं कृष्णस्य स्वसखीभ्योऽन्ववर्णयन् ३ तद्वर्णयितुमारब्धाः स्मरन्त्यः कृष्णचेष्टितम् ॥ नाशकन्स्मरवेगेन विक्षिप्तमनसेनृप ४ बहर्षपीडनटवरवपुः कर्णयोः कर्णिका रं विभ्रद्भासः कनककपिशं वैजयन्तीञ्चमालाम् ॥ रन्ध्रान्वेणोरधसुधया पूरयन्गोपवृन्दैर्द्वन्द्वदारण्यं स्वपदमणं प्राविशद्गीतकीर्तिः ५ इति वेणुग्वंराजन् सर्वभूतमनोहरम् ॥ श्रुत्वा व्रजस्त्रियः सर्वावर्णयन्त्योऽभिरिरे ६ ॥ गोप्यञ्जुः ॥ अक्षरवतां फलमिदं परं विदामः सख्यः पशुननुविवेश यतोर्वयस्यैः ॥ वक्तव्रजेशसुतयोस्तु वेणुजुष्टं यैर्वा निपीतमनुरक्तकटाक्षमोक्षम् ७ दूतप्रवालवर्हस्तवकोत्पलाञ्जमालाऽनुपृक्तपरिधानविचित्रवेषौ ॥ मध्ये विरेजतुलं पशुपालगोष्ठ्यां रङ्गेयथानटवरौ क्वच गायमानौ ८ गोप्यः किमात्रदयंकुशलं स्मवेणुर्दामोदराधसुधामपि गोपिकानाम् ॥ भुङ्क्ते स्वयं यदवशिष्टा संहृदिन्यो हृष्यस्व

गोरपुच्छ को मुकुट धारण करिके काढ़नी पहिरि के नट की तुल्य श्रेष्ठ रूप को धारण करिके कानन में कचनार के फूल उरसि के सुवर्ण की तुल्य पीताम्बर को धारण करिके वैजयन्तीमाला को पहिरके बोंसुरी के छेदनकूं अधरासुत सूं पूर्ण करत गोपन के समूह जिनके यशकों गावें वे श्रीकृष्णचन्द्र अपने चरणारविंद के चिह्न सों रमणीक जो द्वन्दावन है तामें जात भये ५ हे राजन परीक्षित ! या प्रकार सब ग्राणीन के मनकी हरनवारी बोंसुरी की टेर है ताकूं व्रजकी स्त्री सुनिके आपुस में कहैं और कहति कहति परमआनन्दरूप जो कृष्ण हैं तिनको मनसूं आलिंगन करत भई ६ अब गोपी कहैं हे सखी ! नेत्रवान् पुरुष को यही फल है और फल हम नहीं जाने हैं जो सखा सहित गौवन कूं वन में चरावें जो श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनको मुखारविन्द जिन पुरुषन ने देखो है तिननेही वही फल सेवन करो है और कहती हैं हे सखी ! गौर मुख की तो शोभा है परन्तु बोंसुरी को बजावें स्नेह भरे कटाक्ष जामें ते निकसे वा सापरे मुख की शोभा देखी चाहिये ७ आपके पात मोरपुच्छ फूलन के गुच्छा उत्पल अञ्ज अर्थात् कमलनकी माला तिनसूं लगे भये जो नीलाम्बर पीताम्बर तिनसूं चित्रविचित्र जिनके देह ऐसे श्रीकृष्ण बलदेव ।

दोनों भयगा गान करत ग्वालमण्डलीमें बहुत सुन्दर लगत भये जैसे रंगयुगि दो नटन सं सुन्दरलगे है ८ और गोपीकहे हैं हे गोपियो ! यह वांसुरी कौन पुण्य करत भई जापुण्यके प्रभाव ते हम गोपीन के पीवे योग्य जो अथरामृत है ताको रस आप इच्छापूर्वक पीवे है जिन सरोवरन के जलते या वांसुरी को वाँस सीँच्यो है उन सरोवरन में कमल नहीं फूले हैं मानों आनन्द सू रोमाञ्च होय आवे हैं और जिन वृत्तनके वंश में या वांसुरी को वाँस भयो है उन वृत्तन के मद नहीं जुवे हैं मानों आनन्द के आँसू बहे हैं धन्य हमारे कुल को वाँस जाकी वांसुरी कृष्णचन्द्र के मुख तें लगी है जैसे श्रेष्ठ पुरुष अपने वंशमें पुत्र को भगवान् का भक्त देखि के आनन्द मानि के आँसू बहावे हैं ९ गोपी कहे हैं यह वृन्दावन पृथ्वी के यश को बढ़ावे है धन्य वह पृथ्वी है जामें वृन्दावनसदृश धाम है देवकी पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द जो परे हैं तिनसँ अतिशय करिके परमशोभा जाने पाई है और श्रीकृष्णचन्द्र वांसुरी को बजावे हैं ताकी ढेर श्रवण करिके और मन्द जाकी गर्जन ऐसी नीली घटा देखिके मोर मसम होय के बैठे हैं यह आनन्द और लोकन में नहीं है १० और गोपी कहे हैं मूल

चोऽश्रुमुमुचुस्तरवोयथार्याः ६ वृन्दावनं सखिभुवोवितनोति कीर्त्तिं यद्देवकीमुतपदाम्बुजलब्धलक्ष्मि ॥ गोविन्दे देणुमनुमत्तमयूरनृत्यं प्रेक्ष्यादिसान्यपर  
तान्यसमस्तसत्त्वम् १० धन्याः स्ममूढमतयोऽपि हरिण्यपता यानन्दनन्दनमुपात्तविचित्रेवपम् ॥ आकर्ण्य वेणुणि तं सहकृष्णसाराः पूजां दधुर्विचितां प  
णयावलोकैः ११ कृष्णं निरीक्ष्य वनितोत्सवरूपशीलं श्रुत्वा च तत्कृष्णिते वेणुविचित्रगीतम् ॥ देव्यो विमानगतयः स्मरन्नुन्नसारा अश्रयत्प्रभू न कवरा मुमुहु  
र्विनीव्यः १२ गावश्च कृष्णमुखानिर्गतवेणुगीतपीयूषमुत्तभितकर्णपुटैः पिबन्त्यः ॥ शावाः स्नुतस्तनपयः कवलाः स्मतस्थुर्गोविन्दमात्मनि दृशाऽश्रुकलाः  
स्पृशन्त्यः १३ प्रायोवताम्बुविहगामुनयोवनेऽस्मिन् कृष्णे क्षितं तद्वदितं कलवेणुगीतम् ॥ आरुह्येन्द्रमुजान् रुचिरप्रवालाञ्छृण्वन्त्यभीलितदृशो विग  
ताऽन्यवाचः १४ नद्यस्तदा तदुपधार्य मुकुन्दगीतमावर्त्तयन् क्षितमनोभवभग्नवेगाः ॥ आलिङ्गनस्थ गीतमूर्ध्नि भूर्जैर्मुरैर्गृह्णन्ति पादयुगलं कमलोपहाराः १५

पशुजाति ये हरिणी धन्य हैं वांसुरी की ढेर श्रवण करिके अपने पति को संग लैके धारण कियो है विचित्र रूप जाने ऐसे नन्दनन्दन श्रीकृष्णको स्नेह भरी चितवनसँ सन्मान करे हैं हमरे पति तो बड़े श्रेष्ठ हैं जो हमको देखन हू न देखें ११ और गोपी कहे हैं स्त्रीकं आनन्द को देन गयो जाको रूप और स्वभाव ऐसे कृष्णचन्द्रकू देखिके और बाजी जो वांसुरी ताको चित्रविचित्र गीत श्रवण करिके विमानन में बैठी चलीजार्य कामदेवते धीरज जिनको गयो चोटीनमें ते फूल भरि भरि गिरे नारे जिनके खुलिये ऐसी देवागना याके स्वरूपको देखिके मोहित होत भई और जो हम मोहित होय जायें तो कहा आश्चर्य है १२ श्रीकृष्णचन्द्र के मुख ते निकसो जो वांसुरी को गीतरूप धामृत है ताई गौ कामरूपी दोनानसँ उठाय के पीवत गई और श्रीकृष्णचन्द्रकू दृष्टिसे आलिङ्गन करत आम् जिनके चले जायें चित्रसी लिखी दाढ़ी होत भई ताही प्रकार बहारा उनके चोखत ठाढ़े होत भये १३ देखैया ! जा वृन्दावनमें जे पत्नी है ते मुनीश्वर हैं मनोहर जिनके पात ऐसे वृत्तनकी शाशा पै वैठिके नेत्रनकू मूँदिके छोड़ी है बोली जिनने ऐसे प्यारे श्रीकृष्णचन्द्रको दर्शन करे हैं और वांसुरी को मनोहर गीत है ताकू श्रवण करे हैं १४ मुकुन्द भगवान् की वांसुरी की ढेर श्रवण करिके

नदीन में अमर परे हैं तारू यह जतावें हैं कि ये अमर नहीं परे हैं हमारी छाती में कामदेव के गढ़ेला परे हैं और धार जिनकी दृष्टि जाग्रह मानों आलिङ्गन करिके ठाकि लेङ्गी ऐसे लहरला हा न ते कमल भेद लैके मुरारि श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्दकू पकरे हैं १५ भय्या बलदेवगीळूं और गोपनकूं संग लैके धूम में ब्रजकी गऊन को चरावे वासुकी कूं चजावे ऐं श्रीकृष्णचन्द्रकूं देखिके मेघ प्रेमसूं बढिके उदय होयके अपने मित्र श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर छोटी २ वुन्दन की वर्षा करत भयो साचो मित्र थाको मेघ है यह सामरो है याके पीताम्बर वामे विजुरी याके मोतीनको हार वाके वगुलानकी पंक्ति यह गेजे याकी मुरली गेजे यह जलकी वर्षा करे यह अमृत की वर्षा करे याको वाको सब लक्षण मिलै है १६ और ये वन की भीलिनी धन्य है श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द की अरुणतासूं जाकी शोभा ऐसी केशर कस्तूरी रतिसमय धारी के स्तनन में लगी श्रीकृष्णचन्द्र की डोला फिरी ते वृणन में घासमें लगी वाके शरीर के देखते कामदेव जिन को उदय होय आयै वे भीलिनी वृणनमें ते केशर लैके कुचनपै गुरपै लगाय के कामदेव की पीङ्गकूं दूरि करति भई १७ हे अबला ! हे सरियो ! यह गोवर्द्धन पर्वत हरिके दासनमें अति श्रेष्ठ दास है

दृष्टाऽऽनपेव्र जपशून्सहरामगोपैः सञ्चारयन्तमनुवेणमुदीरयन्तस्य ॥ प्रेमप्रवृद्धउदितःकुसुमावलीभिः सख्युर्व्यधात्स्ववपुषाम्बुदआतपत्रम् १६ पूर्णाः पुलिन्द्यउरुगायपदाञ्जरागश्रीकुङ्कुमेनदयितास्तनमशिङ्गेन ॥ तद्दर्शनस्मरुजस्तृणरूपितेनलिम्पन्त्यआननकुचेपुत्रहुस्तदाधिम् १७ हन्तायमदिरवला हरिदासवर्यो यद्वामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोदः ॥ मानन्तनोतिसहगोगणयोस्तयोर्यत् पानीयसूयवराकन्दरकन्दमूलैः १८ गागोपकैरनुजननयतोरुदारवेषु स्वनैःकलारैस्तनुभृत्सुसख्यः ॥ अस्पन्दनगतिमतांपुलकस्तरूणांनिर्योगपाशकृतलक्षणयोर्विचित्रम् १९ एवंविधाभगवतोयावृन्दावनचारिणः ॥ वर्षा यन्त्योमिथोगोप्यःकीडास्तन्मयतांययुः २० इति श्रीमद्भागवतमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेएकविंशतितमोऽध्यायः २१ ॥ ॥ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ हेमन्तेप्रथमेमासिनन्दनव्रजकुमारिकाः ॥ चेरुहविषंभुञ्जानाःकात्यायन्यर्चनव्रतम् १ आलुरयाम्भसिकालिन्द्याजलान्तेचोदितेऽरुणे ॥

राम श्रीकृष्णचन्द्रके चरण जे लागे है तिनसूं याके बडो आनन्द होयहै गऊ गोपनकूं संग लैके कृष्ण बलराम आवे हैं तिनकूं जल हरीघास कन्दर अर्थात् गुफा कन्द मूल इनको भेदधरिके उनको सत्कार करे है १८ हे सखियो ! गौ और गोपनकूं संग लैके उनमें कृष्णचन्द्र बलदेवजी तिनकी मनोहर वासुकी को मनोहर शब्द सुनिके यह आश्चर्य होय है वृत्तनकी जंगम गति और जलके जीवनकी वृत्तनकी तुल्य गति होय जायहै अर्थात् वे एक स्थानपै ठावे रहे हैं और कैसे कृष्ण बलदेव है नियोग अर्थात् दोहन समय गौवन के पाउँ वाजिबे की रस्सी जिनने शिरपर लपेटि लीनी है और गौवन के वाजिबे की रस्सी कन्यापै धरी है तासूं उत्तम गोपनकी तुल्य जिनकी शोभा वनी है १९ वृन्दावन में विहार करैं जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी या प्रकार लीलान कूं गोपी आपुसमें वर्णन करत तन्मय होति भई २० ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपियादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेएकविंशोऽध्यायः २१ ॥ ॥ ॥ ॥

( द्वाविंशेगोपकन्यानावस्त्राहरणलीलया ॥ वरदत्तवागतःकृष्णो यज्ञशालाभितीर्यते १ वाईसने अध्यायमें गोपोंकी कन्याओं के कपड़े चुरानेकी लीला से उनको वर देकर कृष्णजी यज्ञशालाको

गये हैं यह वर्णन है ? ) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित ! हेमन्त ऋतुमें प्रथम मास अग्रहण के महीनामें नन्दरायजी के व्रजमें कुमारी कन्या मृग भातको भोजन करिके व्रत करिके अरु खोदय के समय यमुनाजी के जलमें स्नान करिके किनारे पै बैठिके वारुभी कात्यायनी देवीकी प्रतिमा वनायके चन्दन सुगन्धि के फूल बलि धूप दीपन स्रं और छोटो बड़ी सामग्रीनहूँ प्रयाग फल चाउरनहूँ पूजा करतभई १ । २ । ३ हे कात्यायनि ! हे महामाया ! हे महायोगिनि ! हे अधीश्वरि ! हे देवि ! नन्दगोपको पुत्र है ताई हमारो पति वरु तोवों नमस्कार है ४ या भद्रकू जपिके कुमारिका पूजा करति भई या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्रमें चित्त जिनके लगने वे कन्या महीनाको व्रत करतभई नन्दको पुत्र पतिहोउ यह इच्छा करिके भद्रकाली देवीकी पूजाकरत भई प्रात काल उठिके अपने अपने नामले के आपुस में परस्पर हाथ पकरिके नित्य नित्य यमुनाजी में स्नान करिके कू जात ऊंचे स्वरस्रं श्रीकृष्णचन्द्र कू गावतभई ५ । ६ यमुनाजी पै आइके कभऊँ एक पहाले दिन

धृतराष्ट्रतिष्ठतिदेवीमानचूर्नुपसैकतीम् २ गन्धैर्लियैःपुरभिर्भिलिभिर्धूपदीपकैः ॥ उच्चावचैश्चोपहारैःप्रवालफलतण्डुलैः ३ कात्यायनिमहामायेमहायोगिन्यधीश्वरि ॥ नन्दगोपसुतंदेविपतिभेकुरुतेनमः ४ इतिमन्त्रंजपन्त्यस्ताःपूजां चक्रुःकुमारिकाः ॥ एवंमांसव्रतंचेरुः कुमार्यःकृष्णचेतसः ५ भद्रकालीसमानचूर्ध्वयान्नन्दमुनःपतिः ॥ उपस्थुत्थायगोत्रैःस्वैरन्योऽन्यावद्धवाहवः ॥ कृष्णमुखैर्जगुन्यःकालिन्यांस्नातुमन्यहम् ६ नद्यांकदाचिदागत्यतीरेनिक्षिप्यपूर्ववत् ॥ वासांसिकृष्णंगायन्त्यो विजहुःसलिलेमुदा ७ भगवांस्तदभिप्रेत्य कृष्णोयोगेश्वरेश्वरः ॥ वयस्परैरागतस्तत्रव्रतस्तत्कर्गसिद्धये ८ तासां वासास्युपादायनीपमारुह्यसत्वरः ॥ हसद्भिःप्रहसन्बालैःपरिहासमुवाच ह ८ अत्रागत्यावलाङ्कामं स्वस्ववासःभगृह्यनाम् ॥ सत्यं व्रताणिनो नर्मयद्वयं व्रनकर्षिताः १० नमयोदितपूर्वांवा अन्ततदिमेविदुः ॥ एकैकशःगतीच्छन्सहैवोतमुमध्यमाः ११ तस्यतत्स्वेतितंदृष्ट्वागोप्यःप्रेमपरिभुताः ॥ ब्रौहिनाः प्रेक्ष्यचान्योऽन्यंजातहासाननिर्ययुः १२ एवंब्रूतमिगोविन्दे नर्मणाक्षिप्तचेतसः ॥ आरुढमगनाःशीतोदेवपमानास्तनमब्रुवन् १३ माज्जयंभोःकृथास्त्वां

कीसी नाई अपने वस्त्र किनारे पै धरिके श्रीकृष्णचन्द्र कू गावत बड़े आनन्दपूर्वक जलमें विहार करतभई ७ योगेश्वरन के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र तिनकू मनोरथ जानिके वरावर के मि ननकू संगलैके तिनके मनोरथ सिद्ध करिके लिये ता यमुनाके तीरपर जातभये ८ कन्यान के वस्त्रलैके शीघ्र कदम्यै चढ़िके हंसत भये और संगके बालक हंसतभये इसी की बातें कहतभये ९ और कहतभये कि हे अवलात्रो ! यहा आयके अपने अपने वस्त्र लेजावो मैं सत्य कहूँ हूँ तुम व्रत करे ते दुर्बल होरही हो यातें दासी नहीं करूँ हूँ १० पहिले मैं मिथ्या कभी नहीं बोल्योहूँ या यात को ये भरे भित्र जानेहैं एक एक आयके लेजावो अथवा हे सुमध्यमाः अर्थात् सुन्दर हैं कटि जिनकी ! तुम एक संगही आयके लेजावो यामें हमारे आग्रह नहीं है ११ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र की दासी देखिके गोपी प्रेमें मन होयके लज्जा सहित आपुस में देखि देखिके हंसति भई वस्त्रहीन हैं याते जलके बाहर नहीं निकसती भई १२ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र ने रुही जव हँधीभी बात सुनि के हरिगये हैं वस्त्र जिनके ऐसी शरमीली गोपी थोड़े जलके भीतर कंठताई ह्वरही जाइके मारे कोपत कांपत श्रीकृष्णचन्द्रसूँ बोलतभई १३ हे कृष्णचन्द्र ! अनौति मतकरो तुम नन्द योगके



पुत्र वृजमें प्रशंसा के योग्यहो अपने प्यारे जा शीतलुं कम्पित जो हम हैं तिनकू वखदेव १४ हे श्यामसुन्दर ! हम तुम्हारी दासी हैं जो तुम कहोगे सोई हम करेंगी हे धर्म के जाननेवारे ! हमारे वल्ल देउ नहीं देउ तो राजा नन्द ते अथवा कंसते हम कहेंगी १५ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् कहें हैं जो तुम मेरी दासीहो और मेरो कहो करोगी हे शुचिस्मिताः अर्थात् सुन्दरहै मुसिकानि जिनकी ! ऐसी जो तुमहो सो यहा आयके अपने अपने वल्ल लेजावो १६ ताके पीछे शीतलुं कंपित वृत्तकरिके कर्शित जो समस्त कुमारिका हायन ते अपनी अपनी योनिकू ढेंकि के जलके बाहर निकसत भई १७ सुन्दर प्रेम ते प्रसन्नकरे ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र नहीं खरिहत भयो है कन्यागन जिनको ऐसी कुमारिकान कू देखिके उनके वल्ल कन्या पै धरिके प्रसन्न होय के मुसिकाय के यह बोले १८ वृत्त कौ करिके नंगी होय के यमुना जलमें स्नान करत भई तामूं जलको देवता जो वरुण है ताको अपराध भयो ताके दूरि करिवेके लिये हाय जोरि माथे ते लगायके घरती में प्रणाम करिके वल्ल पहि-

तु नन्दगोपसुतंप्रियम् ॥ जानीमोऽङ्गव्रजश्लाघ्यं देहिवासांसिवेपिताः १४ श्यामसुन्दरतेदास्यःकरवामतवोदितम् ॥ देहिवासांसिधर्मज्ञ नोचेद्राज्ञेद्रुद्रा महे १५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ भवत्योयदिमेदास्यो मयोक्तवाकरिष्यथ ॥ अत्राऽऽगत्यस्ववासांसिप्रतीच्छन्तुशुचिस्मिताः १६ ततो जलाशयात्सर्वादारि काःशीतवेपिताः ॥ पाणिभ्यांयोनिमाच्छाद्य प्रोत्तेरुःशीतकर्शिताः १७ भगवानाहतावीक्ष्यशुद्धभावप्रसादितः ॥ स्कन्धेनिधायवासांसि प्रीतःप्रोवाच सस्मितम् १८ यूयंविवस्त्रायदपोद्यतव्रताव्यगाहतैतत्तदुदेवहेलनम् ॥ वद्धाञ्जलिमूर्धन्यपनुत्तयेऽहसः कृत्वानमोऽधोवसनंप्रगृह्यताम् १९ इत्यव्युतेनाभि हितं व्रजावला मत्वाविवस्त्राण्वनं व्रतच्युतिम् ॥ तत्पूर्तिकामास्तदशेषकर्मणां साक्षात्कृतं नेमुरवद्यमृगतः २० तास्तथाऽवनतादृष्ट्वा भगवानेदेवकीसुतः ॥ वासांसिताभ्यःप्रायच्छत्करुणस्तेनतोपिनः २१ दृढं प्लव्धास्त्रपयाचहपिताः प्रस्तोभिताः कीडनवच्चकारिताः ॥ वस्त्राणि चैवापहृतान्यथाऽप्यमुं ताना भ्यसूयन् प्रियसङ्गनिर्वृताः २२ परिधायस्ववासांसिप्रेष्ठसङ्गमसज्जिताः ॥ गृहीतचिन्तानोचेत्सुस्तस्मिन्लज्जायितेक्षणाः २३ तासां विज्ञाय भगवान्स्वपा

रो १९ या प्रकार श्रीकृष्ण ने उनते कही तब व्रजवाला वल्ल त्यागिके जो नग्न स्नान करिवो है ताकू वृत्तके खण्डन करनवारी मानिके ता वृत्त के पूर्ण करिवेके लिये वृत्त के और समस्त कर्मन के फल के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकू नमस्कार करत भई क्योंकि जा कारण ते श्रीकृष्णचन्द्रही सम्पूर्ण पापनके दूर करनवारे हैं २० देवकी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अधीनता करे ऐसी जो कुमारिका तिनकू देखिके और उनके भाव सूं सन्तुष्ट होयके करुणा जिनके आइगई उन कौ वल्ल देतभये २१ बहुत करिके ठगी लाज जिनकी लुटाई हांसी जिनकी करी खिछौना कीसी नाई टाढी करी वल्ल जिनके ले लिये तथापि कुमारिका श्रीकृष्णके संग आनन्द गानिके श्रीकृष्ण की निन्दा न करतभई २२ अपने अपने वल्ल पहिरे के प्यारे संगने वल्ल करि लीनी चित्त जिनके हरिगये तिन श्रीकृष्णचन्द्र की ओर लाज करिके देखें ऐसी कुमारिका श्रीकृष्णके पास ते न जातभई २३ अपने वरणावनिन्दके स्पर्शकी चाहना करिके धारो है वृत्त जिनने ऐसी कुमारीनके मनो-

रथ जानिके दामोदर भगवान् अबलान सँ बोलत भये २४ श्रीकृष्ण भगवान् कहै हैं हे सुशीलाओ ! जालिये तुमने मेरो पूजन करो वह मनोरथ लाजके गारे तुमने नहीं वञ्चो तथापि मैंने जाना और मैंने तुम्हारे मनोरथ को अनुमोदन करो याते यह मनोरथ सत्य होइगो २५ मोमें जिनने बुद्धि लगाई है उनकों काम विषयभोग के लिये नहीं होय है जैसे भूजरेधे अन्न बहुधा उपनिजे के योग्य नहीं होय है २६ हे अबलाओ ! तुम ब्रजको जावो तुम्हारे मनोरथ पूरे भये हे पतिव्रताओ ! जाको मनमें विचारिके यह तुम व्रत करत भई कात्यायनी देवीकी पूजा करत भई या कारण जे शरद्वस्तुकी रात्री आवैगी तिनमें मेरे संग रमण करोगी २७ भगवान् श्रीकृष्ण ने आज्ञा जिन कूँ दीनी कामना जिनकी पूर्ण भई वे कुमारिका श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द को ध्यानकरत कष्ट ते ब्रजको जात भई ८ याके पीछे देवकी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण गोपन कूँ संगलैके बलदेवजी को संग लैके गोबन्धु चरावत वृन्दावनमें ते दूरि चले जात भये २६ बड़ी तीक्ष्ण जो गरमी दस्पर्शकाम्यया ॥ धृतराजानांसङ्कल्पमाहदामोदरोऽबलाः २४ सङ्कल्पोविदितः साध्व्यो भवतीनांगदर्वनम् ॥ मयाऽनुमोदितः सोऽसौ सस्यो भवितुमर्हति २५ नमस्यो वैशितधियां कामः कामायकल्पते ॥ भजिताक्किथिताधाना प्रायोवीजायेन्यते २६ यातावला ब्रजं सिद्धाभये मारं स्यथ क्षपाः ॥ यदुद्दिश्य ब्रजं तमिदं चेरुरार्योर्वचनं सतीः २७ श्रीशुक उवाच ॥ इत्यादिष्टा भगवता लब्धव्यकामाः कुमारिकाः ॥ श्यायन्त्यस्तत्पदाम्भोजं रुच्छान्निर्विविशुब्रजम् २८ अथ गोपैः परिवृतो भगवान् देवकी सुतः ॥ वृन्दावनाद्गुहं चारयन् ग्राः सहाग्रजः २९ निदाघार्कात्पेतिग्मे छायाभिः स्वाभिरात्मनः ॥ आतपत्रायिता नृवीक्ष्य द्रुमाना हव्रजौकसः ३० हेस्तोककृष्ण हे अंशो श्रीदामन्मुबलार्जुन ॥ विशालर्षभते त्रिस्विन्देव प्रस्थनरूप ३१ पश्यते तान् महाभागान् परीक्ष्य कान्तजीवितान् ॥ वातवर्षात्पाहिमान् सहन्तो वारयन्निनः ३२ अहोर्षात्पावन् सर्वप्राण्युपजीवनम् ॥ सुजनस्येव येषां विमुखायान्तिनार्थिनः ३३ पत्रपुष्पफलच्छाया मूलवल्कलदारुभिः ॥ गन्धनिर्यासमस्मिन् तोक्मैः कामान्वितन्वते ३४ एतावज्जनमसाफल्यं देहिनामिह देहिषु ॥ प्राणैरर्थं धियावाचा श्रेय एवाचरेत्सदा ३५ इति प्रवालस्तव फलपुष्पदलोत्करैः ॥ तरुणान्मशालानां मध्येनयमुनांगतः ३६ तत्रागाः पाययित्वाऽपः समुद्राः शीतलाः शिवाः ॥ की धूप है तामें अपनी छायासँ छाया करिके ऐसे वृत्तनकूँ देखिके श्रीकृष्णचन्द्र ब्रजवासीन सँ कहत भये ३० हे बालककृष्ण ! हे अंशो ! हे श्रीदागन् ! हे सुबल ! हे अर्जुन ! हे विशाला ! हे अप्रम ! हे तेजस्विन् ! हे देवप्रस्थ ! हे वल्यप ! इन षड्भागी वृक्षनकूँ तुम देखो तो ये बड़े बड़ भागी हैं परोपकारके लिये एकान्त वास करै हैं पवन वर्षा झूप शीत आपस से हैं और हमें इन्ते बचाव है ३१ । ३२ अहो इन वृत्तनकों सब प्राणीनके उपकार को करनवारी जनम धन्य है जैसे काहू दयावान् पुरुषके पास याचक मनुष्य विमुख नहीं जाय ऐसे इन वृत्तनके पास आयेके प्राणी विमुख हैं ३३ । ३४ अहो इन वृत्तनकों सब प्राणीनके उपकार को करनवारी जनम धन्य है ३५ या लंसार में देवप्राणीन को इतनीही जग सफल नहीं जाय है ३६ पात फूल फल छाया जड बकल नकड़ी सुगन्ध गोंद भस्म कोइला कोपल इन ऋतिके सब प्राणीन की कामना पूर्ण करै हैं ३७ या लंसार में देवप्राणीन को इतनीही जग सफल है जो अपने माण धन बुद्धि वचन इन सँ सदा परायो भलो ही करै हैं ३८ या प्रकार पात गुच्छा फलन फूलन दलनके समूहन ते शाखा जिनकी नहरही उन वृत्तनके वीचमें होयके श्रीकृष्णचन्द्र यमुना

तीर पै जातभये ३६ हे राजन् परीक्षित् ! ता यमुना तीर पै गोपैं ते निर्भल शीतल मंगलरूप जल गौवन कूं प्याय के आपहू स्नाद सूं पीवत भये ३७ हे राजन् परीक्षित् ! ता यमुनाजी के समीप वाग में इच्छापूर्वक गऊनकूं चरावत गोपन कूं छुधा जव छागी तव श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजी के पास आय के यह कहत भये ३८ इति श्रीपद्महाभागवतार्थरूपिण्यष्टादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धविंशोऽध्यायः २२ ॥

( त्रयोविंशतनोगोपैरब्जयाच्यापदेशतः ॥ तत्पत्न्यनुयहावकृष्णो दीक्षितानन्वतापयत् १ तेऽसर्वे अध्याय में कृष्णजी गोपोंकेद्वारा दीक्षायाक्त ब्राह्मणों से अन्न मांगते भये तब वे नहीं देते भये उनकी स्त्रियां लोकार देती भई तब कृष्णजी स्त्रियोंकी कृपाते ब्राह्मणों को तापयुक्त करते भये १ ) हे राम ! हे राम ! हे वड़े पराक्रमी ! हे कृष्ण दुष्टन के मारनवारे ! यह धुधा दुष्टिनी हमें बहुत सतावे है याकी शान्ति करो ? श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार गोपन ने जा समय प्रार्थनाकरी तब देवकी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण भक्तिमती जो ब्राह्मणन की स्त्री तिनके ऊपर प्र-

ततोऽनुपस्त्रयंगोपाः कामंस्नादुपपुर्जलम् ३७ तस्याउपवनेकामं चारयन्तःपशून्नुप ॥ कृष्णरामावुपागम्य क्षुधातर्हिदमद्भुञ्ज ३८ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धविंशोऽध्यायः २२ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

गोपाऊनुः ॥ रामराममहावीर्यं कृष्णदुष्टनिर्वहण ॥ एपावैवाधेतुक्षुन्नस्तच्छान्तिं कर्तुमर्हथः १ श्रीशुकउवाच ॥ इति विज्ञापितो गोपैर्भगवान् देवकीसुतः ॥ भक्तायाविप्रभार्यायाः प्रसीदन्निदमववीत् २ प्रयातदेवयजनं ब्राह्मणाब्रह्मवादिनः ॥ सन्नमाङ्गिरसनाम ह्यासतेस्वर्गकाम्यया ३ तत्रगतौदनंगोपायाचतास्मद्विदर्जिताः ॥ कीर्त्तयन्तोभगवतार्थस्यममचाभिधाम् ४ इत्यादिष्टाभगवता गत्वायाचन्तते तथा ॥ कृताञ्जलिपुटाविमान् दण्डवत्पतिताभुवि ५ हेभूमिदेवाभृणुत कृष्णस्यादेशकारिणः ॥ प्राप्ताञ्जानीतभद्रंगोपात्रोरामचोदितान् ६ गाश्चारयन्तावविदूरओदनं रामाच्युनौवलपतोबुभुक्षितौ ॥ तयोर्द्विजाओदनमर्थिनोर्यदि श्रद्धाचवोयच्छतधर्मवित्तमाः ७ दीक्षायाःपशुसंस्थायाः सौत्रामण्याश्चसत्तमाः ॥ अन्यत्रदीक्षितस्यापि नान्नमश्नन्ति

सन्न होयके यह बोलत भये २ वेदके पढ़नवारे ब्राह्मण स्वर्गकी कामना करिके आंगिरस नाम यज्ञ करे हैं देवतानको पूजन जहां होइ है तहां जावो ३ हे गोपो ! ता यज्ञ में जायके भात मांगो हमारे भेजे जावो तुम्हें कहा लाज आवै है वड़े भय्या भगवान् वलदेवजी को नाम लीजो उनके भेजे आवे हैं ४ या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णकी आज्ञा ग्रहण करिके वे गोप जायके तैवेही मागत भये और ब्राह्मणनके हाथ जोरि पृथ्वी में परिके दण्डवत् करतभये ५ हे भूमिदेवो ! तुम हमारी वात सुनो श्रीकृष्णचन्द्र की आज्ञाके करनवारे वलदेवजी के भेजे हम गोप तिहारे पास आवे हैं तिनकूं जानो हो तुम्हारी कल्याण होउ ६ श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजी दोनों भय्या गो चरावत समीपआये हैं भूग्वे हैं तुम्हारे भातकी चाहना करे हैं हे ब्राह्मणो ! हे धर्म के जाननवारेन में उत्तम ! तुम्हारे भातहैं जो श्रद्धाई तो मागे जो कृष्ण वलदेव हैं तिनकूं देउ ७ हे श्रेष्ठो ! दीक्षाते आरम्भ लौके पशुके हिंसनते पहिले सौत्रामण्या यज्ञते और ठौर दीक्षावारे के अन्नके खाते दीप नहीं लगेहैं यामें

पशुको हिसन तुम्हारे होय चुकी है सौत्रामयय यह तुम्हारे है नहीं तुम्हारे अन्न भोजन करिरेकोदोप नहीं ८ या प्रकार वे ब्राह्मण भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की याचनाकूं सुनिके अनसुनी करतभये खोटे स्वर्ग में जायवे की जिनके आशा है वड़े कर्मन को करे हैं तो मूर्ख और हम वड़े ज्ञानी वे ऐसे आपकी माने हैं ९ देश काल न्यारो वरु पुरोडाशादिक द्रव्य मन्त्र तन्त्र ऋत्विज् अग्नि देवता यजमान क्रतु यज्ञ धर्म यह सब कृष्णप्रय है १० सो साक्षात् परब्रह्म भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र इन्द्रिय जों पहुँचे नहीं तिनको खोटी जिनकी बुद्धि भरणरर्मा देह की आत्मा माने ऐसे ब्राह्मण मनुष्यजातिके अवज्ञा करतभये ११ श्रीशुकदेवजी कहैं कि हे परंतप अर्थात् शुकनके सापके करनबारे राजा परीक्षित ! वे ब्राह्मण देखेंगे अथवा नहीं ऐसे भी न कहतभये गोप निराश दोषके बगदिके राम कृष्णते तैसेही कहतभये कि भले दुष्टनके पास भेज देखेंगे अथवा न देखेंगे कुब्ज भी न कही १२ जगत्के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र गोपनकी बात सुनिके लोकनकी रीति

दुष्यति ८ इति ते भगवद्वाच्यां श्रुयन्तोऽपिनशुश्रुवुः ॥ क्षुद्राशाभूरिर्कर्मणोवालिशबृद्धमानिनः ६ देशः कालः पृथग्द्रव्यमन्त्रतन्त्रर्विजोऽग्नयः ॥ देव तायजमानश्च क्रतुर्धर्मश्चान्मयः १० तं ब्रह्म परमं साक्षाद्भगवन्तमधोक्षजम् ॥ मनुष्यदृष्ट्यादुष्प्रज्ञामत्यार्यात्मानो न मे निरे ११ नेत्यदो भितिप्रोचुर्ननेति च परन्तप ॥ गोपानिराशाः प्रत्येत्य तथोचुः कृष्णरामयोः १२ तदुपाकर्ण्य भगवान् प्रहस्य जगदीश्वरः ॥ व्याजहार पुनर्गोपान् दर्शयेल्लौकिकीं गतिम् १३ मां ज्ञापयत पत्नीभ्यः ससङ्कर्षणमागतम् ॥ दास्यन्तिकाममन्त्रं वः स्निग्धमय्युपिताधिया १४ गत्वाऽथ पत्नीशालायां दृष्ट्वाऽऽसीनाः स्वलङ्कृताः ॥ नत्वाद्विज सतीर्गोपाः प्रश्निता इदमब्रुवन् १५ नमो वो विप्रपत्नीभ्यो निबोधत वचांसि नः ॥ इतोऽविदुरे चरता कृष्णेनेहे पितावयम् १६ गाश्चारयन्सगोपालैः सरामोदूरमागतः ॥ बुभुक्षितस्य तस्यान्नं सानुगस्य प्रदीयताम् १७ श्रुत्वाऽन्यतमुपाया तं नित्यं तद्दर्शनं तस्मिन् ॥ तत्कथां क्षिप्तमनसो बभूवुर्जातसंभ्रमाः १८ चतुर्विधं हृणुणमन्नमादाय भाजनैः ॥ अभिसस्युः प्रियं सर्वाः समुद्रमिव निम्नगाः १९ निधिप्रमानाः पतिभिर्भ्रातृभिर्वन्धुभिः सुतैः ॥ भगवत्युत्तमश्लोके दीर्घश्रुत

दिखाय के हंसिके फेरि गोपनते कहतभये अपनो कामकरो जिनको इच्छा है ते खेद नहीं माने हैं कौन ऐसी मागनवारो है जाको मानभंग नहीं होय है १२ संकर्षण भय्यासहित कृष्णचन्द्र आयें हैं यह मेरी बात ब्राह्मणनकी स्त्रीन ते कहो जायके वे तुमको बहुतसी सामग्री भोजनकू देखेंगी शरीर ते वे घनमें रहें हैं मन तो उनको भरे विविही लागि रहो है याही ते मोमें उनको बड़ो प्यार है १५ श्रीकृष्णके कहे पीछे स्त्री जहा शृंगारकरे वैठीरहीं तहा सभामें गोप जायके तिनकूं देखिके ब्राह्मणनकी स्त्रीन कूं नमस्कार करिके अधीनतापूर्वक यह बोलत भये १५ हे ब्राह्मणन की स्त्रियो ! तुम को नमस्कार है हमारी बात सुनो यहा ते समीप कृष्ण बैठे है तिनने हमें भेजे है १६ गोप और बलदेवजी भय्याको संगलैके गाँचरावत चरावत दूरि आयायें हैं सो वह भूले है वाके मित्र हम भूले हैं तुम कलु भोजनकी सामग्री देउ १७ नित्य श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शनकी चाहना जिनके लागि रही है तिनही बात अबण करिके हरिगये हैं मन जिनके वै ब्राह्मणन की स्त्री श्रीकृष्णचन्द्र कूं आयो सुनिके हर्षवती होतिभई १८ वड़े वड़े पावन में सुन्दर सुगन्धि जायें आवैं ऐसी चार प्रकारकी सामग्री भय्य-भोज्य-लेण-चोष्य-अर्थात् चना चवेना रोटी पूरी भय्य-दालि भात इत्यादिक

भोज्य-कही क्षीर इत्यादिक लेख-गौड़ो आम इत्यादिक चोष्य इनको लैके सत्र ब्राह्मणनकी स्त्री प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र के पास आवति भई जैसे नदी समुद्र के सम्मुख उमड़ उमड़ के जाय है । ९ पति भय्या वन्धु पुत्रनते मनेकरी तथापि उत्तम जिनको यश ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् में बहुत दिनते गुण सुनिके मन जिनको लगयो वे ब्राह्मणनकी स्त्री अशोक वृक्ष के नये पल्लवन करि शोभा-यमान जो यमुनाजी के समीप वाग है तामें गोपन कूं और वड़े भय्या बलदेवभी कूं सग लिये श्रीकृष्णचन्द्र डोलै हैं तिनको दृष्टि करिके देखत भई २० । २१ कैसे श्रीकृष्णको देखो है ताको वर्णन करे हैं श्यामसुन्दर स्वरूप सुवर्णकी तुल्य है रंग जाको ऐसे पीताम्बर कूं पहिरे वनके फूल माला मोरपुच्छ स्वरिया गेरू पात इन करिके शोभायमान नटकी तुल्य जिनको रूप है मित्र के कन्या पै एक हाथधरे दूसरे हाथ सूं कमल गुमावै कानन में कमल के फूल उरसे अलकें छूटिके कपोलन पै आरही मन्द मन्द जिनकी मुसकानि ऐसे श्रीकृष्णको दर्शन करति भई २२ बहुत दिन तें सुने जे प्यारे के गुण तेई भये कर्णफूल तिन सूं जा श्रीकृष्णचन्द्र पै मन जिनके लागि रहे हैं वे ब्राह्मणन की स्त्री दर्शनकरे पीछे तिन श्रीकृष्णचन्द्र कूं नेत्रद्वारा अन्तःकरण में लजायके

छुनाशयाः २० यमुनोपवनेऽशोकनवपल्लवमण्डिते ॥ विचरन्तं वृंतं गौपैः साग्रजं ददृशुः स्त्रियः २१ श्यामं हिरण्यपरिधिं विनमाल्य च हं धातुप्रवालनटपमनुज तां मे ॥ विन्यस्तहस्तमितरेण धुनानमञ्जं कर्णोत्पलालकफोलमुखाब्जहासम् २२ प्रायः श्रुतप्रियतमो दयकर्मणैर्यैस्मिन्निमग्नमनसस्तमथाक्षिरन्ध्रैः ॥ अन्तःप्रवेश्य सुचिरं परिभ्यतां प्राज्ञं यथाऽभिमतयो विजुहोरेन्द्र २३ तास्तथा त्यक्त सर्वांशः प्राप्ता आत्मदिदृक्षया ॥ विज्ञाया खिलदृग्दृष्टा ग्राह्यप्रहसिता ननः २४ स्वागतं वो महाभागा आस्यतां कत्रामकिम् ॥ यन्नो दिदृक्षया प्राप्ता उपपन्ना मिदं हि वः २५ नन्वच्छामयि कुर्वन्ति कुशलाः स्वार्थदर्शनाः ॥ अहेतु क्यव्यवहितं भक्तिमात्मप्रियेयथा २६ प्राणबुद्धि मनः स्वात्मदारापत्यधनादयः ॥ यत्सम्पर्कादिप्रिया आसंस्ततः को न्वपरः प्रियः २७ तद्यातदेव यजनं पतयो वोद्विजातयः ॥ स्वसन्नं पारयिष्यन्ति युष्माभिर्गृहभेधिनाः २८ पत्न्यज्जुः ॥ भव विभोऽहं ति भगवान् गदितुं नृशंसं सर्यं कुरुष्व निगमंतवपादमूलम् ॥ प्राप्ता व

बहुत वेर ताई आलिगन करिके हे राजन् परीक्षित ! अपने तापको त्यागत भई दृष्टान्त अद्वैतगुच्छि हैं ते सुगुप्ति अवस्थाकी साक्षी हैं ताकूं आलिगन करिके और ताही में लीन होयके जैसे तापकूं त्या-गे हैं २३ पुत्रादिक गृहादिकन की आशा जिनने छोड़ दी अपने दर्शन करिवेके लिये आई जे ब्राह्मणनकी स्त्री हैं तिनकूं जानिके सत्रकी बुद्धि देखनवारे श्रीकृष्णचन्द्र हैंसिके बोलत भये २४ हे वड़ भागिनियो ! तुम भले आई आबो हम तुम्हारी कहा सत्कार करें जो हमारे दर्शन करिवे को आई हो यह तुमको योग्य है २५ अपने अर्थ कूं देखनवारे विवेकी पुरुष आत्मा प्यारो जो भैं हूं ता मो में फलकी अनिच्छा करिके निरन्तर भक्ति करें हैं २६ प्राण बुद्धि मन अपनो देख स्त्री पुत्र धनकूं आदि लैके सत्र वस्तु जा आत्माके सम्बन्धते प्यारी लागे है ता आत्माते परे और कौन प्रिय है २७ ता कारण हे सुशीलाओ ! तुम अपने यज्ञ में जाओ गृहस्थ तुम्हारे पति ब्राह्मण तुम जाउगी तब अपने यज्ञको पूर्ण करेंगे २८ या प्रकार कृष्णचन्द्र को बचन सुनिके ब्राह्मणन की पत्नी कहति भई हे महाराज ! आप ऐसे कठोर बचन कहिवेके योग्य नहीं हो ' नमो भक्ताः भण्यन्ति ' अर्थात् भरे भक्तनको नाश नहीं होय है यह गीता में लिखा है ' न स पुनरावर्तते ' अर्थात् मोको प्राप्त होयके फेर

नहीं आवै है यह आपकी आज्ञा है ताको सत्य करो तुमने अपने चरणते टुकराई दीनी जो तुलसी की माला ताई बड़े आदर ते शिर पै चढ़ायवे के लिये सब भय्या वन्नून कुं त्यागिके हग तुम्हारे चरणके नीचे आई है २६ हम जायके कहा करे हमारे पति माता पिता पुत्र भय्या वन्नू और अपने प्यारे कोई अंगीकार नहीं करेंगे ता कारणते तुम्हारे चरणारविन्द में हमारे देह परे हैं स्वर्गादिकहूँ जो सुख नहीं चाहे हैं हे काम लोभ भयादिक शत्रुनके दण्ड देनवारे ! हमको अपने दास्यभाव देउ ३० या प्रकार सुनिके श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् बोले पति तुमको दोष नहीं लगावेंगे माता पिता भय्या पुत्रादिक भी दोष नहीं लगावेंगे मेरी आज्ञा जिनको भई ऐसे लोक भी दोष नहीं लगावेंगे आकाश में देस्ताहू घर कुं जाउ ऐसे कहत भये ३१ या संसार में शरीर तो स्पर्श भये ते मीति नहीं रहे है स्नेह नहीं बड़े है या कारण तुम घरमें रहि के मन मोमें लगावो शीघ्र मोको पावोगी ३२ मेरे स्मरण करे ते दर्शन ध्यान करे ते निरन्तर

यंतुलसिदामपदामृष्टकैशौर्निवोदमलिलङ्घयसमस्तवन्नू २६ गृह्णन्तिनोनपतयः पितरौ मुतावानभ्रातृवन्धुमुहदः कुतएवचान्ये ॥ तस्माद्धनरथपदयोः पतिनात्मनानोन्याभवेद्वतिराग्निदमतद्विधेहि ३० श्रीभगवानुवाच ॥ पतयोनाभ्यमूयेन् पितृभ्रातृमुतादयः ॥ लोकाश्चैयमेयोपेता देवाअप्यनुमन्ते ३१ नभीतयेऽनुगमाय ह्यङ्गसङ्गो नृणां मिह ॥ तन्मनोभयियुञ्जाना आचिरान्मामवाप्स्यथ ३२ स्मरणादर्शनाद्धयानान्मयिभावो नुकीर्त्तनात् ॥ ननथा सन्निकर्षेण प्रतियातततो गृहान् ३३ श्रीशुक उवाच ॥ इत्युक्त्वा मुनिपत्न्यस्तायज्ञवाटं पुनर्गताः ॥ ते चानसूयवः स्वाभिः स्त्रीभिः सञ्चमपारयन् ३४ तत्रैकाविधृताभर्त्रा भगवन्तं यथाश्रुतम् ॥ हृदोपगृह्य विजहौ देहं कर्मानुबन्धनम् ३५ भगवानपि गोविन्दस्तेनैवाज्ञेन गोपकान् ॥ चतुर्विधेनाशयित्वा स्वयञ्च बुभुजे प्रभुः ३६ एवं लीलानरवपुर्नलोकमनशीलयन् ॥ रेभे गो गोप गोपीनारमयन् रूपवाक्कृतैः ३७ अथानुस्मृत्य विप्रास्ते अन्वनप्यनुरुतनागसः ॥ यद्विश्ये श्वरयोर्वाञ्जामहन्मनविडम्बयोः ३८ दृष्ट्वा स्त्रीणां भगवति कृष्णे भक्तिमलौकिकीम् ॥ आरामानं च तयाहीनमनुत्साव्यगर्हयन् ३९ धिरजन्मनस्त्रिद्वि

कीर्त्तन करे ते जैसे मो में भाव होय है तैसे पास रहे ते नहीं होय है ताते तुम शीघ्र अपने घरकों जावो ३३ श्रीशुकदेवजी कहे हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र ने कही तब ये यज्ञ करनवारे ब्राह्मणन की स्त्री फेरि यज्ञ जहा होतहो तदा आवति भई दोष जिनने नहीं लगायो वे ब्राह्मण अपनी स्त्रीनको संगलैके यज्ञ पूर्ण करत भये ३४ तहां एक ब्राह्मण ने अपनी स्त्री रोमी बोने जैसे श्रीकृष्ण भगवान् को रूप कानन ते सुनो तैसे ध्यान करि हृदय में आलिंगन करिके कर्मनके अधीन जो देह है ताई छोड़त भई ३५ गौवन के पालन करनवारे जो समर्थ श्रीकृष्ण भगवान् हैं सो भक्त्य भोज्य लेख चोष्य चार प्रकार की सामग्रीन कुं गोपन को भोजन करायके आपहू भोजन करत भये ३६ या प्रकार लीला करिके मनुष्य रूप को धरिके लोकन कैसो आचरण करिके गो गोप गोपीनकुं रूप वाणी चरित्रनसू आनन्द देत आपहू रमण करत भये ३७ याँके पीछे अपराध जिनने करो ऐसे ब्राह्मण स्मरण करिके दुःख पावतभये मनुष्य को आचरण करे ऐसे श्रीकृष्ण वल्लदेव तिनके पागिबे को नहीं सुततभये ३८ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र में स्त्रीनकी अलौकिक भक्ति देखिके और अपने को भक्तिरहित देखिके दुःखित होयके अपनी गिन्टा करत भये ३९ शुद्ध



माता पिता ते सावित्री यज्ञोपवीत भये ते-यज्ञकी दीक्षा लिये ते यह तीन प्रकार की हमारी जन्म है ताकू धिक्कार है और हमारी व्रत करिवे कू बहुत शास्त्र पढ़िबे कू हमारे कुल कू हमारे कर्मन की चतुराई कू धिक्कार है क्यों हम परमेश्वर ते विमुख होयगये ४० निरचय भगवान् की माया योगीन कौ भुलावनवारी है या माया सँ मनुष्यन में गुरु ब्राह्मण जो हम है ते स्वार्थ में मोहित होत भये ४१ अहो बड़ो आश्चर्य है जगत् के गुरु श्रीकृष्णचन्द्र में स्त्रीन की नैसी भक्ति भई है जो भक्ति घर जिनकी नाम ऐसी मृत्युकी फासीनकू काटत भई ४२ इन स्त्रीनके यज्ञोपवीत नहीं होय गुरुकुल में वास भी नहीं करें तप और आत्मा को विचारहू नहीं करें पवित्रहू नहीं रहें अच्चे कर्मन कू नहीं करें ४३ तथापि उत्तम है यश जिनकी ऐसे योगेश्वरनके ईश्वर भगवान् है तिनमें होय गुरुकुल में वास भी नहीं करें तप और आत्मा को विचारहू नहीं रहें अच्चे कर्मन कू नहीं करें ४४ निरचय करिके अपने अर्थ को जाने नहीं घरके व्यापार में भूले रहें जे हम है तिनकू साधुन दारी न टारै ऐसी भक्ति होत भई स्तान सन्ध्या जप तप करें जो हम हैं तिनको भक्ति न होतभई ४४ निरचय करिके अपने अर्थ को जाने नहीं घरके व्यापार में भूले रहें जे हम है तिनकू साधुन

द्वां धिग्रन्तं धिग्वहुन्नताम् ॥ धिक्कुलं धिक्क्रियादाक्ष्यं विमुखायेत्वधोक्षजे ४० नूनं भगवतो माया योगिनामपिमोहिनी ॥ यद्वयंगुरवोनृणां स्वार्थमुह्यामहे द्विजाः ४१ अहो पश्यतनारीणामपिकृष्णेजगद्गुरौ ॥ दुरन्तभावं योगोऽन्विष्य न मृत्युपाशान् गृहाभिधान् ४२ नासां द्विजाति संस्कारो न निवासो गुरावपि ॥ नतपोनात्ममीमांसा न शौचं न क्रियाः शुभाः ४३ अथापि ह्युत्तमश्लोके कृष्णे योगेश्वरेश्वरे ॥ भक्तिर्द्विदानचास्माकं संस्कारादिमतामपि ४४ ननु स्वाभि विमूढानां प्रमत्तानां गृहे हया ॥ अहोनः स्मारयामास गोपवाक्यैः सतांगतिः ४५ अन्यथा पूर्णकामस्य कैवल्ययाद्याशिपापतेः ॥ ईशितव्यैः किमस्माभि रीशस्यैतद्विडम्बनम् ४६ हित्वाऽन्यान् भजते यं श्रीः पादस्पर्शाशयाऽसकृत् ॥ आत्मदोषापवर्गेण तद्याच्चाजनमोहिनी ४७ देशः कालः पृथग्द्वयं मन्त्रतन्त्रं त्विजोग्नयः ॥ देवतायजमानश्च क्रतुर्धर्मश्च यन्मयः ४८ स एष भगवान् साक्षाद्विष्णुर्योगेश्वरेश्वरः ॥ जातो यदुष्वित्यश्रुण्मह्यपि मूढानविद्महे ४९ अहो वयं धन्यतमायेपांनस्तादृशीः स्त्रियः ॥ भक्त्या यासां भतिर्जाता अस्माकं निश्चलादरौ ५० नमस्तुभ्यं भगवते कृष्णाय अकुण्ठमेधसे ॥ यन्माया मोहितधि

की गति श्रीकृष्णचन्द्र गोपन के वचन सुनिके सुधि करावत भये ४५ पूर्ण जिनको मनोरथ मोक्ष कू आदि लेके सब मनोरथन के पति श्रीकृष्ण है तिनकू ईश्वर के वशीयूत जे जीव हम तिनसू कहा प्रयोजन है भात को मागिवो यह तौ ईश्वरको खेला है ४६ लक्ष्मी ब्रह्मादिकन कौ ओढ़िके चरणारविन्द के स्पर्शकी चाहना करिके अपनो चञ्चलता दोष दूर करवे के लिये जिनको सदा भजनकरे है तिन श्रीकृष्णचन्द्र को मागिवो जनन को मोह करनवारी है ४७ देश काल न्यारो न्यारो चर पुरोडाशादिक द्रव्य मन्त्र तन्त्र ऋत्विज् अग्नि देवता यजमान यज्ञ धर्म यह सब कृष्णमय है सो साक्षात् भगवान् विष्णु योगेश्वरन के ईश्वर यादवन में आयेके जनो है यह बात सुनीही तौ भी हम मूर्ख अज्ञानी जानत न भये ४८ ४९ कोई ब्राह्मण कहनलगे अहो हम बड़े धन्य है हमारे ऐसी भक्तिमयी स्त्री है जिनकी भक्ति सू हमारे भी हरि भगवान् में भक्ति होतभई ५० नहीं कुण्ठित है बुद्धि जिनकी ऐसे भगवान् जो श्रीकृष्णचन्द्र तुमहो तिनकू नमस्कार है जिनकी

पायासुं मोहित है बुद्धि जिनकी ऐसे हम कर्मन में भटकतैहै ५१ अपना माया करि मोहित है चित्त जिनको और नहीं जानी है प्रभाव जिनको ऐसे जो हम हैं तिनको अपराध श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् ज्ञप्ता करैगे ५२ श्रीकृष्णचन्द्र को कियो है अपराध जिनने ऐसे ब्राह्मण अपने अपराधकी सुधि करिके कृष्ण बलदेवके दर्शन करियेकी इच्छा भई तथापि कंसके भयते न जात भये ५३ ॥ इति श्रीमन्महाभगवत्तार्यकृपियथादशमस्कन्धेवृक्षपत्न्युद्धरणं नाम नवोविंशोऽध्यायः २३ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

(चतुर्विंशेस्कन्धस्य मखं व्यावर्त्य हेतुभिः ॥ कृष्णः प्रवर्तया मास गोवर्द्धनमहेतुत्वम् १ युराणा क्रियागर्भ निरस्य स्वः सुरोपुच ॥ मयमद भद्राय तन्मखं सगवारयत् २ चौवीसयें अध्यायमें हेतुओं से इन्द्रके यज्ञको मनाकर कृष्णजी गोवर्द्धन के महोत्सवको प्रवृत्त करते भये १ और ब्राह्मणों की क्रियाके अधिमान को दूरकर इन्द्रके मदके भङ्ग करने के लिये इन्द्रकी यज्ञको नहीं कराते भये २ )

योऽध्यायः कर्मवर्त्मसु ५१ सर्वैर्न आद्यः पुरुषः स्वमाया मोहितात्मनाम् ॥ अविज्ञातानुभावानां क्षन्तुमर्हत्यतिक्रमम् ५२ इति स्वधामनुस्मृत्य कृष्णनेकन हेलनाः ॥ दिदृक्ष्वोऽप्यन्युनयोः कंसाद्रीतानचाचलन् ५३ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूनर्द्धियज्ञपत्न्युद्धरणं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ भगवानपितत्रैव बलदेवेन संयुतः ॥ अपश्यन्निवसन् गोपानिन्द्रयागकृतोद्यमान् १ तदभिज्ञोऽपि भगवान्सर्वोत्तमार्सर्वदर्शनः ॥ प्रश्रयाऽवनतोऽपृच्छद् वृद्धान्नन्दपुरोगमान् २ श्रीभगवानुवाच ॥ कथ्यतां मे पितः कोऽयं सम्भ्रमो व उपगतः ॥ किं फलं कस्य चोद्देशः केन वा साध्यते मखः ३ एतद्ब्रूहि गहान् कामो महांशु श्रुत्वा पितः ॥ नाहि गोप्यं हि साधूनां कृत्यं सर्वोत्तमनामिह ४ अस्त्यस्य परदृष्टीनामिन्द्रोदास्तविद्विषाम् ॥ उदासीनोऽरि वृद्धयर्थं आत्मवत्सुहृद्भ्यते ५ ज्ञात्वाऽज्ञात्वा च कर्माणि जनोऽयमनुतिष्ठति ॥ विदुषः कर्मसिद्धिः स्यात्तथानाविदुषो भवेत् ६ तत्र तावत्क्रियायोगो भवतां किं विचारितः ॥ अथ बालौ किकस्तन्मे पृच्छतः साधुभयताम् ७ नन्द उवाच ॥ पर्जन्यो भगवानिन्द्रो मेघास्तस्यात्ममूर्त्तयः ॥ तेऽभिवर्पन्ति भूतानां

श्रीशुकदेवजी कहे हैं श्रीकृष्ण भगवान् भयया बलदेव सहित वज में वास करत भये इन्द्रके यज्ञ करिये की त्पारी जिनने करी ऐसे गोपन कूं देखत भये १ समस्त जीवन के आत्मा भगवान् अर्थात् सवन में व्यापक याही ते सब बातन कों जानें ऐसे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो इन्द्रके यज्ञकी त्पारी होय रही है तथापि अधीनता सों नन्दरायजी जिनमें मुख्य ऐसे वृद्ध गोपन सों पूंजन भये २ श्रीभगवान् कहे हैं दे पिता ! तुमको कहा सम्भ्रम होय रखी है यह मेरे आगे कहे दृया सम्भ्रम नहीं है यज्ञ होयगो ऐसे कदाचित् पिता कहैं ताको उचर श्रीकृष्णचन्द्र देइ हैं यज्ञको कहा फल है और कौन देवता है कौन याके करिये को अधिकारी है कौन वस्तुन ते यज्ञ होय है ३ यह तुम मोसूं कदो दे पिता ! मेरी सुनिवे की इच्छा है या संसारमें सबके आत्मा ऐसे साधु हैं तिनको कर्म छिपायवे योग्य नहीं है ४ साधु के अपनो पराधो यह दृष्टि नहीं है मित्र उदासीन वैरी भी जिनके नहीं हैं उदासीन तो शत्रुकी तुल्य वर्जित है सो आत्माकी तुल्य कहा है याते भजनमें वर्जित नहीं है ५ यह गाणी जानिके और बिना जानिके कर्म करे है परन्तु जानिके जो कर्म्म करे है वाकूं जो फल मिले है तैसे बिना जाने कर्म करनवारे को नहीं मिले है ६ तथा यह जो नुम सब त्पारी यज्ञ

की करो हो सो शास्त्रकी रीतिसे करौहो अथवा लोकरीतिसे करौहो यह मै पूछूँहूँ भरे आगे भलेपकार कहो ७ पूर्व पुरुषनते चल्यो आयो है यह वात नन्दरायजी कहे हैं मेवरूप भगवान् इन्द्र है मेव वाकी प्यारी मूर्ति है वे मेव प्राणीनके करनवारो जो जीवन जल है ताकूँ वर्षा है ८ हे पुत्र ! मेधनको राजा ईश्वर इन्द्र है ताय हम औरहू सम्पूर्ण पुरुष ताके जलते उत्पदाभये जे अन्न हैं तिनसँ पूर्ण करे हैं ९ यज्ञकरे पीछे शेष जो अन्न है तासँ जीविका करिके धर्म करे है और धर्म श्रम काम इन कं सेवनकरे हैं उद्यम करनवारो जे पुरुष हैं तिनकूँ फलदाता इन्द्रही हैं १० जे पुरुष ऐसी परम्पराते चल्यो आयो जो धर्म है ताकूँ काम लोभ भय द्वेष ते त्यागि देई वे कल्याणकूँ नहीं पावे हैं ११ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजनपरीक्षित ! या प्रकार नन्दरायजी को वचन सुनिके और व्रजवासीनको वचन सुनिके इन्द्र के ऊपर क्रोध करिवे केलिये श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् पिताते बोलतभये १२ भगवान् कहे हैं कर्मनते जीव जन्मे है और कर्मनतेही देह त्यागे है और सुख दुःख भय कल्याण प्राणनंजीवनं पयः ८ तं तावयमन्ये च वार्युचां पतिमीश्वरम् ॥ द्रव्यैस्ते द्रव्यमासिद्धिर्यजन्ते क्रतुर्भिर्नराः ६ तच्छ्रेणोपजीवन्ति त्रिवर्गफलहेतवे ॥ पुंसां पुरुषकाराणां पर्जन्यः फलभावनः १० य एवं विमृजेद्धर्मं पारंपर्यागतं नरः ॥ कामाहो माद्रथाद्वैपातसवैनामोतिशोभनम् ११ श्रीशुकदेवाच ॥ वचो निशम्य नन्दस्य तथाऽन्येषां ब्रजौकसाम् ॥ इन्द्राय मन्युं जनयन् पितरं प्राह केशवः १२ श्रीभगवानुवाच ॥ कर्मणा जायते जन्तुः कर्मणैव विधीयते ॥ नित्यं नन्दस्य तत्त्वमसिद्धिं न ह्यन्यथाऽपि न ह्यकुरुः प्रभुर्हितः १४ किमिन्द्रेण ह भूतानां सुखं दुःखं भयं क्षेमं कर्मणैवाभिपद्यते १३ अस्ति चेदीश्वरः काश्चित् फलरूप्यन्यकर्मणाम् ॥ कर्तारं भजते सोऽपि न ह्यकुरुः प्रभुर्हितः १४ किमिन्द्रेण ह भूतानां स्वस्वकर्ममार्गानि वर्त्तन्ते ॥ अनीशेनान्यथा कर्तुं स्वभावविहितं नृणाम् १५ स्वभावतन्त्रो हि जनः स्वभावमनुवर्तते ॥ स्वभावस्थमिदं सर्वं स देवासुरमानुष १६ देहानुच्चावचान्तुः प्राप्योत्सृजति कर्मणा ॥ शत्रुर्भिन्नुदासीनः कर्षेव गुरुरीश्वरः १७ तस्मात्संपूजयेत् कर्म स्वभावस्थः स्वकर्मकृत् ॥ अज्ञसा येन वर्त्तेत ते देवाः स्य हि देवतम् १८ आजीवैकं नरं भावं यस्त्वन्यमुपजीवति ॥ न तस्माद्विन्दते क्षेमं जारनार्यमतीयथा १९ वर्त्तेत ब्रह्मणा विप्रो राजन्यो रक्षया भुवः ॥ वैश्यस्तु वार्त्ताया जीवेच्छद्द्रव्यं तद्विजसेवया २० कृपिवाणिज्यगोरक्षाकुसीदिदं न्यमुच्यते ॥ वार्त्ताचतुर्विधा तत्र वयंगोचरयोऽनिशम् २१ सत्त्वं रजः कर्मेतेही पावे है १३ कर्मन के फलको देनवारो जो कोई और ईश्वर है वह कर्म करे जो पुरुष तारीकूँ फल देई और जो कर्म नहीं करे ताकूँ फल नहीं देई १४ अपने अपने कर्मनके अनुसार कर्मेतेही पावे है १५ जीव स्वभाव के वश है और स्वभावही कूँ वर्त्ते जे प्राणी है तिनकूँ या संसारमें इन्द्रते कहा प्रयोजन है मनुष्यनके पूर्वजन्मके संस्कारते रच्यो जो कर्म है ताकूँ अन्यथा करिवे कूँ इन्द्रहू असमर्थ है १५ जीव स्वभाव के वश है और स्वभावही कूँ वर्त्ते है देवता असुर मनुष्यन सहित यह समस्त विश्व स्वभाव में रहे है १६ कर्मतेही यह जीव वळे छोटे देहकूँ पाइके छोड़े है कर्मही शत्रु मित्र उदासीन गुरु और ईश्वर है १७ तो कारण ते स्वभाव में स्थितहोय के अपने कर्मन कूँ करे ऐसे पुरुष कर्म की पूजा करे अनायासपूर्वक या पुरुष को निर्माह होय वही याको देवता है १८ जो पुरुष एक पदार्थ को सेवन करिके दूसरे को सेवन करे है गते यह पुरुष कल्याणको नहीं पावे है-दृष्टान्त-जैसे व्यभिचारिणी स्त्री परपुरुष को सेवन करिके कल्याण को नहीं पावे है १९ ब्राह्मण वेद पढ़िके जीविका करे जात्रिय पृथ्वी

की रक्षा करिके और वैश्य व्यापार करिके शूद्र ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य की सेवाकरे २० खेती और वाणिज्य गौकी रक्षा करनेो व्याज लेनेो यह चार प्रकारकी वैश्यकी जीविकाहै तिन चारों में हमारे तो सदा गौवनकी जीविकाहै २१ सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण इन तीनोंन में विश्वको पालन उत्पत्ति नाश होयहै रजोगुण सूं स्त्री पुरुष मिलिके नानामकार को जगत् उत्पन्न होइहै २२ रजोगुणके भेरे मेघ सर्वत्र जलकों वर्षावे है तिन जलन सूं प्रजा जीवैहै इन्द्र कहा करैहै २३ हमारे पुर देश ग्राम घर फलु नहीं है हे पिता ! वन हमारे घरहै और नित्य वनमें पर्वतन में वनेहै २४ ताते गौ ब्राह्मण गोवर्द्धन पर्वत इनके यज्ञको प्रारम्भ करो ये इन्द्र के यज्ञकी सामग्री हैं तिन सूं यज्ञ करो २५ खीर ते आदि लेके दालिपर्यन्त अनेकप्रकार की सामग्री करो गेहूं की पूरी पुआ कचौरी गोभा करो सम्पूर्ण दूधइकठौरो करो २६ वेदके पढ़नवारे ब्राह्मणहैं ते भलेप्रकार होम करो तिन ब्राह्मणनको बहुत प्रकारकी सामग्री गौ दक्षिणा तुम देउ २७ और जो अन्य चाण्डालसूं कचौरी गोभा करो २८

स्तमइति स्थित्युत्पत्त्यन्तहेतवः ॥ रजसोत्पद्यतेविश्वमन्योऽन्यंविधिंजगत् २२ रजसाचोदिताभेघावर्पन्मध्वूनिंमर्वतः ॥ प्रजास्तेवसिञ्च्यन्तिगेहेन्द्राकिं करिष्यति २३ ननःपुरोजनपदानग्रामानगृहावयम् ॥ वनौकसस्तातनित्यंवनशैलनिवासिनः २४ तस्माद्ब्रवां ब्राह्मणानामेश्वाभ्यतांमखः ॥ यइन्द्रया गसम्भारास्नैरयंसाध्यतांमखः २५ पच्यन्तांविविधाःपाकाः सूपान्ताःपायसादयः ॥ संयात्रापूषण्कुल्यः सर्वदोहश्चगृह्यताम् २६ हूयन्तामनयःसम्भयब्राह्मणैर्व्रह्मवादिभिः ॥ अन्नंबहुविधंतेभ्योदेयंवेधेनुदक्षिणाः २७ अन्येभ्यश्चाश्वचाण्डालपतितेभ्योयथाऽर्हतः ॥ यवसंचगवांदस्वागिरयेदीयतांवलिः २८ स्वलङ्कृताभुक्त्वन्तःस्वनुलिप्ताःसुवाससः ॥ प्रदक्षिणञ्चकुरुतगोविमानलपर्वतान् २९ एतन्मममंतातक्रियतांयदिरोचते ॥ अयंगोब्राह्मणादीनां मह्यं चदयितांमखः ३० श्रीशुक्रउवाच ॥ कालात्मनाभगवता शक्रदर्पजिघांसता ॥ प्रोक्तंनिशम्यनन्दाद्याः साध्यगृह्णन्ततद्वचः ३१ तथाचव्यदधुःसर्वं यथाऽहमधुसूदनः ॥ वाचयित्वास्वस्त्ययनं तद्रूयेणगिरिद्विजान् ३२ उपहृत्यवलीन्सर्वानाहृतायवसंगवाम् ॥ गोधनानिपुस्तृत्यगिरिञ्चक्रुःप्रदक्षिणम् ३३ अनांस्पनहृद्युक्कानि तेचारुह्यस्वलङ्कृताः ॥ गोप्यश्चकृष्णवीर्याणि गायन्त्यःसद्विजाशिपः ३४ कृष्णस्त्वन्यतरंरूपं गोपविश्रमभयेगतः ॥ शैलोऽस्मी आदिलैके पतितपर्यन्त सर्वको यथायोग्य भोजन करावो गौवनकों घास देके गोवर्द्धन पर्वत कों बलिदेउ २८ सुन्दर आर्यपण पहिरके भोजनकरिके शृंगार करिके गौ ब्राह्मण अग्निपर्वतकी परिक्रमा करो २९ हे पिता ! यह भेरो मत है जो तुपको अच्छालगै तो तुम करो यह यज्ञ गौ ब्राह्मण गोवर्द्धन पर्वतकूं प्यारोलगे ३० इन्द्रको गर्व दूरि करिके के छिथे कालरूप भगवान् को दखो सुनिके नन्दादिक समस्तव्रजवासी तिनको वचन भले प्रकार मानतभये ३१ जैसे मधुसूदन भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने कह्यो तैसेही सन व्रजवासी करतभये स्वस्तिवाचन वैचायके सम्पूर्ण इन्द्रके यज्ञ की सामग्री सूं पर्वत द्विन ब्राह्मणनकूं वासदेके आदर्युक्त व्रजवासी गौवनकूं आगे करिके गोवर्द्धन पर्वत की परिक्रमा देतभये ३२ । ३३ वे व्रजवासी वन उन के वैल जिनमें जुते ऐंमे गाड़न में चडिके और गोपी हैं तेज गाड़नमें चडिके श्रीकृष्णचन्द्र की लीलान कूं गावत ब्राह्मण आशीर्वाद देत परिक्रमा करतभये ३४ श्रीकृष्णचन्द्र सब व्रजवासीन सहित अपनेरूपको आपसी नम-

रक्षार करत भये और यह कहत भये तुम देखो तो यह गोवर्द्धन पर्वतरूप धरिके हमारे ऊपर अनुग्रह करे है यह गोवर्द्धन पर्वत जे पुरूप वरमें रहि के याही अवज्ञा करे हैं निनकू संपादिक को रूप धरिके मारे है याते हमारी भलो होय गोवन को सुख होय याने गोवर्द्धन पर्वत कूं नमस्कार करे हैं ३५ । ३६ । ३७ यामकार सम्पूर्ण गोग वासुदेव भगवान् श्री आज्ञा ते गोवर्द्धन पर्वत गौ ब्रह्मण- नको यद्य भले प्रकार करिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं संग लैके व्रजकों आगत भये ३८ इति श्रीमहाभागवतार्थेच्छिण्यादजमनकन्वेत्तोर्द्धेन्द्रमयभगवत्पञ्चमुर्वैरुतितमोऽध्यायः २४ ॥

( पञ्चविंशोपाश के व्रजनाशायवर्षति ॥ उद्धृत्यगिरिमाधारादरत्नद्रोहकुन्तपभुः ? पत्नीसथे अयाय मे क्रोधमे व्रजके नाशके लिये इन्द्र के परमेने में कृष्णजी गोवर्द्धन पर्वत को आवाहन से उठारर गोकुलकी रक्षा करति भये ? ) श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजनृपाक्षिन् ! वह इन्द्र ता समय अपनी पूजा को लोप जानिके श्रीकृष्ण जिनके नाथ ऐभे नन्दरायजी मूं आदिलै के जे गोपैं तिनपै लोप

तिष्ठन्मूर्धुरि बलिमाददद्बृहद्वपुः ३५ तस्मै नमो ब्रजजनैः सहचक्रेऽऽत्मनाऽऽत्मने ॥ अहो पश्य त शैलोऽग्रे रूपी नोऽनुग्रहं वधात् ३६ एषोऽवजान नो मर्त्या न कामरूपी वनौकसः ॥ हन्ति ह्यस्मै नमस्यामः शर्मणे आत्मनो गवाम् ३७ इत्यदि गोलिजमखवासुदेव प्रणोदिताः ॥ यथा विधाय ते गोपाः सहकृष्णव्रजं ययुः ३८ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे प्रबुद्धेन्द्रमखभङ्गश्चतुर्विंशतितमोऽध्यायः २४ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ इन्द्रस्तदात्मनः पूजां विज्ञाय विह्वलान् ॥ गोपेभ्यः कृष्णनाथेभ्यो नन्ददादिभ्यश्च क्रोपसः १ गणं सार्वर्त्तकं नाम मेघानां चान्तकारिणाम् ॥ इन्द्रः प्राचोदयत्कुट्टोवाक्यं चोद्देशमान्युत २ अहो श्रीगदमाहात्म्यं गोपानां काननौकसाम् ॥ कृष्णं मर्त्यमुपाश्रित्य ये च्छुद्धे वै हेलनम् ३ यथा हृष्टैः कर्मभयैः कृतुभिर्नामनौनिभैः ॥ विद्यामान् वीक्षिर्को हित्वा तितीर्षन्ति भवार्णवम् ४ वाचालं बालिशं स्तब्धमङ्गपरिडमनिनम् ॥ कृष्णं मर्त्यमुपाश्रित्य गोपामेचक्रुर्गुणैश्च ५ एषा श्रिया बलिसानां कृष्णेनाधमायितात्मनाम् ॥ धुनुत श्रीमदस्तम्भं पश्यन् यत संशयम् ६ अहं भैरावतं नाम मारुहानुब्रजे व्रजम् ॥

मरुदणैर्बह्वीर्धैर्नन्दगोष्ठजिघामया ७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्थं मघवताऽऽजसामेघानिर्मकुवन्धनाः ॥ नन्दगोकुलमासौरेः पीडया गामुगेजसा ८ करतभयो १ प्रलय करनवारि सार्वर्त्तक नाम मेघगण है ताकूं भेजत भयो भैं इतर हैं यह जोके पनमें आभिमान यह इन्द्र यह उचन कहत भयो २ अहो बड़ो आश्चर्य है वनके रहन वारे गोवन के चरावन वारे म्नाल जाति तिनके कैसो धन को मद भयो है ये म्नाल जो मनुष्य कृष्ण है ताको आश्रय लै के मो देयता को अपराध करयो ३ जो दृढ़ नाग करिके नाच की तुल्य ये कर्मपय यज्ञ है तिनमूं आत्मा मो रत्नागण होय या विद्या कों छोड़िके संसार समुद्र के पार अनायास लग्यो चारै हैं ४ ये गोप वाचाल मूर्ख कहू को माने नहीं अज्ञानी अपने को परिडत माने ऐसे मनुष्य श्रीकृष्णचन्द्र को आश्रय लै के मरी अवज्ञा करत भये ५ ये गोप लक्ष्मी सें मत वारे कृष्णने जिनके देह लुप्त करे इनको धनमद भयो है ताथ दूरि करि देउ और इनके पशून को नाश करि देउ ६ भैं भी ऐरावत हाथी पै चढ़िके बड़े पराक्रमी मरुदण देवतान कूं संग लै के नन्द के व्रजको नाश करिने के लिये व्रजों तुम्हारे पीछे ही आऊं हैं ७ शुकदेवजी कहै हैं या प्रकार इन्द्रने जिनको आज्ञा करी





भरे हाथ ते पर्वत गिरि परेगो ह्य दवि जायेंगे ऐसो भय तुम माति मानो पवन वर्षा के भय ते दरपों मति तुम्हारी घेने रक्षा करीहै २१ श्रीकृष्णने भरोसो जिनकूं दियो वे व्रजवासी गौ गाड़ा पुरो-  
हितन कूं संग लैके आनन्दपूर्वक पर्वत के नीचे गढ़ेला में धसत भये २२ भूस प्यासको दुःख और सुखकी चाहना त्यागि के व्रजवासी ठाढ़े देखो करें सातादिन पर्यन्त पर्वत कू धारण करत भये  
और जहाँ ठाढ़े तहाँ ते तनकहूं न डिगत भये २३ इन्द्र श्रीकृष्णचन्द्र के प्रभाव कों सुनिके अति आश्चर्य्य मानि के गर्व जाको दूरि भयो नहीं सिद्ध भयोहै मनोरथ जाको ऐसो इन्द्र अपनेमेन  
कूं माने करत भयो २४ वादर जामें दूर होय गये सूर्य्य उदय होय आयो ऐसे आकाश कों देखिके भयानक पवन वर्षा कों थम्यो देखि के गोवर्द्धनधारी श्रीकृष्ण गोपन ते बोलत भये २५  
हे गोपो ! स्त्री धन बालकन कूं लैके तुम या पर्वत के नीचेते निकसो भयको त्यागो अब पवन वर्षा थमिगई नदीनके जलहू उतरिगये २६ श्रीकृष्ण ने इतनी बात कही ताके पीछे गोप अपने २

नत्रासइहवः कार्योमद्धस्नादिनिपातने ॥ वातवर्षभयेनालं तत्राणंविहितंहिवः २१ तथानिर्विविशुर्गतं कृष्णाश्वासितमानसाः ॥ यथावकाशंसधनाः

सब्रजाःसोपजीविनः २२ क्षुत्तृड्द्वयथांमुखापेक्षां हित्वातैर्व्रजवासिभिः ॥ वीक्ष्यमाणोदधावर्द्धिं समाहंनचलत्पदात् २३ कृष्णयोगानुगावंननिशाम्येन्द्रो

ऽतिविस्मितः ॥ निःस्तम्भोभ्रष्टसङ्कल्पःस्वान्मेघान्संन्यवारयत् २४ खंड्यभ्रमुदितादिर्यंवातवर्षवदारुणम् ॥ निशाम्योपरतंगोपान्गोवर्द्धनधरोऽब्रवीत् २५

निर्यातरयजतत्रासं गोपाःसस्त्रीधनार्भकाः ॥ उपारतंवातवर्षं व्युदप्रायाश्चनिम्नगाः २६ ततस्तेनिर्ययुर्गोपाः संस्वमादायगोधनम् ॥ शकटोढोपकरणं

स्त्रीबालस्थविराःशनैः २७ भगवानपितंशैलं स्वस्थानेपूर्ववत्प्रभुः ॥ पश्यतांसर्वभूतानां स्थापयामासलीलया २८ तंप्रेमेवगान्निभृताब्रजौकसो यथासमीयुः

परिभ्रमणादिभिः ॥ गोप्यश्चसस्नेहमपूजयन्मुदा दद्धयन्ननाद्रिर्ययुःसदाशिपः २९ यशोदारोहिणीनन्दोरामश्चवलिनानांवरः ॥ कृष्णमालिङ्गययुजुराशि

पःस्नेहकातराः ३० दिविदेवगणाःसाध्याः सिद्धगन्धर्व्वचारणाः ॥ तुष्टुवर्ममुच्युस्तुष्टाः पुष्पवर्पाणिपार्थिव ३१ शङ्खदुन्दुभयोनेहुर्दिविदेवप्रणोदिताः ॥

जगुर्गन्धर्वपतयस्तुम्बुरुप्रमुखानृप ३२ ततोऽनुक्तेःपशुपैःपरिश्रितोरानजन्स्वगोष्ठंसवलोब्रजद्धरिः ॥ तथाविधान्यस्यकृतानिगोपिका गायन्त्यईयुर्मदिता

गौवन के समूहद कूं लैके और गाड़ान में सब वस्तुधरिके स्त्री बालक छद् सब होले हीले निकसतभये २७ समर्थ जो भगवान् श्रीकृष्ण हैं सो भी ता पर्वत कूं अपने ठिकाने पै पहिलेकी तुल्य  
समस्त प्राणिन के देखते लीला करिके धरतभये २८ प्रेम ते भरे व्रजवासी सम्मुख आयके जैसे जाकूं उचितहो तैसे मिलतभये और स्नेह भरी जे गोपी तेऊ आनन्द सों दही अन्नत जलन सें  
पूजा करत आशीर्वाद देतभई २९ यशोदाजी रोहिणीजी नन्दरायजी और बलिन में बलवान् श्रीवलदेवजी श्रीकृष्णचन्द्र कूं छाती ते लगाय स्नेह ते कायर होय के आशीर्वाद देतभये ३० शुभदेव  
जी कहैं हे राजन् परीक्षित ! स्वर्ग में देवतानके गण साध्यगण सिद्ध गन्धर्व्व चारण सन्तुष्टहोय के फूलनकी वर्षा करतभये ३१ हे राजन् परीक्षित ! स्वर्गके देवता शङ्ख नगरे वजावत भये और  
तुंडुव जिनमें मुख्य ऐसे गन्धर्व्वपति गावतभये ३२ ता पीछे हे राजन् परीक्षित ! बलदेवसहित श्रीकृष्णचन्द्र प्यारे मित्रन कूं संगलैके व्रज में आवतभये और आनन्द जिनके भयो ऐसी गोपीन के

हृदय कूं आनन्द देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र के गोवर्द्धन उठावे ते आदिले के चरित्रन कूं गावतभई ३३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धेपूर्वाद्धिगोवर्द्धनोद्धरणनामपञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥  
(पद्विंशोविंशितामगोपाकृष्णस्याद्भुतकर्माभिः ॥ नन्दोर्गोक्तिमाश्रान्यतदैश्वर्यमवर्णयत् १ छब्बीसवें अध्याय में नन्दजी कृष्णजी के अद्भुत कर्मों से विस्मययुक्त गोपों को गंजी के बचन सुनाकर कृष्णजी के ऐश्वर्यको वर्णन करते भये ?) श्रीशुकदेवजी करे हैं हे राजन् परीक्षित ! गोपों ते गोवर्द्धन उठाववे कूं आदिले के जे श्रीकृष्णचन्द्र के कर्म हैं तिन्हें देखिके प्रभाव जानि के ब्रजवासी बड़ो आश्चर्य मानिके नन्दरायजी के पास आय के बोलत भये ? या बालक के बड़े अद्भुत चरित्र हैं और ग्राम के रहनवारे हम तिनके आयके अपने योग्य नहीं ऐसी जन्म कैसे कियो है २ जो सात वर्षको बालक एक हाथ ते लीला करिके हाथी जैसे कमल कूं उठावे हैं तैसे पर्वत कूं उठाव के कैसे ठाढ़ो होतभयो ? नेत्र हू तव तो नहीं खोलें ऐसे खोटे से बालक ने बड़ो जाको वेग

हृदिस्पृशः ३३ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वाद्धिगोवर्द्धनोद्धरणनाम पञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एवंविधानिकर्माणि गोपाः कृष्णस्य वीक्ष्यते ॥ अतर्दीर्यविदग्धोऽनुसमभ्येत्यमुविस्मिताः १ बालकस्य देतानि कर्माण्यत्यद्भुतानि वै ॥ कथमर्हस्यसौ जन्म ग्राम्येष्वामजुगुप्सितम् २ यः सप्तहायनो बालः कोणैकेन लीलया ॥ कथं विभ्राद्भिरिव ३ तोकेनामीलितक्षेपणपूनायामहौजसः ॥ पीतस्तनः सह्राणैः कालेनैव वयस्तनोः ४ हिन्वतोऽधः शयानस्य मास्यस्य चरणबुदक् ॥ अनोऽपतद्धिपर्यस्तं रुदतः प्रपदाहतम् ५ एरुहायन आसीनो द्वियमाणो विहायसा ॥ दैत्येन यस्तृणार्चमहन्कण्टग्रहातुरम् ६ क्वचिद्वैयङ्ग्यवस्तैन्ये मात्रावद्धतूलखले ॥ गच्छन्नर्जुनयोर्मध्ये बाहुभ्यां तावपातयत् ७ वने संचारयन्वत्सान्सरामो बालकैर्धृतः ॥ हन्तुं कामं वकंदोर्भा मुखतोऽरिमपाटयत् ८ वत्से पुत्रस्वरूपेण प्रविशन्तं जिघांसया ॥ हस्तान्यपातयत्तेन कपित्थानि च लीलया ९ हत्वा रासभूदेतं तद्वन्धूंश्च बलान्वितः ॥ चक्रे तालवन्क्षेमं परिक्कफलान्वितम् १० प्रलम्बधातयित्वो

वापूतना के स्तनको माणसहित कैसे पीवतभयो जैसे काल देह जीवन अथवा आयुर्वल कूं पीवै ४ तीन महीना को गाढ़ानके नीचे पालने में सोयो रोवत रोवत चरणनको ऊँचो उछारो चरणकी ठोकर लगिके गाड़ो उलटिके कैसे भिरत भयो ५ एक वर्ष दिन को यह कृष्ण अँगन में बैठयो हो दैत्य तृणावर्त आकाश में हरिके लैगयो ता दैत्य को गरो घोटि कैसे मारत भयो ६ कभऊँ एक मालन जुरायो हो तव माता यशोदा ने उलूल सों बाँधो तव यमलार्जुन वृत्त के बीच में आय के हाथन ते उनको कैसे उल्लारि के डारत भयो ७ वन में बलदेव और बालको सहित बछरा चरावत रहो ता समय ब्रह्मासुर मारिवे कों आयो ताकों दोनों हाथन ते चोंच पकरिके कैसे चीर डारत भयो ८ बछरान में बछरा को रूप धरिके मारिवे की इच्छा करिके आयो जो वत्सासुर हैं ताकूं मारि के चाके देह ते लीला करिके कैथ के वृत्त पे कैसे पटकत भयो ९ बलदेव सहित धेनुकासुर दैत्यको मारि और वाके संग के बन्धून कों मारि के फल जामें पक़ि रहे वा तालवन में कल्याण करतभये १०

बड़े बलवान् बलदेव जी हे तिन पै भयानक प्रलम्बासुर दैत्य कों मरवाय के और वन में आगि लगी ताते ब्रज के पशुन कूं छुड़ावत भये ११ अतिभयानक जाको विष ऐसे काली सर्प को दण्ड देके वाके घटकूं दूरि करिके जोरावरी दह में ते निक्कासि के यह श्रीकृष्ण यमुनाकूं निर्विष करत भयो १२ हे नन्द ! हम सब ब्रजवासीन कों अतिप्रनुराग है अर्थात् ऐसो प्यार है कैसोहू छुड़ावो न जाय और ता कृष्णहू को हम में स्वाभाविक प्यार कैसो है अर्थात् यह कृष्ण साको आत्मा है यह शंका होय है १३ सात वर्ष को बालक कहा इतनो बड़ो पर्वत उठावै ताते हे ब्रजनाथ ! तेरे पुत्रमें हमकूं शंका होइ है रुदाचित् परमेश्वर न होइ १४ या प्रकार गोपन की वार्त्ता सुनि के नन्दराय जी बोले हे गोपो ! मेरी बात सुनो तारूं या बालक में ते तुम्हारी शंका जाय गर्गचार्य या बालक को नाम धरिके मो को जे गुण बताय गये हैं ते ते श्रवण करो १५ या बालक के तीन रंग होत भये और युग युग में देह धरे हैं पहिले जाको अं बलेनवलशालिना ॥ अमोचयद्ब्रजपशून् गोपांश्चाणयवह्निनः ११ आशीविपनमाहीन्द्रं दमित्वाविमदं ददात् ॥ प्रसह्योद्भास्ययमुनाञ्चक्रेऽसौ निर्विषोदकाम् १२ दुस्त्यजश्चानुरागोऽस्मिन् सर्वपांनोब्रजौकसाश्च ॥ नन्दतेतनयेऽस्मासु तस्याप्यौत्पत्तिकः कथम् १३ कसमहायनोबालः कमहाद्रिविधारणम् ॥ ततो नो जायेतशङ्का ब्रजनाथतयात्मजे १४ नन्दउवाच ॥ श्रूयतां विचोगोपाव्येतुशङ्काचवोऽर्भके ॥ एनं कुमारमुद्दिश्य गर्गो मेयदुवाचह १५ वर्णाश्रयः किलास्यासन् गृह्णतोऽनुगंतनूः ॥ शुक्लो रक्तस्तथापीतइदानीं कृष्णतांगतः १६ प्रागयंवसुदेवस्य क्वचिज्जातस्तत्वात्मजः ॥ वामुदेवइति श्रीमानभिज्ञाः संप्रचक्षते १७ बहूनि सन्ति नामानि रूपाणि चमुतस्यते ॥ गुणकर्मानुरूपाणि तान्यहं वेदनो जनाः १८ एषः श्रेय आधास्यद्बोपगोछुलनन्दनः ॥ अनेन सर्वदुर्गाणि यूयमञ्जस्तर्हिष्यथ १९ पुरानेन ब्रजपते साधवो देवस्युपीडिताः ॥ अराज केरक्ष्यमाणा जिग्युर्दस्यूनसमोधिताः २० य एतस्मिन्महाभागाः प्रीतिकुर्वन्ति मानवाः ॥ नारयोऽभिभवन्त्येतान् विष्णुपक्षानि वामुराः २१ तस्मान्नन्दात्मजोऽयन्ते नारायणसमोगुणैः ॥ श्रिया कीर्त्या लुभावेन तत्कर्म मुनविस्मयः २२ इत्युद्धामांसमादिश्य गर्गो च स्वगृहंगते ॥ मन्ये नारायणस्यांशं कृष्णमक्लिष्टकारिणम् २३ इति नन्दवचः श्रुत्वा गर्गगीतं ब्रजौकश्चेन वर्णं हो फिर रक्तवर्ण हो फिर श्यामवर्ण हो अब जाने कृष्ण रूप धरो है १६ यह तुम्हारी पुत्र पहिले कवहूँ वसुदेव के जन्मो है याते जे कोई जाने हैं ते वामुदेव कहे हैं १७ तुम्हारे पुत्र के नाम बहुत हैं और रूपहू बहुत हैं जैसे जैसे यामें गुण होयेंगे तैसे तैसे कर्म करेंगे तिनके अनुसार नाम होयेंगे १८ यह तुम्हारी कल्याण करेगो और गोपन कूं गोपन कूं आनन्द देइगो या कृष्ण की सहाय ते तुम समस्त कष्टन ते सहन में छूटि जाउगे १९ हे ब्रजराज ! पहिले तुम्हारे पुत्र कृष्ण ने राजारहित पृथ्वी में चोरन ने सताये जे साधु तिनकी रक्षा करी तब साधु छिड़ि क्रमास होय के चोरन कूं जीतत भये २० जे बड़भागी पुरुष या कृष्ण में प्रीति करे हैं तिनकूं वरी नहीं सतावे हैं जेमे विष्णु जिनके रक्षा करनेवारे ऐसे देवतानकूं असुर नहीं सतावे हैं २१ ता कारण ते हे नन्द ! तुम्हारी यह पुत्र गुणन में शोभा में कीर्त्ति करिके प्रभाव करिके नारायण की तुल्य हैं याके कर्मन में आश्चर्य मत मानियो २२ या प्रकार साक्षात् गर्गचार्य मो ते



होइ हैं तुम्हारे काम लोभादिक तो नहीं हैं तथापि धर्मकी रक्षा करिवे के लिये और दुष्टन के मद दूरि करिवे के लिये तुम दण्ड देउहो ५ तुम जगत् के पिताहो गुरुहो ईश्वरहो जाको नाश नहीं ऐसे दण्ड के ग्रहण करनवारे कालरूप हो जीवन के हित करिवे के लिये और आप कू जगदीश्वर माने हैं तिनके मान दूरि करिवे के लिये अपनी इच्छा सूरूप धरिके लीला करो हो तुम्हारी लीलाही में हमारे मान दूरि होय जाय हैं ६ जो मो सारिले अक्षानी आपे कू जगत् के ईश्वर माने हैं ते भय के समय भय के दूर करनवारे तुमहो तिनको दर्शन करिके शीघ्रही ईश्वरत्व की मद त्यागे हैं और गर्व को छोड़िके तुम्हारी भक्ति कू करे हैं तुम्हारी सहजकी चेष्टा है सोई दुष्टन को दण्डरूप है ७ हे समर्थ ! ऐश्वर्य के मद में ह्विरहो तुम्हारे प्रभावकू न जानिके तुम्हारी अपराध कियो ऐसो मूढ़चित्त जो मैं हूँ ताके ऊपर जमाकरो हे ईश्वर ! फिरि मेरी ऐसी बुद्धि न होइ यह मैं प्रार्थना करूं हूँ ८ हे अघोक्षज अर्थात् इन्द्रियन करि जानिवे में नहीं आवो ! हे देव

मानं विधुन्वज्जगदीशमानिनाम् ६ येमद्विधाज्ञाजगदीशमानिनस्त्वां विक्षयकालेऽभयमाशुतनमदम् ॥ हित्वाऽर्धमार्गप्रभजन्यपस्मयाईहाखलानामपितेऽनुशासनम् ७ सत्वं ममैश्वर्यमदसुतस्य कृतागसस्तेऽविदुषः प्रभावम् ॥ क्षन्तुं प्रभोऽथाहं सिद्धचेतसो भवंपुनर्भूमतिरीशमेऽसती ८ तत्रावतारोऽयमधोक्षजेह स्वयं भराणामुरुभारजनमनाम् ॥ चमूपतीनामभवाय देव भवाय युष्मच्चरणानुवर्त्तिनाम् ९ नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महात्मने ॥ वासुदेवाय कृष्णाय सात्वतांपतये नमः १० स्वच्छन्दोपात्तदेहाय विशुद्धज्ञानमूर्तये ॥ सर्वस्मै सर्वबीजाय सर्वभूतात्मने नमः ११ मयेदं भगवन् गोष्ठनाशायासाखायुभिः ॥ चेष्टितं विहते यज्ञे मानिनातीव्रमन्युना १२ त्वयेशानुगृहीतोऽस्मि ध्वस्तस्तम्भो वृथोद्यमः ॥ ईश्वरं गुरुमात्मानं त्वामहं शरणं गतः १३ श्रीशुक उवाच ॥ एवंसङ्कीर्तितः कृष्णो मघोनाभगवानमुमु ॥ मेघगम्भीरयावाचा प्रहसन्निदमवर्षीत् १४ श्रीभगवानुवाच ॥ मयतेऽकारिमघवन् मत्प्रभङ्गोऽनुगृह्णता ॥ मदनुस्मृतये नित्यं मत्तस्येन्द्रश्रियाभृशम् १५ मां भैश्वर्यश्रीमदान्धोदण्डपाणिं न पश्यति ॥ तं ध्रंशयामि सम्पद्भ्यो यस्य चेच्छाम्यनुग्रहम् १६ गम्यतांशक्रम

अर्थीत् प्रकाशवान् ! या संसार में तुम्हारे जो अवतार हैं सो पृथ्वी को भार और बड़ो भार जिनते होय ऐसे सेना के पालन करनवारे जे मुख्य हैं तिनके मारिवे के कारण और तुम्हारे चरणन के सेवन करनवारे जे भक्त तिनके कल्याण के निमित्त आप हो ९ तुम जो भगवान् महात्मा पुरुष हो तुम्हारे अर्थ नपस्कार हैं शुद्ध अन्तःकरण के प्रकाशक भक्तनके रत्नक वासुदेव भगवान् ! श्रीकृष्ण जो तुमहो तुम्हारे अर्थ नमस्कार हैं १० अपने भक्तनके ऊपर कृपा करिवे के लिये देह जिनने घरो और शुद्ध ज्ञानरूपी जिनकी मूर्ति सर्वरूप सबके कारण सन प्राणीन के आत्मा जो तुमहो सो तुमकू नमस्कार हैं ११ हे भगवन् ! जब यज्ञ नाशकू प्राप्तभयो तब बड़ो जाके क्रोध ऐसो अभिमानी जो मैं हूँ ताने व्रज के नाश करिवे के लिये वर्षा करिवे योग्य नहीं हो सो करो १२ तुमने मोपै अनुग्रह करो मेरो गर्व दूरिहोय गयो लयम हूँ क्या भयो सबके ईश्वर आत्मा गुरु जो तुमहो तिनकी में शरण प्राप्तभयो १३ या प्रकार इन्द्र ने भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की स्तुतिकरी तब हैंसिके घेयकी तुल्य गर्ज के इन्द्र ते वोलतभये १४ भगवान् कहें हैं हे इन्द्र ! मैंने तेरे ऊपर अनुग्रह करिवे के लिये तू नित्यही इन्द्रकी शोभा करिके भूलि

रक्षो दो ताकूं सुधि करायवे के लिये मैं तेरे यज्ञको नाश करतभयो १५ ऐश्वर्यमद धनमद सूं आंधरो जो पुरुष है सो दयदको देनवारो जो मैं हूं ताकूं नर्धो देले है जाके ऊपर मैं कृपा करिये की इच्छा करूं हूं ता पुरुषकी सम्पत्ति हरिलेउहूं १६ हे इन्द्र ! अब तुम जावो तुम्हारी कल्याण हो अहंकार त्यागि के मेरी आज्ञा कूं करियो सावधान होके अपने अधिकार पै रहो १७ इन्द्र स्तुति करिचुको ताके पीछे उदार जाको चित्त ऐसी सुरभी गौ अपनी सन्तानसहित आयके गोपलगी जो ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकों नमस्कार करिके सम्बोधन देके बोलत भई १८ हे कृष्ण ! हे करिचुको ताके पीछे उदार जाको चित्त ऐसी सुरभी गौ अपनी सन्तानसहित आयके गोपलगी जो ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकों नमस्कार करिके सम्बोधन देके बोलत भई १८ हे कृष्ण ! हे महायोगिन ! हे विश्वकेआत्मा ! हे विश्वके उपजावनवारें ! हे अच्युत अर्थात् हे अखण्डरूप ! इन्द्रने तो हमें मारेही है परन्तु हे लोकनकेनाथ ! तुमने बचाये १९ हे जगत्केपति ! तुम हमारे श्रेष्ठ देवताहो और तुमहीं गौ ब्राह्मण के देवताहो और जे साबु हैं तिनके कल्याण के लिये हमारे इन्द्र होउ २० ब्रह्माके भरे हम तुम्हें अपने इन्द्र अभिके करोंगे हे विश्वके आत्मा ! पृथ्वी

द्रवः क्रियतां मेऽनुशासनम् ॥ स्थायतां स्वाधिकारेषु युक्तेर्वैस्तम्भवर्जितैः १७ अथाहमुरभिः कृष्णमभिवन्द्यमनस्विनी ॥ स्वसन्तानैरुपामन्य गोपुरुषिण मीश्वरम् १८ ॥ सुरभिरुवाच ॥ कृष्णकृष्णमहायोगिन् विश्वात्मन् विश्वसंभव ॥ भवतालोकनाथेन सनाथावयमच्युत १९ त्वनः परमकन्दैवं त्वनइन्द्रेज गत्पते ॥ भवायभवगोविन्देवानयेनसाधवः २० इन्द्रं नस्तवाऽभिषेक्ष्यामो ब्रह्मणानोदितावयम् ॥ अवतीर्णोऽसि विश्वात्मन् भूमेर्भारापनुत्तये २१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवं कृष्णमुपामन्य सुरभिः पयसाऽऽत्मनः ॥ जलैराकाशगङ्गायापैरावतकरोद्धतैः २२ इन्द्रः सुरर्विभिः साकं नोदितो देवमातृभिः ॥ अभय पिब्वतदाशार्हं गोविन्द इति चाभ्यधात् २३ तत्रागतास्तु बुरुनारदादयोगन्धर्वविद्याधरसिद्धचारणाः ॥ जगुर्यशो लोकमलापहं हरेः सुराङ्गनाः संननुर्मुदा निवताः २४ तन्तुष्टुर्देवनिकायकेतवो व्यवाकिंश्चान्द्रतपुष्टपृष्टिभिः ॥ लोकाः परानिर्घृतिमाशुब्रंक्ष्यो गावस्तदागमनयन्ययोजुताम् २५ नानारसौ घाः सरितो वृक्षा आसन्मधुस्रवाः ॥ अकृष्टपच्यौषधयोगिरयो विभ्रदुमणीन् २६ कृष्णे भिक्षिण्णतानि स्वस्वानि कुरुनन्दन ॥ निर्वैराग्य भवंस्तात क्रूराशयपि को भार उत्तारिये के लिये तुमने अवतार लियो है २१ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार कहिके श्रीकृष्णचन्द्रको वह कायधेनु अपने दुग्धते अभिके करतभई और दाशार्हं चो- तपन् श्रीकृष्णचन्द्रको अदिति सूं आदिलेके मातान ने भेल्यो ऐसो इन्द्र सो देवता ऋषिसहित आयके पैरावत की सूंइमें आकाशगंगाको जल है तासूं स्नान करावतभयो और गोविन्द यह नाम धरत भयो २२ । २३ ता समय आयें जे तुलु नारदजी ते आदिलेके गन्धर्व विद्याधर सिद्ध चारण हैं ते लोकनके पापनको दूरि करिये के लिये श्रीकृष्णचन्द्र के यशको गावतभये और अतिआनन्दित होयके देवांगना नृत्य करतभई २४ देवतानमें मुख्य जे हैं ते श्रीकृष्णचन्द्रकी स्तुति करतभये अद्भुतपुणनकी वर्षा करतभये तीनों लोक परमआनन्दकूं पावतभये ता समय गौधरतीकूं दूधते भिजोइत भई २५ श्रीकृष्णचन्द्र को जा समय गोविन्दाभिके भयो ता समय नदी अनेकतरहके रसनकी वहनवारी होतिभई और वृत्तनमें ते मदकी धारा बुवतिभई बिना जोते खेत आपधी पकतभये पर्वत अपनी गुफामें ते मणिन कूं वाहर निकास करि धरतभये २६ कौरवनके आनन्द के देनवारे श्रीकृष्णको गोविन्दाभिके भयो तासमय क्रूर जिनके स्वभाव ऐसे सिंहादिक जीवनके वैराभाव दूर होत



भये २७ या प्रकार गोकुल के रत्ता करनेवारे श्रीकृष्णचन्द्र कू गोविन्दाभिषेक करिके आज्ञा जा कू दीनी वह इन्द्र देवतानकू संग लेके स्वर्ग कू जातभयो २८ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे गोविन्दाधिषेको नाम सप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

(अष्टाविंशेतो नन्दानयनं वरुणात् ॥ वैकुण्ठदर्शनं चाथगोपानामनुवर्षते १ गोवर्द्धनं समुद्रतुल्यचशो कृत्वा सुरैस्वरम् ॥ नन्दानयनतः कृष्णो वरुणचशोऽनयत् २ अष्टादशैव अध्यायं कृष्णजी वरुणजी के स्थान ते नन्द जी को लिवा लाये हैं और गोपों को वैकुण्ठ का दर्शन दिया है यह वर्णन है १ गोवर्द्धन पर्वत को कृष्णजी उठाकर इन्द्र को वश में कर नन्दजी को वरुण के यहाँ से लाकर वरुण को वश में कर देते भये २) श्रीशुकदेवजी कहे हैं नन्दजी ने एकादशी के दिन निराहार व्रत करिके भगवान् को पूजन क्रियो दूसरे दिन द्वादशी दो बरी ही ता समय पारनो करिवे के लिये अरण्योदय ते पहिले राज्ञि में धर्मशास्त्र के बलते स्नान करिवे के लिये यमुना जलमें धसत भये १ तब वरुणजी का राजसदूत राज्ञि में आसुरी बेला में बैठेहुये जलमें जानकर नन्दजी निसर्गतः २७ इति गोकुलपतिगोविन्दमभिषिच्य सः ॥ अनुज्ञातो यथौश क्रोवुनो देवादिभिर्विचम २८ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे इन्द्रस्तुतिर्नाम सप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एकादश्यां निराहारः समभ्यर्च्य जनार्दनम् ॥ स्नातुं नन्दस्तु कालिन्ध्यां द्वादश्यां जलमाविशत् १ तंगृहीत्वाऽनयद्भृत्यो वरुणस्यासुरोऽन्तिकम् ॥ अविज्ञायामुर्वेलां प्रविष्टमुदकं निशि २ चुक्रुशुस्तमपश्यन्तः कृष्णरामेति गोपकाः ॥ भगवांस्तदुपश्रुत्य पितरं वरुणाहृतम् ॥ तदन्तिकं गतो राजन्स्वानामभयदो विभुः ३ प्राप्तं वीक्ष्य हृषीकेशं लोकपालः सपर्यया ॥ महत्या पूजयित्वा हतदर्शनमहोत्सवः ४ ॥ वरुणउवाच ॥ अद्य मे निभृतो देहोऽद्यैवार्थोऽधिगतः प्रभो ॥ त्वत्पादभोजो भगवन्नवापुः पारमध्वनः ५ नमस्तुभ्यं भगवते ब्रह्मणे परमात्मने ॥ नयत्र श्रूयते माया लोकसृष्टिविकल्पना ६ अजानता मामकेन मूढेनाकार्यवेदिना ॥ आनीतोऽयं तव पिता तद्भवान्क्षन्तुमर्हति ७ गमाप्यनुग्रहं कृष्ण कर्तुमर्हस्य शोषहृक् ॥ गोविन्दनीयता मे पितृते पितृ

को वरुणजी के पास पकड़ कर ले गया २ नन्दराय जी कू न देखिके गोप संगये ते हे कृष्ण ! हे राम ! ऐसे पुकारत भये ता समय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र पिताको वरुण हरिके ले गयो यह बात सुनिके हे राजन् परीक्षित ! अपने भक्तनकू अभयक्रे देनवारे समर्थ श्रीकृष्ण वरुण के पास जातभये ३ श्रीकृष्ण के दर्शन करे ते वड़ो जाके आनन्द भयो ऐसो लोकन को पाछनवारो वरुण है सो इन्द्रियन के ईश्वर श्रीकृष्ण कौ आयो देखि वड़ी पूजा की सामग्रीन में पूजा करिके बोलत भयो ४ वरुण कहे है आजही तुम्हारे दर्शनकरे ते मेरो जन्म सफल भयो हे समर्थ ! आज मोकू अर्थ की प्राप्ति भई हे भगवन् ! तुम्हारे चरणारविन्द को जो भजन करे ते ते संसार को पार मोक्ष है ताकू पावत भये ५ परिपूर्ण संभस्त जीवन के साक्षी जिनकी बराबर काहू को ऐश्वर्य नहीं ऐसे जो भगवान् हो तिनको नमस्कार है और जिनके स्वरूप में लोकन की जो सृष्टि है ताकी रचनवारी जो गया सो तुम में अविद्यमान सो रहे है ६ धर्मकी गहिमा कौ नहीं जाने कार्य कू नहीं जाने



करें ऐसे श्रीकृष्ण को दर्शन करिके परमानन्द देख तासू सुखी होय के वड़ो आनन्द मानतभये १७ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यार्थदशमस्कन्धेपूर्वोद्धनन्दमोक्षोनामाष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥ \* ॥  
 ( उनत्रिशेसुरासार्थमुक्तिप्रत्युक्तयोदरेः ॥ गोपीभीराससंरम्भे तस्यचान्तर्द्धिकीतुकम् ॥ जयतिश्रीपतिगोपीरासमण्डलमण्डनः २ उनतीसयें अध्याय में रास के लिये गोपियों से कृष्णजी की वक्ति प्रत्युक्ति वर्णन हैं और रास के संरम्भ में कृष्णजी के अन्तर्द्धान होजानेका कौतुक भी वर्णन है १ ब्रह्मादिकों के जीतने में आरुढ़ सूर्य कामदेव के अभिमान के नाश करनेवाले गोपियों के रासमण्डल के मण्डन लक्ष्मीपतिजीकी जयहो २ ) अथ श्रीशुक्देवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! गोपकन्यान ते जिन रात्रिनसी प्रतिष्ठा करीही वे शरद्भक्तुकी रात्रि प्राप्त होतभई कैसी है चमेली जिनमें फूलिही ऐसी रात्रिन कूं देखिके योगयाया को आभय लेके रमण करिवे के मनोरथ करतभये १ सुखदायक जो किरणें हैं तिनसूं पूर्वदिशा के मुख कों अरुणकरत ता समय चन्द्रमा उदय होतभयो—दृष्टान्त—जैसे परदेशते बहुतदिन में पुरुष आयके अपनी प्यारी के मुख पै केशर लगायके अरुण करै २ परिपूर्ण जाको मण्डल और लक्ष्मीके

श्रीशुकउवाच ॥ भगवानपितारात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ॥ वीक्ष्यरन्तुंमनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः १ तदोद्गराजःककुभःकरैर्मुलं प्राच्याविलि  
 म्पन्नरुणेनशन्तमैः ॥ सचर्पणीनामुदगाच्छुचोमृजन्प्रियःप्रियायाइवदीर्घदर्शनः २ दृष्ट्वाकुमुदन्तमखण्डमण्डलंरमाननाभंनवकुङ्कुमारुणम् ३ वनंचतत्को  
 मलगोभिरञ्जिनं जगौकलं वामदृशामनोहरम् ॥ निश्मग्यगीतंतदनङ्गवर्द्धनं ब्रजस्त्रियः कृष्णगृहीतमानसाः ॥ आजगमुरन्योऽन्यमलक्षितोद्यमाः सयत्र  
 काननोजवलोत्कण्डलाः ४ दुहन्त्योऽभिययुःकाश्चिद्वहोहिंस्त्रिवासस्तुकाः ॥ पयोऽधिश्चित्यसंयावमनुद्धास्यापराययुः ५ परिवेषयन्त्यस्तद्धित्वापाययन्त्यः  
 शिशून्पयः ॥ शुश्रूषन्त्यःपतीन्काश्चिदरनन्त्योऽपास्यभोजनम् ६ लिम्पन्त्यःप्रमृजन्त्योऽन्याअञ्जन्यःकाश्चलोचने ॥ व्यत्यस्तवस्त्राभरणाःकाश्चित्क  
 ण्णान्तिकंययुः ७ तावार्थमाणाःपतिभिःपतिभिर्भातवन्धुभिः ॥ गोविन्दापहृतात्मानोनन्यवर्तन्तमोहिताः ८ अन्तर्गृहगताःकाश्चिद्व्याघ्रोऽलब्धविनिर्ग

मुखकीसी जाकी कांति नवीन केशर की तुल्य अरुण ऐसे चन्द्रमा कूं देखिके और ताकी कोमल किरणन सूं रंगो जो हुन्दावन ताहि देखिके मनोहरहै दृष्टि जिनकी ऐसी स्त्रीन के मनको हरन-  
 वारो मधुर गीत गावतभये ३ प्रेमात्मक काम को बढ़ावनवारो जो गीत है ताथ श्रवण करिके श्रीकृष्णचन्द्र ने मन जिनके हरे वे व्रजकी स्त्री जहां पति कृष्ण हैं तहां आवतिभई और अमृकी च-  
 लेगी ऐसे आपुस में कहत शीघ्रता सूं चलीं तासूं कानन के कुण्डल जिनके हलत आये ४ उत्कण्ठा जिनके भई ऐसी कोई गोपी गौवनको दुहावत दोहनी कूं पटकिके आवतिभई और कोई गोपी  
 चूल्हे पै दूध ओटिवे कूं थरिके आवतिभई कोई गोपी चूल्हे पै रावड़ी चढाय ताको नहीं उतारिके आवतिभई ५ कोई पातर परोसी जव कानन में वंदीकी डेरसुनी तव छोटिके आवतिभई और कोई गोपी  
 अपने चालकनकों दूय प्यावैही उनको छोटिके आवति भई कोई गोपी अपने पतिनकी सेवा करैही उनकूं छोटिके आवतिभई कोई भोजन करतेसे चलीआई ६ कोई गोपी घरनकूं लीपततें कोई नेन  
 में अंजन लगावततें और कोई पांवन के गहने हाथनमें पहरिके और हाथनके पांवन में पहरि के और लहंगा ओटिके बोटनी पहरिके ओंकृष्णचन्द्र के पास जातभई ७ पति पिता माता आता

ज्ञातिन ने मने भी करी परन्तु श्रीकृष्णचन्द्र ने मन जिनके हरे वे गोपी नहीं मानतभई ८ कोई गोपी घरन में मूँढि दीनी निकसिबे को रस्ता न मिलो ता समय वे गोपी पहिले व्यान जिनको लग्यो हो वोके स्मरण ते ओल्लि मूँढिके फेर श्रीकृष्णचन्द्र को अन्तःकरण में ध्यान करतभई ९ सहारो न जाय ऐसे प्यारे के विरहरूप तीव्र ताप सों पाप जिनके दूरहोयगये और व्यान में प्राप्तभये जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनके आलिंगन करे ते जो सुख है तिनसे पुण्यवन्धन दूरहोयगये १० वे गोपी जारबुद्धि करिके परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्र कूं पाइके वन्धन जिनके कटिगये ऐसी गोपी गुणन को बन्यो जो देह ताकूं तत्कालही त्यागतभई ११ अथ राजा परीक्षित प्रश करे हैं कि हे महाराज ! गोपी श्रीकृष्णचन्द्र को अतिसुन्दर जानेहीं ब्रह्मरूप करिके नहीं जानेहीं गुणमय जिनकी बुद्धि उन गोपीन को गुणन को प्रवाह संसार कैसे छूटिगयो १२ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् ! यह बात मैंने तोते पहलेही कहीही शिशुपाल श्रीकृष्णचन्द्र मूंवर करत जैसे मुक्ति पाइगयो तैसे

माः ॥ कृष्णंतद्भावनायुक्तादभ्युर्भीलितलोचनाः ६ दुःसहप्रेष्ठविरहव्रितापधुताशुभाः ॥ ध्यानप्राप्ताभ्युताश्लेषनिर्वृत्त्याक्षीणमङ्गलाः १० तमेवपरमात्मानं जारबुद्ध्याऽपिसङ्गताः ॥ जहर्गुणमयंदेहं सद्यःप्रक्षीणवन्धनाः ११ राजोवाच ॥ कृष्णं विदुः परं कान्तं न तु ब्रह्मतया मुने ॥ गुणप्रवाहोपरमस्तासां गुणधियां क्रथम् १२ श्रीशुक उवाच ॥ उक्लं परस्तादेतत्ते वैद्यः सिद्धियथागतः ॥ द्विषन्नपि ह्युषीकेशं किमुताधोक्षजप्रियाः १३ नृणां निश्चयसार्थाय व्यक्तिर्भगवतो नृप ॥ अवयस्यस्याप्रमेयस्य निर्गुणस्य गुणात्मनः १४ कामं क्रोधं भयं स्नेहं मैत्र्यं सौहृदं मेव च ॥ नित्यं हरौ विदधतो यान्ति तन्मयतां हिते १५ न चैवं विस्मयः का र्थो भवता भगवत्पुजे ॥ योगेश्वरेश्वरैरुक्ते यत एतद्विमुच्यते १६ तादृशान्तिरकमायाता भगवान् ब्रजयोपितः ॥ अवदद्वदतां श्रेष्ठोवाचः पेशैर्विमोहयन् १७ श्रीभगवानुवाच ॥ स्वागतं वो महाभागाः प्रियं किं करवाणि वः ॥ ब्रजस्यानामयं कश्चिद्ब्रूता गमनकारणम् १८ रजन्येषाधोरूपा धोरसत्त्वं निपेविता ॥ प्रतिपातव्रजं नेह स्थैर्यं स्त्रीभिः सुमध्यमाः १९ मातरः पितरः पुत्रा भ्रातरः पतयश्रवः ॥ विचिन्वन्ति ह्यपश्यन्तो माकुर्वन्धुसाध्वसम् २० दृष्टं वनं कुमुभितं राके

श्रीकृष्ण की प्यारी गोपीन कूं प्राप्तभई यामें कहा सन्देह है १३ हे राजन् परीक्षित ! अविनाशी अप्रमेय अर्थात् प्रमाण करिबे में न आवे निर्युण अर्थात् प्राकृतगुणरहित गुणन के आत्मा भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को मनुष्यन के कल्याण करिबे के लिये रूप प्रकट भयो है १४ काम क्रोध भय स्नेह एकभाव सौहृद जे पुरुष नित्य हरि भगवान् में करे हैं वे पुरुष तमय होयजाय हैं १५ हे राजन् ! अजन्मा योगेश्वरन के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् में तुम आश्चर्य्य मतिकरो जिन में भेगकरे ते स्यावरहू संसार में ते छुटिजायं है १६ बोलनवारेन में श्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ब्रजकी स्त्रीन कूं अपने पास आई देखिके वाणीन के विलासनकरि मोहित करिके बोलतभये १७ श्रीभगवान् बोले हे वड्यागिनियो ! भले आई आवो मैं तुम्हारी कहा आदरकरो ब्रजमें कुशल है कैरो आई यह कारण कहो १८ यह भयानक रात्री है सिंह व्याघ्र घोर प्राणी डोलें हैं याते तुम अपने घरनको जावो हे सुमध्यमाः अर्थात् सुन्दर है कटि जिनकी ! स्त्रीजाति होयके यहां मतिरहो १९ तुम्हारे माता पिता पुत्र भ्राता पति तुमकूं बिना देखे दूँडत डोलें हैं वन्धून् को हस्वराहट पति करो २० फुलवारी जामें फूलिरी चन्द्रमा की किरणन सों रंगिरको यमुना ते लगिके मन्द पवन

जो चले तासों हलें जे छल्लनके पात तिनसूं शोभायमान जो वन है सो तुमने देख्यो २१ ताते तुम धर्ममें जावो डीलमतिकरो तुम पतिव्रताहो पतिनकी सेवाकरो वहरा रम्हाड ह वालक रोदे है वालकनकूं स्तन प्यावो गौवनकूं दुहो २२ अथवा भरे स्नेह से वशीभूतहै अन्तःकरण जिनको ऐसी तुम आई सो तुमको योग्यही है क्यों सब मोमें प्यार करे है २३ हे गंगलक्षपिण्यो! निष्क पट होय के पतिकी सेवाकरो देवरन की सेवाकरो पुत्रनको पोषणकरो यही स्त्रीनको परमधर्म है २४ जो कदाचित् अपनो पति खोटे स्वभावयुक्त होइ दुर्भाग्यहोइ अथवा छूट होइ मूर्ख होइ रोगी होइ दरिद्री होइ तथापि स्वर्गकी जिनके चाहना है ऐसी स्त्रीनकूं त्यागिबे योग्य है २५ कुलकी स्त्रीनकूं जारपुरुष के सेवन करे ते स्वर्ग नहीं मिले है और यश जाय जारपुरुषको सेवन तुच्छ है दुःख को देनवारो है सर्वत्र निन्दाके योग्यहै २६ मेरी यातनके श्रवण करे ते निरन्तर कीर्तन करे ते जैसे मोमें भाव होइहै तेसे

शक्ररञ्जिनम् ॥ यमुनाऽनिललीलैजत्तरुपल्लवशोभितम् २१ तद्यातमाचिरंगोष्ठं शुश्रूषध्वंपतीचसतीः ॥ क्रन्दन्तिवत्सावालाश्च तान्गाययतदुह्यत २२ अथवामदभिस्नेहाद्भवत्योयन्त्रिताशयाः ॥ आगताह्युपन्नवः प्रीयन्तेमयिजन्तवः २३ भर्तुःशुश्रूषणंस्त्रीणां परोधमोह्यमायया ॥ तद्वन्धूनांचकल्याणः प्रजानांचानुपोषणम् २४ दुःशीलोदुर्भगोवृद्धोजडोरोग्यधनोऽपिवा ॥ पतिःस्त्रीभिर्नहातव्योलोकेऽसुभिरपातकी २५ अस्वर्ग्यमयशस्यंच फल्गुकुच्छंभ यावहम् ॥ जुगुप्सितंचसर्वत्र औपपत्यंकुलस्त्रियाः २६ श्रवणादर्शनाच्छानान्मयिभावोऽनुकीर्त्तिनात् ॥ नतथासन्निकर्षेण प्रतियातततोऽगृहान् २७ श्रीशु रुडावच ॥ इतिविप्रियमाकर्ण्य गोप्योगोविन्दभाषितम् ॥ विषण्णभग्नसङ्कल्पाश्चिन्तनामपुर्णतययाम् २८ कृत्वामुत्थान्यवशुचःश्वसनेनशुष्य दविम्बाधराणिचरणेनभुवंलिलन्त्यः ॥ अस्त्रैरुपात्तमपिभिःकुचकुङ्कुमानि तस्यर्मुजन्य उरुदुःखभराःस्मृतूष्णीम् २९ प्रेष्ठं प्रियेतरमिवप्रतिभाषमाणं कृष्णं त दर्थविनिवर्त्तितसर्वकामा ॥ नेत्रेविमृज्यरुदितोपहतेस्मकिञ्चित्संस्मगद्गगिरोऽब्रुवतानुरक्ताः ३० गोप्यऊचुः ॥ भैवंविभोऽर्हतिभवान्गदितुंशुशंसं संत्य

पास रहे ते नहीं होइहै ताते अपने घरनकूं जावो २७ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं या प्रकार गोपी गोविन्द को वचन श्रवण करिके दुःखित भई नहीं सिद्धभगो है मनोरथ जिनको पाते वही चिन्ता कूं पावत भई २८ चिन्ताके स्वास ते सूखे हैं कुंदुरु के फलके समान अरुण ओष्ठ जिनके ऐसे मुखन कूं नीचे करिके चरण के श्रृंगटा सूं धरती पै लिखत जायें तथा रुदनते नेत्र २९ न उजलसाहित आसू चले हैं तिनसूं कुचनकी केशर धुइगई अतिदुःख के बोझते गोपी चुप होयके ठाढ़ी होति भई २९ हैं तो प्यारे परन्तु जाउ जाउ ऐसे कुपारे की तुल्य वचन कहें जो श्रीकृष्णचन्द हैं ताके श्रवण के आवेशते गद्गद वाणी जिनकी होय आई क्यों श्रीकृष्ण के लिये घरवार को सब काम जिनने छोड़ि दियो ऐसी गोपीन के रोये ते आसू जिनमें वहैं ऐसे नेत्रनकूं पोछि पोछि आसक्त होय के बोलत भई ३० गोपी कहे हैं हे समर्थ! जाउ जाउ ऐसो कठोर वचन मति कहो हम सब विषयन कूं त्यागि के तेरे चरण सेवन करति भई हे दुराग्रही! हमकूं मति त्यागे जैसे आदिपुरुष

भगवान् की शरण सर्व त्याग करिके मुमुक्षु जायँ तो मुमुक्षु पुरुषनकं वह भजे हैं तैसे तेरेलिये सर्वस्व त्यागि के हम आहैं हमारो सेवनकरमति त्यागे ३१ हे कुण्डल धर्मवेत्ता ! तुमने पति पुत्र सुतनकी सेवाकरो यह स्त्रीनको परमधर्म है जो बहो सो हमारे धर्म सुनिवेकी इच्छा नहीं है काहे ते हमें चाहना नहीं है तुम धर्म के उपदेश करनेवारे नहीं हो तुम देहधारीन के प्यारे हो तुम ने कही पत्यादिकन की सेवा करना धर्म है सो आत्मासहित पत्यादि प्यारे लगे हैं स्त्री को पति प्यारो लगे हैं सो आत्मासों लगे हैं आत्मा निकसे पीछे देहको बाधिके लेजाय हैं जराय देय हैं सो सन के आत्मा तुमहो तुमसों जो जीव बहिर्मुख है सो दग्ध होने के योग्य है ३२ अपने आत्मा नित्यप्यारे तुमहो तिनमें विवेकी पुरुष पीति करे हैं दुःखके देनवारे पति पुत्रादिकनसू कहा प्रयो जन है ताते तुम हमपै प्रसन्नहोइ हे परमेश्वर ! हे कमलदललोचन ! बहुत दिनते तुममें आशारूपी लतालगई है ताको जाउ जाउ ऐसे कुठारी रूप वचन ते कैसे काटो हो देखो विपके वृत्तको भी आप बढ़ाय के विवेकी नहीं काटिबे कों समर्थ होय है ३३ तुमने कही जाउ सो हम कैसे जायँ जो चित्त सुखपूर्वक धरनमें लगेहो सो तुमने हरिलियो और जिन हाथन ते घरको काम करेही ते तुमने हरिलियो हे गोपियो !

ज्यसर्वविषयांस्तवपादमूलम् ॥ भक्ता भजस्वदुरवग्रहमात्यजास्मान्देवोयथाऽऽदिपुरुषोभजतेमुमुक्षु ३१ यत्पत्यपत्यमुहदामनुवृत्तिरङ्ग स्त्रीणांस्वधर्मोनिध  
मविदात्वयोक्त्वम् ॥ अस्तेवमेतदुपदेशपदेत्वयीशे भ्रेण्डोभवांस्तनुभृतां किलबन्धुरात्मा ३२ कुर्वन्ति हित्वयिरति कुशलाः स्वआत्मन्नित्यगियेपतिसुतादिभि  
रातिदैकिम् ॥ तन्नः प्रसीद परमेश्वरमास्मिन्न्या आशांभृतां त्वयि विरादरविन्दनेत्र ३३ चित्तं मुलेन भवताऽपहृतं गृहेषु यन्निर्विशत्युत्तरावापि गृह्यकृत्ये ॥  
पादौ पदं चलतस्तवपादमूलाद्यामः कथं ब्रजमथोक्तरवामर्किवा ३४ सिञ्चान् स्तवधरा मृतपूरकेण हासावलो कलगीतजहृच्छयाग्निम् ॥ नो चेदयं विर  
हजागृत्य युक्तेद्वाभ्यानेन यामपदयोः पदवीं सखिते ३५ यर्ह्यभुजाक्षतवपादतं लंरमायादतक्षणं कंचिदरसयजनप्रियस्य ॥ अस्मिन्नाक्षमतरप्रभृतिनान्यसमक्षम  
ङ्गं स्थातुं त्वयाऽगिरमितावतपारयामः ३६ श्रीर्यत्पदाम्बुजरजश्चक्रमेतुलस्यालब्ध्वाऽपि वक्षसि पदं किल भृत्यजुष्टम् ॥ यस्याः स्ववर्षाक्षिणकृतेऽन्यसुरप्रयास

अन तुम जावो परसों के दिन तुम सबके चित्त विचार करिके देइगे ऐसे श्रीकृष्णने कही तरांगोपीकहे हैं तुम्हारे चरण ओढ़िके हमारे पांव एक पैड़हू नहीं चलैं हैं ब्रजमें कैसे जावेंगी जायके हम कहा  
करें ३४ हे सखे ! यामें कहा भली बुरी बात करे हैं जैसे देवी अग्निको निकासिके सुलगावैं हैं धीकीधारापेते प्रज्वलित होय है ऐसे हमारे हृदयमें कामकी अग्नि सोइ रही है तेरी हैं सन चितवन सुन्दर  
गीतरूपी पवनसूं प्रज्वलित भई है ऐसे हमारे हृदयमें याको अधरा मृतके प्रभाव सों बुझाय देउ और जो न बुझावोगे तो एक अग्नि जरायवेको बहुत होय है यहा तो दोइ हैं एक तो काम की दूसरी विरह  
की तासों हमारे देहनकी जरिके हेरी होय जायगी याते अपनी हैं सनि चितवनि अधरा मृतरूप धारानसों बुझाय देउ जैसे योगीजन ज्ञानरूप अग्नि करिके शरीरन को जराय के ध्यान करिके समीप कूं  
प्राप्त होय हैं ३५ श्रीकृष्ण कहें हैं तुम अपने पतिन के पास जावो वे कामदेवकी आगि बुझावेंगे तथा गोपी कहे हैं हे कमलदललोचन ! वनवासी जाको प्यारे ऐसे तुमहो और लक्ष्मीकों जाने आनन्द  
दीनो ऐसे तुम्हारे चरणनको तरवा हम कभजं स्पर्श करत भई ता दिनते तेरेसङ्ग रमणकियो ता दिनते औरके सम्मुख ठाढ़ी भी न होसके हैं ३६ लक्ष्मी सदा वृत्तस्थलमें रहे तथापि भक्त जाको



सेवनहरे ऐसी तुम्हारे चरणनकी रेणु कूं तुलसी सौत सहत चाहना करतभई वा लक्ष्मीकी चितवनि के लिये और देवता तपस्या करिके परिश्रम करे हैं ता लक्ष्मीकी तुल्य हम भी तुम्हारे चरण की रज कूं प्राप्तभई हैं अर्थात् शरणलीनी है ३७ हे दुःख के काटनवार ! तेरे मजिने में आशा जिनकी लगिरही है ऐसे हमघर छोड़िके तेरे चरणन के पास आई हैं तुग हमारे ऊपर प्रसन्नहो तेरी सुन्दर मुसिझानिचितवन सँवड़ो जो कापदेव तासुं देह जिनकी पनरिही ऐसी जो हम हैं तिनकूं हे पुरुषन के शोभा कानवार ! अपनी दासी करिके राखो ३८ अलकावली जापै छुटिरहीं और कुण्डलनकी कान्ति जिनमें परे ऐसे जाके कपोल ओष्ठ में जाके अमृत है हाससहित जाकी चितवनि ऐसे तेरे मुख को देखिके अभयदान जाने भक्तन कूं दियो तुम्हारी युजदण्डन को युगल है ताकूं देखिके लक्ष्मी कूं एकद्वी प्रीति को उपगावनवारो तुम्हारी वत्तःस्यल है ताकूं देखिके हम तुम्हारी दासी होई ३९ हे कृष्ण ! मनोहर जामें पद ऐसो वड़ो बाँसुरी को गीत है तासों मोहित होयके

स्तब्धद्रव्यंचतवपादरजःप्रपञ्चाः ३७ तन्नःप्रसीदवृजिनाहंनतेऽङ्कुमूलं प्राप्ताविमृज्यवसतीस्त्वदुपासनाशाः ॥ त्वत्सुन्दरस्मितनिरीक्षणतीव्रकामतप्तात्मनां पुरुषभूषणदेहिदास्यम् ३८ वक्ष्यालकावृतमुखंवकुण्डलश्रीगण्डस्थलाधरमुहंसितावलोकम् ॥ दत्ताभयंचसुजदण्डयुगं विलोदय वक्षःश्रियैकरम एञ्चभवामदास्यः ३९ काश्यपद्वैतेकलपदायतवेणुगीतसंमोहितार्यचरितान्नचलेत्रिलोक्याम् ॥ त्रैलोक्यसौभाग्यमिदञ्चनिरीक्ष्यरूपयद्रोद्विजद्भुमसृगाः पुलकान्यविभ्रन् ४० व्यक्तंभवान्नजगम्यार्त्तिहरोऽभिजातोदेवोयथाऽदिपुरुषःसुरलोकगोप्ता ॥ तन्नोनिधेहिकरपङ्कजमार्त्तचन्धो तसस्तेनेषुचशिरस्सुच किङ्करीणाम् ४१ श्रीशुकउवाच ॥ इतिविह्वलितंतासां श्रुत्वायोगेश्वरेश्वरः ॥ प्रहस्यसदयंगोपीरामारामोऽप्यरीरमत् ४२ ताभिःसमेताभिरुदारचेष्टितः प्रियेक्षणोऽरुल्लसुखीभिरच्युतः ॥ उदारहासाद्विजकुन्दद्वीधितिवर्योचैतेणाङ्कवोदुर्भिवृतः ४३ उपगीयमानउद्गायन् वनिताशतयूथः ॥ मालांविभ्रद्वैजयन्तीव्यचरन्मण्डयन्ननम् ४४ नद्याःपुलिनमाविश्य गोपीभिर्हिमचालुकम् ॥ रेगेतत्तरलानन्दकुमुदामोदवायुना ४५ बाहुप्रसारपरिभ्रमकरालकोरुनीवी त्रिलोकी में ऐसी कौनसी छी है जो अपने धर्म ते चलायमान न होय त्रिलोकी में सुन्दर यह तेरो रूप है ताकूं देखिके गौ पक्षी वृक्ष गृग ये रोमांचित होतभये देखो तेरे रूपते पशु पक्षी सारिले मोहित होयगये हम मोहित होयें यामें कहा आश्चर्य है ४० तुम निश्चय वृजकेभय पीड़ा दूरि करिये के लिये जन्मे हो जैसे आदिपुरुष नारायण स्वर्गलोकजी रक्षा करे हैं ता कारण ते हे दीनन के वन्धु ! हम तेरी दासी हैं तिनके कापदेव ते तरे जे स्तन है और शिर हैं तिनपै अपने हस्तकमल कूं धरो ४१ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार योगेश्वरन के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र गोपीन की विलाप सुनि के हैंसि के दया जिन को आई गई आत्माराम हूँ हैं तथापि गोपीन के संग रमण करतभये ४२ एवारे श्रीकृष्णचन्द्रकी चितवन सँ प्रफुल्लित जिनके मुख ऐसी इनही भई जे गोपी हैं तिनसहित उदार जिनकी चेष्टा और उदार जिनकी हैंसनि दन्तनमें कुन्दकलीकी तुल्य कान्ति ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सुन्दर लगतभये जैसे तारागणसहित चन्द्रमा सुन्दर लगे है ४३ गोपी जिनकू गावें और स्त्रीन के सैकरान युवन कूं पालनकरें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र आप गावत वैजयन्ती माला पहिरिके वनकूं शोभायमान करत विहार करतभये शीतल जामें वारूके विह्वीना दिव-

रहे ऐसी यमुनाजीकी पुलिन में गोपीन सहित आये है रमण करत भये तहा यमुनाजीकी लहर जो आत्रे है तिनहुँ आनन्द जिनमें कमल जहाँ फूले हैं तिनकी सुगन्धि को लेके पवन जहा चले हैं, ४४ । ४५ भुजान को पसारिबो आलिंगन को करिबो कर अलक ऊरु नीची स्तन इनको स्पर्श करियो परिशस के वचन ऋषिबो नखन के चिह्न क्रीड़ा चितवनि हौसीन सुँव गनुन्दरीनकुँ भगवान् कामवईपन करत रमण करत भये ४६ या प्रभार महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र तें मान जिनने पायो ऐसी गोपी मानवती होयके पृथ्वी की लीन में अपनेकुँ अधिक मानत भई ब्रह्मा और महादेव के यश के करनगरे श्रीकृष्णचन्द्र तिन गोपीन कुँ सौ भाग्य के मद सुँ अपने अधीन देखिके उनके गर्व दुरिकरिबे के लिये और कृपा करिबे के लिये ता रासमण्डल में ही अन्तर्द्वान् होता भये ४७ । ४८ इति श्रीमन्महाभागवतार्थखण्डियादयस्कन्धे पूर्वोद्धारासक्रीडावर्णनसौकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

स्तनलभननर्भनलाश्रपतैः ॥ क्ष्वेत्याऽधलोकहसितैर्ब्रजमुन्दरीणां मुत्तमभयचरतिपतिरमयाश्चकार ४६ एवं भगवतः कृष्णस्रजवधानामहात्मनः ॥ आत्मानं मे निरेच्छीणां मानिन्योऽभ्यधिकं भुवि ४७ तासां तस्मै भगवदंवीक्ष्यमानं चक्रे शवः ॥ प्रथमाश्रयसादाय तत्रैवान्तरधीयत ४८ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वोद्धे भगवतो रासक्रीडावर्णनसौकोनत्रिंशोऽध्यायः २६ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

श्रीशुक्र उवाच ॥ अन्तर्हिते भगवति सहसैव ब्रजजङ्गनाः ॥ अतप्यं स्तमचक्षाणः करिण्यद्वययूथपम् १ गत्या नुरागस्मिता विभ्रमोक्षितैर्मनोरमालापविहारविभ्रमैः ॥ आक्षिप्तचित्ताः प्रमदारमापतेस्तास्ता विवेषजगृहुस्तदात्मिकाः २ गतिस्मिता प्रेक्षणभाषणादिषु प्रियाः प्रियस्य मतिरुदमूर्तयः ॥ असावहं त्विरयवलास्तदात्मिकान्यवेदिषुः कृष्णविहारविभ्रमाः ३ गायन्त्युच्चैः सुमेव संहता विचिक्युरुन्मसकवदनाद्वनम् ॥ पञ्चच्छराकाशवदन्तरं बहिर्भूतेषु सन्तं पुरुषं वनस्पतीन् ४ दृष्टो वः कश्चिदश्वत्थस्रक्षन् यथोधनो मतः ॥ नन्दसुनर्गुतो हृत्वा प्रेमहासावलोकनैः ५ कञ्चित्कुचकाशो कनागपुन्नागचम्पकः ॥ रामा

( त्रिशोचिरहस्तं गोपीभिः कृष्णपार्श्वेणम् ॥ उन्मत्तवन्न नियतं भ्रयन्ती धिर्वनेवने १ तीसवें अध्याय में विराह से अत्यन्त तप्त वन में दूमती हुई गोपियों ने उन्मत्त की नाई कृष्णजी को दूँको है १ ) श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! जा समय श्रीकृष्णचन्द्र रासमण्डल में ते अन्तर्द्वान् भये ता समय तत्काल ही ब्रजकी स्त्री गोपी उनके देखे विना व्याकुल होत भई जैसे हाथी के देखे विना हाथीनी व्याकुल होयें श्रीकृष्णचन्द्र की चलनि स्नेहभरी मुसिकानि मिलासलूर्वक चितयनि मधुरमोलीनकी क्रीडान सुँ मन जिनके पङ्करे भये ऐसी गोपी तन्मय होति भई १ । २ कृष्णचन्द्र को गगन हासभरी चितवनि मधुरवाणीन के विहार करि प्यारे में आरुढ़ होय के कृष्ण रूप वनिके कहत भई कि मैं कृष्णहूँ मैं कृष्णहूँ या प्रभार चेष्टा करती भई ३ सब गोपी मिलिके श्रीकृष्णचन्द्र सुँ ऊँचो स्वर करि के गावत मतमारे की तुल्य वन वन दूँदति भई सब प्राणीन में आकाश की तुल्य व्यापक जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन कुँ दृक्षन ते पूँकत भई ४ हे पीप के वृक्ष ! हे फल अत्यन्त पाकर के वृक्ष ! हे वट के वृक्ष ! नन्दको पुन श्रीकृष्ण भेस भरी चितयनि हाँसी करिके हमारो चित जुराय के लेगयो तुमने देखो होय तो जताय दे ५ कहुँ वनंग कुड़ा

के वृत्त हैं निनसूँ पृष्ठे हैं कहूँ नागकेशरि के वृत्त कहूँ चल्पा के वृत्त तिन सँ कहती हैं मानीनी जो हम हैं तिनके गर्व रत्नवारी जाकी मुसकानि ऐसो रामको छोड़ो भय्या कहूँ तुमने जात देवो है ६ कहूँ वन में कहे हैं हे तुलसी कल्याणरूपिणी गोविन्द के चरणन की प्यारी ! भौरा जागें गुंजारकरें तेरी माला कूँ पहिरे तेरो अतिप्यारो श्रीकृष्णचन्द्र कहूँ देख्यो होय तो वतायदेउ ७ हे मालती ! हे चमेली ! हे जाया ! हे जुही ! मधुवंश में भये श्रीकृष्णचन्द्र हस्तस्पर्श करिके तुम सँ मीति करिके कहा गये तुमने देये होय तो वताय देउ ८ अग गोपी आपुस में कहे हैं हे सखियो ! ये फल-युक्त वृत्त हैं सब भाणीनको तम करे हैं इन से पूंखो हे आम के वृत्त ! हे चिरोजी के वृत्त ! हे कटहर के वृत्त ! हे विजयसाल के वृत्त ! हे कचनार के वृत्त ! हे मदार के वृत्त ! हे बेल के वृत्त ! हे मोरशिरी के वृत्त ! हे आम्र के वृत्त ! हे लोटन कदम्ब ! तुम हे परोपकारी यमुनातीरवासियो ! याते हमें वताय देउ तुमने कहूँ श्रीकृष्णचन्द्र जात देखे ९ कोई सखी कहे है कि या पृथ्वीसूँ

नुजोमानिनीनामितोदरपहरस्मितः ६ कञ्चितुलसिकल्याणि गोविन्दचरणभ्रिये ॥ सहस्राडलिकुलैर्विभ्रष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः ७ मालत्यदर्शिवः कञ्चि

न्मस्त्रिकेजातियुथिके ॥ गीतिवोजनयन्यातः करस्पर्शनमाधवः ८ चूनप्रियालपनसामनकोविदारजवकैविल्वचकुलाम्र रुद्रस्वनीपाः ॥ येऽन्येपरा

र्थभवकायमुनोपकूलाः शंसन्तुकृष्णपदवीगहितारमनांनः ९ किन्तेकृतक्षितितपोवतकेशवाङ्मिस्पर्शोत्सवोत्पलकिताङ्गरुहैर्विभासि ॥ अग्यङ्गिसम्भवउरुक

मविक्रमादा आहोवराहवपुःपरिरम्भणेन १० अग्येणपत्न्युपगतः प्रिययेहगात्रैस्तन्वच्छशांसिखिसुनिर्धृतिमच्युतोवः ॥ कान्ताङ्गसङ्गकुचकुङ्कुमरञ्जिता

याः कुन्दस्रजःकुलपतेरिहवातिगन्धः ११ वाहुंप्रियांसउपधायगृहीतपद्मोरामानुजस्तुलसिकालिकुलैर्मदान्धैः ॥ अन्वीयमानइहवस्तसवःप्रणामं किं

वाऽभिनन्दतिनरन्प्रणयावलोकैः १२ पृच्छतेमालतानाहूनप्यारिलषावनरस्पतेः ॥ नूनन्तत्करजस्पृशविभ्रत्युत्पलकान्यहो १३ इत्युन्मत्तवचोभोगोप्यः कृ

ष्णान्वेपणकातराः ॥ लीलाभगवतस्तास्ताह्यनुचक्रुस्तदात्मिकाः १४ कस्याश्चित्पूतनायन्याः कृष्णायन्यपिपवत्स्तनम् ॥ तोकायित्वाशुदयन्या पदा

बूझो हे पृथ्वी ! तने कहा तप कियो है जो केशव गगवान् को चरणस्पर्श भयो तामूँ तोकों आनन्दसहित रोमाञ्च भये है तामूँ सुन्दर लगे है यह आनन्द प्यारे को चरण छग्यो है तामूँ भयो है अथवा वापनजी ने पहिले तो कूँ तीन पैड़ नापी है अथवा वाते पहिले बराहजी तो कूँ दाढ़ पै धरि के ले आये हैं तब को आनन्द है परन्तु वे आनन्द तो पुराने परि गये अबहीं प्यारे को चरण तैने स्पर्श कीनी है तैने निश्चय देखो है हमें वताय दे १० हे सखी ! हिरण की स्त्री हिरणी अच्युत श्रीकृष्णचन्द्र प्यारी कूँ संग लैके अपने अंगनसूँ तुम्हारी दृष्टि कूँ आनन्द देत यहाँ आयो है प्यारी कूँ संग लैके गयो ताको जतावनवारो यह लक्षण है कृष्णचन्द्र को प्यारी ते जो अंगसंग है तामूँ रुचन की केशरि सँ रेगी, गई जो कुन्द की माला ताकी यह सुगन्धि आवै है ११ राम को छोड़ो भय्या प्यारी के कर्मये पै भुजाको धरि के कमल फिरायत तुलसी को माला की सुगन्धि सँ मतारो भोरा जाके पीछे चले जायें हे वृत्तो ! स्नेह भरी चितवन सँ तुम्हारी दृष्टवत् यहाँ आयके लीनी है १२ वृत्तन ते लिपटी जे लता हैं तिन ते पूँखो निश्चय प्यारे के नख इनके लगे हैं तामूँ रोमाञ्च होय आयें हैं १३ या प्रकार मतवारो कीसी जिनकी बोलनि श्रीकृष्णमें जि-

नको मन श्रीकृष्णके हृदिने में विहल होय के गोपी श्रीकृष्ण की तिन तिन लीलान को अनुकरण करत भई १४ कोई गोपी पूतना यनी ताको कोई गोपी कृष्ण वनिके स्तन पीवत भई और गोपी बालक वनिके रुदन करत शकुटासुर वनी जो कोई गोपी है ताके पावकी ठोकर मारत भई १५ एक गोपी वृणावर्त दैत्य वनिके कृष्णके बालकरूपको बरे जो और गोपी है ताको हरत भई कोई गोपी धुंधुरु बाँविके पावन को घसीटत घोड़वन चलत भई १६ दो गोपी कृष्ण बलेदेव वनी और कोई गोप वनी और कोई वत्सासुर वनी ताकूं मारत भई एक गोपी वक्रासुर वनी ताय और गोपी मारत भई १७ जैसे श्रीकृष्णचन्द्र बुलावै हैं तैसे दूरगई जो गऊहैं तिनकूं बुलायके श्रीकृष्णको अनुकरण करै वासुरी को वजावै क्रीडा करै जो गोपी हैं ताय और गोपी स्थावासि २ ऐसे गड़ई करत भई १८ एक गोपीके कन्या पै हाथधरि चलिके और गोपीते कहत भई मेरी मनोहर जो वृत्यलीलौहैं ताकूं तुम देखो या प्रकार ता श्रीकृष्ण में तिनको मन जाय लगो १९ पवन वर्षा ते भय

उहंश रुदायतीम् १५ दैत्यायित्वाजहारान्यामेकाकृष्णार्भभावनाम् ॥ रिक्षामासकाऽप्यङ्गीकर्पन्तीघोपनिःस्वनैः १६ कृष्णरामायितेद्धतु गोपायन्यत्र  
अकाश्चन ॥ वरसायतीहन्तिनान्या तत्रैकतुत्र त्रयतीम् १७ आहूयदृग्गायदत्कृष्णस्तमनुकुर्वतीम् ॥ वेणुक्लण्णतीक्रीडन्तीमन्याःशंसन्तिसाध्विति १८  
कस्याञ्चित्स्वमुज्जंन्यस्य चलन्त्याहापराननु ॥ कृष्णोऽहंपश्यतगतिं ललितामितितन्मनः १९ माभैष्टवातवर्षाभ्यां तत्राणंविहितंमया ॥ इत्युक्तेकेनहस्तेन  
यतन्युज्जिदधेऽध्वरम् २० आरुह्यैकापदाक्रम्य शिरस्याहापरानुप ॥ दुष्टाहेगच्छजातोऽहं खलानाननुदरडष्टम् २१ तत्रैकोवाचहेगोपा दावाग्निपश्य  
तोत्वणम् ॥ चक्षूंष्यास्वपिदध्वंविधास्येक्षेममञ्जसा २२ वद्धाऽन्ययासजाकाचित्तन्वीतत्रउलूखले ॥ भीतामुदृक्पिधायास्यं भेजेभीतिविडम्बनम् २३  
एवंकृष्णंपृच्छमाना वृन्दावनलतास्तरुच ॥ व्यचक्षतवनोद्देशे पदानिपरमात्मनः २४ पदानिव्यक्तमेतानि नन्दसूनुर्महात्मनः ॥ लक्ष्यन्तेहिध्वजाम्भो  
जवज्राङ्गुशयवादिभिः २५ तैस्तैःपदैस्तत्पदवीमन्विच्छन्त्योऽग्रतोऽवलाः ॥ वध्वाःपदैःसुपृक्कानि विलोभयार्त्ताःसमनुवृत् २६ कस्याःपदानिचैतानि या

मतिकरो मै तुम्हारी रक्षा करुगो यह कहिके एक हाथ ते यत्र करिके जैसो गोवर्द्धन पर्वत श्रीकृष्णचन्द्रने उठायो तैसे अपनी ओढ़नी कूं ऊंची उठावति भई २० हे राजन् परीक्षित् ! एक गोपी और गोपी के ऊपर चढ़िके पाँव शिर ऊपर धरिके एक गोपी ते कहत भई हे दुष्ट सर्प ! तू यहां ते निकसि जा मैं दुष्टन के टपड़को देनचरो जन्मो हों २१ ता समय एक गोपी बोलत भई हे गोपियो ! यह वनमें भयानक दवलगी है ताहूं देखो जलदी देसी नेत्र मुंदिलेउ में या आगि कूं बुझाऊंगो अनायास देखे बिना कल्याण करुंगो २२ कोई एक दुर्बल अगकी गोपी मालासूं उलूखलमें बाधि दीनी तब हरपिके सुन्दर जामें नेत्र ऐसे मुगकू ढाँकिके डरपेको अनुकरण करतिगई २३ यामकार वृन्दावनकी लता वृत्तन ते पूंछतपूँछत आगे दनमें जायके परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्रके चरणके खोज देखत भई २४ ध्वजा कमल वज्र अंकुश यय इन्ते आदिलेके जो चिह्न हैं तिनसूं महात्मा जो नन्दको वेधा ताको निश्चय चरणहैं या प्रकार खोज लेखे हे २५ अवला जे गोपी हैं ते चरणन के जो खोज हैं तिनसूं श्रीकृष्णचन्द्र के जायवे को जो मार्ग है ताय द्रुतभई आगे जायके श्रीकृष्ण के चरणन के खोज देखिके यह बोलत भई २६ ये कौनके सोजहैं

नन्दको पुत्र काहुको अपने संग लैगयो है और बाँके कन्धेपै हाथ धरि लियो है जैसे हाथी हथिनी के ऊपर सँझि धरिलेय है २७ निश्चय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको याने आराधन कीनेहै जा कारण हम सबको त्यागिके प्रसन्न होयके प्यारो गोविन्द याकू पूजान्त में लैगयो २८ हे सखियो ! यह गोविन्द के चरण की रेणुकुं ब्रह्मा महादेव लक्ष्मी सम्पूर्ण अपने पाप दूर करिवे के लिये माधे पै चढ़ावे है २९ ता प्यारी के पावन के खोज हमको व्याकुल बहुत करे हैं देखो हम सबको त्यागिके अकेली एकान्तमें श्रीकृष्णचन्द्र को अधरामृत भोग करे है ३० आगे चलिके कहै है यहाँ बाँके पावनके खोज नहीं दीखे हैं सखी तिनुता अंकुरा लगिके कोमल चरणनमें खेदभयो है ३१ या प्रकार गोपी खोजनकू देखत अचेत होय के विचरतिभई श्रीकृष्ण और स्त्रीनकू छोड़िके यनमें जा गोपीकू अपने संग लेजातभये वह गोपी सब स्त्रीन में अपने कू श्रेष्ठ मानतभई क्योंकि चाहनाकरे जे गोपी हैं तिनैं छोड़िके यह प्यारो मेरो सेवन करेहै ३२ कामी औ

तायानन्दसूनुना ॥ अंसन्यस्तप्रकोष्ठायाः करेणोः करिणायथा २७ अनयाऽऽराधितो नूनं भगवान्बहुरिरीश्वरः ॥ यन्नोविहायगोविन्दः प्रीतोयामनयद्दहः ३२ धन्याअहोअमीआहयो गोविन्दद्वयवजरेणवः ॥ यान्नबेशोरमादेवी दधुर्धन्यघनुत्तये २६ तस्याअयूनिनःक्षोभं कुर्वन्त्युच्चैःपदानियत् ॥ ये काऽपहृत्यगोपीनां रहोभुङ्क्तेऽव्युताधरम् ३० नलक्ष्यन्तेपदान्यत्र तस्यानूनंनृणाङ्घ्रैः ॥ विद्यत्सुजाताङ्घ्रितलामुन्नियेप्रेयसीप्रियः ३१ अन्नप्रसूनावचयः प्रियोर्थेप्रेयसाकृतः ॥ प्रपदाक्रमणेपते पश्यतासकलेपदे ३२ केशप्रसाधनंत्वत्र कामिन्याःकामिनाकृतम् ॥ तानिचूडयताकान्तामुपविष्टमिहध्रुवम् ३३ रेमेतयाच्चास्मरतआत्मारामोऽव्यखण्डितः ॥ कागिनांदर्शयन्दैन्यं स्त्रीणांचैवदुरात्मताम् ३४ इत्येवंदर्शयन्त्यस्ताश्चरुर्गोभ्योविवेकतसः ॥ यांगोपीसनयस्कृष्णो विहायान्याःस्त्रियोवने ३५ साचमेनेतदात्मानं वरिष्ठंसर्वयोपिताम् ॥ हित्वागोपीःकामयानामामसौभजतेप्रियः ३६ ततोगतवावनादेशं ह साकेशयमवधीत् ॥ नपारयेऽहंचलितुं नयमांयन्नतेमनः ३७ एवमुक्तःप्रियामाह स्कन्धमारुह्यतामिति ॥ ततश्चान्तर्द्वेषकृष्णः सावधून्वतप्यत ३८ हाना

कृष्णचन्द्र ने कामिनी के या स्थानमें केश बाहि के सुधारे हैं प्यारी कू वैठाय के केश गुहे जो प्यारोहै सो या स्थानमें निश्चय चैतभयो ३३ श्रीशुकदेवजी कहै हैं आत्माराम अर्थात् अपने स्वरूप में रमण करे असखिहत अर्थात् स्त्रीन के कटाक्षके वश नहीं ऐसहू श्रीकृष्णचन्द्र ता प्यारी के संग रमण करतभये काहे के लिये कामीपुरुषन कू दीनसों दिखायवे के लिये कामीपुरुष ऐसे स्त्रीनके वशीभूत अधीन होय जाय है जैसे कौं तैसेही करे हे स्त्री ऐसी दुष्ट होयहैं जो इन्हा में आवै सोई करावैहैं ३४ या प्रकार गोपी अचेतहोय होयके खोजन कौं देखतभई श्रीकृष्ण और स्त्रीनकू छोड़िके यनमें जा गोपी कू अपने संग लेजातभये वह गोपी सब स्त्रीनमें अपने कू श्रेष्ठ मानतभई चाहना करे जो गोपी हैं तिनैं त्यागिके यह प्यारो मेरे संग सेवन करे है ३५ ३६ ता पीछे वह गोपी गर्वित होय के केशन श्रीकृष्णचन्द्र ते बोलत भई मोपे चलो नहीं जायहै जहाँ तुम्हारो मन होय तहाँ ले चलो ३७ या प्रकार जब प्यारी ने कही तब श्रीकृष्णचन्द्र प्यारी ते कहै हैं मेरे कन्याप





कहा याते तैने दृष्टिमें हमारे प्राण हरिलीने हैं तिनके देवके लिये दिखाई दे २ बहुत श्रुत्युन ते कृपाकरिके रत्ताकरी अब क्यों कामदेवकों भेजिके दृष्टिमें मारोहो विपकेजल ते जो मृत्युही ताते रत्ता करी अथासुर आयो ताते इन्द्रेने वर्षाकरी पवन चलाईही ताते विजलीकी आगि ते दृष्टासुर ते यमकेपुत्र व्योमासुर और सम्पूर्ण भयते हे श्रेष्ठ ! तैने वेवेरमें रत्ताकरी है अब क्यों हमें छोड़े है ३ तुम यशोदा के पुत्र नहीं हो सब देहधारीन के बुद्धिके साक्षी हो ब्रह्माने विश्व की रत्ता करिवे के लिये प्रार्थना करी तब हे सखे ! यादवन के कुलमें प्रकट भये ४ हे यादवन में श्रेष्ठ ! हे कान्त ! संसार के भयते तुम्हारे चरण सेवन करें जे पुरुष है तिनकूं अभयरूपी कामनान के देनवारे लक्ष्मी के हाथ को पकानवारी जो तुम्हारी हस्तरूपल है ताकूं हमारे माथे पै धरो ५ हे सखे ! हे वीर ! हे वृज-वासीनके दुःख के हरनवारे ! अपने भक्तनके गर्व को दूर करनवारी जाकी मुसिकानि सो हम तुम्हारी दासी हैं तिनकूं सेवन करो पहिले स्त्री हम हैं तिनको अपनी मुखरूपल दिखावो ६ प्रणत

मयात्मजाद्विश्वतोभयाहपभतेवयंरक्षितामुहुः ३ नखलुगोपि कानन्दनोभवानखिलदेहिनामन्तरंगमहक् ॥ विखनसाऽर्थितोविश्वगुप्तये सखउदेयिवा  
नूसात्वतांकुले ४ विरचिताभयशृणुधुर्यते चरणमीयुपांसंमृतैर्भयात् ॥ कसरोरुहकान्तकामदांशिरसिधेहिनःश्रीकरग्रहम् ५ ब्रजजनात्तिहन्वीरयोपिनां  
निजजनस्मयध्वंसनस्मित ॥ भजसखेभवतिकङ्करीःस्मनोजलरुहाननञ्चारुदर्शय ६ प्रणतदेहिनांपापकर्शनं तृणचरानुगंश्रीनिकेतनम् ॥ फाणिफणा  
र्पितन्तेपदाम्बुजं कृणुकुत्रेपुनःकृन्धिहृच्छयम् ७ मधुरयागिरावल्गुनाक्ययाधुमनोज्ञयापुष्करेक्षण ॥ विधिकरीरिगावीरमुख्यतीरधरशीधुनाऽऽप्याययस्व  
नः ८ तवकथाऽमृतंतप्तजीवनं कविभिरीडितंकलयपापहम् ॥ श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं सुविशृणन्ति तेभूरिदाजनाः ९ ग्रहमितंप्रियप्रेमवीक्षणं विहरण  
अतेध्यानमङ्गलम् ॥ रहसिसंविदोयाहदिरपृशः कुहकनोमनःक्षोभयन्तिहि १० चलसियद्भजाचारयन्पशून्नालिनसुन्दरंनाथतेपदम् ॥ शिलतृणाकुरैः  
सीदतीतिनः कलिलतामनः कान्तगच्छति ११ दिनपरिक्षेपनीलकुन्तलैर्वनरुहाननंविभ्रदाधृतम् ॥ धनरजस्वलंदर्शयन्मुहुर्मनसिनःस्मरंवीरयच्छसि १२

अर्थात् नम्र जे देहधारी हैं तिनके पापको दूर करनवारी गौवनके पाछे पाछे चले काली के फण पै नाचै ऐसो तेरो चरणरूपल है ताकूं हमारे कुचन पै धरिके कामदेव की व्यथाकूं दूरि कर ७ हे कमलदललोचन ! सुन्दर है वादय जायें ऐसी तेरी मधुरवाणी सों हे वीर ! तेरी दासी मोहित भई जे हम है तिनकूं जीवन दे ८ संतप्त-पुरुषन कों जियावनवारी कविनने बड़ाई जाकी करी पापन को दूरि करनवारी काननकों मंगलरूप शान्त पेसो तुम्हारी कथारूप अमृत कूं जे पुरुष पृथ्वी में कहे हैं वे बड़े दाताहैं ९ तेरो हंसिसहित मुख प्रेम भरी चितवनि ध्यान में मग्नरूप तेरो विहार हृदयकूं स्पर्श करनवारी एकान्त की वातें हमारे मनकूं क्षोभ करे है १० हे नाथ ! जासमय गौ चरायवे कूं ब्रज ते चलोहो तब तुम्हारी कमलकी तुल्य सुन्दर चरण सों काकरी तृण शंकुर लगिके कष्ट कू पावे है तामूं हे कान्त ! हमारी मन चञ्चल होयहैं ११ सन्ध्या समय नील जे केशहैं तिनसू दब्यो ऐसे कमलतुल्य मुखकूं धारण करिके गौवनकी रज जो लड़ी है



( द्वात्रिंशद्विरहालापविच्छिन्नहृदयोद्वारिः ॥ तत्राविर्भूयगोपीस्ताःसात्त्वयापासमानयन् १ स्वमेमागृतकल्लोलविह्वलीकृतचेतसः ॥ सद्यन्तदयनगोपीरुद्रतो नन्दनन्दनः २ वतीसर्वे अस्थाय मे विरह के वार्त्तालाप सौ खेदयुक्त हृदयहोकर कृष्णजी तदाही प्रकटहोकर तिन गोपियों को मान करतेहुये शान्त करतेभये १ अपने प्रेमरूपी अमृतके कल्लोल से विह्वलक्रिये हुये चित्तवाली गोपियोंको दयासमेत कृष्णजी आनन्दयुक्त करतेहुये प्राप्तहोजातेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहेहे हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार गोपी हैं ते गावत चित्रविचित्र विलाप करत श्रीकृष्णचन्द्रके दर्शनकी जिनके लालसा वे गोपी वढे स्वर ते रुदन करतभई १ मुसिकाय है मुरारुमल जाको शूरवंश में जन्म जाको पीताम्बर कूं पहिरे वनमाला को धारण करे साक्षात् मन्मथ कामदेव ताके मन कूं मोहितकरे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र गोपीन के बीचमें प्रकट होतभये २ प्रीतिपूर्वक प्रसन्न होयके प्रफुल्लित है नेत्र जिनके ऐसी सम्पूर्ण अवलोक श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिरे एक संग उठतभई जैसे देहमें प्राण आयये ते हाथ पाव उठे हैं ३ कोई गोपी श्रीकृष्णचन्द्र को हस्तरुमल वढे आनन्दपूर्वक अपने हाथसूं पकृत भई कोई गोपी चन्दन जाँमे लगयो ऐसी भुजाकूं कन्धपै आप उनके हाथको धरतभई ४ कृश

श्रीशुकउवाच ॥ इतिगोप्यःप्रगायन्त्यःप्रलापन्त्यश्च चित्रया ॥ रुद्रःसुस्वरंराजन् कृष्णदर्शनलालसाः १ तासामाविर्भूच्चौरिःस्मयमानमुखाम्बुजः ॥ पीनाम्बरभरःस्रज्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः २ तंवलोक्यागतंप्रेष्ठं प्रीत्युरुल्लहशोवलाः ॥ उत्तस्थुर्युगपत्सर्वस्तन्वःप्राणभिवगतम् ३ काचित्कराम्बुजं शौरिर्जगृहेऽञ्जलिनामुदा ॥ काचिद्विधातदवाहुमसेचन्दनभूपिनम् ४ काचिदञ्जलिनाऽगृह्णात्तन्वीताम्बूलचर्वितम् ॥ एकातदङ्घ्रिकमलं सन्तसास्तनयोर धत् ५ एकाभृकुटिमावध्य प्रेमसंभविह्वला ॥ प्रन्तीवैक्षत्कटाक्षैः सन्दष्टदशनच्छदा ६ अपराऽनिमिपद्दृग्भ्यांजुषाणानन्मुखाम्बुजम् ॥ आपीतम पिनात्पत्यस्तस्तच्चरणंयथा ७ तंकाचिन्नेत्रान्ध्रेण हृदिहृत्यनिमील्यच ॥ पुलकाद्भ्रुपुगुह्लास्ते योगीवानन्दसंभ्रुता ८ सर्वास्ताःकेशवालोपरमोरस वनिर्द्वयाः ॥ जह्रुर्विरहजन्तापं प्राज्ञप्राप्ययथाजनाः ९ ताभिर्विधून्शोकाभिर्भगवानच्युतोदृतः ॥ व्यरोचताधिकंतात पुरुषःशक्किर्भयथा १० ताःसमा

है अंग जाको ऐसी कोई गोपी श्रीकृष्णके मुखमें ते ताम्बूल को उगारै ताथ अपने हाथ में लेतु भई और काम ते तगायमान जो एक गोपी है सो श्रीकृष्णचन्द्र को चरणकमल है ताथ अपने स्तनन पै धरतभई ५ एक गोपी अपनी भौह चढायके कोपके आवेण सूं विकल होयके अपने ओष्ठूं दातनते दाविके कटाक्षरूपी वाणन ते गारती सी देखत भई ६ और गोपी नहीं लगेहै पलक जिनमें ऐसी दृष्टिसे श्रीकृष्णचन्द्र को मुखकमल भले प्रकार देखयो भी है परन्तु फेर फेर देखत नहीं तम होतभई जैसे साधु जिनके चरणारविन्द देखत नहीं तमहोई हैं ७ रोमाञ्च जाके होयआनन्दहै ऐसी कोई गोपी नेत्रद्वारा हृदय में ले जायके नेत्रन कूं मृदिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं आलिंगन करतभई जैसे योगीजन आनन्दमें व्याप्त होय है केशव श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन करिके परमआनन्दहै तामूं सुखी होयके सम्पूर्ण गोपी विरहके तापको त्यागत भई जैसे ईश्वरको पायके मुमुक्षुजन तापकूं छोड़े हैं अथवा सुपुष्टि अवस्थाको साक्षी है ताथ पायके जाग्रतरूप अवस्थायान् जीव जैसे तापकूं छोड़े हैं ८ ९ दूरभये हैं शोक जिनके ऐसी गोपीनके बीचमें अच्युत भगवान् हे परीक्षित ! अधिक सुन्दर लगतभये जैसे परमात्मा सत्त्वगुण सूं आदिलेके जे शक्ति हैं तिनसूं सुन्दर

लगे है अथवा उपासकपुरुष ज्ञान बल वीर्य्य सूर्य आदिलेकै जे शक्ति है तिनसुं सुन्दर लगे है १० तिन गोपीन कों संग लेके फूले जे कुन्द मंदार तिनकी सुगन्धिकी पवन सूर्य औरा जामें गुञ्जारकरै ऐसे यमुनाजी के पुलिन में आयके सुन्दर लगतभये ११ फेर कैसे पुलिन हैं शरद्वृत्तु के चन्द्रमा की किरणन के समूह ते रात्रिकी अन्धकार जामें ते दूर होयगयो है फेर कैसे हैं यमुना की तरंगन सूर्य कोमल वारु के विखौना जामें विखरहे हैं १२ ता श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शनमें जो आनन्दहै तासुं दूरभये है हृदय के रोग जिनके वे गोपी मनोरथको जो अन्तहै ताकुं पावतभई अर्थ्याव मनोरथ उनके पूरे होतभये जैसे ज्ञानकाण्डमें श्रुति परमेश्वर कंदेलिके आनन्दसुं पूर्ण होयै काम के सम्पूर्ण वन्धन कूं त्यागे हैं कुचनकी केशर जिनमें लगी ऐसी अपनी ओढ़नीन कूं उतार उतार के श्रीकृष्णचन्द्र के वैठिने को तकिया गादी वनावतभई १३ योगेश्वरन के हृदय के भीतर जिनको कल्पित आसन है वे ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण तीनलोक की शोभा कों एक एकही स्थान कहा तीन

दायकालिन्द्यानिर्विशयपुलिनंविभुः ॥ विकसत्कुन्दमन्दारसुरभ्यनिलपट्पदम् ११ शरच्चद्रांशुसन्दोहध्वस्तदोपातमःशिवम् ॥ कृष्णयाहस्ततरलाचि तकोमलवालुरुम् १२ तद्दर्शनाह्लादविधूतहृदुजोमनोरथान्तंश्रुतयोयथाययुः ॥ स्वैरुत्तरीयैःकुचकुङ्कुमाङ्कितैरचीक्लपन्नासनमात्मवन्धवे १३ तत्रोपविष्टो भगवान्सईश्वरोयोगेश्वरान्तर्हृदिकल्पितासनः ॥ चकासगोपीपरिषद्गतोऽर्चितस्त्रैलोक्यलक्ष्म्येकपदंवपुर्दधत् १४ सभाजयित्वातमनङ्गदीपनं सहास लीलेक्षणविभ्रमभुवा ॥ संस्पर्शनेनाक्लृप्ताङ्गिताङ्गिहस्तयोः संस्तुत्यईपत्कुपितावभापिरे १५ गोप्यऊचुः ॥ भजतोऽनुभजन्त्येकएकएतद्विपर्ययम् ॥ नो भयांश्चभजन्त्येकएतन्नोब्रूहिसाधुभोः १६ श्रीभगवानुवाच ॥ मिथोभजन्तिनियेसख्यः स्वार्थकान्तोद्यमाहिते ॥ नतत्रसौहृद्धर्मः स्वार्थार्थन्तद्धिनान्य था १७ भजन्यभजतोयैवै करुणाःपितरोयथा ॥ धर्मोनिस्पवादोऽत्र सौहृदश्चमुमध्यमाः १८ भजतोऽपिनैवैकेचिद् भजन्यभजनःकुतः ॥ आत्मारामा ह्यासकामाअकृतज्ञागुरुद्रुहः १९ नाहंतुसख्योभजतोऽपिजन्तून्भजाम्यमीपामनुवृत्तिवृत्तये ॥ यथाऽधनोलब्धवनेविनष्टेतिञ्चिन्तयाऽन्यन्नभृतोनवेद २०

लोक की शोभा जामें आयरही ऐसे रूप कों धरि के ता आसन पै बैठारि के गोपीन ने जिनको पूजन करो ऐसे गोपीन की सभा में सुन्दर लगतभये १४ कामदेव के वदावनवारै जे श्रीकृष्ण हैं तिनही दास लीलापूर्वक चित्तवनि सों चलायमान जो भृकुटी है तिनसुं सत्कार करिके गोदमें धरे जो श्रीकृष्णचन्द्र के चरण तिनकूं हाथन ते दावत स्तुतिकरि के बल्लु एक क्रोध ते गोपी बोलत भई १५ सम्पूर्ण गोपी फंदे हैं कि हे महाराज ! एक पुरुष तो भजतेन को भजे हैं वे कौनसे हैं और एक ऐसे हैं कि नहीं भजतेन को भजे हैं वे कौन हैं और एक भजतेन कों न भजतेन कों दोनोनको नहीं भजे हैं वे कौनसे हैं सो हे कृष्ण ! यह हमारै आगे भलेप्रकार समझा के कहो १६ श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र बोले हे सखियो ! जे पुरुष परस्पर भजे हैं अर्थ्याव जितनो वे उनको चाहै तितनो वे उनको चाहै वे कौनसे हैं वे भजनेमें स्नेह सुख धर्मा कछुओ नहीं है वह तो केवल अपनोही भजन है १७ और जे नहीं भजतेन कों भजे हैं वे पुरुष दो प्रतार के हैं एक तो करुणावान् दूसरे स्नेही जैसेमाता पिताको पुत्र नहीं चाहे है परन्तु वे चाके ऊपर कृपा करे हैं और या भजन में निर्दोष धर्म है हे सुमध्यामाः सुन्दर है कटि जिनकी ! हे

गोपियो ! या भजन में स्नेह भी है ? ८ कोई पुरुष भजतेन कू भी नहीं भजे है अभजतेन कू कहाँ ते भजेगे वे चारप्रकार के हैं एकतो आत्माही में रमण करे हैं और एक पूर्णानोरथ है जिनके कोई यातही चाहना नहीं है और एक अकृतज्ञ है उपकार कू नहीं समझे हैं और एक गुरुद्रोही है जो उपकारकरे ताहीते द्रोह करे है १९ श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं हे सखियो ! जो कोई प्राणी मेरो भजन करे है तिनको आपर्णा और ध्यान लगाये के लिये मैं उनकू नहीं भजूँ जैसे दरिद्री पुरुष को धन मिले है और वह धन जानरे है तब वह वाकी चिन्ता के बारे भूल प्यास नहीं जाने है २० हे अवलाओ ! मेरे लिये छोड़ी है कोमलर्यादा वेदपर्यादा पति पुन जिनने ऐसी तुमहो तिनकी वृत्ति लगाये के लिये तुमकू देखिवेकों नहीं आयो तुम्हारे पासही खिपिके रहतभयो कइ दूरि नहीं गयोहो याते हे प्रियाओ ! यह छुपण डुरो है ऐसे मो र्यारे में दोष मति लगावो २१ निर्दूषित है सग जिनको ऐसी तुमहो तिनके उपकार को बदलो मोपै देवतानकी बराबर अवस्था होती तौभी नहीं होसके है क्यों जो छोड़ी न जाय ऐसो घरलगी वेडीन कू काटिके भेरो सेवन करतभई यातें तुमहीं करिदेउ कि कृष्ण हमरो छुणिया नहीं है तो भेरो छुटकारो है

एवंमदर्थोऽस्मिन्नलोके देस्वानां हि नो मय्यनुवृत्तयेऽवलाः ॥ मया परोक्षं भजतातिरोहिणं मास्मयितुं पाऽहं यत्प्रियं प्रियाः २१ न पारयेऽहं निरवद्यं संजुगं स्मसां धुक्स्थं विबुधा गुपाऽपिवः ॥ यामाऽभजच्छुभ्रं रोगे हृद्भ्रूलाः संहरन्व्यतदः प्रतियातुसाधुना २२ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे रासक्रीडायां गोपीसान्त्वनं नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ इदं भगवतो गोप्यः श्रुत्वा वाचः सुपशलाः ॥ जहुरिर्विहजंतापं तदङ्गोपचिताशिपः १ तन्नाभतगोविन्दो रासक्रीडामनुव्रतेः ॥ स्त्रीरत्नैरन्वितः प्रीतैरन्योऽन्यावच्छवाहुभिः २ रासोत्सवः संप्रवृत्तो गोपीगण्डलमण्डितः ॥ योगेश्वरेण कृष्णेन तासामध्ये द्वायोर्द्वयोः ॥ प्रविष्टेन गृहीतानां कण्ठे स्वनिकटं स्त्रियः ३ यं मन्येरन्नभस्तावद्विमानशतसंकुलम् ॥ दिवौ कसांसदाराणामौत्सुक्यापहृतात्मनाम् ४ ततो दुन्दुभयोनेन्दुर्निपेतुः पृष्पयुष्टयः ॥ ज

मोपै तुम्हारे उपकार को बदलो नहीं होयसके है २२ इति श्रीमन्महाभागवतार्थकृष्णार्थदशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे रासक्रीडायां गोपीसान्त्वनं नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥ \* ॥ \* ॥  
( त्रयस्त्रिंशेततो गोपीगण्डली मध्यगोहरिः ॥ प्रियास्तारमयापास हृदिनीयनकेलिभिः १ ततो सबे अद्ययाय में गोपियों की मण्डली के मध्य में प्राप्त कृष्णजी तिन प्यारी गोपियों को हृदिनीयन केलियों से रमण करातेभये ? ) श्रीशुकदेवजी कहे हैं या मत्तार जा श्रीकृष्ण के हस्त चरण कू आदिले के अंगनसूं वदे हैं मनोरथ जिनके ऐसी गोपी भगवान् श्रीकृष्ण के वचन श्रवण करिके विरह के तापकू त्यागतभई ? तदा गोविन्द श्रीकृष्ण हैं सो अपनी आज्ञा की करनवारी प्रसन्न होय आपुस में हाथ जिनने पररि लिये ऐसी स्त्रीन में रत्न जो गोपी हैं तिनकू सङ्ग लेऊ रासक्रीडा को चारम्भ करतभये २ गोपीन के समूह हैं तिनसों शोभायमान ऐसो रासको उत्सव है सो योगके ईश्वर श्रीकृष्ण रचत भये मण्डलरूप करिके ठाकी भई जे गोपी हैं तिनके दो दो के बीच में कण्ठ में गलवाहीं डारि गान करत आपहू ठावे भये ३ जिन श्रीकृष्णचन्द्र कू सब गोपी प्यारो भेरे पास है वह कहे प्यारो भेरे पास था मत्तार अपने अपने पास पास मानत भई रास देखिवेकी

इच्छा जिनके भई ऐसे देयता अपनी स्त्रीनकू लोके आये तिनके विमाननसू आकाश व्याप रहो है ४ देवतान के आये पीछे नगारे वज्रतभये फूलगकी वर्षा होतभई मुख्य मुख्य गन्धर्व अपनी अपनी स्त्रीन को संगठेके श्रीकृष्ण के निम्नल यशको गावतभये ५ प्यारे श्रीकृष्णसहित जे स्त्री हैं तिन के कंकण नूपुर किंकिणीन को रासमण्डल में बड़ी भजनकार शब्द होतभयो ६ जैसे दो दो सोनेके माणयान के बीचमें एक एक नीलमणि सुन्दर लगे हैं तैसे वा रासमण्डल में दो दो गोपीन के बीचमें एक एक भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अतिमुन्दर लागत भये ७ पावन की धरनि भुजान की हलानि मुसिकानि सहित धृष्टडीन की चढ़नि कपन की लचकानि कुचनकी और वजनकी हलानि तिनसू पसीना मुँहपे जिनके आय गये चोड़िनकी नारन की गाड़ि जिनकी खुल गई ऐसी श्रीकृष्णचन्द्र की वधू गोपी श्रीकृष्ण कू गावत जैसे वेप्रमण्डल में धिल्ली सुन्दर लगे हैं तैसे सुन्दर लागतभई ८ नाना रंगनसू कण्ठ जिनके रगिरहे रतिही जिनको

गुर्गन्धर्वपतयः सस्त्रीकासनद्यशोभलम् ५ बलयानानूपुराणां किङ्किणीनाश्चोपिताम् ॥ सभियाणामभूच्छब्दस्तुमुलोरासमण्डले ६ तत्रातिशुशुभेता भिर्भगवान्देवकीसुतः ॥ मध्येमर्णनाहैमानां महामरकतोयथा ७ पादन्यासैर्भुजविधुतिभिः सस्मितैर्धूलिलासैर्भोज्यन्मध्ये श्रलक्ष्मचपटैः कुरडलैर्गण्डलो लैः ॥ स्विद्यन्मुखः कवरशनाग्रन्थयः कृष्णवद्योगायन्यस्तंतडितहवतामेघचक्रैर्विरेजुः ८ उच्चैर्जगुर्नयमानारक्कशब्दोरतिभियाः ॥ कृष्णभिमशो मुदितायद्रीतेनेदमावृतम् ९ काचित्सममुकुन्देनस्वरजातीरामिश्रिताः ॥ उन्नियेपूजितातेनप्रीयतासाधुसाध्विति ॥ तदेवध्रुवमुन्नियेतस्यैमानश्चवद्बदा त १० काचिद्रासपरिश्रान्ता पार्श्वस्थस्यगदाभृतः ॥ जग्राहवाहुनास्फुन्धंश्लथदलयमल्लिका ११ तत्रैकांसगतंवाहुंकृष्णरयोत्पलसौरभम् ॥ चन्दनालि समाधाय हृष्टरोमाचुचुम्बह १२ कस्याश्चिन्नाद्यविक्षिप्तकुरडलित्विभमण्डितम् ॥ गण्डंगण्डेसन्दधत्याअदासाम्बूलचर्वितम् १३ नृत्यन्तीगायतीकाचित्रकू जञ्जुपुरमेखला ॥ पार्श्वस्थाच्युतहस्ताब्जं श्रान्ताधातस्तनयोः शिवम् १४ गोप्योलब्ध्याऽच्युतं कान्तं श्रियपूकान्तवत्तलभम् ॥ गृहीतकण्ठयस्तदोभ्यां

प्यारी श्रीकृष्णको स्वश्री जिनको होय तासू बड़ी जिनके आनन्द वे गोपी नृत्य करत ऊँचे स्वर से गावतभई जिनको गीतया विध में छायरहो ९ कोई गोपी मुकुन्द जे श्रीकृष्ण हैं तिनके सग उच्चस्वरन के आलापन की गतिन कू उठावत भई कैसे स्वरन की जातिलीनी श्रीकृष्णने जो स्वर उठायो है तिनमें मिली है तत्र श्रीकृष्ण प्रसन्न होय के स्यापास स्यावास पेसे बढ़ाई करत भये ताते स्वरनकी जाति लीनीही तिनकू ध्रुवताल में वाजे के गावतभई जो गोपी हैं सो गोपी को श्रीकृष्णचन्द्र बहुत मान देत भये १० कोई गोपी रासमें अभित होयके पासमें गदाके बारण करनवारे श्रीकृष्ण ठाढ़े हैं तिनके कन्याकों हायते पकरतभई कंकण फूलनके हार जाके शिथिल होयगये ११ तामपय रोमाञ्च जाके होय आये ऐसी एक गोपी कमलकी तुल्य जामें सुगन्धि आवै चन्दन जामें लग्यो ऐसी श्रीकृष्णकी भुजाको अपने कन्यापै धरिके लुगन करतभई १२ नृत्यसू चलायमान जो कपोल ताकू श्रीकृष्ण के कपोलन ते लगवै ऐसी जो गोपी हैं ताकू श्रीकृष्ण बीरी को उगार देतभये १३ नूपुर कंधनी जाके वज्र ऐसी कोई एक गोपी नृत्य करत गावत भयो तत्र पास श्रीकृष्ण ठाढ़े हैं तिनको मंगलरूप हस्तकमल अपने स्तनन पै धरति भई १४



लक्ष्मी कूं अत्यन्त प्यारे ऐसे अच्युत श्रीकृष्णचन्द्र कूं सुन्दर पति पाइ के तिनकी भुजान सूं कण्ठ में गलबाहीं डारि के श्रीकृष्ण कों गावती विहार करत भई १५ कानन में नीलकमल और अलकावली तिनसूं शोभायमान जो कपोल और पसीनान के विन्दु तिनसूं शोभायमान जिनके मुख केशन ते भरभर के फूल गिरि जिनके वे गोपी भौरा गवैया रासकी सभा में ककण नूपुर के भनकारे जे वाजे हैं तिनसूं श्रीकृष्ण के संग दृश्य करत भई गवैया वज्रवैया गन्धर्व्व किन्नरादिक रास देखिके मोहित होय गये तब नूपुर कंकणन के वाजे वजे भौरा गवैया भये सब रिझवैया होयते पावन के ऊपर फूल वर्षावत भये १६ या प्रकार लक्ष्मी के पति श्रीकृष्ण आलिङ्गन हाथन को स्पर्श स्नेह भरी चितवनि वड़े विलास हास हैं तिनसूं वालक अपनी परछाई सूं खेलै है तैसे ब्रजसुन्दरीन के संग रमण करत भये १७ हे कुरुद्वह अर्थात् कौरन के वंश को आनन्द देनवारे राजा परीक्षित ! तिन श्रीकृष्णके अंग में जो आनन्द तासूं विवश है इन्द्रिय जि-

गायन्त्यस्तं विजिह्वरे १५ कर्णोत्पलालकविटङ्ककपोलघर्मवक्त्रश्रयोवल्लयनूपुरघोषवाद्यैः ॥ गोप्यःसंभगवताननुतुःस्वकेशस्तस्रजोभ्रमरायकरा समोष्ठ्याय १६ एवंपरिष्वङ्गरामिमर्शस्निग्धक्षणेदाभिविलासहासैः ॥ रेमेरेशोब्रजसुन्दरीभिर्यथाऽर्भकःस्वप्रतिविम्बविभ्रमः १७ तदङ्गसङ्गमदाकु लेन्द्रियाः केशान्दुःखलंकुचपट्टिकांवा ॥ नाञ्जःप्रतिव्योदुपलंब्रजस्त्रियोविस्रस्तगालाभरणाःकुरुद्वह १८ कृष्णविक्रीडिनंवीक्ष्य मुमुहुःखेचरस्त्रियः ॥ का मार्दिताःशशाङ्कश्च सगणोविस्मितोऽभवत् १९ कृत्वातावन्तमात्मानं यावतीगोपयोपितः ॥ रेमेसभगवांस्तार्धिरात्मारामोऽपिलीलया २० तासामति विहारेण श्रान्तानांवदनानिसः ॥ प्रामृजत्कुरुणःप्रेमणा शन्तमेनाङ्गपाणिना २१ गोप्यःस्फुरत्पुटकुण्डलकुन्तलत्विङ्गरडश्रियासुधितहासनिरीक्षणेन ॥ मानंदधत्तपद्मस्यजगुःकुतानि पुरयानितत्करुहस्पर्शप्रमोदाः २२ ताभिर्युतःश्रममपोहितमङ्गसङ्गघृष्टस्रजःसकुचकुङ्कुमराञ्जितायाः ॥ गन्धर्व्वपालि भिन्नुदुतआविशद्वाः श्रान्तोगर्जीभिरभराडिवभिन्नसेतुः २३ सोऽम्भस्यलंयुवतिभिःपरिपिच्यमानः प्रेम्णेशितःप्रहसतीभिरतस्ततोऽङ्ग ॥ वैमानिकैः

नकी और खिसिले हैं माळा गहने जिनके ऐसी ब्रज की स्त्री गोपी हैं ते केशन कूं रेश्मी वल्लन कूं कुचन कूं सम्हारवे कूंन समर्थ होत भई १८ श्रीकृष्ण की रासक्रीडा देखिके आकाश में देवांगना काम सूं पीडित होय के मोहित होत भई तारागण सहित चन्द्रमा आश्चर्य्य मानके चलिवो भूछि गयो तब और ग्रह भी जहाँ के तहाँ रहत भये तासूं राति जो वडि गई तिनमें सुख पूर्व्वक विहार करत भये १९ जितनी गोपन की स्त्रीरहीं तितनेही अपने रूप करिके आत्माराम भगवान् श्रीकृष्ण गोपीन के संग लीला करत रमत भये २० अत्यन्त विहार सूं श्रम जिनको भयो ऐसी गोपीन के मुख के पसीना को देखिके करुणा जिनके आय गई ऐसे श्रीकृष्ण हैं सो प्रेमसों सुख को देनवारी अपनो हाथ तासूं पोंछत भये २१ श्रीकृष्ण के हस्तकमल के लागिवे ते हे आनन्द जिनके ऐसी जे गोपी हैं ते प्रकाशमान सुवर्ण के कुण्डल और केशन की कान्ति सों शोभायमान अमृतसमान हाससमेत चितवनि सों कृष्णजी को पूजन करती भई और तिनके पुण्यकारी कर्मों को गावत भई २२ रासक्रीडा को श्रम जिनको भयो ऐसे श्रीकृष्ण तिन गोपिनकों संग लेके श्रम दूरि करिवे के लिये जलमें धसत भये कुचनकी केशर जामें लगि अंगसंग सू रगड़ी ऐसी

जो माला है ताकी सुगन्धि मूंग् मन्थर्वन की तुल्य भौरा गायत गावत पीछे चले जाय है जैसे हथिनीन कूं संगलैके हाथी जलविहार करिने कूं जाय है २३ अत्र अर्थात् हे राजन् परीक्षित ! इत उत ते जल में स्नान कू छीटा देय है श्रीकृष्ण कूं देखिके भेग ते हेतो हैं विमानन में बैठे देवता जिनकी स्तुति करै हाथी की तुल्य जिनकी लीला ऐमे आत्माराम श्रीकृष्ण तहूँ जल में अथवा गोपीन के मण्डल में विहार करत भये २४ जलविहार करे पीछे जल के स्थल के पुण्य हैं तिनकी सुगन्धि जिन में आवै ऐसी पवन सों सेवित हैं दिशान के अन्त जामें ऐसो जो यमुनाजी को बाग है तामें भौरा गोपी जिनके संग ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र विहार करत भये मद जाके चुबे ऐसो हाथी जैसे हथिनीन के संग विहार करे है २५ या प्रकार प्रकाशमान जे रात्री है तिनकूं चन्द्रमा की किरणन मूं सत्य जिनको सङ्कल्प अनुरागती जो गोपी हैं तिनके समूह में विराजमान अपने विषे वीर्य जिनने रोको ऐसे श्रीकृष्ण शरवृक्षतुमें रमण करत कविनने कहे जे रसहैं तिनके आश्रय ऐसी शरवृक्षतु के चन्द्रमा की किरणन मूं प्रकाशमान जे रात्रि है तिनैं सेवन करतभये २६ राजा परीक्षित प्रश्न करे हैं हे महाराज शुक्रदेवजी ! धर्म के स्थापन करिने के लिये और

कुमुदवर्षिभिरीड्यमानोरेमेस्यंस्वरतित्रगजेन्द्रलीलः २४ ततश्चकृष्णोपवने जलस्थलप्रमूगन्धानिलजुष्टदिक्रटे ॥ चत्वारभुङ्क्षुप्रमदागणधुनोयथा म दव्युद्धिरदः करेणुभिः २५ एवंशशाङ्काशुविराजितानिशाः ससत्यकामोऽनुतावलागणः ॥ सिपेवआत्मान्यवरुद्धसौरतः सर्वार्शरत्कान्यकथारसा श्रयाः २६ ॥ राजोवाच ॥ संस्थापनायधर्मस्य प्रशमायेतरस्यच ॥ अवतीर्णोऽहिभगवानंशोनजगदीश्वरः २७ सकथं धर्मसेतूनां वक्ताऽर्त्ताऽभिरक्षिता ॥ प्रतीपमाचरद्वहन् परदारोगिपर्शनम् २८ आसकामोयदुपतिः कुनत्रान्वैजुगुप्सितम् ॥ किमभिप्रायएतन्नः संशयंछिन्धिचसुत्रन २९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ धर्मव्यतिकमोदष्टईश्वराणाञ्चसाहसम् ॥ तेजीयसानंदोपाय वद्धेः सर्वभुजोयथा ३० नैतत्समाचरेज्जातु मनसाऽपिह्यनीश्वरः ॥ विनश्यत्याचरन्मौ ब्याद्यथारुद्रोऽधिजंविपम् ३१ ईश्वराणां त्रिचः सत्यं तथैवाचरितं क्वचित् ॥ तेषां यस्त्वनचोयुक्तं बुद्धिमांस्तत्समाचरेत् ३२ कुशलाचरितेनैवाभिहस्वार्थो

अधर्म के नाश करिने के लिये जगत् के ईश्वर श्रीकृष्ण भगवान् परिपूर्ण रूप करिके अवतरे हैं और धर्म की मर्यादान के ग्रहण करने वाले श्रीकृष्ण विराजी स्नान को स्पर्श करनो यह धर्म कैसे करतभये पूर्णकाम यादवन के पति श्रीकृष्ण निर्दित कर्म कैसे करतभये याको कष्ट अभिप्राय है सुन्दर है अत्र जिनको ऐसे हे शुक्रदेवजी ! यह जो हमारो सन्देह है ताय दूरि करो २७।२८।२९ यह वचन श्रवण करिके श्रीशुकदेवजी बोले हे राजन् परीक्षित ! सामर्थ्यवान् कूं धर्म को उलाधिवो देख्यो है और सामर्थ्यवान् कूं साहसह देख्यो है ब्रह्मा अपनी पुत्री के पीछे भाज्यो चन्द्रमा दुहरपति की स्त्री के पास गयो जैसे अग्निमें वुरी भली मस्तु डारो ताकूं जराय देइ वाकू दोष नहीं लागे हैं ऐमे तेजस्वी पुरुषन कू दोष नहीं लागे हैं ३० असामर्थ्यवान् पुरुषन कूं मन से हू न करे और जो अज्ञान ते करे तो मारो जाय जैसे रुद्र विना और कोई समुद्र के विष कूं पीये तो मारो जाय ३१ ईश्वरों के वचनही कों सत्यमाने और उनके आचरण कूं रुद्ध सत्य माने जैसो उनने वक्षो हैं ताही के अनुसार बुद्धिमान् पुरुष करे राम कृष्ण दोउ अवतारभये हैं रामचंद्रने जैसो कक्षो तैसोहीकरो है याते उनको कहनो करनो दोनों करै श्रीकृष्णने गीतामें जो वक्षो

है ताय करे और उन्ने जे लीला करी है तिनको न करे किन्तु ध्यान करे ३२ हे प्रभो अर्थात् राजन् परीक्षित् ! या संसार में अष्टद्वार जिनके नहीं ऐसे सामर्थ्यान् पुरुष जो अच्छो कर्म करे तापूँ उनको पुण्य नहीं होय है और निकृष्ट कर्म करने से पाप नहीं होय है पुण्य पाप तो देह में अहंकार के वश से लगे है अहंकाररहित पुरुष कूँ कहु टोप नहीं है ३३ समस्त प्राणी पशु पक्षी मनुष्य देवता जीव इनके ईश्वर जो श्रीकृष्ण हैं तिनकूँ पुण्य पाप नहीं लगे है यामें कहा कहनो है ३४ जिनके चरणारविन्द को पराग अर्थात् मरुत्तदे के सेवन करे ते तुमभये जे भक्त हैं ते और योग के प्रभाव सों दूर भये हैं सम्पूर्ण कर्मजन जिनके ऐसे जे मुनीश्वर ज्ञानी ते वन्दनसूँ रहित होयके अपनी इच्छापुर्वक विचरे है और इच्छाकारिके धारण किये है रूप जिनने ऐसे जे भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्र तिनकूँ वन्दन कहा ते होय ३५ गोपी और तिनके पतिन के सम्पूर्ण देहधारीन के साक्षीरूप होयके जो देहके भीतर रहे है तिन श्रीकृष्णने क्रीडा करि के लिये देह धारण किये है ३६ न विद्यते ॥ निपर्ययेणानर्थो निरहङ्कारिणां प्रभो ३३ किमुनाखिलसत्त्वानां निर्यद्वैत्यद्वैतकसाम् ॥ ईशितुश्चेशितव्यानां कुशलाकुशलाननयः ३४ यस्यादपङ्कजपरागनिपेव तसा योगप्रभावविधुनाखिलकर्मवन्धाः ॥ स्वैश्वरान्तिमुनयोऽपिननह्यमानास्तस्येच्छयाच्चवपुःकुतएवबन्धः ३५ गोपीनां तत्पतीनाञ्च सर्वेषामेव देहिनाम् ॥ योऽन्तश्चरति सोऽध्यक्षः क्रीडनेनेह देहभाक् ३६ अनुग्रहाय भूतानां गानुपदेहमास्थितः ॥ भजते तादृशीः क्रीडायाः श्रुत्वा तत्परो भवेत् ३७ नाभूयन् खलुकृष्णाय मोहितास्तस्य मायया ॥ मन्यमानाः स्वपार्श्वस्थान् स्वाचस्वाचदाराच ब्रजौकसः ३८ ब्रह्मरात्रउपावृत्तेवासुदेवानुमोदिताः ॥ अनिच्छन्त्यो ययुर्गोप्यस्वगृहाच्च भगवत्प्रियाः ३९ विक्रीतं ब्रजवधूभिरिदञ्च विष्णोः श्रद्धान्वितोऽनुशृणुयादथ वर्णयेद्यः ॥ भक्तिपरां भगवति पूतिलभ्यकामं हृद्गोमाश्रयपहिनोत्यचिरेण वीरः ४० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वोद्धिं रासक्रीडावर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

अशिरुऊवाच ॥ एतद्देवययात्रायां गोपालाजातकौतुकाः ॥ अतोभिरनलुप्तैः प्रयुक्तेऽस्मिन्कावनम् १ तत्रस्नात्वासस्वत्यां देवं पशुपतिं विभुम् ॥ प्राणीनके ऊपर अनुग्रह करि के लिये मनुष्य देहधारण करिके मनुष्य लीला करी है जिन लीलानके श्रवण करे ते मनुष्य कृष्णपरायण होय जाय ३७ ता श्रीकृष्णजी मायामें मोहित जे ब्रजवासी ते श्रीकृष्णको दोप नहीं लगावत भये अपनी अपनी स्त्रीनको अपने अपने पास मानत भये ३८ ब्रह्ममुहूर्त अर्थात् चारघड़ी रात्रि रहे श्रीकृष्ण के कहेते घर आयेकी इच्छा जिनके नहीं ऐसी ध्यासी गोपी अपने अपने घरकूँ आवत भई ३९ श्रीकृष्ण चन्द्र भगवान् ने परमकौतुक जो ब्रजवधू गोपीन के संग रासलीला है ताय जो पुरुष श्रद्धापूर्वक श्रवण करे और कवन करे वह पुरुष भगवान्में परमपक्ति पायके थोड़े दिनमें धीर होयके जलदी देसी हृदयके कामरूप रोग कों त्यागे है ४० इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे पूर्वोद्धिं रासक्रीडावर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

( चतुर्विंशोऽहनाग्रस्तं नन्दं हरिं रमूचत ॥ विद्याग्रं चाद्भिरः शपाच्छह्वं हंत याऽवधीत् १ रासापदेशतः काम किङ्करीकृत्य कामतः ॥ अनुलुप्तं शनिनये तथा विद्याधराधिपम् २ चौतीसवें अध्याय में अद्भिराजी के शप सों सुदर्शन विद्याधर सर्वरूप होकर नन्दजी को असता भया तिससे कृष्णजी नन्दजी को छुड़ाते भये और शह्वं हूँ को मारते भये १ रास के अपदेश सूं कामते का-

मदेव को दूतकर ग्रहणकर वश में प्राप्त करतेभये और विद्याधरों के स्वामी सुदर्शन को भी वश करतेभये २) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! एकसमय भयो है कौतुक जिनके ऐसे व्रजवासी देवीकी यात्रा करिने के लिये डैल जिनमें जुते ऐसे गाछान में बैठि के देवी के वन में जातभये १ ता वनमें सरस्वती नदी में स्नान करिके पशुपति जो महादेव हैं तिनकी हे राजन् परीक्षित ! भक्तिपूर्वक पूजा करिके अम्बिकादेवीकीभी पूजा करत भये २ सम्पूर्ण प्रजवासी महादेव हमारे ऊपर प्रसन्न होयें या कारण गऊ, सोना, वस्त्र और मधुसूक्त मधुर अन्न ब्राह्मणन कुं दान करत भये ३ वडो है भाग्य जिनको ऐसे नन्द सू आदिलैके समस्तव्रजवासी वा दिनरात्रि कुं जल को आचमन करिके तीर्थ व्रत करते सरस्वती के किनारे वसतभये ४ वा वन में कोई एक अस्थान भूखो सर्प अकस्मात् आयके सोतेहुये नन्दरायजी को प्रसन्न भयो ५ सर्प ने जब प्रसन्नो तब नन्दरायजी पुकारत भये हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! यह वडो सर्प है मोकों निगले जायहै हे पुत्र ! ये तेरी

आनन्दुरहै भक्त्या देवीञ्चनृपतेऽम्बिकाय २ गात्रोहिरयंवासांसि मधुमध्वन्नामाहताः ॥ ब्राह्मणेभ्योददुःसर्वे देवोनःप्रीयतामिति ३ उपुःसरस्वतीतो रे जलं प्राश्यञ्चनव्रताः ॥ रजनींतामहाभागानन्दमुनन्दकादयः ४ कश्चिन्महानिहस्तास्मिन् विपिनेऽतिबुभुक्षितः ॥ यदृच्छयागतोनन्दं शयानमुर गोऽग्रसीत् ५ सचुकोशाहिनाग्रस्तः कृष्णकृष्णमहानयम् ॥ सर्पोभांग्रसतेतात प्रपन्नपरिमोचय ६ तस्यचाक्रन्दितंश्रुत्वा गोपालाःसहसोस्थिताः ॥ अस्तञ्जवदद्विविभ्रान्ताः सर्पविषयधुरुल्मुकैः ७ अलातैर्दहमानोऽपि नामुञ्जवत्तमुरङ्गमः ॥ तमस्पृशत्पदाभ्येत्य भगवान्नासाव्यतांपतिः ८ सर्वैर्भगवतः श्रीमत्पादस्पर्शहताशुभः ॥ भजेत्सर्पवपुर्हित्वा रूपंविद्याधराचितम् ९ तमपृच्छच्छूर्पिकेशःप्रणतंसमुपस्थितम् ॥ दीव्यमानेनवपुषा पुरुषंहेममालिनम् १० कोभवान्परयालक्ष्म्या रोचतेऽद्भुतदर्शनः ॥ कथंजुगुप्सितामेतां गतिंवाप्रापितोवशः ११ ॥ सर्पउवाच ॥ अहंविद्याधरःकारिचत्सुदर्शनइतिश्रुतः ॥ श्रिया स्वरूपसम्पत्त्या विमानेनाचरन्दिशः १२ ऋषीन्विरूपानङ्गिरसः प्राहमंरूपदर्पितः ॥ तैरिमांग्रापितोग्रोर्नि प्रलब्धैःस्वेनपाप्मना १३ शापोमेऽनुग्रहोयैव

शरण आयो हू तू मोको छोड़ा ६ या प्रकार नन्दजी की पुकार सुनिके हरवराहट जिनके भयोऐसे व्रजवासी शीघ्रही उठिके नन्दजी कूं सर्प निगलेहै ऐसे देखिके मुलगती लकरियान सूं सर्पको भारत भये ७ मुलगती लकरियान सूं मारोगयो तथापि नन्दरायजी को न छोड़त भयो तब भक्तकी रक्षा करनेवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र वा सर्प के चरणनकी ठोकर भारत भये भगवान् श्रीकृष्ण को सुन्दर जो चरणहै ताके लगे से पाप जाके दूरभये वह सर्प देहको त्यागिके विद्याधर जाको पूजन करै ऐसे स्वरूप को धारण करतभयो ८ ९ प्रकाशमान रूपको धरिके सुवर्णकी माला पहिरे हाथजोरि ठाढ़ो जो पुरुषहै ताय श्रीकृष्ण पूजतभये १० परमशोभायमान अद्भुत है दर्शन जिनको ऐसे तुम कौनहो विवश होयके यह निन्दित सर्पकी योगि तुमको कैसे मिली है १ यह सुनिके वह सर्प बोल्यो हे महाराज ! सुदर्शन नाम करिके विख्यातमैं कोई विद्याधरहौं सम्पत्ति और शरीरकी जो सुन्दरता है तासू गर्वित होयके विमान में बैठिके दिशान में विचरत भयो १२ स्वरूपको है मद् जाके ऐसो मैं अंगिरावंशमें भये ऐसे विरूप जो अप्रावकादिक ऋषि हैं तिनकी हांसी करत भयो तब उनने शाप दीनो तासूं मेरी सर्पयोगि होयगई १३ करुणावान् ऋषीश्च-

रनने मेरे ऊपर कृपा करिबे के लिये मो कौं शाप दियो जा कारण ते त्रिलोकी के गुरु तुमहौ तिनके चरणारविन्द को स्पर्श करते पाप दूर भय और जो वे शाप न देते तो तुम्हारे चरण मेरे कहा ते लगते १४ ससार ते हरपि के शरण आये पुरुष के भयके दूरि करनारि तुमहौ तिनसौं पूछौ हो हे सद्य पापन के दूरि करनवरि तुम्हारे चरणस्पर्शमे भरे सय पाप दूरि होयभये १५ हे महायोगिन् ! हे महापुरुष ! हे महासाधुन के पति ! हे प्रज्ञाशुक्त ! हे समस्त लोकन के ईश्वरनके ईश्वर ! तुम्हारी शरण आगो जो मैं हों सो मो कौं आज्ञादेउ १६ हे अन्युत अर्थात् अखण्डरूप ! तुम्हारी दर्शन करे ते शीघ्रही ब्राह्मण के शाप ते छूटिगयो जिनको नामोच्चारण सम श्रोतानकूं अपनेनकूं पवित्र करे हे तुम्हारे चरणस्पर्श ते मैं पवित्र भयो यामें कहा कहनो है या प्रकार दा शार्दैवंश में भये जे श्रीकृष्ण तिनकी आज्ञालेके परिक्रमा देके प्रणाम करेके वह सुदर्शन स्वर्गकूं जात भयो और नन्दरायजी कष्ट ते छूटत भये १७। १८ श्रीकृष्णचन्द्र को पैभव देखिके आ-

कृतस्तैः करुणात्मभिः ॥ यदहं लोकां गुरुणा पदास्पृशेह तां शुभः १४ तं वाऽहं भवभीतानां प्रपन्नानां भयापहम् ॥ आपृच्छेशापनिमुक्तः पादस्पर्शादिमीव हन् १५ प्रपन्नोऽस्मि महायोगिन् महापुरुष सत्पते ॥ अनुजानीहि मां देव सर्वलोके श्वरेश्वर १६ ब्रह्मदण्डादिमुक्तोऽहं सद्यस्तेऽच्युतदर्शनात् ॥ यन्नाम गृह्णन्नखिलाञ्छ्रोतृनात्मानमेव च ॥ सद्यः पुनाति किं भूयस्तस्य स्पृष्टः पदाहिते १७ इत्यनुज्ञाप्य दाशार्हपरिक्रम्या भिवन्द्य च ॥ सुदर्शनो दिवं यातः कृच्छ्रान्नन्दश्च मोक्षितः १८ निशाभ्यर्च्य कृष्णस्य तदात्मवैभवं ब्रजौकसो विस्मिमतचेतसस्ततः ॥ समाप्य तस्मिन् नियमं पुनर्ब्रजं नृपाययुस्तत्कथयन्त आहताः १९ कदाचिदथ गोविन्दो रामश्चाद्भुतविक्रमः ॥ विज्रहत्तुर्वने राड्यां मध्यगौब्रजयोपिताम् २० उपगीयमानौ ललितं स्त्रीजनैर्वद्धसौ हृदः ॥ स्वलंकृतानुलिताङ्गौ सखि वणौ विरजोऽम्बरौ २१ निशासुखं मानयन्तावुदितोऽप्युपतारकम् ॥ मल्लिकागन्धमत्तालिजुष्टं कुमुदवायुना २२ जगतुः सर्वभूतानां मनः श्रवणमङ्गलम् ॥ तौ कल्पयन्तौ युगपत्स्वस्वमण्डलमूर्च्छितम् २३ गोप्यस्तद्वीतमाकर्ण्य मूर्च्छितानां विदधृष ॥ खंसहुकूलमात्मानं स्वस्तके शस्त्रजन्ततः २४ एवं विक्रीडतोः

श्चर्य्यं कू मातभये है चिच जिनके ऐसे ब्रजवासी ता पीछे तीर्थ में नियमकू पूर्ण करिके बड़े आनंद तें श्रीकृष्णचन्द्र के चरित्र को कहत ब्रजमें आवत भये १९ काहू समय एक यात्राके पीछे गोविन्द धार आद्भुत है पराक्रम जिनको ऐसे बलराम दोनों भय्या वन के विषे रात्रि में ब्रजकी स्त्रीनके बीच में बिहार करतभये २० बायो है स्नेह जिनने ऐसी स्त्री ललित तिनमें दोनों भय्या सुन्दर आभूषण पहिरे केशर चन्दन लगाये वनमालाकूं पहिरे निर्मल वस्त्र पहिरे गावें है २१ उदय भये हैं तारागण चन्द्रमा जामें ऐसो सन्ध्यासमय ताको सत्कार करे हैं चमेली की सुगन्ध सौ मत्त होयके भौरा गुजार करे हैं कुमोदनी जो फूली हैं तिनसौं लगिके पवन चले हैं २२ सब प्राणीन के मनकूं कानकूं आनन्द को देनवारो जो गीत है ताकूं गावत भये स्वरनके मण्डलकी मूर्च्छना कहा आलापचारी ताकूं एक संग लेइ हैं २३ हे राजन् परीक्षित् ! कृष्ण बलदेवको गायवो सुनिके मूर्च्छा जिनको आयगई ऐसी गोपीनके वस्त्र ढीले होयगये चोटीनकी गाँठ खुल्लिगई ऐसे





करतभई ? अत्र गोपी आपुसमें कहें हैं हे गोपियो ! वहाँ युगपै वांयें कपोलकों धरिके झुकुटीनकों चढ़ायके मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र अश्वर के ऊपर वांसुरी कों धरिके कोमल अंगुलीनसँ वाके छिन्न कूँ दाविके जा समय आकाश में है गमन जिनको ऐसे देवतान की स्त्री अपने पतिन सहित वासुरी को सुनिके प्रथम आश्चर्य मानिके लाजसहित कामदेव के वाणनसँ चित्त जिनने सोंप डिये है नारैनी सुधि जिनकों न रही या प्रकार मोहकों प्राप्त होतभई २।३ हे अत्रलायो ! यह आश्चर्य सुनो हारकी तुल्य निर्मल जाकी हैसनि वांसुरी के वजावत समय नीचो मुख करिके जो हैंसे है ताकी हारन में प्रकाशित हैसनि होय है अथवा हार की तुल्य छाती में शोभायमान जाकी हैसनि है और छाती में विजलीकी तुल्य प्रकाशमान स्थिर लक्ष्मी जाके रहै पीडित जननको सुख देने वारो यह नन्दको पुत्र जा समय वासुरी कूँ वजावे है तब दूरिते वांसुरी को शब्द श्रवण करिके हरिगये है चित्त जिनके ऐसे गौ चैल हरिखन के समूह के समूह दन्तन ते कौर काटिके बाह पकरे भये कानन को ऊँचे करिके लोवत से चित्र लिखेकी तुल्य टाढ़े होतभये अज्ञानी पशुपत्नीन की यह दशाहै यह आश्चर्य है ४।५ अत्र अचेतन नदीन में आश्चर्य है यह कहे हैं हे सती ! मोर-

तभुरधरार्पितवेणुम् ॥ कोमलाबुलिगिराश्रितमार्गं गोप्यईरयतियत्रमुकुन्दः २ दशोभयानवनिताः सहस्रिह्रैर्विस्मितास्तदुपधार्यसलज्जाः ॥ काममार्गणस  
मर्पितचित्ताः कश्चलं ययुरपस्थुतनीव्यः ३ हन्तचित्रमवलाः शृणुतेदं हारहासउरसिस्थिरविद्युत् ॥ नन्दसूनुयमार्त्तजनानानर्मदोयहिंकूजितवेणुः ४ बृन्दशो  
ब्रजशृंगमगवोत्रेणुवाद्यहतचेतस आरात् ॥ दन्तदृष्टकवलाद्युतकर्णो निद्रितालिखितचित्रमिवासच् ५ वहिणस्तवकधातुपलाशैर्वह्निमल्लपरिवर्हविडम्बः ॥  
कहिंचित्सवलआलिसगोपैर्गाः समाह्वयतियत्रमुकुन्दः ६ तर्हिभग्नगनयः सरितेवै तत्पदाभुजजोऽनिलनीतम् ॥ स्पृहयतीर्वयमिवावहुपुरयाः प्रेमवेपित  
सुजास्तिगितापः ७ अनुचरैः समनुवर्णितवीर्ययादिपूरुषइवाचलभूतिः ॥ वनचरोगिरितटेपुत्रन्तीर्षेणनाऽऽह्वयतिगाः सयदाहिन्दवनलतास्तरवआत्मनि  
विष्णुं दयअग्रनरयइवपुष्पफलाढ्याः ॥ ग्रणतभारविटधामधुधाराः प्रेमहृत्तनवः समृजुः स्म ६ दर्शनीयतिलकोवनमालादिव्यगन्धतुलसीमधुमत्तैः ॥ अलिखु

पुच्छ खरिया मेरु मनाशिल पात इनसँ गलन की तुल्य स्वरूपकरिके कपड एक बलदेव भय्यासहित गोपनसहित जो मुकुन्द हैं सो जा समय वांसुरी वजायके गोवनको बुलावें हैं ता समय वांसुरी की शब्द श्रवण करिके नदीन के मयाह बहते सँ बन्द होयजाय हैं और पवन सँ उडिके गई जो ताके चरणन की रज है ताकूँ हमारी तुल्य आकांक्षा करे है और हमारीही तुल्य नहीं है उत्कृष्ट पुण्य जिनके ऐसी नदीन कूँ मिले नहीं है प्रेम ते जिनकी लहर कैपे जल जिनके निश्चल होय जाई हैं ६।७ गोप ग्वालवाला देवता जिनके यशकूँ गावें नारायण की तुल्य सदा स्थिर है लक्ष्मी जाके वनको विचरनवारो कृष्ण जा समय गोवर्द्धन पर्वतकी शिखर पैं चरें जे गाँ हैं तिन वांसुरी वजायके बुलावें हैं ता समय फूल फल जिनमें लगे उनके वोभते शाखा जिनकी झुकि रहौ प्रेमकारिके हर्षित हैं चित्त जिनके ऐसे वनके लता दृत्त अपनपे में विणुकों प्रष्टकरतेसे मकरन्दकी थारा बहावतभये ८।९ सुन्दरनमें अतिमुन्दर अथवा सुन्दर देखिवे लायक है सामरे ललाट में वेशर को तिनक जिनके वनमालानमें दिव्य है सुगन्धि जाकी ऐसी तुलसी की सुगन्धि सों मतदारे भौरानके समूह तिनको मिलो भयो गीत बड़ो उच्च शब्द ताय आदर से ग्रहण करिके अश्वर के ऊपर वांसुरी कूँ

धरिके वजावै है ता समय सरोवरन में सारस हंस और पक्षीनके चित्त हरिगये आयके श्रीकृष्णचन्द्र के पास बैठतभये कैसे पत्नी है चित्तकों रोके नेत्रनकों मूंदे मौनकों धारणकरे है १०। ११ हे गोपियो ! मालान के जे कानन में कुण्डल है तिनमें शोभायमान भयो है आनन्द जाके ऐसो बलदेव भयगा सहित कृष्ण सप्त विरक्तों आनन्द देके वासुरी के शब्द सों पूर्ण करे ता समय या महान् कृष्णको अपराध न होय ऐसे मेघ मनमें शका मानिके मन्द मन्द गरजे है और अपने मित्र श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर फूल वर्षावै है छत्र करिके छाया करे है सो वह मेघ याको सांचो मित्र है यह सापरो है बहु सापरो है १२। १३ हे यशोदा ! अनेक प्रकार के गोपनके खेलन में निपुण ऐसो तुम्हरो पुत्र अधर के ऊपर वासुरी कों धरिके आपसे आपही सीखे ऐसे पढ़न निपाद कृष्ण गान्धार कूं आदिले के स्वर है तिनके आलापवे के भेद उठात भयो ता समय इन्द्र महादेव ब्रह्मा ये हैं मुख्य जिनमें ऐसे बुद्धिमान देवता है ते मन्द मन्थतार सूं वासुरी कों सुनिके मोहित

लैरलघुगीतमभीष्टमाद्रियन्यहिंसन्धितवेणुः १० सरसिसारसहंसविहङ्गाश्चारुगीतहन्चेतसपत्य ॥ हरिमुपासतेतयतचित्ताहन्तर्मीलितदृशोद्भूतमौनाः ११ सहवलःस्रगवत्सविलासःसानुपुक्षितिभृतोब्रजदेव्यः ॥ हर्षयन्यहिवेणुखेणजातहर्षपरम्भतिविश्वम् १२ महदतिकमणशङ्कितचेतामन्दमन्दमनुगजर्जतिमेघः ॥ सुहृदमभ्यवर्पसुमनोभिशङ्काययाचिविदधत्प्रतपन्नम् १३ विविधगोपरसेपुविदग्धवेणुवाद्यउरुथानिजशिक्षाः ॥ तवसुतःसतियदाधरात्रिभवेदत्तवेणु रनयत्स्वरजातीः १४ सवनशस्तदुपधाव्यसुरेशाःशक्रशर्वपरमेष्ठिपुरोगाः ॥ कवयआनतकन्धरचित्ताःऋषमलंययुरनिश्चिततत्त्वाः १५ निजपदाञ्जलैर्ध्वजवज्रनीरजाङ्कुशविचित्रललाभैः ॥ ब्रजभुवश्शमयन्खुरतोदं वर्ष्मधुश्रृंगतिरीडितवेणुः १६ ब्रजतिनेनवयंसविलासवीक्षणार्पिनमनोभववेगाः ॥ कुजगतिंगमितनविदामःऋषमलेनकवंबसंनया १७ मणिधरःक्वचिदागणयन्गामालयादयितगन्धतुलस्याः ॥ गणयिनोऽनुवरस्यकदाऽसे प्रक्षिपन्सुजमगा यतयत्र १८ क्वाणितवेणुखवक्षितचित्ताः कृष्णमन्वसत्कृष्णशुहिरयः ॥ गुणगणार्थमनुगत्यहरियोगोपिकाइवविमुक्कगृहाशाः १९ कुन्ददामकृतकौतु

होतभये नीचेकों नारिलचायके कौन स्वरकूं गावै है ऐसे निश्चय नहीं करिके है १४। १५ ध्वजा वज्र कमल अंकुश इनके चित्रविचित्र चिह्न जिनमें ऐसे अपने चरणकमल करिके ब्रजभूमिको गौवनके खुर परे ते जो खेद है ताकूं शान्त करतभये मतवारे हाथीकी तुल्य जाती बलनि ऐसो कृष्ण वासुरीको वजायके जा समय चले है ता समय विलासपूर्वक चितवनि सूं राखे है कामदेवको वेग जिनमें ऐसी हम धृक्जनकी तुल्य जड़ होयके हमकूं चोटीकी सुधि न रही और वस्त्रनकी सुधि न रही १६। १७ प्यारी है सुगन्धि जाती ऐसी तुलसीकी मालाकूं पहिरे मणिनकी सुमिरनी हाथमें लैके गौवन को गिनत प्यारे मित्र के कनपै हाथ धरिके जा समय गावै है और वजी जो चांसुरी ताकी देर सुनि के चित्त जिनके हरिगये ऐसी हरिणनकी स्त्री हरिणी ते गुणनको समुद्र जो कृष्णचन्द्र ताके पास आयके गोपीन की तुल्य घरकी आशान कूं त्यागिके सेवन करतभई १८। १९ हे यशोदे ! गोपीन के आनन्द देवे के लिये कुन्दकी मालानसूं आनन्दपूर्वक शृङ्गार जाने किये स्नेहीन के

आनन्दकू देनवारो यह तेरो पुत्र नन्दकुमार गोप गौवन कूं संगलैके जा समय यमुना में विहार करे है ता समय चन्दन की सी सुगन्धि जामें आवै शीतल जामें स्पर्श है तासों श्रीकृष्णचन्द्र को सन्मान करत अतुल्य मन्द पवन चले है गन्धर्व्यादिक वन्दीजननकीसी नाई वाजे वजावत गायके फूलनकी वर्षा करिके सेवन करतभये २०।२१ वृजकों गौवनकों हितको करनवारो इन्द्रने जब वर्षाकरी तब गोवर्द्धन उठायके रत्नाकरी वडे वडे ब्रह्मादिक आथके चरणन में प्रणाम करै ऐसो कृष्ण सन्ध्यासमय सब गौवनकों एकत्र करिके मित्र जाके यशकों गावैं ऐसो कृष्ण वांसुरी कूं वजावत थपभरी शोभा सों आनन्द देत गौवनकी रज जाकी माला में छाथरही चन्द्रमाकी तुल्य प्रकाशमान ऐसो यह देवकी के उदरमें प्रकटभयो जो कृष्ण सो हमारे मनोरथ देवे के लिये आवै है २२। २३ कछु एक मन्द मन्द नेत्र जिनके घूमें अपने स्नेहीन कों मानको देनवारो वनमाला कूं पहिरे पके बेरकीसी नाई पांडु जाको मुख कुण्डलनकी कान्ति सूं कोमल कपोलन कूं शोभाय-

कवेपोगोपगोधनवृतोयमुनायाम् ॥ नन्दसूत्रनघेतवत्सो नर्मदः पूणयिनां विजहार २० मन्दवायुनुवात्यनुकूलं मानयन्मलयजस्पर्शेन ॥ वन्दनस्तमुपदेवगणायै वाद्यगीतबलिभिः परिबृहुः २१ वत्सलो ब्रजगवांयदगध्रो वन्द्यमानचरणः पथिवृद्धैः ॥ कृत्स्नगोधनमुपोह्यदिनान्ते गतिवेषु नुगेडितकीर्त्तिः २२ उत्सवं श्रमरुचाऽपि दृशीनामुन्नयन्खुरजश्छुरितस्रक् ॥ दित्सयैति सुहृदशिपप देवकीजठरभूरुराजः २३ मदविघूर्णितलोचन इषन्मानदः स्वसुहृदां वनमाली ॥ बदरपाण्डुवदनो मुडुगण्डं मण्डयन्कनककुण्डलक्ष्म्या २४ यदुपतिर्द्विरदराजविहारो यामिनीपतिरिवैपदिनान्ते ॥ सुदितवक्त्रउपयातिहुरन्तं मोचयन्ब्रजगवांदिनतापम् २५ श्रीशुकउवाच ॥ एवं ब्रजस्त्रियोरराजन् कृष्णलीलानुगायतीः ॥ रेमिरेऽहस्सुतचित्तास्तन्मनस्कामहोदयाः २६ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे वृन्दावनक्रीडायां गोपिकायुगलगीतनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥ ॐ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथ तर्ह्यागतो गोष्ठमरिष्टो बृषभासुरः ॥ महीं महाककुत्सायः कम्पयन्खुराविक्षताम् १ रम्भमाणः खतरं पदाच्रविलिखन्महीम् ॥ उद्यमान करत मतवारे हाथी के सो जाको विहार प्रसन्न जाको मुख ऐसो यह यादवन को पति श्रीकृष्णचन्द्र सन्ध्यासमय जैसे चन्द्रपा उदय होय है तैसे ब्रजकी गौ हम हैं वड़ो जो दिन को ताप है ताय दूर करत आवै हैं २४। २५ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र में है जीवन जिनकों और बड़े हैं उत्सव जिनके ऐसे ब्रजकी स्त्री श्रीकृष्णकी लीलान को गाय गाय के दिनन को धितावत भई २६ ॥ इति श्रीमन्महाभागवततार्यरूपिण्यां दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे वृन्दावनक्रीडायां गोपिकायुगलगीतनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥ ॐ ॥ \* ॥

( पट्टनिशेतुहतेऽरिष्टे नारदोक्त्यावलाच्युतौ ॥ वसुदेवसुतौ ज्ञात्वा कंसोऽक्रूरं समादिशत् १ गोपीरासान्तराया न्तं शङ्खचूडं निहत्य स ॥ अहन् गोपीमहानन्दासहदुष्टमरिष्टकम् २ छत्तीसवें अध्याय में अरिष्टासुर के मारेजाने में कंस नारदजी के कहने सूं बलदेव और कृष्णजी को वसुदेवजी के पुत्र जानकर अक्रूरजी को आज्ञा देताभया १ कृष्णजी गोपियों के रासके भीतर आयैहुये शङ्खचूड को मारकर गोपियों के वड़े आनन्दके न सहनेवाले अरिष्टासुरको भी मार डालतेभये २ ) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार देवता गन्धर्व्यादिक गावैं नृत्य करें वाजेनकों बजावैं

फूलनकी वर्षा जिनके ऊपर करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र काँ आये देखिके परमउत्सव भयो याके पीछे ताही सपय व्रजमें बैल को रूप धरिके अरिष्टासुर आवतभयो वड़ो है ठाट और देह जाको खुरनसूं खोदी जो पृथ्वी ताकूं केपावे है ? बहुत रम्याय है पावन सूं धरती कूं खोदतआवे है पूछ उठाय के खेतनकी मेहन को सींग के अग्र सूं खोदेहै २ बीच बीच में गोबर करत जाय मूत्र करत जायहै भयानक जाकी आँखिहै हे राजन् परीक्षित ! अरिष्टासुर के रम्यायने को कठोर शब्द सुनिके गौवन के छीन के बिना समय गर्भ गिरिपरे डरकेमारे पतन होयगये जाके ठाट के ऊपर पर्वत मानि के मेघ आय बैठे हैं तीक्ष्ण पंने जाके सींग ऐसे अरिष्टासुरको देखिके सम्पूर्ण गोप और गोपी भयकेमारे डरपतभये हे राजन् परीक्षित ! पशु खिरकन कूं कोडिके डरकेमारे भाजत भये ३।४।५ हे कृष्ण ! ऐसे पुकारतभये समस्तव्रजवासी गोविन्दकी शरण आवतभये याके पीछे गोकुलवासीनकाँ भयकेमारे भजते देखिके ६ भति भय डरो याप्रकार सावधान करत अरिष्टासुरको अपने पास डुलाने

म्यपुच्छं वपाणि विषाणाग्रेण चोद्धरन् २ किञ्चित्किञ्चिच्छृणुमन्मूत्रयन्स्तब्धलोचनः ॥ यस्यनिर्हृदि तेनाङ्गनिष्ठेरेण गवां नृणाम् ३ पतन्त्यकालतो गर्भाः सन्नतिस्मभयेन वै ॥ निर्विशन्ति घनायस्य ककुच्चलशङ्कया ४ तन्तीक्ष्णशृङ्गमुद्रीक्ष्य गोप्योगोपाश्रयतत्र सुः ॥ पशवोऽदुद्रुर्भीता राजन्सन्त्यज्य गोकुलम् ५ कृष्णकृष्णेति ते सव्वर्गे गोविन्दशरणं ययुः ॥ भगवानपितद्वीक्ष्य गोकुलं भयविदुतम् ६ माभैष्टेति गिरास्वास्य वृपासुरमुपाहृतम् ॥ गोपालैः पशुभिर्मन्दत्रासितैः किमसत्तम ७ वलदर्पहाऽहं दुष्टानां त्वद्धिधानां दुरात्मनाम् ॥ इत्यास्फोट्याच्युनोऽरिष्टं तलशब्देन कोपयन् न सख्युरंसे भुजभोगं प्रसार्यावस्थितो हरिः ॥ सोऽप्येवं कोपितोऽरिष्टः खुरेणावनिमुल्लिखन् ॥ उद्यत्पुच्छभ्रमन्मेघः क्रुद्धः कृष्णमुपाद्रवत् ८ अग्रन्यस्त विपाणाग्रः स्तब्धामृगलोचनोऽज्युतम् ॥ कटाक्षिप्याद्रवचूर्णमिन्द्रमुक्त्वाऽशनिर्यथा १० गृहीत्वा भृङ्गयोस्नञ्ज अष्टादशपदानिसः ॥ प्रत्यपोवाह भगवान् गजः प्रतिगजं यथा ११ सो पविद्धो भगवता पुनरुत्थाय सत्वरः ॥ अपतत्स्विन्नसर्वाङ्गो निःश्वसन् क्रोधमूर्च्छितः १२ तमापतन्तं सनिगृह्य भृङ्गयोः पदासमाक्रम्य निपात्य भूवले ॥ नि

वन भये हे मूर्ख ! हे असाधु ! ग्वाल गौवन के डरपावन ते तो काँ कहा होयगो ७ दुष्ट हैं मन जिनके ऐसे तो सारिखे दुष्टनको वल और मद दूरिकरोहों या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र स्वम्भ ठाँकि के अरिष्टासुर कूं क्रोध करायके मित्र के कन्या पै सर्प के आकार भुजाहै ताकू पसारिके ठाढ़े होतभये या प्रकार क्रोध जाको करायो ऐसो अरिष्टासुर खुरन ते धरती कूं खोदत पूछ उठायके वादरन कू इत उत करिके क्रोधकरिके श्रीकृष्णचन्द्र के पास आवतभयो न॥९ आगे कूं सींग जाने वरिलिये पल न जिनमें न लेंगे ऐसी लाल लाल जाकी आँखें ऐसो जो अरिष्टासुर है सो श्रीकृष्णकी ओर वटाका सूं तिरखो देखिके इन्द्रको छोड़ो वज्र जैसे तैसे जल्दी आवतभयो १० भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अरिष्टासुरके सींग पकरिके जैसे हार्थीकाँ हार्थी धक्का देडहै ऐसे अठारद्वार उलटे पावन धकावत भये ११ भगवान् श्रीकृष्णने अरिष्टासुरकाँ ढकेलि दियो तब फेर डठिके पसीना जाके श्रयण गयो क्रोधमूर्च्छित होयके उड़े रंझास कूं लेत दौरिके आवतभयो १२ श्रीकृष्ण आयो जो अरिष्टासुर है ताके सींग पकरिके पृथ्वी पै पकारतभये पावते छाती दाविके जैसे गीले कपड़ा काँ निचोरेहै तैसे उमेठिके सींग उलारिके मारत भये अरिष्टासुर गिरत भयो चलायमान हैं नेन जाके

ऐसो अरिष्टासुर रुधिर कौ वपन करत मूत्र गोवर करत पौवन कूं पटकत कष्टते मरतभयो देवता श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर फूल वर्षाय के स्तुति करतभये १३।१४ या प्रकार अरिष्टासुर कूं मारिके जाति के मित्रन ने स्तुतिकरी तव गोपीन के नेत्रन कूं आनन्द देनवारै श्रीकृष्णचन्द्र वज्रमें आवतभये १५ अद्भुत जिनके कर्म ऐसे श्रीकृष्णने अरिष्टासुर मारो तव देवता केसो जिनके ज्ञान ऐसे भगवान् नारदजी कंसते जाय के कहतभये १६ यशोदा के कन्याभई है और देवकीके कृष्ण भयोहै बलदेव रोहिणी के पुत्रहैं तेरे भयके मारे वसुदेवजी अपने मित्र नन्दजीके घर रातों रात पहुँचाय आयै है और तैने भेजे ने सब दैत्य कृष्ण बलदेव ने मारे यह वचन नारदजी को श्रवण करिके कंस कोपसूं विकल इन्द्रिय होतभयो १७।१८ ऐसो कंस वसुदेव के मारिवे के लिये पैनी तरवार लेत भयो तव नारदजी मने करतभये और तिन वसुदेवजी के पुत्र कृष्ण बलदेव ते अपनी मृत्यु जानिके देवकी सहित वसुदेव के पौवनमें वेड़ी डारतभयो इतनी वात कहिके नारदजी जब गये तब कंस

बपीडयामासयथार्द्रमम्बरकृत्वाविपाणेनजघानसोऽपतत् १३ असृग्वमचमूत्रशकृत्समुत्सृजन् क्षिपंश्चपादाननवस्थितेक्षणः ॥ जगामकृच्छ्रंनिर्जृतेरथक्ष यं पुष्पैःकिरन्तोहरिमीडिरेसुराः १४ एवंककुब्जिनंहत्वा स्तूयमानःस्वजातिभिः ॥ विवेशगोष्ठसत्रलो गोपीनानयनोत्सवः १५ अरिष्टेनिहतैर्देत्येकृष्णे नाद्भुतकर्भणा ॥ कंसायाथाहभगवान्नारदोदेवदर्शनः १६ यशोदायाःसुतांकन्यां देवक्याःकृष्णमेवच ॥ रामश्चरोहिणीपुत्रं वसुदेवेनविभ्यता १७ न्यस्तौस्वमित्रेनन्देवै याभ्यान्तेपुरुषाहताः ॥ निशम्यतद्भोजपतिः कोपात्प्रचलितेन्द्रियः १८ निशातमसिमादत्तवसुदेवजिघांसाया ॥ निवारितोनारदेनतत्सुतौमृत्युमात्मनः १९ ज्ञात्वालोहमयैःपार्श्वैर्वन्धसहभार्यया ॥ प्रतियातेतुदेवपार्श्वकंसआभाष्यकोशिनम् २० प्रेयामासहन्येतां भवतारामकेशवौ ॥ ततोमुष्टिकचाणूरशलतोशलकादिकान् २१ अमात्यान्हस्तिपंश्चैव समाह्वयाहभोजराट् ॥ भोभोनिशम्यतामेतद्वीरचाणूरमुष्टिकौ २२ नन्दब्रजेकिला साते सुतात्रानकदुःखे ॥ रामकृष्णौततोमह्यं मृत्युःकिलनिदर्शितः २३ भवद्भयामिहसंप्राप्तौ हन्येतांमल्ललीलया ॥ मञ्चाःक्रियन्तांविविधामल्लरङ्गपरिश्रिताः ॥ पौराजानपदाःसर्वे पश्यन्तुस्वैरसंयुगम् २४ महामात्रत्वयाभद्रङ्गद्वार्युपनीयताम् ॥ द्विपःकुवलयपीडोजहितेनममाहितौ २५ आरभ्यतांभनु

केशीकूं बुलाय के भेजतभयो और राम कृष्णकौ तू मारि आउ यह कहत भयो ता पीछे मुष्टिक चाणूर शल तोशल आदि लैके जे मल्लहैं तिनैं बुलाय के और मञ्चीन कूं बुलाय के और हाथीन के महावतनकूं बुलायके भोजवंशीनको राजा कंस बोलतभयो हे वीर ! हे चाणूर ! हे मुष्टिक ! यह मेरी वात श्रवण करो १६।२०।२१।२२ नन्दके गोकुल में वसुदेव के पुत्र कृष्ण बलदेव रहे हैं उनते विधाता नारदजीने मेरी निश्चय मृत्यु बताई है २३ ये जव आवैं ता समय पावनसूं दाविके मल्ललीला करिके मारि डारियो और मछन की जो रंगभूमि है तामें अनेकप्रकार के मंचानन कूं बनावो पुरवासी और देशवासी सम्पूर्ण तिनपै वैठिके मछनकी कुश्ती देखेगे २४ हे महावत ! मङ्गलरूप कुवल्यापीडु हाथी कूं रंगभूमि के दरवाजे पै ठाढ़ो करदेउ मेरे वीरी कृष्ण बलदेव आवैं तव उनें कुवल्यापीडु हाथी पै मरवाय डारियो और चतुर्दशी के दिन विधिपूर्वक धनुर्यज्ञकी तयारी करो और सम्पूर्ण कामनान के पूर्ण करनवारै महादेवजी के पूजन के लिये पवित्र पवित्र

पशु पारिकेलावो २५ । २६ अपने अर्थके तत्त्वको जाननवारो कंस अपने दहलुआनकुं या प्रकार आज्ञादेके और यादवनमें श्रेष्ठ जो अक्रूर हैं तिनैं हुनायके हाथ भू हाथ पकरिके यह कहतयो २७ हे दानपति अक्रूर ! तुम एक मेरो मित्रताको कार्यकरो या समय भोजवशी यादवनमें और कोई तुम तेसिवाय आदरसहित अविशय करिके हितको करनवारो नहीं है २८ वडे कार्य के करनवारि साधु अक्रूर तुमहो तिनको मैंने आश्रय लीनो है जैसे इन्द्र विष्णुओ आश्रय लैके अपने मनोरथकू पायगयो २९ अब तुम नन्दके व्रजकों जावो ता नन्दके व्रजमें वसुदेव के पुत्र रहे हैं तिनैं या रथ में बैठारिके शीघ्रही लैआवो ३० विष्णुको आश्रय लैके देवताने मेरे मारिके लिये कृष्ण बलदेव प्रकट करे हैं नन्दते आदिलैके सम्पूर्ण व्रजवासीनसहित कृष्ण बलदेवको यहा लेआवो और कहियो कि राजा कंसको चलि के बैठदेआवो ३१ यहा लिवायके लावोगे तब कालकी तुल्य कुवलयापीढ़ हाथी पै घात कराऊँगे हाथीते वदाचि वछटि जायँगे तो विजली

यागश्चतुर्दश्यांगयाविनि ॥ विशसन्तुपशून्मेध्यान् भूतराजायमीदुपे २६ इत्याज्ञाप्यार्थतन्त्रज्ञाहूयदुष्टवृक्ष ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिततोऽक्रूःमुवा चह २७ भोभोदानपतेमहं क्रियतामैत्रमाहृतः ॥ नान्यस्वत्तोहिततमोविद्यतेभोजवृष्णिषु २८ अतस्त्वामाश्रितःसौम्य कार्यगौरवसाधनम् ॥ यथेन्द्रोविष्णुमाश्रित्य स्वार्थमध्यगमद्विभुः २९ गच्छनन्दव्रजंतत्र सुतावानकहुन्दुभेः ॥ आसतेताविहानेन रथेनानयमाचिरम् ३० निमृष्टःफलमेष्टुदेवैर्वैकुण्ठसंश्रयैः ॥ तावानयसंगोपैर्नन्दाद्यैःसाभ्युपायनैः ३१ घातयिष्यइहानीतौकालकल्पेनहस्तिना ॥ यदिमुक्तांततोगल्लैर्घातयेद्युनोपमैः ३२ तयोर्निहतयोस्तप्तान् वसुदेवपुरोगमान् ॥ तद्वन्धून्निहनिष्यामि वृष्णिभोजदशार्हकान् ३३ उग्रसेनश्चपितरं स्थविरंराज्यकामुकम् ॥ तद्भ्रातरंदेवकश्चयेचान्येनादिपोमम ३४ ततश्चैवागहीमिन्न भवित्रीनष्टकण्टका ॥ जरासन्धोममगुरुर्द्विविदोदयितःसखा ३५ शम्बरोनरकोचाणोभ्येवकृतसौहृदाः ॥ तैरहंसुरपक्षीयान् हृत्याभोक्ष्येमर्हीनुपान् ३६ एतज्ज्ञात्वातनयक्षिप्रं रामकृष्णविहा र्भको ॥ धनुर्मखनिरीक्षाऽर्थदुष्टंयदुपुराश्रयम् ३७ अक्रूरउवाच ॥ राजन्मनीषितंसम्यक्कुन

तुल्य जे मल्ल तिनपै घात कराऊँगे ३२ कृष्ण बलदेव जासमय हत होय जायँगे तब उनके दुःखके मारे व्याकुल ऐसे वसुदेव तैं लेके तिनके भया वन्धून्कूं मरवाऊँगे और वृष्णि भोज दशाई वंश में भये जे यादव तिन सबको मरवाऊँगे ३३ और उग्रसेन मेरो वृद्धपिता है तो भी जाके राज्य नी चाहना है याहू कूं मरवाऊँगे और ताके भया देवककों और मेरे वैरी जितने हैं तिनकों सबकों मरवाऊँगे ३४ ताके पीछे हे मित्र अक्रूर ! यह पृथ्वी कण्टकरहित होयगी जरासन्ध है सो मेरो श्वशुर है द्विविद मेरो प्यारो मित्र है ३५ शम्बरसुर नरकासुर चाणासुर इनने भोमें स्नेह क्रियो है इनकों संग लेके देवतानकी ओर के राजा हैं तिनकूं मारिके पृथ्वी को भोग करुगो यह बात अपने मनमें जानिके राम कृष्ण बालकन को यहाँ शीघ्र लिवाय आवो वहाँ जायके यह कहियो माया धनुर्यज्ञ करे हैं ताकूं चलि के देखिआवो यादवनको पुर मथुरा है ताकी शोभा देखि आवो ३६ ३७ यह वचन राजा कंसको श्रवण करिके अक्रूरजी बोने हे राजन् कंस ! तुमने भलो



विचारो है तुम्हारी मृत्युको दूर करनेवाशो यह उपाय है परन्तु होने और न होनेमें मनुष्य समता करे देव जो प्रारब्ध है सोही फल को दाता है ३८ यह पुरुष दैव करिके हत जो मनोरथ हैं तिनकुं  
ऐसे कहिके करे है जो मनोरथ पूर्ण होयजाय तब तो मन में हर्ष माने है न होय तब शोक करे है यामें कहा ध्वनि निकसी कि तुम कबोहौ कृष्ण बलदेव काँ मरगऊँ गो न जाने वेई तुमकाँ माँरे  
तथापि तुम्हारी आज्ञा करूंगो ३९ या प्रकार राजा कंस अमूर् को आज्ञादेके भान्निको छोड़िके महलमें जातभयो तैसे अक्रूर अपने घर जातभये ४० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपियायादश-  
मस्कन्धेषुवर्गाद्धेऽक्षरसमेपण्यामष्टत्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

(सप्तश्रिणुहेतैः शिष्यच्युतो भ्राविकर्मभिः ॥ नारदेनस्तुतः क्रीडन् व्योमासुरमथावधीत् ? हृपवैपासुरं यद्वक्तोऽशनहयवापणम् ॥ क्रसप्राणसखहतवा केसेरसुभिमकाराप् २ सतासध अ-  
वस्वावद्यमार्जनम् ॥ सिध्यसिच्छ्रोः समंकुर्यादैवं हि फलसाधनम् ३ ८ मनोरथान् करोत्युच्चैर्जनेनौदिवहतानि ॥ युज्यते हर्षशोकभायां तथाऽप्याज्ञां करोमि ते  
३६ श्रीशुक उवाच ॥ एवमादिश्य चाक्रूरं मन्त्रिणश्च विमृज्य सः ॥ प्रविवेश गृहं कंसस्तथाऽक्रूरः स्वमालयम् ४० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे  
पूर्वाद्धेऽक्रूरसम्भरणं नाम षट् त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

श्रीशु कउवाच ॥ केशीतु कंसप्रहितःखुरैर्महीं महाहयोनिर्जयन्मनोजवः ॥ सटावधूनाभ्रविमानसंकुलं कुर्वन्नमोद्रेपिनभीपिनाखिलः १ तंत्रासयन्तंभगवान्स्वगोकुलं तद्ध्रेपितैर्बालविघ्नैर्विघ्निताम्बुदम् ॥ आत्मानमाजौमृगयन्तमग्रणीरुपाह्वयतराव्यनदन्मृगेन्द्रवत् २ सतंनिशाम्याभिमुखोमुखेनखं पिवन्निवाभ्यद्वदत्यमर्षणः ॥ जघानपद्भ्यामरविन्दलोचनंदुरासदश्चण्डजवोदुरत्ययः ३ तद्वज्रयित्वातमबोधजोरुषाप्रगृह्यदोभ्यापरिविध्यपादयोः ॥ सावज्ञमुत्सृज्यधनुःशतान्तरे यथोरंगंतार्क्ष्यमुतोव्यवस्थितः ४ सलव्धसंज्ञःपुनरुत्थितोरुपाव्यादायकेशीतरसाऽपतद्धरिम् ॥ सोऽप्यस्यवक्त्रेभुजमुत्तरंस्मयन् प्रवेशयामाकृष्णभी केशीराजस के मारेजाने में नारदजी से स्तुति को प्राप्त होकर व्योमामुर को मारते भये १ बालके वेपबाले केशीराजस कंस के प्राणके तुल्य भिचको कृष्णजी मारकर कंसको प्राणरहितकी नाई करदेतेभये २) अप श्रीशु कदेवजी कहैहे हे राजन् परीक्षित ! मनहू ते है अधिक वेग जाको ऐसो कंसको पठायो केशी दैत्य बड़े घोड़ाको रूपधरिके टापन तें पृथ्वी कूं खोदत फुरहरी लैंक कन्याके ऊपर वारन सं आकाश में इत उत विमानन कों चलायमान करत आवतभयो होंसने मेंही समस्त विश्व जाने डरपायो है कठोर होंसनसं गौवन के समूहन कों भग जाने करवो पुच्छ हलाय वादर जाने चलायमान किये मुद्ध करिवे कूं श्रीकृष्णचन्द्र कूं हूँ ऐसे केशी दैत्य कों भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र आगे निकसिके अपने पास बुलावतभये त ३ श्रीकृष्ण कूं देखिके तिरिहकी तुल्य शब्द करनभयो १ । २ केशी श्रीकृष्ण कों देखिके मुख सूं मानों आकाश कूं पीजायगो ऐसे मुख कों फारिके सम्मुख दौरिके आवत भयो कोई जाकों जीति न सके वडो जो के वेग महादुःग करिके जीत्यो जाय ऐसो केशीदैत्य कमलदललोचन भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके पिछिले पावनकी तुलसी मारतभयो ३ इन्द्रियनर्का जिनमें पहुँच नहीं ऐसे भगवान् श्री

कृष्णचन्द्र ता दैत्यकी दुलची वचायके क्रोधकरि हाथनसों वार्के दोनों पाँव पकरिके घब्र घब्र फिरायके जैसे गरुड़ सर्पकूँ फँकि देयहै ऐसे अबझा करिके सौ धनुषपर फँकि के टाढ़े होतभये ४ जब चेत जाको भयो ऐसो केशी दैत्य फेरि उठिके मुख फारिके क्रोधयुक्त दौरिके श्रीकृष्णके पास आवत भयो तब कृष्णजी उसके मुँहमें हँसकर वायें भुजाकों इसप्रकार प्रवेश करदेतेभये जैसे विल में साप प्रवेश करजाता है ५ जैसे तप्त लोहखगे तें जरे है ऐसे भगवान्की भुजालगे ते जैसे जलन्यरोग उदर में गड़े है ऐसे केशी के उदरमें श्रीकृष्णचन्द्रकी भुजा फूलतभई ६ केशी के उदर में फूली जो श्रीकृष्णकी भुजाहै तासों श्वास जाको रुकिगयो अङ्ग में पसीना जाके आयगयो नेत्रन के तारे निकसिआये ऐसो केशी पोंवन को पटकत लीदकरत प्राणरहित होयके पृथ्वीमें गिरतभयो ७ पक्षी ककरीकी तुल्य विदीर्ण और प्राण जाके निकसिगये ऐसो जो केशी को देह ताते बड़ी है भुजा जावी ऐसे श्रीकृष्ण अपनी भुजा कूँ निकासिके गर्व जिनके नहीं बिना परिश्रमही शत्रु जिनने मारथो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर पुष्पनकी वर्षा करिके आश्चर्य मानिके देवता स्तुति कारत भये ८ श्रीशुकदेवजी कहे

सयथोरंगविले ५ दन्तानिपेतुर्भगवद्भुजस्पृशस्तेकिंशिनस्तप्तमयःस्पृशोयथा ॥ वाहुश्चतदेहगतोमहात्मनोयथाऽऽमयःसंववृधेउपेक्षिनः ६ समेधमानेनसकृ  
द्वृणवाहुना निरुद्धवायुश्रवणांश्रुविक्षिपन् ॥ प्रस्विन्नगात्रःपरिचुल्लोचनःपपातलेगडंयमृजन्क्षितौव्यसुः ७ तदेहतःकर्कटिकाफलोपमाद्व्यसोरपाकृष्यमु  
जंमहाभुजः ॥ अविस्मिनोऽप्यत्नहतारिस्तरमयैःप्रसूनवर्षेदित्रिपद्मिरीडितः ८ देवर्षिरुपसंगम्य भागवतप्रवरोन्मुप ॥ कृष्णमक्लिष्टकर्मणि रहस्येतदभापल ९  
कृष्णदृष्णाग्रमेयात्मन् योगेशजगदीश्वर ॥ वासुदेवाखिलावास सात्वतांप्रवरप्रभो १० त्वमात्मासर्वभूतानामेकोज्योतिरिवैधसाम् ॥ गूढोगुहाशयःसा  
क्षी महापुरुषईश्वरः ११ आत्मनात्माश्रयःपूर्वमाययासमृजेगुणान् ॥ तैरिदंस्तयसङ्कल्पः सृजस्यत्स्यवसीश्वरः १२ सत्त्वंभूयभूतानां दैत्यप्रमथरत्नमा  
म् ॥ अवतीर्णोविनाशाय सेतूनांरत्नणाय च १३ दिष्ट्यातेनिहतोदैत्योलिलयाऽयंहयाकृतिः ॥ यस्यह्रेषिनसंभ्रस्तास्त्यजन्यनिमिषादिवम् १४ चाणूरं

हैं हे राजन् परीक्षित ! भक्तनमें श्रेष्ठ श्रीनारदजी हेशरहित हैं कर्म जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के पास आयके एकान्त में यह कहत भये ९ हे कृष्ण ! हे अग्रमेयात्मन् अर्थात् नहीं प्रमाण कारिवे में आवै है स्वरूप जिनको ऐसे योगके ईश ! हे जगत् के ईश्वर ! हे वासुदेव ! हे अखिलावास अर्थात् सबके आश्रय ! हे सात्वतामवर अर्थात् सत्र यादवनमें श्रेष्ठ ! हे प्रभो ! १० जैसे काष्ठनमें ज्योति तैसे सब प्राणीन में व्यापक गूढ़ अर्थात् सब में रहो हो परन्तु उनको दिखाई नहीं देउहो क्यों बुद्धिके परेहो साक्षीहो स्वरूप देखिवे में नहीं आवै है महापुरुष ईश्वरहो ११ मैं ईश्वर हूँ और सब धरे वशहैं यह कोहे ते तहा नारदजी कहे हैं अपने श्री ग्रीन जो तुमहो सो प्रथम माया करिके सत्त्व रज तम इन गुणन कूँ उत्पन्न करिके सम्पूर्ण विद्वत् को उत्पन्न करो हो पालन और संहार करो हो और फेर वैसो है सत्यसङ्कल्प अर्थात् काहू साधन की अपेक्षा नहीं है या कारण तुमहो ईश्वरहो १२ सो तुम राजारूप जो दैत्य राजस हैं तिनके नाश करिवे के लिये और धर्म मर्त्यादानकी रक्षा करिवे के लिये अवतार लियो है १३ घोड़ा के रूपको धरिके यह दैत्य आयो सो लीला करिके तुमने मारथो यह बड़ो महल भयो जाके हींसन को शब्द सुनिके भयके मारे

देवता स्वर्ग कृत्यागिदेह हैं १४ हे विभो अर्थात् समर्थ ! परसों के दिन तुम्हारे हाथन ते चाणूर मुष्टिक और मछुन कूं तथा कुवलयापीड हाथी कों बंसकों मारो ऐसो देखोगो १५ ता अंसके मरे पीछे शंखासुर कालायचन मुरदैत्य नरकासुर इनको बध देखोगो स्वर्ग में ते इन्द्रकूं जीतिके कल्पवृक्ष कों लावोगे ताय देखोगो १६ अपनो पराक्रम मोलदेके राजानकी कृत्यानकों व्याहोगे सो देखोगो हे जगत् के पति ! द्वारका में जायके दृगराजा कों पाप मूं छुड़ावोगे सो देखोगो १७ जाम्बवती सी व्याहिके स्पमन्तकर्मणि कूं दायजेमें लावोगे सो देखोगो सादीपनि गुल्के अपने दामते मरे पुत्र सजीव लायके देउगे सो देखोगो १८ मिथ्यावासुदेव को मारिके काशीपुत्री को जरावोगे दन्तवक्र कों मारोगे राजा युमिष्ठिर के यज्ञ में शिशुपाल को मारोगे ताय में देखोगो १९ द्वारकावास करिके जे जे लीला करोगे तिन लीलानकों कबीरवर पृथ्वी में गावोगे सो सब हम देखोगे २० याके पीछे कालरूप तुम या पृथ्वी को बोक उतारिबे के लिये अर्जुन के स्थवान् होयके सैन्यान कूं मारोगे

मुष्टिकनैव मल्लानन्यांश्च हस्तिनम् ॥ कंसंच निहतं द्रक्ष्ये परश्वोऽहनि ते विभो १५ तस्यानुशङ्खयवनमुराणां नरकस्य च ॥ पारिजातापहरणमिन्द्रस्य च पराजयम् १६ उद्धाहं वीरकृत्यानां वीर्यशुल्कादिलक्षणम् ॥ नृगस्य गोक्षेपं पापाद्द्वारकायां जगत्पते १७ स्यमन्तकस्य च मणेरानसहभार्यया ॥ मृतपुत्रप्रदानं च ब्राह्मणस्य समधामतः १८ पौरुड्रकस्य वधं पश्चात्काशियुर्याश्च दीपनम् ॥ दन्तवक्रस्य निधनञ्चैद्यस्य च महाक्रतौ १९ यानि चान्यानि वीर्याणि द्वारकामावसम्भवाच्च ॥ कर्त्ता द्रक्ष्याम्यहं तानि गेयानि कविभिर्भुवि २० अथ ते कालरूपस्य क्षपयिष्णोः सुष्यवै ॥ अक्षौहिणीनां निधनं द्रक्ष्याम्यर्जुन सारथे २१ विशुद्धविज्ञानघनं स्वसंस्थया समासमवर्धार्थमोषवाञ्छितम् ॥ स्वतेजसा नित्यनिवृत्तमायागुणप्रवाहं भगवन्तमीमहि २२ त्वामीश्वरं स्वाश्रयमात्ममायया विनिर्भिताशेषविशेषरूपनम् ॥ क्रीडाऽर्थमद्यात्तमुष्यविग्रहं न तोऽस्मिं यदुष्टिण सात्वताम् २३ श्रीशुक उवाच ॥ एवं यदुष्टिं कृष्णं भागवतप्रवरो मुनिः ॥ प्रणिपत्याभ्यनुज्ञातो ययौ न दर्शनोत्तमवः २४ भगवानपि गोविन्दो हत्वा कोशिनमाह्वये ॥ पशून्पालयत्पालैः शीतैर्व्रजसुखावहः २५ एकदा ते प

ताय देखोगे २१ केवल ज्ञानही है एक मूर्ति जिनकी याही ते स्वरूपानन्द सम्भक्कफार मूं प्राप्त भये है मनोरथ जिनके फलसहित है इच्छा जिनकी अपने तेज से नित्य माया मूं निवृत्त और बः प्रकार के ऐश्वर्ययुक्त जो तुम हो तिन की शरण प्राप्त भयो हो २२ तुम ईश्वर हो अर्थात् औरन के वश कर्मनवा रहे हो अपने आश्रय और के वश नहीं हो अपने अधीन जो माया तामूं महत्तत्त्व अर्द्धकारते आदि लोकें समस्त तत्त्व क्रीड़ा करिबे के लिये जिनने रचे है और ग्रहण किये है मनुष्यरूप जिनने यदुष्टिण सात्वतन में श्रेष्ठ जो तुम हो तिनकूं नमस्कार है २३ अब श्रीशुकदेव जी कहे है हे राजन् परीक्षित ! भक्तन में श्रेष्ठ मननशील श्रीकृष्णचन्द्रके दर्शनमें वही है उत्सव जिनके ऐसे नारदजी याम्बर यादवनके पति श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूं प्रणामकरि आज्ञालेके जातभये २४ व्रजवासीनके सुलके करनवार भगवान् गोविन्द श्रीकृष्ण युद्धमें केशीकों मारिके पशून्के पालन करतभये २५ एकसमय गौनन के पालनकृत्ता

म्यालमाल है ते गोवर्द्धन पर्वत के शिखर पै गौवन कौ चरावत चोर पालन कौ मिय करिके क्षिपा क्षिपी को खेल करतभये २६ हे राजन् परीक्षित ! ताल खेल में कितेकहू बालक चोर बने और कितेकहू रखवारे बने कितेकहू भेड़ बने ऐसे निर्भय होयके खेलत भये २७ इत्तेमें बड़ो मायावी मयैतय को पुत्र व्योमासुर गोपाल को रूप धरिके चोर बनिके जे बालक भेड़ बने हैं तिनमें ते चुरायके लेजातभयो २८ व्योमासुर जे बालक भेड़ बने हैं तिनमें ते चुराय के पर्वत की गुफामें धरिके शिलासे गुफाको द्वार मुंदतभयो तिनमें से कोई चार पांच बाक्री रहिगये २९ साधुनको शरण के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र पनमें विचार करो कि इस तो खेलारो है यह साचोहीं चोर आय पहुँच्यो ऐसे ता व्योमासुरकी चोरी जानिके गोपनको संग लैं के जाय जो व्योमासुरहैं ताकूँ जैसे सिंह बल करिके भोड़ियाकूँ पकरो है ऐसे पक़रतभये ३० बली व्योमासुर पर्वतकी वरावर अपनो रूप धरिके अपनेको लुड़ायो चौहै परन्तु नहीं छूटतभयो श्रीकृष्ण ने पक़रो है तासो आतुरहै ३१ अन्युतजो

शूनूपालां श्रारयन्तोऽद्विसालुपु ॥ चक्रुर्निलायनक्रीडाशोरपालापदेशतः २६ तत्रासृकृतिचिचोराः पालाश्चकृतिचिन्तु ॥ मेपायिताश्चतत्रैके विजहुर कुतोभयाः २७ मयपुत्रोमहामायेव्योगोषालेवपष्टृक् ॥ मेपायितानपोवाह प्रायश्चोरायितोवहून् २८ गिरिदय्याविनिक्षिप्यनीतनीतमहाऽसुरः ॥ शि लयापिदधेद्वारस्वतुःपञ्चावशोपिताः २९ तस्यतत्कर्मविज्ञाय कृष्णः शरणदः सताम् ॥ गोपान्नयन्तजग्राह वृकंहरिश्चिवौजसा ३० सनिजरूपमास्थाय गि रीन्द्रसदृशंवली ॥ इच्छन्विमोक्तुमात्मानं नाशक्रोदग्रहणातुरः ३१ तन्निगृह्याच्यतोदोभर्या पातयित्वा महीतले ॥ पश्यतां दिविदेवानां पशुमारसमारय त ३२ गुहापिधानं निर्भय गोपान्निःसार्यकृच्छ्रतः ॥ स्तूयमानः सुरगोपैः प्रविशेश्च गोकुलम् ३३ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वोद्धि व्योमासुरवधोनाम सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

श्रीशु कउवाच ॥ अक्रूगेऽपि चतारात्रिं मधुपुर्यामंहा मतिः ॥ उपित्वाथमास्थाय प्रययौ नन्दगोकुलम् १ गच्छन्पथिमहाभागो भगवत्यम्बुजेक्षणे ॥

श्रीकृष्ण है सो व्योमासुरकी दोनो मुजा पकरिके पृथ्वी में पटाकिके स्वर्गके देवतानके देखत देखत स्वास घोटिके मारतभये ३२ गुफाके ढकनाको फोरिके गोपन कौ कष्ट ते बाहर निकासि के ऊपर देयता विमाननमें स्तुतिकरै पृथ्वीमें गोप जिनकी स्तुतिकरै ऐसे श्रीकृष्ण अपने गोकुलमें आवतभये ३३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे पूर्वोद्धे व्योमासुरवधोनाम सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥ (अष्टात्रिंशेऽध्यायवद्गोकुलंगतः ॥ तथैव रामकृष्णभाषागृहनीतासु सत्कृतः १ प्रातःकेशिन्नेव चेद्दशो निर्गते मुनौ ॥ ततो व्योमे हतेऽक्रूः सायंगोकुलमागमत् २ अद्वीतसर्वे आध्याय में जैसे ध्यान करतेतुये अक्रूरजी गोकुल को गये तैसेही मलदेवजी और कृष्णजीने धर्म में लेजाकर अच्छी तरहसे सत्कार किया १ प्रातःकाल वारहवें केशी रात्रिसके नाशहोजानेमें नारदपुनिके चलेजाने में फिर व्योमासुर के नाश होजाने में साफ को अक्रूरजी गोकुल में प्राप्त होजातभये २ ) अप श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! वही है बुद्धि जिनकी ऐसे अक्रूरजी वा दिन रात्रि कू मधु

पुरी में वसि के प्रातःकाल रथ में बैठि के नन्दजी के गोकुल में जातभये ? वडो है भाग्य जिनको ऐसे अक्रूरजी मार्ग में जात १ मलनेत्र श्रीकृष्णचन्द्र में परमभक्ति कू पावतभये और यह विचार करतभये २ धैने कौन मंगलकर्म करो है अथवा तपकरो है या सत्पावन कू दानकरो है जाके प्रभावते ब्रह्मा महादेव के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् तिनको दर्शन करुंगो ३ मोको श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन होयगो यह मै दुर्लभमानू हूँ विषयन में हँ मन जाको शूद्रकुलमें जन्म ऐसे पुरुष कौ वेद को उच्चारण जैसे दुर्लभहै ४ ऐसे मतकहो श्रीकृष्णको दर्शन होय किन्तु अथम जो भैं हूँ तार्कू श्री-कृष्णको दर्शन निश्चय होइगो जैसे नदीन के प्रवाह में वहे जे तूणहै तिनमें कोई किनारे पै लागेहैं तैसे कामन के दश होय के जो जीवहै तिनमें कोई तरे हूँ ५ मै श्रीकृष्ण के लिवायवे कू चलयो हूँ याते मेरो अब मंगलरूप भयो मेरो जन्म सफलभयो योगी जिनको ध्यानकरै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के चरणकमलको नमस्कार करुंगो ६ वडो आश्चर्य है अत्यन्त दुष्ट ँसने मेरे ऊपर

भक्तिपरासुपगतएवमेतदचिन्तयत् २ किमयाचरितं भद्रं कितं प्रमन्तपः ॥ किंवाऽथाप्यहेतुत्वं यद्वक्ष्याम्यद्यकेशवम् ३ ममैतद्दुर्लभं मन्युत्तमश्लोक दर्शनम् ॥ निपयात्मनो यथाब्रह्मकीर्त्तनं शूद्रजन्मनः ४ मैवं ममाधमस्यापि स्यादेवाच्युतदर्शनम् ॥ द्विप्रमाणः कालनद्या कचिन्नरतिक्लृप्तम् ५ ममाद्यामङ्गलं नष्टं फलवांश्चैव मे भवः ॥ यन्नमस्ये भगवतो योगिभ्ये याद्विपङ्कजम् ६ कंसो वताद्याकृतमेत्यनुग्रहं द्रक्ष्येऽङ्घ्रिपद्मं प्रहितो मुनाहरेः ॥ कृतावतारस्य दुरत्ययंतमः पूर्वोऽतश्च नृनखलगडलतिवपा ७ यदार्चितं ब्रह्म भवादिभिः सुरैः श्रिया च देव्यामुनिभिः ससात्वतैः ॥ गोचारणायानुचरैश्च रदने यद्वेपिकानां कुचकुङ्कुमाङ्कितम् ८ द्रक्ष्यामि नूनं मुकपोलनासिकं स्मितवलोकारुणकञ्जलोचनम् ॥ सुखं मुकुन्दस्य गुडालकावृतं प्रदक्षिणं मे प्रचरन्ति वै मुगाः ९ अप्यद्य विष्णोर्मनुजत्वमीयुषो भारवताराय भुवो निजेच्छया ॥ लावण्यधाम्नो भवितो पलभनं महाननस्यात्फलमञ्जसादृशः १० यद्विधिताऽहं रहितोऽप्यस रसतोः स्वतेजसाऽपास्ततमो भिदाभ्रमः ॥ स्वमायया गन्धर्वचितैस्तदीक्षया प्राणाक्षधीभिः रादनेष्वभीयते ११ यस्याखिला मीनवहुभिः सुमङ्गलैर्विचोविमि

वडो अनुग्रह करो है जो कंस को भेजो मै आयो अवतार जिनने लियो ऐसे भक्तन के मनके हरनवारै श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द को भैं दर्शन करुंगो प्रथम अमरीपसू आदिले के जे राजाभये है ते जा श्रीकृष्ण के नखलगडल की कान्ति सँ तरिवे में न आवै एसो संसाररूपी अन्धकार कू तरिजातभये ७ जो चरणारविन्द ब्रह्मा महादेव सू आदिले के देवतान ने और मताशमान जो लक्ष्मी तोने मुनीश्वरन ने भक्तन ने पूज्यो है और गौवन के चरायवे के लिये जो चरणारविन्द चालवालन के संग वनमें फिरयो है और जा चरणारविन्द में गोपीन के कुचन की केश लगी है वा चरणारविन्द को दर्शन करुंगो ८ सुन्दर जाँ कपोल नासिका और मुसिकानि धरी चितवनि अरुण डोरा जिनमें आय रहे ऐसे कमल से जाँ नेत्र धूपधुमारी अलकें छूटि रही एसो श्री-कृष्णचन्द्र के मुख को निश्चय दर्शन करुंगो हरिण भरे दाहिने आये है ९ पृथ्वी को भार उतारिवे के लिये अपनी इच्छा सँ अब जाने मनुष्य रूप धारण करो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के सुन्दर रूप को दर्शन करुंगो तब मेरे नेत्र सफल होयेंगे १० तहाँ कोई शंका करे है कि हमारी तुल्य कर्मन को करनवारो दिख्यो है देय है तुम कैसे भगवान् कहो हो ताको उत्तर तीन श्लोक कारिके देय हैं

कार्यरूप जगत् और कारणरूप महदादिक तत्त्व तिनकू जो श्रीकृष्णचन्द्र चितवनि सूं बरे हैं तथापि उनके अहङ्कार नहीं है अपने तेज सूं अज्ञान भेद भ्रम को जिनने दूरि करे है अपने अमीन जो माया है ता माया की ओर चितवनि करिके अपने में रचे जे जीव हैं तिन सूं वृन्दावन के वृत्तन के नीचे और गोपीन के घरन में लीला करिके बद्धमे दिसाई देखें ११ जिन श्रीकृष्ण के अहङ्कार नहीं है तो आत्माराम हैं तिनकू लीलाकारिवो कैसे वनेहैं या शङ्का को उत्तर कहे हैं कि भक्तन के ऊपर कृपा कारित्रे के लिये लीला करे हैं सबके पापन के दूर करनवारे जे सुन्दर मंगन रूप श्रीकृष्णचन्द्रके गुण जन्म कर्म सूं मिली जे वाणी ते जगत् कूं जिवावें हैं और शोभायमान करे हैं पवित्र करे हैं और जिन वाणीन में श्रीकृष्णचन्द्र के लीला गुण जन्म कर्म नहीं गायें हैं उनको जे कहें हैं और श्रवण करे हैं ते अपवित्र हैं जैसे सृष्ट्य भयो शरीर अपवित्र है यादगन के कुलमें जिन श्रीकृष्णचन्द्र ने अवतार लियो है अपनी मर्यादान वों पालनकरे जे देवतान में श्रेष्ठ हैं तिनको सुसके करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र ईश्वर लीला करिके यशको फैलावत जनमें रहे हैं सबको मंगलरूप जो यश है ताको देवता गावें हैं १२ । १३ महत्पुरुषन को सुन्दर गति के देन-

आगुणकर्मजन्मभिः ॥ प्राणन्तिशुरभन्तिपुनन्तिवैजगद्यास्तद्विस्काः शवशोभनामताः १२ सचावनीर्णः किजसारतान्वयेस्वसेतुपालामरत्रर्थाशङ्कत् ॥ यशोवितन्वन्नज्ज्वास्तईश्वरो गायन्तिदेवायदशेषमङ्गलम् १३ तन्वद्यन्नूनंमहतागतिगुरुं त्रैलोक्यकान्तंहशिमन्महोत्सवम् ॥ रूपंदधानंश्रियई पिसितास्पदं द्रक्ष्येममामसन्नुषसः सुदर्शनाः १४ अथावरुणः सपदीशयोरथात्प्रधानपुंसोश्चरणंश्चलवध्ये ॥ धियाष्टनंयोगिभिर्प्यहंभुवं नमस्यञ्चाभ्यां च सखीन्वनौकसः १५ अप्यङ्घ्रिमूलेपतितस्यमेविभुः शिरस्यधास्यान्निजहस्तपङ्कजम् ॥ दत्ताभयंकालभुजङ्गहंसा प्रोद्धेजितानंशरणैर्पिणानृणाम् १६ स महंण्यत्रनिधायकौशिकस्तथावलिरचापजगन्नयेन्द्रताम् ॥ यद्वाविहोब्रजयोपिनांश्रमं स्पर्शनसौगन्धिकगन्धपानुदत्त १७ नमय्युपैष्यत्यरिबुद्धिम च्युतः कंसस्यदूतः प्रहितोऽपिविश्वदृक् ॥ योऽन्तर्वहिरचेतसएतदीहितं क्षेत्रज्ञईक्षत्यमलेनचक्षुषा १८ अप्यङ्घ्रिमूलेऽवहितंकृताञ्जलिं मामीक्षितानास्मित

वारे गुरु त्रिलोकी में सुन्दर नेत्रनवारे पुरुषन कूं आनन्द के देनवारे लक्ष्मीको वाञ्छित रहिये को ठिकानो अतिसुन्दर रूपको धारण करे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को आज मैं निश्चय दर्शन करोंगो प्रातःकाल के समय मेरे श्रेष्ठ सगुन भये हैं १४ दर्शन करे पीछे शीघ्र रथमें ते उतरि के ईश्वर राम कृष्णको निश्चय प्रणाम करोंगो और इन सहित वनवासी सबान को प्रणाम करोंगो जिन राम कृष्ण को चरणारविन्द योगीन ने आत्मलामके लिये केवल मनमें ध्यान क्रियो है ताको मैं साक्षात् प्रणाम करोंगो १५ चरण में परो जो मैं हूं ताके शिर पै समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र अपने हाथ को धरेने कालरूप सूर्यकी फुंकार सों हरपिके शरण कूं चाहैं ऐसे मनुष्यन कूं अभयदान जा हाथ ने दियो है १६ जिन श्रीकृष्ण के हाथमें इन्द्र पूजा राखिके इन्द्रता पावतभयो तेसेही राजा को धरेने कालरूप सूर्यकी इन्द्रता पावतभयो रासक्रीड़ा में व्रजकी स्त्री गोपीन के थप को जो पसीना है ताकूं जा हाथ ते पोछत भयो और कमलकीसी जा हाथ में सुगन्धि आवै वा हाथ बलि संकल्प राखिके त्रिलोकीकी इन्द्रता पावतभयो रासक्रीड़ा में व्रजकी स्त्री गोपीन के थप को जो पसीना है ताकूं जा हाथ ते पोछत भयो और कमलकीसी जा हाथ में सुगन्धि आवै वा हाथ को मेरे शिरपर धरे १७ कंस को सन्देशो लैके कंस को भेज्यो जाऊँहैं तथापि समस्त विश्व के जाननवारे श्रीकृष्णचन्द्र वैरी कंस के पास ते यह आयो है याते मोको न मानेंगे और जो अन्त-



थीभी श्रीकृष्ण मेरे चित्त के बाहर भीतर जो चेष्टा है ताकूँ नित्य ज्ञान करिके देखे हैं ऊपर ते कंस को भेज्यो जाऊँहाँ भीतर तें श्रीकृष्णको ध्यान लगिरहो है जा वातकॉ नित्य ज्ञान करिके अन्तर्यामी जानैहैं १८ चरणारविन्द में गिरयो हाथ जाने जोरि लिये ऐसो जो मैं हूँ ताकूँ मुसिहायके श्रीकृष्णचन्द्र करुणाभरी दृष्टि सों जासमय देखेगे तासमय शीघ्रही दूरि भयेहैं सवपाप जाके नयो है भय जाहो ऐसो धै वड़े आनन्द कों पाऊगो १९ अतिशय करिके हिनकारी जाति कों श्रीकृष्ण के बिना और कोई देवता नहीं ता गोको श्रीकृष्णचन्द्र अपनी लक्ष्मी भुजा पसारिके छाती ते लगानेगे ता समय यह देह पवित्र होय जायगो और दम्भरूप दब्यनहै सोभी या देशको बूढ़ि जायगो २० श्रीकृष्ण ते मिलिके नारि फुल्लायके हाथ जोरिके जब ठाढ़ो होउंगो तब हे अकू ! हे नारा ! या प्रकार बड़ो जिनको यशवे श्रीकृष्ण मोतें कहेंगे ता समय हम सफलजन्म होयेंगे वड़ोने जाको आदर नहीं कियोहै वा पुरुष कों विहार है २१ तिन श्रीकृष्ण के कोई प्यारो और अ-

मार्दव्यादृशा ॥ सपद्यप्यस्तसमस्तकिल्बपो वोढासुदंवीतविशङ्कजिताम् १६ सुहृत्तमंज्ञातिमन्यदैवतं दोर्याबृहद्भयांपरिस्स्यतेऽथमाय ॥ आ त्माहितीश्रान्त्रियतेनैवमे वन्धश्चरम्मात्मकउच्छ्वसित्यतः २० लब्धवाङ्मसहंप्रणतंकृताञ्जलिं गांवश्यनेऽस्मृततेत्युरुश्रवाः ॥ तदावयंजन्मभृतोमहीयसा नैवाहृतोयोधिगमुष्यजन्मतत् २१ नतस्यकश्चिद्वदितःसुहृत्तगोनचाप्रियोद्रेष्यउपेक्ष्यएववा ॥ तथाऽपिभक्ताभजतेयथातथा सुरदुमोयद्वदुपाश्रितोऽथ दः २२ किंचाऽयजोमाऽवनतंयदूत्तमः समयन्परिष्वज्यगृहीतमञ्जौ ॥ गृहंप्रवेशयाप्तसमस्तसत्कृत् संप्रक्ष्यतेकंसकृतंस्ववन्धुपु २३ श्रीशुकउवाच ॥ इतिशंचिन्तयन्कृष्णं स्वफलकृतनयोऽध्वनि ॥ स्थेनगोकुलंप्राप्तसूर्यश्चास्तगिरिन्दुप २४ पदानितस्याखिललोकपालकिरीटजुष्टामलपादरेणोः ॥ ददर्श गोष्ठेक्षिनिकौतुहानि विलाक्षिनान्यवजयवाङ्मयाद्यैः २५ तदर्शनाह्लादविवृद्धसंभ्रमः प्रेम्णोर्धरोमाऽश्रुकलाकुलेक्षणः ॥ रथादयस्सन्धसतेष्वचेष्टनप्रभोर मून्यद्विरजारयदोइति २६ देहभृताभियानर्थो हितमादमंगभियंशुचम् ॥ सन्देशाद्योहरेर्लिङ्गदर्शनश्रवणादिभिः २७ ददर्शकृष्णंरामञ्च व्रजेगोदोहनंग

तिशय करिके हितकारी भी नहींहै कोई कुप्यारो नहीं और न कोई वैरीहै न कोई छेड़िने योग्यहै तथापि जो भक्त जैसे भजेहैं तिनको तैसेही भजेहैं जैसे कल्याण जो सेवन करैहै वाहीको बह फल देयहै २० यादवन में प्रेष्ट बड़े भय्या बलदेवजी नीची नारि करिके ठाढ़ो जो मैं हूँ ताय मुसिहाय के आलिगन करिके हाथ पकरिके गर मैं लेजायके पाये हैं समस्त सत्कार जाने ऐसो जो मैं हूँ तासों अपने दानु यादवन में कंसके कर्त्तव्यको पूछेंगे २३ अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार स्वफल के पुत्र अकूर मार्ग में श्रीकृष्णचन्द्र को चिन्तन करत रथ में बैठकर गोकुल पहुँचे इतने में सूर्य अस्ताचन को प्राप्त होयगो २४ सम्पूर्ण लोकन के पालन सरनवारे ब्रह्मादि देवता अपने मुकुटनके ऊपर जिनके चरणनभी रेणु कों धारण करें तेसे श्रीकृष्णचन्द्र के चरणन के रोज अकूरजी व्रजमें देखत भये जैसे रोजहैं पृथ्वी के गहनेरूप हैं कमल यव अंकुश के जिनमें चिह्नहैं २५ श्रीकृष्णचन्द्र के चरणन के आनन्द ते भगोहे सन्ध्रम जिनके प्रेम से रोगाञ्च जिनके होय आये वेदन में आस आगये ऐसे अकूरजी रयते उत्तरिके अहो मेरे प्रभु के चरणनकी रज पेसे कहत कहत चरणन के खोजन में लोटत भये २६

देशधारीन को इतनीही पुरुषार्थ है कंसके सन्देश ते आदित्यके दम्भ भय शीघ्र छोड़ के श्रीकृष्णके चरणन के दर्शन श्रवणादिकारुं जो अक्रूरको प्रेमभयो २७ ब्रजमें गोशाला में गौ दुहिविको गये जे श्रीकृष्ण और वलदेवजी को अक्रूरजी देखतभये पीताम्बर और नीलाम्बर के पहिरे हैं शरद्वक्तु के कमल से जिनके नेत्र २८ किशोर जिनकी अवस्था श्याम और गौर जिनको स्वरूप लक्ष्मी की शोभाके स्थान लक्ष्मी जिनकी भुजा सुन्दर जिनको मुख सुन्दरन में अविमुन्दर हाथीके छोनो के तुल्य जिनको पराक्रम है २९ ध्वजा वज्र अंकुश कमल को जिनमें चिह्न ऐसे चरणन सू ब्रजको शोभायमान करे हैं महात्मा हैं कृपा भरी मुक्तिकानि लिये जिनकी चितवनि है उदार रुचिर जिनकी क्रीड़ा है मोतीन के दार और वनमाला पहिरे पवित्र चन्दन केशर जिनके लग्नी है स्नान क्रिये निर्मल जिनके चहरे हैं प्रकृति पुरुषरूप है काहे ते आदिकारण हैं जगत्के पालन करनवारे हैं पृथ्वीकी भार उतारिये के लिये वलराग केशव दो रूप धरि के अवतारलिये हैं ३० ३१ ३२

तो ॥ पीतनीलाम्बरधरौ शरद्वक्तुहक्षणौ २८ किशोरौ श्यामलश्वेतौ श्रीनिकेतौ वृहद्वज्रौ ॥ सुमुखौ मुन्दरवरौ वालिद्विदविक्रमौ २९ ध्वजवज्राङ्कुशाम्भोजैरिचिह्नैर्नृभिर्ब्रजम् ॥ शोभयन्तौ महात्मानौ सानुक्रोशस्मितेक्षणौ ३० उदारशचिरक्रीडौ खग्विणौ वनमालिनौ ॥ पुरयगन्धानुलिताङ्गौ स्नातौ विरजवाससौ ३१ प्रधानपुरुषावाद्यौ जगद्धेतू जगत्पती ॥ अवतीर्णौ जगत्पथे स्वांशेन वलकेशवौ ३२ दिशो वितिमिराजन् कुर्वाणौ प्रभयास्वया ॥ यथामारुक्तः शैलौ रौप्यश्चक्रनकाचितौ ३३ रथासूणं मवल्लुत्य सोऽक्रूरः स्नेहविह्वलः ॥ पपात चरणोपान्ते दण्डवद्रामकृष्णयोः ३४ भगवद्दर्शनाह्लादवाष्पपयःकुलेक्षणः ॥ पुलकाचिताङ्गौ त्रिगुणैः स्वस्वनाशकनृप ३५ भगवांस्तमभिप्रेत्य रथाङ्गाङ्घ्रितपाणिना ॥ परिरेभेभ्युपाकृष्य प्रीतः प्रणतवत्सलः ३६ सङ्कर्षणश्च प्रणतमुपगुह्य महामनाः ॥ गृहीत्वा पाणिना पाणी अनयत्सानुजोगृहम् ३७ पृष्ठाऽथ स्वागतं तस्मै निवेद्य च वरासनम् ॥ प्रक्षाल्य विधिवत्पादौ मधुपर्कार्हणमाहृतः ॥ अन्नं बहुगुणं मेघं श्रद्धयोपाहरद्विभुः ३८ तस्मै सुकृत्वते प्रीत्या

हे राजन् परीक्षित ! अपने तेजते दिशान के अन्यकार को दूर करे हैं सुवर्ण करि के जैसे नीलमणि को पर्वत अथवा रूपे को पर्वत जगभगाय है ३३ स्नेह में विह्वल होयके अक्रूरजी शीघ्र रथमें ते उत्तरि के रामकृष्ण के चरणन में दण्डवत् करतभये ३४ हे राजन् परीक्षित ! श्रीकृष्ण के दर्शन सूं जो आनन्द भयो तामूं नेत्रन में आसू भरि आये उत्कण्ठते अंगमें रोमाञ्च होय आये हैं अक्रूर दण्डवत् करूं हैं ऐसे कहिये को न समर्थ होतभये ३५ हितके करनवारे भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्र अक्रूर एतदर्थ आये हैं यह जानिके चक्रकी जामें रेलत ऐसे अपने हाथते पकारिके प्रसन्न होय के छानी सौ लगाय के मिलतभये मिलिये को कारण यह है कि कंस के मारिये की सामर्थ्य श्रीकृष्ण ने जताई ३६ वड़ो है मन जिनको ऐसे संकर्षण वलदेवजी दण्डवत् जिनने करी ऐसे अक्रूर जीको छाती सूं लगाय के अपने हाथ ते दोनों हाथ पकारि के घरमें श्रीकृष्ण सहित लिवाय जात भये ३७ भलेआये ऐसे कुशल पूंछि के अक्रूरजी को आसन विद्यय के विधिपूर्वक पावन को धोयके मधुपर्क दैके पूजन करतभये ३८ विधिपूर्वक पूजा करिके वैल अक्रूरजी के निवेदन करो मार्गमें परिश्रम जिनको भयो ऐसे अक्रूरजी के चरणारविन्द आदरसों दाविके बहुत जामें गुण

ऐसी पवित्र अन्नकी सामग्री भोजनार्थ अतिथिदा सों अक्रूरजी के आगे निवेदन करतभये ३९ अक्रूरजी भोजन जब करिबुके तब परमधर्म के जाननवारे बलदेवजी वीरी चन्दन केशर अतर फूलन के द्वार इत्यादिक सँ प्रसन्न करतभये ४० सम्मान जिनको करो ऐसे अक्रूरजी ते नन्दजी पूँछतभये निर्दयी कंसके जीनत तुम्हारी कैसे जीवनहोयहै कसाई जिनको पालक वे भेड़ कैसे जिये ४१ प्राणन को पोषणवारो दुष्ट कंस दिलाप करै जो अपनी बहिनि ताके पुत्रन कों गोरत भयो ता कंसकी प्रजा तुमहो तुम्हारी कहा कुशल विचारै ४२ या प्रकार मधुरवचन तें पूँछि के नन्दजी ने सत्कार जिनको करो ऐसे अक्रूरजी मार्गके परिश्रम कों त्यागतभये ४३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे ऽक्रूरागमनं नामाऽष्टत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३८ ॥ \* ॥

(नवत्रिंशे पुरांगच्छत्यच्युते गोपिकोक्तयः ॥ अक्रूरेणाथ कालिन्यां विष्णुलोकस्य दर्शनम् १ उन्नतालीसयै अध्याय में मथुरापुरी को जातेहुये श्रीकृष्णजी में गोपियों की उक्ति और अक्रूरजी

रामः परमधर्मवित् ॥ सुखवासैर्गन्धमाल्यैः परांप्रीतिव्यधात्पुनः ४० पप्रच्छ सत्कृतं नन्दः कथं स्थितिं दाशाहं सौ न पाला इवावयः ४१ योऽवधीत् स्वस्वमुस्तोकाच्च क्रोशन्त्या अमुत्प्लवः ॥ किं नु स्वित्तत्प्रजानां वः कुशलं विष्टुशामहे ४२ इत्थं मूतयावाचा नन्देन सुसभाजितः ॥ अक्रूरः परिप्रेतेन जहावध्वपरिश्रमम् ४३ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे ऽक्रूरागमनं नामाऽष्टत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३८ ॥ \* ॥

श्रीशुकउवाच ॥ सुखोपविष्टः पर्यङ्के रामकृष्णोरुमानितः ॥ लेभे मनोरथान् स्वर्वाङ् पथियान्सचकारह १ किमलभ्यं भगवति प्रसन्ने श्रीनिकेतने ॥ तथाऽपि तत्पराजन्निहिवञ्छन्ति किञ्चन २ सायन्तनाशानं कृत्वा भगवान् देवकीसुतः ॥ सुहृत्सुवृत्तं कंसस्य पप्रच्छान्यच्चिकीर्षितम् ३ श्रीभगवानुवाच ॥ ता तसौम्यागतः क्विस्त्वागतं भद्रमस्तु वः ॥ अपि स्वज्ञातिवन्धूनामनमीव मनोमयम् ४ किं नु नः कुशलं पृच्छे एधमाने कुलामये ॥ कसे मा तुलना मन्यङ्ग स्वानां नस्तत्प्रजामुच ५ अहो अस्मदभूद्भूरिपित्रोर्द्विजिनमार्थयोः ॥ यद्धेतोः पुत्रमरणं यद्धेतोर्वन्धनंतयोः ६ दिष्ट्वाऽद्य दर्शनं स्वानां महान् वः सौम्यकाङ्क्षितम् ॥ स

करके यमुनाजी में विष्णुलोक का दर्शन भयो है १) अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित ! शय्याके ऊपर सुखपूर्वक बैठे कृष्ण बलदेवने बड़ो सत्कार जिनको करो ऐसे अक्रूरजी मार्ग में जे जे मनोरथ करतगये हैं ते ते समस्त पूर्णभये १ छः प्रकारके ऐश्वर्य करि परिपूर्ण शोभा के स्थान ऐसे श्रीकृष्ण जब प्रसन्नभये तब कौनसी वस्तुकी प्राप्ति न भई हे राजन् परीक्षित ! कृष्ण-परायण जे भक्त है तिन कतु वस्तुकी चाहना नहीं है २ देवकीके पुत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र सन्ध्या समय व्यास करिके आपने यादवन में जो कंस को बर्ताव है ताय अक्रूरजी सँ पूँछतभये और जो कतु करिवेको विचार है ताय पूँछतभये ३ श्रीभगवान् श्रीकृष्ण वृत्ते है हे काका ! हे साधु ! तुम भले आये तुम्हारी कल्याण होउ जातिके भैया वन्धूनको सुलहै आरोग्य है ४ अंग अर्थात् हे अक्रूर ! मामा है नाम जाको ऐसी कंस हमारे कुलको रोग बढो तब अपने भय्या वन्धूनकी ता कंसके प्रजाकी कहा कुशल पूँछ ५ हमारे निरपराध माता पितो कं हमारे लिये बढो दुःख भयो हमारे लिये उनके

पुत्र भरे हमारे लिये उनको वन्यन भगो ६ हे साधु ! यहूतदिन ते तुम्हारे दर्शनकी अभिलाषा रही अब अपनेनको दर्शनभयो वड़ो मङ्गलभयो हे काका ! तुम्हारी आयवो कैसे भयो यह हमते वर्णन करो ७ श्रीशुक्लदेवजी बोले मधुवंशोद्भव अक्रूरजी श्रीकृष्णने पूँखे तब सम्पूर्ण वृत्तान्त कहतभये कंस यादवनसूँ वैर करे है और वसुदेवके मारिवको देखिवको तो भिपहै चाणूरा-दिमनपै घात करायवे के लिये मोहिं भेजोहै वसुदेवके श्रीकृष्णको जन्मभयो है यह बात नारदजीकंसते कहि आये हैं सो सम्पूर्ण अक्रूरजी श्रीकृष्ण ते कहतभये ८।६ श्रीकृष्णचन्द्र और वड़े शत्रुनके पराजय करनकारे श्रीवलदेवजी अक्रूरको वचन श्रवण करिके पिता नन्दजी सँ हैसिके राजाकंसको संदेशो जातावतभये १० नन्दजी गोपनको आज्ञा देतभये सम्पूर्ण दूध दही लै लेउ गाड़ान को जोतो ११ कहिके दिन मधुरा जायेंगे राजाकंसको रस देखेंगे यामें यह बोधन करो कि जब देहमें रोग वृद्धिकूं मास होयैहै तग रस देखै ऐसे कंसरूपी रोग वढो है याको रस देखेंगे सुन्दर

आतंवर्यतां तात तवागमनकारणम् ७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ पृष्टो भगवता सर्ववर्णायामासमाधनः ॥ वैरागुवन्धं यदुपमुदेववधोद्यमम् ८ यत्संदेशो यदर्थवा दूतः संप्रेषितः स्वयम् ॥ यहूकं नारदेनास्य स्वजन्मानकहुन्दुभेः ६ श्रुत्वाऽक्रूरवचः कृष्णो नलश्रपर्वीरहा ॥ महस्य नन्दपितरं राज्ञादिष्टं विजज्ञतुः १० गोपानस मादिशत् सोऽपि गृह्यतां सर्वगोरसः ॥ उपायनानि गृह्णीध्वं युज्यन्तां शकटानि च ११ यास्यामः स्वोमधुरीं दास्यामो नृपतेरसाञ्च ॥ द्रक्ष्यामः सुमहत्पथं यान्निजानपदाः किल ॥ एवमावोपपत्क्षत्रानन्दगोपः स्वगोकुले १२ गोप्यस्तास्तद्वपश्रुत्य वभूवुर्वथिताभृशम् ॥ रामकृष्णौ पुरीनेतुमक्रूरं जमागतम् १३ काश्चित्कृतहृत्तापश्वासस्नानमुखिश्रियः ॥ संसद्वकूलवलयकेशग्रन्थश्च काश्चन १४ अन्याश्च तदनुष्यान्निवृत्ताशेषवृत्तयः ॥ नाभ्यजानन्नि मंलोकमात्मलोकं गता इव १५ स्मरन्त्यश्चापराशौ रेनुरागस्मिते रिताः ॥ हृदि स्पृशयि च त्रपदागिरः संसुहुः स्निग्धः १६ गर्तिसुललिताञ्चैष्टां स्निग्धदासा वलोकनम् ॥ शोकापहानि नर्माणि प्रोद्दामचरितानि च १७ चिन्तयन्त्यो मुकुन्दस्य लीलाविश्रहकातराः ॥ समेताः सङ्घशः प्रोत्तुः शुमुग्धोऽन्युताशयाः १८

भारी पर्व देखेंगे और देशवासीहू जायेंगे ऐसे नन्दरायजी अपने गोकुल के कोतवालको बुलायके ढाड़ी पिढायत भये १२ श्रीकृष्णरी हैं एक जीवन जिनके वे गोपी जा समय श्रीकृष्ण बलरामको मथुरापुरीमें लेजायवैकुंठमें अक्रूरजी आयें हैं यह बात सुनिके अत्यन्त दुःखित होतभई १३ अब गोपीन के दुःखके तत्तण ऊहैं हैं श्रीकृष्ण मधुरा जायेंगे यह बात सुनिके भयो जो हृदयमें ताप ता सों कितेरु गोपीन के गुन कुम्हिलायगये शिथिलभये हैं वस्त्र ऊँकण केशनकी ग्रन्थि जिनकी ऐसी कोई गोपी होतभई १४ ता श्रीकृष्ण के ध्यानकरे ते निवृत्तभई है इन्द्रियनकी छति जिनकी अर्थात् नेत्रन ते देखिनो कानन ते सुनिनो वाणी ते बोलिनो नासिका तें सूँविये ते सग जिनको छूटिगयो ऐसी और गोपी हैं ते मुक्तिभये तिनकी तुल्य या देहको न जानतभई १५ कोई गोपी स्नेहते सुसिकाय के हृदयको आनन्ददायक चित्रविचित्र जिनकी बोलनि ऐसे वचनकी सुनिकरि के मोहित होतभई १६ मुक्तिके देनवारे श्रीकृष्णचन्द्रकी मनोहर चलनि स्नेह भरी चितवनि शोककी दूरि करनवा-री बोलनि इत्यादिक चेष्टानकूं वड़े चरितनकूं स्मरण भूतभई १७ यह सत्य जायगो यह भयजिनको भयो निरह में कायर अशु जिनके मुँह पै वहिआये श्रीकृष्ण भगवान् में जिनको मनहै ऐसी

हजारन गोपीन के भुएइ छुरि मिलि के सबस्त आपुसमें यह कहत भई १८ गोपी कहती है अहो विधाता ! तरे कहू दया नहीं है देहधारीन काँ भिलाय के मित्रता करवै स्नेह लगावै फेरि उनके मनोरथ पूर्ण न होन पावै तब तक उनकाँ ऐसो न्यारो न्यारो करिदेय है जैसे वालरु सखिनाकाँ इकठोर कोरि के फेरि न्यारो न्यारो करिदेय है १९ तेरो यह कर्म निन्दित है अथ यह कहै है धूमधुवारी छछादार अलकें जापै छुटिरहीं सुन्दर जामें कपोल ऊँची जामें नासिका शोककी हरनवारी मन्दमन्द जामें मुसिकानि तासाँ सुन्दर ऐसे प्यारे श्रीकृष्णचन्द्रको मुख दिखाय के हमारे नेत्रनतें न्यारो करे है यह तेरो कर्म बुगो है दान करि के लेई है याते तू बड़ो कठोर है २० अन्दर लेजाय है मँतो नहीं लेजाऊँ हों कदाचिद ऐसे विधाता कहै है अरे विधाता निर्दयी ! अकूर या नाम प्रिय के आयो जो तू है सो तेने हमको कृष्णरूप नेत्र दिये हैं तिनकुँ अज्ञानी की तुल्य हरि के लेजाय है कदाचिद कहो कि कृष्णको हरि के लिये जाऊँ हूँ तुम्हारे नेत्रनकाँ तौ नहीं हरीं हों तहा कहै है हमारे नेत्रनको तो हरीं है जो तेने नेत्र दियो है तासूं श्रीकृष्ण के एक अंगमें सम्पूर्ण विश्वकी चतुराई देख लेत भई कृष्णरुप विना आंधीगोपी कौनकाँ देखेगी २१ क्षणमें भद्र है

गोप्यऊचुः ॥ अहो विधातस्तवन क्वचिदया संयोज्यमैत्र्या प्रणयेन देहिनः ॥ तांश्चाकृतार्थान्वियुनङ्ग्य पार्थक्यविक्रीडितं तैर्ऽप्येकचेष्टितं यथा १६ यस्त्वं प्रदर्यासितकृन्तलावृतं मुकुन्दवक्रं मुकपोलमुन्नमम् ॥ शोकापनोदस्मितलेशसुन्दरं करोपि पारोक्ष्यमसाधुते कृतम् २० क्रूरस्त्वमक्रूरसमाख्ययास्मनश्चक्षुर्हि दूरं हरसेवताज्ञवत् ॥ यैवैकदेशेऽखिलसर्गसौष्ठवं त्वदीयमद्राक्ष्मवयं मधुद्विपः २१ ननन्दसूनुः क्षणभङ्गसौहृदः समीक्षतेनः स्वकृतातुरावत् ॥ विहायगेहान् स्वजनान्मुतान्चपत्तंस्तद्वास्यमद्धोपगतानवप्रियः २२ सुखप्रभातारजनीयमाशिपः सत्यावभूतुः पुरयोपि नां ध्रुवम् ॥ याः सप्रविष्टस्यमुखं व्रजस्पतेः पास्यन्त्य पाङ्गोत्कलितस्मितासवम् २३ तासां मुकुन्दो मधुमञ्जुभापि नैर्गृहीतचित्तः परवान्मनस्वपि ॥ कथंपुनर्नः प्रतियास्यते वलाग्राम्याः सलज्जस्मितविभ्रमैर्भ्रमन् २४ अद्यध्रुवं त्रहशो भविष्यते दाशाहं भोजान्धकवृष्णि सात्वताम् ॥ महोत्सवः श्रीरमणं गुणास्पदं दृक्ष्यन्ति त्वेवाध्वनिदेवकी सुतम् २५ मैतद्विधस्याकरु

स्नेह जाको ऐसो यह नन्द को पुत्र याकी मुसिकानि सों मोहित भई घर भय्या बन्धन काँ त्यागि के श्रौ पुत्र पतिन काँ छोड़ि के साक्षात् जाकी दासी भई है हाय हाय हमें देखेहू नाय है याकूं नये नये प्यारे लगे हैं २२ मथुरा की स्त्रीनकुँ या रात्रि को सरेरो अन्धको होयगो क्योंकि उनके मनोरथ निश्चय साथे होथे जव मथुरामें जायगो तब कटाक्षन काँ लिये मुसिकानि रूप जामें रस ऐसे मुख काँ आदर ते देखेगी कदाचिद दो तीन दिन को जाय है तुम ते जाको प्यार है वात्ता संग जाय है लिवाय के चलयो आवैगो ऐसी व्याकुल क्यों होउ हौ तहां गोपी कहे हैं मथुरा की स्त्रीन की मीठी मनोहर बातन सूं प्यारे को चित पकरो जायगो उनकी लाज भरी मुसिकानि कटाक्षन सों मन जाको चलायमान होग जायगो दोहा कवित्तन के अर्थ कैं ऐसी चतुर स्त्रीन की आँखि जव प्यारो देखैगो तब हे सात्वता ! धैर्यवान् वात्ता के अधीन है तथापि गोत्र की रहनवारी हम है तिनके पास फेरि काहे हो आवैगो २३ । २४ आज तौ मथुरा में दाशाहं वंशी भोजवंशी अन्धकवंशी यादव हैं तिनकी आँखिन काँ निश्चय आनन्द होयगो लक्ष्मी के रमानवारे समस्त जिनमें गुण ऐसे देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण तिनकुँ जे पुरुष मार्ग में देखैगे तिनकी आँखिन

कों निश्चय यही आनन्द होयगो २५ या सारिले निर्दयी को अक्रूर यह सुन्दर नाम मति होउ जो यह निर्दयी बहुत दुःखित जो हम हैं तिनके विना धूँखे प्राखन ते प्यारो कृष्ण है ताकू हमारी आखिन ते दूर लिये जायहै २६ कठोरहै बुद्धि जाकी ऐसो यह कृष्ण रयमें जाय बैठ्यो है अभामे गोप जल्दी गाड़ा होंके ऐसे श्रीकृष्ण के पीछे उतावल करेहैं और दुद्धभी या कू नाहीं नहीं करेहैं श्री सलियो ! कौन कौं दोष देहें आज हमारो दैवही उलटो होय गयो दैव सूयो हो तो तौ कोई विघ्न होय जातो भुरो शकुन त्रिचारि के प्यारो यहाही रहतो न जातो २७ गोपी कहेहैं चलि के या श्रीकृष्ण कौं मने कौं याके रय के आगे आड़ी पारिके कहेंगी जो जाय है तो हमारी छाती पै रय को पहिया धरिके जा हमारे यह कुल के वडेबूढ़े कहा करेगे आथोक्षण छुटे नहीं ऐसो मुकुन्दको संग तासू दैवने विछुराईहैं याही ते टीन हमारो चिच भयो है २८ जा श्रीकृष्णकी स्नेहमरी मनोहर मुसिकानि मनोहर वाम लीलापूर्वक चितवनि आखि-

एस्यनामभूदक्रुइतेतदतीवदारुणः ॥ योऽसावनाश्वास्यसुदुःखितंजनिंप्रियात्प्रियञ्जयतिपारमध्वनः २६ अनाईधोरपससास्थितोरथं तमन्वमीचत्वरय नितहुर्मदाः ॥ गोपाअनोभिःस्थविरैरुपेक्षितं दैवध्वनोऽद्यप्रतिकूलमीहते २७ निवारयामःसमुपेत्यमाधवं किन्नोऽकरिष्यवकुलवृद्धवान्धवाः ॥ मुकुन्दसङ्गा निमिपाद्धुइत्यजाह्वेनविध्वंसितदीनचेतसाम् २८ यस्यानुरागललितस्मितवल्गुमन्त्रलीलाऽवलोकपरिरम्भणरासगोष्ठयाम् ॥ नीताःस्मनःक्षणमिवक्ष एदाविनातं गोप्यःकथंनवतितरेमतमोदुरन्तम् २९ योऽहःक्षयेव्रजमनन्तसखःपरीतोगोपैर्विशन्मुखरज्जुरितालकलम् ॥ वेणुंक्षणन्स्मितकटाक्षनिरीक्षणे न चित्तंक्षिणोत्त्वमुभृतेनुकथंभवेम ३० श्रीशुकउवाच ॥ एवंब्रवाणाविरहातुराभृशं ब्रजस्त्रियःकृष्णविपक्कमानसाः ॥ विमृज्यलज्जंरुदुःस्मसुस्वरं गोवि न्ददामोदरमाधवेति ३१ स्त्रीणामेवंरुदन्तीनामुदितेसवितर्यथ ॥ अक्रूरश्चोदयामासकृतमैत्रादिकोरथम् ३२ गोपास्तमन्वसज्जनन्तनन्दाद्याःशकटैस्ततः ॥ आदायोपायनंभूरिकुम्भान्गोरससम्भृतान् ३३ गोप्यश्चदयितंकृष्णमनुब्रज्यानुरञ्जिताः ॥ प्रत्यादेशंभगवतः काङ्क्षन्त्यश्चावतस्थिरे ३४ तास्तथातप्यतीर्षीक्ष्य

गन इनकरिके रासकी सभामें वही रात्री एक क्षणकी तुल्य वितार्ई हे गोपियो ! या कृष्ण विना विरहरूपी दुःखके समुद्रकों कैसे तरेंगी २९ बलदेवहै सखा जाको गौवन के खुरनकी रज सहू घूसरी हैं अलक और माला जाकी ऐसो कृष्ण सन्यासमग्य ग्वालवालन को संग लैके बांसुरी को बजावत आवैहै मुसिकानि कटाक्षपरी चितवनि सों चित्तको बुरावै है अब या विना कैसे जीवेंगी ३० अब श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार अत्यन्त विरह में व्याकुल श्रीकृष्णमें लगे हैं मन जिनके ऐसी ब्रजकी स्त्री गोपी लाज छोटिके हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव ! ऐसे पुनारपुनार के रोवतभई ३१ या प्रकार स्त्री रुदन करेही इतने में सूर्य उदय होइ आयो ता पीछे सन्ध्योपासन जिनने करो ऐसे अक्रूरजी रयकों हाकतभये ३२ नन्दादिक सम्पूर्ण गोप वही वही भेंट लैके दूध दही माखनमें भरे जे कलशहैं तिनकू लैके गाढानमें घोटिके पीछित जातभये ३३ श्रीकृष्णमें आसक्तहैं मन जिनको ऐसी गोपी श्रीकृष्णके पीछे जायके ग्रभज्ज प्यारो



वगदि के आवै ऐसे श्रीकृष्णको वगदिवे को पैड़ो ठाढ़ी देखतभई ३४ यादवनमें उत्तम श्रीकृष्ण अपने चलिवे के समग्र गोपीन को व्याकुल देखिके जल्दी आऊँगो ऐसे भेम सहित दूतनसे वचन कहवाय के शान्त करतभये ३५ जहा ताई रथकी ध्वजा दीख्यो करी तरताई और जहा ताई रथकी धूरि उड़ती दीखी तवताई श्रीकृष्ण में लागेहँ चित जिनके ऐसी गोपी अत्रहँ वगदि आवै ऐसे विचार करत चित्रकी तुल्य लिलीसी ठाढ़ी होतभई ३६ श्रीकृष्ण के वगदिवे की गई है आश जिनके वे गोपी वगदि के आवति भई श्रीकृष्णकी लीलान को गाय गायके गयेहँ शोक जिनके ऐसे दिनन को वितावत भई ३७ हे राजन् परीक्षित! पवन की तुल्यहै वेग जाको ऐसो रथ तामें वैठिके वलदेव अकूरसहित श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् पाप दूर करनवारी जो यमुना है तहां प्राप्त होतभये ३८ ता यमुना तीरमें हाथ पांय धोइ आचमन करि सीठो निर्मल जल पीके वगीचा में आयके वलदेव सहित रथमें बैठतभये ३९ अकूरजी श्रीकृष्ण वलदेव कूं रथमें बैठारि के उनेते

स्वप्रस्थानेयदूतमः ॥ सान्त्वयामाससेमैरायास्यइतिद्वैत्यकैः ३५ यावदालक्ष्यतेकुर्वावेद्वैत्यरथस्यच ॥ अनुप्रस्थापितात्मानोलेख्यानीवोपलक्षिताः ३६ तानिराशानिववृत्तुर्गोविन्दविनिवर्तने ॥ विशोकाअहर्नीन्युर्गायन्त्यःप्रियचेष्टितम् ३७ भगवानपिसम्प्राप्तोरामाङ्कुरयुतोदृष्य ॥ रथेनवायुवेगेन कालिन्दी मयनाशिनीम् ३८ तत्रोपस्पृश्यपानीयं पीत्वाभृष्टमणिप्रभम् ॥ दृक्षपण्डसुपञ्ज्यसराभोरथमाविशत् ३९ अकूरस्तावुपामन्य निवेश्यचरथोपरि ॥ का लिन्द्याद्दृढमाग्न्यस्नानंविधिवदाचरत् ४० निमज्ज्यतस्मिन्सलिले जपन्ब्रह्मसनातनम् ॥ तावेवददृशेऽकूरोगमकृष्णौसमन्वितौ ४१ तौरथस्थौऋथमि हमुतावानकहुन्धुभेः ॥ तर्हिस्वित्स्यन्दनेनस्तइत्युन्मज्ज्यव्यचष्टसः ४२ तत्रापिचयथापूर्वमासीनौपुनरेवसः ॥ न्यमज्जदृशेनंयन्मे सृपाकिसलिलेतयोः ४३ सूयस्तत्रापिसोऽद्राशीत् स्तूयमानमहीश्वरम् ॥ सिद्धचारणगन्धर्वैर्मुखैर्नतकन्धैः ४४ सहस्रशिरसंदेवं सहस्रकृष्णगोलिनम् ॥ नीलाम्बरंविमश्वे तंशृङ्गैरवेतमिवस्थितम् ४५ तस्योत्सङ्गेधनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ॥ पुरुषंचतुर्भुजंशान्तं पद्मपत्रारुणेक्षणम् ४६ चारुप्रसन्नवदनं चारुहासनिरीक्ष

आज्ञा मागिके यमुना के तीर पै आयके विधिपूर्वक स्नान करतभये ४० ता जल में गोता मारिके गायत्री को जपकरत अकूरजी राम कृष्ण को देखत भये ४१ वसुदेन के पुत्र रामकृष्ण रथ में बैठे हैं यहाँ कैसे आयागये कदाचित् रथ में से उतर तों न आये मैं निकसि के देखों तो या भकार अकूरजी कहतभये ४२ फेरि अकूरजी निकसि के देखें तो पहिलेकीसी नाई रथ में बैठे हैं ता समय अकूरजी विस्मित होतभये कि जो जलके भीतर मोकों दोनोंको दर्शन भयो सो कथा मिथ्या है ऐसे विचारि के फेरि गोता मारत भये तब सिद्ध चारण गन्धर्व अमुर नतैक सम्पूर्ण रतुतिकरे हैं शेषजी विराजमान हैं ऐसे देखत भये ४३ ४४ हजार हैं शिर जिनके मुकुटसहित हजार फण हैं नील वस्त्र कूं धारण करे कमल के नालकी तुल्य श्वेत है वर्ण जिनको ऐसे नैलास की तुल्य प्रकाशमान देखत भये ४५ कुण्डली करिके विराजमान तिनके ऊपर मेघों के समान श्याम पीतवस्त्रन कों धारण करे चार हैं भुजा जिनके शान्तस्वरूप पुरुष बमल के पत्ताकी तुल्य हैं अस्त्र नैन जिनके ४६ सुन्दर प्रसन्नहै मुख जिनको सुन्दर हासभरी चितवनि सुन्दर धुकुधी और नासिका सुन्दर कर्ण सुन्दर कपोल और अरुण श्रोष्ठ लम्बी मोटी है भुजा जिनकी रिशाल इदृश पं लक्ष्मी

जिनके विराजमान गोल ग्रीवा त्रिवली जायै परिरही ऐसी सुन्दर जिनकी नाभि ग्रीपर के पत्ता की तुल्य चिकनो उदर ४७ । ४८ बृहत् जिनकी कमर और श्रोणी ता करिके शोभायमान हैं दोनों गाठें जंघा जिनकी लम्बी हैं दोनों गुल्फ गिनकी लाल हैं नल जिनके प्रकाश करिके सुन्दर हैं कोमल अंगुली और अंगुठे तिनमें सुन्दर हैं चरणकमल जिनको ४९ । ५० बहुत मोलन के जे मणि हैं तिनसों जटित जो किरिट कड़े वाजुवन्द और कमर में करवनी यज्ञोपवीत मोतिन के हार चरणन में नूपुर चरणन में कुण्डला तिनमें प्रकाशमान हैं ५१ कमल और शृङ्ग चक्र गदाकुं धारण किये शृङ्गलता को चिह्न जाकी छाती में प्रकाशमान कौस्तुभमणि की जिनके धुकधुकी वनमाला धारे ५२ सुनन्द नन्द जिनमें मुखिया ऐसे पापद सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार ब्रह्मा महादेव ते आदिलेके देवताओं के स्वाामी यरीचि को आदिलेके जो नव ब्राह्मण प्रह्लाद नारद वसु जिनमें मुख्य ऐसे उत्तमभक्त हैं तेन्यारेन्यारे भावते निर्मल बचननते जिनकी स्तुति एवम् ॥ सुभूत्रसंचारुकर्णमुकपोलारुणाधरम् ४७ प्रलम्बपीवरभुजं तुङ्गासोरःस्थलाश्रियम् ॥ कम्बुकण्ठनिम्ननाभिं वलिमपल्लवोदरम् ४८ बृहत्कटिनट श्रोणिकरभोरुद्रयान्वितम् ॥ चारुजानुयुगंचारु जङ्घायुगलसंयुतम् ४९ तुङ्गगुल्फारुणनखरातदीधितिभिर्धृतम् ॥ नवाङ्गुल्यङ्गुष्ठदलैर्विलसत्पादपङ्कजम् ५० सुमहार्दमणित्रातकिरीटकटाङ्गदैः ॥ कटिसूत्रब्रह्मसूत्रहारनूपुरकुण्डलैः ५१ आजमानंपद्मकरं शङ्खचक्रगदाधरम् ॥ श्रीवत्सवत्तसम्भ्राज रत्नैस्तुभंवनमालिनम् ५२ सुनन्दनन्दप्रमुखैः पापदैःसनकादिभिः ॥ सुरेशैर्वत्सरुद्राद्यैर्नवभिश्चन्द्रिजोत्तमैः ५३ प्रह्लादनारदवसुप्रमुखैर्भागवतोत्तमैः ॥ स्तूयमानंपृथग्भावैर्वचोभिरमलारामभिः ५४ श्रियापुष्ट्यागिराकान्त्या कीर्त्यातुल्यैर्योजर्जया ॥ विद्ययाऽविद्ययाशक्रया माययाचनिषेवितम् ५५ विलोकयसुभृशंभीतोभक्त्यापरमयायुतः ॥ हृष्यत्तनूरोभावपरिक्लित्रात्मलोचनः ५६ गिरागद्गदयाऽस्तौपीत्सत्त्वमालम्ब्यसात्वतः ॥ प्रणम्यमूर्ध्नाऽव हितःकृताञ्जलिपुटःशनैः ५७ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वाद्धिष्कृतप्रतियानेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३६ ॥

अक्रूरउवाच ॥ नतोऽस्म्यहन्त्वाऽविलहेतुहेतुं नारायणंपूरुषमाद्यमव्ययम् ॥ यन्नाभिजातादरविन्दकोशादब्रह्माविरासीद्यातप्लोकः १ भूस्तोयम करे हैं ५३ । ५४ श्री पुष्टि वाणी कान्ति कीर्ति लुष्टि इला ऊर्ज्या विद्या अविद्या शक्ति माया ये जिनकों निरन्तर सेवन करे हैं ५५ ऐसे परिपूर्ण श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करिके अत्यन्त प्रसन्न होयके परमभक्ति जिनकों भई आनन्द ते देह में रोमाञ्च जिनके भये भक्ति मंजजन में आंसू धरि आये ऐसे अक्रूरजी मायेसूं प्रणाम करिके सावधान होयके हाथजोरिके होलेसे सत्त्वगुण को आश्रय लैके गह्वरवाणी सू स्तुति करतभये ५६ । ५७ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादंशमस्कन्धेपूर्वाद्धिष्कृतप्रतियानेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३६ ॥ \* ॥ \* ॥

( चत्वारिंशेततोऽक्रूरः कृष्णमत्वेरवरंवरम् ॥ प्रणम्यभक्त्या तुष्टाव सगुणानुगुणभेदतः १ चालीसवें अध्याय में अक्रूरजी कृष्णजी को ईश्वरों के ईश्वर मानकर सगुण और निर्गुणभेद ते भक्ति मूं प्रणामकर स्तुति करतेभये १ ) अव अक्रूरजी कहें हैं समस्त कारणके कारण नारायण आदिपुरुष अविनाशी जो तुमहौ तिनकूं नमस्कार करूं जिनकी नाभि में भयो जो कमल ताते

ब्रह्मा होत भयो ता ब्रह्माते यह लोक उत्पन्न भयो ? पृथ्वी जल अग्नि पवन आकाश अहङ्कार महत्तत्त्व पुरुष मन इन्द्रिय समस्त इन्द्रियन के अर्थ विषय सम्पूर्ण देवता ये जगत् के कारण हैं ते तुम्हारे अंग ते भये हैं २ ब्रह्मा ते आदिलेके जड़ जो सम्पूर्ण तत्त्व हैं ते अपने स्वरूप को नहीं जाने हैं जीव है सो तत्त्वन को जाने है अपने स्वरूप को जाने है माया के गुणन ते वंशो जीव गुणन ते न्यासो ऐसो जो तुम्हारी स्वरूप है ताहि नहीं जाने है ३ ब्रह्मा के उपासक हैं ते महापुरुष ईश्वर तुम हो तुम्हारी पूजा करैहै इन्द्रिय पञ्चभूत देवता इनके साक्षी अन्तर्यामी जो तुमहो तिन की साधु पूजा करे हैं ४ कोई एक कर्मन में निष्ठा जिनकी ऐसे जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य है ते ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद हैं तिनसों यज्ञन को विस्तार करिके अनेक हैं रूप जिनके ऐसे देवतान को नाम लैलै के पूजनकरे हैं ५ कोई एक ज्ञानी पुरुष समस्तकर्मनको त्यागिके समाधि में आय के ज्ञानरूप जो तुमहो तिनको पूजन करे है ६ और जे पुरुष है ते विष्णुकी दीक्षा लैके तुमहीं हो

गिनः पवनः खमादिर्महान जादिर्मन इन्द्रियाणि ॥ सर्वेन्द्रियार्थाविबुधाश्च सर्वे ये हेतवस्ते जगतोऽङ्गभूताः २ नैते स्वरूपं विदुरात्मनस्ते ह्यजादयोऽनात्मतया गृहीताः ॥ अजोऽनुबद्धः स गुणैरजाया गुणारपरिवेदनते स्वरूपम् ३ त्वां योगिनो यजन्त्यद्वा महापुरुषमीश्वरम् ॥ साध्यात्मं साधिभूतञ्च साधिदैवञ्च मा नो ज्ञानयज्ञेन यजन्ति ज्ञानविग्रहम् ६ अन्ये च संस्कृतात्मानो विधिनाऽभिहितेन ते ॥ यजन्ति त्वन्मयास्त्वं वै बहुमूर्त्यैकमूर्त्तिकम् ७ त्वामेवान्ये शिवोक्तेन मार्गेण शिवरूपिणम् ॥ ब्रह्माचार्यं विभेदेन भगवत्समुपासते ८ सर्वं एव यजन्ति त्वां सर्वदेवमयेश्वरम् ॥ येऽप्यन्यदेवताभक्ता यद्यप्यन्यधियः प्रभो ९ यथाद्रिप्रधानद्यः पर्जन्या पूरिताः प्रभो ॥ विशन्ति सर्वतः सिन्धुं तद्वत्पातयोऽन्ततः १० सत्त्वं रजस्तम इति भवतः प्रकृतेर्गुणाः ॥ तेषु हि प्राकृताः प्रोता आब्रह्मस्थावरादयः ११ तुभ्यं नमस्तेऽस्तु त्वपि पङ्कटदृष्टये सर्वार्त्तमने सर्वधियाश्च साक्षिणे ॥ गुणप्रवाहोऽयमविद्यया क्लृप्तः प्रवर्त्तते देव नृतिर्यगात्मसु १२ अ

एक मुख्य ऐसे वैष्णव हैं ते तुमने कही जो नारदपञ्चरात्र में पूजाकी विधि है तासूं वासुदेव सङ्कर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध इन भेदनकरिके बहुत जिनके रूप नारायण रूप करिके एक जिनको रूप ऐसे तुमहो तिनकी पूजा करैहै ७ और जे पुरुष हैं शिवने कक्षो जो मार्ग हैं तासूं शिवरूप जो तुमहो तिनकी हे भगवन् ! अनेक प्रकारके हैं भेद जाके ऐसो शैवमार्ग पाशुपतमार्ग है ता करिके उपासना करे हैं ८ हे सर्वदेवतारूप ! हे समर्थ ! जे पुरुष और देवतान के भक्त हैं और देवतान में उनके मन लागि रहे हैं वे सबही ईश्वर तुमहो तिनकी पूजाकरे हैं ९ हे प्रभो ! जैसे पर्वतन ते निकसी भेद्य ने जलसूं पूर्णकरी ऐसी नदी चारों ओर ते बरि बरिहिके समुद्र में जा मिली हैं तैसे सब देवतान के मार्ग अन्तमें तुमही में आय मिले हैं ? १० तुम्हारी जो प्रकृति पाया ताके सत्त्व रज तम ये तीनों गुण हैं तिन तीनों गुणनमें दृक्त ते आदिलैके ब्रह्मापत्यन्त सब जीव प्रविष्ट भये हैं अर्थात् तीनों गुणन में रहे हैं वे गुण मायामें रहे हैं या क्रमते जो उपाधि को नाश है ताते सब जीव तुमही में प्रवेश करे हैं ? संसार में नहीं लिस है बुद्धि जिनकी सब के आत्मा सब प्राणीन के बुद्धि के साक्षी तुमहो तिनको नमस्कार है अविद्याको भयो गुण को प्रभाव संसार देवता मनुष्य पशु पक्षी

ये देह जिनकी ऐसे प्राणी हैं तिनमें संसार वर्त है १२ अग्नि तुम्हारी मुख है पृथ्वी तुम्हारी चरण है सूर्य नेत्र आकाश नाभि दिशा कान हैं स्वर्ग मस्तक है देवता तुम्हारी भुजा हैं और समुद्र कोमल हैं पवन प्राणरूप बलरूप कटपना करो १३ वृक्ष ओपधि देह के रोम हैं मेघ तुम्हारे केश हैं पर्वत तुम्हारे हाड़ और नख हैं रात्रि दिन पलकनको खोलिचो मृद्विचो है प्रजापति तुम्हारी मेढ़ है चर्पा तुम्हारी वीर्य कहें हैं १४ तुम जो अविनाशी पुरुष हो तिनमें पोलन सहित लोक हैं ते रचे हैं बहुत जीवन करिके व्याप्त हैं जैसे जलमें छोटे छोटे जीवों में युनगा उड़े हैं ऐसे मनकी वृत्ति ते जानिचे में आवो जो तुमहो तिनमें अनन्त ब्रह्माण्ड फिरें हैं १५ या संसार में खोलिचे के लिये जो जो रूप बरे हैं तिनसों दूर भये हैं शोक जिनके ऐसे लोक हैं ते आनन्दसुं तुम्हारे यशको गावें हैं १६ सत्यव्रत को माया दिखायवे के लिये मत्स्यरूप धरिके प्रलय के समुद्र में विचरे जो तुमहो तिनको नमस्कार है मधुकैटभ दैत्यनको मारिचे के लिये हयग्रीव रूप जिनने धर्यो ऐसे

गिरिमुखन्तेऽवनिरङ्घ्रिरीक्षणं सूर्योनभोनाभिरथोदिशःश्रुतिः ॥ द्यौःकंसुरेन्द्रास्तववाहोऽर्णवाः कुक्षिर्मरुत्प्राणलंप्रकल्पितम् १३ रोमाणि वृक्षौ पथयः शिरोरुहामेघाः परस्यास्थिनखानितेऽद्रयः ॥ निमेषणं रात्र्यहनी प्रजापतिर्मेद्रस्तुष्टिस्तववीर्यमिष्यते १४ त्वय्यव्ययात्मन पुरुषे प्रकल्पिता लोकाः सपालान्वहु जीवसंकुलाः ॥ यथाजले संजिहते जलौकसोऽप्युदुम्बरे वामशकामनो मये १५ यानियानी हरूपाणि क्रीडनार्थं विभर्षिहि ॥ तैरा मृष्टशुचो लोका मुदा गायन्ति ते यशः १६ नमः कारणमत्स्याय प्रलयाब्धिचराय च ॥ हयशीर्ष्णे नमस्तुभ्यं मधुकैटभ मृत्यवे १७ अक्रूपा रायवृहते नमो मन्दरधारिणे ॥ क्षित्युद्धारविहाराय नमः शूकरमूर्तये १८ नमस्तेऽद्भुतसिंहाय साधुलोकभयापह ॥ वामनाय नमस्तुभ्यं क्रान्तत्रिभुवनाय च १९ नमो भृगूणां पतये दत्तत्रयवनिच्छदे ॥ नमस्तेऽधुवधूर्याय रावणा न्तकराय च २० नमस्ते वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय च ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतां पतये नमः २१ नमो बुद्धाय शुद्धाय दैत्यदानवमोहिने ॥ म्लेच्छप्रायश्च हन्त्रे नमस्ते कल्किरूपिणे २२ भगवज्जीवलोकोऽयं मोहितस्तव मायया ॥ अहंभेरयसद्ग्राहो भ्राम्यते कर्मवर्त्मसु २३ अहं

जो तुमहो तिनको नमस्कार है १७ मन्दराचल पर्वत के धारण करने वारे बड़े कच्छपरूप तुमहो तिनको नमस्कार है पृथ्वी के लिये बराहरूप जिनने धर्यो ऐसे जो तुमहो तिनको नमस्कार है १८ साधुन के भयके दूर करने वारे अद्भुत वृत्तिरूप जिनने धर्यो ऐसे जो तुमहो तिन को नमस्कार है वामन होयकै तीनों लोक जिनने नाये ऐसे जो तुमहो तिन नमस्कार है १९ गर्वाली जो क्षत्रियरूप वन है ताके फाटन वारे भृगुवंशीन के पति परशुरामरूप तुम हो तिनको नमस्कार है रावण के मारन वारे रघुवंशीन में श्रेष्ठ रामचन्द्ररूप तुम हो तिनको नमस्कार है २० यादवों के पति वासुदेवरूप तुम हो तिन नमस्कार है सङ्कर्षणरूप तुम हो तिन नमस्कार है अनिरुद्धरूप तुमहो तिन नमस्कार है २१ दैत्य दानवन के मोहन करने वारे शुद्ध बुद्धरूप जो तुम हो तिन नमस्कार है म्लेच्छ क्षत्रिय होय जाय हैं तिन मारोगे ऐसे कलकीरूप तुमहो तिन नमस्कार है २२ हे भगवन्! यह जीव तुम्हारी मायामें भूलि रहो है मैं मेरो

ऐसे देह मोहादिक में और कर्ममार्गन में भ्रमणकरे है २२ हे विभो ! आत्मा कहिये देह पुत्र घर स्त्री धन भय्या वन्धु इत्यादिक जो स्वसकी तुल्य तिनको सत्यमानिके भ्रमोंहूँ २४ अनित्य आत्मा दुःखरूपहै तिनकूँ नित्य आत्मा सुखरूप जानूँहूँ सुख दुःख में है क्रीड़ा जाके अज्ञान जापें भरो ऐसो जो मैं हूँ सो अपने प्यारे जो तुमहो तिनको नहीं जानूँ हूँ २५ जैसे अज्ञानी पुरुष काहूँसों ढँक्यों जलहै ताकों छोटिके सूर्य की किरणन सों बारू चपके तामें जलके लिये जायहै तैसे माया सूँहके तुम हो तिनको त्यागिके देहादिकन में लागि रखो है २६ कृपणहै बुद्धि जाकी अर्थोर्विषयन में लगिरही है बुद्धि जाकी ऐसो मैं कामकर्मन सूँ चलायमान मन है ताके रोकिये में नहीं समर्थ हों जोवर इन्द्रिय मन कूँ इत उत चलायमान करे हूँ २७ जो मैं पराधीन हों सो तुमहारे चरणन की शरण आयो हों तुमहारे चरणन की शरण तुमहारी कृपाते भयो है यह मैं मानूँ हूँ पुरुषको जब संसार छूटनहार होय है तब हे कमलनाभ ! साधुन की सेवा करे है साधुन की सेवा ते तुम में आयके मति लागे है तुमहारी कृपा बिना साधुनकी सेवा भी नहीं बने है तुम में मतिहूँ नहीं लगिसकेहै २८ विज्ञानहै

चातमात्मजागारार्थस्वजनादिषु ॥ भ्रमामिस्वप्रकल्पेषु मूढः सत्यधियाविभो २४ अनित्यानात्मदुःखेषु विपर्ययमतिर्ह्यहम् ॥ छन्दारामस्तमोविष्टो न जानेत्वात्मनः प्रियम् २५ यथाऽबुधो जलं हित्वा प्रतिच्छन्नं तदुद्रवै ॥ अभ्येति मृगतृष्णायै तद्वत्त्वाऽहं पराङ्मुखः २६ नोत्सहेऽहं कृपणधीः कामकर्महतं मनः ॥ रोदुं प्रमाथिभिश्चाक्षौर्द्रियमाणमितस्ततः २७ सोऽहं तवाङ्घ्रियुगलतोऽस्य स तं दुर्गमं तच्चाप्यहं भवदनुग्रहं ईशमन्ये ॥ पुंसो भवेद्यहिं संसराणापवर्गस्त्वय्यञ्जनाभसदुपासनयामतिः स्यात् २८ नमो विज्ञानमात्राय मर्व्वप्रत्ययहेतवे ॥ पुरुषेण प्रधानाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये २९ नमस्तेवासुदेवाय सर्वभूतक्षयाय च ॥ हृषीकेश नमस्तुभ्यं प्रपन्नं पाहि मामं प्रभो ३० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धेषु बार्हस्पत्येऽङ्कस्तुतिर्नाम चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४० ॥ ॐ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ स्तुवतस्तस्य भगवान् दर्शयित्वा जलेव पुः ॥ भूयः समाहरत्कृष्णो नटो नाट्यमिवात्मनः १ सोऽपि चान्तर्हितं वीक्ष्य जलादुन्मज्ज्य

मूर्ति जिनकी समस्त ज्ञानके कारण पुरुष काल माया इनरूप ब्रह्म जो तुमहो और अनन्त जिनकी शक्ति तिनको मैं नमस्कार करूँहूँ २९ हे समर्थ ! हे इन्द्रियनके प्रेरण चारे चिचके अधिष्ठाता ! सब प्राणीन के आश्रय जो तुमहो तिनकूँ मैं नमस्कार करों हूँ और शरण आयो जो मैं हूँ ताकी रक्षा करो ३० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धेषु बार्हस्पत्येऽङ्कस्तुतिर्नाम चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४० ॥ ( एकचत्वारिंशकेऽहं नृजकं भविशुपुरीम् ॥ ततो वरानदात्तुष्टसुदाम्नो वायकस्य च १ सशङ्कमक्रूरमनः प्रवोद्धय स्वधामसन्दर्शनसत्कृपातः ॥ स्वराजधानीमथुरामपश्यदलंकृतानन्तपरोत्सवाङ्ग्याम् २ ) इकतालीसवें अध्याय में कृष्णजी मथुरापुरी में प्रवेशकर धोबी को मारकर सुदामा माली को प्रसन्नहोकर चर देते भये १ और शङ्कासमेत अक्रूरजी के मन को समझाकर अपने धामके दर्शन की अच्छी दयासूँ अलंकृत अपार भारी वत्सवों सों युक्त अपनी राजधानी मथुराजीको देखते भये २ ) अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! स्तुतिकरें जो अमूर्त हैं तिनको भगवान् जलके भीतर रूप दिखायके फेर समेटत भये जैसे नट अपने स्वागको दिखायके समेटे है १ अक्रूरजी श्रीकृष्णचन्द्रको जलमें ते अन्तर्धान भये देखिके उछरि के जल्दी देसी सम्पूर्ण सन्ध्योपासन करिके आ-

रचर्य मानि के रथ में आवत भये २ श्रीकृष्ण अक्रुरजी सँ पूछत भये पृथ्वी में आकाशमें जलमें तुमने आश्चर्य देखो होय ऐसे मोहि देखौ है ३ या संसार में पृथ्वी में आकाश में जलमें आश्चर्य हैं ते सब आश्चर्य विस्वरूप तुम हौ तिन में भरे हैं तुम्हारे दर्शन करो मैंने कहा आश्चर्य नहीं देखो या प्रकार अक्रुरजी कहतभये ४ तां तुम में सब आश्चर्य भरे हैं तिन तुम्हारे दर्शन मैंने कियो है ब्रह्मन् ! पृथ्वीमें आकाश में या जलमें कहा आश्चर्य देखिबो वाक्री रहोहै ५ ऐसे कहि के गान्दिनी के पुत्र अक्रुरजी रथको हौकत भये तीसरे पहर के समय रामकृष्ण कूं मथुरापुरी में लावत भये ६ हे राजन् परीक्षित ! मार्ग में ग्राम के रहनवारे पुरुष तहाँ तहाँ आय के वसुदेव के पुन श्रीकृष्ण बलदेव कौ देखि के मसन होय के या रूप में दृष्टि लगाय के नहीं निकासत भये अर्थात् देखतही ठाढ़े रहि गये ७ तब ताई नन्द गोप सू आदि लेके सब ब्रजवासी आगे आयके मथुराके बागमें कृष्ण बलदेवके आयवे को पैड़ी देखत ठाढ़े होत

सत्वरः ॥ कृत्वाचावश्यकंसर्वं विस्मितोरथमगमत् २ तमपृच्छद्भूपीकेशः किन्तेदृष्टमिवाद्भुतम् ॥ भूमौवियतितोयेवा तथात्वांलक्षयामहे ३ अक्रुरउवा

च ॥ अद्भुतानीहयावन्नि भूमौवियतियाजले ॥ त्वयिविश्वात्मकेतानि किम्पेदृष्टंविपश्यतः ४ यत्राद्भुतानिसर्वानि भूमौवियतियाजले ॥ तंत्वाऽनु

पश्यतोब्रह्मन् किम्पेदृष्टमिहाद्भुतम् ५ इत्युक्त्वाचोदयामास स्यन्दनं गान्दिनीसुतः ॥ मथुरामनयद्रामं कृष्णैवदिनात्यये ६ मार्गेग्रामजनाराजंस्तत्रत

त्रोपसङ्गताः ॥ वसुदेवसुतौवीक्ष्य प्रीतादृष्टिनचाददुः ७ तावद्भ्रजौरुसस्तत्रनन्दगोपादयोऽग्रतः ॥ पुरोपवनमासाद्य प्रतीक्षन्तोऽवतस्थिरे ८ तान्समे

त्याहभगवानक्रूरजगदीश्वरः ॥ नाहंभवद्भयारहितः प्रवेक्ष्यमथुराप्रभो ॥ त्यक्तुन्नाहंसिमानाथ भक्तेनैगकृत्वरसल ११ आगच्छयामगेहान्नः सनाथान्कुर्वधोक्ष

पुरीम् १० अक्रुरउवाच ॥ नाहंभवद्भयारहितः प्रवेक्ष्यमथुराप्रभो ॥ त्यक्तुन्नाहंसिमानाथ भक्तेनैगकृत्वरसल ११ आगच्छयामगेहान्नः सनाथान्कुर्वधोक्ष

ज ॥ सहाग्रजःसगोपालैः सुहृद्भिश्चसुहृत्तमः १२ पुनीहिपादरजसा गृहान्नो गृहमेधिनाम् ॥ यच्छौचेनानुत्पद्यन्ति पितरःसाग्नयःसुराः १३ अवनित्याङ्घ्रि

युगलमासीच्छ्लोक्योन्नलिर्भहान् ॥ ऐश्वर्यमतुलंलेभे गतिं चैकान्तिनांतुया १४ आपस्तेऽङ्गवनेजन्यस्त्रील्लोकान्छुचयोऽपुनन् ॥ शिरसाधत्तयाःशर्वः

मये ८ जगत्के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण तिन ब्रजवासीनके पास आयके नम्र जे अक्रुर हैं तिनको हाथ ते हाथ पकरि मुसिकाव से बोलत भये ९ हे काका ! तुम आगे रथ कूं लिवाय पुरी में जावो अपने घर जावो हम यहाँ तनिक विश्राम लैके पीछे मथुरापुरी कूं देखेंगे या प्रकार श्रीकृष्ण भगवान् कहतभये १० अब अक्रुरजी कहे हैं हे मभो ! तुम बिना अकेलो मथुरापुरीमें न जाऊ गो हे नाथ ! हे भक्तन के ऊपर हित के करनवारे ! तुम्हारे भक्त हूँ नाथ त्यागो भति १ ? तुम आवो हम तुम घरचलें हे अधोक्षज ! हे सुहृदन में उत्तम ! अपने बलदेव भय्यासहित और ग्वालवालन सहित हमारे घर चलिके हमें सनायकरो १२ तुम चरणनकी रज सँ हम गृहस्थन के घरकूं पवित्रकरो तुम्हारे चरणन को धोवन तासू पितृ अग्नि देवता वृत्त होयहैं १३ तुम्हारे चरण युगल धोइके राजा बलि को बड़ी पवित्र यश होतभयो बड़े ऐश्वर्य कौ प्राप्तभयो अनन्यभक्तनको जो गति मिलै है नाथ पावतभयो १४ तुम्हारे चरणारविन्द को धोवन जल गङ्गारूप होयके



त्रिकोकी कं पवित्र करे है जिन जलन कूं शिवजी अपने शिरपै धारण करे हैं जिन जलन के स्पर्शते साठि हजार राजा सगरके पुत्र स्वर्ग कूं गये १५ । १६ अब श्रीकृष्ण भगवान् बोले वड़े भय्या वलदेवजी कों संग लैके में तुम्हारे घर आऊंगो यादवन सों द्रोह करे जो कंसहै ताय मारिके सुहृदनको भिय विस्तार करुंगो १७ या प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण को वचन कबो सुनिके अक्रुजी विमन होयके पुरी में जायके रामकृष्ण कूं लेआयो ऐसे कंस ते कहिके अपने घर कूं जातभये १८ या पीछे तीसरे पहर के समय वलदेव भय्या सहित भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र गोपन कूं सङ्गलैके देखे के लिये मथुरापुरी में जातभये १९ अब मथुरापुरी को कृष्ण ने देखयो ताकों वर्णन करे हैं स्फटिकमणिन के ऊँचे शहरपनाह के और घरन के द्वार वनेहैं तिनमें वड़े वड़े सोने के किंवार चढ़े है और बन्दनवार बंधे हैं ताँके पीतरके अब भरिबै के कोठे वने हैं चारोंओर चौड़ी खाई वनी है लथान दूरिके वाग रमणीय निकट के वाग तिनसों अतिशोभायमान पुरीहै २० सुवर्णके चौर-

स्वर्याताःसगरात्मजाः १५ देवदेवजगन्नाथ पुरायश्रवणकीर्तन ॥ यदूतमोत्तमश्लोक नारायणनमोऽस्तुते १६ श्रीभगवानुवाच ॥ आयास्येभवतो गेहम् हमार्यसमन्वितः ॥ यदुचक्रदुहंतवा वितरिष्येमुहत्प्रियम् १७ श्रीशुकउवाच ॥ एवमुक्तो भगवता सोऽकूरोविमनाइव ॥ पूर्णप्रविष्टःकंसायकर्मविद्यगृहं यो १८ अथापराद्धेभगवान् कृष्णःसङ्कर्षणान्वितः ॥ मथुरां प्रविशद्गोपैर्दिदृशुःपरिवारितः १९ ददर्शतांस्फाटिकतुङ्गगोपुरद्वारांबुहद्धेमकपाटतोरणाम् ॥ ताम्राकोष्ठांपरिखाडुगसदामुद्यानरम्योपवनोपशोभिताम् २० सौवर्णशृङ्गाटकहर्म्यनिष्कूटैः श्रेणीसभाभिर्भवनैरुपस्कृताम् ॥ वैदूर्यवज्रामलनीलविड्ढुर्मैकुङ्गाहरिर्द्विर्वलभीपुत्रेदिपु २१ सुष्टुपुजालामुखान्धकुडिमेष्वविष्टपारावतवर्हिनादिताम् ॥ संसिक्लश्चापणमार्गचत्वरं प्रकीर्णमाल्याङ्कुरलाजतण्डुलाम् २२ आपूर्णकुम्भैर्दधिवचन्दनोक्षितैः प्रसूनदीपावलिभिःसपल्लवैः ॥ सञ्चन्द्राम्भकमुकैःसकेतुभिःस्वलंकृतद्वारगृहांसपट्टिकैः २३ तांसंप्रविष्टौवसुदेवनन्दनौ वृत्तौवयस्यैर्नन्देववर्मना ॥ द्रष्टुं समीयुस्त्वरिताःपुरस्त्रियोहर्म्याणिचैवारुरुर्दुर्नपोत्सुकाः २४ काश्चिद्विष्यन्मधुतवस्त्रभूषणाविस्मृत्यचैकंयुगलेष्व

स्ता और माहुरानके महल और वड़ेवड़े कारीगर मनुष्यन के मकान तिन करिके शोभायमान पुरी है वैदूर्यमणि हीरा निर्मल नीलमणि मूंगा मोती पद्मा इनके काम जिन में भये महलन के खजने हैं २१ जाली भरोखान में बैठे परेया मोर जहाँ बोले हैं तिनको शोर होयरहो है बिरकाउ जिनमें भये ऐसे राजमार्ग चौराहे गली जामें वने हैं तिनमें पुष्पनकी माला अंकुर धानकी स्त्री-लैं चावल ये मंगलद्रव्य फैलि रहै हैं २२ दही चन्दनसुं बिरके फूल जिनपै धरे ऊपर दीवानकी पंक्ति धरी आमकी डार जिनपै धरी ध्वजा जिनमें फहराय दरियाई के कपड़ा जिनकी नारि सों बंधे गुच्छों सहित केरा के हृत्त सुगारी के हृत्त जिनके पास लगे ऐसे जल के भरे कलश द्वारेन के ऊपर धरे ऐसी शोभायमान पुरीहै २३ वरावर के भिन्न कू संगलैके मथुरापुरी के बीच बाजार में होयके निकसे जे वसुदेवके पुत्र श्रीकृष्ण वलदेवहैं तिनके देखिबैकों पुर की स्त्री दौरि दौरिके आवाति भई है राजन् परीक्षित ! देखिने की इच्छा भई जिनकों वे स्त्री महलन पै चढ़तिभई २४ कोई

स्त्री उतावला के बारे ओढ़नीन को पहिर के लहंगान को ओढ़िके हायन के गहने पांवन में पहिरके आवत भई कोई एक स्त्री एक हाय में एक पांव में गहना पहिर के आवतभई कोई एक स्त्री एक कानमें करनफूल पहिरके एक पाव में पाइजेव पहिर के आवत भई और स्त्री एकही आखिमें काजल लगायके आवतभई २५ कोई एक स्त्री भोजन करैहीं ताकूं छोड़िके आवतभई कहूं व्याहोयर हो हो जव कृष्ण बलदेव आये सुने तब देखिवेको दूहो आपको भोजी बराती, आपको भोजे और कोई स्त्री आगनमें तेल लगावैहीं वे विना स्नान करैहीं आवतिभई कोई सोवत में उठिके आवति भई कोई स्त्री अपने बालकन को दूध प्यावैहीं कृष्ण बलदेव आये सुने तब उनको रोवते छोड़िके आवत भई मानों बालक या लिये रोवें हैं तुम तो दर्शनकरिवे को चली हमें क्यों छोड़े जाउहो हमको हूं लेचलो २६ मतवारि हाथीकी तुल्य पराक्रम जिनको ऐसे कमलदललोचन श्रीकृष्णचन्द्र दिवाई लीलापूर्वक हैं सनि चितबनि सू तिन स्त्रीनके मन लुरावतभये लचमीको रमावै

आपराः ॥ कृतैकपत्रश्रवणैकनूपुरानाङ्गाद्वितीयं त्वपराश्रलोचनम् २५ अश्रन्त्यएकास्तदपास्यसोत्सवा अभ्यज्यमाना अकृतोपमज्जनाः ॥ स्वपत्यु उ त्थायनिशम्यनिःस्वनं प्रपाययन्त्योऽभमपोह्यमातरः २६ मनांसितासामरविन्दलोचनः प्रगल्भलीलाहसितावलोकनैः ॥ जहारमत्तद्विरेद्रेन्द्रविक्रमो दृशाददब्धिरमणात्मनोत्सवम् २७ दृष्ट्वा मुहुःश्रुतमनुद्रुतेतसस्तं तत्प्रेक्षणोत्स्मितमुधोक्षणलब्धमानाः ॥ आनन्दमूर्त्तिमुपगुह्यदृष्ट्वात्मलब्धं हृष्यस्व वो जहुरनन्तमरिन्दमाधिम् २८ प्रासादशिलारारूढाः प्रीत्यरुल्लसुत्वाभुजाः ॥ अभ्यवर्पन्सौमनस्यैः प्रमदावलकेशवौ २९ दृष्ट्वक्षनैः सोदपात्रैः स्रगन्धैर भ्युपायनैः ॥ तावानर्च्यः प्रमुदितास्तत्र नन्नाद्विजातयः ३० ऊचुः पौराअहोगोप्यस्तपः किमचरन्महत ॥ याह्येतावनुपश्यन्ति नरलोकमहोत्सवौ ३१ रज कंकञ्चिदायातं रङ्गकारंगदाग्रजः ॥ दृष्ट्वाऽयाचतवासांसि धौतान्यत्युत्तमानि च ३२ देह्यावयोः समुचितान्यङ्गवासांमि चाहंतोः ॥ भविष्यति परं श्रेयो दातु स्तेनात्र संशयः ३३ सयाचितो भगवता परिपूर्णैः न स र्वतः ॥ साक्षेः पुरुषितः प्राह भृत्यो राज्ञः सुदुर्मदः ३४ ईदृशान्येव वासांसि नित्यंगिरिव नेत्राः ॥ परिधत्त

ऐसो अपनो रूप है तासू तिन स्त्रीनकी आखिनको आनन्द देत भये २७ रेरे रेरे बातें सुनिके ता श्रीकृष्णमें लगे हैं चिच जिनके और तिनकी चितवनि मुसिकानिरूपी अमृतको जो सींचिवो है ता सों पायो है सत्कार जिनने रोमाञ्च जिनके होय आये ऐसी स्त्री श्रीकृष्णको देखिके नेत्रद्वारा हृदय में ले जायके आनन्दरूप श्रीकृष्ण को आलिङ्गन करिके हे काम लोभादिकन को दएह देनबारे राजन परींचित ! श्रीकृष्ण के विना मिले तें भई जो कामदेव की पीड़ा है ताको त्यागत भई २८ महलन की शिखर पै चढ़ी प्रसन्नता सों प्रफुल्लित हैं नेत्र जिनके ऐसी स्त्री बलदेव श्रीकृष्ण के ऊपर फूल वर्षावत भई २९ दही अक्षत जलके भरे पात्र माला चन्दन भेंट लैके आस्रण क्षत्रिय वैश्य प्रसन्न होय के कृष्ण बलदेव कुं पूजन करत भये ३० समस्त यथुरावासी आश्चर्य मानि के यह कहत भये गोपीन ने कहा उत्कृष्ट तप कियो है जे गोपी मनुष्यलोक को वड़े उत्सवरूप श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनकुं देखे हैं ३१ वस्त्रन को धोवनबारी और रगनबारी ऐसो एक धोवी मार्ग में सम्मुख आवतो देखिके ताके धुये अतिउत्तम जे वस्त्र हैं तिनकुं श्रीकृष्णचन्द्र भोगत भये ३२ हे धोवी ! पात्र हम हैं तिनके योग्य जे वस्त्र हैं तिन तू दे तो दाता को अभी कल्याण होयगो यामें

सन्देह नहीं है ३३ सप्त ओरते परिपूर्ण भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र धोवी ते वस्त्र माँगे तत्र कंस को दहलुआ बड़ो जाके गर्व वह धोवी क्रोध करिके डाटि के वोलात भयो ३४ नित्य पर्वतन के वन के फिरेनवारे ऐसीही कपड़ा पहिरनवारे हो हे उद्धुतो ! राजा के वस्त्रन पै क्यों मन चलायो हो ३५ हे मूर्ख ! तुम यहाँ ते शीघ्रही निकसि जावो जो अपनो जीवन चाहौ तो ऐसे फेरि मति मँगियो राजा कंस के प्यादे बहुत फिरे हैं जो धूम करे हे ताहि वीरे हैं मारे हैं लुटे हैं तुम तो ये वस्त्र माँगेहो मोहि यह दीखे है कि तुम्हारे ऊ कोई उत्तारि लेइगो ३६ या प्रकार वकै जो धोवी है ताके शिर को देवकी के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र को प करिके अपने हाथ के थाप सँ काटत भये ३७ जब मुख्य धोवी मारो गयो तब वाके दहलुवा धोवी हैं ते वस्त्रनकी पोट पटकि पटकि के चारों ओरको भाजत भये ता सपय श्रीकृष्ण तथा बलदेव जी अपने प्यारे वस्त्र हैं तिनको पहिर के वाकी जे रहे ते गोपनको देत भये और जे रहे ते बहा हो छोड़त भये ३८ ३९ वस्त्र पहिर के चले ताके पीछे प्रसन्न

किमुदुत्ताराजद्रव्याण्यभीप्सथ ३५ याताशुचालिशामैवं प्रार्थयद्विजिजीविषा ॥ वध्नन्तिघ्नन्तिबलुम्पन्ति दुसंराजकुलानिवै ३६ एवंविकृत्यमानस्य कुपितोदेवकीसुतः ॥ रजकस्यक्रात्रेण शिरःकायादपातयत् ३७ तस्यानुजीविनःसर्वे वासःकोशान्विमृज्यवै ॥ दुद्रुवुःसर्वतोमार्गं वासांसिजगृहेऽन्यतः ३८ वसित्यात्मप्रियेवस्त्रे कृष्णःसङ्कर्षणस्तथा ॥ शेषायादत्तगोपेभ्योविमृज्यभुविकानिचित् ३९ ततस्तुवायकःप्रीतस्तयोर्वेपमकल्पयत् ॥ विचित्रवपुश्चैत्रैरैराकल्पैरनु रूपतः ४० नानालक्षणेवेषाभ्यां कृष्णरामौविरजतुः ॥ स्वलंकृतौबालगजौपर्वणीवसितैरौ ४१ तस्यप्रसन्नोभगवान् प्रादात्सारूप्यमात्मनः ॥ श्रियंचपरमालोकैवलैश्वर्यस्मृतीन्द्रियम् ४२ ततःसुदाश्रोभन्नंमालाकारस्यजग्मतुः ॥ तौदृष्ट्वाससमुत्थाय ननामशिरसाभुवि ४३ तयोरासनमानीय पाद्यञ्चाथार्हणादिभिः ॥ पूजांसातुगयोश्चक्रे सक्ताम्बूतानुलेपनैः ४४ प्राहनःसार्थकंजन्म पावितंचकुलंप्रभो ॥ पितृदेवर्षयोगह्यं तुष्टाह्यागमनेनवाम् ४५ भवन्तौकिलविश्वस्य जगतःकारणंपरम् ॥ अवतीर्णविहांशेनक्षेमनायचभवायच ४६ नहिवांविपमादृष्टिः सुहृदोर्जगदात्मनोः ॥

जो दर्जी है सो तिन राम कृष्ण को लाल हरे पीरे रंग के जे वस्त्र है तिनके माला चम्पकली बाजुबन्द अनेक प्रकार के आभूषण बनाय के शोभा करत भयो ४० कृष्ण बलदेव दोनो भय्या नेत प्रकार के दर्जी ने बनाये जे वस्त्रन के आभूषण तिन सों शोभायमान लगे है जैसे पर्व में सामरे गोरे शूद्रारकिये हाथी के छोना सुन्दर लगे हैं ४१ ता दर्जी के ऊपर प्रसन्न भये जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र है सो अपनी वरावर को रूपताय देत भये या लोक में सम्पत्ति देत भये बल ऐश्वर्य स्मरण और हाथ पाँव नाक कान ओंखि जे अच्छे वने रहें इनकी चतुराई देत भये ४२ ताके पाछे सुदपा माली के घर कृष्ण बलदेव जात भये तिन तों देविके धरती में शिर लगाय प्रणाम करत भयो ४३ तिन कृष्ण बलदेव को आसन विश्वाय के बैठवत भयो और पाद्य अर्घ इत्यादिक पूजा की सामग्रीन सँ पूजा करत भयो माला पान की वीरी चन्दन इत्यादिक अर्पण करत भयो ४४ माली कहत भयो हे प्रभो ! तुम्हारे आइसे सँ हमारो जन्म सार्थक भयो कुल पवित्र भयो और हमारे पितर देवता ऋषि सन्नुष्ट भये ४५ तुम निश्चय या ससार के परमकारण हो जगत् के कल्याण के निमित्त और वृद्धि के लिये अंश करिके प्रवतार लिये हो ४६ जगत् के हितकारी आत्मा तु-

महीं हो तुम्हारे विषमदृष्टि नहीं है सब प्राणीन में सम वर्तोंहो भजन करनारनकों भजो हो ४७ तुमभो भृत्यको आज्ञा करो मैं तुम्हारी कथा पूजा करों पुरुषकों जो तुम्हारी दर्शन होइ यह वदो अनुग्रहहै ४८ हे राजन् परीक्षित् । या प्रकार जानिके प्रसन्नहै मन जाको ऐसो सुदामा माली सुन्दर सुगन्धिन के फूलन की वनी जो माला हैं तिनै निवेदन करत भयो ४९ ते माला पहिरके मित्रन सहित सुन्दर लों प्रसन्न भये जे वर के देनवारे राम कृष्ण हैं ते शरण आयो जो सुदामा है ताहुँ वर देत भये ५० सुदामा मालीभी सब के आत्मा श्रीकृष्ण है तिनमें टारी न टरे ऐसी भक्ति गौत भयो भगवान् के भक्तन में स्नेह रहै और जीवमात्र में दया रहै यह वर भोगत भयो ५१ ता माली को यही वर दैके और ताके वंश में सर्वदा रहो आवै ऐसी सम्पत्ति दैते बल आहु यश शोभा दैके बलदेवजी कों संग लैके ताके घरते निकसत भये ५२ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे पूर्वोद्धिपुरप्रवेशो नामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥ \*

समयोः सर्वभूतेषु भजन्तं यजनोरपि ४७ तावाज्ञापयतं भृत्यं किमहं करवाणि वाम् ॥ पुंसोऽत्यनुग्रहोहोप भवद्विधेयं त्रियुज्यते ४८ इत्यभिप्रेत्य राजेन्द्र सुदा माप्रीतमानसः ॥ शस्तैः सुगन्धैः कुसुमैर्मालां विरचितोदौ ४९ ताभिः स्वलंकृतौ प्रीतौ कृष्णरामौ सहानुगौ ॥ गणताग्रपन्नाय ददतुर्वरदो विरान् ५० सोऽपि ब्रूवन् चलां भक्तिं तस्मिन्नेवाखिलात्मनि ॥ तद्भक्तेषु च सौहार्दं भूतेषु च दयां प्रथम् ५१ इति तस्मै वरं दत्त्वा श्रियं चान्वयवर्द्धिनीम् ॥ बलमायुर्यशः कान्तिं निर्जगाम सहाश्रजः ५२ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वोद्धिपुरप्रवेशो नामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥ \*

श्रीशुक उवाच ॥ अथ ब्रज नृराज पथेन माधवः स्त्रियं गृहीताङ्गविलेपभाजनाय ॥ विलोकय कुञ्जं युवती विराननां प्रच्छयान्तीं ग्रहसन्धुसप्रदः १ कात्वंव रोर्वेतुहनुलेपनं कस्याङ्गनेवाऋथगस्वसाधुनः ॥ देह्यावयोरङ्गविलेपमुत्तमं श्रेयस्ततस्तेन चिराद्भविष्यति २ ॥ सैरन्ध्रबुवाच ॥ दास्यस्म्यहं सुन्दरकंस सम्पत्ता त्रिवक्रनामा ह्यनुलेपकर्मणि ॥ मद्भावितां भोजपतेरतिप्रियं विनायुवांकोऽन्यतमस्तदहति ३ रूपेशलमाधुर्यहसितालापवीक्षितैः ॥ धर्पिता

( द्विचत्वारिंशैः कुञ्जोत्तमनं ननुपो भिदा ॥ वधस्तद्विणा कंसारिष्टरद्भोत्सवादिच १ वयालीसर्वे अध्याय में कुवरी को कृष्णजी सीधीकर धनुष् को तोड़कर धनुष् के रत्नकों को मारते भये और कंस को अरिष्ट और रत्नभूमि के उत्सवादिका वर्णन है ? ) श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित् ! माली के घरते निकसे पीछे प्रबुधश में भये मुख के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र सो राजमार्ग जो वाजार है तामें आयके ग्रहण किये हैं चन्दन के पात्र जानि सुन्दरहै मुख जाको ऐसी चली आवै जो तरुण कुवरी स्त्री है ताको देखिके हंसिके पूछत भये ? सुन्दरहै जंघा जाकी ऐसी स्त्री तू कौनकी है चन्दन कौन की है हमारे आगे भलेप्रकार कहे यह उचम चन्दन हगकों देइ तो अभी तेरो कल्याण होयगो २ यह सुनिके कुवरी चोली है सुन्दर ! मैं कंसकी दासीहो कुवरी मेरो नामहै चन्दन घिसियो यह मेरो काम है मेरो विसो चन्दन कंस को अन्धो लगै है अतः तुम विना और चन्दन लगायवें कौ कौन पात्र है ३ सुन्दररूप सुकुमारि और रसिकता हैसनि बोलनि चितवनि सूँ

मोहित है मन जाको ऐसी कुवरी कृष्ण वलदेव कों गहरो चन्दन देत भई ४ केशर जाँमें परी ऐसो चन्दन सामरे अङ्गमें श्रीकृष्ण ने लगायो कस्तूरी जाँमें मिली ऐसो चन्दन गोरे अङ्ग में बलदेवजी ने लगायो नाभिमे ऊपर के अङ्गन में चन्दन लगायके दोनो भय्या बहुत सुन्दर लगत भये ५ श्रीकृष्ण वन्द भगवान् अपने दर्शन को फल दिखायवे के लिये सुन्दर जाको पुन्य तीन स्थान ते देखी जो कुन्दा है ताकूँ सीधी करिवे को मन करत भये ६ कुन्दा के पावन को अपने चरणते दाविके दो अंगुली जाँमें ऊँची करी ऐसे हाथ कों ओढ़ी के नीचे लगायके श्रीकृष्ण कुन्दा के देह को सूयो मरत भये ७ ता समय सूये वरावर हैं अङ्ग जाके वड़े हैं कपूर और सन जाके ऐसी कुन्दा श्रीकृष्ण के स्पर्श करते शीघ्र उत्तम स्त्री होत भई ८ सूयी भई पीछे रूप गुण उदारता ये सब कुन्दा में आयाये तब कामदेव जाके होय आयो वह कुन्दा दुपट्टा को पकरिके श्रीकृष्ण ते बोलत भई ९ हे वीर ! तुम आवो घर कों चलो तुम मो पै छोड़ो नहीं जावो हौं हे पुरुष नम श्रेष्ठ ! तुमने येरो

तमादौसान्द्रमुभयोरनुलेपनम् ४ ततस्तावद्भ्रगोण स्वर्णैतरशोभिना ॥ सम्प्राप्तपरभागेन शुशुभतेऽनुरञ्जितौ ५ प्रसन्नो भगवान् कुन्दां त्रिवक्रां रुचिराननाम् ॥ ऋज्वीकर्तुमनश्चक्रे दर्शयन् दर्शने फलम् ६ पद्भ्यामाक्रम्य प्रपदे द्रव्यं ह्युत्तानपाणिना ॥ भगुह्यचित्तुकेऽध्यात्ममुदनीनमदच्युतः ७ सातदर्जसमानाङ्गी वृहच्छोणिपयोधरा ॥ मुकुन्दस्पर्शनात्सद्यो भवप्रमदोत्तमा ८ ततोरूपगुणौदार्यसम्पन्ना प्राहेकशवम् ॥ उत्तरीयान्तमाकृष्य स्मयन्ती जातहृच्छया ९ एहि वीरगुह्यामो नत्वा त्यक्तमिहोत्सहे ॥ त्वयो न्मथितचित्तायाः प्रसीद पुरुषर्षभ १० एवं स्त्रियाया च्यमानः कृष्णो रामस्य पश्यतः ॥ मुखं वीक्ष्यानुगानां च प्रहसंस्तामुवाच ह ११ एष्यामि ते गृहं सुभ्रुः पुंसामाधिविकर्शनम् ॥ साधितार्थो गृहाणां नः पान्थानां त्वंपरायणम् १२ विमृज्य मां ध्यावायया तां ब्रजन्मार्गो वाणिक्पथैः ॥ नानोपायनताम्बूलसगन्धैः साग्रजोऽर्चितः १३ तद्दर्शनस्मरक्षोभादात्मानं नानाविदचस्त्रियः ॥ विस्रस्तवासः कबरवलयालेख्यमूर्त्तयः १४ ततः पौरान् पृच्छमानो धनुर्धरैर्दुर्भितमच्युतः ॥ तस्मिन् प्रविष्टो ददृशे धनुर्धरैर्दुर्भितमच्युतः १५ पुरुषैर्दुर्भितमच्युतः १६

मन चलायमान कीनो है मेरे ऊपर प्रसन्न होउ १० या प्रकार स्त्री ने कही ता समय श्रीकृष्ण चन्द्र बलदेवजी मुख देखिके भित्रन को मुख देखिके मुसिकाय के कुन्दा ते बोलत भये ११ सुन्दर है भुकुटी जिनकी यामें कहा कबो तुम्हारी भुकुटी हमारे मन कों खेंचे है हमारो उपरना काहे को खेंचे हौं कंस कों मारिके अपने मुहदन को कार्य सिद्ध करिके पुरुषन के मन के दुःख कों दूर करन वारो तुम्हारी घर है तामें आऊँ गो बलबलचारी काहूँ सों जान नहीं पहिचान नहीं हमारे घर नहीं परदेशी हैं तिनकूँ तुमहीं आश्रय हौं तुम्हारे न आवेंगे तो जाईगे कहीं मीठे मीठे वचन कहिके कुन्दा कों छोड़िके चले तब वनियान ने अनेक भेंट पान माला चन्दन लैके बलदेव सहित कृष्णको पूजन कस्यो १२ १३ श्रीकृष्ण के दर्शन करे तें व्याप्यो जो कामदेव ताके जो भते छो आये कूँ नहीं जानत भई बल जिनके ढीले होय गये चोटी खुलिगई कइए विसल आये चित्रसी लिखी ठाढ़ी रहिगई १४ ता पीछे अच्युत श्रीकृष्ण मथुरावासीन ते धनुष् को ठिकानो पूँछत पूँछत गये धनुष् की शाला में इन्द्र के धनुष् की तुल्य अद्भुत धनुष् पुरो देखत भये १५ हजारन पुरुष जाकी रत्नाकरें हैं पूजा होइरही है चढ़ी जाकी शोभा है पुरुषन ने पनेकरो तौ भी श्रीकृष्ण जो रावरी धनुष् को

उठावतु भये ५६ खेलकरत वार्ये हाथ ते उठायके चिह्ना चढ़ाईके पलभर में मनुष्यन के देखत देखत वीचते लैचिके जैसे भतवारो हाथी गाढ़े कुं तोरहारे है तैसे तोरिके हारतभये १७ जा समय धनुष दूगे तब वाको शब्द आकाश में और स्वर्ग में पृथ्वी में दिशान में व्याप्त होतभयो ऐसे शब्दको सुनिके कंस को भय होतभयो १८ धनुष के रत्न जे हैं ते अपने मनुचरनसहित को मारिके हाथन में हाथ लेके श्रीकृष्ण के पकरिवेके लिये छेउ लेउ ऐसे कहत चारोंओर ते घेस्तभये १९ घेर लेने के पीछे श्रीकृष्ण बलदेव दोनों भय्या मारिवे को पकरिवे को आये जे पुरुष हैं तिन देखि के क्रोध करिके धनुषको एक दूर लैके तिन पुरुषन को मारतभये २० कंसने भेजी जो सेनाहै ताकुं मारिके धनुषशालाके बाहर निकसिके मथुरापुरी कम्पित देखिके हर्षित होयके चितवतभये २१ मथुरापुरी के वासी स्त्री पुरुष राम कृष्ण को अद्भुत कर्म देखिके घृष्टता देखिके पराक्रम देखिके देवतान में उत्तम मानतभये २२ ते कृष्ण बलदेव अपनी इच्छापूज्यक विचरे हैं इतने में सूर्य त ॥ वार्यमाणोदभिःकृष्णः प्रसह्यधनुराददे १६ करेणवामेनसलीलमुद्धृतंसज्यञ्जत्वा निमिषेण पश्यताम् ॥ नृणां विरुज्यप्रबभञ्जमभ्यतोयथेक्षुद

खड्गमदकथुरुक्रमः १७ धनुषोभज्यमानस्य शब्दः श्वरोदसीदिशः ॥ पूर्यामासयंश्रुत्वा कंसस्त्रासमुपागमत् १८ तद्वक्षिणः सानुचराः कुपिता आतनायि नः ॥ गृहीतुकामा आवद्गृह्यतां वध्यतामिति १९ अथतान्दुराभिप्रायान् विलोक्य बलकेशवौ ॥ क्रुद्धौ धन्वन आदाय शकलेतांश्च जघनतुः २० बलञ्जकंस प्रहितं हत्वा शालामुखात्ततः ॥ निष्कभ्यचेरतुह्यौ निरीक्ष्य पुरसम्पदः २१ तयोस्तदद्भुतं वीर्यं निशाम्य पुरवासिनः ॥ तेजः प्रागल्भ्यरूपञ्च मे निरेविवु धोत्तमौ २२ तयोर्विचरतोऽस्वैरमादित्योऽस्तमुपेयिवान् ॥ कृष्णरामौ वृत्तौ गोपैः पुराञ्जकटमीयतुः २३ गोप्यो मुकुन्दविगमे विरहातुराया आशासनां शि पृथतामधुपुर्णभूवन् ॥ संपश्यतां पुरुषभूषणगात्रलक्ष्मीं हित्वेतराञ्च भजतश्च क्रमेऽयनं श्रीः २४ अवनिक्ताङ्घ्रियुगलौ मुक्ताक्षीरोपसेचनम् ॥ ऊधतुस्तां सुव्रं त्रिं ज्ञात्वा कंसचिकीर्षितम् २५ कंसस्तु धनुषोभङ्गं रक्षिणां स्वबलस्य च ॥ वधं निशाम्य गोविन्दरामविक्रीडिनं परम् २६ दीर्घप्रजागरोभीतो दुर्निमित्तानिदु र्भूमतिः ॥ बहून् यवयो मयथा मृत्योर्दोऽत्यकराणि च २७ अदर्शनं स्वशिरसः प्रतिरूपे च सत्यपि ॥ असत्यपि द्वितीये च दैर्घ्यं ज्योतिपांतथा २८ छिद्रप्रतीनि

अस्त होतभयो सन्ध्या समय भयो तब कृष्ण बलदेव दोनों भय्या गोपन को सङ्गलैके मथुरापुरी ते निकसे जहां गाढ़ा छूटे हैं तहां आवत भये २३ श्रीकृष्ण कुं व्रज में ते निकसती घेर गोपीन ने विरह में व्याकुल होयके जे जे वार्ते कहीहीं ते सबहीं श्रीकृष्ण के भ्रमकी शोभा देखिके मथुरावासीन कुं साची होत भई लक्ष्मीजी भजे जे ब्रह्मादिक है तिन छोटिके जाही रूप की चाहना करे हैं २४ धोये हैं चरण जिनने ऐसे श्रीकृष्ण बलदेवजी दूधमात को भोजन करिके कंसको विचार जानिके वा रात्रिको सुखते वसत भये २५ कंस धनुष को टूटो सुनिके वाके खवारैन को मरयो सुनिके अपनी सेना को वध सुनो यह कृष्ण बलदेव को केवल खेल है पराक्रम नहीं हो यह सुनिके चिन्ताके मारे रात्रिको निद्रा नहीं आई दरप्यो दुष्ट है बुद्धि जाको ऐसो कंस मृत्युके जतावन वारे जागत में सोवत में बहुतसे खोटे स्वम है तिन देखत भयो २६ ॥ २७ दरप्यण में जल में मुख देखे तो अपनी शिर नहीं दिखाई देई है चन्द्रमा सूर्य दो दो रूप नहीं है परन्तु वाको दो दो दि-



खाई दिये २२ अपनी परछाई में छिद्रदीप्ते अंगुरी देके कान में देवे तो ध्रुव शब्द नहीं सुनो जाय वृत्त सोने के दिखार्हे दिये कीचमें रेत में अपने पावन के खोज न दीखे २६ स्वप्नमें भूत प्रेत छाती से लगाय लगाय के मिले हैं गया है चढ़ो विपकों खात गुड़हर के फूलन की माला पहिरे अकेलो तेलमें भीड़यो नन दत्तिणदिशाओं चलयो जायहै यह स्वप्न देखत भयो ३० और पेटे ऐसे स्वप्न में जागत में खोटे खोटे सगुन देखिके धुलुते डरप्यो जो कंस हैं सो चिन्ता के गारे सोचत न भयो ३१ हे कुरुवंशमें भये राजन् परीक्षित् ! जैसे तैसे करिके यह रात्रि बीती सरेरे भयो जलमें तैं सूख्ये निकलो ता समय कंस मछनकी कुश्ती लड़ावयेको जो बड़ो उत्सवहै ताको करावत भयो ३२ पुरुष रङ्गभूमि की पूजा करत भये तुरही भेरि वजतभई माला पताका वस्त्रनकी वन्दनवार इनते मचान शोभायमान करे ३३ तिन मचानन के ऊपर ब्राह्मण क्षत्रिय जिनमें मुख्य ऐसे पुरवासी देशनासी आय के सुखपूर्वक बैठत भये ३४ कंस अपने प्रधान दीवान कू संगलै के स्वर्णप्रतीनिर्द्वेषु स्वपदानामदर्शनम् २६ स्वप्नेतपरिष्वङ्गः स्वयानंविपादनम् ॥ यायान्नलदमालयेकस्तैलाभ्यक्नोदि गम्भरः ३० अन्यानिचेतयंभूतानि स्वप्नजागरितानि च ॥ पश्यन्मरणसंज्ञस्तो निर्दोलेभेनचिन्तया ३१ व्युष्टायानि शिकौरय सूय चाद्रव्यः समुत्थिते ॥ कारयामासैवैकसोमल्लक्मीडामहोत्सवम् ३२ आनन्द्युः पुरुषाङ्गं तूर्यभेर्गर्शनजघ्निरे ॥ मञ्चाश्चालंकृताः खग्भिः पताकाचैलतोरणैः ३३ तेषुगैराजानपदान्न ह्यक्षत्रपुरोगमाः ॥ यथोपजोषं विविशूराजानश्चक्रुनासनाः ३४ कंसः परिश्रुतोऽमात्यैराजमञ्चउपाविशत् ॥ मण्डलेश्वरमध्यस्थो हृदयेनविदूयता ३५ वाद्यमनेपुनूर्येषु मल्लतालोलोचरेषु च ॥ मल्लाः स्वलंकृतादृताः सोपाध्यायाः समागताः ३६ चाणूरोमुष्टिकः कूटः शलस्तोशलएव च ॥ तआसेदुरुपस्थानं वल्लु वाद्यप्रहर्षिताः ३७ नन्दगोपादयोगोपाभोजराजसमाहुताः ॥ निवेदिनोपायनास्तएकस्मिन्मञ्चाविशन् ३८ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वाद्धिमल्लगङ्गोपवर्णनं नामद्वित्रित्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथकुण्णश्रमश्च कृत्तशौचौपरन्तप ॥ मल्लद्वन्द्वभिर्निर्घोषं श्रुत्याद्रष्टुमुपेतुः १ रङ्गद्वारं समासाद्य तस्मिन्नागमवस्थितम् ॥ अपश्य खण्डमण्डलन के जे राजा हैं तिन के बीच में एक राजमचान है ताके ऊपर बैठत भयो भय के गारे हृदय जाको कम्पित है ३५ नगाड़े वजे हैं मल्ल चट चट खम्भ ठोके हैं जोधियान कू पहिर के सिन्दूर को बिन्दा लगाय के धूरि मलि के छोटी २ जिनके छुटिया उड़ी जिन के गर्न ऐसे उस्तादन को संगलै के आवत भये ३६ अब मल्लन के नाम लेई है चाणूर मुष्टिक कूट शल तोशल ये आखाड़े में आवत भये मनोहर राजेन कू सुनि के धूप चिनके भयो है ३७ कंसके बुलाये नन्दगोप सों आदिलै के और गोप है ते कंस को भेट देके एक मंचान पै बैठत भये ३८ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपियाद्याशमस्कन्धेपूर्वाद्धिमल्लगङ्गोपवर्णनं नामद्वित्रित्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

( त्रित्रित्वारिंशकेहत्वागजेन्द्रारामकुण्णयोः ॥ राजप्रवेशमौभाग्यंचाणूरेणचभाषणम् १ तैतालीसवें अध्यायमें वलदेव और कुण्णजी कुवलयापीड़ हाथी को मारकर रङ्गभूमि में प्रवेश करते भये

और वहां पर चारु संचालाप भयो है (१) अब श्रीकृष्णदेव जी कहे हैं शत्रुन के तपावनवार राजा परीक्षित ! धीधी काँ मारिके हमने अपनो ऐश्वर्य जतयो तथापि हमारे माता पिता को नहीं छोड़े है और हम कूँ माख्यो चाहे है याते या मामा के मारिवेमें हमें कुछ दोष नहीं है या प्रकार दोष के दूर करिवे को विचार जिनने विचारो ऐसे कृष्ण बलदेव दोनों भय्या जहाँ बल स्वप्न दोके हैं नगाड़े बजे हैं तिनको शब्द सुनि के देखिवे कौं जात भये ? श्रीकृष्णचन्द्र रङ्गभूमिके दरवाजे पै जाय के देखें तो कुवलयपीड हाथी ठाढ़ो है कैसो हाथी है महा-वतने अपने ऊपर हिलायो है २ शूरेके वंश में भये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र फेंद घोषि के मुख पै छुटिरहोँ जे कुटिल अलङ्कार हैं तिनकाँ सम्हारि के गलेकी लम्बी माला काँ जनेऊ की तुल्य कंधान पै पहिर के मेघ की तुल्य गर्ज के बोलत भये ३ अरे महावत ! हमकाँ मार्ग दे शीघ्र हाथी कू हटाय ले नहीं हटावेगो तो हाथीसाहेत तोकाँ यमलोककाँ पठाऊँगो ४ या प्रकार डाटि के जब कही ता

तकुवलयपीडं कृष्णोऽम्बष्ठप्रचोदितम् २ वद्धापरिकरं शौरिः समुहकुटिलालकान् ॥ उवाच हस्तिपंवाचा मेघनादगभीरया ३ अम्बष्ठाम्बष्ठमार्गानौ देहाप क्रममाचिरम् ॥ नोचेत्सकुञ्जं त्वाद्यनयामियमसादनम् ४ एवं निर्भर्त्सितोऽम्बष्ठः कुपितः क्रोपितं गजम् ॥ चोदयामास कृष्णाय कालान्तकयमोपमम् ५ करीन्द्रस्तमभिद्रुत्य करेण तरसाऽग्रहीत् ॥ कराद्विगलितः सोऽमुं निहत्याडिष्वलीयत ६ संक्रुद्धस्तमचक्षाणो घ्राणदृष्टिः संकेशवम् ॥ परामुशत्पुष्करेण स प्रसह्यविनिर्गतः ७ पुच्छे प्रगृह्यातिवलं धनुषः पञ्चविंशतिम् ॥ विचकर्षयथानागं सुपर्णइवलीलया ८ सपर्यावर्त्तमानेन सव्यदक्षिणतोऽव्युतः ॥ वभ्राम भ्राम्यमाणेन गोवर्त्सेनेव बालकः ९ ततोऽभिमुखमभ्येत्य पाणिना हृत्यारणम् ॥ प्राद्वनपातयामास स्पृश्यमानः पदे पदे १० सधावनक्रीडया भूमौ पतित्वा सहस्रोत्थितः ॥ तं मत्वा पतितं क्रुद्धो दन्ताभ्यां सोहनतक्षितिम् ११ स्वविक्रमे प्रतिहतो कुञ्जोन्द्रेऽत्यमर्षितः ॥ चोद्यमानो महामात्रैः कृष्णमभ्यद्रवदुपा १२ त मापतन्तमासाद्य भगवान्मधुमुदनः ॥ निगृह्य पाणिना हस्तं पातयामास भूतले १३ पतितस्य पदाक्रम्य मुगेन्द्रइवलीलया ॥ दन्तमुत्पाद्य तेनेभं हस्तिपां

समय महावत कुपित होय के कालमृत्यु यम इनकी तुल्य है क्रोध जाके ऐभ हाथी को श्रीकृष्णचन्द्रके ऊपर हूलत भयो ५ हाथी श्रीकृष्ण के पास जाय के जल्दी देसी अपनी सूड में पकरत भयो श्रीकृष्ण हाथी की सूड में ते खिसिल के वाके मूड में मुक्ता मारिके पाँवन में छिप जात भये ६ श्रीकृष्ण को देखिके क्रोध जाके होय आयो सूँवासाँधी की है दृष्टि जाके ऐसे हाथी ने जब सूँड़ पकरिवे को चलाई ता समय पूँछ पकरि पिछिले पाँवन में निकसि गये ७ वड़े बली हाथी की पूँछ पकरि के जैसे गरुड सर्प को घसीटै है या प्रकार पक्षी सधनुषार्थ्यन्त लीला करिके घसीटत भये ८ पूँछ को पकरे जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनकाँ पकरिवे काँ दाहिनी ओर हाथी आवै है तब बाई ओर हाथी आवै है तब दाहिनी ओर भ्रमावे है जैसे गौ के बकरा के सङ्ग बालक फिरै है ऐसे फिरै है ९ ता पीछे हाथी के सामँह आय के थाप मारिके दौरि के पटकत भये पैरमें हाथी स्पर्श करे है १० श्रीकृष्ण तनिक दौरि के खेलिवे के लिये धरती में गिरिके शीघ्रता सूँ ठाढ़े होय गये तन श्रीकृष्ण कूँ गिख्यो मानि के बर हाथी दाँतन मूँ पृथ्वी को खोदत भयो ? ? अपनो बल जब पटि गयो तब हाथी के नडो क्रोध भयो महावत ने जब अंकुश मारिके हूल्यो तब क्रोध करिके

श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर दौरेत भयो १२ मधु दैत्य के मारनवारे भगवान् श्रीकृष्ण के सम्मुख चलो जो हाथी ताकी हाथ से संड़ पकरिके पृथ्वी में पटकत भये १३ सिंह की तुल्य गर्जो जो हाथी है ताप पौव के नीचे दावि के लीला करिके चाके दाँत लखारि के दाँत सों महावत कुं श्रीकृष्णचन्द्र मारतभये १४ जब हाथी मरि गयो तब वाकों छोड़ि के हाथ में हाथी के दाँत लैके काँधे पै धरि के जात भये रुधिर और मधु की बूंद जिनके लागि रही है और पसीनानकी बूंद जिनके मुखकमल पै आइ रही है या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र सुन्दर लगतभये कितनेक गोपजिनके सन्न हाथी के दाँतही सुन्दर शस्त्र जिनके ऐसे कृष्ण बलदेव दोनों भय्या हे राजन् परीक्षित् ! रत्नभूमि में जात भये १५ । १६ ता समय मल्लनको वज्रतुल्य दृष्टिआये मनुष्यनको अतिसुन्दर जानिपरे और स्त्रीनको साक्षात् कामदेव स्वरूप धरिके चले आवे हैं ऐसे जानिपरे गोपों को भाईबन्धु जानिपरे दुष्ट राजानको मृत्यु देनवारे हैं ऐसे जानिपरे अपने पिता माता वसुदेव देवकी हैं तिनहुं हमारे पुत्र चले आवे हैं या विधि जानिपरे भोजपति जो कंसहैं ताकों यह जानिपरे कि मेरी मृत्यु चलीआवे है अज्ञानीनको भयङ्कर रूप दृष्टिपरे और ज्ञानीन को परमतत्त्वरूप दृष्टिपरे यादवन को परमदेवतारूप जानि रचाहनद्धरिः १४ सुनकंदिपमुत्तृज्य दन्तपाणिः समाविशत् ॥ असन्यस्तविपाणोऽमृद्ध्यदविन्दुभिरङ्कितः ॥ विरूढस्वेदकणिक् कावदनाम्बुरुहोवभौ १५ वृत्तौ गोपैः कतिपयैर्बलदेवजनार्दनौ ॥ रङ्गं विविशतूराजं गजदन्तवरायुवौ १६ मल्लानामशानिर्णानं रवरः स्त्रीणां रमरो मूर्त्तिमान् गोपानां स्वजनोऽसतांक्षितिशु जांशास्तास्वपित्रोः शिशुः ॥ मृत्युर्भोजपतेर्विराडविदुपांतत्वं परं योगिनां वृष्णीनां परदेवतेति विदितो रङ्गतः साग्रजः १७ हतं कुलयापीडं दृष्ट्वा तावपि दुर्जयौ ॥ कंसो मनस्व्यपितदाभृशमुद्धिविजेनृप १८ तौ रजतूरुङ्गतौ महाभुजौ विचित्रवेषाभरणसम्पन्नौ ॥ यथानटावुत्तमवेषधारिणौ मनःक्षिपन्तौ प्रभयानिरीक्षताम् १९ निरीक्षतावुत्तमपूरुषौ जनमद्यस्थितानागराष्ट्रकानृप ॥ प्रहर्षे गौर्त्तिकलिते क्षणाननाः पुनर्नृत्तमानयैर्नैस्तदाननम् २० पिवन्त इव चक्षुभ्यर्णालिहन्त इव जिह्वया ॥ जिघ्रन्त इव नासाभ्यां शिल्पयन्त इव बाहुभिः २१ ऊतुः परस्परं तैर्वै यथा दृष्टं यथा श्रुतम् ॥ तद्वपुण्माधुर्यं प्रागल्भ्यस्मारिता इव २२ एतौ भगवतः

परे जैसी जाकी भावना ताको तैसीही जानिपरे या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी को सङ्गलैके रत्नभूमि में जातभये १७ हे राजन् परीक्षित् ! कुलयापीड हाथी कुं परस्यो देखिके जीतवे में न आवें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी कुं देखिके धैर्ययुक्तहू कंस हे परन्तु हरपत भयो १८ वड़ी जिनकी भुजा विचित्र जिनके वेष आशूपण माला वस्त्रकं धारणकरे ऐसे कृष्ण बलदेव रत्नभूमि में जायके सुन्दर लगत भये उत्तम रूपको धारण करनवारे नट जैसे सुन्दर लगे हैं या प्रकार अपनी कान्ति कर देखनवारे पुरुषन के मन कुं चुरावे हैं १९ हे राजन् परीक्षित् ! पंचानन के ऊपर बैठे जे पुरवासी देशवासी जन हैं ते पुरुषन में अष्ट जो श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनको देखिके आनन्द के वेग ते दहदहे नेत्र मुख जिनके होयगये ऐसे नेत्रन रुरिके मुखकी शोभा देखिके तुम न होत भये २० नेत्र ऐसे चलवें हैं मानों रूपकों पीजार्थे जे जिह्वा ऐसी चलावें मानों दूधि लेईगे भुजा ऐसी चलावें हैं मानों छिपिटजार्थे जैसी श्रीकृष्ण को रूप कानन ते सुनो हो तैसीही आंखिन ते देखिके उनके रूप गुण माधुर्य दिवाई सँ दुद्धि जिनकुं होयआई ऐसे पुरुष आपुस में कहत भये २१ । २२ ये जो श्रीकृष्ण बलदेव हैं ते

साक्षात् भगवान् हरि नारायण है अंशकारिके या संसार में वसुदेवके घर अवतरे हैं २३ यह जो सांवरो वालक है ताने देवकी के जन्म लियो है अत्रताई खिण्यो रत्नो पिताने गोकुल में पहुँचाय दियो हो नन्दराय के घर में छुड़िऊँ प्राप्तभयो २४ या कृष्ण ने पूतना मारी दूरे के स्वरूपकों धरिके आयो जो तुणावतै दैत्य ताकूँ मारतभये और यमलाजुन छत्त उत्तारि के डारि दिये शंखचूड़ गार्यो केरीदानच मारयो धेनुकासुर मारो अघासुर आदिले के और सब दानव मारे २५ या कृष्णने गौ और ग्वाल वनों में दब लगी ताते छुड़ाये काली सर्पकों दण्ड दियो इन्द्रको मर्द दूर कियो २६ सात दिन पर्यन्त यह कृष्ण गोवर्द्धन पर्वतकूँ हाथ में लिये रत्नो वर्षा पवन वज्रपात ते गोकुलकी रक्षाकरी २७ गोपी हैं ते या कृष्ण कों नित्य प्रसन्न हैं सनि चित्तवनि जामें अम जामें नहीं ऐसे मुखकों देखिकै अनेक तापनकूँ दूरि करतयई २८ या कृष्णते यह यदु को वंश बहुत विख्यात होयके सम्पत्ति यश बढ़ाई कूँ पावेगो और या कृष्ण ते रत्ता होयगी या प्रकार

साक्षाद्धरेनारायणस्य हि ॥ अवतीर्णा विहांशेन वसुदेवस्य वेश्मनि २३ एषैकिलदेवक्यां जातो नीतरच गोकुलम् ॥ कालमेतं वसन् गृहो बध्वेन नन्दे वेश्मनि २४ पूतनाऽनेन नीताऽन्तं च कृत्वा तश्च दानवः ॥ अर्जुनो गुह्यकः केशी धेनुकोऽन्ये च तद्विधाः २५ गावः सपाला एतेन दावाग्नेः परिभोचिताः ॥ कालियोदमितः सर्प इन्द्रश्च विमदः कृतः २६ सप्ताहमेकहस्तेन धृतोऽक्षि प्रवरो मुना ॥ वर्षा ताशानि भ्यश्च परित्रातश्च गोकुलम् २७ गोप्योऽस्य नित्यमुदितहसिते प्रेक्षां मुखम् ॥ पश्यन्त्यो विविधां स्नापां स्तरन्ति स्माश्रमं मुदा २८ वदन्येन वंशोऽयं यदोः सुबहु विश्रुतः ॥ श्रियं यशो महत्त्वञ्च लप्स्यते परिरक्षितः २९ सिते प्रेक्षां मुखम् ॥ पश्यन्त्यो विविधां स्नापां स्तरन्ति स्माश्रमं मुदा २८ वदन्येन वंशोऽयं यदोः सुबहु विश्रुतः ॥ तूर्येणु निनदत्सु च ॥ कृष्णरामौ समाभाष्य अयं चास्याग्रजः श्रीमान् रामः कमललोचनः ॥ प्रलम्बो निहतो येन वत्सकोपे वकादयः ३० जनेष्वेवं ब्रूवाणेषु तूर्येणु निनदत्सु च ॥ प्रियं राज्ञः प्रकुर्वन्त्यः श्रेयो विन्दन्ति वै प्रजाः ॥ चाणूतो वाक्यमब्रवीत् ३१ हे नन्दसू नो हे राम भवन्तौ वीरसम्मतौ ॥ निरुद्धकुशलौ श्रुत्वा राज्ञा हतौ दिदृक्षुणा ३२ प्रियं राज्ञः प्रकुर्वन्त्यः श्रेयो विन्दन्ति वै प्रजाः ॥ मनसा कर्मणा वाचा विपरीतमतोऽन्यथा ३३ नित्यं प्रमुदिता गोपा वत्सपाला यथा स्फुटम् ॥ वनेषु मल्लयुद्धेन कीदृन्तश्चारयन्ति गाः ३४ तस्माद्वाङ्मयं प्रियं भूय वयञ्च करवागहे ॥ भूतानि नः प्रसीदन्ति सर्वभूतमयो नृपः ३५ तन्निशम्या व्रीत्कृष्णो देशकालोचितं वचः ॥ निरुद्धमात्मनोऽभीष्टं मन्यमानोऽभिनन्द्य च ३६ कहत भये २९ कमल से जाके नेन ऐसो सुन्दर या कृष्ण को बड़ी भय्या यह राम ताने मल्लमासुर वत्सासुर वत्सासुर आदिक मारे क्यों जी मारे तौ कृष्ण ने बलदेव को नाम क्यों लेय है तहाँ कहे हैं देली सुनी बातन में भेद होइ जाय है ३० सय मनुष्य या प्रकार कहत हैं तौलौ नगाड़े वाजे इतने में चाणूर कृष्ण बलदेव कों सम्मोधन दैके बोलत भयो ३१ हे नन्द के पुत्र ! हे राम ! बल तुम में अधिक है कुरती अच्छी कर जानो हो यह अत्रण करिके कंसराय से देखिवे के लिये बुलाये गये हो ३२ प्रजा मन करिके कर्म करिके वचन करिके राजाको प्रिय करे तौ कल्याण पावे हैं और जे विपरीत करे हैं वे नहीं पावे हैं ३३ प्रतिदिन बखरानके चरावनवारे गोप प्रसन्न होयके वनमें कुरती को खेल करिके गौ चरावे हैं यह बात प्रकट है ३४ ता कारण हम तुम राजा कंसको प्रिय करे राजा प्रसन्न होयगो तौ सब प्राणी हमारे ऊपर प्रसन्न होयगे ३५ चाणूर को वचन सुनिके श्रीकृष्णचन्द्र कुरती करिचो आपको योग्य मानिके बड़ाई करिके देश

समयके उचित वाक्य बोलतभये ३६ या कंसकी तुम प्रजाहो हमवनकी रहनवारी प्रजाहैं राजा कंसको प्रिय नित्य करें याहीमें हमारो भलो है ३७ देखो हम बालकहैं अपनी बराबरके बालकन के सङ्ग कुस्ती लड़ेगे जैसे उचितहोइ तैसी कुस्ती करो मल्लनकी सभामें अधर्म न होय ३८ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र को वचन सुनिके चाणूर बोलो तुम बालक नहीं हो और बलीनमें बलवान् बलदेव बालक नहीं है किशोर नहीं हो हज़ार हाथीको जामें बल ऐसो कुवनयापीड़ हाथी खेलमें ही मारिलियो ३९ ताते हमारे संग कुस्ती तुम करो यह अनीति नहीं है हे वृष्णिपंश में भये कृष्ण ! मेरी तुम्हारी कुस्ती होय बलदेव के संग मुष्टिककी होय ४० ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे पूर्वोद्धे कुवलयापीडवधोनाम त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥ \* ॥  
( चतुरचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥ कंसयोषितसयाश्वासस्ताभ्यापित्रोश्च दर्शनम् १ चवालीसवें अध्याय में मल्ल और कंसदिकों को कृष्ण बलदेवजी ने नाशकर कंसकी स्त्रियों को

प्रजाभोजपतेस्सय वयञ्चापिवनेचराः ॥ करवामाप्रियं नित्यं तन्नः परमनुग्रहः ३७ बालावयंतु ह्यवलैः क्रीडिष्यामो यथोचितम् ॥ भवेन्निशुद्धमाऽधर्मः स्पृशन्मल्लसभासदः ३८ ॥ चाणूरउवाच ॥ नवालोनकिशोरस्त्वं बलश्च वलिनान्नरः ॥ लीलये भोहनो येन सहस्रद्विपसत्त्वभृत् ३९ तस्माद्भवद्भयां वलिभिर्योद्धव्यं नानयोऽत्र वै ॥ मयि विक्रमवर्णैर्यवलेन सह मुष्टिकः ४० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वोद्धे कुवलयापीडवधोनाम त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एवं चर्चितसङ्कल्पो भगवान्मधुसूदनः ॥ आससादाथचाणूरं मुष्टिकं रोहिणीसुतः १ हस्ताभ्यांहस्तयोर्वद्धा पद्भ्यामेव च पादयोः ॥ विचक्रपंतुरन्योन्यं प्रसह्य विजिगीषया २ अरलीद्वे अरलिभ्यां जानुभ्यांचैव जानुनी ॥ शिरःशीर्ष्णो रसो रस्तावन्योऽन्यमभिजन्नतुः ३ परिभ्रामणविक्षेपपरिभ्रामवपातनैः ॥ उत्सर्पणापसर्पणैश्चान्योऽन्यं प्रत्यरुन्वताम् ४ उत्थापनैरुन्नयनैश्चालनैः स्थापनैरपि ॥ परस्परं जिगीषन्तावपचक्रतुरात्मनः ५ तद्वत्तावलवद्युद्धं समेताः सर्वयोपितः ॥ ऊचुः परस्परं राजन्सानुकम्पावरुत्थशः ६ महानयं वताधर्मपराजसभासदाम् ॥ ये बलावलवद्युद्धं राज्ञोऽन्विच्छन्ति पश्यतः ७

समभायो और वसुदेव देवकी के दर्शन कियो है १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजनपरीचित्र ! या प्रकार निरचय कियो है सङ्कल्प जिनने नीलाम्बर पीताम्बर की कच्छैं बाँधि स्वम्भ ठोंकि के ठाढ़े होय गये ऐसे मधुदैत्य के मारनवारे भगवान् श्रीकृष्ण चाणूर से जुटतभये २ शयन सू हाथ पावन सू पांव मिलायके आपुस में जीतिवे की इच्छा करिके परस्पर चलात्कारते खेलतभये २ अरलीन सों अरली मिलाय के छाती सों छाती मिलाय के कृष्ण चाणूर दोनों आपुस में कुस्ती करतभये ३ अब जैसे जैसे परस्पर दाव पेंच करे हैं परिभ्रमण अर्थात् फिरावनो विक्षेप अर्थात् धक्का देनो परिरम्भ अर्थात् हाथते विदारनो अवपातन अर्थात् नीचो पटक देनो उत्सर्पण अर्थात् छोड़िके पीछे से आगे आइ जानो अपसर्पण अर्थात् पीछे जायके ठाढ़े होनो इन दावन करिके लड़तभये ४ उत्थापन अर्थात् पाव और घोंटू मिलिके गिरे हे तिनकों उत्तार देनो चालन अर्थात् बंधे दांवकों दूर करदेनो स्थापन अर्थात् हाथ पाव पकारिके मिलाय देनो या प्रकार परस्पर देखको पीड़ा देतभये ५ स्त्रीनके समूह एकठौरी होयके बैठी हैं ते कहे हैं देखो यह कृष्ण

तो निर्वल है और चाणूर सबल है यह विचार के दया जिन लों आइ गई ऐसी स्त्री आपुस में बोलत भई ६ ये राजसभा के बैठन वोन कंचू चढ़ो अधर्म होय गो राजा के डेपते निर्वल सयल की कुशती कराय है ७ देखो वज्रसे कटोर जिनके सब अश्व पर्वतसे उंचे उंचे पल्ल कहा और श्रीकृष्णको स्वल्प अति सुकुमार जिनके अश्व और यौवन अतथा जिनकी भई नहीं किशोर अवस्था जिनकी ऐसे बालक कदा ८ या सभा में निश्चय धर्म नाश होइ है जहा अधर्म होय ता सभा में कवहुं न बैठे ९ और स्त्री कहे हैं विवेकी पुरुष कौ ऐसी सभा में जानो योग्य नहीं है सभा के बैठन वारेन के दोषन कूं स्पर्ण करिके बाल कौ जानिके चुप बैठयो रहै तो दोष पागी होय काहु की भूठी सांची कहे तो दोष लगे अथवा हम काहु की बुरी जानें न भली जानें ऐसे कानन पै हाय धरे तो दोष भागी होय या कारण सभा में जाय नहीं १० शत्रु के चारों ओर दौरा धूरी करे जो कृष्ण है ताके मुख की शोभा देखो तो कुशती में जोर करे है याते मुख के ऊपर पर्सनान की बूंद आय रही है जैसे कमल कोश के ऊपर ओस की बूंद परे तैसे ११ और स्त्री कहे है अरुण जामे नेत्र ऐसे बल देव की शोभा कूं देखो मुष्टिके ऊपर क्रोध जिनको आइ रखो हासी सहित जो क्रो ५ आवै

कवज्रसारसर्वाङ्गौ मल्लौ शैलेन्द्रसन्निभौ ॥ कचातिसुकुमारगङ्गौ किशोरौ नारायणौ ८ धर्मव्यतिकगो ह्यस्य समाजस्य ध्रुवं भवेत् ॥ यत्राधर्मः समुत्तिष्ठेन्नस्थे यंत्रकहिंचित् ९ न सभां प्रविशेत् प्राज्ञस्सभ्यदोषाननुस्मरन् ॥ अत्रान्विब्रजन्नो नरः किल्बिषमभुते १० वलगतः शत्रुगमिभतः कृष्णस्य वदनाम्बुजम् ॥ बीक्ष्यतांश्रमवार्युतं पद्मकोशमिवाम्बुभिः ११ किं न पश्यतरामस्य मुखमाताम्रलोचनम् ॥ मुष्टिकं प्रति सारमर्पहासं संभशोभितम् १२ पुण्यावतत्रभुनोय दयं नृलिङ्गगुदः पुराणपुरुषो वनचित्रमाल्यः ॥ गाः पालयन्महबलः कृष्णयंश्रवेणुं विक्रीडयाञ्चति गिरित्रमार्द्धिताङ्गिः १३ गोप्यस्तपः किमचरन् यदमुष्य रूपं लावश्यसारसमसोर्ध्वमनन्यसिद्धम् ॥ दृग्भिः पिवन्त्यनुसवाभिनवंदुरापमेकान्तधामयशसः श्रिय ऐश्वरस्य १४ यादो हनेऽवहनने गथनोपलेपेच्छेच्छु नार्भरुदितोक्षणमार्जनादौ ॥ गायन्ति त्वैनमनुस्मरन्नाधियोऽश्रुः कण्ठो धन्याव्रजस्त्रिय उरुक्रमचित्रानाः १५ प्रातर्ब्रजद्रुजत आविशतश्च सायं गोभिः समं

तासूं सुन्दर लगे हैं १२ और गोपी कहे हैं वे व्रजभूमि वही पविन हैं जिनके वनके चित्रविचित्र फूलन कूं उरसे पुराणपुरुष श्रीकृष्ण बल देव सहित मनुष्य रूपमें छिपि के गौवन कूं चरावत समय वासुरी कूं वजावत और अस्त्रा लक्ष्मी जाके चरण की पूजा करैं वह प्यारो खेलत दोले हैं १३ और स्त्री कहे हैं देखो गोपी कहा तप करत भई जा कारण गिनतें श्रेष्ठ और कोई सुन्दर नहीं और जिनकी वरावर कोई नहीं जाते अधिक नहीं देखो आभूषण वस्त्र बिनाही सुन्दर लगे हैं यश लक्ष्मी ऐश्वर्य इनको एकान्तस्थान अर्थात् सर्वदा वास करैं ऐसी जो प्यारको स्वरूप ताकूं दृष्टि करिके देखे हैं जे गोपी गाय दुहावती वर धान्य बरती वर दधि फिरावती वर उपलेप की वर बालकन कूं भुलावत समय बालक जब रोवें तब उनको राखती वर धरनमें बुहारी देनो यासूं आदिले के जो काम हैं तिन कूं करती वर श्रीकृष्णमें आसक्त होय कृष्ण गुण गावे हैं तासमय भेमानन्द सूं आम् जिनके नेत्रनमें आयजयें हैं कृष्णमें जो चित्त लगे हैं तासूं सब विषय जिन कूं आय के प्राप्त होय हैं सखियो व्रजकी स्त्री धन्य हैं १४ १५ प्रातःकाल जब व्रज ते गो चरायवे कौ जाइ हैं सन्ध्या समय गौवन कूं लैके वासुरी वजावत जन आवै हैं ता समय गोपी या कृष्ण की वासुरी सुनिके शीघ्र अपने घर सूं



निकसि कै मार्ग में आईकै बहुत हैं पुण्य जिनके ऐसी सुन्दर मुसिकानि दयापूर्वक जामें चितवनि ऐसे मुखको दर्शन करे हैं वे गोपी बड़भागिनी हैं १६ हे भरतवंशीनमें श्रेष्ठ राजा परीक्षित! या प्रकार स्त्री आपुसमें कहे हैं ता समय योग के ईश्वर सबके दुःख के दूर करनवारे भगवान् शत्रु कूं मारिबे कूं गन करतभये १७ भयसमेत स्त्रीनकी बात सुनि के पुत्रन में स्नेहसूं जो शोक है तासूं व्याकुल पुत्रनके वलकूं जाने नहीं ऐसे माता पिता देवकी वसुदेव दुःखित होतभये और नन्द वसुदेव दोनों पक्षितातभये हाय! हाय! क्यों भैं अक्रूर के कहे तैं इन दोनों कों मयुरापुरी में लायो घरमें पकरिके कोठरी में मूँदि क्यों न राखे ऐसे नन्दजी पक्षितात भये १८ अनेक प्रकार के जे कुरती के दौव पँच है तिन सूं श्रीकृष्ण चाणूर जैसे आपुसमें लड़त भये तैसेही वलदेव और मुष्टिऊ लड़त भये १९ वज्रपातकी मुख्य कठोर भगवान् के अङ्ग परे तिन सूं चाणूरके अङ्ग चुरकूट होयभये तासूं अत्यन्त दुःखित होतभये २० शिकरा कैसो है वेग जाके ऐसो चाणूर दोनों हायकी मुष्टि बाँधिके क्रोधमें मारि कणयतोऽस्य निशम्यवेशुम् ॥ निर्गम्यतूर्णमवलाः पथिशूरिण्यथाः पश्यन्ति सरिमतमुलंसदयावलोकम् १६ एवं प्रभापमाणामुस्त्रीपुत्रयोगेश्वरो हरिः ॥ श

छेहन्तुं मनश्चके भगवान् भरतर्षभ १७ सभयाः स्त्रीगिरः श्रुत्वा पुत्रस्नेहशुचातुरौ ॥ पितरावन्वतगेतां पुत्रयोरबुधौ वलम् १८ तैस्तेर्नियुद्धविधिभिर्विविधै रच्युतेतौ ॥ शुश्रूषातेयथाऽन्योन्यं तथैव वलमुष्टिकौ १९ भगवद्वात्रनिष्पातैर्वज्रनिष्पेपनिष्ठुरैः ॥ चाणूरो भज्यमानाङ्गो मुहुर्गर्ला निमवापह २० सश्येन वेगउत्पत्यमुष्टीकृत्यकराबुभौ ॥ भगवन्नंवासुदेवं क्रुद्धो वक्षस्यवाधत २१ नाचलत्तप्रहारेण मालाहतइवद्विपः ॥ बाह्वोर्निगृह्यचाणूरं बहुशोभामयनहरिः २२ शृष्टुष्टेपोथयामाम तरसाक्षीणजीविनम् ॥ विसस्ताकल्पकेशसगिन्द्रध्वजइवापतत् २३ तथैवमुष्टिकः पूर्वं स्वमुष्टयाभिहतैनवै ॥ बलभद्रेणवलिन त लेनाभिहतोभृशम् २४ प्रवेपितः सरुधिगुमुद्रमचमुखतोऽर्द्धितः ॥ व्यसुः पपातोऽन्युपस्थे वाताहतइवाङ्घ्रिपः २५ ततः क्रुटमनुप्राप्तं रामः प्रहरतांवरः ॥ अव धीक्षीलयाराजन् सावज्ञं नाममुष्टिना २६ तर्ह्येवद्विशलः कृष्णपद्मापहतशीर्षिकः ॥ द्विधाविदीर्णस्तोशलकउभावपिनिपेततुः २७ चाणूरेमुष्टिकेकूटे शले के ऊपरकू उखरिके भगवान् वासुदेव की छाती में मारतभयो २१ जैसे हाथी फूलनकी मालाकी चोट से नहीं छिगे है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र चाणूर की मुष्टि के मारे न डिगत भये हरि श्रीकृष्ण चाणूर के दोनों शय पकरि के बहुत घुमाइ कै वेग करिके पृथ्वी में पटकतभये क्षीण भयो है जीवन जाको शिथिलभये हैं आयुषण वार और माला जाके ऐसो चाणूर जैसे गौड़देशमें मसिद्ध इन्द्रध्वजा गिरे है तैसे गिरत भयो २२ २३ ताक्षी भकार पहिले मुष्टि जिनके लगी ऐसे वलदेवजी ने थाग जाके मारी ऐसो मुष्टिक कश्चित होय मुखते रुधिर कूं वमन करत पीड़ित हो के प्राण जाके निकसि गये जैसे पवनको मारो घृत्ता उखरि परे है ता प्रकार गिरतभयो २४ २५ हे राजन् परीक्षित! ता पीछे आयो जो कूट गल्ल है ताकूं मारनवारेन में श्रेष्ठ वलदेवजी लीला करिके वाई मुष्टिसूं अवज्ञाकरिके मारतभये २६ शल तोशलने विचारी दण्डवत् के भिपसूं पात्र पकरिके पटक दिईगे परन्तु सबके बाहर भीतरकी जाननवारे हैं जा समय दण्डवत् करिवेकौ आयो तासमय मारी जो लात तासूं शिर फाँटिगयो ऐसो शल और तोशल दो टूक विदीर्ण होईकै दोनों पृथ्वी में गिरतभये २७ चाणूर मुष्टिक कूट शल तोशल ये मुख्य गल्ल जब मरिबुके ता पीछे और सब गल्ल अपने प्राण वचायेके

लिये भाजत भये २८ बराबर के गोपन को अखाड़े में खींचके नगाड़े वजें नृत्यादिक को करें पावनमें नूपुर जिनके वजे ऐसे श्रीकृष्ण चलदेव गोपनके सङ्ग मिलिकै विहार करत भये २९ श्री कृष्णचन्द्र और बलदेवजी के चरित्र देखिकै कंस के विना सम्पूर्ण जन प्रसन्न होत भये ब्राह्मण जिनमें मुख्य ऐसे सज्जन पुरुष भले भले ऐसे कहिके स्तुति करत भये ३० बड़े बड़े मल्ल मरिगये कितनेऊ भाजिगये तब भोजवंशीनको राजा कंस नगाड़े थमाय देत भयो और यह वचन बोली ३१ खोटे जिनके कर्म ऐसे वसुदेव के वेदान्त पुरते बाहर निकालि देउ और इनको धन खिनाइ लेउ खोटी है बुद्धि जादी ऐसे नन्दको वाधिलेउ ३२ खोटी है बुद्धि जाकी ऐसे असाधु वसुदेवकुं जल्दी भारो शत्रुन में मिलिरह्यो ऐसे पिता उग्रसेन कुं टहलुआन सहित वाधिलेउ ३३ या प्रकार कंस जब वकन लग्यो तब बड़ो क्रोध जिनके भयो ऐसे अव्यय भगवान् धीरेसूँ उकरिके ऊंचे मंचानपै चढ़त भये ३४ धैर्यवान् कंस है सो चली आवै ऐसी जो अपनी मृत्यु है ताकुं देखिके आसन तोशलकेहते ॥ शेषाः प्रहृष्टबुर्मलाः सर्वे प्राणपरीप्सवः २८ गोपान्वयस्यानाकृष्य तैः संमृज्य विजहंतुः ॥ वाद्यमानेषु तूयैषु वल्गुगन्तौ रूननूपुरौ २९ जनाः

प्रजहंतुः सर्वे कर्माणारामकृष्णयोः ॥ ऋते कंसं विप्रमुख्याः साधवः साधुसाध्विति ३० हते पुमल्लवर्थेषु विद्धते पुत्रभोजराट् ॥ न्यवारयस्व तूर्याणि वाक्यं च दमुवाच ३१ निःसारय तदुर्ध्वतौ वसुदेवात्मजौ पुरात् ॥ धनं हतगोपानां नन्दवध्नी तदुर्मतिम् ३२ वसुदेवस्तु दुर्भेधा हन्यतामाश्वऽसत्तमः ॥ उग्रसेनः पिता चापि सानुगः परपक्षगः ३३ एवं विकृत्यमानैव कंसमकुपितोऽव्ययः ॥ लघिम्नोत्पत्य तस्मा मञ्चमुत्तुङ्गमारुहत् ३४ तमाविशन्तमालोक्य मृत्युमारम न आसनात् ॥ मनस्वी सहसोत्थाय जगृहे मोऽभिचर्मणी ३५ तं खड्गपाणिं विचरन्तमाशु शयनं यथादक्षिणसंन्यमम्बरे ॥ समगृहीतद्विपद्वाग्रते जायथोर गन्तार्थमुतः प्रमह्य ३६ प्रगृह्य केशेषु चलरि करीटं निपात्य रङ्गोपरि तुङ्गमश्वात् ॥ तस्योपरि शितस्वयमञ्जनाभः पपात विश्वाश्रय आत्मतन्त्रः ३७ तं संपरेतं वि चकर्मभूमौ हरिर्यथेभं जगतो विपश्यतः ॥ होहेति शब्दः मुमहांस न दाऽभूदुदीरितः सर्वजनैर्नरेन्द्र ३८ सानित्यदोद्विग्नधिया तमीश्वरं पिबन् वदन् वा विचरन् स्वपञ्चमन् ॥ ददर्श चक्रायुधमग्रतो यतस्तदेवरूपं दुर्वापमाप ३९ तस्यानुजाभ्रानरोऽष्टौ कङ्कन्यग्राधकादयः ॥ अभ्यधावन्नभिकुद्धाभ्रातुर्निवेशका

से उठिकै डाल तलवार लेत भयो ३५ तलवार हाथमें लैके आकाशमें जैसे शिकरा पत्ती डोलै है तैसे दाई बाई ओर जल्दी जल्दी फिरै जो कंस है तास सद्गारिबे में न आवै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तार्क्ष्य को पुत्र गरुड़ जैसे सर्पकुं पकरिलेइ है तैसे पकरत भये ३६ हलो है किरियकुट जाको ऐसो जो कंस है ताके केशनको पहरिके ऊंचे मंचानपै तें रंगभूमि में पटाकि के कमल है नाभिमें जिनके सम्पूर्ण विश्व जिनके उदरमें अपने अधीन ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कंस के ऊपर कूदत भये ३७ सिंह जैसे हाथीकुं खींचे हैं तैसे सब जगत के देवत मृत्युभयो जो कंस है ताकुं पृथ्वीमें घभीटत भये हे नरन के राजा परीक्षित! ता समय समस्त प्रजान के वड़ो हाहाकार शब्द होत भयो ३८ कंस प्रतिदिन चलायमान चिचमूंजल पीवत वात कहत मार्ग चलत सोवत श्वास लेत चक्रहं आयुध जिनके ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण के दुःख से मात्त होनेवाले स्वरूपकुं पावत भयो ३९ ता कंस के कङ्कन्यग्राध मूं आदि लैके छोटे भयगा अत्यन्त क्रोध करिके मर्या कंसको बदलो लेवे के



( पञ्चचत्वारिंशकेऽथपितृनन्दनद्विषयसामान्यम् ॥ उग्रसेनाभिषेकश्च गुरोर्वासात्पुराणमः १ पैतालीसर्वे अध्यायमे वसुदेव देवकी और नन्दादिकों को कृष्णजी समझाकर उग्रसेनजीका अभिषेक कर सान्दीपनि गुरुजीके यहा रहकर वहा सों मथुरापुरी में आगमन वर्णन है १ ) अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! पुरुषनमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णचन्द्र माता पितान कूं अपनी न भयो मनि के मो कूं परमेश्वर मति जानो जननकी मोहन करनारी अपनी मायाकूं फैलावतभये हमकों पुत्र मानिकें अभी संसारके सुख भोगे नहीं हैं पहिलेही ये परमेश्वर हैं यह ज्ञान इनकूं होइ आयोहैं मैं प्रसन्न भयो तब इनको ज्ञान कहा दुर्लभ है मो में पुत्रभाव करिकें जो प्रेम करने हैं सो दुर्लभ है याते अभी ये परमेश्वर हैं ये इनकों ज्ञान मो में न होय या लिये अपनी माया फैलावतभये ? यादवन में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण बलदेवजीकूं संगलैं के माता पितृके पास आवतभये विनयपूर्वक नमिकें हे माता ! हे पिता ! ऐसे आदरपूर्वक प्रसन्न होयके बोलतभये २ हे पिता ! सर्वदा तुम्हारे चाहनाही वनीरही श्रीशुकउवाच ॥ पितराबुलब्धार्थो विदित्वापुरुषोत्तमः ॥ माभूदितिनिजांमायां ततानजनमोहिनीम् १ उवाचपितरावेत्यसाम्राजःसात्वतर्षभः ॥

प्रश्रयावनतः प्रीणन्नम्वनातेतिसादरम् २ नास्मत्तोयुवयोस्तात नित्योत्कण्ठितयोरपि ॥ बाल्यपौगण्डकैशोराः पुत्राभ्यामभवन्कृत्रित् ३ नलब्धोदेवहत योवसोनौभवदन्तिके ॥ यांत्रालाःपितृगेहस्थाविन्दन्तेलालितामुदम् ४ सर्वार्थसम्भवोदेहोजनितःपोषितोयतः ॥ नतयोर्यातिनिर्वेशं पित्रोर्मर्त्यःशता युपा ५ यस्तयोरारमजःकल्पआत्मनाचधनेनच ॥ वृत्तिनदद्यात्तंप्रेत्य स्वमांसखादयन्तिहि ६ मातरंपितरंशृद्धं भार्थीसाध्वीमुतंशिशुम् ॥ गुरुंविप्रंप्रपन्नञ्च कल्पोविभ्रञ्छसन्मृतः ७ तन्नायकल्पयोःकंसात्रित्यमुद्दिग्नचेतसोः ॥ मोघमेतेव्यतिक्रान्तादिवसावामनर्चतोः ८ तत्त्वन्तुमर्हथस्तात मातनोपरत न्त्रयोः ॥ अकुर्वतोर्वाशुश्रूपां क्लिष्टयोर्दुर्हृदाभृशम् ९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इतिमायामनुष्यस्य हरेर्विश्वत्मनोगिरा ॥ मोहितावङ्कमारोग्य परिष्वज्याप तुर्मुदम् १० सिञ्चन्तावश्रुधाराभिः स्नेहपाशेनचावृतौ ॥ नकिञ्चिदूचतराजनवाष्पन गडौविमोहितौ ११ एवमाश्वास्यपितरौ भगवान्देवकीसुतः ॥ मा

हम पुत्रनतें बाल्यअवस्था पौगण्डअवस्था किशोरअवस्था के सुख कभज तुमकों न होतभये ३ दैवके मोरे हमैं तुम्हारे निकट वासहू न करिसके पितृके घरमें बालकरे हैं लालन पालनहोइहैं आनन्द को पावे हैं हमको कछुओ प्राप्त न भयो ४ धर्म अर्थ काम मोक्ष सब पदार्थ जाते होइ ऐसो यह देह जिन माताने उत्पन्न कियो उनकी यह मरणश्रमर्मा मनुष्य सौर्वर्ष सेवाकरे तथापि उन्मृष्ट नहीं होइहैं ५ जो पुत्र समर्थ होइ के देहसूं अथवा धनते माता पितृकूं जीविका नहीं दैवै वाको परलोकमें यमके दूत वाको मांस वारी कूं काटि के खवावे हैं ६ माता पिता छद्म सुशीला स्त्री पुत्र बालक गुरु ब्राह्मण और जो कोई शरण आयो है इनको जो समर्थ मनुष्य भरण पोषण न करै तो वह भरे तुल्य है ७ असमर्थ कंस के भय के मोरे नित्य है चञ्चल मन जिनको ऐसे हम हैं ता कारण तुम्हारी सेवा बिनाकरे हमारे इतने दिन व्यर्थ बीतगये ८ हे पिता ! हे माता ! परारे अधीन याते तुम्हारी सेवा न करी दुष्ट जाको हृदय पेमे कंससूं अत्यन्त दुःखित हमैं तिनपर तुम क्षमा करिवेकूं योग्यहो ९ या प्रकार माया करिकें मनुष्यरूप जिनने धर्यो ऐसे विश्वके आत्मा हरि हैं तिनके चचननसूं मोहित होयके देवकी वसुदेव पुत्रकों गोदमें बैठयके आलिंगन करिके आनन्द कूं

पावतभये १० अथ श्रीशक्रदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! स्नेह के रस्सान्ते वंधे मोहित होयगये ऐसे देवकी वसुदेव हैं ते नेत्रन ते आंसुन की धारन ते कृष्ण वलदेव कूं भिजोवत वल्लु भो न वोल्ततभये ११ देवकी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण या प्रकार माना पिता को समाधान करिके नाना जो उग्रसेन हैं तिनको यदून को राजा करत भये १२ श्रीकृष्ण वोल्तत भये हे महाराज ! हम तुम्हारी प्रजा हैं तिन कूं तुम आज्ञा करिये कों योग्यहौ ययाति को शाप है यातें यादवन कों सिंहासन पै बैठवो योग्य नहीं है तुमहू यादवहौ मेरी आज्ञातें तुमकूं दोष नहीं है या प्रकार भगवान् कहत भये १३ मैं हृद्ध कहा अथ राज्य करोगो तहा श्रीकृष्ण कहे हैं मैं दहलुआ होयकै तुम्हारे पास रहूंगे वड़े वड़े देवादिक तुमको भेंट दैयेंगे और राजा दैयेंगे यामें कहा कहनो है १४ कंस के डरके मारे भाजि गये ऐसे जो अपनी जाति के नाते गोते के सम्पूर्ण यहु दृष्टि अन्धक मधु दाशार्ह कुकुरादिक हैं तिनको दिशान ते बुलायकै विदेश में जे वसे हैं तासूं

तामहंतूयसेनं यदूनामकरोन्नृपम् १२ आहवास्मान्महाराज प्रजाश्राज्ञमुर्महसि ॥ ययातिशापाद्यदुभिर्नासितव्यं नृपासने १३ मयिभृत्यउपासीने भवतो विबुधादयः ॥ बलिहन्त्यव्यवन्ताः किमुनान्येनराधिपाः १४ सर्वान्स्वाज्ञातिसम्बन्धान् दिग्भ्यः कंसभयाकुलान् ॥ यदुष्टरायन्धकमधु दाशार्हिकुरादिकान् १५ समाजितान्समाश्वस्य विदेशावासकश्चितान् ॥ न्यासयत्स्वगेहे पुत्रैः सन्तर्प्य विश्वकृत् १६ कृष्णमङ्कुर्य मुर्जेगुप्तालन्धमनोरथाः ॥ गृहेषु परिमिद्धाः कृष्णरामगतज्वराः १७ वीक्षन्तोऽहरहः प्रीता मुकुन्दवदनाम्बुजम् ॥ नित्यं प्रमुदितं श्रीमत्सदयस्मितवीक्षणम् १८ तत्रप्रवयसोऽप्यासन् युवा नोऽतिवलौजसः ॥ पिवन्तोऽर्धमुकुन्दस्य मुलाम्बुजमुधांसुदुः १९ अथनन्दं समासाद्य भगवान् देवकीसुतः ॥ सङ्कर्षणश्रारजेन्द्र परिष्वज्येदमूचतुः २० पित युवाभ्यां स्निग्धाभ्यां पोषितौ लालितौ भृशम् ॥ पित्रोरभ्यधिकाभितरात्मजेष्वामनोऽपि हि २१ सपितासाचजननी यौ पुष्णीतांस्वपुत्रवत् ॥ शिशून् वन्धुभिरुत्सृष्टान् अल्पैः पोषणैः २२ यातयूयं व्रजं तात वयं च स्नेहदुःखिताम् ॥ ज्ञातीन्वोदुष्टमुष्यामो विधाय सुहृदांसुदम् २३ एवं सान्त्वय्य भगवान् नन्दं सत्रं कुरु होय रहे हैं ऐसे जे यादव हैं तिनको सत्कार करिके बहुत से धन दैके वृत्त करिके सब विश्वके करनवारे श्रीकृष्ण अपने अपने घरन में बसावत भये १५ । १६ कृष्ण वलदेव की भुजान सों रक्षा जिनकी भई प्राप्त भये हे मनोरथ जिनके ऐसे यादवन के श्रीकृष्ण वलदेव के दर्शनते गये हैं ताप जिनके ऐसे पूर्ण होयके घरमें रमण करत भये प्रसन्न होयके यादव नित्य जामें आनन्द दया सहित जामें मुसिकानि चितवनि ऐसे मुकुन्द के मुखकों नित्य देखै हैं १७ । १८ मुकुन्द के मुखकमल में अमृत है जो ताकूं नेत्रों सूं पीके ता समय कोई हृद्ध है तो भी बड़ो जिनहे बल ऐसे तरुण होतभये १९ यके पीछे हे राजन् परीक्षित ! भगवान् देवकी के पुत्र और वलदेवजी नन्दराय के पास आयकै मिलिकै यह बोलतभये २० हे पिता ! तुम स्नेहीनने हमारो पोषण वरयो बहुत लाइ करयो माता पिताकों अपने पुत्रन में अधिक प्यार होय है वही पिता है वही माता है जो अपने पुत्रकी तुल्य पोषण करै पोषण करिये में जिनकी सामर्थ्य न भई ऐसे हमारे माता पिता ने हमकों बालकपने तेही छोड़ि दियो है २१ । २२ हे पिता ! तुम व्रजकों जावो अपने सुहृदनकों सुख करिके स्नेहते दुःखित जो तुम ज्ञातिकेहौ तिने देखिये कों हम पीछे आवेंगे २३ याप्रकार अच्युत

भगवान् श्रीकृष्ण व्रजवासीन सहित नन्दरायजी कं सम्भार्यै वस्त्र आभूषण सोने चादी के वासन दैके वड़े आदरते पूजन करतभये २४ या प्रकार श्रीकृष्णको वचन सुनि नन्दरायजी श्रीकृष्ण चलेदेव को छाती तें लगायकै भेयमें व्याकुल होयकै नेत्रनय आसू भरि आये व्रजवासीनको सबलैके वज्रको जात भये २५ याके पीछे हे राजन् परीक्षित ! शूरके पुत्र वसुदेवजी ब्राह्मण पुरोहित बुलाय कै पुत्रको यथायोग्य द्विजन्मासंस्कार करावत भये २६ तिन अलंकृत ब्राह्मणन को पूजनकर गौवं शृङ्गार करिके दक्षिणा देत भये रेशमी झूल जिन पै परी सोनेकी माला पहिरे ऐसी वस्त्रान सहित दान करतभये २७ वड़े बुद्धिमान वसुदेवजी कृष्ण रामके जन्मनक्षत्र के समय जिन गौवनको मतते दान करतभये कंसने अथर्म करिके हरिलीनी जे गौवं है तिनकी सुधि करिके दान करतभये २८ ता पीछे प्राप्तभये हैं संस्कार जिनके सुन्दर हैं अत जिनके ऐसे कृष्ण बलदेव द्विजन्मान को संस्कार पायकै यदुकुल के पुरोहित जो गर्गाचार्य हैं तिनसूं गायत्री को उपदेश

लैके ब्रह्मचर्य वृत्तमें रहतभये २६ समस्तविद्या जिनते होई याहीते सर्वज्ञ अर्थात् सब बातके जाननवारे सब जगत् के ईश्वर ऐसे जे कृष्ण बलदेव हैं ते स्वतःसिद्ध जो निर्मल ज्ञानहैं ताय मनुष्य न की तुल्य चेष्टा करे हैं छिपावें है यज्ञोपवीत भये पीबै गुरुकुलमें वासिवे की इच्छा जिनके यहै ऐसे कृष्ण बलदेव कश्यप जिनको गोत्र उज्जैनपुरी में बसे सान्दीपनि गुरु हैं तिनके पास जातभये ३०। ३१ इन्द्रिय जिनने जीती ऐसे कृष्ण बलदेव भले प्रकार गुरुकुल पास जायके वड़ेआदर तें भक्तिपूर्वक जैसे नारायण को सेवन करे हैं ऐसे गुरु को सेवन करतभये ३२ शुद्धभाव में जो सेवा हैं तासूं सन्तुष्टभये ऐसे जो द्विजन्मान में श्रेष्ठ गुरुहैं ते श्रीकृष्ण बलदेवकूं शिक्षादिक अंगन सहित उपनिषद् सहित जो वेद हैं तिनका पढ़ावत भये ३३ मन्त्र देवता को जो ज्ञानहैं ता सहित राख चलायवे को जो धनुर्वेद है ताय और धर्मशास्त्र न्याय भीमांसादिकहैं तिन और शत्रुते गिलाप करना युद्ध करना वाके ऊपर चढ़ जानो समीप जायक रहनो अपनी ओर फेरिलेनो मिलाप करना यह छः प्रकारकी राजनीति है ताय पढतभये ३४ सम्पूर्ण मनुष्यन में उत्तमन में उत्तमन में लक्षण सब विधानके चलावनवारे सावधाननो कृष्ण बलदेव सो हेराजन



परीक्षित ! गुरुके बिना वतायेही सब विद्यानको पढ़तभये ३५ चौसठ रात्रिन में गायत्री वजायत्री नृत्य करिवे सूं आदि लैके जो चौसठ कला हैं तिनैं सीखतभये जब विद्या पढ़ि चुके तब हे राजन् परीक्षित ! कृष्ण बलदेव दोनों भयथा गुरुते गुरुदक्षिणाकी आज्ञाकरी ऐसे कहतभये ३६ सान्दीपनि ब्राह्मण कृष्ण बलदेव की अद्भुत महिमा देखिके मनुष्यन में ऐसी चमत्कारी बुद्धि देखिके स्त्री ने कही प्रभामसेत्रमें समुद्रमें हूविके मरो जो मेरी पुत्रहै ताहि देउ यह वर मागो खो के कहते वही वर मांगतभये ३७ तथास्तु ऐसे अज्ञान करिके वड़े हैं पराक्रमजिनके वड़ो रथ जिनको ऐसे कृष्ण बलदेव रथमें बैठिके प्रभासचेत्रमें समुद्रके किनारे पै जायके एक क्षणभर बैठतभये तब समुद्र कृष्ण बलदेव आयें हैं यह जानिके तिनकी पूजा लावतभयो ३८ तब भगवान् श्रीकृष्ण ता समुद्र ते कहतभये जो हमारे गुरुको बालक तेने यहां वही लहरन करि हुवायो है यो गुरुको पुत्र लायके दे ३९ तब समुद्र बोल्यो हे देव अर्थात् प्रकाशमान कृष्ण ! मैंने तो तुम्हारे गुरुको

कलाः ॥ गुरुदक्षिणयाऽऽचार्य्येच्छन्दयामासतुर्नृप ३६ द्विजस्तयोस्नग्माहिमानगद्भुतं संलक्ष्यराजन्नतिमानुपीमतिम् ॥ संमन्यपत्न्यासमहार्णवेमृतं बालंप्रभासेवरयाम्भूवह ३७ तथेत्यथारुहामहारथैरथं प्रभासमासाद्यदुस्सन्तविक्रमौ ॥ वेलासुप्रव्रज्यनिपीदतुःक्षणं सिन्धुर्विदित्वाऽहणमाहरत्तयोः ३८ तमाहभगवानाशुगुरुपुत्रः प्रदीयताम् ॥ योऽसाविहत्वयाग्रस्तो बालको महतो भिषिणा ३९ ॥ समुद्र उवाच ॥ नैवाहार्पमंहदेव दैत्यः पञ्चजनो महान् ॥ अन्तर्जलचरः कृष्ण शङ्खरूपधरोऽमुरः ४० आस्नेतेनाहनूनं तच्छ्रुत्वा सत्तरंप्रभुः ॥ जलमाविश्य तंहत्वा नापश्यदुदरेऽर्भकम् ४१ तदङ्गप्रभवं शङ्खमादाय रथमागमत् ॥ ततः संयमनीनाम यमस्य दयित्वांपुरीम् ४२ गत्वा जनार्दनः शङ्खं प्रदध्मौ सहलायुधः ॥ शङ्खनिर्हार्दमाकर्ण्य प्रजासंयमनो यमः ४३ तयोः सपर्यामहर्नो चक्रे भक्त्युपवृंहिताम् ॥ उवाचावनतः कृष्णं सर्वभूनाशयालयम् ॥ लीलामनुष्यहे विष्णो युवयोः क्रवामक्रिम् ४४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ गुरुपुत्रमिहा नीतं निजकर्मनिवन्धनम् ॥ आनयस्व महाराज मन्वासानपुरस्कृतः ४५ तथेति नोपानीतं गुरुपुत्रं यदुत्तमौ ॥ दत्त्वा स्वगुरवे भूयो वृणीष्वेति तमूचतुः ४६

पुत्र नहीं हुआयो है मेरे भीतर रहनवारो शङ्खरूप को धरे ऐमो वड़ो दैत्य है वह हरि लैगयो है निश्चय वाके पास है यह सुनिके समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र शीघ्रतायूं जल में धसिके पञ्चजन दैत्य कूं मारिके वाके पेटमें बालक कूं नहीं देखतभये ४० । ४१ ता दैत्य के अंगमें ते निकसो जो शङ्ख है ताकूं लैके श्रीकृष्ण रथ पै आवत भये यमराजकी अतिप्यारी सयमनी पुरी है तामें आवत भये ४२ तथा जायके बलदेव सहित श्रीकृष्णचन्द्र शङ्ख वजावत भये प्रजाको दण्ड देनारो धर्मराज शङ्ख को शब्द सुनिके कृष्ण बलदेव की भक्तिपूर्वक पूजा वरत भयो सब प्राणीन के हृदयमें विराजमान जो कृष्ण तिनसों हाथ जोरिके यह बोलतभयो हे विष्णु भगवान् ! लीला करिके तुम मनुष्यरूप हो तुम्हारी कहा सेवा करों ४३ । ४४ अब श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बोले हे महाराज ! यहा गुरुको पुन तू लैयायो है ताको देउ तब यमराज ने कही अपने कर्मन तें वैंओ परो है कैसे लाऊं तब श्रीकृष्ण कहे हैं मेरी आज्ञा भई मेरी आज्ञा तें कर्म जो रावर नहीं है ४५ जो आज्ञा ऐसे कहिके यमराज ने लाय दियो जो गुरुको पुत्रहै ताको यादवन में उत्तम जो कृष्ण बलदेव है ते अपने गुरुको दैके और वरमागो ऐसे कहत भये ४६

तब गुरु करतभये हे पुत्र ! तुमने गुरुसेवा भलेप्रकार करी तुम सारिसेन को गुरु में भयो मेरे कौन वातकी चाहना ताकी रही ४७ हे वीरो ! तुम अपने घर कों जायो या लोक में और परलोक में  
तुम्हारी पवित्र कीर्ति होइ तुम्हारे वेद है ते नवीन पढ़ेभये स्फुरण बने रहें ४८ या प्रकार भूतेभये शरीर चलै मैत्री तुल्य  
जाकी गर्जन ऐसे रथमें बैठिके हे राजन् परिल्लिखि । अपने गुरु कृष्ण भगवान् बहुत दिन तैं नहीं देखे ऐसी प्रज्ञा अब दर्शन करिके वड़े आनन्द कों प्राप्त होतभये जैसे  
गयो धन मिलिनै सू आनन्द होय तैसे आनन्द होत भयो ५० इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिएपादशमस्कन्धेषून्वविद्धे गुरुपञ्चांगन नाम प्रश्न चत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

( पदचत्वारिंशेऽध्याये पञ्चमोऽध्यायः ) यशोदानन्दयोश्चक्रेकृष्णः शोकापनोदनम् । गुरोर्ज्ञानमनुप्राप्यसत्त्वार्गोपीरुपाविशत् २ द्वियालीसर्वं  
गुरुकृपात् ॥ सम्यक्सम्प्रादितोवत्सभवद्भ्यांगुरुनिष्कयः ॥ कोनुयुष्माद्विधुरोः कामानामवशिष्यते ४७ गच्छतस्त्वगृहंवीरौ कीर्तिर्वामस्तुपावनी ॥  
छन्दांस्ययातयामानिभवनत्विरत्र ४८ गुरुणैवमनुज्ञातौ स्थेनानिलरंहसा ॥ आयातौस्वपुंरतात पर्जन्यनिनदेनैव ४९ समनन्दनप्रजाः सर्वादिद्वाराम  
जनार्दनौ ॥ अपश्यन्त्योवब्रह्मानिनिष्ठलब्धनाइव ५० इति श्रीमद्भागवतमहापुराणे दशमस्कन्धे पञ्चोद्धे गुरुपुत्रानयननाम पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ वृष्णीनांप्रवरोमन्त्री कृष्णस्यदयितःसखा ॥ शिष्योबृहस्पतेःसाक्षाद्व्यवृद्धिसत्तमः१ तमाहभगवानुपेष्टं भक्तमेकान्तिनांक्वचित् ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिं प्रपन्नात्तिहरोहरिः २ गच्छोद्वव्रजंसौम्य पित्रोर्नामद्वियोगार्धिं मत्सन्देशैर्विमोचय ३ तामन्मनस्कामत्प्राणामदर्थैत्यक्तद्वैतिकाः ॥ येत्यक्तलोकाधर्माश्च मदर्थेथानुविभर्म्यहम् ४ मयिताःप्रेयसांप्रेष्ठे दूरस्थेगोकुलस्त्रियः ॥ स्मरन्त्योऽङ्गविमुह्यन्तिविश्वौत्क्रगृह्य विह्वलाः५ धारयन्त्यतिकृच्छ्रेण प्रायःप्राणान्कथञ्चन ॥ प्रत्यागमनसन्देशैर्वल्लव्योपेयदातिगकाः ६ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युक्तउद्धवोराजन् सन्देशंभर्तुराह

अध्याय में कृष्णजी उद्धवजी को गोकुल में पठाकर यशोदा और नन्दजी के शोक को दूर करदेतेभये ? और अत्यन्तसंयत होकर जनेऊ होजाने पर कामचार को छोड़कर गुरुते ज्ञानको प्राप्त होकर भिन्न उद्धव को गोपियों के यहा प्रवेश करातेभये २ ) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! यादवन में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण के प्यारे मन्त्री सत्वा साक्षात् बृहस्पतिके शिष्य बुद्धिगानन में श्रेष्ठ जो उद्धव जी हैं , शरणागतन के दुःख दूर करनवार मनोहर भगवान् श्रीकृष्ण प्यारे एकान्ती भक्त उद्धवजी संप्रकान्त में हायपकरि के वीलतभये २ हे उद्धव ! हे साधु ! तुम व्रजनों जाओ हमारे गिला माता काँ प्रसन्न करो और गोपीनकों मेरे निछुरिबे में कष्ट भयो है ताय मेरो सन्देश ले जायके दूरकरो ३ मेरे विपे जिनके मन और प्राण लागि रहे हैं मेरे अर्थ पति पुत्रादिक त्यागि दिये हैं मैं ही प्यारो जिनको आत्मा हूं सोमं गन करिके रहें हैं मेरे लिये या लोक परलोक के सुखन के उपाय जिनने त्यागि दिये हैं तिनकूं मैं मुख देखूं हूं ४ प्यारेन को प्यारो मैं जब ते दूरआयो हों तउ से वे गोकुलकी स्त्री हे उद्धव ! मेरी सुधि करिके बिरहमें जो मेरी चाह होइ है तासूं वेश्य होयकै मोहित होय जायँ है ५ मेरी प्यारी मोहीं में जिनके मन वे गोपी गोकुलमें

तं निरुसती चेरे में शीघ्र आऊँगो ऐसे मेरे सन्देशे गये हैं तिनसूँ जैसे तैसे विचरे है ६ अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित! या प्रकार जिनसूँ कही ऐसे उद्धवजी वहेआदरते स्वामी श्री-  
 कृष्णचन्द्रके सन्देशेकुँ लैके रथ में बैठिके नन्दरायजी के गोकुलकू जातभये ७ सूर्यास्तसमय सुन्दर जो नन्दरायजीको ब्रजहै तामें प्राप्त होतभये सन्ध्यासमय गौ जो आवें तिनके छुरनसों रेणु जो उड़ी  
 है तामू उद्धवजी को रथ ढकिगयो ८ पुष्पवती गौवनके लिये चारोंओर युद्धकर ऐसे मतचारे चलें वहां बहुतहैं तिनको शब्द जहां होयरह्यो है ऐननके बोझन तें व्याई गौ दौरिदौरि के अपने वज्रनके  
 पास जो आवें हैं तिनसों शोभायमान ब्रज है ९ जहां तहा सफेद गौवन के वखरा फुदकत डोलें हैं गौवनके दुहिचे को शब्द जहा होयरह्यो है अर्थात् जा समय दोहा दोहनीकों घोटन पै धरिकें दुहैं ता  
 समय छुरछुर होयहै जब आधीसी दोहनी होय आवैतव घरघर होयहै मुहताई भरिआवै तव वम्म वम्म होयहै और कोई कहै है वखरा छोड़ो कोई कहै है दोहनी लावो कोई कहै है लेउ कोई कहै है  
 तः ॥ आदायरथमारुह्य प्रययौनन्दगोकुलम् ७ प्राप्नो नन्दब्रजं श्रीमान्मिलोत्रतिविभावसौ ॥ छत्रयानःप्रविशनां पशूनांखुरेणुभिः ८ वासितार्थेऽभिपु  
 ष्यद्भिर्नादितं शुष्मिभिर्धूपैः ॥ धावन्तीभिश्चवासाभिरुधोभारैः स्ववत्सकाच्च ९ इतस्ततो विलङ्घ्यि गोवत्सैर्मण्डितसितैः ॥ गोदोहशब्दाभिरवैवैणूनां निःस्व  
 नेनच १० गायन्तीभिश्चक्रम्याणि शुभानि वलकृष्णयोः ॥ स्वलंकृताभिर्गोपीभिर्गोपैश्चमुविराजितम् ११ अग्न्यङ्गीतिथिगोविप्रपितृदेवार्चनान्वितैः ॥  
 धूपदीपैश्चमाल्यैश्च गोपावासैर्भनोरमम् १२ सर्वतःपुष्पितवनं द्विजालिकुलनादितम् ॥ हंसकारण्डवाकीर्णैः पद्मपण्डैश्चमण्डितम् १३ तमागतं समागम्य  
 कृष्णस्यानुचरंप्रियम् ॥ नन्दः प्रीतः परिष्वज्य वामुदेवधियार्चयत् १४ भोजितं परमान्नं न संविष्टं कशिराजिपौ सुखम् ॥ गतश्रमं पर्यपृच्छत् पादसंवाहनादिभिः १५  
 कच्चिदङ्गमहाभाग सखानः शूरनन्दनः ॥ आस्ते कुशल्यपत्याद्यैर्युक्तो मुक्तः सुहृदुतः १६ दिष्ट्वा कंसोहतः पापः सानुगः स्वेन पाप्मना ॥ साधूनां धर्मशीला  
 नां यदुनां द्विष्टियः सदा १७ अपि स्मरति नः कृष्णो मातरं सुहृदः सखीन् ॥ गोपान् ब्रजं चात्मानायं गावो बृन्दावनं गिरिम् १८ अप्यायास्यति गोविन्दः स्व  
 देउ ऐसी शोर जहा होयरह्यो है बांसुरी बँन तिनको शब्द जहा होयरह्यो है तामू वद ब्रज शोभायमान है १० बलदेव श्रीकृष्णके मङ्गलरूप कर्मण्कू गावें ऐसी बनीठनी गोपी और गोपहैं तिनसों ब्रज  
 शोभायमान है ११ अग्नि सूर्य अभ्यागत गौ ब्राह्मण पितृ देवता इनके पूजनकी सामग्री जहां धरी हैं धूप होय रही दीवा जिनमें वरें फूल जिनमें धरे ऐसे अे गोपन के घरहैं तिनसों वद ब्रज  
 मनोरम है १२ सब ओर ते फुलचारी जामें फूलि रही पक्षी बोलैं भौरा गुज्जर राजहंस कारण्डव पक्षी जिनमें बैठे ऐसे कपलनके समूह तिनमें वद ब्रज शोभायमान है १३ श्रीकृष्णके प्यारे अनुचर  
 उद्धवजी हैं तिनकों आये जानि कै नन्दरायजी प्रसन्न होयतैं मिलतभये कृष्ण के पास ते आवें हैं यह जानिके पूजन करत भये १४ परमश्रेष्ठ सामग्रीन को भोजन करायकें शय्यापै सुखपूर्वक  
 पौदायतैं चरण दाविकें मार्गको लेद मिटायकें उद्धवजी तें नन्दरायजी पूजतभये १५ कृष्णकी कुशल पूंखिचें में आसूनसों कण्ठ रुकिजायगो यह शङ्का निचारितैं प्रथम वमुदेवजी की कुशल  
 पूंखे हैं हे वदभागी उद्धव! शूरके पुत्र हमारे सखा वमुदेव लरिकावारेन सहित कश कुशलपूर्वक हैं कंसके वन्दीसाने ते बूटे हैं भय्या वन्नु हितकारी जाके पास हैं १६ पापी कंस सम्पूर्ण

दहलुआन सहित अपने पापन में मर्यो यह बड़ी मज्जल भगो धर्म में जिनको स्वभाव ऐसे जे साधु यादव है तिनमें कंस सर्वदा वैर करै हो १७- हे उद्धवजी ! वह कृष्ण कभऊ हमारी और अपनी माता की सुधि करै है सुहृद सखा गोप हैं तिनकी सुधि करै है आपुही जाकी रक्षा करनवारी या ब्रजकी सुधि करै है गौ वृन्दावन गोवर्द्धन पर्वतकी कभऊ सुधि करै है १८ गौवनके द्वित को करनवारी कृष्ण जब कभऊ अपने भय्या वन्द्यनके देखिवेसों आवंगो ता समय सुन्दर नामें नासिका सुन्दर मुसिकाणि चितवनि ऐसे वाके मुखकुं देखेगे १९ दावाग्नि तें पवन तें इन्द्र की वर्षा तें विप सर्प तें अघासुर तें और वही २ मृत्युन तें महात्मा कृष्ण ने हमारी रक्षा करी २० हे उद्धवजी ! श्रीकृष्ण के पराक्रमन की लीलापूर्वक कटाक्षभरी चितवनि की हँसनि की बोलनि की जब सुधि करै हैं तन हमारी सम्पूर्ण क्रिया शिथिल होय जाय हैं २१ मुकुन्द के चरणन के खोज जिनमें परे ऐसी नदी पर्वत वन में स्थान हैं तिन और वाके खोलिवे के स्थान हैं तिन जव देखै हैं तव हमारो मन कृष्णमय होय जाय है २२ देवतान के कार्य करिवे के निमित्त या संसार में आये जे कृष्ण हैं तिन देवतान में उत्तम मानूं हं बड़ो गर्भीर गर्वाचार्य को बचनहू ऐसे

जनानुसकृदीक्षितुम् ॥ तर्हिदक्ष्यामतदङ्कं सुनसंसुस्मितेक्षणम् १६ दावाग्नेर्वातवर्षाविपसर्पश्चरक्षिताः ॥ हस्तयेभ्योभृत्यभ्यःकृष्णेनसुमहात्मना २० स्मरतांकृष्णवीर्याणि लीलाऽपाङ्गनिरीक्षितम् ॥ हसितंभापितंचाङ्गसवर्चनः शिथिलाः क्रियाः २१ सखिञ्चैलवनोद्देशान्मुकुन्दपदभूपिताम् ॥ आक्रीडानी क्षमाणानां मनोयातितदात्मताम् २२ मन्येकृष्णश्चरामञ्च प्राप्ताविहसुरोत्तमौ ॥ सुराणां महदर्थाय गर्गस्यवचनं यथा २३ कंसं नागायुतपाणं मल्लौ गजप तितथा ॥ अवधिष्टां लीलयैव पशूनि वसृगाधिपः २४ तालत्रयं महासारं धनुर्यष्टिभिर्वेभराद् ॥ वभञ्जे केन हस्तेन ससाहमदधाद्विरिम् २५ प्रलम्बो धेनुकोऽ रिष्टृणावत्तौ वकादयः ॥ दैत्याः सुरासुरजितो हतायेनेह लीलया २६ श्रीशुक उवाच ॥ इति संस्मृत्य संस्मृत्य नन्दः कृष्णानुरक्तधीः ॥ अत्युत्कण्ठो भवचू ष्णं प्रेममसखिह्वलः २७ यशोदावर्यमानानि पुत्रस्य चरितानि च ॥ शृण्वन्त्यश्रूयथास्वाक्षीस्नेहस्नुतपयोधरा २८ तयो रित्थं भगवति कृष्णेनन्दयशो दयोः ॥ वीक्ष्यानुरागं परमं नन्दमाहोद्धवो मुदा २९ उद्धव उवाच ॥ युवांश्च लीलाव्यतमौ नूनं न देहिना गिहमानद ॥ नारायणेऽखिलगुरौ यत्कृतामतिरीह

सुनो है २३ दशहजार हाथी को जामें बल ऐसे कस को और मल्लन को तैसेही कुवलयापीढ हाथी को सिंह जैसे पशुनकुं मारे है ऐसे कृष्ण लीला वरि के मारत भये २४ बड़ो भारी तीन ताल की बराबर धनुष है ताय एक हाथ ने उठाप कै जैसे हाथी लठियाकुं तोरे ऐसे तोरत भये और सात दिन पर्यन्त गोवर्द्धन पर्वत को धारण करत भये २५ प्रलम्बासुर धेनुकासुर अरिष्टासुर तृणावर्त्त वकासुर को आदिलै के और जे सुर असुरन के जीतनवारे दैत्य हैं ते कृष्ण ने लीलाही करिके मारे २६ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! कृष्णमें लगी है बुद्धि जिन को ऐसे नन्दरायजी या प्रकार सुधि करिके आसू कण्ठ में भरि आये प्रेम के भाव में व्याकुल होय कै चुप होत भये २७ वर्णन करे जे पुत्र के चरित्र तिन यशोदाजी सुनिके स्नेह जो बड़ो तामूं स्तनन में दूध उमँगि आयो नेत्रन में तें आसू बहावति भई २८ या प्रकार नन्दराय यशोदा को भगवान् श्रीकृष्ण में परम अनुराग देखिके उद्धवजी नन्दजीते बोलत भये २९ उद्धवजी कहे हैं हे

हे मानके देनबारे नन्दराय ! या संसार में देह गरीब के मध्यमें निश्चय तुम प्रशंसा के योग्य दौ या कारण सबके गुरु नारायण तिनमें पेसी मति लगाई है ३० ये जो कृष्ण बलदेव हैं ते विश्व के निमित्त उपादान कारण हैं याही ते पुरुष प्रकृतिरूप हैं सब प्राणीन में प्रवेश करिके अनेकप्रकार के प्राणीन को अनेकप्रकार को जो ज्ञान है ताके साक्षात् है और अनादि है ३१ प्राणन की छुटती विरिया यह पुरुष क्षणभर शुद्ध मन को जा श्रीकृष्ण में लगाय के जल्दी देसी कर्मन की चासनान कूँ छोड़िके सूर्यकी तुल्य प्रकाशमान ब्रह्मरूप होयके परमगति कूँ पावै है ३२ सब के आत्मा कारण और कारण करिके मनुष्य रूप जिनने धरो ऐसे परिपूर्ण नारायण में अतिशय करिके भक्ति करो तुमको कहा करनो वाकी रह्यो ३३ अच्युत श्रीकृष्ण थोड़ेही दिन में ब्रज में आयेगे भक्तनके पालन करनबारे भगवान् श्रीकृष्ण जो माता पिता तुमहो तिनकूँ आनन्द देईगे ३४ सब यादवन के वैरी कंस कूँ रागभूमि में मारिके तुमहारे पास आयके श्रीकृष्ण जो क-

शी ३० एतौ हिविश्वस्य च जीज्योनीरामो मुकुन्दः पुरुषः प्रधानम् ॥ अन्वीय भूने पुत्रिलक्षणस्य ज्ञानस्य चेशात इमौ पुराणौ ३१ यस्मिञ्जनः प्राणिभोगकाले क्षणं समावेशय मनो विशुद्धम् ॥ निर्हृत्य कर्माशयमाशुयाति परांगतिं ब्रह्ममयोऽर्क्षवर्णः ३२ तस्मिन् भवन्ता विलालमहेतौ नारायणे कारणमर्थयुक्तौ ॥ भावं विधत्ता नितरां महत्तमन् किं वाऽवशिष्टं युवयोऽस्मु कृत्यम् ३३ आगमिष्यत्यर्द्धेण कालेन व्रजमच्युतः ॥ प्रियं विधास्यते पित्रोर्भगवान् सात्वतां पतिः ३४ ह त्वाकंसं रङ्गमध्ये प्रतीपं सर्वसात्वताम् ॥ यदा हवः समागत्य कृष्णः सत्यं करोति तत् ३५ माखिद्य तं महाभागौ द्विष्यथः कृष्णमन्तिके ॥ अन्तर्हृदिसंभूतानां मास्ते ज्योतिरिवै धांसि ३६ न ह्यस्यास्ति प्रियः कश्चिन्नाप्रियो वाऽस्त्यमानिनः ॥ नोत्तमो नाधमो वापि समाप्त्यस्य समोऽपि वा ३७ न मातानपि तातस्य न भार्या न सुतादयः ॥ नात्मीयो न परश्चापि न देहो जन्म एव च ३८ न चास्य कर्मवालो के सदसन्मिथ्यो निपु ॥ क्रीडार्यसोऽपि साधूनां परित्राणां यकल्पते ३९ मत्त्वं रजस्तम इति भजते निर्गुणो गुणान् ॥ क्रीडशतीतोऽत्र गुणैः सृजत्यवतिहन्त्यजः ४० यथा अमारिकादृष्ट्याऽभ्यतीव महीयते ॥ चित्ते कर्तोरितत्रात्मा कर्त्तव्या धिया स्मृतः ४१ युवयो रे वनैवायमात्मजो भगवान् नृदरिः ॥ सर्वपाप्मात्मजो ह्यात्मा पिता माता स ईश्वरः ४२ दृष्टं श्रुतं भूतं भवद्विविद्यत् स्थास्तुश्चरिणुर्मह इत भये ताय सत्य करो ३५ हे वट्टभागियो ! तुम खेद भातिकरो कृष्णकूँ अपने पासही देखोगे जैसे लकड़ी में ज्योति रहे है ऐसे सब प्राणीन के हृदयमें रहे है ३६ या कृष्णके कोई प्यारो नहीं है और कुप्यारो कोई नहीं है कोई उत्तम नहीं अयम नहीं है और कोई समान नहीं है और वर सब नहीं है और वाके मान नहीं है ३७ न माके माता है न पिता है न स्त्री है न पुत्रादिके के वाके देह भी नहीं है और वाको जन्म भी नहीं है ३८ या कृष्ण के कर्मभू नही है संसार में देवादिकनकी मनुष्यादिकनकी जे योनि हैं तिनमें खेलिने के लिय और साधुनमी रक्षा करिने के लिये प्रकट होई है ३९ निर्गुण भगवान् सत्त्वगुण रजोगुण इन तीनमायाके गुणनकूँ श्रंभीकार करे है गुणनसूँ न्यारे अजन्मा भगवान् कीड़ा करिके विश्वको उपजावै है पालन करे है संसारकरे है ४० जैसे वालक भाई भाई फिरै है तव वाकी दृष्टिफरे है तासों पृथ्वी फिरतीसी दिखाई देई है या प्रकार विच जो कर्त्ता है तामें अहंकारिके आत्मा सोभी कर्त्तासों दिखाई देई है ?

ये भगवान् श्रीकृष्ण तुम्हारे ही पुत्र नहीं हैं सबके पुत्र हैं आत्मा हैं पिता है माता है और ईश्वर है ४२ जो कछु देखिये में आवे और जो सुनिने में आवै जो कन्हु होय चुको और जो होय है और जो होइगो और जो बहुत स्यावर है जलम है जो कछु वड़ो छोड़ो है सो सप श्रीकृष्ण विना आतिशय करिके कथिये कूं योग्य नहीं है परमार्थरूप श्रीकृष्ण हैं सोई सर्वरूप हैं ४३ हे राजन् परीक्षित ! नन्दजी और श्रीकृष्ण के अनुचर उद्धवजीकों याही प्रकार चार्वा करत करत सब रात्रि वीतिगई गोपी प्रातःकाल उठिके दियास को चारिके देवरीन को पूजन करिके दही मयति भई ४४ दियास करिके प्रकाशमान जे मण्डिन के जड़ाऊ रहने हैं तिनसों सुन्दर लगत भई नेतीन कों लैंचे हैं तामसू भुजान में कढ़ण हलैं हैं नितम्भ जिनके हलन जाय हैं स्तनन पै दार हैं ते भी हलत जाय हैं कुण्डलन करिके प्रकाशमान कपोलैं अरुण केशकी खौरि जिनके मुखपै लगी है ४५ कमलदललोचन श्रीकृष्ण कूं गावैं जो गोपी हैं तिनको गीत स्वर्गपदन्त जातभयो दही के मयिने दहतकञ्च ॥ विनाञ्चुनादस्तुतरंगनाव्यं स एनसर्वपरमार्थभूतः ४३ एवं निशामाश्रुतोर्वीतीता नन्दस्य कृष्णानुचरस्य राजन् ॥ गोप्यः समुत्थाय

दह्यकञ्च ॥ विनाऽन्युनाद्वस्तुतानवाच्यं सएनसर्वपरमार्थभूतः ४३ एवंनिशामाश्रुतोर्व्यतीता नन्दस्यकृष्णानुचरस्यराजन् ॥ गोपयःसमुत्थाय

निरूप्यदीपान् वास्तून्समभ्यर्च्यदधीन्यगन्थन् ४४ तादीपदीप्तैर्मणिभिर्विरेजूरज्जुर्विकर्षद्भुजकङ्कणस्रजः ॥ चलन्निर्भस्वनहारकुरडलत्विष्यरूपो  
लारुणकुङ्कुमाननाः ४५ उह्नायतीनामरविन्दलोचनं ब्रजानानान्दिवमरपृशङ्खनिः ॥ दध्नश्चनिर्मन्थनशब्दमिश्रितोनिःस्पृतेयेनदिशाममङ्गलम्  
४६ भगवत्युदितेसूर्ये नन्दद्वाखिजौकसः ॥ हृद्भारंशातकौभ्यं कस्यायमितिचानुभू ४७ अक्रूआगतःकिंवायःकंसस्यार्थसाधकः ॥ येननीतो  
मधुरीकृष्णःकमललोचनः ४८ किंसाधयिष्यत्यस्माभिर्भर्तुःप्रीतस्यनिष्कृतिम् ॥ इतिस्त्रीणांवदन्तीनामुद्धवोऽगात्कुवाहिकः ४९ इति श्रीमद्भागवते  
महापराणोद्देशस्य कृष्णवर्द्धनन्दशोकपनयनं नाम पटत्रयार्षोऽध्यायः ४६ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

श्रीशक्रउवाच ॥ तंवीक्ष्यद्गुणानुचंभ्रंजस्त्रियः प्रलम्बवाहंनवकञ्जलोचनम् ॥ पतिताम्बापुष्पकमालिनंलसन्मुखारविन्दपरिमृष्टकुण्डलम् । शुचिस्मिन्तः

को जो शब्द है सो भी गतमें मिलिरह्यो है जिन गोपीन के गीतलें दिशान में सम्पूर्ण अमङ्गल दूर होय जाय है ४६ भगवान् सूर्य उदयभयो तब नन्दरायजी के दरवाजे पै सुनहरी साजको रथ ठाढ़ो देखिकै यह कौन को रथ है या प्रकार कहत भई ४७ कहा कंस के कार्य को साधक अनुर आयो है जो अक्रूर कमलदललोचन कृष्ण कूं मधुरा लैगयो हो अपने स्वामी कंसको मरवाय के अब क्यों आयो है कहा हमें लेजाय कै हमारे मासके पिण्ड बनायके देगयो या प्रकार गोपी आपुसमें बात करेहीं इतने में उद्धवजी सन्ध्योपासन करिकै आवतभये ४८ । ४९ इति श्रीमन्महाभा-  
गवतार्थखण्डपिण्यां दशमस्कन्धपञ्चविंशोऽध्यायः ४६ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

(सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः) ॥ बोधयित्वोद्धवस्तत्त्वमुज्ञाप्यामहुरीमं । सैतालीसर्वे अथ्यायं उद्धवजी कृष्णजी की आज्ञासे गोपियों को तत्त्व समझाकर आज्ञा लेकर पथरापुरी के उपकुण्ठादेशेनगोपिका ॥ अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! लक्ष्मी जिनकी भुजा नवीन कमल से जिनके नेत्र पीताम्बर की पहिरे कमल की जिनके गाला मकराश्रमान



मुखारविन्द्र स्वच्छ कानन में कुण्डल पहरे ऐसे कुण्ण के अनुचर उद्धवजी हैं तिन देखिके व्रज की स्त्री वड़ी आश्चर्य मानत भई १ सुन्दर है रूप जाको ऐसी यह कौन है कहा ते आयो है श्रीकुण्णचन्द्र के सो जाको वेपथै नैसेही गहनेन को पहरे है ऐसी सब गोपी श्रीकुण्ण के चरणारविन्द्र को जिनके आश्रय ऐसे उद्धवजी को चारों ओर ते घेरत भई अश्रनता करिके नह रहैं ऐसी गोपी लाज भरी हैं सनि चितवनि मीठी बोलनि सुं सत्कार जिनको क्रियो एकान्त आसन पै बैठे ऐसे उद्धवजी को श्रीकुण्ण के पास ते सन्देश लैके आयें हैं यह जानि कै पूछति भई २ । ३ यादवन के पति श्रीकुण्ण के तुम सेवकहो यह हम जानें हैं माता पिता के प्रसन्न करिजे के निमित्त तुम कुण्णमूं भेजे हो ४ यादवन में और ऐसों कोई नहीं है जो बाकों स्मरण आवै माता पिता को स्नेह बड़े वैराग्यवान् पुरुष पै भी नहीं छूटे है ५ औरन सों अपने कार्य के निमित्त भित्रता यहां जताई यावत्पर्यन्त काम परो तावत् भित्रता राखी जैसे पुरुष स्त्रीन ते प्यार करै और

कोऽयमपीच्यदर्शनः कुतश्चकस्याच्युतवेपथूषणः ॥ इतिमसर्वाः परिवृक्षस्तुकास्तमुत्तमश्लोकपदाम्बुजाश्रयम् २ तं प्रश्रेणाननताः सुप्रकृतं सब्रीडहामे क्षणमूढतादिभिः ॥ रहस्यपृच्छन्नुपविष्टमासने विज्ञायसन्देशहरं मापतेः ३ जानीमस्त्वांगदुपतेः पापिदंसमुपागतम् ॥ भर्त्रेहप्रेपितः पित्रोर्भवान्प्रियचिकीर्षया ४ अन्यथागोव्रजेतस्य स्मरणीयं न चक्ष्महे ॥ स्नेहानुमधोवन्धूनां मुनेरपिमुदुस्त्यजः ५ अन्येष्वर्थकृताभैत्री यावदर्थविडम्बनम् ॥ पुमिभः स्त्रीपुक्त्तना यद्धरमुमनस्स्ववपट्पदैः ६ निःस्वन्यजन्तिगाणि काजकल्पं नृपतिं प्रजाः ॥ अश्रीतविद्या आचार्यमृत्विजोदत्तदक्षिणम् ७ खगावीतफलं वृक्षं भुक्त्वा चातिथयो गृहम् ॥ दग्धं भृगास्तथाऽरण्यं जारो भुक्त्वा रतां स्त्रियम् ८ इति गोप्यो हि गोविन्दे गतवाकायमानसाः ॥ कुण्णदूते व्रजं याते उद्धयेत्यक्लौकिकाः ९ गायन्त्यः प्रियकर्मणि रुदन्त्यश्च गतिह्रियः ॥ तस्य संस्पृश्य संस्पृश्य यानिकैशोश्चाल्ययोः १० काचिन्मधुकं हृष्टा ध्यायन्ती कुण्णसङ्गमम् ॥ प्रियप्रस्थापि तंदूनं कल्पयित्वेदमब्रवीत् ११ गोप्युवाच ॥ मधुपकितवन्वो मास्पृशामि सपत्न्याः कुचविलुलितमालाकुङ्कुमश्रुभिर्नः ॥ वहतुमधुपतिस्तन्मानिनी

भौरा फूलनसूं प्यार करे हैं या चिय या कुण्णेन हम से प्रीति करीरही परन्तु दरिद्री पुरुषहूं जैसे वेश्या त्यागे हैं असमर्थ राजाहूं जैसे प्रजा त्यागे हैं और विद्यार्थी जैसे विद्या पढ़िके गुरुको त्यागे हैं और दक्षिणा पासकै पुरोहित जैसे यजमान को त्यागे हैं ६।७ पत्नी जैसे फलनिवृत्त वृत्तकों छोड़े हैं अभ्यागत भोजन करिके जैसे गृहकों त्यागे हैं हरिण जलेहूये वनकों जैसे त्यागे हैं जार पुरुष भोग करिके जैसे स्त्री को त्यागे हैं या प्रकार कुण्ण हम को त्यागि गयो ८ श्रीकुण्ण के दूत उद्धवजी व्रज में आयो ता समय गोपीन की बाणी देव मन कुण्ण गोविन्द में जाय लगे लौकिक व्यवहार खानपानादिक सब छूटि गये ९ प्यारे के कर्मन हूं गावे हैं श्रीकुण्ण के विशोर और बालअवस्था के जे चरित्र है तिनको स्मरण करिके लाज त्यागि के रुदन करत उद्धव जी ते पूछत भई कोई एक गोपी उद्धव जी को स्वरूप देखिके श्रीकुण्ण के सन्न को ध्यान करिके प्योगेने प्रसन्न करिजे के निमित्त दूत भेजो है ताव अपर मानि कै यह बोलत भई १० । ११ हे मधु ! अर्थात् पुष्पनके रसके पीनवारे ! हे कपटी कुण्ण के मित्र ! हमारे चरणनहूं स्पर्श मति करै प्यारा को देह तो कारो और मुस पारो होय है याकों देखिके कहै है सौति के कुचन सों मीठी

ऐसी जो पुष्पन की माला ताकी केशर तेरी दाढ़ी मूछन साँ लगी है जो तू स्पर्श करेगो तो स्नान करिबो होयगो कदाचित् कहे कि मैं तुम्हारे प्रसन्न करिबे कौं कृष्णसूं भेजो हूँ तहां गोपी कहे है वे जो मथुराकी स्त्री हैं तिनहीं कूं प्रसन्न करौ जैसे तू हमारे पास आयो है ऐसीही यादवन की स्त्रीनके पास जात होयगो कृष्ण को दूत ऐसेो निलिजगै है १२ गोपियो ऐसेो तुम वा कृष्णको क्यौं अनादर करो ही बाने तुम्हारी कहा अनादर करयो है तहा कहे है मोहन करनवारो अपनी अधरायुतहै ताय एक वेर प्यायकै तू जैसे फूलन कौं ब्योढ़ि देइ है ऐसे वह कृष्ण तुरत हमें ब्योढ़ि देत भयो लक्ष्मी वा कृष्ण के चरणकमलकं कैसे सेवन करे है तहा कहे है मैंने जानिलीनी कृष्ण के भीठे वचनसूं वाको चित्त हरयो गयो है तसूं वह परी रहै है १३ बहुत भ्रंशुं शब्दकरै जो भौरा है ताय हमारे प्रसन्न करिबे के लिये कृष्णकूं गावे है यह मानिकै कहे है हे छः पांव के भौरा ! देख पशु जितने हैं ते चार पांव के हैं तू छःपांवको है याते तू डेढ़ पशुहै कैसे कहा गावे है सो तू नहीं जाने है यादवन को पति कृष्ण ताको तू हमारे आगे बहुत गावे है बहुत पुरानो है हमारो देखो भारो है और सखी गायको अपने घरमें बैठो होय ताकूं अच्छो छगै है जा दिनने ते

नांप्रसादं यदुसदसिविडग्भ्यं यस्य दूतस्त्वमीदृक् १२ सकृदधसुधांस्वांमोहिर्नापाययित्वा सुमनसद्वसद्यस्तत्यजेऽस्मान्भवामृक् ॥ परिचरातिकथंतत्पादपद्मं तुपद्मा ह्यपिवतहतचेता उत्तमश्लोकजल्पैः १३ किमिह बहुषडङ्गे गायसित्वं यदूनामधिपतिमगृहाणमग्रतो नः पुराणम् ॥ विजयसवसखीनां गीयांत त्प्रसङ्गः क्षपितकुचरुजस्ते कल्पयन्तीष्टमिष्टाः १४ दिविभुविचरसायां कांस्त्रियस्तनुरापाः कपटशुचिरहासञ्चू विजृम्भस्ययाः स्युः ॥ चरणरजउपास्ते यस्य भूतिर्वयं का अपि च कृष्णपक्षे ह्युत्तमश्लोकशब्दः १५ विमृजशिरसि पादं वेद्म्यहं चाटुकारैस्तु नयविदुषस्तेऽभ्येत्यदौत्यैर्मुकुन्दात् ॥ स्मरुनद्विह विमुष्टापत्यपत्यन्यलोकाव्यमृजदकृतचेताः किन्नुसन्धेयमस्मिन् १६ मृगशुरिव कपीन्द्रं विव्यधे लुब्धधर्मा स्त्रियमकृतविरूपास्त्रीजितः कामयानाम् ॥ बलिमपि बलिम

कृष्ण मथुरा गये हैं ता दिन ते हमारे घरहै न बार है हमपै ते तू कहा लियो चारहै जो तेरो गायबो सुनै तोकूं रीभदेयै एक ठौर तोकों बतावे हैं वहां जा अर्जुन को सत्वा कृष्ण ताकी सखी मथुराकी स्त्री हैं उनके आगे वाको प्रसन्न तू गाउ मथुरा की स्त्रीनके कुचन के रोग अगये हैं कृष्णकी थारी स्त्री तोकों रीभदेइगी १४ माला ऐसे मति कबो तेरी सुधि करिकै कामदेव ते व्याकुल होयकै तोइ प्रसन्न करिबे के लिये मैं भेजो गयोहौं तहां गोपी कहे हैं कपट करिकै रुचिर जाकी हासी भ्रुकुटीन की चढ़नि ऐसो जो कृष्ण है ताकों स्वर्ग में पृथ्वी में म्सातल में जे स्त्री हैं ते कौनसी नापैद हैं लक्ष्मी जाके चरणनकी रजको सेवन करे हैं तहा हमारी कहां चलै है भौरा वा कृष्णको उचपरलोक यह नाम सुनो है जब हम गरीबिनीनकी सुधि लेयगो तब यह नाम रहैगो नहीं तो जात रहैगो १५ अपने पावन साँ लगो ऐसो जो भौराहै ताय हमपै क्षमा करायेकूं आयो है ऐसे मानिकै गोपी कहे हैं अपने शिरकों धरे पावन में ते उठायले पावन में ते नहीं उठे ऐसो जो भौरा है तासूं कहे है मुकुन्द तैं सीलकै दूत वर्गमन सरिकै प्यारे दवन धी जो रचना है तिनकरिकै मनाइवे मैं चलुर जो तू है ताते तेरी सम्पूर्ण वातमें जानूं हू जब कभऊं रास में मान करती तब अपनी मुकुट उतारिकै हमारे चरणनमें धरतो बहुत खुशामद करतो जैसे वाकी वातनको विश्वास नहीं आवै है ऐसी तेरी वातन को विश्वास नहीं आवै है क्योँजी ऐसो बाने कहा

अपराध कियो है तहां गोपी कहे हैं या ससार में कृष्ण के लिये पति पुत्र यह लोक परलोक सब हमने त्यागि दियो जाकों मनको ठिकानो नहीं ऐसो कृष्ण हमको त्यागि कै चलो गयो अब वाते हम कहा पिलाप करें या प्रकार गोपी कहत भई १६ कृष्ण के पहिले कर्मन की सुधि करिकै हम या कृष्णते भय करे हैं यह वर्णन करे हैं हे भौरा ! कारे रत्न के जे हैं तिनकी कथा हमने सुनि राखी है पहिले अयोध्या में दशरथ को पुत्र राम भयो ताने सुग्रीव की ओर होयकै बधिककी तुल्य बालि काँ माखो व्याध तो मास खायेवे के कारण मारे हैं याने तो व्यर्थही मारयो बन्दर को कोई मांसहू नहीं खाये दूरीदल श्याम राम के सुन्दर रूप पै रीकै रावण की बहिन शूर्पणखा आई सीताके वश होयकै लक्ष्मणकै सिखायकै वाके नाक कान काटि लिये दूसरे कारे रत्न को बामन रूप भयो वह राजा बलि पै तें तीन पाँव पृथ्वी के मिय सब पृथ्वी लैके कांड कांड करिकै जैसे कौआ घर घेरले हैं तैसे वाकों बांधत भयो तातें हम कारेन की मित्रता संपूर्ण भई अब कदाचिद् भूलिकै कारेन तें मित्रता न करैगी उद्धवजी कहे हैं जब तें मैं आयो हों तवतें वाहीकी नातकों कहो हौ तहां गोपी कहे हैं जैसे वामें और गुण हैं तैसे यह अवगुण हैं वाकू दुःखदायी जानें हैं तथापि वाकी बात हम पै छूटे नहीं है १७ कछु गोपी और कहे है यह बात हम जाने हैं कृष्णकी कथा धर्म अर्थ कामकी जह है ताकी उखारनवारी है तथापि हम पै त्यागी नहीं जाय है

त्वाऽवेष्टयद्धाङ्गवद्यस्तदलमसितसखैर्दुस्सजस्तत्कथार्थः १७ यदनुचरितलीलाकर्णपीयूषविभ्रुट्मसृष्टद्वनिविधूतद्वन्द्वधर्माविनष्टाः ॥ सपदिगृहकुटुम्बं दीनमुत्तमृज्यदीनानवहवद्विहङ्गाभिस्तुचर्याचरन्ति १८ वयमृतमित्राजिह्मव्याहृतं श्रद्धानाः कुलिकरुतमिवाज्ञाः कृष्णवधो हरिण्यः ॥ ददृशुस्सकृदेन तन्नखस्पर्शतीव्रस्मरुजउपमन्त्रिन्भणयतामन्यनात् १९ प्रिगसखपुनरागाः प्रेयसाप्रेपितः किं वयमिदमनुरुन्धेमाननीयोऽसि मेऽङ्ग ॥ नयसि कथमिहास्मा बृद्धस्सजद्वन्द्वपार्ष्वं सततमुत्सिसौम्यश्रीवर्धः साकमास्ते २० अपि वतमधुगुर्मार्थपुत्रोऽधुनास्ते स्मरतिसपितृगेहान् सौम्यवन्धूंश्च गोगान् ॥ क्वचिदपि

देखो जा श्रीकृष्णको लीलाचरित्ररूपी अमृत सो कानन कूं अतिप्रिय अमृत ताकी जो कणिका ताकूं एक बार सेवन करनेसों दूर भये हैं रागादिक जिनके याही ते असवकी तुल्य ऐसे जे पुरुष हैं ते दुःखरूप जे पुत्र पौत्रादिक हैं तिनकों त्यागि कै भोगनकों छोड़ि कै पत्नी की तुल्य घर घर भीख मांगत डोले हैं १८ भौरा कहे हैं ऐसे अब क्यों कहो हौ पहिलेही ता कृष्ण के सङ्ग एकान्त में क्यों न कहत भई तापर गोपी कहे हैं जैसे अज्ञानिनी कृष्णसार हरिण की स्त्री हरिणी वनिके गीतसूं मोहितहोय घायल होय हैं ऐसे हम वा कपटी कृष्णको वचन सत्य मानिकै यह देखत भई कहा जाके नखनके स्पर्श तें बड़ी कामदेव की पीड़ा भई है उपमान्त्रिन् अर्थात् दूत ! वा कपटी की बात जान दे और जान दे और वात कहे १९ इत उत फिर फिराय कै फेरि आयो जो भौरा है तासूं कहे हैं हे प्यारे के सखा ! तू फेरि आयो तो कूं प्यारे कृष्ण ने भेजो है कहा है दूत ! मोकूं पूजा करिबे योग्य है जो तेरे इच्छाहोय सो नर मागिले लक्ष्मी सों संग जाको छूटे नहीं ऐसे कृष्ण के पास हमें ले जायो चाहे है हे भौरा ! वह लक्ष्मी सर्वदा संग रहे है तथापि छाती पै चढ़े है वाकूं दूर करियो तब हम चलैगी २० मथुरापुरी में सुशो नन्दको पुत्र कहा अब रहे है हे भौरा ! कभजं वाकों अपने पाता पिता नन्दको स्मरण आवे है और अपने भय्या वन्धन की सुनि करे है और कभज गोपीनको स्मरण करे है कभजं वह कृष्ण हम दासीनकी बात चलावे है अगरकी तुल्य जामें सुगन्धि ऐसी

अपनी धुआँ हमारे शिर पर कभज आग के रँगो २१ अथ श्रीशुद्धवती कहै हैं हे राजनररीचित्र ! या प्रकार उद्धवजी श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन की चाहना गोपीन की सुनि कै प्यारे श्रीकृष्ण के सन्देशनय संपभक्त भये २२ उद्धवजी गोपीनसू कहै हैं तुम ने वासुदेव भगवान् श्रीकृष्ण में मन लगायो है अहो गोपियो ! तुम निरचय करिके कृतार्थ भई और लो कर्म तुम्हारी यशहोयगो २३ दान द्रत तप होय जप वेदपाठ इन्द्रियन को रोकियो और अनेक प्रकार के यत्नगण के उपाय सब करिने को फल यही है जो कृष्ण में भक्ति होय २४ वड़े मुनीश्वरन को दुर्लभ ऐसी भक्ति तुम ने उत्तमरलोच भगवान् श्रीकृष्ण में करी यह वड़ो मंगल है २५ पुत्र पति देह भय्या वन्धु घरन कूँ त्यागिके परमपुरुष भगवान् श्रीकृष्ण तुम ने पतिकरे यह वड़ो मङ्गल भयो २६ हे वङ्ग-भागिनियो ! इन्द्रियन को जिनमें गमन नहीं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र में विरह सँ एकांत भक्ति तुम्हारे भई यह तुमने भरे ऊपर वड़ो अनुग्रह कियो २७ तुमकों सुख देनवारो ऐसो प्यारे को सन्देश सकथानःक्रिङ्करीणांगुणिते भुजमगुरुमुगन्धसून्ध्यास्यत्कदानु २१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ अथोद्धवोनिशम्यैवं कृष्णदर्शनलालसाः ॥ सान्त्वयन्

प्रियसन्देशैर्गोपीरिदमभापन २२ ॥ उद्धवउवाच ॥ अहोयूयंसमपूर्णार्थाभवत्ये लोकपूजिताः ॥ वासुदेवभगवतियासामित्यर्पितमनः २३ दानव ततपोहोमजपस्वाध्यायसंयमैः ॥ श्रेयोभिविविधैश्चान्यैः कृष्णेभक्तिर्हि साध्यते २४ भगवत्युत्तमरलोके भवतीभिरनुत्तमा ॥ भक्तिः प्रवर्त्तितादिष्ट्या मुनीनामपि दुर्लभा २५ दिष्ट्यापुत्रान्पतीन्वेदेहान् स्वजनान् भवनानि च ॥ हित्वा वृणीतयूयं यत् कृष्णारुणं पुरुषं परम् २६ सर्व्वार्त्तमावोऽधिकृतो भवती नाम बोधये ॥ विरहेण महाभागा महान्मेऽनुग्रहः कृतः २७ श्रूयतां प्रिय सन्देशो भवतीनां सुखावहः ॥ यमादायागतो भद्रा अहं भर्तृहस्करः २८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ भवतीनां वियोगो मे न हिसर्वात्मना क्वचित् ॥ यथाभूतानि भूतेषु खंवाय्वग्निर्जलं मही ॥ तथाऽहं च मनः प्राणभूतेन्द्रियगुणाश्च यः २९ आत्मन्येवात्मनात्मानं मृजेह न्यनुपालये ॥ आत्ममायाऽनुभावेन भूतेन्द्रियगुणात्मना ३० आत्माज्ञानमयः शुद्धो व्यतिरिक्तोऽगुणान्वयः ॥ सुषुप्ति

स्वप्न जाग्रद्विर्मायावृत्तिगिरियने ३१ येनेन्द्रियार्थान् न्ध्यायेत सृष्टास्वप्नमदुत्थितः ॥ तत्रिरुन्ध्यादिन्द्रियाणि विनिद्रः प्रत्यपद्यत ३२ एतदन्तःसमाप्तायोगः सुप्तो श्रीकृष्ण के रहस्य कार्य के करनवारे ऐसे सन्देश कूँ लै है मङ्गलरूपिणियो ! मैं आगो हों २८ अथ भगवान् गोपीन कूँ उपदेश करै हैं सब को उपादानकारण मैं हूँ ऐसे मोसों तुम कभज दूरि नहीं हो जैसे आकाश पवन तेज जल पृथ्वी ये पञ्चतत्त्व समस्त प्राणीन के देहमें रहे हैं तैसे मन प्राण पञ्चभूत इन्द्रिय और गुण इनको आश्रय हूँ २९ अपनो मैं अपने करिके अपने कूँ उत्पन्न करूँ हूँ संसार और पालन करूँ हूँ अपनी माया के प्रभाव करिके पञ्चभूत इन्द्रिय तीनों गुण इन रूप जो अपनयो है ता करिके सृष्टिकू उत्पन्न पालन प्रलय करूँ हूँ ३० यहा एक शब्दा है आत्मा पञ्चभूत रूप होय तो वाकूँ पञ्चभूतन के सदा दोष लगे है तदा उत्तर करै हैं आत्मा तो शुद्ध है कोहे ते माया के गुणन में जाय है सब ते न्यारो है ज्ञानरूप है अहंकार ते जानिने में आवे ऐसे आत्मा की न्यारी अवस्था है शुद्धता कैसे तहाँ करै हैं सुषुप्ति स्वप्न जाग्रत ये जो मनकी वृत्ति हैं तिनसँ प्रतीत होय है आपसू नहीं है ३१ अनेक अवस्था यानूँ प्रतीत होय है मन

के रुकिते में जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अवस्था जातिरहे हैं यह दिखायवे कूं मन को निरोध विधान करे हैं जागिके जैसे मिथ्या स्वप्ने को ध्यान करे है ऐसे मिथ्या विषयन कूं जा मनसूं विचार करिके इन्द्रियन कूं पावै है ता मनकूं आलस्य छोड़िके रोको मन जब जाको रुकै है तब कृतार्थ होय है यह कहै है वेद पदे को अष्टांगयोग करे को आत्मा अनतमाके विचारकरे को त्याग तप इन्द्रियन को जीतिवो सांच वोलिवो इत्यादि कर्मन सू विवेकीन को मन रुकै यही फल है जैसे नदीनको अन्त समुद्र में होय है ३२ । ३३ प्यारे में तुम्हारी दृष्टि सें दूर करूं हूं सो तुम्हारी मन भरे विषे लाग्यो रहै और मेरो ध्यान करौ तौ करती वर दूर रहूं हूं जैसे दूर रहे जो प्यारो तामें स्त्री को मन लग्यो रहे है ऐसो जो नेत्रन के आगे रहै तामें चित्त नहीं रहे है ३४ । ३५ दूरी हैं सम्पूर्ण वृत्ति जाकी ऐसे मनकों मो कृष्ण में लगायकै नित्य मेरो ध्यान करती रहोगी तौ शीघ्र मोकूं प्राप्त होउगी ३६ रात्रि में वनमें विहार करनेमें हूं ता भरे सङ्ग नहीं प्राप्त भयो है रास जिनकों ऐसी

साङ्ख्यंमनीषिणाम् ॥ त्यागस्तपोदमःसत्यं समुद्रान्ताद्वापगाः ३३ यत्त्वंहंभवतीनां वै दूरेवत्तेप्रियोदृशाम् ॥ मनसःसन्निकर्षार्थमदनुध्यानकाम्यया ३४ यथादूरचरेप्रेष्ठे मनआविश्यवर्त्तते ॥ स्त्रीणाञ्चनतथाचेतःसन्निष्ठेऽक्षगोचरे ३५ मर्यावेश्यमनःकृत्स्नं विमुक्ताशेषवृत्तियत् ॥ अनुस्मरन्त्योमां नित्यमचिरान्मामुपैष्यथ ३६ यामयाकीडिताराज्यां वनेऽस्मिन्त्रजआस्थिताः ॥ अलब्धरासाः कल्याणयोमापुर्मर्द्वीर्यचिन्तया ३७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंप्रियतमादिष्टमाकर्ण्यत्रजयोषितः ॥ ताऊनुरुद्धवंप्रीतास्तत्सन्देशागतस्मृतीः ३८ ॥ गोप्यऊचुः ॥ दिष्ट्याऽहितोहतःकंसोयदूनांसानुगोऽवकृत् ॥ दिष्ट्वात्सैलब्धसन्वर्धैः कुशल्यस्तेऽव्युतोऽधुना ३९ कश्चिद्द्राग्रजःसौम्यकरोतिपुरयोपिताम् ॥ प्रीतिनःस्निग्धसत्रीदहासोदोरक्षणाञ्चितः ४० कथंर तिविशेषज्ञः प्रियश्चवरयोषिताम् ॥ नानुबध्येततद्वाक्यैर्विभ्रमैश्चानुपूजितः ४१ अपिस्मरतिनःसाधो गोविन्दःप्रस्तुतेकचित् ॥ गोष्ठीमध्येपुरस्त्रीणां ग्रा म्याःस्वैरकथान्तरे ४२ ताःकिंनिशाःस्मरतियामुतदाप्रियाभिर्बृन्दावनेकुमुदकुन्ददशशङ्करभ्ये ॥ रेमेक्षणचरणनूपुरासगोष्ठ्यामस्माभिरीडितमनोज्ञक

गोपी पतिन की रोकी वृज में रहैं ते हे मंगलरूपिणियो ! मेरी लीलान को ध्यानकरि करिके मोहीं कूं पावतभई ३७ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजनपरीक्षित ! या प्रकार प्यारे श्रीकृष्णने उगदेश करो ताप श्रवण करिके व्रजकी स्त्री गोपी प्रसन्न होय के उद्धवजीसां बोलतभई ३८ अब सम्पूर्ण गोपी कहे हैं कृष्णके सन्देशनसूं स्मरण जिनकों होय आयो यादवन कों दुःख को देनवारो अपने भृत्यन सहित वैरी कंस मरयो यह वडो मंगल भयो पाये हैं सम्पूर्ण मनोरथ जिनने ऐसे हितून सरित श्रीकृष्ण प्रसन्नहैं यह वडो मंगल भयो ३९ हे साधु उद्धव ! गदको वडो मर्या कृष्ण हमसूं जो प्रीति करै हो सो प्रीति कहा मथुरा की स्त्रीनसूं करे हैं वे सुन्दर लाजभरी हैंसनि उदरभरी चितवनिसूं वाको सत्कार करे हैं ४० रतिविशेष को जाननवारो प्यारो कृष्ण मथुराकी स्त्रीनके वचनसूं विलासनसूं जब सत्कार करेगी तब कैसे न वधिगो ४१ हे साधु उद्धव ! गोविंद कभऊं प्रसंग पायकै मथुराकी स्त्रीनकी सभामें बैठिके जब वोलैं करे हैं तब गांवकी स्त्री जो हमतिनकी कभऊं बात स्मरण करे हैं ४२ उद्धवजी श्रीकृष्णकों कभऊं उन रात्रिनको स्मरण आवै है जिनमें कुमोदनी कुन्द फूल रहे चन्द्रमाकी चांदनी सों रमणीय वृन्दावन है तामें पावन में भोजन २ नूपुर वज्र

जायें रास में हम जो प्यारी हैं तिनके सङ्ग रपण करत भयो सो कदाचित् स्मरण करे है या नहीं ४३ हम जाकी सब मनोहर कथान कूं गावे हैं जैसे श्रीकृष्णतुलरि दृश्य जो उन है ताके सिञ्चन करिवे कों जैसे इन्द्र आवे है तैसे वा कृष्ण के लिये जो शोक है तासूं पत्तरी भई जो हृष्य है तिनकूं हाथके स्पर्श करिके जीवन कारत दायाहं वंशोत्पन्न श्रीकृष्ण कभजं यद्वा आत्रेयो या नहीं यह गोपी कहे हैं ४४ और गोपी कहे हैं आवैगो २ यह करा लागाई है कृष्ण यहाँ काहे कों आवैगो अब चाकों राज्य मिल गयो है शत्रु मारि लियो है राजानकी कन्या व्याधि लीनी हैं प्रसन्न हैं सब मित्र चाके पास हैं अब यहाँ कहा करेगो ४५ और गोपी कहे हैं वीर लक्ष्मी को पति सब बल जाकों प्राप्त याहीने परिपूर्ण ऐसो जो कृष्ण ताकूं वनकी रहनवारी हम हैं तिनसूं और राजानकी कन्या हैं तिन सूं कहा प्रयोजन है ४६ आशा को त्याग है सोई चढ़ो सुख है यह पिंगळा वेश्याने एकादश में बध्नों है निराशा वरावर सुख नहीं है यह जाने हैं तथापि कृष्ण ते हमारी आशा छुटे नहीं है ४७ कृष्णकी एकान्त की, जो बात है ताय त्यागिबे कों कौन समर्थ होयगो चाके राखिवे की इच्छा नहीं तथापि लक्ष्मी अंग में तें भ्यारी नहीं होय है ४८ उद्धव ता कृष्ण कूं हम भूलि जायें तो दुः-

थःकदाचित् ४३ अप्येव्यतीहिदाशार्हस्तसाःस्वकृतयाशुचा ॥ सखीवयन्नुनोगात्रैथेन्द्रोवनमम्बुदैः ४४ कस्मात्कृष्णइहायाति प्रातराज्योदृताहितः ॥  
नरेन्द्रकन्याउद्धाह्य भीतःसर्वमुहद्वनः ४५ किमस्माभिर्वनौकोभिरन्याभिर्वाग्महात्मनः ॥ श्रीपतेरासकामस्य क्रियेतार्थःकृनात्मनः ४६ परं सौख्यं हि नैरा  
श्यं स्वैरिरयग्याहपिङ्गला ॥ तज्जानतीनांनःकृष्णे तथाप्याशादुत्तरया ४७ कउत्सहेतसंत्यक्तुमुत्तमश्लोकसंविदम् ॥ अनिच्छतोऽपियस्य श्रीरङ्गान्नञ्चय  
वतेक्काचित् ४८ सरिच्छैलवनोद्देशागावोवेणुखाहमे ॥ सङ्कर्षणसहायेन कृष्णेनाचरिताःप्रभो ४९ पुनःपुनःस्मारयन्ति नन्दगोपसुतंवत ॥ श्रीनिकेतै  
स्तरपदकैर्विस्मर्तुनैवशक्नुमः ५० गत्याललितयोदारहासलीलावलोकनैः ॥ माध्यागिराहृतधियः कथं तद्विस्मरामहे ५१ हेनाथहेरमानाथ व्रजनाथान्ति  
नाशन ॥ मग्नमुद्धरगोविन्द गोकुलं वृजिनार्णवात् ५२ श्रीशुकउवाच ॥ ततस्ताःकृष्णसन्देशैर्व्यपेतविरहज्वराः ॥ उद्धवंपूजयाश्चक्रुर्ज्ञात्वात्मानमभो

खन होय सो भूलनो हमकूं नहीं होय है यह गोपी कहे हैं हे प्रभु उद्धव ! हम विचारी कहूं दो घरी कूं जायें परन्तु वाकूं भूले नहीं हैं कदाचित् यमुना पै जायें तो बाकी कारी लहर हमें लायवे कों दौरे हैं जब गोवर्द्धन पति कूं देखे हैं तब सुधि आय जाय है वही गोवर्द्धन है जाहि सात दिन हाथ पै राख्यो फेर वन और गौवन में जायें हैं तब सुधि आय जाय है जिनें थोरी घूमरि कहिके बुलावै हो फेरि वाँसुरी श्रवण करे चाकी सुधि आय जाय है चाकों कैसे भूलैं जाने बलदेव जी कूं सँग लैके ऐसे आचरण करे हैं ४९ हे उद्धवजी ! नन्द गोप को पुत्र जो कृष्ण है ताके सुन्दर शोभायमान जो चरणन के खोज हैं तिनकूं देखि कै भूलिवे कूं समर्थ नहीं होय हैं विरह में बारबार स्मरण करावै हैं ५० मनोहर जिनकी चलनि उदार हैं सनि लीलापूर्वक चितवनि मनोहर वचन इन सूं हमारी बुद्धि हरि छीनी वा कृष्ण कूं कैसे भूलैं ५१ अब तो मथुरा की ओर हाथ उठाय के पुकारत भई हे नाथ ! हे व्रजनाथ ! हे व्रजनाथ ! हे दुःखन के दूरकरनवारे ! हे गोविन्द ! यह नाम तो गौवन को पालन करोगे तवहीं रहेगो नहीं तो या नामकों हाथ भारि बैठो और जा समय इन्द्र वर्षों तब यह सकल्य करयो हो कि अपने व्रजकी मैं रक्षा करूँगो सो अब तो तुम्हारे ही विरह



रूप समुद्र में गोकुल दूबो जाय है शीघ्र आय कै थाको उद्धार करो ५२ अथ श्रीशुवदेव जी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! श्रीकृष्ण के संदेशनसू दूर भये हैं विरह के ताप जिनके ऐसी गोपी श्री कृष्ण को परमेश्वर जानि कै और परमेश्वर को आपनो आत्मा निश्चय करिके उद्धृत जी की पूजा करतभई ५३ गोपीन के शोक दूर करिवेके निमित्त कितनेहु मास उद्धृत जी व्रगमें वास करत भये कृष्णचन्द्र की लीला कथा गाय गाय के व्रजवासीन कूं आनन्द देत भये ५४ जितने दिन पर्यन्त उद्धृत जी नन्द के व्रज में वसे उतने दिन व्रजवासीन कों कृष्ण की वातनसू क्षण समान बीतत भये ५५ नदी वन पर्वत गुफा पुष्पितवृक्ष इत्यादिकन कूं देखिके हरिदास उद्धृत जी व्रजवासीन कों श्रीकृष्ण कों स्मरण करावत भये ५६ गोपीन के चित्तकूं या प्रकार श्रीकृष्ण में लगिबो है तासूं मन की व्याकुलता देखिके परमपसन्न होय के उद्धृत जी गोपीन कूं दण्डवत् करत बोलातभये ५७ इन गोपन की स्त्रीन को पृथ्वी पै जन्म सफल है काहे से सबके आत्मा जो गोविन्द

क्षजम् ५३ उवासकतिचिन्मासान् गोपीनां विनुदञ्जुचः ॥ कृष्णलीलाकथाङ्गायन् रमयामास गोकुलम् ५४ यावन्त्यहानि नन्दस्य ब्रजेऽवासीत् स उद्धृतः ॥

ब्रजौ कसांक्षणप्रायासन् कृष्णस्य वर्त्तया ५५ सरिद्धनगिरिदोणीर्वीक्षन् कुसुमिताम्बुमान् ॥ कृष्णं संस्मारयन् मे हरिदासो ब्रजौ कसाम् ५६ दृष्ट्वैवमादि

गोपीनां कृष्णवेशात्मविक्रमम् ॥ उद्धृतः परमप्रीतिस्तानमस्य निदंजगौ ५७ एताः परंतनुभृतो भुवि गोपबन्धो गोविन्द एव निखिलात्मनि रूढभावाः ॥ वाञ्छ

न्ति यद्धवाभियोगो भुनयो वयञ्च किञ्च जन्मभिरनन्तकथारसस्य ५८ केमाः स्त्रियो वनचरीऽर्थभिचारदुष्टाः कृष्णे क्वैव परमात्मनि रूढभावाः ॥ नन्वीश्वरोऽ

नु भजतोऽविदुषोऽपि साक्षाच्छ्रेयस्तनोत्यगदराज इवोपयुक्तः ५९ नायां श्रियोऽङ्ग उ नितान्तरतः प्रसादः स्वयोऽपि तानलिनगन्धर्वान् कुतोऽन्याः ॥ रासोत्सवे

ऽस्य भुजदण्डगृहीतकण्ठलब्धशिषां यददगाद्भवत्त्वर्चनाम् ६० आसामहो चरणेषु जुपामहं स्यां वृन्दावने किमपि गुल्मलतौ पथीनाम् ॥ यादुस्त्यजं स्वज

नमार्थपथं च हित्वा भेजुर्मुकुन्दपदवीं श्रुतिभिर्विष्णुयाम् ६१ यवैश्रियाऽर्चितमजादिभिरासकामैर्योगैश्चरैरपि यदात्मनिरासोऽप्युज्याम् ॥ कृष्णस्य तद्

है तिन में इन को परमभेम भयो है जा मेम कूं ससार तें भयभीत जे मुमुक्षु पुरुष हैं और मुक्त हैं ते इच्छा करे हैं अनन्त श्रीकृष्ण की कथा में जा पुरुष को अनुराग है वाकूं ब्रह्म जन्म सूं कहा प्रयोजन है अथवा एक तो शुद्ध माता पितासूं द्वितीय गायत्री उपदेश सूं तृतीय यज्ञदीक्षा सूं जे ब्राह्मण के तीन जन्म हैं तिनसूं कहा प्रयोजन है ५८ वृन्दावन की विचरनवारी व्यभिचारदृष्टि हरि है दूषित गोपी स्त्री कहों और परमात्मा श्रीकृष्ण में है आलङ्घ्यमान जिनके निरन्तर भगवान् को स्मरण करे हैं ऐसे अज्ञानी पुरुष को भी कल्याण करे हैं जैसे कोई मनुष्य अमृत को सेवन करे यह अमर होय है ५९ सर्वकाल अंग में रही आवै ऐसी लक्ष्मी पै भी यह प्रसन्नता न भई और कमल के गन्ध कीसी है कान्ति जिनकी ऐसी देवगानान कूं जो प्रसाद नहीं मिले सो रासके उत्सव में श्रीकृष्ण के युजदण्डनसूं गलवाहीं लगाय कै पाये हैं मनोरथ जिनने ऐसी व्रजसुन्दरीन कूं मिलत भयो ६० इन गोपीन के चरणरज को सेवन करनवारो वृन्दावन में गुल्म लता ओषधिन में ऋतु मेरो जन्म होव जे गोपी छोड़ी न जायें ऐसे अपने भय्या वन्धु वड़ेन को जो मार्ग है ताकों त्यागि के वेद जाकों हैं ऐसे मुकुन्द श्रीकृष्ण

के मार्ग कू सेवन करत भई ६१ लक्ष्मी ने जाकी पूजन करो और पूर्ण हैं काम जिनके ऐसे द्रष्टादिकन ने जा चरणारविन्द को पूजन करो योगेश्वरने अपने विषे जाको पूजन करो ऐसे श्रीकृष्ण भगवान् के चरणारविन्द कूं राससभा में स्तनन के ऊपर धरि के आलिङ्गन करिकै ताप कों दूर करत भई ६२ नन्द के व्रजकी स्त्रीन ने चरण की रज कों वारंवार नमस्कार कइं हू जिन गोपीन ने हरिकथा जो गाई है सो तिनो लोकन कों पवित्र करे है ६३ अथ श्रीशुभदेव जी कहे हैं हे राजनारीनिवृत्त ! याके पीछे गोपीन सूं यशोदाजी सूं नन्दराय जो गोपन सूं आशा मोंगि के दाशार्दवशोत्पन्न उद्धव जी गमन समय रथ में बैठत भये ६४ उद्धव जी के विदा होने समय नन्दराय जी सूं आदि लोक समस्तग्रजबासी अनेकप्रकार की भेटन कों हाथ में लैके उद्धव जी के पास आय कैं स्नेह ते आँसू जिनके नेत्रन में ते भरिआये ऐसे होकर चोलत भये ६५ हमारे मनकी दृष्टि श्रीकृष्णके चरणारविन्द में लागीरै और हमारी वाणी वा कृष्ण को नाम

भगवतश्चरणारविन्दं न्यस्तंस्तनेषुविजहुःपरिरभ्यतापम् ६२ वन्देनन्दव्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णशः ॥ यासांहरिकयेद्भ्रातं पुनानिभुवनत्रयम् ६३

श्रीशुक उवाच ॥ अथ गोपीरनुज्ञाप्य यशोदानन्दमेव च ॥ गोपानामन्यदा शार्हयास्यन्नाकुरु हेतुम् ६४ तन्निर्गतं समासाद्य नानोपायनपाणयः ॥ न  
न्दादयोऽनुरागेण प्रवोचन्नश्रुलोचनाः ६५ मनसो वृत्तयो न स्युः कृष्ण पादाम्बुजाश्रयाः ॥ वाचोऽभिधायिनीनाम्राकायस्तत्प्रहणादिषु ६६ कर्मभिर्याग्य  
माणानां यत्र क्लृप्ता पीश्वरेच्छया ॥ मङ्गलाचरितैर्दानैर्मतिर्नः कृष्ण ईश्वरे ६७ एवं सम्भाजितोगोपैः कृष्ण भक्त्यानराधिप ॥ उद्धवः पुनरागच्छन्मथुरां कृष्ण पा  
लिताम् ६८ कृष्णाय प्रणिपत्या ह भक्त्युद्रकं ब्रजौकसाम् ॥ वामुदेवाय रामाय राज्ञे चोपायनान्यदात् ६९ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पञ्चवी  
र्द्धे उद्धवप्रतियने सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथविज्ञायभगवान् सर्वात्मासर्वदर्शनः ॥ सैन्रध्वाःक्रामतसायाः प्रियमिच्छन्गुह्ययो १ महादर्शोपस्करौख्यं कामोपायोपबृंहि  
ल्लियो करे ह्यारो शरीर वा कृष्ण कूं प्रणाम करो करे व६ अपने कर्मानुसार ईश्वर की इच्छा तें जो काहू योनि में हम जायें तो जो कछु हमने मङ्गलरूप कर्म करे हैं अथवा दान करे हैं  
तिनको यही फल मोगे हैं कि कृष्ण में हमारी प्रीतिरहै व७ हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार गोपीन ने कृष्ण में जैसी भक्ति तैसी भक्ति करिकै सत्कार जिनको करो ऐसे उद्धवजी सों श्रीकृष्ण  
जाको पालन करै ऐसी मथुरा पुरी में फेर आवत भये व८ श्रीकृष्ण कों प्रणाम करिकै उद्धव जी ब्रजवासीन की भक्ति की अधिकता कहत भये और वसुदेव कों प्रणाम करिकै चलदेव जी  
कों प्रणाम करिकै राजा उग्रसेन कों भेट देत भये व९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिणयादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेउद्धवप्रतिपत्तिनानेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥ \* ॥ ॥ ॥

( अष्टचत्वारिंशैऽथकृष्णः कुब्जा मरीरमत् ॥ अक्रूरस्य गृहं तत्रातंग जा ह्वयमादिशत् । सैनध्री कामापुर्व्वोपूयित्वा मनोरथान् ॥ अक्रूरस्य ततः कृष्णस्तेन पार्थनासान्नयत् २ अहतली सर्वे ग्रन्था-  
य मे कृष्णजी कुब्जा के साथ रमण करत भये और अक्रूरजी के घर जाकर तिनको हस्तिलापुर भेजते भये । कुब्जा की कामना पूरी कर और अक्रूरजी के मनोरथों को भी पूर्ण कर अक्रूरजी

कुन्ती ने पुत्रों को समझाने धये २) अथ श्रीकृष्णदेवजी कहे हैं राजन्यद्विचिन्त ! उद्धवजी जत्र वृज ते आये ताके पीछे सब के आत्मा और राव के देवनारे छः प्रकार के घेयनर्य करिके युक्त ऐसे श्रीकृष्ण तन्त्र काफूसं तपायमान जो कुञ्जा है ताके प्रिय करिके लिये वाके घर जात भये १ कैसो घर है ताको वणन करे ई वड़ेमोलकी अनेक तरहणी गामें वस्तु यही हैं काम के उद्दीपन करननारे चित्र जामें क्लिष्ट हैं मोतीन की फालारि जिनम लटकै ऐसी पताका फहराय हैं चंदोवा तनि रहे हैं शय्या बिछ रही है सुन्दर आसन बिछे है तुगन्वि की धूप लागि रही है दीया प्रज्वलित होय रहे है माला अतर अरगजा घरे हैं तिनसों शोभायमान घर है २ श्रीकृष्ण कों अपने घरमें आये देखिके कुञ्जा जल्दीदेसी आसनपै ते उठिके हरवराइट जाके भयो या प्रकार सत्वीन कों सन्न लिये श्रीकृष्ण के पास आवत भई सुन्दर आसन विछायके चरण धोइके सत्कार करत गई ३ तैसेही भलेमकार पूजन जिनको क्रियो ऐसे उद्धवजी आसन कूं हाव लागाय के पृथ्वी में

तस् ॥ मुक्तादामपताकाभिर्वितानशयनासनैः ॥ धूपैःपुराभिर्दिपैःसग्गन्धैरुपिस्मिडितम् २ गृहंतमायान्तगवेक्ष्यसासनात्पद्मःममुत्थायहिजातसम्भ्रमा ॥ यथोपसङ्गम्यसखीभिरच्युतंसभाजयामाससदासनादिभिः ३ तथोद्धवःसाधुतयाऽभिपूजितोन्यपीददुर्ग्यामभिमृशयचासनम् ॥ कृष्णोऽपितूर्णशयनंमहावनं विवेशलोकाचरितान्यनुव्रतः ४ सामज्जनलोपदुक्कूलभूषणसगन्धनाम्बूलमुचासवादिभिः ॥ प्रसाधितात्मोपससारमाधवं सवीडलीलोत्स्मितविभ्रमेक्षितैः ५ आहूयकान्तानवसङ्गमद्विद्या विशाङ्कितांकङ्कणभूपितेकरे ॥ प्रगृह्यशय्यामधिवेश्यलेशया ६ साऽनङ्गनसकुचयो हरसस्तथाऽक्ष्णोर्जिघ्रन्यनन्तचरणेरुज्जोमृजन्ती ॥ दोर्भ्यास्तनान्तगतंपरिभ्यक्तान्तमानन्दमूर्त्तिमजहादतिदीर्घनापम् ७ सैवंकैवल्यनाथंतंभ्राप्यदुष्प्रापमीश्वरम् ॥ अङ्गरागार्पणेनाहोर्भगेदमयाचत ८ आहोष्यतामिहप्रेष्ठदिनानिकतिचिन्मया ॥ रमस्वनोत्सहेत्यक्तुंसङ्गन्तेचुरुहेक्षण ९ तस्यैकामवरंदत्त्वा मानयित्वाचमानदः ॥ सहोद्धवेनसर्वेशः स्वधामागमदर्वितम् १० दुराराधं समागम्य विष्णुं सर्वेश्वरेश्वरम् ॥ योवृणोतिभनोभ्राह्ममसत्त्वारत्कुमनी

वैठतभये लौकिक लीलान कूं करे ऐसे श्रीकृष्ण हूं जल्दीदेसी सुन्दर विछी जो शय्या है तापै जातभये ४ स्नान करिके चन्दन लगाय सुन्दर वस्त्र पहिन गहने माला अतर अरगजा ताम्बूल और अमृत की सी नाई मादक जे वस्तु हैं तिनसूं अपने कूं बनाय उनायके लाजभरी लीलापूर्वक मुसिकानि कटाक्ष भरी चितवनि सूं मोहति भई ५ नवीन समागम की लज्जासू शङ्कारहित जो कुञ्जा है ताकूं बुलायके कङ्कण करिके शोभायमान जो हाथ है ताको पकरिके शय्या पै बैठायके चन्दन को देनो जाके पुण्य को लेश ऐसी जो कुञ्जा छी है ताके संग श्रीकृष्ण रमण करतभये ६ कामदेव सू तस जे कुच हैं तिनको ताही प्रकार छाती और नेत्रन कों जो ताप है ताथ अनन्त श्रीकृष्ण के चरणारविन्द कूं संधिके स्तनन के मध्य में प्राप्तभये जो सुन्दर आनन्दमूर्त्ति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको भुजानसूं आलिगन करिके बहुत दिनन सूं बढ़ो जो ताप है ताकूं त्यागति भई ७ चन्दन के अर्पण करे ते मोक्तके देननारे दुर्लभ ऐसे श्रीकृष्ण ईश्वर हैं तिन पायके अभागिनी कुञ्जा यह मागति भई ८ अहो प्यारे कुल्ल दिनवासिके मेरे संग रमण करो दे कमलनेत्र ! तुम मोपै त्यागे नहीं जावो हो ९ एक बेर तेरे नित्यहोय जावो करुंगो

ऐसे ता कुञ्जा को कामवर दैके याको सन्मान करिके मानके देनधारे ब्रह्मादिकुन के ईश्वर श्रीकृष्ण उद्धवजी को सत्सल्लोके सुन्दर जो अपनो घर है तामें आवतभये १० सम्पूर्ण ईश्वरन के ईश्वर दुःख करिके आराधन करिये में आवै ऐसे जो विष्णु तिन मसन्न करिके जो पुरुष विषयनको वरमागे वह बड़ो कुतुहल है क्योंकि विषय तुच्छ है ११ धनदेव उद्धवजी को सद्गुरुके समर्थ श्रीकृष्ण बहुत कार्य करायये के लिये अक्रूर को भलो मनाइयेके निमित्त अक्रूर के घर जातभये १२ अक्रूरजी मनुष्यन में श्रेष्ठ अपने वन्द्य जे श्रीकृष्ण वलदेव हैं तिनको दूर ते देखिके प्रमत्त होयके भिलिके आनन्द पातभये १३ कृष्ण वलदेव उद्धवजी ने नमस्कार जिनको करो ऐसे अक्रूरजी पथात् कृष्ण वलदेव को प्रणाम करतभये और आसन पैं बैठे जे कृष्ण वलदेव तिनकी पूजा करतभये १४ हे राजन् परीक्षित् ! कृष्ण वलदेवके चरण को धोवन जो जलहै ताय शिरपें चढ़ावत भये पूजा सू दिव्य वस्त्र वन्दन माला उत्तम गहनेन सँ पूजा करिके चरण धोइके प्रणाम करतभये और गोदमें

बयसौ ११ अक्रूरभवन्कृष्णः सहसामोद्धवः गभुः ॥ किञ्चिन्किर्यन्वगागादक्रूरप्रियकाम्यया १२ सतानवरश्रेष्ठानाराद्धक्षिणस्ववान्ववाच ॥ गत्युत्थायप्रसुदितः परिष्वज्यागिनन्द्य च १३ ननामकृष्णं रामश्च सैरग्यभिवादिनः ॥ पूजयामास विधिवत्कृतासनपरिग्रहान् १४ पादावनेजनीरापोभारयञ्चिच्छरसानृप ॥ अर्हणेनाम्बरैर्दिव्यैर्गन्धहारभूषणोत्तमैः १५ अर्चित्वा शिरसान्मय पादावह्नुगतौ युजन् ॥ प्रश्रयावनतोऽक्रूरः कृष्णरामावभापत १६ दिष्ट्वा पापोहतः कंसः सानुगोवा मिदं कुलम् ॥ भवद्भयामुष्टुतं कुच्छाहुरन्ताच्च समेधितम् १७ युवां प्रधानपुरुषौ जगद्धेतू जगन्मयौ ॥ भवद्भयानं विना किञ्चित्परमस्ति न चापस्य १८ आत्मसृष्टि मिदं विश्वमन्वाविश्य स्वशक्तिभिः ॥ इयते बहुधा ब्रह्मञ्जुतिप्रत्यक्षगोचरम् १९ यथाहि भूने पुत्राचरेषु मद्यादयो निषुभान्ति नाना ॥ एवं भवाच्च केवल आत्मयोगि निष्वात्मात्मतन्त्रो बहुधा विधाति २० मृजस्य योलुम्पसिपसि विश्वं रजस्तमः सत्त्वगुणैः स्वशक्तिभिः ॥ नवध्यसेतद्गुण रुर्मभिर्वा ज्ञानात्मनस्तेनैकवन्धहेतुः २१ देहाद्युपाधेर्निरूपितत्वाद्भूतानां साक्षान्निगिदात्मनः स्यात् ॥ अतो नवन्धस्तव नैव मोक्षः स्यात्तानि कामस्स यिनोऽपि वैरुः २२

चरणन कुं धरिके दावतभये अधीनतापूर्वक नइके अक्रूरजी कृष्ण वलदेवजी सँ बोलतभये १५ । १६ मन्त्रीनसहित पापी कंस मारो बड़े कष्टतें तुमने या गोकुल को उद्धार कियो और कुलकों न दायो यह बड़ो मङ्गलभयो तुम प्रकृतिरूप हो जगत् के कारण हो जगन्मय हो तुम ते पृथक् बहुत कार्य कारण नहीं है १७ । १८ आपने रचो जो विश्वहै तामें अपनी शक्तिनसहित प्रवेश करिके हे ब्रह्मन् अर्थात् परमेश्वर ! श्रवण करिये में देखिये में देखिये में बहुत प्रकारके प्रतीत होउ हौ १९ स्मार जद्रम जे देह हैं तिनमें पृथ्वी को आदिलैके जे पञ्चभूत हैं तिनकुं अनेक प्रकार करिके प्रकाशो हो ऐसे आपने पापी अहेले तो तुमहो सो आपुही जिनके कारण ऐसे पञ्चभूत और पञ्चभूतन के बने देह तिनमें बहुत रूप करिके प्रकाशो हो २० रजोगुण तोगुण सत्त्वगुण अपनी शक्ति हैं तिन सँ विश्वको उत्पन्न प्रलय पावन करो हो ते गुण और उत्पत्त्यादिक कर्म तिन सँ बंधे नहीं हो ज्ञानरूप तुमहो तिनकुं वन्धन कारनवारी अदिद्या नहीं है २१ देहादि उपाधि भंडी साची कहिये में नहीं आवै ताते आत्माको साक्षात् जन्म नहीं है जन्म जाको कारण ऐसो भेद नहीं है तुम में अविद्या नहीं है याते बंधे नहींहो छूटे भी नहींहो ऐसे वन्ध मोक्ष दोनों तुम

को नहीं है उलूखलमें मोकों धँवो सुनो है यमुना के भीतर खुल्यो देखो है वन्य मोक्ष कैसे नहीं है हमारे अज्ञानकरिके वन्य मोक्ष दिखाई देउहो तुम धँवोही न छूँहो २२ जगत् के कल्याण करिवे के निमित्त तुमने कबो जो सनातन वेदमार्ग है सो जासमय असाधुन के पाखण्ड मार्गसे वापिस होय है तासमय सत्पुरुष रूपको धारण करोही २३ हे प्रभो ! या संसारमें पृथ्वी को भार उतारिवे के लिये अपने अंग वलदेवसहित वसुदेवजी के घरमें जन्मे हौं देवतानें इतर जे असुर तिनके अंशनेते उत्पन्न भये जे राजा है तिनकी सैकरान अन्नौहिणीन के वध करोगे और यदुल्ल के यशस्कू वधाने वोजे २४ हे ईश ! आज हमारो घर निश्चय बड़भागी है सब देवता पितृ प्राणी मनुष्य देवरूप जो तुमहो तिनके चरणारविन्द को धोवन जल गन्नाख्य तीनों लोहून हूँ पवित्र करे है सो तुम जगत् के गुरु अन्नोत्तम भगवान् हमारे घरमें आयेहो याते हमारो घर बड़भागी है २५ भक्त हैं प्यारे जिनको सत्य है वाणी जिनकी सबके हितकारी कृतके जाननवारे ऐसे जो तुमहो तिनको त्यागि

त्वयोदितोऽयं जगतो हिताय यदायदावेदपथः पुराणः ॥ वाध्येत पाखण्डपथैः सद्भिस्तदा भवान्सत्त्वगुणैर्विभर्ति २३ सत्त्वप्रभोऽद्य वसुदेवगृहेऽवतीर्णः स्वांशो नभारमपनेतुमिहासिभूमेः ॥ अक्षौहिणीशतवधेनसुरेतरांशराज्ञाममुष्यचकुलस्यशोवितन्वन् २४ अद्येशनोवसतयः खलुभूरिभागायः सर्वदेवपितृभूतान् देवमूर्तिः ॥ यत्पादशौचमलिलं त्रिजगत्पुनाति सत्त्वजगद्गुरुधोक्षजयाः प्रविष्टः २५ कः पण्डितस्त्वदपरांशरां समीयाद्वक्त्रप्रियादृतगिरः सुहृदः कृतज्ञात् ॥ सर्वान्गददाति सुहृदो भजतोऽभि कामानात्मानमप्युपचयापचयौनयस्य २६ दिष्ट्वा जनार्दन भवानिहनः प्रतीतो योगेश्वरैरपि दुरापगतिः सुरेशैः ॥ क्षिन्ध्या शुनः सुतकलत्रधनासंगे हृद्देहादिमोहरशानां भवदीयमायाम् २७ इत्यर्चितः संस्तुतश्च भक्तेन भगवाच्चरिः ॥ अक्रूरं सस्मितं प्राह गीर्भिः संमोहयन्निव २८ श्री भगवानुवाच ॥ त्वं नो गुरुः पितृव्यश्च श्लाघ्यो बन्धुश्चानित्यदा ॥ वयं तुरक्ष्याः पोष्याश्च अनुकम्प्याः प्रजाहिंवः २९ भवद्विधामहाभागानि पेव्या अर्हसत्त्वमाः ॥ श्रेयस्कामैर्नृभिर्नित्यं देवाः स्वार्थानसाधवः ३० न ह्यभ्ययानितीर्थानि न देवामृच्छितामयाः ॥ तेषु न न्यरुक्तालेन दर्शनादेवसाधवः ३१ स भवान्सु

के ऐसो बुद्धिमान् कौन है जो अन्यकी शरण लेई भजन करनेवालेन कूं सम्पूर्ण कामनान कों देउहो और अपने आत्माकूं भी देउहो और तुम्हारे यह उत्तम है यह नीच है यह भेद नहीं है २६ हे जनार्दन ! अपने घरमें आयके दर्शनदीनो यह बड़ो मङ्गलभयो योगेश्वर और देवता ये तुम्हारे स्वरूपकूं नहीं जाने हैं पुत्र स्त्री धन हितकारी घर देहादिकनमें मोहकी रस्सीरूप जो तुम्हारी माया है सो हमको लगिरही है ताय जल्दी काटो २७ भक्त जो अक्रूर है ताने पूजन और स्तुतिकरी ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण वाणीनसूं मोहित करत मुसिकाय है अक्रूर जीते बोलत भये २८ श्रीकृष्ण भगवान् कहे है तुम हमारे गुरुहो चचाहो नित्य स्तुति करिवे योग्यहो बन्धुहो हम तुम्हारे लरिकागरे हैं हमारी रत्नाकरो पोषणकरो हमपै कृपाकरो २९ हे पूज्यनमें श्रेष्ठ ! तुम सदृश बड़भागी कल्याण की जिनके चाहना ऐसे मनुष्यन सों नित्य सेवा करिवे लायकहो देवता आप स्वार्थी नहीं होयें ३० कहा जलपय तीर्थ नहीं है और मृत्तिका शिलान के बने देवता नहीं हैं किन्तु हैं परञ्च वे सब बहुत दिन पर्यन्त सेवा करनेते पवित्र करे हैं और साधु जे हैं ते दर्शनही ते पवित्र करे है ३१ हे अक्रूरजी ! हमारे सुहृदनमें उत्तमहो याते





की इच्छा है ताव और धृतराष्ट्र के पुत्रन ने विपके देवे सँ आदिले के जो कहलु अन्याय करयो है सो सम्पूर्ण वार्त्ता कुन्ती और विदुर अर्जुनी के आगे कहत भये ॥१६ कुन्ती आयो जो भय्या अक्षर है तासँ मिलि के और अपने जन्मस्थान हो स्मरण करि के नेत्रन में आँसू बहावति अक्षर जी तें बोलत भई ७ हे सौम्य अर्थीव साधु ! मेरे माता गिता कभजं मेरो स्मरण नरे हे मेरे भद्रव बहिन भय्या के पुत्र कुलकी स्त्री सरी ये सब व भजं मेरी सुमि करे हे शमणगतन को पालक भक्तन के ऊपर हित को करनवारी भय्या को पुत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कभजं जपनी कुन्ती के पुत्रन की सुधि मेरे हे तपल की तुल्य हैं नेत्र जाके फेसो राग कभजं सुधि करे हे ८ । ९ मेहुहाल के बीच में हरिणी जैसे फिर जाय ऐसे वैरीन के बीच में विरी भई शोच कले जो मैं हुं ताव वचन करि कै श्रीकृष्ण कहा समझावैगो पिता जिनके मरि गये ऐसे भालकन को कहा समझावैगो १० हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे निराशे आत्मन् ! हे विरन के पालनकर्त्ता ! हे मोविन्द !

कृतञ्च वार्त्ता गृहीतुं दुरादानाद्यपेक्षलम् ॥ आचख्यौ मन्ववेवास्मै पृथाविदुग्वचन ६ पृथातुभ्रातरं प्रसन्नं सुपभृत्यतम् ॥ उवाच जन्मनिलयं स्मरन् यश्च कलेक्ष एव ७ अपि स्मरन्ति नतः सौम्यपितरौ भ्रातरश्च मे ॥ भगिन्यो भ्रातृपुञ्जाश्च जामयः सख्यश्च ८ भ्रात्रेभ्यो भगवान् कृष्णः शरख्यो भक्तवत्तलः ॥ पैतृजनो यान् स्मरति रामश्चाश्वरुहेक्षणः ९ मपलमध्ये शोचन्ती वृकाणां हरिणीमिव ॥ सान्त्वयिष्य निमांवात्मैः पितृहानां श्रवालाहान १० कृष्ण कृष्ण गहायो गिन विश्वात्मन् विश्वभावन ॥ प्रपन्नां पाहि गोविन्द शिशुभिश्चात्र मदीतीय ११ नान्यत्तत्र पदाम्भोजात्पश्या गिराणं नृपाय ॥ विश्वतां गृह्यसंसागदीशनररम्भा पवर्गिकात् १२ नमः कृष्णाशशुद्धाय ब्रह्मणे परमात्मने ॥ योगेश्वराय योगाय त्वामहं शरणं गता १३ श्रीशु कउवाच ॥ इत्यनुस्मर्य शमजं नृक्षेत्रजमदी श्वरम् ॥ प्रारुद्धः खितराजन् भयतां प्रपिनामही १४ रामदुःखमुखोऽब्धुः विदुरश्च गहायशाः ॥ सान्त्वयामासतुः कुन्ती तत्पुत्रोत्पत्तिं तुभिः १५ यास्यन् राजानमभ्येत्य विपमं पुञ्जलालसम् ॥ अवदत्सुहृदां मध्ये वन्धुभिर्गौहृदादितम् १६ अक्षर उवाच ॥ सो भो वैचित्रवीर्यर्षेणं कुरुखां कीर्त्तिनर्द्धन ॥ आतसु वालकन सवित दुःखित होय न तेरी शरण आई जो मैं हुं ताकी रक्षा करो ११ मृत्युक्षी संसार ते भयभीत जे मनुष्य हैं तिनके ईश्वर तुम हो और मोक्ष के देनारी जो चरणकमल है तासो अन्य को शरण नहीं देसौं १२ शुद्ध अर्थात् धर्मात्मा ब्रह्म अपरिच्छिन्न अर्थात् दृढिने में नहीं आवै परमात्मा अर्थात् जीव के सत्ता योगेश्वर अर्थात् शक्तियुक्त योग अर्थात् ज्ञानरूप ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र तुम हो तिनको नमस्कार है तुम्हारी भैंने शरण लियो है १३ अब श्रीशु कदेन जी कहें हैं हे रागनारी क्षितिव ॥ या प्रभार जगत् के ईश्वर अपने भतीजे श्रीकृष्ण तिनकी सुधि करिके तुम्हारी परदादी कुन्ती दुःखित होयके रुदन करत भई १४ वरामर है दुःख और सुख जिनके ऐसे अक्षर और चढो है यश जिनके ऐसे निदुर जी कुन्तीकुं समझावै हैं तुम्हारे पुत्र धर्म पवन इन्द्र इत्यादिकन के अशतें उत्पन्न भये तुम इतनो शोच क्यों करो हो या प्रभार कहत भये १५ चलने समय अपने पुननमें है स्नेह जाके और भतीजेन में निपमता जाके ऐसे राजा धृतराष्ट्र के पास जायके सुहृदन के मध्य में जे रामकृष्णादिक वधु हैं तिन ने स्नेह वे कहे जे वचन हैं तिन अक्षर जी कहत भये १६ अब अक्षरजी कहें हैं हे वैचित्रवीर्य धृत्-

राष्ट्र कौरवन की कीर्ति के बढ़ावनवारे भयया पाण्डु मेरे हितके पीछे अब तुम राजासिंहासन पे बैठे हो अर्थात् राजा पाण्डु के पुत्र युधिष्ठिरादिक बैठे हैं तुम राज्य बैठे सो उचित नहीं है यह कदात्त करे है १७ अब अक्रुरजी कोहैं बहुत उत्तम राज्य करो परन्तु या 'प्रकार बतोगे तो कल्याण होयगो सो अक्रुर जी कोहैं धर्म करिके पुत्री को पालन करोगे और शील करिके प्रजा को आनन्द देवगे और भतीजेनमें और पुत्रन में समता राजागो तब संसार में कल्याण और यशको पावोगे १८ और जो विपमता राजागो तो संसार में निन्दा होयगी और मरिक्के नरक में जावोगे ता कारण पाण्डवन में और आपने पुत्रन में समता राजा १९ है राजन् धृतराष्ट्र ! या संसार में कहाँ को सत्सग सर्वजाल नहीं रहे हैं और अपने देह भी सदा नहीं रहे हैं देखो विचार करिके स्त्री पुत्र ये सर्वदा कहाँ रहेगें २० बीच अकेलोही जन्म लेहैं और अकेलोही मरु पावै हैं अकेलोही पुण्यको फल सुख है ताकूं भोगे हैं और अकेलोही पाप को फल परते पाण्डावधुनासनमास्थितः १७ धर्म पाण्डवधुर्वीप्रजाःशीलिनश्चयन् ॥ वर्त्तमानःसमःस्वेपु श्रेयःकीर्त्तिमवाप्स्यसि १८ अन्यथात्वाचरल्लोकैर्गर्हितो यास्यसेतमः ॥ तस्मात्समत्वेवर्त्तस्वपाण्डवेव्यात्मजेपुत्र १९ नेहचात्यन्तसंवाप्तःकर्त्तवित्केनचित्सह ॥ राजन्स्वेतापिदेहेन किमुजायारमजादिभिः २० एकःपुम्यतेजन्तुरेकएवप्रजियते ॥ एकोऽनुभुङ्क्तेसुकृतमेकएवचङ्कृतम् २१ अधर्मोपचितंविस्तरं हन्यन्येऽलग्नेधसः ॥ सभोजनीयापदेशैर्जैलानीव जलौकसः २२ पुण्यातिगन्धर्भेण स्वबुद्धयातमपरिहृतम् ॥ तेऽकृतार्थप्रहियन्तिप्राणारायःसुतादयः २३ स्वयंकिल्बिषमादाय तैरयक्कोनार्थकोविदः ॥ असिद्धार्थोविश्रत्यन्धस्वधर्मविमुखस्तमः २४ तस्माह्लोकमिमंराजन्स्वप्रपायामनोरथम् ॥ वीक्ष्यायम्यात्मनाऽऽत्मानंसमःशान्तोभवप्रभो २५ ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ यथावदतिकल्याणी वाचंदानपतेभवान् ॥ तथाऽनयानतृप्यामि मर्त्यःप्राप्यथाऽमृतम् २६ तथाऽपिमूढतासौम्यहृदिनस्थीयतेचले ॥ पुञ्जानुरागविषमे विद्युत्सौदामिनीयथा २७ ईश्वरस्यविधिकोन्निविधुनोत्यन्यथापुमान् ॥ भूमेर्भारवताराय योऽवतीर्णोऽयदोःकुले २८ योऽहोर्विमर्शयथ दुःख है ताकूं भोग करे है २१ अज्ञानी पुरुष ने जो पाप करिके धन सञ्चय करयो है ताकूं स्त्री पुत्र भयया वन्द्य होयके लेहैं जैसे जल ही रहनवारी मछरीन को जियावनवारो जल है ताकूं बाँके पुन पीलेहैं तब बाँको कष्ट होय है २२ पाण्डी है एक मार्ग को खर्व जाके ऐसो पुरुष नरक में परे है यह कहे हैं अधर्म तें अपने मानिके प्राण धन पुत्रादिकन को भयण पोषण करे हैं और जब भोग जिनकूं नहीं मिले है तब वा अज्ञानी पुरुष कूं त्यागि देह हैं २३ जब पुत्रादिक जाकें त्यागि देह हैं तब सब के पाप काँ अपने शिर पे धरिके वही पूर्ण नरक में परे है २४ ता कारण है समर्थ राजा धृतराष्ट्र ! स्वप्न और वाजीगर की भाया तथा मनको विचार ये सब तुमकूं भिषयायुत दिखाई देय हैं तैसेही या संसार कूं पिषयायुत समझिके आपही अपने मनको रोकिके समता राजा शान्त होहो २५ राजा धृतराष्ट्र कहे हैं हे दाननके पति अक्रुर ! जे तुम कल्याणकारक श्रेष्ठ वचन कहो हो तिनकूं श्रवण करत करत मेरो मन तस नहीं होयहैं जैसे मनुष्य अमृतकूं पान करत करत तस नहीं होय है या प्रकार २६ तथापि हे अक्रुर ! मेरो चञ्चल पुत्रन में स्नेह है तासूं विषम जो हृदय है तासूं तुम्हारी प्यारी बात ठहरे नहीं है जैसे स्फटिकमणि के सुदमा पर्वत पे

विजुरी चमकि कै स्थिर नहीं रहे है या प्रकार २७ ऐसो तुम जानो ही फोर मोह क्यों करो है जो या प्रकार कदाचिद अक्रूरजी कहो ताको उचर धृतराष्ट्र देह है ईश्वरकी माया कुं कौन पुरुष अन्यथा करिसकै है जो ईश्वर ने पृथ्वी को भार उतारिबे के कारण यादवन के कुल में आयकै अवतार लियो है २८ जो ईश्वर विचारमें न आवै ऐसी जो अपनी माया है तामूं या विद्व कूं उत्पन्न करिकै और तामें प्रवेश करिके कर्म और कर्मन के फलन कूं न्यारे न्यारे करिके जीवन कों देह है जानिबे न आवै ऐसो जो विहार अर्थात् खेल है सोई है मुख्य कारण जा संसारचक्र को ऐसे जो परमेश्वर तुमहौ तिनकूं नमस्कार है २९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजनपरीक्षित् ! या प्रकार यदुवंशोत्पन्न अक्रूरजी धृतराष्ट्र को अभिप्राय जानिके सुहृदन सूं आज्ञा मागिके फोर यानिजसाययेदं सूक्ष्मगुणान्विभजतेतदनुगविष्टः ॥ तस्मै नमोऽहवबोधविहारतन्त्रसंसारचक्रगतये परमेश्वराय ३० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्यभिप्रेत्यनु पतेरभिप्रायं सयादवः ॥ सुहृद्भिः समनुज्ञातः पुनर्यदुपरीमगात् ३० ॥ शशंसरामकृष्णभ्यां धृतराष्ट्रविचोदितम् ॥ पाण्डवान्प्रति कौरव्य यदर्थमेषितः स्वयम् ३१ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे ऽष्टादशमाह स्रयां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे एको नपञ्चाशत्तमो ऽध्यायः ४९ ॥ पूर्वार्द्धः समाप्तिमगमत् ॥

इति श्रीमद्भागवते दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धः समाप्तः ॥

मथुरापुरी में आवतथये ३० हे कुरुवंशोत्पन्न राजन् परीक्षित् ! वलदेव श्रीकृष्णचन्द्र ने आय जिस कारण अक्रूरजी कों पाण्डवन के पास भेजो हो सो सब धृतराष्ट्र की कथित वार्ता अभिप्राय आयकै श्रीवलदेव जी और श्रीकृष्णचन्द्रजी सूं कहतभयो ३१ इति श्रीमच्छुक्यजुर्वेदान्तर्भातभाष्यदिनीशास्त्राध्वेतुवैषाध्रदगोत्रजातविश्वामित्रपुराधिः श्रीमन्नुर्पातजयविशोरदेवात्मजश्रीगिरि-प्रसादवर्मर्ज्ञयापण्डिताद्दशमस्कन्धे शिरचितायां श्रीमन्महाभागवतार्थरूपियादशमस्कन्धे एको नपञ्चाशत्तमो ऽध्यायः ४९ ॥

समाप्तश्चायमपूर्वार्द्धः ॐ तत्सत् श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॐ शान्तिः ३ ॥



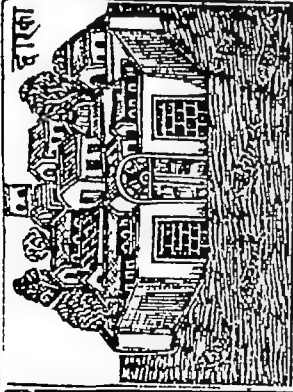


॥ इति श्रीमद्भगवत् दशमस्कन्धपूर्वोद्धृष्टम् ॥

॥ अथ श्रीमद्भागवतं दशमस्कन्धउत्तरार्द्धम् ॥







द्वारा



शकपणीस्वयंवर



कुं. जांव.



सत्ता. कुं. सत्यभा



अर्जुन कालिंदी कुं.



काल



कुं. रु.



सदावृषभा. कुं.



कुं. ल.



भोमात्तर.



कुं. सु.



कुं.



शंभर. रति. प्र.

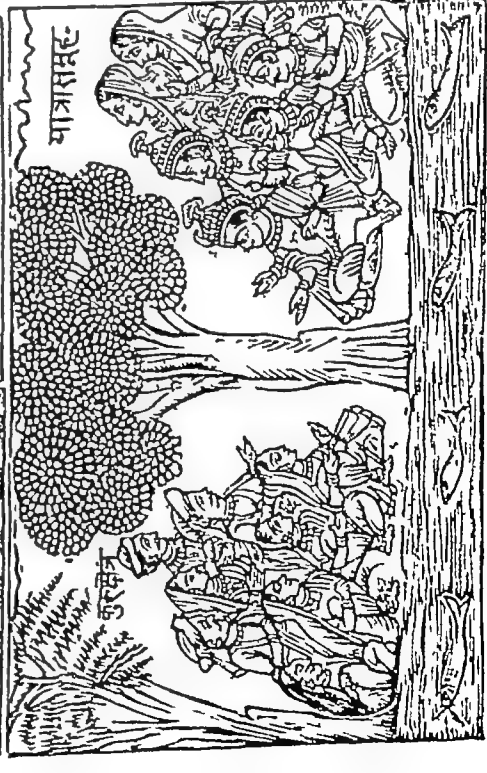
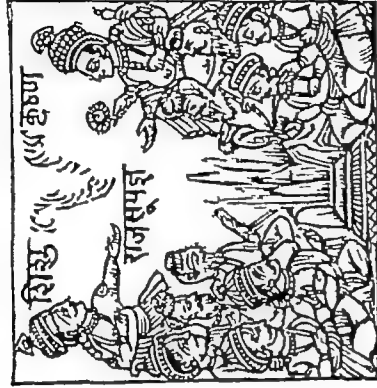


कुं. वा.



कुं. पौंड.

# दशमस्कन्ध उत्तरार्द्ध



श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ( ततः आशुत्तपेतुजरासन्धप्रयादिन ॥ कारयित्वाऋतुश्रौतुर्गतिनिनाय निर्जनम् ? कपटान्कपटेरेनहृत्पादनयस्ततः ॥ अत्रयद्यजरासन्धमर्मेणेतुधादिमकम् २ अथ पूर्वार्द्ध के छे पीछे पचासके अध्यायमें जो कहा है ताको वर्णन करे है जरासन्ध के भयतेही मानों समुद्र में किला बनाय के श्रीकृष्ण अपने यादवन को ले जातभये ? कपटी दैत्यन को कृष्णजी काटों सों बिना यज्ञही सू मारिके धर्मवत्सा जरासन्धको धर्मही सू जीतते भये २ ) अब श्रीशुनदेवजी कहे हैं हे भरतवंशीन मैं भये राजन् परीक्षित ! अस्ति और प्राप्ति ये दोनों कंसकी रानी हैं ते अपने पति कंसके मरण भू दुःखित होय के पिताके पर गातिभिई ? दु खित जे अस्ति प्राप्ति हैं ते अपने पिता जो मगधदेशको राजा जरासन्ध हैं ताको सम्पूर्ण अपने विधवापने को कारण जतावति भई २ हे राजन् परीक्षित ! ताही बाल दुःखके भरे अप्रिय वचन सुनिके जरासन्ध जाभाताको शोक न सहिके यादवनभू रहित पृथ्वीकू करिवेको उपाय करतभयो ३ तेईस अत्नौहिणी सेना कू सङ्गलै के जरासन्ध यादवन की राजमानी जो मथुरा है ताय सम्पूर्ण दिशान ते घेत भयो ४ मर्यादा त्यागिके मानों समुद्र उमड़यो चल्थो आवे है या प्रकार जरासन्धकी सेना कू आवति

श्रीशुकउवाच ॥ अस्तिःप्राप्तिश्चकंसस्य महिष्योभरतर्षभ ॥ मृतेर्गत्तैरिदुःखोर्त्तैर्यतुःस्मपितुर्गृहान् ? पित्रेमगधराजाय जरासन्धायदुःखिते ॥ वेदया

अक्रतुःसर्वमात्तपैवधव्यकारणम् २ सतदप्रियमाकर्ण्य शोकामर्षयुतोन्नुप ॥ अयादवीपहोर्कतुं चक्रैरममुद्यमम् ३ अक्षौहिणीभिर्विशतया तिसृभिश्च पिसंवृतः ॥ यदुगजधानीमथुगं न्यरुणत्तर्पन्तोदिशम् ४ निरीक्ष्यतद्वलंकृष्णउद्वेलमिवसागरम् ॥ स्वपुंरतेनसंरुद्धं स्वजनञ्चभयाकुलम् ५ चिन्तयामा सभगवान् हरिःकारणमानुषः ॥ तदेराकालानुगुणं स्वावनारप्रयोजनम् ६ हनिष्यामिवलंघेतद्भविभारंसमाहितम् ॥ मागधेनसमानतीतं वश्यानांमर्षभूमि जाम् ७ अक्षौहिणीभिःसङ्ख्यातं भटारश्चक्रुः ॥ मागधस्तुनहन्तव्योभूयःकर्त्तावलोक्यमम् ८ एतदर्थोऽवतारोऽयं भूमारहरणायमे ॥ संरक्षणायसाधूना कृतोऽन्येषांप्रधायच ९ अन्योऽपिधर्मरक्षायै देहःसंभ्रियतेमया ॥ विरामायायायधर्मस्य कालेप्रभवतःकचित् १० एवंधायतिगोविन्दआकाशात्सूर्यं

देखिके और ता सेना सों आठनमयूरापुरी को देखिके और स्वजन जे अपने यादव हैं तिनकू व्याकुल देखिके ५ पृथ्वी को भार उतारिने के कारण मनुष्यरूपजिनने घल्यो ऐसे स के दुःखके हरनकरे श्रीकृष्ण ता समय देश कुन के योग्य अपने अवतारको प्रयोजन है ताहि देखिके विचार करतभये ६ जरासन्ध कू छोड़िके या सेना को यत्रकल अथवा जरासन्ध वों मारिके सेना कू ग्रहण कल अथवा सेनासहित जरासन्ध कू मारुं ऐसे तीनमकार के मनमें सकल्य विकल्प करिके प्रथम विचार जो सेनावध है ताही कू निश्चय करतभये क्योंकि पृथ्वी को भाररूप यह सेना है याही कू मारुं गो सम्पूर्ण रंगन के राजान की सेनाको जरासन्ध लेआयो है ऐसो समय वारवार न मिलैगो ७ प्यादे अश्व रथ हस्ती इह चतुराहिणी अनेक अत्नौहिणी सेना कोही मारियो योग्य है जरासन्ध को मारिवो योग्य नहीं है काहे ते यह काम को है सम्पूर्ण कू समेटि के यहा ले आवैगो में कहां कहा फिहंगो ८ भूमि को वोफ उतारिने वों और साधुन की रक्षा वरिने वों और दुष्टन के वध करिवे के निमित्त मैंने अवतार लियो है ९ कोई समय पाइके पृथ्वी पै वह जे अधर्म हैं तिनके नष्ट करिवे के कारण और धर्म वी रक्षा वरिवे के कारण औरह देह को

में धारण करूं हूं १० या प्रकार गोविन्द श्रीकृष्णचन्द्र विचार करे है इतने में सूर्य की तुल्य गिन हो तेज ध्वजा कवच जिनमें ये और रथवान् सहित दो रथ शीघ्र ही आकाश में उतरत भये ११ बाही समय अनायासपूर्वक आये जे दिव्यशस्त्र हैं तिनें देखिके हृषीकेश श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी तों बोलतभये १२ हे आर्य्य अर्थात् श्रेष्ठ ! हे प्रभो ! तुमहीं जिनकी रक्षा करनवारे ऐसे याद बन कूं दुःख आयकै प्राप्त भयो है तम देखो यह रथ आयो है प्यारे शस्त्र आयें हैं १३ रथमें बैठिके सेना कूं मारो अपने यादवन कों कट दूरिकरो हे ईश ! साधन के कल्याण के निमित्त या संसार में हमारो तुम्हारी जन्म है १४ तेईस अज्ञौहिणी सेना आयकै प्राप्त भई है ताको पृथ्वी पै बोझ है ताकूं दूरि करो या प्रकार दाशार्धशोतन जे कृष्ण बलदेव हैं ते विचार करिके कवचन कूं पहिरिके सुन्दर शस्त्रन कूं लैके रथमें बैठिके कछु थोड़ी सी सेना सद्रक्षकै पुर के बाहिर निकसिके दारुकरै सारथी जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शत्रु कूचजावत भये १५ । १६ ताके पीछे जगमग

वर्चसौ ॥ रथाबुपस्थितौ सद्यः समूतौ सपरिच्छदौ ११ आयुधानि च दिव्यानि पुराणानि यदृच्छया ॥ दृष्ट्वा तानि हर्षिकेशः सङ्कर्षणमथाब्रवीत् १२ पश्यार्थव्य सनं प्राप्तं यदूनं तं भावतां प्रभो ॥ एते रथ आयातो दयितान्यायुधानि च १३ यानमास्थाय जह्येत द्रव्यसनास्त्वान्समुद्धर ॥ एतदर्थं हि नैजान्य साधूनामीश शर्मकृत् १४ त्रयोविंशत्यनीकार्यं भूमेर्भारमपाकुरु ॥ एवं संमन्य दाशाहौ दंशितौ रथिनौ पुरात् १५ निजर्जंगतुः स्वायुधादथौ बलेनाल्पीयसाधनौ ॥ शस्त्रे न्दधौ विनिर्गत्य हरिदीरु रुसारथिः १६ ततो भूतपरसैन्यानां हृदि विज्रासने पथुः ॥ तावाहमागधो वीक्ष्य हे कृष्ण पुरुषाधम १७ नस्वयायोद्धुमिच्छामि बाले नैकेन लज्जया ॥ गुप्तेन हित्व गामन्द नयोत्सेया हिन्युहन् १८ तवराम यदि श्रद्धा युज्यस्व धैर्य्यमुदह ॥ हित्वा वागच्छरैश्च नन्देह स्वयं हि मां जहि १९ श्रीभगवानुवाच ॥ न वै शूरा विकस्यन्ते दर्शयन्त्येव पौरुषम् ॥ न शृङ्गी मो वचो राजन्नातुरस्य मुमूर्षतः २० ॥ श्रीशुक उवाच ॥ जरासुतस्तावभिमत्यमाधवौ महा बलौ धेनवलीयसाञ्चरोत् ॥ ससैन्ययानध्वजवाजिसारथीमूर्या नलौ वायुरिव अभ्रेणुभिः २१ मुपर्णतालध्वजचिह्नितौ रथावलक्षयन्त्यो हरिरामयोर्मवे ॥

स्त्रियः पुगण्डालकदम्यगोपुरं समाश्रिताः संमुहुः शुचार्हिताः २२ हरिः परानीकपयोमुचां मुहुः शिलीमुखान्युत्पन्न पर्पपीडितम् ॥ ससैन्यमालोक्य समसुरा की सेना के हृदय भयभीत होयैं कै कम्पित होत भये कृष्ण बल देवकं देखिके जरासन्ध बोलतभयो हे कृष्ण अभय ! तूं अकेलो बालक है तेरे सङ्ग युद्ध न करुंगो मो कूं लज्जा आवै है हे वन्यून के मासन्वारे ! हे मूर्ख ! भाजनवारो तूं है तातें तेरे सङ्ग युद्ध न करुंगो १७ । १८ हे राम ! जो तेरे अर्द्धाहोय तो धीरज धरिके युद्ध कर भरे वाणन करिके कछो जो देह है ताकूं त्यागि कै स्वर्ग कूं जा अथवा संग्रामके बीचमें मोहि मारिले १९ अब श्रीभगवान् कहैं हैं शूबीर हैं ते वक नही हैं अपने पुरुषार्थ कूं दिखवैं हैं हे राजन् ! जरासन्ध आसन्नमृत्यु जो तू है ताते तेरो वचन मैं नहीं मानूं हूं २० जैसे पवन वादर धूरि ये सूर्य्य अग्नि कूं त्रैरि लेइ है तैसे माधव जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनके पासजायैं जरासन्ध वही जलवती जो सेना है तासूं ध्यादे रथ ध्वजा चोड़ा रथवान् इनमू धैरतभयो २१ गरुड की ताल की ध्वजाके हैं चिह्न जिनमें ऐसे जे राम कृष्णके रथ हैं ते युद्ध में नहीं देखे तब पुर अठारी गहल दरवाजेन पै ठाढ़ी जे स्त्री हैं ते शोकमूं व्याकुल होयैं कै मोहकरति भई २२ शत्रु ही

सेना रूप नाडारन में सूं चारवार बाणन की भयङ्कर जो वर्षा भी तासूं पीड़ित अपनी सेना कू श्रीकृष्णचन्द्र देखिके देवता असुर जाकी पूजाकरैं ऐसी जो मनुष्यमें उत्तम शार्ङ्गधनुषहै ताहि द्भारत भये २३ तरकस ते तीर निकालि कै शीघ्र प्रत्यङ्गामें लगाय कै प्रत्यङ्गाकूं सैचिके तीक्ष्ण बाणन के समूहनसूं रथ हाथी घोड़ा प्यादेन कू पारिके जैसे सिलगति लकड़ीकी छुपावने सूं चक्र वधे है तैमे बाणन के पीछे बाण लगावतभये २४ मस्तक जिनके कटिगये ऐसे हज्जारन हाथी गिरतभये बाणन सूं कटी है नारि जिनकी ऐसे घोड़ा गिरतभये रथनके कटि के ने डे और ध्वजा गिरत भई और रथवान् और नायक गिरतभये कटी है भुजा बांधा नारि जिनकी ऐसे प्यादे गिरतभये २५ युद्धमें कटे जो प्यादे हाथी घोड़ा तिनके अंगनमें ते निकसिके असंख्याक रुधिरनकी नदी बहति भई कारि की नदीनको प्रसिद्ध नदीन सों रुरक बाधिके वर्णन करै है नदीनमें सर्प रहे हैं रुधिरकी नदीन में मनुष्यन की युजा मालों सर्प है नदीन में कछुया रहे हैं रुधिरकी नदीन में मनुष्यन के शिर कटिके कछुयाके मानिन्द बहे हैं नदीन में टापू होइ हैं रुधिरकी नदीन में मरे हाथी टापून के मानिन्द परे हैं नदीन में ग्राह होइ हैं रुधिर की नदीन में घोड़ा ग्राह के मानिन्द मरे परे हैं

चितं व्यस्फूर्ज्यच्छाङ्गशगसनोत्तमम् २३ गुलान्निपङ्गादथसन्दवच्छात् विकृष्यमुखञ्चिच्छन्वाणपूगान् ॥ निवन्नुत्थान्कुञ्जवाजिपत्तीन् निरन्तरं यद दलानचक्रम् २४ निगिन्नकुम्भाः करिणो निपेतुस्ते कशोऽश्वाः शस्त्रकणकन्धराः ॥ रथाहताश्च जसूनायकाः पदातयश्छिन्नभुजोरु कन्धराः २५ सञ्जि द्यमानद्विपदे भवाजिनामङ्गप्रसूताः शतशोऽमुगापगाः ॥ भुजाऽहयः पूरुपशीर्षि कृच्छपाहतद्विपदी पद्मग्रहाकुलाः २६ करोरुमीनानरकेशशैलान् भुजान् रङ्गायुधगुल्फसङ्कुलाः ॥ अच्छरिकावर्त्तभयानका महामणिप्रवेकाभरणशमशः २७ प्रवर्त्तिताभीरुभयावहास्रधे मनस्विनाहर्ष करीः परस्परम् ॥ विनि दनताऽग्निमसलेन दुर्मदान् सङ्कर्षेण नापरिभेयेत जला २८ वलंतदङ्गार्णवदुर्गैर्भस्वं दुस्तपारं मगधेन्द्रपालितम् ॥ क्षयंप्रणीतं वसुदेवपुत्रयोर्विक्रीडितं तज्जग दीशयोः परम् २९ स्थितयुद्धवान्तं सुवनन्नयस्ययस्मिहतेऽनन्तगुणः स्वलीलया ॥ नतस्य चित्रं परपक्षनिग्रहस्तथाऽपि सत्याहुभिधस्य वर्यमे ३० जग्राह वि

तिनसू व्यस होय रही हैं २३ नदीन में मस्य होइ हैं रुधिर की नदीन में हथेरी पिहरी मस्यके मानिन्द है नदीन में सिवार होइ है रुधिर की नदीन में मनुष्यन के केश सिवार के मानिन्द बहे होले हैं नदीन में तरंग उठे हैं रुधिर की नदीन में मनुष्य तरंग के मानिन्द हैं नदीन में भ्रार भङ्गाडहोइ हैं रुधिर की नदीन में शस्त्र है ते भ्राङ्ग भङ्गाड के मानिन्द हैं नदीन में अपर परे हैं तिन सूं अति भयङ्कर होइ हैं रुधिर की नदीन में डालें मालों भयङ्कर अपर फिरें हैं नदीनमें काहर पत्थर होइ हैं रुधिर की नदीन में मणि गहने काहर पत्थरके तुल्य हैं २७ बडो है तेज जिनको ऐमे वन-देवीने संग्राम विषे दुष्टहैं मद् जिनके ऐमे शुचुनकूं मूल तें पारि पारिके रुधिरनकी नदी बहाइ कैसी नदी है भयभीत मनुष्यनको भयकी देनवारी और शूरवीरनको आनन्दकी देनवारी है २८ जरासन्य पालन करे समुद्रकी तुल्य दुर्गम भयङ्कर न जाकी थाह है और न पार है ऐसी जो बह सेनाहें ताकूं है राजन् प्रसींचित् ! कृष्ण उलटो ! ने पारि पारिके नाश करि दीनो वसुदेव के पुन जगत् के ईश्वर ने कृष्ण चलदेव है तिनकूं सेनाको नाश करिनो क्रीडापात्रही है कछु पराक्रम नहीं है २९ अनन्त हैं गुण जिनके ऐसे भगवान् श्री कृष्णचन्द्र अपनी लीला करिके तीनों लोकनकूं



उत्पन्न पालन संहार करे हैं तिन श्रीकृष्णकं शत्रु जरासन्ध वी सेनाको मारियो कछु आश्चर्य नहीं है तथापि मनुष्यन के अनुसरण करें जो श्रीकृष्ण तिनके कर्म आश्चर्य से कहिये में आने हैं ३०२५ जानो दूष्टिगयो सेना जाकी नष्टभई केवल पाण शेष रहे ऐसे बड़े बलवान् जरासन्धकूं जैसे सिंह सिंहकूं पकरे हैं ता प्रकार बल करिके बलदेवजी पकरतभये ३१ वरुणके मनुष्यन को रस्मान में बाधिलियो शत्रु जाने मारे ऐसे जरासन्धकूं श्रीकृष्ण छुड़ावतभये वयोकि जरासन्ध सौ और कछु काम करावयो है ३२ शूरवीर जाको सतार करै ऐसे जरासन्धकूं चिनोकी के नाथ श्रीकृष्ण बलदेव ने जा सपय छोडि दियो तब लडिजन होय न मनमें विचारत भयो कि घरजायके रुहा करुंगो वनमें जायके तप करुंगो तासपय मार्गमें राजाने मने कस्यो ३३ धर्म के उपदेश करनचारे है पद जिनमें ऐसे नितिके दुष्टिहारक वचन कूं कहि है जरासन्धकूं सपफायो तुम्हारी कोई दुर्गमार्ग आयगयो याते तुन्ख यादवन ने तुपकू जीत लियो अब तुम लाज मतिकरो ३४

रथारमो जरासन्धगृहवलम् ॥ हतानीकावशिष्टासुं बिहगिंहिभौ जसा ३१ वध्यमानंहतारानि पार्श्वैर्वारुणमनुपैः ॥ वारयागासगोविन्दस्तेनकार्थचि  
कीर्पया ३२ संमुक्तोलोकनाथाभ्यां ब्रीडिनोवीरसम्मतः ॥ तपसेकृतमङ्कल्पोवारितगश्रिजभिः ३३ वाक्यैः पवित्रार्थपदेनयनैः प्राकृतैरपि ॥ स्वकर्मवन्ध  
मासोयं यद्विभस्नेपरागवः ३४ हतेपुसन्वनिक्केपु नृपोवाहदथस्तदा ॥ उपेक्षिनोभगवनापगधान्दुर्गनाययौ ३५ मुकुन्दोऽयश्वतलोनिस्तीणिरिवलाण  
वः ॥ विकीर्यमाणः कुसुमैस्त्रिदशैः अनुगोदितः ३६ माथौरुपसङ्गम्य विजयैर्मुदितात्मभिः ॥ उपगीयमानविजयः भूतमागधवन्दिभिः ३७ शङ्खदुन्दुभयोने  
दुर्भीतूर्यार्यनेकशः ॥ वीणावेणुमृदङ्गानि पुंरप्रविशतिप्रभौ ३८ सिक्कमार्गाहृष्टजनां पताकाभिरलङ्कृताम् ॥ निर्धयां ब्रह्मवोपेण कौतुकावद्धनोरणाम्  
३९ निचीयमानो नारीभिर्माल्यदध्यक्षताङ्कुरैः ॥ निरीक्ष्यमाणः सस्नेहं प्रीत्युत्कलितलोचनैः ४० आयोधनगतं वित्तमनन्तं वीरभूषणम् ॥ यदुराजायततस  
द्वर्धमाहन्तं प्रादिशत्प्रभुः ४१ एवं सप्तदशकृत्वस्तावत्यक्षौहिणीवलः ॥ युयुधेमागधो राजायद्विभिः कृष्णपालितैः ४२ अक्षिण्वं स्नदलंसन्धं वृष्णयः कृष्णतेजसा ॥

जासमय सम्पूर्णसेना नष्टहोग्य श्रीकृष्ण ने छोडि दियो तासमय वृद्धय के वंशोत्पन्न जरासन्ध उदासीन होयके मग प्रदेशनकूं जातभयो ३५ नर्ही नष्टभई है सेना जिनकी तरथो है शत्रुकी सेनारूप सागर जिनने देवतानने पुष्टनकी वर्षाकरी और प्रशंसापूर्वक स्तुतिकरी तब श्रीकृष्णचन्द्र अपनीमथुरापुरीमें आवतभये गये हैं खेद जिनके प्रसन्नभये हैं मन जिनके ऐसे मथुरावासीन सू मिलके सूत माग्य वन्दीजन जिनके विजय के वचन गावतभये ३६ ३७ ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र जा समयमथुरापुरी में आये तब शङ्ख नगारे अनेकन भेरी तुरही वीणा वासुरी मृदङ्ग ये सब बाजे बजावत भये ३८ मार्ग में छिरकाल होय रहे ममन्न हैं मनुष्य जांमे पताकानभूं शोभायमान वेदवचनि जांमे होयराही श्रीकृष्णचन्द्र के आगमन के आनन्दसूं घर घर चन्दनचार जांमे बंधी है ऐसी मथुरा-पुरीवी शोभा होतिभई ३९ श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर स्त्री पुण्यदाि अन्नत अंकुरनकी वर्षा करतिभई स्नेह ते प्रफुल्लित जो नेत्र हैं तिनमें श्रीकृष्णकूं देखे हैं ४० शूरवीर राजानकी शोभाको करनवारो रणभूमि में पत्थो जो बहुत धनहै ताकूं लाय ४१ श्रीकृष्णचन्द्र राजा उग्रसेन कूं देतभये ४२ श्रीकृष्णचन्द्र जिनके पालन करनचारे ऐसे यादवनसूं मग प्रदेश को राजा जरासन्ध सत्रह बार तेईम २

अन्तोहिणी सेनालैंके युद्ध करतभये ४२ यादव श्रीकृष्ण के तेजतें जरासन्धकी सम्पूर्ण सेनाबो नाश करतभये हे राजन्परीक्षित ! सम्पूर्ण सेना जब कटिगई शत्रुने खोड़ि दियो तब जरासन्ध आपने देशकूं जातभयो ४३ अठारही बार फेर युद्ध होनहारहो ता के बीच में ही नागद्वी की भेज्योवीर जो कालयवनहैं सो आय गे दिव्यदेतभयो ४४ संसारमें जाके तुल्य कोई गोदा नहीं ऐसी कालायन यादवन कूं अपनी वरावरके मानि है तीन किंगोइ मनेच्छन् कूं मन्त्र लैंके मथुरापुरीकूं भेत भयो ४५ बलदेवजीहैं महाय जिनके पेने श्रीकृष्णवन्द कालयवनकूं आयो देविके चिन्ता करतभये वड़ो आञ्चर्य है यादवन कूं दोनों ओरतें वड़ो कष्टआयोहैं आप तो यह वड़ो बली कालयवन हथकूं धरे है फेर जरासन्धहू आज अयना कालिह अथवा परसों पर्यन्त आवैगोही ४६।४७ ओ या समय हम याते युद्ध तरंगे और बीच में जरासन्ध आय गयो तो हमारे दन्धून कूं मारगो और जो न मारगो तो बलवान् है वीर है अपने पुर में लेजायगो ४८ यातें भनुष्य जहाँ न जाय

हनेपुस्तेबन्गीरे पु त्यक्तोऽयादिरिभिर्नृपः ४३ अप्रादशगसंघ्राग आगामिनितदन्तग ॥ नारदभेपितोवीरयवनः प्रतदृश्यत ४४ रुद्रोधमथुरामेत्यनिसृभिमै  
चक्षुकोटिभिः ॥ नृलोकैचापतिद्वन्द्वोवृण्जिष्ठरामसंगितान् ४५ तदृष्ट्वाचिन्तयत्कृष्णः सङ्कर्षणसहायवान् ॥ अहोयदूनवृजिनं प्राप्तुमयतोमहत् ४६  
यवनोऽधिनिरुन्धेस्मानद्यनान्वन्महाबलः ॥ मागघोषद्यवाश्वोवा परश्वोवागमिष्यति ४७ आवयोर्द्वयतोऽस्ययद्यागन्ता जरासुतः ॥ बन्धन्वधिष्यत्यथवा  
नेष्यतेस्वपुरं बली ४८ तस्मादद्यविधास्यामोढुर्द्विपददुर्गगम् ॥ तत्रज्ञातीन्ममाधाय यवनं धानयामहे ४९ इतिममन्धयभगवान्दुर्गद्विदशयोजनम् ॥  
अनन्समुद्रनगरं कृतस्नाद्धुतगचीकरत् ५० दृश्यतेयत्रहित्वाष्ट्रं विद्वानं शिल्पनेपुणम् ॥ रथान् च त्वस्वश्रीभिर्धथावास्तुविनिर्भितम् ५१ सुरद्रुमलतोद्यानि  
चित्रोपवनान्वितम् ॥ हेमशृङ्गैर्दिविस्पृग्भिः स्फाटिकाद्यालगोपैः ५२ राजतारकुटैः कोष्ठैर्हस्तुमैरलङ्कितः ॥ रत्नदृष्टैर्हर्मैर्महामरकतस्थलैः ५३ वास्तोषपती  
नाञ्चगृहैर्बलिभीमिश्च निर्भितम् ॥ चातुर्वर्ग्यजनाकीर्णयदुदेवगृहोत्तमत् ५४ सुधर्मापारिजातञ्च महेन्द्रः प्राहिणोद्धरेः ॥ यत्रचात्रस्थितो मर्त्यो मर्त्यधर्मेन

सकें ऐसी एक किला बनावैगे तामें अपने ज्ञाति के यादवन कूं राखिकें कालयवन कूं मारैगे ४९ या विधि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र मन में विचार करिकें अड़तालीस कोस को समुद्र के बीच में किला और ता किलों के बीच में आश्चर्य अद्भुत नगर रचत भये ५० कैसी नगर है कि जा नगर में सम्पूर्ण निवचर्मा की कारीगरी दिखई देय है राजा के निकटि के वड़े वड़े चाजार और गली और चौक जामें बने हैं ५१ बीच बीच में हवेली बनिवै की जगह छिकि गई है बलदृष्ट और लता हैं जिनमें ऐसे फलन के वाग और चित्र विचित्र फुतचारी के वसीचा लगि रहे हैं स्वर्ण के जिनके शिखर आकाश कूं सगई बरें ऐसे ऊंचे स्फटिक मणिन के अष्टा बनि रहे हैं और ऊंचे ऊंचे किला के द्वार बने हैं घोड़ान के चैधिने के और अन्न धरिने के लोहे पीतल के स्थान बने हैं तिनके ऊपर सोने के कलश धरे हैं तिनसूं सुन्दर लगे हैं पद्मराग मणि के जिनके शिखर और महामरकमणिन की जिनमें धरती ऐसे सुवर्ण के घर जहाँ बने हैं ५२।५३ देवना के मन्दिर बने हैं और चित्रसारी बनी हैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये चार वर्ण जागें वैसे हैं यादवन के और देव राजा उग्रधेन के महल जे बने हैं तिनसूं शोभायमान हैं ५४ जा न-

भोग छूटे १७ और तुम्हारे पुत्र रानी ज्ञातिके भयथा वन्द्यु दीवान प्रधान मन्त्री राज्यकी प्रजा ये सम्पूर्ण अथ कोई नहीं वचे हैं समको कालने नाश करि दियो ? २८ काल वलवाननमें चलवान है भगवानकी शक्ति है समर्थ अविनाशी है जैसे पशूनको पालन करनवारी ग्वालिया पशून कूं चलावै है ऐसे काल आप क्रीडा करिकै समस्त प्रजाकूं इत उत चलावै है ? २९ सम्पूर्ण देवता कहे हैं हे राजन् मुचुकुन्द ! तुम्हारी कल्याण होय मोक्षके विना जो कोई वरचाहो सो पागिलेउ मोक्षको दाता तौ केवल एक अविनाशी विष्णु भगवान ईश्वर है २० या प्रकार जब देवतानने कछो तत्र वड़ी है यश जाको ऐसो राजा मुचुकुन्द बहुत दिन देवतानकी जो रक्षा करी तामूं अतिश्रमिहै या कारण शयनके अर्थ निद्रा वर मांगतभयो हे देवताओ ! जो कोई सोवत में मेरी निद्रा को भङ्ग करै वह उसी समय भस्म होय जाय या विपिको वर मागो सोई देवतानने दियो तब राजा मुचुकुन्द देवतानने दीनी जो निद्रा तामूं पर्वतकी गुफामें जायकै सोवतभयो २१ । २२ देवतान ने वरदियो कि

वर्धजिह्मताः १७ सुतागहिष्योभवतोज्ञातयोऽमात्यमन्त्रिणः ॥ प्रजाश्चतुल्यकालीयानाधुनासन्तिकालिताः १८ कालोवलीयान् वलिनां भगवानीश्वरो

ऽव्ययः ॥ प्रजाः कालयते क्रीडन् पशुपालो यथा पशून् १९ वंशवृणीष्वभद्रन्तेऽतैकैवल्यमद्यनः ॥ एकपेवैश्वरस्तस्य भगवान् विष्णुरव्ययः २० एवमुक्तः स वैदेवान् भिवन्द्य महायशाः ॥ निद्रामेव ततो वव्रे राजाश्रमविकर्षितः ॥ यः कश्चिन्मम निद्राया भङ्गं कुर्यात्सुरोत्तमाः २१ सहिभस्मी भवेदाशुतथोक्तेः श्रमुरैस्तदा ॥

अशुयिष्ठगुहापिष्टो निद्रया देवदत्तया २२ स्वापं यातं यस्तु मध्ये बोधयेत्त्वामचेतनः ॥ सत्वया दृष्टमात्रस्तु भस्मी भवतु तत्क्षणत् २३ यवने भस्मसानीति भगवान् सात्वतर्षभः ॥ आत्मानन्दर्शयामास मुचुकुन्दाय धीमते २४ तमालो क्यधनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ॥ श्रीवत्सवक्षसम्भ्राजत् कौस्तुभेन विराजितम् ॥

२५ चतुर्मुजरोचमानं वैजयन्तपात्रमालया ॥ चारुप्रसन्नवदनं स्फुन्मकरकुण्डलम् २६ प्रेक्षणीयं नृलोकस्य सानुरागस्मितेक्षणम् ॥ अपीच्य वयं संभक्तमृगेन्द्रोदारविक्रमम् २७ पर्यपृच्छन्महाबुद्धिस्तेजसा तस्य धर्षितः ॥ शङ्कितः शनैरैराजा दुर्धर्षमिव तेजसा २८ ॥ मुचुकुन्द उवाच ॥ को भवानिह सम्प्राप्तो विपिने गिरिगह्वरे ॥ पद्भ्यां पद्मपलाशाभ्यां विचरस्युरुग्रशूके २९ किंस्वित्तेजस्विनतिजो भगवान्वाविभावसुः ॥ सूर्यः सोमो महेन्द्रो वा लोकापालो परोऽपि

जावो तुम अचेतनसोवो जो तुम्हें बीचमें जगावैवो वह तुम्हारी दृष्टि परे तैं तत्काल जरिकै भस्म होय जायगो २३ जा समय कालयवन जरिकै भस्म होयगयो ता समय यादवनमें श्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बुद्धिमान् मुचुकुन्दकूं आपनो दर्शन करावतभये २४ मेवकी तुल्य श्यामवर्ण पीतवस्त्र धारण करे हृदयमें भृगुलताको जिनके चिह्न हैं प्रकाशमान कौस्तुभमणि धारण करे हैं तामों शोभायमान हैं २५ चतुर्भुज वैजयन्ती माला हैं प्रकाशमान हैं सुन्दर प्रसन्न जिनको मुल सो मकराकृति कुण्डलन सूं प्रकाशमान हैं २६ मनुष्यनकों देखिबे योग्य स्नेह भरी मुसिकानि सहित जिनकी चित्तविनवीन जिनकी अवस्था मतवारे सिंहकी तुल्य जिनकों पराक्रम है २७ ऐसे श्रीकृष्णकूं देखिकै बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्णचन्द्र के तेजसू पराभव कूं प्राप्तभये ऐसे राजा मुचुकुन्द भय मानिके होले होले पूज्यतभये २८ अत्र राजा मुचुकुन्द पूछे हैं या वनमें पर्वत की गुफामें कौन कहासे आयेहौ कमलसे कोमल तुम्हारे चरण यहां बहुत काटेनमें फिरो हौ २९ तेजस्वीन के तुम तेज

स्वरूप हो अथवा भगवान् आग्निरूप हो अथवा सूर्य हो किंवा चन्द्रमा हो अथवा कोई देवता हो ३० ब्रह्मा विष्णु शिव इन तीनों देवतान में से विष्णु भगवान् ही यह में जानूँ दिया जैसे अपने प्रकाश से अंधेरे को दूरि करे है ऐसे अपने तेज से या गुफाको अन्यकार तुमने दूरि करो है ३१ हे मनुष्यन में श्रेष्ठ ! हमारी सुनिधि की इच्छा है हमारे आगे निष्कण्ट होयकै जो तुम्हें अच्छी लागै तो अपनो जन्म कर्म नाम गोत्र बताओ ३२ हे पुरुषन में श्रेष्ठ समर्थ ! हम तो इक्ष्वाकु के वंशमें उत्पन्न भये क्षत्रियन में अधम मान्यता के पुत्र मुचुकुन्द है ३३ बहुत दिनन जो जाग्यो हूँ तासूं मोकुं खेद भयो और नोदूं मोकुं खेद भयो और नोदूं मोकुं खेद भयो ३४ जानै हूँ जगयो वह पुरुष अपने पाप ते जरिकै भस्म होयगयो वाके बरे पीछे हे शत्रुनके नाशक ! शोभायमान तुम देखे ३५ नहीं सहिये में आवै ऐसो जो तुम्हारी तेज है तासूं मेरो तेज

वा ३० मन्येत्वा देवदेवानां त्रयाणां पुरुषर्पभम् ॥ यद्वाधसे गृहाध्वान्तं प्रदीपः प्रभायाया ३१ शुश्रूषतामन्यलीकमस्माकं नरपुङ्गव ॥ स्वजन्मकर्मगोत्रं वा कथयतां यद्विरोचते ३२ वयन्तु पुरुषव्याघ्र ऐक्ष्वाकाः क्षत्रवन्धवः ॥ मुचुकुन्द इति प्रोक्तो यौवनाश्रवात्मजः प्रभो ३३ चिरप्रजागराश्रान्तो निद्रया पहतोन्द्रियः ॥ शयेऽस्मिन् विजने कामं केनाप्युत्थापितोऽधुना ३४ सोऽपि भस्मीकृतो नूनात्मा त्मयै नैव पापमना ॥ अनन्तरं भवाञ्छीमा लैलाक्षितोऽभिप्रशान्तनः ३५ तेजसा ते विपद्येण भूदिष्टं न शक्नुमः ॥ हनौ जसो महाभाग माननीयोऽसि देहि नाम् ३६ एवं सम्भाषितो राज्ञा भगवान् भूतभावनः ॥ प्रत्याह प्रहसन्माया मेघनाद गभीरया ३७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ जन्मकर्मभिधानानि सन्ति मेऽङ्ग महत्तमः ॥ न शक्यन्तेऽनुसङ्ख्यातुमनन्तत्वा न्मयाऽपि हि ३८ क्वचिद्राज्ञां सि विममे पार्थिवान्युरुजन्मभिः ॥ गुणकर्मभिधानानि न मे जन्मानि कर्हि चित् ३९ कालत्रयोपपन्नानि जन्मकर्मणि मे नृप ॥ अनुक्रमन्तो नैवान्तं गच्छन्ति परमर्प यः ४० तथाप्यद्य न नान्यद्गृण्य गदतो मम ॥ विज्ञापितो विरिञ्चनपुराहं धर्मगुप्तये ॥ भूमेर्भारायमाणानामसुराणां क्षयाय च ४१ अवतीर्णो यदुक्ते गृह

दूरि होयगयो बहुत देखिये की सामर्थ्य नहीं है महाभाग ! देहधारीन कूं तुम मानिये योग्य हो ३६ या प्रकार राजा मुचुकुन्द ने कही तब प्राणीन के पालन करनकारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हंसिके भेव जैसे गरजे है ता प्रकार गर्जिके बोलत भये ३७ अब श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं मुचुकुन्द भरे जन्म कर्म नामन को अन्त नहीं है असंख्यात हैं योते में नहीं गिन सकूं हूं ३८ कदाचित् कोई पुरुष बहुत जन्मन में पृथ्वी की धूरिकूं तो गिनि भी लेइ परन्तु भरे गुण कर्म नाम जन्म गिनती, में नहीं आवै हैं ३९ हे राजन् मुचुकुन्द ! भूत भविष्यद् वृत्ते पान तीनों काल में विद्यमान ऐसे जे भरे जन्म कर्म हैं तिनकी वड़े वड़े क्षर्पाएवर संख्या करे हैं तथापि अन्त नहीं पावै हैं ४० तथापि हे मुचुकुन्द ! अबके जन्म कर्म नाम कहूं हूं भोते श्रवण करो धर्म की रक्षा करिये के कारण और पृथ्वी पै वोभ जिनको भयो ऐसे जे असुर हैं तिनको नाश करियेके लिये पाहिले ब्रह्माने मेरी विनती करी रही ४१ तासूं यादवन के कुल में बसुदेव के घर प्रकट भयो हूं बसुदेवको पुत्र

हूँ याते मोहि वासुदेव केहे हैं ४२ कालनेमिकंस मैने मारयो साधुन के देवी पलम्बसे आदिलै के असुर मैने मारे हे राजन् मुचुकुन्द ! यह जो कालयवन है सो तेरी तीक्ष्णदृष्टि द्वारा दृश्य होयगयो ४३ हे राजन् मुचुकुन्द ! पहिले तुमने मेरी बहुत प्रार्थना करीरही और मैं भक्तवत्सलहोँ याकारण तोयै अनुग्रह करिबे कूँ या गुफा में आयो हूँ ४४ हे राजान मैं ऋषि मुचुकुन्द ! मैं प्रसन्न हूँ तुम मोपै वर मागो मेरी शरणआये पीछे फेर प्राणी कूँ शोच नहीं रहे है ४५ अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित ! यह श्रीकृष्णचन्द्र ने जब कही तब राजा मुचुकुन्द प्रसन्नहोय कै दृढ़ गगर्वाचार्य जो रुहिंगयेहैं तिनको ( अष्टाविंशतिभुगो भगवान् वरिण्यतीति ) वचन स्मरणकरिकै साक्षात् परिपूर्ण नारायण देन है यह जानिकै प्रणाम करिकै बोलत भयो ४६ अब राजा मुचुकुन्द आठ श्लोकन वरिकै स्तुति करेहै हे ईश्वर ! तुम्हारी माया करिकै यह मनुष्य मोहित होयगयो है याते पिथ्याभूत जो माया की दृष्टि है ताभूँ नहीं देखे है याही ते तुम्हें नहीं मनेहै

आनकहुनुभेः ॥ वदन्तिवासुदेवतिवसुदेवमन्तर्दिपाम ४३ कालनेमिकंस मैने मारयो साधुन के देवी पलम्बसे आदिलै के असुर मैने मारे हे राजन् मुचुकुन्द ! यह जो कालयवन है सो तेरी तीक्ष्णदृष्टि द्वारा दृश्य होयगयो ४३ हे राजन् मुचुकुन्द ! पहिले तुमने मेरी बहुत प्रार्थना करीरही और मैं भक्तवत्सलहोँ याकारण तोयै अनुग्रह करिबे कूँ या गुफा में आयो हूँ ४४ हे राजान मैं ऋषि मुचुकुन्द ! मैं प्रसन्न हूँ तुम मोपै वर मागो मेरी शरणआये पीछे फेर प्राणी कूँ शोच नहीं रहे है ४५ अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित ! यह श्रीकृष्णचन्द्र ने जब कही तब राजा मुचुकुन्द प्रसन्नहोय कै दृढ़ गगर्वाचार्य जो रुहिंगयेहैं तिनको ( अष्टाविंशतिभुगो भगवान् वरिण्यतीति ) वचन स्मरणकरिकै साक्षात् परिपूर्ण नारायण देन है यह जानिकै प्रणाम करिकै बोलत भयो ४६ अब राजा मुचुकुन्द आठ श्लोकन वरिकै स्तुति करेहै हे ईश्वर ! तुम्हारी माया करिकै यह मनुष्य मोहित होयगयो है याते पिथ्याभूत जो माया की दृष्टि है ताभूँ नहीं देखे है याही ते तुम्हें नहीं मनेहै

कहा स्त्री और कहा पुरुष दोनों ठगि गये हैं सुल के कारण दुःख जिनमें होय ऐसे घरन में अटकि जाय है ४७ कर्म भूमि जो यह पृथ्वी है तामें आयकै यह मनुष्य सुन्दर हाथ पाँव अस्त्रि नाक कान ऐसे मनुष्य देह को पायकै हे अनम्र ! तुम्हारे चरणारविन्द को भजन नहीं करेहै जैसे हरी घास के निमित्त पशु अन्यकूप में गिरे है ऐसे खोटी जाकी मति ऐसो पुरुष त्रिययन के निमित्त अन्यकू लणजे घर हैं तिनमें परचो रहे है ४८ हे अजित अर्यात् जीतेमें न आबो ! नेवल यह प्राणीही भूलि रहे हैं सो बात नहीं मेरी भी यही गति है मोको इतने दिन निष्फलही नीतणये राज्यकी सम्पत्ति पायके मे कूँ बडो गर्व होयगयो है पृथ्वी तो पालन करनवारो राजाहौं मनुष्यदेह में मेरी आत्मबुद्धि है अर्यात् देहको आत्मा माने हौं पुत्र स्त्री खजाने पृथ्वी इनकी नडी चिना गे आसक्त होय रह्यो हौं ४९ जैसे कबो घड़ा क्षण में फूटिजाय वारू कीभीति जैसे क्षण में गिरि परै या प्रकार देह को भी भरोसो नहीं है ता देह में राजा में हू या प्रकार वदचो है अभिमान जाके रय हाथी घोड़ा प्यादे इनकी जो सेना है ताको पालन करै ऐमेजे मुख्य सेनाध्यक्ष तिनकूं सब लैकै पृथ्वीवै बोलेहै कालरूप जो तुमहो तिनको स्परणही

नहीं वस्यो ऐसो मतवारो रखो योत मेरो समय निष्फल गयो ५० आज यह काम करना है या प्रकार की चिन्ता में मतवारो होय रह्यो दश होथे अन बीस होथे पचास होथे हजार होथे लाख होथे या प्रकार लोभ दहत जाय है विपयन में चाहना जाके ऐसे पुरुष कुं कालख्य तुम शीघ्र मारि लेउ हो क्षुग के मोरे ग्राँठन कुं चाटै ऐसो सर्थ जैसे मूसे कुं मारि लेय है ५१ मनुष्यन को देन अर्थात् राजा यह नाग जाको ऐसो यह देह सुणै के साज के रयन पै वाहाथीन पै चैठि कै डोले है ऐसो देह दुरत्ययकाल करि कै मरे भीखे कुत्ता स्यार भक्षण करि जायै तो दिष्टा होय जाय पखो रहै तो कीरा परि जाय अग्नि से जराय देउ तो भस्म होय जाय है यह तीन नामन कुं धारण करै है ५२ सम्पूर्ण दिशान कुं जीत कै युद्ध करिवे लायक कोई शत्रु शक्ती न रखो चक्रवर्ती राजा सिंहासन पै बैठ्यो बराबर के राजा आय के प्रणाम जाकुं करै ऐसो भी चक्रवर्ती राजा है तथापि भैथुन को है सुख जिन में ऐसी स्त्रीन के घर में जैसे लकड़ी के चल वन्दर नाजे ऐसो नाच्यो करै है ५३ सप्त विपयन के भोग कुं त्यागि के तप में है वही श्रद्धा जाके अर्थात् पुछ्यी में सोचै ब्रह्मचर्य सूर रहै व्रतन कुं करै विपयन के भोग वेकुं दान पुण्य करै है और त्रिचारे है कि या

पुरारैर्यैहमपरिष्कृतैश्चरन् मनङ्गैर्वानरदेवसंज्ञितः ॥ सएवकालेनदुरस्ययेनतेकलेवरोविद्वङ्गमिभस्मरंज्ञितः ५२ निर्जिजत्यदिक्चक्रमभूतमिग्रहोवरासन  
स्थःसमराजवन्दितः ॥ गृहेषुमैथुन्यमुखेषुयोपिनाकीडासुगःपरुषईशनीयते ५३ करोतिकर्मोणिनपःसुनिष्ठितोनिवृत्तमोगस्तदपेक्षयादत्तः ॥ पुनश्चभूयेय  
महंस्वराडितिप्रवृद्धतर्पणमुलायकल्पते ५४ भवापवर्गोऽभ्रमतोयदाभवेज्जनस्यतर्ह्यव्युत्तसत्समागमः ॥ सत्सङ्गमोर्हिन्दैवसद्गतौपरावेशेत्ययिजायते  
मतिः ५५ मन्येममन्नुग्रहईशनेऽकृतोराज्यानुबन्धापगमोयदृच्छया ॥ यःप्राथ्येतेसाधुभिरेकचर्ययावन्विविक्षाद्भिरखरडभूमिपैः ५६ नकामयेऽन्यतवपाद  
सेवनादकिञ्चनप्राथ्यतमादरंविभो ॥ आराध्यकस्तं ह्यपवर्गदंहरवृणीत आर्द्योर्विरमात्मबन्धनम् ५७ तस्माद्विमृज्याशिर्पईशसर्वतोरजस्नमःसत्त्वगुणानु  
बन्धनाः ॥ निरञ्जनंनिर्गुणमद्वयंपरंत्वाज्ञिसिमात्रंपरुषंप्रजाम्यहम् ५८ चिरमिहव्यजिनार्त्तस्तप्यमानोऽनुतापैरवितृपपडमित्रोऽलब्धशान्तिःकथञ्चित् ॥ श

जन्म में तप खंडों तो दूसरे जन्म में जाय कै इन्द्र होइंगो या प्रकार तुलना जाके बड़ी है वा पुरुष कूँ कर्म सुख नहीं होय है ५४ ऐसे आठ श्लोकन करिकै ईश्वर तें वहिम्म्यन कूं भंसार कहिकै अय ससार की निवृत्ति कहै है अच्युत ! या ससार में जन्म मरण कूं भास मयोजो जीव है ताकूं जा समय तुम्हारे अनुग्रह करिकै ससार को संह होइ तासमय सग संह कूं दूर करिकार्य कारण के नियन्ता जो तुम ईश्वर हौ तिनमें भक्ति होय है ता भक्तितें संसार छूट है ५५ है ईश्वर ! मेरो आनायासपूर्ण राज्यव्यग्न छूटि जायो यह तुमने मेरे ऊपर बड़ो अनुग्रह करयो यह मैं मानूं हूं राज्य के छूटने के लिये अकेलो होय कै वनमें जाइवै की इच्छा करै ऐसे जे चक्रवर्ती राजा हैं तेभी प्रार्थना करै हैं कि हमसरो कोई तरह राज्य छूटि जाइ तौ अकेले होय के वनमें जाय वैठै ५६ है समर्थ ! निष्किञ्चन साधु जाकी प्रार्थना करै ऐसो तुम्हारे चरणारविन्दको सेवन है ताते और काहू वर की चाहना नहीं करै हैं हे हरे ! मोक्ष के देन वारे जो तुमहो तिनको आराधन करिके ऐसो कौन निवेदी पुरुष है जो आत्माको बन्धनरूप वर है ताकूं भांगो ५७ है ईश्वर अर्थात् सवके प्रेरणा करन वारे ! ता कारण रजोगुण तमोगुण सत्वगुण इनको वन्दन और ऐश्वर्य तथा शत्रुको मरण



श्रीरधर्मादिक को करिवो ये हैं स्वरूप जिनके ऐसे जे मनोरथ हैं तिन सबकू त्यागिके ज्ञानघन अञ्जन जो उपाधि तासू न्यारे ऐसे निर्गुण अद्वैत पुरुष तुमहौ तिनकी में शरण आयोहूँ ५८ हे ईश ! या संसार में बहुत दिनन ते दुःखन करिके पीड़ित हू नहीं गई हैं तृष्णा जिनकी ऐसी जे छः इन्द्रिय शत्रु जाके नहीं पाई हैं शान्ति जाने हे शरण के देनवारे ! हे परमात्मन् ! हे ईश्वर ! ज्यो त्यों करिके शोक जामें नहीं भयकों दूर करनवारो तुम्हारो चरणारविन्द है ताको शरण लियो है मेरी रक्षाकरो ५९ अत्र श्रीभगवान् कहे हैं हे चक्रवर्ती राजन् ! वरदेने कहिके तुमकू लोभ उत्पन्न क्रियो तथापि कामना करिके तुम्हारी मति चलायमान न भई ६० मैंने वरदेने कहिके लोभ उत्पन्न क्रियो सो तोकू सावधान करयो यह तू जानि मेरे जे एकान्ती भक्त है तिनकू कदाचित् वर आयके प्राप्तहोय तथापि उनकी बुद्धि चलायमान नहीं होय है ६१ प्राणायामादिकन करिके मनकों अवरोध करे वे मेरे भक्त नहीं गई हैं वासना जामें ऐसो मन है सो हे राजन् मुचकुन्द !

रणदसमुपेतस्त्रपदाब्जं परात्मन्नभयमृत्तमशोकं पाहिमापन्नमीश ५६ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सावित्रीममहाजमतिस्तेविमलोजिता ॥ वरैः प्रलोभितस्यापि न कामैर्विहतायतः ६० प्रलोभितो वैर्यं रमप्रमादाय विद्धितत ॥ न धीर्मय्येकभक्तानामाशीर्भिद्यते कश्चित् ६१ युञ्जानानामभक्तानां प्राणायामादिभिर्मनः ॥ अक्षीणवासनं राजन् दृश्यते पुनरुत्थितम् ६२ विचरस्वमर्हीकामं मय्योवेशितमानसः ॥ अस्त्वेव नित्यदा तुभ्यं भक्तिर्मय्यनपायिनी ६३ क्षात्रधर्मस्थितोजन्तून् न्यवधीर्मुगयादिभिः ॥ समाहितस्तत्तपसा जह्यधं मदुपाश्रितः ६४ जन्मन्यन्तरे राजन् सर्वभूतसुहृत्तमः ॥ भूत्वा द्विजवरस्त्ववै मासुपेक्ष्य सिकेवलम् ६५ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे मुचुकुन्दस्तुतिर्नामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥ ॐ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ इत्थं सोऽनुगृहीतो ह्यरुणनेने क्ष्वाकूनन्दनः ॥ तं परिक्रम्य संनम्य निश्चक्राम गुहासुखात् १ सर्वाक्षयक्षुल्लकात् प्रमत्यान् पशून् वीरुदनस्पतीन् ॥ मत्ताकलियुगं प्राप्तं जगाम दिशमुत्तराम् २ तपःश्रद्धायुतो धीरो निःसङ्गो मुक्तसंशयः ॥ समाधाय मनः कृष्णे प्राविश दूधमादनम् ३ वदध्यां श्रममासा फेरि विषयन में जातो दीप्ते है ६२ हे राजन् मुचुकुन्द ! मेरे विषे मनकू लगाइकै जहाँ इच्छा आवै तहाँ विचरो तुम्हारी नित्य दृढयक्ति मो में होउ ६३ क्षात्रधर्म में रहिके शिवाखेलिके जो तैने जीवनकी हिसाकरी सो अब सावधान होयकै मेरो आश्रय लैके तप करिके वा पापकू दूरकर ६४ हे राजन् मुचुकुन्द ! दूसरे जन्म में सब प्राणीन के हितके कारनवारे ब्राह्मण होयके शुद्धरूप जो मैंने ताकू पावोगे ६५ इति श्रीममहाभागवतार्थल्लिखितयादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे मुचुकुन्दस्तुतिर्नामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

( द्विपञ्चाशत्तमे भावन्भयादिनगतः पुरीम् ॥ अन्वमोदतसन्देशं रुक्मिण्याद्विजवर्णितम् १ वाचनं अथाय में भयकी नाई शीघ्र चलकर कृष्णजी पुरीको प्राप्त हो गये और ब्राह्मणके वर्णित रुक्मिणीजीके सन्देशतो सुनकर प्रसन्न होते भये १ ) अत्र श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! याप्रकार श्रीकृष्ण ने अनुग्रह जापे करयो ऐसो इक्ष्वाकूनन्दन मुचुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र की परिक्रमा दैके नमस्कार करिके गुफामें तें वाहर निकसत भयो १ राजा मुचुकुन्द मनुष्यन कू पशून कू लतान कू और छोटे २ वृत्तन कू देखिके, कलियुग आयगयो यह जानिके उत्तरदिशा कू जात भये २ तप

रेवती है ताप बलदेवजीकू देतभयो यह प्रथम कहिआये हैं १५ हे कौरवनेक कुलकू आनन्दके देनवारे राजन् परीक्षित् ! भगवान् गोविन्दहैं सो भी स्वयंवर में लक्ष्मी को अंशविदभदेश में जन्मी ऐसी जो भीष्मक की कन्या है ताप व्यावृत्तभये १६ शाल्व तें आदिलैके शिशुपाल की ओर के राजानकू जल्दी जीतिके सव लोकनके देखते जैसे देवतानजू जीतिके गरुड अमृत कू लायो है या प्रकार लावतभये १७ अथ राजा परीक्षित् कहे हैं सुन्दर जाको मुख ऐसी भीष्मक राजाकी पुत्री रुक्मिणी कू युद्धमें तें हरिकै श्रीकृष्णचन्द्र व्यावृत्तभये यह हमने तुम्हारेही मुखतें सुनी है हे शुक्रदेवजी ! जरासन्ध शाल्व इत्यादिक राजानकू जीतिके जैसे रुक्मिणी कू लावतभये बड़ों है तेज गिनको ऐसी श्रीकृष्णचन्द्र को चरित्र श्रवणकृत्यो चाहों हूं हे ब्रह्मन् ! श्रीकृष्णचन्द्रकी कथा पवित्र हैं मनोहर हैं लोकनके पापनकू दूर करे हैं नित्य नवीन हैं सुनिचे के सार कू जाने ऐसो कौन पुरुष है जो ऐसी कथानकू सुनिके वृत्त होय १८ ॥ १९ ॥ २० अथ श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे

श्रियोमात्रास्वयंवर १६ प्रमथ्यतरसाराज्ञःशाल्वादीश्चैद्यपक्षगान् ॥ पश्यतां सर्वलोकानां तार्क्ष्यपुत्रःसुयामिव १७ ॥ राजोवाच ॥ भगवान्भीष्मकमुतां रुक्मिणीरुचिराननाम् ॥ राक्षसेनविधानेनउपयेमइतिश्रुतम् १८ भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि कृष्णस्यामिततेजसः ॥ यथामागधशाल्वादीजित्वा कन्यासुपाह रत् १९ ब्रह्मन्कृष्णकथाःपुरायामाध्वीलौकिकमलापहाः ॥ कोनुत्प्रेतेतश्रृगवानःश्रुतज्ञोनित्यनूतनाः २० ॥ श्रीशुक्रउवाच ॥ राजासीद्भीष्मकोनाम विदर्भा धिपतिर्महान् ॥ तस्यपश्चाभवनृपुत्राः कन्यैकाचवरानना २१ रुक्म्यभजोरुक्मरथोरुक्मवाहुरनन्तरः ॥ रुक्मकेशोरुक्ममाली रुक्मिण्येपांस्यसासती २२ सोपश्रुत्यमुकुन्दस्य रूपवीर्यगुणश्रियः ॥ गृहागतैर्गीयमानास्तंभनेनसदृशंपतिम् २३ तां वृद्धिलक्षणौदार्यरूपशीलगुणाश्रयाम् ॥ कृष्णश्चसदृशी भार्या समुद्रोदुमनोदये २४ चन्धूनामिच्छतांदातुं कृष्णायभगिनींनृप ॥ ततोनिवार्यकृष्णद्विद्वरुष्मीचैद्यममन्यत २५ तदेवतयासितापान्निविद्भीडुर्भ्रमाभूशाम् ॥ विचिन्त्यासिंजिज्जकञ्चित् कृष्णायप्राहिणोदद्भुतम् २६ द्वारकांसमसमभ्येत्य प्रतीहारैःप्रवेशितः ॥ अपश्यदाद्यं पुरुषमासीनंक्रान्नासने २७

राजन् परीक्षित् ! विदर्भदेशको पालन करनवारो भीष्मक जाकों नाम ऐसो बड़ो राजा होतभयो ताभीष्मक राजा के पांच पुत्र होतभये और सुन्दर है मुख जाको ऐसी एक कन्या होतिभई २१ तिन में बड़ो रुक्मी तामूं छोटो रुक्मरथ तामूं छोटो रुक्मवाहु तामूं छोटो रुक्मकेश तामूं छोटो रुक्ममाली ये पांच पुत्र होतभये इन पांचोंनकी वह्नि पतिव्रता रुक्मिणी होति भई २२ घरमें आये जे नारदादिक मुनि हैं तिनने गाये ऐसे जे मुक्तिके देनवारे श्रीकृष्ण तिनको सुन्दर रूप पराक्रम गुणशोभा इनकू श्रवण करिके रुक्मिणी अपनी वराचरिको मानति भई २३ यहां सुन्दर बुद्धि लक्षण उदारता रूप शील और गुणयुक्त रुक्मिणीकू श्रवण करिके श्रीकृष्णचन्द्र अपनी वराचरीकी स्त्री व्याहिवेकू मनमें करतभये २४ माता पिता और भय्या चन्धुनकी सक्की यह इच्छाही कि रुक्मिणी श्रीकृष्णचन्द्रकू देयो परन्तु श्रीकृष्णको शत्रु जो रुक्मी है सो हम अपनी वह्नि कृष्णकू न व्याहिये ऐसे निषेध करिके या लायकर शिशुपाल है या प्रकार मानतभयो २५ सुन्दर है नील कटाक्ष जाके ऐसी विदर्भदेशके राजाकी पुत्री रुक्मिणी श्रीकृष्णके व्याहिवेकू प्येरो भय्या मनेकरे है यह जानिके बहुत उदास मन जाको ऐसी रुक्मिणी कोई एक अपनो स्नेही ब्राह्मण है तय वि-

करिवेमें अद्धा जिनकी भई सद्ग छोड़ि दियोहै सन्देह जिनके मिटिगये हैं ऐसे राजा मुचुहुन्द श्रीकृष्णमें मन लगायकै गन्यपादन पर्यतै जातभये ३ नरनारायण को स्थान जो वदरिकाश्रम है तामें जायके सम्पूर्ण द्वंद्व अर्थात् सुख दुःख भृगु प्यास शीत उष्ण इनकुं सहिकै शान्त जिनको स्वरूप ऐमो ओ मुचुकुन्द है सो तप करिके हरिको आराधन करतभयो ४ स्लेन्ध्र जाकुं घेरिहै ऐसी जो मथुरापुरी है तामें भगवान् श्रीकृष्ण फेरि आयके म्लेच्छनकी सेना मारिके आर उगको धनैहै ताप लैकै द्वारकामें पहुँचावतभये ५ श्रीकृष्णचन्द्रके कहैतें मनुष्य बलनके ऊपर धनकुं ला-  
दिकै लैचलेतव जरासन्ध तेईस अत्तौहिणी सेनाकुं सङ्गलैकै आपतभयो ६ हे राजन् परीक्षित ! मायव अ श्रीकृष्ण उलदेवहै ते शुभ्रुओ सेनाकुं देविकै मनुष्यलीलामें आयकै शीघ्र भागवतभये ७ नहीहै भय जिनके ऐसे कृष्ण बलदेव यहुन जो उनहैं ताकुं मार्गमेंही त्यागिके यहुत भयगीतकी तुल्य कमलसे तोमल चरण हैं तिनहीमूं चट्टन दूरि भाजत भये ८ ईश्वर जो श्रीकृष्ण उलदेवहैं तिन

द्यानरनारायणालयम् ॥ सर्वद्वन्द्वसहः शान्तस्तपसाराधयद्धरिम् ४ भगवान् पुनराब्रज्य पुरीयवनवेष्टिताम् ॥ इत्थाम्लेच्छबलानिन्ये तदीयंद्वारकां यनम् ५ नीयमानेधनेगोभिर्नृभिश्चाव्युतचोदितैः ॥ आजगाम जरासन्धस्त्रयोविंशत्यनीकपः ६ विलोक्य वेगभसं रिपुभैर्यस्य गाधवौ ॥ मनुष्येवेष्टामापन्नौ राज नृद्वन्द्वतुर्द्वुतम् ७ विहाय विचित्रचुरमभीतौ भीरुभीनवत् ॥ पदभ्यां पद्मपलाशाभ्यां चैलतुर्बहुयोजनम् ८ पलायमानौ तौ दृष्ट्वा मागधं ग्रहसन्बली ॥ अन्य धावद्रथानीकैरीशयोरप्रमाणवित् ९ प्रद्वयदूरं सन्तौ तुङ्गमारुहतां गिरिम् ॥ प्रवर्पणाख्यं भगवान् नित्यदायत्रवर्पति १० गिरीनिलीनावाज्ञाय नाधिगम्य प दंष्ट्रप ॥ ददाहगिरिमेधोभिः समन्तादग्निमुत्सृजन् ११ तत उत्पत्य तस्मादह्यमानतटाडुभौ ॥ दशैकयोजनोत्तुङ्गान्निधेततुरधोभुवि १२ अलक्ष्यमाणौ रिपु णा सानुगेन यदूत्तमौ ॥ स्वपुंरं पुनरायातौ समुद्रपरिखान्त्प १३ सोऽपि दग्धानिति श्रुत्वा मन्वानो बलकेशवौ ॥ बलमाकृष्य मुपहन्यमान् गवान् मागधो ययौ १४ आनत्ताधिपतिः श्रीमान् रेवतो रथतीमुताम् ॥ ब्रह्मणा चोदितः प्रादाद्बलायेति पुरोदितम् १५ भगवान् पिगोविन्द उपयेमे कुरुद्वह ॥ वेदभी भीष्मकमुतां

के बलकुं नहीं जानिकै बली जो मगध देशको राजा जरासन्ध है सो कृष्ण बलदेवकुं भाजे देरिके धंसिकै बहुतसे रथनकुं सङ्गलैके पीछे दौरत भयो ९ बहुत दूर जो भागे तातें अप जिनकुं भयो ऐसे कृष्ण बलदेव है ते प्रवर्पण नामक जो ऊँचो पर्वतहै तापै चढतभये कैसो पर्वतहै इन्ज जापै नित्य वर्षा करे है १० हे राजन् परीक्षित ! श्रीकृष्ण बलदेव कुं पर्वतमें छिपे जानिके ता पर्वत में दृष्टिकै तिनके छिपिकों स्थान न मिल्यो तव चाखो ओरतें आगि लगायकै जरासन्ध भयो ११ जरो है शिलर जाको ऐसो जो चवालीस कोस ऊँचो पर्वतहै तापै तें कृष्ण बलदेव दोनो भय्या उद्वरिकै जरासन्धकी फौजकुं उल्लोचिकै नीचे पृथ्वीमें कूदतभये १२ हे राजन् परीक्षित ! दहलुआन सहित वैरी जो जरासन्ध है ताने न देखे ऐसे यादवन में उत्तम जे कृष्ण बलदेव है ते मयुड जाकी खाई ऐसी द्वाकापुरी में आवतभये १३ मगधदेश को राजा जरासन्ध है सो भी कृष्ण उलदेव कू मिल्था जरिगये मानिकै चड़ी फौजकुं सङ्गलैकै मगधदेशन कुं जातभयो १४ अथ श्री-  
कृष्णके विवाह कहिने के लिये प्रथम बलदेवजीके पिवाह नवपरस्त्रनमें कश्चिआये है तथापि फेर एक रत्नोक्तमें कहे हैं शोभायमान आनर्चदेशको राजा रैवतहैं सो ब्रह्मा के कहते आपनी पत्नी

श्रवण करे जे तुम्हारे गुण से कानन की रस्ता हृदय में जाय कै अंग के ताप कूं हर ऐसे मुम्हारे गुणन कूं सुनिके नेत्रवारे पुरुषन के नेनन कूं सुनिके लाज त्यागि कै मेरो विच तुम में लग्यो है ३७ हे मुकुन्द अर्थात् मुक्ति के देनवारे ! मनुष्य न में श्रेष्ठ गुणवान् जो तुमहो तिनमें बड़ी है बुद्धि जाकी ऐसी कौन कुल की कन्या कुल स्वभाव रूप विद्या अवस्था द्रव्य प्रभाव इन करिके कोई उपमा जिनकी देवे में न आवै मनुष्यलोक के मनकू आनन्द के देनवारे जो तुमहो तिनको विवाह समय पति न करै ३८ हे समर्थ ! ता कारण मैंने तुम पति करे हो तुम कूं अपनो देश अर्पण क्यो है मोकूं अपनी स्त्री करो हे कमललोचन ! शूरवीर जो तुम तिनको भाग जो मैं हूं ताय शिशुपाल शीघ्र आयके न छींथे जैसे सिंहा के भाग कूं स्मार नहीं की सके ३९ वावली कुवां तळाड वाग यज्ञ दान नियम शत देवता ब्राह्मण गुरु इनकी पूजा करिके ईश्वर भगवान् प्रसन्न करे हैं तो श्रीकृष्णचन्द्र हाथ पकरि कै ले जांचोदमघोष को पुत्र शिशुपाल तें आदि छैके राजा न आवै ४० हे अजित अर्थात् जीतिवै में न आचो ! कादिह विवाह होयगो तामें तुम छिपिके विदर्भ देश में आचो और अकेले मति आचो पीछे तें सेना कू लागये आचो गे शिशुपाल और मगधदेश

सिंहनरलोकमनोऽभिरामम् ३८ तन्मे भवान्बलुवृतः पतिरङ्गजायामात्मापितश्च भवतोन्नविभो विवेहि ॥ मावीरभागमभिमर्शतु चैव आद्रोमायुवन्मृगपतेर्व  
लिमम्बुजाक्ष ३९ पूर्त्तैष्टत्तनियमव्रतदेवविप्रगुर्वर्चनादिभिरलंभगवान्परेशः ॥ आराधितोयदिगदाग्रजएत्यपाणिगृह्णातुमेनदमघोषमुत्तादयोऽन्ये ४०  
श्वोभाविनिस्वमजितोद्धहनेविदर्भान् गुप्तः समेत्यपृतनापतिभिः परीतः ॥ निर्मथ्यचैद्यमगधेन्द्रबलंप्रसह्य माराक्षसेनविधिनोद्धहवीर्यशुल्काम् ४१ अन्तः  
पुरान्तरचरीमनिहत्यबन्धूंस्त्वामुद्धहेकथमितिप्रवदाम्युपायम् ॥ पूर्वेष्टुरस्तिमहवीकुलेदेवयात्रा यस्यांविहिर्नवधूर्गिरिजामुपेयात् ४२ यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजः  
स्नपनंमहान्तोवाञ्छन्त्युमापतिरिवात्मतमोपहत्यै ॥ यर्हम्बुजाक्षनलभेयभवत्प्रसादं जह्याममनूव्रतकृशः ॥ अञ्छतजन्मभिः स्यात् ४३ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ इत्ये  
तेगुह्यसन्देशायदुदेवमयाहताः ॥ विमृश्यकर्तुंयचात्र कियतांतदनन्तरम् ४४ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणेरुक्मियुद्धाहेन्द्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

को राजा जरासन्ध इनकी जो फौज है ताय जीतिके पराक्रमही है मोल जाको ऐसी जो तुम्हारे अर्ध्रान मैं हूं ताय यहाँ तें हरि के अन्त विवाह करोगे ४१ कदाचिद् कहो कि तुम तो रुक्मिणी पुर के भीतर हो तुम्हारे भय्या वन्धुन के मारे बिना कैसे व्याहूं ऐसी जो तुम मनमें शङ्का करो तो उपाय बताऊं हूं विवाह में पूर्व दिन बड़ी कुलदेवी अम्बिका की यात्रा होय है ता यात्रा कूं रिबे के लिये और देवी की पूजा करिवे कौं नवधू कन्या बाहिर जाय हैं तहाँ ते मेरो लेजायवो सुगम है जैसे पार्वती कूं शिवजी लेगये ४२ जिनके चरणारविन्द की रज सूं स्नान करिवे कूं बड़े २ साधु महान् अपने अज्ञान दूरि करिवे के लिये इच्छा करे हैं हे कमलदलोचन ! जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्न न होउ तो व्रत करिवे तें दुर्बल जो मेरे प्राण हैं तिन त्यागि देउगी कदाचित् कहो कि प्राण त्यागिवे ते कहा होयगो तहाँ रुक्मिणी कहें हैं वारंवार प्राण त्याग कलंगी तो सौ जन्म में तौ प्रसन्न होउगे ४३ अब ब्राह्मण कहे हैं हे यादवन के देव ! गुप्त संदेशो लोके मैं आयो हू जो यहाँ करिवे योग्य कार्य होय ताय विचारि कै शीघ्र करो विलम्ब मति करो ४४ इति श्रीमद्भागवतार्थकण्ठपिण्डशतमस्कन्धे चतुर्दशोऽध्यायः ५२ ॥

चारिकै श्रीकृष्णके लिये जाये कू भेजति भई २६ वह ब्राह्मण जा समय द्वारकापुरीमें प्राप्त भयो तब द्वारपालने भीतर पहुँचायो तहां सुवर्ण के सिंहासनपै बैठे जो आदिपुरुष नारायण हैं तिनको दर्शन करत भयो २७ ब्राह्मणहै देवता जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ना ब्राह्मण हूँ देखिके आप सिंहासनपैते उत्तरिक ब्राह्मणको सिंहासनपर बैठायकै जैसे अपनी देवता पूजा करे हैं ऐसे बाको पूजनकारत भये २८ भोजनकर्यो अप जिनको गयो ऐसे ब्राह्मणके पास साधुनकी गतिरूप जो श्रीकृष्णहै सो आयकै अपने हाथते उनके चरणारविन्दकूं सहरावत निर्विग्रह होयकै पूजत भये २९ हे दिननमें धेष्ट ! ब्राह्मण दृढस्मृत जो तुम्हारी धर्म है सो बहुत कष्टतैं तो नहीं चले है सर्वदा तुम्हारे मनमें सन्तोष रहे है ३० जा क्राहू प्रकारकरिके ब्राह्मण सन्तुष्ट होयके वर्ते अर्थात् जो कछु वस्तु भायके प्राप्त होइ बाहीमें सन्तोष करिकै रहे, अपने धर्ममें मूँ द्युत न होय तो वही उसके सम्पूर्ण फलको देन वारो है ३१ और जाके मनमें सन्तोष नहीं है वह ब्राह्मण इन्द्रहोय जाउ तथापि लोकन ते लोकनमें दोख्यो करे

दृष्ट्वा ब्राह्मण्यदेवस्तमवरुह्य निजासनात् ॥ उपवेश्यार्हयाञ्चके यथात्मानं दिवौकसः २८ तं मुकुत्रन्तं विश्रान्तमुपगम्य सताङ्गतिः ॥ पाणिनाऽभिष्टुशन्पादाव  
व्यग्रस्तमपृच्छत २९ कच्चिद्विजवरश्रेष्ठ धर्मस्तेषु द्वसंमतः ॥ वर्तते नातिरुद्धेण सन्तुष्टमनसः सदा ३० सन्तुष्टो य हि वर्तते ब्राह्मणो येन केन चित् ॥ अहीयमा  
नः स्याद्धर्मात्सहस्रयाखिलकामधुक् ३१ असन्तुष्टोऽसकृल्लोकानामोत्पत्तिमुपेश्वरः ॥ अकिञ्चनोऽपि सन्तुष्टः शेते सर्वार्ङ्गविज्वरः ३२ विप्रान् स्वलाभस  
न्तुष्टान् साधून् भूतसुहृत्समान् ॥ निरहङ्कारिणः शान्तान्नामस्येशिरसाऽसकृत् ३३ कच्चिद्धः कुशलं ब्रह्मन् राजतो यस्य हि प्रजाः ॥ सुखं वसन्ति निपये पाल्यमानाः  
समेप्रियः ३४ यतस्त्वमागतो दुर्गानि स्तीर्थे ह्यदिच्छया ॥ सर्वानो ब्रह्मणु त्वेच्छैत्तिककार्यं करवा मते ३५ एवं संपुष्टां प्रश्नो ब्राह्मणः परमेष्ठिना ॥ लीलागृहीत  
देहेन तस्मै सर्वमवर्णयत् ३६ ॥ रुक्मिण्युवाच ॥ श्रुत्वा गुणान् भुवनसुन्दर शृण्वती निर्विशय कर्णविर्वैर्हस्तोऽङ्गता पद्म ॥ रूपं दृष्ट्वा शिमतमखिलार्थलाभं  
त्वय्यन्युताविशतिचित्तमपेक्षां ३७ कात्वा मुकुन्दमहतीकुलशीलरूपविद्याय योद्विण धामभिरात्मतुल्यम् ॥ धीरापतिं कुलवतीनद्युणीतकन्याकालेन

है दुष्टणा के मारे एक स्थानमें स्थिर होयके नहीं रहे है और जाके पास कुछभी नहीं है और मनमें सन्तोष है वह ब्राह्मण सब अन्न के खेदनकूं दूरि करिके आनन्दपूर्वक सोवै है ३२ आपही तैं विना मागे मासभई जो यस्तु है ताहीमें सन्तोष है जिनके और सब प्राणीनते द्वितकूं करे विद्यावान् कुलीन अहङ्काररहित शान्त जिनके स्वभाव ऐसे जे साधु ब्राह्मणहैं तिनैं स्थिरनश्यकै गे प्रणाम करूं ३३ हे ब्राह्मण ! जाकी तुम प्रजा को ता राजा तैं तुमकूं कुशल है जा राजा के देश में ब्राह्मणन को पालन होइ वह राजा मोकूं प्यारो लगे है ३४ समुद्र को उलूखन करिकै जिस कार्य के करिके की इच्छा करिकै जा स्थान तैं तुम या किछा में प्राप्त भवे हो जो कथनयोग्य बात होय तो ह्यारे आगे चम्पूण कही छु तुम्हारी कक्षा कार्य करे ३५ श्रेष्ठ आसन पै निराजमान होय लीला क  
रिके धारण करो है मनुष्य देह जिनने ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ने पूछी है पृच्छिते लायक नात जासूं ऐसो ब्राह्मण श्रीकृष्ण तैं सब वर्णन करत भयो ३६ रुक्मिणी ने आप एकान्त में लिलिके दीनी जो पत्नी है ता य खोलिकै मेमके हैं चिह्न जागें ऐसी पत्नी ब्राह्मण श्रीकृष्ण कूं दिखायकै उनकी आज्ञा तैं पत्नी कूं बांचे है रुक्मिणी कहे है हे निलोकी मैं सुन्दर ! हे अन्युत अर्थात् असएद्वप !

(त्रिज्वाशचमेगत्वाविदर्भान्द्रुतेहितः ॥ रुक्मिणीमहरस्कृणोपिपतादिपतायलात् १ तिरपनवै अध्यायं अद्भुत चेष्टायुक्त कृष्णजीविदर्भदेशं जाकर शुश्रूषा के देखते ही जदरती सौ लक्ष्मणी जीको हर लेते भये ? ) अत्र श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् प्रीति ! यदुकुल कं आनन्द के देन वारे श्रीकृष्णचन्द्र विदर्भदेश के राजा की पुत्री रुक्मिणी को संदेशों सुनिके ब्राह्मण को अपने हाथ में हाथ पकरिके हंसकर बोलत भये ? अत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं जैसे रुक्मिणी को मेरे बिपे चित लग्यो है ऐसे ही रुक्मिणी में मेरी हू चित लग्यो है चिन्ता के मारे रात्रि में नींद नहीं आने है मैं जानूं हों रुक्मी ने द्वेप करिके भरे व्याह कूं मने करदियो है २ दुष्टराजान कूं लड़ाई में जीति कै मो विना और कूं जाने नहीं दोषाहित हैं अद्भुत जाके ऐसी रुक्मिणी कूं जैसे काष्ठ मन्थन करिके अग्नि निकालि लेई हैं तैसे ले आजंगो श्रीशुकदेवजी बोले मुरदैत्य के मारन वारे जो भगवान् हैं सो रुक्मिणी के विवाह को नत्तत्र जानि कै हे स्थवान् ! स्य कूं शीघ्र

श्रीशुकउवाच ॥ वैदर्भ्याः सतुसन्देशं निशम्य यदुनन्दनः ॥ प्रगृह्य पाणिना पाणिं प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ तथाहमपि तच्चित्तो निद्रां खलभो निशि ॥ वेदाहं रुक्मिणोद्वेषान्ममोद्धाहो निवारितः २ तामानयिष्य उन्मथ्य राजन्यापसदान्मुधे ॥ मत्परामनवद्याङ्गीमेधसोऽग्निशिखामिव ३ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ उद्धाहं शस्त्रविज्ञाय रुक्मिण्यामधुसूदनः ॥ स्यः संयुज्यतामाशु दारुक्तेत्याहसार्थम् ४ सचार्यैः शैव्यमुग्रीवमेघपुष्पवलाहकैः ॥ युद्धं रथ सुपानीय तस्थौ प्राञ्जलिग्रतः ५ आरुह्य स्यन्दनं शौरिर्द्विजमरोप्यतूणैः ॥ आनत्तोदेकरात्रेण विदर्भानगमद्भयैः ६ राजासकुण्डिनपतिः पुत्रस्नेहवशं गतः ॥ शिशुपालाय स्वांकन्यां दास्यन् रुर्माण्यकारयत् ७ पुरंसं मुष्टसं सिक्कमार्गं रथ्याचतुष्पथम् ॥ चित्रध्वजपताकाभिस्तोरणैः समलङ्कृतम् ८ सगम न्धमाल्याभरणैर्विजोम्बरसूतैः ॥ जुष्टं स्त्रीपुरुषैः श्रीमदहर्गुरुधूपितैः ९ पितृदेवान्समभ्यर्च्य विप्रांश्च विधिवन्नुप ॥ भोजयित्वा यथान्यायं वाचयामा समङ्गलम् १० सुस्नातां सुदतीन् न्यां कृतकौतुकमङ्गलाम् ॥ अहतांशु रुयुग्मेन भूपिताभूपाणोत्तमैः ११ चक्रुः सामगर्थ्यजुर्मन्त्रैर्ध्वारक्षाद्विजोत्तमाः ॥ पुगे

जोतो या प्रकार स्थवान् सैं कहत भये ३ । ४ शैव्य मुग्रीव मेघपुष्प वलाहक ये हैं नाम बिनके ऐसे जे घोड़ा हैं तिन कूं रथ में जोति कै सम्मुख लाय कै स्थवान् हाथ जोरि कै बोलत भयो ५ शूरवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र रथमें वैदिक और ब्राह्मण कूं वैचारिके शीघ्रगामी जे घोड़ा हैं तिनसूं आनर्तदेश तें चलिके एक रात्रिमें ही विदर्भदेश में आगत भये ६ पुत्रजो रुक्मी ताके वश होय के वाके कहेमैं चलै ऐसो जो कुण्डिनपुरको राजा प्रजाको पालन करन वारे भीष्मक हैं सो शिशुपाल कूं अपनी कन्या देवेके लिये पुरकी शोभा और पितृ देवतानके पूजन कूं आदिलैके कर्म करानत भयो ७ राजा भीष्मक अपने पुरकूं शोभायमान करावत भयो कैसो पुर है बुहारी जिनमें भई बिरकाव होयसबो ऐसे राजमार्ग हैं चित्र विचित्र ध्वजा पताका वन्दनवार करिके वह पुर शोभायमान है ८ माला चन्दन फूलन के गहने स्वच्छ वस्त्र इनसों शोभायमान ऐसे स्त्री पुरुष जा पुरमें होलैं हैं अगरकी थप जिनमें लगिरही ऐसे शोभायमान घर हैं ९ हे राजन् प्रीति ! पितृ देवतानको पूजन करिके ब्राह्मणन कों विधिपूर्वक भोजन करायकै राजा भीष्मक रुक्मिणीको यथावत् स्थावत् स्थित वाचन करानत भये १० अत्र कन्या की शोभा कन्याने करयो सुन्दर जाके दांत



ऐसी कन्या है विवाह को वरुण जा के वेश्यो नवीन वस्त्रन कूं पहिरे उत्तम आभूषणन करि शोभायमान है ११ द्विचोत्तम आक्षय्य है ते सामवेद ऋग्वेद यजुर्वेद के मन्त्रन कूं पढ़िके वधू जो रुक्मिणी है ताकी रत्ना करत भये अथर्ववेद के मन्त्रन को जानन वारो जो पुरोहित है सो सूर्यादिक ग्रहनकी शान्ति करिबे के लिये होम करत भयो १२ त्रिविके जानन वारिने में श्रेष्ठ जो राजा भीष्मक है सो ब्राह्मणन कूं सुवर्ण रूपो वस्त्र और गुहू भिलाय के तिल और दुग्धकी गौ इनको दान करत भयो १३ यह तो रुक्मिणी के पिता की बात कहे हैं—जैसे राजा भीष्मकने कन्या को मङ्गल कराओ ऐसे ही चंदेलीको पालन करन वारो राजा दमघोष है सो अपने पुत्र शिशुपालको मन्त्र के जानन वारि ब्राह्मणन सूं सम्पूर्ण विवाह के उचित मङ्गल कर्म करवात भयो १४ मंद जिनके बुबे सुवर्णकी है माता जिनके ऐसे हाथीन के समूह और रथ प्यादे घोड़ा इनकी चतुरंगिणी सेना कूं सगलैकै राजा दमघोष कुण्डिनपुर में आवत भयो १५ विदर्भ देशको जो राजा भीष्मक

हितोऽथर्वविद्वे जुहावग्रहशान्तये १२ हिरण्यरूपवासांसि तिलांशुगुडमिश्रिताम् ॥ प्रादाद्धेनुश्च विभो राजा विधिविदां वरः १३ एवं वेदिपती राजा दमघोषः सुताय वै ॥ कारयामास मन्त्रज्ञैः सर्वमभ्युद्योचितम् १४ मदच्युद्धिर्गजानीकैः स्यन्दनैर्हैममालिभिः ॥ पर्यश्वसङ्कुलैः सैन्यैः परितः कुण्डिनयौ १५ तैर्विविदर्भाधिपतिः समभ्येत्यामिपूज्यम् ॥ निवेशयामास सुदा कल्पितान्यनिवेशने १६ तत्र शाल्वो जरासन्धो दन्तवक्रो विदूरथः ॥ आजग्मुश्चेद्यपक्षीयाः पौरण्डकाद्याः सहस्रशः १७ कृष्णरामाद्विपोयताः कन्यांचैद्यायसाधितुम् ॥ यद्यागत्य हेतुः कृष्णो रामाद्यैर्यदुभिर्धृतः १८ योत्स्यामः संहतास्तेन इति निश्चितमानसाः ॥ आजग्मुर्भूभुजः सर्वे समग्रवलाहनाः १९ श्रुत्वैतद्भयवाचराभो विपक्षीयन् प्रोद्यमम् ॥ कृष्णञ्चैकं गतं हतुं कन्यां कलहराङ्कितः २० वलेन महता सार्द्धं भ्रातस्नेहपरिभुजः ॥ त्वरितः कुण्डिनं प्रागाद्राजश्वरथपत्तिभिः २१ भीष्मकन्या वारोदा काङ्क्षन्त्यागमनं हरेः ॥ प्रत्यापत्तिमपश्यन्ती द्विजस्याचिन्तयत्तदा २२ अद्वोत्रियामान्तरित उद्धाहो मेऽलपराधमः ॥ नागच्छत्यरविन्दाक्षो नाहं वेषत्रकारणम् ॥ सोऽपि नावर्त्ततेऽद्यापि मत्सन्देहोऽहो द्विजः २३

है सो शिशुपाल के पास आयकै पूजन करिकै वनायो जो और एक स्थान है तामें प्रसन्न होय के वसावत भयो १६ तथा शाल्व जरासन्ध दन्तवक्र विदूरथ शिशुपाल और पौरण्डक आदिलैकै हजारन राजा आवत भये १७ कृष्ण राम तें वर करिबे की है यत्र जिनको और कन्या कूं शिशुपाल के विवाह करिबे के लिये उद्यम जिनने कस्यो है कदाचित् रामसों आदिलैके यादवन कूं संगलैके कृष्ण आयकै कन्या कूं चुरायकै लै जायगो तो वाके संग युद्ध करेगे ऐसे मन्त्रे निश्चय करिके अञ्छे २ सिपाही घोड़ा हाथीन कूं सगलैके सम्युर्ण राजा आवत भये २० १९ भगवान् वलदेवजी शत्रु शिशुपाल के पत्न के राजानको उद्यम सुनिकै और कन्या लेवै कूं श्रीकृष्ण अकेले गयो है वहा कलाह होगी यह शङ्का मानिकै भयथा श्रीकृष्णको स्नेह जिन कूं आयगयो ऐसे वलदेवजी हाथी घोड़ा रथ प्यादे नकी चतुरंगिणी सेना कूं लैकै शीघ्र कुण्डिनपुर में आवत भये २० २१ श्रेष्ठ है जंघा जाकी ऐसी भीष्मककी कन्या रुक्मिणी हरि जो श्रीकृष्ण है तिनके आयबे को पैंडो देखा ब्राह्मण पत्नी लैके गयोहो वह जो लौटिके न आयो तब चिन्ता करति भई २२ मन्दभागिनी जो मै हूं ता भरे विवाह में एकर रानी अब नाकी रही है परन्तु कमल से है नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र नहीं आयपहुँचे

याको कारण मैं नहीं जानूँ हूँ मेरो संदेशो ब्राह्मण लैकेगयो सो भी नहीं आयो है २३ नहीं है दोष जिनमें ऐसे श्रीकृष्णने भेरे पाणिग्रहण को निश्चय उपाय किया होइगो परन्तु कन्या अभीतें पाती लिखि लिखि भेजेहै यह दोष देखिके नहीं आयो २४ मो अभागिनीकुं विधाता ईश्वर अनुकूल नहींहैं और देवी गौरी रुद्राणी पार्वती सतीये अनुकूल नहींहैं—या प्रकार गोविन्द श्रीकृष्णने हरयोहै मन आको ऐसी बाला जो रुक्मिणी है सो चिन्ता करिके आम्सु जिनमें भरिआये ऐसे नेत्रनकुं मंदति भई अवतारि श्रीकृष्णके आयेव को समय वीत्यो नहीं जाने है २५ । २६ हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार गोविन्द श्रीकृष्णके आइवे को पैढो देखै ऐसी जो रुक्मिणी ताकी वारि ऊरु भुजा नेत्र ये अङ्ग फरकत भये स्त्रीन के वार्ये अङ्ग फरकने शुभ होइ है प्यारी बात के जनावनवार है २७ याके पीछे ब्राह्मण तुम आगे जाय के खबरि करौ या प्रकार श्रीकृष्ण ने आज्ञा जाकुं दीनी ऐसी ब्राह्मण अन्तर्गुर में डोलै फिरै जो राजा की पुत्री रुक्मिणी है ताथ देखत भयो २८ पतिव्रता

अपिमय्यनवद्यात्मा दृष्ट्वा किञ्चिज्जगत्सितम् ॥ मत्पाणिग्रहेणूनं नायाति हि कृतोद्यमः २४ दुर्भगायानमेधाता नानुकूलो महेश्वरः ॥ देवीवाविमुखा गौरी रुद्राणीगिरिजासनी २५ एवं चिन्तयती बाला गोविन्ददहतमानसा ॥ न्यमीलयत कालज्ञा नेत्रे चाश्रुकलाकुले २६ एवं भद्राः प्रतीक्षन्त्या गोविन्दागम नन्तुप ॥ वामऊरुर्भुजो नेत्रमस्फुरन् प्रियभाषिणः २७ अथ कृष्णविनिर्दिष्टः स पृवद्विजसत्तमः ॥ अन्तःपुरचरिदेवीराजपुत्रोददर्शह २८ सातं महद्वदनम व्यग्रात्मगतिसती ॥ आक्षय्यलक्षणाभिज्ञा समपृच्छच्छुचिस्मिता २९ तस्या आवेदयत्प्रांशं स यदुनन्दनम् ॥ उक्त्व सत्यवचनमात्मोपनयनं प्रति ३० तमागतं समाज्ञाय वैदर्भीदृष्टमानसा ॥ न पश्यन्ती ब्राह्मणाय प्रियमन्यन्ननामसा ३१ प्रामौश्रुत्वा स्वदुहितुरुद्राहप्रेक्षणोत्सुकौ ॥ अभययाचूर्णघोषेण रामकृष्णौ समर्हणैः ३२ मधुपर्कमुपानीय वासांसि विरजांसि च ॥ उपायनान्यभीष्टानि विधिवत्समपूजयत् ३३ तयोर्निवेशनं श्रीमदुपकृत्य महामतिः ॥ ससैन्य

जो रुक्मिणी है सो मसख है मुख जाको और नहीं चञ्चल है देह की गति जाकी ऐसे ब्राह्मण कुं देखि कै कार्य करिके आयो है या लक्षण कुं जानि के पवित्र जाकी मुसिकानि ऐसी रुक्मिणी पूंछति भई २९ तव रुक्मिणी तें श्रीकृष्णचन्द्र आये हैं यह ब्राह्मण कहत भयो और राजान कुं जीति कै रुक्मिणी कुं ले आऊंगो यह सत्य वचन जो श्रीकृष्णचन्द्र ने वक्षो हो ताकुं भी कहत भयो ३० श्रीकृष्ण कू आयें जानिकै हर्षित है मन जाका ऐसे विदर्भदेश के राजा की पुत्री रुक्मिणी विचार करे है कि या समय ब्राह्मण कुं सर्वस्व देऊं सो भी ओड़ो है ऐसे ब्राह्मण के देवे योग्य कोई वस्तु नहीं देखिकै प्रणामही करत भई परचात घन भी देत भई ३१ अपनी कन्या को विवाह देखिवे की इच्छा करिके आयें जे श्रीकृष्ण चलदेव हैं तिनं सुनि के राजा भीष्मक नगाड़े वजावत पूजन की सामग्री लैके सम्मुख जात भयो ३२ मधुपर्क लायैके आगे धरत भयो सुन्दर वस्त्र और अनेक प्रकार की भेंट निवेदन करिकै विधिपूर्वक राजा भीष्मक जैसे कन्या के वरकी पूजा करे हैं या प्रकार श्रीकृष्ण चलदेव को पूजन करत भयो ३३ नइो बुद्धिमान् राजा भीष्मक कृष्ण चलदेव के लिये सुन्दर स्थान बनाइ कै सेना दहलुआन सहित यथायोग्य आ-

तिथ्य करत भयो ३४ या प्रकार एक ठौर भये जे राजा हैं तिनमें जैसो जाको पराक्रम है जैसी अवस्था है और जैसो जाके बल है जितनो जाके धन है ताको ताही प्रकार सम्पूर्ण वस्तुन करिके राजा भीष्मक पूजन करत भयो ३५ विदर्भपुर के जे वासी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र कूं आयो सुनिके नेत्ररूप अञ्जलीन मूं श्रीकृष्ण के मुखकमल कूं पीवत भये ३६ दोपरहित जो रुक्मिणी है सो श्रीकृष्णचन्द्र की स्त्री होइवे योग्य है तेसेही श्रीकृष्णचन्द्र रुक्मिणी के पति होनेके योग्य हैं ३७ जो कुछ हमने पुण्य करे हैं ताके प्रभाव करिके त्रिलोकी को नरनवारी ईश्वर प्रसन्न होय के अनुग्रह करो और हम यही अनुग्रह चाहे हैं कि श्रीकृष्णचन्द्र रुक्मिणी को पाणिग्रहण करे ३८ या प्रकार प्रेयवद्ध होय के सम्पूर्ण पुरवासी कहत भये कन्या जो रुक्मिणी है सो पुर तें बाहिर निकसि कै प्यादे जाकी रक्षा करे ऐसी देवी आम्बिका के मन्दिर में जाति गई ३९ मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र के चरणकमल को भले प्रकार ध्यान करत अम्बिका भवानी के चरणारविन्द के

योःसानुगयोरातिथ्यंविदधेयथा ३४ एवंराज्ञांमेतानां यथावीर्ययथावयः ॥ यथाबलंयथावित्तं सन्वैःकाभैःसमर्हयत् ३५ कृष्णमागतमाकर्ण्य विदर्भपुर वासिनः ॥ आगत्यनेत्राञ्जलिभिःपुस्तनमुखपङ्कजम् ३६ अस्यैवभार्याभिवितुं रुक्मिण्यहर्हिनापरा ॥ असावप्यनवद्यात्मा भैषम्याःसमुचितःपतिः ३७ किञ्चित्सुचरितंयन्नस्तेनतुष्टिलोककृत् ॥ अनुगृह्णानुगृह्णानुवैदर्भ्याःपाणिमच्युतः ३८ एवंप्रेमकलावद्धावदन्तिस्मपुंरौकसः ॥ कन्याचान्तःपुरात्प्रागाद्गटे गुप्ताऽम्बिकालयम् ३९ पङ्क्यांविनिर्ययौद्रुं भवान्याःपादपल्लवम् ॥ साचानुध्यायतीसम्यग्मुकुन्दचरणाम्बुजम् ४० यतवाङ्मातृभिःसाद्धं सखीभिःपरिवारिता ॥ गुप्तराजभटैःशूरैः सन्नद्धैरुद्यतायुधैः ॥ मुदङ्गशङ्खपणवास्तूर्यभेर्यश्चजघ्निरे ४१ नानोपहारमालिभिर्त्रासुख्याःसहस्रशः ॥ स्रगन्धवस्त्राभरणैर्द्विजपत्न्यःस्त्रलङ्कृताः ४२ गायन्तश्चस्तुवन्तश्चागायकावाद्यवादकाः ॥ परिवार्यवधूंजग्मुः सूतमागधवन्दिनः ४३ आसाद्यदेःसदनं धौतपादकरा म्बुजा ॥ उपस्पृश्यशुचिःशान्ताप्रविवेशाऽम्बिकान्तिकम् ४४ तावैष्वयसोवालां विधिज्ञाविप्रयोपितः ॥ भवानोवन्दयाञ्चक्रुर्भवपत्नीभवान्विताम् ४५ नमस्येत्वाऽम्बिकेऽभीक्ष्णंस्वसन्तानयुतांशिवाम् ॥ भूयात्पतिर्भगवान्कृष्णस्नदनुमोदताम् ४६ अद्भिर्गन्धाक्षतैर्धूपैर्वासःसङ्माल्यभूषणैः ॥ नानो

दर्शन के निमित्त पौवनही जात गई ४० मौन धारण क्रियो है पुरोहितानी सङ्ग और सखी सेहली जाके सङ्ग हैं कवच पहिरि पहिरि कै शस्त्र हाथन में लैके पहिरदार राजा के सिपाही रक्षा निमित्त जाके सङ्ग हैं मुदङ्ग शङ्ख ढोल तुरही भेरि ये वाजे सङ्ग वजत भये ४१ उत्तम उत्तम हज्जारन वेश्या सङ्ग में नाचत जाति गई माला चन्दन वस्त्र गहनेन सूं युद्धार करिके और अनेकप्रकार की सम्री भेंट लैके द्विजन की स्त्री सग जाति गई ४२ गवैया हैं ते और वाजेन के वजवैया हैं ते और सूत जागा वन्दीजन हैं ते रुक्मिणी कू बीच में करिके गावत और स्तुति करत जात भये ४३ देवी के मन्दिर में जाय कमलरूपी पाव हाथ धोइ आचमन करि पवित्र होयकै शान्त है स्वरूप जाको ऐसी रुक्मिणी अम्बिका देवीके पास जाति गई ४४ विधिकी जाननवारी जे दृढ़ ब्राह्मणन की स्त्री हैं ते वाला जो रुक्मिणी है तापै महादेव की पत्नी महादेवसहित जो भवानी है ताकी पूजा करावति गई ४५ हे अम्बिके पार्वती ! अपने सन्तानसहित जो मङ्गलरूपिणी तुम हो तिनें बारबार

प्रणाम करे हू भगवान् जो श्रीकृष्ण हैं सो मेरे पति होव या प्रकार शिर नवाइ कै रुक्मिणी प्रार्थना करत भई ४६ जल चन्दन अक्षत धू वस्त्र माला फूल गहने और नानाप्रकारकी सामग्रौन की भेंटन सँ और न्यारी न्यारी जे दीवान की पंक्ति हैं तिन सँ देवीकी पूजा करति भई ४७ तारी प्रकार तिन सामग्रौन सँ और नोन के पुआ पान कलाये सुपारी गाढ़े इन सँ सौभाग्यवती जे ब्राह्मणन की स्त्री हैं तिनकी पूजा करत भई ४८ रुक्मिणी देवी कूँ और ब्राह्मणन की स्त्रीन कूँ नमस्कार करत भई और प्रसाद है ताइ लेत भई ब्राह्मणन की स्त्री आशीर्वाद देत भई ४९ ताके पीछे मौन कूँ त्यागि के जड़ाऊ जो मुँदरी है तासँ शोभायमान जो हाथ है तासँ दासी को हाथपरिके देवी के मन्दिर सँ बाहिर निकसति भई ५० ईश्वर की मायाकी तुल्य बड़ेबड़े जे शूरीर राजान की मोहनबारी सुन्दर जाकी कटि कुण्डलन करि शोभायमान हैं मुख जाको रजोदर्शन जाके भयो नहीं रत्ननकी जड़ाऊ कौंधनी पहिरे प्रकटभये हैं स्तन जाके और मुखपै छेडे जे केश हैं तिन सँ नेत्र जाके चलायमान हैं ५१ सुन्दर जाकी मुखियानि कुँदुरु के फल की तुल्य अरुणजे ओष्ठ हैं तिनकी कान्ति सँ अरुणता जिनमें भलकै ऐसे जे दांत हैं तेई हैं मानों कुन्दकली जाके

पहारबलिभिः प्रदीपावलिभिः पृथक् ४७ विपूस्त्रियः पतिमतीस्तथातैः समपूजयत् ॥ लवणापूपताम्बूलकण्डमुत्रफलेक्षुभिः ४८ तस्यैस्त्रियस्ताः प्रददुः शेषां युयुजुराशिपः ॥ ताभ्यो देव्यैनमश्चक्रे शेषाञ्च जगृह्वधूः ४९ मुनिव्रतमथयत्का निश्चकामाभ्यिकागृहात् ॥ प्रगृह्य पाणिनाभृत्यारंलमुद्रोपशोभिना ५० तां देवमायामिव वीरमोहिनीं सुमध्यमांकुण्डलमण्डिताननाम् ॥ श्यामानितम्बाग्निं तल्लोखलां व्यञ्जस्तनीकुन्तलशङ्कि तेक्षणम् ५१ शुचिस्मितां विम्वफलाधारह्यतिशोणायमानद्विजकुन्दकुड्मलाम् ॥ पदाचलन्तीं कलहंसगामिनीं सिञ्जत्कलानूपुरधामशोभिना ५२ विलोक्य वीरामुमुहुः समागता यशस्विनस्तत्कृतहृन्व्ययादिताः ॥ यां वीक्ष्य तेन पृतयस्तदुदारहासव्रीडावलोकहन्ते चेतस उड्भितास्त्राः ५३ पेतुः क्षितौ गजस्थारवगता विमूढायात्राच्छलेन हरयेऽर्पयन्तीं स्वशोभां ॥ सैवं शनैश्चलयन्तीं चलपद्मकोशौ प्राप्तिं न दाभगवतः प्रसमीक्षमाणा ५४ उत्तमार्थव्यागकरजैरलकानपाङ्गैः प्रासान्निह्रियैक्षतनुपाम् ददृशेऽच्युतं मा ॥ ताराजकन्यारंथमारुरुक्षतीं जहार कृष्णोऽद्विपतां समीक्षनाम् ५५ स्थसमारोप्य सुपर्णलक्षणं राजन्यचक्रं परिभूय माधवः ॥ ततो ययौरामपुरो

राजसं हंसिनी की तुल्य है गमन जाको भनतकार शब्दकूँ करै ऐसी जो सुन्दरतूपुर ताकी जो शोभा ता करिकै है शोभा जाकी ऐसे चरणनसँ चलै है ऐसी रुक्मिणी कूँ देखिकै जे बड़े पड़े यशस्वी राजा तिनकूँ व्यापों जो कामदेव तासँ पीड़ित होयके मोहित होत भये ता रुक्मिणी की उदार हैं सनि लज्जापूर्वक चितवनि इनसँ हरि गये है चित जिनके ऐसे जे राजा हैं ते हथियारनकूँ छोड़ि के ५२ । ५३ हाथी रथ घोड़ा पै तें मूढ़ होयकै पृथ्वी में गिरत भये कैसी रुक्मिणी है यात्राके मिय करिकै श्रीकृष्णचन्द्रकूँ अपनी शोभा दिखावै है या प्रकार चलायमान कमलकोश की तुल्य कोमल जे चरण हैं तिनैं होले होले चलाय के ता समय श्रीकृष्ण के आयेयो पैड़ो देखे ऐसी जो रुक्मिणी है ५४ सो बायें हाथ के जे नख हैं तिन सँ अलकन कूँ उठाय कै आये जे राजा हैं तिनैं कटाक्ष करिके लाजसँ देखत भई और आगे गाढ़े जो श्रीकृष्ण हैं तिनैं देखत भई रथमें बैठ्यो चाहे ऐसी जो भीष्मक राजाकी कन्या रुक्मिणी है ताथ श्रीकृष्णचन्द्र शत्रुनके देरत हरत भये ५५ गरुडकी

है ध्वजा जामें ऐसे रथमें बैठारि है त्रिचयनकी सेनाकूं जीतिके श्रीकृष्ण जातभये जैसे स्यारनके श्रीचर्मते अपने भागकूं लैके सिंह चलयोजाय है ऐसे रामहैं मुख्य जिनमें ऐसे यादवनसहित रुक्मिणी कूं लैके श्रीकृष्णचन्द्र होलै जात भये ५६ जरासन्ध है मुख्य जिन में ऐसे अभिमानी राजा हैं ते यशको जामें नाश ऐसो अपने आपमान है ताथ नहीं सहासतभये अहो हम कूं थिकार है जैसे सिंहन के यशकूं स्यार है ऐसे धनुर्धारी जे हम हैं तिनको यश ग्वारियानने हरिलियो ५७ इति श्रीमनाहाभागवतार्थरूपियादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुक्मिणीहरणनामत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

(चतुःपञ्चाशत्तमेतुजित्वाराज्ञोऽरिपत्नगान् ॥ रुक्मिण्येवचविरुप्याथयैज्याःपाणिपुरेऽग्रहीत् १ चौवनवै अध्याय में शत्रुके पत्त के राजाओं को कृष्णजी जीतकर रुक्मीको विरूपकर द्वारकापुरीमें रुक्मिणीजी के साथ विवाह करतेभये १) अत्र श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार अत्यन्त है क्रोध जिनके कवचनकूं पहिरे ऐसे जे सम्पूर्ण राजा हैं ते अपनी अपनी सवारीनपै चढ़ि

गमैःशनैः मृगालमध्यादिवभागहृद्धरिः ५६ तंमानिनःस्वाभिर्भव्यशःक्षयंपरेजरासन्धशानसेहिरे ॥ अहोधिगस्मान्यशआत्तधन्वनां गोपैर्हतंकेसरिणांभृगैरिव ५७ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुक्मिणीहरणनामत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥ ॐ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ इतिसर्वैर्मुसंरन्धावाहनारुहदंशिताः ॥ स्वैःस्वैर्वलैःपरिक्रान्ताअन्वीयुर्धृतकामुक्ताः १ तानापततआलोक्य यादवानीकयूथपाः ॥ तस्थुस्तस्मन्मुखाराजन् विस्फूर्ज्यस्वधनुं पिते २ अश्वपृष्ठेगजस्कन्धेरथोपस्थेचकोविदाः ॥ मुमुचुःशस्वर्पाणि मेघाअदिष्वपोयथा ३ पत्युर्वलंशरासारैश्चन्नर्वीक्ष्यसुमध्यमा ॥ सव्रीडमैक्षत्तद्वक्त्रं भयविह्वललोचना ४ ग्रहस्यभगवानाहमास्मभैर्वामलोचने ॥ विनङ्क्ष्यत्यधुनैवैतत्तावकैःशात्रवंबलम् ५ तेषांतद्विक्रमंवीरागदसङ्कर्षणादयः ॥ अमृष्यमाणानारवैर्जघ्नुर्हयजान्स्थानं ६ पेतुःशिरांसिरथिनामश्विनंगजिनांभुवि ॥ सकुण्डलकिरीटानि सोष्णीपाणिचकोटिशः ७ हस्ताःसांसिगदेष्वासाः करभाऊवोऽङ्गयः ॥ अश्वाश्चतस्रनागोष्ट्रखरमर्त्यशिरांसिच ८ हन्यमानवलानीकावृष्टिणिभिर्जयकाङ्क्षिभिः ॥

के सेनाकूं संग लैके धनुपनकूं उठायकै पीछे तें आवत भये १ यादवनही सेनाके जे यूथैं तिनके पालन करनवारे जे मुख्य मुख्य यादवहैं ते राजानकूं देखिकै हे राजन् परीक्षित ! अपने धनुपन कूं टंकार करिके सम्मुख ठाढ़े होत भये २ युद्ध करने में निपुण जे राजा हैं ते घोड़ान की पीठि पै हाथीन के कन्धा पै रथ के ऊपर बैठिके जैसे पर्वतन के ऊपर मेघ जल वर्षावैं हैं ऐसे वायुन की वर्षा करतभये ३ सुन्दरहैं कटि जाकी ऐसी जो रुक्मिणी हैं सो पति जो श्रीकृष्णहैं तिनकी सेनाकूं वायुन सूं ठकी देखिके भयकरिके विह्वल है नेत्र जा के ऐसी लाजसूं श्रीकृष्णको मुख है ताथ देखतिभई ४ भगवान् जो श्रीकृष्ण हैं सो हंसिके बोलत भये हे नामलोचने अर्थात् मनोहर है नेत्र जाके ! ऐसी जो तू सो भय मति करै अत्रहीं तुम्हारी ओर के जे यादव हैं ते शत्रुन की सेना कूं आवहीं नाश कर देईगे ५ गद सङ्कर्षण कूं आदि कैके जे शूरवीर हैं ते तिनके पराक्रम कूं नहीं सहिसके घोड़ा हाथी रथ हैं तिन वायुन सूं नाश करत भये ६ रथन में बैठे हैं तिन के और घोड़ान पै चढ़े हैं तिनके और हाथीन पै बैठे हैं तिनके कुण्डल मुकुट पगड़ीन सहित करोड़न शिर कटिकै पृथ्वी पै गिरत भये ७ तरवार गदा धनुपन सहित जे हाथ हैं ते कटिके गिरत भये करभन की

तुल्य जे जंग है ते कटिके गिरत भरे घोड़ा राचर हाथी ऊंट गगा मनुष्य इनके कटिके शिर गिरत भये ८ जीतिवै की है इच्छा जिनके ऐसे जे यादव हैं तिन ने मारे हैं सेना के झुण्ड जिन के ऐसे जरासन्ध सं आदि लैके राजा है ते विपुल होयके जात भये ९ मानो स्त्री जाकी हरिगई ऐसी व्याकुल शोभा जाकी हत भई उतसाह जाओ गयो सुख जाको शुष्क होयगयो ऐसी राजा है ते विपुल है ताके पास आयकै सब राजा बोलत भये १० हे पुरुषन मैं सिंह राजा शिशुपाल ! तुम अपने मनकी उदासीनता कूं त्यागो देहधारीन कूं सुख और दुःख सर्वदा नहीं रहे हैं ? ११ शिशुपाल है ताके पास आयकै सब राजा बोलत भये १० हे पुरुषन मैं सिंह राजा शिशुपाल ! तुम अपने मनकी उदासीनता कूं त्यागो देहधारीन कूं सुख और दुःख सर्वदा नहीं रहे हैं ? ११ जैसे काठकी पुतरी नचावनवारेकी इच्छा करिके नाचे है ऐसीही ईश्वर के अधीन जो जीव है ताकूं सुख दुःख श्रेय है ? २ कृष्णतैं सत्रहवार तेईस अक्षौहिणी सेनालैके युद्धमें हाथो केवल एकवेर जैसे काठकी पुतरी नचावनवारेकी इच्छा करिके नाचे है ऐसीही ईश्वर के अधीन जो जीव है ताकूं सुख दुःख श्रेय है ? २ कृष्णतैं सत्रहवार तेईस अक्षौहिणी सेनालैके युद्धमें हाथो केवल एकवेर जीत्यो तथापि मैं शोच नहीं करूं कदाचित् हर्ष नहीं मानूं हे देवके वश जो काल है ताने समस्तजगत् चलायमान कियो है यह मैं जानूं १३। १४ वड़े बड़े शूरवीरनेके यूय तिनके पानन करन

राजानोविमुखाजगुर्जरासन्धपुरःसराः ६ शिशुपालंसमभ्येत्य हतदारमिवाऽऽतुम् ॥ नष्टपिपंगतोत्साहं शुष्यद्वदनमब्रुवन् १० भोभोःपुरुषशार्दूल दौर्म नस्यमिदंत्यज ॥ नपियाभियोगराजनिष्ठादेहिपुट्टयते ११ यथादारुमयीयोपिष्टृतयतेकुहकेच्छया ॥ एवमीश्वरतन्त्रोऽयमीहतेसुखदुःखयोः १२ शौरेःसप्त दशाह्नै संयुगानिपराजितैः ॥ त्रयोविंशतिभिःसैन्यैर्जिग्यएकमहंपरम् १३ तथाप्यहंनशोचामि नप्रहृष्यामिर्कहिंचित् ॥ कालेनैवैवयुक्तेन जाननिवद्रावि तंजगत् १४ अधुनापिवयंसर्वे वीरयूथपयूथपाः ॥ पराजिताःफलगतन्त्रैर्धुभिःकृष्णपालितैः १५ रिपवोजिग्यधुनाकालआत्मानुसारिणि ॥ तदावयं विजेष्यामोयदाकालःप्रदक्षिणः १६ एवंप्रवोधितोमित्रैश्चैद्योऽगात्सानुगःपुरम् ॥ हतशेषाःपुनस्तेऽपि ययुःस्वसंपुंनुपाः १७ रुक्मीतुराक्षसोदाहं कृष्ण द्विडसहस्रस्वसुः ॥ पृष्ठतोऽन्वगमत्कृष्णमक्षौहिण्यावृतोवली १८ रुक्म्यमर्धसुसंरब्धः शृण्वतांसर्वभूजाम् ॥ प्रतिजज्ञेमहानाहुर्दशिनःसशरासनः १९ अहत्वासमेरकृष्णमप्रत्यूह्यचरुक्मिणम् ॥ कुरिडनंनप्रवेक्ष्यामि सत्यमेतद्रवीमिवः २० इत्युक्त्वाथमारुह्य सारथिप्राहसत्वरः ॥ चोदयाश्वाचयन् कृष्ण

वारनेके जे यूय तितके पालन करनवारे जे हमें ते थोड़ी है सेना जिनकी कृष्ण है पालन करनवारे जिनको ऐसे यादवन तैं अत्र हरिगये ? ५ या समय उनके दिन अच्छे है तासूं हम शत्रुनकूं जीतत भये जब हमारे दिन अच्छे आवेंगे तब हम जीतेंगे ? ६ याप्रकार मित्रने समझायो तत्र शिशुपाल अपने चाकर दहलुआनकूं संगलैके अपने देशकूं जातभयो मरेन ते वाकी वचे जे राजा है ते भी अपने २ पुरन कूं जातभये १७ कृष्णको वीरी जो रुक्मी है सो वहिनिको युद्धमें ते हरिके लेजायवो है ताकूं नहीं साहिके एक अक्षौहिणी सेना कों संगलैके वली जो रुक्मी है सो कृष्णके पीछे दौरत भयो ? ८ असहनता जाकूं आइगई क्रोधित होयकै कवच जाने पहिर लियो धनुष ग्रहण करिके सब राजान के श्रवण करत वही है भुजा जाकी ऐसी रुक्मी प्रतिज्ञा करतभयो ? ९ युद्ध में कृष्ण मारे बिना और रुक्मिणीके वगडाये बिना कुरिडनपुरमें न आऊंगे यह मैं सत्य कहूं २० रुक्मी या प्रकार कहिके रय में वैठि के रथवान् भूं कहत भयो कि जहाँ कृष्ण है तहाँ शीघ्र योद्धान



कूँ हाँकिकै लौ चलो नाके संग मेरो युद्ध होयगो २१ वड़ी है दुष्टदुद्धि जाकी गौवन को चरावनगरो जो कृष्ण है ताके पराक्रम के मद कूँ पने वाणन सूँ मारि के अब हरिलेङ्गे ऐसी कृष्ण जोरावरी मेरी बहिनि कूँ हरिलेङ्गे २२ खोटी है बुद्धि जाकी ऐसी रुक्मी है सो ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र के चल कूँ न जानि के कुत्सित शब्दन कूँ कहत अकेलोरथकूँ दौरायके ठाढ़ो रह २ ऐसे गोविन्द श्रीकृष्ण कूँ पुकारत भयो २३ दृढ़ धनुष कूँ खैंचिकै श्रीकृष्ण के तीन बाण गारत भयो और है यादवन के कुल कूँ दीप के लागवनवारि ! यहाँ तू क्षण भर ठाढ़ो रह ऐसे कहत भयो २४ अरे जैसे होम की सामग्री कूँ कौया लैजाय है ऐसे मेरी बहिनि कूँ चुराय कै कहां लिये जाय है वड़ोमायावी कपट करिकै युद्धकरै जो तू है ता तेरो मद में अब हरिलेङ्गे २५ मेरे वाणन सूँ पीड़ित होयके जवतई न सोबैगो तवताई बन्या कूँ त्यागि दे अब श्रीकृष्णचन्द्र मुसिकाय कै नाके धनुष कूँ काटिकै ब्रह्माणन सूँ रुक्मी को वेधतभये २६ आठ बाण करिके रथ के चारों

स्तस्यमेसंगुं भवेत् २१ अद्याहं निशितैवाणैर्गोपालस्यमुदुर्मतेः ॥ नेष्येवीर्यमदयेन स्वसामेप्रसभहता २२ विकृत्यमानःकुमतिरीश्वरस्याप्रमाणवित् ॥ रथेनैकेनगोविन्दं तिष्ठतिष्ठेत्यथाह्वयत् २३ धनुर्विकृष्यमुदुदं जन्नकृष्णं त्रिभिःशरैः ॥ आहवात्रक्षणं तिष्ठ यदूनांकुलपांसन २४ कुत्रयासिस्वसारं मेमुपि त्वाध्वाङ्गवद्धविः ॥ हरिष्येऽद्यमदंमन्द मायिनःकूटयोधिनः २५ यावन्नमेहतोवाणैःशयीथामुच्चदारिकाम् ॥ स्मयन्कृष्णो धनुश्छत्त्रापद्भिर्विव्याधरुक्मिणम् २६ अष्टभिरश्चतुरोवाहान्द्राभ्यांसूतं ध्वजं त्रिभिः ॥ सचान्यद्धनुरादायकृष्णं विव्याधपद्मभिः २७ तैस्ताडिनःशरीरैस्तु चिच्छेदधनुश्च्युतः ॥ पुनरन्यदुपादत्त तदप्यच्छिनददययः २८ परिघंपट्टिशं शूलं चर्मार्सीशक्नितोमरौ ॥ यद्यदायुधमादत्त तत्सर्वसोऽच्छिनद्धरिः २९ ततो रथादवलुत्य खड्गपाणिर्जिघांसया ॥ कृष्णमर्ष्यद्रवत्कूटः पतद्भद्रवपावकम् ३० तस्य चापततः खड्गं तिलाशश्चर्मचेपुभिः ॥ छित्वाऽसिमादेति गमं रुक्मिणं हन्तुमुद्यतः ३१ दृष्ट्वाभ्रातृवधोद्योगं रुक्मिणीभयविह्वला ॥ पतित्वापादयोर्भर्तुस्त्राचकरुणं सती ३२ योगेश्वराप्रमेयात्पन् देवदेवजगत्पते ॥ हन्तुं नार्हसि कल्याण भ्रा

घोड़ान कूँ और दो बाणन सूँ रथवान् कूँ वैधृतभये तीन बाणन करिकै ध्वजा काटतभये इतने में रुक्मी और धनुष कूँ लैके श्रीकृष्णचन्द्र कूँ पांच बाणनसूँ वैधृतभयो २७ बाणन करिके ताड़ित जे अच्युत श्रीकृष्ण हैं ते रुक्मी को धनुष काटतभये तब फेरि रुक्मी और धनुष लेतभयो ताहूँ कूँ नहीं है नाश जिनके ऐसे भगवान् काटतभये २८ परिघ अर्थात् वेड़ा पट्टिश अर्थात् पट्टा त्रिशूल डाल तरवार वरखी नेजा और जे जे हथियार रुक्मी लेतभयो ते ते सम कृष्णचन्द्र काटतभये २९ ता पीछे रुक्मी रथमें तें कूदिकै हाथ में तरवार लैके मरिचे की इच्छा करिकै जैसे पतङ्ग आगि के सम्मुख जाय ऐसे श्रीकृष्ण के सम्मुख जातभयो ३० चल्थो आवै जो रुक्मी है ताकी डाल तरवार कूँ बाणन तें तिल तिल भरि काटिकै पैनी धारकी तरवार लैके श्रीकृष्णचन्द्र रुक्मी के मारिचे कूँ उद्यत होतभये ३१ भय्या के मारिचे को उद्यम देखिके भयसू व्याकुल होयके पतिव्रता जो रुक्मिणी है सो पति जो श्रीकृष्णचन्द्र है तिनके चरणन में गिरिके करुणा जामे आय जाय ऐसे वचन कूँ बोलतभई ३२ हे योगके ईश्वर ! हे अममेयात्पन् अर्थात् नहीं प्रमाण करिचे में आवै है स्वरूप जिनको ! हे देवतानके देव ! हे जगत्के पालन करनवारै श्रीकृष्ण ! हे महाभुज !

अर्थात् वही है भुजा जिनकी ऐसे जो तुमहो सो भरे भयान्क मतिमारो तुम्हें योग्य नहीं है ३३ अथ श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! आस करिकै अद्रु जाके गति शोक करिकै मुक्त जाको शुष्क होगयो और कष्ट जाको रुने गयो कायरता सँ गिरी है सुवर्ण की माला जाकी ऐसी रुक्मिणी ने ता समय श्रीकृष्णचन्द्र के चरण पररे ता समय वरुणा आङ्गद तासँ रुक्मी कं नहीं भारतभये ३४ दुष्टकर्मन कूँ करै ऐसी जो रुक्मी है ताकूँ वल्ल तँ वांछिके दाढ़ीमहित मूङ्ग मूङ्गिके वाको अथद्वरूप करतभये ततार्द यादवन में जे शूरवीर हैं ते अद्रुभुत जो रुक्मी की सेना है ताज जेसे हागी कमलिनीन कूँ पर्दन करे है या प्रकर पर्दन करतभये ३५ बलदेवमी श्रीकृष्णचन्द्र के पास आयके रुक्मीकूँ देरातभये कैमो रुक्मी है शिर जाको मुहिंगयो सुतक के तुल्य वैभो ठाढ़ो डेलिकै करुणा जिनकूँ आय गई ऐसे सामर्थ्यवान् जे बलदेवजी हैं ते रुहतभये ३६ हे कृष्ण ! तैने यह निन्दितकर्म करचो हमारी यामें निन्दा होगी शिर दाढ़ी मुड़ाव कै बुरो रूप करिटेनो

तरंमेमहाभुज ३३ ॥ श्रीशुकदेवजी ॥ तयापरित्रासविक्रिप्तिताङ्गयाशुचावशुष्यन्मुखरुद्धकण्डया ॥ कातर्यविस्त्रंसितहेमगालया गृहीतपादः प्ररुणोन्यव र्तत ३४ चैलेनवद्धातमसाधुकारिणं सरगश्रुकेशं प्रवचन्यरूपयत् ॥ तावन्गमर्दः परसेन्यमद्भुतं यदुप्रीरानलिनीयथागजाः ३५ कृष्णान्तिकमुपव्रज्य ददृशुस्तत्ररुक्मिणम् ॥ तथाभूतहतमायंहृष्टासङ्कर्षणोविभुः ॥ विमुच्यवद्धं करुणो भगवान्कृष्णमवतीत ३६ असाधिवदंतयाकृष्णकृन्तनगस्मज्जुगुप्सितम् ॥ वपनं रमश्रुकेशानां वैरूप्यं सुहृदोवधः ३७ मैवास्मान्साध्यसूत्रेथातुर्वैरूप्यचिन्तया ॥ सुखदुःखदोनचाऽन्योस्ति यतः स्वकृन्तनभुक्पुमान् ३८ वन्द्युर्वधाह दोषोऽपि नवन्धोर्वधमर्हति ॥ त्याज्यः स्वेनैव दोषेण हतः किं हन्यते पुनः ३९ क्षत्रियाणां गयं धर्मः प्रजापतिविनिर्भितः ॥ भ्राताऽपि भ्रातरं हन्याद्येन घोरत रस्ततः ४० राज्यस्य भूमेर्वित्तस्य स्त्रियोमानस्य तेजसः ॥ मानिनोऽन्यस्य वाहेतोः श्रीमदान्धाः क्षिपन्ति हि ४१ तवेयं विपमा बुद्धिः सर्वभूतेषु दुर्हृदाम् ॥ यन्म न्यसेसदऽभद्रं सुहृदं गदगन्धवत् ४२ आत्ममोहो नृणामेव कल्पते देवमायया ॥ सुहृदुर्हृदऽसिनि इति देहार्ममनिनाम् ४३ एकएव परोह्यात्मा सर्वेषामपि

यही अपने नातेदार को मारनो है अब याकूँ ओहिदे ३७ अथ रुक्मिणी कूँ समझावे है हे सुशील ! भयानको कुरूप होगयो या ईषी तँ हक कूँ दोष मति लगावे यह पुरुष अपने वर्त्मन को फल भोगे है सुत दुःखको देनवारो और कोई नहीं है ३८ फेर श्रीकृष्ण कूँ समझावे हैं अपने नातेदार ने मारिये योग्य अपराध करो भी होइ तथापि न पारै वाकूँ अपराधी करिकै त्यागिटेनो नह दोहलेही अपने दोषकरि मरि रखो है फेरि वाकूँ कहा मारिये ३९ फेरि रुक्मिणी कूँ समझावे हैं क्षत्रियन को यही धर्म विज्ञाता ने बनायो है जा वर्त्म सँ भयया भयया कूँ पारि डारे मारे मसुरेन की कौन बात है यह बड़ो घोरधर्म है ताते हमारो कहा दोष है ४० फेरि श्रीकृष्ण कूँ समझावे हैं हे कृष्ण ! राज्य के निमित्त पृथ्वी के लिये घनके लिये स्त्री के लिये प्रतिष्ठा के लिये तेजके लिये और और वस्तुके लिये श्रीमदान्य अभिमानी राजा लहै हैं हककूँ उचित नहीं है ४१ फेरि कृष्ण कूँ समझावे हैं सत्र प्राणोन में दुष्ट जाको हृदय अर्थात् सब बात को बुरो विचारै ऐसे जे शिखु-पालादिक हैं तिनको बुरो चाहो ही और अपने भयानको बलो चाहो ही रुक्मिणी तुम्हारी विषम बुद्धि है अज्ञानी पुरुषनकूँ जैसे होय तैसे ४२ यह हमारो भिन्न है यह शत्रु है यह गरावर है या

प्रकार देहाभिप्रायी पुरुषन कूं देयमाया करिकै एक मोह रन्यो है ४३ समस्त देहधारीन में एकही शुद्ध आत्मा है नाही कूं अज्ञानीपुरुष अनेकरूप करिकै माने है जैसे जल के भरे घटमें एतही सूक्ष्म को प्रतिबिम्ब अनेक होयकै दीखे है जैसे एक आकाश घटादिकन में बहुत रूप करिकै दीखे है ४४ तैसे द्रव्य अर्थात् अधिभूत माण्डूक्य चत्वारिंशद्विध आधिदैविक इतने है स्वरूप जाके ऐसे आत्मा में आविया ने रचे हैं वेही देहधारीन कूं संसार में भटकौवे हैं ४५ हे पतिव्रता रुक्मिणी ! मिथ्यादेह आत्मा कूं संयोग नहीं है और या देहते वियोग भी नहीं देहह मिथ्या कोहे ते है तहां कहे हैं देह कूं प्रकाशकता आत्मा ते है जैसे सूर्य ते चक्षु इन्द्रिय रूप कूं प्रकाशे है ४६ जन्म मरणादिक जे छत्रविकार हैं ते देहकूं हे आत्मा कूं कदाचित् नहीं है जैसे चन्द्रमाकी कला घटे बड़े हैं चन्द्रमा रुडाचित् घटे बड़े नहीं है जैसे अपावसके दिन कलानके घटने तें चन्द्रमाको नाशकहिचे है तैसे या आत्माक देहके नाश तें मरण कहिचे में आवे है ४७ जैसे पुरुष सोवतमें स्वप्नमें अपनपे कूं और विषयन के देहिनाम् ॥ नानेवगृह्यनेमूर्द्धेयथाज्योतिर्यथानमः ४४ देहआद्यन्तवानेप द्रव्यमाणगुणात्मकः ॥ आत्मन्यविद्ययाक्लृप्तः संसारयतिदेहिनाम् ४५ नात्मनोऽन्येनसंयोगो वियोगश्चासतःसति ॥ तद्धेतुत्वास्तत्प्रसिद्धेर्दृग्ग्राभ्यांयथास्वेः ४६ जन्मादयस्तुदेहस्य विक्रियानाऽऽत्मनःकचित् ॥ कलानामिवनैवेन्दोर्मूर्तिर्ह्यस्यकुहुरिव ४७ यथाशयानआत्मानं विषयान्फलमेवच ॥ अनुभुङ्क्तेऽयस्तथैतथाऽऽप्नोत्यवुधोभवम् ४८ तस्मादज्ञानजंशोकमात्मशोपविमोहनम् ॥ तत्तज्ज्ञानेननिर्हृत्य स्वस्थामवशुचिस्मिमे ४९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ वैमनस्यंपरित्यज्य मनोबुद्ध्यासमादधे ५० प्राणान्शेषउत्सृष्टोद्विह्मिर्हन्तवलप्रभः ॥ स्मरन्विरूपकरणं वितथात्ममनोऽथः ५१ अहत्वाहुर्मतिकृष्णमप्रत्यह्ययवीयसीम् ॥ कुण्डिनंनप्रवेक्ष्यामीत्युक्त्वा तत्रावसदुपा ५२ भगवान्भीष्मकमुतामेवंनिर्जित्यभूमिपान् ॥ पुरमानीयविधिवदुपयेमेकुरुदह ५३ तदामहोत्सवोनुणां यदुपुन्यगृहेगृहे ॥ असूदन न्यभावानां कृष्णेयदुपतौनुप ५४ नरानार्यश्चमुदिताः प्रमृष्टमणिःकुण्डलाः ॥ पारिवर्धमुपाजहूर्वयोश्चित्रवाससोः ५५ सावृष्णिपुन्युत्तभितेन्द्रकेतुभिर्वि

भोगिवे को फल के न सुख ताकूं मिथ्या भोगकरै ताहीप्रकार अज्ञानी पुरुष संसार कूं पावै है ४८ यवित है मुसिकानि जाकी ऐसी रुक्मिणी ता कारण तें अज्ञान तें भयो जो आत्मा कूं शोक करन चारो मोहहैं ताय तत्त्वज्ञान सूं दूरि करिकै अपने शान्तरूप में स्वस्थ होबो ४९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार भगवान् बलदेवजी ने समझाई तब सुकुमार हैं अन्न जाके ऐसी रुक्मिणी मनकी उदासीनता त्यागिके बुद्धितें मनकूं सायधान करतिभई ५० केवल प्राणही जाके वाकी रहे शत्रुननें छोड़िदियो सेना जाकी पारोगई प्रभाव जाको गयो व्यर्थ भयो है मनोरथ जाको शिर मूढिके भयो है कुरूप जाको लोटी है बुद्धि जाकी ऐमे श्रीकृष्ण कूं मारे विना और छोटी बहिनो के बगदाये विना या कुण्डिनपुर में न आऊंगो या प्रतिज्ञा के मारे बहा भोजकटपुर वसायकै रहतभयो ५१ । ५२ हे कौरवन कूं आनन्द के देनचारे राजन् परीक्षित ! भगवान् जे श्रीकृष्णहैं ते या प्रकार राजान कूं जीतिकै भीष्मककी पुत्री रुक्मिणी कूं द्वारकापुरी में लायकै विधिपूर्वक विवाह करतभये ५३ हे राजन् परीक्षित ! यादवनकी पुरी द्वारकामें यादवनके पालन करनचारे जे श्रीकृष्ण हैं तिनमें अनन्य है भाप जिनको ऐसे मनुष्यन के घरमें मरुल होतभयो ५४

आनन्द जिनके भयो उज्जयन्ती हैं मगिनके जहाऊ गहने जिनके ऐसे ही पुरुष चित्रचित्र हैं वल्ल जिनके ऐसे दूल्हो दुलहिनि जो रुक्मिणी कृष्ण है तिनके देवेके लिये सुन्दर ३ वस्तु लायत भये ५५ ऊँची च्वना और चित्रचित्र माला वल्ल रत्नकी नन्दनारे तिनमें और दादरपै धानकी खोलें अंकुर फूल और जलके भरे कलश और अग्रकी धूप दीप इत्यादिकनसूं वह यादवनकी पुरी द्वारका सुन्दर लगति भई ५६ बुलाये जे प्यारे राजा हैं तिनके हाथिन के मदचुबे तासूं शोभायमान है और खिरकाव होयगयो है और दरसाजेनपै केला सुपारीन केजे हल्ललगे हैं तिनसूं शोभायमान है ५७ खुसी के मारे दोरे दोरे फिरें ऐसे जे द्वारकावासी हैं तिनमें कुलदेश सृजयदेश कै कयदेश विदभदेश यदुदेश और कुन्तिदेश के वासी जे राजा हैं ते विवाह में मिलि है आनन्दकुं पावत भये ५८ जहा तथा गायो जो रुक्मिणीको हरिकै लै जायगो है ताकूं राजा और राजानकी कन्या अथवा करिकै बड़ो आश्चर्य मानति भई ५९ हे राजन् परीक्षित ! द्वारकापुरीमें पुरवासीनके लक्ष्मीपति जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं और लक्ष्मी जो रुक्मिणी है ता सहित दर्शन करिकै अति आनन्द होत भयो ६० इति श्रीमद्भागवतार्थोपदेशमस्कन्धे उत्तरांशे रुक्मिणीविवाहोत्सवे चतुः ॥

चित्रमाल्याम्बरलनोरणैः ॥ वभौ प्रतिद्वार्युपवल्समङ्गलैरापणकुम्भभारुधूपदीपकैः ५६ सिक्कभागामिदं द्युद्धिराहून् प्रेण्डभूभुजासु ॥ गजैर्द्वारि सुपरासृष्टभा  
ण्णोपशोभिता ५७ कुरुसृञ्जयैकैक्यविदभैयडुकुन्तयः ॥ मिथामुमुदिरेत्स्मिन् सम्भ्रमात्परिधावतासु ५८ रुक्मिण्याहरणं श्रुत्वा गीयमानं ततस्ततः ॥  
राजानो राजकन्याश्च वधूवधूशिविस्मिताः ५९ द्वारकायामभूद्राजन् गंहामोदः पुरैकसाम् ॥ रुक्मिण्यारमयोपेतं दृष्ट्वा कृष्णं श्रियः पतिम् ६० इति श्रीमद्भा  
गवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरांशे रुक्मिण्युद्धाहोत्सवे चतुः पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ कागस्तु वासुदेवांशो दग्धः प्राशुदमन्युना ॥ देहोपपत्तये भूयस्तमेव प्रत्यपद्यत १ सप्तवजातौ वैदर्भ्या कृष्णवीर्यसमुद्भवः ॥ इहम्न इ  
ति विख्यातः सर्वतोऽत्र मः पितुः २ तं शम्बरः कामरूपी हृत्पातो रुमनिर्देशम् ॥ सविदित्वा तग्नः शत्रुं प्राशोदन् त्र्यगादृग्दहम् ३ तं निजं गारवलवान्

( ५४ व० ५४ वा शतमे तु पद्यम् नोऽत्र निरूप्यतः ॥ शम्बरंणाहुतः सोऽथ व्रतगतं ज्ञान्तयाऽगमत् १ मधुमन्हा निलाभायैः शम्बराहरणादिना । कुटुम्बिनामपस्यादिसुखदुःखमसूचत् २ पचपत्तये अर्थाय  
में श्रीकृष्णजीसूं मधुमन्जी उदय होत भये और शम्बरामुरने मधुमन्जी को हरलिया फिर मधुमन्जी शम्बरामुर को मारकर खी समेत द्वारकापुरी में भाग हो जाते भये १ कृष्णजी मधुमन्की हानि  
और लाभादिकों और शम्बरामुरके हरने आदिसू कुटुम्बियोंको सुग और दुःरा सूचित करते भये २ ) अत्र श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! वासुदेवको अश जो कामदेव है सो रुद्रके क्रोधवरिके  
पहले भस्म होयगयो फेरि देह पावके लिये वासुदेव हैं तिनमें अ वत भयो १ वही कामदेव श्रीकृष्ण के गीर्ण में होय रुक्मिणी के जन्मलैके मधुमन् नाम वरिके विख्यात होत भयो पिता श्रीकृष्णसूं  
सन और तै गुणनमें न्यून नहीं है २ इच्छापूर्वक रूपक धारण करै ऐसे जो शम्बरामुर हैं सो अपनी शत्रु जानिकै दश दिनके बालककूं हरिकै समुद्रमें डारिकै धरकूं आवत भयो ३ वड़ो बलवान् परस्य

वालक कू निगलतभयो वा मत्स्यकू मछरीनकी है जीविका जाके ऐसो धीमर वही जाल ढारिके और मछरीनके सद्ग पकरतभयो ४ वा वहे मत्स्यकू लाय के धीमर शम्बरामुरकी भेट करत भयो शम्बरामुर ने रसोइयानकू दियो रसोइया रसोई में लाय कै छुरीते अहुत मत्स्यकू विदीण करतभये ५ ता मछरीके उदर में वालककू देखिने रसोइया मायावती जो शम्बरामुरकी स्त्रीहै ताप देत भये शङ्कित है चित्त जाको ऐसी मायावती सं आयके सब वृत्तान्त नारदजी कहतभये यह वालकको स्वल्प तेरो पति कामदेव है श्रीकृष्ण तें रत्नमणी में उत्पन्नभयो है या प्रकार उत्पत्ति और शम्बरामुर समुद्र में डारिआयो वहाँ याकू मत्स्य निगलियो या प्रकार मत्स्य के उदरमें प्रवेशहै ताप कहत भये ६ वह जो शम्बरामुरकी स्त्री है सो कामदेव की स्त्री रही रति वाको नाम वड़ी यशस्विनीही पति कामदेव को देह दग्ध होय गयो सो याके देहके उत्पन्न होयवकी मतीत्ताकरैही ७ वह जो मायावती कामदेवकी स्त्रीहै सो शम्बरामुरने भंग भात करवेके निमित्त अपने पास राखीरही

मीनः सोऽप्यपरैः सह ॥ वृनोजालेन महता गृहीतो मत्स्यजीविभिः ४ तं शम्बराय कैवल्योऽप्याजुहुराय नम् ॥ सुदामहानसंनोत्वाऽवद्यच्चन्वधितिनऽद्भुतम्

५ दृष्ट्वा तदुदरे बालं मायावत्यै न्यवेदयन् ॥ नारदोऽरुथयत् सर्वतस्याः शङ्किते चेतसः ॥ बालस्य नत्वं मुत्पत्तिं मत्स्योदरनिवेशनम् ६ सा च कामस्य वै पत्नी रतिर्नाम यशस्विनी ॥ पत्युर्निर्दग्धदेहस्य देहोत्पत्तिं प्रतीक्षती ७ निरूपिता शम्भरेण सा संपौदनसायने ॥ कामदेवं शिङ्गुं बुद्ध्वा च केसने हंतदाभं के ८ ना तिदीर्घेण कालेन सकाष्णीरुढयौवनः ॥ जनयामास नारीणां वीक्षन्तीनाञ्च विभ्रमम् ६ सा तं पतिं पद्मदलायतेक्षणं प्रलम्बवाहुं नरलोकमुन्दरम् ॥ समीडहा सोत्तमि तन्मुवेक्षती प्रीत्योपतस्थ गतिरङ्गसौरैः १० तामाह भगवान् कार्ष्णिमर्मा तस्ते मतिरन्यथा ॥ मातृभावमतिक्रम्य वर्त्तसे कामिनीयथा ११ ॥ रतिरुन्नाच ॥ भवान्नारायणमुतः शम्भरेणाऽऽहूतो गृहात् ॥ अहन्तेऽधिकृता पत्नी रतिः कामो भवान् प्रभो १२ एतन्ना निर्देशं सिन्धवाक्षिपच्छम्भरोऽमुरः ॥ मत्स्योऽग्रसीत्त दुदरादितः प्राप्सो भवान् प्रभो १३ तमिमञ्जहि दुर्जपदुर्जं यशस्तुमात्मनः ॥ मायाशतविदं तच्च मायाभिर्मोहनादिभिः १४ परिशोचति ते माता कुरीवग

सो उस वालक कू कामदेव जानिके ता समय वालक में स्नेह करति भई ८ ओढे सेही दिनन में मास भईहै यौवन अवस्था जिनकी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के पुत्र प्रद्युम्न देखनवारी स्त्रीनकू मोह उत्पन्न करतभये ९ कमलदलसे बडेहै नेत्र जिनके लम्बीहैं भुजा जिनकी मनुष्यलोक में सुन्दर ऐसे पति प्रद्युम्न कू लाजभरी मुमकानि रूं उठी जो श्रुती तासूं देखिके भीति करिके सुरतसम्बन्धी जे भावहै तिन करिके सेवन करति भई १० अब श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्नजी रतितें बोलतभये हे मातः ! तुम्हारी मति और प्रकार भई है मातृभावकू त्यागि कै अब स्त्री की तुल्य आचरण करौ हौ ११ अब रति बोले है हे प्रभो ! तुम नारायण के पुत्रहौ शम्बरामुर तुमकू चुरायकें घरमें लै गयोहो मैं तुम्हारी स्त्री हूं रति पेरो नाम है तुम कामदेवहो १२ नहीं व्यतीतभये है दश दिन जिनके ऐसे तुमहौ तिनकू शम्बरामुर समुद्र में पटकत भयो तब मत्स्य तुमकू निगलतभयो हे प्रभो ! तुम मत्स्य के पेट में तें आयेहौ १३ निरस्कार करिवे में न आवै ऐसो जो अपनो शत्रु शम्बरामुर है सो सैकस्त मायान को जाननवारो है ताकू मोहनादिक मायान सू मारौ १४ पुत्रके स्नेह करि अतिव्याकुल दीन गयो है पुन जाको ऐसी तुम्हारी माता कुररी अर्थात् विदि-

हरीकी तुल्य शोच करे है बिना चखराकी गौदी तुल्य ग्राहुर है १५ या प्रकार मायावती स्त्री कहिकै सब मायान की नाश करनवारी जो महाभाया विद्या है ताय महात्मा प्रभुज जी हैं तिन देत भई १६ प्रभुज जी शम्भरासुर के पास आयकै असह्य वचननसू तिरस्कार करिकै कलह उत्पन्न करिकै युद्ध करिने के अर्थ बुतावत भये १७ सोंटे ताम्रन सूं तिरस्कार जाको कसो ऐसो शम्भरासुर जैसे ठोकर लगे ते सवर्ण फुंकारे है या प्रकार क्रोधकरिकै लाल है नेत्र जाके ऐसो शम्भरासुर गदा हाथमें लैके निकसत भयो १८ शम्भरासुर गदाकुं फिरायकै महात्मा प्रभुज जी के ऊपर फेंकिकै वज्रपातकी तुल्य जो कटोर शब्द है तारूं अधिक शब्द करत भयो १९ भगवान् प्रभुज जी अपने ऊपर चली आवै जो गदासूं दूरि करिकै वैरी शम्भरासुर के ऊपर क्रोध करिकै है राजन् परीक्षित् ! अपनी गदा फेंकत भये २० शम्भरासुर भय कारीगरने दिसाई ऐसी दैत्यनकी भाया ताको आग्रहकै आकाश में जायके श्रीकृष्ण के पुन प्रभुज जी के ऊपर पतयरन की वर्षा

तप्रजा ॥ पुत्रस्नेहाकुलादीना विवत्सागौरिवाऽस्तुरा १५ प्रभाष्यैवंदौ विद्यां प्रष्टुम्यायमहात्मने ॥ मायावती महाभायां भवमायाया विनाशिनीम् १६ सत्र शम्भरभयेत्य संशुगायसमाह्वयत् ॥ आविपह्यैस्तमोक्षैः क्षिपन्सज्जनयन्कलिम् १७ सोऽधिक्षिप्तोऽहर्वचोभिः पदाहतइवोरगः ॥ निश्चक्रामगदापाणि रमर्पत्ताम्रलोचनः १८ गदामाविभ्यतरसा प्रष्टुम्यायमहात्मने ॥ प्रक्षिप्यन्यनदन्नादं वज्रनिष्पेषनिष्ठुरम् १९ तामापतन्ती भगवान् प्रष्टुम्योगदयागदाम् ॥ अपास्यशत्रवेकृद्धः प्राहिणोत्स्वगदां नृप २० सत्रमायांसमाश्रित्य दैतेयीमयदर्शिताम् ॥ सुमुचेऽस्त्रमयंवर्ष कण्णो वैहायसोसुरः २१ बाध्यमानोऽस्त्र वर्षेण रौक्मिणेयोमदारथः ॥ सत्वात्मिकामहाविद्यां सर्वमायोपमर्दिनीम् २२ ततो गौह्यकगान्धर्वैषाचोरगराक्षसीः ॥ प्रायुङ्क्तशनशोदैत्यः कर्षिण न्ययधमयतस्तताः २३ निशातमसिमुद्यम्य सकिरीटं सकुण्डलम् ॥ शम्भरस्य शिरःकायाचास्त्रमथ्र्योजसाऽहत् २४ आकीर्यमाणो दिविजैः स्तुवद्भिः कुसुमोत्करैः ॥ भार्गव्याऽम्बरचारिस्या पुरीनीतो विहायसा २५ अन्तःपुरं राराजल्ललनाशतसङ्कुलम् ॥ विवेश पत्यागगनाद्विद्युतेव वलाहकः २६ तं दृष्ट्वा जलदश्यामं पीतकोशेयवाससम् ॥ प्रलम्बचाहुं ताम्राक्षं सुस्मितं रुचिराननम् २७ स्वलङ्कृतमुलाम्भोजं नीलकलकोदिभिः ॥ कृष्णं गत्वा स्त्रियोऽह्नीतानि लिलित्यु करतभयो २१ पतयरनकी वर्षासूं पीडित ऐसे जो हविमणी के पुत्र प्रभुज जी सो सगस्त मायानकी नाश करनवारी सचमुखी जो अपनी माया है ताय बुलावत भये २२ पीछे शम्भरासुर है सो मुद्यक गन्धर्व पिशाच सर्प राजसनही सैकरान माया छोड़त भयो ता समय श्रीकृष्ण के पुत्र प्रभुज जी सत्र मायानको नाश करत भये २३ प्रभुज जी पैनी तरवार उठायकै किरीट और कुण्डल सहित और रक्त दादी सक्ति जो शम्भरासुर को शीश है ताय बल करिकै घस्ते काटत भये २४ रतुति करते जे देवता हैं तिनने पुष्पनके ढेरनी जिनपै वर्षा करी ऐसे प्रभुज जी आकाश की विचरनवारी स्त्री ने आकाशमार्ग दीयकै द्वारकापुरी में पहुँचाय दिये २५ हे राजन् परीक्षित् ! सैकरान स्त्री जागें रहै ऐसो जो अन्तःपुर है तामें आकाश तें उतरिकै गैस विजुरी सहित मेघयावै या प्रकार आवत भये २६ वर्षाकी घटानकी तुल्य सात्रे रेशमी पीरे बहानकुं पीहेर लम्बी गिनकी भुजा अरुण जिनके नेत्र सुन्दर जिनकी मुसिकानि मनोहर जिनको मुख नीली टेढ़ी अलकावलीन सूं शोभायमान जिनको



मुलारविन्द ऐसे प्रद्युम्न नी कूं देखिके श्रीकृष्ण आये हैं यह मानिके स्त्री लज्जित होय के जहां तहां छिपती भई २७ । २८ कुत्र स्त्री कोई विलक्षणता देखिके श्रीकृष्ण नहीं हैं ऐसे जानिके प्रसन्न होइ के आश्चर्य मानिके स्त्रीन में श्रेष्ठ जो रति है तास हव जो प्रद्युम्न नी हैं तिन के पास आवति भई २९ यां के पीछे ता समय मनेह करिके स्तनन में दूध चुबे और नीले हैं कटाक्ष जाके मनोहर हैं वचन जाके ऐसे विदर्भ देश के राजाधी पुत्री रुक्मिणी है सो नष्ट भयो जो अपनो पुत्र है ताको स्मरण करत भई ३० मनुष्यन में श्रेष्ठ मलकी तुल्य हैं नेत्र जाके ऐसी यह बालक कौन तो है और कौन स्त्रीने यांकुं गर्भ में राख्यो है और यांकुं यह कौन स्त्री प्राप्त भई है ३१ मेरो भी पुत्र नष्ट होयगयो सूतिकाग्रह में तें वांकुं कोई लैगयो है जो कदाचित् कहुं जीवत होयगो तो याही भी बराबरी होयगो और ऐसी वांकुं रूप होयगो ३२ शार्ङ्ग है धनुष् जिनको ऐसे श्रीकृष्णकी तुल्य रूप याने कैसो पायो है याको स्वरूप और हाथ पायगो की चलनि होलनि हैं सनि चितवनि सब श्रीकृष्णकी समान हैं ३३

सत्रत्रह २८ अवधार्य शनैरी पद्वैलक्षयेन योपिनः ॥ उपजग्मुः प्रमुदिताः सस्त्रीलं मुविस्मिताः २९ अथनन्नासिता पाङ्गी वैदर्भी वल्गुभापिणी ॥ अस्म

रस्वमुतेनं स्नेहस्तु न पयोधग ३० कोन्वयं न वैदूर्यः कस्य वा मल्लक्षणः ॥ धृतः क्रयावाजडेर केयलवधात्पनेन वा ३१ मगचाप्यात्पजानशो नीनोयः

मूतिकागृहात् ॥ एतत्तुल्ययोरूपोयदि जीवतिकुत्रचित् ३२ कथं त्वनेन सम्प्राप्तं सारूप्यं शार्ङ्गधन्वनः ॥ आकृत्याऽवयवैर्गत्यास्त्रहासावलोकनैः ३३ मए

वाभवेन्नूनं यो मे गर्भे धृतोऽर्भकः ॥ अमुष्मिन् भीतिराधिका वामः स्फुरति गेभुजः ३४ एवं मीमांसमानायां वैदर्भ्यां देवकी सुतः ॥ देवक्या न रुदुन्दुभ्यामुत्तम

श्लोक आगत ३५ विज्ञाता र्थोऽपि भगवांस्तूष्णीमासजनादनः ॥ नारदोऽकथयत् सर्वशम्भराहरणादिकम् ३६ तच्छ्रुत्वा महाश्चर्यं कृष्णान्नः पुरयो

पितः ॥ अभ्यनन्दन् बहून् वदन् पृष्टुमिवाऽऽगतम् ३७ देव की वसुदेवश्च कृष्ण रागौ न थास्त्रियः ॥ दम्पती तौ परिषज्य रुक्मिणी त्रययुर्मुदम् ३८ नष्टं पदु

प्रमाया तमाकर्ण्य दारकौ रुसः ॥ ब्रह्मो मृत इवाऽऽयातो वालो दिष्ट्येति हाश्रुच ३९ यै मुहुः पितृस्वरूप निजेश भावास्तन्मातरा यदभजन् न ह्नुह रूढभावाः ॥

जो बालक मैने गर्भ में ग्रहण न स्थो हो निश्चय वह यही है यामें मेरी प्रीति बड़ा है और मेरी वाई भुजा फरकति है ३४ विदर्भ देश के राजाकी पुत्री रुक्मिणी या प्रकार विचार करे ही इतने में उत्तम है यश जिनको ऐसे देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण वन्द देवकी वसुदेव कूं संगलै के आवत भये ३५ पत्नी सहित पुत्र आयो है या बात कूं जाने है तथापि चुप होत भये इतने में नारदजी आयके शम्भरासुर हरिकै लैगयो समुद्र में पटकि पायो तब मछरी निगलति गर्भ यामें आदिलै के सब वृत्तान्त करत भये ३६ कृष्ण के अन्तः पुरकी स्त्री हैं सो वडो आश्चर्य श्रवण करिके बहुत दिनन मू देखे नहीं मृतक जैसे गतिके आवे या प्रकार आयें जे प्रद्युम्नजी निनकी प्रशसा करति भई ३७ देवकी वसुदेव और श्रीकृष्ण बलदेव तथा और स्त्री हैं ते और रुक्मिणीजी स्त्री पुरुष जे प्रद्युम्न हैं तिनमूं मिलिके आनन्द कूं प्राप्त होत भये ३८ समस्त दारकावासी नष्ट भये प्रद्युम्न कूं आयें सुनिके अहो वडो आश्चर्य है मृतककी तुल्य यह बालक आवत भयो ऐसे कहत भये ३९ पिता जो श्रीकृष्ण है तिनकी बराबरी है सरूप जिनको ऐसे प्रद्युम्नजी में हथारे पाते हैं यह एक न्न में भाव जिनकूं भयो ऐसी प्रद्युम्नजीकी माता रुक्मिणी कूं आदिलै के श्रीकृष्णकी रानी हैं ते प्रद्युम्नजी की

सेवन करत भई यह कहु आश्चर्य नहीं है लक्ष्मी वास करै ऐसे जो श्रीकृष्ण तिनके पुत्र कापदेव तिनको मनमें स्मरणमात्र मन चलायमान होइ है साक्षात् प्रतीमान् के दर्शन करे तें ली सेवन करे यामें कहा कहनो है ४० ॥ इति श्रीमहाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे प्रथमोऽध्यायः ५५ ॥ \* ॥

( पदपञ्चाशत्तमे विध्याऽध्याये गणिकादहत् ॥ कन्यागाम्भ्रवत्प्रापकृष्णः सत्राजितस्तदा १ पुत्रादिकामसौख्यस्य निष्ठुमुक्त्वाऽतिचञ्चलाम् ॥ अर्थस्थानर्यतामाहस्यमन्तहरणादिना २ छपनवे अद्याय में झूठे कलह में कृष्णजी जाम्बवान् सों मण्डिते भये और उसकी कन्या और सत्राजित की कन्या कूं प्राप्त होते भये १ पुत्रादिकाम सुख की अत्यन्त चञ्चल निष्ठा कहकर स्यमन्तक मणिके हरणआदि से अर्थ की अर्थता कहते हैं २ ) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! कियो है पाप जाने ऐसो सत्राजित अपने पाप की निष्ठितिके अर्थ अपनी कन्या कूं स्यमन्तक

चित्रनतल्लुमास्पदविभ्विम्बे कामेस्मरेऽक्षिविषये किमुतान्यनार्यः ४० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे प्रथमोऽध्यायः निरूपणं नाम पञ्च पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

श्रीशुकउवाच ॥ सत्राजितः स्वतन्त्रां कृष्णायकृतां किलिपः ॥ स्यमन्तकेन मणिना स्यमुद्यम्य दत्तवान् १ ॥ राजोवाच ॥ सत्राजितः किमकरोद्ब्रह्मन् कृष्णस्य किलिपम् ॥ स्यमन्तकः कुनस्तस्य कस्मादत्तसुताहरेः २ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ आसीत्सत्राजितः सूर्यो भक्तस्य परमः भूषा ॥ प्रीतस्तस्मै मणिमादा तसूर्यस्तुष्टः स्यमन्तकम् ३ सतं विभ्रन्मणिकण्डे भ्राजमानो यथा रविः ॥ प्रविष्टोद्दरकरांजस्तेजसानोपलक्षितः ४ तं विलोक्य जनादूरात्तेजसा मुष्टदृष्टयः ॥ दीव्यतेऽक्षैर्भगवते शशंसुः सूर्यशङ्किताः ५ नारायणमस्तेऽस्तु शङ्खचक्रगदाधर ॥ दामोदराविन्दक्षगोविन्दयदुनन्दन ६ एष आयाति सविता त्वादि दृष्टुर्जगत्पते ॥ मुष्णन् गमस्ति चक्रेण नृणां चञ्चुं पतिमगुः ७ नन्वान्विच्छन्ति ते मार्गत्रिलोक्या विवुर्धर्माः ॥ ज्ञात्वाऽद्य गूढं यदुषु द्रष्टुं त्वां यात्यजः प्रभो ८

नाम मणिके साथ श्रीकृष्णचन्द्र कूं देवे को उपाय करिके देत भयो १ अब राजा परीक्षित कहे हैं हे शुकदेवजी ! सत्राजित श्रीकृष्णचन्द्र को कहा अपराध करत भयो और स्यमन्तकमणि कहा तें आई और कौन कारण अपनी कन्या श्रीकृष्णचन्द्र कूं दीनी यह सब हमारे आगे वर्णन करो २ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं सत्राजित सूर्य को भक्त परमभिन्न हो सूर्य प्रसन्न होय कै सन्तुष्ट होय कै सत्राजित स्यमन्तकमणि देत भये ३ सत्राजित मणिकूं कण्ठ में पहिरि कै सूर्य के प्रकाशकी तुल्य प्रकाशमान होय कै दारकापुरी में आये ता समय हे राजन् परीक्षित ! वाके तेज से सत्राजित आवै है यह जानिये में नहीं आवत भयो ४ तेज की चिकाचौ श्री सू मिची है दृष्टि जिनकी ऐसे जन हैं ते सत्राजित दूर हैं ते आवत देखिके राजा लग्नसेन की सभा में चौपरि खेतें जे सत्राजित तिनसू यह सूर्य आवै है ऐसे शङ्कित होय कै कहत भये ५ हे नारायण ! हे शङ्ख चक्र गदा धारण करने वारे ! हे दामोदर ! हे गोविन्द ! हे यादवनक आनन्द के देन वारे ! तुम कूं नमस्कार है ६ हे जगत् के पति ! तुम्हारे दर्शन के लिये यह सूर्य आवै है तीक्ष्ण किरणन के समूह तें मनुष्यन के नेत्रन कूं डुरावत आवै है हे प्रभो ! ७ त्रिलोकी के देवतान में जे श्रेष्ठ हैं ते तु-

महारे मागि कूं दूं दे हैं यादवन में तुमझूं छिप्यो जानिकै देखिबे के लिये सूर्य आबै है ८ अब श्रीशुद्धदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! कमलनेत्र श्रीकृष्णचन्द्र अज्ञानी पुरुषन के वचन सुनिकै हसिके चोलत भये यह सूर्यदेव नहीं है मणि करिकै प्रकाशमान सत्राजित् आबै है ९ करे है गल्लोत्सग जामें ऐसो जो अपनो घर है तामें आय कै देवता के मन्दिर में सत्राजित् ब्राह्मणन तें पूजा कराय मणिझूं धरावत भयो १० हे प्रभो राजन् परीक्षित् ! वह मणि प्रतिदिन चार मनको भार ऐसे आठ भार सुवर्ण उमलैही और जहाँ ना मणि होइ ता देश में दुर्भिक्ष न परे है और अकालमृत्यु तथा अरिष्ट अर्थात् अपमृत्यु नहीं होइ है सूर्य नहीं काटै है मनुष्यन की देह में दुःख नहीं होय है और अशुभ नहीं होय है मायावी पुरुष वा देश में नहीं वसे हैं ११ एक समय यादवन के राजा उग्रमेन के लिये श्रीकृष्णचन्द्र ने मणि जाले माँगी ऐसो सत्राजित् लोभ के वशहोय के मणि कूं न देत भयो श्रीकृष्ण कूं नाहीं कैसे करू यह न विचारत भयो १२ वडो है प्र-

श्रीशुकउवाच ॥ निशम्यवालवचनं प्रहस्याम्बुजलोचनः ॥ प्राहनासौरविदेवः सत्राजिन्मणिनाज्वलन् १ सत्राजित्स्वगृहं श्रामत् कृनकौतुकमङ्गलम् ॥  
प्रविश्यदेवमदने मणिं विप्रैर्न्यवेशयत् १० दिनेदिनेस्वर्णभारानष्टौसमृजतिप्रभो ॥ दुर्भिक्षमार्थरिष्टानि सर्पार्थिव्याभयोऽशुभाः ॥ नसन्तिमायिनस्तत्र  
यत्राऽऽस्तेऽभ्यर्थितोमणिः ११ सयाचितोमणिंकापि यदुराजायशोरिणा ॥ नैवार्थकामुकः प्रादाद्याब्जाभङ्गमर्तकयन् १२ तमेकदामिणिकण्ठे प्रतिमुच्यमहा  
प्रभम् ॥ प्रसेनोहयमारुह्य सुगयांव्यचरदने १३ प्रसेनंसहयंहत्वा मणिमाच्छिद्यकेसरी ॥ गिरिविशञ्जाम्बवता निहतोमणिमिच्छता १४ सोऽपिचक्रकुमा  
रस्य मणिं क्रीडनकंविले ॥ अपश्यन्भ्रान्तभ्राता सत्राजित्पर्यतप्यत १५ प्रायः कृष्णेन निहतोमणिश्रीवोवनंगतः ॥ भ्रातायमेतितच्छ्रुत्वा कर्णे कर्णेऽज  
पञ्जनाः १६ भगवांसनदुपश्रुत्य दुर्ग्यशोलिसमात्मनि ॥ मार्ण्डप्रसेनपदवीमन्वपद्यनगैरैः १७ हतंप्रसेनमश्नञ्च वीक्ष्यकेसरिणावने ॥ तत्राद्रिपृष्ठे  
निहतमृक्षेणददृशुर्जनाः १८ ऋक्षराजविलोभीमगन्धेनतममावृतम् ॥ एकोविंशभगवानवस्थाप्यवह्निः प्रजाः १९ तत्रदृष्ट्वागणित्थेष्टं बालक्रीडनकंकनम् ॥

काश जाको ऐसी मणिझूं एकसमय सत्राजित् को भयथा प्रसेन कण्ठ में पहिरि कै थोड़ा पै चञ्चिकै बन में शिकार गेल्लिये कू जात भयो १२ थोड़ा सहिन जो प्रमेन है ताय गारि कै मणि कूं लै के पर्वत में जाय जो सिंह है ताय मणि लेवे की इच्छा जाकूं ऐसो जाअवाय् अत न पारत भयो १४ जाम्बवान् अपने बिल में जाय कै मणि को बिलीना करत गयो सत्राजित् अपने भयथा प्रमेन कू शिकार भेल्लिकै वनमें ते नहीं आयो देखिकै शोच करत भयो १५ मणि कण्ठ में पहिरि कै भेरो भयथा वन में गयो और या मणि पै कृष्ण को दात हो यातें वदुथा यह जानि पड़े है भयथा कूं कृष्ण ने मारयो या प्रकार सत्राजित् के मुख तें शरण करिकै सम्पूर्ण मनुष्य कान कान में कथत भये १६ भगवान् श्रीकृष्ण अपने कूं लग्यो जो दूर्यशस्य कलङ्क है ताय श्रवण करिकै द्वागकावासीन कू प्रसेन के योज दूँदिये कू जात भये १७ वनमें सिंह ने मारयो जो प्रसेन और थोड़ा ताय देखि कै और आगे पर्वत के ऊपर अत न पारयो जो सिंह है ताय सम्पन्न द्वारकावासी मनुष्य देखन भये १८ अंग्रेगे जामें दाय रखो वडो भयानक जो ऋक्षराज जाम्बवान् को बिल छे तामें सग प्रजा कू गारि ठाढ़ी करिके श्रीकृष्णचन्द्र आपणी भीतर जात भये १९

तहाँ बिलमें बालक के खेलेवे कूँ बिलौना ररी ऐसी जो माखिहै ताथ देखिहै गाणिके लेवे का मनोरथ करिके बालक के पास ठाढ़े होतभये २० यथम कसू देले नहीं ऐसे मनुष्य श्रीकृष्ण-  
चन्द्र कूँ डरये कीभी नाई थाई पुकारतिभई बलीनमें नली जाम्बवान् श्रुत थाइकी पुकार श्रवण करिके कोधितहोय सम्मुख दौरिके आवत भयो २१ क्रोधी जाम्बवान् श्रीकृष्ण के प्रभाव कूँ  
नहीं जानिके और सागरण पुरुष मानिके अपने स्वामी श्रीकृष्णके संग युद्ध करत भयो २२ परस्पर जीतिवे की है इच्छा जिनको ऐसे श्रीकृष्ण और जाम्बवान् हैं तिनको शत्रु पत्यर वृत्त भुजा  
इनसू वढ़ो भयानक युद्ध होत भयो जैसे मास के लिये दो शिकरा पत्नी लड़े हैं तैसे २३ वज्रपातकी तुल्य कठोर के मुष्टि हैं तिनसू खेदरहित अट्टाईस दिन राति परस्पर युद्ध होत भयो २४ सम्पूर्ण प्राणीन  
कुष्णचन्द्र की मुष्टिन के परिरे तें डीली भई है नस जाकी और घट्यो है बल जाकी पसीना अंगमें जाके आगयो ऐसी जाम्बवान् वढ़ो आश्चर्य मानिके बोलत भयो २५ सम्पूर्ण प्राणीन

सवैभगवतातेनयुयु  
तच्छ्रुत्वाऽभ्यद्रवत्कुब्जो जाम्बवान् बलिनान्वरः २१ सवैभगवतातेनयुयु  
हंसं कृतमतिस्तिस्मन्न तस्थेऽर्भकान्तिके २० तमपूर्व्वनरंहं द्वाधा त्रीनुक्रोशं भीतवत् ॥ तच्छ्रुत्वाऽभ्यद्रवत्कुब्जो जाम्बवान् बलिनान्वरः २१ सवैभगवतातेनयुयु  
धेस्वामिनाऽऽत्मानः ॥ पुरुषं प्राकृतं मरुताकुपितो नानुभावयित् २२ द्रव्यं युद्धं सुतुल्यमुभयोर्विजिगीपतोः ॥ आयाशमदुर्मैदोर्भिक्रव्यार्थे श्येनयोस्वि २३ आ  
सीत्तदष्टाविंशतिगतेतरमुष्टिभिः ॥ वज्रनिष्पेपरुषैरविश्रममहर्निशम् २४ कृष्णमुष्टिनिष्पातनिष्पष्टाङ्गोरुन्धनः ॥ क्षीणसत्त्वः स्विन्नगात्रस्तमाहा  
तीवविस्मितः २५ जानेत्यांसर्व्वभूतानां प्राणञ्जो जः सहो बलम् ॥ विष्णुं पुराणं पुरुषं प्रभविष्णुमधीश्वरम् २६ त्वंहि विश्वमृजं स्रष्टा मृज्यानामपि यच्च सत् ॥  
कालः कलयताभीशः परात्मा तथाऽऽत्मानम् २७ यस्येपद्रुः कलितरोपमृदाक्षमोक्षैर्नर्मादिशश्लुभितनकतिमिद्विलोऽब्धिः ॥ सेतुः कृतः स्वयश उज्ज्वलितः  
चलङ्कारक्षः शिरांसि भुवि गे तुरिपुश्रतानि २८ इति विज्ञातविज्ञानश्रुश्रानमभ्युनः ॥ व्याजहार महाराज भगवान् देवकी सुतः २९ अभिश्रयारविन्दः  
पाणिनाशक्रेण तम् ॥ कृपया परयाभक्तं प्रेमगम्भीर्यागिरा ३० मणिहेतोः रिहप्राप्तानयमृषपते बिलम् ॥ मिथ्याऽभिशापं प्रमृज्जात्मानोमणिनाऽमुना ३१  
के जे प्राण तिनमें जो बल है और सहो बल अर्थात् इन्द्रिय हृदय देह इत्यादि कूनको बल तुमहो यह मैं जानूं हूं काहे ते विष्णु भगवान् तुमहो पुराण पुरुषहो कृपालुहो सबके ईश्वर हो २६  
विश्व के सृजनवा रे अत्मादिक है तिनके तुम निरवय निमित्त कारणहो और उरान्तिके योग्य जे पदार्थ हैं तिनके उपादान कारण हो और सबके मेरुणवा रे हैं तिनके ईश्वर कालरूप तुम  
हो तथा आत्मा जे जीव है तिनके उत्कृष्ट आत्माहो २७ विष्णु पुराण पुरुषहो याही तें मेरे इष्टदेव रघुनाथहो यह कहे हैं जिन रघुनाथजी को कछु एक प्रकाशो जो क्रोध है तासू जो  
कटाक्षन को छुटिभो है तिनसू दुःखितहैं मगर और वढ़े वढ़े ग्राह जाँ ऐमो समुद्र मार्ग देतययो और जिन रामचन्द्रने अपने यश प्रकट करिके लिये पुल भोग्यो लङ्का जरई अखान करिके राजस  
रायण के शिर काटिके पृथ्वी में डारतभये सो तुम मेरे स्वामी रघुनाथहो यद्वै मैं जानूं हूं २८ या प्रकार भयोहै ज्ञान जानू ऐसो जो कृताराज जाम्बवान् है तासूं हे राजन् परीक्षित ! देवकी के पुत्र  
अन्युतभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बोलतभये २९ कमल से हैं नेन जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सुखको देनवा रो जो अपने हाथहै ताथ परमकृपाकरिके भक्त जो जाम्बवान् है ताके ऊपर धारिके मेमप्रभित

चाणी करिके बोलतभये ३० हे ऋत्तन के राजा जाम्बवान् ! हम गणिते तेरे यहां विलम्ब आये है मिथ्या कलङ्क हमकूं लगयो है ताय गणिते ज्ञाय है दूरि करीगे ३१ या प्रकार जाते कधी ऐसी जाम्बवान् बड़े आनन्दपूर्वक अपनी कन्याजाम्बवती ताय गणितसहित पूजा करिवे के निमित्त श्रीकृष्णकूं देतभयो ३२ सङ्गयेजे द्वारकावासी मनुष्यहैं ते जाम्बवान् के विलम्ब भये जे श्री कृष्ण है तिनको भिक्षुसिखी नहीं देखिके बारह दिन प्रतीक्षा करिके दुःखितहोइ द्वारकापुरी में आवत भये ३३ विलम्ब ते श्रीकृष्णचन्द्र निकसे नहीं यह बात श्रवण करिके देवकी रुक्मिणी वसुदेव और भिन्नजन तथा झारि के मनुष्य सम्पूर्ण शोक करतभये ३४ सम्पूर्ण द्वारकावासी दुःखितहोयकै सत्राजितकूं गारी देतसन्ते श्रीकृष्णचन्द्रकी प्राप्ति के निमित्त महाप्राया जो दुर्गादेवी है ताकी पूजा करतभये ३५ देवीकी पूजा करिवे ते श्रीकृष्णचन्द्रकु देखेगो या प्रकार द्वारकावासीनकूं देवीने आशीर्वाद दियो तब सिद्धभयो है मनोरथ जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र स्त्री कूं संगलै के द्वारकावासीन

इत्युक्तः स्वाङ्घ्रितरं कन्यां जाम्बवतीमुदा ॥ अर्हणार्थमगणिना कृष्णायोपजहारह ३२ अट्टद्वानिर्गमंशैरेः प्रविष्टस्य विलज्जनाः ॥ प्रतीक्ष्यद्वादशाहानिदुः खिताः स्वपुंगवयुः ३३ निशम्य देवकीदेवी रुक्मिसयानकदुन्दुभिः ॥ सुहृदो ज्ञातयोऽशोचन् विलात्कृष्णमनिर्गतम् ३४ सत्राजितं शपन्तस्ते दुःखिनाद्वार कौकसः ॥ उपतस्थुर्महामायां दुर्गाकृष्णोपलब्धये ३५ तेषां तु देव्युपस्थानात्प्रत्यादिष्टाऽऽशिपासच ॥ प्रादुर्भवसिद्धार्थं सदा रोहर्षयन्हरिः ३६ उपलभ्य हृषीकेशं मृतं पुनरिवाऽऽगतम् ॥ सहपत्न्यामणिश्रीनं सर्वजातमहोत्सवाः ३७ सत्राजितं समाहूय सभां राजसन्निधौ ॥ प्रार्थित्वा ह्ययमगमत्सेनपापमना ३८ सोऽनुध्यायंस्तदेवावंचलवद्विग्रहाकुलः ॥ कथं भुजाम्यात्परजः प्रसीदेद्वाऽन्युतः कथम् ४० किं कृत्वा साधुमहंस्यान्नशपेद्वाजनोमथा ॥ अदीर्घदर्शनं क्षुद्रं मूढं द्रविणलोलुपम् ४१ दास्येदुहितरंतरं मे स्त्रीतरं लभेवच ॥ उपायोऽयं समीचीनस्तस्य शान्तिर्न चान्यथा ४२ एवं व्यवसितो बुद्ध्या सत्राजितस्त्वसुतां शुभाम् ॥ मणिवस्त्रयमुद्यम्य कृष्णायोपजहा

कूं आनन्द देत मकट होतभये ३६ जैसे कोई श्रुतक पुरुष फेरि बगदि के आवे है ऐसे मणिकूं पहिरिके स्त्री कूं संग लैके आये जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें प्राप्तहोयकै समस्त द्वारकावासीनके बड़ो आनन्द होतभयो ३७ सभामें राजा उग्रसेनके पास सत्राजितकूं बुलायकै जाम्बवान् ऋत्तन ते गणित लाये हैं यह कहिके भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र सत्राजित कूं देतभये ३८ सत्राजित मणिकूं लैके अतिलज्जित होय मुख नीचो करिके अपने पाप ते परचात्ताप करत घरकूं जातभयो ३९ बलवान् श्रीकृष्णसूं जो विरोध परयो तामूं व्याकुल जो सत्राजित है सो अपने पूर्वं अपराधकूं रात्रिदिन विचारकरत अपने पापकूं कैने दूरिकलं और कैसे अन्युत भगवान् प्रसन्नहोयं ऐसे विचार करतभयो ४० औन कर्म करे ते भरो भलोहोइ भये बिना विचारे श्रीकृष्ण कूं दोष लगायदीनो में कृष्ण मन्दबुद्धि हूं द्रव्यको लोभी हूं अब मोकूं जैसे प्राणी बुरो न कहै ऐसी कोई कार्य करेगो यह विचार करतभयो ४१ या प्रकार विचार करिके अब उपाय निश्चय करेहैं श्रीकृष्णचन्द्र कूं मैं अपनी कन्यादेवीगो और पीछे ते भेट में मणिकूं गी यही सुन्दर उपाय है और तरह भरो अपराधदूरि न होयगो या प्रकार बुद्धिसूं निश्चय करिके सत्राजित मंगलरूप जो अपनी कन्या है ताय और

पणिकुं आपही उपाय करिकै श्रीकृष्णकुं देतभयो ४२।४३ सुन्दर स्वभाव रूप उदारता ये गुण जा में विद्यमान और कृतवर्मा ते आदि लैकै यादवन ने मांगी ऐसी जो सत्यभामा है ताय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र विधिपूर्वक व्याहतभये ४४ हे राजन् परीक्षित ! श्रीकृष्णचन्द्र कहतभये हमकुं मणि नहीं चाहिये सूर्यभक्त जो तुमहौ तिनहिकै मणिरहे और याको जो सुवर्ण होय ताय हमारे भिजवाय दियोकरो-तुम्हारे पुत्र नही है तुम्हारे जो धन है सो हमारोही है यह भगवान् को गूढ़ आभिप्राय है ४५ इति श्रीमन्महाभागतार्कषिययादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेस्यमन्तकोपाख्यानैपद्मज्वालयोऽध्यायः ५६।

( सप्तञ्चाशत्तमेतुनःशतधनुर्वे ॥ मात्स्यदुर्धेशोपाष्टिकृष्णोक्तराक्षसान्मण्येः ? अक्षुरपुररीकृत्य मण्येःपात्रमयाच्युतः ॥ उपात्मन्त्यतेमकान्तेसामोऽगादृगजाह्वयम् २ सत्तामनवै आशाय मे फिर कृतधन्वा के वधमे कृष्णजी अक्षुरजीसौ मणि लेकर मात्स्ये कलङ्क को दूर करतेभये ? अक्षुर को कृष्णजी मणिका पात्र अंगीकार कर उनसे एकान्तमे सलाहकर वलदेवजी समेत हस्तिनापुर जाते ॥

॥

रह ४३ तांसत्यगामांभगवानुपयेमेयथाविधि ॥ बहुभिर्याचितांशीलरूपौदार्यगुणान्विताम् ४४ भगवानाहनमणिं प्रतीञ्छामोवयंनृप ॥ तत्राऽस्तं देव

॥

भक्तस्य वयञ्चफलभागिनः ४५ इति श्रीमद्भागवतमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेस्यमन्तकोपाख्यानैपद्मञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ विज्ञातार्थोऽपिगोविन्दो दग्धानाकर्यपारुषधान् ॥ कुन्तीञ्चकुल्यकरणे सहसामोययौकुरुन् १ भीष्मं कृपं सविदुरं गान्धारीद्रोणमे

वच ॥ तुल्यदुःखौ च सङ्गम्य हाकष्टमितिहोचतुः २ लब्ध्वैतदन्तराजञ्छतधन्वानमूचतुः ॥ अक्षुरकृतवर्माणौ मणिः कस्मान्नगृह्यते ३ योऽस्मभ्यं सम्प्रति

श्रुत्य कन्यारत्नं विगर्ह्य नः ॥ कृष्णयादात्र सन्त्राजित्कस्माद्भ्रातरमन्विष्यात् ४ एवं शिञ्जति स्ताभ्यां सन्त्राजितमसत्तमः ॥ शयानमवधीक्षोभात्सपापः क्षीण

जीवितः ५ स्त्रीणां विप्रकोशमानानां क्रन्दन्तीनामनाथवत् ॥ हत्वा पशून्सौनिकवन्मणिमादायजग्मिवान् ६ सत्यभामाचपितरं हर्नवीक्ष्यशुचाऽर्पिता ॥

न्यलपक्षातातोतिहाहनास्मृतिमुह्यती ७ तैलद्वोशश्चांशुतेप्राप्तस्य जगामगजसाह्वयम् ॥ कृष्णाय विदितार्थाय तस्माऽऽचर्योपितुर्वधम् ८ तदारुर्येश्वरौ

भये २ ) पाण्डव लाक्षाशुर तें विल में होयकै बाहिर निकसिगये या प्रकार जानैहैं तथापि पाण्डवनकुं जरै सुनिकै और कुन्तीकुं जरै सुनिकै कुलोचित व्यवहार करिकै लिये बलदेवजीकुं सत्र

लैकै श्रीकृष्णचन्द्र कुरदेशन कुं जातभये ? भीष्मापितामह विदुरसाहित कृपाचार्य गान्धारी द्रोणाचार्य इनसुं मिलिकै बराबर है दुःख जिनके ऐसे कृष्ण बलदेव हैं ते हाय पाण्डव जरिगये

वढो कष्टभयो या प्रकार कहिकै बोलतभये २ कछु एक दिननके पश्चात् हे राजन् परीक्षित ! अक्षुर और कृतवर्मा ये दोनों शतधन्वा ते बोलतभये सन्त्राजित ते मणि क्यों न छिनाय लेउ—जो

सन्त्राजित अपनी बन्ध्या रत्न हमकुं त्यागिकै कृष्णकुं व्याहिदीनी वह सन्त्राजित भय्या प्रसेनके पीछे क्यों नहीं जाय अर्थात् परे क्यों नहीं ३।४ या प्रकार अक्षुर और कृतवर्माने वह भाई है बुद्धि जाकी

जीणभयो है जीवन जाको ऐसो पापी असाधु जो शतधन्वा है सो शय्यापै सोवते सन्त्राजित को शिर काटतभयो ५ स्त्री जे हैं ते अनाथकी तुल्य पुकारिकै रोदन कस्यो करी कसाई जैसे पशुन

कुं मारै ऐसे शतधन्वा सन्त्राजितकुं मारिकै जातभयो ६ सत्यभामा अपने पिता सन्त्राजित कुं बस्यो देखिकै अहो पिता ! हाय मैं परी या प्रकार मोहित होयकै विलाप करतिपरै ७



मृतक जो पिता को देह है ताकूँ तैलकी कोठी में राखिकै सत्यभाषा हरितनापुर कूँ जाति भई सञ्जाजित्कूँ शतधन्याने माख्यो यह गात श्रीकृष्णचन्द्रने जानिलीनी तथापि मेरो पिता शनधन्या ने माख्यो यह बात दुःखित होय कै कहति भई ८ हे राजन् परीक्षित् ! ईश्वर जे श्रीकृष्ण वलदेव है ते सञ्जाजित् को परण श्रवण करिकै मनुष्यलीला में आयकै अहो हमकूँ बडो बट्ट है या प्रकार बहिकै आखिन में तें आसूँ लायकै पिलाप करतभये ९ सत्यभामा और भन्या वलदेवजी इनकूँ मूलकै श्रीकृष्णचन्द्र हरितनापुरतें द्वारकापुरी में आयकै शनधन्याकै पारिवे को और बातें माण लेने को प्रारम्भ करतभये १० श्रीकृष्ण ने मेरे पारिवे को उपाय कियो है यह बात शनधन्या जानिकै माण वचायवे के लिये भयभीतहोयकै कृतवर्म्मार्ते सहाय के निमित्त कहतभयो तब बड कृतवर्म्मार् वोलत भयो ११ ईश्वर जे श्रीकृष्ण वलदेव हैं तिनको अपराध मैं न करुणो कृष्ण वलदेव को अपराध करिकै कौनको कल्याण होयगो १२ या कृष्ण ते द्वेप वरिकै कंस लक्ष्मी ते अपट्ट होयकै

राजन्ननुमृत्यनुलोकनाम् ॥ अहोनःपरमं ऋष्टमित्यस्त्राक्षौ विलेपतुः ६ आगत्य भगवांसं स्मात्सार्थः साग्रजः पुरम् ॥ शनधन्या नमारेगे हन्तुं हर्षमणि ततः १० सोऽपि कृष्णोद्यमं ज्ञात्वा भीतः प्राणपरीप्सया ॥ साहाय्ये कृतवर्म्माणमया च तस्य चाब्रवीत् ११ नाहमीश्वरयोः कुर्यात् हलन्तरामकृष्णयोः ॥ को नु क्षमाय कल्पेन तयोर्द्विजिनमाचक्ष्व १२ कंसः सहानुगोऽपीतो यद्देपात्त्याजितः श्रया ॥ जरातन्वः सप्तदश युगान् विरथोगतः १३ प्रत्याख्यातः सचाक्रुर्पाणिं ग्राहयामास ॥ सोऽप्याह को विरुद्धेति विद्वानीश्वरयोर्वलम् १४ यददं लीलया विश्वं मृत्यवतिहन्ति च ॥ चेष्टा विश्वमृजो यस्य न विदुर्भोहिताऽजया १५ यः ससहायनः शैलमुत्पाट्यैकेन पाणिना ॥ दधारलीलया बाल उच्छिन्नीन्ध्रमिवाभकः १६ नमस्तस्मै भगवते कृष्णायान्द्रुन क्रमर्षणे ॥ अनन्तायादिभूताय कूटस्थायाऽऽत्मने नमः १७ प्रत्याख्यातः सतेनापि शतधन्या महामणिम् ॥ तस्मिन्नथस्याश्वगारुह्य शतयोजनगंगयौ १८ गरुडं यजगारुह्य थं रामजनादौ नौ ॥

अन्यातां महावैगैरश्वैराजन्गरुहम् १९ मिथिलाया उपवने विमृज्य पतितं हम् ॥ पद्भ्यामधावत्सं त्रसन्ः कृष्णोऽप्यन्यद्वदद्गुपा २० पदाते भगवांस्त भयान सहित परिगयो और जरासन्ध सत्रह बार युद्धमें हारिकै अन्तमें निरथ होयकै गयो १३ कृतवर्म्माण ने शतधन्या तें मने करदीनी तन अक्रूर तें सहाय करिवे के लिये कहत भयो तब अक्रूरहू बोलतभये ईश्वर जो श्रीकृष्ण हैं तिनके पराक्रम कूँ जानिकै कौन पुरुष उनतें विरोध करेगो १४ जो ईश्वर लीला करिकै या विश्वकी उत्पत्ति पालन नाशकरे है और माया मूँ मोहित होयकै उनकी चेष्टा कूँ ब्रह्मादि न नहीं जाने है १५ जो सातवर्ष की अवस्था में श्रीकृष्णचन्द्र एगहाय मूँ गोवर्द्धन पर्वत कूँ उत्सारिकै जैसे बालक छतौना कूँ उठाव लेई है ऐसे उठावतभये १६ अट्टतै कर्म जिनके ऐसे जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र तिनके अर्थ नमस्कार है अन्त जिनको नहीं सबके आदि कारण निर्भिकार सबके आस्था तिनकूँ नमस्कार है १७ या प्रकार अक्रूर ने जब नहीं करी तब शतधन्या मणिकूँ अक्रूर के पास धरिके चार सौ कोस चलै ऐसे घोड़ा पै चढ़िकै भाजतभयो १८ राग और श्रीकृष्ण हैं ते गरुड के छांपकी है ध्वजा जामें ऐसे जो रवई तामें सवार होयकै शीघ्रगामी जे घोड़ा हैं तिन करिकै हे राजन् परीक्षित् ! श्वशुरको मारनवागे जो शतधन्या है ताके पीछे दौरत भये १९ शतयोजनतें अधिक न चलिसकै ऐसे जो घोड़ा है मो मिथिलापुरी के बाग में गिरणो लाय

त्यागिके भयभीत होयकै पाव प्यादो भोजनभयो और श्रीकृष्णकूं क्रोध करिके पीछे दौरतभये २० पांव प्यादो जो शतधन्वा है ताकूं पांवप्यादे श्रीकृष्ण भगवान्दौरिके पकरिके तीक्ष्णभारके चक्र सें शतधन्वा को शिर काटिके वाके वखन में मणिकूं दूदतभये २१ नहीं मिली है मणिकूं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजीके पास आयकै व दूतभये देसो शतधन्वाकू दृग्राही भारयो वापै मणिकूं नहीं निकसी २२ ताके पीछे बलदेवजी कहतभये शतधन्वा काहू पुरुषके पास मणिकूं धरि आयो है वा पुरुष कू ढूंढो और तुम द्वारताकूं जावो २३ श्रीकृष्ण सज वातकूं जाने है मणिकूं को मोते छिपाव कियो है यह मानि है बलदेवजी मनमें क्रोध करिके बोलतभये याको अभिप्राय यह है कि द्रव्य ऐसो निषिद्ध एवार्थ है याके लिये श्रीकृष्ण बलदेवजी को मन विगड़िगयो तौ मनुष्यनकी कहा कथा है मेरो अतिप्रिय पिदिह देशको राजा बहुलाश्व है ताव देखिवे कूं जाउँगे हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार श्रीकृष्ण तें कहिके यादवनकूं आनन्द देनवारे बलदेवजी मिथिलापुरीमें प्रवेश

स्य पदातिस्तिरगमनेपिना ॥ चक्रेण शिरउत्कृत्य वामसोर्व्याचिनोन्मणिसम् २१ अलब्धमणिरागत्य कृष्ण आह्वयजान्निकम् ॥ वृथाहनःशतधनुर्मणिरन  
त्रनविद्यते २२ तत आहवलोलूतनं समणिःशतधन्वना ॥ कस्मिंश्चित्पुरुषेभ्यस्तस्तमन्वेपणं व्रज २३ अहंविदेहमिच्छामि द्रष्टुं प्रियतमं मम ॥ इत्युक्त्वाभिपि  
लांगत्रन्विवेशयदुनन्दनः २४ तं दृष्ट्वा सहसोत्थाय भौथिलः प्रीतमानसः ॥ अर्हयामास त्रिधिवदहंणीयं समर्हणैः २५ उवासतस्यांकितिचिन्मिथिलायां रामा  
विभुः ॥ मानितः प्रीतियुक्तेन जनकेन महात्मना ॥ ततोऽशिक्षद्रदांकले धार्तराष्ट्रमुयोधनः २६ केशवोद्वारकामेत्य निधनं शतधन्वनः ॥ अप्रापिद्यमणैः  
प्राह प्रियायाः प्रियकृद्विभुः २७ ततः सकारयामास क्रियात्रन्वोर्हृतस्य वै ॥ साकं मुहूर्द्धा भवान् यायाः स्युः साम्परायिकाः २८ अक्रूरः कृतवर्मा च श्रुताशत  
धनोर्वधम् ॥ व्यूषतुर्भयवित्रस्तौ द्वारकायाः प्रयोजकौ २९ अक्रूरप्रोपिनेऽरिष्टान्यासन्वैद्वारकौ कसाम् ॥ शारीरामानसास्तापामुद्धैर्विकभौतिकाः ३० इ

त्यङ्गोपदिशन्येके विस्मृत्य प्रागुदाहृतम् ॥ मुनिवासानिवासे किं घटेनारिष्टदर्शनम् ३१ देवेऽवर्पिताशीशः स्वफलकायागताय वै ॥ स्वसुतांगांदिनीं  
करतभये २४ प्रसन्न है मन जाको ऐसो मिथिलापुरी को राजा बलदेवजीकूं आये देखिके श्रीद्र उठिके पूजन करिचे योग्य जे बलदेवजी हैं तिनकी पूजनकी सामग्रीनसूं पूजा करतभयो २५ ता  
मिथिलापुरी में समर्थ बलदेवजी कितनेज वपे वास करतभये भीतियुक्त महात्मा जो जनकहैं तातें सत्कार जिनने पायो ऐसो धृतराष्ट्र को पुन दुर्योधन सो बलदेवजी स गदा चलायवो सीसत  
भयो २६ प्रिय कार्य के करनवारे समर्थ केशव भगवान् द्वारकापुरी में आयकै शतधन्वाको नाश और मणिकी अप्राप्ति है ताव प्यारी जो सत्यभामा है ताभूं ऊठतभये २७ ताके पीछे भगवान् श्री-  
कृष्णचन्द्र अपने सुहृदनकूं संगनैके मृतक सजावित् की परलोककी साधन जे क्रिया हैं तिनें करातभये २८ सत्राजित् तें मणिके हरिलेने में शिक्ता करनवारे जे अक्रूर और कृतवर्मा हैं ते शतधन्वा  
को मरण सुनिके श्रीकृष्णसूं भयभीत होयके द्वारकापुरी तें भाजतभये २९ द्वारका तें अक्रूर कू भिगवाय दियो ता समय द्वारकावासीनकूं देवता और मनुष्य ये हैं कारण जिनके ऐसे जे शरीर  
के मनके ताप है ते और अरिष्ट है ते वारंवार द्वारकापुरी में होतभये ३० हे राजन् परीक्षित् ! कोई एक शब्द है ते प्रथम श्रीकृष्ण की पहिमा कहो है ताकूं फेरि कहैं मुनिनको है वास जिनमें ऐसे

श्रीकृष्णचन्द्र या द्वारकापुरी में रहें तहां दुःखहोई यह पात कहा वनेहै ३१ या प्रकार दूषित करिकै फेरि और धूपिन सो घत कहे हैं एक समय इन्द्र जब न वर्षोत्तव काशीको राजा अपनी कन्या मा-  
न्दिनी के प्राप्तभये जो स्वफलक हैं तिन देतभयो तव काशी के देशन में मेघ वर्षतभयो ३२ पिता स्वफलक ही तुल्य है प्रभात जाको नेसो अकूर जहां रहे तहां तथा इन्द्र वर्षाकरै और ता देश  
में प्राणीनकुं खेद नहीं होय है मरी नहीं परे है ३३ या प्रकार वृद्धेन कौ वचन सुनिकै केवल अकूरही यहां ते गयो सो नहीं मणिहूण्ड यहवात अवण करि निश्चय करिकै अकूर के काशीते डुलाय  
कै श्रीकृष्णचन्द्र बोलतभये ३४ अकूरकी पूजाकरिकै हे काका अकूर ! याप्रकार सम्बोवन दैकै प्यारी बात कहिकै सप्त विष्टय के जाननपारै अकूर के मनकी जानिकै श्रीकृष्णचन्द्र मुनि-  
काय के बोलत भये ३५ हे दानन के पति अकूर ! शतधन्या स्यमन्तरुमणि तुम्हारे पास धरिगयोहैं सो तुम्हारे पास है यह हम पहिले तेही जानेहैं ३६ सत्राजित के पुत्र नहीं याते जाकू पिण्ड

प्रादात्ततोऽवर्षस्मकाशिपु ३२ तत्सुतस्तत्प्रभावोऽसावक्रूरोयग्रयग्रह ॥ देवोऽभिवर्षतेतन्नोपतःपानमारिक्ताः ३३ इतिवृद्धवनःश्रुत्वानैतावदिहकारणम् ॥  
इतिमत्वासमानायगाहाक्रूरं जनार्दनः ३४ पूजयित्वाऽभिभाष्यैर्नक्षत्रयित्वाऽपियाः कथाः ॥ विज्ञाताऽखिलचित्तज्ञःस्मयमानउवाचह ३५ ननुदानपतेन्यस्त  
स्त्रय्यास्तेशतधनना ॥ स्यमन्तकोमणिः श्रीमान्विदितपूर्वमेवनः ३६ सत्राजितोऽनपत्यत्वादृष्टीशुद्धिहितुः सुताः ॥ दायंनिनीयापःपिण्डान्विसुव्यर्ण  
चशेषिनम् ३७ तथाऽपिदुर्द्धरस्त्वन्यैस्त्रय्यास्तासुत्रतेमणिः ॥ किन्तुमामग्रजःसम्यङ्नप्रत्येतिगण्णिप्रति ३८ दर्शयस्वमहाभाग बन्धूनांशान्तिमावह ॥  
अव्युच्छिन्नामखास्तेऽद्यवर्त्तन्तेरुद्रगवेदयः ३९ एवंसामभिरालब्धःश्वपलकतनयोमणिम् ॥ आदायवाससाञ्चञ्चन्ददौसूर्यसप्तप्रभम् ४० स्यमन्तकंदर्शयि  
त्वाज्ञातिभ्योरजःआत्मनः॥विमृज्यमणिनाभूयस्नस्मैप्रत्यर्पयत्प्रभुः ४१ यस्त्वेतद्भगवतईश्वरस्यविष्णोर्वीर्याब्जवृजिनहंसुमङ्गलञ्च ॥ आख्यानपठतिशृणो  
त्यनुस्मरेद्बाहुण्कीर्तिदुरितमपोह्ययातिशान्तिम् ४२ इति श्रीमद्भगवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तराद्धैस्यमन्तकोपाख्यानेसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

जलदान दैकै ऋण चुकायकै शेष धन रहेगो ताय चाही कन्या के पुत्र लेईगे यह शास्त्र की आज्ञाहै ३७ सुन्दरहै त्रत जिनको ऐसे हे अकूर ! तुम हमतें कदाचित् न कहो तथापि हम जानेंहैं मणि और  
पै नहीं रहिसकै तुम्हारे पास है तथा अकूरजी कहे हैं हमारे पास है तुम्हें कहा प्रयोजनहै तंत्र श्रीकृष्ण कहे हैं वड़े भयया बलदेवजी-या मणिके पीछे भरो विश्वास नहीं करे है ३८ श्रीकृष्णचन्द्र  
कहे हैं हे बड़भागी अकूर ! तुम मणि दिखायकै बन्धुनकुं शान्तिकरौ भरे पास मणि नहीं है यह मति कहाँ जो कदाचित् मणि न होवै तो सुवर्ण की वेदी बनाय वनाय के अतएव यज्ञ क्रहातें काशी  
में जायकै वरते ३९ या प्रकार साग भेदन करिकै समभायो ऐसो स्वफलक को पुत्र अकूर वस्त्र तें ढकी सूर्य केसो है तेज जाको ऐसी मणि लैकै श्रीकृष्णचन्द्रकुं देतभयो ४० श्रीकृष्णचन्द्र  
स्यमन्तक मणि अकूरजी तें लैकै जातिके भयया धन्युनकू दिखायकै मणि कृष्णने लीनी है यह जो अपने कौं भिथया कलङ्क लग्यो ताह दूरि करिकै फेरि प्रभु श्रीकृष्णचन्द्र अकूरजी कुं नहै  
मणि समर्पण करत भये ४१ ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको कबो वीर्ययुक्त पुरुषन के दुःख को हरनवारो सुन्दर मंगलरूप जो स्यमन्तक मणि को प्रसंग है याकुं जो कोई पुरुष पड़े

श्रवण २ र स्मरण करे वह कुत्सित पाप के मलजल के दूर करिके कल्याण के पात्र है ४२ इति श्रीमन्नाम्नाध्यायवतार्यखण्डपर्यायदशमस्कन्धे उत्तराष्टोत्थमन्तकोपाल्यानेसप्तसप्तवाशक्तमोऽध्यायः ५७ ॥  
(अष्टमश्वाशक्तमेवुक्तुः ५७ चक्रेऽग्रहीत् ॥ कालिन्दीमित्रविन्दाञ्चतस्याभद्राञ्चलक्षणाया १ कालिन्दीनिजलाभायतपःपरमेष्ठिनीम् ॥ परियेष्वनभियावासाभिन्द्रमपगमन् २ अष्टावनने  
अध्याय में कृष्णजी कालिन्दी मित्रविन्दा सरया भद्रा और लक्षणा इन पाँचों का व्याह करते भये १ अगने लाभ के लिये श्रेष्ठ तपस्या करती हुई कालिन्दीजी को कृष्णजी मास होकर प्यारे  
स्थानवाले शस्तिनापुरको मास हेतु भये २ ) अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र सात्यकि तैं आदिलैं के पहिले लान्नाशुद्धमें जरि गये यह श्रवण करी ही फेरि दुपद  
के घरमें सबने देखे ऐसे जे पाण्डव हैं तिनैं देखिये के लिये श्रीकृष्णचन्द्र इन्द्रस्थ में जात भये १ सभके ईश्वर जे श्रीकृष्ण हैं तिनैं आये देखिके जैसे प्राण के आये तैं इन्द्रिय चैतन्य होयें ऐसे वीर  
पाण्डव उठत भये २ श्रीकृष्णचन्द्र के मिलिये में अङ्गसंग जो भयो तासू गये हे पाप जिनके ऐसे वीर पाण्डव स्नेहभरी मुसिकानिसहित श्रीकृष्णचन्द्र को मुखारविन्द देखिके आनन्दकू मास होत

श्रीशुकउवाच ॥ एकदापाण्डवान्द्रष्टुं प्रतीतान् पुरुषोत्तमः ॥ इन्द्रप्रशंगतः श्रीमान् युधानादिभिर्धृतः १ दृष्ट्वा तमागतं पार्थ मुकुन्दमखिलेश्वरम् ॥  
उत्तस्थुर्गपदीराः प्राणामुख्यमिवाऽऽगतम् २ परिष्वज्या च्युतं वीरा अङ्गसङ्ग्रहतैनसः ॥ सानुरागस्मितं वक्रं वीक्ष्य तस्य मुदं ययुः ३ युधिष्ठिरस्य भीमस्य कृ  
त्वा पादाभिवन्दनम् ॥ फाल्गुनं परिभ्याथ यमाभ्यां चाभिवन्दितः ४ परमासन आसीनं कृष्णारुणमनिन्दितम् ॥ नवोढा व्रीडिता किञ्चिच्छनैरेत्याभ्यवन्द  
त ५ तथैव सात्यकिः पार्थः पूजितश्चाभिवन्दितः ॥ निपसादाऽऽमनेऽन्ये च पूजिताः पर्युपासिताः ६ पृथां समागत्य कृताभिवन्दनस्तयातिहादर्द्रदशाऽभि  
रग्निमतः ॥ आपृष्ट्वांस्तं किंशलं सहस्रनुपां पितृष्वसारं परिपृष्ट्वान्ववः ७ तमाहमेवैकैक्यरुद्धकण्ठाश्रुलोचना ॥ स्मरन्तीतान् बहून्नेकेशान् क्लेशापायात्मा  
दर्शनम् ८ तदैव कुशलं नो भूत्सनाथास्ते कृतवायम् ॥ द्वातीन्नाः स्मरता कृष्णप्रातामेव प्रेषितस्त्वया ९ न तेषु स्तिस्त्वपरान्निर्विश्वस्य सुहृदात्मनः ॥ तथाऽपि

भये ३ श्रीकृष्णचन्द्र वहे जे युधिष्ठिर और भीमसेन हैं तिनके चरणन में नमस्कार करिके और वरा गरि को जो अर्जुन है तासू मिलत भये पीछे छोटे जो नकुल और सहदेव हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र के  
प्रणाम करत भये ४ श्रेष्ठ आसन पैं बैठे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं पाँच पाण्डवन भी स्त्री है तथापि निन्दा जाकी नहीं ऐसी नई विवाहिता लजावती जो द्रौपदी है सो हीले होले आइ के प्रणाम  
करति भई ५ जैसे पृथाके पुत्र जे पाण्डव हैं तिनने पूजा जाकी करी अगिवादन करचो ऐसो सात्यकि यादव आसन पैं बैठत भयो पूजा जिनकी करी पेरु और हू श्रीकृष्णचन्द्र के संग बैठत भये ६  
फेरि श्रीकृष्णचन्द्र कुन्ती के पास आय के प्रणाम करत भये कुन्ती स्नेहभरी चितवनि सों आर्त्तिगन करति भई श्रीकृष्णचन्द्र पतोद्गमाहेत पिता की वदनि जो कुन्ती है ताते कुशल पूजत भये श्रीकृष्ण  
के वन्धुनकी कुशल कुन्ती ने पूछी है ७ प्रेमकी व्याकुलता तैं रुचया है पाण्ड जाको नेननगें आसू जोके आगये ऐसी कुन्ती कीरवन ने जे कष्ट दिये हैं तिनकी सुधि करिके भक्तन के लेश कूं  
दूर करिये क लिये दर्शन देई ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हूँ बोलत भई ८ हे कृष्ण ! जाति के वन्धु जे हम हैं तिनको स्मरण करिके जा समय तुमने मेरे भयया अक्रूरकूं त्ववरिते लिये भेजयो हो ताही

समय हमारी कुशल होतिथई और तैने हप मनाथ करे ० सगसन चिरम के दिननारी आत्मा जो तुमहो नितनके गह आपनो है यह पगगो है यह भ्रम नितनके नहीं तथापि जो कोई तुम्हो सनदडा स्मरण करै है तिनके हृदय में स्थित होयके सप छेयनकूंदरि करोहो १० अग राजा युधिष्ठिर रुहे है हे ब्रह्मादिकन के ईश्वर ! हमने एहा सन्गागु नियो है यह मैं नहीं जानूँ जो तुम योहेश्वरनके देखिने में आबो सो हम पिपयासक्तन कूं दियाई दिये ११ या मकार राजा युधिष्ठिरने प्रार्थना जिनकी रुगी गेये श्रीकृष्णचन्द्र उन्मस्यनिवामीनके नेचनतुं यानन्ददेत यपा हृदयके मधीना बाल करतभये १२ एक समय शूरमीर जे शुक्रै नितनके मारनगारे जो अर्जुनहो गो मारनके छापेकीहै ज्ञाजा जायें ऐये मय में चद्रित गाणडीव धनुमुल्ल है गागनहो भरयो तरुम लंकें तावबभिशर के पदुत सरप और मृगहैं जायें ऐसो बड़ो वनहै तामें श्रीकृष्ण के भंग शितार सेलिये कूं जातभयो १३।१४ ता तन में व्याघ्र सुकर भैया करु यथोन् दिग्ग शरभ अभातु पाठयान के जीवरोन गंडा

स्मरतांशश्चत्केशान्हंसिहदिस्थितः १० ॥ युधिष्ठिरा उवाच ॥ किंन आचरितं श्रेयो न वेदादृग्धीश्वर ॥ योगेश्वराणां हृद्देशो यन्नादृष्टकुम्भसाम् ३१ इति वै  
वार्षिकान्मासान् रात्र्या सोऽभ्यर्चितः सुखम् ॥ जनयन्नयनानन्दमिन्द्रस्थौ कसाविभुः १२ एकदारथमारुह्य विजयोदानरध्वजम् ॥ गार्गावंधनुरादाय तू  
णौ चाक्षयसायकौ १३ साकंकुष्णेन सज्जद्धो विहर्षगुहने वनम् ॥ बहुव्यालमुग्रकीर्णं प्राविशत रवीरहा १४ तत्राविध्यच्छैर्व्याघ्रान् मूरान् च महिमान् रु  
न् ॥ शरभान् गवयान् लङ्गान् हरिणाञ्छशाश्लकाञ् १५ तानिन्युकिङ्कराज्ञे मेध्यानपर्वण्युपागते ॥ दृढपरीतः परिश्रान्तो जीमत्सुर्यमुनामगात् १६  
तत्रोपस्पृश्य विशदं पीत्वा वा रिमदार्यौ ॥ कुण्ठो दीदर्श तुः क्रन्धां चरन्तीचारु दर्शनाम् १७ तामासाद्य वरोहां मुद्रिजां रुचिराननाम् ॥ पप्रच्छ ये पितः सख्या  
फाल्गुनः प्रमदोत्तमाम् १८ कात्वंकस्यासि शुश्रोणि कुतोऽसि किञ्चि भीषसि ॥ मन्येत पापतिमिच्छन्ती सर्वं कथयशो भने १९ ॥ कालिन्धुवाच ॥ अहं देवस्य  
सवितुर्द्विहितापतिमिच्छमी ॥ विष्णुं च रेणवं धरंदंतपः परममास्थिता २० नान्यं पतिवृणुषीरतमृतं श्रीनिकेतनम् ॥ तुष्यतां मे स भगवान्मुकुन्दोऽनाथ संश्रयः २१

मृग सरहा सेही इनकं वाणन तें वेत भये १५ अभावाच्या पूर्णमासी ये पर्व जव आय के मास भये तप टाळु मा हें ते पवित्र अ पशु हें तिनें राजा गुणिष्ठर के पास लात भये शिकार लेलिन ते में अन जाकं भयो प्यास लागी तव अर्जुन यमुना नै जात भयो १६ पहार श्री अ श्री कृष्ण और अर्जुन हें ते यमुना के तट पर आय के निर्मल जल हो आचण करि हे पी के जप डा के भये तप सुन्दर एक रुप्या पैठी दे- खत भये १७ सुन्दर हें अना जा भी अष्ट हें दात जा के पनी हर हें गुण जा को पे सी जो ममदा रुप्या हें ता के पास भेलो जो श्री कृष्ण ने अर्जुन हो पुराण भो २ हे सुयोगि अर्थात् सुन्दर है कठिना ही तुम कौन हो और कौन की पुत्री हो नहाते आई हो तुम्हारे मन में कहा करिगे की हें तुम्हारे पति करिगे की इच्छा है मैं जानों हें हे सुन्दरी ! तप गात रहो १८ कालिन्दी कहें हूं मसूर्य देव भी पुनी हूं वर के देन गारे जो पिणु हें तिन पति करिगे भी इच्छा करि है मने तप कलहं २० हे वीर ! सुन्दर जे श्री कृष्ण हें तिन के विना और हूं पतिंग हं रंगी अनाय के आश्रय जो मुकुन्द भगवान हूं मो भरे ऊपर न गवा हो २१ ?

कालिन्दी नाम करिके विख्यातहूँ और मेरे पिता सूर्य ने बनायो जो यमुनाको जल है तामें यावत्पर्यन्त श्रीकृष्णचन्द्रको दर्शन न होइगो तबलौं वासकछ्छी २२ औंतीहै निद्रा जाने ऐसो जो अर्जुन है सो वासुदेव श्रीकृष्णचन्द्रके पास आयकै जैसे कालिन्दीने कही तैसेही कहत भयो कालिन्दी भरेनिमिच तप करे है या वातकूं जानिकै श्रीकृष्णचन्द्र रथमें वैठायकै धर्मराज राजा युधिष्ठिर के पास आयत भये २३ ता समय पाण्डवन ने जिनकूं आज्ञादीनी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र देवतानको कारीगर जो विषकर्मों है तामूं कहिके पाण्डवन के लिये चित्र विचित्र अद्भुत नगर निर्माण करावत भये २४ अपने पाण्डवन के पिय करिके लिये इन्द्रप्रस्थ में वास करै ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् सो इन्द्रको जो खाण्डव वनहैं ताथ अग्नि कूं देवके लिये अर्जुन के स्थवान् होत भये २५ हे राजन् परीक्षित ! जब अग्नि कूं खाण्डव वनदियो तब अग्नि प्रसन्न होगै अर्जुनकू धनुष और श्वेत रत्न के घोड़ा तीरनेके भरे तरकस और हथियारन सूं भेदन न होय ऐसो कवच देतभयो २६

कालिन्दीतिसमारूपाता वसामियमुनाजले ॥ निर्भिषतेभवनेपित्रा यावद्व्युतदर्शनम् २२ तथाऽवदद्गडाकेशो वासुदेवायसोऽपिताम् ॥ रथमारोग्यत  
द्विद्वान् धर्मराजमुपागमत् २३ यदैवकृष्णःसन्दिष्टः पार्थानापरमाद्भुतम् ॥ कारयामासनगरं विचित्रंविश्वकर्मणा २४ भगवांस्तत्रनिवसन् स्वनाभि  
यचित्रीर्पया ॥ अग्नयेखाण्डवन्दानुमर्जुनस्याऽऽससारथिः २५ सोऽग्निस्तप्तोऽधनुर्दाह्यच्छ्वेतानश्चनृप ॥ अर्जुनायाक्षयौतूणौ वर्मचाभेद्यमस्त्रि  
भिः २६ मयश्चमोचितीरहःसभांसख्यउपाहरत् ॥ यस्मिन्नुद्योधनस्याऽऽसीजलस्थलहृशिभ्रमः २७ सतेनसगनुज्ञातः सुहृद्भिश्चानुमोदितः ॥ आययौ  
द्वारकांसूयः सात्यकिप्रमुखैर्वृतः २८ अथोपयेमेकालिन्दीं सुपुण्यतृक्षज्जिते ॥ वितन्वन्परमानन्दंस्वानांपरममङ्गलम् २९ विन्दानुविन्दावावन्त्यौदुष्यौ  
धनवशानुगौ ॥ स्वयंवरेस्वभगिनीं कृष्णेसक्लान्यपेधताम् ३० राजाधिदेव्यास्तनयां भिन्नविन्दापितृवसुः ॥ प्रसह्यहन्तवान्कृष्णो राजन्गङ्गां प्रपश्यता  
म् ३१ नग्नजिन्नामकौशल्यआसीद्राजाऽतिधाभिर्भूः ॥ तस्यसत्याऽभवत्कन्या देवीनाग्नजितीनुग ३२ नतांशेक्षुर्नृपावोढमजित्नासप्तगोदृपान् ॥

अग्नि ने बचायो ऐसो जो मयनामा दैत्यहैं सो सभा बनायकै अर्जुनकूं देतभयो जा सभा में जलमें स्थल और स्थल में जल या प्रकार दुयों गकी दृष्टिमें भ्रम होतभयो २७ राजा युधिष्ठिरने आज्ञा जिनकूं दीनी सुहृदन ने प्रशंसा जितकी करी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सात्यकी भिनमें मुख्य ऐसे यादवनकूं संगलकै फेरि द्वाकापुरी में आवतभये २८ जो के पीके सुन्दर पवित्र धृतु नक्षत्रमें कालिन्दी कूं व्याहतभये परममङ्गलरूप जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अपने यादवनकूं परमानन्द देतभये २९ दुर्योधनकी आज्ञामें वतैं ऐसे जे उजैनपुरी के राजा विन्द और अनुविन्द दोनों भयगहैं ते श्रीकृष्ण चन्द्रमें मन जाको लाग्यो ऐसी जो अगनी चाहनि है ताथ स्वयंवर में मने करतभये ३० पिता वसुदेवकी चाहनि जो राजाधिदेवी ताम्री पत्नी जो मित्रविन्दा है ताथ श्रीकृष्णचन्द्र सव राजान के देखत हे राजन् परीक्षित ! बल करिकै लावत भये ३१ हे राजन् परीक्षित ! अयोध्यापुरी को पालन करनवारो बड़ो धर्ममतिना राजा नग्नमित नाम करिकै होतभयो ता राजा के प्रकाशमान सत्यानाम करिकै मन्था होतिर्भई पिताको नाम नग्नजित् है यातें गकूं नाग्नजित् भी कहै हैं ३२ पैंने हैं सींग भिनके वीर डाटि में न आवैं राजान की गन्धन सुराप ऐंय परस्वने जो सात बेल हैं



तिनके नाथे बिना राजा है ते जानजिती कूं नहीं व्याहत भये ३३ यादवन के पति भगवान् हैं सो सात बैलन कूं एक रांग नाथे वह या कन्या कूठ्याहै यह बात कूं श्रवण करिके वही सेना कूं संग छैके अयोध्यापुरी में जात भये ३४ अयोध्यापुरी को राजा नगजित् प्रसन्न होयकें उडिकें भले आये या प्रसार प्रशंसा करिकें सुन्दर आसन पिछाय के चरण बोह के वही पूजाकी सामग्रीन सूं पूजन करत भयो ३५ राजा नगजित् की कन्या है सो आये जो लक्ष्मी के पति श्रीकृष्ण हैं तिनैं अपने योग्य पर देमि के इच्छा करति गई और कहति भई कि जो धैने ब्रतन करिकें मनमें धाख्यो है तो यह श्रीकृष्णचन्द्र भरो पति होउ और धरे मनोरथन कूं सत्य करो ३६ जिन भगवान् के चरणकमल की रज हूं लक्ष्मी और कमल तें है जन्म जाको ऐसो ब्रह्मा तथा महादेव और लोकपाल थे समस्त शिर पै धारण करे है ऐसे तुम ईश्वर अपनी करीये धर्म मर्यादा हैं तिनके पालन करिबे की इन्हा करिकें लीला करिकें वृंदिशदि मूर्तिन कूं

तीक्ष्णशृङ्गांसुदुर्द्धर्षान् वीरगन्यासहान्बलान् ३३ तांश्रुत्वावृपजिल्लभ्यांभगवान्मात्वंनांपतिः ॥ जगामकौशल्यपुरं सैन्येनमहतावृतः ३४ राकोश लपतिःप्रीतः प्रत्युत्थानासनादिभिः ॥ अर्हणेनापिगुरुणाऽपूजयत्प्रतिनिन्दितः ३५ वरंवलोक्याभिमनंसमागतं नरेन्द्रकन्याचक्रमरमापतिम् ॥ भूयादयं मेपतिराशिपोऽमलाः करोतुसत्यायदिमधृनोब्रतैः ३६ यत्पादपङ्कजजःशिरसाविभक्तिं श्रीरजजःसगिरिशःसहलोकपालैः ॥ लीलाननुःस्वकृनसेतुपरी पस्येशः कालेदधत्सभगवान्मम केनतुष्येत् ३७ अर्चितंपुनरित्याह नारायणजगत्पते ॥ आत्मानन्देनपूर्णस्य कस्वाणि हिमल्पकः ३८ ॥ श्रीशुक्र उवाच ॥ तमाहभगवान्बृहद्वः कृतासनपरिश्रहः ॥ मेवगम्भीरयात्राचासस्मितंछुरुनन्दन ३९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ नरेन्द्रयाञ्चाकृत्रिभिर्विगर्हिता राजन्यवन्धोर्निजधर्मवर्त्तिनः ॥ तथाऽपियाचेतवसौहृदेच्छया कन्यांत्वदीयानिष्टुलकदावयम् ४० ॥ राजोवाच ॥ कोऽन्यस्तेऽभ्यविकीर्णतथ कन्यावरडहेप्सितः ॥ गुणैकधाम्नोयस्याह्ने श्रीर्वसत्यनपायिनी ४१ किन्त्वस्माभिःकृतःपूर्णं सजयःसात्वतर्षभा ॥ पुंसंवीर्यपरीक्षार्थं कन्यावरपरीप्सया ४२ ससैतेगोघृपावीरहृदा

धारण करो हो सो तुम भगवान् मेरे ऊपर कैसे प्रसन्न होउगे ३७ पूजन करिकें फेरि नगजित् राजा कहत भये है नारायण ! हे जगत् के पति ! आत्मा के आनन्द करिकें पूर्ण जो तुम हो तिन को मैं तुन्ख कदा पूजन करूं ३८ अब श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे कौरवन के कुल कूं आनन्द देनवारे राजा परीक्षित ! आसन पै बैठि करि श्रीकृष्णचन्द्र मेव की तुल्य गर्ज करिकें मुसिकात राजा नगजित् तें बोलत भये ३९ हे राजन् नगजित् ! निजधर्मवर्त्ती जे क्षत्रिय हैं तिनहूं याचना करिबो कविन ने मने कखो है तथापि स्नेह करिकें हम तुम्हारी कन्या कूं मोगे हैं कहु मोल के देनवारे हम नहीं हैं ४० अब राजा नगजित् कहे हैं हे नाथ ! सधस्त गुण जिन में रहैं और लक्ष्मी सर्वदा जिनके अंग में वास करैं ऐसे तुग तें अधिक यात्सार में कान बरहैं ताक कन्या देउंगो ४१ हे यादवन में अष्ट ! पुरुषन के पराक्रम की परीक्षा लेवे के निमित्त और कन्याके वरकी परीक्षा के लिये हमने प्रथम एक प्रतिज्ञा करी है ४२ हे वीर छत्रप ! शिक्षा जिनकू न

भई और वशमें न आवें ऐसे सात बैल है तिनके मारे दूने हैं अंग जिनके ऐसे बहुत राजानेके पुत्र परे हैं ४३ हे यदुनन्दन ! हे लक्ष्मी के पति ! जो तुम इन बैलन कूं अपने वश करि लोउ तो मेरी कन्या कूं सम्मत करदौ ४४ समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र या प्रकार राजा नग्नजित् की प्रतिष्ठा श्रवण करिके फेंड चौमि के अपने सात रूप धरि के लीलाही करिके बैलन कूं पकरत भये ४५ दूरि भयो है गर्व जिनको गयो है उल जिनको ऐसे बैलन कूं शूरवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र रस्सान्तें चौमि के जैसे तालक काष्ठ के बैल कूं लेंधे है ऐसे रौचन भये ४६ ताके पीछे आश्चर्यमान राजा नग्नजित् प्रसन्न होयके श्रीकृष्णचन्द्र कूं अपनी कन्या देत भयो समर्थ जो भगवान् श्रीकृष्ण हैं सो अपनी वरागारि की कन्या है ताय विधिपूर्वक व्याहृत भये ४७ राजा नग्नजित् ही रानी हैं ते अपनी कन्या कूं प्यारी पति पाय के परमानन्द पावत भई और बड़ो उत्सव भयो ४८ शत्रु भेरी नगाड़े वजत भये और गीत गाजे वजावत भये ब्राह्मणन के आशीर्वाद होत भये सु-

न्ताडुखग्रहाः ॥ एतैर्भगनाः सुबह्नो भिन्नगान्त्रानृपात्मजाः ४३ यदिगे निगृहीताः स्युस्त्वगैव यदुनन्दन ॥ वरो भवान् भिमनोडुहितुर्भैश्रियः पते ४४ एवं समग्रमा कर्यं वद्धा परिकरं प्रभुः ॥ आत्मानं रासधाकृत्वा न्यगृह्णास्त्रीलयैव तान् ४५ वद्धा तान् दामभिशरैरिर्भगनदर्पान् विहृतौ जराः ॥ व्यरुर्पल्लीलया वद्धान् चालोदा रुमयान् यथा ४६ ततः प्रीतः सुतारं राजा ददौ कृष्णाय विस्मितः ॥ तां प्रत्यगृह्णाद्भगवान् विधिवत्सदृशं प्रभुः ४७ राजपत्न्यश्च दुहितुः कृष्णं लब्ध्वा प्रियं पतिम् ॥ ले भिरे परमानन्दं जातश्रपस्मोत्सवः ४८ शङ्खभेयान् कानेदुर्गीतवाद्यादिजशिपः ॥ नराचार्यः प्रमुदिताः सुवासः स्रगलङ्कृताः ४९ दशधेनुसहस्राणि पारिवर्धमदाद्विभुः ॥ युवतीनां त्रिसाहस्रं निष्कृष्यीव सुत्राससाम् ५० नवनागसहस्राणि नागाच्छत्रगुणान्स्थान् ॥ रथाच्छत्रगुणान्स्थानश्चानश्वाच्चतस्रगुणान् ५१ दम्पतीरथमारोग्य महत्यासेनयावृतौ ॥ स्नेहपक्लिन्नहृदयो यापयामास कोशलः ५२ शुत्वैव दुरुधूर्भूयानयनं पथिकन्यकाश्च ॥ भगनवीर्याः सुदुर्मर्पा यदुभिर्गोद्वैपैः पुरा ५३ तानस्य तः शस्त्रातान् वन्धुप्रियकृदर्जुनः ॥ गार्हदीवीकालयामास सिंहः क्षुद्रमृगानिव ५४ पारिवर्धमुपागृह्य द्वारकामेत्यम

न्दर वज्र गालान मू शोभायमान नर नारी है ते प्रसन्न होत भये ४६ सामर्थ्यवान् राजा नग्नजित् दाइजे में दश हजार गौ देत भयो धुकधुकी है कण्ठ में जिनके सुन्दर वलन कूं पहिरे ऐसी तीन हजार दासी देत भयो ५० नव हजार हाथी देत भयो और द्वा-बीन मूं सौगुणे अर्थात् नवलाख रथ और रथन मूं सौगुणे अर्थात् नवतिरोड घोडा देत भयो और घोडानमूं सौगुणे अर्थात् नवअर्ध मनुष्य देत भयो ५१ स्नेह करिके व्यापण है हृदय जाको ऐसो कोशलदेश को राजा नग्नजित् अपनी अन्यासहित श्रीकृष्णचन्द्र कूं रथ में वैशारि के वही सेनाकूं संग लीके पहुँचावत भयो ५२ यादवन और बैलन ने पहिले राजान को मद दूरि करि दियो है तथापि असहनता जिनके प्रियवान ऐसे राजा कृष्ण या कन्या कूं लिये जाय है यत्र नात श्रवण करिके मार्ग में आय के रोरुत भये ५३ वन्धु जे कृष्णचन्द्र है तिनके प्यारको करन वारो गार्हदीव है वन्धु जाको ऐसो अर्जुन सो चाणन कृचला में ऐसे जे राजा है तिनें सिंह जैसे छोटे छोटे जानवर मृगन कूं भजवै ऐसे भजावत भयो ५४



शब्द करिके अनेक युद्धके यन्त्र है ते उलटे चलन लाने और धूरन के मन हृदय थर थर कांपत भये गदाके धारण करन वारे श्रीकृष्णचन्द्र बड़ो जो गदा है तासूं भौमासुर के नगरको कोट है ताथ तोरत भये ५ मलयकाल के वज्र के शब्दकी तुल्य है ययद्वार शब्द जाको ऐसी जो पाञ्चवट्य शस्त्र है ताकी शब्द सुनिके पाच है शिर जाके ऐसी के जलके भीतर सोवै जो मुरदैत्य है सो उठत भयो ६ अतिलोदी है चितवर्नि जाभी मलयकाल के सूर्य और अग्नि के तुल्य है तेज जाको भयंकर है रूप जाको ऐसी जो मुरदैत्य है सो त्रिशूल हाथमें लैके पाचों मुख फारिके निलोकी कू मानों निगलि जायगो ऐसी दौरिके श्रीकृष्णचन्द्रके मरमुच आवत भयो जैसे गरुड़ सर्प के सम्मुख जाय ऐसे ७ मुरदैत्य त्रिशूलकूं फिरायकै वड़े जोरतें गरुड़ के ऊपर चलायके पाचों मुख फारिके शब्द करत भयो बड़ो जो शब्द है सो द्वाबाहुनी समस्त दिशान और अन्तरिक्षमें फैलिके ब्रह्माण्ड कूं व्याप्त करत भयो ८ ता समय श्रीकृष्णचन्द्र गरुड़ के ऊपर चढयो आवै जो त्रिशू-

स्विनाम् ॥ प्राकारंगदयाशुर्व्या निर्विभेदगदाधरः ५ पाञ्चजन्यधनिं श्रुत्वा युगान्ताशानि भीषणम् ॥ मुरः गयान उच्चस्थौ दैत्यः पञ्चशिराजलात् ६ त्रिशू लमुद्यम्य मुदुर्नीक्षणो युगान्तमूर्ग्या न लरोचिरुत्पणः ॥ अंसि सिलोकीमिव पञ्चभिर्मुखैरभ्यद्रवत्ताक्ष्यमुतं यथोरगः ७ आविध्य शूलंतं रसागरुमतै निरस्य व क्रैर्वर्धनदत्तपञ्चभिः ॥ सरोदसी सर्वोदिशोऽम्बरं महाना पूरयन्नरुडकटाहमावृणोत् ८ तदाऽपतदैत्रिशिखं गरुमते हरिः शराभ्यामभिनात्रिधौ जसा ॥ मुखे पुनंचापि शैरै रनाडयत्तस्मै गदांसोऽपिरुधव्यमुञ्चत ९ तामापतन्ती गदया गदां मुधे गदाग्रजो निर्भिभेदसहस्रधा ॥ उद्यम्य द्वाहू न भिधावतोऽजितः शिरांसि चक्रेण जहार लीलाया १० व्यसुः पपाताऽम्भसि कृत्तशीर्षो निरुत्तट्टोऽद्विरिवेन्द्रतेजसा ॥ तस्यात्मजाः सप्तपितुर्वधातुराः प्रतिक्रियाऽमर्षं जुपः समुद्यताः ११ ताम्रोऽन्तरिक्षः श्रवणो विभावसुर्वसुर्नभस्वानरुणश्च सप्तमः ॥ पीठपुररुह्य च मूपतिमृधे भौमयुक्ता निरगन्धूना युधाः १२ प्रायुज्जता साद्यशरानसीच गदाः शङ्खवृष्टिशूलान्यजितैरुपोत्पणः ॥ तच्छस्त्रद्वंद्वं भगवान्स्वसार्गणै रगोघीर्यं स्तिलशश्चकर्त्त ह १३ तावृपीठमुख्याननयद्यमालयं निरुत्तशी

ल है ताके वायुन तें तीन टुक करत भये और मुरदैत्य के पाचों गुवन में पाच वाग मारत भये मुरदैत्य भी क्रोध करिके श्रीकृष्ण के ऊपर गदा चलावत भयो ९ गद के वड़े भया जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो युद्ध में चली आवै जो मुरदैत्य की गदा है ताकी अपनी गदासूं रजारन दुरुजरत भये तासमय उजान कूं उठाय कै दौगिके सम्मुख आयो जो मुरदैत्य है ताके शिरन कूं श्रीकृष्णचन्द्र लीलाही करिके चक्रभू फाटत भये १० कटे है शिर जाके गये है प्राण जाके ऐसी मुरदैत्य है सो इन्द्रके वज्रभू फट्यो है शिर जाको ऐसी पर्वत जैसे गिरत भयो ऐसे जलमें गिरत भयो पिता जो मरयो है तासूं आतुर बदलो लोने के लिये असहनता भिनके आइ गई ऐसी मुरदैत्य के सातबुन तास्र अन्तरिक्ष अरण विभावगु वसु नभस्वान् अरुण ये सशरिके भौमासुर के कहे तें शङ्खन कूं लैके लडिके रौनाको पालन करन वारो जो पीठ नामक मुख्य है ताथ आगे करिके निकसत भये १ १ १२ रोप करिके भयानक जे मुरदैत्य के पुन हैं ते आयके श्रीकृष्ण के ऊपर क्रोध करिके वाण तरवार गदा वर्यो गुर्न त्रिशूल इत्यादिक शस्त्र चलावत भये तब बड़ो है पशक्रम भिनको ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपने वाणन तें तिनके चलायेये जे शस्त्र है तिन तिल तिनकी वरावर

दूक करिके काटत भये ? ३ पीठ है मुख्य जिनमें ऐसे जे मुट्ठीत्येके पुत्र हैं तिनके शिर ऊरु भुजा पाँव कवच इनकू काटिके मारिके यमलोक कू गँधु चावत भये पृथ्वी को पुत्र जो नरकासुर है सो श्री कृष्ण के चक्र बाणनभू कटे देखि के असहनता जाके आइगई सो मद जिनके चुपे समुद्र में ते निकसे ऐसे जे हाथी हैं तिनकू संगलीके निकसनभयो १४ सूर्य के ऊपर जैसे विजुली महित मय होइ ऐसे गरुड़ के ऊपर सत्यभामा सहित बैठे जे श्रीकृष्णचन्द्र है तिनदेखिके भौमासुर वरखी चलावतभयो औरसम्पूर्ण जे योद्धा है ते एक संग वेधत भये १५ गदके नड़े भय्या जो श्रीकृष्ण है सो चित्र मिचित्र है पक्ष जिनके ऐसे बाणनभू भौमासुर की सेनाको काटत भये कटे हैं भुजा अंघ्रा ग्रीवा देहजामें मरे हैं घोडा हाथी जामें ऐसी करत भये १६ हे कुरुंग क आनन्द देनवारे राचा परीक्षित् जो जो शत्रु योद्धा ने चलाये तिन सबहूँ श्रीकृष्णचन्द्र तीक्ष्ण तीन तीन बाणनभू एक एक दूर काटतभये १७ श्रीकृष्ण ऊपर जाके चढ़े ऐसे गरुड़ने अपनी चौच और पङ्कन तें मारे जे हाथी हैं ते

पौरुषु जौ द्विगर्मणः ॥ स्वानीकपानच्युतचक्रमायैस्तथानिरस्ताजराकोधरासुनः १४ निरीक्ष्यदुर्मर्षण आसन्नदैर्गजैः पयोधिप्रभवैर्निराक्रमत् ॥ द्वासार्धगुरुडोपरिस्थितं सूर्योपरिष्टास्ततडिद्धनयथा ॥ कृष्णंसनस्मैव्यसृजञ्चतर्धो योधाश्चस्मैव्युगपरस्मविदग्धुः १५ तद्धोमसैन्यं भगवान्गदाग्रजो विचित्रवाजैर्निशितैः शिलीमुखैः ॥ निरुत्तवाहूरुशिरोभ्रविग्रहं चकारतर्ह्येवहताश्चकुञ्जस्य १६ यानियोधैः पयुक्कानि शस्त्रास्त्राणि कुरुद्वह ॥ हरिश्चान्यञ्चि नत्तीक्ष्णैः शौरैकैकशस्त्रिभिः १७ उद्यमानः सुपर्णेन पक्षाभ्यां निघ्नतागजान् ॥ गरुमतहान्यमानास्तुण्डपक्षनखैर्गजाः १८ पुरमेवाऽऽविशन्नार्चानरकोयुध्य युध्यत ॥ दृष्ट्वा विद्रावितं सैन्यं गरुडेनार्दितं स्वकम् १९ तम्भौमः प्राहरञ्च हन्यावज्रः प्रतिहतो यतः ॥ नाक्रमततया विद्धो मालाहनद्वद्विपः २० शूलं भौमोऽच्युतंहनुमाददेवितथोद्यमः ॥ तद्धिमर्गात्पून्वमेव नरकस्य शिरोहरिः ॥ अपाहृद्रजस्थस्य चक्रेण क्षुरनेपिना २१ सकुरण्डलं चारुकिरीटभूषणं वभौ प्रविभ्यां पतितं समुज्ज्वलत् ॥ हाहे तिसाधितृपय मुनेश्चरामाल्यैर्मुकुन्दं विक्रान्तदंष्ट्रि २२ ततश्च भूः कृष्णमुनेत्यकुरण्डले म्रतमजान्म्वनदरत्नभास्वरे ॥ सवैजयन्त्याव

पीडितहोयकै पुरमें जातभये और नरकासुर रणमें युद्ध करतभयो गरुड़ने पीडा जाकू दीनी ऐसी जो अपनी सेना है ताकू भाजी देखिके १८ । १९ भौमासुर गरुड़ के वरखी मारतभयो ता वरखी सू वज्रहू ताडितहोतभयो वरखी जाके लगी तथापि गरुड़ फूलकी माला लगेत हाथी जैसे चलायमान न होय ऐसे चलायमान नहीं होतभयो दृष्टा है उद्यम जाको ऐसो भौमासुर श्रीकृष्णके मारिके कू त्रिशूल छेतभयो भौमासुर त्रिशूल चलाय न सस्यो नाते पहिलेही हाथी पै वैठ्यो जो भौमासुर है ताकू शिर पैनी पार के चक्रमें श्रीकृष्णचन्द्र काटतभये २० । २१ कुरण्डलन सहित जो मनोहर किरीट है तामू शोभायमान पृथ्वी में परयो प्रकाशमान जो भौमासुर को शिरहै सो सुन्दर लगतभयो अष्टपि देवता हैं ते हाय हाय भले भले कडन फूजनकी वर्षा श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर करत मृत्ति करत भये २२ भौमासुर मरयो ताके पीछे पृथ्वी श्रीकृष्ण के पास आयकै तपायमान जो सुबर्ण है तामें रत्नजड़े तिनमें प्रकाशमान जे कुरण्डल है तिनें और वैजयन्ती वनमाला और प्रथेता को

छत्र तथा महामणि देतर्भई २३ हे राजन परीक्षित् ! विश्व के ईश्वर देवतान में श्रेष्ठ असादिक जिनकी पूजा करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कू हाथ जाने जोरि लिये ऐसी नम्र जो पृथ्वी है सो भक्तिपूर्वक श्रीकृष्णचन्द्रकी ओर बुद्धि लगाय के स्तुति करतर्भई २४ अब पृथ्वी कहै है हे मेहन के देव ईश्वर ! हे शङ्ख चक्र गदा के धारण करनवारे ! तुमहूँ नमस्कार है हे परमात्मन् ! भक्तनकी इच्छा के लिये धारण क्रियो है साधारण जिनने ऐसे जो तुमहौ तिन नमस्कार है २५ कमल है नागिमें जिनकी ऐसे जे तुमहो तिनकू नमस्कार है कमलकी माला धारण करे जे तुमहौ तिनकू नमस्कार है कमलकी इच्छा के लिये धारण नेत्र जिनके ऐसे जे तुमहौ तिनकू नमस्कार है कमलकी तुल्य हैं चरण जिनके ऐसे जे तुमहो तिनकू नमस्कार है २६ तुम जो भगवान् नमुदेव अर्थात् समस्त प्राणी जिनमें नासकर ऐसे जे तुमहो तिनकू नमस्कार है विष्णु अर्थात् सबके हृदयमें व्यापक जे तुमहौ तिनकू नमस्कार है पुरुष सम्पूर्ण कार्यन के आदि सारण जे तुमहौ तिनकू नमस्कार है पूर्णज्ञानस्वरूप जे तुमहौ तिनहूँ नमस्कार है २७ और आप अजन्माहौ या विश्व के उत्पत्तिकर्त्ताहौ ब्रह्माहौ याही त् अजन्माहौ अनन्तशक्तिहौ याही तें विश्व के उत्पत्तिकर्त्ताहौ तथा शङ्का है यथोपी पित्रादिक हैं ते पुत्रादिकन के उत्पत्तिकर्त्ता

नमालयाऽर्पयत्प्राचेतसंछत्रमथोमहामणिम् २३ अस्तौषीदथविश्वेशं देविदेववार्चितम् ॥ पूजलिः पूणताराजन् भक्तिपूर्वणयाधिगा २४ ॥ भूमिरुवाच ॥ नमस्ते देवे देवेश शङ्खचक्रगदाधर ॥ भक्तेच्छोपात्तरूपाय परमात्मनाभाय नमः पङ्कजमालिने ॥ नमः पङ्कजनेत्राय नमस्ते पङ्कजाङ्गये २५ नमो भगवते तुभ्यं वासुदेवाय विष्णवे ॥ पुरुषायाऽऽदिगीजाय पूर्णबोधाय ते नमः २७ अजाय जनयित्रे अस्य ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥ परावरात्मन् भूतात्मन् परमात्मनोऽस्तुते २८ त्वं त्रैलोक्येश्वर जगत्कण्ठप्रभो तमो निर्गोधाय विमर्षसंवृतः ॥ स्थानाय सत्त्वं जगतो जगत्पते कालः प्रधानं पुरुषो भवान् परः २९ अहंप्रयोज्योतिरथानिलो नभोमात्राणि देवान् इन्द्रियाणि ॥ कर्त्ता गहनित्यखिलं चारं त्वस्थद्वितीये भगवन् नमः ३० तस्याऽऽत्मजोऽयं तव पादपङ्कजं भीतपूजनात् सिंहरोपसादिनः ॥ तत्पालयैनं कुरु हस्तपङ्कजं शिरस्य मुष्याऽखिलकल्मपापहम् ३१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इति भूम्याऽर्थितो वाग्भिर्भगवान्

है और पित्रादिकन के उत्पत्तिकर्त्ता उनके पूर्वपुरुष हैं और पूर्वपुरुष के उत्पत्तिकर्त्ता पञ्चभूत हैं और पञ्चभूतन के अपने कर्माद्वारा जीव हैं ये कदा कलं हैं तथा पृथ्वी कहै है कार्यकारणरूप ! हे समस्त प्राणीन के आत्मा ! हे परमात्मा ! तुम सर्वरूपहौ तुमकू नमस्कार है २८ यहा एक शङ्का है कि तीनों गुणन करिकै विश्वकू उत्पन्न पालन संहार करें हैं और तीनों गुण मायाकै हैं और माया को दोषजनवारी पुरुष हैं और कालनिमित्त है यह बात प्रसिद्ध है मैं कदाकलं हूँ तथा पृथ्वी कहै है—आवरण रहित जो तुमहौ सो हे समर्थ ! जा समय विश्वकू रन्ध्र चोहोहौ तब तुम रजोगुणकू धारणनरो हो और जगत् के पालन करिकै सच्चिदानन्द धारण करोहौ और कालरूप तुमहौ मायारूप तुमहौ पुरुषरूप तुमहौ और सवतें न्यारेहौ याते सभके उत्पत्तिकर्त्ता तुमहौ हो २९ मैं पृथ्वी जल ज्योति पवन आकाश शब्द स्पर्शरूपरसगन्ध देवता मन इन्द्रिय आदिकार तत्त्व या प्रकार समस्त स्थावर जंगम है भगवन् ! तुम जे अद्वितीय हो तिनमें यह अप है ३० हे शरणागतन के दुःख के हरनारे ! भौमासुरकी पुत्र भगदत्त भगभीत द्योयकै तुमहारी जो चरण कमल है तामें आयकै पद्यों है ताते याको पालन



करो और समस्त देशनगो हरनगो जो तुम्हारी हस्तमल है ताथ या के शिरगै राखी ३१ अस्तिपूर्वक नञ्द्रोयको पृथ्वी ने गायी करि याप्रकार स्तुति जिनकी करी ऐसे भगवान् ई सो अथयद्वै  
सर्वसम्पत्तिमुक्त जो भौमासुरको घर है तामे जातभये ३२ भौमासुरने पराक्रमकरि है हरी ऐसी जे अनेक राजाचकी सोलहजार दन्या है तिन भौमासुरके महलनमें देखतभये ३३ नरन में वीर  
जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन आये देविके सम्पूर्ण स्त्री मोहितहोयके देखने प्राप्तकरे देने मनोवाञ्छित पति श्रीकृष्णचन्द्र है तिन मनकुं वर करतिथई ३४ यह मेरो पतिहोइ यह विमाता अनुमोदनकरौ  
या प्रकार समस्त कन्याभावनरिके श्रीकृष्णचन्द्र में अपनो अपना मन लगावति भई ३५ सचचै वस जिन के ऐसी जे दन्या है तिन पालकीन में वैठारिके द्वारकापुरी में भिजवावन भये उद्वेगके  
खजाने और रय घोडा और जो बड़ी द्रव्य है ताथ भिजवावतभये ३६ चार चारै दात जिन के शीघ्रगामी रवेतरंग ऐसे चौसाठि पेरानत के कुलके हाथी है तिन श्रीकृष्णचन्द्र भिजवावतभये ३७

भक्तिनम्रया ॥ दरगामयं भौगृहं प्राविशत्सकलजिह्व ॥ ३२ तत्र राजन्यकन्यानां पट्गहस्थाधिकायुतय ॥ भौमाह्वानां विक्रम्य राजा नोददशेहरिः  
३३ तं प्रविष्टस्त्रियोर्वीक्ष्य नखीरविमोहिनाः ॥ मनमानात्रिंशोऽभीष्टं पतिदेवोपमादिनञ्च ३४ यूयात्यतिरयं गृहं प्रातातदनुमोदताम् ॥ इति सर्वा पृथक्कृष्णे  
भावेन हृदयं दधुः ३५ ताः प्राहिणोद्द्वारवतीं मुष्टविजोऽम्बराः ॥ नखानैर्महाकोशान् नखान् हविणमदत् ३६ पेरान्तकुले गांश्च चतुर्दन्तांस्तस्मिन्  
नः ॥ पारङ्गुंश्च चतुःपट्णिं प्रपयामास केशवः ३७ गत्वा मुनेन्द्रमवनन्दत्वाऽदिरौ चक्रुः ॥ पूजितस्त्रिदशेन्द्रेण सेहन्द्राण्यचसभियः ३८ चोदितो भा  
र्ययोत्पाट्य पारिजातं गुरुमति ॥ आरोग्यमेन्द्रान्विवृधाशिरित्योपानयत् पुरुष ३९ स्थापितस्त्य गामाया गृहोद्यानोपशोभनः ॥ अन्वगुर्भमराः स्वर्गा  
त्तद्वन्धारावत्पटाः ४० ययाच आनम्य किरीटकोटिभिः पादौ स्पृशन्नच्युतमर्थसाधनम् ॥ सिद्धार्थेन विगृह्य नमोऽनुगुणं च नमोऽधिगाल्यताम् ४१  
अयोमुहूर्तपक्षस्मिन्नागारे पुताः स्त्रियः ॥ यथोपयेम भगवांता वङ्गपुत्रोऽयम् ४२ गृहेषु तासां मनपाय्य तस्यैकृन्निरस्तसाग्यानि शयेऽन्यवस्थितः ॥

इन्द्रलोक में जायकै अदिति कू कुण्डन दिये तन इन्द्रायी लादिव इन्द्रने संतपभापासहित श्रीकृष्णचन्द्रकी पूजा करी ३८ सत्यभामा ने श्रीकृष्णचन्द्र कुं उखाति गरुड के ऊपर  
धरिके इन्द्रसहित देवतानकू जीति है द्वारकापुरी में आवत भये ३९ सत्यभामा के महल के वणीचाहूं सोभायमान करै ऐसे। कलमट्टन वर्गीचा में लागवतभयो ताकी गन्ध सूचिके के निमित्त स्वर्गमूं  
चालिके गौरा आगत भये ४० किरीटन के जे अग्रभाग है तिन चरणन में लगायके नमस्कार करि है सम्पूर्ण अर्थके सिद्ध करनवारे जे श्रीकृष्णचन्द्र है तिनसूं चिन्ती करतभयो तव मिद्धयथेह मनो-  
रथ जाके पेसो इन्द्र श्रीकृष्ण के सग मुख करनभयो देवतानकू वङ्गो ज्यो नई ये अपने कू उन्वगाने है तिन भिन्नार है ४१ वाके पीछे एकही मुहूर्तमें सोलहजार एकसौ आठ महल है तिनमें सर्वत्र  
परिपूर्ण ऐसे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र है सो जितनी स्त्री है उतनेही स्वरूप गरि है सनकूं यथायोग्य व्याहन भये ४२ पुरुषन के विचार में न आत ऐसे कर्म है तिनकूं करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र है सो  
और गृहस्थन के घर है उनकी वरावरि नहीं है तो अधिक कहौ तें होइय ऐसे जो रानीन के घर है तिनमें सर्वदा रहिक अपने स्वरूप के आनन्द लूं परिपूर्ण है तथापि गृहस्थ के घर्म कर्मकूं

करत जैसे साधारण ग्रहस्थ तबे लक्ष्मी के अंश जे स्त्री हैं तिनके सङ्ग रमण करत भये ४३ ब्रह्मादिक देवता जिनके मार्ग छुं नही जानें ऐसे जे लक्ष्मी के पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनहुं या प्रकार सेवन करति भई ४४ एक एक रानी के पास सौ सौ दासी हाथ जोरे ठाकी हैं तथापि सन्मुख जायकै लिवाइलाइयो आसन विद्याययो सुन्दर पूजा-करनी चरण भोवनो धीरी लगानो चरण दावनो पञ्चा करनो अतर अरगजा लगाइयो पुण्य चढावनो केशन को सुधारियो शय्या विद्यावनो स्नान करावनो भेट को धरियो इनकरिकै श्रीकृष्णचन्द्रकी सेवा आपही करती भई ४५ ॥

( अथ पण्डितपेकृष्ण. परिहासेनका निमणीम् ॥ कोपयित्वा तत. भेषकलहेतामसान्त्वयत् १ रामारामजनानन्दमहोदयविदम्बनैः ॥ रुकेमपया. भेषकलहच्छब्दानैश्चर्यामीर्यते २ साठवें अध्याय में रेमेरमाभिर्नि १ काशसंस्तुतो येयतोरगार्हकमेधिकं श्चरन् ४३ इत्थं मापति मवाप्यपतिस्त्रियस्तावद्वाद्योऽपि न विदुः पदवीं यदीयाम् ॥ भेजुमुदाऽविरतमे धितयाऽनुरागाहासावलोकनवसङ्गमजल्पलज्जाः ४४ प्रत्युद्गमासनवराहं पादशोचताम्बूलविश्रमणवीजनगन्धमालयैः ॥ केशप्रसारशयनस्नपनोप होर्वासीशताअपि विभोविदधुः स्मदास्यम् ४५ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे पारिजातहरणनरकवधो नामैकोनपष्ठितमोऽध्यायः ५६ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ कर्हि चित्सुखमासीनं सतलपन्थं जगद्गुरुम् ॥ पतिपदं चरद्भूमी व्यजनेन सखीजनैः १ यस्त्वेतल्लीलाया विश्वं सृजत्यच्यवनीश्वरः ॥ सहिजातस्वसेतूनां गोपीथाय यदुपजः २ तस्मिन् न गृहे भ्राजन्मुक्तादामत्रिलम्बिना ॥ विराजिते धितानेन दीर्घमणिमयैरपि ३ मल्लिकादामभिः पुष्पैर्द्विरेककुलनादिते ॥ जालान्ध्रप्रविष्टैश्च गोभिश्च चन्द्रमसोऽमलैः ४ पारिजातवनामोदवायुनोद्यानशालिना ॥ धूपैर्गुरुजैराजजालान्ध्रविनिर्गतैः ५ कृष्णजी परिहासं स्रुं रुक्मिणीजी को कोपकराकर फिर मेमकलह में तिनको शान्त करते भये १ रामाराममहानन्द विदम्बनो सौ रुक्मिणीजी के प्रेमकलह के छद्म स्रुं ऐश्वर्य वर्णित है २ ) अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! काहू समय एक शय्यायै सुखगर्वक बैठे ऐसे जगत् के गुरु अपने पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें भोज्यक राजा की पुत्री रुक्मिणी सलीनसहित चमर करिके सेवन करति भई १ जो अजन्मा भगवान् लीला करिके या विश्वकू उदग्न सहार पालन करे हैं वे भगवान् अपनी धर्ममर्यादानकी रक्षा करिके के निमित्त यादवन में आयके प्रकट होत भये २ ) अथ भगवन् और शय्या को वर्णन करे हैं प्रकाशमान मोतीनकी झालरि जामें लटकै ऐसे चंदोवा दान्यो है तासूं प्रकाशमान है और मणिन के दीपक धरे हैं तिन स्रुं प्रकाशमान है ३ चमेली की माला है तिनसूं शोभायमान और फूल हैं तिनमें भौरान के समूह गुञ्जत हैं जारी झरोकान में होयकै आई जे चन्द्रमाकी निर्मल किरण तिनसूं शोभायमान ४ वागीचा करिके शोभायमान ऐसे वल्लहकी सुगन्ध है तासूं शोभायमान जारी झरोकान में होयकै निकसी ऐसी अगर की धूप हैं तिनसूं शोभायमान ऐसे जो गहन है ता महल के भीतर शय्या बिछी है तावै दूध के

फेनकी तुल्य कोमल श्वेत जो विद्यौना बिखो है ताके ऊपर सुखपूर्वक बैठे ऐसे जगत् के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र तिनैं रक्षिणी सेवन कारतिभई ५ । ६ दीरानी डाँड़ी जाकी ऐसी जो चरहै तास सखी के हाथ में तैके श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर होरै ऐसी जो रक्षिणी है सो या मन्त्र ईश्वर को सेवन करतभई ७ रक्षिणी श्रीकृष्ण के पास प्रणिन के जगज नूपुर हैं तिनसुं मनस्कार शब्द करति सुन्दर लगतिभई कैसी रक्षिणी है ताको वर्णन करे हैं अंगुरीन में मुंदरीनकूं पहिरे और पहुँचे में ऋण है हाथ में जगज डाँड़ी को ईश्वर है सारी के ओर सँ ठके जे कुच हैं तिनमें ऐसरि लगी है तासु अरुण जो मोतीन को हार है ताकूँ कटिमें पहिरे जो वड़े मोलकी कौधनी ताम्र शोभायमान है ८ लीला करिकै घारण करयो है देह जिनमें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तिनके योग्य है रूप जाको और नहीं है आप बिना गति जाकी ऐसी रूपवती लक्ष्मी जो रक्षिणी है तासु देखिकै प्रसन्न होय मुसिप्रिय है श्रीकृष्णचन्द्र सौ प्रलोक कुण्डल धुकुकी इनसुं शोभायमान जो मुन

पयःफेननिभेशुभ्रे पर्यङ्केकाशिपूचमे ॥ उपतस्थेसुखासीनं जगतामीश्वरंपतिम् ६ बालव्यजनमादाय रत्नदण्डं सखीकरात् ॥ तेनवीजयतीदेवी उपासां चक्रईश्वरम् ७ सोपाच्युतं कणयतीमणिनूपुराभ्यां रेजेऽङ्गुलीयवलयव्यजनाग्रहस्ता ॥ वस्त्रान्तर्गुदकुचकुङ्कुमशोणहारभारान्तिस्त्वधृतयाचपरार्थका ज्ञया ८ तारूपिणी श्रियमनन्यगतिनिरीक्ष्य गालीलयाधृतनोन्मूलरूपा ॥ ग्रीतः स्मयन्नलङ्कुरदलनिर्गङ्गकण्डवकोलसस्त्रिमतस्तुधांहरिरात्रपौ ९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ राजपुत्रीप्सिताभूषैर्लोकपालनिभूतिभिः ॥ महाऽनुभावैः श्रीमङ्गी रूपौदार्यवलोजितैः १० तान्प्रामासार्थिनोहित्वा चैवादिन् स्मरदुर्मदान् ॥ दत्ताभ्रात्रास्त्रपिन्नात्र कस्मान्नोवद्वेषसमान् ११ राजभ्योनिभ्यतः सुभूः समुद्रं शरणं गतात् ॥ चलवद्विःकृतद्वेषात् प्रायस्त्यक्तनृपासना न् १२ अस्पृष्टवर्मनांपुंसामलोकपथमयुपात् ॥ आस्थिताः पदवीं सुभूः प्रायः रादिन्तियोपितः १३ निष्कञ्चनावयं शश्वन्निष्कञ्चनजनप्रियाः ॥ तस्मा त्प्रायेण न ह्याढ्या मां भजन्ति सुमध्यमे १४ ययोरात्मसमाविचं जन्मैश्चर्याकृतिर्भवः ॥ तयोर्विवाहोर्भोगी च नोत्तमाधमयोः कञ्चित् १५ वैदभ्यंतद

है तामें मन्द मन्द मुसिकाय जो रक्षिणी है तारूँ बोलतभये ९ अब श्रीवासुदेवजी कहे हैं हे भीष्मराजाकी पुत्री रक्षिणी ! इन्द्र कुनेर वरुणकी तुल्य है वैभव जिनके वड़े हैं प्रभाव रूप उदारता बल जिनमें ऐसे जे राजा है तिनमें तुम्हारी चाहनाकरी १० वड़ी चाहना जिनके कामदेव सँ पीड़ित ऐसे शिशुपाल सँ आदिलैके राजा तुम्हारे लेये के लिये आये तिनैं छोटिकै तुम्हारी वरावारि करि वे के नहीं ऐसे हममें तिनैं कौन कारणतें व्याहति भई और तुम्हारी भय्या पिला उनें दैभी चुस्योहो ११ हे सुभू ! अर्थात् सुन्दर हैं भुक्ती जाकी राजानतें हम डरतें है समुद्रको आयकै शरणो लियो है जोरावरन ते शत्रुताकी है बहुधा राजसिंहासन हँ छोटि दियो है १२ नहीं जानिये में आवै है मार्ग जिनको ऐसी स्त्रीनके कहे में न चलैं तैसे पुरुषनको जे स्त्री हाथ पकड़ै हैं अर्थात् व्याहरी जाय है हे सुभू ! अर्थात् सुन्दर हैं भुक्ती जाकी ऐसी रक्षिणी वे स्त्री बहुधा दुःखित होय हैं १३ और हम निष्कञ्चन है और निष्कञ्चनजनक में प्यारी हों ता कारण है सुमध्यमे रक्षिणी ! जो हों धनबारे हैं ते हम दरिद्री होय जायेंगे या भयतें बहुधा मेरो भजन नहीं करे हैं १४ जिनके नरावरि को धन है वरावरि को जन्म है वरावरि को पुत्र्य है और नरावरि को रूत जाति है और सदा

जिनको एकलौटि हीन होय है तिनकोही विवाह और मित्रता होय है १५ हे विदर्भ देशके राजा की पुत्री रुक्मिणी ! नहीं है वडो विचार जाके ऐसी तू है ताने घरावरि केनको व्याहृष्टोय है यद दात जाने विना गुणन करिकै हीन जो हय है तिनकूं वरोहै परन्तु तुम कहा करो भिक्षुक नारदादिकन ने हमारी भंडी बढाई करी तासूं तुम्हारे मन में आइगई ? व अवाहं तुम अपनी वराचरि को क्षत्रियहोय ताको हाथ पकरिलेउ जा क्षत्रिय तें या लोक परलोकके मनोरथन कूं पावोगी ? १७ रुक्मिणी कहे हैं—तुम क्यों ले आयेहो—तहां श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं—हे वामोक्त ! शिशुपाल शाल्य जरासन्ध दन्तवक्र कूं आदि लैके जे राजा हैं ते गोमूं सच शत्रुता करे हैं तेरो वडो भयया स्वमभी वर करे है १८ हे भंगलकपिणी ! पराक्रम के मद करिके आभरे गर्ववन्त जे राजा हैं तिनको गर्व दूरि करिवे के निमित्त तब तोकूं ली आयोहो और असाधुनको तेज है ताकूं में हरिलेउहूं १९ हम घरमें देहमें उदासीन है हमारे स्त्रीकी पुत्रकी द्रव्यकी चाहना नहीं है आत्मा

विज्ञाय त्वयादीर्घसमीक्षया ॥ वृतावयंगुणैर्हाना भिक्षुभिः श्लाघिनामुधा १६ अथाऽऽत्मनोऽनु रूपं वै भजस्व क्षत्रियपथम् ॥ येन त्वमाशिपः स तस्याद्वाहमुत्र च तप्त्यसे १७ वैद्यशाल्वजरासन्धदन्तवक्रादयो नृपाः ॥ मम द्विषन्ति वामोरुक्षणी चापितवाभजः १८ तेषां वीर्यमदानवानां दृष्टानां स्मयन्तु त्वये ॥ आनी ताऽसिमयाभद्रे तेजोऽपहरताऽसताम् १९ उदासीना वयंगूं नं नश्य पत्यार्थं का मुक्ताः ॥ आत्सलवध्याऽऽस्महे पूर्णा गेहयोज्योतिरक्रियाः २० ॥ श्रीशुक उवाच ॥ एतावदुक्त्वा भगवानात्मानं वल्लभा मित्र ॥ मन्यमाना मविश्लेषाच्छर्पाद्वज्रउपारमत् २१ इति त्रिलोकेश पतेस्तदाऽऽत्मनः प्रियस्य देव्यश्च तत्पूर्वमप्रियम् ॥ आश्चर्यभीताहृदि जाते वेपथुश्चिन्तान्दुरन्तारुदती जगाम ह २२ पदामुजातेन नखारुणश्रिया सुबलितन्यश्रुभिरञ्जनाशितैः ॥ आसिञ्चतीं कुङ्कुम रूपितौस्तनौ तस्थावधो मुख्यतिष्ठः खरुद्धवाक् २३ तस्याः सुदुःखगशोकविनष्टबुद्धेस्तान्द्वयद्वलपतोऽव्यजं नंपात ॥ देहश्च विक्रवधियः सहसैव मुह्यन्ममेव वायुर्विहतामविभीर्यकेशान् २४ तददृष्ट्वा भगवान्कृष्णः प्रियायाः भगवन्धनम् ॥ हास्यमौडिम जानन्त्याः कुरुणः सोऽन्वकम्पत २५ पर्यङ्कादवरु

के आनन्दसूं सदा पूर्ण रहे हैं ज्योति की तुल्य सार्त्तोमात्र क्रिया रहित वर्तें २० अत्र श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् प्रीक्षिन् ! रुक्मिणी के मनके हरनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो कभजं न्यारी न होय तातें अपनपेको बहुत वल्लभा मानें ऐसी रुक्मिणी तें इतनो काहिकै चुग होतभये २१ या प्रकार त्रिलोकी के ईश्वर पालन कस्नवारे अपने प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र तिनको कभजं न सुन्यो ऐसो कुप्यारो वचन है ताथ श्रवण करिकै हृदयमें मयो है कम्प जाके ऐसी रुक्मिणी देवी है सो भयभीत होयके रोदन करति वड़ी चित्ताकूं पावतिथई २२ नख करिकै अरुण है कान्ति जाकी ऐसो जो सुकुमार चरण है तासूं पृथ्वी कूं लिखै है और अञ्जन सू ड्याम जे आंसू आंखिन में तें चलै हैं तिनसूं केसरि जिनमें लगी ऐस स्तननकूं थिजोवत नीचे कूं है मुख जाको अत्यन्त दुःखसू रुकी है बाणी जाकी ऐसी रुक्मिणी ठाढ़ी चुपरोति भई २३ अभिय वचन सुन्यो तासूं भयो जो दुःख और त्यागि देनेकी शङ्का करिकै भयो जो शोक है तिनसूं गेह बुद्धि जाकी ऐसी जो रुक्मिणी है ताके ठीले भये हैं कळण जामें ऐसो जो हाथ है ताते चमर गिरतभयो व्याकुल है बुद्धि जाकी ऐसी रुक्मिणी की देह शीघ्र मोहित होयके केशनकूं फैलायके जैसे कैलाको हुज गिरि है या प्रकार गिरत

भई २४ दास्य वी जो डिडाई है ताय न जाने पेमां जो प्यारी रुचियणी है ताको प्रेपस्मान देखि कै रसगुना जिनके छाउगई ऐम श्री कृष्ण चरै छे भुना जिनके ऐम श्री कृष्ण-  
चन्द्र पल्लव पैत शीघ्र नीचे उतारि कै रुचियणी कूं उडाइ कै नेशनहूं समझारि कै सुगंध वपन वी तुल्य जो नोपन राय है मागू गोदा भये २६ आंभू जिनमें पायदे ऐमे नेनहूं प्रौर शोकरि कै  
नाडित जे स्तन है तिन पै पाछि कै हे राजन् पगीचिन्तु ! नहीं है और विषय जाके ऐमी पतिव्रता सोस्वणी है ताय युवानस आनपन करि कै हामी जो दमी नाहूं नन्नायमान है निच जाहो प्रौर  
कठोर हासी यो-य नहीं कृपणा ऐमी जो लक्ष्मणी है ताय सा युवकी गीसगर्थ श्री कृष्णचन्द्र समहाय भये २७ अन्तर श्री भगवत् श्री कृष्णचन्द्र कं दे विदग्ध देश के राजा की पुत्री सेतु डवा  
मनि करो तू मेरे बिना और काहूकू नहीं जानेहै यह मैं जानूहू है सुन्दरी ! तू कडा करेगी यह मुनिवै के निचे राभी करीशे २८ स्नेह के नोय करि कै करेहै नाना गो प्रौर चना मलन कलप प्र-

ह्याशु ताम्रथाय चतुर्भुजः ॥ केशान्मममुह्यतदङ्कं पाशु जतपद्मपाणिना २६ प्रमृज्याश्रु हलेनेत्रेस्तनोनापहतो गुचा ॥ आश्लिष्य नाहुना गात्रजलनन्यविषयां  
सतीम् २७ सान्त्वयामास सान्त्वज्जः कृपयारूपणाप्रभुः ॥ दास्यगोद्विभ्रपचित्तागतदहामनागनिः २८ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ मागनेदमसूयेथा जानैस्वाम  
त्परायणाम् ॥ तद्वचः श्रोतुममेन क्षेप्येव चरितगद्गने २९ मुलत्रप्रेमसंभारस्फुरितावभीक्षितम् ॥ कडायेपारुणापाज्ञं मुन्दरश्रुट्टीनटम् ३० अयंहिर  
मोलाभो गृहेषु गृहमेधिविनाम् ॥ यन्नभनीयतेयामः प्रिययाभीरुभाषिनि ३१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ भवभगवत्ताराजन् वेदभीपरिमान्विता ॥ ज्ञात्वा तत्परिहा  
सोक्तिं प्रियत्यागभयं जहौ ३२ वसापेक्षपभंगुं मन्वीक्षन्ती गगवन्मुलम् ॥ सत्रीडहासकचिरस्तिग्धापाङ्गेन भारत ३३ ॥ शक्तिमस्युवाच ॥ नन्वेवमेतदस्विन्द  
त्रिलोचनाऽऽह यद्वैभवान् गगवतो सदृशी विभूयः ॥ कस्वैमहिम्यभितो भगवास्वधीशः काहंगुणपकृतिज्ञगृहीतपादा ३४ सत्यं भयादिवगुणे भयउरु  
क्रमान्तः शेतेरामुद्रउपलम्बनमात्रआत्मा ॥ नित्यं कदिन्द्रियगणे कृतविप्रदस्त्वं त्वत्सर्वकैर्नृपपदं विधुतंत गोऽन्वम् ३५ त्वत्पादपद्मम करन्दं भुषांभुनीनां

दास्य जायें और देवी हैं प्रकृती जायें ऐमो जो मुरा है ताकी गोया देखि कै लिथे हांसी ररीशे ३० हे उरगोपनी ! अपनी प्यारी के संग शोभी करि कै समग व्यपीत करनो दूरस्थान कूं नर में गही  
लाभ है ३१ अय श्रीशुकदेवजी कहें हैं राजन् पगीचिन्तु ! या प्रह्लाद भगवान् श्री कृष्णचन्द्र ने शाना करी ऐमी जो विदग्ध देश के राजा की पुत्री सेतु के कडी से  
यइ जानि कै और प्यारो मोझूं त्यागि देइयो यह जो मन में अयो ताय ताहूं न्यागनि भई ३२ हे भारत शिवराज राजन् पगीचिन्तु ! आज भरी हैतवि गोदर स्निग्ध कडास्तन कूं सुन्दर जो मूल है  
ताय देसत पुरुषन में श्रेष्ठ कृष्णचन्द्र तिनभूं बोलनि भई ३३ श्री कृष्णचन्द्र ने जो अपने में अचपुण कहे निगहूं गुण करि कै रुचियणी रचन करे है प्रगम श्री कृष्णने कही तुम हमारी वरापारि री  
नहींहो हमारो हाथ कैसे पकन्यो ताको उत्तर कियणी देइ है हे कमलदललोचन ! तुम शो तिनकी परामर्ष में नहीं हैं द्वापकारके ऐउत्तरगुन को तुमहो तिनकी बात सत्य है अपनी परिभा त-  
रिकै आप आहुन तीनों ब्रह्मादिजनके ईश्वर ऐसे तुमहो और सकामपुरुषन ने मा के पाँच पकरे ऐमी सत्यगुणी मनोगुणी रूप जो माया में है सो परामर्ष में बड़ो ऊँचर है ३४ और जो

कृष्णने कही कि राजान के भयके मारे समुद्र में आये रहे ताको उत्तर रुक्मिणी देखै हे उरक्रम ! अर्थात् वही है पराक्रम जिनको यातें तुमकूं भय नहीं है यह कहो यह बात सत्य है सत्यगुण रजोगुण तमोगुण हैं तेही राजा हैं तिनके भयतेही मानों समुद्रकी जैसे थाह नहीं है ऐसे हृदयकी बातजानिबे में नहीं आवै हे ऐसो जो प्राणीन को हृदय है तामें चैतन्यघन जो तुमहीं सो निश्चलता करिकै प्रकाशोद्गो और जो रावरन न हमने वैरकृत्यो है यह जो तुमने कहीं सोभी सत्य है क्योंकि विषयन में लगी हैं इन्द्रिय जिनकी ऐसे पुरुषन ने तुममें विरोध करचो है उनमें तुम्हारी अप्रतीति है और जो श्रीकृष्णने कही हमारे राज्य आसन नहीं है ताको उत्तर रुक्मिणी देखै बहुत नामें अविवेक ऐसो जो राज्यआसन है सो तुम्हारे सेवक छोड़ि देखै तुमने छोड़यो यामें कहा कहनो है ३५ और जो श्रीकृष्णने कही कि हमारो मार्ग जानिने में नहीं आवै है और स्त्रीनके अर्थीन में नहीं हूं ताको उत्तर रुक्मिणी देखै तुम्हारे चरणारविन्द के मकरन्द को सेवनकरें ऐसे जे मुनिहैं तिनको मोगी पशुरूप जे मनुष्यह तिन पै प्रकट नहीं होय है और जानिबे में नहीं आवै है तुम्हारो मार्ग जानिबे में न आवै यामें कहा आश्वर्य है हे व्यापक ! तुम्हारे अनुवर्ती जे भक्तहैं तिनकी चेष्टा न्यारी

वत्सार्स्फुटं पशुभिर्ननुदुर्विगाढ्यम् ॥ यस्मादलौकिकमिवेहितमीश्वरस्य भूमस्तवेहितमथोऽनुयेभवन्नम् ३६ निष्कञ्चनो ननु भवान्नप्रतोऽस्ति किञ्चिदस्मैवलिवलिभुजोऽपि हन्त्य जाद्याः ॥ नन्वाविदन्त्यसुतपोऽन्तकमाढ्यतान्धाः प्रेष्ठो भवान्चलिभुजागपितेऽपि तु भगम् ३७ त्वं वै सप्तपुरुषार्थमयः फलात्मा यद्वाञ्छया सुप्रनयो विमृजन्ति हस्तनम् ॥ तेषां विभो ममुचितो भवतः समाजः पुंसः स्त्रियाश्च तयोः भुल्लुङ्खिनोर्न ३८ त्वं न्यस्य दण्डमुनिभिर्गदितानुभाव आत्माऽऽत्मदश्च जगतामिति मेव नोऽस्ति ॥ हित्वा भवदभ्रवउदीरित कालवेगधस्ताशिपोऽजभवना कपतीन्क्रुनोऽन्ये ३९ जाढ्यान्च स्तवगदाग्रजयस्तुभूपांश्च विद्रव्यशार्ङ्गनिनदेन जहर्थमात्मम् ॥ सिंहो यथा स्वचलिमीशपशून्स्वभागं तेभ्यो भयाद्यदुर्ध्वशरणं प्रपन्नः ४० यद्वाञ्छयानुपशिक्षामणोऽङ्गैर्वैन्यजाय

है तुम्हारी न्यारी है यामें कहा आश्वर्य है ३६ और निष्कञ्चन जे पुरुषहैं तिनकूं हम भिय लागै हैं और धनिक पुरुषहैं ते हम दरिद्री होय जायेंगे या हरके मारे हमारो भजन नहीं करै है यह जो श्रीकृष्णने कही ताको उत्तर रुक्मिणी देखै जिनमें कुञ्च न्यारो नहीं ऐसे तुम निष्कञ्चन हो दरिद्रात्मी निष्कञ्चनता तुममें नहीं वने है प्रजान तें भेंट लेइ ऐसे जे ब्रह्मादिक देवता ते तुमकूं भेंट देइ है माणनकूं पोषणकरें धनाढ्यताके मदकरिकै ओधरे ऐसे जे पुरुषहैं ते कालख्य जो तुमहीं तिनकूं नहीं जाने है ब्रह्मादिकनकूं तुम प्यारे हो ३७ जिनके चावरिको जन्म है तिनको विनाह और भिन्ता होय है यह जो श्रीकृष्णने कही तानो उत्तर रुक्मिणी देखै तुम सस्यूर्ण पुरुषारूपहो परमानन्दरूपहो सुन्दर है बुद्धि जिनकी वे पुरुष तुम्हारी प्राप्ति के लिये सा वस्तु त्यागि देखै हे मभो ! उन पुरुषन को और तुम्हारो सेव्य सेवकभाव है सुख दुःखमूं व्याकुल परस्पर ऐसे स्त्री पुरुषहैं तिनके स्वायी सेवकभाव नहीं है ३८ और भिव्यारिने भूंदी बड़ाई करी है यह जो श्रीकृष्णने कही ताको उत्तर रुक्मिणी देखै लुब्धो है कालको दण्ड जिनतें ऐसे जे मुनीश्वरहैं तिनने मायो है प्रभाव जिनको ऐसे जो जगतके आत्मा और भक्तनकूं मोक्ष के देनवारे यह जानिके मैंने तुममें यरो है कहा करिकै तुम्हारी सुकुती को जो चढावो तांमूं प्रकट भयो जो बाल ताको जो वेग तांमूं दूरि गये हैं मनोरन गिनके ऐसे जे ब्रह्मादिक हैं तिनकूं त्यागि कै तुम्हें यरो है और तुन्छन की कहा चलाइ है ३९ अपने





मेरे रनेहोय तव श्रीकृष्ण ने कहीं स्नेह भये ते तो कूँ कहा लाम होइगो ताको उत्तर देखै है तुम्हारे चरणारविन्द मैं अनुराग है सोई वड़ो लाभ है और जा समय या विश्वके वढ़ायवे के लिये रजोगुण कूँ अङ्गीकार करिकैं मो माया की ओर देखोगे वही वड़ो अनुग्रह है ४६ या प्रकार श्रीकृष्णवन्द ने मे जे वातें कहीं तिनको उत्तर दैके मसन है चित जाको ऐसी रुक्मिणी मन्त्र सो कहे है हे मधुसूदन ! तुमने कही अपनी वरावरि के क्षत्रियको अथ हाथ पवरि लेउ यह मैं भित्था नहीं मावूँ हूँ जैसे काशी के राजा की पुत्री अम्बा अम्बालिका ये तीनों बन्यानमें तैं अम्बा कन्याकी शाल्वराजा में जैसे रतिभई तेसे मेरी रति तो तुम्हारे विपेही भई है ४७ और हे अच्युत ! विदाहिता जो व्यभिचारिणी स्त्री है वाको मन नवीन पुरुषन में जात है विवेकी पुरुष ऐसी स्त्री स्त्री कूँ राले नहीं है कदाचित् रालै तो या लोक और परलोक में भ्रष्टहोय है ४८ अब श्रीकृष्णवन्द कहे है हे राजपुत्री रुक्मिणी ! तुम्हारी वात सुनिधे के लिये मैंने ऐसी कही है मेरे वचनको

छयउपाचारजोऽतिमात्रो मामीक्षमेतदुहनः परमानुकम्पा ४६ नैवालीकमहं मन्ये वचस्तेमधुसूदन ॥ अम्बायाइवाहिप्रायः कन्यायाः स्यादतिःकञ्चित् ४७  
व्यूहायाश्चापि पुंश्चल्यामनोऽभ्येतिनवन्नवम् ॥ बुधोऽसतीनविभृयात्तविभ्रडुभयच्युतः ४८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधयेतच्छ्रोतुकामैस्त्वं राजपुत्रिपल  
भिभता ॥ मयोदितं यदन्वार्थसन्धे तत्सत्यमेव हि ४९ यान्यान्कामयसेकामान् मथ्यकामाय भामिनि ॥ सन्ति ह्येकान्तभक्तायास्तव कल्याणि नित्यदा ५०  
उपलब्धं पतिभे मपातिव्रत्यञ्चनेऽनवे ॥ यद्वाक्यैश्चाल्यमानायानधीर्भयपकर्षिता ५१ ये मां भजन्ति दाम्पत्ये तपसा ब्रचर्यया ॥ कामात्मानोऽप्येव गेहं  
मोहिता मम मायया ५२ मां प्राप्यमानिन्यप्यगर्गसम्पदं वाञ्छन्ति ये सम्पद एव तत्पतिम् ॥ ते मन्दभाग्यानि रयेऽपि ये नृणां मात्रात्मकत्वान्निरयः सुसङ्गमः ५३  
दिष्ट्वा गृहैश्च रथसङ्कमयितया कृताऽनुवृत्तिर्भवमोचनी खलैः ॥ सुदुष्कराऽसौ सुरादुराशिषो ह्यमुग्धरायानि कृतिं जुपः स्त्रियाः ५४ न त्वाद्दर्शोऽपि न गिगृ  
हिर्णीगृहेषु पश्यामिमानि निययास्व विवाहकाले ॥ मासान् पानवगणयथ रहोहरो मे प्रस्थापितोऽद्विज उपश्रुत सरकथस्य ५५ आतुर्विरूपकरण्युधिनिर्जि

जो जो तुमने उत्तर बहो सो सब सत्य है ४६ हे भामिनी ! हे मङ्गलरूपिणी ! जो जो वस्तुकी तुम चाहना करो हो सो सो एकान्त भक्ति है जाकी ऐसी जो वू है ता तेरे नित्य बनी रहे हैं ५० हे निष्पाप रुक्मिणी ! तुमने पतिभे प्रपणयो और पतिव्रताको जो धर्म है सो तुमने पायो वचन करिकैं डिगाई तथापि तुम्हारी बुद्धि सो भोतें चलायमान न भई ५१ विषयन मैं है आत्मा और मन जिनको ऐसे पुरुष तपस्या करिकैं ब्रह्मचर्य करिकैं स्त्री पुरुषके भोग को जो सुख है ताके लिये मेरी भजन करे हैं वे पुरुष मेरी माया तैं मोहित हैं अर्थात् भूलि रहै हैं ५२ हे भामिनी ! मोक्षसाहित सम्पूर्ण सम्पत्तिनको देन वारो मैं हूँ ताप पायकैं विषयनकी चाहना करे हैं विषयनको देन वारो मैं हूँ ताकी चाहना नहीं करे हैं वे पुरुष अभाग्य हैं जो विषय मनुष्यन कूँ कुत्तानकी सूकरन की गोति में हूँ मिले हैं विषयन में मन रहे हैं ५३ हे घरकी महारानी ! संसारकी लुङ्कावनवारी चाहना जामें नहीं ऐसे मनकी वृत्ति तेने मोमें लगायो स्त्री है अभिप्राय जाको याहीते अपने प्राणनको भरणपोषण करे दूसरे कूँ ठो ऐसी जो स्त्री है ताके मनकी वृत्ति मोमें नहीं लगे है ५४ हे भामिनी ! सोलहहजार एकसौ आठ महलन में तुम्हारी वरावरि प्यारकी करनवारी और

स्त्री नहीं देखूँ हूँ जा तौने आपने विवाह के समय आये जे राजा है तिनकुँ त्यागि कै मेरी बात सुनि कै पाती लिखि कै भरे पास द्यामख भिन्नगो ५५ युद्ध में तेरे भयया रुन्धीहुँ जीतिलियो बाको शिर मूढिकै विरूप करिदिओ हो और अनिरुद्ध के विवाह में चौपर खेलत बाकू माख्यो यह भयया के मारिये को दुःख दुगारे त्यागिने के भयने माके सहाख्यो और दलु न कही ऐसी ऐसी तेरी बातन जे हमको बुराकरि राखे हैं ५६ भरे दुलायो कू कोई जाने नहीं ऐसे एहान्ती दूत कुँधरे पास खेल्यो जा मेकुँ आयने में प्रितल भयो ता या विश्वकुँ गुन्य मानि के और राजा भरे योग्य नहीं है यह निश्चय करि कै देह के त्यागिदे की इच्छा करति भई यह बात तेरे बिना नापै वनैहै हम तेरी कृपा प्रशंसा करै ५७ अथ श्रीकृष्णदेव की कहे हैं हे राजन् प्रीति १ या मकार आ तमारग जगत् के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र मनुष्यन को अनुकरण करि कै रास्यकी बातें करि करि के स्त्रोत के संग रण करत भये ५८ समर्थ सम्पूर्ण लोक के गुरु सम के दुःख के हरनारे जे श्रीकृष्ण

तस्य प्रोद्धाहपर्वणि चतुर्दशमक्षगोष्ठ्याम् ॥ दुःखं समुत्थमसहोऽस्मदयोगभीत्या नैवान्वीः किमपि तेन वयं जितारने ५६ दूतस्तनयाऽऽल्लभने मुनिवि  
क्लमन्त्रः प्रस्थापितो मध्विचिरायति शून्यमेतत् ॥ मत्वा जिहासदमङ्गमनन्ययोग्यं विष्ठेत तत्त्वयि यं यं निनन्दयामः ५७ ॥ श्रीगुरु उवाच ॥ एवं सौ रतसं  
लापैर्भगवाञ्जगदीश्वरः ॥ स्वर्तो रसयारिमे नरलोकं विडम्बयन् ५८ तथाऽन्यासामपि निभृष्टे गृहवा निव ॥ आस्थितो गृहमेधीयात् धर्मार्ल्लो दगुरुह  
रिः ५९ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे कृष्णरुक्मिणीसंवादेनाम पष्ठिनमोऽध्यायः ६० ॥ ॐ ॥

श्रीशुक्र उवाच ॥ एकैकशस्ताः कृष्णस्य पुत्रान् दश दशावलाः ॥ अर्जिजनन्नवमान् पितुः सत्त्वर्त्तमसम्पदा १ गृहादनगं वीक्ष्य राजपुत्रयोर्योऽच्युतं  
स्थितम् ॥ प्रेष्ठयं समस्तस्वं न तत्तत्त्वाविदः स्त्रियः २ चार्वजकोशवदनायतवानुनेत्रसं प्रेहाभसवीक्षितवल्गुजलैः ॥ रामो हिताभगवतो न मनो विजिहंतु  
स्वैर्विभ्रैः समशक्रन्वनिता विभूषः ३ स्मायावलो कलवदर्शित भावहरिभूषण्डलप्रहितसौरतगन्त्रशौण्डे ॥ पत्न्यस्तु पोदश महत्तमनङ्गवाणैर्यस्येन्द्रि  
चन्दैः सो और रानीन के मंडलन में रहि कै गृहस्थन के से धर्म सिन्धु हैं ५९ इति श्रीमद्भागवतार्थकृष्णरुक्मिणीसंवादेनाम पष्ठिनमोऽध्यायः ६० ॥ ॐ ॥

( एक पष्ठिनमेश्वरः पुत्रपौत्रादिसन्ततिः ॥ अनिरुद्धविमोहे च रुक्मिणीसमुद्भवा ॥ १ अष्टाभिरुशतद्वयसहस्रस्त्रीसमुद्भवा ॥ २ क्रोशः पुनपौत्रादीन् रितारैर्योजयत् २ इत्युक्तं ३ अथायमं कृष्ण  
जी के पुन और पौत्रादि लोक सन्तति और अनिरुद्धजी के विवाह में वलदेवी मूं रुक्मी का नाश यणन है १ कृष्णजी सोलह हजार एकसौ आठ स्त्रियों से उत्पन्न करोड़न पुत्र पौत्रादि जन के  
विवाह कर देते भये २ ) अथ श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे राजन् प्रीति १ श्रीकृष्णचन्द्रकी एक पुत्ररानी पिता श्रीकृष्णचन्द्रकी तुल्य हैं रूप गुण जिनमें ऐसे दश दश पुत्रनकुँ उत्पन्न करती भई १  
घरते कहे बाहर जायें नहीं अपने पास हैं आये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं राजानकी पुत्री देखि कै और श्रीकृष्ण आत्माराम हैं या बात कुँ नहीं जानि कै अपने जारो मानति भई २ व्यापक  
जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् हैं तिनको कमलकोश अर्थात् मध्य ताकी तुल्य है सुकुमार मुख बड़ी जुना बड़े नेत्र प्रेमसहित हंसनि रसभरी चितवनि मनोहर तोलनि इत्यादिकनसूं मोहित जे स्त्री

हे ते अपने अनेक करिके पूर्ण जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको मन मोहित करिने कूं नहीं समर्थ होति भई ३ गूढ १० सनिपूर्वक जो कटाक्षन मूं जतायो अधिप्राय ता करिके मनको हरनवारी जे भुक्तुडीरूप मण्डल हैं ता करिके पठाये जे सुरतिमन्त्रवी मन्त्र हैं तिनमूं पैने जे कामशास्त्रविहित प्रसिद्ध साधन हैं तिन करिके मोलह हजार रानी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्रके मनमूं अत्यमान करिके सपर्ये न होति भई ४ ब्रह्मादिक जिनके मार्गकूं नहीं जानें ऐसे लक्ष्मीके पति श्रीकृष्णचन्द्र कृपा प्रकार पति पाय के छानके नदयो जो आनन्द तामूं स्नेहभरी हैं सनि चित्तनिहै ताय और हास्य चितयनिपूर्वक नवीन सङ्गमैं बोलानिहै ताय और बोलनिर्ध जो लाजहै ताय सेवन करति भई ५ एकएक रानीके सम्मुख सो सौ दासी हाय जो रे दासी हैं तथापि सम्मुख नाय कै भेभ करिके लिवाय लाइवो आसन निवायवो सुन्दर पूजन करिवो चरणयोदो वीरी लगाइवो चरणयोदो वीरी लगाइवो प्रह्लादको पुष्प चढ़ावनो

यंविमथितुं करणैर्न शक्नुः ४ इत्थं मापति भवाय पतिस्त्रिगस्ता ब्रह्मादयोऽपि निविदुः पदवीयदीयाय ॥ भेजुंदाऽनिरमेधिनयानुशाहासात्रलो कनवसङ्गमं लालसाद्यम् ५ प्रत्युद्गमासनवराहणपादरौचताम्बूलविश्रमणवीजनगन्धमाल्यैः ॥ केशप्रसारशयनसनपनोपहार्यैर्दासीशता अपि विमोविदधुः स्मदास्यस् ६ तासां यादशपुत्राणां कृष्णस्त्रीणां पुरोदिताः ॥ अष्टौ महिष्यस्तत्पुत्रान् प्रद्युम्नादीन् वृणामि ते ७ चारुदेण्यः मुदेण्यश्च चारुदेहश्च वीर्यवान् ॥ सुचारुश्चारुगुप्तश्च भद्रचारुदत्तश्च ८ चारुचन्द्रो विचारुश्च चारुश्च दशमो हरः ॥ प्रद्युम्नप्रमुखा जाता रुक्मिण्ययांनावमाः पितुः ९ भानुः भुभानुः स्मभानुः प्रभानुर्भानुमांस्तथा ॥ चन्द्रभानुर्बृहद्भानुरतिभानुस्तथाऽष्टमः १० श्रीभानुः प्रतिभानुश्च सत्यभामात्मजा दश ॥ राम्यः सुमित्रः पुरुजिच्छतजिच्च सहस्रजित ११ नुर्भानुमांस्तथा ॥ विजयश्चित्रकेतुश्च वसुमान् बृहद्विहः क्रतुः ॥ जाम्बवत्याः सुताह्वेते साम्बाद्याः पितरामताः १२ वीरश्चन्द्रोऽश्वमेनश्च चित्रगुर्वगवान्वधुपः ॥ आमः शङ्खर्वसुः श्रीमान् कुन्तिर्नार्गनजितेः सुताः १३ शु १ः कविर्द्वेषवीरः सुबाहुर्भद्रएकलः ॥ शान्तिर्दर्शः पूर्णपासः कालिन्ध्याः मोगक्रोडरः १४ प्रवोपो गान्त्रवान् सिहो वलः

केशनकूं सुधारितो शय्या चिह्वावने स्नान करानवतो भेदको धरिवो इन करिके श्रीकृष्णचन्द्रकी सेवाकरतिभई ६ दशदशैं पुत्र जिनके ऐसी जे श्रीकृष्णकी रानीहैं तिनमें जे आठ पटरानी प्रथम कही हैं तिनके प्रपुत्र रू आदिलैं जे पुत्र हैं तिनैं तेरेआगे कहूं हू ७ प्रद्युम्न हैं मुख्य जिनमें गुणन में पितामूं कमती नहीं ऐसे चारुदेण्य मुदेण्य जलवान् चारुदेह सुचारु चारुगुप्त तैसेही भद्रचार चारुचन्द्र विचारु चारु ये दशपुत्र श्रीकृष्णचन्द्रमूं रुक्मिणीमें उत्पन्न होत भये ८ ९ भानु सुभानु स्वर्भानु प्रभानु भानुमान् चन्द्रभानु बृहद्भानु तैयोही आठवों प्रतिभानु ये दश पुन सत्यभामा के उत्पन्न होत भये और साम्ब सुमित्र पुरुजित शतजित सहस्रजित १० विजय चित्रकेतु वसुमान् द्रिड क्रतु ये राम्य सू आदिलैं श्रीकृष्णचन्द्रकी मुख्य हैं गुण जिनमें ऐसे दश पुत्र जाम्बवती के होत भये १२ वीरचन्द्र अश्वमेन चित्रगु वेगवान् हय ग्राम शंकु तथा शोभायमान वसु और कुन्ति ये दश नाम्नाजिती के पुत्र होत भये १३ श्रुत रुक्मि हय और सुबाहु और भद्र हैं नाम जाको ऐसी एक पुत्र शान्ति दर्श पूर्णपास और इन सब मूं छोटी सोमक ये दश पुत्र कालिन्दी के होत भये १४ प्रवोपो गान्त्रवान् सिंह वल प्रवल अङ्गम महाशक्ति सह ओज

अपराजित ये दशपुत्र लक्ष्मणा के होत भये १५ वृक हर्ष अनिल गृध्र वर्द्धन उवाच महाश पावन वेद्वि क्षुधि ये दश मित्रविन्दा के पुत्र होत भये १६ सग्रापनिज दृष्टमेन शूर प्रहरण अरिजित् जय सुभद्र वाम आयु सत्यक ये दश पुत्र भद्रा के उत्तराव होत भये ये श्रीकृष्णचन्द्र की आठ रानीन ते न्यारी जो रोहिणी है ताके दीप्तिमान् ताम्रतप्त कं आदि लैकै पुत्र होत भये जैसे रोहिणी के पुत्र कहै ऐसेही और सोलह हजार रानीन के भी दश दश पुत्र जानिलीजै हे राजन् परीक्षित् ! भोजकटपुर में रुक्मी की जो पुत्री रुक्मवती है ताभे मधुमन जी तें चलवान् अनिरुद्ध नाम करिकै पुत्र होत भयो हे राजन् परीक्षित् ! ये जो श्रीकृष्णचन्द्र पुत्र हैं तिनके पुत्र औरनाती करोड़न होत भये और श्रीकृष्ण तें जन्मे जे पुत्र हैं तिनभौ सोलह हजार माता होती भई १७ ॥ १० ॥ अब राजा परीक्षित् कहै हे संग्राम के विषे श्रीकृष्णने तिरस्कार जाको कर्यो ऐसो रुक्मी वैरी श्रीकृष्ण के पुत्र मधुमन जी हैं तिन कूं अपनी कन्या कैसे विवाहन भयो वह तो कृष्ण के मारिने

प्रवलऊर्द्धगः ॥ माद्र्याः पुत्रा महाशक्तिः सह ओजोऽपराजितः १५ वृकोहर्षोऽनिलो गृध्रो वर्द्धनो ब्राह्मणवच ॥ महाशः पावनो वह्निर्भिन्निविन्दात्मजाः क्षुधिः १६ संग्रामजिद्वृहत्सेनः शूरः प्रहरणोऽरिजित् ॥ जयः सुभद्रो भद्राया वाम आयुश्च सत्यकः १७ दीप्तिमांस्ताम्रतप्तया रोहिण्यास्तनया हरैः ॥ प्रद्युम्नाच्चानिरुद्धो भूद्रुकमवत्यां महाबलः १८ पुत्र्यांतु रक्षिमणो राजन् नाम्ना भोजकटपुरे ॥ एते पांपुत्र पौत्राश्च वभूवुः कोटिशो नृप ॥ मातरः कृष्णजातानां सहस्राणि च पौण्डश १९ ॥ राजोवाच ॥ कथं रुक्म्यरिपुत्राय प्रादादुहि नंर्युधि ॥ कृष्णेन परिभूतस्तं हन्तुं रन्ध्रं प्रतीक्षते ॥ एतदाख्याहि मे विदन् द्विपोर्वैवाहिकं मिथः २० अनागतमतीतं च वर्त्तमानमतीन्द्रियम् ॥ विप्रकृष्टं व्यवहितं सम्यक् पश्यन्ति योगिनः २१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ वृत्तः स्वयं वरे साक्षाद न ज्ञोऽङ्गयुतस्तया ॥ राज्ञः समेतानिर्जित्य जहारै करथो युधि २२ यद्यप्यनुस्मरन् नैव रुक्मीकृष्णावमानितः ॥ व्यतरद्वागिनेयाय सुतां कुर्वन् स्वसुः प्रियम् २३ रुक्मिण्यास्तनयां राजन् कृतवर्मसुतो वली ॥ उपयेभे विशालाक्षीं कन्यां चा रुमतीं किल २४ दौहित्रायानिरुद्धाय पौत्रीरुक्म्यददाद्धरैः ॥ रोचनं वष्टवैरोऽपि स्वसुः प्रियचिकी

को उपाय करे हो हे विवेकी शुकदेवजी ! शत्रुनको आपुस में विवाह कैमे भयो यह मेरे आगे वर्णन कीजिये २० जो कदाचित् कहो कि हम या बात कूं कहा जानै ताको उत्तर राजा देइ है योगीश्वर हैं ते जो आगे होनहार हे ताथ और जो धीतगई है ताथ और जो वर्त्तमान है ताथ और जो हमारे देखिबे सुनिबे में नहीं आवै है ताथ दूरि की बात है ताथ और भीतिकी ओट में जो वस्तु धरी है ताथ भले प्रकार देखि लेइ हैं २१ अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित् ! रुक्मी की पुत्री जो रुक्मवती है ताके स्वयवरमें आवे जे राजा है तिनैं जीतिकै एक है रथ जिन के ऐसे अद्रसदित जो कामदेव मधुमनजी हैं सो युद्ध में हरि कै लागत भये २२ यद्यपि रुक्मीको श्रीकृष्ण ने तिरस्कार कस्यो या नैर को स्मरण करै है तथापि वहिनि के भलो मनाइवे के लिये भानजो जो मधुमन है ताकूं अपनी कन्या देत भयो २३ श्रीकृष्णचन्द्र की सब रानीन के एक एक कन्या भई यह दिखाइवे के लिये वही रानी जो रुक्मिणी है ताकी कन्या को विवाह कहै हैं हे राजन् परीक्षित् ! सुन्दर है बुद्धि जाकी विशाल है नेत्र जाके ऐसी रुक्मिणी की पुत्री है ताथ चलवान् जो कृतवर्मन को पुत्र है सो विवाहत भयो २४ यद्यपि वैर रंधि रखो है तथापि रुक्मी

अपनी वंशिनी को भलो मनाइवे के कारण श्रीगुण को नाभी अपना दोहितो ऐसो जो अनिरुद्ध है ताकूँ अपनी रोजना नाम नातिनी कूँ देत भयो नाते में विवाह करानो अर्थम्प है या बात कूँ रुक्मी जाने भी है परन्तु स्नेह के रस्मान में बंधो है या कारण विवाह देत भयो २५ हे राजन् परीक्षित ! ता विवाह में रुक्मिणी बलदेवजी श्रीकृष्णचन्द्र और साम्ब प्रद्युम्न कूँ आदि लैंकै श्री कृष्णचन्द्र के पुत्र हैं ते रुक्मी के भोजकटनागपुर में जात भये २६ विवाह होयजुम्यो ता पीछे कलिङ्गदेश को राजा है मुष्य जिनमें ऐसे गर्जवन्त जे राजा है ते रुक्मी ते बोलत भये पासन करिके बलदेव कूँ जीति लेउ २७ हे राजन् रुक्मी ! यह बलदेव पासे खेल नहीं जाने है परन्तु थाकूँ खेलै को न्यसन यहो है या प्रकार जातै कही ऐसो रुक्मी नलदेवजी कूँ बुलाय कै तिनके सङ्ग पासन करिके खेलत भयो २८ नलदेवजी सौ मोहरन को ता पीछे हजार मोहरन को फेरि दश हजार मोहरन को दौव लागवत भये वह दौव रुक्मी जीतत भयो ता समय कलिङ्गदेश को राजा दांत

पैया ॥ जानन्नधर्मतद्यौनं स्नेहपाशानुबन्धनः २५ तस्मिन्नभ्युदये राजन् रुक्मिणीरामकेशवौ ॥ पुरंभोजकटं जटगमुः तान् प्रद्युम्नकादयः २६ तस्मिन्निवृत्त उद्राहे कालिङ्गप्रमुखानृपाः ॥ हसास्ते रुक्मिणं प्रेक्षुर्बलमक्षौर्विनिर्जय २७ अनक्षोज्ञो ह्ययं राजन् पित्रदयसं नमहत् ॥ इत्युक्तो बलमाहूय तेनाक्षैरुष्यदीव्यत २८ शतं संहस्रमयुतं रामस्तत्राऽऽददेपणम् ॥ तन्तुरुष्यजयत्तत्र कालिङ्गः प्राहसद्वलम् ॥ दन्तान् मन्दर्शयन्नृचेन प्रुष्यत्तद्वलायुधः २९ ततो लक्षं रुष्यगृह्णाद्वल हंतत्राजयद्वलः ॥ जितवानहमित्याह रुक्मीकैवमाश्रितः ३० मन्युनाश्रुभितः श्रीमान् समुद्रहवर्णणि ॥ जात्यारुणाक्षोऽतिरुषा न्यर्षुदंगलहमाददे ३१ तं चापि जितवान् मोधर्भेण च्छलमाश्रितः ॥ रुक्मीजितं मया त्रेमेव दन्तु पाषिं वकाहति ३२ तदाऽव्रवीन्नभोगाणि वलैनैर्न जितो गलहः ॥ धर्मभोवो वचनेनैव रुक्मी वदति वैमृषा ३३ तामनादृत्य वैदेभे दुष्टराजन्यचोदितः ॥ स्रक्पणं परिहसन् वभापे कालचोदितः ३४ नैवाक्ष कोविदायूयं गोपालावनगोचराः ॥ अक्षैर्द्विग्य न्तिराजानोवाणैश्च वनभवादृशाः ३५ रुक्मिणैवमधिक्क्षितो राजभिश्चोपहासितः ॥ क्रुद्धः परिघमुद्रम्य जघ्नेते नृमुणं भंसिदि ३६ कलिङ्गगजंतरसा गृहीत्याद

दिखाय कै बलदेवजी की बहुत हासी करत भयो तब हल है हथियार जिनके ऐसे बलदेवजी हासी कूँ नहीं सञ्चारत भये २९ ता पीछे रुक्मी लात गोहर को दौन लगावत भयो ताकूँ बलदेवजी जीते ता समय कपटकरिके भैंने जीत्यो है या प्रकार रुक्मी कहत भयो ३० वाचसपुण्यासी कूँ समुद्र में जैसे तोप होय है या प्रकार क्रोध करिके तोम जिनके भयो और स्वामात्रिक है अरुण नेत्र जिनके ऐसे बलदेवजी अत्यन्त रोप करिके दश करोड़ मोहरन को दौव लगावत भये ३१ धर्म करिके वह जो दौव है ताव बलदेवजी जीतन भये तब रुक्मी छल करिके कहत गयो किं प जीत्यो हौं ये मेरे पास के राजा हैं इन वृष्णि लेउ या प्रकार रुक्मी को और बलदेवजी को विवाद होयराखो इतने में आकाशवाणी भई धर्म ते बलदेवजी दौव जीते हैं रुक्मी को वचन मिथ्या है ३२ ३३ तासमय आकाशवाणी को अनादर करिके दुष्ट राजान ने सिखायो ऐसो जो बिदर्भदेश को राजा रुक्मी है सो बलदेवजी की दासी करत काल को प्रेरयो यह वचन बोलत भयो ३४ गौवन के चरावनवारे वनवासी तुम पासे नहीं लेत जानो हौं पानेन भूँ और वाणनभूँ राजा खेले हैं तुम ॥ रगे से नहीं खेले हैं ३५ या प्रकार रुक्मी ने अनादर जिनको करयो और राजान ने हाँसी करी



पेसे चलदेवजी क्रोध करिके वेंहो उठाय के भंगवसधा में रुक्मी कूं मारत भये ३६ ता समय भाज्यो जो कलिहोदेय को राजा है ताय दशवै पैड पै दौरि कै क्रोध करिके जिन दांतन हूं दिव्याय के होसी करीही तिन दांतनकू चलदेवजी कारि डारत भये ३७ चलदेवजी ने वेंडे सूं मारे याने हाय जिनके टूटे जंघा शिर करि हूं भीने पेले और जे राजा हूं ते भयभीत होयकै भाजतभये ३८ हे राजन् परीक्षित् ! रुक्मी सारो मारो मयो ता समय रुक्मिणी चलदेवके स्नेह दृष्टि के डरके मारे श्रीकृष्ण भली बुगी महुदू नदी कटत भये भली भई यह कहने तौ रुक्मिणी दुगो मानती हुरी यह कहते तौ चलदेवजी बुरो मानते याते चुपही होतभये ३९ श्रीकृष्णचन्द्र है आश्रय जिनके याहीतें सिद्धभये है सम्पूर्ण मनोरथ जिनके पेये राम सूं आदि लैंके यादवह ते नवीनवसुसहित जो अनिरुद्ध है ताय सुन्दर रथमें बैठायकै रुक्मीके भोजकदपुर तें द्वाकापुरीमें आवतभये ४० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धे उत्तराखंडे अनिरुद्धवितापेक्षिपवगोनामैकपट्टितोऽध्यायः ६१ ॥

( द्वियुक्पट्टितमेकपतिरुद्रस्वरोचनम् ॥ कन्याराममाख्यमाख्येनहुहाहुगा ? अनिरुद्धदेहै अन्यस्मिन्माख्ययादवसंयुगे ॥ श्रीकृष्णः श्रीहरीप्रित्वाद्यागमाहूतयाऽच्छिन्नत् २ वासठवै ज्ञायाय

शमेपदे ॥ दन्तानपातयल्लुद्धोयोऽहसाद्धिद्युनैर्द्विजैः ३७ अन्येनिर्भिन्नवाहसशिरसोरुधिगेक्षिताः ॥ राजानोदुहुनुर्भीतावलेनपरिघाहिनाः ३८ निहतेरुद्धिम  
णिश्यालेनावर्तारसाध्वसाधुवा ॥ रुक्मिणीवलयोराजवस्नेहगङ्गाभयाद्धरिः ३९ ततोऽनिरुद्धं सहस्रमूर्धन्यायं यत्तमागेय्यमुः कुशस्थलीम् ॥ रामादयो नोज  
वटदशार्हाः सिद्धाखिला र्थागधुसूदनाश्रयाः ४० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तराखंडे अनिरुद्धवितापेक्षिपवगोनामैकपट्टितोऽध्यायः ६१ ॥

राजोवाच ॥ वायस्यतनयाधूपासुपयेमेयदूतमः ॥ तत्रयुद्धमसूद्धेरंहरिशङ्करयोर्मदत्तम् ॥ एतत्सर्वमवाधायो गित् गगारुमातुं तवर्हसि १ ॥ श्रीगुरु उ  
वाच ॥ बाणः पुत्रशत्रुज्येष्ठो बलरासीन्महात्मनः ॥ येन वामनरूपाय हरयेऽदायिमेदिनी २ तस्यौरसः पुनोबाणः शिवभक्तिराः सदा ॥ गान्येवदान्योवा  
मांश्च सत्पुत्रसन्धेः दुद्वज्रः ॥ शोषिताख्येपुरे रम्ये सराज्यमक्रोतपुरा ३ तस्यशम्भोः प्रसादेन किङ्कगहवनेऽमराः ॥ सल्लाहुर्वीचेन तारुडोऽनोपपन्नमृदुम् ४

में बाणासुर की मन्था से रमण करेहेहुये अनिरुद्धजी का बहुत भुजावाले बाणासुरने वन्दन करादियो ? दूसरे अनिरुद्धजी के विचारमें बाणासुर और यादवोंके मुद्रामें श्रीकृष्णजी श्रीपद्मादेव की को भीतर बाणासुर के भुजाओं को काटते भये २ ) अब राजा परीक्षित् कहे हैं कि हे शुक्रदेवजी ! यादवन में उत्तम अनिरुद्धजी बाणासुर की कन्या ऊपाहुं विवाहत भये और विवाहमें श्रीकृष्णचन्द्र और मन्नादेवजी चोर युद्ध होतमयो सो सम्पूर्ण मेरे सम्पूर्ण रुधिवे कूं योग्यहो ? अब श्रीबुद्धदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! विष्णुने जब वामनरूप धारण करि है पृथ्वी मागी तन सम्पूर्ण पृथ्वी जिनने दानकरी ऐले महात्मा राजा बलिके सौ पुत्र होतभये तिन में ज्येष्ठ पुत्र शिवको अत्यन्त भक्त समको गान्य ज्ञानमान बुद्धिमान गतमद्वल २७ है इत जाओ ऐसो गणासुर नाम करिके होतमयो शोषित नाम करिके रमणीरूप में राज्य करतमयो २ । ३ ता बाणासुर के शिवजी की कृपा वरि है सम्पूर्ण देवता दन्तुगान की तुल्य ठाके रह फरु समय तापडव नृत्यमें हजार हाथनसू बाजेहुं वताय शिवजी कूं बाणासुर ने भसवकरथो तव मन प्राणीन के ईश्वर शरस्य भक्ततल्ल भगवान् शिवजी बाणासुरहूं वरेदेवे की इच्छा करतभये तन शिवजी

ते तुम मेरे पुरकी रक्षा करो यह घर यागत भयो ४ । ५ पराक्रम मूं दुष्ट है मद जाके ऐसी वाणासुर है सो अपने पास रहै जो शिवजी तिनके चरणारविन्द कूं मूर्य्य नै सो है तेज जाको ऐसी जो किरीट है तामूं स्पर्श करिकै एक समय बोलत भयो ६ हे लोकन के गुरुः पर महादेव ! नहीं भये हैं पूर्ण मनोरथ जिन के ऐसे जे पुरुष हैं तिनके मनोरथन के पूर्ण करनारे दलदल रूप जो तुम हो तिनकूं नमस्कार है ७ और हे देव ! तुमने हजार भुजा मोकूं दीनी हैं इनको प्रवतत केवल बोकही भयो है याने बिलोभी में तुम्हारे बिना और कोई मोकूं नरावरि को युद्ध करिवेदू नहीं मिले है ८ खुजली जिन में चली ऐसी भुजान मूं युद्ध करिवे के लिये है सम्पूर्ण के कारण शिवजी ! मैं पर्वतन कूं चूर्ण करत दिशान के हाथी है तिनके पास जानभयो तन मेरे भयके मारे बेभी दिशान कूं छोड़िके भागत भये ९ या प्रकार ता वाणासुर को बचन सुनिकै भगवान् शिवजी कोय करिकै फइतभये हे मूढ़ ! जा समय तेरी अगा दृष्टी ता समय मेरी वरावरि के नूं तेरो युद्ध होयगो १०

भगवान् सर्वभूतेशः शररयो भक्तवत्सलः ॥ वरेण च्छन्दयामास सनं वज्रे प्रादधिपम् ५ स ए रुद्राऽऽह गिरिं पार्श्वरथं धीर्यं दुर्मदः ॥ किरिटेनार्कियै न सं स्पृशं स तपदां मुजम् ६ न स स्येतां महादेव लोकानां गुरुभीश्वरम् ॥ पुंममपूर्व कामानां कामपूरागराङ्घ्रिपम् ७ दोः सहसं तया दत्तं परं भाराय मेऽभवत् ॥ त्रिलोक्यां प्रति योद्धारं न लेभे स्वहते सपम् ८ रुद्ररथानि नेदोर्भिर्युत्सुर्दिग्गजानहम् ॥ आद्यायां चूर्णयन्नदीन् भीतास्तेऽपि प्रहृष्टवुः ९ तच्छ्रुत्वा भगवा न्क्रुद्धः केतुस्ते भज्यते यदा ॥ त्वहर्षं दनं भवेन्मूढांगं मत्प्रमेनेते १० इत्युक्त्वा कुमदिहृष्टः स्वमूढं भाविशश्च ॥ प्रतीक्षन् गिरिशादेशं स्ववीर्यनशनं कुधीः ११ तस्योपानामद्वहिता स्वमेपाद्युस्त्रिनारतिम् ॥ कन्याऽसुभतकान्तेन प्रागदृष्टु नेन सा १२ सानन्नमपश्यन् पीक्षासि कान्तेति वादिनी ॥ सखीनां गन्ध उच्चस्थौ बिह्वलाग्नीडिताभुशम् १३ बाणरयमन्त्रीकुम्भाग्रद्विभ्रजलेखाचतसुता ॥ सख्यपृच्छन्त सखीसूपां कौतूहलमसन्विता १४ नंतं वं मुगयसे मुञ्चः कीदृशं शस्ते मनोरथः ॥ हस्तग्रहं न तेऽद्यापि राजपुत्रयुपलक्षये १५ ॥ उपो नाच ॥ दृष्टः कश्चिन्नारः स्वप्ने श्यामः कमललोचनः ॥ पीतवासा बृहद्ग्राहुर्योपिताहृदय

हे राजन् परीक्षित ! शिवजी ने या प्रकार जातें कही ऐसी कुबुद्धि वाणासुर अपने घर कू जात भयो और अपना बल उद्धि पराक्रम को है नाश जामें ऐसी शिवजी की आज्ञा है ताको पैड़ो देते है ? १ ऊपा है नाम जाको ऐसी वाणासुर की कन्या है सो अपनी कन्यापन की अयस्या में स्वममें प्रधुम्नजी के पुन अनिरुद्ध के सज्ज राति पावति भई कैसे अनिरुद्ध हैं प्रथम कपजं देते हैं न मुने हैं ? २ पीछे ऊपा तथा अनिरुद्ध कूं नहीं देखिकै बड़ी छडिजत होयकै हे ज्ञान ! तुम कहागये या प्रकार पुकारति विदल होयकै समीनके बीचमें गिरति भई ? ३ वाणासुर को मन्त्री जो कुम्भाग्रद्व है ताकी पुत्री चित्र लेखा सखी है सो आश्चर्य्य मानिकै अपनी सखी ऊपा मूं पूछति भई १४ हे सुभु अर्थात् सुन्दर हैं भृकुटी जाकी ऐसी ! हे ऊपा ! तू कौन कू दूदे है और तेरो कैसो मनोरथ है हे राजाजी पुत्री ! तेरे हाथ को पकरन वारो पति है ताप अतक मैं नहीं देख हू पति पति तूं कैसे पुकारति है १५ या प्रकार चित्रलेखा को बचन सुनिकै ऊपा बोलति भई सावरो स्वरूप कमल से हैं नेत्र जाके पीताम्बर कू

पाहिरे वही है भुजा जाकी स्त्रीनकुं मनोहर ऐसी पुरुष स्वसममेने देख्यो है १६ वह जो कान्त है ताय मैं दूँदूँ आपनो अधराभुत प्याइकै इच्छा जाके वनी रही ऐसी जो मैं हू ताय दुःस के समुद्र में पटकिकै वृद्ध चलयो गयो १७ यह वचन सुनिकै चित्रलेखा बोली है ऊपा ! तेरो दुःख मैं दूरि कलंगी जा पुरुष ने तेरो मन हरयो है वह जो त्रिलोकी में गूँह होइगो तो ले आऊँगी परन्तु वाइ बताय दे १८ चित्रलेखा इतनो कहिकै देवता गन्धर्व सिद्ध चारण पन्नग इनके चित्र लिखति भई दैत्य विद्याधर यक्ष मनुष्य इन सबकुं लिखति भई १९ और मनुष्यन में यादवन के चित्र लिखति भई गुरुभेन को चित्र तथा वसुदेवको बलदेवजी को चित्र कृष्ण और प्रद्युम्नजीको चित्र लिखति भई जब प्रद्युम्नजी को चित्र ऊपाने देख्यो तब तो श्वशुर जानिकै लज्जित होति भई २० गुरुदेवजी कहे हैं हे पृथ्वीपति राजा परीक्षित ! अनिरुद्ध कुं लिख्यो देखिकै लाज सू नीचे कुं है मुख जाको ऐसी ऊपा भरे मनको हसनवारो पुरुष यही है ऐसे मुसिकायकै सखीत कहति भई २१

ज्ञमः १६ तमहंमृगयेकान्तं पार्ययत्वाऽग्रंमधु ॥ कपियातःस्पृहयतीक्षित्वामांघ्रिजिनाण्वे १७ ॥ चित्रलेखोवाच ॥ व्यसनंतेऽपकर्षामि त्रिलोक्यांयदि भाव्यते । तमानेष्येनरंयस्ते मनोहर्त्तातमादिश १८ इत्युक्त्वादेवगन्धर्वसिद्धचारणपन्नगान् ॥ दैत्यविद्याधरान्यक्षान् मनुजान्श्चयथाऽलिखत् १९ मनु जेपुचसावृष्णीञ्चदूरमानकडुन्डुभिम् ॥ व्यल्लिखद्रामकृष्णौ च प्रद्युम्नवीक्ष्यलज्जिता २० अनिरुद्धं बिलिखितं नीक्ष्योपाऽवाञ्छुल्वीह्रिया ॥ सोऽसावसाविति प्रा हस्मयमानामधीपते २१ चित्रलेखातमाज्ञायपौत्रं कृष्णस्य योगिनी ॥ ययौ विहाय साराज नृद्धारं कांकृष्णपालिताम् २२ तत्र मुसं सुपथ्यं क्लृप्ते प्राद्युम्नि योगमास्थिता ॥ गृहीत्वा शोणितपुरं सख्यैर्मियमदर्शयत् २३ सा तत्र मुन्दरं वरं विलोक्य मुदितानना ॥ दुष्प्रेक्ष्ये स्वगृहे पुम्भी रेमे प्राद्युम्नि नासयम् २४ परार्थवासः स्वगन्धधूपदीपासनादिभिः ॥ पानभोजनभक्ष्यैश्च वाक्यैः शुश्रूषयाऽर्चितः २५ गूढः कन्यापुरं शश्वत्प्रवृद्धस्नेहयातया ॥ नाहर्गणान् मधुबुधे उपयाऽपहृतेन्द्रियः २६ तां तथा यद्वीरेण भुञ्जमानं हितव्रताम् ॥ हेतुभिर्वक्ष्याम्यक्रुप्रीतां दुस्वच्छदेः २७ भटा आवेदयाच्चक्रुर्गजं स्तेदुहितुर्वयम् ॥ विचेष्टितं लक्षयाधः

योगी है बल जाकुं ऐसी चित्रलेखा है सो ताय श्रीकृष्णचन्द्र को नाती जानिकै आकाशमार्ग होयकै हे राजन् परीक्षित ! कृष्ण जाको पालनकर ऐसी द्वारकापुरीमें जात भई २२ योगीको आश्रयलैकै चित्रलेखा है सो द्वारकापुरी में पलंग के ऊपर सोवै ऐसे जे अनिरुद्ध हैं तिन शोणितपुरमें लायकै सखी जो ऊपाहे ताय धारै कुं दिलावति भई २३ सुन्दर वर जो अनिरुद्ध है ताइ देखिकै प्रसन्न है मग जाको ऐसी जो ऊपा है सो पुरुष के देखिये में न आवै ऐसी जो अपनो घर है तामें अनिरुद्ध के संग रमण करति भई २४ वड़े मोलके बख्ख, माला, सुगन्ध, धूप, दीप, आसन इत्यादिकन सू और पीवे की सामग्री तथा भोजन और भक्षण वचन सं पूजन करति भई २५ ऐसे अनिरुद्धजी कन्याके पुरमें छिपकै निरन्तर वृद्धो है स्नेह जाको ऐसी जो ऊपा है ताने ठरी है इन्द्रिय जिन की ऐसे अनिरुद्धजी मोहित होइकै वास करत कितने दिन रात्रि चले जाइ हैं ऐसे नहीं जानत भये २६ यादवन में घोर जो अनिरुद्ध है ताने भोगी याही तें दूरि भयो है कन्यापन को व्रत जाको अरगन्तु भसव ऐसी जो ऊपा है ताके छिपाइये में न आवै ऐसे जो कारण हैं तिनकुं देखिके प्यादे हैं ते वाणसासुसुं आईकै कहत भये २७ हे राजन् वाणसासुर ! कन्याके कुलकुं दोष लगानवारो कुतस्त

तुम्हारी कन्या वो चलने है ताव हय देखे है २८ हे सपर्य वाणासुर ! हम सावधान होइकै घर के भीतर कोई पुरुष जाकुं देखिन सकै या प्रकार जाकी रखवारी करी ऐसी कन्या के दोषकुं नहीं जाने है कहीं तें होयगयो है २९ कन्या को दोष जाने सुन्यो याते बड़ो है दुःख त्रिके ऐसो वाणासुर शीघ्रही कन्या के घरमें जायकै यादवन में उत्तम जे अनिरुद्ध हैं तिनकुं देखत भयो ३० कामदेव के पुत्र त्रिभुवन में एक सुन्दर श्यामस्वरूप पीताम्बर कूं पहिरे कमल से नेत्र बड़ी जिनकी युजा काननमें कुण्डल और केश जिनकी कान्ति सूं और मुसिकानिपूर्वक चितवनि सूं शोभायमान जिनको मुख ३१ सब ओर तें मङ्गलरूप जो प्यारी है ताके सङ्ग पासे खेलें हैं ता प्यारी के अङ्ग सङ्ग सूं स्तनन की केसरि जामें लगी ऐसी जो वसन्तऋतु की चमेली की माला है ताव पहिरे ऐसे जे आनि-रुद्ध हैं तिन ऊपों के आगे बैठे देखिकै आश्चर्य मानत भयो ३२ शत्रून कू लिये अनेक प्यादेन सहित आयो जो वाणासुर है ताव देखिकै मधुवंशोत्पन्न अनिरुद्धजी लोहो को बड़ो उठाय के मारिने के

कन्यायाः कुलदूषणम् २८ अनपायिभिरस्माभिर्गुसायाश्च गृहे प्रभो ॥ कन्यायादूषणं पुंभिर्दुष्प्रेक्षायानविज्ञहे २९ नतः प्रव्यथितो वाणो दुहितुः श्रुतदूषणः ॥ तत्र रितः कन्यकागारं प्राप्सोऽद्राक्षीद्यदूहहम् ३० कामात्मजं तं भुवनैकमुन्दं रश्यामं पिशङ्गाभ्वरममुज्जेषणम् ॥ बृहद्भुजं कुण्डलकुन्तलत्विपास्मितावलोकनं चमण्डिताननम् ३१ दीव्यन्तमक्षैः प्रिययाभिन्मृणया तदङ्गसङ्गस्तनकुङ्कुमसज्जम् ॥ बाह्वोर्दधानं मधुमाल्लिकाश्रितां तस्याग्रआसीनमवेक्ष्य विस्मितः ३२ सतं भविष्यन्माततायिभिर्भैरनां रुवलोक्त्यमाधवः ॥ उद्यम्यमौर्व्वर्षं परिधंवस्थितो यथान्तकोदण्डधरो जिघांसया ३३ जिघृक्षया तान्परितः प्रसर्पतः शुनो यथासूकरयूथपोऽइनत ॥ ते हन्यमाना भवनाद्धिनिर्गतानि भिन्नमूर्द्धोरुभुजाः प्रदुदुबुः ३४ तं नागपार्श्वैर्धलिनन्दनो वलीघनन्तं स्वसैन्यं कुपितो बबन्ध ह ॥ ऊपाभृशं शोकविपादविह्वलावद्धं निशम्याश्रु रुलाक्षरौ दिपीत् ३५ इति श्रीमद्भगवत महापुराण दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धेऽनिरुद्धवन्धनो नामाद्विपष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ अपश्यतां चानिरुद्धं तद्वन्धूनां च भारत ॥ चत्वारो वापि क्रमासावतीयुस्तु शोचताम् १ नारदात्तदुपाकरणं वार्तावद्धस्य कर्म च ॥ लिये जैसे दण्ड कूं धारण करिकै काल दौरै है तैसे डाढ़े होत भये ३३ पकरिये के लिये चारथो ओर तें चले आवैं ऐसे जो प्यादे है तिनै सूकरन के युयको पालन करनवारो जो मुख्य सूकर है सो जैसे कुत्तान कूं मारे है ऐसे मारत भये मार जिनकुं दीनी याही तें दूड़े है पाये ऊरु भुजा जिनकी ऐसे जे प्यादे हैं ते निकसिके भाजत भये ३४ राजा बलि कूं आनन्द को देनवारो ऐसो जो चली वाणासुर है सो क्रोध करिकै अपनी सेना कूं मारे जो अनिरुद्ध है ताव रस्सान तें बाधत भयो ता सपर्य अत्यन्त जो शोक और खेद तिनसूं व्याकुल आम् जो के नेत्रनमें आयागये ऐसी जो ऊपा है सो वो अनिरुद्धजी कूं देखिकै रोवति भई ३५ इति श्रीमन्महाभागवतार्थकृत्यायां दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे अनिरुद्धवन्धनो नामाद्विपष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥ \* ॥ \* ॥

( त्रिगुणपटितमेवाथवाणयाटवसहरे ॥ स्तुतिज्वरेण रुद्रेण वाणवाहूभिर्दोहरेः १ तिरसठनं आयय में वाणासुर और यादवों के युद्धमें महादेवजी के डारसूं वाण सुर की भुजा काटनेवाले कुण्णजी की स्तुति वर्णित है १ ) अथ श्रीशुबदेवजी कहें हैं हे भरतवंशात्पन्न राजा परीक्षित ! अनिरुद्ध के देखे बिना भयथा वन्धुन कूं शोच करत क्यों के चार महीना बीतत भये ? ता समय

नारदजी तें अनिरुद्धजी के दन्धनसौ ६ मी और बात सप्त श्रवण करिके श्रीकृष्णचन्द्र हे देवता जिनके ऐसे जे यादव हे ते बाणासुर के शोखितपुत्र के जात भये २ भयुक्त युयुधान गद् साभ्य सारण नन्द उपनन्द और भद्रा तें आदित्यके रामकृष्ण के आज्ञाकारी मुख्य मुख्य यादव हे ते सम्पूर्ण मिलिके बारह अक्षौहिणी सेना संग नागानुरके पुर कूं चाख्यो और ते लेमतभये ३ । ४ यादवन ने बाणासुर के पुर के तोड़े जो बाग परकोटा अंदागी दरवाजे तिनकूं देविके क्रोधमें भरिके बारह अक्षौहिणी सेनालैके बाणासुर निकसतभयो ५ बाणासुर के लिये आगे पुत्र ने स्कन्द हे तिनकूं और गणनकूं सङ्गलैके नादिया पै चढिके रामकृष्ण तें युद्ध करिये के लिये भगवान् शिवजी आयके प्राण होतभये ६ दे राजन् परीक्षित ! श्रीकृष्णचन्द्र और शिवजी से बडो भयानक और युद्ध होतभयो कैसो रोमाञ्च ठाढ़े होई ऐसो आश्चर्य युद्ध होतभयो और मधुमक्षो स्वागिकार्थिक को युद्ध होत भयो ७ कुम्भापट और कूर्मर्षी ओ युद्ध लडेवकी के सप्तभयो श्रीकृष्ण

प्रययुः शोषितपूरं वृष्णयः कृष्णदेवताः २ प्रद्युम्नो युयुवागश्च गदः मास्वोऽवसारणः ॥ नन्दोपनन्दश्च द्यागमकृष्णानुमर्त्तिनः ३ अक्षौहिणीभिर्दादरा भिः समेताः सर्वतोदिशम् ॥ रुधुर्नाणनगरं समन्तात्सात्वतर्षभाः ४ मज्यमानपुरोद्यानमाकाराह्वलगोपुरम् ॥ भक्षमाणोरुमादित्यस्तुल्यसेन्योऽभिनिय यौ ५ बाणार्थभगवान् रुद्रः समुनैः प्रमथैर्हतः ॥ आरुहानन्दिवृषमं युधुधेरामकृष्णयोः ६ आसीरसुतमुलं युद्धमश्नुनरोमहर्षणम् ॥ कृष्णशङ्करयोरानजन् प्रद्युम्नगुहयोरपि ७ कुम्भाशङ्कुकपक्वण्भ्यां बलेन सहसंयुगः ॥ साम्भ्यस्य बाणपुत्रेण बाणेन सहसात्यकेऽनन्तादयः सुराधीशामुनयः सिद्धचारणाः ॥ ग न्धर्वाप्सरसो यक्षा विमानैर्द्रुमाग्रमन् ६ शङ्करानुचराज्ज्छौरिर्भूतप्रमथगुह्यागन् ॥ डाकिनीयातुधानांश्च वेतालान्ममविनायकान् १० प्रेतमातृपिशानांश्च कूष्माण्डान् चक्रराक्षमान् ॥ द्रावयामास तीक्ष्णाग्निः शरैः शार्ङ्गधनुश्च्युतैः ११ पृथग्विधानि प्रायुक्त पितृकथस्त्राणि शाङ्गिणे ॥ प्रत्यक्षैः शंभयामास शाङ्गिपाणिर्विस्मितः १२ ब्रह्मास्त्रस्य च ब्रह्मास्त्रं वायव्यस्य च पार्वतम् ॥ आग्नेयस्य च पर्जन्यं नैऋण्यस्य च तस्मिन् नैऋण्यस्य च पर्जन्यं १३ मोहयित्वा तु गिरिशं जृम्भणस्त्रिणजं के पुन साम्भ्य को बाणासुर के पुत्रके सङ्ग होतभयो और बाणासुर को सात्यकी के सङ्ग युद्धभयो ८ देवतान में मुख्य जे ब्रह्मादिक हे ते और मुनि सिद्ध चारण गन्धर्व असुर यज्ञ ये सम्पूर्ण विमानन में वैदिके युद्ध देवित्वे कू आतभये ९ ता समय शङ्कर महादेवके अनुचर जे भूत प्रेत गुप्तक डाकिनी यातुधान वेताल विनायक प्रेतमातृ पिशाच कूष्माण्ड ब्रह्मगन्तस इन सा के शूरवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र अपने शार्ङ्ग धनुष में तें निहासि के पैनी हे भाल जिनकी ऐसे बाणगूं भजावत भये १० । ११ पिताक नाम धनुष् है विप्रमान जिनके ऐसे शिवजी श्रीकृष्णचन्द्रके ऊपर न्यारे न्यारे शस्त्र चलावतभये नहीं है आरचर्य जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शिवजी कूं परागिरि के स्थान में शान्त करतभये १२ शिवने ब्रह्मास्त्र चलायो ताहूं ब्रह्मास्त्र तें शान् करतभये जन वायु है देवता जाको ऐसो अस्त्र शिवजीने चलायो तब श्रीकृष्णचन्द्र पर्वतहै देवता जाको ऐसे अस्त्र कूं चलावत भये ता समय धर्मिगयो परचत् अग्नि है देवता जाको ऐसे अस्त्र कूं चलायकै शिवजी अग्नि लगावत भये ता समय श्रीकृष्णचन्द्र पैहैं देवता जाको ऐसे अस्त्र कूं चलायत भये ता समय पराशुराज और शिवजी अग्नो पाशुपत पर चलावत

भये तां श्रुत्वा चन्द्र अपने नारायणात् सं शान्त करतभये १३ फेरि श्री कृष्णचन्द्र ने जृम्भणात् चलायो तां शिवजी जम्भार्द्धलाई तासूं मोहित करि कै वाणासुरकी सेनाई तरवारि गदा नखान  
मारतभये १४ मयुजजी के वाणन के समूहन तें चाम्यो ओर तें भीड़ित ऐसी जो रमायिका विवेक है सो अपने अङ्गन में तें लखिर वहावत वाहन जो मोर है ताई भजाय कै रथमें तें भाजत भयो  
१५ कुम्भारखड और रूपकण हैं ते मूसल के मारे पृथ्वीमें गिरतभये तब गरे हैं स्वामी जिनके ऐसी जो उनकी सेना है सो सम्पूर्ण भाजति भई १६ अपनी सेनाई जहा तथा बिलरी देखि कै बड़ी है  
असहगता जो के ऐसी स्त्री वाणासुर है सो संग्राम में सात्यकी याद के खोडि के श्री कृष्णचन्द्र के सम्मुख आगतभयो १७ रथमें बड़ी है गद जा के ऐसी वाणासुर ५०० पञ्चशत धनुष कू एक सत्र  
नैचि के पृत्त पत्त मृगु पैं दो दो वाण लगावत भयो १८ ता समय भगवान् श्री कृष्णचन्द्र वाणासुर के ५०० पञ्चशत धनुष कू एक सत्र अपने धनुष कू काटतभये फेरि वाणासुर के रथवान् के  
स्मिभनम् ॥ वाणस्पृननां शौरिर्जघाना गिगदेपुभिः १४ रक्तन्दः प्रहृष्टवाणौ घोर्यमानः समन्ततः ॥ असृग्विमुञ्चन् गजैर्भयः शिलिनऽप्याक्रमद्वयात् १५  
कुम्भारखडः रूपकणश्च पेततुर्मुमलाहितौ ॥ डडुवस्तदनी कानि हत चाथानि सर्वतः १६ विशीर्यमाणं स्रग्वलं दद्वानाणोऽयमर्पणः ॥ कृष्णमभ्यहनत्पक्ष्ये  
रथीहितैव सारयकिम् १७ धनुं ग्राह्ययुगपद्वाणः पञ्चशतानि ॥ एकैस्मिञ्चरौ दौढौ सन्दधेरण्डुर्मदः १८ तुगेऽतस्त्वेकृणस्य पुत्रप्राणरिक्षया २० तवस्तिर्यङ्मुखो  
रिः ॥ सारिंरथमश्वांश्च हत्वा शङ्खमपूरयत् १९ तन्माता कोटगनाम नगनामुक्रशिरोरुहा ॥ पुगेऽतस्त्वेकृणस्य पुत्रप्राणरिक्षया २० तवस्तिर्यङ्मुखो  
नगनागनिरीक्षन् गदाग्रजः ॥ वाणश्च तावद्विशिखन्नयन्वाऽविशत्पुंसम् ॥ माहेश्वरो वैष्णवश्च युयुभतेज्जरावुगौ २३ माहेश्वरः समाकन्दन् वैष्णवेन वलाहितः ॥ अलङ्घ्या  
शोदश २२ अथ नारायणो देवस्त्वं दद्वान्यसृज्ज्वरम् ॥ शरणाभीहृषीकेशं तुष्टावप्रयताञ्जलिः २४ ॥ ज्वरउवाच ॥ नमामित्वाऽनन्तशक्तिपरे शं सर्वान्मानं हेवलं क्षिमाञ्जय ॥ नि  
ऽभयमन्यत्र भीनो माहेश्वरो ज्वरः ॥ शरणाभीहृषीकेशं तुष्टावप्रयताञ्जलिः २४ ॥ ज्वरउवाच ॥ नमामित्वाऽनन्तशक्तिपरे शं सर्वान्मानं हेवलं क्षिमाञ्जय ॥ नि  
योडानकं गारिकै रथकं तोरिकै जीतको शय्ज्ज्वरमभये १९ ता समय कोटरा है नाम जाको ऐसी जो वाणासुर की माता है सो अपने केशनकू खोलि कै नङ्गी होय कै पुत्र के माण वचायने के लिये  
श्री कृष्णचन्द्र के सम्मुख दाही होति भई २० नङ्गी खीकूं शखमें देखि को मन है या मारण श्री कृष्णचन्द्र मुख फेरि कै दाहे होतभये इतने में दूखो है रथ जाको दूखो है धन्य जाको ऐसी वाणासुर  
रथमें तें भाजि कै पुरों जानभयो २१ भूतन के गण जा समय भाजि गये तब तीनों हैं शिर जाके और तीनि हैं पाव जाके ऐसी जो ज्वर है सो दाशो दिशान में जरावत दाश हैं शोत्पन्न जो श्री कृष्णचन्द्र  
हुइ तरतभये २३ विष्णु के शीतजग ने चलते पीडा जाकूं दीनी ऐसी जो शिवजी को तप्तज्वर है सो रोदन करत भयभीत होय कै अपनी रक्षा के अर्थ ओर कोई निर्भय स्थान नहीं पाय के परग  
पा नगीहो कर हाथ जोरि कै श्री कृष्णचन्द्र की स्तुति करतभयो २५ अतन्व है शक्ति जिन भी ब्रह्मादिकन के ईश्वर सभ के आत्मा तुम्ह चैतन्यमन विश्व के उत्तमोत्तम पालन संहार करन गारे



ऐसे जे तुमहो तिनकुं नमस्कार करू हूं विश्वो उतगदन पालन संहार ब्रह्म ते होयहै मोते नहो जे ऐसे श्रीकृष्ण कहै ताको उत्तर उवर देइ है वेद जाको वर्णन करै ऐसी जो ब्रह्म है सो तुमही हो सर्वधिकार रहित हो यत् कहे में नहो यावो हो २५ काल दैव कर्म जीव स्वभाव द्रव्य स्पर्श रूप रस गन्ध शरीर प्राण अहङ्कार विकार अर्थात् ग्यारह इन्द्रिय और पञ्चमहाभूत अर्थात् पृथ्वी अप तेज वायु आकाश इन तत्त्वको वनो यह देहहै सो जैसे वीज तें अंकुर फेरि बीज होइ है या प्रकार कर्मन तें देह फेरि कर्मन तें देह ऐसे जलको सो प्रवाह चल्यो जायहै यही तुम्हरी मायाहै ताके निषेध के अवधिहो अर्थात् माया जिनमें नहो ऐसे तुमही तिनकी शरण में आयो हूं २६ कदाचित् कहो कि मैं देवकी को पुत्रहो ऐसी मो मैं कैसे बने है ताको उत्तर कहै है लीला करि है मत्स्या दिक अवतारनकुं लै के देवतान को पालनकरो हो तथा वर्णाश्रम के धर्मन कूं पालन करो हो और धर्म के करनवार जे साधु हैं तिनको पालन करो हो विसासहित जो पापमार्ग हैं तिनको नाशकरो हो या कारण पृथ्वी को बोझ उतारि के लिये तुम्हरो जन्महै २७ शान्ति करि के आवै शीतल उग्र अत्यन्त भयानक जो तुम्हरो

पालन करो हो विसासहित जो पापमार्ग हैं तिनको नाशकरो हो या कारण पृथ्वी को बोझ उतारि के लिये तुम्हरो जन्महै २७ शान्ति करि के आवै शीतल उग्र अत्यन्त भयानक जो तुम्हरो

स्वोत्पत्तिस्थानसंरोधेत्तु यत्तद्ब्रह्मब्रह्मलिङ्गं प्रशान्तम् २५ कालोद्वेककर्मजीवः स्वभावोद्वेकश्रेष्ठप्राण आत्माविकारः ॥ तत्सङ्घातो बीजरोहप्रवाहस्त्वन्मायैषा तन्निषेधं प्रपद्ये २६ नाना भावैर्लीनैर्भावोपभेदैर्देवान्माधूलोके सेतून् विभर्षि ॥ हंस्युन्मागर्गान् हिंसया वर्त्तमानाञ्जन्मैतत्ते भारहारायभूमेः २७ ततोऽहं ते जसा दुःसहेन शान्तोऽप्रेषात्युल्लेखेन जरेण ॥ तावत्तापो देहिनां भेद्विभूले नो सेन न्यावदाशान् बद्धाः २८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ त्रिशिरस्तेन सन्नोऽस्मि व्येतु तेमज्ज्वराङ्गम् ॥ यो गौस्मरति भवादं तस्य त्वन्न भवेद्भयम् २९ इत्युक्तोऽव्युत्तमानम्य गतो माहेश्वरो जगः ॥ वाणस्तुरथमारूढः प्रागाद्योत्स्यञ्जनाईनम् ३० ततो वाहुसंक्षेपेण नाना युवधरोऽनुरः ॥ सुमोच परमकुद्धो वाणांश्चक्रा युधेनृप ३१ तस्यास्य तोऽस्त्राण्यसंस्कृतेण क्षुरनेभिना ॥ चिच्छेद भगवान्महू

जच्छाया इव न स्पतेः ३२ बाहुपुच्छद्यमानेषु वाणस्य भगवान्भगवः ॥ भङ्गानुक्रम्युत्तमज्य चक्रा युधमभापन ३२ ॥ श्रीरुद्र उवाच ॥ त्वंहि ब्रह्म परं ज्योतिर्गूढं तेन रूपेण ज्वरहै तासूं भें तपायमान भयो हूं देहगरीनकुं तवहीताऽ तापहै जवलों आशा वाधिकै तुम्हारे चरखके तस्वाको सेवन न करै २८ अत्र श्रीभगवान् कहै है तीन शिरके ज्वर ! तेरे ऊपर भें प्रसन्न भयो हूं मेरे ज्वरते तेरो भय जातरहो और जो पुरुष तेरे हमारे संवादकूं कहे वाकूं भयमतिदी जो २९ या प्रकार जातें कही ऐसी जो माहेश्वर ज्वरह सो श्रीकृष्णचन्द्र कूं नमस्कार करि कै जातभयो परवात् वाणासुर रथमें बैठिकै श्रीकृष्णचन्द्र तें युद्ध करि के लिये आवतभयो ३० हजार भुजान में अनेक प्रकार के शस्त्रन कूं धारण करे जो वाणासुर है सो वडो क्रोध करिके है राजनपरीक्षित ! बक्रहै शस्त्र जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर शस्त्रनकूं छोड़तभयो ३१ निरन्तर शस्त्रनकूं चलावै ऐसी जो वाणासुरहै ताकी भुजान कूं भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र छुराकी तुल्यहै पैनी धर जाकी ऐसे चक्रसू जैसे माली वृत्तकूं छाँटै है ऐसे छांटतभयो ३२ वाणासुरकी भुजा काटिगई ता समय भक्त वाणासुर के ऊपर कृपा है जिनकी ऐसे जो भगवान् शिवाजी है सो आयकै चक्रहै हथियार जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तें बोलतभयो ३३ अब शिवाजी स्तुति करै है परब्रह्म ! तुम्हारे विना जाने यह वाणासुर युद्ध करै है यामें आश्चर्य नहो है या कारण वाणीमा जो वेदहै तामें

तुम विषेभये परब्रह्महौ और उयोति सूर्यादिकनके तुम प्रकाश करनवारे यातें काहू के जानिये में नहीं आयेहौ कदाचित् कहो तो कैसे प्रतीत होय है तहां शिवजी कहे हैं निर्मल हैं मन जिन के ऐसे पुरुष आकाशकी तुल्य निलेप निर्गुण तुम देखे हैं ३४ क्यों जी निर्गुण को ज्ञान तो रहो तब शिवजी कहे हैं लीला करिके तुमने आश्रय करयो जो ब्रह्माण्ड है सो भी जानिये में नहीं आवे है जैसे गूलरके फल के भीतर रहै जे जीवहैं ते गूलरके फलकूं नहीं जाने हैं तैसे या अभिमाय से ब्रह्माण्ड रूप करिके शिवजी स्तुति करे हैं आकाश तुम्हारी नाभिहै अतिन तुम्हारी मुखहै जल तुम्हारी वीर्यहै स्वर्ग तुम्हारी शिरहै दिश तुम्हारे कान हैं पृथ्वी तुम्हारे चरणहै चन्द्रमा मनहै और सूर्य तुम्हारे नेत्र है में शिव तुम्हारी आत्माहै समुद्र तुम्हारी उदर है इन्द्र तुम्हारी मुखा हैं ३५ वृत्त जिनके रोमहैं मेघ केशहैं ब्रह्मा जिनकी बुद्धिहै प्रजापति लिङ्ग है धर्म जिनको हृदय है लोकन करिके कल्याण करिये में आवो ऐसे तुम पुरुष हो ३६ सो हे अलण्डरूप ! यह तुम्हारी अतार धर्म की रक्षा करिये के कारण और जगत् के कल्याणके निमित्त है और पालन जिनको तुमने कियो ऐसे हग सत्तनोक्तन को पालन करे हैं ३७ जाग्रत् स्वम सुषुप्ति

ह्यणिवाद्ये ॥ यंपश्यन्त्यमलात्मानआकाशमिवकेवलम् ३४ नाभिर्नभोऽग्निर्मुखमम्बुतोद्यौःशीर्षमाशाःश्रुतिरङ्घ्रिरुन्धौ ॥ चन्द्रो मनोयस्यहृगर्कञ्चात्मा अहंसमुद्रोजठंभुजेन्द्रः ३५ रोमाणि यस्यौषधयोऽम्बुवाहाः केशाविस्त्रिधिविषणोविसर्गः ॥ प्रजापतिर्हृदयस्यधर्मः सवैभवात्पुरुषोलोककल्पः ३६ तवावतारोऽयमकुण्डधामन् धर्मस्यगुणैर्यजगतोभवाय ॥ वयञ्च सर्वे भवतानुभाविता विभावयामोभुवनानिसप्त ३७ त्वमेकआद्यःपुरुषोऽद्वितीयस्तुभ्यः स्वहृग्धेतुरहेतुरीशः ॥ प्रतीयसेऽथापियथाविकारं स्वमाययासर्वगुणमसिद्धौ ३८ यन्मायामोहितधियः पुत्रदागृहादिषु ॥ उन्मज्जन्तिनिमज्जन्ति प्रसङ्गावृजिनार्णवे ३९ देवगुणेनापिहितोगुणांस्त्वमात्मपदीपोगुणिनश्चभूमन् ३६ यन्मायामोहितधियः पुत्रदागृहादिषु ॥ उन्मज्जन्तिनिमज्जन्ति प्रसङ्गावृजिनार्णवे ३९ देवदत्तमिमलब्ध्वा नृलोकमजितेन्द्रियः ॥ योनाद्रियेतत्पदादौ सशोच्योह्यात्मवञ्चकः ४१ यस्त्वाविमृजतेमर्त्यआत्मानंप्रियमीश्वरम् ॥ विपर्ययेन्द्रियार्थाधि

तीन हैं अवस्था जिनकी ऐसे जे पुरुष है तिनके तुम कारणहौ और शुद्धहौ याही तें अद्वितीय पुरुष हौ और सन विश्वके कारण हौ आप कारण करिके रहितहौ तथापि सम्पूर्ण विषय है तिनके प्रकाश करिये के लिये अपनी माया करिके जैसो जो देह तामें तैसही प्रतीत होउही ३८ अपनी व्याख्या जो वादर हैं तिन सों मनुष्यन कुं दृष्टि करिके दृश्यो जो सूर्य है सो वादरन कुं प्रकाशे है और वादरनके वाहर रूप हैं तिनकुं प्रकाशे है हे भूमन् ! या प्रकार अहङ्कार जो अग्नो कार्य है तामूं जीवनके देखिये में दृके जो तुमहो सो प्रकाशो हौ सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुणहैं तिनमें और जे गुणहैं उपाधि जिनकुं ऐसे जे जीवहैं तिनकुं प्रकाशो हौ ३६ जिनकी माया करिके मोहित हैं बुद्धि जिनकी ऐसे पुरुष है ते पुत्र स्त्री शुशुदिकन में अटकिके दुःखरूपी समुद्र में डकरे दूधे हैं देवादिक योनिन कुं पावें हैं यह डकरनो है और वृत्तादिक योनिनकुं पावें हैं यह डूवनो है ४० ईश्वरने दीनी जो मनुष्य योनि है तांय प्राप्त होयके नहीं जीती है इन्द्रिय जाने ऐसो पुरुष तुम्हारे चरणनको आदर नहीं करेहैं वह पुरुष शोच करिये योग्यहै और आत्माको उगनवारो है ४१ प्यारे पुत्रादिकन के लिये जो पुरुष प्यारे जो तुम आत्मा हौ तिनकुं

त्यागे है वह पुरुष अमृतहूँ त्यागिकै निपकूँ पीवै है ४२ मैं शिव और ब्रह्मा देवता तथा निर्मल हैं अन्तःकरण जिनके ऐसे मुनि हैं ते आत्मा प्यारे जो ईश्वर तुमहो तिनकी राय प्रकार करिके शरण प्राप्त भये है ४३ जगत् के उत्पत्ति पालन नाश इनके कामगु और सबमें समान शान्तस्वरूप हितकारी आत्मा ईश्वर अनन्य और छोड़ि बसवति जिनकी नहीं बड़ी कोई नहीं जगत् के आत्मा आश्रय ऐसे जो तुमदेवहो तिनैं संसार त्यागित्वेके लिये हम भजे है ४४ हे प्रकाशमान ! यह वाणसुर मोकूँ वाञ्छित है भरो प्यारो है आत्माभी है मेने याहूँ अभय दीनो है यातें जैसी तुम्हारी दैत्यनके पति प्रह्लाद के ऊपर छुपाहै ऐसी याके ऊपर कृपा करौ ४५ तब श्रीभगवान् कृष्णजी बोले हे शिवजी ! तुम हमतें कहौ सो तुम्हारी प्रिय हम करेभे गुमने जो निश्चय करचो सो हमने भले प्रकार मान्यो ४६ विरोचनके पुत्र राजा बलि तिनको पुत्र यह वाणसुर है सो मारिवे योग्य नहीं है कोहे ते मेने प्रह्लाद को बर दीनो है कि तेरे बर में जो होयगो ताहुँ मैं

विप्रप्रत्यमृतं यजन् ४२ अहं ब्रह्माऽयं विबुधा मुनयश्चागलाशयाः ॥ सर्वोत्तमनाप्रपन्नास्त्वामात्मानं प्रेष्ठमीश्वरम् ४३ तं त्वाजगत्स्थित्यदुद्यान्तहेतुं समं प्रशा-  
न्तं सुहृदात्मदैवम् ॥ अनन्यमेकं जगदात्मकेन भगवत्पुत्रैर्गोपि भजामदेवम् ४४ अग्रं मे प्रोदयितोऽनुवर्त्ती मयाऽभयं दत्तमस्युपदेव ॥ सम्पाद्यतां तद्भवतः प्रसा-  
दो यथाहि ते दैत्यपतौ प्रसादः ४५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यद्वाऽऽस्त्य भगवंस्त्वन्नः करवा मपि यंतव ॥ भवतो यद्वचसि तं तन्मे साधनुमोदितम् ४६ अवधोऽयं  
ममाप्येपैवैरोचनि सुतोऽसुरः ॥ प्रह्लादाय वरोदत्तो न वधो योगे तवान्नयः ४७ दर्पोपशमनायास्य प्रवृक्कणावाहवो मया ॥ सूदितं च वलं भूरियच्च भारागितं भुवः  
४८ चत्वारोऽस्य भुजाः शिष्टा भविष्यन्त्य जराधराः ॥ पार्षदमुखो भवतो न कुतश्चिद्रथोऽसुरः ४९ इति लब्ध्वाऽभयं कृष्णं प्रणम्य शिरसाऽसुरः ॥ प्राद्युम्नि  
रथगारं णा सर्वधाममुपानयत् ५० अक्षौ हि यथापरिवृतं सुवासः समलङ्कृतम् ॥ सपत्नीकं पुरस्कृत्य ययौ रत्नानुमोदितः ५१ स्वराजधानीं समलङ्कृतं ध्वजैः सतो  
रणैरुक्षितमगर्गचररात् ॥ विवेश शङ्खान् कटुद्विगिस्त्रैरभ्युद्यतः पौरमुहूर्त्तं विजातिभिः ५२ य एवं कृष्णविजयं शङ्करेण च संयुगम् ॥ संस्मरेत्पानरुत्थाय  
नतस्मरस्यात्पराजयः ५३ इति श्रीमद्भागवतमहापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धेऽनिरुद्धानयनं नाम त्रिपष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥ ॐ ॥ ॐ

नहीं मान्यो ४७ फेरि कृष्ण कहन थये कि याको गर्व करिवे कि मे मेने याकी हज्जार भुजा काटी हैं और पृथ्वी पै जो बोझ होय रहो है सो मैंने दूरि करि दियो है ४८ कटिवे तें चार भुजा के बाकी रह्यो ते अदर अपर होईगी और यह दैत्य नागासुर नहीं बहूते है भय जाकूँ ऐसो तुम्हारे पार्षदनमें मुख्य होयगो ४९ याप्रकार अभय पायकै वाणासुर श्रीकृष्णचन्द्रकूँ चारचार प्रमाण करि है ऊपरतकिन सनिकुदकूँ रथमें बैठाकरिके निदा लगनभयो ५० अक्षौहिणी सेना जा के संग तुम्हारे वक्त्रनमूं शोभायमान ऐसे स्त्रीसहित जो अनिरुद्ध हैं तिनहुँ आगे करिके शिवजीने अनुमोद जिनको करग प्ये श्रीकृष्णचन्द्र जातभये ५१ तोरणन सहित जे ध्वजा हैं तिनहुँ शोभायमान मार्गमें तथा चौराहेन में छिरकाउ जावें होइ रह्यो ऐसी जो अपनी द्वागपत्ती राजधानी है तामें पुरवाली सुहृद् अक्षयनतें सन्चार जिनने पायो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो शङ्ख डोल नगाड़ेनके जो शब्द हैं तिन सहित प्रवेश करतभये ५२ यह जो श्रीकृष्णकी जीतहै ताय और श्रीकृष्णको शिव

भी को शुद्ध है तोय जो पुरुष प्रातः सपय उठिके रपरण करै है चाही नथ ऊं द्वार नहीं होय है ५ ॥ इति श्रीमन्महाभागवताख्यगीषयादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे उपाचरित्रद्वयेनेत्रिपष्ठितोऽध्यायः ६३ ॥  
( चतुः पष्ठितोऽध्यायः पादमोचपय ॥ अस्मत्स्वहृदिदोषोक्तयाराहोदयानशित्यक्तु ? विभूतिभाग्यभोगादिमदोषद्वयमनोरथान् ॥ अन्यथासगदून्कुणोद्योगोद्धान्यतन्नात् २ चौसठवें अध्याय में दृष्टगुणी दृष्टजी को शापदूँ छुड़ातेथय और ज्ञाप्यगुणी द्रव्यके हर्नेपाले दोषोंकी उक्तिद्वय अपिपानी राजाओं को शिक्षा देतेभये १ विभूतिभाग्यभोगादि मददूँ उद्यद्वय मनोरथपाले यदुद्वंशियों को कुण्णभी दृष्टाने उद्यारेते प्रसंगधूँ शिक्षादेतेभये २ ) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! एक समय साम्य प्रद्युम्न चारु भानु मद इत्यादिक यादवनके पुत्रहैं ते विहार करिवेके निमित्त वनभ जातभये ? ता रगों बहुत देरताई कोडा करिके ध्यास जिनकूँ लगी ऐसे यादवनके पुत्र हैं ते जल दूँ हूँइत विना जलको दूग है तामें अतुल एक जीव परयो देखत भये २ पर्वत की

श्रीशुकउवाच ॥ एकदोषवनराजज्ञागुर्यदुहुमारकाः ॥ विहर्तुसाम्यप्रद्युम्नचारुभानुगदादयः १ क्रीडित्वासुचिरंतत्र विनिवन्तः पिपासिताः ॥ जलानिरुद्धेऽकूपे ददृशुः पचत्रगद्गतम् २ कुकलासंगिरिनिभं वीक्ष्यविस्मितमानसाः ॥ तस्यचोद्धरणेयत्वं चक्रुस्तेरूपयाऽन्विताः ३ चर्मजैस्तान्तवैः पाशैर्वद्धाऽपतितगर्भैः साः ॥ नाशकुवचमुद्धर्तुं कृष्णयात्रख्युस्तमुकाः ४ तत्राऽऽगत्याविन्दाक्षो भगवान्निश्वभाव्रनः ॥ वीक्ष्योज्जहारवामेन तं करेणसलीलाया ५ सउत्तमश्लोककशोभिमुष्टोविहायराद्यः कृकलासरूपम् ॥ सन्तसत्रामीकरचारुवर्णः स्वर्ग्यद्भुतालङ्कारणाम्बरस्रु ६ पप्रच्छविद्वानपितन्निदानं जनेषु विख्यापयितुंमुकुन्दः ॥ कस्तवंमहाभागवरेण्यरूपोदेवोचभंतांगणयामिन्नम् ७ दशमिमांवाकतयेनकर्मणा सम्प्रापितोऽस्यतदर्हः सुभद्र ॥ आत्मानमाख्याहिविविस्तरांनोयन्मन्यसेनः क्षममत्रवज्रम् ८ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इतिस्मराजसंष्टः कृष्णेनाननमूर्त्तिना ॥ माधवंप्रणिपत्यहृ किंभीटेनार्कवर्चै

चराचरि जो कटवेडा है तोय देखिके आनन्दयुक्त हैं मन जिनके कुण जिनकूँ आइ गई ऐसे जे यादवन के बालक हैं ते रुक्रेटा के निकगिने को उपाय करतभये ३ बालक हैं ते गिरचो जो करकेटा है तोय चाम के ओर तूत के रस्मान दूँ वधिके निगसिगे दूँ नहीं समर्प होतभये तब उत्कण्ठायुक्त जे बालक हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र तें आइके कहत भये ४ पित्रवके करनचारे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो तदा आइके करकेटा कूँ देविके लीला करिके वायें हाथ ते निकासतभये ५ उत्तम है यशजिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के हाथ लगे तें शीघ्रही करकेटा के रूपकूँ त्यागि कै तप्त सुमर्गकी तुल्य सुन्दर रंग जाओ अद्भुत आयूपण बल मालानन्द धारण करे देवसनका धेत भयो ६ मुक्ति के देनचारे श्रीकृष्णचन्द्र ताके करकेटा होइने के कारण दूँ मानेभी हैं परन्तु जनन में विख्यात करिवेके निर्गत पूंजनभये हे वदभागी ! ७ है रूप तेरो ऐसो तू कौन है मैं तो दूँ देवतान में उत्तम निश्चय देवता मानूँ हूँ ७ हे मंगलरूप ! या लायक तू नहीं है कौन कर्म तें तो दूँ करकेटा की योनि प्राप्त भई जो हगकूँ कहने योग्य मानो हो तो जानो चाहे जो हम हैं तिनके आगे अपनोरूप कहो ८ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! अनन्तदृष्टिं जिनकी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र

ये या प्रकार धुँदलो ऐमो जो राजा नृग है सो सूर्य की तुल्य है तेज जाको ऐसे किसी संश्रुणचन्द्रकू मणाम करिकै वीलतभयो ६ राजाभुग कहेहै है सपर्य १ म इच्छाकुको पुत्र नृग नाम राजा है दानी राजान की बात चली होयगी तब मेरो नामहू आपके कानमें परो होइगो १० हे नाथ ! सब प्राणीन की बुद्धि के सार्त्ती तुम हो सो कदा जानो हो करिकै ज्ञान जिनको तादित नहीं भयो है तथापि तुमने वृक्षी है तो तुम्हारी आज्ञा तें कहूँगो ११ हे नाथ ! जितनी पृथ्वीकी रेणुका हैं और जितने आकाश में तारागण हैं तथा जितनी वर्षा की धूँदै हैं तितनी गौवनयो मेने दान कत्तो है १२ दूध देनवारी तरुण जिनकी अवस्था शील रूप गुण जिनमें विद्यमान कपिला और नीतिपूर्वक संचय करी सुवर्ण मूं सोन और रूपे मूं खुर जिन के मड़े वखरा जिनके सग और वज्र माला गहनेनकू पहिरे ऐसी गौवें देत भयो १३ भले प्रकार शोभायमान गुण शील जिन में विद्यमान दध्रविना दुःखित कुटुम्बी पासण्डरहित हैं आचार जिनके तपस्या करिकै मसिद्ध वेदकू

सा १ ॥ नृगउवाच ॥ नृगोनामनेन्द्रोऽहमिक्षाकुतनयःप्रभो ॥ दानिष्ठाख्यायमानेषु यदितेकर्णमस्पृशय १० किन्तुतेऽविदितंनाथ सर्वभूतात्मसाक्षिणः ॥ कालेनावपाहनदृशोवक्ष्येऽगपितवाऽऽज्ञया ११ यावन्त्यगसिकताभूमेर्यावन्त्योदिवितारकाः ॥ यावन्त्येवपर्पधाराश्च तावतीरद्वंद्वमगाः १२ पयस्विनीस्तरुणीःशीलरूपगुणोपपन्नाःकपिलाहेमशृङ्गीः ॥ न्यायार्जिताल्प्यखुराःसर्वत्साडुकूलमालाभरणाददावहम् १३ स्वलङ्कृतेभ्योगुणशीलवद्भयःसीदत्कुटुम्बेभ्यश्चनव्रतेभ्यः ॥ तपःश्रुतब्रह्मादन्यसद्भयःप्रादांयुवभ्योद्विजपुङ्गवेभ्यः १४ गोभूहिस्त्रयायतनाश्चहस्तिनः कन्याःसदासीस्तिलरूप्यशय्याः ॥ वासांसिरत्नानिपरिच्यदात्त्रथानिष्टंनयज्ञैश्चरितंचूर्तम् १५ कस्यचिद्विजमुख्यस्य भृष्टागोर्भमगोधने ॥ संपृक्ताऽविदुपासाच भयादत्तादिजातये १६ तांनीयमानांतस्वामी दृष्ट्वैवाचममेतितम् ॥ ममेतिप्रतिग्राह्याह नृगोभेदत्तवानिति १७ विप्रौविवदमानौसामूचतुःस्वार्थसाधकौ ॥ भवान्दाताऽपहर्त्सति तच्छ्रुत्वाभेऽभवद्भ्रमः १८ अनुनीताबुभौविप्रौ धर्मकुच्छ्रगतेनवै ॥ गवांलक्षंप्रकृष्टानां दास्याभ्येपाप्रदीयताम् १९ भवन्तावनुगृह्णीतां किङ्करस्याविजानतः ॥

पदों तरुण जिनकी अवस्था ऐसे द्विजन में अष्ट ब्राह्मणनकू दान करिहै देतभयो १४ गौ पृथ्वी सुवर्ण महल घोड़ा हाथी इत्यादिक दानकरे और दासीनसहित कन्यादान करे तिल रूपा शय्या वज्र रत्न और आच्छादन के अष्ट वज्र स्थन के दानकरे यज्ञकरे कुर्यां तात्ताय यावली वनवाये १५ ऐसों में हों परतु गोभूं एक सङ्कट आय के प्राप्तभयो सो श्रवण करो कोई एक श्रयाचक्र प्राज्ञाण की गौ भाजिकै मेरी गौवन में मिलिगई वह गौ मने पिना जाने ब्राह्मण कू दान करिदीनी १६ वा गौ को गालिकै सो वा गौ कू ले जाती देखिकै यह गौ मेरी है या प्रकार कहत भयो दूसरो ब्राह्मण कहत भयो कि यह गौ मोहू राजा नृगने दान करिकै दीनी है १७ या प्रकार आपुस में विवाद करै अपने अपने प्रयोजनकू सिद्ध करयो चाहै ऐसे दोनों ब्राह्मण आयकै कइनभये जाकू दान करिकै दीनी ही यह ब्राह्मण कन्तभयो कि राजा तुही याको दाता है और जाकी गौ है कि कदा को दाता है विरानी गौ पुण्य कर है यह वाचा करिकै भोक् भ्रमभयो १८ धर्म में कष्ट जाकू प्राप्तभयो ऐमो जो म हू तने दोनों ब्राह्मणन की निन्ती करी कि महाराज वा गौ के चदले सुन्दरी सुन्दरी एक लत्त गौ देंओ यह गौ दीजिये १९ मैं तुम्हारी दासहूँ मैंने जानी नहीं

कि यह गौ तुम्हारी है मेरे ऊपर अनुग्रह करो धीरे नरकमें गिरूँ जो मैं हूँ ताकी कष्ट तें रक्षा करो २० हे राजन् दृग ! और तेरी ताल गौ मोऊं नहीं अपेक्षित है जो दान करि कै दीनी है सोई लेउंगो यह कहिकै जा ब्राह्मण कूँ गौ दीनी ही वह गौ कूँ त्यागिकै चरकूँ जात भयो २१ हे देवतानके देव जगत् के पालन करन वारे ! याके पीछे यमके दूत आयकै धर्मराजके पास मोऊं लैगये तथा धर्मराज ने मोसू पूँछी २२ हे राजन् दृग ! तुम्हारे दान और धर्मको लोकके प्रकाशको मैं अन्त नहीं देखूँ हूँ परन्तु यत्किञ्चित् तुम्हारी पाप है और सम्पूर्ण शुभ है सो मयम तुम पाप भोगोये अथवा शुभ २३ या प्रकार धर्मराज ने कबो तब प्रथम पाप भोगोयो ऐसे मैंने कबो ताही समय धर्मराजने आज्ञाकरी कि याकू गिराइ देउ कर देवाकी योनिमें श्रपनी रक्षाकरै हे प्रभो ! गिरतेही अगनो करके-टाको रूप देरात भयो २४ हे केशव ! ब्राह्मणनको भक्त दाता तुम्हारे दर्शनकी इच्छा जाके ऐसो मैं तुम्हारी दास हूँ ताकूँ अब पर्यन्त नहीं बल भई है २५ हे प्रभो ! योगेश्वर वेद रूप नेन करिकै

समुद्धरत मां कृच्छ्रात्पतन्तं निरयेऽशुचौ २० नाहं प्रतीच्छे वै राजन् त्रित्युक्ता स्याम्यपाक्रमत् ॥ नान्यद्द्रवामप्ययुनिमिच्छामीत्यपरोपयौ २१ एतस्मिन्नन्तरेयाम्येदुतैर्नीलोयमक्षयम् ॥ यमेन पृष्ठस्तत्राहं देवदेवजगत्पते २२ पूर्वत्वमशुभं सुउताहो नृपते शुभम् ॥ नान्तं दानस्य धर्मस्य पश्येलोकस्य भास्वतः २३ पूर्वदेवाशुभं सुअइति ग्राहपते तिसः ॥ तावद्वाजमात्मानं कृकलासं पतन्मगो २४ ब्राह्मणस्य वदान्यस्य तव दासस्य केशव ॥ स्मृतिर्नाद्यापि विप्रस्ता भवत्संदर्शनायिनः २५ सत्वं कथं मम विभोऽक्षिपथः परात्मा योगेश्वरैः श्रुतिहशाऽगलहृदि भाव्यः ॥ साक्षादधोक्षज उरुव्यसनान्धबुद्धेः स्यान्मेऽनुदृश्य इह्यस्य भवापवर्गः २६ देवदेवजगन्नाथ गोविन्द पुरुषोत्तम ॥ नारायण हृषीकेश पुरयश्लोकाव्युताव्यय २७ अनुजानीहि मां कृष्ण यान्तं देवगतिं प्रभो ॥ यत्र कापि स तथैतो भूयान्मे त्वत्पदास्पदम् २८ नमस्ते सर्वभावाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥ कृष्णाय वासुदेवाय योगानां पतये नमः २९ इत्युक्त्वा तं परिक्रम्य पादौ स्पृष्ट्वा स्वमौलिना ॥ अनुज्ञातो विमानाग्रमाश्रय श्यतां नृणाम् ३० कृष्णः परिजनं प्राह भगवान् देवकीसुतः ॥ ब्रह्मण्यदेवो धर्मात्मा राजन्या ननु शिक्षयन् ३१

निर्मल हृदयमें जिनकी भागना करै और इन्द्रियनकी जिनमें पहुँच नहीं ऐसे परमात्मा जो तुमही सो अति दुःखन करिकै अधरी है बुद्धि जाकी ऐसो मैं हूँ ताकूँ कैसे प्रत्यक्ष दिखाई दीनी है यह आश्चर्य है या संसार में जा पुरुष को संसार छूटनहार होइ है ताकूँ तुम्हारी दर्शन होइ है २६ हे देवनके देव ! हे जगत् के नाथ ! हे गोकुन्द ! हे पुरुषन में उत्तम ! हे नारायण ! हे इन्द्रियनके प्रेरणचारे ! हे पवित्र है यश जिनको ऐसे ! हे अलपट रूप ! हे अविनाशी ! २७ हे कृष्ण ! हे समर्थ ! हे सभर्ष ! हे सत्त्व ! हे शक्ति जिनकी ऐस तुमही ऐस तुमही तिन और वासुदेव अर्थात् सब प्राणीनके आश्रय कृष्ण अर्थात् सर्वदा आनन्द रूप कार्यको है जन्म जिनतें विश्वके कर्त्ता तथापि विकार रहित हो कोहे तें अनन्त गाथा है शक्ति जिनकी ऐस तुमही तिन और वासुदेव अर्थात् सब प्राणीनके आश्रय कृष्ण अर्थात् सर्वदा आनन्द रूप ( कृपिर्भूमाचः शब्देन अर्निर्हति वाचकः ॥ तयोरेकं परं ब्रह्म कृष्ण इत्याभिव्यज्यत इति ) वेदनके कहे जे यक्षादिक कर्म और सृष्टिन के कहे जे कुत्रा वावली तालाव इत्यादिक कर्मनके फलदाता जो तुमही तिनकूँ नमस्कार है २९ राजा दृग या प्रकार कहिकै श्रीकृष्ण चन्द्रकी परिक्रमा दैके अपने मुकुट तें चरणकूँ स्पर्श करिकै आज्ञा लैके सप प्राणीनके देरात विमान में चढ़त भयो ३० ब्राह्मण-



न की भक्ति करिके देव गर्व में है मन जिनको ऐसे देवकी के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो क्षत्रियनकी शिक्षाके लिये आने जे परिहार य दय हैं तिनसू कहत भये ३१ अग्निभी तुल्य है तेज जिनको ऐसे जे पुरुष हैं तिनको ओढो भी भोग्यो ब्रह्म अंश नहीं पवैह और आने कूं ईश्वर माने जे राजा है तिनकी कौन कथा है ३२ हलाहल जो विप है ताकूं मै विन नहीं मानूं ह वाके दूरि करिवे की औपय है परञ्च ब्रह्म अंश है सो विप है या पृथ्वीमें ब्रह्म अंशके दूरि करियेको उपाय नहीं ३३ विप है सो सानवारे कूं मारे है अग्निलगै सो जलसूं शान्त होइ है और अग्निके जराइये में जड वाकी रहि जाति है परंतु ब्रह्म अंशरूप जो लसई है तावें ते जन्मी जो अग्नि सो मूलसहित कुनकूं भस्मकरे है ३४ शास्त्रने याको निषेय कस्यो तेमो जो ब्रह्म अंश है सो भोगे तें तीन पीढ़ीन को नाश करे है जो भोगे ताकू वाके पुनकूं वाके पौत्रकू और राजाके बलतें अथवा छीनके जो ब्रह्म अंशको भोग करै तौ दश अगिली और दश पिछली एत आप ऐसे इकईस पीढ़ीको नाश करे है ३५ जो कि

हुनं वनब्रह्म त्रं भुक्तमग्नेर्मनागपि ॥ ते जीयसेऽपि किमुत राजामीश्वरमानिनाम् ३२ नाहं हालाहलं मन्ये विपं यस्य प्रति क्रिया ॥ ब्रह्मस्वंहिनिषं प्रोक्तं नास्य प्रतिविधिर्भुवि ३३ हिनस्ति विपमचारं वद्विग्निः प्रशाम्यति ॥ कुलं समूलं दहति ब्रह्मस्माराणि पात्रकः ३४ ब्रह्मस्वंदुःखं नृजानं भुक्तं हनि त्रिपुरुषम् ॥ प्रसह्य तु वत्सलं कुलं दशपूर्वां ब्रह्म परान् ३५ राजानो राजकुलयाश्च तावतोऽब्दा निरङ्कुशः ॥ निरयं येऽभिगमन्ते ब्रह्मस्वं साधुना लिशः ३६ गृह्णन्ति यावन्तः पांशून् च कन्द तामश्रु विन्दवः ॥ विभाणां हितवृत्तीनां वदान्यानां कुटुम्बिनाम् २७ राजानो राजकुलयाश्च तावतोऽब्दा निरङ्कुशः ॥ कुम्भीपाके पुपच्यन्ते ब्रह्मदायापहारिणः ३८ स्रद्धां पराक्षां च ब्रह्मवृत्तिर्गच्छपः ॥ पट्टिर्पमहसाणि विष्ठायां जायते क्रुमिः ३९ न मे ब्रह्मयन्तं भूयाद्यद्गृह्णाऽदृष्टपापुनराः ॥ पराजिताश्च युवराज्याद्वनयुद्धं जिनोऽहयः ४० विप्रं कृतागसमपि नैव दुह्यन्त मामकाः ॥ द्रन्तं वदुशपन्तं वा न मरुः कुरुन नित्यशः ४१ यथाऽहं प्रणमे विभाननु कालं समाहितः ॥ तथानमतयूयश्च योऽन्यथा मे स दण्डमाक् ४२ ब्राह्मणार्थं ह्यपहतो हर्षा रं पातयत्यधः ॥ अजानन्तमपि ह्येनं नृगं ब्राह्मणगौरिव ४३ एवं विश्राव्य गगवाचमुमुन्दो

लक्ष्मीसूं आपरे ऐसे जे राजा है ते अगनो नरकमें गिरिवो नहीं देखे हैं अ मूर्ख पुरुष ब्रह्म अंश पै मन चलावै है वे पुरुष नरकमें जायने की इच्छा करे हैं ३६ कुटुम्बी उदार हरिगई है जीविका जिनकी याते रोदन करे ऐसे जे ब्राह्मण हैं तिनके नेत्रमें आसूनी धूंद गिरिके जितनी पृथ्वी की रेणु भीजै हैं तितने वर्षपर्यंत ब्राह्मण के धनके हरनवारे निरंकुश जे राजा हैं ते और राजान के दीवान प्रधान दहलुया हैं ते कुम्भीपाक नरक में पड़े है ३७। ३८ जो पुरुष अपनी दीनी अथवा और की दीनी ब्राह्मण की जीविका है ताव है यह पुरुष साठिद्वजार वर्षपर्यंत विष्टा को कीड़ा होइ है ३९ भरे घरमें ब्राह्मण को धन मति आचो जे मनुष्य ब्राह्मण के वनकी चाहना करे हैं वे अत्यायु होइ हैं पराजय कूं प्राप्त होइ है और राज्य तें भ्रष्ट होय कै मनुष्यन कूं भय के देनवारे सर्प होइ है ४० अ पराजय कूं करै मारतो आवै बहुत गारी देखे ऐषे ब्राह्मणतें भी द्रोह मतिकरो नित्य नित्य नगस्कारही करो ४१ जैसे सावधान होइ कै समय समय तें ब्राह्मणन कूं नमस्कार करूं हं तैसे तुण्डं नगस्कार करो और जो कोई मेरी आज्ञाकू न मानैगो वह पुरुष भरे दण्ड कू पावेगो ४२ हरयो जो ब्राह्मण को वन है सो हरनवारे कूं नरक में डारै है या बात



भई पुरके स्त्रीजन है तिनकूं प्यारो ऐसो कृष्ण भूरी है ६ पढ कृष्ण कधऊ नपने बन्दनकी भी रुधि नरे है अपने पिता माता नी लुधि - २१ ० कभई आपनी माताकूं एह वार डेन्व बं धी आवैगो बड़ी हैं भुजा जाकी ऐसो कृष्ण कमंड हमारो सेवा की लुधि करे हे १० हे दयालु गोवरन रामई बलदेवजी ! या कृष्ण हे लिये माता पिता भय्या प्रति पुत्र बहिनि स्मजनये सब दुःख करिकै भी छोड़े न जायै ऐसे हमने ब्रह्मदेव शीघ्रही छोड़िकै हमें कूं तोरि नै कृष्ण जात यगो कदाचित् कहो कि जव गयो रो तव दयो नई रोक्यो ताको जवाव देई हैं वा ने मनमें विरवास आवै गयो तामूं न रोक्यो वाके बचनको विरवास लुप्त करो हो यद बलदेवजी कहैं ताको उत्तर वाके भीठे भीठे वचन स्त्रीनके मन में कैसे न आवै कहनबारी बहुत हैं याते नाना प्रकार के वचन हैं १२ तहाँ और गोपी कहैं नही स्थिर है चित्त जाको ऐसे कृष्ण को जो है वचन ताव विवेकिनी जे पुरभी स्त्री हैं ते कैसे सत्य माने हैं और गोपी कहैं है चित्र विचित्र है कथा जाकी प्रकार के वचन हैं १२ तहाँ और गोपी कहैं नही स्थिर है चित्त जाको ऐसे कृष्ण को जो है वचन ताव विवेकिनी जे पुरभी स्त्री हैं ते कैसे सत्य माने हैं और गोपी कहैं है चित्र विचित्र है कथा जाकी

कबिदास्तेमुखं कृष्णः पुरस्त्रीजनवल्लभः ६ कबिस्मरनिवावन्धून्पितरं भ्रातरश्चसः ॥ आप्यसौमातरं रं बहु स हृदयागमिव्यति ॥ अपिवास्मरतेऽस्माकमनु सेवां महाभुजः १० भ्रातरं पितरं भ्रातृन् पतीन् पुत्रान् स्नमरुपि ॥ यदर्थे जाहिमदाशार्हं हस्त्यजावस्वजनान्प्रभो ११ तानः सद्यः परित्यज्य गतः सञ्जिन्नसौ हृदः ॥ कथं नु तादृशं स्त्रीभिर्न श्रद्धीयेत भापितम् १२ कथं नु गृह्णन्त्यनवस्थितात्मनो वचः कृतधनस्य बुधाः पुरञ्जियः ॥ गृह्णन्ति वै चित्रकथस्य सुन्दरस्मितावलोकितम् ॥ किं न स्तरक्तथया गोप्यः कथाः कथयताऽपराः ॥ यात्यस्माभिर्विना कालो यदितस्य तथैव नः १४ इति ग्रहसिंशोरैर्जल्पितं चारुमीक्षितम् ॥ गर्तिभिमपरिष्वङ्गस्मरन् योरुद्धः स्त्रियः १५ सङ्कर्षणस्ताः कृष्णस्य सन्दर्शे हृदयंगमैः ॥ सान्त्वयामास भगवान् नानाऽनुनयकोविदः १६ द्वौ मासौ तत्र चावासीन्मधुं माधवमेव च ॥ रामश्च पासुभगवान् गोपीनां रतिमावहन् १७ पूर्णचन्द्रकलामृष्टे कौमुदीगन्धवायुना ॥ यमुनोपवने रेभे सेविते स्त्रीगणेषु हतः १८ वरुणप्रेषिना देवी वारुणी वृक्षकोटरात् ॥ पतन्ती तद्वनं सर्वं स्वगन्धेनाध्यासायत् १९ तंगन्धं धुधाशया वायुनोपहृतं वलाः ॥ आब्रायोपगत

ऐसो जो कृष्ण ताकी सुन्दर मुसकानि चितवनि मूं जोधित जो कामदेव तामूं आतुर होयकै सत्य माने हैं १३ और गोपी करे है हे गोपियो ! वाकी बातमूं हमें कथा काम है और बात क्यों न कहो हमारे पिता जैसे वाको काल व्यतीत होइ है तैसे वाके पिता हमारो भी काल व्यतीत होय है वाकूं सुल मूं चीतै है हमकूं दुःखमूं चीतै है इतनीही अन्तर है १४ या प्रकार श्रीकृष्ण की इसनि बोलनि सुन्दरि चितवनि गोपवन की चला नि प्रेमपूर्वक आलिंगन इनकी सुधि करिकै सब स्त्री रोदन करति भई १५ अनेक प्रकार समझायवे में निपुण ऐसे जो भगवान् सङ्कर्षण हैं सो मनोहर जो श्रीकृष्ण के सदेश है तिनकूं कहिकै समझावत भये १६ ता व्रजमें भगवान् बलदेवजी रात्रिमें गोपीन कूं आनन्द देत चैन वंशाल दो महीने पर्यन्त वास करत भये १७ पूर्ण चन्द्रमा की कलार हैं तिन करिकै शोभायमान कुपोदिनीनकी सुगन्धयुक्त पवन जहा आवै ऐसो जो यमुनाजी को वाग है तागें स्त्रीनकूं संगलै के रमण करत भये १८ वरुण की पठार्ई छुई वाखणी जो मदिरा देवी है सो वृत्तनकी रीतोरि में तें गिरिकै सपस्त वन है नाय अपने मन्त्र करिकै सुगन्धित करत भई १९ पवन ने मासु करी ऐसी जो मदिरा के भारकी सुगन्ध है ताव मूं धिके बलदेवजी तहां आयकै स्त्रीन

कू संगलै है गदिरा पान दूरत भये २० छीन ने गाये हैं चरित्र जिनके और हवा है शब्द गिनको मतवारे अमल करिके विहल है नेत्र जिनके ऐसे बलदेवजी बनमें विचरतभये २१ बनमाला परिरे पूरु कान में कुण्डल पहिरे मतवारे वैजयन्ती माला दू धारणकरे ताखू शोभायमान पसीना के बिन्दुन करिके शोभायमान गन्द गन्द हास्ययुक्त जो कमलरूप मुस है ताय धारणकरे २२ जल-क्रीड़ा करिचे के लिये ईश्वर समर्थ बलदेवजी यमुनाकू बुलावतभये तन मतवारे हैं या कारखों बलदेवजीके वचनको अनादर करिके नहीं आवति भई ऐसी जो यमुना नदी है ताय जोधकरिके हलके अग्रभागसू खैचतभये २३ हे पागिनी ! या कारख तें नहीं आई है अपनी इच्छापूर्वक विचरे जो तू है ताके हलके अग्रभागसू सैकरान सपट कर्कणो २४ हे राजवपरीजित ! या प्रकार ड-राई जो यमुना है सो भयभीत होय है चकित होइके चरणन में गिरि है यदुनन्दन बलदेवजी भूँ बोळतभई २५ हे राम ! हे राग ! हे महाबाहो अर्थात् बड़ी हैं भुजा जिनकी ! हे ससारके स्वामी !

स्तत्र ललनाभिःसम्पपौ २० उपगीयमानचरितो वनिताभिर्हलायुधः ॥ वनेषुव्यचरस्त्रीबो मदविहललोचनः २१ सगव्यैककुण्डलोमसो वैजयन्त्या चमालया ॥ विभ्रस्मिमतसुलाभोजं स्वेदग्रालेयभूषितम् २२ सञ्जालुहावयमुनां जलक्रीडाभ्रीश्वरः ॥ निजंवाक्यमनादृत्य मत्तइत्यापगांवलः ॥ अ नागतांरुलाग्रेण कुपितोविचर्कहं २३ पापेवंमामवज्ञाय यन्नायासिमयाऽऽहुता ॥ नेष्येत्नांलाङ्गलाग्रेण शतवाक्यमचारिणीम् २४ एवंनिर्भस्तिताभीता यमुनायदुनन्दनम् ॥ उवाचचकितावाचं पतितापादयोर्नृप २५ रामराममहाबाहो नजानेतवविक्रमम् ॥ यस्यैकांशेनविधृता जगतीजगतःपते २६ परंभावंभगवतो भगवन्मामजानतीम् ॥ ओकुमर्हसिविश्वात्मन् गपन्नाभङ्गवत्सल २७ ततोव्ययुधद्यमुनां याचितोभगवान्बलः ॥ विजगाहजलंस्त्री भिःकरेणभिरिवेभराद् २८ कामंविदृत्यसलिलादुत्तीर्णायसिताम्बरे ॥ भूषणानिमहाहर्षिण ददौकान्तिःशुभांलजम् २९ वसित्वावाससीनीले मालां मासुच्यकाञ्चनीम् ॥ रेजेस्वलङ्कुतोलिषो माहेन्द्रइववारणः ३० अद्यापिदृश्यतेराजन् यमुनाच्छवत्थना ॥ बलस्यावन्तवीर्यस्यवीर्यमूचयतीवहि ३१ तुम्हारे पराक्रम हूं मैं नहीं जानूं हूं भिन तुम्हारे परु अंश जो शेषजी हैं तिनने समस्त पृथ्वी कूं सहस फणन में ते एक फण पै धारण करि राख्यो है २६ हे भगवन् ! तुम्हारे अष्ट प्रभाबकूं नहीं जानूं हूं अब शरण आई जो मैं हूं ताकूं हे निरयके आत्मा ! हे भक्तन पै हितकरनवारे ! बोद्धिबे कूं योग्यहो २७ ता पीछे याचना जिनने करी ऐसे जे भगवान् बलदेवजी हैं सो यमुनाकूं बोद्धितभये जैसे हाथी बहिनीन के संग विहार करें ऐसे यमुना में विहार करते भये २८ इच्छापूर्वक विहार करिके जलमें ते निद्रसे ऐसे जे बलदेवजी हैं तिनकूं लक्ष्मी नीलाम्बरको धोती उपरना हैं तिन देतभई वड़े मोळने आयूपण और सुन्दरमाला वेतभई २९ नीलाम्बर की धोती और नीलाम्बर की धोती और नीलाम्बर की धोती पाहिरिके सुवर्ण की माला पाहिरिके भले प्रकार शोभायमान चन्दन गिनके लग्यो ऐसे

\* यथोक्तैर्युगे ॥ यदगमहिताकास्मै मालामन्त्राण्डुवाग् ॥ सधुप्राप्तेतयायुक्ते गोलिङ्गधारयच्छति ( हरिकेशेव गच्छति ) जातकृपमयैः कुरुच्छलेष्वधूपणम् ॥ जातिपचपकाः स्यदिव्यभवनपूषणम् ॥ देयमानतिष्ठन्विषोराणां भूषणभिक्षाभित्यादि ६ ॥



हे राजन् परीक्षित ! मन्द है बुद्धि जाकी ऐसो जो पौण्ड्र है ताको संदेशो श्रवण करिकै ता समय राजा उग्रसेन तैं आदि लैके जे सभासइहैं ते अतिशय करिकै हस्तभये ७ हसिके भगवान् श्री कृष्णचन्द्र दूततें बोलतभये हे मूढ ! कुत्रिम जे सुदर्शनादिक चिह्नहैं तिनसू तू अपनी ऐसी वड़ाईकरैहैं तिनकूं तोपै ते छुड़ा लेउगे ८ हे अज्ञानी ! जा समय तूं अपने मुख कूं डोंकितैं और उजडीचिल्ल गीध वगुलानने आयकै वेरयो ऐसो तू मरिक्के सोवैगो ता समय कुत्तानको शरण लेगो अथवा वे तोकूं भक्षण करेगे ९ तासमय जो समूर्ण श्रीकृष्णचन्द्रने अनन्द करिकै कल्लो सो तैसेही दूत अपनी स्वामी जो मिथ्या वासुदेव है ताकूं सत्र शरण करावत भयो और श्रीकृष्णचन्द्रहू रयमें बैठि कै काशीपुरी में जातभये वयोंकि ता समय पौण्ड्रक भी अपनी मित्र काशी को राजा है ताके आयो है याते ता समय श्रीकृष्णचन्द्रहू मास होतभये १० ता समय महारथी जो पौण्ड्रकहैं सो भी श्रीकृष्णचन्द्र के युद्ध को उद्यम है ताज जानिकै दो अर्जोहिणी सेना सन्न लैके शीघ्रही

स्याल्पमेधसः ॥ उग्रसेनादयः सभ्या उच्चैर्जैहमुस्तदा ७ उनाचद्रुनं भगवान्परिहासकथामनु ॥ उत्सद्येमूढचिह्नानि येस्त्वमेवंविकृत्यसे ८ सुखंतदपि धायान्न मङ्गगृध्रचैर्धृतः ॥ शयिष्यसेहतस्तत्र भविताशरणं शुनाम् ९ इतिदूतस्वनाक्षेपं स्नामिनेसर्वमाहरत् ॥ कृष्णोऽपरिथमास्थाय काशीमुपजगामहृ १० पौण्ड्रकोपितदुद्योगमुपलभ्यमहारथः ॥ अक्षौहिणीभ्यांसंयुक्तो निश्चक्रामपरादद्रुनम् ११ तस्य काशिपतिभिर्त्रयं पाणिग्रहोऽन्याद्वयम् ॥ अक्षौहिणीभिस्तिरगृगिरपश्यतौ गृह्णंहरिः १२ शङ्खार्थसिगदाशार्ङ्गं श्रीवत्साद्युपलक्षितम् ॥ निआणं कौस्तुभमणिं वनमालाविभूषितम् १३ कौशेयवाससीपीने वसानंग रुडध्वजम् ॥ अमूल्यमौल्याभरणं स्फुरन्मकरकुण्डलम् १४ दृष्ट्वा तमात्मनस्तुल्यवेपं कृत्रिममस्थितम् ॥ यथानंदं रङ्गगतं विजहासभृशंहरिः १५ शूलैर्गंदाभिः परिधौ शङ्खव्यूहिप्रासतोगैः ॥ आसिभिः पाद्विशैत्र्यैः प्राहरन्नरयोद्वारिम् १६ कृष्णस्तुतत्पौण्ड्रककाशिराजयोर्वलंगजस्यन्दनवाजिपत्तिमतम् ॥ गदासिचक्रेपुभिरार्दयन्मृशं यथायुगान्तेहुतशुक्लपृथक्पृजाः १७ आयोधन्तं तद्वथाजिन्मुञ्जरद्विपत्स्वरोर्ध्वरिणाऽनखरिडतैः ॥ वभौ चित्तं मोदवहं मनसि रजनामा

काशीपुरी तें बाहर निकसत भयो ११ ता पौण्ड्रकको मित्र काशीकी रक्षा बरनवारो जो राजाहैं सो मित्रकी सहाय करिके लिये गीछे तें आवत भयो तत्र तीन अक्षौहिणी सेना जाके संग ऐसे पौण्ड्रककू भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र देखत भये १२ शङ्ख चक्र तरवारि गदा धनुष भृगुलता इनसूं आदि लैके जे चिह्न हैं तिनसूं देख्यो जाय है और कौस्तुभमणि कूं धारण करे वनमाला कूं परिरेके शोभायमानहैं १३ रेश्मी धीरेवीती उपरनानकूं पहिरे गरुडको व्याणो जाकी ध्वजामें हैं वडे गोलके हैं मुकुट और आपूपण जाके मकराकृत कुण्डलन करिके प्रकाशमान हैं १४ जैसे रगभूमिमें वेप वनायकें प्राप्तभयो जो नन्दहैं तैसे अपनी बराबरके वनाये भये रूपकूं धारणकरे ऐसो जो मिथ्या वासुदेव है ताज देखिकै श्रीकृष्णचन्द्र बहुत हस्तभये वयोंकि नकली ने ज्योंकी त्यों नकल उतारी है १५ त्रिशूल गदा चङ्के वरुकी गुर्ने नेजा तोपर तरवारि पट्टा बाण ये हथियार दैरी श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर चलावत भये १६ जैसे गलयाभी अग्नि जरायुजस्तेदज अण्डज रज्जज हुन चार प्रकारके प्राणीनकूं पीड़ा देइहैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र मिथ्यावासुदेवकूं और काशीके राजा कूं और तिनके हाथी रथ घोडा प्यं देहैं जामें ऐसी जो चतुरंगिणी सेनाहैं ताज गदा तरवारि चक्र



वाण इनमें बहुत पीड़ा देतथये ? ७ चक्रबूँ काटेभये जे रथ घोडा जाधी प्यादे भये छंद जातें परे चेझी जो रणभूमिहै सो मुन्दर लगतभई जो कोई शूरवीर है तिनकुं देखिकै आनन्द होतभयो जैसे प्रलयकालमें भयानक शिवजीके खेलिवेको स्थान सुन्दर लागै है या प्रकार ? ८ सेना सारे पीछे शूरवंशोत्पन्न जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते पाण्डूहूँ कहनभये भो भोः पाण्डूक ! तू दूतके वचन झूँ मोते कहत भयो वे तेरे शत्रु छुड़ा देउँगे १६ हे अश्वानी ! मेरो नाम जो चासुदेवहै सो तेने अपनो नाम झूठीही धरिलीनो यह तेरो नाम छुटि जायगो और जो तेरे आगे युद्ध न करूँगो तो तेरो शरण लेउँगे २० या प्रकार तिरस्कार करिकै पैंनेवाणनयूँ पाण्डूको रथ तोरिकै जैसे इन्द्र अपने वज्रतें पर्वत के शिखर काटै है तैसे चक्रतें श्रीकृष्णचन्द्र पाण्डूको शिर काटत भये २१ तैसेही काशीके राजाको वाणन करिकै देरतें शिर उखारिकै काशीपुरीमें पटकत भये जैसे कमल कोशकुं पवन पटकैहै ऐसे पटकतभये २२ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र भिन्नसहित जो पाण्डूकहै ताय

क्रीडनंभूतपतेरिवोत्पणम् १८ अथाहपौण्ड्रकंशोरिभौभोःपौण्ड्रकयद्भवाच्च ॥ दूतवाक्केनमायाह तान्यस्त्रायुत्सृजामिते १९ त्याजयिष्येऽभिधानंमे यत्त्व  
याऽज्ञमृषाधृतम् ॥ ब्रजाभिराणेतोऽद्य यदिनेच्छायिसंयुगम् २० इतिक्षिप्त्वाशितैत्रिणेर्विरथीकृत्यपौण्ड्रकम् ॥ शिरोऽष्टरचद्रथाङ्गेनवज्रेणेन्दोयथागिरेः २१  
तथाकाशिपतेःकायाच्चिरउत्कृत्यपान्निभिः ॥ न्यपातयत्काशिपुर्ह्यापद्मकोशमिवानिलः २२ एवंमत्सरिणंहत्वा पौण्ड्रकंसप्तद्वरिः ॥ द्धारकामाविशस्मि  
द्धैर्गीयमानकथामृतः २३ सनित्यंभगवज्ज्यागमध्वस्ताऽलिलवन्धनः ॥ विभ्राणश्चहरेराजन्स्वरूपंतन्मयोऽभवत् २४ शिरःपतितमालोक्यराजद्वारेभक्तकुण्ड  
लम् ॥ किमिदंकस्यवाक्क्रमितिसंशयिरेजनाः २५ राज्ञःकाशिपतेर्ज्ञात्वागहिष्यःपुञ्जवान्धवाः ॥ पौराश्चहाहताराजन् नाथनाथेतिभारुदन् २६ सुदक्षि  
णस्तस्यमुतःकृत्वांसंस्थाविधिपितुः ॥ निहत्यपितृहन्तारंयास्य म्यपचिन्तिपितुः २७ इत्यात्मनाऽभिमंथाय सोपाध्यायोभहेश्वरम् ॥ सुदक्षिणोऽर्ज्या  
मास परमेणममाधिना २८ प्रीतोऽविमलकोभगवांस्तस्मैवरद्वद्भुतः ॥ पितृहन्तृवधोपायं सवन्नेवभीषिणतश्च २९ दक्षिणार्विनपरिस्वर्वाह्यथैःसममृत्वजम्

मारिके सिद्धने गायो है कथारूप अमृत जिनको ऐसे श्री कृष्ण द्वारमापुर्ण में प्राप्त भये २३ हे राजन् परीक्षित् ! भगवान् ने ध्यान में धरि भये हैं सन मनोरथ जा के ऐसो पौण्ड्रक हरिके स्वरूप कूँ हरिको नाम मिथ्या मानिके अपनी नाम इरियय मानत भयो २४ काशीमें राजाके द्वारपूँ कुरटल साधित परथो जो शिर है ताय देखिके यह कहा है जैनको मुझ है या प्रकार मनुष्य सन्देह करत भये २५ पीछे हे राजन् परीक्षित् ! काशीके राजाको शिर जानिके रानी है ते और पुत्र भय्या वन्धु तथा पुरबासी है ते हे नाथ ! हाय हाय मेरे परे या प्रकार कहि कहि के रोदन करत भये २६ ता नाथी के राजाको सुदक्षिण नाम करिके पुत्र है सो अपने पिताकी परलोद क्रिया करिके पिताको मारनवारी कृष्ण है ताय वारिके पिताको मृग जुनाङ्गो २७ या प्रकार बुद्धिहूँ निरचय करिके उपाध्यायन महित जो सुदक्षिण है सो परम समाधि लाण्य है शिवजीको पूजन करत भयो २८ विशेष करिके अविमुक्त जो भगवान् शिवजी हे सो प्रलय होय के ता सुदक्षिण हूँ वर मांग या प्रकार कहत भये तब सुदक्षिण है सो पिताको मारनवारी जो हे ताके वध हो उपपन्न पांडित्य वर है ताय मांगत भयो २९ ऋषिदत्त कीसी नाई ( ऋषिजगदिनजमिन्स्वानियोमकरगंगयज्ञस्य देवशृत्स्वजमिति शु-

तेः) अपनी आज्ञाको करनगरो ऐसो जो कृत्याको अग्निहै ताय ब्राह्मणनकुं सायलैके सेवन करि वह अग्नि प्रमथगण हैं तिनकुं संगलैके मारणकी जो विधिहै ता करिकै तेरे मनोरथ सिद्ध करैगो ३० ब्राह्मणकी भक्ति करिके रहित जो पुरुषहै तायै चलावैगो तो तेरो सङ्कल्प सिद्ध होयगो यामें कहा कह्यो ब्राह्मणकी भक्ति करै जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनयै चलावैगो तो उलटो परेगो या प्रकार आज्ञा जाकू दीनी ग्रहण कर्योहै नियम जाने ऐसो जो सुदक्षिणहै सो श्रीकृष्णकुं घातसुं पारिविके लिये जैसे शिवजी ने आज्ञादीनी तैसेही करत भयो ३१ वह जो कुपह है तामुं अति भयानक मूर्तिमान् अग्नि उठतभयो तप्त ताब्रही तुल्यहै शिखा और दाढ़ी जाकी नेत्र और मुखसुं अंगारनकुं उगिलै ३२ दातन करिकै भयानक जे भुकुटीदण्ड तिनसुं कठोर है मुख जाको अपनी जीभतें ओठनके अग्रभाग कुं चाटै जाज्वल्यमान जो विशूनहै नाकू अग्रण करैहै ३३ और बड़े तालसे लम्बे पात्र हैं तिनपूं पृथ्वी कुं कँपात और दशो दिशानकुं जरावत भूत प्रेतन

अभिचारविधानेन सचाग्निः प्रगर्ध्वतः ३० साधयिष्यति सङ्कल्पमवक्ष्यग्रे प्रयोजितः ॥ इत्यादिप्रस्तथा च के कृष्णायाभिचरन्व्रती ३१ ततोऽग्निरुत्थितः  
कुर्यान्मूर्त्तिमाननिर्भाषणः ॥ तप्तताम्रशिखारश्मश्चङ्करो द्धारिलोचनः ३२ दंष्ट्रेऽभुकुटीदण्ड कठोरास्यः स्रजिह्वा ॥ आलिहन्मूक्षिणीनग्नो विधुनं  
स्त्रिशिर्बज्रवत् ३३ पद्भ्यां तालप्रमाणभ्यां क्रमयन्नवनीतलम् ॥ सोऽभ्यधावद्धृतो भूतैर्द्वारकां प्रदहन् दिशः ३४ तमाभिचारदहनमायान्तं द्वारकौकसः ॥  
विलोक्य तत्र सुसर्वं वनदाहे मुग्धायथा ३५ अक्षैः समायांकीडन्तं भगवन्तं भयातुराः ॥ त्राहि त्राहि विलोकेश वहेः पदहतः पुरम् ३६ श्रुत्वा तज्जनवैक्लव्यं  
दुष्टास्वानां च साधनसम् ॥ शरण्यः संप्रहस्याह मां भैष्ट्यविनाः स्म्यहम् ३७ सर्वस्यान्तर्वहिः ताक्षी कृत्यां मां हे शर्वरविभुः ॥ विज्ञायत द्विधा तार्थं पार्श्वस्थं  
चक्रमादिशत् ३८ तत्सूर्यकोटिप्रतिमं मुदर्शनं जाज्वल्यमानं प्रलयाऽनलप्रभम् ॥ स्वतेजसा खंक्कुरोऽथ रोदसी चक्रं मुकुन्दस्त्रिगयाग्निगार्दियत् ३९

कुं संगलैकै वह अग्नि द्वारकापुरी में आवतभयो ३४ वनके पजरिचे में मृग जैसे त्रासकुं पावैहैं ऐसे चलीआवै जो कृत्याग्नि है ताय देगिकै समस्त द्वारकावासी त्रासकुं पावतभये ३५ पावेन मूं सभाग सेलें ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनसुं भयकरिकै वृणकुल जे द्वारकावासी हैं ते हे विलोकीके ईश्वर! अग्नि करिके पजरै जो पुरहै ताकी तुम रत्ताकरो ऐसे कहतभये ३६ मनुष्यनकी व्यामूलताहै ताय सुनिहै और अपने पुरमें यादवनकुं हरवराहटहै ताय देखिकै शरणागतनके रक्त जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो दैसिकै भय मतिकरो गै रत्ता कलंगो या प्रकार कहतभये ३७ सबके भीतर बाहर के देखनवरे सपर्य जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो महादेवकी कृत्याग्नि है यह जानिकै ताके नाश करिचे के निमित्त पास ठाढ़ो जो चक्रहै ताकू आज्ञा करतभये ३८ करोड़ सूर्यकी धरावरि है तेज जाको प्रलयकालकी अग्निकी तुल्य है कान्ति जाकी अपने तेज करिकै आकाश दिशा यावा पृथ्वी इनकुं प्रकाशै ऐसो जो मुकुन्द को अष्ट चक्र सुदर्शनहै सो ता अग्निकुं पीड़ा देतभयो ३९

ॐ अत्राज्ञप्ये प्रयाजित इति शृण्वे मयोजितो भविष्यतीति सूचितम् तस्य ब्रह्ममन्त्रतयापु १ ॥



के देशनके ऊपर पट्टिके चूर्ण भरत भयो और जिन देशन में कि मित्र नरकासुर के मारनारे श्रीकृष्णचन्द्र रहे हैं उन देशन कू बहुत कष्ट दैतभयो ४ दश हजार हाथी को है वल जामें ऐसी द्विदि वानर समुद्र के बीच में ठाढ़ो होय के भुजान तें जलकू उन्नारि के समुद्र के तट के जो देश हैं तिनहूँ हुवावन भयो ५ दुष्ट वानर है सो वहे वहे ऋषिन के आश्रमन में जाय के वृत्तन कू तोहि के मल मूत्र करि के यज्ञ की अग्नि कू दू पित करत भयो ६ वड़ो है गर्व जाके ऐसी जो वन्दर है सो पुरुष और स्त्रीन कू पकारि के पर्वत की गुफा में क्रन्दन में धारि के जैसे भुङ्गी की डान कू मोंढे देई है ऐने मूदत भयो ७ या प्रजा देशन में उपद्रव करत कुन की स्त्रीन कू टोप लगाय के मनोहर गीत है ताम्र सुनिके वानर रैवतक पर्वत में जातभयो ८ ता रैवतक पर्वत में जाय के यादवन के पालनवारे कपल की माला पहिरे सुन्दर देखिने योग्य है सन अंग जिनके स्त्रीन के बीचमें बैठे ऐसे जो राग बलदेव जी हैं तिन देखत भयो ९ कैसे बलदेवजी देखे सो कहें-वरुण है देवता जाको ऐसी

नागायुतमाणवेलाकूलानमज्जयत् ५ आश्रमाद्यपिमुखानां कृत्वाभग्नवनस्पतीन् ॥ अदृपयच्छक्रुन्मूत्रैरनीनैवतानिकान्खलः ६ पुरुषान्योपितोदसः क्षमाभृद्गोणिगुहासुसः ॥ निक्षिप्यचापधाञ्छैलैः पेशस्कारीवकीटकम् ७ एवंदेशान्विप्रकुर्वन् द्रुपयश्चकुलस्त्रियः ॥ श्रुत्वामुललितंगीतं गिरिरैवतकं यौ ८ तत्रापश्यद्यदुपतिं रामं पुष्करमालिनम् ॥ मुदर्शनीयसन्वाहं ललनायूथमध्यगम् ९ गायन्तं वारुणीपीत्वा मदबिबललोचनम् ॥ विभ्राजमानं वपु पाप्रभिन्निभित्रवारणम् १० हृष्टः शाखासृगः शाखामारुढः कम्पयन्नुमान् ॥ चक्रे किल किलाशब्दगात्मानं सम्प्रदर्शयन् ११ तस्य धार्ष्ट्यैर्कपेर्वाक्ष्य तरुण्यो जा तिचापलाः ॥ हास्यप्रिया विजहसुर्वलदेवपरिग्रहाः १२ ताहेलयामास कपिभ्रूक्षपैः सम्मुलादिभिः ॥ दर्शयन्स्वगुदंतासां रामस्य च निरीक्षतः १३ तं ब्रान्वा प्राह तत्क्रुद्धो वनः प्रहस्तानगः ॥ सबच्चयित्वा ब्रावाणं मदिरा कलशं कपिः १४ गृहीत्वाहेलयामास धूर्तस्तं कोपयन् हसन् ॥ निर्भिद्य कलशं रुष्टो वासां स्यास्फालयदुवलम् १५ कदर्थी कृत्यवलवान् विप्रचक्रे मदोद्धतः ॥ तं तस्या विनयं दृष्ट्वा देशांश्च तदुपहृतान् १६ क्रुद्धो मुसलमादत्त हलं चारि जिघांसया ॥ द्विद्विदो

मदिरा कू पी के गौं मद करि के बिबल हैं नेत्र जिन के मनार हाथी की तुल्य देह करि के प्रकाशमान हैं १० दुष्ट जो शाखासृग वन्दर है सो वृत्त की शाखानपै चाँदके उनकू हलायन आपे कू दिलाय के किचिर किचिर शब्द करतभयो ११ वह जो वन्दर है ता की धृष्टता देखि के स्वभाष तें चञ्चल है सो जिनकू प्यारीलगे ऐसी जो बलदेवजी के समकी सी हैं तेहूँ हँसति गई १२ वह जो वन्दर है सो क्रुद्धो चढ़ाय के सामें मुँह मुँहिके स्त्रीन कू अपनी गुदा दिवाय के उलदेवजी के देखत स्त्रीन की अवज्ञा करतभयो १३ प्रहार करनवारेन में श्रेष्ठ ऐसे बलदेवजी को ध करि है वन्दर के पत्थर मारतभये वह धूर्त वन्दर पत्थर कू वचाय के मदिरा को कलश है ताय लै के हँभि के बलदेवजी कू क्रोध कराय के अवज्ञा करनभयो १४ जो वन्दर है सो मदिरा के कलश कू फोरि के स्त्रीन के वस्त्रन कू नैचि के फारत भयो वडो बलवान् मद करि के उद्धत जो वन्दर है सो बलदेवजी की कदर्थना करि के दुःख दैतभयो ता वन्दर की अनम्रता देखि के और उपद्रव जिनमें गचायो ऐसे देशन कू देखि के १४।१५।१६

क्रोध जिनके व्यापनो ऐसे बलदेवजी ता बैरी के पारिने न हल मनन देव भयो नही पगान्गी चन्दर है सो नो हात नें जावतुत के उबारिके १७ शीघ्रता नूं पाय आय के ता वृत्तकी चोट बलदेवजी के गये में पाग भयो पर्वतकी तुला पाये में चलयो आ। जो शाल को टुत है नाग १८ पतवान् बलदेवजी परत भये और प्रगने मूलकूं या चन्दर के मारत भये मूलक नगिके कळो है पायो जाको ऐसो जो चन्दर है सो मूलक ही चोट कूं नही मानिके जेमे येव में गेह ही धार ते पर्वत सुन्दर लगे है ऐमे रुधिर ही धारा जो वही तामूं सुन्दर लगनभयो वही है को १ जाके ऐसो चन्दर फेरि और जो वृत्त है तामूं बलने उगारिके बाते पतानूं साफ करिके बलदेवजी के मारत भयो ता बलदेवजी ११ वृत्त के दूस्दूस्द करतभये ताके पीछे और जो वृत्त है तामूं उगारिके बलदेवजी के मारत भयो तव ना वृत्तके बलदेवजी मौ दूत करतभये १६। २०। २१ या पगार भगवान् बलदेवजी के साथ युद्ध करिके फेरि जव वृत्त रुडि गये तव चारयो और ते

ऽपिमहावीर्यः शालमुद्यम्य पाणिना १७ अभ्येत्य नरसानेन बलं मुह्यन् ननाडयत् ॥ तन्तुमदर्शणो मुहूर्तिः । तन्तुमनलो यया १८ प्रतिजघ्न हवलवान् सुनन्देना हनन् चतम् ॥ सुसलाहतमस्त्रिपक्षोऽभिरैजोऽक्रथारया १९ गिरिवैयोगिरिकया गङ्गां नानुनिनायन् ॥ पुनरन्यं समुत्तिष्ठ्य कृतानिष्पन्नभीजया २० तेनाहनत् सुमंक्रुद्धस्ते बलः शतवाऽबिच्छनत् ॥ ततोऽन्यं नरुगजवनेतं चापिशतवाऽबिच्छनत् २१ एवं युद्धयन् भगवता गाने भगने पुनः पुनः ॥ आकृष्य मर्धतो वृक्षा निर्वृज मक्रोद्धनम् २२ ततोऽमुद्यच्छलावर्प बलस्योपर्यमर्पिनः ॥ नरमर्धचूर्णया गामलीलायामुमलायुधः २३ सवाहूनालसङ्काशो मुष्टीकृत्य कपीश्वरः ॥ आसाद्यरो हिणी पुञ्जन २४ पञ्चस्य खरुजत २५ यादवन्दोऽपि नंदो भ्येत्य क्त्वा मुमललाङ्गलो ॥ जत्रावभ्यवर्धयत् कृद्धः सोऽपतदुधिरं वगन् २५ चरुमेतेन पतनासटङ्कः सवनस्प निः ॥ पर्वतः क्रुशार्दूल वायुगानैर्ग्वामासि २६ जयशब्देन गः शब्दः साधुसाध्विति चाम्भरे ॥ सुरसिद्धसुनीन्द्राणामासीत् कुमुदवर्षिणाम् २७ एवं निहत्य द्वि विदं जगद्व्यतिकरावहम् ॥ संस्तूयमानो भगवाञ्जनेऽस्मत्पुरमाविशत् २८ इति श्रीमद्भगवते महापुराणे दशगल्हन्धे द्विविदवधो नाम सप्तपष्ठितमोऽध्यायः ६७ ॥

वृत्तन में उगारिके नहीं रयो है एतद वृत्त गाँ ऐसो या पगदू करत भयो २० ताके पीछे गई है अमहनना जाने ऐसो जो चन्दर है सो बलदेवजी के ऊपर परसावत भयो मूलक है इथियार जिनको ऐसे बलदेवजी चन्दरने परत भये परसाये तिन कीला करिके चूर्ण करतभये २१ चन्दरन हो ईपर जो वर चन्दर है सो नाटुत की परापर नही भुजाई तिन ही मूठी रागिके रोहिणीपुत्र जो बलदेवजी हैं तिनके पास जाय के छातीमें मुष्टि मारतभयो २४ यादवने के इन्द्र जो बलदेवजी हैं सो भी हल मूलक तुलागिके को १ करिके भुजाने चन्दरके एष्टकूं मर्दन करतभये ता समय वर चन्दर रुधिर जो वमनवर गिरिके मरतभयो २५ है कौरवनों सिद्धराजा परीक्षित! गिरयो जो चन्दर है तामूं भगवानसहित और वृत्तनत देव जो पर्व १६ सो पंगतभये जैसे जलम पवनसूं चौका कायै या पगार २६ आकाशम गर्भ में देवता मिद्ध सुनीश्वर हैं ते पूजनकी रणी रस्त जयशब्द और नमःशब्द और भले भले शब्द करतभये २७ या प्रकार जगत् को नाश करनचारी जो चन्दर

है ताय गारि है जननने स्तुति जिनकी करी ऐसे भगवान् बलदेवजी द्वारकापुरीमें आवत भये २८ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्याद्यंशमस्कन्धउत्तरार्द्धेद्विविधवधोनामसप्तपष्ठितोऽध्यायः ६७ ॥  
( अष्टपष्ठितमेसाम्मेनिरुद्धे कौरवैर्युधि ॥ तद्विभोत्तायराणेणजह्मथविरुपेणम् १ अटसठयं अथायगे कौरवांने साम्मको संग्राममे वाध लियो तउ उनके छुड़ाने के लिये बलदेवजीने हस्तिनापुरको लींचोहै १ ) अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित ! युद्धमें जीतनगरो जो जाम्मवतीको पुन साम्महै सो दुर्योधनकी पुत्री जो लक्ष्मणाहै ताय स्वयंवर में तें हरिकै लावतभयो १ तामसमय सम्पूर्ण कौरव क्रोधकरिकै बोलतभये यह बालक बडो अनज्रहै हमारो अनादर करिकै नहीं है काम जाके ऐसी हमारी कन्याकू बलतें हस्तभयो २ अनज्र जो यह बालकहै ताय बाधिलेउ यादव हमारो कहा करेगे जे यादव हमारी प्रसन्नताम् एडिकूं प्राप्तभये है हमारी दीनीभई पृथ्वीको भोग करे हैं ३ या बालक कूं धैव्यो सुनिकै जो यादव यहा आयेगे तौ दूरि भयो है गर्व जिनको

श्रीशुकउवाच ॥ दुर्योधनसुताराजल्लक्षणांतामितिजयः ॥ स्वयंवरस्थामहरत् साम्मोजाम्मवतीसुतः १ कौरवाःकुपिताऊचुर्दुर्विनीतोऽयमर्भकः ॥ कदर्थीकृत्यनःकन्यामकामामहरद्वलात् २ वर्धनीतेमंडुभिनीतं किंकरिष्यन्तिवृष्णयः ॥ येऽस्मत्प्रसादोपचितां दत्तानोगुजतेमहीध्व ३ निगृहीतंसुतंश्रुत्ताय द्येप्यन्तीहवृष्णयः ॥ भग्नदर्पाःशमंगयन्ति माणाइवसुरंगताः ४ इतिकर्णःशलोभूरियज्ञकेतुःसुयोधनः ॥ साम्मोरेभिरेववृद्धं कुरुद्वानुमोदितः ५ हृद्व्वाऽनुधावतः साम्मोधात्ताराष्ट्रान्महारथः ॥ प्रगृह्यारुचिरंचापं तस्थौसिंहइवैकलः ६ तंतेजिघृक्षवःकृद्वारिणष्ठतिष्ठेतिभापणः ॥ आसाद्यधन्विनोत्राणैःकर्णाशयःसमाकिरन् ७ रोऽपविद्धःकुरुश्रेष्ठकुरुभिर्धुनन्दनः ॥ नाघृष्यत्तदचिन्त्यार्भःसिंहःकुद्रसृगैरिव ८ विस्फूर्ज्यरुचिरंचापं सर्वान्विठ्याधमायकैः ॥ कर्णादीन्पट्थान्धीरस्ताविद्धिर्युगपत्पृथक् ९ चतुर्गिरचतुरोवाहानैकैर्केनचसारथीन् ॥ रगिनश्चमेह्वेष्वासांस्तस्यतचेऽभ्यपूजयन् १० तन्नुतेविरथंचक्रुश्चत्वारश्च ऐसे माणायाम करे तें जैसे इन्द्रिय शान्त होती हैं ऐसे शान्तिकूं पावेंगे ४ याप्रकार भीष्मजीने अनुमोदन जिनकूं कस्यो ऐसे कर्ण शल भूरि यज्ञकेतु दुर्योधन भीष्म सहित ये छ. बाधिनेको उपाय करतभये ५ महारथी जो लाग है सो पीछे दौरे चलो आये जे छः धृतराष्ट्रके अनुयायी तिनं देखिकै सुन्दर धनुष् हाथों लैंके सिंहकी हृदय अमेलोही डाढ़ो होत भयो ६ कर्ण है मुख्य जिनमें ऐसे धनुषके धारण करनवारे छः हैं ते क्रोधमें गरिकै सामके पकरिके लिये ठाढ़ो रहू ठाढ़ो रहू ऐसे कहत पास आय कै वाणन कूं चलावत भये ७ हे राजन् परीक्षित ! यादवन कूं आनन्द के देनवारे अचिन्त्य भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को पुत्र जो साम्म है ताके कौरवनने वाण मारे तव छुद्र जानरन के पराक्रम कूं सिंह जैसे नहीं संहारत भयो ८ वीर जो साम्म है सो मनोहर धनुषकू चढ़ाय कै कर्णादिक जे छः रथी हैं तिनं छः वाणन करिकै एक सङ्ग वेधतभयो ९ चार वाण करिकै रथके चारों घोड़ान कूं और एक वाण करिकै रथवानन कूं वेधन भयो बड़े बड़े हैं धनुष जिनके ऐसे जे छः रथी हैं ते साम्म के पराक्रमकी प्रशंसा करतभये १० तिन कौरवनमें ते चारजने तौ चारों घोड़ानकू मास्त भये और एकजने रथवानकूं मास्तभयो एक धनुषकूं तोरत



भयो या पदार सब मिलिकै साम्भ कं विरग करत भये ११ कौरव हैं ते कष्ट सं युद्ध में बालक साम्भकू विरथ करिकै वाधिकै अपनी कन्या है ताथ लैके जीतिकै अपने पुरमें जात भये २ हे राजन परीक्षित ! नारदके कहे ते साम्भ कं वै-यो सुनिकै भयो है क्रोध जिनके ऐसे यादव राजा उग्रमेन के कहे तें कौरवन सं लड़िये को उद्यम करत भये १३ फलियुग के पापन के नाश करनवारे जो बलदेवजी है सो कौरव यादवन को परस्पर विरोध न होइ यह विचारिकै कवच जिनने पहिरे हथियार बाधे जे यादव है तिन संप्रदाय कै १४ सूर्य की तुल्य है कान्ति जाकी ऐसे रथ में बैठि कै ब्रह्मणन कूं सक्त लिये कुलमें दृढ़ हैं तिनकूं सक्त लैके जैसे ग्रहणसहित चन्द्रमा गमन करे है ऐसे हस्तिनापुरकूं जात भये १५ बलदेवजी हस्तिनापुर में जाय कै वस्ती के बाहर बगीचा में उहरिकै कौरवनको अभिप्राय जानिये के लिये धृतराष्ट्र के पास उद्धवजी कूं नेजत भये १६ उद्धवजी अभिप्राय के पुत्र धृतराष्ट्र कूं प्रणाम करिकै भीष्मजी कूं और बाह्यिक सहित द्रोणाचार्य कूं

तुरोहयान् ॥ एनस्तुसारविजघने चिच्छेदान्धःशरासनम् ११ तम्वद्धु। विरथीकृत्यकृच्छ्रेणकुरवोयुधि॥ कुमारंसवस्यकन्याञ्च स्रपुंजयिनोऽविशन् १२ तच्छु  
रमानारदोक्तेन राजन्मञ्जानमन्यवः॥ कुरुष्वधृत्यद्यमश्चकुरुष्वसेनप्रचोदिनाः१३रान्प्रयित्वातुतान्नामः सन्नहान्नवृष्णिपुङ्गवान् ॥ नैच्छत्कुरुष्वणवृष्णिनां क  
लिकलिमलापहः १४ जगामहास्तिनपुरंरथेनाऽऽदित्यवर्चसा ॥ ब्राह्मणैःकुलवृद्धैश्च वृत्तश्चन्द्रवग्रहैः १५ गत्वागजाद्वयंरामो बाह्योपवनमास्थितः ॥ उ  
द्धवंप्रेषयामास धृतराष्ट्रंभुत्सया १६ सोऽभिवन्द्याभिवक्रापुञ्चं भीष्मद्रोणञ्चवाह्मिन् ॥ दुर्योधनञ्चविधिवद्राममागतमब्रवीत् १७ तेऽनिप्रीतास्तगाकश्यप  
प्राप्तंरामंमुहत्तमम् ॥ तमर्चयित्वाऽभिययुःमर्वेमङ्गलपाणयः १८ तंमङ्गम्यथान्यायं गामर्धननयेदयन् ॥ नेपांयेतत्प्रभावज्ञाः प्रणमुः शिरसावलम्ब १९ वन्द्युर्ब  
कुशलिनःश्रुत्वा पृश्नाशिवगतामयम् ॥ परस्परमथोरामोवभापेऽविक्रवंचः २० उग्रमेनःक्षितीशो यद्धाज्ञापयत्प्रभुः ॥ तद्वयग्रधियःश्रुत्वा कुरुष्वंसावि  
लभिव्रतम् २१ यद्युयं ॥ महवस्त्वेकंजित्वाऽधर्मपाणधार्मिकम् ॥ अत्रधनीताथतनृष्ये ॥ वन्द्युनामैकयकाम्यया २२ वीर्यशौर्यवलोन्नद्धमात्मशक्तिसमं वचः ॥ कुर

दुर्योधन कूं विधिपूर्वक प्रणाम करिकै बलदेवजी आयें हैं यह कहत भये १७ वड़े हितकारी बलदेवजी है तिनकूं आये सुनिकै अतिप्रसन्न भये ऐसे जे सम्पूर्ण कौरव हैं ते उद्धवजी को पूजन करिकै भेंटन कू हाथ में लैके बलदेवजी के सम्मुख जातभये १८ ते कौरव रीतिपूर्वक बलदेवजीतें मिलिकै गौ और अर्घ्य है ताथ देत भये और तिन कौरवन में जे पलदेवजी के प्रभावकूं जानें हैं ते शिर नवाड कै प्रणाम करत भये १९ समस्त वन्द्युन की कुशल श्रवण करि आपुस में कुशल जो पृच्छिकै पीछे जाके श्रवण करे तें व्याकुलता होइ ऐसो वचन बलदेवजी कहत भये २० साम्भयवान् पुच्छी के ईश्वर राजा उग्रसेनेने जो आज्ञा तुमकूं करी है ताथ एकाग्रबुद्धिसूं श्रवणकरिकै शीघ्रकरो २१ अब राजा उग्रमेनको वचन कहे हैं बहुत जो तुमही तितने शत्रुर्म करिकै धर्मोत्पा बालक कूं बाधितियो यह जो तुम्हारी अपराध है सो वन्द्युनकी आपुस में ऐक्यता रहे विरोध न होय याकारण हमने सहार लियो अत तुम शीघ्र साम्भकूं लाय कै अर्पण करो २२ पराक्रम गुरता बलको

ॐ यद्ययमित्युपेतंवाक्यम् ७ ॥ + मृपेसहे अथाशु तमागोय समर्पयततिशेष ७ ॥

भरयो और अपनी सायर्थ के समान ऐसे जो बलदेवजी को प्रचन है ताय श्रवण वरिके कोप करिके कोरम बोलत भये २१ अहो नरे आरवर्थ की गत है देखो काल की गति वही दुरतथ है पावके पहिरिचेकी लूती मुकुट करिके सेवित जो शिर है ताग चढ़यो चाहे २४ इनके यहाते जव ते घृथां व्याहिके लाये तत यादव नते सभन्य भयो है हमारे मग पलंगभे सोवे है संग थेठेह संग भोजन करे है यादव हमने अपनी घरगिरि के करिलिये और हमने ही इनके राज्यासनदियो है २५ चमर पट्टा शङ्ख श्वेतवज्र किरीट आसन शय्या ये वस्तु हमारी दानी यादव भोगकरे है २६ जैसे सर्पनकू जो दूध पिवावे ताही कू काटे है ऐसे देनचारेनकू लठे भये ऐसे यादवन कू राज्यासी वस्तु छत्र चापरादिक है तिनके देनेगू पूर्ण भये हमारी मसनता सू वदे अय हमही कू आज्ञा करत है नडे कष्टभी बात है इनकू लाजहू न आई ऐसे यादव वड़े निलेज है २७ भीष्म द्रोण अर्जुन इत्यादि कौरवनके दिये विना यस्तु कू इन्द्र है ते ग्रहण करे जैसे भेड़ सिंह के मुल

चोबलदेवरय निशम्योचुः प्रकोपिताः २३ अहो महच्चित्रमिदं कालगत्यादुरयया ॥ आरुरुक्ष्युपानदं शिरोमुकुटमेवितम् २४ एते योनेन समृद्धाः सदृश रयासनाशनाः ॥ वृष्णयस्तु हयतां नीता अस्मद्वत्तृपासनाः २५ चामव्यजने शङ्खपातागजवपाण्डुरम् ॥ किरीटपासनशय्यां भुञ्जन्त्यस्मदुपेक्षया २६ अलं यदूनानरे वलाज्जनैर्दतुः प्रतीपैः फणिनामिवासुनम् ॥ येऽस्मत्प्रसादोपचितो हियादवा आज्ञायन्त्यद्यग्नत्रपादन २७ कथमिन्द्रोऽपि कुरुभिर्भीष्मपद्मे णाज्जुनादिभिः ॥ अदत्तमवरुन्धीत सिंहग्रस्तमिवोरणः २८ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ जन्मबन्धुश्रियो बल्लगदास्ते भरनर्पभ ॥ आश्रवयामं दुर्वोच्यमासभ्याः पुरगाविशन् २९ दृष्ट्वा कुरुणान्दौःशील्यं श्रुत्वाऽवाच्यानि चाच्युतः ॥ अत्रोचरकोपसंख्यो दुष्पेक्षयः प्रहसन्मुहुः ३० नूनं नानामदो नृच्छः ॥ शान्तिनेच्छन्त्य साधवः ॥ तेषां हि प्रशमोदयः पशूनां लगुडो यथा ३१ अहो यदूनमुसंखान् कृष्णञ्च कुपितं शनैः ॥ सान्त्वयित्वाऽभ्येतेषां शममिच्छन्निहागतः ३२ इमं मन्दमतयः फलहाभिरताः खलाः ॥ तं मामवज्ञायमुहुर्दुर्भापान्मानिऽद्युच ३३ नो ग्रमेनः फलविभुर्भोजवृष्यागन्ध हेस्वरः ॥ शक्रादयो लोकरपालायस्यो देशाः

की वस्तु कू कैसे ग्रहण करि सकै है २८ अब श्रीशुकदेवजी कहै है भरतवंशीनं अष्ट राजा परीक्षित ॥ अष्ट कुलमें जन्म बन्धु उन इनसू वदे है गद जिनके ऐसे जे असाधु कौरव है ते कहिये योग्य नहीं ऐसे वचन बलदेवजीकू सुनायकें पुरमें जात भये २९ कौरवनकी दुष्टता देखि और कहिये योग्य नहीं ऐसे वचन अरण करिके देखे न जायें ऐसे बलदेवजी वारवार हंसिके बोलत भये ३० नाना प्रकारके मद है तिनकू मर्यादा जिनने त्यागि दीनी ऐसे जे अस धु कौरव है ते निश्चय शान्ति नहीं चाहे है इन दुष्टनके शान्ति करिये कू दण्डही है जैसे पशु लठ मारते ही समके है या प्रकार ३१ वडो है क्रोध जिनके ऐसे यादवनकू होले होले समझायकें और क्रोधमें भरे जे श्रीकृष्ण हैं तिनकू समझायकें इन कौरवनको मिलाप करायवेके निमित्त मैं यहा आयो हूँ ३२ परञ्च मन्द है बुद्धि जिनकी कलहप्रिय अधिपानी कौरव है ते परी अवज्ञा करिके निन्दित वचन कहत भये ३३ भोज वृषिण अन्यत्र ये यादवनके गोत्र हैं तिनके ईस्वर इन्द्रते आदिले के वडे

बड़े लोकपाल देवता जिनकी आज्ञा वचन हैं सो कहा कौरवन्तं आज्ञा करिवेकू समर्थ नहीं हैं ३४ जिन श्रीकृष्णचन्द्रने इन्द्रकी सभा पावनभू खंडी और देवतानको कल्पवृक्ष लायके अपने महलके वगीचामें लगायो ते कहा योग्य नहीं हैं ३५ ब्रह्मादिकन की ईश्वरी जो लक्ष्मी है सो साक्षात् जिनके चरणारविन्दको सेवनकरै वे श्रीकृष्णचन्द्र लक्ष्मी के पति सो कहा राजानकी वस्तुनके योग्य नहीं हैं ३६ जिन श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्दकी रज है सो सपस्त लोकनके पालन करनवारै जे ब्रह्मादिक तिनके मुकुटन करिके युक्त जे माथे हैं तिनपै चरण करी है और सेवन करयो जो गद्गातीर्थ ताहूकू पवित्र करनवारो है जिनके अशके अंश जे ब्रह्मा महादेव लक्ष्मी है ते और हम सम्पूर्ण बहुत दिन पर्यन्त चरणारविन्द की रेणुभूं माथे पै धारण करै हैं इन श्रीकृष्णचन्द्र के राज्य/सन कहा पदार्थ है ३७ कौरवनने जो पृथ्वी को दूकदियो है ताय यादवभोगे है और हम पांवकी जूती ठहरै कौरव शिर ठहरै ३८ अहो ऐश्वर्य करिके मतनारे की तुल्य अभिमानी जे कौरवहै

नुवार्त्तिनः ३४ सुधर्माऽऽक्रम्यते येन पारिजातोऽमराङ्गिणः ॥ आनीयमुज्यते सोऽसौ न किलाध्यासनाहणः ३५ यस्य पादयुगं साक्षाच्छ्रीरूपास्तेऽखिलश्वरी ॥ अनार्हतिकलश्रीशो नरदेवपरिच्छदान् ३६ यस्याङ्घ्रिपङ्कजजोऽखिललोकपालैर्मौल्युत्तमैर्धृतमुपासितनीर्थैश्च ॥ ब्रह्माभवोऽहमपि यस्य फलाः कलायाः श्रीश्चोद्वेहमचिरमस्मृत्युपसंनक्तं ३७ भुञ्जेनेकुरुभिर्दत्तं भूखण्डवृणयः किल ॥ उपानहः किल वयं स्वयंतु कुशवः शिरः ३८ अहो ऐश्वर्यं पदानामितानामिवमानिनाम् ॥ असम्बद्धागिरोरुक्षाः कः सहेतानुशासिता ३९ अद्यानिष्कौश्वीपृथ्वीं करिष्यामीत्यमर्षितः ॥ गृहीत्वा हलमुत्तस्थौ दहन्निव जगत्रयम् ४० लाङ्गलाग्रेण नगरमुद्धिदार्थं गजाह्वयम् ॥ विचर्कपसगद्गायां प्रहरिष्यन्नमर्षितः ४१ जलयानमिवाघूर्णं गङ्गायां नगरं पतत् ॥ आकृष्यमाणमालोक्य कौरवाजानमभ्रगाः ४२ तमेव शरणं जग्मुः सकुटुम्बाजिजीविपवः ॥ सलक्ष्मणं पुरस्ठस्य सामं प्राञ्जलयः प्रभुम् ४३ रामरामाखिलाधार प्रभावं न विदामते ॥ मूढानां नः कुडुच्छीनां क्षन्तुमर्हस्यतिक्रमम् ४४ स्थित्युत्पत्त्यययानां त्वमेको हेतुर्निश्रयः ॥ लोकान्कीडनकानीश कीडतस्तेवदन्ति हि ४५ त्वमेवमूर्ध्नी तिमके कर्कश टेके वचनं सुनि के दण्डको देनचारो होयकै ऐसे कौन पुरुष है जो सहस्रकै गो ३९ अब इन कौरवन करिके सहित पृथ्वी कूं करिदेगो या गकार भई है असहनता जिनके ऐसे बलदेवजी हलकू ग्रहण करिके मानो बिलोकी कूं भस्म करिदेगो ऐसे कोय करिके डाढ़े होतभये ४० भई है असहनता जिनके ऐसे बलदेवजी हलके अग्रभाग ते हस्तिनापुर कूं उलारिके नाश करिके के लिये गद्गामें खेत भये ४१ नौताकी तुल्य ध्रुपण करत गद्गाबी में गिरयो जाय ऐसे नगरकूं देखिके भयो है भ्रम जिनके ऐसे कौरव लक्ष्मणासहित जो सांव है ताय आगे करिके हाथ जोरि कै कुटुम्बसहित जीवनकी इच्छा करिके समर्थ जे बलदेवजी हैं तिनकी शरण जातभये ४२ ४३ हे राम ! हे राम ! हे समके आश्रय ! तुम्हारे प्रभावकूं नहीं जानें जे हम मूढ़ कुडुछे हैं तिनके ऊपर तुम क्षमा करिके योग्यहौ ४४ स्थिति उत्पत्ति नाश इनके हम एक निराश्रय कारणहौ हे ईश ! क्रीडा करो जो तुमहौ तिन तुम्हारे लोकनकूं खिलौना करे हैं ४५ हे अनन्त ! देसहस्रमूर्धेन अर्थात् हजार

१ लादश्रेण दण्डेण प्रपापूले नितातो गच्छित्वा धिग्यतोऽयम् ६ ॥ २ निर्माविपन, लभ्यसाधितोऽयम् ६ ॥



(एकोनसप्ततितमो गार्हस्थ्यध्यात्ममन्दिरम् ॥ कृष्णस्य नारदो दृष्ट्वा विदितोऽगात्ततः स्तुवन् ? उनहत्तरवें आध्याय में नारदजी कृष्णजी की प्रत्येक मन्दिर की गार्हस्थ्य देना हर त्रिप्रययुक्त होकर स्तुति करते द्रुपे चले जाते भये ? ) अब श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! नरकासुर कूं माखो सुनिकै तैसेही अकेले श्रीकृष्णचन्द्र ने बहुत स्त्री व्याही यह बात सुनिकै देखिने की इच्छा भिनेके भई ऐसे नारदजी द्वारकापुरी में आवन भये ? वैसे नारद हैं यह बड़ो आश्चर्य है कि एक देह तें एक सन्न न्यारे धरन में सोलह हजार स्त्रीन कूं एक संग व्याहत भये २ या प्रकार उत्पद्यता जिनके भई है अन् द्वारकापुरी वो वर्णन करे हैं फले जे उद्यान अर्थात् बिना लगाये वन और उपवन अर्थात् वस्ती के समीप लगाये भये यगीचा तिनमें पत्नी भैरा जो बोले है तिनको शोर जामें होय रलो है ३ फले जे इन्दीवर अम्भोज कहार कुमुद उत्पल ये कमलन के भेद हैं तिन करिकै व्याप्त ऐसे जे सरोवर हैं तिनमें उच्चस्तर करिकै ईस सारस गे बोले हैं तिनको शोर

श्रीशुक्रउवाच ॥ नरकं निहन्ति श्रुत्वा तथोद्वहं च योगिनाम् ॥ कृष्णे नैकेन वह्नीनां तद्विदुः समनारदः १ चित्रं तदेकेन द्रुपद्युगपत्पृथक् ॥ गृहेषु द्रव्यष्टसादृशं स्त्रिय एक उदावहत् २ इत्युत्सु को द्वात्रयी देवर्षिर्द्रुपमागमत् ॥ पुष्पितोपवनारामाद्विजालिकुलनादिताम् ३ उरुल्लेन्द्विवरान्भोजकल्लारुमुदोत्पलैः ॥ छुरिते पुनरस्मूचैः कूजितां हंससारसैः ४ ग्रासादलैश्चैव भिर्जुष्टां स्फाटिकराजतैः ॥ महामरकतपूर्यैः स्वर्णरत्नपरिच्छदैः ५ विभक्तैश्च पापथ्य च त्वरापणैः शालासभाभीरुचिरांसुरालैः ॥ संसिक्तमार्गाङ्गणमीथि देहली पतत्पताका ध्वजवातितापाम् ६ तस्यामन्तःपुरं श्रीमदचित्तं सर्वविषयैः ॥ हरैः स्वकौशलं यत्र त्वद्वाकारस्यैव दर्शितम् ७ तत्र पोडशभिः भद्रा सहसैः रागलङ्कृतम् ॥ विवेशैकतमं शौरैः पत्नीनां भवनं महत् ८ विष्टब्धं विदुमस्तम्भैर्वैदूर्यफलकोत्तमैः ॥ इन्द्रनीलमयैः कुड्यैर्जगत्या चावहतत्विषा ९ वितानैर्निर्भिर्तैस्त्वष्ट्रा मुक्तादागविलम्बिभिः ॥ दान्तरासनपथ्यैश्चैर्मर्त्युत्तमपरिष्कृतैः १० दासीभि

जामें होय रखो है ४ स्फाटिकमणि चांदी और महामरकतमणिन करिकै प्रकाशमान सुवर्ण की रत्न की सामग्री जिनमें धरी ऐसे नवलाग जामें महल बने हैं ५ न्यारे न्यारे बने जे राजमार्ग और गली कूचा बाजार तिन करिकै और शाला सभा देवतानके मन्दिर बने हैं तिन करिकै शोभायमान द्वारका है छिरकाउ जिनमें होय रखो ऐसे मार्ग औरगन गली देहरी जामें बनी हैं छोटी छोटी पताका जिनमें फहरायै ऐसी बड़ी बड़ी खजा है तिनमें १० जिनमें नहीं आवै है ६ या द्वारकापुरीमें सम्पूर्ण लोकपाल जाकी पूजा करै ऐमे श्रीकृष्णचन्द्र को अन्तःपुर है ता अन्तःपुर की रचना में विश्वकर्मा ने सम्पूर्ण अपनी चतुराई दिव्याई है ७ सोलह हजार महलन करिकै शोभायमान अन्तःपुर है तामें श्रीकृष्णचन्द्र की रानीनके जे भवन है तिनमें तें एक भवन में नारदजी जातभय ८ कैसे भवन में गये हैं ताको वर्णन करै हैं पूंगान के सरूप जामें लगे हैं और वैदूर्य मणिके फलकोत्तप अर्थात् खम्भधन की चौकी बनी है इन्द्रनीलमणि की भीति बनी हैं नहीं गई है शोभा जाकी ऐसी जहाँ भूमि बनी है ९ मोतन की भालारि जिनमें लगी ऐसे विश्वकर्मा ने बनाये जे चंदोरा हैं तिन करिकै वह भवन शोभायमान है मणि जिनमें लगी तिनमें शोभायमान ऐसे द्वाथी-

दाँत के चौकी और पलंग बिछे हैं तिन करिकै शोभायमान है १० धुकधुकी जिनके कपठ में सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरे ऐसी जे दासी हैं तिन करिकै शोभायमान है जामा पगड़ी पटुका मणिन के सुएडल पहिरे ऐसे जे पुरुष हैं तिन करिकै शोभायमान है ११ हे राजन् परीक्षित ! रत्न के दीपान की जे पंक्ति लागि रही हैं तिनके प्रकाश करिके अन्यकार जा भवन में तें दुरि भयो और घरन के भीतर अगर की जो धूप दीनी ताको धुआँ जाली भरोखान में होय के निकसे ताय देखि कैं मानों वादर आयें हैं यह जानि कैं मोर शब्द कूं करिकै भवन के चित्र विचित्र बज्जोन के ऊपर वृत्त करैं हैं १२ ता मढ़ल में अपनी बरामरि के गुण रूप अवस्था गहने जिनके ऐसी हजार दासीनकूं सत्र लैंके सर्वकाल सुवर्णही डांडी को चपर पखा लैंके यादवन के पति जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके ऊपर होरै ऐसी जो स्त्री रुक्मिणी है ता सहित श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन नारदजी करत भये १३ समस्त धर्म के जाननमारेग में श्रेष्ठ जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ते नारदजी कूं देखि के रत्नमणी सहित

निष्कलङ्कश्रीभिः सुवासोभिरलङ्कृतम् ॥ पुम्भिः सक्नु कंष्णीपसुवस्त्रमणि कुएडलैः ११ रत्नपदीपनिकरद्विभिर्निरस्तध्यानं त्रिचित्रवलभीपुशिलारिडनोऽङ्ग ॥ नृत्यन्ति यत्रानिहिता गुरुधूपमथैर्निर्यान्तर्माध्यघनचुद्धयउन्नदन्तः १२ तस्मिन्समानगुणरूपवयःसुवेषदासीसहसयुतयाऽनुसंवर्गद्विरया ॥ निप्रोद दर्शचमत्स्यजनेनरुग्मदण्डेनसात्त्वतपतिपरिवीजयन्त्या १३ तंमन्त्रिरीक्ष्यभगवान्सहसोत्थितः श्रीपदर्थङ्कतः सफलधर्मभृतांवरिष्ठः ॥ आनम्यपादयुगलंशिरसाकिरीटजुष्टेनसञ्जलिबीविशदासनेस्मे १४ तस्यावनिज्यचरणौतदपःस्वमूर्द्धाविभ्रज्जगद्गुरुतरुऽपिसतांपतिहिं ॥ ब्रह्मयदेवद्विनियद्वगुणनामयुक्त्वं तस्यैवयच्चारणशौचमशेषनीर्थम् १५ सम्पूज्यदेवञ्चपिबदर्थमृषिपुराणोनारायणोनरसखोविधिनोदितेन ॥ वारायाऽभिभाष्यमितयाऽमृतमिष्टयातं प्राहप्रभोमगवतेकरवामहेकिम् १६ ॥ नारदउवाच ॥ नैवाऽद्रुतंत्वयित्रिभोऽखिललोकनाथमैत्रीजनेपुत्रकलेपुदमःखलानाम् ॥ निश्रेयसायहिजगत्स्थिति रक्षणभ्यां सैरावतारउरुगायविदामसुष्ठु १७ दष्टंनदाङ्घ्रियुगलंजनतापवर्गब्रह्मादिभिर्हृदिविचिन्त्यमगाधोवै ॥ संसारकूपपतितोत्तराणवलम्बं ध्यायंश्च

पलंगमें तें शीघ्र उठिकै किरीटयुक्त शोभायमान जो शिर है तासूं चरणन में नगस्कार करिकै हाथ जोरिकै अपने आसनमें बैठतभये १४ जगत्के अतिशय करिकै गुरु साधुनके रत्नक ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो नारदजी के चरण ओइके चरणारविन्द को धोवन जल है ताथ अपने माथेमें चढ़ावत भये जिन श्रीकृष्णचन्द्र को चरणोंदक गङ्गा सबकूं पवित्र करै है तिनमें ब्रह्मयदेव यह गुणयुक्त नाम ज्यों बो ल्यों बने हैं १५ नर है सखा जिनको ऐसे चपिन में श्रेष्ठ नारायण नारदजी हैं तिनको शास्त्रोक्त विधिपूर्वक पूजन करिकै अमृत की तुल्य प्रमाणीभूत मधुरवाणी करिकै सम्भाषण करतभये कि नारदजी आप आयें नइो मङ्गलभयो हे समर्थ भगवान् ! वृष तुम्हारे महापूजन करै यह कहतभये १६ अथ नारदजी कहैं हैं हे समर्थ ! सग जीवन ते पित्रना करौ ही और दुष्टनकूंदपददेत होऐसे समस्त लोकनके नाथ जो तुम ही तिनमें आश्चर्यनर्थ है बहुगमकार गायब में आवो जगत् की स्थिति और रत्नासाहित रत्नगाण करिके लिये अपनी इच्छापूर्वक अवतार लेतहो यह मैं भले प्रकार जानूं हूं दुष्टनकूंदपद देनो और साधुन को सत्कार करनेो यह तुम कूं योग्य है १७ जननकूं मोक्ष हो देनन रो चरणमगल है ताकूं उडो है ज्ञान जिनके ऐसे ब्रह्मादिक देवता हृदयमें ध्यान करै



संसाररूप कुत्रा में दूगो जो जीव है ताकू निकसिये को आश्रय ऐसी तुम्हारे चरणारविन्द को दर्शन करयो जैसे सुनि रही आवै तैसे चरणारविन्द को व्यान करत भे विचरुं यह अनुग्रह भरे ऊपर करो १८ हे राजन परीक्षित ! योगेश्वर जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी योगमाया जानिये के लिये श्रीकृष्णचन्द्र की और रानी है ताके महल में जात भये १९ ता महल मेंभी प्यारी सत्य-भामा के सङ्ग और उद्धवकी के सङ्ग चौपार खेलें जे श्रीकृष्णचन्द्र तिनैं नारदजी देखत भये परम भक्तिपूर्वक उठिकैं आसन दिखाय कै अर्घ्य दैकैं पूजन करत भये २० तुम कव आये या प्रकार अज्ञानी की तुल्य श्रीकृष्णचन्द्र नारदजीते पूछत भये पूर्ण जो तुम हो तिनको हम अर्पण कहा पूजन करै २१ हे ब्रह्मन् ! हम पूर्ण नहीं है तथापि हम ते कछु कहौ हमारो यह जन्म है ताथ सार्थक करो नारदजी आश्चर्य मानि कै वरां ते उठिकैं और मन्दिर में जात भये २२ ता महल में भी छोटे २ बालकन कूं खिलावैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखत भये ता पीछे और महल में जायकैं देखैं

राम्यनुगृहाणयथास्मृतिः स्यात् १८ ततोऽन्यदाविशेद्वहं कृष्णपत्न्याः सनारदः ॥ योगेश्वरेश्वरसगाङ्गयोगमायाविवित्सया १९ दीव्यन्तमक्षैस्तत्रापि प्रिययाचोद्धवेन च ॥ पूजितः परयाभक्त्या प्रत्युत्थानासनादिभिः २० पृष्टश्चाविदुषेवाऽसौ रुदायातो भवानिति ॥ कियते किं नु पूर्णानामपूणैस्मदादिभिः २१ अथापि द्विहि नो ब्रह्म अन्मैतच्छाभनंकुरु ॥ सतु विस्मिमत उत्थाय तूष्णीमन्यदगादुद्गृहम् २२ तत्राप्यचष्ट गोविन्दं लालयन्तं सुताञ्जिशूत्रम् ॥ ततोऽन्यस्मिन् गृहेऽपश्यन्मज्जनानायकृतोद्यमम् २३ जुह्वन्तं च वितानाग्नीन् यजन्तं पञ्चभिर्मखैः ॥ भोजयन्तं द्विजान् क्वापि भुञ्जानमवशेषे पितम् २४ कापिसन्ध्यामुपासीनं जपन्तं ब्रह्मवाग्यतम् ॥ एकत्र चासिचर्मभाञ्चरन्तमसिर्वत्सम् २५ अश्वैर्गजैरथैः क्वापि विचरन्तं गदाग्रजम् ॥ क्वचिच्छयानं पर्यङ्के स्तूयमानञ्च न्दिभिः २६ मन्त्रग्रन्थं च कस्मिंश्चिन्मन्त्रिभिश्चोद्धवादिभिः ॥ जलक्रीडारतं क्वापि वारमुखाऽवलामृतम् २७ कुत्रचिद्विजमुख्येभ्यो ददन्त गाः स्वलङ्कृताः ॥ इतिहासपुराणानि शृण्वन्तं गङ्गलानि च २८ हसन्तं हास्यकथया कदाचित् प्रियया गृहे ॥ क्वापि धर्मसेवमानमर्थकामौ च कुत्रचित् २९ ध्यायन्तं मेकमासीनं

तो स्नान को उपाय करै हैं २३ काहू महलमें श्रीकृष्णचन्द्र अग्निहोत्र करै हैं और महल में पञ्चपत्र करै हैं काहू महल में ब्राह्मणन को बक्यो जो प्रसाद ताथ आप भोजन करै हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २४ काहू महलमें सन्ध्योपासन करै हैं और कहुँ मौन होयकैं गायत्री जपै हैं एत महल में हाछ तलवार लैकैं फिरै हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २५ काहू महलमें घोड़ान पै रथन पै चादिकैं डोली हैं और काहू महलमें पलंगपै सोवैं बन्दीजन जिनकी स्तुतिकेरै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २६ काहू महल में उद्धवादिक मन्त्रन के सङ्ग सलाह करत देखे और काहू महलमें इतिहास पुराण मङ्गलरूपी वाक्य श्रवण करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २७ काहू महल में शृङ्गार करिकैं गौवन कूं ब्राह्मणन के अर्थ देखै हैं और काहू महलमें श्रुतिहास पुराण मङ्गलरूपी वाक्य श्रवण करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २८ काहू महल में हाँसीकी नात कहिकैं प्यारी के सङ्ग श्रीकृष्णचन्द्र देखै हैं और काहू महल में अपने धर्म की सेवन करै हैं काहू महलमें अर्थ और कामकूं सम्पादन करै हैं २९ काहू महल में माया मं अतीत जो परब्रह्म है ता तो

एक आसन पै बैठिके अंगन करे हैं और काहू महलमें काम भोग पूजन इन करिके गुरुनकी शुश्रूषा करै हैं ३० काहू महल में काहू साँ विरौय की बात करे हैं और काहू महल में मिलाप की बात करे हैं और काहू महल में बलदेवजी के सङ्ग साधुन कूं सुख होइ यह विचार करे हैं ऐसे श्री कृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये ३१ काहू महल में पुत्रनको समय पै सदृश स्त्रीन कूं देखिके विचार करे हैं और काहू महल में बलदेवजी के सङ्ग साधुन कूं सुख होइ यह विचार करे हैं ऐसे श्री कृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये ३१ काहू महल में पुत्रन कूं करे हैं और काहू महल में बलदेवजी के सङ्ग साधुन कूं सुख होइ यह विचार करे हैं ऐसे श्री कृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये ३१ काहू महल में पुत्रन कूं सुसारा रीति के उनकी स्त्रीन कूं सुखोवे हैं या प्रकार योगेश्वरन के ईश्वर श्री कृष्णचन्द्र के सन्तानन के वड़े उत्सव देखिके लोक आश्चर्य कूं प्राप्त होत भये ३२ काहू महल में बड़े यज्ञन करिके अपनी बला जे देवता हैं तिनको पूजन करे हैं और काहू महल में अमृत रस्तामें कुआ चनवावो बाग लगावो नवीन मन्दिर बनवावो या प्रकार धर्म कूं करै ऐसे श्री कृष्णचन्द्र कूं नारदजी देखत

पुरुषप्रकृतेः परम् ॥ शुश्रूषन्तं गुरुं कृत्वापि कामैर्भोगैः सपर्यया ३० कुर्वन्तं विग्रहैश्चित्सन्धिवान्यत्र केशवम् ॥ कुत्रापि सदराभेण चिन्तयन्तं सतां शिवम् ३१ पुत्राणां हि नृणाञ्च काले मिथ्यगयापनम् ॥ दौर्बैरैस्तस्मद्दृशैः कल्पयन्तं विभूतिभिः ३२ प्रस्थापनोपानयनैरपत्यानां महोत्सवान् ॥ वीक्ष्य योगेश्वरेश स्मर्यै पांलोकविशिखरे ३३ यजन्तं सकलान् देवान् कापिकृतुभिरुजितैः ॥ पूर्वयन्तं कचिद्धर्मं कूपाराममठादिभिः ३४ चरन्तं मृगयाङ्कापि हयमारुहसै न्धवम् ॥ धनन्तं ततः पशून्मेध्यान्परीनं यदुपुङ्गवैः ३५ अव्यकलिङ्गं प्रकृतिष्वन्तः पुरगृहादिषु ॥ कचिच्चरन्तं योगेशं तत्तद्भावबुभुत्सया ३६ अथोवाच हृषीकेशं नारदः प्रहसन्निव ॥ योगमायोदयं वीक्ष्य मानुषीभ्यो गतिम् ३७ विदामयोगमायास्ते दुर्दर्शा अपि मायिनाम् ॥ योगेश्वरात्मनिर्भाता भवत्पादन्निषया ३८ अनुजानीहि मां देव लोमांस्ते यशसाप्नुवान् ॥ पर्यटामितवोद्गायल्लीलां भुवनपावनीम् ३९ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ ब्रह्मन् धर्मस्य गङ्गाऽहं कर्त्ता तदनुमोदिता ॥ तच्छिक्षयल्लोकमिममास्थितः पुत्रमाविद ४० ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इत्था चरन्तं सद्धर्मान् पावनान् गृहोधिनाम् ॥ तमेव सर्वं गेहेषु सन्तमे क

भये ३४ काहू महल में तैं सिन्धु देशके घोड़ा पै चढ़िके यादवन कूं संग लैके शिकार खेलिये के लिये जाय हैं तहां विचित्र विचित्र पशून कूं मारै ऐसे श्री कृष्णचन्द्र कूं देखत भये ३५ काहू महलमें आपनो रूप छिपाय कै अन्तःपुरके भीतर जे गुहादिक है तिनमें जो प्रजा है ताको अभिमाय जानिये के लिये विचरै ऐसे योगेश्वर श्री कृष्णचन्द्र हैं तिन देखत भये ३६ मनुष्यन की जाति कूं प्राप्त भये ऐसे जे श्री कृष्णचन्द्र है तिनकी योगमाया को वैभव है ताय देखिके सम्पूर्ण लीलान के देख पीछे नारदजी हंसिके बोलत भये ३७ योगेश्वर ! तुम्हारे चरणारविन्द की सेवा करिके मेरे मन में प्रकाशी ऐसी जो तुम्हारी योगमाया है ताय हम केवल जाने हैं और तुम्हारी जो सत्यरूप है ताय नहीं जाने हैं ३८ हे देव ! तुम्हारी यश जिनमें फैलि रह्यो समस्त लोकनके पवित्र करनेवारी जे तुम्हारी लीला हैं तिनमें गावत विचरुं यह आज्ञा तुम मोकू देउ या प्रकार नारदजी कहत भये ३९ अब श्री भगवान् कृष्णचन्द्र बोले हे ब्रह्मन् ! मैं धर्म को कहनवारो हूं और कूं धर्मकर्त्ता देखिके प्रशंसा करूं हूं ता कारण लोकरन कूं सिखाइये के लिये कर्म करूं हूं हे पुत्र ! तू अपने गनमें खेद मति करै ४० अब श्रीशुकदेवजी कहै हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार गृहस्थ पुरुषनके पवित्र

करनवारे श्रेष्ठ धर्मन कूं करै ऐसे अकेले श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनहीं समस्त घरन में नारदजी देखतभये ४१ अनन्त है पराक्रम जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की योगमाया को बड़ो उदयहै ताय वारं-  
वार देखिकै भयो है कौतुक जिनके ऐसे नारदजी आश्चर्य मानतभये ४२ या प्रकार अर्थ काम धर्म इनमें श्रद्धायुक्त है मन जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ने भले प्रकार पूजन जिनको करयो ऐसे  
नारदजी प्रसन्नतापूर्वक श्रीकृष्णचन्द्रको मनमें स्मरण करत जातभये ४३ या प्रकार मनुष्यनके मार्ग में वतै समस्त जीवन के कल्याण करिवे के निमित्त ग्रहण करी है अनेक मूर्ति जिनने ऐसे  
श्रीकृष्णचन्द्र सोलह हजार श्रेष्ठ स्त्रीनके बीचमें लाजभरी स्नेहकी चितवनि हँसनि तिनसूं सेवितहोयै रमण करतभये ४४ हे राजन् परीक्षित् ! विश्वकी प्रलय और उत्पत्तिके कारण ऐसे जे हरि  
भगवान् हैं तिनके और से जे वने नहीं ऐसे जे असाधारण कर्म हैं तिन या संसारमें जे पुरुष गावे हैं अथवा श्रवणकरै बड़ाई करै उन पुरुषनको मोक्षके देननारे जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन  
में भक्ति होइहै ४५ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपियादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णगार्हस्थ्यदर्शननामैकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६६ ॥ \* ॥ \* ॥

नददर्शह ४१ कृष्णस्यानन्तवीर्यस्य योगमायामहोदयम् ॥ मुहुर्दृष्ट्वाऽपि भूदिस्मितोजातकौतुकः ४२ इत्यर्थकामधर्मेषु कृष्णेन श्रद्धितात्मना ॥ सम्य  
क्समाजितः भीतस्तेभवानुस्मरन् ययौ ४३ एवं मनुष्यपदवीमनुवर्त्तमानो नारायणोऽखिलभवाय गृहीतशक्तिः ॥ रेमेऽङ्गवोऽशसहस्रराङ्गानां सद्बीडसौ  
हृदनिरीक्षणहासजुष्टः ४४ यानीह विश्वविलयोद्भववृत्तिहेतुः कर्मण्यनन्यविषयाणि हरिश्चकार ॥ यस्त्वङ्गगायति शृणोत्यनुमोदते वा भक्तिर्वेद्भगवति  
ह्यपवर्गमार्गो ४५ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे कृष्णगार्हस्थ्यदर्शननामैकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६६ ॥ \* ॥ \* ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथोपस्युपवृत्तायां कुक्कुटान्कूजतोऽशपन् ॥ गृहीतकण्ठ्यः गतिभिर्माधव्यो विरहातुराः १ वयांस्यरुरवन्कृष्णं बोधयन्तीव निन्दनः ॥  
गायस्त्वलिप्त्रनिद्राणि मन्दाखनवायुभिः २ मुहूर्त्ततनुवैदर्भी नामुष्यदतिशोभनम् ॥ परिरमण विशलेपातिप्रयत्नाहन्तरङ्गता ३ ब्राह्मेमुहूर्त्तैः उत्थाय वायु

( ततस्तु सप्ततितमे कृष्णस्याद्विक्रमं गच्छि ॥ दूतनारदयोऽकार्यकार्यमन्त्रविचारणम् ? जगन्मल्लचारित्रमाद्विक्रमं गच्छि ॥ नारदेन कचित्किञ्चिद्दृष्टमाह्वयक्रमम् २ सत्तर्कं अध्यायमेव कृष्ण  
जीके दिनके कर्ममें दूत और नारदजी के कार्यमें सलाह करनी योग्यहै यह वर्णनहै १ संसारके स्वामी कृष्णजी के संसारके मल्ल दिनके चरित्र नारदजी नवहं कुत्र देखतेभये तिनको क्रमसूं  
कहते भये २ ) अत्र श्रीशुकदेवजी कहैहै हे राजन् परीक्षित् ! पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने ग्रहण करै हैं कण्ठ जिनके ऐसी जे श्रीकृष्णचन्द्रकी रानी हैं ते प्रातःकाल होत आयो तब मुरगा बोले तिन  
विरहमें व्याकुल होयकै कोशति भई कि अरे अभाग अग्रहीं ते तुम बोले श्रीकृष्णचन्द्र प्रातःकाल जानिकै उठेगे ? प्रातःसमय गई है निद्रा जिनकी ऐसी पत्नी बोलतभये और कल्पवृक्षकी पवन सूचिके  
भौरा गूजतभये सो यानों श्रीकृष्णचन्द्र कूं वन्दीजन गावे हैं २ प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र की मुजान के बीचमें प्राप्तभई ऐसी जो विदर्भदेश के राजाकी पुत्री लक्ष्मणी है सो ब्राह्मिन् को जो प्रियोगई  
ताय देखिकै अतिसुन्दर जो प्रातःकाल है ताय नहीं सहतिभई ३ प्रसन्न हैं इन्द्रिय जिनकी ऐसे मधुवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र ब्राह्म मुहूर्त्त अर्थात् सूर्योदयतें दो घड़ी पहिले उठिकै जल

को आचमन करिके माया तें वरे जो अपनो स्वरूप है ताको ध्यान करतभये ४ कैसे स्वरूप को ध्यानकरो ताको वर्णन करे हैं एक अथलण्ड स्वयंज्योति स्वरूप उपाधिरहित अविनाशी सर्वकाल अविचारहित ब्रह्म नाको नाप या विश्व ही उत्पत्ति और नाश इनको कारण अपनी शक्ति करिके लखिये में आवै ऐसी सत्तामात्र आनन्दरूप है ५ ध्यानकरे पीछे निर्मल जलमें विधिपूर्वक स्नान जिनने कस्यो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र धोती उपरनाकूं पहिरिके सन्धोपासनादि जे कर्म और अग्निहोत्र इनकूं करिके मौन होयकै गायत्री जप करतभये ६ उदयभगो जो सूर्य है ताथ अर्चदै के अपने अंश जे देवता ऋषि पिदुहैं तिनको तर्पण करिके ज्ञानवान् श्रीकृष्णचन्द्र ब्राह्मणन को पूजन करतभये ७ सुब्रह्मं सूं सींग जिनके मढ़े वड़ी सूत्री मोतिनकी माला जिनके परी दूधदेई परस्परकी व्यानी बछरा जिनके संग सुन्दर वल्लनकी झूलैं ओढ़े ८ खे मूं सुसनके अग्रभाग जिनके मढ़े ऐसी गौ एक एक महलमें तें प्रतिदिन शोभायमान सत्पात्र जे ब्राह्मण हैं तिनकूं रंशमी वस्त्र मृगबाला और

पस्पृश्यमाधवः ॥ दध्यौप्रसन्नकरण आत्मानंतमसः परम् ४ एकंस्वयंज्योतिरनन्यमव्ययं स्वसंस्थयानित्यनिरस्तकलमपम् ॥ ब्रह्माख्यमस्योद्भवनाशहेतु भिःस्वशक्तिभिर्लक्षितभावनिर्वृतिम् ५ अथाप्नुतोऽभस्यमलेयथाविधिक्रियाकलापपरिधायवाससी ॥ चकारसन्ध्योपगमादिसत्तमोद्भुतानलोब्रह्मजजापवा ग्यतः ६ उपस्थायाकमुद्यन्ततर्पयित्वाऽऽत्मनःकलाः ॥ देवानुपीनपितृबृह्दन्नाचविप्रानभ्यर्च्यचात्मवान् ७ धेनूनांरुक्मशृङ्गीणां साधूनांमौक्तिं हंसजाम् ॥ पयस्विनीनांशृङ्गीनांसवत्सानांमुवाससाम् ८ ददौरूप्यखुराग्राणां क्षौमाजिनतिलैः सह ॥ अलङ्कृतेभ्योविभ्रेभ्योवद्वंद्वं + दिनेदिने ९ गोविप्रदेवताबृह्मरुन्धूतानिसर्व्वशः ॥ नमस्कृत्याऽऽत्मासंभूतीर्महलानिसमस्पृशत् १० आत्मानंभूयामासनरलोकविभूषणम् ॥ वासोभिर्भूषणैः स्त्रीगैर्दिव्यसगनुलेपनैः ११ अवेक्षमाज्यंतथाऽऽदर्शगे वृषद्विजदेवताः ॥ कामांश्चसर्व्ववर्णानिपौरान्तःपुरचारिणाम् ॥ प्रदाप्यप्रकृतीः कामैः प्रतोष्यप्रत्यनन्दत् १२ संविभज्याश्रनोविप्रान्

तिल इनसहित दान करतभये ९ अपनी मिथुति जे गौ ब्राह्मण देवता बृह्म गुरु हैं तिनें नयस्कार करिके महलबस्तु जे कपिला तें आदिलैंकै गौ हैं तिनको स्पर्श करतभये १० नरलोक कूं भूषणरूप जो अपनी आत्माहै ताथ वस्त्रनमूं और दिव्यमाला अरगजा चन्दन इत्यादिकन गूं शोभायमान करतभये ११ मृतमें मुखारविन्द कूं देखिके तैसेही दर्पण में देखिके गौ दैल ब्राह्मण देवता इनको दर्शन करिके पुरके अन्तःपुरके रहनवारे जे सर्व्व वर्ण हैं तिनकी मनोवाञ्छित जे कामना हैं तिनकूं दैकै और प्रधान दीवानहैं तिनें कामनासूं सन्तुष्ट करिके आनन्दकूं पावतभये और माला बीरी चन्दन अरगजा ईनें मथम ब्राह्मणन कूं दैकै सुहृदन कूं दैकै प्रधान दीवान कूं दैकै आप अग्नीकार करतभये यामें गुरुस्थान को धर्म दिलायो अर्थात् गुरुस्थानको ऐसो चाहिये जो सद्गुरु दैके आप अग्नीकार

+ चद्रमिति चिरव्याप्यवृत्तान्कृष्णान् शुद्धं स्तोमृगान् मण्यारमृतोऽदराभ्यक्तपद्मानिमसंचेति श्रुत्युत्तारि ससोत्तरसत्तवद्वये गेहं कृत्यमृगणचतुर्दशलश्रुतेन गणितानि योगेक भगतेभवाविदुरगनमस्तं च मृगाश्च गुह्यरः ॥ दृष्ट्यान् एतेर्गणितं कुतश्च धनमप्यर्पयिष्यन्गारे निमुतापिचतुर्दशेति ततश्चपददत्तस्याप्येकाकेनरुपग्रह चतुर्दशानलयाण्यसस विभक्तशक ॥ बद्धचतुर्थं नम्रमदृष्ट्याग्नयौदसादीदिन्द्रोचप्रतिश्रुचैति ५ ॥

करे १०। १३ इतने में रथवान् सुग्रीवसू आदिकों के जोड़े हैं तिनकू जोतिके परमअद्भुत रथकूलायक प्रणाम करिके आगे ठाढ़ो होतभयो १४ रथवान् को हाथ संह हाथ पकरिके सात्यक उद्धव कू संगलोक रथमें बैठतभये जा प्रकार मूर्ध्नि सुमेरु पर्वत के ऊपर तैसे १५ लाज भरी प्रेमभी चित्तवानिधुं आनन्दः पुरकी स्त्रीन ने देखे जानूं भयो है हास्य जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र वडे कष्ट तें उन श्रीभक्त खोडिके उनके मतकू हरिके निकसतभये १६ या प्रकार सन घरनमें न्यारे २ निकसिके पीछे सब एकरूप होयकौ सब यादवनकू संगलोक श्रीकृष्णचन्द्र सुग्रीवों सभामें जातभये हे राजन् परीक्षित ! सुग्रीवों सभामें जे गये हैं तिनकू क्षु या पिपासा शीत गर्भों शोक मोदये वाधा नहीं करे हैं १७ ता सभामें श्रेष्ठ सिंहासननै बैठे मनुष्यनमें श्रेष्ठ यादव जिनके आसपास बैठे तिनमें उषम व्यापक श्रीकृष्णचन्द्र अपनी कान्ति करिके दिशान कू प्रकाशमान करतभये जैसे आकाश में तारागणन के बीचमें चन्द्रमा शोभा कू प्राप्तहोइ है तैसे १८ हे राजन् परीक्षित ! ता सभाके बीचमें भांड हैं ते नानाप्रकारकी

स्रग्नाग्नानु तेपनैः ॥ सुहृदः प्रकृतीदरानुपायुक्ता तः स्वयम् १३ तावत्सूनुपानीय स्यन्दनं परमाद्भुतम् ॥ सुग्रीवाद्यैर्हयैर्युक्तां गणम्यावस्थितोऽग्रतः १४ गृहीत्वा पाणिना पाणिं तारथ्ये सनमथारुहत् ॥ सात्त्विकयुद्धा संयुक्तः पूर्वोद्दिभिन्नभासरः १५ ईक्षितोऽन्तःपुरस्त्रीणां सव्रीडभेमवीक्षितैः ॥ कृच्छ्रादिमृष्टो निरगाजजा तहासोऽहन्मनः १६ सुधर्मोख्यासभां सन्निविष्टाभिः परिहारितः ॥ प्राविशद्यन्निविष्टानां न सन्त्यङ्गपद्वयः १७ तत्रोपविष्टः परमासने विशुर्वगोस्वभासा ककुभोऽवभासयन् ॥ वृत्तो नृसिंहैर्बुधैर्भद्रैर्दूतगोत्रथोदुराजोदिवितारकागणैः १८ तत्रोपमन्त्रिणो राजन् नानाहास्यरसैर्विभुम् ॥ उपतस्थुर्नटाचार्यार्थानर्तक्यस्ताण्डवैः पृथक् १९ मुदङ्गवीणा मुरजवेणुतालदस्वनैः ॥ ननु तुर्जगुस्तुह्वुश्च सूनमागधवन्दिनः २० तत्राहुर्ब्राह्मणाः केचिदासीना ब्रह्मवादिनः ॥ पूर्वैर्वापां पुरययशासां राज्ञां चाकथयन् कथाः २१ तत्रैकः पुरुषो राजन्नागतोऽपूर्वदर्शनः ॥ विज्ञापितो भगवते प्रतीहारैः प्रवेशितः २२ सनमस्कृत्य कृष्णाय परेशाय कृतार्जुनालिः ॥ राज्ञामावेदयदुःखं जरासन्धानि गोघजम् २३ येचदिग्गिजयेतस्य सन्नर्तिनययुर्नृपाः ॥ प्रसह्यरुद्धास्तेनासन्नयुतेद्विगिरित्रजे २४ कृष्णकृष्णा प्रमेयात्मन् प्रपन्नभयभञ्ज

हासी की वार्ता करिके श्रीकृष्णचन्द्र को सेवन करतभये और नटनमें जे मुख्य हैं ते अपने न्यारे २ जे गवय्या हैं तिनकू संगलोक सन्मुख ठाढ़े होतभये १९ मुदंग वीणा मुरज मासुरी भ्रातृ शङ्ख इनकू वजाय के नृत्य करतभये और सून मागध वन्दीजन हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र के सन्मुख स्तुति करतभये २० कोई एक ब्राह्मण कहिये मैं अतिशुद्धिमान ते वेदकी ऋचा पढ़िके व्याख्या करतभये कोई ब्राह्मण पवित्र है यश जिनको ऐसे पहिले राजान की कथान कू कहतभये २१ हे राजन् परीक्षित ! प्रथम कथज देखयो नहीं ऐसो एक अपूर्व नवीन पुरुष आवनभयो जब ख्यो दीवारेन ने श्रीकृष्णचन्द्र ते जायकै खरि करी तब कृष्णचन्द्रने कही जावो खियाय लावो तब जाकू सभाके भीतर पहुँचाय दियो २२ ब्रह्मादिकन के ईश्वर जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकू वह पुरुष हाथ जोरिके नमस्कार करिके जरासन्ध ने रोक जे बीचसहजार आठसौ राजा हैं तिनके दुःख कू कहतभयो २३ जरासन्ध के दिग्विजय के समय जिन राजान ने जायकै मँडन दीनी ने बीचसहजार आठसौ राजा हैं तिनमें पकरिके गिरिव्रजनाम किआ है तामें रोकितभयो २४ हे कृष्ण ! हे अश्वमेयात्मन् अर्जुन् नहीं प्रमाण करिये मैं आवै है प्रभान जिन

को ! हे शरणागतके भयके काटनचारे ! या संसार में भयभीत तुम तें न्यारी है बुद्धि जिनकी ऐसे हम तुम्हारी शरण आये हैं २५ जो लोक अतिशय करिके पापकर्ममें लागि रहा है सो तुमने पतायो आपनो जामें भलो होइ ऐसो तुम्हारी पूजन सेवगण जो कर्म है ताग भूलिरहा है जो तुम चलवान् या संसार में जीवै की आशा है ताकूं शीघ्र काटोहो ऐसे जो कालखप तुमहो तिनकूं नमस्कार है २६ जगत् के ईश्वर जो तुमहो सो या संसार में साधुनकी रत्ना करिजे के लिये और दुष्टनकूं दण्ड देवे के लिये शंश करिके अवतार लिये हो कोई जरासन्य सरीखो जो रावर तुम्हारी आज्ञाकूं नहीं माने है अथवा जे प्राणी अपने कर्मनको फल भोगे है यह हम नहीं जाने हैं अर्थात् यह जरासन्य तुम तें जो रावर है जाके कर्मों में दुःख लियो है याही तें हम रोकि राखे है २७ हे ईश्वर ! परार्थीन स्वप्नकी तुल्य भिळग जो राजापनेके सुख को वोभै ताग सर्वदा जामें भय लगयो रहै ऐसो शुककी तुल्य जो शरीर है ताकूं धारण करे हैं अपनेमें रहे आबो ऐसे सुख

न ॥ वयंत्वांशरणं गाय गीताः पृथग्भिधयः २५ लोको विविक्मर्मानेरतः कुशले प्रमत्तः कर्मण्ययन्वदुदिते भवदर्शने स्ते ॥ यस्तावदस्य वलवानिह जीविताशां राद्यश्चिच्छन्त्यनिमिषाय न मोऽस्तु तस्मै २६ लोके गवाजगदिनः कलयाऽवतीर्णः स दक्षणा यत्नलनिग्रहणाय चान्यः ॥ कश्चित्पदीयमति यमति यानि निदेशमीश किंवा जनः स्वकृतशृन्धतितन्नविद्वाः २७ स्वप्रापिनं नृपगुलं परतन्त्रमीशशस्वद्वयेन मृतकेन धुंवाहमः ॥ हित्वा तदात्मनि सुखं तदनीहलभ्यं क्रियामहेऽतिक्रिय ॥ स्नवमाययेह २८ तन्नो भवान्मपणतशोकहराङ्घ्रिगोचद्वान्वियुङ्क्ष्वमगधाह्वयकर्मगपाशात् ॥ यो भूभुजोऽयुतमनङ्गजवीयेभको विभ्रद्रोधभवने मृगराडि वात्रीः २९ यो वै त्वया द्विनववृत्त उदात्तचक्रभग्नोऽपृथेखलु भवन्तमनन्तवीर्यम् ॥ जित्वानुलोकनिरतं सकृददृश्यो युष्मत्पजारुजतिनोऽजिततद्विधेहि ३० ॥ दूत उवाच ॥ इति मार्गधर्मरुद्धा भवदर्शनकाङ्क्षिणः ॥ मपन्नाः पादमूलं ते दीनानां शंनिधीयताम् ३१ ॥ भीशु रुउवाच ॥ राजदूतेऽनुव्रत्येवं देवर्षिः परमद्युतिः ॥

रूप जो तुमहो तिनैं त्यागिकै या संसार में तुम्हारी मायाकरिके कृष्ण जे हम हैं ते दुःखकूं प्राप्तये हैं २८ ता कारण हे कृष्ण ! मैं तुम्हारी हूं तुम कूं नमस्कार है या प्रकार जिनने कही तिन पुरुषन के शोक कूं हरे हैं चरणारविन्द जिनके ऐसे तुम जरासन्य है नाम जाको ऐसी कर्मरूप फापी मूं वंशे जो हम हैं तिनैं लुझावो कदाचित् कहो कि तुमहो पराक्रम करिके क्यों न छुटिजयो ताको उच्चर राजा देइ है जो अनेलो जरासन्य दण्ड हजार हाथीन के वलकूं धारण करिकै जैसे सिद्ध भेड़न कूं रोकत भयो ऐसे घोसद्वजार आउस राजा हैं तिनैं रोकत भयो २९ ग्रहण कियोहै चक्र जिनने ऐसे हे कृष्ण ! तुम हो तिनसूं अठारह वार जरासन्य लड़यो तामें सत्रह वार तुमने हराय दियो परचात वडो है पराक्रम जिनको ऐसे जो तुम हो सो मनुष्यलीला करो हो तिनैं एकवार जीति कै दब्यो है गर्व जाके ऐसो जरासन्य तुम्हारी मजा हम हैं तिनैं पीछा देइ है यहाँ जो आगकूं योग्य होय सो करो ३० अत्र दूत कहै है या प्रकार जरासन्य के रोकै तुम्हारे दर्शन भी गान्धावाले तुम्हारे चरणारविन्दको शृंग जिनने लियो ऐसे दीन राजान कूं जामें सुख होतै सो कीजै ३१ श्रीशुकदेव जी बोले कि हे परीक्षित ! या प्रकार राचान को दूत वहे



हो इतने में श्रेष्ठ है कान्ति जिनकी पीरी जटान कूं धारण करे ऐसे श्रीमन्नारदजी जैसे सूर्य्य प्रकट होइ है ऐसे प्रकट होतभये ३२ सम्पूर्ण लो कन के महान् ईश्वर जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो नारदजीकूं ये देखि कै अपनी सभा में जे बैठे है तिन सहित शिर नवाय है प्रणाम करतभये ३३ आसन पे बैठे ऐसे नारदजी को विधिपूर्वक सत्कार करिके श्रद्धापूर्वक मधुर मधुर चनन करिके हृत्ता करतभये ३४ श्रीकृष्ण पूछै हैं नारद जी त्रिलोकी में कहां भय तो नहीं है लोकन में फिरो जो तुमहो तिनसूं हों वहां लाभ है वर बैठेही सवरी खरिमिलि जाय है ३५ ईश्वर के निर्माणकरे लोकन में ऐसी कोई बात नहीं है जो तुम न जानो अब पाण्डवनकी कथा करिने की इच्छा है यह हम तुमतें पूछै हैं ३६ तब नारदजी बोले हे समर्थ ! ब्रह्मा के मोह करन बारे जे तुमहो तिनकी मायान को पार नहीं ऐसी मैंने बहुत माया देखी है हे व्यापक ! अपनी शक्तिन करिके प्राणीन के भीतर विचरो हो अग्नि की तुल्य ढक्यो है तेज जिनको ऐसे तुम मो

विश्रुतिपङ्कजटामारं प्रादुरासीद्यथारविः ३२ तंदृष्ट्वा भगवान्कृष्णः सर्वलोकेश्वरेश्वरः ॥ ववन्दउत्थितः शीर्ष्णाससभ्यः सानुगोमुदा ३३ समाजयित्वा विधि वत्कृतासनपरिग्रहम् ॥ वभापेसूनुतैर्वाक्यैः श्रद्धयातर्पयन्मुनिम् ३४ अपिस्विदद्यलोकानां त्रयाणामकुतोभयम् ॥ ननुभूयान्भगवतो लोकात्पर्यटतो गुणः ३५ नहितेऽविदितं किञ्चित्तोकेष्वीश्वरकर्तृषु ॥ अथपृच्छामहेयुष्मान्पाण्डवानां चिकीर्षितम् ३६ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ दृष्टामया ते बहुशो दुस्तया माया विभो विश्वसृजश्चागमिनिः ॥ भूतेषु भूतं चरतः स्वशक्तिर्भिवहैरिव च्छन्नरुचो न मेऽद्भुतम् ३७ तवेहितं कोऽहं तिसाधुवेदितुं स्वमाययेदं सृजतो नियच्छतः ॥ यद्विद्यमानात्प्रतयाऽवभासते तस्मै नमस्ते स्वविलक्षणतमने ३८ जीवस्पयः संसरतो विमोक्षणं न जानतोऽनर्थं न हाच्छरीरतः ॥ लीलावतारैः स्वयंशः प्रदीप कं प्राज्वालयत्वा तमहं प्रपद्ये ३९ अथाप्याथात्र ये ब्रह्मन् नरलोकाविडम्बनम् ॥ राज्ञः पतुष्वस्त्रेयस्य भक्तस्य च चिकीर्षितम् ४० यक्षप्रतिष्ठां मखेन्द्रेण राजशूयेन पाण्डवः ॥ पारमेष्ठ्यकामो नृपतिस्तद्भवाननुमोदताम् ४१ तस्मिन् देवक तु वरे भगवन्तैर्वसुशदयः ॥ दिदृक्षवः समेष्यन्ति राजानश्च यशस्विनः ४२ अवणारकी

क- तें पूछो हो यह आश्चर्य्य नहीं है ३७ अपनी माया करिके या विश्वकूं उपजावो हो और संहारकरो हो ऐसे जो तुमहो तिनकी चेष्टा कौन पुरुष भलेगद्गार जानिये कूं योग्य है अपने स्वल्प करिके विचार में न आये ऐसे जे तुमहो तिनको नमस्कार है ३८ अविद्या करिके अनर्थ कूं प्राप्त करनवारो जो देह है तासूं जन्म मृत्युहूं पावै और ता अविद्या करिके शरीर तें मृत्युवे के उपाय कूं नहीं जानें ऐसो जो जीवहै ताकूं लीलावतारन करिके दीपकरूप जो अपना यश है ताय प्रकाश करतभये जो तुम हो तिन तुम्हारी शरण प्राप्तभयो हूं ३९ तौ भी हे ब्रह्मन् ! मनुष्यन जो अनुसरण करो जो तुमहो तिनकूं तुम्हारी फूफो को पुत्र भक्त ऐसो राजायुधिष्ठिर जो कलु कस्यो चाहे है ताय सुनाजहूं ४० पाण्डुको पुत्र चक्रवर्ती राज्य करिये की इच्छा भई ऐसो जो राजा युधिष्ठिर है सो यज्ञगाद जो रागसूययज्ञ है ता करिके तुम्हारे पूजन कस्यो चाहे है यह आप अनुमोदन करो ४१ हे देव ! या यज्ञमें तुम्हारे दर्शन करिये के निमित्त इन्द्रादिक देवता आयेगे और वड़े

यशस्वी राजा आर्वाँगे ४२ हे ईश्वर ! ब्रह्मरूप जो तुमही तिनकी कथान के श्रवण करे तें तुम्हारी ध्यान करे तें चायडाल है तेऊ पवित्र होइ जाय है तुम्हारे दर्शन करे तें पवित्र होई यामें कदा कहनो है ४३ हे जिलोकी के भगलरूप ! तुम्हारी निर्मल यश स्वर्ग में रसतल में पृथ्वी में फैलि रखी है और दिशान कूं चंदोवा की तुल्य शोभायमान करे है कैसो फैलो है सो कहे है स्वर्ग में मन्दकिनीरूप पाताल में भोगवतीरूप और या संसारमें तुम्हारी चरणोदक गङ्गास्वरूप होयकै सम्पूर्ण विश्व कूं पवित्र करे है या कारण तुम्हारे चले तें यज्ञमें बड़ो भगल होयगो ४४ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार नारदजी ने कही तब ता सभा में अपनी ओर के जे यादव बैठे हैं तिनकूं जरासन्ध के जीतिने की इच्छा करिके जब अच्छी लगी तब मनो-हर वचनन सूं मुसितात अपने भक्त उद्धवजी सू श्रीकृष्णचन्द्र बोलत भये ४५ श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं उद्धवजी तुम हमारे परमनेत्र हो परमहितकारी हो गुह्य बातन के अभिप्राय

सैनाद्धयानात्पूयन्तेऽन्तेऽवसायिनः ॥ तव ब्रह्ममयस्येश किमु तेऽक्षाऽभिमर्शिनः ४३ यस्यामलन्दि वियशः प्रथितं रसायां भूमौ च ते भुवनमङ्गलदिग्वितानम् ॥  
मन्दाकिनीति दिवि भोगवतीति चाधोगङ्गे निचेह चरणाम्बुपुनति विरश्म ४४ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ तत्र तेष्वात्मपक्षेऽवगृह्यत्सु विजिगीषया ॥ वाचःपेशैः स्मयन्भूय मुद्धवं प्राहेकेशवः ४५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ त्वं हि नः परमं चक्षुः मुहुन्मन्त्रार्थं तत्स्ववित् ॥ तथाऽत्र ब्रह्मनुष्ठेयं श्रद्धाभ्यः करवामतत् ४६ इत्युपामन्त्रितो भर्त्रा सर्वज्ञेनापि मुग्धवत् ॥ निदेशं शिरसाऽऽधाय उद्धवः प्रत्यभापत ४७ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तराखण्डे भगवद्वा निसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

श्रीशुक उवाच ॥ इत्युदीरितमाकर्ण्य देवैर्पुरुषोऽब्रवीत् ॥ सभ्यानां मतमाज्ञाय कृष्णस्य च महामतिः १ ॥ उद्धव उवाच ॥ यदुक्तमृषिणा देव साचिन्त्यं यक्ष्यतस्त्वया ॥ कार्यपैतृष्वस्वस्य रक्षा च शरणैर्षिणाम् २ यष्टव्यं राजसूयेन दिक्चक्रजयिनाविभो ॥ अतो जरासुतजय उभयार्थोमतो मम ३ अस्माकंच कूं जानो हो यते जो यहाँ योग्य होय ताय वतावो चाकूं हम श्रद्धापूर्वक करों ४६ सब बातके जाननवारे श्रीकृष्णचन्द्र मानों कछु नहीं जाने हैं ऐसे भोरे की तुल्य होय के पूँछे ऐसे जो उद्धवजी हैं सो श्रीकृष्णचन्द्र की आज्ञा कूं शिरगै धारिके बोलत भये ४७ ॥ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्या दशमस्कन्धे उत्तराखण्डे भगवद्वा निसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥ \* ॥ \* ॥

( अर्थक सप्ततितम उद्धवस्य तु पन्तः ॥ इन्द्रप्रसंगते कृष्णे पार्थानां परमोत्सवः १ राजसूयमपि कृत्वा भीमदुष्योधनादिषु २ कलिमुत्पाद्य तत्साराभूषणमहरत्प्रभुः ३ इह कर्तव्यं अध्याय में उद्धवजी की सलाह सूं हस्तिनापुर कूं कृष्णजी के जाने माँ कुन्तीके पुत्रोंका परमोत्सव वर्णित है १ कृष्णचन्द्रजी राजसूयका घटानाकर भीमसेन और दुष्योधन आदिकों में लड़ाई उत्पन्न कराकर ताके द्वारा पृथ्वीके भारको हरे भये २ ) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार वड़ी है बुद्धि जिनकी ऐसे उद्धवजी हैं सो श्रीकृष्णचन्द्र को कछो वचन सुनिके और नारदजी को मत कहा है कि यज्ञमें जायगो ताय जानिके और सभाके बैठनवारे जे यादव हैं तिनको मत कहा कि राजान की रक्षा करिवो ताय जानिके और श्रीकृष्णचन्द्र को मत कहा कि दोनों कार्य करनो ताय जानिके बोलत भये ३ उद्धवजी कहे हैं हे प्रकाशवान् श्रीकृष्णचन्द्र ! नारदजीने जो कछो कि तुम्हारी पूजन करवो चाहै ऐसे राजा मुधिष्ठिर हैं ताकीऊ सहायता करिवो योग्य है और शरणा-

मल जे राजा है तिनकी रत्नाकरनो भी योग्य है २ हे समर्थ ! सम्पूर्ण दिशान के राजानकी है जीत जामें ऐसो राजसूय यज्ञ करिके पूजन होयगो याहीतें जरासन्धहू जीत्यो जायगो यामें दोनों कार्य सिद्ध होयगे यज्ञ और शरणागतन की रत्ना ३ यज्ञमें आप चलोगे याही तेहमारें वड़े मनोरथ सिद्ध होयेंगे और हे गोविन्द ! बंधे राजानकू लुहावोगे यामें आपकी वडो यशहोगो ४ वडी चाहना करिके जरासन्धके मारिवे की इच्छाकरें ऐसे यादवन कू देखिके कहें हैं जरासन्ध की वरावारि है वल जामें ऐसो जो भीमसेन है ताके विना दश हजार हथीके समानहैं वल जामें ऐसो जरासन्ध चड़े वली राजानके जीतिवे में नहीं आवे है क्योंकि भीमसेन तेंही विधानने वाकी मृत्यु रची है ५ द्वंद्वयुद्धमें जरासन्ध जीत्यो जायगो और सैकड़न अचौहिणी सेनानकू संगलैंकें जो पुरुष जीत्यो चाहैं तो न जीति सकैगे वह जरासन्ध ब्राह्मणन को भक्तहैं याते वाके पास जायकै ब्राह्मण मांगें तो कभउं माने न करैगे ६ दुःकनामा अग्निहैं उदरमें जाके ऐसो जो भीमसेन है सो ब्राह्मण को वेप धरिकें जरासन्धतें युद्धकी भिन्ना मांगें तुम्हारे निरुद्धमें भैं द्वन्द्वयुद्ध करूंगे तो भीमसेन जरासन्धकू मारैगो यामें कछु सन्देह नहीं है ७ माकृतरूप करिके रहितजो तुमहो तिन तुम्हारे कर्म जे विश्वकू उत्पत्ति

महानथोह्येनैव भाविष्यति ॥ यशश्चतवगोविन्द राज्ञोवद्धान्विमुञ्चतः ४ सवैदुर्विपहोराजानागायुतसमोवले ॥ वलिनामपि चान्मेपां भीमसमवलंविना ५  
द्वैथेमनुजेतव्योमाशताक्षौहिणीयुतः ॥ ब्रह्मरयोऽभ्यर्थितो विभर्त्तयाख्यातिकर्हिचित ६ ब्रह्मवेपथरो गत्वा तं भिक्षेत वृकोदरः ॥ हनिष्यति न सन्देहो द्वैथेतव  
सन्निधौ ७ निमित्तं परभीशस्य विश्वसर्गनिरोधयोः ॥ हिरण्यमर्भः शर्वश्च कालस्यारूपिणस्तव ८ गायन्ति ते विश्वदकर्मगृहे पुद्गे यो राज्ञां स्वयशश्च वयमा  
तमन्निगोक्षणं च ॥ गोप्यश्च कुञ्जरापतेर्जनकात्मजायाः पित्रोश्च त्वव्यशरणां मुनयो वयञ्च ९ जरासन्धवधः कृष्णभूर्यथा यो पश्यते ॥ प्रायः गाकृविपाकेन तव चा  
भिमतः क्रतुः १० ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इत्युद्धवचो राजान् सर्वतो भद्रमच्युतम् ॥ देवर्षिर्दुष्टद्वारचक्रणश्च प्रत्यजयन् ११ अथाऽऽदिशत् प्रयाणाय भग

करिगे नाश करिगे तिनमें ब्रह्मा और महादेव ये नाममात्र हैं तातें तुमहीं पास रहितै जरासन्धको संहार करोगे भीमसेन गो तो केवल नाप होयगो ८ राजानकी रानी हैं ते अपने घरमें तुम्हारे निम्नमेल यशनकू गावें हैं और जब उनके बालक रोवें हैं तब कहें हैं हे पुत्र ! तुम काहे कू रोदन करोही जो कोई अनाथ होइ सो रोवै तुम्हारे शिरपैतौ नाथ श्रीकृष्णचन्द्रहैं मतिरोवो जैसे गोपी शङ्ख-चूड़यो मारिगे और अपनो छुटिगे गावें हैं और गजराजको छुटिगे ग्राहकी मृत्यु जैसे गावें हैं और जनकनन्दनी जानकी को छुटिगे रावणको मारिगे जैसे गावें हैं और माता पित्तको छुटिगे ९ सको मारिगे पाई है शरण जिनने ऐसे मुनि और हम भक्त गावें हैं ऐसे जरासन्धको मारिगे और अपने पतिनको छुटिगे गावें हैं ६ हे कृष्ण ! जरासन्धके मरेतें वडो कार्य सिद्ध होयगो शिशु-पालाटिकन को मारिगे सहजमें होय जायगो राजानके पुण्यको फल उदय होयगो और यज्ञ होइ यह तुमकू सम्मत है राजा युधिष्ठिर के पासगये ते सब बात बनेगी १० अथ श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! सब ओर तें मदलरूप उडी जामें युक्ति ऐसो जो उद्धवजी को वचनहै ताकी नारदजी उड़ाई करतभये और शीकृष्णचन्द्र उद्धवजी उद्धवहैं करतभये यामें आपो कहा अनिरुद्ध हैं आदिलैंकें यादव हैं ते उड़ाई न करतभये ११ याके पीछे देवकी के पुत्र समर्थ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र चलिने के निमित्त उहलुवा और दारुक स्थान

स्वाधीन के महावतन तें आदिलैक जे ह तिन और वसुदेवादिकन तें आदिलैक जे यादव ह तिन आज्ञा करत भये १२ सापग्रीन सहित प्रथम स्त्रीनकू चलायकै सङ्कल्पणी तें आज्ञापांगिकै यादवन के राजा जो उग्रसेन ह तिन अज्ञापांगिकै हे शत्रुन के मारनवारै राजन् परिचित् । सारथीलैक आयो गरुड़की ध्वजा जामें ऐसी जो अपनो रथ ह तामें चढ़त भये १३ ता पीछे रथ हाथी प्यादे सवार इनमें जे मुरख ह तिन करिके तीन अपनी सेना ह ताकू लैके मृदंग भेरी लगावे शत्रु रणसिंहा इनके शब्दकरिके शोर जामें होइ रह्यो ऐसी जे दिशा ह तिनमें तें निकसत भये १४ सुन्दर वज्र गरहे चन्द्र माला पहिरे ढाल तलवार राग में लिथे दोनो ओर सिपाही जिनके चले जाय मनुष्य ह वहत वारें घोड़ा जिनमें ऐसी जे सोनेकी पालकी ह तिनमें वैठिके पतिव्रता जे श्रीकृष्णचन्द्र की रानी ह तें अपने पुत्रकू संग लैतै अपने पति जो श्रीकृष्णचन्द्र ह तिनके पीछे जात भई १५ चाकरन की स्त्री और वेश्या ह ते शृंगार करिके चटार्दन के बने घर तथा कमलन के और वनातन के डेरा तख्ख इत्यादिक जे सम्पूर्ण वस्तु ह तिनका मनुष्य छँट वेल भँसा गया खबर गाड़ा हाथी इनगै लादिके जात भये १६ वड़ो है शोर जामें ऐसी सेना है सो वड़े वड़े स्वजानके वज्र खत्र चार

वाचदेवकी सुनः ॥ भृत्यान् दारुजै ज्ञादीन नुज्ञाण्य गुरुन्विभुः १२ निर्गमथ्यावरोधान् स्वाय ससुतान् सपरिच्छदान् ॥ सङ्घर्षणमनुज्ञाप्य यदुराजवशशत्रुहन्

सूतोपनीत्संरथमारुहद्रुद्धजम् १३ ततो रथोद्धिभटमादिनायकैः करालयापरिवृत्तआत्मसेनया ॥ मृदङ्गमेथ्यानकशङ्खगोसुखैः प्रघोषघोषितककुभोनि

राक्रमत् १४ नृत्राजिकाञ्चनशिविकाभिरच्युत्सहारागजाः पनिमनुव्रताययुः ॥ वराम्बराभरणविलेपनस्रजः सुसंवृतान् भिरसिचर्मपाणिभिः १५ नरोद्गोम

हिपखराश्रतर्यनः करेणुभिः गरजिनवारयोपितः ॥ स्तलंकृताः कटकटिभ्रमलाम्बराद्युपस्कराययुराधियुज्यसर्वतः १६ बलंबृहद्भुजपटञ्चत्रामैव रायुत्राभरणकि

रीटमर्मभिः ॥ दिवाऽणुभिस्तुमुलरवंभवैरेवैथ्याऽर्णवः क्षुभिततिमिङ्गलोर्गभिः १७ अथोमुनिर्यदुपतिनासभाजिनः प्रणम्यन्तं हृदि विदधद्विहायसा ॥ निश

म्यतद्व्यनमितमाह्वनाईणो मुकुन्दमन्दर्शननिर्द्वन्द्वेन्द्रियः १८ राजदूतमुवाचेंदं भगवान् श्रीणयन् गिरा ॥ माभैष्टूतभद्रं बोधातपि प्यामि मागधम् १९ इत्युक्त्वा प्र

स्थितो दूतो यथावद्वदध्वमान् ॥ तेऽपि संदर्शनं शौरेः प्रत्यैक्षन् यन्मुपुक्षवः २० आनत्तैर्भौवीरमरुं स्त्रीन्वाधिनशनं हरिः ॥ गिरिन्निदीरतीयाय पुरग्रागत्रजाकरा

इन करिके और सुन्दर हथियार गहने किरिट गलन इत्यादिकनकी चमक है ता करिके और मूर्धन्यकी किरण ह तिन करिके दिवम में सुन्दर लगति भई जैसे स्रोभ कूं प्राप्त भये जे ग्राह और लहर है तिन करिके जैसे समुद्र सुन्दर लगे है १७ याके पीछे यादवन के पति श्रीकृष्णचन्द्रने सत्कार जिनको करयो और पूजादीनी और श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन तें सुखी ह इन्द्रिय जिनकी ऐसे युनि नारद ह मो श्रीकृष्णचन्द्र कू प्रणाम करिके और श्रीकृष्णचन्द्र ने निश्चय करयो है ताप श्रवण करिके और उनके स्वरूप को हृदय में ध्यान करिके आकाशमार्ग में होय के जात भये

१८ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र वाणी करिके दूत कूं प्रसन्न करन भये हे दूत ! तुम राजान स जायकें कहो कि तुम मति भय करो तुम्हरो फलमाग होयगो जरसन कू मैं मारुंगो १९ यापकार श्रीकृष्णचन्द्र ने कही तब दूत यहा से चलिके राजान के पास आयते श्रीकृष्णचन्द्र आवें ह यापकार कहत भयो तब जरसन के चन्द्रीखाने तें छुडिचै की इच्छा जिनके ऐसे राजा है ते श्री

कृष्णचन्द्र को दर्शन कर होयगो ऐं मे पैटो देखन भये २० ता पीछे आनचै सौधीर मारवाइ कुलचै इग देशन कूं उलनह्वन करिके तथा पर्वत नदीनकूं और पुर ग्राम त्रग आकर इन सवन कूं उलानिके २१ ताके पीछे हपद्वती और सरस्वती नदी कूं तारिके और पञ्चाल देशन कूं तथा मत्स्यदेशन कूं उलाविके मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र उन्द्रप्रस्थ में आवत भये २२ मनुष्यन कूं दुर्लभ जिनको दर्शन ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र आये श्रवण करिके प्रसन्न होय के अजातशत्रु राजा युधिष्ठिरहैं सो उपाध्यायन कूं सद्गुरुके पुरके बाहर निकसत भये २३ गीत और वाजेनको जो शब्द है ता करिके और नदी जो वेद को शब्द है ता करिके राजा युधिष्ठिरहैं सो जैसे आदरयुक्त इन्द्रिय प्राण लेवे को आवैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रके सम्मुख लिवाइये कूं आवत भये २४ श्री कृष्णचन्द्र के दर्शन करिके आदिहैं हृदय जाको ऐसो जो पाण्डु को पुत्र राजा युधिष्ठिरहैं सो बहुत दिनन में देखे अत्यन्त प्यारे श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनैं वारंवार आलिंगन करतभये २५ लक्ष्मी के रहिये को निर्मल स्थान ऐसो जो श्रीकृष्णचन्द्र को अग है ताय भुजानतें आलिंगन करिके दूरि भये हैं पाप जाके हर्षित है वनु जाको नेत्रन में अश्रुयुक्त और विस्मृत हैं समस्त लौकिक

न २१ ततो हपद्वती तीर्त्वा मुकुन्दोऽथ सरस्वतीम् ॥ पञ्चालानथ मत्स्यांश्च शक्रप्रस्थमथागमत् २२ तमुपागतमाकर्ण्य प्रीतो दुर्दर्शनं नृणाम् ॥ अजातशत्रु निरगात् सोपाध्यायः सुहृत् २३ गतिवादित्रघोषेण ब्रह्मघोषेण भूयसा ॥ अभयतासहृषिकेशं प्राणाः प्राणमिवाऽऽहतः २४ दृष्ट्वा विक्लिनहृदयः कृष्णं रूनेहेन पारुडवः ॥ चिराद्दृष्टं प्रियतमं सस्वजेऽथ पुनः पुनः २५ दोभ्यो परिष्वज्य मामलालयं मुकुन्दगात्रं नृपतिहताशुभः ॥ त्वेभ्यो निर्वृतिमश्नुलोचनो हव्यत्तनुर्विस्मृतलोकविभ्रमः २६ तं मातुलेयं परिभ्रम्य निर्वृतो भीमः स्मयन् प्रेमजवाकुलेन्द्रियः ॥ यमौकिरीटी च सुहृत्तमं मुदा प्रवृद्धवाण्याः परिरेभिरेऽच्युतम् २७ अर्जुने न परिष्वक्तो यमाभ्यामभिवादितः ॥ ब्राह्मणेभ्यो नमस्कृत्य वृद्धेभ्यश्च यथाऽर्हतः २८ मानितो मानयामास कुरुसृञ्जयके कयाच ॥ सूतमागधगन्धर्वान् चिन्दनश्चोपमन्त्रिणः २९ मृदङ्गशङ्खपटहवीणापणवगोमुखैः ॥ ब्राह्मणैश्च त्रिविन्दाक्षं तुष्टुर्ननुर्तुर्जगुः ३० एवं सुहृद्भिः पर्यस्तः पुरयश्लोकशिखामणिः ॥ संस्तूयमानो भगवान् विवेशालंकृतं पुरम् ३१ संसिक्लवर्त्मकरिणामदगन्धतोयैश्चित्रध्वजैः क्रनकतोरणपूर्णकुम्भैः ॥ मृष्टमभिर्नवदुकूलविभूषणस्रगन्धैर्धृत्यवहार जातं ऐसो राजा युधिष्ठिर परममुख कूं पावतभयो २६ मामा के पुत्र जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं आलिंगन करिके प्रसन्न जो भीमसेन हैं सो प्रेम के वेग करिके आकुल हैं इन्द्रिय जाकी ऐसो होत भयो वड़े है नेत्रन में आसूजिनके ऐसे नकुल सहदेव और किरीट है विद्यमान जाके ऐसो अर्जुन ये सप्त अत्यन्त शितकारी जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं आनन्दपूर्वक आलिंगन करत भये २७ अर्जुन वरावरि को हैं यातें श्रीकृष्णचन्द्र कूं छाती ते लगाय के पिलत भयो और नकुल सहदेव ने नमस्कार करी यथायोग्य ब्राह्मणन कूं और वृद्धन कूं नमस्कार करिके २८ मानिचे के योग्य ऐसे जे कुलदेश सृञ्जयदेश और केरुय देश के राजा हैं तिनैं और सून मागधगन्धर्व भाटवन्दीजनहैं तिनैं सत्कार करत भये २९ मृदंग शङ्ख ढोल वीणा नगाड़े बांसुरी इनकूं वजाय लै ब्राह्मण कमल के समान नेत्रनभाले श्रीकृष्णजी की स्तुति करत भये और नाचत गावतभये ३० याप्रकार सुहृदनकूं संगलैके पुण्यहैं यश जिनको ऐसे जे युधिष्ठिरादिके हैं तिनके मुकुन्दगणि ऐसे

जो भाग्यान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सबने स्तुति करी तब शोभायमान जो सुधिष्ठिर को पुर नामें प्रवेश करन भये ३१ हाथीन के मद चुने तारुं और सुगन्धयुक्त जे जल हैं तिनहुं छिरकाय जायें होय रह्यो ऐसे जायें मार्ग हैं पितृविचित्र जे अज्ञा है तिन करिकें सुवर्ण के तोरण और जल के पूर्ण कलश तथा नमीन वल्ल गहने माला केसरि अंतर अरगजा इन करिकें शृंगार क्रियो है आत्मा जिनने ऐमे जे पुरुष गौर स्त्री हैं तिन करिकें शोभायमान ऐसे कौरवन के राजा युधिष्ठिर हैं तिनके महल देखत भये ३२ महल को वर्णन करै हैं प्रकाशमान दीपान की पंक्तिन करिकें और महल के भरोलान में तें निकसी जो धूपकी सुगन्ध ता करिकें शोभायमान हैं और प्रकाशमान जायें पताका हैं तथा रूपे के शिखरन के ऊपर सोने के कलश विराजमान हैं ऐसे कौरवन के राजा युधिष्ठिर के महल देखत भये ३३ मनुष्यन के नेत्रनकुं सौन्दर्यरूपी अमृत के पीत्रे को पात्र ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कुं आये श्रवण करिकें उत्कण्ठा करिकें ढाले भये हैं केशन के और वल्लन के वनन जिनके ऐसी जे स्त्री हैं ते घरन के कार्यन कुं शीघ्र त्यागिकें और शरयान के ऊपर पतिन कुं त्यागि कै देखिबे केनिमित्त राजमार्ग जो वाजार है तामें आवति भई ३४ हाथी घोड़ा रथ प्यादे इनकी भीर जायें होय

भिर्गुप्रतिभिरचविराजमानम् ३२ उर्द्वामदीपत्रालिभिः प्रतिमङ्गजालनिर्यातधूपरुचिर्ध्विलसत्पताकम् ॥ मूर्द्धन्यहेमकलशैरजतोरुमृङ्गैर्जुष्टददर्शभवनैः सुरराजधाम ३३ प्राप्तिनिश्चयनरलोचनपानपात्रमौस्तुक्यविश्लाथितकेशदुकूलबन्धाः ॥ सद्योविमृज्यगृहकर्मपतिश्चतल्पे द्रष्टुं युयुवनयः रमनरेन्द्रमार्गो ३४ तस्मिन्सुकुलइभाश्वरथद्विपङ्क्तिः कृष्णसभास्यमुपलभ्यगृहाधिरुढाः ॥ नाथ्योविकीर्यकुमुभैर्पनसोपगुह्यमुस्वागतं विदधुस्तस्मयवीक्षितेन ३५ ऊजुःस्त्रियः पथिनिरीक्ष्यमुकुन्दपतीस्तारागथोदुपसहाः किमकार्यमूभिः ॥ यच्चक्षुषांपुरुषमौलिरुद्राहासलीलाऽवलोककलयोत्सवमातनोति ३६ तत्रतत्रोपसङ्गम्य पौरामङ्गलपाणयः ॥ चक्रुः सपथ्यांकृष्णाय श्रेणीमुख्याहतैनसः ३७ अन्तःपुरजनैः प्रीत्या मुकुन्दः कुल्लोचनैः ॥ ससम्भ्रमैरभ्युपेतः प्राविशद्वाजमन्दिरम् ३८ पृथग्विलोक्यभ्रात्रेयं कृष्णं त्रिभुमनेश्वरम् ॥ प्रीतात्मोत्थाय पथ्यङ्कात्तस्तनुपापरिस्वजे ३९ गोविन्दं गृहमानीये देवदेवेशमाहृतः ॥ पूजायां नाविदरुक्

रही ऐसो जो राजमार्ग है तामें रानीन सहित जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन देखिकें घरन के ऊपर चढ़ी जे स्त्री हैं ते फूलन कुं वरसाय कै मनसुं आलिंगन करिकें मुसिकानिपूर्वक जो चितवनि है तारुं देखिकें भले आये या प्रकार रहति भई ३५ जैसे चन्द्रमा सहित तारागण ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की रानी हैं तिन मार्ग में देखिकें इन रानीन ने कहा पुण्य करयो है देसो पुरुषन में मुकुन्दतुल्य श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो जिन स्त्रीन के नेत्रनकुं उदारहास लीलापूर्वक चिनानि के लेशसुं आनन्दकुं विस्तार करै है ऐसे सप्त स्त्री कहति भई ३६ दूरि भये हैं पाप जिनके ऐसे जे पंक्तिन में मुख्य पुरके व सी हैं ते पान सुगारी वताशे नारियल ये सब मंगलनस्तु हैं तिनकुं दाय में लैके श्रीकृष्णचन्द्र की पूजा करत भये ३७ मृक्लिन्न हैं नेत्र जिनके खुशी के मारे हरवराहट जिनकुं भयो ऐसे जे अन्तःपुरके वासीजन हैं तिनने प्रीतिपूर्वक सम्मुख आयकें सत्कार जिनकुं क्रियो ऐसे जे मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो राजा के मन्दिर में जात भये ३८ त्रिलोकी के ईश्वर अपने घरयो के पुत्र जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन देखिकें प्रसन है गन जाओ ऐसी कुन्ती अपनी बहू द्रौपदी सहित पलग पैंतें उठिकें श्रीकृष्णचन्द्र मूं धिलति भई ३९ देवन के देव और ब्रह्मादिकन के ईश्वर जो गोविन्द



श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन पर में लाय के आनन्द करिके सुगि जाऊँ नहीं ऐसे राज युधिष्ठिर है सो पूजा करिये की जो विधि है ताय भी न जानत भये ४० हे राजन् परीक्षित ! द्रौपदी और चहुँन जो सुभद्रा है ताने प्रणाम जिनकुं वरी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो पिता दसुदेवर्षि चहुँन जो कुन्ती है ताकुं और वड़ेन जो स्त्री हैं तिनकुं प्रणाम करत भये ४१ सासु कुन्ती ने आज्ञा जाऊँदीनी ऐसी जो द्रौपदी है सो सम्पूर्ण जो श्रीकृष्णचन्द्र की रानी हैं रुक्मिणी सत्यभामा भद्रा जाम्बवती इनको पूजन करति भई ४२ कालिन्दी भिन्नविन्दा लक्ष्मणा पतिव्रता नागनजिती इनकुं और जे संग आयई हैं तिनकुं बख माला अत्तर अरगजा चन्दन इत्यादिकन करिके पूजा करति भई ४३ धर्मराज जो राजा युधिष्ठिर है सो सेना दहलगान मन्त्रिन और रानीन सहित जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनै नित्य नये सुख भूँ रासत भये ४४ अर्जुनसहित जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अग्नि कू खाण्डवनसू रुद्र करिके जा मय नापा दैत्य ने राजा युधिष्ठिर कुं दिव्यसभा बनाय है दीनी वा मय दैत्य कुं

तुं प्रमोदोपहतो नृपः ४० पितृव्यसुर्गुरुघ्नीणां कृष्णरचक्रेऽभिदानम् ॥ स्वयंचकृष्णयाराजन् भगिन्याचाभियन्दिताः ४१ श्वश्रुसंचोदिता कृष्णा पत्नीश्च गर्वाणि ॥ आनर्ध्वं रुक्मिणीं सत्यां भर्षां जाम्बवती तथा ४२ कालिन्दीं भिन्नविन्दाञ्च शैव्यां नागनजितीं सतीम् ॥ अन्याश्चाभ्यागतायास्तुवासः खड्गमण्डनादिभिः ४३ सुखं निवासयामास धर्मराजो जनार्दनम् ॥ ससैन्यं सानुगामात्यं सभार्यञ्च नवनवम् ४४ तर्पयित्वा खाण्डवेन वह्निफाल्गुनसंयुतः ॥ मोचयित्वा मयं येन राज्ञो दिव्यसभाकृता ४५ उवासकृतिचिन्मासान् राज्ञः प्रियचिकीर्षया ॥ विहनून्थमारुह्य फाल्गुनेन भैरवैरुतः ४६ इति श्रीमद्भागवतम् हा प्रमाणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे कृष्णस्येन्द्रपस्थगमनं नामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ एकदा तु मया मध्य आस्थितो मुनिभिर्वृतः ॥ ब्राह्मणैः क्षत्रियैश्चैत्रार्तभिश्च युधिष्ठिरः १ आचार्यः कुलवृद्धैश्च ज्ञानिसम्बन्धिवान्धवैः ॥

श्रुत्वा तमेव चेतोपामाभाषेदमुवाच ह ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ क्रतुराजेन गोविन्द राजसूयेन पावनीः ॥ यक्ष्ये विश्वनीर्भवतस्तत्समादयनः प्रभो ३ त्वत्पादुके च न तुलुङ्गावत भये ४५ रथ में सवार होय के अर्जुन कुं तथा और योद्धान कुं संग लैंके विहार करत राजा युधिष्ठिर के भिय करिने के निमित्त कितने मास पर्यन्त वास करत भये ४६ इति श्रीमन्महाभगवत्पुरुषारूपसंह्ये उत्तरार्द्धे कृष्णस्येन्द्रपस्थगमनं नामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

( ततो द्विचतस्रितमो राजा काट्यो निवेदिते ॥ हुज्जयं पागं हुज्जाभीमेनावातयद्धरिः १ वहचरत्तैश्च अध्याय ये राजा युधिष्ठिरसुं कार्यं निवेदितं होये माँ जरासन्ध कू दुःस्य भूँ जीतेनेवाला समभकर कृष्ण जी भीमसेनसू नाश करत भये २ ) अथ आशुकेदेवगी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! एक समय मुनीश्वर ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य भट्टया आचार्य और कुल में छह तथा ज्ञातिके सम्बन्धी मान्य इन सहित सभी के बीच बैठे ऐसे राजा युधिष्ठिर हैं सो इन सबके श्रमण करत भो कृष्णभक्त वत्सल ! या प्रभार सम्बोधन दैके जोलत भये १ २ हे समर्थ ! यज्ञन को राजा जो राजसूय यज्ञ है ता करिके पवित्रमर्म्यदारे जे तुलसी चरणपादुका हैं तिनको जे पुरुष सेवन ध्यान

और पदिन होय है चाणी मूं नाम लेत है हे कमलनाभ ! वेही पुरुष संसार तं छूटत है और जो चाहना करे है वे गनोरय उनहीं के सिद्ध होय है और कैसीही चक्रवर्ती मों न होय विना भक्ति व छु नहीं होय है ४ ता कारण हे देवनके देव ! यह लोक या संसार में तुम्हारे चरणारविन्दकी सेवा के प्रभाकरू देखे है सो हे समर्थ ! जे पुरुष कर्मभारिदिकनकूं मोल माने कौरय मृज्जय हैं तिनको मोह दूर करिबे के निमित्त जे तुम्हें भजे हैं तिनभूं और जे नहीं भजे हैं तिनकूं अपने भजनको प्रताप दिवावो ५ सबके आत्मा समदर्शी आत्मासुख को अतुभव जिनकूं ऐसे ब्रह्म जो तुप हो तिनके आपनो विरानो यह भेदबुद्धि नहीं है जैसे कलहन्त वी जो सेवन करे ताही कूं फल प्राप्तहोइ है ऐवहीं जो तुम्हारी सेवन करे तिनहीं पै प्रसन्न होत है औसी जो सेवा करे ताकूं तैसीही फल देउही यामें विपरीत नहीं है ६ अब श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् बोले ह राजन् युधिष्ठिर ! हे शत्रुने के नाश करनवारे ! तुमने यह भलो निश्चय करयो है या यज्ञते करे तैं लोकनमें तुम्हारी भंगल रूप कीर्ति फैलेगी ७ हे समर्थ राजा युधिष्ठिर ! यह सब यज्ञको राजा राजसूय यज्ञ तुमने करनो विचारो है सो ऋषि और पितृ तथा देवता और समस्त प्राणीन कूं प्यारो

आविरतं परिचरन्ति ध्यायन्त्यभद्रनशनेषु वयोगुणन्ति ॥ विन्दन्ति ते कमलनाभभावापवर्गमाशासते यदि न आशिर्पशान्त्यै ४ तदेव देव भवतश्चरणारविन्दसेवानुभावमिह पश्यतु लोकपः ॥ यत्वां भजन्ति न भजन्त्यु न वो भये पानिष्ठाप्रदर्शय विभो कुरु मृज्जयानाम् ५ न ब्रह्मणः स परभेदमतिस्तव स्यात् सर्वारग नः समदृशः स्वमुखानुभूतेः ॥ संभवतां सुरतरोरिव ते प्रसादः सेवाऽनुरूपमुदयो न विपर्ययो न ६ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सम्यगव्यवसितं राजन् भवता शत्रु रुशी न ॥ कल्याणी येन ते कीर्तिलोका ननु भविष्यति ७ ऋषीणां पितृदेवानां सुहृदामपि नः प्रभो ॥ सर्वेषामपि भूतानां गीतः क्रतुराडयम् ८ विजित्य नृपतीन् सर्वान् कृत्वा च जगतीं वशे ॥ संभृत्य सर्वसंभाराना हरस्वमहाक्रतुम् ९ एते ते भ्रातरा राजल्लोकपालांशसम्भवाः ॥ जितो स्मर्यात्भवता नेऽहं दुर्जयोऽऽहु तांभिः १० न कश्चिन्मत्प्रलोकं तेजसायशसा श्रिया ॥ विभूतिं विवांऽभिभवेद्वेदोऽपि किमु पार्थिवः ११ ॥ श्रीशुक्र उवाच ॥ निशम्य गगवद्भूतं प्रीतः कुलमुखा मनुजः ॥ भानुर्दग्धिजयेऽयुक्क विष्णुने जोऽपवृहितान् १२ सहदेव दक्षिणस्यामा दिशत्सहस्रमृज्जयैः ॥ दिशि प्रतीच्यानकुलमुदीच्यामव्यसाचिनम् ॥

हे ८ समस्त राजानकूं जीतिकें सम्पूर्ण पृथ्वी कूं वशमें करिकें समस्त वस्तुन कूं इकठौरी करिकें बड़े यज्ञं तुम करो ९ हे राजन् युधिष्ठिर ! ये तेरे भय्या लोकनके पालन व रनवारे जे देवता तिनके अंश तें उदग भये हैं परन्तु इन्द्रिय जिनने जीती नहीं है यतें पै वशमें नहीं आऊं हू और इन्द्रियजित् जो तू है ताके वशमें हूं १० भरो आश्रय जाने लियो ऐसो जो पुरुष है ताकूं लोक में तेज यश श्री और वैभव करिकें कोई देवता भी पराभन नहीं करिसकै है तौ राजा कहा तें करि सकैगो ११ अत्र श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को वचन सुनिकें प्रसन्नता सं प्रफुल्लित है मुग्न जाको ऐसो राजा युधिष्ठिर है सो भगवान् ने तेज तें बड़े ऐसे जे अपने भ्राता हैं तिनैं दिशान के जीतिने के लिये भेजत भगो १२ मृज्जयदेश के राजान कूं मंग करिकें दक्षिण दिशा के राजान के जीतिने कूं सहदेव कूं आज्ञा देत भये और मत्स्यदेश के राजान कूं संग करिकें पश्चिमदिशा के राजान के जीतिने कूं नकुल कूं आज्ञा देत भये और कैरवदेश के राजान

कू संग करिकै उत्तरदिशाके राजान के जीतिवै कू अर्जुन कू आदा देत भये और मद्रदेश के राजान कू संग करिकै पूर्वदिशा के राजान के जीतिवै कू भीमसेन कू आदा देत भये १३ हे राजन् परीक्षित ! सहदेव नकुल अर्जुन भीमसेन जे वीर हैं ते सम्पूर्ण दिशान तें राजान कू उल करिकै जीति के यज्ञ कल्यो चाहै ऐसो अज्ञातशत्रु जा राजा युधिष्ठिर है ताकू बहुत द्रव्य लाय के देत भये १४ और सब दिशानके राजा जीते गये परञ्च पूर्वदिशा को राजा जरासन्ध जीतिवै में नहीं आया या बात कू श्रवण करिकै अतिचिन्ता जाकू भई ऐमो राजा युधिष्ठिर ताकू जो उपाय उद्धवजी ने श्रीकृष्णचन्द्र कू बतायो हो सो उपाय श्रीकृष्णचन्द्र राजा युधिष्ठिर तें कहत भये १५ तब तो भीमसेन जर्जुन श्रीकृष्णचन्द्र तीनों ब्राह्मण वनिकैं हे राजन् परीक्षित ! जहा बृहद्रथ को पुत्र जरासन्ध गिरिव्रज नाम किला में रहे है तहा जात भये १६ ब्राह्मण को वेप प्रारण करे ऐमे जे क्षत्रिय हैं ते अभयगतन के आइवे के समय ब्रह्मभक्त गृहस्थ घरमें रहे ऐसो जो राजा जरा-

प्रच्यवृकोदमत्स्यैः केकयैः सहमद्रैः १३ ते विजित्य नृपान् वीरा आजहृर्दिग्भ्य ओजसा ॥ अजातशत्रवे मूर्ध्नि विणुपयक्ष्यते १४ श्रुत्वाऽजितं जरासन्धं नृपते धीयतो हरिः ॥ आहो पापं तमे वाऽद्य उद्धवो यमुवाच ह १५ भीमसेनोऽर्जुनः कृष्णो ब्रह्मलिङ्गधरा सयः ॥ जग्मुर्गिरिजनेन बृहद्रथमुतो यतः १६ ते गता निथ्य वेलायां गृहे पुनर्गृहे मो धिनम् ॥ ब्रह्मरथं समयाचेरनूजान्या ब्रह्मलिङ्गिनः १७ राजन् विद्धयति थीन् पासानर्थिनो दूरमागतान् ॥ तन्नः प्रयच्छ भङ्गन्ते यदयं का गया मे हे १८ किन्दुर्गर्प निक्षिणां किमकार्यमसाधुभिः ॥ किन्नदेयं वदान्यानां रुपरः समदर्शनाम् १९ यो नित्येन शरीरेण सतांगेयं यशो धुवम् ॥ नाचिनो तिस्रयं कल्पः सवाच्यः शोच्य एव सः २० हरिश्चन्द्रोऽरन्ति देव उच्छ्वसिः शिविर्वलिः ॥ व्याधः क्रपो तो बहो ह्यधुने ध्रुवं गताः २१ श्रीशुक उवाच ॥ स्वैराकृ-

सन्ध है ताते भित्ता मागत भये १७ हे राजन् जरासन्ध ! हम दूरि तें आयै हैं मांगन पारे अतिथि हैं तिनें तुम जानो जो हण चाहना करै हैं वह वस्तु तुम हण कू देउ तुम्हारी कल्याण होयगो यह वस्तु हम मांगै हैं या प्रभार नाम लैके क्यों न कहो तहा कहै हैं नाम लैके पुत्र मांगोगे तो पुत्र कब दियो जायगो और मुकुट तें आदिलैके आभूषण मांगोगे तो भिखारीन कू कैसे देउँगो तथा रत्नजटित महनो पुत्रादिकों के योग्य है सो दूसरे कू कैसे दियो जाय ऐसे जरासन्ध कहै ताको उत्तर कहै हैं १८ सहनशील जे पुरुष हैं ते कहा नहीं सहि सके हैं दुर्जनन स क्या नहीं करने योग्य है और दातान कू कौन वस्तु देवे योग्य नहीं है और समदर्शीन के कौन दूसरो शत्रु है याते नाम लेवे तें कहा है जो मांगें सो देउ १९ साधु जाकू गांव ऐसे नित्य यश कू जो पुरुष अनित्य देह तें आप सपर्य होयकै नहीं करै वह पुरुष निन्दा योग्य है और शोच करिने योग्य है २० राजा हरिश्चन्द्र तथा रन्तिदेय और मुहलश्चापि राजा शिवि तथा बलि चित्र और क्रपोतपत्नी और ऐसे बहुत

॥ १६ ॥ भिमाभीष्टुणाय हरिश्चन्द्रोभाषा मगादिसर्ग विष्णुयस्वस्वाण्डलताप्रासादप्यभिषिक्त सहायोष्णवासिभिर्जो रै स्वर्गगत रन्तिदेव सकृद्वचोऽष्टवक्त्रारिषादशयल्लभ्योदकाऽपिकथयिन्त्यग्नौदधय भन्त्योदत्ता प्रभरोऽरुगत उच्छ्वसिर्विभ्रु पम्पमान सोदच्छ्वस्वाऽपि अतिथ्यदनेन बल्लोकागत शिवि शरणागत रूपेन रणगाय स्वभासध्वे पादरथा दियगतः बलि सर्वस्वप्रादानेन पथारिणे हरयस्त्रया तमेवाभिसाधयार ऋपोतपतिभ्ये न्याधाय रणोपायमदज स्वमासदत्ता विमानन शिवगत व्यापस्तयो सारोपाय स्वयमतिरिषिस्वामदाप्रस्था रै वार्गिनदयैर्दह रै रण्यभ्यो दिवमाकरोह पामये च बहोऽशुनक्षत्राणधुनगता रति ५ ॥

महात्मा या अन्तिम देह हरिके धुवनतोक में जातभय २१ अव श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! कर्कश बोलानि और स्वरूप इनको तथा मनुष्यके मर्यादवा के घटे जिनमें परिरेह ऐसे पहुँचने कूँ देखिके ये क्षत्रियन में नीच हैं यह जानिके द्रौपदी के स्वयंवर में पहिले मैंने देखे हैं यह विचार करतभयो २२ ये क्षत्रियन में नीच है परन्तु ब्राह्मण को स्वाग्य वरे हैं या कारण दियो न जाय ऐसो जो अपनो आत्मा है ताय भी इन दू भिक्षा देउंगो कदाचित् माँगते तो २३ विष्णु भगवान् ने ब्राह्मण को स्वरूप वामन अवतार धरिके ऐश्वर्यते अष्ट जाकू करि दियो ऐसो राजा बलि ताकी निर्माल कीर्ति अव पर्यन्त पृथ्वी पै सुनी जाति है २४ इन्द्र के अर्थ लक्ष्मी हरिवे के लिये ब्राह्मण को रूप धरिके प्राप्त भये ऐसे जे विष्णु भगवान् हैं तिनकूँ जाने भी हैं कि मेरे छलिते के लिये आये हैं और मुक्ताचार्य ने मने भी करयो तथापि दैत्यन को राजा बलि है सो वामनजीकूँ पृथ्वी दान करत भयो २५ एक दिन तौ यह देह पतनहोयगी परन्तु जीवतहूँ क्षत्रियकी देहसे बाह्मण के अर्थ निर्मल यश कूँ न करे तौ या देखसुँ कहा प्रयोजन है २६ या प्रकार निश्चय करिके उदार है बुद्धि जाकी ऐसो राजा ब्राह्मण है सो श्रीकृष्ण अर्जुन भीमसेन इनसूँ कहतभयो

निभिस्तांस्तु प्रकोष्ठैर्ज्यैहरैरपि ॥ गजन्यवन्धून्विज्ञाय दृष्टुर्वानचिन्तयत् २२ राजन्यवन्धोहोतेब्रह्मलिङ्गानिविभ्रति ॥ ददामिभिक्षयंतंभ्यआत्मानमपि  
दुस्त्यजम् २३ वनेर्नुश्रूयनेकीर्त्तिर्विनितादिक्ष्वकल्मषा ॥ ऐश्वर्याद्भूशितस्यापि विप्रव्याजेन विष्णुना २४ श्रियं जिहर्षितेन्द्रस्य विष्णवे द्विज रूपिणे ॥ जान  
त्रपिमर्ही प्रादोद्धार्यमाणोऽपि दैत्यराट् २५ जीवता ब्राह्मणार्थाय कोऽन्वर्थः क्षत्रवन्धुना ॥ देहेन पतपानेन नेहता विपुलं यशः २६ इत्युदारमतिः प्राह कृष्णा  
ज्जुनवृकोदरान् ॥ हे विप्रान् क्रियनां कामोददाम्यात्मशिरोऽपि वः २७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ युद्धं नो देहि राजेन्द्र दन्दशोयदि मन्यसे ॥ युद्धार्थिनो वयं भासारा  
जन्या नान्नाक्राद्धिणः २८ अमौ वृकोदरः पार्थस्य भ्राताऽज्जुनो ह्ययम् ॥ अनयोर्मातुलेयं मां कृष्णं जानीहि ते रिपुम् २९ एवमावेदितो राजा जहासोच्चैः स्म  
मागधः ॥ आहन्नागर्षिणो मन्दायुद्धं न हि ददामि वः ३० न त्वया भीरुणा योरस्येयुधिविक्लवचेतसा ॥ मथुरां स्त्रवर्गं त्यक्त्वा समुद्रशरणं गतः ३१ अयं तु वयसा  
ऽनुलयो नातिस्त्रयोनमेसमः ॥ अज्जुनो न भवेद्योद्धा भीमस्तुल्यबलो मम ३२ इत्युक्त्वा भीमसेनाय प्रादाय महतीं गदां ॥ द्वितीयां रथयमादाय निर्जगाम पु

हे ब्राह्मणो ! जो तुम्हारे इच्छा-होय सो बर मांगो तब श्रीकृष्ण फेरि पक्री करैहैं जो मांगें सो देउगे तब जरासन्ध कहै है बांवार कहा कहो हौ शिरपर्यन्त मांगोगे तो देउगे २७ तनो श्रीकृष्ण-चन्द्र भगवान् गोलै हे राजान के इन्द्र राजन् जरासन्ध ! तुम्हारे मन में आवै तो द्रुपदयुद्ध देवयुद्ध के निमित्त हम क्षत्रिय तुम्हारे पास आयै है अर्च के लेनबारे ब्राह्मण हम नहीं है २८ तब जरासन्ध ने पूँछ्यो तुम कौनहौ श्रीकृष्णचन्द्र कहै हैं दृक्तामा अग्नि जाके उदर में ऐसो पूया को पुत्र यह भीमसेन है और याको भया यह अर्जुन है और इनके मामा को पुत्र तेरो पहिलो वीरों में २९ श्रीकृष्णचन्द्र हं यह जानिले २० या प्रकार अण करिकै यागभ्रदेशको राजा जरासन्ध बहुत हँसत भयो पीछे क्रोध में भरि कै हे मुखों ! मैं तुमकु युद्ध देउंगो या प्रहार कहत भयो ३० अरे दुर्योधनको व्याकुल है चिन्त जाको ता तेरे संग मैं युद्ध नहीं करूँगे भरे डरतैं तू अपनी मथुपपुरी त्पागि कै समुद्र में जायकै वस्यो है ३१ अर्जुन है सो मो तैं अवस्था में न्यूनहैं और न मेरी

चराचर बलवान् है याते कड्डेन योद्धा न दोगो हां भीमेन पेरी परापरि बल में है याके संग युद्ध होगो ३२ इनकी चान कररुन भीमेन रुं वड़ी गदा दे के खोर दूसरी गदा आप लोके पुन तं वाहर निकसन भयो ३३ ता पीछे यही है मद् जिनके ऐमे चीर जे भीमेन जरासन्धई ते परस्पर मिलके रणभूमि में वचही तुल्य जे गदा है तिन करिके मडार तरन भये ३४ रणभूमि में प्राप्ते जे नट है तिनके योग दाहिने जे पिचिन मण्डल है तिनमें जैसे निचरे ऐमे भीमेन और जरासन्ध है तिनको युद्ध मुन्दर लगन भयो ३५ ता पीछे हे राजन् परीक्षित् ! दाल है विजयमान जिनके ऐसे हाथीन के दौतन को जैसे शुद्ध होय है तैम दोनों चीरन की चली जे गदा है तिनको वच जैसे गिसे ऐमे चटचटा शब्द होन भयो ३६ युद्धकरे वदो हे कोय जिनके ऐसे हाथीन की लड़ाई में आरु की लकड़ी जैसे चूर्ण होय जाय है तैम भुजान के वेग तें आपुममें चलीऐभी जे गदाई ते रुग्ना कपर पांग हाथ जंता जनु इनमूं लंगिके चूर्ण होतभई ३७ या प्रकार जनु दोनों की गदा दूटिआई तप क्रोधी जे मनुष्यन में चीर भीमेन जरासन्धई ने लोहे की तुल्य है सार्थ जिनको ऐसी मुक्तीनकी मार शरीरमें मातभये हाथीन की तुल्य आपुम में गारे ऐसे जे जरासन्ध

राद्वहिः ३३ ततःसमेखलेवीरौ संयुक्तावितेतरौ ॥ जघ्रतुर्वज्र मूढपाभ्यागदाभ्याणदुर्भदौ ३४ गण्डलानिविचित्राणि सव्यंदक्षिणमेवच ॥ चरतोःशु  
शुभेयुद्धं नटयोस्विरङ्गिणोः ३५ तनश्चटवटाशब्दो वज्रनिर्गोपमन्निमः ॥ गदयोःक्षिप्तयोराजन् दन्तयोस्विदन्तिनोः ३६ तेवैगदेभुजजवेननिपात्यमा  
ने अन्योऽन्यतोऽपकटिपादकरोरुनद्यन् ॥ चूर्णिवभूतुरुपेत्यथार्कशखे संयुज्यनोर्द्विरदयोभिवदीप्तमन्ध्रयोः ३७ इत्थंतयोःप्रहतयोर्गदयोर्नुवीरौ क्रुद्धोस्म  
मुष्टिभिरयःस्पर्शैरपिग्राम् ॥ शब्दस्नयोःपहरतोरिभयोभिव्राऽऽर्जिर्घातवज्रपरुपस्तलताडनोत्थः ३८ तयोरेवंप्रहरनोःसगशिआइलौजसोः ॥ निर्द्विंशेषम  
भूतुद्धमक्षीणजवयोर्नृप ३९ एवंतयोर्महाराजयुज्यनोःसप्तविंशतिः ॥ दिनानिनिरांगंस्तत्रसुहृदन्निशितिष्ठतोः ४० एकदागतुल्यैवैप्राहराजन्यूकोदरः॥  
नशक्कोऽहंजरासन्धं निर्जेतुंयुधिमाधव ४१ शत्रोर्जन्ममूर्त्तीविद्धाब्जजीविनंचजराकृतम् ॥ पार्थमाप्याथयन्स्वेन तेजसाऽचिन्तयद्धरिः ४२ सच्चिन्त्यारिश्च  
धोपागं भीमस्यामोघदर्शनः ॥ दर्शयामामचिटपं पाटयन्निवसंजया ४३ तद्विज्ञायगहासत्त्वोभीमःपहरतांश्रः ॥ गृहीतरापादयोःशत्रुंयातयामासभूतले ४४

भीमसेन हैं तिनकी मुक्ती लागि है उठ्यो जो शब्द है सो जैसे विना वादर पक्षपातको शब्द होय ता प्रकार कडोर शब्द होत भयो ३८ हे राजन् परीक्षित ! नहीं दृष्ट्यो है वेग जिनको और पराशरि दाड़ै पंच बल प्रभाव जिनको मुक्ती पारै ऐमे जे भीमसेन जरासन्ध है तिनको परापर युद्ध होत भयो ३९ हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार दिनमें तो युद्ध करै और रातिमें मित्रकी तुल्य पक्षडोर रहै ऐसे जे भीमसेन जरासन्ध हैं तिन में युद्ध करत सचाई सदिन नीताये ४० हे राजन् परीक्षित ! एकसमय वृत्तनाभा आग्नि है उदर में ऐसी भीमसेन है सो माया के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र है तिनसे नीलत भयो है माधव ! युद्ध में जरासन्ध कुंभ में नहीं जीति सकूं हूं ४१ बन्धु जो जरासन्ध है ताभो जन्म भयो है ताय और जैसे याकी मृत्यु होयगी ताय और जगन्नाथ राजसी ने दो दूक जोरि कै निवाय दियो ताय जानै ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अपने तेज करि कै भीमसेन हूं गुणै करि कै जरासन्ध ११ मृत्यु को उपाय विचारत भये ४२ सफल है दर्शन जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र है सो





सुन्दर प्रसन्न मुन्यहै और प्रकाशमान एकराकृत कुण्डलनकू धारण करे ३ नमस्त जिनके प्राथम विगममान गदा द्यु चक्र इनकू पारण करे पाँच किरीट छार कड़ा कौनगी चानूरन्त इनकू पहिरे ४ और प्रकाशमान सुन्दर मणि श्री गाय तथा गलेमे पारपर्यन्त वनमाला कू गारण करे ऐसे रूपकू देगिके राजान कू लट्ठिमी परि गई देगिके नेत्र ऐसे चलाये मानों रूपरो पीजायगे जीभ ऐसी चलावे मानो चाटि जायेगे नाक ऐसी फुलावे मानों मूँघि जायेगे भुजा ऐसी चलावे मानों स्वरूपको आलिङ्गन करिलेगे गाय जिनके दूरिभये ऐसे राजा है ते शिरन से श्रीकृष्णचन्द्रके चरणनय प्रणाम करतभये ५ । ६ श्रीकृष्णचन्द्रके दर्शन तें जो आनन्दभयो तामूं दूरि भयो है बन्दीखाने को केश जिनको हाथ जोरे ऐसे समस्त राजा हर्षकेश जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान हैं तिनही चाखीन करिके स्तुति करतभये ७ इन्द्रादिक देवतान के देव जो ब्रह्मादिक तिनके ईश्वर है शरणागतनके कष्ट के हरनयारे ! हे अविनाशी ! हे कृष्ण ! या वीर संसार तें दुःखितभये तुम्हारी शरण लियो ऐसे जे हम हैं तिनकी रक्षा करो ८ हे नाथ ! हे मयुषूदन ! यह जो जरामन्थ है ताप दोषलगायकै रूप नहीं देने हैं हे प्रभो ! राजा जे हम हैं तिनको राज्य अष्टभयो यह तुम्हारी अनुग्रहभयो ९ राज्य ऐश्वर्य

पलाक्षिनम् ॥ किरीटहारकटकटिमुत्राङ्गदचितम् ४ भ्राजदमणिग्रीवं निवीतं वनमालया ॥ पिवन्त इव चक्षुर्भ्यां लिहन्त इव जिह्वया ५ जिब्रन्त इव नासाभ्यां रमन्त इव वाङ्मयिभिः ॥ प्रणे मुहन्त पाप्मानो मूर्खेभिः पादयोर्हरेः ६ कृष्णसन्दर्शनाद्वाद्यस्तसंरोधनक्लगाः ॥ प्रशशं मुहुषीकेशं गीभिः प्राञ्जलयो नृपाः ७ राजानञ्जुः ॥ नमस्ते देवदेवेश प्रपन्नार्त्तिहरावयय ॥ प्रपन्नान्पाहिनः कृष्णनिर्विषान्प्रचोरसंमृतेः ८ नैनं नाथानुसूयामो मागधं पशुमूदन ॥ अनुग्रहो यद्वतो गङ्गाः ज्यञ्च्युनि प्रभो ९ राज्ये श्वर्यमदोन्नद्धो न श्रेयो विन्दते नृपः ॥ त्वन्माया मोहि तो नित्यागम्ये न सम्पदोऽचलाः १० मृगतृष्णा यथावाला मम्यन्त उदकाशयम् ॥ एवं वै कारिकी मायामयुक्ता वस्तुवक्षते ११ वयं पुरा श्रीमदनष्टदृष्टो जिगीषयाऽस्या इतरे न स्पृधः ॥ घ्नन्तः प्रजाः स्माअनिनिर्झणाः प्रभो मृत्युं ॥ रस्ताऽविगणय्य दुर्मर्दाः १२ तपूवकृष्णाद्यगभीरं हमा दुःखन्त वीर्येण विचालिताः श्रियः ॥ कालेन न नवाभवतोऽनुक्रमया विनष्टस्पर्शरणोऽस्मरामते १३ अथोन राजयं मृगतृष्णिरूपितं देहेन शश्वरपनतारुजां भुवा ॥ उपासितव्यं स्पृहयामहे विभो क्रियाफलं प्रेत्य च कर्णरोचनम् १४ तन्नः समादिशोपायं येन ते

के पद करिके खोजी है पर्यादा जाने ऐसो जो राजा है सो तो कल्याण भू नही प्राप्त होय है और तुम्हारी माया मूं मोहित होय है अनित्य जे समझा है तिन अचल माने है १० जैसे अज्ञानी बालक मृत्यु की किरणनमूं चपकै जो दाव है ताप जल को सरोवर माने हैं ऐसी ही अज्ञानी पुरुष हैं ते जाना मृष्टि असत् रूपी जो माया है ताप सत्य माने है ११ धन के मट करिके फूटे हैं नेत्र जिनके और पृथ्वी के जीतिवे की इच्छा करिके आपुस में भई है ईर्ष्या जिनके अपनी प्रज्ञानकूं पारे अत्यन्त निर्दयी और है सपर्य ! आगे तुप कालरूप ठा है हो तिनको प्रवादर करिके पहिले दुष्ट है पद जिनको ऐसे हम होत भये १२ हे कृष्ण ! गम्भीर वेग और नहो पराक्रम जाको ऐसो तुम्हारी मूर्ति जो काल है ताने हम दास भी तें अष्टकोर अप तुम्हारी कृपा करिके दूरि भये हैं गन्ध जिन के ऐसे हम तुम्हारे चरणनको स्पर्ण करे हैं १३ हे विभो ! याके पीछे नित्य आयु जाती स्त्रीण होय और रोगनकी खानि अधीत एक न एक रोग जागें उत्पन्न होय ऐसी जो देख है तामूं मृगतृष्णारूप जो

मिथ्या राज्य है ताकी इच्छा हम नहीं करे हैं और कर्मन के फल जे स्वर्गादिक हैं तिनकी इच्छा हम नहीं करे हैं ते केवल कानन सँ अरण्यमात्र हैं १४ या संसार में भूलें जे हम हैं तिनकुं तुम्हारे चरणारविन्द की भूल न होइ ऐसो उपाय बतायो १५ भक्तन के क्लेश कूंदुरि करनवारे शुद्ध अन्तःकरण के प्रकाशक हरि परमात्मा और तुम्हारे नाम लेइ ताके क्लेश के काटनवारे गोविन्द ऐसे जो तुमहो तिनकुं प्रणाम करे हैं १६ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! जरासन्ध के वन्दरीखाने तें छूटे ऐसे जे राजा हैं तिनने स्तुति जिनकी करी ऐसे जे शरण के योग्य करुणावान् जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते मनोहर बाणी करिके राजान तें बोलतभये १७ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं हे राजाओ ! जँसे तुम ने चारुणा करी तैसे सबको ईश्वर जो आत्मा मैं हूँ ता मो में आज ते लौके तुम्हारी निश्चय दृढभक्ति भई १८ हे राजाओ ! सत्यवादी जे तुमहो तिनने मेरो भजन करियो यह भलो सत्यसङ्कल्प निश्चय क्रियो है और मनुष्यन कूँ धन ऐश्वर्य सँ मद है तासू इच्छापूर्वक धिचरिओ और लज्जता है ताय देखूँ हूँ १९ कृतवीर्य को पुत्र चक्रवर्ती राजा सस्रबाहु एकसगय जपदिनि ऋषिकी गौ हरिकै लै आयो तब बाकुं परशुरामजी ने पुत्र

चरणान्जयोः ॥ स्मृतिर्यथानविरमेदपिसंसरतामिह १५ कृष्णायवासेदेवायहरयेपरमात्मने ॥ प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दायनमोनमः १६ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ संस्तूयमानो भगवान् राजभिर्मुक्कचन्धनैः ॥ तानाहं करुणस्तात शरयः शलक्षण्यागिरा १७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अद्यप्रभृतिवोभूषामभ्यात्मन्य खिलेश्वरे ॥ मुहृदाजायते भक्तिर्वाटमाशंसितं तथा १८ दिष्ट्वाव्यवसितं भूपाभवन्तश्चतुर्भाषिणः ॥ श्रियैश्वर्यमदोन्नाहं पश्यउन्मादकं नृणाम् १९ हेहयो नहुपोवेनोरावणोनरकोऽपरे ॥ श्रीमदाङ्गशिवाः स्थानाद्देवदैत्यनरेश्वराः २० भवन्तएतद्विज्ञायदेहाद्युत्पाद्यमन्त ॥ मांयजन्तोऽध्वैर्युक्ताः प्रजाधर्मेण रक्षथ २१ सन्तन्वन्तः प्रजातन्तून्सुखंदुःखं भवौ ॥ प्राप्तं प्राप्सुसेवन्तो मच्चित्ता विचरिष्यथ २२ उदासीनाश्च देहादावात्मारामा धृतव्रताः ॥ मथ्यावेश्य मनः सम्यग्मात्मन्ते ब्रह्मया स्म्यथ २३ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इत्यादिश्यन्पान्कृष्णो भगवान् भुवनेश्वरः ॥ तेषां न्ययुक्त्वा पुरुषान् स्त्रियो मज्जनकर्मणि २४ सपथ्यां का

सहित मारयो और राजा नहुप मदोन्मत्त होयकै इन्द्राणी के पास जायवे के लिये ब्राह्मणन कूँ पालकीमें लगाय के चढ्यो तब ब्राह्मणन ने बाकुं ऐश्वर्य तें अष्ट करिके सत्वं करिदियो और राजा वेन मतवारो होयकै ब्राह्मणनको तिरस्कार करयो तब ब्राह्मणनने हुक्कार शब्द करिके मारयो और राक्षसनके राजा रावणने सीताकी आकांक्षा करी तन रामचन्द्रने माख्यो तथा दैत्यनको राजा नरकासुर अदितिके कुण्डल हरिलायो तब मैनेही मारयो और कितनेहुँ देवता तथा दैत्य राजा बनके मदतें स्थानन तें अष्ट होयगये २० और तुम सम्पूर्ण होतें उत्पन्न जे देहादिक हैं ते नाश होयगे यह जानिके यज्ञन करिके मेरो पूजन और प्रजाकी रक्षा करो २१ और पुत्रादिकन कूँ उत्पन्न करो सुख दुःख जन्म मृत्यु जो प्राप्त होय ताको सेवन करो मो में चित्तकू लगायकै धिचरो २२ आत्मामें है रमण जिनको धारण कियो है व्रत जिनने ऐसे जे तुमहो ते देह में और घरन में उदासीन होयकै भले प्रकार मो में मन लगावोगे तो अन्तमें मो ब्रह्मकू पावोगे २३ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! त्रिलोकी के ईश्वर जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो या प्रकार राजानकू आत्मा करिके तिनको उवटन स्नान चौर इन कर्मन के करायवे के निमित्त स्त्री पुरुषनकू लगावत

रयामाम सहदेवेन भारत ॥ नरदेवोचिर्वैश्वेभ्यःस्त्रियलेपनेः २५ भोजयितावराज्रेन मुस्नानान्ममलंकृतान् ॥ भोगश्चविधिव्युक्तांस्तामूलार्थैर्नृपो  
चिनैः २६ तेषुजितामुकुन्देन राजानोप्रष्टुकुण्डलाः ॥ विरेजुर्भोजिताःक्लेशात्प्रावृडन्तेयथाग्रहाः २७ स्थान्मदस्वानागेभ्य गणिकाञ्चनभूषितान् ॥ प्री  
णय्यमूर्तैर्वस्त्रैःस्वदेशान्प्रत्ययापयत् २८ तत्पूर्वमोचिताःकृच्छ्रात् कृष्णेनसुमहात्मना ॥ ययुस्नमेभ्यःप्रायन्तः कृतानिचजगत्पतेः २९ जगद्भुःप्रकृति  
भ्यस्ते महापुरुषचेष्टिनम् ॥ यथाऽन्वशामद्रगांस्तथाचक्रात्तन्दिताः ३० जगत्सन्ध्यातयित्वा भीमसेनेनकेशवः ॥ पार्थिव्यांसंयुतः प्रायात्सहदेवेनपूजितः  
३१ गत्वातेखाण्डमस्थं शङ्खान्मदधुर्जितारयः ॥ हर्षयन्तःस्वमुहूर्दोदुहर्गंचामुत्ताग्रहाः ३२ तच्छ्रुत्वाभीतमनसइन्द्रपस्थनिवाaminः ॥ मेतिरेमगधंशान्तं  
राजाचासमनोरथः ३३ अभिमन्याथराजानं भीमाज्जैनजनादिनाः ॥ सर्व्वमाभ्रापयाद्यकुरात्पनायदनुपिउत्तम ३४ निशम्यधर्मराजस्तत्केशवेनानुक्रम्य  
तम् ॥ आनन्दाश्रु रुलांसुशब्दं पूरणानोवाचविजय ३५ इति श्रीमद्भागवतेमहापुर्णोदशमस्कन्धेउत्तराष्टकेकृष्णार्चामनेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

स्य द्योति के करतभये ३० नेशय जो भगवान् श्री कृष्णचन्द्र हैं मो भीमसेन हर के जगामन्य तो घातकषाय के और मरदेव नूं पूजन अनो तराग के भीमसेन अर्जुन हूं मरुल के आवतभये ३१ दुष्ट है हृदय भिनफो ऐसे अं शुद्ध हैं तिलकुं दू ग के देवचारे और अपने मुहदह हूं आनन्द के देनचारे ऐसे अं श्री कृष्ण भीमसेन अर्जुन हैं ते पैरी जगामन्य कूं पारि है इन्द्रप्रसंग में जाय कै शङ्खन हूं चजावत भये ३२ शुद्धन को शुद्ध मुनि के मयचैं मन जिन के ऐसे अं इन्द्रप्रसंग के निरापी हैं ते जरासन्ध भीमदूथ भई यदमानतभये और राजा युधिष्ठिर के मनोरथ पूर्ण होते भये ३३ या के पीने भीमसेन अर्जुन श्री कृष्णचन्द्र आय के राजा युधिष्ठिर के प्रणाम करि के अपने जो गन्धु करे सो मय सुनाततभये ३४ रम्यराज के पूज जो राजा युधिष्ठिर हैं मो ब्रह्मा परादेव के नश करनचारे भी कृष्णचन्द्रने जो काश्ये करयो ताप शरण करि के नेकन मूं आनन्द के आसू पी धर परावत मेपमें विद्वलशेव है रहनु न योलत भये ३५ इति श्रीभगवद्भागवतार्थसिन्धुनाट्यप्रकरणे चरार्द्धे त्रिमासं तिनपोऽध्यायः ७३ ॥

(चतुर्गुणसहितपञ्चसूत्रयाद्विगे-॥ अग्रूजापसद्मैर्नचैवयातादिवर्णते ? राजसूयमुत्वे हत्वाजरासन्तदन्तरे ॥ चैवंतदन्तेकुर्वन्तं वागैकलिभिर्वावत् २ चौहतरवै आधाय मेवाक्षयौ ने राजसूययज्ञ की क्रिया करवाई यामे प्रथमही पूजा के मस्तकसूं गिणुपालका नाश आदि वर्णित है ? राजसूययज्ञ के मुखमें जरासन्ध को भारकर ताके बीच में गिणुपाल को भारकर भन्तमें लड़ाईका बीच सा चोते भये २ ) अब श्रीशुभदेवी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रभार राजा युधिष्ठिर जरासन्धको वध सुनिके मसनहोयकै श्रीकृष्णचन्द्र संचालतभयो ? जे पुरुष तिलोरी के मुखहैं सन लोकन के वड़े इशरहैं वे भी दुर्लभ पायकै तुम्हारी आश्रकूं थिरपै धारण करहैं ३ हे व्यापक ! कपल सेहेंनेत्र गिनके ऐसे तुमहो सो ईश्वर आपेकूं मानें ऐसे जो छुपण ह्वैं तिनकी आज्ञाकूं हे व्यापक ! तुम व्याप करो हौ यह अत्यन्त अनुरण है ३ एक आदितीय अर्थात् कोई जिनकी बराबर नहीं और कोई जिनतें वडो नहीं पेमे जो परमात्मा तुमहौ तिनको नेत्र परेपकार के लिये जो कर्म हैं तिनसं न्यून भी नहीं होयहैं जैसे सूर्य के उदय अस्तमें आवत जात में तेज घटै बड़ै नहीं है ४ कदाचित् कहो कि मैं परमेश्वरहूं तो सबकी आज्ञा करनो यह मन्द कर्म क-

श्रीशुकउवाच ॥ एवंयुधिष्ठिरराजा जरासन्धवधंविभोः ॥ कृष्णस्यचानुभावंतं श्रुत्वाप्रीतस्तमब्रवीत् १ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ येस्युल्लोकेयगुरवः सन्वै लोकमद्देश्वराः ॥ वहनिदुर्लभंलब्ध्वा शिरसैवानुशासनम् २ सभवानरविन्दक्षोदीनानामीशमानिनाम् ॥ धत्तेऽनुशासवंभूमंस्तद्वयन्तविडम्बनम् ३ न ह्येकस्याद्वितीयस्यब्रह्मणःपरमात्मनः ॥ कर्मभिर्विद्धैतेतेजोद्भूतेचयथास्त्रेः ४ नवैतेऽजितभक्तानांमहामितिमाधव ॥ हन्तव्येतिचनानाधीःपशूनामिवै कृता ५ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युक्त्वायाज्ञियेकाले वव्रेयुक्कःकुमन्धत्विजः ॥ कृष्णानुमोदितःपार्थोब्राह्मणान्ब्रह्मवादिनः ६ द्वैपायनोभरद्वाजःसुमन्तुर्गौतमोऽसितः ॥ वसिष्ठश्चयवनःऋग्वैत्रेयःकवपस्त्रिनः ७ विश्वामित्रोत्रामदेवःसुमतिर्जमिनिःक्रतुः ॥ पैलःपराशरोगर्भोवैशम्पायनपुत्रश्च ८ अथर्वकश्यपो धौम्यारामोभार्गवआसुरिः ॥ धीतिहोत्रोमधुच्छन्दार्वावरसेनोऽकृतव्रणः ९ उपहूनास्तथाचान्ये द्राणभीष्मकृपादयः ॥ धृतराष्ट्रःसहमुतोविदुरश्चमहामतिः १० ब्राह्मणाःक्षत्रियवैश्याःशूद्राःपुन्यदिदृक्षतः ॥ तत्रेयःसर्वराजानोराज्ञांप्रकृतयोनुप ११ ततस्तेदेवयजनब्राह्मणाःस्वर्णलाङ्गलैः ॥ कृद्वातत्रयथाम्नायं दीक्षया

रनो योग्य नहीं है सो कहें हे मधुं शोषण श्रीकृष्ण ! हे अजित अर्थात् काहू के जीतिवे में न आओ ! जैसे अज्ञानी पुरुषन के देह में अहङ्कार और देह के सद्गीन में ममता रहे है ऐंसे तुम्हारे भक्तन में मे गेरो वृत्तेरो यह बुद्धि नहीं होगै ४ अथ श्रीगुहदेव जी कहें हे राजन् परीक्षित् । श्रीकृष्ण ने मरसा जा की करी ऐसो कुन्ती को पुन जो राजा सुधिष्ठिर है सो या प्रकार कहिकै यज्ञ करि रे योग्य जे वसन्तादि काल है तापे वेद के पढ़नारे जे योग्य ब्राह्मण हैं तिनें होता उद्गाता अर्धयु रथादिक परण करत भयो ६ द्वैपायन भरद्वाज सुमन्तु गौतम आसित वसिष्ठ च्यवन कपन मैत्रेय त्वषत्रित ७ विश्वामित्र वापदेव सुपति जैषिनि क्रतु पैल पराशर गर वैशम्पायन ८ अथर्वा इत्यग धौम्य परशुराम भार्गव आसुरि वीतिहोत्र गृध्चञ्चन्द्र वीरसेन अकृतव्रण ९ तैत्तिरी जुलाये जे और द्रोणाचार्य भीष्मजी कृपाचार्य तें आदिलै ते ऋषिपै ते आचत भंगे और पुत्रनसहित धृतराष्ट्र और वहेबुद्धिम न चिदुरजी आचत भये तथा यज्ञ देविबे ते निमित्त ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शुद्र हैं ते और सम्पूर्ण

राजा हैं ते और उनके प्रधान दीवाने हैं ते हे राजन् परीक्षित १०। ११ ता पीछे ब्राह्मण है ते यज्ञ करिबे की भूमि में सुवर्ण के हल चलाय के भूमिशोधन करिके जैसे वेद में विधि है तैसेही राजा युधिष्ठिर कू यज्ञदीक्षा करत भये १२ जैसे पहिले वरुण के यज्ञमें सुवर्णकी सामग्रीपात्र होत भये ऐसही याहू यज्ञमें होत भये और ब्रजा महादेव कूं सज्ञ लैंके तथा इन्द्रादिक देवतान कूं सज्ञ लैंके लोकपाल हैं ते आवत भये १३ गणनसहित सिद्ध गन्धर्व विद्याधर और वड़े २ सर्प हैं ते और मुनीश्वर यज्ञ राक्षस खग किन्नर चारण इनके समूह आवत भये १४ और आये जे राजा हैं तिनकी सम्पूर्ण स्त्री हैं ते पाण्डु को पुत्र जो राजा युधिष्ठिर है ताके राजसूययज्ञमें आवति भई १५ नहीं भयो है आश्चर्य जिनके ऐसे सम्पूर्ण श्रीकृष्णचन्द्र को भक्त जो राजा युधिष्ठिर है ताको यश भलेमकार सिद्ध भयो या प्रकार मानत भये जैसे देवतान ने वरुण कूं यज्ञ करायो तैसेही देवतान की तुल्य है कान्ति जिनकी ऐसे जे ऋत्विज हैं ते राजसूय यज्ञ करिके विधिपूर्वक महाराज युधिष्ठिर सूं यजन करावत भये १६ अतिशय करिके सावधान पृथ्वीके पालन करनवारे राजा युधिष्ठिर ने जा दिन सोमवह्नी कूटी गई वा दिन यज्ञ करावनवारेन को तथा अकिरेनृप १२ है माः क्रिलो पकरण वरुण स्य यथापुरा ॥ इन्द्रादयो लोकपाला विराश्च भव संयुताः १३ सगणाः सिद्ध गन्धर्व विद्याधर महोरगाः ॥ मुनयो यक्षरक्षांसि खग किन्नाचारणाः १४ राजानश्च समाहूता राजपत्यश्च नर्वशः ॥ राजसूयं समीयुः स्मरान्नः पाण्डुमुतस्य वै १५ मे निरेकृष्ण भक्तस्य सूपन्नमविस्मिताः अयाजयन्महारजं याजका देववर्षसः ॥ राजसूयेन विधिवत् प्राचेतसमिवाभराः १६ सौत्येहन्यवनीपालो याजका बृहस्पतिस्तन् ॥ अपूजयन्महाभागान् यथावत्सुसमाहितः १७ सदस्याग्रवार्हणा हवै विमृशन्तः सभासदः ॥ नायगच्छन्नैनैकान्त्यात् राह देवस्तदाऽव्रती १८ अर्हति ह्यव्युतः श्रैष्ठ्यं भगवान् सत्तन्तां पतिः ॥ एष देवताः सर्वदिशः कालधनादयः १९ यदात्मकमिदं विशवं क्रतवश्च यदात्मकाः ॥ अग्निराहुतयो मन्त्राः साङ्गयोगश्च यत्परः २० एक एवादिती योऽसमवैतदात्म्यमिदं जगत् ॥ आत्मनाऽऽत्मा श्रयः स भ्याः सृजत्यवतिहन्त्यजः २१ विविधानीह कर्मणि जनयन् यदवेक्ष्य ॥ इहेत्यदयं सर्वः श्रेयो धर्मादिलक्षणम् २२ तस्मात्कृष्णाय महते दीयतां परमार्हणम् ॥ एवं चेत्सर्वभूतानामात्मनश्चार्हणं भवेत् २३ सर्वभूतात्मभूताय कृष्णायानन्यदर्शिने ॥ देयशान्ताय च बहुभागी जे सभामें मुख्य हैं तिनकी पूजन करयो १७ सभाके बैठनवारेन में प्रथम पूजन योग्य कौन है यह विचार करत एक की अपेक्षा एक बड़ो है यातें कगहूको निश्चय जय ग भयो तब युधिष्ठिर को भयया सहदेव बोलत भयो १८ भक्तन के पालन करनवारे असएह जिनको रूप समस्त देवता देस काल धनदिक्षण जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान हैं ते या यज्ञमें पूजा करिबे के पात्र हैं १ यह समस्त विन्ध या श्रीकृष्णको ईश्वर रूप है और यज्ञादिक है तेहू श्रीकृष्ण रूप है अग्नि आहुति मन्त्र साख्य योग ये सब श्रीकृष्णपरायण हैं २० हे सभाके बैठनवारे ! नहीं है जन्म जाको ऐसी एक अद्वितीय जो यह श्रीकृष्ण है सो आपही स्वरूप जाको ऐसी यह विन्ध है ताव अपने आत्माही करिके दूसरे की सहायता बिना उत्पन्न पालन नाश करे है २१ सब जनन के अनुग्रह तें या संसार में अनेक तरहके लपयोगादि कर्म हैं तिन कूं करिके धर्मादिक है स्वरूप जाको ऐसे कल्याण कूं करे है अनेकमतार के सम्पूर्ण कर्म और कर्मन के फल ये सब श्रीकृष्ण के

अर्थीन है २२ ता कारण सवते बड़े जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पूजादेख इनके देने भेस प्रणीन की पूजा होजायगी और जो कोई पूजायोग्य होयगो ताहू की होजायगी २३ जो पुरुष पूजा के अनन्त फल की चाहना करै वह पुरुष सन प्राणीन के आत्मा और भेदभाव जिनके नहीं ऐसे शान्त परिपूर्ण रूप जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पूजा देइ २४ श्रीकृष्ण के प्रभार कू जानै ऐसे सद-देव इतनी कहिके चुप होत भयो ता समय सम्पूर्ण जे श्रेष्ठ पुरुष हैं ते सहदेव को वचन आण करिके भले २ या प्रभार यदाई करत भये २५ स्नेह करिके विद्वन प्रसन्न जो राजा युधिष्ठिर है सो तिन ब्राह्मणन ने कछो जो वचन है ताथ सुनिके और सभा में बैठे हैं तिन ते हृदयको अभिप्राय जानिके इन्द्रियन के गेरण करनबारे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन हो पूजन करत भयो २६ लो भय्या मन्त्री सब कुटुम्ब के पुरुषनसहित जो राजा युधिष्ठिर है सो श्रीकृष्णचन्द्र के चरण धोइकै लोकन जो पवित्र करनवारो जो चरणारविन्दको धोयन जल है ताथ आनन्द करिके शिरपै चढ़ानत भयो २७ पीरे रेशमी वस्त्र और महुत योल के जे आभूषण हैं तिनसु पूजन करिके आभूषे नेत्रन में जाके ऐसो राजा युधिष्ठिर श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन करिवेहु नहीं समर्थ होतभयो २८ या

पूर्णय दत्तस्यानन्तयमिच्छता २४ इत्युक्त्वा सहदेवो भूषणानुभाषवित् ॥ तच्छ्रुत्वा तु ध्रुवः सर्वे साधुसाध्विति सत्तमाः २५ श्रुत्वा द्विजे रितं राजा ज्ञात्वा हार्दं  
समामदाय ॥ गमर्हयद्धृषी केशं प्रीतः प्रणयविह्वलः २६ तत्पादावबन्धि जयापः शिरालो कपावनी ॥ स गार्ह्यः सानु जामात्यः सकुटुम्बोऽवहन्मुदा २७ वासोभिः  
पीतकौशेयैर्भूषणैश्चमहाधनैः ॥ अर्हयिरनाऽश्रुणुषोक्षो नाशकस्तमवैक्षितुम् २८ इत्थं मया जितं वीक्ष्य सर्वे भ्राजन्त यो जनाः ॥ न गोजयेति नेयुस्तं निपेतुः पुण्यद्रु  
ष्टयः २९ इत्थं निशाम्य दमघोषमुतः स पीठोद्धृत्वा यकृष्णगुणवर्णन जातमन्युः ॥ उत्तिष्ठ पयवाहुभिदमाहमदस्यमर्षी संश्रावयन् भगवते परुषाण्ययीतः ३० ई  
शोद्धरस्य यः काला इति सत्यवती श्रुतिः ॥ वृद्धानामपि यद्वबुद्धिर्बालवाक्यैर्विभिद्यते ३१ शृंगपात्रविदां श्रेष्ठानामन्यध्वं बालभाषितम् ॥ सदसस्पतयः सर्वे च  
ष्णो यत्पम्पनोऽहणे ३२ तपोविद्याव्रतधरा ज्ञानविध्वस्तकल्मषान् ॥ परमर्षीन् ब्रह्मनिष्ठान् वै गोरुपालैश्च पूजितान् ३३ सदस्पतीन निक्रम्य गोपालः कुल

प्रकार राजा युधिष्ठिर ने पूजा जिनकी करी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करिके जोरी हैं अजली जिनने ऐसे सम्पूर्ण जन नमोनमः और जयजय शब्द करिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं मणाम करिके फलन की वर्षा करत भये २९ या प्रभार दमघोष को पुत्र शिशुपाल है सो सुनिके अपने पीठ मूं उठिके श्रीकृष्णचन्द्र के गुणन को वर्णन भयो तामूं भयो ई कोष जाके ऐसो भुजाकूं ऊंची उठाय के ईपी जाते भई ऐसो निर्भय होय सभासों श्रीकृष्णको बडोर वचन सुनाय के यश्च बोलतभयो ३० नईहै नाश जाको ऐसो सगार्थवान् जो काल है सो प्रमलैहै यश्च वेदकी श्रुति सत्य है ऐसे कालकरिके हृद हृद जे सभा में बैठे हैं तिनकी बुद्धि या बाल सहदेव के कहने तें चलायमान होय गई ३१ हे पात्रके जाननबारेन में श्रेष्ठो सभा के पतियो! यह कृष्ण पूजाके योग्य है या बालक सहदेव को वचन सन गति मानो ३२ तपकूं हरे विद्या पैं व्रतन कूं करै ज्ञान करिके ध्यस्त भये हैं पाप जिन के और अस्र गें निष्ठा है जिनकी लोकपाल पूजा करै ऐसे श्रेष्ठ ऋषि हैं तिन और सभाके पतियैं तिन



सन्तुष्ट्यागि के गायन को चरावनचारी कुन कूँ दोष लागावचारी पूजा के योग्य कैम होय है जैसे यज्ञ में देवतान के योग्य जो वनि है ताथ वीना कैसे ग्रन्थ करिवे योग्य है ३३ । ३४ न जाको कोई वणि है न आश्रम है भौर न कोई कुल है सम्पूर्ण धर्मन सँ वहिष्कृत जैसे मनमें आवै तैसेही करे गुणन करिके हीन ऐसो कृष्ण कैः पूजायोग्य होय है ३५ राजा यथातिने इनके कुल कू शाप दियो और सत्पुरुषन ने जातिभू याहर कियो और सर्वरा दृष्टा गदरा पान करै ऐसो इनको कुल ता कुल में जो कृष्ण है सो कैसे पूजा योग्य होय है ३६ ब्रह्मर्षि जिनको सेवन करै ऐसे देशन कू त्यागि कै ब्रह्मतेज जामें न रहे ऐसे समुद्र के किलाको आश्रय लैकै यादव चोरनी तुल्य प्रजाकू बाधा करै है ३७ नष्ट भयो है भंगल जाको ऐसो शिशुपाल ऐसे ऐसे अमंगल वचन कहतभयो जैसे सिंह स्यारकी बोलनि पै मन नहीं देखै ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकू निन्दा श्रवण करिके काननकू मृदि कै क्रोध करिके शिशुपाल कू गारी देत जात भये ३८ भगवान् की निन्दा सुनिके अथवा भगवत्परायण जो पुरुष है ताकी निन्दा सुनिके जो पुरुष या स्थान तें न छडिजाय वह पुरुष अपने

पांसनः ॥ यथा नाकः पुरोडाशं मपश्यत् किमर्थमर्हति ३४ वर्णाश्रमकुलापेतः सर्वधर्मवहिष्कृतः ॥ स्वैरवर्त्ती गुणैर्हीनः सपथ्या कथमर्हति ३५ ययातिनैर्पाहिं कुलं शंसं मर्द्दिमहिष्कृतम् ॥ दृथापानरतं शरत् मपश्यत् किमर्थमर्हति ३६ ब्रह्मर्षिमेवितान् देशान् त्रिवैतः ब्रह्मवर्चसम् ॥ समुद्रं दुर्गमाश्रित्य बाधन्ते दस्यवः प्रजाः ३७ एवमादीन्यभद्राणि वभाषेनष्टमङ्गलः ॥ नोवाच किञ्चिद्भगवान् यथासिंहः शिवारुनम् ३८ भगवन्निन्दनं श्रुत्वा दुस्सहं तत्सभासदः ॥ कर्णेऽपि धाय निजं गमुः शपन् आश्रेद्विरुपा ३९ निन्दां भगवतः शृण्वंस्तत्परस्य जनस्य वा ॥ ततो नोपैतियः सोपि यात्यधः सुकृताञ्च्युतः ४० ततः प्राणदुमुताः क्रुद्धा मत्स्यैकं यस्तृज्जायाः ॥ उदयुधाः ममुत्तस्थुः शिशुपालजिघांसवः ४१ ततश्चैद्यस्त्वसम्भ्रान्तो जगृहे ह्रस्वचर्मणी ॥ भर्त्सयन् कृष्णपक्षीमान् राज्ञः सदासिभारत ४२ तावदुत्थाय भगवान् स्रान्निवार्य स्वयं रुपा ॥ शिरःक्षुरान्तचक्रेण जहारापततोरिपोः ४३ शब्दः कोलाहलोऽप्यासीच्चिद्रुपाले हते महात् ॥ तस्यानुयायि नोभूपादुडुवृत्तिवितैपिणः ४४ चैद्यदेहोत्थितं ज्योतिर्वासुदेवमुपाविशत् ॥ परयतां सर्वभूतानामुल्केन भुवि स्वाञ्च्युता ४५ जन्मत्रयानुगुणितैर्वैरसंरब्धया

पुरुष तें छष्ट होय कै नरक में गिरे है ४० ता पीत्रे क्रोध जिन के भयो ऐमे जे पाण्डु के पुत्र हैं ते और मत्स्य देश के कयदेश सृजयदेश के राजा हैं ते शस्त्रन कू उठाय कै शिशुपाल के मारिवे के लिये ठाढ़े होत भये ४१ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित् ! ता पीत्रे नहीं भयो है हस्त्रराहत जाके ऐसो जो शिशुपाल के सो कृष्णचन्द्र के पक्षी जे राजा है तिनके मारिवे कू सभा में डाल तलवार लेत भये ४२ यह मेरो पापद है मेरी वारावरि यामें बल है यह सनकू पारेगो याते में ही पाकू माखें यह चिचारिके ताही समय उठिके भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपनी ओर के राजानकू मनेकरिके सम्मुख आवै जो वैरी शिशुपाल है ताको शिर छुरा की तुल्य है पैनी धार जाके ऐसे चक्रमूषको काटत भये ४३ ता समय शिशुपाल के मारे जाने में बड़ो कोलाहल शब्द होत भयो और शिशुपाल के पिछड़ा जे राजा हैं ते जीचे वी इच्छा करिके भाजत भये ४४ ता समय शिशुपाल के देह में तें निकसी जो ज्योति है मो सब प्राणीनके देखन श्रीकृष्णचन्द्र में मिलति भई जैसे आकाश

तु गिराचो जो तारां है सो पृथ्वी में मिलिजाय या प्रकार ४५ पहिले जन्म में हिरगगाक्ष और शिरयकशिपु भये और दूसरे जन्म में रावण सुप्रकर्ण भये तीसरे जन्म में शिशुगल दन्तवक्र भये या प्रकार तीन जन्मो चरयो आयो जो वैर है तारुं तन्मयहोय गई ऐसी जो बुद्धि है ता करिके रूपको ध्यान करत २ वाही रूपकुं यावत भयो अर्थात् पारपंड होत भयो यमोक्ति जैसी जो भावना करै तैसोई ताको जन्म होयहै ४६ चक्रवर्ती राजा युधिष्ठिर है सो यज्ञ के कर्मावतवारे द्वाछरणनरू और वड़े वड़े सगामें बैठे हैं तिनकें वड़ी टाक्षिणा देतभये त्रिभिपूर्वक समझो पूजन करिहैं यज्ञान्त करै तैसोई ताको जन्म होयहै ४७ योगेश्वरन के ईश्वर जो श्रीछण्णचन्द्र हैं सो राजा युधिष्ठिर सो यज्ञ सिद्धकरिके सुहृदन ने विनती करी तब कितनेहू मासपर्यन्त वास कन्त भये ४८ ता बीछे आग देने स्नान करत भये ४९ योगेश्वरन के ईश्वर जो श्रीछण्णचन्द्र हैं सो राजा युधिष्ठिर है तासू आज्ञा मगिके समर्थ देमकी के पुत्र अपनी स्त्रीन और मन्त्री कू सङ्ग लैके अपनी द्वारकापुरी में आगत भये ४९ नैलुण्ड के नसनदारे अे जय विजय श्री इच्छा न करै ऐसो राजा युधिष्ठिर है तासू आज्ञा मगिके समर्थ देमकी के पुत्र अपनी स्त्रीन और मन्त्री कू सङ्ग लैके अपनी द्वारकापुरी में आगत भये ४९ नैलुण्ड के नसनदारे अे जय विजय ४७ अतिरम्यःससदस्येभ्योदक्षिणाविपुलामदात् ॥ सर्वान्ममूज्याविधिवच्चकेऽनभृथोक्रामद् ४७

सर्वान्ममप्युज्याविधिवच्चक्रेऽनभृयोगकराद् ४७  
चञ्चा न करे ऐसो राजा युधिष्ठिर है तासू आज्ञा मागि के समर्थ देखकी के पुत्र श्रपनी छीन आर मन्त्री कू सेह लै अंगन दूर करतु ।  
धिया ॥ ध्यानंस्तनयतायातोभाघोहिभवकारणम् ४६ ऋत्विग्भ्यःसप्तदस्येभ्योदक्षिणाविपुलामदात् ॥ सर्वान्ममप्युज्याविधिवच्चक्रेऽनभृयोगकराद् ४७  
साधयित्वाक्रतुराज्ञः कृष्णो योगेश्वरेश्वरश्च ॥ उवासक्तनिचिन्मासान्मुहुर्द्धिरभियच्छितः ४८ ततोऽनुज्ञाप्यराजनमनिच्छन्नमपीश्वरः ॥ ययौ स भार्य्यसा  
मात्यः स्वपुङ्देवकीमुतः ४९ वर्णिंत नहुपाह्न्यानं मयोतेवहुविरतरम् ॥ वैकुण्ठवासिनोर्जन्मविप्रशापात्पुनः ५० राजस्मृधावश्यमेनस्तानोरालायुवि  
ष्टिरः ॥ ब्रह्मक्षत्रभामध्ये शुशुभेमुराराडिव ५१ राज्ञासभाजिताः सर्वे मुरणानवखेत्राः ॥ कृष्णं क्रतुश्च संततः स्वागागानियमुर्मदा ५२ दुह्योधनमृतपार्थ

कालिकुरकुलामयम् ॥ यानसहस्रचरणाः ७० ॥ इति शुर्वनेभ्यः  
न्यते ५४ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे शिशुपालवधो नाम चतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥  
राजोवाच ॥ अजातशत्रोस्तद्वद्वाराजमूयमहोदयम् ॥ सर्वमुमुदिरेव बद्धदेवो ये सपागताः १ दुर्व्योधनवज्रगिद्वाराजानः सर्पयः सुराः ॥ इति शुर्वनेभ्यः

पार्षद हैं तिनको और सनहाडिकन को शाप लगा तोत वीरवार जन्म बना चरे काले । कुलकुं कलिगुल्फ कुलको पावी जो दुख्योवन है सो पाण्डु  
क्रियो ऐसे राजा युधिष्ठिर हैं सो ब्राह्मण और क्षत्रियन की सभा के मध्य में बैठे इन्द्र की तुल्य सुन्दर लगत भये ५ ? राजा युधिष्ठिर न सरस्वती धनराज करवा रसक्रीडा । मनन करवा रसक्रीडा  
के विवरनवार प्रमथण हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र और यज्ञकी प्रशंसा करत बढ़े आनन्द सू अग्रने २ लोकन कूं जात भये ५ ? कारण के कुलकूं कलिगुल्फ कुलको पावी जो दुख्योवन है सो पाण्डु  
एउ महाराज युधिष्ठिर की वड़ी लक्ष्मी कूं देखि कै कुदृत भयो ५ ? शिशुपाल के वधूँ आदिलैं के जे श्रीकृष्ण के कर्म हैं और वीसहजार आठसौ राजा बन्ध तें छुड़ाये युधिष्ठिर को यज्ञ करायो  
या प्रसन्न हू जो पुरुष कहै वह सब पावन तें छूटि जाय है ५४ ॥ इति श्रीमद्भागवतार्थखण्डपादशतस्कन्धे उत्तरार्द्धे शिशुपाल मोनामचतुःप्रसूतितमोऽध्यायः ७४ ॥ \* ॥ \* ॥

( पञ्चगुरुमसीतमेयज्ञाबहुयसरूपः ॥ सूर्योधनस्यात्मान्त्यामाभद्रोदशिम्बाव् ? पचरत्तरवे अध्यायमें यज्ञान्तस्तानमें सम्भ्रण अज्ञान्ति सं दष्टिमं अग्रसं दुख्योवनका मानभद्र वर्णित है ? )

अब राजा परीक्षित कहें हैं हे शुक्रदेवजी ! अज्ञातशत्रु राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ की वड़ी शोभा देखिके जे मनुष्यन के देव राजा आये ते सम्पूर्ण प्रसन्न होत भये ? और राजा ऋषि देवता आये हैं ते सम्पूर्ण दुर्योधन के बिना आनन्द कूं पावत भये यह भैंने तुम्हारे मुख से सुनी सो दुर्योधन के आनन्द क्यों न भयो याको कारण भरे आगे वर्णन करो २ ऋषीधर कहें हैं महात्मा तुम्हारे दादे जो राजा युधिष्ठिर हैं तिनके राजसूय यज्ञमें सब यज्ञा वस्तु प्रेषवश होय के सबही की दहल में युक्त होत भये ३ किसने कौन दहल लीनी सो कहें हैं भीमसेन कूं रसोई को अधिष्ठाता और दुर्योधन सर्व को मालिक क्योंकि यह हमकूं शत्रु जानिके द्रव्य बहुत उठावंगो तो यामें हमारो यश होयगो और सहदेव कूं आये गयेन की पूजा करनो नकुल सब सागग्रोन कूं लेआवें ४ गुरुनकी दहल अर्जुन करत भये श्रीकृष्णचन्द्र जो यज्ञमें आवें तिनके पांव धोइके पाँखि देई परासा परोसी में द्रौपदी प्रवृत्त भई बहो है मन जानो ऐसो कर्ण दान देवे की दहल में लगत भयो ५ युयुधान विकर्ण हादिक्य और जे विदुर कूं आदिलैके हैं ते और भूरिश्रवा कूं आदिलैके वाहीक के पुत्र हैं ते और जे सन्तर्दन कूं आदिलैके हैं ते बड़े यज्ञमें अनेकप्रकार के

गवंस्तत्रकारणमुच्यताम् २ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ पिनामहस्यतेयज्ञे राजसूयेमहात्मनः ॥ बान्धवाःपरिचर्यायान्तस्याऽऽगन्नेमवन्धनाः ३ भीमोमहानसाध्य क्षो धनाध्यक्षःसुर्योधनः ॥ सहदेवस्तुपूजार्थानंकुलोदव्यसाधने ४ गुरुशुश्रूषणेजिष्णुःकृष्णःपादावनेजने ॥ परिवेषणेद्रुपदजा कर्णेदानेमहामनाः ५ युयुधानोविकर्णश्चहादिक्योविदुरादयः ॥ बाह्मिकपुत्राभूयार्थायैचसन्तर्दनादयः ६ निरूपितामहायज्ञे नानाकर्मसुतेतदा ॥ प्रवर्तन्तेस्मराजेन्द्रराज्ञःप्रियचिकीर्षवः ७ ऋत्विक्कर्मदस्यबहुवित्तमुहत्तमेपुस्विष्टेपुसूतसमर्हणदक्षिणाभिः ॥ चैद्येचसात्वतपतेश्चरणंविष्टेचक्रुस्ततस्त्ववभृथस्नपनंद्युनद्याम् ८ मुदङ्गशङ्खपाणवधुन्धुर्यार्थानकगोमुवाः ॥ वादित्राणिविचित्राणि नेदुरावभृथोत्सवे ९ नर्तक्योननुतुहंष्टा गायकायूथशोऽजगुः ॥ वीणावेणुतलोद्वादस्ते पांसदिवसस्पृशत् १० चित्रध्वजपताकाशैरिभेन्द्रस्यन्दनार्वाभिः ॥ स्वलंकृतैर्भेदैर्भूषानिर्ययूरुममालिनः ११ यदृमुअयक्रास्वोजकुरुकैकयकोसलाः ॥ कम्पयन्तोभुवर्भन्यैर्गजमानपुरःसराः १२ सदस्यत्विग्द्विजश्रेष्ठा ब्रह्मघोषेणभूयसाऽऽदेवर्षिपितृगन्धर्वस्तुष्टुः १३ स्वलंकृतानरानाद्यर्षोगन्ध

कर्मन्त में लगाय दिये ता ममय है राजान के इन्द्र राजा परीक्षित ! महाराज युधिष्ठिर के भिय करिवे के निमित्त समस्त प्रवृत्त होतभये ६ । ७ ऋत्विज और सभाके चैठनगरे तथा धिवेकी सुहृद् हैं ते सुन्दर मनोहर वचन गहने दक्षिणा इनसूं पूजन करैं और शिशुपाल कूं श्रीकृष्णचन्द्र के चरण की प्राप्ति होयचुकी ता पीछे स्वर्ग की नदी जो गङ्गाहै तामें यज्ञकी समाप्ति को स्नान करत भये ८ यज्ञधी समाप्तिकी जो उत्सव है तामें मुदङ्ग शङ्ख डोलक खंभरी नगारे नरसिंहा ये चित्रविचित्र वाजे वाजतभये ९ नाचनगरी हैं ते नाचत भई आनन्द जिनके भयो ऐसे गवैयान के मुँह के झुंड गावतभये तिनके वीणा वेणु हथेरी चजैं हैं तिनको शब्द स्वर्गपर्यन्त जातभयो १० चित्रविचित्र ज्वजा पताका जिनके ऊपर ढंकी ऐसे वड़े शायी और घोड़ान वै बैठिके सुवर्ण की मालान कूं पहिरिके प्यादेन कूं सद्र लौके राजा हैं ते निकसत भये ११ राजा युधिष्ठिर हैं आगे जिनके ऐसे जे सृजय काम्योज कुछ केरुय कोसज इन देशन के राजा हैं ते सेनान सूं पृथ्वी को

कंपावत जातभये १२ सभाके बैठनचारे और ऋत्विज तथा ब्राह्मण हैं ते चड़ी वेदकी ध्वनि करत जातभये और देवता ऋषि पितृ गन्धर्व ये पुष्पनकी वर्षा करिकै स्तुति करतभये १३ चन्दनमाळा गहने वस्त्र इनमूं श्रृंगार जिनने भरयो तेसे ले स्त्री पुरुष हैं ते नानाप्रकार के रसन कूं लेपन और छिरिजाय करतभये १४ तेल और मासन सुगन्ध के जल हन्दी केसर इत्यादिकनकूं स्त्री पुरुष नृ ते लेपन करत और छिरिजाय परस्पर विहार करतभये १५ या उत्सवके देखिये के निमित्त जैसे जैसे उत्तम विमाननमें बैठिकै देवागना निक्रमे हैं या प्रकार प्यादे जिनकी रक्षा करें ऐसी राजा युधिष्ठिर की रानी रथन में पालनीन में बैठिकै निकमत भई लाज भरी हंसनिमूं शोभायमान है मुन जिनके ममिया श्वशुरन के लरिका और सत्ता जिनकूं छिरिकै ऐसी राजा युधिष्ठिर की रानी सुन्दर लगत भई १६ भीजे हैं वस्त्र जिनके याही ते प्रकट हैं अंग कुच जवा जिनके और उत्कण्ठा मूं केश जिनके खुलि रहे तिनमूं फूल भरे ऐसी अ रानी हैं ते देवस्नकूं और सखानकूं भिजोवति भई सुन्दर विहारन मूं मलिन हैं बुद्धि जिनकी ऐसे कामी पुरुषनके पनकूं चलायमान करतभई १७ सुवर्ण की माला पहिरे सुन्दर वोड़ा जुने ऐसे जो रथहै तामें बैठे राजा युधिष्ठिर

सम्भूषणाम्बरैः ॥ विलिम्पन्त्योऽग्निपिञ्चन्योविजहृविचैरसैः १४ तैलगोसगन्धोदहरिद्रासान्द्रकुङ्कुमैः ॥ पुर्मिर्लिप्ताभ्रलिम्पन्त्योविजहृवर्गयोपिनः १५ गुमानुभिर्निर्गमस्तुपलब्धुमेतदेवोयथादिविविमानवैर्नृदेव्यः ॥ तामातुलेयसविभिः परिपिच्यमानाः सश्रीडहासविकसद्दनाविरैजुः १६ तादेवसानुत सखीन्सिपिचुर्दृतीभिः क्लिन्नाम्बगविघृतगात्रकुचोरुमध्याः ॥ औत्सुक्यमुक्ककशब्दव्यवमानमालयाः क्षोभं धूर्मलधियां लचिरैर्विहारैः १७ समस्राह्यमारुढः सदश्वं रुक्ममालिनम् ॥ व्यरोचनस्वपत्नीभिः क्रियाभिः कतुराडिच १८ पत्नीसंयादावभृथैश्चरित्वातेतमृत्विजः ॥ आचान्तं स्नापयाश्चकुर्गङ्गायांसहकृष्णया १९ देवद्वन्द्वभयोनेदुर्नन्दुभिभिः समम् ॥ मुमुक्षुः पुष्पवर्षाणि देवर्षिपितृमानवाः २० सस्तुस्नत्रततः सन्वेवर्णाश्रमयुनानराः ॥ महापातक्यपि यतः सद्यो मुच्येत किल्बिषात् २१ अथ राजाऽहतेक्षोभे परिधाय समलंकृतः ॥ ऋत्विक्मदस्य निप्रादीनानर्चाभिरणाम्यैः रश्मन्नुज्ञाति नृपाचमित्रसुहृदोऽन्यांश्च सर्वशः ॥ अभीक्ष्णं पुत्रयामास नारायणपरो नृपः २३ सर्वेजनाः सुरचोमणिः कुण्डलसगुष्णीपमश्च रुडकुलमहाधर्महाराः ॥ नार्यश्च कुण्डल युगालक

हैं सो जैसे क्रियानसहित यज्ञ सुन्दर लगे है या प्रकार स्त्रीन सहित सुन्दर लगतभये १८ ऋत्विज हैं ते पत्नीसंयात् और आयुष्मन् नाम करिकै जे दो यज्ञ हैं तिनकूं करिके गंगामें द्रौणदी सहित आचमन जिनने क्रियो ऐसे राजा युधिष्ठिरकूं स्नान करावत भये १९ देवतानके नगारे तथा मनुष्यनके नगारे उगतभये देवता ऋषि पितृ मनुष्य हैं ते फूलनकी वर्षा करतभये २० वर्षाशुक्त जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये चारोवर्ण और ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी ये चार आश्रम ता गंगामें सन स्नान करतभये उड़ो पापी पुरुष गामें स्नान करिकै शीघ्र पाप तें छूटियात है २१ स्नान करे पीछे राजा युधिष्ठिर नयीन रेशमी घोड़ी उपरना पहिरिकै भलेप्रकार शोभायमान होयके ऋत्विज और सभाके बैठनचारे हैं तिन और ब्राह्मणादिक हैं तिन गहने और वस्त्रन मूं पूजन करतभये २२ नारायणको है आश्रय जिनने ऐसे राजा युधिष्ठिर हैं सो बन्धु जाति के राजा मित्र सुहृद और सम्पूर्ण हैं तिन सबको वारंवार पूजन करतभये २३ देवतान की तुल्य है

क्रान्ति जिनकी और पशियानके गडाऊ कुण्डल भाला पगड़ी जामा पटुका चड़े मोलके द्वार इनके पहिरे जे पुरुष हैं ते और दोनों कुण्डल अलकनके समूह जिन करि है शोभायमान हैं मुत्त जिनके ऐसी स्त्री हैं ते सुवर्ण की करघनी पहिरि हैं सब सुन्दर लगत भई २४ हे राजन् परीक्षित् ! स्नान करे पीछे राजा युधिष्ठिरने पूजन जिनको कखो चड़े हैं शील सभाव जिनके ऐसे श्रुतिवज और सभा के बैठन गये तथा वेद के पढ़न वारे हैं ते और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र हैं ते और राजा आर्य हैं ते २५ और देवता ऋषि पितृ हैं ते और समस्त प्राणी तथा दहलु आन सहिन लोकपाल हैं ते राजा युधिष्ठिर तें पूजन करायकें आश्रा मागिकें अपने अपने घरनकें जात भये २६ हरि धगवनकें भक्तन में राजर्षि जो राजा युधिष्ठिर हैं तिनके राजसूय यज्ञ की जो बड़ी शोभा है ताकी प्रशंसा करत करत नहीं तुम होत भये जैसे मनुष्य अपन पीयत पीयत नहीं तुम होय २७ सुहृद् सम्बन्धी नन्दु और श्रीकृष्णचन्द्र इनके मिलिखिये में कायर है मन जाको ऐसी राजा युधिष्ठिर प्रेम करि है राखत भयो २८ हे राजन् परीक्षित् ! तिन राजा युधिष्ठिरको प्रिय करिवे कूं माम्ब है आदिमें जिनके ऐसे पुत्र हैं तिन और यादवनमें शूरीर हैं तिन द्वारकामें भिजायकें आप इन्द्रप्रस्थ में रहत भये २९

बृन्दजुष्टवक्रश्रियः कनकमेखलया विरेजुः २४ अर्थात् विजोगहाशीलाः सदस्या ब्रह्मवादिनः ॥ ब्रह्मक्षत्रियविदूषद्वारा जानोये समागताः २५ देवर्षिपितृभूता नि लोकपालाः सहानुगाः ॥ पूजितास्नमनुज्ञाण स्वधामानिययुर्नृप २६ हरिदासस्य राजर्षे राजसूयमहोदयम् ॥ नैवात्प्यनप्रशंसन्तः पितृवर्मर्योऽमृतं यथा २७ ततो युधिष्ठिर राजा सुहृत्समन्धवान् ॥ प्रेम्णानिमासयामा मरुणं च त्यागकातरः २८ भगवानपितृब्राह्मणवासीत्तत्प्रियंकरः ॥ प्रस्थाप्य यद्वीरांश्च साम्नादींश्च कुशस्थलीम् २९ इत्थं राजा धर्मसुतो गनोऽथ गहाणवम् ॥ सुदुस्तरं समुत्तीर्य कृष्णेनऽऽसीदन्तः पुरेतस्य वीक्ष्य दुर्योधनः श्रयम् ॥ अतः पदाजसूयस्य महित्वं चाच्युतात्मनः ३० यस्मिन्नेन्द्रादिति जेन्द्रसुरेन्द्रलक्ष्मीनानां विभान्ति किल विश्वसृजो पञ्चलसाः ॥ ताभिः पतीन्द्रुप दगजसुनोपतस्थे यस्या विप्लवहृदयः कुराडप्यत् ३१ यस्मिन्सन् दामयुतेर्महिषीसहस्रं श्रोणी भरेण शनकैः कणदङ्घ्रि शोभम् ॥ मध्ये सुचारु कुचकुङ्कुमशोणहारं श्रीमन्मुखं च लकुण्डलकुन्तलादयम् ३२ सभायां मयक्लृप्तायाः कापि धर्मसुतोऽधिराट् ॥ दृत्तो नृजैर्वेन्दुभिश्च कृष्णेनऽपि स्वचक्षुषा ३४ आसीनः

धर्म के पुत्र जो राजा युधिष्ठिर हैं सो अतिशय करिकें तखो न नाय दे सो जो मनोरथरूपी चढ़े समुद्र है ताय श्रीकृष्णचन्द्र की सहायता तें तारिकें सब खेद दुरि होत भयो ३० एक समय पुरके मध्यमें राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ की शोभा देखिकें और श्रीकृष्णचन्द्रमें है मन जाको ऐसे राजा युधिष्ठिरकी महत्ता देखि है और राजा युधिष्ठिर के अन्तःपुरमें मय करीगर ने बनाई जे अनेक प्रकार की राजानकी असुरन की देवतानकी विभूति हैं तिन सहित कुण्डल राजा की पुत्री द्रौपदी है सो अपने पतिको सेवन करत भई और जा द्रौपदी में है आसक्त मन जाको ऐसी कौरवनको राजा दुर्योधन हैं सो ताकें पावन भयो ३१ । ३२ राजा युधिष्ठिर के अन्तःपुरमें ता समय मधुपति श्रीकृष्णचन्द्र की रागीन के समूहको वर्णन करे हैं कटिके बोझें चरण में हैं लीले वन जे नूपुर तिनमें जो भायमान हैं और मध्यमें अत्यन्त सुन्दर कुचनमें जो केसर ताम्रं अरुण जिनके हार हैं और चलायमान कुण्डल और केशन करिकें युक्त शोभायमान जिन

के दुग ऐसी रानीन के समूह शोभा कूँ प्राप्त होतभये ३३ मय दैत्यकी निर्माण करी जो सभा है तामें क्राहू समय अपने आज्ञाकारी भय्या वधुन सहित और हित अहित के जाननधारे जे श्री कृष्णचन्द्र हैं तिन सहित धर्म पुत्र चक्रार्ची राजा युधिष्ठिर हैं ते ३४ साक्षात् सिंहासन पै जैसे इन्द्र विराजमान होय ऐसे सुवर्ण के सिंहासन पै विराजमान होय के राज्यकी शोभा जिनकूं सेन करै और वन्द्यजन जिनकी स्तुति करै ऐसे शोभायमान होतभये ३५ दे राजन् परीक्षित ! तामें मय दैत्यकी वनाई सभा में शत्रुकूं सूते में जल दीलै और जल में सूजो दीलै ऐसी मायारचित जो सभा है तामें मय दैत्यकी मायामू मोहित गणन कूं डाढतो अभिमानी दुर्योधन आवत भयो ३६ मय दैत्यकी वनाई सभा में शत्रुकूं सूते में जल दीलै और जल में सूजो दीलै ऐसी मायारचित जो सभा है तामें मय दैत्यकी मायामू मोहित होय के दुर्योधन अथ सूँ सूँ जल मानिके जापा उठावत भयो और सूखो जानि जल में गिरतभयो ३७ हे राजन् परीक्षित ! दुर्योधन कूँ देखिके भीमसेन हँसत भयो स्त्री जे हैं ते हँसत भई और राजा युधिष्ठिर ने मनेकरे तथापि श्रीकृष्णचन्द्र ने सनकारदिये तासूं और भी सन राजा हँसतभये ३८ हास्य देखिके भई है लाज जाकूं नीचे कां है मुख जाकूं ऐसी दुर्योधन क्रोध करिके सभामें ते

काञ्चनेसाक्षादासनेमघवानि ॥ पारमेष्ठ्यश्रियाजुष्टः स्तूयमानश्चवन्दिभिः ३५ तत्रदुर्योधनोमानि परीतो भ्रातृभिर्दुप ॥ किराटमालीन्यविशदमिह स्तःक्षिपचरुपा ३६ स्थलेऽभ्यशृङ्गाद्वस्त्रान्तं जलंगनास्थलेऽपतत् ॥ जलेचश्चलवद्भ्रान्त्या मयमायाविमोहितः ३७ जहासभीमस्तं दृष्ट्वा स्त्रियोन्तपतयोऽपरे ॥ निवार्यमाणोऽप्यज्ञ राज्ञा कृष्णानुमोदिताः ३८ सर्वाडितोऽवाग्बदनोरुपाज्वलन् निष्कम्यतूष्णीमययोगजाह्वयम् ॥ हाहेति शब्दः सुमहानभूतसताम जातशत्रुर्विगनाइवाभवत् ॥ वभूवतूष्णीमगवान्भुयोभं समुज्जिहवीर्ध्रमतिस्मयद्दृशा ३९ एतत्तेऽभिहितं राजन् यत्पृष्टोऽहमिह त्वया ॥ सुयोधनस्य दौ रारम्भं राजसूयेमहाकनौ ४० ॥ इति श्रीमद्भगवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तराद्धे दुर्योधनानामपञ्चमसर्गोऽध्यायः ७५ ॥

श्रीशुक्र उवाच ॥ अथान्यदपि कृष्णस्य शृणु कर्मभूतं ॥ क्रीडानशरीरस्य यथासौ भवति हतः १ शिशुमालसखः शाल्मोक्षो किमश्रुदह आगतः ॥

निहसि कै चुगचुगतो हस्तिनापुर कूं जातभयो साधुन के बड़ो हाहाकार शब्द होतभयो और अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर उदास होतभयो और जिन दृष्टि सूँ सूँ में जल और जल में सूतो यह भ्रमभयो पृथ्वी को वोक्त उतारयो चाहै ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो भीमादिकन को हास्य और दुर्योधन को अपमान करिके चुप होतभये यही भारत को बीज है ३९ हे राजन् परीक्षित ! राजसूय जो बड़ो यज्ञ है तामें दुर्योधन कूँ कुन कैसे भयो यह तुमने प्रश्न क्यो ताको उत्तर तुम्हारे सम्मुख वर्णन करो ४० इति श्रीमन्महाभगवतार्थकृपिण्यादशमस्कन्धे उत्तराद्धे दुर्योधनानामपञ्चमसर्गोऽध्यायः ७५ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

( तत पदसप्तमं तिनमेष्टिगणशाल्मवद्वापुने ॥ युधामन्युप्रहारेण रणान्धश्चुम्भननिर्गमः १ सम्पाद्य र्मभराजस्य राजसूयमहोदयम् ॥ निहत्यसौ भराजादीनयोपरादच्युतः २ छिद्रत्तरने अश्रयमं यादव और शाल्व के भारी युद्धमें छुपान् की गदा की चोट सों युद्ध सें मरुन की को निकलनो भयो है ? कृष्णजी युधिष्ठिर की राजसूय के बड़े उदय को सम्पादन कर सो भराजादिकों को नाश कर



तिस पीछे शान्त होजातेभये २) अब श्रीशुभदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित् ! या के पीछे क्रीड़ाकरिकै मनुष्यशरीर धारण कियो ऐरो श्रीकृष्णचन्द्र के औरहू जो अद्भुत कर्म है जैसे सौभ विमान वो पति शाल्व माखो ताप श्रवण करो १ शिशुपाल को मित्र शाल्व रुक्मिणी के विवाह में आयो तब संग्राम में यादवन ने जीति लियो ताही प्रकार जरासन्धादिक राजा हैं ते जीति लिये २ सब राजान के श्रवण करत राजा शाल्व प्रतिज्ञा करतभयो कि समस्त पृथ्वीकूं यादवकुल रहित करुगो अब तुम सब भोरे पराक्रम कूं देखो ३ हे राजन् मूढ़ जो शाल्व है सो प्रतिज्ञा करिकै देवप्रभु पशुपति जो शिवजी हैं तिनको नित्य नित्य धूलिकी मुट्ठी फाकिकै आराधन करत भयो ४ शीघ्र तुष्ट होयें ऐसे भी शिवजी हैं परञ्च श्रीकृष्णको देखी जो शाल्व है ताहूँ वरदेवो निष्फल मानिकै शीघ्र प्रकट न भये किन्तु शरण आयो जो शाल्व है तासूं एक वर्ष के पश्चात् यह कहत भये कि तू वर मांग ५ ता समय देवता असुर मनुष्य गन्धर्व सत्त्व राजस इनसू भेदन न होय और जरा कूं इच्छा होय तदा पहुँचावै यादवन कूं भय को देनचरो ऐसो विमानदेव यह वर मांगत भयो ६ तैसोही होयगो ऐसे प्रतिज्ञा करिकै शिवजी ने आज्ञा जाहूँ दीनी ऐसो

यदुगिर्निजितःसङ्ख्ये जरासन्धादयस्तथा २ शाल्वःप्रतिज्ञामकरोच्च्युवतंसर्वभूजाम् ॥ अयादवीक्ष्मांकरिष्ये पौरुषंममपश्यत ३ इतिमूढःप्रतिज्ञाय देवंपशुपतिंप्रभुम् ॥ आराधयामासतृप पांसुमुष्टिसकृदग्रसत् ४ संवत्सरान्तेभगवानाशुतोपउमापतिः ॥ वरेणच्छन्दयामास शाल्वंशरणयागतञ्च ५ देना सुरमनुष्याणां गन्धर्वैर्गगरक्षसाम् ॥ अभेद्यंकाप्रगंवेत्रे सयानंदृष्णिभीपणम् ६ तथेतिगिरिशादिष्टोभयःपरपुञ्जयः ॥ पुरंनिर्भग्यशाल्वाय प्रादात्सौभग यस्मयम् ७ सलब्ध्वाकामंगयानं तमोधामदुरामदम् ॥ यथोद्धास्वतीशाल्वोवैरंबृष्णिक्कृन्तंस्मान् ८ निरुध्यसेनयाशाल्वो महत्याभारतर्पभ ॥ पुरीत्रमज्जोप वनान्युद्यानानिचसर्वशः ९ सगोपुराणिद्वाराणि प्रासादादालतोलिकाः ॥ विहारान्सविमानाश्रयान्निपेतुःशस्त्रबृहयः १० शिलादुमाराशानयःसर्पा आसारार्क्षराः ॥ प्रचण्डश्चक्रवातोऽभूजसाच्छादितादिशः ११ इत्यर्धमानासौभेन कृष्णस्यनगरीभृशम् ॥ नाश्रपद्यतशंराजंस्त्रिपुरेणयथामही १२ प्रद्युम्नोभगवान्दीक्ष्यवाध्यमानानिजाःपजाः ॥ माभेष्टस्यभ्यधाद्वीरोथाखूढोमहायशः १३ सात्यकिश्चारुदेष्णश्च साम्बोऽद्भुरःसहातुजः ॥ हादिवयो

जो मयदैत्य है सो वैरीन के पुरकूं जीतनचरो सौभ जाको नाम लोहेको वनायो जो विमानहै ताय शाल्व कूं देत भयो ७ मन चाहै तहां चलयो जाय अन्धकार जागें छाव रहो कोई जाहूँ पाइ न सकै ऐसो जो विमान है ताय पाइ नै कृष्णेने करयो जो वैरहै ताको स्मरण करिकै द्वारकाको जात भयो ८ हे राजन् परीक्षित् ! शाल्वहै सो वही सेना करिकै द्वारकापुरी कूचरिकै सम्पूर्ण जे फूलन के वाग उद्यान हैं तिनैं तोरत भयो ९ और पुर के दरवाजे हैं तिनैं और महल अट्टा अट्टारी भीतिस्थान है तिन सबकूं तोरत भयो और विमान में तें शस्त्रकी वर्षा होतिभई १० और शिला वृक्ष विजुली हैं ते तथा सर्प और जलकी घारा धूरि ये गिरतभये वड़ीपवन चली धूरिस् सगुणीदिशा आच्छादित होय गई ११ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार सौभ विमानसू पीड़ित जो श्रीकृष्णचन्द्र की पुरी द्वारका है सो जैसे विपुलदैत्य करिकै पृथ्वी कूं सुख प्राप्त न भयो ऐसे सुखकूं न पावति भई १२ वड़ो है यश विनको ऐसे महारथी जो भगवान् प्रमुन्न

हैं सो अपनी प्रजाकु दुःखित देखिके गति थयकरो या प्रकार कहिके समुल आगत भये १३ और सात्यकि चारुदेव सांभ और भय्या समेत अक्षर तथा होदिकय भानुविन्द गद शुभ सं-  
रण और बढ़े हैं धनुष जिनके ऐसे जे रथन के युयपन के यथन के पालन करनवारे हैं ते कवच पहिरिके रक्षित होइकै रथ हाथी घोड़ा प्यादेन कूं सफलकै निकसत भये १४ । १५ ताके पीछे  
असुरको जैसे देवतान के संग युद्ध भयो हो तैसे रोमाश्च जामें ठाढ़ होइ आवें ऐसो भयानक युद्ध शाल्व की ओर केन को यादवन के संग होत भयो १६ जैसे राजिके अन्धकार कूं सूर्य्य दूरि  
करि देइहैं ऐसे रुक्मिणी के पुत्र जो मधुन्नजी हैं सो सौध विमान के पति शाल्व की मायानकूं दिव्य असुरमंजुषा भर में नाश करत भये १७ सोने के पुंख लोहेकी भालि छोटी २ गाठि जिन  
में ऐसे पचीस बाणन करिके शाल्व की सेनान को पालन कानवारो है ताग वेधत भये १८ मधुन्नजी सौ बाण शाल्वके और एक एक बाण प्यादेन के तथा दश दश बाण सारथीन के और तीन  
तीन बाण मोड़ा हाथीन के मारत भये १९ महात्मा मधुन्न को बढ़ो अहुत पराक्रम देखिके अपनी पराई सेना में जे सग योद्धा हैं ते मधुन्नजी की मंशला करत भये २० मयदैत्य को निर्माण

भानुविन्दश्च गदश्चंशुकसारणी १४ अपरेचमहेष्वासारथयूथयथाः ॥ निर्दयुर्दशितागुसारथेभाश्चपदातिभिः १५ ततः प्रवृत्ते युद्धं शाल्वानां मंडुभिः स  
ह ॥ यथासुराणां विबुधैस्तुमुलं रोगहर्षणम् १६ ताश्च सौ भपने माया दिव्यास्त्रैरुक्मिणीमुतः ॥ क्षणेन नाशायामास नैशं तमहवोष्णगुः १७ विव्याध पञ्च  
विशत्या स्वर्णपुष्करयोमुखैः ॥ शाल्वस्य ध्वजिनीपालं शूरैः सन्नत पर्वभिः १८ शतेना ताडयच्छाल्वमेकैकनास्यसैनिकान् ॥ दशभिर्दशभिर्नैव तृन्वाहना  
निन्त्रिभिस्त्रिभिः १९ तदद्भुतं गदहर्षम् प्रद्युम्नस्य महारमनः ॥ दृष्ट्वा तं पूजयामासुः सर्वे स्वपरभैनिकाः २० बहु रूपैरुत्तमैर्दृश्यतेन च दृश्यते ॥ मायामयं  
यकृतन्दुर्विभाव्यं परैर्भूत २१ क्वचिद्भूमौ क्वचिद्वयोमि गिरिमूर्द्धि जले क्वचित् ॥ अलातचक्रवदभ्राम्भ्यत्सौ भंतदुष्प्रस्थितम् २२ यत्र यत्रोपलक्ष्येत ससौ  
भः सहसैनिकः ॥ शाल्वस्वतस्ततोऽमुश्चच्छान्नात्मा तयूथपाः २३ शूरैरग्न्यर्कसंस्पर्शो राशी विपदुरासदैः ॥ पीडयमान पुरानीकः शाल्वोऽमुश्चत्परि  
तैः २४ शाल्वानीकपशस्त्रौर्ध्वैर्घृणिणवीराभृशार्दिताः ॥ न तत्पुञ्जराणं स्वं लोकादयि जिगीषवः २५ शाल्वामात्योद्युमान्नाम प्रद्युम्नं प्राक्प्रपीडितः ॥ आ  
करयो मायामय जो विमान है ताके कभजं बहुत रंग होय जाय हैं कभजं एक रंग होय जाय हैं कभजं नहीं दिखाई देई है या प्रकार शत्रुन के विचार में न आगत भयो २१  
कभजं वह विमान पृथ्वी में आय जाय है कभजं आकाश में जाय है कभजं पर्वत के ऊपर जाय है कभजं जल में जाय है ऐसे सुलगती लकड़ी की तुल्य दुरन्तस्थित जो विमान है सो या प्रकार  
चलायमान होत भयो २२ विमानसहित सेनासहित जहा जहा शाल्व दिखाई देय है तहां तहां यादवन में मुख्य हैं ते बाणन कूं छोड़त भये २३ अग्नि सूर्य्यकी तुल्य मरम है सूर्य्य जिनको विप  
की तुल्य सहारे न जायें ऐसे वैरीन ने चलाये बाण हैं तिनमूं पीडित विमान और सेना जाकी ऐसो शाल्व मोहकूं पात भयो २४ शाल्व की सेना के शत्रुन के समूहन त अत्यन्त पीडित और  
यह लोक परलोक के जीतिवे की इच्छा जिन कूं लुगिरही ऐसे जे यादवन में शूरवीर हैं ते अपनी अपनी युद्धभूमिकूं नहीं त्यागन भये २५ मधुन्न ने पहिले गदा जो पारी तामूं पीडित भयो ऐसो

जो शाल्व को मन्त्री बली नाम करिकै युमान है सो लोहे की बड़ी गदा छाती में मारिकै पुकारतयो २६ धर्म को जाननवारी जो श्रीकृष्णचन्द्र को डारुक्त रथवान् ताको पुत्र जो मधुञ्जी को रथवान् है सो गदा करिकै दूरी है छाती जिनकी ऐसे वैरीन के दण्ड को देनवारे जो मधुञ्जै तिन रण में तें लेजात भयो २७ दो बड़ी में भयो है चेत जिनकूं ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र के पुत्र मधुञ्जै सो रथवान् तें बोलत भये अहो रथवान् ! तूं रण में तें यो कू भजायकै ले आयो यह बुरो कर्म क्रियो २८ व्याकुल है चित्त जाको ऐसो रथवान् जो तू है ताने कलङ्क लगायो ऐसो मैं हूँ ता विना यादवन के कुल में जाने जन्मलियो वह रण में तें भाज्यो नहीं सुन्यो गयो है अब मोहीं कूं भजाय लायो २९ धर्मरूप जो रण है तामें तें भाजिकै आयो कुशल जातें पूँछी ऐसो जो मैं हूँ सो पिता श्रीकृष्ण बलदेव के पास जायकै कहा अपनी कुशल कहूँ ३० भयान की खी जे भाभी हैं ते हे वीर ! युद्ध में तें शत्रुन के सम्मुख तें नपुसक होयकै कैसे भाजि आये हमसू तो कहो ऐसे हैसिकै मोसू कहँगी ३१ ऐसे श्रमण करिकै रथवान् बोल्यो हे चिरञ्जीव ! हे समर्थ ! धर्मको ज्ञाता जो मैं हूँ सो तुमकूं रण में तें निहासि लायो धर्म मेंही कलौ है कि रथ के बैठनवारे कूं कष्ट साधगदयामौ न्या व्याहत्यन्यनदद्वली २६ मधुमन्गदयाशीर्णवस्त्रस्थलमरिन्दमम् ॥ अपोवाहरणात्सूतो धर्मविहारुकात्मजः २७ लब्धसंज्ञो मुहूर्तेन कर्षिणः साराथिमववीत् ॥ अहो असाध्विदसूतयद्रणान्मेऽपसर्पणम् २८ नयदूनां कुले जातः श्रूयते रणविज्युतः ॥ विनामल्लीविनिचेन सूतेन प्रासकिल्विपात् २९ किञ्चिदक्ष्येऽभिसङ्गम्यपितरो रामके शवौ ॥ युद्धात्सम्यगपक्कान्तः पृष्टस्तत्राऽऽत्मनः क्षमस्व ३० व्यक्ते मे कथयिष्यन्ति हसन्त्यो आत्तु जामय ॥ क्लेशं कथं कथं वीर तवान्यैः कथप्रतां मुधे ३१ साराथिरुवाच ॥ धर्मविजानताऽऽयुष्मन्कृतमेतन्मया विभो ॥ मृतः कृच्छ्रगतं रक्षेदथिनं साराथिथी ३२ एताद्विदित्वा तु भनान्मयाऽपो वाहितोरणात् ॥ उपस्पृष्टः परेणेति मूर्च्छितो गदया हतः ३३ इति श्रीगद्गागवत महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तराखण्डे पट्टमसर्गोऽध्यायः ७६ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ स उपस्पृष्टः स खिलं दंशितो धृतकाम्बुकः ॥ नयमांछु मृतः पार्श्वे वीरस्य त्याहाराथिम् १ विधमन्तं स्वमै न्यानि द्युमन्तरुकिमणी सुतः ॥

प्रतिहतप्रत्यविध्यन्नारौ रथभिः स्वयम् २ चतुर्भिश्च तुरोवाहान् सूते मे केन चाहनत् ॥ द्वाभ्यां धनुश्च शेरणान्येन वै शिरः ३ गदसात्यक्रिसाश्चाद्याजघ्नः आयकै उपस्थितहोय तौ साराथी अर्थात् रथवान् रत्नाकरै और साराथी के ऊपर आयके मृष्टहोय तौ बैठनवारी रत्नाकरै ३२ शत्रुने गदा जो मारी तासूं तुमकूं पीड़ा गई और मूर्च्छा आई गई सूं धर्म जानिकै तुमकूं रण में तें निहासि लायो ३३ इति श्रीमद्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे उत्तराखण्डे पट्टमसर्गोऽध्यायः ७६ ॥ \* ॥ ३४ ॥ ॥

( सप्तपुरुषमहात्म्येनानामायाविचक्षणः ॥ कृष्णेनागत्य शाल्वस्तु हतः सौभच्चतुर्गुणितम् १ सतहत्तरवै आध्याय में कृष्णजी ने आकर अनेक प्रकार की मायाओं में निपुण शाल्वको मारा और विमान को चूर्ण कर डाला ? ) अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! मधुमन्जी हाथ पात्र धोइकै कवचकूं पहिरिकै धनुषकूं हाथ में लैके वीर जो युमान है ताके पास मोकूं लेवल यह रथवान् तें कहत भये १ रुक्मिणी के पुत्र मधुमन्जी अपनी सेना के योद्धानकूं मारै ऐसे जो युमान है ताथ घेरिकै आठ बाणनसूं मारत भये २ अब आठ बाणनकूं पृथक् पृथक् करेहैं चार बाणनसूं चारों

योद्धानकं और एक बाणभू रथवानकू मारतभये दो बाण करिके धनुष और ध्वजाकू काटत भये और एक बाणसू युमान को शिर काटत भये ३ गद सात्यकि साम्बद्ध आदिलै के जे यादव है ते विमान को पालन करनमारो जो शाल्व है ताकी सेना कूं मारत भये कटी है नारि जिनकी ऐसे सम्पूर्ण विमानके बैठनवारै हैं ते समुद्र में गिरत भये ४ या प्रकार यादवन को और शाल्व की और तेन को जो परस्पर युद्ध भयो ताकूं सुनिकै व्याकुलता होय आवै ऐसो भयानक युद्ध सत्ताईस दिन होतभयो ५ अब श्रीशुक्देवजी कहे हैं ऐ राजन् परीक्षित ! धर्मके पुत्र जो राजा युधिष्ठिर हैं तिनने बुलाये ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो इन्द्रप्रस्थमें गये राजसूययज्ञ होय चुक्यो और शिशुपाल मारि चुक्यो ६ ता पीछे कौरवमें जे दृष्ट हैं तिनमें आज्ञा मागिके मुनिनदू आज्ञा मागिके और पुत्रन समेत कुन्ती मूं आज्ञा मागिके मार्ग में कुत्तिसत शकुन देखत द्वारकापुरी में आवत भये ७ खोट शकुनकूं देखिकै कहत भये कि वड़े भयया बलदेवजी सहित मैं यहा यज्ञमें आयो हूं शिशु पाल की ओरके राजा निश्चय मेरी पुरी कूं मारंगे ८ अपने यादवन को कष्ट देखिकै बलदेवजीकू द्वारकापुरी की रक्षा करिने के निमित्त देखिकै विमान और शाल्व कूं देखिकै केशव भगवान्

सौ भपतेबैलम् ॥ पेतुः समुद्रेसौ भेयाः सर्वेसंखिन्नकन्धाः ४ एवंयदूनांशाल्वानां निधनतामिरेतरम् ॥ युद्धं त्रिणवरात्रंतदधूतमुलमुल्वणम् ५ इन्द्रप्रसंगतः कृष्ण आहूतो धर्ममूनुना ॥ राजसूयेऽथनिर्वृत्तेशिशुपाले च संस्थिते ६ कुरुवृद्धाननुज्ञाप्य मुनींश्च समुतां पृथाय ॥ निमित्तान्यतिघोराणि पश्यन् व्हा स्वतीययौ ७ आहवाहमिहायात आर्घ्यमिथाभि सङ्गतः ॥ राजन्माश्चैवपक्षीयानूनंहन्युः पुरीमम ८ वीक्ष्यतरुदनं स्वानां निरूप्य पुररक्षणम् ॥ सौमं च शाल्वराजं च दारुप्रं प्राहेकेशवः ९ रथं प्रापय मे गूत शाल्वस्यान्तिकमाशु वै ॥ सम्भ्रमस्तेन कर्त्तव्यो मायावीसौ भरोडयम् १० इत्युक्त्वा चोदयामास रथमास्थाय दारुकः ॥ विशन्तं ददृशुः सर्वे स्वेपरे चारुणानुजम् ११ शाल्वश्च कृष्णमालोक्य हतप्राय बलेश्वरः ॥ प्राहस्तृष्णमूताय शक्तिं भीमरवांसधु १२ तामापतन्ती नभसि महोल्का मिव रंहसा ॥ मासयन्ती दिशः शौरिः सायकैः शतधा च्छिन्नत् १३ तंच पाण्डशभिर्विद्धा वाणैः सौमं च वैभ्रमत् ॥ अविध्य च्छरा नन्दो हैः खंसूर्यद्वरशिभिः १४ शाल्वः शौरिरेतदोः सव्यं सशार्ङ्गशार्ङ्गवन्धनः ॥ विभेदन्यपतद्भस्ताच्छार्ङ्गपासी च द्रुतम् १५ हाहा करोमहाना

श्रीकृष्णचन्द्र रथवान् ते बोलत भये ६ हे रथवान् ! शीघ्र भरे रथकूं शाल्वके समीप प्राप्त कर या विमान को राजा जो शाल्व है सो बड़े भयानी है तू सम्भ्रम मत कर १० या प्रकार जातें कही ऐसे जो रथवान् है सो रथपै बैठिके हाकत भयो अपनी पराई सेना में हैं ते रथकी लज्जा में अरुण को छोड़ो भयया गरुड है ताव देखत भये ११ द्रुत की तुल्य सेना को राजा जो शाल्व है सो युद्ध में श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिकै उनके रथवान् के ऊपर भयानक है शब्द जायें ऐसी बरखी कूं फकत भयो १२ दिशान कूं पकाय करत वड़े तारेकी तुल्य आकाश में चली आवै ऐसी जो बरखी है ताको कृष्णजी बाणन करिके सौ खण्ड करत भये १३ शाल्वकूं सोलह बाणनदू वैधिकै आकाशमार्ग में भ्रमण करै जो विमान है ताव जैसे सूर्य तिरगुन करिके आकाश कूं वेग ऐसे वायन के समूह करिके नेम भये १४ शार्ङ्गमनुष है विषमान जिनके ऐसे जे शौरि श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी धनुषसहित जो बाणमुत्रा है ताव शाल्व वैधत भयो तन श्रीकृष्ण के हाथ तें धनुष गिरत

भयो यह वड़ो आश्चर्य होत भयो १५ हाथमें तें मनुष्य कूं गिरयो देखि कै प्राणीन के वड़ो हाहाकार शब्द होत भयो औ विमान को रंजा जो शाल्व है सो ऊंचे स्वरयूं गजि कै श्रीकृष्णचन्द्र तें यह कहत भयो १६ कि हे मूढ़ ! हमारो सखा भय्या जो शिशुपाल है ताकी स्त्री कूं जो तू देखत ही हरि लायो और सभा के बीच असावधान भरो सखा शिशुपाल तैं मारयो १७ तो कूं काहु ने जीत्यो नहीं है ऐसे अपनपे कूं माने जो तू है सो भरे सम्मुख ठाढ़ो रहैगो तो यहा बाढ़ैगो नहीं किन्तु तीक्ष्ण वाणनसू मृत्युकू पहुँचाय देउंगो १८ अब श्रीकृष्ण कहे हैं हे मूर्ख ! तू दृष्टा कहे है निकट ही मृत्यु है ताय नहीं देखे है शूरवीर हैं ते अपनो पुरुषार्थ दिलावैं हैं और जे बहुत बोलें हैं ते कछु पराक्रम नहीं करे है १९ या प्रकार कहि कै श्रीकृष्ण भगवान् है सो बड़े बेग की जो गदा है ताय क्रोध करि कै कण्ठ के नीचे के हाड़ में मारत भये तब शाल्व रुगिर को बपन करत कापत भयो २० गदा चले पीछे शाल्व छिपत भयो ताके दो घड़ी पीछे एक पुरुष आयके शिर छुँकाय सीद्धि नाना नतत्र पश्यताम् ॥ विनद्वयौ भरादुवैरिदमाह जनार्दनम् १६ यत्तव्यासूदनः सख्युर्भ्रातुर्भाग्यहि तेक्षनाम् ॥ प्रमत्तः ससभामध्ये त्रयाव्यापा दितः सत्वा १७ तत्राद्यानि शितैर्विषयैराजितमानिनम् ॥ नयाम्यपुनरावृत्तिं यदि तिष्ठेर्भमाग्रतः १८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वृथा त्वंकथसे मन्दनप श्यस्यन्ति रेऽन्तकम् ॥ पौरुषं दर्शयन्ति स्म शूरानवहु भाषिणः १९ इत्युक्त्वा भगवाञ्छाल्वं गदया भीमेव गया ॥ तताडजत्रौ संबन्धः सचक्रम्पेव मन्त्र मृक् २० गदायासं निवृत्तायां शाल्वस्तन्त्रधीयत ॥ ततो मुहूर्त्त आगत्य पुरुषः शिरसाऽच्युतम् ॥ देवक्या प्रहितोऽस्मीति नत्वा प्राहवचोरुदन् २१ कृष्णकृष्णमहाबाहो पिता ते पितृवत्सल ॥ बद्धाऽपनीतः शाल्वेन सौनिकेन यथापशुः २२ निशम्य विप्रिं कृष्णो मानुषीं प्रकृतिं गतः ॥ विमनस्को घृणी स्नेहाद्वभापे प्राकृतो यथा २३ कथं रामसम्भ्रान्तं जित्वाऽजयं सुरासुरैः ॥ शाल्वेनाल्पियसानीतः पिता मे बलवान्निधिः २४ इति बुवाणे गोविन्दे सौ भराट् प्रत्युपस्थितः ॥ वसुदेवमिवानीय कृष्णश्चेदमुवाच सः २५ एपते जनिता तो यदर्थमिह जीवसि ॥ वधिष्ये वीक्षनस्तेऽमुषीशश्चेत्पाहिवालि

श २६ एवं निर्भर्त्स्य मायावी खड्गेनानकदुन्दुभे ॥ उत्कृत्य शिर आदाय खस्थसौ भंसमाविशत् २७ ततो मुहूर्त्तं प्रकृता बुपश्रुतः स्वबोध आस्ते स्वजना श्रीकृष्णचन्द्र कूं नमस्कार करि कै रोदन करि कै देवकी ने भेज्यो हू यह वचन कहत भयो २१ हे कृष्ण ! हे महाबाहो अर्थात् वड़ी है भुजा जिनकी ! हे पिता हे हितके करन वारे ! जैसे कसाई पशु कूं बाधिके लेजाय ऐसे शाल्व तुम्हारे पिता कूं बाधिके लेगयो २२ ऐसो अप्रिय वचन श्रवण करि कै मनुष्य स्वभाव में प्राप्त भयो है मन जिनको ऐसे दयावान् श्रीकृष्णचन्द्र बेपन होय कै जैसे प्राकृत मनुष्य कहे ऐसे रहत भये २३ हरचराहट जिनके नहीं और देवता असुर जिन कूं जीति न सकैं ऐसे बलदेवजी कूं जीति कै तुच्छ शाल्व भरे पिता कूं कैसे लेगयो विधाता बलवान् है कदाचित् लेगयो होयगो २४ या प्रकार श्रीकृष्ण कहे हैं इतने में विमानको राजा शाल्व आयो और मायारूपी वसुदेव निर्माण करि कै लाय कै श्रीकृष्ण से बोलत भयो २५ यह तेरो उत्पन्न करन वारो पिता है जोके लिये तू यहा जीवे है तेरे देखत या कूं मारुंगो हे मूर्ख ! तेरी सागर्थ्य होय तो याकी रक्षा कर २६ मायायी जो शाल्व है सो या प्रकार डरपाय कै माया के वसुदेव जो वनाय

कै लायो हो तिनको तरवार से शिर काटिकै हाथ में लैके आकाश में विमान हो तामें जातभयो २७ स्वतःसिद्ध ज्ञान जिनको ऐसे भी श्रीकृष्णहैं परन्तु अपने जनन के सङ्ग दो घड़ी पर्यन्त मनुष्यन को स्वभाव जो शोक करिवो तामें ह्वत्त भये ताके पीछे वढ़ो है प्रभाव जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र पयदैत्य ने मरुटकरी शाल्व ने चलाई ऐसी आसुरीभाया जानत भये २८ ज्ञान जिनकुं भयो ऐसे अच्युत जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो वा सग्राम में दूत चनिकै जो आयो हो ताव देखत भये और ता वसुदेव के देखकुं भी नहीं देखत भये जैसे जागे पीछे स्वम की वस्तुकुं नहीं देखे हैं और विमान में बैठो आकाश में विचरै ऐसो जो बैरी शाल्व है ताव देखिकै मारिने को उग्रम करत भये २९ अत्र श्रीशुभदेवजी कहे हैं हे राजान मैं अष्टपि राजा परीक्षित ! पूर्वापर प्रसंग को विचार न करै ऐसे कोई ऋषि हैं ते या प्रभार कहे हैं जो अपने कयन तैं विरोध परै ताको स्मरण नहीं करै कथा विरोध परै ताको दृष्टान्त कहे हैं राजसूयज्ञमें वलदेवजी सहित श्री कृष्णचन्द्र नहीं गये हैं क्योंकि पहिले कहिआये हैं सङ्कर्षण सूं अज्ञा मांगिकै श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिर के यज्ञमें गये और यहाँ कथो वलदेवसहित मैं यज्ञ में आयो यह पूर्वापर सङ्गति को वि-

नपङ्गतः ॥ गद्धानुभावस्तदबुध्यदामुरीं मायांसशाल्वप्रसृतांमयोदिताम् २८ नतत्रद्वर्तनपितुःकलेवरं प्रबुद्धाजौसमपश्यदच्युतः ॥ स्वाभयथाचाम्बर चारिणंरिपुं सौभस्थमालोक्यनिहन्तुमुद्यतः २९ एवंवदन्तिराजर्षे ऋषयःकेचनान्विताः ॥ यत्स्ववाचोविरुद्धेत नूनंतेनस्मरन्त्युत ३० कशोकगोहोस्ने होवा भयंवायेऽन्नसम्भवाः ॥ क्वालिशिनविज्ञानज्ञानैश्वर्यंस्वखगिडनः ३१ यत्पादसेवोर्जितयाऽस्मविद्यया दिन्यन्त्यनाद्यात्मविपर्ययग्रहम् ॥ ल भन्तआत्मानमवन्तमैश्वरं कुतोनुमोहःपरमस्यसद्गतेः ३२ तंशस्त्रपूगैःप्रहरन्मोजसा शाल्वंशरैःशौरिमोघविक्रमः ॥ विद्धाऽच्छिन्नदर्मधनुःशिरमणिं सौभक्षशत्रोर्गदयारुरोजह ३३ तच्छृण्वहस्तेरितयाविचूर्णितं पपाततोयेगदयासहस्रया ॥ विमृज्यतद्भुतलमास्थितोगदामुद्यमशाल्वोऽच्युतमभ्य गादुद्धुतम् ३४ आधावनःसगदन्तस्यचाहुं भल्लेनक्षित्वाऽथथाङ्गमद्भुतम् ॥ वधायाशाल्वस्यलयार्कसन्निभं विभ्रद्भौसार्कद्वोदयाचक्षः ३५ जहास्ते रोध परैहै ताको स्मरण नहीं करै हैं शुभदेवजी कहे हैं राजा यह हमारो मत नहीं है और ऋषिन को मतहै ३० अत्र शुभदेवजी अपने मत कहे हैं अज्ञानसं होवै ऐसे जे शोक मोह स्नेह भय ये कदां और अवगट है विज्ञान ज्ञान ऐश्वर्य जिनको देवता जिनकी स्तुतिकरै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कहा ३१ जिनके चरण की सेवा करिकै पुष्ट भई ऐसी जो आत्मविद्या है ता करिकै मैं लख्यो हू दुःखीहूँ यहहै स्वरूप जाको ऐसे देखमें अहङ्कार है ताव दूरि करै हैं अपनेमें अनन्त ईश्वर के स्वरूप कू पावे हैं यातैं साधुन की गति जे परम श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकुं मोह कहा ते होय ३२ सफल है पराक्रम जिनको ऐमे शूरवंशोत्पन्न जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते वल करिकै शस्त्रनके समूहनतैं मारो ऐसो जो शाल्व है ताव वेष्टि तैं ऋषव और धनुष है ताव और शाल्व के शिर में जे मणि हैं तिनैं काटत भये और बैरी श हा वो जो विमान है ताव गदा करिकै तोरत भये ३३ श्रीकृष्णचन्द्र के हाथकी चलाई भई जो गदाहै तासूं हज्जारन दूरु होयतैं वह विमान चूर्णीभूत होयके जलमें गिरत भयो ता समय शाल्व विमानकुं त्यागिकै पृथ्वीपै ठाढ़ो होयतैं गदा हाथमें उठायेके श्रीकृष्ण के ऊपर दौरत भयो ३४ गदासहित दौरो चलो आवै जो शाल्व है ताको गदा





रोग है नाय दूरि मेरे तब सुखी होय ऐसे वे या प्रकार पठोर वाधिय भिक्षु श्रीकृष्ण के मोये में गदा मारिके सिंहकी तुल्य दन्तवक गर्जतभयो जैसे हाथी के अंकुश लगे ऐसे गदा लागति भई ७ सग्राम में गदा जिनके लगि तयापि श्रीकृष्णचन्द्र न डिगतभये परचात् श्रीकृष्णचन्द्र भी कौमोदकी जो बड़ी गदा है ताकूं दन्तवक की छाती में भारतभये ८ गदा करिके पिहीण भयो है दुस्य जाको ऐसो जो दन्तवक है सो मुखते रुधिर कूं वपन करत पाणनक त्यागिके बेश हाथ पाव फैलायके पृथ्वी में गिरतभयो ९ ता पीवे दन्तवक के शरीर ते अद्भुत सूक्ष्म ज्योति निकसिके सब पाणीन के देखत हे राजन् परीक्षित ! शिखाल के च भे जैसे श्रीकृष्णचन्द्रमें प्रवेश करति भई तैसेही प्रवेश करति भई १० पर्या दन्तवक ते शोक करिके व्याकुल ऐसो जो विदूरथ है सो तलवार डाला लैक श्रीकृष्ण के मारिवे के लिये नड़े बड़े शमासन कूं लेत आकतभयो ११ हे राजान के इन्द्र परीक्षित ! चलयो आवे जो विदूरथ है ताको मुकुट और कुण्डलसहित जो शिर है ताकूं छुरा की तुल्य है धार जानी ऐसे चक्र भूं श्रीकृष्णचन्द्र काटतभये १२ औरन पै सहारो न जाय ऐसो जो सीम विमान है ताय और शाल्य कूं तया गन्यान सहित जो दन्तवक है ताय मारि

डाडयन्मूर्ध्नि सिंहवद्वचनदच्चसः ७ गदयाऽभिहतोऽप्याजौ नचचालयदूदहः ॥ कृष्णोऽपितमहनृगुर्व्या कौमोदक्यास्ननान्तरे ८ गदानिभिन्नहृदयउद्ध मन्त्रविंमुखात् ॥ प्रसार्यथैकशवाह्वीन् धारयांन्यपतद्वचसुः ९ ततभूक्ष्मनंज्योतिः कृष्णगान्धिशदद्भुतम् ॥ पश्यतासुर्वभूतानां यथैवेद्वयधेनु १० विदूरथस्तुतदभ्राता भ्रातृशो रुपरिस्तुतः ॥ व्यागच्छदसिचर्मभा मुच्छसंस्तजिजवासाया ११ तस्यचापततः कृष्णश्चकेणक्षुनेमिना ॥ शिरोजहारराजेन्द्र सकिरीटमकुण्डलम् १२ एवंसौभज्जशाल्वज्ज दन्तवक्त्रंमहानुजम् ॥ हस्तदुर्विपहानन्यैरीडितः सुमानवैः १३ मुनिभिः सिद्धगन्धर्वैर्विद्याधरमहोरौः ॥ अपत्रोभिः पितृगणैर्यक्षैः किन्नरचारणैः १४ उपगीयमानविजयः कुसुमैरिगवर्षिणः ॥ वृनश्चदृष्टिप्रवरैर्विशालं कृत्वा पुंगीम् १५ एवंयोगेश्वरः कृष्णो भगवाञ्जगदीश्वरः ॥ ईपतेपशुदृष्टीनां निर्जितोजयतीतिसः १६ श्रुत्वायुद्धोद्यमं रामः कुर्वाणसाट्पण्डितैः ॥ तीर्थक्षिपेकव्याजेन गन्धस्यः प्रययौ किल १७ स्नात्वा प्रभासे सन्तर्प्य देवर्षिपितृमानवान् ॥ सरस्वतीं प्रतिस्तोतं ययौ ब्राह्मणसंघुनः १८ पृथूदकं विन्दुमरस्त्रिनकूणं सुदर्शनम् ॥ विशालेन्द्रमनीश्वरं च

जुने तत्र देवता और मनुष्य सर्व स्तुति करतभये १३ मुनीवर सिद्ध गन्धर्व विद्याधर और नड़े सर्प अस्त्रा पितृनके गण यत्त किन्नर चारण इन सत्तने गाई है जीत जिनकी और फूल परमाये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र यदावन कूं सङ्गलैके शोभायमान जो द्वाकापुरी है तामें जातभये १४ १५ या प्रकार योगके ईश्वर और जगत् के ईश्वर जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो नरासन्गलिङ्गन ने जीते एसे पशुन की तुल्य है दृष्टि जिनकी अज्ञानी पुरुषन कूं हारे जीते मतीत होई है १६ पाण्डव औरन कूं एक तुल्य मानें ऐसे जे पलटे गयो है सो उनके युद्धकों उपाग अवग कनिके तीर्थस्नान को भिय बरि कै बना करतभये ज्योकि यहा रहोगे तो जानी और न डोडोगे सोई वुरो मानेगे १७ प्रभास तीर्थ में स्नान करिके देवता ऋषि पितृ मनुष्यन वो तर्पण करिके व ह्मणन कूं समनैके सरस्वती के प्रपाद के सम्मुरा पलटे गयी जातभये १८ हे भक्तवत्सल राजा राजा परीक्षित ! पृथूदक विन्दुसर त्रिनकूण सुदर्शनी १ विशाल-वक्त्रतीर्थ चक्रते ये और पूर्वग-दिनी

सरस्वती और यमुना के जे तीर्थ तथा गद्दा के तीर्थ और जहाँ ऋषि यज्ञ करै या नैमिषारण्यमें वलदेवजी जातभये १९ । २० वड़े हैं यज्ञ जिनके ऐसे जे मुनि हैं ते वलदेवजी कू आया जानि के मशसा करिके उठिके प्रणाम करिके यथायोग्य पूजन करत भये २१ ब्राह्मणन सहित पूजा जिनकी करी और आसन कू अहीकार करिके वलदेवजी हैं सो वेदव्यासको शिष्य जो रोमहर्षण हैं ताय वैठो देखतभये २२ वलदेवजी कू देखिके उठ्यो नहीं और नहीं करी है प्रणाम अञ्जली जाने ब्राह्मणन तें ऊँचो वैठ्यो जो सूत है ताय मधुवंशोत्पन्न वलदेवजी देखिके क्रोध करतभये २३ मतिलोमज अर्थात् ब्राह्मणी माता और पिता क्षत्रिय ऐसो यद् सूत है सो इन ब्राह्मणन तें कैसे ऊँचो वैठ्यो है तैसेही धर्म के पालन करनवारे जे हम हैं तिनते ऊँचो वैठ्यो है ता कारण दुष्ट है बुद्धि जात्री ऐसो सूत मारिवे योग्य है २४ कदाचिद् कहो कि विना जाने ऊँचो वैठ्यो है सो नहीं भगवान् वेदव्यास को शिष्य है और महाभारत सहितजे पुराण तिनकू पढ़िके और केंप्रार्चिसरस्वतीम् १६ यमुनामनुयान्येव गङ्गामनुवभारत ॥ जगामनौमिपयत्र ऋपयःसत्रमासेन २० तमागतमभिप्रेत्य मुनयोदीर्घसन्निधिः ॥ अभि

वन्द्यथान्यायं प्रणम्योत्थाय चार्चयन् २१ सोऽर्चितः सपरीवारः कृतासनपरिग्रहः ॥ रोमहर्षणमासीनं महर्षेः शिष्यमैक्षत २२ अप्रत्युत्थायिनं सूतमकृत प्रह्वणञ्जलिम् ॥ अध्यासीनञ्च नान्निप्रिश्चुकोपो दीक्ष्यमाधवः २३ कस्मादसाविमाच विप्रानध्यास्ते प्रतिलोमजः ॥ धर्मपालांस्तथैवास्मान् वधमर्हति दुर्मतिः २४ ऋपेर्भगवतो भूत्वा शिष्योऽधीत्यब्रू निच ॥ सेतिहासपुराणानि धर्मशास्त्राणि सर्वशः २५ अदान्तस्याविनीतस्य वृथापण्डितमानिनः ॥ न गुणाय भवन्ति तस्म न दस्ये वाजितात्मनः २६ एतदर्थो हिलोके स्मिन्नवतारो मया कृतः ॥ वध्यामेधर्मध्वजिनस्ते हि पातकिनोऽधिकाः २७ एतावदुक्ता भगवान्निवृत्तोऽसद्वधादपि ॥ भावित्वात्कुशाग्रेण कस्थेनाहनत्प्रभुः २८ होतिवादिनः सर्वे मुनयः खिन्नमानसाः ॥ ऊचुः सङ्क्षर्पणं देवमधर्मस्ते कृतः प्रभो २९ अस्य ब्रह्मासनन्दतप्तमस्माभिर्गृह्णन्दन ॥ आयुश्चात्मा क्लमं तावद्वावत्सत्रं समाप्यते ३० अजानतैवाचरितस्त्वया ब्रह्मवधो यथा ॥ योगेश्वरस्य भवतो

नाम्ना योपिनियामकः ३१ यद्येतद्ब्रह्मादृत्यायाः पावनं लोकापावन ॥ चरिष्यति भवाल्लोकं संग्रहोऽनन्यचोदिनः ३२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ करिष्ये वध समस्त धर्मशास्त्रन कू पढ़िके २५ इन्द्रिय जाने रोंकी नहीं नम्रता जामें है नहीं वृथा अपने कू पण्डित माने ऐसे कू शास्त्र गुण के लिये नहीं होय है जैसे नहीं जीत्यो है मन जाने ऐसे नटनी विद्या वाकू गुण के लिये नहीं होय है २६ एतदर्थही या लोकमें अवतार भेने लियो है धर्मध्वजजी अर्थात् जाति में छोटे उत्तम स्वरूप कू धरे ऐसे जो अधिक पापी पुरुष हैं सो मारिवे के योग्य हैं २७ समर्थ जो भगवान् वलदेवजी हैं सो इतनो कहिके असत् जो सूतको वध है ताते निवृत्तभये हैं परन्तु होनहारही तासूं हाथमें जो कुशाही तासूं सूत कूं मारतभये २८ खेदयुक्त हैं मन जिन के ऐसे जे सख्यगूँ मुनि हैं ते हाहाकार गुब्द करिके हे समर्थ ! यह कहा क्यो ऐसे देव वलदेवजी तें कहतभये २९ हे यादवन कूं आनन्द के देनवारे ! हमने या सूत कूं ब्रह्मासन दियो है और या वत् पर्यन्त हमारो यज्ञ पूर्ण न होयगो तावत्पर्यन्त शरीर कू खेद न होय ऐसी अवस्था दीनी है ३० विना जाने जैसे ब्राह्मण को वधकरें ऐसे या सूतको वध तुमने करयो है योगके ईश्वर जो

तुमहो तिनकूं योग्य नहीहै वेद जे दै ते भी नाहीं नाहीं करैहै हे लोकनके पवित्र करनवारै ! और नहीहै कहनवारो जिनकूं ऐसे जो तुमहो सो या ब्रह्महत्याको प्रायश्चित्त करोगे तौ लोकनकूं शिक्षा हा-  
यगी और जो न करोगे तो आगे कोई-ब्राह्मणकूं पारिके हाथहू न धोवैगे ३१ । ३२ अत्र श्रीभगवान् वलदेवजी बोले लोकनके अनुग्रह करिये के निमित्त मैं सूतके वधको प्रायश्चित्त करूंगे जो  
प्रायश्चित्तन में मुख्य प्रहार होय सो मोकूं बतावो ३३ हे मुनीश्वरो ! या मूलकूं तुमने वड़ी अवस्था दीनीही और इन्द्रिय भली वनीरहै यह दहीनो होइ अत्र तुमहारे जो इच्छा होय सो सब कहो मैं  
अपनी योगमाया के चलतैं सिद्ध करि देखैगे ३४ अब सब ऋषीश्वर बोले हे राम ! जैसे तुमहारे अस्त्रको पराक्रम को मृत्युको और हमारो वचनये सब सत्यहोयै सो विचारकरौ ३५ तब श्रीभगवान्  
वलदेवजी बोले आपुही पुत्ररूप होयकै पिता उत्पन्न होयहै यह वेदकी आज्ञाहै याते या रोमहर्षणको पुत्र जो उदसत्राहै सो तुमहारे पुराण को वक्ता होय या उदसवा की वड़ी आयु होय और इ-  
न्द्रिय अच्छी वनीरहै वलवान् होय साक्षात् याकू न जियावो याते मृत्यु और शास्त्रकी सत्यताभई और पुत्ररूप करिकै आयु बल इन्द्रिय सिद्ध भई यातें तुमहारो वचन सिद्ध भयो ३६ हे मुनिनमें अष्टो !

निर्वर्त्तंशं लोकानुग्रहकाम्यया ॥ नियमः प्रथमेकलेपयावान्सतुविधीयताम् ३३ दीर्घमायुर्वैतस्य सत्त्वमिन्द्रियमेवच ॥ आशासितंयत्तद्भूत साधयेयोगमा  
यया ३४ ॥ ऋपयजुः ॥ अस्त्रस्यतववीर्यस्य मृत्योरस्माकमेवच ॥ यथाभवेद्वचःसत्यं तथारामविधीयताम् ३५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ आत्मावैपुत्र इ  
त्पन्नइतिवेदानुशासनम् ॥ तस्मादस्यभवेद्वक्त्रा आयुरिन्द्रियसत्त्ववान् ३६ किंवःकामोमुनिश्रेष्ठाब्रूताहंकरवागयथ ॥ अजानतस्त्वपचितिं यथामेचिन्त्य  
ताम्बुधाः ३७ ॥ ऋपयजुः ॥ इत्थलस्यमुतोघोरोत्थल्वलोनामदानवः ॥ सद्रूपयतिनःसन्नेमत्यपर्वणिपर्वणि ३८ तंपापंजहिदाशार्हं तन्नःशुश्रूषणं प  
रम् ॥ पूयशोणितविरमूत्रसुरामांसाभिवर्पिणम् ३९ ततश्चभारतवर्षं परीत्यमुसममहितः ॥ चरित्वाद्वादशमासांस्तीर्थस्नानीविशुद्ध्यमे ४० ॥ इति श्री  
मद्भागवतेमहापुराणे दशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवचरित्रेबल्वलवधोपक्रमोनामष्टमसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ ततःपर्वण्युपावृत्ते प्रचण्डःपांसुवर्षणः ॥ भीमोवायुरभूदाजन् पूयगन्धस्तुसन्वशः १ ततोऽमेध्यमयंवर्षं बल्वलेनविनिर्भितम् ॥ अभ  
तुम्हारे कौन वस्तुकी चाहना है सो मोतें कहौ मैं कछुगो हे विवेकियो ! प्रायश्चित्त कूं नहीं जानूं जो भैंहूं ताकूं भलेप्रकार प्रायश्चित्त विचारो ३७ अत्र ऋषीश्वर बोलेघोरहै रूख जाको ऐसो इत्यलको  
पुत्र बल्वल नाग दानवहै सो आगवस पूनो आयकै हमारे यज्ञकूं अष्ट करैहै ३८ हे दशार्हशोत्पन्न बलदेवजी ! पीव रुधिर विष्ठा मूत्र मदिरा मांस इनकी वर्षा करै ऐसो जो पापी बल्वलहै ताय मारो  
यही हमारी बड़ी सेवाहै ३९ ता पीछे अत्यन्त सावधान होयकै काम क्रोधादिकन कूं त्यागिकै भारतखण्ड की परिरूपा कारिकै एकवर्ष पर्यन्त तीर्थन में स्नान करोगे तब शुद्ध होउगे ४० इति श्री-  
मन्महाभागवतार्थरूपिसयादाशमस्कन्धेउत्तरार्द्धे बलदेवचरित्रे पल्वलवधोपक्रमो नामाष्टमस्तितमोऽध्यायः ७८ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

(जनाशीतितमेरामोवल्लवद्विजगुष्ठे ॥ निहत्यतीर्थस्नानार्द्यःपुनरुत्थापयानुदत् ? उनासीर्नि श्रधायमे चलदेवजी ब्राह्मणनकी प्रसन्नता के लिये घलवलको मारकर तीर्थस्नानादिकन संभूत

की हत्या को दूर करते भये ? ) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! ता पीछे अभावास्था पूर्णमासी पर्व आया तब धूरि जाँवें वर्ष ऐसी भयानक प्रचण्ड पवन चलत भई और चारचो और तें राधिनी दुर्गन्ध आचति भई १ ता पीछे बल्ल दैत्यने करी ऐसी बिष्टा मूचकी नर्वा यज्ञशालामें होति गई और विशूल लिये चलल भी दृष्टि आवन भयो २ विदीर्ण क्रियो जो काजरको पहाड़ ताची दुल्य बड़ी है देह जाको ताते तावेसे लाल है शिला और डाढ़ी जाके दाढ़ करिके भयानक भुङ्कुनीन सू लग्यो है मुख जाको ऐसो जो बल्ल है ताय देखि है ३ शयुजी सेना जो विदीर्ण करन चारी जो मूल है ताको स्मरण करिके दैत्यनको मारन चारी जो हल है ताको स्मरण करत भये ता समय पार्षद रूप जे हल मूल है ते जलरी आवत भये ४ आकाशमें विचरै जो दल्ल है ताय हलके अग्रभाग सँ खँचिके क्रोधयुक्त जो बलदेवजी हैं सो ब्रह्मदेवी जो बल्ल है ताके माथे में मूसल मारत भये ५ फूज्यो है माथो जाको ऐसो जो बल्ल है सो रुधिर को वमन करत दीनशब्द उच्चारण करत जैसे वज्र के मारे गेरू को पर्वत गिरे ऐसे पृथ्वी में गिरत भयो ६ मुनीश्वर है ते बलदेवजी की स्तुति करिके सफल आशीर्वादन कूं दैके जैसे बडभागी देव वा वृत्रासुर के मारन वारे

बडज्ञशालायां सोऽन्वदृश्यत शूलधृक् २ तं विलोक्य बृहत्कार्यं भिन्नाञ्जनचयोपमम् ॥ तप्तनाम्रा शिखाशृङ्गं दंष्ट्राभ्रमुकुटीमुखम् ३ सस्मारमुमलं रामः परसैन्यविदारणम् ॥ हलञ्च दैत्यदमनं ते तूर्णमुपतस्थतुः ४ तमाकृष्य हलाग्रेण बल्ललंगने चरम् ॥ मुसलेनाहनत क्रुद्धां मुद्भिन् ब्रह्मदुहं बलः ५ सोऽपतङ्गुविनिर्भिन्नललाटोऽमृक् समुद्रमृजन् ॥ मुञ्चन्नात्तं स्वर्शैलौ यथावज्जहतोऽरुणः ६ संस्तुत्य मुनयो रामं प्रयुज्यावितथा शिपः ॥ अभ्यपिञ्चन्महाभागा वृत्रघ्नं विबुधा यथा ७ वैजयन्तीं दडुर्मांलां श्रीधामा म्लानपङ्कजाम् ॥ रामाय वाससी दिव्ये दिव्या न्यागम्या निच ८ अथैश्वर्यपनुज्ञातः कौशिकीमेत्य ब्राह्मणैः ॥ स्नात्वा सरोवरमग्राद्यतः सरयुरास्रवत् ९ अनुस्रोतेन सरयूं प्रयागमुपगम्यतः ॥ स्नात्वा सन्तर्प्य देवादीञ्जगाम पुलहाश्रमम् १० गोमतीं गण्डकीं स्नात्वा विपाशांशोण आलुनः ॥ गयां गत्वा पितृनिष्ठा गङ्गासागरसङ्गमे ११ उपस्पृश्य महेन्द्राद्रौ रामं दृष्ट्वा भिवाद्य च ॥ सप्तगोदावरीं त्रेणां परमार्थी च सरिद्वारम् १२ स्कन्दं दृष्ट्वा ययौरामः श्रीशैलं गिरिशालयम् ॥ द्विविडे पुमहापुर्यं दृष्ट्वाऽर्द्धिवेङ्कटं प्रभुः १३ कामकोष्णीं पुरीकाञ्चीं कावेरी च सरिद्वारम् ॥ श्रीरङ्गाख्यं महापुर्यं

इन्द्रको अभिषेक करै ऐसे अभिषेक करत भये ७ लक्ष्मी के वसिष्ठ के स्थान ऐसे को गल कगलन की वैजयन्ती गाला और दिव्य नीलास्मर के धोती उपरना और अनेक प्रकार के आभूषण हैं ते चल देवजी कंदैत भये ८ या के पीछे मुनिने आज्ञा जिन कूं दीनी ऐसे बलदेवजी ब्राह्मणन कूं संग लैके कौशिकीनदी में आय है स्नान करिके जा सरोवर में ते सरयु निकली तहां आवत भये ९ सायू के प्रयाग के किनारे किनारे होय के प्रयाग में आय स्नान करिके देवादिजन को तर्पण करिके पुलह ऋषि तो आश्रम जो हरितेज है तामें जा भये १० चहा तें गोमती और गण्डकी तथा विपाशा में स्नान करिके शोणनदी में स्नान जिनने कखो ऐसे बलदेवजी गयातीर्थ में जाय के पितरन हो पूजन करिके गंगा और समुद्र को जहा संगम भयो है तहां जात भये ११ ता पीछे महेन्द्र पर्वत में परशुरामजीको दर्शन करिके प्रयाग करिके सप्तगोदावरी और वेणा तथा पद्मा में जाय के भीमरथी में जात भये १२ ता पीछे समर्थ नलदेवनी स्वागिकार्तिकेय को दर्शन करिके महादेव जहा

विराजें ऐसो जो श्रीशैल पर्वत है तहां जात भये और द्रविड़ देशन में वड़ो पुनीत जो वेङ्कट पर्वत है ताको दर्शन करिकै कामकोष्णी पुरी और काञ्चीपुरी में जात भये और नदीन में अण्ड जो कावेरी है ताँ स्नान करिकै वड़ो पवित्र और जहा नित्य हरि विराजमान रहैं ऐसो जो श्रीरत्ननाम विल्यात स्थान है तहा जात भये १३ । १४ वहा ते ऋषभमादि पर्वत जो हरिको क्षेत्र है तहा जायकै दक्षिणदेश में जो मथुराहै तहां जात भये वहा ते वेङ्कट पावन के नाथ करनवारे जे सेतुवन्ध राभेश्वर है तहा जात भये १५ वहा जायकै हलायुध चलदेवजी दशहजार गौ ब्राह्मणन कूं देत भये पश्चात् कृतमाला नदी और ताद्वयणी नदीन में होयकै मलयाचलकुलाचल पर्वतन में जात भये १६ तहां विराजमान जे अगस्त्यमुनि हैं तिनकी नमस्कारपूर्वक स्तुति करत भये तत्र अगस्त्यजीने आञ्जीवनीद दैके आज्ञा भिनरू दीनी ऐसे चलदेवजी दक्षिणदेश में जो समुद्र है तहा जायकै कन्या नाम जो दुर्गादेवी है ताको दर्शन करन भये १७ ता पीछे फाल्गुन जो अनन्तपुरहै ताँ नित्य विष्णु भगवान् विराजें ऐसो जो उत्तम पञ्चाप्सरस नाम सर है ताँ स्नान करिकै दश हजार गौवन को संकला करत भये १८ वहा ते चलि कै भगवान् चलदेवजी

यत्र सन्निहितो हरिः १४ ऋषभादिहरेः क्षेत्रं दक्षिणं मथुरांतया ॥ सामुद्रं सेतुमगमनगहापातकनाशनम् १५ तत्रायुनमदाद्धेनूत्राहणे भयोहलायुधः ॥ कृतमा लांताम्रपर्णी मलयंचकुलाचलम् १६ तत्रागस्त्यं समासीनं नमस्कृत्याभिवाद्य च ॥ योजितस्तेन चाशीर्भिरनुज्ञातो गनोऽर्णवम् ॥ दक्षिणतत्र कन्याख्यां दुग्गादेर्वीददर्शयः १७ ततः फाल्गुनमासाद्य पञ्चाप्सरसमुत्तमम् ॥ विष्णुः सन्निहितो यत्र स्नात्वाऽस्पृशद्वायुतय १८ ततोऽभिब्रज्य भगवान् केरलांस्तु त्रिगर्त्तकान् ॥ गोकर्णं खण्ड्यं शिवक्षेत्रं सान्निध्यं यत्र धूर्तः १९ आर्यद्वैपायनीदृष्ट्वा शूर्पारिकमगादुचलः ॥ तार्पीपयोष्णीं निर्विन्ध्यामुपस्पृश्याथ दण्डकम् २० प्रविश्योवागमद्यत्र माहिषमतीपुरी ॥ मनुनीर्थमुपस्पृश्य प्रभासं पुनरागमत् २१ श्रुत्वा द्विजैः कथ्यमानं कुरुपाण्डनसंयुगे ॥ सर्वराजन्यनिवनं भारमेनेहनं भुवः २२ सभीमदुर्थो धनयोगदाभयुच्छतो मृधे ॥ वारयिष्यन् विनशनं जगाम यदुनन्दनः २३ युधिष्ठिरस्तु तं दृष्ट्वा यमौ कृष्णार्जुनावपि ॥ अभिवाद्या भवंस्तूष्णीं किं विवक्षुरिहा गतः २४ गदापाणि उभौ दृष्ट्वा संखौ विजयैः पिणौ ॥ मण्डलानि विचित्राणि चरन्ता विदमब्रवीत् २५ युगं तुल्यबलौ वीरौ हेराजन्

केरल और त्रिगर्त्त देशमें होय कै जहां धूर्जटि शिवजी विराजें ऐसो जो गोकर्ण नाम करिकै शिवक्षेत्र है तहा जात भये १९ वहां तें चलदेवजी आर्यार्द्रोपवासिनी जो देवी है ताको दर्शन करिकै शूर्पारिक क्षेत्रमें आवत भये वहा तें तापी और पयोष्णी निर्विन्ध्या नदीमें आचमन करिकै दण्डकारण्य में आवत भये २० जहा माहिष्यती पुरी है वा रेवानदी पै जात भये फेरि मनुनीर्थ में आचमन करिकै प्रभासक्षेत्र में आवत भये २१ तत्र कौरव और पाण्डवन के संग्राम में सब क्षत्रियन को नाश भयो यह ब्राह्मणन को वचन श्रवण करिकै पृथ्वी को बोझ उतरयो यह मानत भये २२ यादवन कूं आनन्द के देतवारे जो चलदेवजी हैं सो संग्राम में गदान संयुद्ध करैं ऐसे जे भीमसेन दुर्गोधन हैं तिन मने करिवे कूं कुरुक्षेत्र में जात भये २३ राजा युधिष्ठिर नकुल सहदेव कुरुण और अर्जुन ये चलदेवजी कूं देखिकै प्रणाम करिकै कहा कहनेतो इच्छा करिकै यहा ग्राये हैं या भयके मारे लुप होत भये २४ गदा हाथमें लिये क्रोधमें भरे एहनो एक जीत्यो चाहै निज



विचित्र मण्डलन में फिर ऐसे जे भीमसेन दुर्योधन हैं तिन देविकै बोलत भये २५ हे राजन् दुर्योधन और भीमसेन ! तुम दोनों शूरवीर हो तुम तुम्हारी बल है एक भीमसेन में कुछ बल अधिक है यह मैं जानूं हूं दूसरो दुर्योधन है तामें दाव पंच अधिक है यह मैं जानूं हूं २६ ता कारण वरावरि पराक्रम जिनमें ऐसे जे तुम दोनों हो तिनके बीचमें एकहूकी जीति हार न होयगी याते निष्फल युद्धकूं शान्तकरो २७ हे राजन् परीक्षित ! परस्पर कुतिसत वचन और दुष्कृतन कूं स्पर्ण करिकै वैश्यो है वैर जिनको ऐसे जे भीमसेन दुर्योधन हैं ते प्रयोजन भव्यो वाक्य नहीं मानत भये २८ भीमसेन दुर्योधन को ऐसेही विखलो कर्म है यह मानिकै बलदेवजी द्वारकापुरी में आवतभये तहा उग्रतेन रूं आदिलैकै प्रसन्न जे ज्ञातिवाले यादव हैं तिनसूं मिलतभये २९ निष्ठतभये हैं समस्त विरुद्ध जिनते फेरि नैमिषारण्य में आयो ऐसे यज्ञमूर्चि जे भगवान् बलदेवजी हैं तिनैं आनन्दपूर्वक सब ऋषीश्वर संव यज्ञन करिकै यजन करावतभये ३० समर्थ भगवान् बलदेवजी तिन ब्राह्मणन कूं विशुद्धज्ञान देतभये जा ज्ञान करिकै आत्मा में विश्व और विश्वमें आत्माकूं जानै है ३१ यज्ञारे पीछे स्नान जिनने कियो सुन्दर वस्त्र आभूषणन करिके अलंकृत

हे वृकोदर ॥ एकंप्राणाधिकं मन्यते कं शिषयाधिकम् २६ तस्मादेकतरस्येह युवयोः समवीर्ययोः ॥ न लक्ष्यते जयोऽन्यो वा विरमत्वफलो रणः २७ न तद्वाक्यं जगृहतुर्वद्धैरौ नृपार्थवत् ॥ अनुस्मरन्तावन्योन्यं दुरुक्लंष्टुना निच २८ दिष्टं तदनुमन्वानो रामो दारवर्तीययो ॥ उग्रसेनादिभिः श्रितैर्ज्ञातिभिः समुपागतः २९ तंपुनर्नैमिषं प्राप्तुं पयोऽयाजयन्मुदा ॥ क्रतवङ्गं क्रतुभिः सर्वान् विवृत्ताखिलविग्रहम् ३० तेभ्यो विशुद्धविज्ञानं भगवान् व्यतरद्विभुः ॥ येनैवाऽऽत्मन्यदो विश्वमात्मानं विश्वगं विदुः ३१ स्वपत्याऽवभृयस्नातो ज्ञातिवन्धुमुहद्वृतः ॥ रेजे स्वज्योत्स्नये वेन्दुः सुवासाः सुज्वलं कृतः ३२ ईदृग्वियान्यसंख्यानि बलस्य बलशालिनः ॥ अनन्तस्याप्रमेयस्य मायामर्त्यस्य सन्ति हि ३३ योऽनुस्मरेतरामस्य कर्मणि यद्भुतकर्मणः ॥ सायंप्रातरनन्तस्य विष्णोः सदयितो भवेत् ३४ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे बलदेववर्तीथ्यात्रानिरूपणं नैकोनाशीतितमोऽध्यायः ७६ ॥ ॐ ॥

राजोवाच ॥ भगवन् न्यानि चान्यानि मुकुन्दस्य महात्मनः ॥ वीर्याग्यनन्तवीर्यस्य श्रोतुमिच्छामहे प्रभो १ कोलुश्रुत्वा स हृदग्रहस्तु तमश्लोकसत्क ज्ञाति बन्धु सुहृद् इनकूं सद्गलैकै जैसे अपनी चादनी करिकै चन्द्रमा शोभाकूं प्राप्त होय है ऐसे अपनी क्षीन साहित शोभाकूं प्राप्त होतभये ३२ बलवान् अनन्त अप्रमेय अर्थात् प्रमाण करिबे में न आवें माया करिकै मनुष्य रूप जिनने धारण कस्यो ऐसे बलदेवजी के ऐसे ऐसे अनेक लीला चरित्र हैं ३३ अद्भुत हैं कर्म जिनके ऐसे अनन्त बलदेवजी हैं तिनके कर्मन कूं जो पुरुष सायकाल प्रातःकाल समय स्मरण करै वह श्रीकृष्णचन्द्रको प्यारो होय है ३४ इति श्रीमद्भागवतार्थखण्डे वलदेववर्तीथ्यात्रानिरूपणं नैकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

( अथाशीतितमेकृष्णः श्रीदामानं युहागतम् ॥ सम्पद्यथापृच्छद ये मुं गुरुत्वास रुपा मुदा ? अस्मीं अध्यायमें कृष्णजी घरमें आयो द्रव्यकी इच्छावाले सुदामाजी वी अन्धे प्रकार पूजाकर आनन्दसूं गुरुके वासकी कथाको धूत्रतभये ? ) अब राजा परीक्षित प्रश्न करे हैं हे भगवन् समर्थ शुक्रदेवजी ! अनन्त हैं पराक्रम जिनके ऐसे मुक्तिके देनवारे जो महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पराक्रम-

मनकूँ मेरी श्रवणकरिवे की इच्छा है ? हे ब्रह्मन् शुभदेवजी ! उत्तम है यय जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रके विषयन में वैराग्यकी उत्पन्न करनवारी जो मनोहर कथा हैं तिनै निस्तर सुनिके काम के वाणनतें खेदको प्राप्तभयो ऐसो सारको जाननवारी कौन पुरुष है जो श्रवण न करै २ जा वाणी में भगवान् के नाम गुण निकसैं वही वाणी सफल है और जिन हाथनतें भगवान् की सेवा पूजा कर्म वर्न वेही हाथ सफल है स्थावर जगम जीवनमें अन्तर्दयाभीरूप होयकै वसे जे भगवान् हैं तिनको जो स्मरण करै वही मन सफल है और जिन काननसू भगवान् की पवित्रकथा सुनै वेही कान सफल है ३ स्थावर जगम सब भगवान् के रूप हैं यह मानिकै जो पुरुष शिरसूँ प्रणामकरै वही शिर धन्य है स्थावर जगम भगवान् को रूप जानिकै जिन नेत्रनसूँ देखै वेही नेत्र धन्य हैं और भगवान् अथवा भक्तजनन के चरणनको धोवन जल नित्य जिन अंगनमें लगै वेही अंग सफल है ४ अथ श्रीसूतजी सनकादिकन सृं कहै हैं विष्णुराज राजा परीक्षितन पूछे वासुदेव भगवान् में हूँयो है हृदय जिनको ऐसे जो वेदव्यास के पुत्र भगवान् शुक्रदेव नी हैं सो बोलतभये ५ श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित ! कोई एक ब्राह्मण ब्रह्मके जाननवारेन में उत्तम विषयन में वैराग्यवान्

थाः ॥ विरमेतविशेषज्ञोविपश्चः काममार्गणैः २ सावाग्यथातस्यगुणान्गुणीते करौचतत्कर्मकरौमनश्च ॥ स्मरेद्धमन्तस्थिरजङ्गमेपु शृणोतितत्पुण्यक

थाः सवर्णः ३ शिरस्तुतस्योभयलिङ्गमानमेतदेवयत्पश्यतितद्विचक्षुः ॥ अङ्गानिविष्णोस्थतज्जनानां पादोदकं यानिमजन्ति नित्यम् ४ ॥ भूतउवाच ॥

विष्णुरातेनसंपृष्टोभगवान्वादरायणिः ॥ वासुदेवेभगवति निमग्नहृदयोऽब्रवीत् ५ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ कृष्णस्यासीत्सखाकश्चिद्ब्राह्मणोब्रह्मवित्तमः ॥

विरक्तइन्द्रियार्थेषु प्रशान्तात्माजितेन्द्रियः ६ यदृच्छयोपपन्नेन वर्त्तमानोऽगृहाश्रमी ॥ तस्यभार्यकुचैलस्य क्षुत्क्षामाचतथाविधा ७ पतिव्रतापतिप्राह म्ला

यतावदनेनसा ॥ दाग्निदासीदमानासा वेपमानाऽभिगम्यच ८ ननुब्रह्मन्भगवतः सखासाक्षाच्छ्रियः पतिः ॥ ब्रह्मण्यश्चशरण्यश्च भगवान्सात्त्वतर्पभः ९ त

मुपैहिमहाभाग साधूनां च परायणम् ॥ दास्यतिद्विर्णिभूरि सीदतेतेकुटुम्बिने १० आस्तेऽधुनाद्वारवत्यां भोजघृण्यन्वकेश्वरः ॥ स्मरतः पादकमलमात्मा

नमपियच्छति ॥ किंत्वर्थकामान्भजते नात्यभीष्टाञ्जगद्गुरुः ११ स एव भार्ययाऽप्रोवब्रुशः प्रार्थितोऽमृदु ॥ अयं हि परमोलाभ उत्तमश्लोकदर्शनम् १२ इति

शान्त मन जितेन्द्रिय कृष्णको मित्रहो ६ गृहस्थाश्रम कूँ वर्तें जो कछु अनायासपूर्वक मास होय ताहीमें अपनो देह निर्वाह करै जीर्ण वस्त्रनकूँ धारणकरै ऐसो ब्राह्मणहो ताकी तैसीही स्त्री रही शुधा सृं पीडित होनेसे समस्त अङ्गनकरि कुशित और अन्न प्राप्तहोय ताय पतिकूँ परोसिदेई आप भूखी रहिजाय ७ बहुत दुःखित और भयके मारे थर थर कायै ऐसी जो पतिव्रता स्त्री है सो दरिद्री जो पतिहै ताके समीप आयकै बोलाति भई ८ हे ब्राह्मण ! साक्षात् लवर्गके पति ब्रह्मभक्त शरणागतके पाठक यादवनमें अष्ट जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो तुम्हारे सखा सुने हैं ९ अहो वड़ भागी ब्राह्मण ! साधुनकूँ परमआश्रय जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पास तुम जावो दु खित कुटुम्बी जो तुमहौ तिनैं बहुत सौं द्रव्य देखेंगे १० भोज वृष्टिण अन्यक ये यादवन के गोत्रहैं तिनके ईश्वर जो श्री कृष्णचन्द्र हैं सो अन्न द्वारकापुरी में है वे चरणकमल के स्मरण करनवारे कूँ आत्मापर्यन्त देय है ११ जगत् के गुरु जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो भजन करनवारे अपने भक्तन कूँ परिणाम में दुःखरूप

ऐसो जो धन और विषय इनको देनो कछु बहुत नहीं है या प्रकार कोमल वचनन सँ खीने बहुत प्रार्थना करी तब तो सुदामा ब्राह्मण उत्तम है यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन होयगो यह बड़ो लाभ है १२ या प्रकार मनमें विचार करिके जायवे की इच्छा करत भये कि हे मंगलरूपिणी ! तरे घरमें कछु भेंटदेवेकू होय तो दे खाली दाय कैसे जाऊं १३ तब सुदामा की स्त्री काहू परोसी ब्राह्मण के घरते चारिमुट्ठी चावल मागिके कपड़ा की चीरमें बाँधिके सुदामाकू श्रीकृष्ण के लिये भेंट देति भई १४ ब्राह्मणन में श्रेष्ठ जो सुदामा है सो चावलन कू लैके श्रीकृष्ण को दर्शन भोक्कू कैसे होयगो ऐसे विचार करत द्वारकापुरी में जात भये १५ द्वारकाके ब्राह्मण हैं सब जाके एसो जो सुदामा ब्राह्मण है सो तीन चौकी उल्लवन करिके और तीन ख्योदीनकू उल्लवन करिके जिनके पास काहूके जानेकी सामर्थ्य नहीं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को ही है धर्म जिनके ऐसे जे अन्यत्र कृष्ण यादवनके घर हैं १६ तिन घरन के बीचमें सोलह हजार श्रीकृष्णचन्द्र की रानीनके घरमें सँ एक जो सुन्दर घर है तामें सुदामा प्रवेश करत भयो ता समय ब्रह्म की प्राप्तिमें जो आनन्द प्राप्त होय तैसे आनन्द कं पावत भयो १७ प्यारी रुक्मिणी की शय्या के ऊपर विराजमान जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो दूर ते

संचिन्त्य मनसा गमनाय मतन्दे ॥ अप्यस्त्युपायनं किञ्चिद्गृहे कल्याणि दीयताम् १३ याचित्वा च तुरो मुष्टीन् विभान् पृथु कतरुलान् ॥ चैलखण्डेन तान् बद्धा भर्त्रैः पादादुपायनम् १४ सतनादाय विप्राग्रयः प्रययौ द्वारकां किल ॥ कृष्णसं दर्शनं मह्यं कथं स्यादिति चिन्तयन् १५ त्रीणि गुल्मान्यतीयाय तिलः कक्षाश्रयसद्विजः ॥ विप्रोऽभ्यन्य कवृष्णीनां गृहेष्वच्युत धर्माणि १६ गृहं द्वयष्टसहस्राणां महिषीणां हरेर्द्विजः ॥ विवेशैकतमं श्रीमद्ब्रह्मानन्दं गतो यथा १७ तं विलोक्या च्युतो दूरात् प्रियापथ्यं क्लृप्तास्थितः ॥ सहस्रोत्थाय चाभ्येत्य दोर्भाप्य ग्रहीन्मुदा १८ सख्युः प्रियस्य विप्रैरङ्गसङ्गातिनिर्धनः ॥ प्रीतोऽप्यमुञ्चद विव्रन्दून् नेत्राभ्यां पुष्करेक्षणः १९ अथोपवेश्य पर्यङ्के स्वयं सख्युः समर्हणम् ॥ उपहृत्या वनिज्यास्य पादौ पादावनेजनीः २० अग्रहीच्छिराराराज्यं भगवा ल्लोकपावनः ॥ व्यलिम्पद्दिव्यगन्धेन चन्दनागुरुकुङ्कुमैः २१ धूपैः सुरभिभिर्भिन्नं प्रदीपावल्लिभिर्मुदा ॥ अर्चित्वा विद्याताम्बूलं गां च स्वागतसज्जरीत् २२ कुर्वैलं मलिनं क्षामं द्विजन्धमनिस्तनतम् ॥ देवीपर्यचरत् सत्साक्षात्पारमर्यजनेन वै २३ अन्तःपुरजने हृष्टा कृष्णेनागलकीर्तिना ॥ विरिप्रतो भूदतिप्रीत्या

देखिके शीघ्र डाढिके आयकै भुजा पसारिके वड़े आनन्दपूर्णक सुदामाजी सँ मिलत भये १८ प्यारे सखा जो सुदामा ब्राह्मण हैं तिनके मिले ते अति आनन्दपूर्णक प्रसन्न भये ऐसे जो कमलदल लोचन श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके नेत्रन सँ आसून की बूंदें टपकती भई १९ हे राजन् परीक्षित ! लोचन के पविन करन वारे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सुदामा सँ मिलिके पलंग के ऊपर बैठा य कै सखा जो सुदामा हैं तिनकू भेंट दैके चरण धोइके घोजन जो जल है ताय अपने शिरपै चढ़ावत भये और दिव्य गन्ध चन्दन अगर केसर इनकू सुदामाजी के लगावत भये २० २१ श्रेष्ठगन्धयुक्त धूपदीनी और बराबरि दीपक बरायकै धरि दिये वड़े आनन्द तें भिन्न जो सुदामा हैं तिनकी पूजा करिके ताम्बूल की बीरी दैके सम्मुख ठाढ़ो करिके भिन्न भल्ले आये ऐसे कहत भये २२ फटे मलिन वस्त्र पहिरे और कृशित श्रम में नसँ जाके निकसिरहीं एसो जो सुदामा ब्राह्मण है ताय साक्षात् देवी रुक्मिणी है सो चमर डोरिके पला करिके सेवा करति भई २३ निम्नैल

है कीर्ति जिनकी ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने पूसवतापूर्वक सत्कार जाको कथ्यो ऐसो जो अवधूत सुदामा है ताय देखिके अन्तःपुर के वासी जन आश्चर्य मानत भये २४ भिन्नाको मांग-  
नवारो अवधूत याही तें निन्दित अधम शोभाहीन ऐसे या सुदामा ने या संसारमें कौन पुण्य करे हैं २५ जैसे वड़े भय्या बलदेवजी तें मिलें तैसे त्रिलोकी के गुरु लक्ष्मी जिनके अंगमें वास  
करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शय्या के ऊपर बैठी रुक्मिणी कूं त्यागिके याम् त्यागिके मिले २६ हे राजन् परीक्षित ! सुदामा और श्रीकृष्णचन्द्र दोनों परस्पर हाथ पकारिके पहलेही गुरुकुल में जव  
वास करथो हो तव की अपनी ललित वात कहत भये २७ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बोले हे धर्म के जाननवार ! हे ब्राह्मण ! दक्षिणा जिनने पाई ऐसे जे श्रीगुरु हैं तिनके पास तें जय तुम  
विद्या पढ़िके आये तव से तुमने अपनी बराबरि की स्त्री व्याही कि नहीं व्याही कछु विवाह करिबे के चिह्न दिखाई देई और बलु विपयादिकन के भोग दिखाई नहीं देई यातें न भयो शोइयो  
यह सन्देह है २८ हे विवेकी मित्र सुदामा ! तुम्हरो चित्त विषयन करिके बहूधा चलायमान नहीं है यह मैं जानूँ तैसेही घरन में बह्मादिकन में तुम अरयन्त पूसव नहीं हो विवेकी हो तुमकूं ऐसो

अवधूतसमाजितम् २४ किमनेनकृतं पुण्यमवधूतेन भिक्षुणा ॥ श्रियाहीनेन लोकेऽस्मिन् गहितेनाधमेन च २५ योऽसौ त्रिलोकगुरुणा श्रीनिवासेन सम्भू-  
तः ॥ पर्येङ्गस्थां श्रियं हित्वा परिष्वक्तोऽप्रजो यथा २६ कथयाञ्च कतुर्गाथाः पूवर्वाङ्गुरुकुले सतोः ॥ आत्मनो ललिताराजन् करौ गृह्य परस्परम् २७ ॥ श्रीम  
गवानुवाच ॥ अपि ब्रह्मन् गुरुकुलाद्भवतालव्यदक्षिणात् ॥ समावृत्तेन धर्मज्ञभार्योदासदृशीनवा २८ प्रायोगे हेतुते चित्तमकामविहतं तथा ॥ नैवातिश्रियसे  
विद्वन्धने पुन विदितं हि मे २९ केचित्कुर्वन्ति कर्मभाणि कामैरहतचेतसः ॥ त्यजन्तः प्रकृतीर्देवीर्यथाऽहं लोकासं ग्रहम् ३० कश्चिद्गुरुकुलेवासं ब्रह्मचरमरसि  
नौ यतः ॥ द्विजो विज्ञाय विज्ञेयं तमसः पारमश्रुते ३१ सवैसरुर्मणां साक्षाद्विजातेरिह सम्भवः ॥ आद्योऽङ्गयत्राऽऽश्रमिणां यथाऽहं ज्ञानदोगुरुः ३२ नन्य  
र्थको विदा ब्रह्मन् वर्णाश्रमवतामिह ॥ ये मया गुरुणा वाचातरन्त्यञ्जो भवार्णवम् ३३ नाहमिज्याप्रजातिभ्यां तपसोपशमेन वा ॥ तुल्येयं सर्वभूतात्मा गुरुशु

ही योग्य है २९ जो कदाचित् कहो कि चाहना नहीं तो घरमें रहिये तें कहा प्रयोजन है ताके उत्तर श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं—जैसे मैं ईश्वर लोकन के सिखायवे के लिये कर्म करूँ तैसेही ईश्वर  
की मायाने रची जे विषयवासना हैं तिनें त्यागिके कामना करिके नहीं हैं चलायमान मन जिन के ऐसे भी कोई पुरुष कर्मन कूं करे हैं ३० हे ब्राह्मण ! हम तुम जव गुरुके घरमें जायके रहें तन  
को कर्मके स्मरण करो, हो कि नहीं जिन गुरुतें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य जानिबे योग्य जो आत्माको स्वरूप है ताय जानिके पुरुष संसार तें छुटिजात है ३१ या संसारमें जहां जन्म लेई है वह  
पिता पृथम गुरुहै और फेरि जो यज्ञोपवीत करिके वेद पढ़ावे सन्ध्या गायत्री मन्दार कर्म सिखावे वह दूसरो गुरुहै जैसो मो ईश्वरकूं पूजे तें पिता गुरु तें या दूसरे गुरुकूं पूजे और ब्रह्मचारी गृहस्थ  
नानपस्थ संन्यासी ये चारयो आश्रमी हैं इन सबकूं ज्ञान देनवारो जो गुरुहै सो साक्षात् मैं हूं ३२ जे पुरुष मनुष्य जन्म पागण करिके गुरुरूप जो मैं हूं ताके उपदेश तें संसाररूपी समुद्र के पार लग्ये  
हैं हे ब्राह्मण सुदामा ! वे पुरुष ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यूद्र इन चारि वर्णन में और ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी इन चारयो आश्रमन में हैं तिनके मध्य में अर्थ मैं निपुण मैं हूं ३३ ज्ञानके

देनचारे जो गुरु हैं तिनमें अधिक और सेवा लायक कोई नहीं है याही तें तिन गुरुन के भजनतें और कोई अधिक धर्म नहीं है समस्त प्राणीन को आस्था जो मैं हूं सो यज्ञ करिवो गुरुस्थ को धर्म और ब्रह्मचारी को धर्म इन करिके और तप करिवो वानप्रस्थको धर्म और शान्ति संन्यासी को धर्म इन सब करिके सन्तुष्ट नहीं होऊँहूँ जैसो गुरुभी सेवा करे तें तुष्ट होऊँहूँ ३४ हे ब्राह्मण ! जब गुरुन के समीप जायकें वसे हैं तब को स्मरण आवै है इन्ग्रन लाइने के निमित्त एकसमय गुरुकी स्त्रीने कहीरही तब हमतुम एकवड़े वनमें गयेरहे ३५ ता समय ऋतुके विनाबड़ी भयङ्कर पवन चलीरही मेघ वर्षा कठोर गर्जनि भई ३६ तबताई सूर्य अस्त होय गयो चारों ओर दिशानमें अन्धकार छाया रह्यो जल दृष्टिपरै ऊँचो नीचो कलुन दिखाई दियो ३७ बार बार पवन चली जल वर्षे तिनमें हम अतिदुःखित भये दिशानमें भूलि गये चारखो ओर जलही जल जायें होय गयो ऐसे वनमें आपसमें हाथ पकरिके आतुर होयकै लकड़ीके चोभनहुँ शिर श्रृपयायथा ३४ अपिनःस्मर्यते ब्रह्मन् वृत्तं निवसतां गुरौ ॥ गुरुद्वारैश्चोदितानामिन्धनानयेनैकचित् ३५ प्रविष्टानां महारण्यमपत्तौ सुमहद्विज ॥ वातवर्षमभूत्तीव्रं निष्ठुरास्तनयिलत्रः ३६ सूर्यश्चास्तंगतस्तावत्तमसाच्चावृतादिशः ॥ निम्नंकूलजलमयं न प्राज्ञायतकिञ्चन ३७ वयंभृशंतत्रमहानिलाम्बुभिर्निहन्यमानामुहुरम्बुसंक्ष्वे ॥ दिशोऽविदन्तोऽथपरस्परं वने गृहीतहस्ताः पविश्रिमातुराः ३८ एतद्विदित्वा उदितैरवौ सान्दीपनिगुरुः ॥ अन्वेपमाणो नः शिष्यानां चार्थोऽपश्यदातुरान् ३९ अहो हे पुत्रकायूयमस्मदर्थेऽतिदुःखिताः ॥ आत्माधैप्राणिनां प्रेष्ठस्तगनादृत्यमत्पराः ४० एतदेव हि सन्निवृत्त्यै कर्त्तव्यं गुरुनिष्कृतम् ॥ यद्वै विशुद्धभावेन सर्वार्थात्मार्षणं गुरौ ४१ तुष्टोऽहं भोजि श्रेष्ठः सत्याः सन्तु मनोरथाः ॥ छन्दांस्ययातयामानि भवन्ति वृषत्रच ४२ इत्थं विधान्यनेकानि वसतां गुरुश्रेष्ठमसु ॥ गुरोर्नुग्रहेणैव पुमान् पूर्णः प्रशान्तये ४३ ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ किमस्माभिरनिवृत्तं देवदेव जगद्गुरो ॥ भवता सत्यकामेन येषां वासो गुरावसूत ४४ यस्य च्छन्दोमयं ब्रह्मदेह आवपनं विभो ॥ श्रेयसांतस्य गुरुपुवासोऽत्यन्तविडम्बनम् ४५ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे श्रीदामचरितेऽशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

वै धरे होलतभये ३८ सान्दीपनि जो गुरु आचार्य हैं सो बालक शिष्य इन्धन लेवेकू गये हैं यह वात जानिके प्रातःकाल जब सूर्य उदय भयो तब हम शिष्यनकूँ हूँदत हूँदत वन में गये हैं ता समय लकड़ीन के चोभ करियै धरे वल्ल जिनके भीजि गये ऐसे दुःखित जो हम हैं तिन देसत भये ३९ ता समय कृपा करिके तीन श्लोक के तिनमें हम कृतार्थ होयगये हे पुत्रो ! तुम हमारे छिये बहुत दुःखित भये प्राणीनकूँ देह बहुत प्यारो है ताको निरादर करिके हमारी सेवा करयो ४० सत्पात्र शिष्यन कू याही प्रकार गुरुन की सेवा करनी योग्य है शुद्ध भावना करिके धर्म अर्थ काम मोक्ष ये चारखो पदार्थ जानूं प्राप्त होई ऐसे देह कूँ गुरुके अर्पण करि देय ४१ हे द्विजनमें श्रेष्ठो ! तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्न भयो हूं तुम्हारे मनोरथ सत्य होयें तुमने भोतें जो वेद पढ़ैं ते या लोक और परलोकमें नहीं गयो है सार जिनको ऐसे अर्थीव नवीन पढ़े याद वनेरहे ४२ गुरुनके घरमें वसे जे हम हैं तिनके ऐसे ऐसे अनेक चरित्र हैं गुरुन की कृपा करिके पुरुष ते पूर्ण मनोरथ होयकै





भोजन करिके और दूसरी मुट्ठी जब मारी तभी श्रीकृष्णपरायण जो रुक्मिणी है सो परमेष्ठी श्रीकृष्ण को हाथ पकरि कै कहति भई कि मित्र के घरकी वस्तु आपुही भोजन करि ज उगे कछु हमकुं भी रहन देउगे एक तो यातें आय के हाथ पकरयो दूसरो कारण आगे कहे हैं १० हे विश्व के आत्मा ! एक मुट्ठी चावल भोजन करिके सम्पूर्ण विश्व की सम्पत्ति याकुं देबुके और दूसरी मुट्ठी भोजन करिके कहा पोकुं देबुकीगे यह लोक और परलोक में तुम्हारे संतुष्ट भये तेही पुरुषकुं सम्पत्ति प्राप्त होय हैं ११ ब्राह्मण सुदामा वा राजिकुं श्रीकृष्णचन्द्र के मन्दिर में रहिके भोजन करिके जल पीके मानों स्वर्ग में आयो हूं ऐसे अपने कुं पानिके सुख मानत भये १२ हे राजन् परीक्षित ! प्रातःकाल जब भयो तब विश्व के पालन करनेवारे आत्मा के आनन्द में मग ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सुदामा कुं प्रणाम करिके मार्ग में पहुँचावनकुं संग पीछे पीछे आवत भये और मित्र सुदामा तुमने यलो दर्शन दियो ऐमे अधीनता के वचन सँ आनन्द जिनकुं दियो ऐसे सुदामा अपने घरकुं आवत भये १३ सुदामा कुं जब घन नहीं मिलयो तब मोकुं घन देव ऐसे श्रीकृष्ण तें न कहत भयो वड़े जो श्रीकृष्ण हैं तिनके दर्शनतें आनन्द जिनके भयो ऐसे सुदामा लज्जित होय

जंगुदेहस्नं तरपरापरमेष्ठिनः १० एतावताऽलं विश्वात्मन् सर्वसम्पत्समुद्भये ॥ अस्मिँल्लोकेऽथवाऽमुष्मिन् गुप्तं स्वत्त्वोपकारणम् ११ ब्राह्मणस्तां नुरजनीसु पितराऽव्यु नमन्दिरे ॥ भुक्त्वा पीत्वा सुखं मेने आत्मानं स्वर्गं तं यथा १२ श्वोभूते विश्वभावेन स्वमुखेनाभिवन्दितः ॥ जगाम स्वालयं तात पथ्यनुब्रज्य नन्दितः १३ सत्रालब्ध्वा धनं कृष्णान्नतुयाचितवान् स्वयम् ॥ स्वगृहान्नन्नीडितोऽगच्छन् महदर्शनं निर्वृतः १४ अहो ब्रह्मण्यदेवस्य दृष्टा ब्रह्मण्यनामया ॥ यद्वरिद्रनमोलक्ष्मीमाश्लिष्टे चित्रतोरसि १५ काहं दरिद्रः पापीयान् कृष्णः श्रीनिकेतनः ॥ ब्रह्मवन्द्यरिति स्माहं बाहुभ्यां परिभिन्नः १६ निवासितः प्रियाजुष्टे पथ्यं द्वातरो यथा ॥ माहिष्यावीजितः श्रान्तो बालव्यजनहस्तया १७ शुश्रूषया परमया पादसंवाहनादिभिः ॥ पूजितो देवदेवेन विप्रदेवेन देवयत् १८ स्वर्गमापवर्गभयोऽंशुं रसायां भुवि सम्पदाम् ॥ सर्वसा मापि सिद्धिनां मूलं तच्चरणार्चनम् १९ अथ नोऽयं धनं प्राप्य गद्यञ्चर्चनं मां स्मरेत् ॥ इति कारुणिको नूनं धनं मे भूरिनाददात् २० इति तच्चिन्तयन्नन्तः प्राप्सो निजगृहान्ति क्रमम् ॥ सूर्या न लेन्दुसङ्काशौ विमानैः सर्वतो वृतम् २१ विचित्रोपवने द्यानैः कूजद्विजकुलाकु

अपने घरकुं जात भये १४ अहो वड़ो आश्चर्य है ब्राह्मण की भक्ति करनेवारेन के देवता श्रीकृष्णचन्द्र की ब्रह्मणिके मैंने देखी लक्ष्मी कुं छाती में धारण करनेवारे श्रीकृष्ण हैं सो दरिद्री जो मैं सुदामा हूं तामुं छाती लगायके मिले १५ दरिद्री पापी ऐसो ब्राह्मण मैं कहां और लक्ष्मी जिनके अंग में वास करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तहां पोयें उनमें वड़ा अन्तर है सो भुजा पसारिके मोसुं मिले १६ जैसे बलदेवजी कुं बैठवें ऐसे रुक्मिणी जायें बैठी वा पलंगके ऊपर मोकुं बैठाय लियो मार्ग की परिश्रम जाके भयो ऐसो जो मैं हूं ताकुं चपर है हाथ में जाके ऐसी रुक्मिणी पै पंखा दूरवायो १७ वड़ी सेवा करिके पावन को दानो घोवनो पोछनो इत्यादिक जें सत्कार हैं तिन करिके देवन के देव ब्रह्मदेव श्रीकृष्णचन्द्र ने देवतान की पूजा करें ऐमे मेरी पूजा करी १८ जे मुक्त हैं तिनकुं और पुत्र की तया रसातल की सम्पत्तिन कुं और सम्पूर्ण सिद्धि न कुं श्रीकृष्णके चरणारविन्द को पूजन है सोई कारण है अर्थात् श्रीकृष्ण के चरण कमल की पूजा करें तब पदार्थ

मिलें दरिद्री जो सुदामा है सो घट्कू पायकै बहुत मतवारो होयकै गोक्कू भूलि जायगो या कारण करुणावाञ् श्रीकृष्ण गोक्कू यत्किञ्चित् भी धन न दैत भये १६ । २० या प्रकार सुदामाजी मनमें विचार करत अपने घरके पास आवत भये कैसो घर को समीपहै ताको वर्णन करै हैं सूर्य अग्नि चन्द्रमा की तुल्य जिनको प्रकाश ऐसे चारोओर विमान धरे हैं २१ चित्र विचित्र वगीचा लगि रहे हैं तिनमें पत्नीन के झुड के झुड बोलि रहे हैं फूल हैं कुमुद अम्भोज कङ्कार उत्पल जिनमें ऐसे जलैं हैं २२ और शृङ्गार करे पुरुष और हिरन कैसे हैं नेत्र जिनके ऐसी स्त्री जहा तहां ढोले हैं ऐसी शोभा देखिकै और विमानन को प्रकाश देखिकै आश्चर्य मानिकै यह कहा है कौनको स्थानहै फेरि विचारत भये कि यह तो हमारोही रहिने को स्थानहै कैसो होय गयो या प्रकार ऐसे वडुभागी जे सुदामा हैं तिनकू देवतान की तुल्य है शोभा जिनकी ऐसे स्त्री पुरुष गावत वजावत सम्मुख लिवाये कू आवत भये २३ । २४ पतिकू आये सुनिकै भयो है आनन्द और हस्वरावट जाके ऐसी जो सुदामा की स्त्री है सो जैसे साक्षात् रूप धरिके कमल वनमें तें लक्ष्मी निकसे या प्रकार जलदीहीते घर ते बाहर निकसति भई श्रीकृष्णचन्द्र स्वर्ग कू सुदामाके महल में लाये याते सुदामा और

लैः ॥ प्रोक्तुस्तकुमुदाम्भोजकहारात्पलवारिभिः २२ जुष्टंस्वलंकृतैः पुग्भिः स्त्रीभिश्च हरिणाक्षिभिः ॥ किमिदं कस्य वा स्थानं कथं नदिदमित्यभूत् २३ एवंभी मांसमानंतं नरानार्योऽमरप्रभाः ॥ प्रत्यगृह्णन्गहाभागं गतिवाद्येन भूयसा २४ पतिमागतमाकर्ण्य पत्न्युद्धर्पाऽति संभ्रमा ॥ निश्चक्रामगृहात्तूर्णं रूपिणीं श्रीरिवालयात् २५ पतिव्रतापतिदृष्ट्वा प्रेमोत्फुरताऽश्रुलोचना ॥ भीलिताश्च गनमद्बुद्ध्या मनसापरिपस्वजे २६ पत्नीं विक्ष्य विस्फुरन्ती देवी वैमानिकीमिव ॥ दासीनानिष्ककण्ठीना मध्ये भान्तीं सविस्मितः २७ प्रीतः स्वयंतया युक्तः प्रविष्टो निजमन्दिरम् ॥ मण्डितभशतोपेतं मेहेन्द्रगवनं यथा २८ पयः केन निभाः शय्यादान्ता रुक्मपरिच्छदाः ॥ पथ्यङ्काहेमदण्डानि चामरव्यजनानि च २९ आसनानि च हेमानि मृदू पस्तरणानि च ॥ मुक्तादामा विलम्बीनि वितानानि द्युमानि च ३० स्वच्छस्फटिककुडयेषु महामारकतेषु च ॥ रत्नदीपान् भ्राजमानानि ललनारत्नसंयुतान् ३१ विलोक्य ब्राह्मणस्तत्र समृद्धाः सर्वसम्पदाम् ॥ त

सुदामा की स्त्री दोनों देवस्वरूप होय गये २५ प्रेम करिकै चाहना जाके भई नेत्रन में आंसू आयगये ऐसी पतिव्रता जो सुदामा की स्त्री है सो पतिकू आये देखिकै नेत्र मूँदिकै बुद्धि करिकै बिचार करति भई कि नमस्कार करिबो योग्य है ऐसे निश्चय करिकै मन सूं आलिंगन करत नमस्कार करति भई २६ जैसे विमान में वैदी देवी प्रकाशे है ऐसे धुकधुकी है कण्ठ में जिनके ऐसी दासीन के मध्य में प्रकाशमान अपनी स्त्री कू देखिकै सुदामाजी आश्चर्य मानत भये २७ प्रसन्न होयकै ता स्त्री कू सङ्ग लैके अपने मन्दिर में धसत भये कैसो मन्दिर है सैकडन मण्डन के स्तम्भ जामें लगे मानों इन्द्रको भवनहै २८ दूध के श्वेत भागन की तुल्य कोमल श्वेत विछौना जिनपै विछे ऐसे हाथीदाँत के सोने से जटित पल्लंग जा मन्दिर में विछे हैं और सरण की टाड़ी जिनमें ऐसे चपर पखा धरे हैं २९ कोमल हैं विछौना जिनमें ऐसी सुवर्ण की चौकी विछी हैं मोतिन की माला जिनमें लटकैं ऐसे प्रकाशमान चंदोबा तनि रहे हैं ३० निर्मल स्फटिक मण्डन की भीतें बनी हैं तिनमें और महामरकतमण्डन की भीतें हैं तिनमें खीरव्रसहित जा मन्दिर में रत्नन के दीवा प्रकाशित है ३१ ता मन्दिर में सब सम्पत्तिन की दृष्टि देखिकै स्थिर होयकै अक-

स्मात् भई जो अपनी सम्पत्ति है सो कहां तें आई ऐसे विचार करत भये ३२ सदाको दरिद्री भाग्यहीन जो मैं हूं ताके वढ़ो है वैभव जिनके ऐसे यादवन में उत्तम जो श्रीकृष्णचन्द्र है तिनकी चितवनि विना निश्चय और कोई या सम्पत्ति को कारण नहीं है ३३ जो कृष्ण ने चितवनि करिकै वही जो सम्पत्ति दीनी है सो मैं तोकूं देखूं हूं यह क्यों न कहि दीनी तहां सुदामा कहे हैं पूर्णमनोरथ लक्ष्मी के पति यातें बहुत हैं भोग जिनके ऐसे दशावयवोत्पन्न श्रेष्ठ जो भरे सखा श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो मागनवारे पुरुषन कूं कहे बिनाही बहुत सों धन देखें हैं आप देवे लायक जो वस्तु है ताय मेधकी तुल्य देखे हैं यामें तात्पर्य कहा निकस्यो जैसे सम्पूर्ण कूं भरि देइ ऐसो जो उदार मेघ है सो कभज एक बहुत वर्षा कूं थोड़ी मानिकै लाज के मारे दिनमें नहीं बरसे किन्तु रातिमें वर्षा करिके वाके खेत कूं डुबाय देय है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हू भोग वैभव के आगे ताभक्त के देवे लायक जे इन्द्रादिक पद हैं तिनें तुच्छ मानिकै और ता भक्त के भजन कूं बहुत मानि कै वाके बिना कहेही बहुतसी सम्पत्ति देखें हैं ३४ आप बहुत देखें ताय थोड़ो माने हैं और सुहृदन के थोड़े दिये को भी बहुत माने हैं मैं चावलनकी एकमुट्टी लोगो ताय महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र मसन

कैयामासनिर्व्यग्रः स्वसमृद्धिमहेतुकीम् ३२ नूनंवैतैतन्ममहुर्मगस्य शश्वदरिद्रस्यसमृद्धिहेतुः ॥ महाविभूतेस्वलोकतोऽन्योनैवोपपद्येतयदूतमस्य ३३ नन्ववृषाणोदिशतेसमक्षं याचिष्येभूर्यपिभूरिभोजः ॥ पर्जन्यवत्तत्स्वयमीक्षमाणोदाशाहंकाणामुपभःसखामे ३४ किञ्चित्करोत्युर्वीपियत्स्वदत्तं सुहृत्कृतं फलमपिभूरिकारी ॥ मयोपनीतं पृथुर्कैकमुष्टिं प्रत्यग्रहीत्प्रीतियुतो महात्मा ३५ तस्यैवमेसौहृदसख्यमैत्रीदास्यं पुनर्जनमनिजन्मनिस्यात् ॥ महाऽनुभावेनगुणालयेन विपज्जतस्तत्पुरुषप्रसङ्गः ३६ भक्तायचित्राभगवान्हिमम्पदोराज्यंविभूतीर्नसगर्ह्यत्यजः॥ अदीर्घवोधायविचक्षणःस्वयं पश्यन्निपातंधनिनामदोद्भवम् ३७ इत्थंयवासितोबुद्ध्या भक्तोऽतीवजनार्दने ॥ विपयाज्ञाययात्यक्षयन् बुभुजेनातिलम्पटः ३८ तस्यैवैदेवदेवस्य हरेर्यज्ञपतेःप्रभोः ॥ ब्राह्मणाःप्रभवोदैवं नतेभ्योविद्यतेपरम् ३९ एवंसविप्रो भगवत्सुहृत्तदा दृष्ट्वास्वभृत्परैरजितं पराजितम् ॥ तच्छानेवगोदग्रथितात्मबन्धनस्तच्छामलेभेऽचिरतःसतां

होयकै लेतभये ३५ श्रीकृष्णको भक्तन पै हित देखिकै तिनकी भक्ति कूं मागे है श्रीकृष्णचन्द्र मूं मेरो प्रेम सख्यभाव मित्रता दास्यभाव जन्म जन्ममें होउ और मोकूं कछु धन दौलत नहीं अपेक्षित है वढ़ो है भाव जिनको और सम्पूर्ण हैं गुण जिनमें ऐसे श्रीकृष्णको और तिनके भक्तन को सत्सङ्ग होय ३६ क्यों जी भक्तिको फल सम्पत्ति पायकै फेरि क्यों भोगो हौ तहां सुदामा कहे है प्यारो है ज्ञान जाकूं ऐसे भक्तकूं भगवान् श्रीकृष्ण अनेकप्रकार की सम्पत्ति नहीं देइ हैं ऐश्वर्य स्त्री पुत्रादिक नहीं देइ हैं क्यों भगवान् विवेकी हैं भक्त अज्ञानी हैं धनवान् पुरुषकूं नरक होय है यह आप देखें हैं भरे भक्ति नहीं रही यातें सम्पत्ति भई है यातें उनकी भक्ति मैं मांगूं हूं ३७ या प्रकार बुद्धिमूं निश्चय जाने कियो और श्रीकृष्णको अत्यन्त भक्त ऐसो सुदामा है सो विपयनकूं सहजमें त्यागिने को अभ्यास करत स्त्री के सङ्ग भोग करतभयो विपयन में अति आसक्त नहीं होतभयो ३८ श्रीकृष्णचन्द्र ब्रह्मभक्त है यामें कुब आश्चर्य नहीं यह कहे हैं देवन के देव पाप के हरनवारे यज्ञ के पति समर्थ ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके ब्राह्मणन को भाव है तथा स्व देवता हैं तित ब्राह्मणन तें परे और कोई देवता नहीं है ३९ या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को मित्र जो सुदामा ब्राह्मण है सो औरनपे

जीते न जायँ और मक्तन ने जीति लिये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूँ देखिकै तिनके ध्यान के वेगतेँ दूरिभयो है अहङ्कार जाको ऐसो जो श्रीकृष्णको घाम है ताय शीघ्रही पावत भयो ४० जो पुरुष या चरित्र कूँ श्रवण करै और ब्रह्मण्यदेव जो श्रीकृष्ण हैं सो ऐसे ब्राह्मण की भक्ति करै हैं ताय सुनिकै भगवान्में भक्ति कूँ पायकै कर्मनको वन्धन जो ससारहै तान् छूटिजाय है ४१ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपियादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेपृथुकोपाख्याननामैकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

(द्व्यंशीतितमआगन्त्यकुरुतेचरविग्रहे ॥ दृष्णनिदृष्टमुदाभूपाख्यकुण्डकथाभिः १ श्रीदामसुहृदेकृष्णः प्रकलयैन्द्रपदंभुवि ॥ नन्ददिमुहृदानन्दीकुरुतेचरविग्रहमसः २ वयासीवै अर्धमायमें सूर्य-ग्रहणमें कुरुतेचर को आकर राजा यादवनको देखकर आनन्दसूँ परस्पर कृष्णजीकी कथान कूँ करतेभये १ नन्दादिक सुहृदनेके आनन्द देनेवाले कृष्णजी सुदाया मित्रके लिये पृथ्वीपर इन्द्रके पद को अच्छी प्रकार देकर कुरुतेचर को जातेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित! याके पीछे द्वारकापुरी में वासकरैं ऐसे जे राम कृष्णहैं तिनकूँ एकसमय जैसो प्रलयमें तैसो सर्वप्रास

गतिम् ४० एतद्ब्रह्मण्यदेवस्य श्रुत्वाब्रह्मण्यतानरः ॥ लब्धभावोभगवतिकर्मवन्धाद्विमुच्यते ४१ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धे पृथुकोपाख्याननामैकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथैकदाद्वारवत्यां वसतोरामकृष्णयोः ॥ सूर्योपरागः सुमहानासीत्कल्पक्षयेयथा १ तंज्ञात्वामनुजाराजन् पुरस्तादेवसर्वतः ॥ स्य मन्तपञ्चकक्षेत्रं ययुः श्रेयोविधितसया २ निःक्षत्रियांमहीकुर्वन् रागः शस्त्रभृतांवरः ॥ नृपाणांरुधिगौघेण यत्रचकेमहाद्वदान् ३ ईजेचभगवान्नामोयत्रास्पृष्टोऽपिकर्मणा ॥ लोकस्यग्राहयन्नीशोयथाऽन्योघापनुत्तये ४ महत्यांतीर्थयात्रायां तत्रागन्भारतीः पूजाः ॥ वृष्णयश्चतथाऽकूः वसुदेवाहुकादयः ५ य शुर्भारततक्षेत्रं स्वमघंक्षपयिष्णवः ॥ गदप्रभुम्रसाम्बाद्याः सुचन्द्रशुकसारणैः ६ आस्तेऽनिरुद्धोरक्षायां कृतवर्मार्चयूथपः ॥ तेरथैर्वैविध्याभिर्यैश्चैश्चरलक्ष वैः ७ गजैर्नदद्भिरभ्रैर्नैर्भिर्विद्याधराभ्यः ॥ व्यरोचन्तमहातेजाः पथिकाश्चनमालिनः ८ दिव्यस्रग्वस्त्रसन्नाहाः कलत्रैः खेचरादिव ॥ तत्रस्तात्त्वामहा

जो बड़ो सूर्य को ग्रहण है सो आवतभयो १ हे राजन् परीक्षित! ज्योतिपीनतेँ वा ग्रहणकूँ पहिलेही जानिकै मनुष्य सब ओरते दान पुण्य स्नान करिवे के निमित्त कुरुतेचर कूँ जातभये २ शस्त्रन के धारण करनवारेन में श्रेष्ठ जो परशुरामजी हैं सो नहीं रहे हैं क्षत्रिय जामें ऐसी पृथ्वी कूँ करिकै राजान के सधिर सूँ जा कुरुतेचर में बड़े सरोवर करतभये ३ नहीं लग्यो है पाप जिनकूँ ऐसे समर्थ भगवान् परशुरामजी अपने पाप दूर करिवे के लिये जैसे अज्ञानी पुरुष यज्ञकरे है तैसे लोकन के सिखाइवे के लिये जा कुरुतेचर में यज्ञ करतभये ४ बड़ीरु जो तीर्थयात्रा है तामें भरत-खण्ड की प्रजा आवति भई तैसेही दृष्टि अकूर वसुदेव और आहुक कूँ आदि लोक जे यादव हैं ते ५ हे भरतशोतबन राजा परीक्षित! अपने अपने पाप दूर करिवे के लिये ता कुरुतेचर में आवत भये गद प्रभुस्र साम्ब कूँ आदि लोक जे श्रीकृष्ण के पुत्रहैं ते जातभये और सुचन्द्र शुक सारण सहित ६ अनिरुद्ध और कृतवर्मा यूथपाल ये दोनों द्वारकापुरी की रक्षा करिवे के लिये रहत

भये बढ़ो है तेज जिनको सुवर्ण की माला और दिव्य फूलनकी माला वस्त्र धारण करे ऐसे जे यादव हैं ते देवतानके विमान की तुल्य है प्रकाश जिनमें ऐसे रथनमें और जलकी तरङ्ग जैसे उठे ऐसी है चाल जिनकी ऐसे वोडान पे और वादन कीसी है कान्ति जिनकी ऐसे शब्द करते हुये हाथीन के ऊपर विद्याधरन कीसी है कान्ति जिनकी ऐसे सिंघाहीन सहित मार्ग में ऐसे देवाङ्गनान सहित आकाश में देवता सुन्दर लगे हैं ऐसे सुन्दर लगतभये बढ़ो है भाग्य जिनको बहुत सावधान ऐसे यादव कुरुक्षेत्र में व्रत स्नान करिके ७। ८। ९ वस्त्र और फूलन की माला सुवर्ण की मालान कूं पहिरे ऐसी गौ ब्राह्मणन कूं दान करिके देतभये यादव हैं ते परशुरामजी ने करे जे सरोवर हैं तिनमें और दिन अथवा बाही दिन फिर स्नान करिके १० श्रीकृष्णचन्द्र में हमारी भक्ति होय यह सङ्कल्प करिके ब्राह्मणन ने आज्ञा जिन कूं करी ऐसे कृष्णही हैं देवता जिनके ऐसे जे यादव हैं ११ ते आय ययेच्छा भोजन करिके शीतल है छाया जिनकी ऐसे वृत्तन के नीचे बैठत भये ता कुरुक्षेत्र में आय जे सुहृद् सम्बन्धी नाते गोते के राजा हैं तिनें देखत भये १२ कौन कौन

भागा उपोष्य सुसमाहिताः ६ ब्राह्मणेभ्यो ददुर्बेनूर्वासः सशुक्रममालिनीः ॥ रामहृदपुत्रिविधिवत्पुनरास्त्यवृण्ययः १० ददुःस्वन्नोद्विजाग्रयेभ्यः कृष्णेनोभक्तिरस्तिवति ॥ स्वयञ्चतदनुज्ञातावृण्ययः कृष्णदेवताः ११ भुक्त्वोपविविशुः कामं स्निग्धञ्छायाङ्घ्रिपाङ्घ्रिपु ॥ तत्राऽऽगतां स्तेददृशुः सुहृत्सम्बन्धिनो नृपा न् १२ मत्स्योशीनरकौ सत्यविदर्भकुरुसृञ्जयान् ॥ काम्वोजके कयाचमद्रान् कुन्तीनानत्ते करलान् १३ अन्योश्चैवाऽऽत्मपक्षीयान् परांश्च शतशो नृप ॥ नन्दादीन् सुहृदो गोपान् गोपीश्रोतकण्ठिताश्चिरम् १४ अन्योऽन्यसंदर्शनहर्परहसा प्रोत्सृष्टहृदक्कसरोरुहश्रियः ॥ आश्लिष्य गार्होदयनयनैः स्रजजलाहृष्यत् चोरुद्धगिरो ययुर्मुदम् १५ स्त्रियश्च संवीक्ष्य मिथोऽतिसौहृदस्मितामलापाङ्गदृशोऽभिरेभिरे ॥ स्तनैः स्तनान् कुङ्कुमपङ्कूरूपितान् निहत्य दोर्भिः प्रणयाश्रुलोचनाः १६ ततोऽभिवाद्याने वृद्धान् यविष्ठैरभिवादिताः ॥ स्वागतं कुशलं पृष्ट्वा च कुङ्कण कयां मिथः १७ पृथाभ्रातृन् स्वमूर्वीक्ष्य तत्पुत्रान् पितरावपि ॥ भ्रातृ

राजा हैं तिनको नाम लेय हैं मत्स्यदेश उशीनर कौसल विदर्भ कुरु सृञ्जय काम्वोज केकय मद्र कुन्ती आनर्त केरल इन देशन के राजान कूं १३ और अपनी ओर के राजा हैं तिन कूं और सैकरान राजा हैं तिन कूं हे राजन् परीक्षित्! सम्पूर्ण यादव देखत भये और नन्दजी सँ आदि लैं जे जो हितकारी गोप हैं तिनें और बहुत दिनतें कृष्णदर्शन की चाहना जिनके लगि रही ऐसी जे गोपी हैं तिनें देखत भये १४ परस्पर दर्शन जो भयो तासू जो आनन्द उमड़यो तासूं फूले हैं हृदय और मुत्तकमल जिनके ऐसे जो यादवन के भले प्रकार मिलिके नेत्रनमें तें आंसू बहे और देहमें रोमांच होय आये कण्ठ रुक गये या प्रकार बहुत आनन्द कूं पावत भये १५ अस्यन्त स्नेह करिके जो मुसिकानि तासूं निर्मल है कटाक्ष करिके टपि जिनकी और स्नेहके आसू हैं नेत्रन में जिनके ऐसी स्त्री हैं ते स्त्रीन कूं देखिके केसर जिन में लगी ऐसे स्तनन कूं स्तननतें लगायकें भुजान तें आपुस में मिलति भई १६ छोटिन ने दण्डयव जिनकूं करी ऐसे जे यादव है ते वृद्धन कूं प्रणाम करिके भले आये प्रसन्न हो ऐसे कुशल पूछि है आपुसमें कृष्णकी कथा कूं पूछत भये १७ कुन्ती है सो भय्या बहिनि यतीजे माता और भव्यान की स्त्री इन सबकूं

देविकै और मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र कूँ देखिके आपुस में प्रेम की बात चीत करिके नेत्रनतें आंसूनकूँ छोड़ति भई १८ अब कुन्ती बोली हे श्रेष्ठ भटया ! नहीं भये हैं पूर्ण मनोरथ जाके ऐसी मैं आत्मा कूँ मादूँह जो कारण ते आपत्ति परे हैं तब श्रेष्ठ जो तुम हो सो मेरी बातको स्मरण भी नहीं करो ही १९ जाको देव सृष्टो नहीं है वा स्वजन को सुहृद् हैं ते और जातिके हैं ते पुत्र भटया माता पिता ये स्मरण नहीं करे हैं २० अब वसुदेवजी कहे हैं देवहिनि ! देवके खिलौना हम मनुष्य हैं तिन दोष मति लगावो लोक ईश्वर के अर्थीन होयके कर्म करे है अथवा ईश्वरही कर्म क रावे है २१ हे देवहिनि ! कंस के सताये जो हम सब ते दशो दिशान में चलेगये अवर्षों फेरि दैवले घर में बसाये हैं २२ अत्र श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! वसुदेव उग्रसेनादिक यादवन ने पूजा जिन की करी ऐसे जे राजा हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र को भले प्रकार दर्शन करिके परमानन्दकूँ पावत भये २३ भीष्मपितामह द्रोणाचार्य अम्बिका को पुत्र धृतराष्ट्र तैसेही पुत्रन सहित

पत्नीमुकुन्दश्च जहौं मङ्गलयाशुचः १८ ॥ कुन्त्युवाच ॥ आर्यभ्रातरहं मन्ये आत्मानमकृताशिपम् ॥ यद्वा आपरमुमदात्तां नानुस्मरथसत्तमाः १९ सुहृदो

ज्ञातयः पुत्राभ्रातरः पितरावपि ॥ नानुस्मरन्ति स्वजनं यस्य दैवमदक्षिणम् २० ॥ वसुदेव उवाच ॥ अम्बमास्मानमूयथा दैवकीडनकान्नरान् ॥ ईशस्य द्विवशे

लोकः कुरुते कार्यतेऽथवा २१ कंसप्रतापिताः सर्वे वयं यातादिशोदश ॥ एतर्ह्येव पुनः स्थानं दैवेनाऽऽसादिताः स्वसः २२ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ वसुदेवोऽग्रे

नार्द्यैर्यदुभिस्तेऽर्चितानृपाः ॥ आसन्नच्युतसन्दर्शपमानन्दनिर्वृताः २३ भीष्मो द्रोणोऽभिमकापुत्रो गान्धारीससुना तथा ॥ सदाराः पाण्डवः कुन्ती सृञ्ज

यो विदुरः कृपः २४ कुन्तिभोजो विराटश्च भीष्मको नग्नजिन्महान् ॥ पुरुजिद्वृद्धपदः शल्यो दृष्टकेतुः सकाशिराट् २५ दमघोषो विशाखाक्षौ मैथिलो मदकेकयौ ॥

युधागन्युः सुशर्मा च समुतावाहिकादयः २६ राजानो ये च राजेन्द्र युधिष्ठिरमनुव्रताः ॥ श्रीनिकेतं वपुः शौरैः सखी कंवीक्ष्य विश्विस्मताः २७ अथ ते रामकृष्ण

भ्यां सम्यक् प्रसप्तमर्हणाः ॥ प्रशशंसुर्मुदायुक्ता वृष्णीन् कृष्णपरिग्रहान् २८ अहो गोजपतेयं जन्मभाजो नृणां मिह ॥ यत्पश्यथा सत्कृष्णं दुर्दर्शमपि यो

गिनाम् २९ यद्विश्रुतिः श्रुतिनुते दमलं पुनाति पादावने जनपथश्च वचश्च शास्त्रम् ॥ भूः कालभर्जितभगाऽपि यद्विपद्मस्पर्शोऽत्यशक्तिरभिवर्पति नोऽखिलायां

गान्धारी स्त्रीन सहित पाण्डव कुन्ती सृञ्जय विदुर कृपाचार्य २४ कुन्तिभोज राजा विराट भीष्मक और बड़े नग्नजित् पुरुजित् दुपद शल्य काशी के राजा सहित धृष्टकेतु २५ बड़े हे नेत्र

जाके ऐसो राजा दमघोष मिथिलापुरी को राजा मद्रदेश को राजा और केकयदेश को राजा युधामन्यु सुशर्मा और पुत्रन सहित बाहिकादिक हैं ते २६ हे राजान के इन्द्र राजा परीक्षित !

महाराज युधिष्ठिर के आज्ञाकारी जे राजा हैं ते सम्पूर्ण रानीन सहित सुन्दर जो श्रीकृष्ण को रूप है ताव देविके आरच्य मानत भये २७ दर्शन करे पीछे रामकृष्ण तें भले प्रकार मात भयो है

सत्कार जिनकूँ ऐसे जे राजा हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र हैं मुख्य जिनमें ऐसे यादवन की सप्त प्रशसा करत भये २८ योगीजननकूँ दुर्लभ है दर्शन जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको सर्वदा तुम दर्शन करो ही

याही ते भोजवंशीन के पालन करन वारे राजा उग्रसेन या संसार के मनुष्यन में सफल जन्माही २९ श्रुति जिनकी स्तुतिकरें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की कीर्ति और चरणारविन्द के धोवन को जल गंगा



मुखारविन्द वी वचनरूप वेद ये या विश्व कू अत्यन्त पवित्र करे हैं काल करिके दग्ध है गाहात्म्य जाको ऐसी भी पृथ्वी जिन श्रीकृष्णचन्द्र के चरणमल के स्पर्श तें प्रकट भई है शक्ति जामें ऐसी होय कै हृषीकेश चारथो ओरतें सम्पूर्ण कापनानक पूर्ण करे हैं ३० तिन श्रीकृष्णचन्द्र को तुम दर्शन करोहो स्पर्श करोहो पीछे चलोहो वात चीत करो हो संग सोचोहो वैठोहो भोजन करोहो और श्रीकृष्णचन्द्र के संग तुम्हारे विनाशदि सम्बन्ध होय है और देह सम्बन्ध होय है प्रवृत्तिमार्गमें रहो जो तुमहो तिनके घरनमें स्वर्ग मोक्ष दोनोनकी चाहनाकू दूरि करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तुम्हारे घरनमें आप विराजमान हैं याही तें तुम सफल जन्माहो ३१ अथ श्रीशुकदेवजी कहै है हे राजनगरीचिन्त ! नन्दरायजी ता कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्णचन्द्र कू आदि लैके जे यादव है तिनकू आये जानि कै गोपनसहित और गाढान में लदी जे वस्तु है तिन सहित देखिवे के लिये यादवन के पास आवत भये ३२ बहुत दिनान तें दर्शन जो न भयो तासू कायर है चित्त जिनके ऐसे यादवहैं ते नन्दरायजीके दर्शन करिके जो आनन्द भयो तासू देहमें प्राण आये तें जैसे हाथ पाव उठे हैं ऐसे उठिके भले प्रकार मिलत भये ३३ वसुदेवजी नन्दरायजी सँ मिलिके प्रसन्न होयकै मेममें दिहल

च ३० तदर्शनस्पर्शनानुपपन्नप्रज्जलपश्यासनाशनसंयोनसपिशुडबन्धः ॥ येषां गृहे निरयवर्ग निवर्त्ततां वः स्वर्गापवर्ग विरमस्वयमासविष्णुः ३१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ नन्दस्तत्र यदूच प्राप्ताञ्ज्वात्वा कृष्णपुरोगमा च ॥ तत्राऽऽगमद्वुनोगोपैरनस्थार्थो दिदृक्षया ३२ तं दृष्ट्वा कृष्णयो हृष्टास्तन्वाणामिवोत्थिताः ॥ परिपस्वजिरेगाढं चिरदर्शनकातराः ३३ वसुदेवः परिष्वज्य सम्भीतः प्रेमविह्वलः ॥ स्मरन् हंसकृतान्क्लेशान् पुत्रन्यासं च गोकुले ३४ कृष्णरामौ परिष्वज्य पितरा वभियाद्य च ॥ न किञ्चनोचतुः प्रेम्णा साश्रुकण्ठौ कुरूदह ३५ तावात्गासनमारोप्य बाहुभ्यां परिभ्रम्य च ॥ यशोदा च महामागा सुतौ विजहतुः शुचः ३६ रोहिणी देवकी चाथ परिष्वज्य ब्रजे श्वरीम् ॥ स्मरन्त्यौ तत्तृतामैत्रौ वाष्पकण्ठ्यौ समूचतुः ३७ काविस्मरेत वामैत्रीमनिवृत्तान् ब्रजे श्वरि ॥ अत्राप्यैन्द्रमैश्वर्यं यस्यानेह प्रति क्रिया ३८ एतावदृष्टपितरौ युवयोः रम्यपित्रोः सम्पीणनाभ्युदयपोषणपालनानि ॥ ग्राप्योपतुर्भवति पक्ष्महयदृक्षोऽन्यस्नावकुत्र च भयौ न स तांपरः स्वः ३९ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ गोप्यश्च कृष्णमुपलभ्य चिरादभीष्टं यत्प्रेक्षणे दृशिषु पक्ष्मकृन्तनं शपन्ति ॥ दृग्भिर्दृष्टतमलं परिरभ्य सर्वान् स्तद्भावमापुर

होत भये और कंसने जे वष्ट दिये तिनकू और गोकुल में जायकै श्रीकृष्णचन्द्र कू पहुँचाय आये ताको स्मरण करत भये ३४ हे कौरवन कू आनन्द के देनेवारे राजा परीक्षित ! कृष्ण बलदेव हैं ते माता पिता जां नन्द यशोदा हैं तिनसँ मिलिके पूणाम करिके प्रेमविह्वल भये आमुन तें कण्ठ जो रुँकि गयो तातें कलु भी न बोलत भये ३५ वड़ोहै भाग्य जाको ऐसी यशोदा और नन्दजी पुत्र जे कृष्ण बलदेव हैं तिनकू अपने आसन पै बैठाय कै मुजानेँ आलिंगन करिके नेनन तें आंसू बहावत भये ३६ पीछे रोहिणी और देवकी है ते व्रजकी रानी यशोदा सँ मिलित हैं और यशोदाने करी जो मित्रता है ताको स्मरण करिके आंसू कण्ठमें भरिके यह कहति भई ३७ हे व्रजकी रानी ! जाको वदलो न होइ सकै ऐसी तुम्हारी मित्रता कू जौन भूलै इन्द्रको पेरवश्य पायकै या संसार में तुम्हारी मित्रताको वदलो नही होय सकै है ३८ हे यशोदे ! नहीं देखै माता पिता जिनने ऐसे गे कृष्ण बलदेव हैं ते तुम जो माता पिताहो तिनके पास राखे तब तुमसँ प्यार करिकै बहिनो गोपण मालन

हे तिन पायकै निर्भय तुम्हारे पास दास करत भये जैसे पलक नेत्रन की रक्षा करै ऐसे तुमने इनकी रक्षा करी यह तुमकुं योग्यही है क्यों साधुनकुं यह अपनो यह विरानो एतादृश बुद्धि नहीं होय है ३६  
अथ श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित ! श्रीकृष्णचन्द्र के देखत समय आखिनमें पलक लगायकै जो अन्तराय करै हैं ऐसे विव्रता कू गोपी गारी देय हैं बहुत दिननत आशा जिनकुं लागि रही ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकुं पायकै गोपी नेत्रनकी रस्ता हृदयमें लोजायकै अत्यन्त आलिङ्गन करिकै योगारूढ़ योगीजननकुं भी दुर्लभ ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको भाव अर्थात् श्रीकृष्णरूप जो है ताकुं पावति भई ४० या प्रकार है भ्रम जिनको ऐसी गोपीन के पास एकान्तमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जायकै आलिङ्गन करिकै कुशल भूषिकै मुसिकायकै यह बोलत भये ४१ हे सखियो ! अपने जननके कार्य करिवेकुं गये हैं परन्तु शत्रुनके मारिये में है विच जिनको याही तें विलम्ब भयो ऐसे जो हम हैं तिनको कदाचित् स्मरण करोहो ४२ यह कृष्ण कृतघ्नी है यह शङ्का मानिकै कहा गोपियो तुम हमारी अवज्ञा करो हो मै कुछ भी नहीं करू हूं होनहारकुं करै ऐसो जो भगवान् ही संगोग और वियोग करै ४३ जैसे वायु वादरनके समूह कुं तृणकुं रुईकुं धूलिकुं उड़ायकै संयोग करै है और फेरि वियोग करै है तैसेही समस्त प्राणीन को उत्पत्तिकर्त्ता जो ईश्वर है सो सबकुं भिलावे है फेरि न्यारो न्यारो करिदेय है यामें मोकुं कहा दोष है ४४ प्राणीनकी जो भोमें भक्ति है

पिनित्ययुजांडुरापम् ४० भगवांस्तास्तथाभूताविविक्तउपसङ्गतः ॥ आश्लिष्यानामयंपृष्ट्वा प्रहसन्निदमब्रवीत् ४१ अपिस्मरधनःसख्यः स्वानामर्थचिकीर्षया ॥ गतोश्चिरायिताञ्शत्रुपक्षक्षपणचेतसः ॥ ४२ अप्यवध्यायथास्मान्स्विदकृतज्ञाविशङ्कया ॥ नूनंभूतानिभगवान् युनक्तिवियुनक्तिच ४३ वायुर्यथाघनानीकं तृणंतूलंरजांसिच ॥ संयोज्याऽऽक्षिपतेभूयस्तथाभूतानिभूतक्रतु ४४ मयिभक्तिर्हिभूतानाममृतत्वायकल्पते ॥ दिष्ट्वायदासीन्मस्नेहोभवतीनामदापनः ४५ अहं हिसर्वभूतानामादिरन्तोऽन्तरंरहिः ॥ भौतिकानांयथाखंवाभूर्वायुज्योतिरद्भुताः ४६ एवंह्येतानिभूतानिभूतानिभूतेष्वात्माऽऽत्मनाततः ॥ उभयमयथपरे पश्यताऽऽभातमक्षरे ४७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ अध्यात्मशिक्षयागोथयंप्रकृष्णेनशिक्षिताः ॥ तदनुस्मरणध्वस्तजीवकोशास्तमभ्यगन् ४८ आ

सोई जन्म और मृत्युसे छुड़ावे है तुरवारो भोमें स्नेहभयो याते मोकुं मास होउगी यह वड़ो मद्गल है ४५ कैसे तुमहो जिन स्नेह करिकै हम पावैगी ऐसी इच्छा जब गोपीनके भई तो अपना रूप कहे हैं हे गोपियो ! जैसे पञ्चभूतनके वने जे घटादिक हैं तिनके आकाश जल पृथ्वी वायु तेज ये आदिमें भी हैं और अन्तमें भी हैं याही प्रकार जेरेते हैं जन्म जिनको ऐसे मनुष्य और पशुतें आदिकैं और अपढान तें हैं जन्म जिनको ऐसे पत्नी इत्यादिक और पसीना तें हैं जन्म जिनको ऐसे खटपल जुआ इत्यादिक अर्थात् वृत्तादिक जे चार प्रकार के प्राणी हैं तिनके आदि में हूं और अन्तमें भी हूं भीतर बाहर हूं यातें व्यापक मैं हूं ता मोकुं प्राप्त भईहो ४६ यहां एक शङ्का है चारि प्रकारके प्राणी हैं तिनको भोक्ता जो आत्मा है सोई आदि अन्तमें है और व्यापक जो आत्मा है तांमें सम्पूर्ण प्राणी वास करै हैं तुम्हारी प्राप्ति हमें कैसे भई तहा कहे हैं जैसे घटादिकनके आदिमें भी हैं और अन्तमें भी हैं ऐसे चारिप्रकार के प्राणी अपने कारण ते भूत हैं तिनमें नते हैं भोक्ता आत्मामें नहीं रहे हैं आत्मा है सो देहनमें भोक्तरूप करिकै व्यापक है पञ्चभूतरूप जो भोग करिवे योग्य पदार्थ है ताथ और भोगको करनेवारो जो आत्मा है ताथ परिपूर्ण जो मैं हूं



चन्द्र की पूरासा करे हैं इतने में अन्धक और कौरवन की स्त्री हैं ते आपुस में गोविन्द की कथा हैं तिन कहति भई है राजन् परीक्षित् ! त्रिलोकीमें गाईं जे कथा हैं ते तुम्हारे आगे वर्णन कलं हूँ तुम श्रवणकरो ५ अब द्रौपदी कहे है हे विदर्भ देशके राजा की पुत्री ! हे सत्यभामा ! हे कालिन्दी ! हे शैव्या अर्थात् मित्रविन्दा ! हे रोहिणी ! हे लक्ष्मणा ! - हे सोलह हजार श्रीकृष्णचन्द्रकी रानियो ! स्वयं भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके अपनी माया सँ लोकनके लुल्य जैसे विवाह भये तैसे अपने अपने विवाह की बात हमारे आगे कहो ६ । ७ अब रुक्मिणी अपने विवाह की बात कहे हैं - जरासन्हादिक राजा हैं ते मोहिं शिशुपाल के विवाहवे के लिये घनुपूकू उठायकै जब आये ता समय जीतिवे में न आवैं ऐसे योद्धान के शिरपै चरण धरिकै श्रीकृष्णचन्द्र जैसे वकरीन के समूह में ते सिंह अपनी चलिंकू लेआवैं ऐसे लावत भये तिन श्रीकृष्णको लक्ष्मी जापें वासकरै ऐसो जो चरण है ताकी में पूजा कलं हूँ ८ सत्यभामा अपने विवाह की बात कहे हैं - भय्या भसेन कू सिंह ने मारयो तासू दुःखितहैं हृदय जाको ऐसो जो मेरा पिता सत्राजित् है ताने भय्या कलङ्क लगायो तब कृष्णजी जाम्बवान् को

कुर्वन्स्वमायया ७ ॥ रुक्मिरयुवाच ॥ वैद्यायमार्पयितुमुद्यतकाम्मुकेषु राजस्वजेयभटशेखरिताङ्घ्रिणः ॥ निन्येष्टुगेन्द्रइवभागमाविथयात्तच्छ्रानिके तचरणोऽस्तुममार्चनाय ८ ॥ सत्यभामोनाच ॥ योमेसनाभिवधतसहदातेनलिसाभिशापमपमार्ष्टुमुपाजहार ॥ जित्वर्क्षराजमथलमदात्सतेन भीतःपि ताऽदिशतमांप्रभवेऽपिदत्ताम् ९ ॥ जाम्बवत्युवाच ॥ ग्राह्नायदेहकृदसंनिजनार्थदेवं सीतापतिं त्रिनवहान्यमुनाऽभ्ययुव्यत् ॥ ज्ञात्वापरीक्षितउपाहरदहै णंमां पादौ भृगुह्यमखिनाऽहमभ्युदासी १० ॥ कालिन्द्युवाच ॥ तपश्चरन्तीमाज्ञाय स्वपादस्पर्शनाशया ॥ सख्योपेत्याऽग्रहीत्पाणिं योऽहन्तदगृहमाजं नी ११ ॥ भद्रोवाच ॥ योमांस्वयंवरउपेत्यविजित्यभूपात् निन्ये श्वयूगमिवात्मवल्लिद्विपारिः ॥ भ्रातृश्चमेऽपकुरुनस्वपुंश्रियौकस्तस्यास्तुमेऽनुभवमङ्गयवने जनत्वम् १२ ॥ सत्योवाच ॥ ससौक्षणोऽतिवल्गवीर्यमुतीक्ष्णशृङ्गात् पित्राकृतान्क्षितिपरीर्यपरिक्षणाय ॥ ताचवीरुधर्मदहनस्तरसांनिगृह्य क्रीडन्बन्धव्यहय

भीतकर मणि सत्राजित् को देते भये तासू भयभीत जो फरो पिता है ताने अक्रूरादिकन कू देनकही जो मैंही ताथ श्रीकृष्णचन्द्रही कू देत भयो ९ अथ जाम्बवती अपने विवाह की बात कहे हैं देश को उत्पन्न करनवारो जो मेरो पिता है सो श्रीकृष्णचन्द्र कू अपनो स्वामी ईश्वर सीता को पति नहीं जानिकै सत्ताईसदिन पर्यन्त श्रीकृष्णचन्द्र के सङ्ग युद्ध करे पीछे भई है परीक्षा जाकू ऐसो मेरो पिता सीताके पति दुष्टदेव जानिकै चरण पकरिकै स्पन्दनकमणिसहित मोकू श्रीकृष्णचन्द्र की सेवा करिवे के लिये देत भयो यह श्रवण करिकै द्रौपदी ने कही तुम चड़ी श्रेष्ठहौं तहां जाम्बवती कहे है मैं तो इनकी दासी हूँ १० अथ कालिन्दी अपने विवाह की बात कहे हैं - श्रीकृष्णचन्द्र के चरणस्पर्श की आशा करिकै तपकलं जो मैं हूँ ताको अर्जुन सहित जायकै हाथ पकसत भये मैं तिन श्रीकृष्णचन्द्र के घरकी बुहारी देनवारी हूँ ११ अथ भद्रा अपने विवाह की बात कहे हैं - लक्ष्मी जिनके वत्तःस्थल में वास करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र स्वयंवर में जाय के राजान कू जीतिकै और तिरस्कार करै ऐसे जे मेरे मरया हैं तिनैं भी जीतिकै हाथीन को शत्रु सिंह जैसे कुचान के बीच में अपनी बलिंकू लेआवैं ऐसे मोकू अपने पुरमें लावतभये तिन

श्रीकृष्णचन्द्रके चरण गोदने की सेवा मोहूँ जन्म जन्ममें भयो करै यह मेरी प्रार्थना है १२ अथ सत्या अपने विवाहकी बात कहे है-बड़ो है बल पराक्रम जिनमें बड़े पैने जिनके सींग और शूरवीरन के बड़े मदकूँ दूरि करनवारे राजानके पराक्रमभी परीक्षा लेवेके कारण भरे पिताने पाले ऐंमे जे सात वैलहैं तिनैं पकरिके जैसे बालक काष्ठकी दकरीके बखानहूँ बाधेहैं ऐसे सहजमें श्रीकृष्णचन्द्र बाधि लेतभयो १३ पराक्रमही है मोल जाको ऐसी धैहूँ ताय हाथी घोडा रथ प्यादेन सहित दासीन सहित जो भैं ताय मार्गमें क्षत्रियनकूँ जीतिके श्रीकृष्णचन्द्र या प्रकार लावतभये तिनको मोहूँ दास्यभाव होत यह मेरी प्रार्थना है १४ अथ मित्रविन्दा अपने विवाह की बात कहेहै-हे द्रौपदी ! मेरे मामाके पुत्र जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं बुलायके तिन श्रीकृष्णचन्द्रमें लग्योहैं मन जाको ऐसी जो भैं हूँ ताय मेरो पिता अक्षौहिणी सेना और सखियन सहित देतभयो १५ अनेक कर्मन करिके भटकूँ ऐसी जो भैं हूँ ताकूँ जन्म जन्ममें श्रीकृष्णचन्द्र के चरणकमल को स्पर्शहोय जा चरणारविन्द के स्पर्श ते मोक्ष है नाम जाको ऐसो कल्याण मोहूँ प्राप्तहोय यह मेरी प्रार्थना है १६ अथ लक्ष्मणा अपने विवाह की बात कहेहैं हे रानी द्रौपदी ! वारंवार नारदने गाये जे श्रीकृष्णचन्द्रके जन्म

थाशिशवोऽजतोऽकान् १३ यदर्थ्यीर्थशुलकाणां दासीभिरवतुगङ्गिणीम् ॥ पथिनिजित्यराजन्यान् निन्येतदास्यमस्तुमे १४ ॥ मित्रविन्दोवाच ॥ पिता मेमातुलोयाय स्वयमाहूयदत्तवान् ॥ कृष्णेकृष्णायतचिपामक्षौहिण्यासखीजनैः १५ अस्यमेपादसंस्पर्शोभवेज्जन्मनिजन्गनि ॥ कर्मभिभ्राम्यमाणा यायेनतच्छ्रेयआत्मनः १६ ॥ लक्ष्मणोवाच ॥ मगापिराश्यव्युतजन्मकर्मश्रुत्वामुहुर्नारदगीतमासह ॥ चिंचंसुकुन्देकिलपद्महस्तया वृतःसुसंमृश्यवि हायलोकपान् १७ ज्ञात्वामममतंसाधि पिताडुहितवत्सलः ॥ बृहत्सेनइतिख्यातस्तत्रोपायमचीकरत् १८ यथास्वयंवराज्ञि मत्स्यःपार्थेपसयाकृतः ॥ अ यंतुवाहिराच्छशोदृश्यतेसजलेपरम् १९ श्रुत्वैतत्सर्वतोभूपाआययुर्मपितुःपुरम् ॥ सर्वाक्षशस्त्रतत्त्वज्ञाः सोपाध्यायाःसहस्रशः २० पित्रासम्पजिताःसर्वे यथावीर्थ्ययथावयः ॥ आदङुःसशरंचापं वेडुंपर्पदिमद्धियः २१ आदायव्यमृजन्वकेचित्सज्यंकुर्त्तुमनीश्वराः ॥ आकोष्ठंज्यांसमुत्कृष्यपेतुरेक्रेऽमुनाहताः २२

कर्म हैं तिनैं श्रवण करिके जैसे मित्रविन्दा को चित लग्योहै ऐसे मेरो भी चित श्रीकृष्णचन्द्रमेंही लगतभयो कगलहै हाथमें जाके ऐसी जो लक्ष्मी है ताने लोकरपालन कूं त्यागिकै बरहैं याहीते मेरो चित श्रीकृष्णचन्द्र में लगतभयो १७ हे सुशीले द्रौपदी ! पुत्रीपै है हित जाको ऐसो जो बृहत्सेन नाम करिके विख्यात मेरो पिताहै सो मेरे मनकी बात जानिके श्रीकृष्णचन्द्रके आश्वके लिये उपाय करतभयो १८ हे रानी द्रौपदी ! जैसे तेरे स्वयंवर में अर्जुन के आश्वके लिये मत्स्य रच्योहो ऐसे मेरोहूँ पिता मत्स्य रचावतभयो यह सुनिके द्रौपदी कहेहैं फेरि अर्जुनही क्योंनो वेधतभयो तहां लक्ष्मणा कहे है तेरे स्वयंवरकी मखरीरही सो वाहर ते दहीरही भीतरते नहीं दहीरही याते स्वयंवर में लगाय के ऊपर कूं दृष्टि करिके देखे तें दिखाई देरही और भरे स्वयंवर की मखरी ऐसी नहींरही किन्तु स्वयंवरकी जड़मेंधरच्यो जो कलशहै ताके जलमें केवल परखाई दिसाई देरही देखिवो तौ नीचे जलमें और वेधिवो ऊपर ऐसी मखरीकूं श्रीकृष्णचन्द्रके विना कौन वेधिसकै १९ स्वयंवर रच्यो है यह बात श्रवण करिके सम्पूर्ण अक्ष शस्त्रनके तत्त्वके जाननवारे उपाध्याय अर्थात् सिखावनवारेन कूं सबलैकै हजारन राजा भरे पिताके पुरमें आवतभये २० ता समय जैसो जाको

पराक्रम और जैसी जाकी अवस्थारही तैसोही ताको पूजन मेरो पिता करतभयो मोहाँ में है बुद्धि जिनकी ऐसे राजा मत्स्य के वैधि के सभा में वाणसहित जो धनुष है ताय ग्रहण करतभये २१ कोई एक राजा है ते धनुष कूँ लेकर बढ़ानेही माँ असमर्थ होकर पटकतभये और कोई एक प्रत्यक्षा कूँ कोष्ठ पर्यन्त लौचिके धनुषकी चपेटतेही गिरतभये २२ और जे शरीर जरा सन्धश्चम्य वन्दे ली को राजा भीमसेन दुर्योधन कर्ण ये अपने अपने धनुष पै प्रत्यक्षा चढ़ाय कै कैसे मखरी लागी है यह भी जानिने कूँ न समर्थ होतभये २३ जल में मखरी की परछाई देखिकै जा विधि मखरी लगीरही सो जानिकै उणय को करनवारो जो अर्जुन है सो वाण चलावतभयो वाण मखरी के स्पर्शभयो परछा मखरी कटो नहीं यामें आयो कहा अर्जुन कूँ ज्ञान तो बड़ो परन्तु वल नहीं २४ सम्पूर्ण ज्ञानिय हरिकै वैठिरहे और अभिमानिनी के अभिमान दूरिभये ता समय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र धनुष कूँ लेकै लीलाही करिके प्रत्यक्षा चढ़ाय है २५ धनुष में वाण लगाय कै एकहीवार मखरी कूँ जल में देखिकै मध्याह्नमय अभिजित् नक्षत्र जन आयो अर्थात् सप्त कार्यन के सिद्ध करनवारो मुहूर्त्त में मखरी कूँ वाण सू काटिकै पटकतभये २६ स्वर्ग में देवतान के नगरे बजतयये पृथ्वी

सङ्घकृत्वाऽपरेवीरा मागधाम्पठचेदिपाः ॥ भीमोदुर्योधनः कर्णो नाविन्दस्तदवस्थितिम् २३ मत्स्याभासं जले वीक्ष्य ज्ञात्वा च तदवस्थितिम् ॥ पार्थोयत्तोऽमृजद्वारं नाञ्छिनत्तत्पट्टशेषम् २४ राजन्ये पुनिवृत्तेषु भग्नमानेषु मानिषु ॥ भगवान् धनुषादाय सङ्घं कृत्वाऽथलीलाया २५ तस्मिन् सन्धाय विशिखं मत्स्यं वीक्ष्य सः कृजले ॥ छिन्नेषुणाऽपातयत्तं मूर्ध्नि च ॥ भिजितिस्थिते २६ दिवि दुभयो नेदुर्जयशब्दयुताभुवि ॥ देवाश्च कुसुमासारां मुमुचुर्हर्षविह्वलाः २७ तद्गङ्गाविशमहं कलनूपराभ्यां पद्भ्यां प्रगृह्य कनकोज्ज्वलरत्नमालाम् ॥ नूले निवीय परिधाय च कौशिकाग्रये सम्रीडहासवदनाकवरीधृतसक् २८ उन्नीय चक्रमुरुक्तलकुण्डलत्विङ्गरुडस्थलं शिशिरहासकटाक्षमोक्षैः ॥ रात्रौ निरीक्ष्य पतितः शनैर्कैमुरैरेसेऽनुक्लहदयानिदधेऽस्वमालाम् २९ तावन्मुदङ्गपटहाः शङ्खभेदार्थानकादयः ॥ निनेदुर्नटनर्तकयोनन्तुर्गायिकाजगुः ३० एवं वृते भगवति मयेशेऽनुपश्रूयताः ॥ नसे हि रेयाज्ञमेति स्पृष्टं न्तो हृच्छयातुराः ३१

मांतावदथमारोग्यं हयरत्नचतुष्टयम् ॥ शार्ङ्गमुद्यम्य सन्नद्धस्तथावाजौ चतुर्भुजः ३२ दारुकरचोदयामास कावचोपस्करं रथम् ॥ मितपांभू सुजां रोजि मृगा में जयजय शब्द होतभयो देवता आनन्द में विह्वल होयकै बहुत पुष्पन की वर्षा करत भये ३७ लाज भरी है हंसनि जामें ऐसो जो मुग्न और चोटीमें माला गुहे ऐसी जो मैं हूँ सो नहीं रेशमी सुन्दर घोती उपरना पहिरि ओढ़िकै सुवर्णमें जड़ी जो रत्नकी माला है ताय हाथमें लैकै और मनोहर हैं नूपुर जिन में ऐसे चरणन करिकै द्वैपदी ! मैं रत्नभूमि में जात भई २८ श्रीकृष्णचन्द्र मैं है आसक्त हृदय जाको ऐसी जो मैं हूँ सो बड़ेई केश जामें और कुण्डलान करिकै शोभायमान हैं कपोल जामें ऐसे मुलक् उठायकै सन्तापको दूरि करनवारो है दास जिनमें ऐसे कटाक्षपूर्वक जे चितवनै हैं तिन करिकै राजानकूँ चाख्यो ओरतें देखिकै होले होले जायकै मुरारि जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके कन्यायै माला धरति भई २९ ता समय युदंग होल शङ्ख भेरी नगारे आदि लौकै वाजे हैं ते वज्रतभये नट और नृत्यकारी हैं ते नाचतभये और गवैया गावतभये ३० हे यज्ञसेन की पुत्री द्रौपदी ! याप्रकार मैंने भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जन वश करे तब ईर्ष्या जिनके भई काम करिके



आतुर ऐसे जे राजानके यूय हैं ते नहीं सहत भये ३१ सुन्दर चार घोड़ा जामें जुते ऐसी जो रथ हैं तामें वा समय वैठायकै शार्ङ्गधनुषकूं उठायकै कवच पहिरकै चार हैं भुजा जिनके ऐसे श्रीकृष्ण-चन्द्र सग्रापमें ठाढ़े होत भये ३२ हे रानी द्रौपदी ! रथवान है सो सुनहरी साजको जो रथ है ताथ हाकि देत भयो और जैसे भ्रमन के देखत सिंह चढ्योगाय ऐसे राजान के वीचमें राजानके देख-तेही जात भये ३३ कोई एक राजा हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र के मार्ग में रोकिये कूं आगे जायकै धनुष कूं जे सिहके रोकिये कूं कुचा ठाढ़ो होय ऐसे मार्ग में सावधान होय के ठाढ़े होत भये ३४ शार्ङ्गधनुष में ते निकसे जे बाणनके समूह तिनसूं कटी हैं भुजा पाव नारि जिनकी ऐसे कोई क्षत्रिय युद्धमें गिरत भये और कोई एक हैं ते संग्रामकूं छोड़िके भाजत भये ३५ ता पीछे यादवनके पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अत्यन्त शोभायमान जिनसूं सूर्य ढकिजाय ऐसे ध्वजानके वस्त्र जामें उड़े और चिरविचित्र वन्दनवार वैथी स्वर्ग और पृथ्वीमें स्तुति जाकी होय ऐसी द्वारकादुरी में जैसे सूर्य अस्ताचल में प्रवेश करत भये ३६ मेरो पिता है सो मित्र नातेन मोतेन कूं और वन्धुन कूं वेड़े मोलकें वस्त्र गहने शय्या आसन और जे साज है तिनसूं पूजन करत

णांमृगराडिव ३३ तेऽन्वसज्जन्तराजान्यानिपेठुं पथिकेचन ॥ संयचाउद्धृतेष्वासाग्रामसिंहायथाहरिस् ३४ तेशार्ङ्गच्युतबाणौघैः कृतवाह्विङ्गिकन्धशः ॥ निपेतुः प्रधनेकेभिर्देके सन्त्यज्यदुद्रुबुः ३५ ततः पुरीयदुपतिरत्यलंकृतां रविच्छदध्वजपटचित्रतोरणाम् ॥ कुशस्थलीदिविभुवित्राभिंसंस्तुतां समाविशत्तरणिशिवस्वकेतनम् ३६ पितामेपूजयामास सुहृत्सम्बन्धिवान्धवाच्च ॥ महाहंवासोऽलङ्कारैः शय्यासनपरिच्छदैः ३७ दारीभिः सर्वसम्पद्भिर्भटेभरथवाजिभिः ॥ आयुधानिगद्वाहीणि ददौ पूर्णस्य भक्तिनः ३८ आत्मारामस्य तस्येमावयवैर्गृहदासिकाः ॥ सर्वसङ्गनिवृत्त्याऽद्धातपसाचवभूविभ ३९ ॥ माहिष्यजुहुः ॥ भौमनिहृत्य सगणं युधिनेन रुद्धाज्ञात्वाऽथ नः क्षितिजयेजितराजकन्याः ॥ निर्मुच्य संसृतिविमोक्षमनुरमरन्तीः पादाम्बुजं परिखिनायय आशकाशः ४० नवयंसाधिवसाम्राज्यं स्वाराज्यं भौज्यमभ्युत ॥ वैराज्यपारमेष्ठ्यं च आनन्यं वाहरेः पदम् ४१ कामयामह एतस्य श्रीमत्पादरजः श्रियः ॥ कुचकुङ्कुमगन्धाढ्यं मू

भयो ३७ सम्पूर्ण सम्पत्ति है विद्यमान जिनके ऐसी दासी और प्यादे दारी रथ घोड़ान सहित और बहुत मोलके हथियारन सहित मोकं मेरो पिता परिपूर्ण जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें देत भयो ३८ ये आठों हम हैं ते आत्मामें रमण करें जे श्रीकृष्णचन्द्र तिनकी सब संगनकूं त्यागिकै अपनो धर्म करिकै साक्षात् धरकी दासी भयो चाहै हैं ३९ सोलह हजार रानी एकसे व्याही हैं याते एक सङ्ग अपने व्याह की बात कहैं हैं गणनसहित भौमासुर है ताथ युद्ध में मारिकै पीछे पृथ्वीकूं जीतता विरियां जीते जे राजा हैं तिनकी कन्या हम हैं तिनकूं भौमासुर ने रोक्य है यह जानिके संसार तें छुड़ावनवारी जो चरणारविन्द है ताथ स्पर्ण करें ऐसी हम हैं तिनें वन्दीसोने तें छुहाये वोही है कारण जिनके और फाह बात की इच्छा नहीं ऐसे भी श्रीकृष्णचन्द्र विवाहन भये ४० हे द्रौपदी ! हम चक्रवर्ती राज्य कूं नहीं चाहैं चक्रवर्ती राज्य और इन्द्रपद इनके भोगनको जो भोगिये है ताथ नहीं चाहैं अणिमादिक सिद्धिन कूं नहीं चाहैं और ब्रह्मलोक और मोक्ष तथा वैकुण्ठमाम इनकी चाहना नहीं करें हैं गदा के धारण करनकरे जो ये हैं तिनके लक्ष्मी के कुचनकी केसर जामें लगी ऐसी सुन्दर जो चरण की रज है ताथ माये के ऊपर चढ़ायने की चाहना

करे हैं ४१ । ४२ क्यों जी वहतो बड़ी दुर्लभ है वाय क्यों चाहती हो तहां कहे हैं जैसे ब्रजकी स्त्री वा राजकी चाहना करे हैं भीलिनो चाहना करे हैं वृन्दावन के तुण लता चाहना करे हैं गौवन कूं चरावै ऐसे महात्मा जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके चरणस्पर्श कूं गोप चाहना करे हैं ऐसे हमूं चाहना करे हैं श्रीकृष्णको जिनने आश्रय लियो तिनकूं वह रजसहज है ४३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धे उचरार्द्धे त्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

(चतुर्धिकाशीतितमे मुनिसमागमे ॥ बसुदेवपल्लोत्साहबन्धुप्रस्थापनादिकम् १ चौरासीवै अध्यायमें मुनियों के समागममें वसुदेवजी की यज्ञका उत्साह बन्धुओंका प्रस्थापन आदिक वर्णित है १) अब श्रीशुकदेवजी करे हैं हे राजन् ! परीक्षित वृद्ध कुन्ती सुवलकी पुत्री गान्धारी ताके पीछे यज्ञसेनकी पुत्री द्रौपदी सुभद्रा याके पीछे राजानकी स्त्री हैं ते और श्रीकृष्णचन्द्रकी भक्त सम्पूर्ण गोपी हैं ते सबके मस्कन्धे उचरार्द्धे त्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उचरार्द्धे त्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

श्रीशुकउवाच ॥ श्रुत्वा पृथामुत्तलपुत्रत्रययाज्ञमेनीमाधव्यथिक्षितिपत्न्यउतस्वगोप्यः ॥ कृष्णेऽखिलात्मनि हरौ प्रणयानुबन्धं सन्वाविसिस्स्युरत्नमश्रु कलाकुलाक्षयः १ इति सभाष्यमाणमुत्सीभिः स्त्रीपुनृभिर्नृपु ॥ आययुर्मनयस्तत्र कृष्णरामदिदृक्षया २ द्वैपायनो नारदश्च व्यवनो देवलोऽसितः ॥ विश्वा मित्रः शतानन्दो भगदाजोऽथ गौतमः ३ रामः सशिष्यो भगवान् वसिष्ठो गालवो भृगुः ॥ पुलस्त्यः कश्यपोऽत्रिश्च मार्कण्डेयो बृहस्पतिः ४ द्वितस्त्रितश्चैकतश्च ब्रह्मपुत्रास्तथाङ्गिराः ॥ अगस्त्यो याज्ञवल्क्यश्च वामदेवा द्योऽपरे ५ तान्दृष्ट्वा सहस्रोत्थाय प्रागामीनान् पुनः ॥ पाण्डवाः कृष्णरामौ च प्रणमुर्विश्ववन्दितान् ६ तानानर्ह्युत्थान् सर्वे सहस्रामोऽच्युतोऽर्चयत् ॥ स्वागता सनपाद्यार्घ्यमाल्यधूगानुलेपनैः ७ उवाच सुखमासीनान् च भगवान् धर्मगुप्ततुः ॥ सदसस्तस्य मह

आत्मा जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनमें रानीनको प्रेम सुनिकै नेत्रनमें आशू भरिकै बड़ो आश्चर्य मानति भई १ ता कुरुक्षेत्रमें या प्रकार स्त्रीनके सङ्ग स्त्रीवाते करै और पुरुषनके सङ्ग पुरुष वाते करै इतने में श्रीकृष्णचन्द्र और वलदेवजीके दर्शन करिने के लिये मुनि आवात भये २ अब जो ऋषि आये तिन कहे हैं वेदव्यास नारद च्यवन देवल असित विश्वामित्र शतानन्द भरद्वाज गौतम ३ शिष्यन सहित भगवान् परशुराम वशिष्ठ गालव भृगु पुलस्त्य कश्यप अत्रि मार्कण्डेय बृहस्पति ४ द्वित त्रित एकत तैसही ब्रह्माके पुत्र अंगिरा अगस्त्य याज्ञवल्क्य तथा वामदेव ते आदि लैके और मुनि हैं ते सम्पूर्ण आवात भये ५ विश्व जिनकूं प्रणाम करै ऐसे मुनिनकूं आये देखिकै राजान ते आदिलैके जे प्रथम बैठे हैं ते और पाण्डव अर्थात् महाराज युधिष्ठिरादिक हैं ते तथा श्रीकृष्णचन्द्र वलदेव जी ये सम्पूर्ण शीघ्रही उठकर प्रणाम करत भये ६ तिन मुनिनको यथायोग्य सम्पूर्ण पूजन करत भये और वलदेव सहित श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो मले आये ऐसे मुनिनकूं कहिकै आसन दैके पात्र आर्घ्य पुष्प धूप दीप चन्दन इन करिकै पूजन करत भये ७ चुप होयकै सङ्पूर्ण जागे बैठे ऐसे सभामें धर्मकी रक्षा करनवारी है मुनि जिनकी ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सुखपूर्वक बैठे जे ब्राह्मण हैं

तिनसूं बोलत भये ८ अथ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे है—अहो बड़ो आश्चर्य है हम सफ नज्मभये सब जन्मको साफल्य हगहूँ मासभयो देवतान कूं भी दुष्टभ ऐसे योगेश्वरन को दर्शनभयो ९ ती प्रेमान करनो याहीकू तपजाने केवल प्रतिपादी कूं देवतादेसैं ऐसे मनुष्यनकूं योगेश्वरन कूं दर्शन स्पर्शन कूं प्रश्न शिरसों नमस्कार चरणनको पूजन आदिक करियो ये कहा मिले हैं १० जलभय तीर्थ नहीं हैं सो नहीं है सो नहीं है बहुत दिन देवतानकी पूजाकरै तबपविन करै और साधु महात्मा दर्शनहीं पवित्र करे हैं ११ अग्नि सूर्य चन्द्रमा तारागण पृथ्वी जल आकाश पवन वाणी मन ये सेवनकरेते भी इन भेदबुद्धि करिके देले है ऐसे पुरुषके अज्ञान कूं दूरि नहीं करे हैं और विवेकी पुरुषहैं ते दो यहीकी सेवा करतेही अज्ञान कूं दूरि करि देईहैं १२ बात पित्त श्लेष्म इन तीनि धातुन को रच्यो जो देह है ताथ आत्मा जाने हैं और सौ आदिहून में आत्मबुद्धि मानें तथा पृथ्वी को विकार जे प्रतिमा है तिनमें जा पुरुष की

तोयतवाचोऽनुश्रुयतः ८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अहोवयं जन्मभृतो लवंगकारस्यै न तत्फलम् ॥ देवानामपि दुष्पापं यद्योगेश्वरदर्शनम् ९ किं स्वल्पतपसां नृणां मर्चायै दिवचक्षुषा ॥ दर्शनस्पर्शनप्रश्नप्रदपादार्चनादिकम् १० न ह्यस्मयानितीर्थानि न देवामृच्छलाभयाः ॥ ते पुनन्त्युरुक्तालेन दर्शनादेव साधवः ११

नाग्निर्न सूर्यो न च चन्द्रतारकानभूर्जलं श्वसनोऽथ वाह्यनः ॥ उपासिता भेदकृतो हरन्त्येवं विपश्चितो घ्नान्ति मुहूर्त्तसेवया १२ यस्यात्मा बुद्धिः कुणपे त्रिधा तु के स्वधीः कलत्रादिपुष्पौ मण्डयधीः ॥ यत्तीर्थबुद्धिः सलिलेन कर्हि विज्जनेष्वभिज्ञे पुष्पपूजगोबरः १३ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ निशम्यैरथं भगवतः कृष्णस्याकुण्ठमेधसः ॥ वचोदुरन्वयं विप्रास्तूष्णीमासनस्रमद्वियः १४ चिरं विमृश्य मुनय ईश्वरस्येशितव्यताम् ॥ जनसंग्रह इत्युचुः स्मयन्तस्तं जगद्गुरुम् १५ ॥ मुनय ऊचुः ॥ यन्मायाया तत्त्वविदुत्तमात्रयं विमोहिता विश्वमृजामधीश्वराः ॥ यदीशिन व्यायति गूढ ईहया अहो विचित्रं भगवद्विचेष्टितम् १६ अनीह एतद्बहु

धैक आत्मना मृजयत्यति नवद्वयेन यथा ॥ भौमैर्हि भूमिर्वहुना मरूपिणी अहो विभूषमश्रितं विदुस्त्वनम् १७ अथापि काले स्वजनाभिगुप्तये विभर्षि सत्त्वं खल यद्ब्रूनाकारिणे योग्य देवताहैं ऐसी बुद्धि है और जलकूं तीर्थ मानें और विवेकी पुरुषनमें भाव नहीं राखें ऐसे पुरुषगोंके चारो ढोवनवारे गथाहैं १३ अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! नहीं मन्द है बुद्धि जिनकी ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को दुरन्वय वचन श्रवण करिके भ्रमयुक्त हैं बुद्धि जिनकी ऐसे ब्राह्मण झुप होत भये १४ ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र को कर्मनमें जो अधिकार है ताथ बहुत देर पर्यन्त विचारिके जननकी शिज्ञा के लिये हमारी स्तुति करे हैं या प्रकार मुनीश्वर मुसिकाय के जगत्के गुरु जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनसूं बोलत भये १५ तत्त्वके जाननवारनमें उत्तम और विश्व के रचनवारे जो ब्रह्मादिक हैं तिनके ईश्वर ऐसे जे हमहें ते जिनकी माया करिके मोहित भये मनुष्यरूप धारिके मनुष्यन कैसे कर्म करो हौ कदाचित् कहो कि मैं ईश्वर हू तो कर्म क्यों करूं हू तथा कहे हैं तुम्हारी चेष्टा विचारिवें नहीं आवै है १६ चेष्टा न करो अर्थात् हाथ पांयन कूं न चलावो ऐसे जे एक तुमहो सो अपने आत्मा करिके या विश्वकूं बहुत प्रकार उत्पत्ति पालन और सशर करो हौ जैसे पृथ्वी है सो घटादि विकारन करिके बहुत नाम जाके ऐसी होय है कदाचित् कहो कि मैं कैसे उत्पत्ति पालन सशर करूं हूँ तो वसुदेव को पुत्र हू तथा कहे हैं परिपूर्ण

जो तुमहो तिनको वसुदेव के घर जन्म है यह विचित्र लीलागात्र है सत्य नहीं है १७ समयगै अपने भक्तन की रक्षा करिवे के लिये और दुष्टन के दण्डदेवे कूं शुद्ध सतीगुणी रूप कूं धारण करो हो और आप अपनी लीला करिके सनातन जो वेदमार्ग है ताय प्रवृत्त करो हो जो तुम काहू के पुत्र नहीं हो तो भी चारि वर्ण और चारि आश्रम इनके आत्मा परमपुरुषहो याही तें ब्राह्मणन को बहुत सत्कार करो हो यह कहे हैं १८ शुद्ध जो वेदहैं सो तुम्हारो भीतर को रूणहैं तप करिवो वेदको पढ़िवो इन्द्रियनको रोकिवो इन करिके कार्य और कारण दोउनते परे जो ब्रह्महैं ताकी प्राप्ति होयहैं १९ इ ब्रह्मन्! वेदके कारण आत्मा जो तुमहो तिनको बतावनवारो जो ब्रह्मकुलहैं ताय पूजो हो ताही कारण ते ब्राह्मणन की भक्ति करनवारो जे पुरुष हैं तिनमें श्रेष्ठ हो २० ताते ईश्वर जो तुमहो तिनकूं हमारो जो सत्कार करनो हैं सो पुरुषन के शिज्ञा करिवे के लिये हैं और हम हैं ते तुम्हारे संग तें कृतार्थ भये यह कहे हैं साधुन की गति जो तुमहो तिनको सङ्ग भयो तासूं हमारो जन्म विद्या तप दृष्टि ये सम्पूर्ण सफलभये काहेसे तुम समस्त कल्याणनकी अवधि हो २१ नहीं मन्दहैं बुद्धि जिनकी और अपनी योगमाया करिके ढकी है माहिमा

निग्रहाय च ॥ स्वलीलया वेदपथं सनातनं वर्णाश्रमात्मा पुरुषः परो भवान् १ ८ ब्रह्मतेह दयं शुक्लं तपः स्वाध्यायं संयमैः ॥ यत्रोपलब्धं सद्व्यक्तमव्यक्तञ्च ततः परम् १ ९ तस्माद्ब्रह्मकुलं ब्रह्मञ्छास्त्रयोनेस्त्वमात्मनः ॥ सभाजया सिसद्धाभतद्रहस्यगयाश्रणीर्भवान् २० अद्यनो जन्मसाफल्यं विद्यायास्तपसोद्दशः ॥ त्वया संगम्य मद्भृत्या यदन्तः श्रेयसां परः २१ नमस्तस्मै भगवते कृष्णाय अकुण्डभेधंसे ॥ स्वयोगमायया च्छन्नमहिम्ने परमात्मने २२ नयं विदन्त्यमी भूपाएका रामाश्च वृष्णयः ॥ मायाजवनि काञ्छन्नमात्मानं कालमीश्वरम् २३ यथाशयानः पुरुष आत्मानं गुणतत्त्वदृक् ॥ नाममात्रेन्द्रियाभातं न वेदरहितं परम् २४ एवं त्वानाममात्रेषु विषयेष्विन्द्रिये हया ॥ मायया विभ्रमचित्तो न वेद स्मृत्युपपन्नात् २५ तस्याद्यते ददृशिमाम्ङ्गिमघौघमर्पतीर्थी स्पदं दृढि कृतं सुविपकयोगैः ॥ उत्सिक्तभक्त्युपहृताशयजीविकोशा आपूर्भवद्भक्तिमथोऽनुगृहाण भवान् २६ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इत्यनुज्ञाप्य दाशार्हं धृतराष्ट्र्युधिष्ठिरम् ॥ राजर्षे स्वाश्रमान् जिनकी ऐमे परमात्मा भगवान् जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं नमस्कार है २२ मायास्वी चिकसूं ढके स्पृष्ट्यादिकन के कारण ऐसे ईश्वर आत्मा जो तुमहो तिनैं ये राजा नहीं जानैं हैं और एक रगान में हैं सुख जिनकूं ऐसे यादव हैं तेभी नहीं जानैं हैं २३ जैसे पुरुष सोवत में स्वग्रह जे भिख्या पदार्थ हैं तिनैं सत्य मानैं हैं मनतें सिद्ध व्याघ्रादि रूप आप वनिजाय हैं अपने स्वरूप कूं नहीं जानैं हैं २४ याही प्रकार स्वमादितुल्य जे विषय पदार्थ हैं तिनमें इन्द्रियन की प्रवृत्ति रूप माया ता करिके चलायमान है चित्त जाको ऐसो पुरुष विवेक के नाश तें तुमें नहीं जानैं हैं २५ पापन के समूहन कूं दूरि करे ऐसो गद्गास्वी तीर्थ जा में तें प्रकटभयो और पक्क हैं योग जिनके ऐसे योगी जननने केवल हृदयमें ध्यान जाको करयो परन्तु उनकूं भी दिखाई नहीं दियो ऐसो जो तुम्हारो चरणारविन्द हैं ताको हम दर्शन करतभये याते हम भक्तनकूं भक्ति करिये कूं अनुग्रह करो कदाचित् कहौ कि भक्ति करिके कहा करोगे पहिले की तुल्य तग करे जावो तहां कहे हैं उदय भई जो भक्ति तासूं जरयो है लिंग देह जिनको ऐसे जे पुरुष हैं तेही तुम्हारे स्वरूपकूं पाइगये और नहीं २६ अथ शुक्देवजी कहे हैं हे राजान मैं ऋषि राजा परीक्षित्! या प्रकार मुनीश्वर

हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र और राजा धृतराष्ट्र तथा युधिष्ठिर इन सँ आज्ञा मानिकै अपने अपने आश्रमन में जायवे की इच्छा करतभये २७ बड़ो है यश जिनको ऐसे वसुदेवजी हैं सो तिन मुनिन कूँ जाते देखिकै उनके समीप जायकै सावधान होइकै यह कहतभये २८ अथ वसुदेवजी कहे हैं सम्पूर्ण देवतारूप तुमहौ तिनकूँ प्रणामहै हे ऋषीश्वरो ! मेरी एक नात्ता तुम श्रवण करो जैसे कर्म करिकै कर्म को नाश होय सो हमें बताओ २९ श्रीकृष्णचन्द्र कूँ छोड़िके हमसँ कल्याण पूछे हैं या प्रकार आश्चर्य जिनके भयो ऐसे नारदजी ब्राह्मणने रुहे हैं हे ब्राह्मणो ! वसुदेवजी श्री कृष्णचन्द्र कूँ अपनी पुत्र मानिकै जानिवे के लिये अपनी कल्याण हमसँ पूछे हैं यह बड़ो आश्चर्य नहीं है ३० श्रीकृष्णचन्द्र कूँ बालक माननो आविधा करिकै है यह कहे हैं या संभार में मनुष्यन के पास रहे ते अनादर होय जायहै जैसे गंगातीर को रहनवारो जो पुरुषहै सो गंगाछोड़िकै शुद्ध होयवे के लिये और जल में स्नान करिवे कूँ जायहै ३१ जा श्रीकृष्ण को ज्ञान काहु कारण ते

गन्तुं मुनयोदधिरेमनः २७ तदीक्ष्यतानुपव्रज्य वसुदेवो महायशः ॥ प्रणम्य चोपसंगृह्य वभापेदं सुयन्त्रितः २८ ॥ वसुदेव उवाच ॥ नमो वः सर्वदेवेभ्य ऋषयः श्रोतुमर्हथ ॥ कर्मणा कर्मनिहारी यथास्यान्नस्तदुच्यताम् २९ ॥ नारद उवाच ॥ नातिचित्रमिदं विभावसुदेवो बुधुस्तया ॥

कृष्णं मत्वाऽर्भकं यन्नः पृच्छति श्रेय आत्मनः ३० सन्निकर्षोऽत्र मर्त्यानामनादरण कारणम् ॥ गान्धित्वा यथान्यामभस्तत्र त्रयोयाति शुद्धये ३१ यस्यानुभूतिः कालेन लयोत्पत्त्यादि नास्य वै ॥ स्वतोऽन्यस्माच्च गुणतो न कुनश्च न रिष्यति ३२ तं क्लेशकर्मपरिपाकगुणप्रवाहैरव्याहतानुभवभीश्वरमादितीयम् ॥ प्राणादिभिः स्वविभवैरुपगूढ मन्योमन्येतस्य र्थमिव मेव हि मोपरागैः ३३ अथोत्तुर्मुनयो राजान्नाभाष्यान कडुन्दुभिम् ॥ सर्वपांशुयथां गज्ञां तथैवाच्युतरामयोः ३४ कर्मणा कर्मनिहारेण साधुनिरूपितः ॥ यच्छ्रद्धया यजेद्विष्णुं सर्वयज्ञेश्वरं मलैः ३५ चित्तस्योपशमोऽयं वै कविभिः शास्त्रचक्षुषा ॥ दर्शितः सुगमो योगो धर्मश्चात्ममुदावहः ३६ अयं स्वस्त्ययनः पन्थादि जातेर्गृहे मधिनः ॥ यच्छ्रद्धया सविचेन शुक्लेनेज्येत पुरुषः ३७ विचैपणां यज्ञदानैर्गृहे दर्शितैः पणाम् ॥ आत्मलोके पणदिव कालेन विमु

भी नहीं नष्ट होय है सोई कहे हैं जैसे काल करिकै काकरी फटि जायहै और या विश्वको उत्पत्तिकरि को पालन और नाश करि को इनसँ भी नहीं जायहै और जैसे आपते विजुकी चमकिके विलाय जायहै और जैसे गुण करिकै पूर्णरूप को नाश होय और रूपान्तरकी प्राप्ति होय ऐसेभी नहीं जायहै ऐसे जो आदितीय ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनके प्रभावकूँ क्लेश कर्म अर्थात् रागद्वेषादिकन करिकै करे जे कर्म तिन कर्मन के फल जो सुख दुःख हैं तिन करिकै और सत्त्वगुण रजोगुण इनके वारंवार प्रवाहको तुल्य जो आइवोहैं ता करिकै प्राकृत पुरुष प्राण इन्द्रिय जो अपने कार्य हैं तिनसँ आच्छादित माने हैं जैसे वादर तुषार और राहु के असे ते सूर्य मालूम होयहै ऐसे ३२ । ३३ इतनो कहिके पीछे हे राजन् परीक्षित ! मुनिहैं ते सब राजानके श्रवण करत और तैसे ही श्रीकृष्ण और बलदेवजी के श्रवण करत वसुदेवजी कूँ बोधन करत बोलतभये ३४ कर्म करे तें कर्म कटै यह भलो पुरुषो अर्थात् पूर्ण यज्ञन करिकै सब यज्ञन के ईश्वर जे भगवान् हैं तिन को पूजन करो ३५ कविन ने शास्त्ररूप नेत्रन करिकै विचके शान्ति करनवारे आत्मा कूँ आनन्द को प्राप्ति करनवारो धर्मरूप यज्ञ करिकै पूजन करि को है सो सुगम उपाय दिखायो है ३६ यह स्थ

जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य हैं तिनकूं यही कल्याण को मार्ग है निष्काम होयकै प्राप्तभयो जो शुद्धद्वय है ता करिकै ईश्वर को पूजन करै ३७ हे वसुदेवजी यज्ञकरिकै दान करिकै विवेकी पुरुष धनकी चाहना कूं त्यागे और घरमें उचित भोजन भोगनकू भोगिकै स्त्रीपुत्रनकी चाहना कूं त्यागे और या देखके मरे पीछे स्वर्गलोकादिकनकी मागि कूं नाशवान् समझिकै तिनकी चाहना कृत्यागै ग्राम में त्यागी है चाहना जिनने ऐसे समस्त धीर पुरुष तपकरिबे के लिये वनमें जातभये ३८ हे समर्थ वसुदेवजी ! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य हैं ते देव ऋषि पित्र इन तीनों को ऋण या जन्म में है तासूं उद्धार दोई यज्ञ करिकै देवतान को ऋण और विद्या पढ़िकै ऋषिन को ऋण तथा पुत्र उत्पन्न करिकै पितरन को ऋण चुकावै इन ऋणन के चुकाये विना जो कर्मन को त्यागकरै तो वह पुरुष नरकमें गिरै ३९ बड़ी है बुद्धि जाकी ऐसे वसुदेव अव तुम दो ऋणन तें तो छूटिगये विद्या पढ़े यातें ऋषिन के ऋण सू उद्धारभये और पुत्रभयो यातें पितरन के ऋण सू उद्धारभये अव यज्ञ करिकै देवतान के ऋण तें उद्धार होयकै शुद्ध कूं त्यागि संन्यास ग्रहण करौ ४० हे वसुदेवजी ! तुम वहीभक्ति करिकै जगत् के ईश्वर जे हरि भगवान् हैं तिनको पूजन करतभये वेई हरि भगवान् आयकै -

जेद्वयुधः ॥ ग्रामेत्यक्लैपणाः सन्वै ययुर्धारास्तपोवनम् ३८ ऋणैस्त्रिभिर्द्विजो जातो देवर्षिपितृणां प्रभो ॥ यज्ञाध्ययनपुत्रैस्तान् ग्रन्थिनिर्स्तरीय्य जन्यते तत् ३९  
तत्त्वद्यमुक्तोद्वाभ्यां वै ऋषिपित्रोर्महामते ॥ यज्ञैर्देवर्षिमुन्मुच्य निःश्रेणोऽशरणो भव ४० वसुदेव भवाच्चूनं भक्त्या परमया हरिम् ॥ जगतामीश्वरं प्रार्चय  
द्वांपुत्रनागतः ४१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इति तद्वचनं श्रुत्वा वसुदेवो महामनाः ॥ तानृषीन् त्विजो वने मूढान् ॥ नमस्कृत्य प्रसाद्य च ४२ तपनमृपयोराराजन् वृताधर्मैण  
धार्मिकम् ॥ तस्मिन् नया जयनक्षेत्रे मखैरुत्तमकल्पकैः ४३ तदीक्षायां प्रवृत्त्यां ब्रह्मण्यः पुष्करस्रजः ॥ स्नाताः सुवाससो राजानः सुषुप्तलंक्रताः ४४ तन्म  
हिष्यश्च मुदितानिष्कण्ठयः सुवाससः ॥ दीक्षालामुपाजग्मुरालिसावस्तुपाणयः ४५ नेदुर्मदङ्गणदहशङ्खभेर्यान् कादयः ॥ ननतुर्नटनर्तक्यस्तुलुबुः  
सूतमागथाः ॥ जगुः मुकण्डयोगन्धर्व्यः सङ्गातंसहभर्तृकाः ४६ तमभ्यपिषन् विधिवदक्रमभक्कमृत्विजः ॥ पत्नीभिरष्टादशभिः सोमराजिपिवोदुभिः ४७

तुम्हारे पुत्रहोतभये ४१ अव श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! वदो है मन जिनको ऐसे वसुदेवजी या प्रकार ब्राह्मणन को वचन सुनिकै प्रस्तकनवायकै प्रसन्न करिकै तिन ऋषिन कूं यज्ञके करनवारे ऋषिजिन को वरण करतभये ४२ हे राजन् परीक्षित् ! धर्म करिकै वरण जिनको करयो ऐसे जे ऋषि हैं ते घर्मात्मा वसुदेवजी कूं ता कुरुक्षेत्रमें उत्तम मामग्रीन करिकै यजन करावत भये ४३ हे राजन् परीक्षित् ! जा समय वसुदेवजी कूं यज्ञकी दीक्षा भई ता समय कमलन की माला पहिरिकै यादव और स्नान करिकै सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरि शृंगार करिकै राजा आगतभये ४४ और युक्कथुकी है कण्ठ में जिनके सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरे केसरि चन्दनलगे ऐसी राजानकी खोई हैं ते पूजाकी सामग्री कूं हाथ में लैके जहा यज्ञशालाही तहा आवाति भई ४५ गृहद्वाराल शङ्ख भेरी नगारेन कूं आदिलैके जे वाजे हैं ते वाजतभये नट और नृत्यकी करनवारी जे हैं ते नाचति भई सूत और जागा स्तुति करतभये सुन्दर हैं कण्ठ जिनके ऐसी जे गन्धर्व्वपत्नी हैं ते अपने पतिनसहित सुन्दर गीतन कूं गावति भई ४६ नेत्रन में अञ्जन जिनने लगायो और सब अङ्गोंमें मालन लगायो ऐसे वसुदेवजी को विधिपूर्वक अठारह स्त्रीन सहित ऋत्विज अभियेक करतभये जैसे तारागण सहित



चन्द्रमा को करे हैं तैसे ४७ वल्ल कङ्कण हार नूपुर कुण्डल इन आभूषणन करिकैं शोभायमान जे स्त्रीहैं तिन सहित दीक्षा जिनने लीनी मृगछाला ओढ़े ऐसे वसुदेवजी सुन्दर लगतभये ४८ हे महा राज परीक्षित् ! स्नान के गहने और रेशमी वस्त्रन कूं पहिरे ऐसे वसुदेवजी यज्ञके करावनवारे और सभामें बैठे हैं तिन सहित जैसे दृगसुर के मारनवारे इन्द्रके यज्ञमें तैसे सुन्दर लगतभये ४९ सम्पूर्ण जीवनके ईश्वर जो रामकृष्ण है ते अपने अपने वन्धुन कूं सबलिये और अपने पुन स्नानसहित अपने ऐश्वर्यन करिके सुन्दर लगतभये ५० यज्ञमें त्रिधिपूर्वक अग्निहोत्र कूं आदितेके हैं स्वरूप जिनको क्लेश और समस्त अह्न जिनमें ऐसे ज्योतिष्टोम दर्श पाँचमास सँ आदि लौं के यज्ञ है ते और थोड़े सेहैं अंग जिनमें ऐसे सौर्यसत्रादिकहैं ते द्रव्य अर्थात् साकल्य मन्त्र कर्म इन सबके ईश्वर जे भगवान् हैं तिनको पूजन करतभये ५१ यज्ञकरे पीछे वसुदेवजी समयपै आभूषण न करिकैं शोभायमान जे यज्ञ करनवारे ऋषिहैं तिनकूं गो पृथ्वी कन्या और वड़े धन इनकी दक्षिणा हैं ते वेद विधिसू देतभये ५२ पत्नीसंयाव् आवभृथप इत्यादिक जे यज्ञहैं तिन करायकैं वड़े ऋषि जे ब्राह्मणहैं ते यजमान वसुदेवजी कूं आगे करिकैं रामहृद में स्नान करत भये ५३ स्नान जिनने कल्यो

ताभिर्दुःकूलबलयैर्हार्त्नपूरकुण्डलैः ॥ स्वलंकृतभिर्विवर्धौ दीक्षितोऽजिनसंयुतः ४८ तस्य त्विजो महाराज रत्नकौशेयवाससः ॥ ससदस्या विरेजुस्ते यथा वृत्रहणो धरे ४९ तदारामश्च कृष्णश्च स्वैस्वैर्वन्धुभिरन्वितौ ॥ रेजतुः स्वमुतैर्दरित्रीविशौ स्वविभूतिभिः ५० ईजेऽनुयज्ञं विधिना अग्निहोत्रादिलक्षणैः ॥ प्राकृतैर्नैवैर्ज्ञैर्देवैर्ज्ञानक्रियेश्वरम् ५१ अथ त्विभ्योऽददात्काले यथाम्नातंसदक्षिणाः ॥ स्वलंकृतेभ्यो विभेभ्यो गोभूकन्यामहाधनाः ५२ पत्नीसंयादाव भृथैश्चरितानेमहर्षयः ॥ सस्तूरामहृदे विप्राय जमानपुरःसराः ५३ स्नातोऽलङ्कारवासांसि वन्दिभ्योऽदात्तथास्त्रियः ॥ ततः स्वलंकृतो वर्णानाश्च भ्योऽन न पूजयत् ५४ वन्धून्मदाराचमसुतान् पारिवर्हेण भूयसा ॥ विदर्भकोशलक्षुरुन्काशिकेक्यमुञ्जयाच् ५५ सदस्य त्विक्कुसुरगणान् दृभूतपितृचारणान् ॥ श्रीनिकेतमनुज्ञाप्य शंसन्तः प्रययुः कतुम् ५६ धृतराष्ट्रोऽनुजः पार्थाभीष्मोद्रोणः पृथायमौ ॥ नारदो भगवान्व्यासः सुहृत्सम्बन्धिवान्धवाः ५७ वन्धून्परिष्व जययदूर्व सौहृदात्किञ्चनेतसः ॥ ययुर्विरहकुञ्जेष्वेण स्वदेशांश्चापरेजनाः ५८ नन्दस्तु सहगोपालैर्वृहत्या पूजयार्चितः ॥ कृष्णरामोऽग्रेसरोऽन्यैर्न्यासीद्वन्धु

ऐसे वसुदेवजी और तैमही उनकी स्त्रीहैं ते सब उन्दीजनन कूं अपने अंगके गहने और वस्त्र देतिभई ता पीछे वसुदेवजी और आभूषण पहिरि श्वान पर्यन्त चारथो वर्णन कूं अब दान करि पूज तभये ५४ स्त्री पुत्रन सहित जे उन्धुहैं तिन प्रीतिपूर्वक बहुत से द्रव्य करिकैं पूजन करतभये अम कौन कौन वन्धु है तिनको नाम लेतहैं विदर्भ कोशल कुरु काशिकेक्य सुञ्जय इन देशनके राजाहैं तिनको और सभाके वैठनवारे तथा यज्ञके करावनवारे देवतानके गण है तिनको तथा मनुष्य भूत पितृ चारणगण हैं तिनको पूजन करतभये सब राजा श्रीकृष्णचन्द्र कूं वोधन करिकैं यज्ञानी प्रशंसा करत अपने अपने देशनकूं जातभये ५५ ५६ धृतराष्ट्र विदुर पृथाके पुत्र युधिष्ठिर भीमसेन अर्जुन भीष्मपत्नी द्रोणाचार्य कुन्ती नकुल सहदेव नारद भगवान् व्यासजी और मित्र हैं तिनसँ तथा नाते गोतेवारे वन्धु जे यादव हैं तिन सबगुं मिलिकैं स्नेह करिकैं खेदित हैं चित्त जिनके ऐसे विरहके कष्ट करिकैं अपने अपने देशनकूं जातभये और जे मनुष्यहैं तेभी अपने

अपने देशनकू जातभये ५७। १८ कुण्ण राम उग्रसेनादिक यादवनेने वड़ी पूजा जिनकी करी ऐसे गोपालनसहित जो नन्दरायजी हैं ते वन्धु जे यादवहैं तिनसुं स्नेह करत वसतभये ५९ मसजहैं मन भिनको ऐसे वसुदेवजी सहजमें यज्ञ करि को मनोरथरूपी वडे समुद्रकूपार उतरिके अर्थात् यज्ञकूप पूर्ण करि कै सब सुहृदनकू सज्जलै नन्दरायजीको हाथ पकड़िकै यह कहतभये ६० अत्र वसुदेवजी कहे हैं हे भय्या नन्दरायजी ! मनुष्यनकू स्नेहरूपी फासी जो ईश्वरने करीहै ताय जूरवीर वलसूं और ज्ञानी ज्ञानसूं नहीं काटि सकैहै उपमादेवे योग्य नहीं और जाकी उपमा भी नहीं ऐसी जो भि-  
जता करीहै सो कदाचित् न जायगी और तुम्हारे उपकारकू जाने नहीं ऐसे हम हैं तिनसूं श्रेष्ठ जो तुमहो तिनने भिन्नता करी ६१। ६२ वसुदेवजी कहे हैं हे भय्या नन्दरायजी ! हम असमर्थ हैं याते कछु तुम्हारी उपकार नहीं करिसकैं और अब धन करिकै आ रे हैं नेत्र जिनके ऐसे हमहैं ते सम्मुख तुम बैठेहो तिन नहीं देखेहैं ६३ हे मानके देनवारे भय्या नन्दजी ! जो अपनो भलोचाहै तापुरुष

वरसलः ५६ वसुदेवोऽसोत्तीर्थ्य मनोरथमहार्णवम् ॥ सुहृदतः प्रीतमनानन्दगाहकरोस्पृशन् ६० ॥ वसुदेवउवाच ॥ आतरीशकृतः पाशोन्मुणायः स्नेह संज्ञितः ॥ तंडुस्त्यजमहं मन्ये शूराणामपियोगिनाम् ६१ अस्मात्स्वप्रतिकल्पेयं यत्कृताज्ञेपुमत्तमैः ॥ मैत्र्यर्थाऽफलावापि न निवर्त्ततर्हि चित् ६२ प्रागकरुणाच्चकुशलं भ्रातर्वोनाचरामहि ॥ अधुना श्रीमदान्धाक्षानपश्यामः पुरः सतः ६३ मागज्यश्रीरभूत्पुंसः श्रेयस्कामस्यमानद ॥ स्वजनानुनवन्धूना न पश्यति ययाऽन्धदृक् ६४ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवं सौहृदशैथिल्यचित्तानकदुःखिभिः ॥ रुरोदतत्कृतामैत्र्यां स्मरन्नश्रुविलोचनः ६५ नन्दस्नुमरुयुः प्रिय कृतप्रेम्णा गोविन्दरामयोः ॥ अद्य रवइति मासांस्त्रीन् यदुभिर्गामिनोऽवसत् ६६ ततः कामैः पूर्यमाणः सत्रजः सहवान्ववः ॥ पराध्वार्षणक्षौमनानाऽनर्घपरि च्छदैः ६७ वसुदेवोऽग्रसेनाभ्यां कुण्णोद्धवलादिभिः ॥ दत्तमादाय पारिवर्हयापितोऽवसत् ६८ नन्दो गोपाश्रगोप्यश्च गोविन्दचरणाम्बुजे ॥ मनःक्षि संपुनर्हर्तुमनीशामश्रुंगयुः ६९ वन्धुपुत्रतियाते पुवृष्णयः कुण्णे देवताः ॥ वीक्ष्य प्रावृषमासत्रां ययुर्दार्श्वती पुनः ७० जनेभ्यः कथयां च कुरुर्दुदेवमहोत्सवम् ॥

कूं राज्य सम्पादि कदाचित् मतिहोउ जा सम्पत्तिसू आधरी दृष्टिहोयजाय है तब यह पुरुष अपने गते गोतेवारेनकूं और भय्या वन्धुनकूं नहीं देखेहैं ६४ अब शुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित! या प्रकार स्नेह करिकै शिथिलहै चित्त जिनको आसू नेत्रन में थायगये ऐसे वसुदेवजी हैं सो नन्दजीनेकरी जो मित्रता है ताको स्मरण करिकै रोदन करतभये ६५ सखा जो वसुदेव हैं तिनमें दितके करनवारे यादवनेने सत्कारकख्यो ऐसे जो नन्दजीहैं सो कुण्ण वलदेवके प्रेमकरिके प्रातःकाल जब चले तब आयके कहै वावा भोजन करिकै जाइयो और भोजन करिकै चले तब कहैं दिन थोड़ो रखो अब कहां रात्रिमें वसोगे ऐसे आज काल्हि करत करत तीनमहीना वास करतभये ६६ ताके पीछे वड़े मोलके आपूपण और रेशमी बल्ल अनेक धातिके वड़े मोलकी वस्तुनभू कामना-  
न करिकै ब्रजवासीन सहित नन्दरायजी पूर्ण कशिदिये और वसुदेव उग्रसेनतैं तथा कुण्ण उद्धव वलदेवजी सूं आदिलैकै यादवन ने दीनी जे सामग्री तिनैं ग्रहण करिकै उगने जन्म निद। करे ता आवत भये ६७। ६८ नन्दगोप गोपीन को गोविन्द श्रीकुण्ण के चरणरमल में लगयो जो मनहैं ताय फेरि निकासिवे कूं असमर्थ होयकै मथुरादेशनमें आवतभये ६९ कुरुक्षेत्र में ते सब वन्धु

चलेगये तब श्रीकृष्णचन्द्र हैं देवता जिनके ऐसे यादव वर्णच्छतुर्गुं समीप आई देखिके फेरि द्वारकापुरी कू आगतभये ७० सब यादव हैं ते वसुदेवजी के यज्ञभयो है ताय और कुरुक्षेत्रकी यात्रा में सुहृदनको दर्शन आदिक भयो है ताय प्रजानतें रहतभये ७१ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे तीर्थयात्रानुख्यानचतुरशीतितितमोऽध्यायः ८१ ॥

( पञ्चाशीतितमेरामकृष्णौ सम्प्रार्थितौ सुतौ ॥ विवेक्षणम गोपात्रे मृतान् पुत्रान् यच्छताम् ? नन्दयित्वा कुरुक्षेत्रे यात्रायां सुहृदो महून् ॥ तत्त्वज्ञानततः पित्रोऽदिशन्मृतसूनुभिः २ पचासीविं अध्यायमें भले प्रकार प्रार्थना क्रियेगये बलदेव और कृष्ण ये दोनों पुत्र वसुदेवजी को ज्ञान और देवकीजी को ज्ञान और देवकीजी को उनके परेहुये पुत्रनकूं देतेभये ? कुरुक्षेत्रकी यात्रा में बहुत मित्रनको आनन्दितकर मृतक वसुदेव देवकी जी के पुत्रनको लारु उनको तत्त्वज्ञान देतेभये २ ) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! कुरुक्षेत्रकी यात्राकरे पीछे एकसमय आयके करो है चरणनमें प्रणाम जिनने ऐसे पुत्र जे श्रीकृष्ण बलदेवकी हैं तिनकी प्रशंसा करिके श्रीतिर्ब्वक वसुदेवजी बोलतभये ? पुत्रन के प्रभाव को जनाननारो जो मुनिन की कह्यो वचन कि तुम्हारे पुत्र परमेश्वर हैं ऐसे सुनिके श्री-

यदाऽऽसीत्तीर्थयात्रायां सुहृत्संदर्शनादिकम् ७१ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे तीर्थयात्रानुख्यानचतुरशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

श्रीवादायणिरुवाच ॥ अथैकदात्मजौ प्रसौ कृतपादाभिवन्दनौ ॥ वसुदेवोऽभिनन्द्याह प्रीत्यासङ्कर्षणान्भ्युतौ ? सुनीनां प्रवचः श्रुत्वा पुत्रयोर्द्धाम सूचकम् ॥ तर्द्धार्थैर्जातविश्रम्भः परिभाष्याभ्यभाषत २ कृष्णकृष्णमहायोगिन् सङ्कर्षणसनातन ॥ जानेवामस्ययत्साक्षात्प्रधानपुरुषौ परौ ३ यत्र येनय तोयस्य यस्मै यद्यद्यथायदा ॥ स्यादिदं भगवान् साक्षात्प्रधानपुरुषेश्वर ४ एतन्नानाविधं विश्वमात्मसृष्टमधोऽक्षज ॥ आत्मनाऽनुप्रविश्यात्मन् प्राणोजी वोविभर्षजः ५ प्राणादीनां विश्वसृजं शक्तयोयाः परस्यताः ॥ पारतन्त्र्याद्वैसाहृदयोरंशैश्चैव प्रकृताम् ६ कान्तिरस्तेजः प्रभासत्ताचन्द्रान्मयर्क्षेक्षिविद्यु

कृष्ण बलदेव के पराक्रम देखिके भयो है विश्वास जिनके ऐसे वसुदेव जी सम्बोधन देखे बोलतभये २ हे कृष्ण ! हे महायोगिन् ! हे संकर्षण ! हे सनातन ! या विश्वके कारण जे प्रकृति पुरुष हैं तिनके भी कारण ऐसे साक्षात् ईश्वर तुमहो यह मैं जानूँ ३ जायें जा करिके जाते जाको सम्बन्धी जाके अर्थ जो जो जैसे जा समय यह विश्व होय है सो समस्त प्रकृतिपुरुष के साक्षात् भगवान् ईश्वर तुमहो ४ हे अयोक्तज ! नेत्रनतें देखिये मैं न आओ काननतें सुनिने मैं न आओ वाणी तें कहिये मैं न आओ ऐसे कोई इन्द्रिय जायें पहुँचें नहीं हे सबके आत्मा ! आपने रच्यो जो यह नानाप्रकारको विश्व है तामें अपने करिके प्रवेश देख्ये प्रमाणरूप होयके अजन्मा जो तुमहो सो ज्ञानशक्ति कूं धारण करोहो ५ पृथक् पृथक् है शक्ति जिनकी ऐसे प्राणादिक या विश्व के कारण जानिये मैं आवे है परमेश्वर कूं कारणरूप करिके सर्वरूप जैसे कहोहो यह शंता जा भई ताको समाधान यह है कि प्राणादिकन में जे शक्ति हैं ते ईश्वरकी हे जैसे विरच के काननवरे प्राण ते आदितैं के जे तत्त्व हैं तिनमें जे शक्ति हैं ते परमकारण जो ईश्वर है ताहीकी हे काहेतें प्राणादिक ईश्वरके अधीन हैं ता कारण और जैसे तीरमें वेधियेकी स्वतन्त्र शक्ति नहीं है किन्तु पुरुष की शक्तिसूं वेधे है ऐसे प्राणादिकन में ईश्वर शक्ति है प्राणादिक जड़ हैं और ईश्वर चैतन्य है जड़ पदार्थ कूं चैतन्यकी अधीनता योग्य है तहा कहे हैं प्राणादिकन में शक्ति नहीं है तो क्रिया कैसे

करे हैं ताको उत्तर करे हैं चेष्टाकर जे प्राणादिक हैं तिनकी चेष्टा यहां कछु शक्ति नहीं है जैसे पवनकी शक्ति करिके गुण हले है ऐसे क्रिया करे हैं ६ अथ पराधीनता कहे हैं चन्द्रमा में जो पक्षाश है और अग्नि में जो तेज है और सूर्य में जो प्रकाश है तथा नक्षत्र में बिजुलीन में जो चमक है सो सब तुमहीं हो और पर्वत में जो स्थिरता है सो तुम्हारीही गुण है तथा पृथ्वी में सबको भार धारण करिवो और सुगन्ध ये सब तुमहीं हो तुम्हारी शक्ति है ७ हे देव ! जल विये ते वृक्षि होय जाय प्राण वचि जाय यह जलन में तुम्हारीही शक्ति है वे जल और जलन में रसगुण है सो तुमहीं हो और हे ईश्वर ! पवनमें ओज अर्थात् पनको बल और इन्द्रियनको बल देहको बल चेष्टा चलनो यह सब तुम्हारीही रूप है ८ दिशान में जो खालीपन है सो और दिशा है ते सब तुम्हारीही रूप हैं और आकाश तथा आकाशमें जो शब्द रूप गुण है सो सब तुम्हारीही रूप हैं ९ नेत्रनमें दर्शन शक्ति और काननमें श्रवण शक्ति काय जिह्वामें रसकी ग्रहणशक्ति इत्यादिक जे इन्द्रियन में विषयन के ग्रहण करिवे की शक्ति तुमहीं हो और इन्द्रियन के अधिष्ठाता देवता हैं ते तुमहीं हो देवता इन्द्रियन हू भरे

तानमें अथ शक्ति काय जिह्वामें रसकी ग्रहणशक्ति इत्यादिक जे इन्द्रियन में विषयन के ग्रहण करिवे की शक्ति तुमहीं हो और इन्द्रियन के अधिष्ठाता देवता हैं ते तुमहीं हो देवता इन्द्रियन हू भरे तानमें अथ शक्ति काय जिह्वामें रसकी ग्रहणशक्ति इत्यादिक जे इन्द्रियन में विषयन के ग्रहण करिवे की शक्ति तुमहीं हो और इन्द्रियन के अधिष्ठाता देवता हैं ते तुमहीं हो देवता इन्द्रियन हू भरे

तानमें अथ शक्ति काय जिह्वामें रसकी ग्रहणशक्ति इत्यादिक जे इन्द्रियन में विषयन के ग्रहण करिवे की शक्ति तुमहीं हो और इन्द्रियन के अधिष्ठाता देवता हैं ते तुमहीं हो देवता इन्द्रियन हू भरे तानमें अथ शक्ति काय जिह्वामें रसकी ग्रहणशक्ति इत्यादिक जे इन्द्रियन में विषयन के ग्रहण करिवे की शक्ति तुमहीं हो और इन्द्रियन के अधिष्ठाता देवता हैं ते तुमहीं हो देवता इन्द्रियन हू भरे

जाने ऐसे जे अज्ञानी पुरुष हैं तिनको देख्यो जो अभिमान है तामूं करे जे क्रममें है तिन करिके या संसार में जन्मो है १५ सुन्दर हाथ पाव नाक कान सब इन्द्रिय जाँमे बहुत दुर्लभ ऐसे देह कुं या संसारमें कोई एक पुण्य के फल सँ पाइके साथ में भूलि रख्यो ऐसे जो मैं हूँ ताकी जो अवसर है सो ईश्वर तुम्हारी माया करिके टूटा डीपई १६ मैं ब्राह्मण हूँ क्षत्रिय हूँ या प्रकार देख्यो अभिमान और या देहके सम्बन्धी स्त्री पुत्रादिक परे है यह अभिमान ऐसे स्नेहके रस्सान ते यह जगत् तुमने वाधि राख्यो है १७ हम तुम्हारे पुत्र हैं तुम कहा हमारी स्तुति करो हो नहा वसुदेवजी ऊँ है तुम हथारे पुत्र नहीं हो माया और मायाकी ओट देखनवारो पुरुष इनके ईश्वर साक्षात् तुमही पृथ्वी पै क्षत्रियनको जो भार है ताके उद्धार के लिये नाश करिवे कुं प्रकट भये हो १८ ता कारण है दीनमन्धु ! शरण मास भयो जो पुरुष है ताके संसारके भयके दूरिकरनवारें ऐसे जो तुम्हारे चरणारविन्द हैं तिनकी मैं शरण प्राप्त भयो हूँ तुम तो बड़े सुखी हो वृथा क्यों रोद करो हो ऐसे जो कदाचित् श्रीकृष्ण कहें तथा वसुदेवजी कहें इतनी जो निययकी लालसा है ता करिके मरणधर्मा शरीर कुं आत्मा मान्यो और तुम परमेश्वर कुं पुत्र मान्यो १९ प्रथम जन्म में

भवान्मन्वर्वाभिदंजगत् १७ युवाननःसुनौसाक्षात्प्रधानपुरुषेश्वरौ ॥ भूभाक्षत्रक्षणअवतीर्णोतिथात्थह १८ तत्तेगतोऽस्म्यरणमद्ययदारविन्दमापन्नसंसृतिभयापहमार्त्तबन्धो ॥ एनावताऽऽत्मलमिन्द्रियलालसेन मर्त्यात्सहृद्वत्वायिपरेयदपत्यबुद्धिः १९ सूतीगृहेननुजगादभवानजनौसंजज्ञइत्यनुगुंनिजधर्मगुप्त्यै ॥ नानातनूगर्भगनवद्विद्वज्जहासिकोवेदभूम्नउरुगायविभूतिमायाम् २० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ आकर्येत्यंतिपितुर्वाक्यं भगवान्मात्सवतर्पभः ॥ प्रत्याहप्रथयानम्रः प्रहसञ्ज्वल्लक्षणायागिरा २१ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वचोवःसमेवतार्थ तातैतदुपमन्गहे ॥ यन्नःपुत्रान्मममुद्दिश्य तत्त्वग्रामउदाहृतः २२ अहंशूयमसावाश्यैमंचद्वारकौकसः ॥ सर्वेऽप्येवंयदुश्रेष्ठविमृश्याःसचराचरम् २३ आत्माह्वैरुःस्वयंज्योतिर्नित्योऽन्योनिर्गुणोऽगुणैः ॥ आत्मसमूहैस्तत्कृतेषु भूतेषुबहुवेयते २४ संवायुज्योतिरापोमृस्तत्कृतेषुयथाशयम् ॥ आविस्तिरोऽल्पभूयैर्कोनानात्वंयात्यसावपि २५ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंभगवताराजन्

सुतपा पृथिन भये फेरि करयण आदिति भये अथ वसुदेव देवकी भये यह तीन जो है तिनके तीनवार अपने धर्मभी रक्षा करिके के लिये अजन्मा आयके जन्मो हूँ यह आपने सूक्तिकाष्टमैं हम सँ कबीरही तुम्हारे आदिके जाने जन्म लियो है यह चतुर्भुज देव है ऐसे जो कदाचित् श्रीकृष्ण कहें तथा वसुदेवजी कहें हैं आकाशी तुल्य निर्मल जो तुमहो सो अनेक लून कुं धरण करो हो है उरुगाय उदृत प्रकार मायवे में आयो ! व्यापक हो तिनकी वैभवरूप जो गाथा है ताकौ जाने है २० अथ श्रीशुक्लदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! यादवन में श्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ना प्रकार पिताको वचन सुनिके अमीनतापूर्वक नम्रहोयके हँसके मनोहर वाणीसँ गोलतथे २१ श्रीकृष्णभगवान् ऊँ है हे पिता ! हम पुत्रनके ऊपर धरिके सब तत्त्व कहि दीनो यह जो तुम्हारी वचन है ताकौ योग्य मानूँ २२ हे यादवन में श्रेष्ठ पिता वसुदेवजी ! तुम और मैं भयया मलदेवजी तथा जे सप द्वाराकावासी यादव हैं तिन और स्थावर मंगम जगत् है ताकौ बलरूप जानो २३ यहाँ एक शक्य है नाना प्रकारवान् हैं तिनकुं बलरूपता कैसे वने ताको उत्तर दृष्टान्त सँ कहें हैं आत्मा एक स्वयंमकाश नित्य है सचेत पृथक् है निर्गुण है आपने रचे जे सत्त्वगुण रजोगुण तमो-

गुण तिन करिकै उतरन जे देह हैं तिनमें बहुत प्रकार मतीत होइ है फेरि जैसी देह तागें तैसोही मतीत होइ है जैसे आकाश पवन उद्योति जल पृथ्वी ये पञ्चभूत नष्टयाहि पदार्थनमें कहुं प्रकट कहुं अन्तर्धान कहुं थोड़े कहुं बहुत मतीत होइ हैं ऐसे एक आत्मा जो ब्रह्मस्वरूप है सो अनेकरूप करिकै मतीत होइ है २४ । २५ अथ श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजनपरीक्षित् ! या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को बहो वचन सुनिकै हरि गयो है भेद भाव जिनको प्रसन्न मन होयके वसुदेवजी स्तुति करखुके ताके पीछे हे कौरवनयं श्रेष्ठ राजा परीक्षित् ! सर्वदेवता रूप जो देवकी है सो पुत्र जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनने सान्दर्भोपनि गुरुके भरे पुत्र लाय दिये यह सुनिके आश्चर्य्य मानिके कंसने मारे जे पुत्र हैं तिनकी सुनि करिकै व्याकुल होयके नेतनमें आसू आय गये ऐसी कृपण की तुल्य होयकै बोलति भई २७ । २८ देवकी कहै हैं हे राम ! हे राम ! हे अयोध्यात्मन् अर्थात् नर्ह प्रमाण करिने में आवे हैं स्वरूप जिनको ! हे कृष्ण ! हे योगेश्वरनके ईश्वर ! विश्वके रचनवारे ब्रह्मादिक है तिनके ईश्वर आदिपुरुष तुम हो तिनमें जानहुं २९ कालने दूरि करै हे घोरज जिनके शस्त्र पर्यादा जिनने त्यागि दीनी पृथ्वी वै भार जिनको भयो ऐसे जे

वसुदेवउदाहृतः ॥ श्रुत्वा विनष्टनानाधीस्तूष्णीं प्रीतमना अभूत् २६ अथ तत्र कुरुश्रेष्ठ देवकीसर्वदेवता ॥ ॥ श्रुत्वानीति गुरोः पुत्रमारपज। भ्यां सुविस्मिना २७ कृष्णरामौ समाश्रय्य पुत्रात् कंसविहितान् ॥ स्मरन्तीकृपणं ग्राह वैक्लव्यादश्रुलोचना २८ ॥ देवक्युगात्र ॥ रामरामाभमेयात्मन् कृष्णयोगो शरोश्वर ॥ वेदाहं वां विश्वमृजामीश्वरावादिपूरुषौ २९ कालविश्वसस्तथानां राज्ञामुच्छास्त्रवर्तिनाम् ॥ भूमेर्भारायमाणानामवतीर्णो किलाद्यमे ३० यस्यां शांशांशभागेन विश्वोत्पत्तिलयोदयाः ॥ भवन्ति किल विश्वात्मस्तत्वाद्याहंगतिगता ३१ चिरान्मृतमुतादाने गुरुणा किल चोदितौ ॥ आनि न्यथु पितृस्थानाद्गुरवे गुरुदक्षिणाम् ३२ तथा मे कुरुनं कामं युवां योगेश्वरेश्वरौ ॥ भोजराजहानात्पुत्रात् कामयेद्गुमाह्वानम् ॥ ३३ ॥ अश्रुत्वा च ॥ एवं संचोदितौ मात्रा रामः कृष्णश्च भारन ॥ सुतलंसंविशितुर्योगमायामुपाश्रितौ ३४ तस्मिन्प्रविष्टावुपलभ्यैदृश्याद् विश्वात्मैदं वसुतरां तथा तमनः ॥ तदर्शनाद्वाहपरिस्तुताशयः सद्यः समुत्थाय ननमसान्वयः ३५ तयोः समानीय वरासनं मुदा निविष्टयोस्तत्र महात्मनोस्तयोः ॥ दधारपादानव

राजा है तिनके नाश करिने के लिये भरे आयकै प्रकट भये हौ ३० हे सन के कारण ! हे विश्व के आत्मा ! तुम्हारी अंश पुरुष है ताको अंश माया ता मायाके अंश सच्च रज तम इन तीनों गुणन के परमाणुमात्र लेश करिकै या विश्वके उत्पत्ति पालन प्रलय होत हैं ऐसे जे तुमहौ तिनकीमें शरण प्राप्त भयो हूं ३१ बहुत दिनन के भरे पुत्रन के लायेव क गुरु ने आज्ञा जिनकूं दीनी ऐसे गुप यमलोक ते गुरुके भरे पुत्र लायके दक्षिणमें देत भये ताही प्रकार हे योगेश्वरनके ईश्वर ! कंसने मारे जे भरे पुत्र हैं तिनमें देखयो चाहूं तुग लायके भरे मनोरथ कूं पूरो करौ ३२ । ३३ अथ ऋषीश्वर कहै हैं हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित् ! माता देवकी ने या प्रकार जिनते कही ऐसे जे राम कृष्ण हैं ते योगमायाको आश्रय लेके सुतललोक में प्रवेश करत भये ३४ तथा दैत्य न को राजा जो बलि है सो विश्वके आत्मदेवता और अपने इष्टदेव ऐसे जे कृष्ण बलदेव हैं तिन सुतललोकमें प्रविष्टहुये देखिकै उनके दर्शन सूं आनन्द होयके परिपूर्ण है अन्तःकरण जाको



ऐसो परिचारसहित शीघ्र उठिके नमस्कार करत भयो ३५ राजा बलि गङ्गे आनन्दपूर्वक सुन्दर आसन पिछावत भयो ता आसनपै बैठे जे महात्मा श्रीकृष्ण बलदेव है तिनके चरणारविन्द को धोवन जल है ताग कुटुम्बसहित अपने माये पै चढावत भयो जिन चरणारविन्द को धोवन जल गङ्गा ब्रह्मायुं आदिलेके समस्त जगत्सुं पात्र करे है ३६ राजा बलि बहुत मोलके बल्ल आश्रयण चन्दन अतर अरगजा पान दीपक अमृत ती तुल्य स्वादिष्ठ भोजनादिक है तिन करिके और पूजन भी जे वस्तुहै तिनकरिके तथा अपनो गोत्र द्रव्य देहकू अर्पण करिके वड़े वैभवं श्रीकृष्ण बलदेव को पूजन करत भयो ३७ है राजन् प्रीति ! बलिराजा भगवान् के चरणारविन्दकूं चारंवार मस्तक पै धरिके भेम करिके आनन्द के आसू हैं नेत्रन में जिनके देह में जिनके रोमाञ्च होय आये ऐसे गहद अक्षर बोलत भये ३८ अब राजा बलि कहे हैं समस्त विश्व जिनने फणके ऊपर धरि राख्यो ऐसे अनन्त शेषरूप तुम हो तिनकूं प्रणाम है और सब जगत् के

निज्यतज्जलं सवृन्द आब्रह्मपुनद्वदम्बुह ३६ समर्हगामासस्तौ विभूतिभिर्महार्हवस्त्राभरणानुलेपनैः ॥ ताम्बूलदीपाऽमृतभक्षणदिभिः स्वगोत्रविचात्मस  
मर्पणेन च ३७ सइन्दसेनो भगवत्पदाम्बुजं विभ्रन्मृहुः प्रेमविभिन्नयाधिया ॥ उवाच हानन्दजलाकुलेक्षणः प्रहृष्टो मानुषगददाक्षम् ३८ ॥ बलिरुवाच ॥  
नमोऽनन्ताय वृहते नमः कृष्णाय वैधसे ॥ साङ्ख्ययोगविदनाय ब्रह्मणे परमात्मने ३९ दर्शनं वा हि भूवानां दुष्प्राप्य दुर्लभम् ॥ रजस्तमः स्वभावानां यन्नः  
प्राप्तौ गच्छया ४० दैत्यदानवगन्धर्वाः सिद्धविद्याप्रचारणाः ॥ यक्षरक्षः पिशाचारच भूतप्रमथनायकाः ४१ विशुद्धसत्त्वधाम्न्यज्ज्ञा त्वयि शास्त्रशरीरि  
णि ॥ नित्यं निवृद्धवैरारने वयस्त्रानेनादृशाः ४२ केचनोद्विष्यन्ते भक्त्या केचन कामतः ॥ न तथा सत्त्वसंस्थाः सन्निकृष्टाः सुरादयः ४३ इदमित्थमिति  
प्रायस्नवयोगेश्वर ॥ न विन्दन् रगपि योगेशो गमायां कुतो वयम् ४४ तन्नः प्रसीद निरपेक्ष विमृग्य युगमत्पादारविन्दधिषणान्यगृहान्वकूपात् ॥ निष्क  
म्य विश्वशरणाङ्ग्युपलब्धवृत्तिः शान्तो यथैतत्तत्सर्वं सखैश्चरामि ४५ शब्धस्मान्नीशितव्येश निष्पापान्मृकुरुनः प्रभो ॥ पुमान्मृच्छच्छयातिष्ठंश्चोदना

रचनवारे कृष्ण तुमहो तिनकूं नमस्कार है सारुभशाल योगशास्त्र इनके विस्तार करनवारे ब्रह्म परमात्मा जो तुमहो तिनकूं प्रणाम है ३९ योगेश्वरन कूं भी तुमहारो दर्शन दुर्लभ है सो हमकूं भयो यह आश्चर्य नहीं है यद्यपि प्राणीनकूं तुमहारो दर्शन दुर्लभ है तथापि तुमहारी कृपा करिके काहू काहू कूं मुलभ होय जाय है याते रजोगुणी तमोगुणी है स्वभाव जिनके ऐसे हम असुरन कूं अनायासपूर्वक आपने दर्शन दियो ४० वड़ो आश्चर्य है शत्रु हमहें ते सत्त्वगुणी भक्तन ते भी बडभागी हैं यह कहे हैं—दैत्य दानव गन्धर्व सिद्ध विद्यात्र चारण यत्त राजस विद्याच भूत प्रम-  
थनमें मुख्य हैं ते ४१ शास्त्रके रक्षा करनवारे सत्त्वगुणी है स्वभाव जिनके ऐसे भे तुमहो तिनसू नित्यशुभा हमने करी तथा औरनने भी वैर वा मि राख्यो है ४२ कोई एक शिशुपालादिक है ते वैर करिके जो भक्ति है तासू तुमकूं जैसे पागपे और गोपीन ने आदिलेके कामभक्ति करिके जैसे तुमकूं पागपे तैसे सत्त्वगुणी देवता तुमकूं न मासभये ४३ हे योगेश्वरन के ईश्वर ! या प्रकार ऐभी जो तुमहारी योगमाया है ताग योगेश्वर नहीं जानै है तो हम असुर कहा जानें ४४ ताते हमपै आप प्रसन्न होउ जैसे कोई वातकी जिनके इच्छा नहीं ऐसे पुरुष जाकूं हूँ ऐसे जो तुमहारी चरणारविन्द है ताको

आश्रय लैके चरणारविन्दते न्यारी जो घररूप कूप है ताते निकसि कै विश्वकी रक्षा करनवारे जे वृत्त हैं तिनकी जरन में आपही ते गिरे जे फल फूल हैं तिनको भोजनकरुं ऐसो मैं शान्त होयकै अकेलो विचरुं अथवा सवके सहाय करनवारे जे महात्या पुरुष हैं तिनके संग विचरुं ४५ थोड़ो जिनको पुण्य ऐसे पुरुषनकुं पतादश भाव कैसे होय ऐसे जो दृढचित्त भगवान् कहै तहा राजा बलि कहै हैं जैसे एतादृशभाव होय तैसे हमकुं शिक्षा देवे कुं योग्यहौ है सब जीवनके ईश ! हे प्रभो ! हमकुं शिक्षा देव और हमारे पापनकुं दूर करो जो पुरुष श्रद्धा करिके तहा रानी आज्ञा कुं करै वह विधि निषेध तें मुक्त होयजायहै ४६ अत्र भगवान् श्रीकृष्ण कहै हैं यह जो स्नायम्भुव मन्वन्तरहै तामें मरीचि प्रजापतिके ऊर्णा स्त्री में छ' पुत्र होत भये एक समय तुम्हारी आज्ञा कुं करै वह विधि निषेध तें मुक्त होयजायहै ४७ ता पापवर्मसुं असुरयोनिकुं पावतभये ताही समय हिरण्यकशिपुके देवतारूप बैओ पुत्रहैं ते अपनी कन्या सरस्वतीके साथ मैथुनसुं रमण करनेमो उद्यत जो ब्रह्माहै ताय देखिके हस्तभये ४७ ता पापवर्मसुं असुरयोनिकुं पावतभये ताही समय हिरण्यकशिपुके जन्म लेतभये तेई बैओ हिरण्यकशिपुके यहा ते योगमायाके भरे-हे राजनपरीक्षित ! देवकी के उदरमें जन्म लेत भये तेई कसने मारे सो अत्र तुम्हारे पासहैं इन्हें देवकी अपने पुत्र मानिके शोच

याविमुच्यते ४६ श्रीभगवानुवाच ॥ आसन्मरीचैः पद्पुत्राऊर्णायां प्रथमेऽन्तरे ॥ देवाः कञ्जहसुर्वीक्ष्य सुतां यमि तुमुद्यतम् ४७ तेनासुरीमगन्त्र्यो निमधुना सवद्यकर्मणा ॥ हिरण्यकशिपोर्जाता नीतास्ते योगमाया ४८ देवक्या उदरे जाताराजन्कंसविहिंसिताः ॥ साताञ्जशो च त्यात्मजान् स्यांस्तद्दमेऽभ्यास तेऽन्तिके ४९ इत एतान् प्रणेष्यामो मातृशोकापनुत्तये ॥ ततः शापादिनिर्मुक्ता लोकं यास्यन्ति विज्वराः ५० स्मरोद्भीधः परिष्वङ्गः पतङ्गः क्षुद्रभृदृघृणी ॥ पांडिमे मत्प्रसादेन पुनर्यास्यन्ति सद्गतिम् ५१ इत्युक्त्वा तान् समादाय इन्द्रमेनेन पूजितौ ॥ पुनर्दास्वती गेत्य मातुः पुत्रानयच्छताम् ५२ तान् दृष्ट्वा बालकान् देवी पुत्रस्नेहस्तुतस्ती ॥ परिष्वज्याङ्कमारेण्यमूढ्यर्जिघ्रदभीक्ष्णशः ५३ अपाययत्स्तनं भीता सुतस्पर्शपरिभुता ॥ मोहिता मायाया विष्णोर्भया मृष्टिः प्रवर्त्तते ५४ पीत्वाऽमृतं पयस्तस्याः पीतशेषं गदाभृतः ॥ नारायणः पङ्कजं स्पर्शं प्रतिलब्ध्वात्मदर्शनाः ५५ तेन मस्कृत्य गोविन्दं देवकीपितरं बलम् ॥ भिपतांस

कोरे है ४८ । ४९ माता देवकी के शोक दूर करिवे के निमित्त यहां ते इन बैओ पुत्रनकुं ले जायेगे ता पीछे शापते छूटिके सेदरहित होयके देवलोक में जायेगे ५० स्मर उद्भीध परिष्वङ्ग पतंग क्षुद्रभृदृघृणी ये छः पुत्र हैं ते भरे प्रसाद करिके मुक्त होजायेगे ५१ ऐसे जब वही तत्र राजा बलिने पूजन जिनको कस्यो तेसे श्रीकृष्ण बलदेव तिन पुत्रन रू संग लैके द्वारकापुरी में आयके माता देवकी कुं पुत्र देतभये ५२ पुत्रन में जो स्नेह ता करिके स्तननमें दुग्ध चुबै ऐसी देवकी तिन बालकन कुं देखिके मोद में वैठायके छातीते लगायके वेर और माथो सूंचति भई ५३ मृष्टि माता देवकी कुं पुत्र देतभये ५४ पुत्रन में जो स्नेह ता करिके स्तननमें दुग्ध चुबै ऐसी देवकी तिन बालकन कुं देखिके मोद में वैठायके छातीते लगायके वेर और माथो सूंचति भई ५४ गदा के धारण उत्पन्न करनगरी जो विष्णु भगवान् की माया है तामें मोहित और पुत्रन को जो छाती लगायवो तामें मग्न ऐसी जो देवकी है सो प्रसन्न होयके पुत्रन कुं स्तन प्यावति भई ५४ गदा के धारण करनवारे जो श्रीकृष्णचन्द्र है तिनके पीवेतें वच्यो अर्थात् भगवान् को प्रसाद ऐसो जो वह अमृतरूप देवकी को दुग्ध है ताय पान करिके और नारायण श्रीकृष्णचन्द्रके अंगके स्पर्श करेतें हम देवता हैं यह ज्ञान जिनकुं भयो ५५ ऐसे जे बालक है ते गोविन्द श्रीकृष्णचन्द्र कुं और देवही तथा पिता वसुदेवजी कुं और वलदेवजी कुं नमस्कार करिके सन प्राणीन के देसत देवतान को

धाम जा देवलोका है तामें जात भये ५६ हे राजनपरीक्षित् ! एकाशमान जो देवकी है सो मरे पुत्रन को आयवो फेरि जायवो है ताय देखिकै विस्मित होयके श्रीकृष्णकी रची माया मानति भई ५७ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित् ! अनन्तहै पराक्रम जिनको ऐसे जो परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पराक्रम को अन्त नहीं जिनके या पूकारके अद्भुत चरित्र हैं ५८ अथ श्रीसूत जी कहे हैं हे ऋषीश्वरो ! व्यासपुत्र जे शुकदेवजी हैं तिनने वर्णन करे और समस्त जगदेके पापनके दूरि करनवारे भक्तन के कानन कुं आनन्ददायक ऐसी अमृतलयी कीर्ति जिनकी ऐसे मुरारि श्रीकृष्णभगवान् के चरित्रनकुं भगवान् में चित लगायके जो पुरुष श्रवणकरे अथवा श्रवण करावै वह पुरुष कालको और मायाको जामें जोर नहीं ऐसो जो भगवान् को धामहै ताय पावै है ५९ इति श्रीपद्महाभागवतार्थरूपिण्यादाशमस्कन्धेउत्तरार्द्धमृताग्रजानयनमपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

( पडशीतितमेदम्भात्सुभद्रामर्जुनोऽहरत् ॥ गत्वाचमिथिलांकृष्णो नृपविप्राचनन्दयत् १ पित्रोःस्वज्ञानमादिश्य सुभद्रांफाल्गुनायच ॥ जगामिमिथिलांकृष्णःस्मभक्तप्रियंकुचतः २ क्षियासीव षर्षभूतानांयुर्धामदिनौकसाम् ५६ तंहृद्वादेवकीदेवीमृतागमननिर्गमम् ॥ मेनेसुविस्मितामायां कृष्णस्परचितानुप ५७ एवंविधान्यद्भुतानि कृष्णस्यप रमात्मनः ॥ वीर्यार्णयनन्तर्वीर्यस्यसन्त्यनन्तानिभारत ५८ सूतउवाच ॥ यद्वदमनुशृणोतिश्रावयेद्भामुरारेश्ररितममृतकीर्त्तवर्णिंतन्यासपुत्रैः ॥ जगद धमिदलंतद्भक्तसत्कर्णपूरं भगवतिक्वचित्तोयायातितत्क्षेमधाम ५९ ॥ इतिश्रीमद्भागवतेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धमृताग्रजानयनमपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५ राजोवाच ॥ ब्रह्मन्वेदितुमिच्छामः स्वसारंरामकृष्णयोः ॥ यथोपयेमेविजयोयाममासीत्पितामही १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ अर्जुनस्तीर्थयात्रायां प र्यटन्नवनीप्रसुः ॥ गतःप्रभासमश्रुणोन्मातुलेयीसआत्मनः २ दुर्योधनाग्रामस्नां दास्यतीतिनचापरे ॥ तस्मिन्सुःसयतिर्भूत्वा त्रिदण्डीद्वारकामगात् ३ तन्नवैवापिकान्मासानवात्सीत्स्वार्थसाधकः ॥ पौरैःसभाजितोऽभीक्ष्णं रामेणजानताचसः ४ एकदागृहमानीय आतिथ्येननिमग्नयतम् ॥ श्रद्धयोपहृतं

अन्धाय में अर्जुन दम्भ सं सुभद्रा को हस्तेभये और कृष्णजी मिथिलापुरीमें जाकर राजा और ब्राह्मण को आनन्दित करतेभये १ अपने भक्त के प्रिय करनेवाले कृष्णजी पिता और माताको अपना ज्ञान देकर और सुभद्राको अर्जुनको देकर फिर मिथिलापुरीको जातेभये २ ) अथ राजा परीक्षित् प्रश्न करे हैं हे ब्रह्मन् शुकदेवजी ! रामकृष्ण की वहिनि जो सुभद्राही ताय अर्जुन जैसे व्याहतभये जो सुभद्रा हमारी दादी होतीभई यह हम जाननेकी इच्छाकरे हैं १ यह प्रश्न सुनिकै श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! एक समय समय अर्जुन है सो तीर्थयात्रा करिवे कुं पृथ्वी में फिरत प्रभास तीर्थ में जातभयो तदा जायके अपनेमामा की पुत्री सुभद्रा है ताय वलदेवजी दुर्योधन कुं विवाह देखे और वसुदेवादिक नहीं देखेगे यह वात सुनिकै ता सुभद्रा के लेवे की है इच्छा जाके ऐसो अर्जुन संन्यासी बनिकै तीनदण्ड धारण करिकै द्वारकापुरीमें आवतभयो २ ) ३ अपने कार्य कुं सिद्ध करयो चाहै ऐसो अर्जुन चार महीना वर्षाके द्वारकापुरी में जितवतभयो द्वारकापुरी मनुष्यन ने आयके वारवार अर्जुन को सन्मान करयो है और संन्यासी बनिके अर्जुन आयो है यह न जाने ऐसे वलदेवजी ने भी सत्कार करयो ४ एक दिन संन्यासी है या

भावसु अर्जुन को निमन्त्रण करिके घरमें बुलाय कै श्रद्धापूर्वक बलदेवजी ने जो भोजन परोस्यो ताय अर्जुन भोजन करतभयो ५ द्वारका में शूरवीरन के मनकूँ हरे ऐसी सुन्दर कन्या है ताय अर्जुन देखतभयो प्रसन्नता करिके प्रफुल्लित है नेत्र जिनके ऐसे अर्जुन रतिके अभिप्राय करिके चलायमान जो मन है ताय सुभद्रा में लगवातभये ६ स्त्रीन के हृदय में वसिजाय ऐसे अर्जुन कूँ देखिके हासी सहित लाजभरे कटाक्षन कूँ करे और अर्जुन मेंही लागे है हृदय और नेत्र जाके ऐसी सुभद्रा भी चाहना करति भई ७ वढ़ो जो बलवान् कामदेवहै ता करिके चलायमानहै चित जाको ऐसो अर्जुन केवल सुभद्रा को ध्यान करत हरण करिवे को जो अवसर है ताय देखत बलदेवजी ने जो सम्मान क्रियो है ताको सुख नहीं पावतभयो ८ वढ़ी जो देवी की यात्राहै तामें रथमें बैठिके निकसी ऐसी सुभद्राकूँ माता पिता जो देव ही व वसुदेव है तिनकी और कृष्णजी की सम्मतिसुँ महारथी अर्जुन हरतभयो ९ रथ में बैठिके धनुष कूँ छेके अर्जुन है सो चारयो ओरते रौंके जो प्यादे है तिनै भजायके उनके पुकारतही जैसे सिंह अपनेभागकूँलेजायहै ऐसे लेजातभयो १० अर्जुन सुभद्राकूँ छेके गयो यह बात श्रवण करिके जैसे पूषमासीकूँ समुद्र उमड़े तैसे क्रोध जिनके उपाड़े भैक्ष्यं वलेनबुजु फिल ५ सोऽपश्यत्तत्रमहतीं कन्यावीरमनोहराम् ॥ प्रीत्युत्कृष्टेक्षणस्तस्यां भावक्षुब्धं मनोदधे ६ साऽपितंचकमेवीक्ष्य नारीणांहृदयंगमम् ॥ हसन्तीब्रीडितापाङ्गी तन्न्यस्तहृदयेक्षणा ७ तांपरं समनुव्यायन्नन्तरं प्रेमुरज्जुनः ॥ नलेभे संभ्रमचिन्तः काभेनातिबलीयसा ८ महत्यां देवयात्रायां रथस्यांडुर्गनिर्गताम् ॥ जहारानुमतः पित्रोः कृष्णस्य च महारथः ९ रथस्थो धनुरादाय शूरांश्चारुन्वतो भटान् ॥ विद्राव्यकोशतांस्वानां स्वभागं मुग्धराडिव १० तच्छ्रुत्वा श्रुभितोरामः पर्वणीवमहार्णवः ॥ गृहीतपादः कृष्णेन सुहृद्धिश्चान्वशाम्यत ११ प्राहिणोत्पारिवर्हाणि वरवध्वंसिदावलः ॥ महाधनो परस्करेभ रथाश्च वनरयोपितः १२ श्रीशुक उवाच ॥ कृष्णस्यासीद्विजश्रेष्ठः श्रुतदेव इति श्रुतः ॥ कृष्णैकभक्त्या पूर्णार्थः शान्तः कविरत्नम्पटः १३ सउवासविदेहपु मिथिलायां गृहाश्रमी ॥ अनीहयागताहार्यनिर्व्वर्त्तितनिर्जक्रियः १४ यात्रामात्रं त्वहर्देवाहुपनमस्युत ॥ नाधिकं तावतातुष्टः क्रियाश्चक्रे यथोचितः १५ तथानद्राष्ट्रपालोऽङ्गबहुलारव इति श्रुतः ॥ मैथिलो निर्गहमान उभाप्य च्युतभियौ १६ तयोः प्रसन्नो भगवान् दारुकेणाऽऽह्ननं रथम् ॥ आरुह्य साकं मुनिभि आयो ऐसे बलदेवजीकूँ सुहृद न सहित श्रीकृष्णचन्द्रने चरण पकरिके शान्तकरे ११ बलदेवजी वड़े आनन्दसँ वहिनि बहोई है तिगको दहेज पीछेत भिजवावत भये बहुत सो धन और वस्त्र वासन इत्यादिक सामग्री हाथी रथ घोड़ा पुरुष स्त्री इनसबकूँ भिजवावतभये १२ अब श्रीशुकदेवजी कहै है श्रीकृष्णकी जो एकपात्ता करिके सम्पूर्ण है मनोरथ जाको शान्तस्वभाव विवेकी विषयनमें आसक्त नहीं ऐसो श्रुतदेव या नाम करिके मसिद्ध जो ब्राह्मणहै सो श्रीकृष्णचन्द्र को भक्त होतभयो १३ बिना उपाय करे मिले जो भोजन ताही सौ निवाँव करिके अपने कर्मनकूँ करै ऐसो गृहस्थी ब्राह्मणहै नो विदेह देशमें जो मिथिलापुरी है तामें वास करतभयो १४ जितनेमें शरीरको निवाँव होइ उतनो भोजन प्रातिदिन अनायासपूर्वक आयोष्य है और अधिक नहीं परब्र उतनेहीमें सन्तोष करिके यथायोग्य सन्ध्योपासनादिक वर्त्मनकूँ करोकरै १५ हे राजन् परीक्षित ! जैसे श्रुतदेव ब्राह्मण भक्तहो तैसेही मिथिलादेशको पालन करनबोरो जनकके वंशमें भयो निरभिमान ऐसो बहुलारव

नाम करिके विख्यात राजा है सो श्रीकृष्ण को भक्त होतभयो ब्राह्मण और राजा ये दोनों श्रीकृष्णके धारे हैं १६ तिन दोनों भक्तन के ऊपर प्रसन्न भये ऐसे समर्थ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो रथवानने लायके ठाढ़ो करायो जो रथहैं तामें वैठिके मुनिनकुं संग लेके विदेह देशनकुं जातभये १७ कौन कौन मुनि संग लिखे तिनको नाम लेइ है नारदभी वामदेव अत्रिऋषि वेदव्यामजी परशुरामजी शुक्रदेवजी कहै है मै भी संग गयो और वृद्धस्पति कश्यप मैत्रेय च्यवनऋषिः आदि लेके और भी संग गये १८ हे राजन् परीक्षित! मार्गमें ग्रहनके सो तेज जिनको ऐसे मुनिनकुं संग लेके तहा तहा आयो जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके लिये पुरवासीजन हाथनमें अर्घलेके स्तुति करतभये जैसे उदय भये सूर्यकुं अर्घ देइहैं तैसे १९ आनर्देश धन्व कुरु जागल कङ्क मत्स्य पाञ्चाल कुन्ति मधु क्रैकय कोसल आणें इन देशनके तथा और देशनके वासी जो स्त्री पुरुषहैं ते उदार हैंसनि शुक्र स्नेहभरी चितवनि जामें ऐसो श्रीकृष्णचन्द्रको मुखारविन्दहैं ताय दृष्टि भरि है देवतभये २० अपनी दृष्टि करेते दूरिभयो है अज्ञान जिनको ऐसे पुरुषनकी दृष्टि कुं कल्याण देत और तत्त्वज्ञान देत दिशान के अनपर्थ्यन्त फँलिरहे पापनकुं नाशकरत देवता और मनुष्यन ने गायो जो

विदेहान्प्रययौमधुः १७ नारदोवामदेवोऽत्रिः कृष्णो रामोऽसितोऽश्विः ॥ अहंवृहस्पतिः कश्यपमैत्रेयश्च्यवननादयः १८ तत्रतत्रतमायान्तं पौराजानपदान्  
प ॥ उपतस्थुः सार्धहस्ताग्रहैः सूर्यभिर्बोदितम् १९ आनर्त्तधन्वकुरुजङ्गलकङ्कमत्स्यपाञ्चालकुन्तिमधुकैकयकोसलाणां ॥ अन्येचतन्मुखसरोजमुदारहास  
स्निग्धेक्षणं नृपपपुहं शिभिर्नृनार्यः २० तेभ्यः स्ववीक्षणं निनष्टतमिह हृद्भ्यः क्षेमं त्रिलोकगुरुर्थहं नृचच्छन् ॥ श्रुवन्दिगन्तधवलं स्वयं शोऽशुभधनं गतिं  
सुरेन्दुभिर्गाच्छनकैर्विदेहान् २१ तेऽव्युत्तं प्राप्तमाकर्ण्य पौराजानपदान्प ॥ अमीयुर्मदितास्तरमेगृहीताहं पाणयः २२ दृष्ट्वा तत्तमश्लोकं गीत्युत्कुल्ला  
ननाशयाः ॥ कैर्धृताञ्जलिभिर्नैमुः श्रुतपूर्वास्तथासुनीन् २३ स्वानुग्रहाय संप्राप्तं भवानौ तं जगद्गुरुम् ॥ मैथिलः श्रुतदेवश्च पादयोः पेततुः प्रभोः २४ न्यमं  
न्त्रयेतां दाशार्हमातिथ्येन सह द्विजैः ॥ मैथिलः श्रुतदेवश्च युगपत्संहताञ्जली २५ भगवांस्तदभिप्रेत्य द्रयोः प्रियचिर्कीर्पया ॥ उभयोराविशद्ग्रेहमुभाभ्यां नद  
लक्षिनः २६ श्रोतुमप्यसतांदूराज्जनकः स्वगृहागतान् ॥ आनीतेष्वासनाश्रयेषु सुखासीनान्महामनाः २७ प्रवृद्धभक्त्या उद्धर्पहृदयास्त्राविलेचणः ॥ न

अपनो यशहैं ताय श्रवण तरत चित्तोकी के गुरु श्रीकृष्णचन्द्र होले होले विदेहादिक देशनको जानभये २१ हे राजन् परीक्षित! ते सम्पूर्ण पुरवासी देशवासी जनहैं ते श्रीकृष्णचन्द्रहैं त्राये सुनिने हर्षित होयके पूजाके योग्य सामग्रीनकुं हाथमें लेके सम्मुख आवतभये २२ उत्तमहैं यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करि के प्रीतिमूं प्रफुल्लित भये हैं मुख और आनन्दः काग, जिनके ऐसे पुरुष हाथनकुं जोरि के शिरसूं लगायके नमस्कार करतभये तैसेही पहिले सुनि राखे जे मुनि हैं तिनैं मणाम करतभये २३ जगत् के गुरु जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं ते हमारे अनुग्रह कारि के लिये आये हैं या प्रकार मानिके मिथिलापुरी को राजा बहुलाश्व और श्रुतदेव ब्राह्मण ये दोनों श्रीकृष्णके चरणनमें परतभये २४ मिथिलापुरी को राजा बहुलाश्व और श्रुतदेव ये दोनों एक संग हाथ जोरि के ब्राह्मणनसहित जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको आतिथ्यभाव करिके निमन्त्रण करतभये २५ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रदोनो न को निमन्त्रण मानिके दोनो न के भिय करि के लिये दो रूपा धरिके

दोनों के घर जातधये ताससय राजा और ब्राह्मण यह नहीं जानें हैं कि ये दो रूप करे हैं २६ बड़ो है मन जाओ चडी भक्ति करि के हृदयमें हर्ष जाओ भयो नेत्रनमें आसू जा के आगये ये तो जनकवंशी राजा बहुलाराय है सो असत्य पुरुषन के सुनिवे में भी न आवे ऐसे भगवान् अपने घरआये लायके विचार्ये जो श्रेष्ठ आसनहैं तिनपै सुख तें पैठ ऐसे जे मुनिहैं निनं नमस्कार करि के तिनके चरणन कूं थोड़के लोकन के पवित्र करनयारो जो चरणन को जलहैं २७ । २८ ताथ कुटुम्ब सहित राजा बहुलाराय अपने माथे पै चढ़ाय के ईश्वर और ईश्वरकी बराबर जो ब्राह्मणहैं तिनको गन्ध पुष्प माला वस्त्र आभूषण धूप दीप अर्घ्य गौ वैल इन सामग्रीन सूं पूजन करतभये २९ और मधुरवागीन सूं प्रसन्न करत गोदमें धरे जो श्रीकृष्ण के चरण हैं तिन हौले होले दावत आनन्द करिके अन्नसूं वसमये जे ब्राह्मणहैं तिनसूं यह कहतभये ३० अब राजा बहुलाराय कहे हैं हे समर्थ ! सब प्राणीनके आत्मा साक्षी स्वयंमकाश तुमहीं हो याही कारण तें तुम्हारे चरणारविन्दको स्मरण करूं जो मैं हूं ताकूं तुमने दर्शन दियो है ३१ जो मोकूं एकान्ती भक्त प्यारो है ऐसो भक्त्योके सम्बन्धने बलदेवजी प्यारे नहीं हैं स्त्री के सम्बन्धने लक्ष्मी प्रिय नहीं है पुत्र के सम्बन्धने ब्रह्मा

त्वातदङ्गीन्प्रक्षाल्य तदपोलोकपावनीः २८ मकुटभोवहन्मूर्द्धां पूजयाञ्चकईश्वरान् ॥ गन्धमाल्याम्बराकल्पधूपदीपार्घ्यगोधूपैः २९ वानामधुरयाप्राण  
त्रिदामाहात्रतर्पितान् ॥ पादावङ्कगतौविष्णोःसंपृशञ्जनकैर्मुदा ३० राजोवाच ॥ भवान्हिसर्वभूतानामात्मासाक्षीस्वहृषिभोः ॥ अथनमस्तपदा  
म्भोजं स्मरतांदर्शनगतः ३१ स्ववचस्तद्वर्तकं तुमस्मद्दृष्टमगोचरो भवान् ॥ यदात्थैकान्तभक्तान्मेनानन्तःश्रीरजःप्रियः ३२ कोलुस्त्वचणाभोजमेवंविद्धिमृ  
जैत्युमान् ॥ निष्कञ्चनानांशान्तानांमुनीनांयस्त्वमात्मदः ३३ योऽवतीर्ययदोर्वशोनृणांसं सरतामिह ॥ यशोवितेनेतच्छ्रान्त्यै त्रैलोक्यवृजिनापहस्य ३४  
नमस्तुभ्यंभगवते कृष्णायैकगुणमधसे ॥ नारायणायैः सुशान्तं तपईयुषे ३५ दिनानिकतिचिद्धमन् गृहान्नोनिबराद्धिजैः ॥ रामेतः पादरजमा पुनी  
हीदंनिमेः कुलम् ३६ इत्युपामन्त्रितो राज्ञा भगवल्लोकभावनः ॥ उवासकुर्वन्कल्याणं मिथिलानस्योपितास्य ३७ श्रुतदेवोऽच्युतंप्राप्तं स्वगृहाञ्जन

प्यारे नहीं हैं यह आपको बहो जो बचन है ताथ सत्य करिवेके लिये आपने हमकूं दर्शन दियो है ३२ भक्त तुम्हें प्रिय हैं या प्रकार जाने है ऐसो कौन पुरुष तुम्हारे चरणारविन्दकूं त्यागेगो निष्कञ्चन अर्थात् कछु जिनके पास नहीं शान्त जिनको स्वभाव ऐसे जे मननशील मुनिहैं तिनकूं तुम अपनी वद दे चुके हो ३३ ऐसे तुम यदुर्वश में अवतार लेके संसार में भ्रमे जे माणी हैं तिनके संसार छुड़ाये के लिये त्रिलोकी को जो दुःख है ताथ दूरिकरै ऐसे यशको विस्तार करत भये ३४ नहीं नाश होय ज्ञ न जिनको अत्यन्त शान्त तपकूं करो ऐसे नाशायण व्यापि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जो तुम हो तिनकूं नमस्कार है ३५ हे व्यापक ! सर्वत्र जो तुम हो सो सब ब्राह्मणन सहित कुछ दिन हमारे घरनमें बसिके अपने चरणरूपल की रज सू यह निगि राजा को कुल है ताथ पवित्र करो ३६ राजा बहुलाराय ने या प्रकार जिनने कही ऐसे लोकन के पवित्र करनयारो जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो मिथिलापुरी के पुरुष स्त्रीनके बलयाण करतेहुये बितने दिन पर्यन्त वास करत भये ३७ जैसे जनकवंशोत्पन्न बहुलाराय राजा कूं प्राप्त भये ऐसे श्रुतदेव ब्राह्मण भी प्राप्तहुये जो श्रीकृष्णचन्द्र और मुनि हैं तिनने नमस्कार करिके अत्यन्त हर्षित होय



के वल्लभं धुपायन नाचनभयो ३८ लाय के चित्रागे जे तृण पटा दुनू के आसन ई नितोये यण्णन मदिगी श्रीकृष्णगच्छं ईश्वर के भले आरंभमे उदाई करिके स्त्रीमदिन बुन्देन प्रालम्ब है सो आनन्द गुरु उक्त के चरण मोचन भयो ३९ भयो है ४० भयो जा के धीर प्राप्त करे ई समूह गतोय गाने गेयो उदाभागी जो श्रुतदेव प्रालम्ब है सो चाम्पारिन्ट के भोजन चल नू पाटमानदिन समस्तकुल रूपविन कन भयो ४० आरंभे गुरु आदि लोक के फल ई नित रिके तथा मुगन्यकृष्ण मुनिहा वृत्तमी कुरु वमल और जो कोई अनायास पूजा की मागपी है नित करिके और सचरणुण हं उदाये गेये गुरु दय करिके श्रुतदेव प्रालम्ब भगवान् श्रीकृष्णनन्द हो पुनन करिके आरामन करी भयो ४१ मय तीर्थेनहू पवित्र करे है चरणेण जिनकी और श्रीकृष्ण के समीप को रान गेये जे ब्रह्मण ई जिनसे मन्दै मो गान् अन्धकार न परयो जो भे हं गुरु यद संग कौन तारण ते भयो या प्रकार ब्राह्मण वद कन भयो ४२ सी भया पुन इत मरु मंग लेके गाम आगके उक्तो गौर श्रीकृष्णजी के चरण को दारै जो धुतदेव है मो यन्देवतार ई गौर आतिथ कियेद्वये भगवान्

कोयथा ॥ नत्वा मुनीन्मुमंहे शो धुन्वन्वासो नर्तह ३८ तृणपीठमुभीष्टेनानिनिपूवेत्यमः ॥ स्वागतेनागिनन्वाहून् सभाध्योऽपनिजेमुदा ३९ तद्

मभासामदाभाग आत्मानं सगृहान्यम ॥ स्नापगायक उच्छर्षो लज्जनमर्गमनोरथः ४० फलाहणोशी गजिवापृणा भुभिर्मृदासुभ्या तु वसीकृशाभुजैः ॥ आ

राधया मास योपपन्नया सपर्यया मत्स्यविवर्द्धनान्यम ४१ सतर्कया मास कुतोपमान्य मद्गृहान्यहोपतितस्य मत्तमः ॥ यन्मर्वा नीथी रूपदपादरेणुभिः कृ

ष्णेन चास्यात्मनि कृतधूमैः ४२ सूपापिशान्कृतानि श्याज्जुदेन उपस्थिनः ॥ सभाध्यः सज्जनापत्य उमानाह्वय भिमर्शनः ४३ श्रुतदेव उवाच ॥ ताद्यनो

दर्शनं प्राप्तं परंपरमपूरुषः ॥ यद्दीदंशक्तिभिः मृद्वप्रापिष्टे ह्यात्मन चया ४४ कथाशयानः गुरुभो मनेन वैवाऽऽत्तगायया ॥ सुश्रुलोकं परं समाप्रमनु विदयानभासेने

४५ श्रुतवतांगदनाशयवदन् नीतराऽभिवन्दनाम् ॥ नृणां गंवदतागन्नर्हदिगास्यमलात्मनाम् ४६ हृदिस्थोऽप्यतिदूरस्थः कर्मविक्षितचेनसाम् ॥ आत्मश

क्तिभिरग्राह्योऽप्यन्योपेतगुणात्मनाम् ४७ नमोऽस्मन्तेऽन्धात्मविदापगतमनेन आत्मनेस्मात्तपि भगवतुये ॥ सस्मरणाकारणलिङ्गभीषुपे स्वमाययाऽसं

सं कहत भयो ४३ अथ श्रुतदेव गच्छे है ना मम शक्तिन त्रिके या पित्र्य ई गी के अर्पणी सत्ता करिके योय मदि भये ताही मम पमगुरुन जो तुम हो सो हम हं मासभये परन्तु या सावरे

स्वरूप को दर्शन अथवा प्राप्त भयो है ४४ जैये मोचनो भयो पुण मन करिके तुम्हारी मागपुं मय भे और देव हं सान के गये भोज करिके मत्तम करे है ४५ नृमहारी कथानहं सुने तुम्हारे

नाम कू कैं सर्वदा तुम्हारी पूजा करे तुम हं मणाम परे तुम्हारी कथा हू हूँ तां नू निर्मल है पात्मा जिनके गेये पुण्यन के रक्षय के भीतर मत्तमारी ४६ रम्यन करिके चनाइयात है जिन

जिनके गेये पुरुषन के हृदय में भी ही परन्तु यानि दूरी और तुम्हारी कथा हं सानियो तुम्हारे नापरो लेयो ताहूँ तुम्हारे अन्तःकरण जिनके केये पुण्यन के तुम सर्वदा प्राप्त रहो ही ४७ देव और श्रुत भयो है अभिमान जिनको केये पुण्यन हू मोक्ष के देन करे ही और देव दुष्टमें जाके अभिमान नहीं केये पुण्यन हं आप रागार देत ही साग्य महदादि त मरण पाया ये

दोनों लपाधि हैं तिन सेवन करो ही अपनी माया करिके आप ढके नहीं हो और जीवनकी दृष्टि जिनने ढकि राखी है ऐसे जे तुम हो तिनकुं प्रणाम है ४८ ऐसे तुम हम अपने भृत्यनकुं शिजा देव हे देव अर्थात् प्रकाशमान ! तुम्हारी कहा हम पूजनकरै यावत् आप नेत्रके आगे नहीं आवो हो तावत् मनुष्यनकुं लेश रहे हैं ४९ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार श्रुत-देव ब्राह्मण को कसो वचन सुनिकै शरणागतन के दुःख के हरनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपने हाथ सँ ब्राह्मण को हाथ पकरिके हँसिके यह बोलतभये ५० मेरो आदर बहुत और ब्राह्मणन को थोड़ो कियो देखिके लोकन के शिक्तक भगवान् हैं सो मोते भी ब्राह्मणन में श्रद्धा बहुतकरी चाहिये या प्रकार श्रुतदेव कुं सिखावे हैं हे ब्राह्मण ! तुम्हारी मलो करिवे के लिये ये मुनि प्राप्त हुये हैं यह तुम जानो हो अपने चरणन की रेणु डारिके लोकन के पवित्र करिवे के लिये मोसहित विचरत हैं ५१ देवता क्षेत्र तीर्थइनके दर्शन स्पर्शन अर्चन करे तें बहुत कालमें होले होले पवित्र होय हैं सो भी महात्मान की इच्छा होय तो और ब्राह्मण तो शीघ्रही पवित्र करे है ५२ या ससारमें सपस्त प्राणीन की अपेक्षा करिके ब्राह्मण जन्मही ते श्रेष्ठ है और जो तप करिके विद्या पाड़े

तरुद्धदृष्टये ४८ सत्वंशाधिस्वभृत्यान्नः विदेवकरवामहे ॥ एतदन्तोनुणक्लेशो यद्भवानक्षिगोचरः ४९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ तदुक्तामित्युपाकरणं भगवान् प्रणतार्त्तिहा ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिं प्रहसंस्तमुवाचह ५० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ब्रह्मस्तेऽनुग्रहार्थायसम्प्राप्तान्निधिमन्मुनीन् ॥ सञ्चरन्तिमयालोकान् पुनन्तःपादरेणुभिः ५१ देवाःक्षेत्राणितीर्थानि दर्शनस्पर्शनार्चनैः ॥ शनैःपुनन्तिकालेन तदप्यर्द्धत्तमेक्षया ५२ ब्राह्मणो जन्मना श्रेयान् सर्वेषांप्राणिना मिह ॥ तपसाविद्ययातुष्ट्या किमुमत्कलयायुतः ५३ नब्राह्मणान्मेदयितं रूपमेतच्चतुर्भुजम् ॥ सर्ववेदमयोविप्रःसर्वदेवमयोह्यहम् ५४ दुष्टप्रज्ञाअविदित्वै वमवजानन्त्यसूयवः ॥ गुरुर्भाविपूमात्मानमर्चादाविज्यदृष्टयः ५५ चराचरमिदंविश्वं भावयेचास्यहेतवः ॥ मद्रूपाणीतिचेतस्याधत्तेविप्रोमदीक्षया ५६ तस्माद्ब्रह्मऋषीनेतान् ब्रह्मन्मच्छ्रद्धयाऽर्चय ॥ एवंवेदर्वितोऽस्म्यद्धानान्यथाभूरिभूतिभिः ५७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ सइत्थंप्रभुणाऽऽदिष्टःसहस्रगुणान्द्विजो

के सन्तोष करिके हमारी कला सँ युक्त होयकै श्रेष्ठ होय तो यामें कहा कहनो है ५३ जो ब्राह्मण मोकुं प्यारो है सो चतुर्भुजरूप प्यारो नहीं लोग है सम्पूर्ण वेदमय ब्राह्मण है और देवतारूप में हू ५४ खेदी है बुद्धि जिनकी गुणन में दोषन कू देखै पूजादिकमें पूज्यबुद्धि ऐसे पुरुष हैं ते भी ब्राह्मण वेदमयहैं ऐसे नहीं जानिके गुरुरूप ब्राह्मणरूप सर्वको आत्मा जो मैं हूँ ताको अनादर करे हे ५५ स्थावर जंगम जो यह वियव है और जे या विश्व के वारण महदादिक पदार्थ हैं तिनकुं ब्राह्मणहैं सो मेरो स्वरूप जानिके मेरोही सर्वत्र दर्शन है ता करिकै चित्त में राखे है ५६ हे ब्राह्मण श्रुतदेव ! श्रद्धा करिके ब्रह्मऋषिन को पूजन करो मो में इनमें एक सौ भाव करोगे तो मेरी साक्षात् पूजा होयजायगी भेदभाव करिके मेरी बहुत सी सम्पत्ति करिके भी पूजा करोगे तो मैं प्रसन्न नहीं होलँगो ५७ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन्परीक्षित ! ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रने जाकुं आज्ञा दीनी ऐसो जो श्रुतदेव ब्राह्मण है सो श्रीकृष्णचन्द्र सहित जे ब्राह्मण हैं तिनमें एक

भाव सँ आराधन करिके सुन्दर गति कूँ पाय गयो और मिथिलापुरी की राजा है सो भी सुन्दर गति कूँ पाय गयो ५८ हे राजन परीक्षित ! या प्रकार भक्तन की भक्ति करे ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण-चन्द्र है सो अपने भक्त बहुलाश्व और श्रुतदेव इन के यहाँ वास करिके सन्मार्ग अर्थवत् उपासनाकाण्ड ज्ञानकाण्ड कर्मकाण्ड इन तीनों काण्डन को उपदेश करि फेरि द्वारकापुरी में आवत भये ५९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपियादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे श्रुतदेवानुग्रहो नाम पटशतितमोऽध्यायः ८६ ॥ \* ॥ \* ॥

( सप्तशीतितमे नारायणनारदवादतः ॥ वेदैः स्तुतिर्गुणालम्ब्या निर्गुणा विधिवर्धते ? सत्तासीनं अध्यायं नारायण और नारदजी के वादसँ वेदनने गुणनके आलम्बवाली स्तुति निर्गुणकी अवधिताई वर्णन की है ? ) पहिले अध्यायके अन्त में भगवान् वेद को मार्ग ब्रह्मपर है ऐसे उपदेश करिके जातभये यह कह्यो तहाँ वेदन कूँ ब्रह्म परस्व नहीं वने है यह मानिके राजा परीक्षित प्रश्न करे हैं हे ब्रह्मन् ! निर्देश करि दे में न आवै निर्गुण और साक्षात् कार्य कारण इनते परे ऐसो जो ब्रह्मताम गुणवृत्ति श्रुति साक्षात् कैसे विचरे है ? तथा शुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित !

समान् ॥ आराध्यै कालमभावेन मैथिलश्चापसद्वृत्तिषु ५८ एवं स्वभक्त्यो राजन् भगवान् भक्तभक्तिमान् ॥ उपित्वाऽऽदिश्य सन्मार्गं पुनर्द्वारवतीमगात् ५९ ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुगाणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे श्रुतदेवानुग्रहो नाम पटशतितमोऽध्यायः ८६ ॥ \* ॥ \* ॥

परीक्षितवाच ॥ ब्रह्मन् ब्रह्मण्यनिर्देश्ये निर्गुणे गुणवृत्तयः ॥ कथंचरन्ति श्रुतयः साक्षात्सदसतः परे १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ बुद्धीन्द्रियमनः प्राणाञ्जनाना ममृजत्पुमुना ॥ मात्राऽर्थश्च भवार्थश्च आत्मनेऽकल्पनाय च २ सैषा ह्यपनिषद्ब्राह्मी पूर्वेपां पूर्वं जैर्धृता ॥ श्रद्धया धारयेद्यस्तां क्षेमगच्छेदकिञ्चनः ३ अत्र ते वर्णयिष्यामि गाथां नारायणा न्यिताम् ॥ नारदस्य च संवादं धृपेर्नारायणस्य च ४ एकदानारदोलोकात् पश्यत्स्वभगवत्प्रियः ॥ सनातनमृषिन्द्रं हुं ययौ नारायणाश्रमम् ५ ययौ भारतवर्षेऽस्मिन् क्षमायस्वस्तये नृणां ॥ धर्मज्ञानशमोपेतमाकल्पादास्थितस्तपः ६ तत्रोपविष्टमृषिभिः कलापग्रामवासिभिः ॥ परीतं प्रणतोऽपृच्छदिदमेव कुरुद्वह ७ तस्मै ह्यत्रोचद्भगवानृषीणां श्रुत्वा तामिदम् ॥ यो ब्रह्मवादः पूर्वेषां जनलोकां निवासिनाम् ८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ स्वा

मभु जो हैं सो जनन के लिये बुद्धि इन्द्रिय मन प्राण इनकूँ सृजत भये काहे के अर्थ मात्रा जे विषय तिनके अर्थ और जन्मलक्षण जे कर्म तिनके करायने के लिये और आत्मा कूँ लोकनके भोग के अर्थ तथा मुक्तिके लिये सृजे है २ यह जो ब्रह्मपर अपनिषद् है सो पहिलेन के पहिले भये ऐसे जे सनकादिक है तिनने प्रथम धारण करी है जो पुरुष निष्कञ्चन होय के श्रद्धापूर्वक याहि धारण करै सो कल्याणकूँ प्राप्त होइ है ३ यहाँ तरे अर्थ नारायण करिके युक्त जो गाथा है ताया हम वर्णन करे हैं जा गाथा में नारद जी को और ऋषि नारायण जी को संवाद है ४ परसमय भगवान् के प्यारे नारदजी सम्पूर्ण लोकन में फिरत फिरत सनातन ऋषि कूँ देखिके के निमित्त नारायण के आश्रम में आवत भये ५ जो नारायण या भरतखण्ड में मनुष्यनके क्षेम के लिये और मङ्गल के लिये धर्म ज्ञान शम इन करिके युक्त जो तप है ताकूँ कल्पपर्यन्त करे है ६ हे परीक्षित ! तथा कलापग्राम के वासी ऋषिन सहित बैठे जे नारायण तिनमूँ नम्र होयके यह पूछत



ताकूँ सेवन करिके पाप और दुःखन कूँ त्यागे हैं जो तुम्हारी कथामात्र करिके पापनको त्याग होइ है तहां कहा कहनो है और जे स्वरूप के स्मरण करिके त्यागे हैं अन्तःकरण के रागादिक काल के गुण जरादिक ते जिनते पापकूँ दूरि करे हैं यामें कहा कहनो है हे परमेश्वर ! तुम्हारी परम अखण्ड आनन्द अनुभव स्वरूप को भजन करिके दुःखन कूँ त्यागे यामें कहा कहनो है ? ६ अब जे पुरुष तुम्हारी भजन नहीं करे हैं तिनकी निन्दा और प्राण ग्राही तुम्हारी भजन करे हैं तिनको सफल जीवन है या प्रकार स्तुति करे हैं जे प्राणग्राही तुम्हारी भजन करिके इवासन कूँ पूरी करे हैं ते सफलजन्मा हैं और जो विना भजनकरे इवास लेई हैं वे लोहार की धौकनीकी तुल्य वृथा रवास लेई हैं तुम्हारे भजनके विना कृतघनीनकूँ फल सिद्ध नहीं होई है अब या प्रकार कहे हैं जाके अनुग्रह करिके महत्तत्त्व अहङ्कारादिक जे तत्त्व हैं ते या देखकूँ सुजत भये ता देखने अबमयादिकोशन में प्रवेश करिके ताता आकार करिके चेतन करे हैं सो तुमही सो कहे हैं अन्नमयादिकन कैसो है आकार जाको ऐसो पुरुष अन्नमयादिकनमें मिलि रख्यो है ऐसोहो तो सत्य अह्नमें कैसोहो तहां कहे हैं अन्नमयादिकन के अन्तमें हो याते पुच्छ करिके वर्णन करे हैं स्थूल सूक्ष्म इनतें परेहो

पुनःस्वधामविधुताशयकालगुणाः परमभजनित्येपदमजससुखानुभवम् १६ दृतयद्वश्वसन्त्यसुभृतोयदितेनुविधामद्वहमादयोऽण्डमसृजन्त्यदनुग्रहतः॥  
पुरुषविधोऽन्वयोऽन्नचरमोऽन्नमयादिपुनःसदसतःपरन्त्वमथयेदष्ववशेषममृतम् १७ उदरमुपासेत्येयम्पिवर्त्मसुकूर्पदृशःपरिसरपच्छर्तिहृदयमारुणयोदहरम् ॥  
ततउदगादनन्ततवधामशिरःपरगं पुनरिहयत्समेत्यनपतान्तिकृतान्तमुखे १८ स्वकृतविचित्रयोनिपुत्रिशन्निवेहेतुयातरतमतश्चकास्यनलवत्स्वकृतानुकृतिः॥ अथवितथास्वमूष्णवितथंतवधागसमं विरजधियोऽन्वयन्त्यभिविपश्यवएकरसम् १९ स्वकृतपुरुष्वमीष्विवाहिरन्तरसंवरणंतवपुरुषंवदन्त्यखिलशक्तिश्च तौशकृतम् ॥ इति नृगतिविविच्यकवयोनिगमावपनं भवतउपासतेऽङ्घ्रिमभवंभुविविश्वसिताः २० दुस्वगमात्मतत्त्वनिगमायतवात्तनोश्चरितमहामृता

और इनमें अतिशेषरूपही याते सत्यही शाखा इन्द्रकी तुल्य शुद्धरूप दिलायेवे के लिये अन्नमयादिकन में सम्बन्ध कबो हो ? ७ ऋषि के मार्ग में जे कूरट्टि हैं ते उदरब्रह्मकी उपासना करे हैं और जे अरुणवंशीय हैं ते नाडीन के चलित्रे को स्थान सूक्ष्म हृदय में स्थित ऐसे ब्रह्मही उपासना करे हैं हे अन्त ! तुम्हारी मासिको जो स्थान सुप्पणा जाको नाम सो शिरकूँ प्राप्त होत भयो कैसो धाम है कि जाय प्राप्तहोय के करि मृत्युको मुक्त जो यह संसार है तामें नहीं परे हैं ? ८ तुम्हारे करे ऐसे चित्र विचित्र ऊँच नीच मध्यम देहादिक तिनमें कारणरूप होई है पहिलेही विद्यमानहो याते पूर्ववेशे करत तारतम्यता करिके प्रकाशो ही जैसे काष्ठ में अग्नि ऐसे अपनी करी जे योनि तिनमें अनुकरण करोहो याते पिष्टयापृत योनि में समान एकरस सत्य ऐसो तुम्हारा स्वरूप ताय निर्मल हैं बुद्धि जिनकी तथा गये हैं व्यवहार जिनके ते पुरुष जाने हैं ? ९ अपने कर्मन करिके प्राप्तभये जे नारादिक देह हैं तिनमें भोक्तृत्व करिके वर्तमान है और भीतर बाहर आवरण नहीं हैं जाके ऐसे जीवकूँ समस्त शक्तिनके धारण करनवाँरे जो तुम तिनको अंश सो कह्यो है सो कहे हैं या प्रकार कवि हैं ते जीवकी गतिकूँ विचारिके वेदनको उत्पत्तिस्थान और नहीं है संसार जाते ऐसे तुम्हारे वरणकी उपासना करे हैं या प्रकार कियो है विश्वास जिनने ऐसे कविन कूँ मर्त्यलोक में यही उचित है २० हे ईश्वर ! दुर्बोय जो आत्मतत्त्व है ताके जनार्दवे के निमित्त प्रकट करी

है मूर्ति जिनने ऐसे जे तुमहो तिनको चरित्रही बड़ो अमृतलक्षण समुद्र है तामें अत्रागाहन करिके दूरि भयो है अम्र जिनको ऐसे कोई एक तुम्हारे भक्तहैं ते मोक्षभी ईच्छा नहीं करे हैं और तुम्हारे चरणकमल में अत्रागाहन करत हंसकी तुल्य रमण करे हैं ऐसे भक्तन के कुलके संग करिके धर जिनने त्यागि दिये हैं २१ तुम्हारी सेवाको मार्ग जो देहहै सो आत्मा और प्राणके तुल्य आचरण करे है तथापि सम्मुख हितकारी प्यारे आत्मा जो तुमहो तिनमें साक्षात् भाव करिके नहीं भजनकरे हैं याते आत्मघाती है अहो वड़ोकष्टहै मिथ्याभूत देहादिकनके सेवनते असत् उपासना में है वासना जिनकी ऐसे नीच देहकू धारण करनेवारे नड़ो भयरूप जो संसारहै तामें भ्रमणकरे हैं याते आत्मघाती हैं २२ जीती हैं प्राण मन इन्द्रिय जिनने ऐसे दृढयोगके करनवारे मुनि हृदय में जाकी उपासना करे हैं ताही प्रकार शत्रु हैं ते भी तुम्हारे स्मरण ते तुमकूं प्राप्तभये है तथा शेष के शरीरकी तुल्य जे तुम्हारे भुजदण्डहैं तिनमें आसक्तहैं बुद्धि जिनकी ऐसी जे छांह ते सम्पूर्ण समान दृष्टि करिके तुमकूं देखे हैं और तुमकूं प्राप्त भई हैं याही प्रकार हम जे श्रुति हैं ते तुमकूं कृपा करिये में समान हैं कैसी हम है तुम्हारे चरण धारण करे हैं या प्रकार तुम्हारे स्मरणको प्रभाव

विधपरिवर्त्तपरिश्रमणाः ॥ नपरिलपन्तिकेचिदपवर्गमपीश्वरते चरणसरोजहंसकुलसङ्गविमृष्टगृहाः २१ त्वदनुपथंकुलायमिदमारामसुहृत्प्रियवचरितथो न्मुखेत्वयिहितेप्रियआत्मनिच ॥ नवतरमन्यहोअसदुपासनयाऽऽत्महनोयदनुशयाअमन्युरुभयेकुशरीरभृतः २२ निभृतमरुमनोऽज्जटदयोगयुजोहृदिय न्मुनयउपासतेतदरयोऽपिययुःस्मरणात् ॥ स्त्रियउरगेन्द्रभोगभुजदण्डविपक्कधियोवयमपितेसमाःसमदृशोऽङ्घ्रिसरोजसुधाः २३ कइहुनुवेदवतावरजन्मल योऽग्रसरंयतउदगाहपिर्यमनुदेवगणउभये ॥ तर्हिनसन्नचासदुभयंनचकालजवःकिमपिनतत्रशास्त्रमवकृष्यशयीतयदा २४ जनिममतःसतोष्ट्रुतिमुता त्मनियेचभिदां त्रिपणष्टतंस्मरन्तुपदिशन्तितआरुपितैः ॥ त्रिगुणमयःपुमानितिभिदायदबोधकृतात्वभिन्नतःपरत्रसंभवेदवबोधसे २५ सदिवमनस्त्रिद्व

है २३ हे भगवन् ! या संसार में पूर्वसिद्ध जो तुमहौ तिनकूं आधुनिक उत्पत्ति विनाश इन करिके युक्त जो पुरुषहैं सो कैसे जानेगो अर्थात् नहीं जानेगो जिन तुमते ब्रह्मा उत्पन्न भयोहै जा ब्रह्मा के पीछे आध्यात्मिक आधिदैविक देवतानके गण उत्पन्नभये जा समय तुम सबको संहार करिके सोचो हौ ता समय जीवनकूं ज्ञानसाधन नहीं है याते प्रलयके समय स्थूल जो आकाशादिक सो नहीं है और सूक्ष्म महदादिक सोभी नहीं है तथा स्थूल सूक्ष्म करिके आरब्ध जो शरीर सो भी नहीं है और शरीरको कारणरूप कालको विषयभाव है सो भी नहीं है ऐसे भये सन्ते ता समय इन्द्रिय प्राणादिक केछु नहीं हैं और सबको जनावनवारो जो शास्त्र सो भी नहीं है २४ मिथ्याभूत यह जगत्है ताकी उत्पत्तिहै या प्रकार वैशेषिकादिक आचार्य कहे हैं और इवईम प्रकार के दुःखन को जो नाश है सो मोक्षहै ऐसे नैयायिक माने हैं और सांख्याचार्य हैं ते आत्मा में भेद भाव माने हैं तथा कर्म फलके व्यवहारकूं भीमांसक सत्य कहे हैं ते सम्पूर्ण आरोपित भ्रम करिके ही उपदेश करे हैं तत्त्वदृष्टि करिके उपदेश नहीं करे हैं वास्तव ते पुरुष त्रिगुणमयहोय तो सब जीव जिसके हैं सो सम्भव नहीं है यह कहे हैं त्रिगुणमय पुरुष है यह जो भेद है सो तुम्हारे त्रिपे अज्ञान करिके कियो है तुम कैसेहो अज्ञानते परे हौ सन्नरहित हौ ज्ञानवन्त हौ सो नहीं सब है २५ जो असत् नहीं उपजेहै और त्रिगुणमय पुरुष नहीं है तो यह पण्ड्य भगोहो





कैसे है कारणभाव करिके जो विकार तिनै त्यागिके जो है सो सर्वव्यापक है फेरि बैसो है कि जो कहै हैं हम जाने हैं तिनने नहीं जान्यो है और जे कहै हैं हमने नहीं जान्यो है तिननेही जान्यो है ३० प्रकृति और पुरुष इनको जो जन्म है सो नहीं सम्भव है क्यों प्रकृति पुरुष अजन्मा है या कारण प्रकृति पुरुषके सम्बन्ध वरिके जीव जन्म लेइ है जैसे जल में ववूला है ते केवल जल करिके नहीं उत्पन्न होइ है और केवल पवन करिके भी नहीं उत्पन्न होइ है किन्तु दोनों से उत्पन्न होइ है तुम जो कारणरूप ईश्वरहौ तिनके विषे अनेक नाम रूप गुण इन करिके सहित जीव लीन होइ है ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे शूद्रमें सम्पूर्ण वनस्पतीनके रस लीन होइ है और जैसे समुद्र में सम्पूर्ण नदी लीन होइ है ऐसे ३१ जीवनके विषे तुम्हारी माया करिके अम है ताजानिके सुन्दर है बुद्धि जिनकी ऐसे पुरुष संसारके निवृत्त करनवारे जे तुमहौ तिनके विषे भावना करै हैं वैसे अमे हैं वारंवार जन्म लेइ हैं और जे तुम्हारे शरण होइके भजन करै हैं तिनकुं संसारको भय नहीं होइ है माहे तैं तीनि हैं शीत उष्ण वर्षा नेमि जाके ऐसो संवत्सररूपी काल सो तुम्हारी शरण नहीं हैं तिनके तुम रत्नक नहीं हौ किन्तु भयकारक हौ याते बुद्धिमान् हैं ते तुम्हारे विषे भाव करै हैं ३२

नियन्त भवेत्सममनुजाननां यदमतं मतदृष्टया ३० न घटन उद्भवः प्रकृतिपूरुषयोरजयोरुभययुजा गवन्त्यसुभृतोजलवुद्वुदवत् ॥ त्वयितइमेततो विविधनामगुणैः परमेसरित इवाणैवेमधुनिलित्युरशो परसाः ३१ नृपुतवमायया भ्रममपीष्ववगत्य भृशं त्वयि सुधियोऽभवेदधतिभावमनुप्रभवम् ॥ कथमनुवर्त्ततां भवभयन्तवयदभुक्कुटिः मृजति मुहुस्त्रिणैर्मिरभमच्छरणेषु भयम् ३२ विजितहृषीकवायुभिर्दान्तमनस्तुरंगं यद्वहयतन्तियन्तुमनिलोलसुपायसिद्धिः ॥ व्यसनशतान्विताः समवहायगोश्चरणं वाणिजइवा जसन्त्यकृतकर्णधराजलधौ ३३ स्वजनमुतात्मदारधनधामधराऽसुरैस्त्वयि सति किं नृणां श्रयत आत्मनिसर्व्वरसे ॥ इतिसदजानतां मिथुनतोरतये चरतां सुखयतिकोन्विहस्वविहतेस्वनिरसनभगे ३४ भुवि पुरुषगतीत्थसदनान्युपयो विमदास्नउतभवत्पदा म्बुजहृदोऽधिभद्विजलाः ॥ दधतिसकृन्मनस्त्वयिय आत्मनि नित्यसुखेन पुनरुपासते पुरुषसारहरावसथान् ३५ सतइदमुत्थितं सदिति चेन्ननुतर्कहतं

जीती है इन्द्रिय प्राण जिनने तिन करिके हू आतिचञ्चल दमन करिने कूँ अशक्य ऐसो मनरूप घोड़ा ताय जीतिवैकूँ जे यव करै हैं ते उपाय करिके खेदकूँ प्राप्त होइ है और चहुत व्यसनन करिके व्याकुल होइ है काहे तैं कि आत्म मन जीतिये है तिन गुरुनके चरणनकूँ त्यागिके यव करै हैं ते दुःखकूँ पावै हैं जैसे नहीं कियो है नावको खेवनवारो जिनने ऐसे बनिया समुद्रमें दुःख पावै ऐसे ३३ तुम्हारी जो पुरुष आश्रय लेइ है ताकूँ स्वजन पुत्रदेह स्त्री इन घर पृथ्वी प्राण रथ इनसुं कहा प्रयोजन है कैसे तुमहौ आत्मा सब सुख आनन्दरूप जो तुमहौ तिनको जो पुरुष आत्मामें सेवन करै ताकूँ इन तुन्छ पदार्थन सुं कहा प्रयोजन है सत्य परमार्थ सुखकूँ नहीं जानिके स्त्री पुरुष मिलिके रतिके लिये विचरे है तिनकूँ या संसारमें कौन सुख है अर्थात् कोई नहीं कैसो संसार है आपते मिथ्याभूत और सारहित है याते तुम्हारी भी भजन करिवो उचित है ३४ आश्चर्य कूँ त्यागिके तुम्हारे चरणारविदकूँ हृदय में धारण कियो है जिनने याही ते पापको दूरि करनवारो है चरणोदक जिनको ऐसे जे तुम्हारे भक्त ऋषि हैं ते पृथ्वीमें बहुत पुण्यतीर्थ क्षेत्रनकूँ सेवन करै हैं अथवा बहुत है भगवान् को भजनरूप पुण्य जिनके ऐसे गुरु महात्मानके आश्रमन को सेवन करै हैं वे पुरुषके सारके हरनवारो जे घर दितिनै नहीं



यति संन्यासी है ते हृदयमें स्थित ऐसी जे कामकी वासना है तिने नहीं उलारे हैं तिन असाधुन के हृदयमें तुम स्थित हो परन्तु नहीं मिलो हो कैसे नहीं मिलो हो जैसे कण्ठ में स्थित मणि भूले पीछे नहीं मिळे है तैसे तुम नहीं मिलो हो उन संन्यासीन कूँ केवल तुम्हारी स्मरण नहीं है तो कहा है जे इन्द्रियन के वृत्ति करनवारे हैं तिन कूँ या लोक में दुःखही है काहे ते दुःख है जाते लोकन को आराधन करने धन सञ्चय करने भोग करने परब छियाय के करने ताते या लोक में दुःख होइ है और तुम्हारी प्राप्ति के छिये संन्यास लियो है सो तुम्हारी प्राप्ति भई नहीं और अपने निजधर्म को अतिक्रमण कखो याते तुम्हारी दण्डरूप नरक ताकी प्राप्ति भई यांम् परलोक में भी सुख नहीं दोनों लोकन ते भ्रष्ट भये ३९ गुण और ऐश्वर्य करिके युक्त है भगवन् ! तुम्हारे ज्ञान करिके युक्त ऐसी जो भक्त है सो वर्मफलके देनवारे जो तुम ईश्वर तिन ते उठे प्राचीन पुण्य पाप तिनके फल जे सुख दुःख तिन स्मरण नहीं करे है और देशभिमानीन की प्रवृत्ति निवृत्ति की करनवारी ऐसी जे विधि नियमरूप बाणी तिन नहीं जाने हैं तुम्हारे भक्त के देशभिमानी नहीं है या कारण ते कार्य अकार्यको बोध नहीं है यह योग्य है जा कारण ते मनुष्यन करिके दिन दिन में श्रवण करिके चित्त में धारण किये ऐसे तुम सो भक्तन कूँ मोक्षगति होइ कैसे तुम भक्तन ने धारण कियो हो तहां कहे हैं युग युग में उपदेश को जो

पदाद्भवतः ३६ त्वद्वगमीनवेत्तिभवदुत्थशुभाशुभयोगुणविगुणान्वयांस्तर्हिदेहभृताश्चरिः ॥ अनुयुगमन्वहंसगुणगीतपरंपरया श्रवणभृतोयतस्त्व  
मपवर्गगतिर्मनुजैः ४० ह्युपतयएवतेनययुस्तमनन्तयात्वमपियदन्तराऽण्डनिचयाननुसावरणाः ॥ त्वद्वरजांसिवांतिवयसासहयच्छुनयस्त्वयि  
हिफलन्यतन्निरसनेनभवन्निधनाः ४१ श्रीभगवानुवाच ॥ इत्येतदब्रह्मणःपुत्राआश्रयात्मानुशासनम् ॥ सनन्दनमथाऽऽनन्दुःसिद्धाज्ञात्वाऽऽत्मनोगतिम्  
४२ इत्यशेषसमाम्नायपुराणोपनिषदसः ॥ समुद्धतःपूर्वजातैर्व्योमयानैर्महात्मभिः ४३ त्वच्चैतदब्रह्मादायादश्रद्धयाऽऽत्मानुशासनम् ॥ धारयंश्चरगां

विस्तार ता करिके सम्प्रदाय के अनुसार करिके धारण किये हो यांम् यह कहे हैं जे तत्त्वज्ञानी हैं तिनकूँ तो कर्म को अधिकार नहीं और जे नित्य तुम्हारी कथा श्रवण कीर्त्तन इत्यादिक करे हैं तिनकूँ तुम्हारे चरणकी प्राप्ति होइ है याते उनकूँ विधि निषेध नहीं है और जे हैं ते योग के कण्ठ करिके इन्द्रियन कूँ लड़ावे हैं तिन पुरुषन कूँ या लोक परलोक में दुःखही है ४० हे भगवन् ! स्वर्गादिक लोकन के पति जे ब्रह्मादिक हैं ते भी तुम्हारे प्रताप कूँ नहीं पावतभये तुमहीं अपने अन्त कूँ नहीं प्राप्त होउ हो ब्रह्मादिक न पावें यांम् कहा आश्चर्य है तहां भगवान् कहे हैं जो मैं अपने अन्त कूँ न जानौं तो सर्वशक्ति और सर्वज्ञ कैसेहूँ तहां कहे हैं तुम्हारे वैभव को अन्त नहीं है जैसे शरी के शृङ्ग नहीं जानने ते सर्वज्ञता शक्ति जाति रहे है किन्तु नहीं जाय है जो शरी के शृङ्ग होइ तो मिलै जा तुम परमेश्वर के मध्यमें दश गुण अधिक सात आवरण तिन करिके युक्त ब्रह्माण्डन के समूह ते कालचक्र करिके अन्त डोलै हैं जैसे आकाश में एक सङ्गरज भ्रमण करे हैं ऐसे याते श्रुति हैं ते पर्यवसान कूँ तात्पर्य करिके प्राप्त होइ हैं साक्षात् कहे हैं सगुण रूप जो तुमहीं तिनके गुणन को अन्त नहीं है निर्गुण है ताकूँ अगोचर नहीं जाते तात्पर्य मैं कहे हैं ४१ नारायण नारदसूँ कहे हैं या ब्रह्मा के पुत्र सनकादिक वेदनकी स्तुति श्रवण करिके आत्मा की गति जानि के सनन्दनजी को पूजन करत भये ४२ या प्रकार आकाशमें है गमन जि-



है ? ) अब राजा परीक्षित पूछनकरे हैं कि हे महाराज शुकदेन जी ! देवता असुर मनुष्यन में जे आंगलरूप शिव की भजन करे हैं ते बहुत धनवान् होय हैं और लक्ष्मी के पति श्री कृष्णचन्द्र को जे भजनकरे हैं ते धनवान् नही होय हैं और निपय भी नहीं भोगे हैं यह हम जान्यो चाहे हैं यामें हमारे वडो सन्देह है विकृद् है सभाव जिनको ऐसे जे स्वामी हैं तिनके भजन करनकरेन की और गति होइ है कही जो शिवजी बिभूति लावै श्पशान में बास करे आक धतूरो जिनक प्यारो लगे ऐसे अमद्गलरूप शिवजी हैं जिनके कछु नहीं तिनको जे भजन करे हैं ते लक्ष्मीवान् होइ हैं और भोग भोगे हैं और लक्ष्मी के पति अच्छे भोग भोगे सुन्दर वस्त्र पहिरे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं जे भोगे हैं ते बहुत धनवान् की गति औरै उचित तो यह है जो स्वामी होय तैसोही सेवकहोय सो नहीं यह सन्देह है ? २ अब शुकदेवजीकहे हैं हे राजन् परीक्षित ! शिवजी में शक्ति रहे है गुणनको जो आपुसमें संवर्षण है ताधूं तमोगुण तीन प्रकार को है ताहीकूं कहैं सात्त्विक अहंकार और राजस अहंकार अहंकार ऐसे तीन प्रकारके अहंकारके अधिपुता शिवजी हैं सो तीनप्रकारके हैं ३ ता अहंकारते पृथ्वी जल तेज वायु आवाणये

विरुद्धशीलयोःपूर्वोर्विरुद्धाभजतांगतिः२ श्रीशुकउवाच ॥ शिवःशक्तियुतःशश्वत्रिलिङ्गो गुणसंवृनः ॥ वैकारिकस्तैजसश्चतामसश्चेत्यहंत्रिधा ३ ततो  
विकाराअभवन्पोडशामीपुकिञ्चन॥ उपधावन्विभूतीनांसर्वासामश्नुतेगतिम् ४ हरिर्हिनिर्गुणःसाक्षात् पुरुषपूकृतोःपरः॥ससर्वद्वगु पदष्टा तंभजन्निर्गुणोभ  
वेत् ५ निवृत्तेष्वश्वमेधेषु राजायुष्मत्पितामहः ॥ शृण्वन्गगवतोधर्मानपृच्छदिदमच्युतम् ६ सत्राहभगवांस्तस्मै श्रीतःशुश्रूषवेपूसुः ॥ नृणांनिःश्रेय  
सार्थाय योऽवतीर्णोयदोःकुले ७ श्रीभगवानुवाच ॥ यस्याहमनुगृह्णामिहरिष्येतद्धनंशनैः ॥ ततोऽधनन्त्यजन्यस्यस्वजनादुःखदुःखिनम् न सयदानि  
तथोद्योगोनिर्विषःस्याद्धनेहया ॥ मत्परैःकृतमैत्रस्य करिष्येमदनुग्रहम् ८ तद्वत्त्वपरमंसूक्ष्मं चिन्मात्रंसदनन्तकम् ॥ अतोमांसुद्वाराध्यं हित्वाऽन्या

पञ्चभूत और दश इन्द्रिय तथा एक मन ये सोलह विकार भये हैं इन विकारनमें कोई एक विकारवान् उपाधिरूप विकार के भजन करते सम्पत्ति मिले है उपाधि जाकू छगि रही है वाके भजन करे ते उपाधि होइ है ४ निर्गुण साक्षात् माया ते परे सबके देखनवारे साक्षीभूत जो हरि भगवान् है तिनको जो पुरुष भजनकरे वह निर्गुण होइ है ५ अश्वमेय यज्ञ जब पूर्ण होय चुक्यो तब तुम्हारे दादे राजा युधिष्ठिर वैष्णव धर्मनकू श्रवण करिके पीछे श्रीकृष्णचन्द्र ते यह पूछत भये ६ मनुष्यनके कल्याण करिवे के लिये यहकुलमें आप अवतरे ऐसे समर्थ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो यमन होय के सुनने की इच्छाबाले राजा युधिष्ठिर ते यह कहत भये ७ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं कि जा पुरुष के ऊपर मैं कृपा करूं ता पुरुष करि लेउ हूं ता पीछे जब दरिद्री होइ जाय है तब दुःखी की तुल्य दिखाई देइ है वाकूं भय्या वन्धुन के दठते फेरि कमाई में लग्ये तब भरे अमुग्रहते निष्फल उग्रम होइ है तब धनके क्रमाइने ते भी वैराग्य आय जाय है ता समय मत्परायण जे साधु हैं तिनमूं भिन्नता करे है वा पुरुष के ऊपर मैं असाधारण अमुग्रह करूं ९ वह परब्रह्म सूच्य है चैतन्य है सर्वव्यापी है नाशरहित



है यति पै आराधन करिषे में नहीं आऊँहूँ मोक्ष स्थागिके यह पुरुष और देवतानकुं भजे है १० सेवनकरे पीछे शीघ्र प्रसन्न होय जे देवताहँ तिनसुं जो राज्य और धन प्राप्त भयो है तासुं उद्धत होय के मतवारो होय के उन्मत्त होयके वरके देनवारो जे देवताहँ तिन भूलि जायहँ और अवज्ञाकरे है ११ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! ब्रह्मा विष्णु शिव इत्यादिक जे देवता हैं ते शप देई और प्रसन्न होईहँ और शिव ब्रह्मा ये दोनों शीघ्रही प्रसन्न होईहँ और शीघ्रही शाग देईहँ और श्रीकृष्णचन्द्र शीघ्रही प्रसन्न नहीं होईहँ और जोप प्रसन्न होई तांकुं शप नहीं देईहँ १२ ब्रह्मा और शिवजी ये शीघ्र शाग देईहँ यामें एक प्राचीन इतिहास है सो वर्णन करे हैं शिवजी टुकासुरकुं वरदैक कष्ट पावतभये १३ खोटी है बुद्धि जाकी ऐसो शकुनिको पुत्र टुकासुर मार्ग १४ तन नारदजी कहतभये कि तू महादेव को सेवन कर शीघ्र तेरो मनोरथ सिद्ध हो-

नृभजतेजनः १० ततस्तन आशुतोपेभ्यो लब्धगज्याश्रयोद्धताः ॥ मत्ताः प्रमत्तावरदानि तस्मिन्त्यवजानते ११ श्रीशुक उवाच ॥ शापप्रसादयोरीशाब्रह्मविष्णु  
शिवादयः ॥ सद्यः शापप्रसादोऽङ्गशिबो ब्रह्मानचाच्युतः १२ अत्रचोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ॥ वृकासुरायगिरिशिवं दत्त्वा पसङ्कटम् १३ वृकोनापा  
सुरः पुत्रः शकुनेः पथिनारदम् ॥ हृष्णाऽऽशुतोपं पप्रच्छ देवेषु त्रिपुटुर्मतिः १४ स आह देवांगिरि समुपाधावाऽऽशुसिञ्चसि ॥ योऽल्पाभ्यांगुणदोषाभ्यामाशुतु  
व्यतिक्रम्यति १५ दशास्यत्राणयोस्तुष्टः स्तुवतोर्विन्दनोस्ति ॥ ऐश्वर्यमृतुलं दत्त्वा तत आपसु सङ्कटम् १६ इत्यादिष्टस्तमसुर उपाधावत्स्वगात्रतः ॥ केदार  
आत्मकव्येण लुहानोऽग्निमुखं हरम् १७ देवोपलब्धिमप्राप्य निर्वेदात्सप्तमेऽहनि ॥ शिरोऽवृथ्रस्त्वधितिना तर्क्षीर्ह्नि नमूर्द्धजम् १८ तदामहाकारुणिकः  
सधूर्त्रैर्दृष्ट्या वयं चाग्निरिवोत्थितोऽनलात् ॥ निगृह्य दोर्भ्यां भुजयोर्नृश्वारयत्तत्स्पर्शनाद्भ्युतपस्फुताकृतिः १९ तमाहवाङ्मालमलं वृणीष्व मे यथाऽभिक्रमं

यगो जो शिवजी थोड़े गुणनसू शीघ्र प्रसन्न और थोड़े दोष करि के क्रोषित होइ है १५ वन्दीजन की तुल्य स्तुति करें ऐसे जे रावण और बाणासुर तिनके ऊपर प्रसन्नपये ऐसे जे शिवजी हैं सो बड़ो ऐश्वर्य देके निन असुरनते आपही कष्ट पावतभये रावणने तो कैलास उलारि लियो और बाणासुरने कही कि मेरे पुरकी रत्नाफरो १६ या प्रकार नारदजीने कही ता समय टुकासुर अपने देहते शिवजी को सेवन करतभयो केदारतीर्थ में शिवजी के आर्य अपने शरीरको मांस काटिके अग्नि में हवन करतभयो १७ महादेव की प्राप्ति न भई तब निर्वेद आर्यगयो ताते सगमदिन तीर्थ में जो स्नान कियो तासूं भी जे हैं वार जाँ पेसो जो शिरहें ताप लुरीलैंके काटनलभयो १८ ता समय उड़े कल्याणान् शिवजी हैं सो मूर्तिमान् अग्नि की तुल्यहै प्रकाश जिनको ऐसे अग्नि-कुण्ड में ते निकसिके हाथनते असुरकी भुजा पकारिकैं जैसे कोई दुखने गारे गरिपसूं आचै ताग मने करे हैं ऐसे मने करतभये शिवजी के हाथके स्पर्श ते वाको देह ज्यों को त्यों होइगयो १९ टुका-सुरसूं शिवजी कहतभये कि हे टुकासुर ! तू तप करिके पूर्ण भयो अन वरमाग जो तेरी इच्छाहोइ सोही पर देउंगो जे मेरी शरण मनुष्य आर्भ है तिनके ऊपर गलपात्र के चढ़ापेतैंही प्रसन्न होय

जाऊँ हों वही आश्चर्य है तेने दृष्टादी अपने देहकू दुःख दियो २० तब वह अत्यन्त पापी जा जा पुरुषके शिरपै हैं हाथधरूँ वह पुरुष मरिजाय या प्रकार सम्पूर्ण भागीनके भयको देनवारो जो वा है ताय महादेवजी सँ मागतभयो २१ हे भरतवंशोत्पन्न राजन् परीक्षित् ! या प्रकार दृक्तासुरको वचन श्रवण करिके उदासीन से होयके अचब्दी वांतेहैं ऐसे मुसिकायके जैसे सर्पकू दूध प्यावे हैं ऐसे दृक्तासुरकू वर देतभये २२ या प्रकार जातिकही निश्चय पावर्त्तकी है चारुना जाके ऐसो असुर है सो वर भिऱ्याहै या सत्यहै यह परीक्षा लेवेके लिये महादेवजी के मायेपै हाथ धरिवे को उपाय करतभयो तासमय अपने कर्तव ते मयभीत होयके शिवजी भाजतभये २३ असुर जिनके पीछे लग्यो ऐसे शिवजी हरिके कपतेहुये स्वर्गपर्यन्त भाजे और पृथ्वीको जहाँ पर्यन्त अन्तहो तदातार् भाजे फेरि उत्तरदिशामें भाजिके गये २४ ता समय उपायकू नहीं जानिके सम्पूर्ण देवता चुप होत भये ता पीछे प्रकाशमान माया ते परे ऐसो जो वैकुण्ठधाम है तामें जात भये २५ जा दै-

वितरामितेवरम् ॥ प्रीयेयतोयेननुणांप्रपद्यामहोत्वयाऽऽत्माभृशमद्योतेवृथा २० देवंसवत्रेपापीयान् वंभूतभयावहम् ॥ यस्ययस्यकरंशीर्ष्णि धास्येसाम्प्रिय  
तामिति २१ तच्छ्रुत्वाभगवान्द्रोढुर्मनाइवभारत ॥ ओमितिप्रहंसंस्त्वमै ददेऽहेरभृतंयथा २२ इत्युक्त्वाऽसोऽसुरोनूनं गौरीहरणलालसः ॥ सतद्वरपरीक्षांश  
म्भोर्मूर्ध्निकिलासुरः ॥ स्वहस्तं धातुमारंभे सोऽविभ्यस्त्वकुनाञ्जिवः २३ तेनोपमृष्टः संत्रस्तः पराधावत्सवेपथुः ॥ यावदन्तं दिवोभूमेः काष्ठानामुदगादुदक्  
२४ अजानन्तः प्रतिविधिं तूष्णीमासन्नसुरेश्वराः ॥ ततोवैकुण्ठमगमद्भास्वरंतमसः परम् २५ यत्रनारायणः साक्षान्न्यासिनांपरमागतिः ॥ शान्तानान्यस्त  
दण्डानां यतोनावर्त्ततेगतः २६ तंतथाव्यसन्नंदृष्ट्वा भगवान्ब्रजिनार्दनः ॥ दूरतप्रत्युदियाद्भूत्वा वटुकोयोगमायया २७ मेखलाऽजिनदण्डाक्षस्तेजसाऽ  
ग्निरिवज्वलन् ॥ अभिवाद्यामासचतं कुशपाणिर्विनीतवत् २८ श्रीभगवानुवाच ॥ शाकुनेयभवानव्यक्तं श्रान्तः किंदूरमागतः ॥ क्षणं विश्रम्यतांपुंस  
आत्माऽयं सर्वकामधुक् २९ यदिनः श्रवणयाऽलं युष्मद्व्यवसितं विभो ॥ भगवतांप्रायशः पुंभिर्भूतैः स्वार्थान्समीहते ३० श्रीशुकउवाच ॥ एवंभगव

कुरुग्राम में शान्त जिनको स्वभाव और दूर भयो है कालको दण्ड जिनते ऐसे संन्यासीन कू परमागति अर्थात् प्राप्त होयवे योग्य ऐसे नारायण हैं सो साक्षात् विराजमान हैं २६ दुःखन के दूर करनवारो जो भगवान् नारायण हैं सो दौरेखो चल्थो आवै है ता प्रकार कष्ट जाकू ऐसो जो दृक्तासुर है ताई दूरेही देखिके अपनी योगमाया करिके ब्रह्मचारी को वेप मंजुकी कौ मनी मृग-  
खाला दण्ड माला इनकू पहिरिके तेजसू अग्निही तुल्य प्रकाशमान होयके आयके कुशा है हाथमें जिनके ऐसे भगवान् हैं सो जैसे कोई नम्र होईके मणाम करे ऐसे मणाम करावत भये २७ २८  
अब श्रीभगवान् कहै हैं हे शुकनिके पुत्र ! तो कू निश्चय खेदहै दूर कोदेकू आयो कृष्णभर विश्राम ले पुरुष कू समस्त कामनान को देनवारो यह देह है ताकू पीड़ा मतिदेय २९ हे समर्थ ! जो  
तुम्हारो अभिप्राय हमारे आगे सुनाइवे योग्यहै तो कहो जनहै सो बहुधा पुरुषनकी सहाय ते अपने कामकू करे है या कारण तुम हमसूँ कहो ३० अब श्रीशुकदेवजी कहै है हे राजन्

परीक्षित ! या प्रकार अमृतरूप वचनन वरि के भगवान् ने पूछ्यो तब भयो है खेद जावो ऐसो वृकासुर है सो जैसे प्रथम तप वख्यो हो ताय कहत भयो है ? अब श्रीभगवान् व है जो शिवने तुमकुं वर दियो है तो ताके वचनकुं हम सत्य नहीं माने हैं यह शिव दत्त के शाप करि के पिशाचन की दशाकुं प्राप्त भयो है और ऐत पिशाचन को राजा है ३२ हे दानवन के इन्द्र ! जगत्को गुरु जो महादेव है ताके वचनमें तो कू विरयास है तो हे वृकासुर ! तू शीघ्र अपने शिरपै हाथ गरि के परीक्षा ले ३३ हे दानवनमें श्रेष्ठ ! या महादेव को वचन कैसे सत्य होयगो यह तो मिथ्यावादी है ऐसे महादेव को मार जो फेरि कर्मऊं मिथ्या न बोलैगो ३४ या प्रकार मनोहर विचित्र विचित्र जे भगवान् के वचन हैं तिन करि के श्रेष्ठ भई है बुद्धि जाकी ऐसो कुबुद्धि वृकासुर है सो भूलि के अपने शिरपै अपनी हाथ धरत भयो ३५ शिरपै हाथ धरे पीछे वज्रको मारो जैसे गिरे है ऐसे जगभरमें भिन्न शिर करि के गिरत भयो ता समय स्वर्ग में जय जय और नमः शब्द तथा साधुशब्द होत भयो ३६

तापृष्टो वचसाऽमृतवर्षिणा ॥ गतक्लमो ब्रवीतसमो यथापूर्वमनुष्ठितम् ३१ श्रीभगवानुवाच ॥ एवं चेत्तद्विद्वान् वयं श्रद्धाधीमहि ॥ यो दक्षशापात्पैशाच्यं प्राप्तः भेतपि शाचराट् ३२ यदि वस्तत्र विश्रम्भो दानवेन्द्रजगद्गुरौ ॥ तर्ह्यङ्गाशुस्नशिरसि हर्सेन्यस्य प्रतीयताम् ३३ यद्यसत्यं वचः शुम्भोः कथं चिदान्वर्षम् ॥ तदैवं त्रह्यसदाचं न यद्वक्ता नृतपुनः ३४ इत्थं भगवताश्चित्रैर्वचोभिः समुपश्लैः ॥ भिन्नधीर्विस्मृतः शर्षिण स्वहस्तेऽकुमतिर्व्यधात् ३५ अथापत द्विन्नाशिरावज्जाहन इव क्षणात् ॥ जयशब्दो नमः शब्दः साधुशब्दोऽभवद्विनि ३६ मुमुचुः पुष्पवर्षाणि हते पापेषु कामुरे ॥ देवर्षिपितृगन्धर्वान् मोचितः सङ्कटाच्छिवः ३७ मुक्रं गिरिशमभ्याह भगवान् पुरुषोत्तमः ॥ अहो देवमहादेव पापोऽयं स्वेन पापमना ३८ हतः को नुमहस्वीश जन्तुर्वै कृतकिल्विपः ॥ क्षेमी स्यात्किमुविश्वेशे कृतागस्को जगद्गुरौ ३९ य एवमव्याकृत शक्त्युदन्वतः परस्य साक्षात्परमात्मानो हरेः ॥ गिरिन्मोक्षं कथयेच्छृणोति वा विमुच्यते संसृतिभित्थाऽरिभिः ४० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे रुद्रमोक्षणं नामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

श्रीशुक्र उवाच ॥ सरस्वत्यास्तेराजन्तुः पयः सत्रमासत ॥ वितर्कः समभूत्तेषां त्रिष्वधीशेषु को महान् १ तस्य जिज्ञासया ते वै भृगुर्वह्यमुतं नृप ॥ तज्ज्ञस्यै पापात्मा वृकासुर गत्योता समय देवता ऋषि पितृ गन्धर्वे फूलनकी वर्षा करत भये और शिवजी कष्ट ते छूटत भये ३७ जय शिवजी कष्टे छूट तव पुरुषोत्तम भगवान् कहत भये अहो देव महादेव ! यह वृकासुर पापी अपने पाप करि के मख्यो है ३८ हे ईश ! वह नको अपराध करे तो कौन प्राणी कल्याण कृपास होई हे देतो विश्व के ईश्वर जगत् के गुरु तुमही तिनके अपराध करेते भलो कदापि नहीं होय है ३९ वचन और मानते कहिये मैं न आने ऐसी अनेक शक्ति जिनमें रहें सब के कारण साक्षात् परमेश्वर जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने शिवजी कृं कष्टते छुड़ाय दियो यह जो चरित्र है ताय जो पुरुष व है और सुने वह संसार ते और चैरिनते छूटि जाय है ४० इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यष्टादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे रुद्रमोक्षणं नामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥ \* ॥

(नवाशीतितमो देवः को महानिति संशये ॥ परीक्ष्य विष्णोः स्तुतिर्पुनर्भयोऽवर्णयद्गुणः ? नवासीवै अध्याय में कौन देव बड़ा है या संशय में ध्रुवजी परीक्षा कर विष्णुजी की श्रेष्ठता मुनिन स्रं वर्णन

करते भये ? ) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! एक समय सरस्वती नदीके तटप्रे ऋषि यज्ञकरे हैं तहाँ ब्रह्मा विष्णु शिव इन तीनों देवतान में कौन बड़ा है ऐसो आपुस में झगरी होतभयो ? हे राजन् ! इनमें कौन बड़ा है तावी परीक्षाके लिये ब्रह्माके पुत्र भृगुकुं पठावतभये सो भृगु परीक्षा करिवे के निमित्त ब्रह्माकी सभामें जातभये २ ब्रह्माके स्वभावकी परीक्षा के लिये ब्रह्माके प्रणाम स्तुति कछु भी न करतभये ब्रह्माजी अपने क्रोधपूर्ण प्रज्वलित होयके भृगुके ऊपर क्रोध करतभये ३ श्रीहरिते है जन्म जाको ऐसो ब्रह्मा अपने पुत्रके अर्थ चित्तमें उल्यो जो क्रोध है ताथ आपुही शान्त करतभये जैसे अपने कारण जलसूं अग्नि शान्त होईहै ऐसे ४ वहा से भृगुजी कैलास पर्वतपर शिवजी भय्या जा भृगुहै ताथ उठिके मिलि-वे कू भीति करिके आरम्भ करतभये ५ भृगुजी महादेवजी सूं मिलिवे की इच्छा न करतभये क्यों कि तू अंगलहै तोयूं न मिलूंगो यह सुनिके महादेवजी बड़ा क्रोध करिके लाल नेत्र करिके हाथ में त्रिशूल छेकै मारिवे को प्रारम्भ करतभये ६ ता समय पावर्त्तनी महादेवजी के पावनमें परिके कहति भई कि हे महाराज ! आपको आताहै याकू कैसे मारोही ऐसी वाणी करिके शान्त कराति

प्रेयामामुः सोऽभ्यगाद्ब्रह्मणःसभाय २ नतस्मैग्रहणंस्तोत्रं चक्रेसत्परिक्षया ॥ तस्मैचक्रोद्योगवान् प्रज्वलन्स्वेनेतेजसा ३ सआत्मन्युत्थितंमन्युमा

त्मजायात्मनाप्रभुः॥ अशीशमद्यथावह्निं स्वयोन्यावारिण।ऽऽत्प्रभूः ४ ततःकैलासमगमतस्तदेवोमहेश्वरः॥ परिब्धुंसमरेभउत्थायभ्रातरंसुदा ५ नैव्य

त्वमस्युत्पथगइतिदेवश्चक्रोपह।शूलमुद्यम्यतंहन्तुमारैभेतिगलोचनः ६ पतित्वापादयोर्देवी सान्त्वयामासतंगिरा॥ अथोजगामैवैकुण्ठं यत्रेदेवोजनार्दनः

७ शयानांश्रयउत्तमङ्गं पदावक्षस्यताडयत्॥ ततउत्थायभगवान् सहलक्ष्म्यासतांगतिः ८ स्वतल्पादवस्त्रह्याथ ननामशिरसामुनिम् ॥ आहतेसागतंब्रह्मन्

निपीदान्नाऽऽसनेक्षणम् ॥ अजानतामागतान्वः क्षन्तुमर्हथनःप्रभो ९ अतीवकोमलोतात चरणौतेमहामुने ॥ इत्युक्त्वाविप्रचरणौ मर्दनस्वेनपाणिना

१० पुनीहिसहलो कंभां लोकपालांश्चमदगतान् ॥ पादोदकेनभ्रतस्नैर्नार्तीर्थकारिणा ११ अद्याहंभगवैल्लक्ष्म्याआसमेकान्तभाजनम् ॥ वत्स्यत्युर

क्षिमेभूतिर्भवत्पादहतांहसः १२ श्रीशुक्रउवाच ॥ एवंब्रुवाणैवैकुण्ठेभृगुस्ननमन्द्रयागिरा ॥ निर्वृतस्तर्पितस्तूर्णो भक्त्युत्तरेणोऽश्रुलोचनः १३ पुनश्चसत्र

भई ताके पीछे भृगु वैकुण्ठमें जातभये जहा जनाईन भगवान् वास करेहैं ७ लक्ष्मीकी गोदमें सोवैं जो विष्णु हैं तिनके हृदयमें पांवकी लात मारतभयो तदनन्तर साधुनकी गति जे विष्णु है ने लक्ष्मीमाहित पलंगपर ते उठिके पृथ्वीमें मस्तक धरिके भृगुजी कूं प्रणाम करतभये ८ और कहतभये कि हे ब्रह्मन् ! तुप भलेथाये नेक आसनपर बैठिजावो हे समर्थ ! आपके आयवेकू नहीं जानैं जे हम तिनके अपराधकूं क्षमाकरो ९ हे तात ! हे महामुनि ! तुम्हारे चरण कोमल हैं और मेरी छाती कटोर है तुम्हारे चरणमें चोट लगी होगी या मत्तार कहिके अपने हाथ ते ब्राह्मण के चरणकूं सहारावन लगे १० गगादिक तीर्थनकी पवित्र करनवारो जो तुम्हारो चरणोदक है ताकरिके लो रुन सयेत मोको और धरे भीतरके लोकपालन को पवित्रकरौ ११ हे भगवन् ! श्रव मैं लक्ष्मीके वास करिवे को एकान्त पात्र भयो तुम्हारे चरणस्पर्श ते पाप दूरिभये मेरी छाती में लक्ष्मी वास करे १२ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार नारायण के कहतेहुये

तिनकी मनोहर वाणी करिके तुम होयके भक्ति करिके चाह जिनके आंसू नेत्रनमें आयगये ऐसे भृगुजी सुखी होयके चुप होतभये १३ हे राजन् परीक्षित ! भृगुजी फेरि अपने यज्ञमें आयके वेदके पढ़नवारि मुनिन सूं तीनों की जो बात देखि आये ताय सम्पूर्ण कहतभये १४ भृगुकी बात सुनिके आश्चर्ययुक्त भये और सन्देह जिनके दूरिभये ऐसे मुनि हैं ते इतनो अपनो अपराध क्रियो परन्तु क्रोध न आयो विष्णु भगवान्में ही शान्ति है और काहू देवतामें नहीं है याते सबते बड़े विष्णुभगवान् हैं यही निश्चय करतभये १५ साक्षात् धर्म और धर्म के लिये ज्ञान तथा वैराग्य और आठप्रकारके ऐश्वर्य और आत्माके मलनकू दूरि करनवारो यश ये सम्पूर्ण भगवान्के विषयी हैं १६ दूरि भयो है कालको दण्ड जिनते शान्तस्वभाव और समानचित्त जिनके निष्कृञ्चन अर्थान् काहू वस्तुकी जिनके चाहना नहीं ऐसे जे साधु मुनि हैं तिनकू भगवान् प्राप्त होयवे योग्य हैं यह कहै हैं १७ सत्त्वगुण है सो भगवान् को प्यारो रूप है और ब्राह्मण हैं ते भगवान् के इष्ट देवता हैं जिनके ऐसे भगवान् हैं तिनको नहीं है कोई बातकी चाहना जिनके निषुण है बुद्धि जिनकी ऐसे शान्तपुरुष भजन करे हैं १८ तिन भगवान् ने अपनी गुणिनी माया करिके सत्त्वगुणी

मात्रज्य मुनीनांब्रह्मवादिनाम् ॥ स्वानुभूतमशेषेण राजन्भृगुरवर्णयत् १४ तन्निशम्याथमुनयोविस्मितामुक्तसंशयाः ॥ भूयांसंश्रद्धुर्विष्णुं यतःशान्तिर्य

तोऽभयम् १५ धर्मःसाक्षाद्यतोज्ञानं वैराग्यं चतदन्वितम् ॥ ऐश्वर्यं चाष्टधायसमाद्यशश्रात्ममलापहम् १६ मुनीनान्यस्तदगडानां शान्तानां समचेतसाश्च ॥

अक्रिञ्चनानामाधूनां यमाहुः परमांगतिम् १७ सत्यं यस्य प्रियामूर्तिं ब्रह्मणास्ति वष्टदेवताः ॥ भजन्त्यनाशिपः शान्तायं वानिपुणबुद्धयः १८ त्रिविधा कृ

तयस्तस्य राज्ञसा अमुराः सुराः ॥ गुणिन्यामायया सृष्टाः सत्त्वं तत्तीर्थसाधनम् १९ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ एवं सारस्वता विप्रानुणां संशयानुत्तये ॥ पुरुषस्य पदा

भोजसेवया तदगतिगताः २० ॥ मूत उवाच ॥ इत्येतन्मुनितनयास्य पद्मगन्धर्पीयुषं भवभयभित्परस्य पुंसः ॥ सुरलोकं श्रवणपटैः पिवन्त्यभीक्ष्णं पान्थो

ध्वभ्रमणपरिश्रमं जहाति २१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ एकदा द्वावत्यां तु विप्रपत्न्याः कुमारकः ॥ जातमात्रो भुवं स्पृष्ट्वा ममारकिलभारत २२ विप्रोगृहीत्वा

मृतकं राजद्वार्युपधाय सः ॥ इदं प्रोवाच विलपन्नातुरो दीनमानसः २३ ब्रह्माद्विषः शठधियो लुब्धस्य विषयात्मनः ॥ क्षत्रवन्धोः कर्मदोषात्पञ्चत्वं मे गतोऽभ

रजोगुणी तमोगुणी तीनप्रकारके राज्ञस असुर और देवता रचे हैं तिनमें सत्त्वगुणीरूप है सोही पुरुषार्थ को हेतु है १९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार सरस्वती के तीर- वासी ब्राह्मण हैं ते मनुष्यन के सन्देह दूरि करिवे के लिये श्रीकृष्ण के चरणारविन्द की सेवा करिके श्रीकृष्णचन्द्रकी ही गतिकू पावतभये २० अब सूतजी कहे हैं हे ऋषीश्वरो ! व्यासेष्टममुनि के पुत्र जे शुकदेवजी हैं तिनके मुखकमलकी सुगन्ध जाँमें मिली ऐसी जो अमृततुल्य संसार के भयको काटनवारो श्रेष्ठपुरुष श्रीकृष्णचन्द्र को सुन्दर यश है ताय कानरूपी दोनान में भारे दो जो पुरुष पानकरेगो वह संसार के आचामनके परिश्रमसूं छूटि जायगो २१ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या चरित्रमें श्रीकृष्णचन्द्र को उत्कर्ष कह्यो अब श्रीकृष्णचन्द्र की ही उत्कर्ष निकसे ऐसी और चरित्र है ताय वर्णनकरे हैं एकसमय द्वारकामें हे राजन् परीक्षित ! एक ब्राह्मणकी स्त्री को पुत्र जन्म होत पृथ्वीको स्पर्श करते ही मरतभयो २२ वह ब्राह्मण मरे पुत्रकूं लैके राजा

उग्रसेन की ब्यादी पै धरिके विलाप करत आनुर होय दीनपन होयके यह कहत भयो २३ ब्राह्मणन को द्वेपी शठबुद्धि लोभी विपयनमें आसक्त है मन जाको ऐसो जो क्षत्रियनमें अग्रम यद् राजा है ताके कर्मदोष ते भेरो पुत्र मरयो है भेरो कुछ दोष नहीं है २४ हिंसामें है विहार जाको लोटोस्वभाव जाको नहीं जीती है इन्द्रिय जाने ऐसो जो राजा है ताय जे मजा सेवन भरे हैं वे दरिद्री नित्यही दुःखयुक्त रहकर लेशकूं पावे हैं २५ याही प्रकार ब्राह्मणभ्रातृ के निकट ब्राह्मणकी बात अवणकरिके नवम बालक जब भरिबुको तब ब्राह्मण ते बोलत भयो २७ हे ब्राह्मण ! तू काहे के निमित्त भेरे पुत्र मरे हैं २६ काहू एकसमय अर्जुनहैं सो श्रीकृष्णचन्द्र के निकट ब्राह्मणकी बात अवणकरिके नवम बालक जब भरिबुको तब ब्राह्मण ते बोलत भयो २७ हे ब्राह्मण ! तू काहे के निमित्त भेरे पुत्र मरे हैं तेरो स्थान जो द्वारकाहैं तामें धनुषको धारण करनवारो कोई क्षत्रियन में अग्रमहू नहीं है जो ब्राह्मणकी सेवाकरै जैसे यक्षमें ब्राह्मण इबड़े होय बैठे हैं ऐसे ये यादव मिलि बैठे हैं २८ हे भगवन् ! जिन यादवन के जीवत धन स्त्री पुत्र जिनके गये ऐसे ब्राह्मण शोच करै हैं प्रजाके पोषण करनवारो क्षत्रियन के वेपमूं अपने प्राणनको पोषण विचारै नटके समान करै हैं २९ हे

कः २४ हिंसाविहारनृपति दुःशीलमजितेन्द्रियम् ॥ प्रजाभजन्यःसीदन्तिदरिद्रानित्यदुःखिताः २५ एवंद्वितीयंविप्रिर्पिस्तृतीयंत्वमेवच ॥ विमृज्यसन्तुप  
द्वारि तांगार्थासमगायत २६ तामर्जुनउपश्रुत्य कर्हिचिरेकेशवान्तिके ॥ परेतेनवमेबाले ब्राह्मणंसमभाषत २७ किंस्विदब्रह्मंस्वन्निवासे इहनास्तिध  
नुर्धः ॥ राजन्यबन्धुरेतेवै ब्राह्मणाःसन्नमासते २८ धनदारात्सजापृक्कायत्रशोचन्तिब्राह्मणाः ॥ तैवैराजन्यवेवेषेण नराजीवन्यसुभराः २९ अहंप्र  
जांवांगवन्नूक्षिष्येदीनयोरिह ॥ अनिस्तीर्णप्रतिज्ञोऽग्निं प्रवेक्ष्येहतकल्मषः ३० ब्राह्मणउवाच ॥ संकर्मणोवासुदेवःप्रद्युम्नोधिन्विनांवरः ॥ अनिरुद्धोऽप्रति  
रथोनत्रातुंशकुत्रान्ति यत् ३१ तत्कथंनुभवान्कर्मदुष्करंजगदीश्वरैः ॥ चिकीर्षिसिर्वालिश्यात्तन्नश्रद्धमहेवयम् ३२ ॥ अर्जुनउवाच ॥ नाहंसंकर्मणोब्रह्म  
न् नकृष्णःकार्णिवेच ॥ अहंवाअर्जुनोनामगाएहीवयस्यवैधनुः ३३ मावमंस्थाममब्रह्मन् वीर्य्यंयम्वक्तोषणम् ॥ मृत्युंविजित्यप्रधने आनेष्येतेप्रजां  
प्रभो ३४ एवंविश्रम्भितोविप्रः फाल्गुनेनपरंतप ॥ जगामस्वगृहंप्रीतःपार्थवीर्य्यनिशामयन् ३५ प्रसूतिकालआसन्ने भार्यायाद्विजसत्तमः ॥ पाहिपाहि

ब्राह्मण ! दीन जो तुमहौ तिनके पुत्रनकी मैं रत्ना कलंगो और जो मोपै रत्नान होयगी अर्थात् मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण न होयगी तो ब्राह्मण की प्रीति करे विना नहीं गये हैं पाप जाके ऐसो मैं अग्नि में ज-  
रूंगो ३० अब ब्राह्मण कहे हैं सङ्कर्मण वासुदेव और धनुर्दारीन मैं श्रेष्ठ प्रद्युम्नजी तथा जाकी वरावरिको योद्धा कोई नहीं ऐसो अनिरुद्ध ये सब भेरे बालककी रत्ना करिवे कूं जो समर्थ न होत  
भये ३१ तो जगत् के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जा कर्म कूं न करिसके वा कर्मकूं तू अर्जुन कैसे करिसकेगो तू अज्ञानते करयो चाहे हैं यह ह्म निश्चय नहीं माने हैं ३२ अब अर्जुन कहे हैं  
के हे ब्राह्मण ! तैंने वैन कायरन के नाम भेरे सम्मुख लिये मैं संकर्मण नहीं हूं कृष्ण नहीं हूं कृष्णको पुत्र प्रद्युम्न नहीं हूं गाएडीव है धनुष जाको ऐसो अर्जुन नामी क्षत्रिय हूं ३३ हे ब्राह्मण ! तू मेरो  
अपमान मतिकरे गहादेवको भसव करनवारो भेरो पराक्रम है हे समर्थ ब्राह्मण ! संग्राम विषे मृत्युकूं जीतिके तेरे पुत्र लायके देखेंगो ३४ हे शत्रुन के तापके दूरि करनवारो राजा परीक्षित ! या प्र-



कार धृष्टता के वचन करिके विश्वास जाकू दियो ऐसो जो ब्राह्मण है सो अर्जुनके पराक्रमकू श्रवण करिके प्रसन्न होय अपने घरकू आवत भयो ३५ जब स्त्रीकू प्रसूतिकाल को समय आयो तब ब्राह्मण है सो मृत्यु ते पुत्र की रक्षा कर रक्षा कर या प्रकार यांवार आतुर होय अर्जुन ते कहत भयो ३६ ता समय अर्जुन पवित्र जल को स्पर्श करिके शिवजीकू नमस्कार करिके दिव्यशस्त्रन को स्पर्श करिके प्रत्यंचाचढ़ाय माण्डवीवधुपूङ्ग हाथमें लेत भयो ३७ अनेक अस्त्रनमें मिलाये जे बाण है तिन करिके सो घरके धरको आच्छादित करत भयो निरखे बाण चलाये ऊपरकू चलाये नीचेकू चलाय के घरके ऊपर बाणन को अर्जुन पंजरा सों करत भयो ३८ तापीछे ब्राह्मण की स्त्री के जन्मयो जो बालक है सो बारवार रोदन करिके शीघ्र ही शरीर सहित आकाशमार्ग होयके जात भयो और बेर देह परयो रहे हो अवकी देह भी न रह्यो ३९ ता समय ब्राह्मण श्रीकृष्णचन्द्रके निश्चय ही अर्जुन की निन्दा करत यह कहत भयो मेरी मूढ़ता देखो जा मैंने या नपुंसक अर्जुन को कछो सत्य मान्यो ४० प्रद्युम्नजी और अनिरुद्ध तथा बलदेवजी और श्रीकृष्णचन्द्र ये सम्पूर्ण मिलिके जाकी रक्षा न करिसे ते जाकी रक्षा करिवेकू और कौन समर्थ है ४१ मिथ्यावादी जो अर्जुन है ताय धिक्कार है खोटा है बुद्धि मंजां मृत्योरित्याहारुनमातुरः ३६ स उपस्पृश्य शुभ्यम्भोनमस्कृत्य महेश्वरम् ॥ दिव्यान्यस्त्राणि संस्पृश्य सज्यं गार्हो वमाददे ३७ न्यरुणत्सूतिकागारं शरैर्नानाऽन्नयो जितैः ॥ तिर्यगूर्ध्वमथः पार्थश्चकार शरपञ्चमम् ३८ ततः कुमारः संजानो विपत्त्या रुदन्मुहुः ॥ सद्योऽदर्शनमापेदे सशरीरो विहाय सा ३९ तदा हविशो विजयं विनिन्दन् कृष्णमन्त्रिणौ ॥ मौल्यं पश्य न मे योऽहं श्रद्धेर्हो वक्तव्यम् ४० न प्रद्युम्नो नानिरुद्धो न रामो न च केशवः ॥ यस्य शो कुः परित्रातुं कोऽन्यस्तद्विनेश्वरः ४१ धिगर्ज्जनं मृपावादिं गतात्मश्लाघिनो धनुः ॥ दैवोपमृष्टयो मौढ्यादानि नीपति दुर्भतिः ४२ एवं शपति विप्रपौ विद्यामास्थाय फाल्गुनः ॥ ययौ संयमनीमाशु यत्राऽऽस्ते भगवान् ४३ विप्रापत्य मचक्ष्वाणस्तत ऐन्द्रीमगात्पुरीम् ॥ आग्नेयानैर्ऋतौ सौम्यावायव्यां वारुणीमथ ॥ रसातलं नाकपृष्ठं धिष्ण्यान्यन्यान्पुदायुधः ४४ ततोऽतुल्यबलं हि जमुनो ह्यनिस्तीर्णप्रतिश्रुतः ॥ अग्निं विविधैः कृष्णेन प्रत्युक्कः प्रतिपेधता ४५ दर्शयेद्विजमूनं स्रेमाऽवज्ञाऽऽत्मनमात्मना ॥ येनेहिकीर्त्तिं निमलां मनुष्याः स्थापयिष्यन्ति ४६ इति संभाष्य भगवान् अर्जुनेन सहेश्वरः ॥ दिठ्यं रथस्थमास्थाय पतीर्त्वा दिशमाविशत् ४७ सप्तजाभी ऐसो यह अर्जुन है सो दैवने हरयो जो बालक ताय मूढ़ता रू लायो चो है ४२ या प्रकार जब ब्राह्मणने खोटो वचन कछो तब अर्जुन विद्याकू गारण करिके जहा कि भगवान् यम विराजे है वा संयमनीपुरी को शीघ्र जात भयो ४३ तहा यमराज की पुरी में पुत्र कू न देख्यो तब वहां ते अर्जुन इन्द्र की पुरी में जात भयो फेरि अग्नि की पुरी में जात भयो निर्यतिकी पुरी में जात भयो कुता पीछे नहीं पिययो है ब्राह्मण को पुत्र जा कृ याते अष्ट भई प्रतिता पाकी अग्नि में धसिये की इच्छा करे ऐसे अर्जुनकू श्रीकृष्णचन्द्र नाहीं करत भये ४५ ब्राह्मणके पुत्रकू मैं लाय देउंगो तू अग्नि में जरे मति तुम लाइ देउंगे तो मोकू कहा तहा श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं कि जे निन्दा करेगे तेही मनुष्य हमारो यश भी कहेगे अर्जुनके रथवान् श्रीकृष्ण जे ब्राह्मण के पुत्र लाय दिये महाराज अर्जुन

लाय दे तो यामें कदा सन्देह है ४६ समर्थ जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो या प्रकार कहिके अर्जुनकूं सङ्ग लैके अलौकिक जो अपनी रथ है तामें चढ़िके पवित्रमदिशकूं जात भये ४७ सात सातहें पर्वत जिनमें ऐसे जे सात द्वीप हैं तिनैं उल्लंघन करिके तथा सात समुद्रनकूं और लोकालोकपर्वतकूं उल्लंघन करिके वढो जो अन्धकार है तामें धसत भये ४८ हे भरतवंशीन में श्रेष्ठ राजा परीक्षित ! ता अन्धकार में शैव्य सुग्रीव मेघपुष्प बलाहक ये हैं नाम जिनके ऐसे रथके घोड़ानकी गति शिथिल होति भई ४९ महाभोगेश्वरनके ईश्वर जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते घोड़ानकी शिथिल गतिकूं देखिके हजार सूर्यको है तेज जामें ऐसो आपनो सुदर्शन चक्र है ता रथके आगे चलिके की आज्ञा देत भये ५० अतिबोर सवन मरुतिको परिणामरूप जो बड़ो अन्धकार है ता रथ अपनी उत्कृष्ट कान्ति करिके विदीर्ण करत मनकी तुल्य है वेग जाको ऐसो सुदर्शनचक्र है सो जैसे प्रत्यक्षा ते छूटिके रामचन्द्रको बाण सेनामें प्रवेश करे है ऐसे प्रवेश करत भयो ५१ चक्रके पीछे जो गमन है ता करिके वा अन्धकार ते परे वर्तमान ऐसो श्रेष्ठ व्याप्त जो भगवान् को प्रकाशरूप है ता देखिके चक्रचोपी जाकी आखिन कू लगी ऐसो अर्जुन दोनों नेत्रनकूं मंदत भयो ५२ ता पीछे बड़ी पवन

द्वीपान्सप्तसिन्धून्सप्तसप्तगिरीनथ ॥ लोकालोकंतथास्तीत्यविवेशसुमहत्तमः ४८ तत्राश्वाः शैव्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकाः ॥ तमसिअग्रगतयोवभूवर्भे रत्तर्पभ ४९ तानृद्व्याभगवान्कृष्णोमहायोगेश्वरेश्वरः ॥ सहस्रादित्यसङ्काशंस्वचक्रं प्राहिणोत्पुः ५० तमः सुधोरंगहनंकृतं महद्विदारयद्भरितरेणरोचिपा ॥ मनोजवंतिर्विशेषमुदर्शनं गुणच्युनोरामशरोयथाचमूः ५१ द्वारेण चक्रानुपथेनतत्तमः परमपंड्योतिरनन्तपारम् ॥ समश्नुवानंप्रसमीक्ष्यफाल्गुनः प्रताडितस्त्रोऽपिदधेऽक्षिणीउभे ५२ ततः प्रविष्टः मलिनभस्वनावलीयसैजद्वृद्धदृग्भिभूषणम् ॥ तत्राद्भुतवैभवंद्रुमत्तमं आजन्मणिस्तम्भमहस्रशोभितम् ५३ तस्मिन्महाभीममनन्तमद्भुतं सहस्रमूर्द्धन्यफणामणिद्विभिः ॥ विभ्राजमानंद्विगुणोत्वणेक्षणं सिताचलांभशितिकशजिह्वम् ५४ ददर्शतद्भोगसुवासनीं च भुं महानुभावं पुरुषोत्तमोत्तमम् ॥ सान्द्राम्बुदाभं मुपिशङ्गवासं प्रसन्नचक्रं रुचिरायतेक्षणम् ५५ महामणिव्रातकिरीटकुण्डलप्रभापरिक्षिप्तसहस्रकुन्तलम् ॥ प्रलम्बचार्वाष्टमुजंसकौस्तुभं श्रीवत्सलक्ष्म्यावनमालयावृतम् ५६ सुनन्दनन्दप्रमुखैस्त्रयार्षदैश्चक्रादिभिर्मूर्ध्निधैर्निजायुधैः ॥ पुष्ट्याश्रियाकीर्त्यजयाऽखिल

जो चली तामूं उड़ी जे लहरैं तिनसूं शोभायमान जो जल है तामें वह रथ जात भयो ता जलमें प्रकाशमान वस्तु हैं तिनमें श्रेष्ठ और देदीप्यमान ऐसे हजारन मणिनके स्वम्भ लगे हैं तिनसूं शोभायमान जो अद्भुत भवन है ता देखत भये ५२ ता भवन में बड़ो है देह जाको अद्भुत सहस्रमस्तकनमें जे मणि तिनकी कान्ति करिके प्रकाशमान दो हजार नेत्रन करिके शोभायमान स्फटिक मणिके पर्वतकी तुल्य है कान्ति जाकी और नीली श्वेत हैं जिहा जाकी ऐसे शेषनाग कूं अर्जुन देखत भयो ५४ ता शेषनाग को देह है सुखदायक आसन जिनके बड़ो प्रभाव जिनके ऐसे पुरुषन में जो उत्तम तिनके उत्तम जो भूपा पुरुष हैं तिनैं अर्जुन देखत भये कैसे भूपा पुरुष हैं वर्षाऊ मेघकी तुल्य है कान्ति जिनकी सुन्दर पीतवस्त्रन कूं धारण करे प्रसन्न है मुल जिनको मनोहर बड़े हैं नेत्र जिनके ५५ वर्दी मणि जिनमें जड़ी ऐसे जे किरीट और कुण्डल तिनकी कान्ति करिके शोभायमान हैं केश जिनके लम्बो सुन्दर है आठ भुजा जिनकी कौस्तुभमणि कूं धारण करे मृगुलताको

है ताके उत्सव करिके प्रकाशमान हैं मुख जिनके ऐसी शोभायमान होतीभई ?० तिन स्त्रीनके स्तनन को लथो है केसर मालाये जिनके और खेलमें जो आसक्त हैं तामूं कम्पायमानहैं शिस्को जूड़ो जिनको और स्त्रीनने वारंवार छिरके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र आप स्त्रीनकूं छीटा देते और स्त्रियन सूं सोचे जाकर जैसे हथिनीन के सन्न हाथी रमणकरे ऐमे स्त्रीनके सन्न रमण करतभये ? नट हैं तिनकूं और नाचनवारीन कूं गीत गायके तथा यजे वजाय के जीतिका करे तिनकूं श्रीकृष्णचन्द्र और उनही स्त्री हैं ते क्रीडा करिके अलङ्कार और मल्ल ये देतभये ? या प्रकार विहारनरे के श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनकी चलनि बोलनि देखनि मुसिकानि और हास्यकी वार्त्ता क्रीडा आलिकून इनकारिके निरवय स्त्रीनकी बुद्धि हरिगई है ? मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र में है एक बुद्ध जिनकी ऐसी स्त्री हैं ते प्रथम चुपहोयके फेरि श्रीकृष्णचन्द्र को व्यान करत उन्मत्त होयके गड़की तुल्य होयके जे वचन कहति भई तिन वचनन कूं में कहूं सुनो ? श्रीकृष्णचन्द्र के अप्पनरिके स्त्रीनकी यह दशा होयगई मानों हमारे पास ते प्यारो दूरिगयोहै याते मतवारेकी तुल्य वार्त्ता कहनेलगीं है टटा दीहरी ! तोकूं नहिं नहीं आयेहै विलाप करे है सोये नहीं है संसारमें छिप्यो है ज्ञान जिनको

नो रेमे करेणु भिरिवेमपतिः परीतः ११ नटानान्तर्त्तनीनां च गीतवाद्योपजीविनाम् ॥ क्रीडाऽलङ्कारावासांसि कृष्णोऽदात्तस्य च स्त्रियः १२ कृष्णस्यैवं विहरतो गत्यालापो क्षिप्तस्मिन् ॥ नर्मक्षेत्रे लिपिष्वङ्गैः स्त्रीणां किल हृताधियः १३ ऊर्जुर्मुकुन्दे कधियोगिरि उन्मत्तवज्जडम् ॥ चिन्तयन्त्योऽरविन्दान् तानि मे गदतः शृणु १४ ॥ महिष्य ऊचुः ॥ कुररि विलपसित्वं वीतनिदानशेषे स्त्रिपतिजगति रात्र्यामीश्वरो गुप्तबोधः ॥ वयमिव सखि चिद्वाढनिर्भिन्नचेतानलिननयनहासो दारलीलक्षितेन १५ नेत्रे निमीलयसि नक्कमदृष्टवन्धुस्त्वं रोस्वीपिकरणं वनचक्रवाकि ॥ दास्यं गता वयमिवाच्युतपादजुष्टां किंवा खजं स्पृहयसे कवरेण वोलुम् १६ भो भोः सदानिष्टनसे उदन्नन्नलब्धनिद्रोऽधिगतप्रजागरः ॥ किंवा मुकुन्दापहृता तगलाञ्छनः प्रासादं शतं चगतोऽदृश्ययाम् १७ त्वं यक्षमण्यवलवताऽसि गृहीतइन्दोक्षीणस्तमोनिजर्दाधितिभिः क्षिणोऽपि ॥ कश्चिन्मुकुन्दगदिनानियथा वयं त्वं विस्मृत्य भोः स्थगितगीरुपलक्ष्यसेनः १८ किंत्वा चरितमस्माभिर्मल

ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र रात्रिमें सोवैहैं तू बोलिके सोवन नहीं देइहै यह तोकूं उचित नहींहै यह कहैहै सखी ! कहा हमारीसी नाई कपलनेत्र श्रीकृष्णचन्द्रकी हास उदार लीलापूर्वक चितवनि सूं तेरो चित अधिगयोहै याही ते पुकारैहै ? ५ देचकवी ! तेरेनेन नहींलगेहैं रात्रिमें नहीं देख्योहै अपनो पतिजने अर्थात् विचुर गयोहै पति जाको ऐसी तू करुणा जामें उपनै ऐसे रोदन करैहै बड़ो खेदहै अथवा दास्ययामें प्राप्त भई जे हम हैं तिनकी तुल्य श्रीकृष्णचन्द्रके चरण की प्रमादी जो मालाहै ताय अगनी चोटीयै चढायोयेकी इच्छाकरे है याही ते रोवे है ? ६ हे समुद्र ! नहीं प्राप्त भई है निद्रा जाके नित्य जागरण करत सदा पुकारे जो तू है अथवा हमारीसी दूरत्यय दशा तेरी भी है जैसे भोग करिके मुकुन्दने हमारे कुचनकी केसर लीनीहै ऐसे तोहूं भी अधिक लक्ष्मी पौस्तुभमणि ये निकासितानी है ऐसो हमकूं दिखाई देइहै ? ७ हे चन्द्रमा ! तोहूं बलिष्ठ जो क्षयीको रोगहै ताने ग्रहण करलिथो है याही ते तू क्षीणताकूं प्राप्त भयो है अपनी किरणन करिके अन्यभार कूं नहीं दूरि करैहै हमारीसी नाई मुकुन्दकी रहस्यवार्त्तानकू भूलिके ताही चिन्ताके मारे क्षीण होयगयोहै अर्थात् यकीहै वाणी जाकी ऐसो हमकूं दिखाईदेगहै ? ८ हे मलयाचलकी पवन ! हमने तेरो कदा अप्रिय करैहै जो तू गोविन्द

के अङ्ग कटाक्षसू भिदेभ्ये हमारे हृदय में कामदेवकू प्रेरणकरे है १६ हे मेघ ! हे श्रीमन् ! यादवनके इन्द्र जे श्रीकृष्णचन्द्र है तिनको तू निरचय प्यारो मित्र है याहीते प्रेमकरि के वंशो जो तूहें सो भृगुलता को है चिह्न जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको हमारी नाई ध्यानकरे है वही है चाहना जाके ऐमे जो आईहृदय जो तूहें सो अपने मित्र श्रीकृष्णचन्द्रको स्मरण करि के बारंवार हमारी तुल्य मानो आमुनकी धारा बहावे है परन्तु ताको प्रसंग दुःखदायी है २० शोभायमान है कण्ठ जाको ऐसी है कोकिल ! अमृतकू निवात्रे ऐसी कोमलवाणी करि के प्यारीयात कूं कहें ऐमे जे श्रीकृष्णचन्द्र है तिनके तू वचनकूं भेहे अव तेरो मैं कहा प्रिय करूं तू मोते कह २१ हे उदारबुद्धे ! हे पर्वत ! तू चलेभी नहीं है औरबोलेभी नहीं है वड़े अर्थकी चिन्ताकरे है जैसे वसुदेवतन्दनके चरणनकूं हम अपने स्तननसूं प्ररिखी चोहना करे है ऐसे तूभी अपने शिखरनसूं धरिखी इच्छाकरे है जो धरैगो तो हमारीसी दशा तेरीभी होगी २२ हे समुद्रकी पत्नी नदियो ! अत्र ग्रीष्मस्तुर्मे समुद्र मेघनके द्वारा अमृतकी धारा वर्षायके तुम्हें नहीं आनन्ददे है वड़ो कष्ट है याहीते तुम्हारे हृद सुखि के छटिगईहौ कमलनकी शोभाऊ जाति रही है जैसे वाडिञ्चत पति यदुपति श्रीकृष्णचन्द्रकी स्नेह भरी चिनबनिके परे बिना हमारे हृदय चुरायेगये यानिलतेऽप्रियम् ॥ गोविन्दापाङ्गनिभिन्ने हृदीरयसिनःस्मरम् १६ मेघश्रीमंस्त्वमसिदमितोयादेवन्दस्यनूनं श्रीवत्साङ्गवयमिवभवान्चयायतिप्रमवद्धः ॥ अत्युत्कण्ठशवलहृदयोस्मद्विधोवाष्पधाराः स्मृत्वास्मृत्वाविमृजसिमुहुःखदस्तत्प्रसङ्गः २० प्रियरावपदानिभापसेऽमृतसञ्जीविकयाऽनयागिरा ॥ क रवाणिकिमद्यतेप्रियंवदमेवलिगतकण्ठकोकिल २१ नचलसिनवदस्युदारबुद्धे क्षितिधरचिन्तयसेमहान्तमर्थम् ॥ अपिवतवसुदेवनन्दनाङ्गिवयमिवकाम यसेस्तनैर्विधर्तुम् २२ शुष्यद्भद्राःकरशितावतसिन्धुपत्न्यःसम्प्रत्यपास्तकमलश्रियइष्टभर्तुः ॥ यद्भद्रयंयदुपतेःप्रणयावलोकमप्राप्यमुष्टहृदयाःपुरुकशिताः स्म २३ हंसस्वागतमास्यतांविषययोबूह्यङ्गशौरेःकथां दूतं त्वानुविदामकच्चिदजितःस्वस्त्यास्तउक्तपुरा ॥ किवानश्रलसौहृदःस्मरतिनक्तंस्माद्भजामेवंगक्षो द्रालापयकामदंश्रियमृतेसैवैकनिष्ठास्त्रियाम् २४ इतीदृशेनभावेन कृष्णयोगेश्वरेश्वरे ॥ क्रियमाणेनमाधव्योलोभिरेपरमाङ्गतिम् २५ श्रुतमात्रोऽपियःस्त्री हम लटी है ऐसे २३ तासमय दैवयोग सूं आयो जो इस ताकूं दूत मानिके कहे हैं हे हंस ! तू भूल्यो आयो बैठ दूध पीले हे मिन ! श्रीकृष्णचन्द्रकी कथा कह हण तोऊं वाको दूत जानें हैं कहा श्री कृष्णचन्द्र कुशलसूं हैं चलायमान है स्नेह जाको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रने एकान्तमें जो हमसूं वक्षो ताको कभऊं स्मरणकरे हैं जो वक्षो कि स्मरण करिकेही हमकूं पठायो है तापर कहे हैं हे तपती के दूत हंस ! हम किस हेतु वाको भजें जो कहो कि कामके अर्थ बुलावें हैं तो उन्हीं को लक्ष्मी के बिना क्यों न बुलायतावो जो कहो कि लक्ष्मी तो केवल कृष्णकेही आश्रित है ताको छोड़के कैसे आवेंगे तापर व हे हैं कि स्त्रीन में कहा लक्ष्मीही एक कृष्णके आश्रित है हम सबभी तो वादी के आश्रित हैं २४ योगेश्वरन के ईश्वर जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनमें ऐमे भाव करिके श्रीकृष्णचन्द्र की स्त्री हैं ते वैष्णव की गतिकूं पावति भई २५ बहुत से गीतन करिके बहुत प्रकार गाये ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो श्रवण करते स्त्रीन के मन कूं जोरावरी हरि लेइ हैं और देसनवारी स्त्रीनके मनकूं

हरे धामों केरि कहा कहनो है २६ जगत् के गुरु जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं जे स्त्री हमारो पति है ऐसी बुद्धिकरि प्रेपपूर्वक चरण सेवा ते आदि लेके यथोचित सेवा करति भई तिन स्त्रीनको तप राजा तेरे आगे कहा वर्णन करूं २७ याप्रकार साधुनकी गति जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो वेदविहित धर्म को अनुष्ठान करिके घरमें रहिके धर्म अर्थ विषय यामकार सेवन होत हैं ऐसे संसारी पुरुषन के चारंगार दिखावत भये २८ युद्धस्थन को उत्कृष्ट जो धर्म है ताय करे ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके सोलह हजार एकसौ आठ रानी होति भई २९ तिन स्त्रीनमें रत्न की तुल्य जे सोलह हजार एकसौ आठ रानी हैं तिनमें रुक्मिणी ते आदि लैके जे आठ रानी पहले कही और हे राजन् ! तिनके पुत्र भी अनुक्रमपूर्वक कहे ३० नहीं पूमाण करिवे में आवै है गति जिनकी ऐमे ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो जितनी अपनी भार्यारहीं तिनमें एक एक भार्या में दश पुत्रन कुं उत्पन्न करत भये ३१ वडो है पराक्रम जिनको ऐसे अठारह महारथी होत भये

एां प्रसह्याऽऽकपतेमनः ॥ उरुगायोरुगीतोवा पश्यन्तीनांकुतः पुनः २६ याः संपर्यचरन् प्रेम्णा पादसंवाहनादिभिः ॥ जगद्गुरुं भर्तुं बुद्ध्या तासां किं वर्यते तपः २७ एवं वेदोदितं धर्ममनुतिष्ठन् सतांगतिः ॥ गुहं धर्मार्थकामानां सुहृद्वादर्शयत्पदम् २८ आस्थितस्य परं धर्मं कृष्णस्य गृहे मे धिनाम् ॥ आसनपो डशमाहस्त्रं महिष्यश्च शताधिकम् २९ तासां स्त्रीरत्नभूतानामष्टौ याः प्रागुदाहृताः ॥ रुक्मिणी प्रमुखाराजं स्तत्पुत्राश्चानुपूर्वशः ३० एकैकस्यां दशदशकृष्णोऽजी जनदारमजान् ॥ यावत्त्यज्यात्मानो भार्या असौ घगतिरीश्वरः ३१ ते पामुह्यमवीर्याणां मष्टादशमहाराथाः ॥ आसद्युदारयशसस्ते पांनानामनिभशृणु ३२ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च दीप्तिमान् च भानुरेगच ॥ साम्बो मधुर्वहद्भुनिश्चित्रभानुर्वहद्भुः ३३ पुष्करो वेदवाहुश्च श्रुते देवः सुनन्दनः ॥ चित्रवाहुर्विरूपश्च क्रविर्नर्म्यो घण्वच ३४ एते पामपिराजेन्द्र तनुजानां मधुद्विपः ॥ प्रद्युम्न आसीत् प्रथमः पितृवद्विक्मिणी सुतः ३५ सरुक्मिणोऽद्विहितरमुपये मे महाराथः ॥ तस्मात्सुतोऽनिरुद्धोऽभून्नागायुतवत्तान्वितः ३६ स चापिरुक्मिणः पौर्त्वी दौहित्रो जगुर्हेततः ॥ वज्रस्तस्याभवद्यस्तु गौसलादवशेषिनः ३७ प्रतिवाहुर्भूतस्मात्सुवाहुस्तस्य चाऽऽत्मजः ॥ सुवाहोऽशान्तसेनोऽभूच्च न सेनस्तुतः ३८ न ह्येतस्मिन्कुले जाता अधना अवहृन्मजाः ॥ अल्पायुपोऽल्पवीर्याश्च अवहृन्मयाश्च

तिनके नामनकुं हे राजन् ! मोते श्रवण करौ ३२ प्रद्युम्न अनिरुद्ध दीप्तिमान् भानु साम्ब मधु बुद्धवानु चित्रभानु श्रुते देव सुनन्दन चित्रवाहु विरूप कवि न्यग्रोध ३४ हे राजानके इन्द्र राजन् परीक्षित ! मधुदैत्य के मारनगारे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके सच पुननमें रुक्मिणी के पुत्र जे प्रथम प्रद्युम्नजी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र की तुल्य गुणनमें होत भये ३५ महारथी मधुम्न रुक्मिणी की पुत्री कुं विवाहत भये तिन प्रद्युम्नजी ते रुक्मिणी की पुत्रीमें दश हजार दायीकी ते रुक्मिणी की पुत्रीमें दश हजार दायीकी पोती रोचना कुं विवाहत भये ता रोचनामें अनिरुद्ध के वज्र पुत्र होत भयो जो वज्र प्रभासक्षेत्र के मुसल तें बाकी रखौ ३७ ता वज्रके प्रतिवाहु पुत्र भयो सुवाहु के शान्तसेन भयो शान्तसेनके शतसेन

भयो ३२ या यदुकुल में धनहीन पूजाहीन कोई नहीं जन्मतभयो और थोड़ी है आयु जिनके पराक्रम रहित ब्राह्मणन की भक्तिहीन ऐसो कोई नहीं उत्पन्न होत भयो ३६ हे राजन् परीक्षित ! यदुवंश में जन्मे विख्यात हैं कर्म जिनके ऐसे पुरुषनकी संख्या दश हजार वर्ष में भी नहीं करने कूं समर्थ होयसके है ४० तीन करोड़ अष्टासी सौ यदुकुलके असंख्य बालकन के पढ़ावनवारें आचार्य्य होतभये यह मैने श्रवण कस्यो है ४१ महत्सा यादवनकी संख्या कौन करिसके है जा कुलमें हजारन के दश हजार तिनके लाख इतने यादवन कूं लैके द्वारकापुरी में उग्रसेन वास करतभये ४२ देवता अगुरन के युद्धमें मरे जे दारुण दैत्य हैं तेही मनुष्यन में उत्पन्न होयके गर्ववन्त होयके प्रजान कूं चावा देतभये ४३ हे राजन् परीक्षित ! तिन असुरनके दण्डदेवे के लिये हरि जे भगवान् हैं तिनने आज्ञा जिनकूं दीनी ऐसे देवता यदुकुलमें अवतार लेतभये ४४ तिन यादवन की प्रभुतामें भगवानही प्रमाण होतभये तिन श्रीकृष्णचन्द्रके आज्ञानुवर्ती सन यादव होयके छद्म प्राप्त होतभये तिनके कुलकी एकसौ एक संख्याहुई ४५ सोइवो और बैठिवो चलिबो तथा बोलियो क्रीड़ा स्नानादि कर्म करनेयो श्रीकृष्णचन्द्र में हैं चित्त जिनके ऐसे यादव हैं

जह्निरे ३६ यदुवंश प्रसूतानां पुंसां विख्यात कर्मणाम् ॥ संख्यानशक्यते कर्त्तुमपि वर्षायुतैर्नृप ४० तिस्रः कोट्यः सहस्राणामष्टाशीतिशतानि च ॥ आसन्न्य दुहुलाचार्याः कुमारानि ति श्रुतम् ४१ संख्यानयादवानां क्रः करिष्यति महात्मनाम् ॥ यत्रायुतानामयुतलक्षेण स्ते स आहुः ४२ देवासुराहवहता दैने याये सुदारुणाः ॥ ते चोत्पन्नामनुष्येषु प्रजाहता बवाधिरे ४३ तन्निग्रहाय हरिणो मोक्ता देवा यदोः कुले ॥ अवतीर्णाः कुलशतन्ते पामे काधिर्नृप ४४ तेषां प्रमाणं भगवान् प्रसूतेना भवच्छरिः ॥ ये चानुवर्तिनस्तस्य बधुः सर्वयादवाः ४५ शय्यासनाटनापक्रीडास्नानादिकर्मसु ॥ न विदुः सन्तमात्मानं वृष्णयः कृष्णचेतसः ४६ तीर्थचक्रेनृपो न्यदजनि यदुपुत्रः सारिपादशौचं विद्विद्स्निग्धाः स्वरूपं ययुरजितपराश्रीर्थार्थेऽन्ययतः ॥ यन्नामामङ्गलं श्रुतमथ यदि तं यत्कृतो गोत्रधर्मः कृष्णस्यैतन्नचिन्तितं भिरहरणं कालचक्रायुधस्य ४७ जयति जननिवासो देवकी जन्मवादो यदुवरपरिषत्सर्वैर्दोभिरस्य न्नधर्मम् ॥

ते अपने आत्माकूं नहीं जानतभये ४६ यासूं प्रथम श्रीगङ्गाजी है सोही अधिक तीर्थहो जव यादवनमें श्रीकृष्णचन्द्र को यशरूपी तीर्थ प्रकटभयो तव सूं अनयो चरणोदकरूप जो गङ्गातीर्थ है ताकूं भी न्यून करत भयो आपुही समस्त तीर्थन के ऊपर विराजें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रसूं जिन पुरुषनने वर कस्यो और जिनने स्नेह कस्यो वेभी तद्वत्प्रकूप प्राप्तभये देखो जा लक्ष्मी के निमित्त ब्रह्मादिक उपाय करे है काहूकूं मास भई जो लक्ष्मी है सो भी श्रीकृष्णचन्द्रकी है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकी है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को नाम श्रवण करते कथनकरते समस्त पापन को नाशकरे है और जितने ऋषिन के वंश हैं तिनमें धर्म बलायो कालचक्र है इय्यार जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं दुष्टनको मारिवो पृथ्वीको वोफ उतारियो यह कहु आश्चर्य्य नहीं है ४७ सब जीवनके अन्तर्यामीरूप होयते वसे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सर्वदा उत्कर्षतापूर्वक विराजमान हैं देवकी में जन्मभयो यह कथनमात्र है यादवन में जे उत्तम हैं ते जिनकी सभाके पार्षद हैं इन्द्राजत्र करिके अधर्म के नाश करिवे में समर्थ हैं तथापि क्रीड़ा के निमित्त अपनी भुतान ते अधर्म कूं दूरि करिके स्थावर जंगम सन जीवन को दुःख जिनने दूरि कस्यो सुन्दर मुसिकानि युक्त जो अनयो श्रीमुरा है तासूं ब्रजकी स्त्री गोपिका और पुर मथुरा



सेवनहरे ऐसी तुम्हारे चरणनकी रेणु कूं तुलसी सौत सहत चाहना करतभई वा लक्ष्मीकी चितवनि के लिये और देवता तपस्या करिके परिश्रम करे हैं ता लक्ष्मीकी तुल्य हम भी तुम्हारे चरण की रज कूं प्राप्तभई हैं अर्थात् शरणलीनी है ३७ हे दुःख के काटनवार ! तेरे मजिने में आशा जिनकी लगिरही है ऐसे हमघर छोड़िके तेरे चरणन के पास आई हैं तुम हमारे ऊपर प्रसन्नहो तेरी सुन्दर मुसिझानिचितवन सँवड़ो जो कापदेव तासुं देह जिनकी पनरिही ऐसी जो हम हैं तिनकूं हे पुरुषन के शोभा कानवार ! अपनी दासी करिके राखो ३८ श्रलकावली जापै छुटिरहीं और कुण्डलनकी कान्ति जिनमें परे ऐसे जाके कपोल ओष्ठ में जाके अमृत है हाससहित जाकी चितवनि ऐसे तेरे मुख को देखिके अभयदान जाने भक्तन कूं दियो तुम्हारी युजदण्डन को युगल है ताकूं देखिके लक्ष्मी कूं एकद्वी प्रीति को उपगावनवारो तुम्हारी वत्तःस्यल है ताकूं देखिके हम तुम्हारी दासी होई ३९ हे कृष्ण ! मनोहर जामें पद ऐसो वड़ो बाँसुरी को गीत है तासों मोहित होयके

स्तब्धद्रव्यंचतवपादरजःप्रपन्नाः ३७ तन्नःप्रसीदवृजिनाहंनतेऽङ्कुमूलं प्राप्ताविमृज्यवसतीस्त्वदुपासनाशाः ॥ त्वत्सुन्दरस्मितनिरीक्षणतीव्रकामतप्तात्मनां पुरुषभूषणदेहिदास्यम् ३८ वक्ष्यालकावृतमुलंवकुण्डलश्रीगण्डस्थलाधरमुधंहसितावलोकम् ॥ दत्ताभयंचसुजदण्डयुगं विलोदय वक्षःश्रियैकरम एञ्चभवामदास्यः ३९ काश्यपद्वैतेकलपदायतवेणुगीतसंमोहितार्यचरितान्नचलेत्रिलोक्याम् ॥ त्रैलोक्यसौभागमिदञ्चनिरीक्ष्यरूपंयद्वोद्विजदुमसृगाः पुलकान्यविभ्रन् ४० व्यक्लंभवान्नजमयार्त्तिहरोऽभिजातोदेवोयथाऽदिपुरुषःसुरलोकगोप्ता ॥ तन्नोनिधेहिकरपङ्कजमार्त्तचन्धो तसस्तेनेषुचशिरस्सुच किङ्करीणाम् ४१ श्रीशुकउवाच ॥ इतिविक्लवितंतासां श्रुत्वायोगेश्वरेश्वरः ॥ प्रहस्यसदयंगोपीरामारामोऽप्यरीरमत् ४२ ताभिःसमेताभिरुदारचेष्टितः प्रियेक्षणोऽरुल्लसुखीभिरच्युतः ॥ उदारहासाद्विजकुन्दद्वीधितिवर्योचैतेणाङ्कवोद्विभर्त्तनः ४३ उपगीयमानउद्गायन् वनिताशतयूथपः ॥ मालांविभ्रद्वैजयन्तीव्यचरन्मण्डयन्वनम् ४४ नद्याःपुलिनमाविश्य गोपीभिर्हिमचालुकम् ॥ रेगेतत्तरलानन्दकुमुदामोदवायुना ४५ बाहुप्रसारपरिभ्रमकरालकोरुनीवी त्रिलोकी में ऐसी कौनसी छी है जो अपने धर्म ते चलायमान न होय त्रिलोकी में सुन्दर यह तेरो रूप है ताकूं देखिके गौ पक्षी वृक्ष मृग ये रोमांचित होतभये देखो तेरे रूपते पशु पक्षी सारिले मोहित होयगये हम मोहित होयें यामें कहा आश्चर्य है ४० तुम निश्चय वृजकेभय पीड़ा दूरि करिये के लिये जन्मे हो जैसे आदिपुरुष नारायण स्वर्गलोकजी रत्ना करे हैं ता कारण ते हे दीनन के वन्धु ! हम तेरी दासी हैं तिनके कापदेव ते तरे जे स्तन है और शिर हैं तिनपै अपने हस्तकमल कूं धरो ४१ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार योगेश्वरनके ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र गोपीन की विलाप सुनि के हैंसि के दया जिन को आई गई आत्माराम हूँ हैं तथापि गोपीन के संग रमण करतभये ४२ एवारे श्रीकृष्णचन्द्रकी चितवन सँ प्रफुल्लित जिनके मुख ऐसी इनट्टी भई जे गोपी हैं तिनसहित उदार जिनकी चेष्टा और उदार जिनकी हैंसनि दन्तनमें कुन्दकलीकी तुल्य कान्ति ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सुन्दर लगतभये जैसे तारागणसहित चन्द्रमा सुन्दर लगे है ४३ गोपी जिनकू गावें और स्त्रीन के सैकरान युवन कूं पालनकरें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र आप गावत वैजयन्ती माला पहिरिके वनकूं शोभायमान करत विहार करतभये शीतल जामें वारूके विखौना दिख-

रहे ऐसी यमुनाजीकी पुलिन में गोपीन सहित आय हे रमण करतभये तथा यमुनाजीकी लहर जो आत्रे हैं तिनसूं आनन्द जिनमें कमल जहां फूते हैं तिनकी सुगन्धि को लेके पवन जहा चले हैं ४४ । ४५ युजान को पसारिबो आलिगन को करिवो कर अलक ऊर नीची स्तन इनको स्पर्श करियो परिशस के वचन रुहिवो नखन के चिह्न क्रीड़ा चितवनि होसीन सूं व्रजमुन्दरनिहू भगवान् कामदर्पण करत रमण करतभये ४६ या प्रभार महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र तें मान जिनने पायो ऐसी गोपी मानवती होयके पृथ्वी की खीन में अपनेकुं अधिक मानतभई ब्रह्मा और महादेव के वश के करनगरे श्रीकृष्णचन्द्र तिन गोपीन कुं सौभाग्य के मद सूं अपने अधीन देखिके उनके गर्व दूरिकरिबे के लिये और कृपा करिबे के लिये ता रासमण्डलमेंही अन्तर्द्वान होतभये ४७।४८ इति श्रीमन्यहभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धपूर्वार्द्धे रासक्रीडावर्णनमैकौनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

स्तनालभननर्भनत्वाग्रपतैः ॥ क्ष्वेत्यऽथलोकहसितैर्ब्रजमुन्दरीणां मुत्तमभयरतिपतिरभयाश्चकार ४६ एभंभगवतः कृष्णाल्लब्धपानामहारमनः ॥ आत्मानं मे निरेच्छीणां सानिन्योऽभ्यधिकं भुवि ४७ तासां तत्सौ भगमदं वीक्ष्यमानं च के शवः ॥ प्रसमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ४८ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे भगवतो रासक्रीडावर्णनमैकौनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

श्रीशुक्र उवाच ॥ अन्तर्हिते भगवति सहसैव ब्रजजुनाः ॥ अतप्यंस्तमचक्षाणाः करिण्यद्वयश्रपम् १ गत्यानुरागस्मिताविभ्रमेक्षितैर्मनोरमालापविहारविभ्रमैः ॥ आक्षिप्तचित्ताः प्रमदारमापतेस्तास्ताविवेशजगृहुस्तदात्सि क्राः २ गतिस्मिताप्रेक्षणभापणादिपु प्रियाः प्रियस्यमतिरूढमूर्तयः ॥ असावहां त्विरयत्रलास्तदात्सि कान्यवेदिपुः कृष्णविहारविभ्रमाः ३ गायन्त्युच्चैः सुमेवंसंहताविचिक्युरुन्मत्तकवद्वनादनम् ॥ पञ्चक्षुराकाशवदन्तरं बहिर्भूतेषु सन्तं पुरुषं वनस्पतीन् ४ दृष्टो वः कश्चिदस्वत्थस्त्रक्षन्प्रोधनो मनः ॥ नन्दसूनुर्गतो ह त्ना प्रेमाहासावलोकनैः ५ कञ्चित्कुराव काशोकनागपुन्नागचम्पकाः ॥ रामा

( विशेषिरहसंतस्तगोपीभिः कृष्णमार्गणम् ॥ उन्मत्तचबनियतं भ्रयन्तीभिर्वनेवने १ तीसवें अध्याय में विरह से अत्यन्त तप्त वन वन में घूमती हुई गोपियों ने उन्मत्तकी नाई कृष्णजी बो दूँवो है ? ) श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! जा समय श्रीकृष्णचन्द्र रासमण्डल में ते अन्तर्द्वान भये ता समय तरकालही ब्रजकी ह्री गोपी उनके देखे विना व्याकुल होय गये ऐसी गोपी तनय होतिभई १ । २ कृष्णचन्द्र मो गगन हासभरी चितवनि मधुग्वाखीन के विहार करि प्यारे में आरुढ़ होय के कृष्ण रूप बनिके कहत भई कि मैं कृष्णहूं मैं कृष्णहूं या प्रभार चेष्टा करती भई ३ सब गोपी मिलिके श्रीकृष्णचन्द्र सूं ऊंचो स्वर करिके गावत मतमारे की तुल्य वन वन दूँवति भई सब प्राणीन में आकाश की तुल्य व्यापक जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन कुं दृक्षत भई ४ हे पीपर के दृक्ष ! हे म्लक्ष अर्थात् पाकरके दृक्ष ! हे वट के दृक्ष ! नन्दको पुन श्रीकृष्ण प्रेम भरी चित्तमनि होसी करिके हमारे चित्त हुरायके लेगयो तुमने देखो होय तो जताय दे ५ कहुं वनमें कुड़ा

के वृत्त हैं निनसूँ पृथ्वी हैं कहूँ नागकेशरि के वृत्त कहूँ चल्पा के वृत्त तिन सँ कहती हैं मानीनी जो हम हैं तिनके गर्व रत्नवारी जाकी मुसकानि ऐसो रामको छोड़ो भय्या कहूँ तुमने जात देवो है ६ कहूँ वन में कहे हैं हे तुलसी कल्याणरूपिणी गोविन्द के चरणन की प्यारी ! भौरा जागें गुंजारकरें तेरी माला कूँ पहिरे तेरो अतिप्यारो श्रीकृष्णचन्द्र कहूँ देख्यो होय तो वतायदेउ ७ हे मालती ! हे चमेली ! हे जाया ! हे जुही ! मधुवंश में भये श्रीकृष्णचन्द्र हस्तस्पर्श करिके तुम सँ मीति करिके कहा गये तुमने देये होय तो वताय देउ ८ अग गोपी आपुस में कहे हैं हे सखियो ! ये फल-युक्त वृत्त हैं सब भाणीनको तम करे हैं इन से पूंखो हे आम के वृत्त ! हे चिरोजी के वृत्त ! हे कटहर के वृत्त ! हे विजयसाल के वृत्त ! हे कचनार के वृत्त ! हे मदार के वृत्त ! हे बेल के वृत्त ! हे मोरशिरी के वृत्त ! हे आम्र के वृक्ष ! हे लोटन कदम्ब ! तुम हे परोपकारी यमुनातीरवासियो ! याते हमें वताय देउ तुमने कहूँ श्रीकृष्णचन्द्र जात देखे ९ कोई सखी कहे है कि या पृथ्वीसूँ

नुजोमानिनीनामितोदर्पहरस्मितः ६ कञ्चितुलसिकल्याणि गोविन्दचरणभ्रिये ॥ सहस्राडलिकुलैर्विभ्रष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः ७ मालत्यदर्शिवः कञ्चि

न्मस्त्रिकेजातियुथिके ॥ गीतिवोजनयन्यातः करस्पर्शनमाधवः ८ चूनप्रियालपनसामनकोविदारजवकैविल्वचकुलाम्र रुद्रस्वनीपाः ॥ येऽन्येपरा

र्थभवकायमुनोपकूलाः शंसन्तुकृष्णपदवीगहितारमनांनः ९ किन्तेकृतक्षितितपोवतकेशवाङ्मिस्पर्शोत्सवोत्पलकिताङ्गरुहैर्विभासि ॥ अग्यङ्गिसम्भवउरुक

मविक्रमादा आहोवराहवपुःपरिरम्भणेन १० अग्येणपत्न्युपगतः प्रिययेहगात्रैस्तन्वच्छशांसिखिसुनिर्धृतिमच्युतोवः ॥ कान्ताङ्गसङ्गकुचकुङ्कुमरञ्जिता

याः कुन्दस्रजःकुलपतेरिहवातिगन्धः ११ वाहुंप्रियांसउपधायगृहीतपद्मोरामानुजस्तुलसिकालिकुलैर्मदान्धैः ॥ अन्वीयमानइहवस्तसवःप्रणामं किं

वाऽभिनन्दतिनरन्प्रणयावलोकैः १२ पृच्छतेमालतानाहूनप्यारिलषावनरस्पतेः ॥ नूनन्तत्करजस्पृशविभ्रत्युत्पलकान्यहो १३ इत्युन्मत्तवचोभोगोप्यः कृ

ष्णान्वेपणकातराः ॥ लीलाभगवतस्तास्ताह्यनुचक्रुस्तदात्मिकाः १४ कस्याश्चित्पूतनायन्याः कृष्णायन्यपिपवत्स्तनम् ॥ तोकायित्वाशुदयन्या पदा

बूझो हे पृथ्वी ! तने कहा तप कियो है जो केशव गगवान् को चरणस्पर्श भयो तामूँ तोकों आनन्दसहित रोमाञ्च भये है तामूँ सुन्दर लगे है यह आनन्द प्यारे को चरण छग्यो है तामूँ भयो है अथवा वापनजी ने पहिले तो कूँ तीन पैड़ नापी है अथवा वाते पहिले बराहजी तो कूँ दाढ़ पै धरि के ले आये हैं तब को आनन्द है परन्तु वे आनन्द तो पुराने परि गये अबहीं प्यारे को चरण तैने स्पर्श कीनी है तैने निश्चय देखो है हमें वताय दे १० हे सखी ! हिरण की स्त्री हिरणी अच्युत श्रीकृष्णचन्द्र प्यारी कूँ संग लैके अपने अंगनसूँ तुम्हारी दृष्टि कूँ आनन्द देत यहाँ आयो है प्यारी कूँ संग लैके गयो ताको जतावनवारो यह लक्षण है कृष्णचन्द्र को प्यारी ते जो अंगसंग है तामूँ रुचन की केशरि सँ रेगी, गई जो कुन्द की माला ताकी यह सुगन्धि आवै है ११ राम को छोड़ो भय्या प्यारी के कर्मये पै भुजाको धरि के कमल फिरायत तुलसी को माला की सुगन्धि सँ मतारि भोरा जाके पीछे चले जायें हे वृत्तो ! स्नेह भरी चितवन सँ तुम्हारी दृष्टवत् यहाँ आयके लीनी है १२ वृत्तन ते लिपटी जे लता हैं तिन ते पूँखो निश्चय प्यारे के नख इनके लगे हैं तामूँ रोमाञ्च होय आयें हैं १३ या प्रकार मतवारि कीसी जिनकी बोलनि श्रीकृष्णमें जि-

नको मन श्रीकृष्णके हृदिने में विहल होय के गोपी श्रीकृष्ण की तिन तिन लीलान को अनुकरण करत भई १४ कोई गोपी पूतना यनी ताको कोई गोपी कृष्ण वनिके स्तन पीवत भई और गोपी बालक वनिके रुदन करत शकुटासुर वनी जो कोई गोपी है ताके पावकी ठोकर मारत भई १५ एक गोपी वृणावर्त दैत्य वनिके कृष्णके बालकरूपको बरे जो और गोपी है ताको हरत भई कोई गोपी धुंधुरु बाँविके पावन को घसीटत घोड़वन चलत भई १६ दो गोपी कृष्ण बलेदेव वनी और कोई गोप वनी और कोई वत्सासुर वनी ताकूं मारत भई एक गोपी वक्रासुर वनी ताय और गोपी मारत भई १७ जैसे श्रीकृष्णचन्द्र बुलावै हैं तैसे दूरगई जो गऊहैं तिनकूं बुलायके श्रीकृष्णको अनुकरण करै वासुरी को बजावै क्रीडा करै जो गोपी हैं ताय और गोपी स्थावासि २ ऐसे गड़ई करत भई १८ एक गोपीके कन्या पै हाथधरि चलिके और गोपीते कहत भई मेरी मनोहर जो वृत्यलीलौहैं ताकूं तुम देखो या प्रकार ता श्रीकृष्ण में तिनको मन जाय लगो १९ पवन वर्षा ते भय

उहंश रुदायतीम् १५ दैत्यायित्वाजहारान्यामेकाकृष्णार्भभावनाम् ॥ रिक्षामासकाऽप्यङ्गीकर्पन्तीघोपनिःस्वनैः १६ कृष्णरामायितेद्धतु गोपायन्यश्रकाश्चन ॥ वरसायतीहन्तिनान्या तत्रैकतुत्रायातीम् १७ आहूयदृग्गायदत्कृष्णस्तमनुकुर्वतीम् ॥ वेणुक्लण्णतीक्रीडन्तीमन्याःशंसन्तिसाध्विति १८ कस्याञ्चित्स्वमुज्जंन्यस्य चलन्त्याहापरातनु ॥ कृष्णोऽहंपश्यतगतिं ललितामितितन्मनः १९ माभैष्टवातवर्षाभ्यां तत्राणंविहितंमया ॥ इत्युक्तेकेनहस्तेन यतन्युज्जिदधेऽध्वरम् २० आरुह्यैकापदाक्रम्य शिरस्याहापरांनुप ॥ दुष्टाहेगच्छजातोऽहं खलानाननुदरडष्टम् २१ तत्रैकोवाचहेगोपा दावाग्निपश्य तोत्वणम् ॥ चक्षूंष्यास्वपिदध्वंविधास्येक्षेममञ्जसा २२ वद्धाऽन्ययासजाकाचित्तन्वीतत्रउल्लखले ॥ भीतामुदृक्पिधायास्यं भेजेभीतिविडम्बनम् २३ एवंकृष्णंपृच्छमाना वृन्दावनलतास्तरुच ॥ व्यचक्षतवनोद्देशे पदानिपरमात्मनः २४ पदानिव्यक्तमेतानि नन्दसूनुर्महात्मनः ॥ लक्ष्यन्तेहिध्वजाम्भोजवज्राङ्गुशयवादिभिः २५ तैस्तैःपदैस्तत्पदवीमन्विच्छन्त्योऽप्रतोऽवलाः ॥ वध्वाःपदैःसुपृक्कानि विलोभ्यार्त्ताःसमनुवृत् २६ कस्याःपदानिचैतानि या

मतिकरो मै तुम्हारी रक्षा करुगो यह कहिके एक हाथ ते यत्र करिके जैसो गोवर्द्धन पर्वत श्रीकृष्णचन्द्रने उठायो तैसे अपनी ओढ़नी कूं ऊंची उठावति भई २० हे राजन् परीक्षित् ! एक गोपी और गोपी के ऊपर चढ़िके पाँव शिर ऊपर धरिके एक गोपी ते कहत भई हे दुष्ट सर्प ! तू यहां ते निकसि जा मैं दुष्टनके टपड़को देनचरो जन्मो हों २१ ता समय एक गोपी बोलत भई हे गोपियो ! यह वनमें भयानक दबलगी है ताहूं देखो जलदी देसी नेत्र मुंदिलेउ में या आगि कूं बुझाऊंगो अनायास देखे बिना कल्याण करुंगो २२ कोई एक दुर्बल अगकी गोपी मालासूं उल्लखलमें बांधि दीनी तब हरपिके सुन्दर जामें नेत्र ऐसे मुगकू ढाँकिके डरपेको अनुकरण करतिगई २३ यामकार वृन्दावनकी लता वृत्तन ते पूंछतपूँछत आगे दनमें जायके परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्रके चरणके खोज देखत भई २४ ध्वजा कमल वज्र अंकुश यय इन्ते आदिलेके जो चिह्न हैं तिनसूं महात्मा जो नन्दको वेधा ताको निश्चय चरणहैं या प्रकार खोज लेखे हे २५ अवला जे गोपी हैं ते चरणन के जो खोज हैं तिनसूं श्रीकृष्णचन्द्र के जायवे को जो मार्ग है ताय दृढ़त भई आगे जायके श्रीकृष्ण के चरणन के खोज देखिके यह बोलत भई २६ ये कौनके सोजहैं

नन्दको पुत्र काहुको अपने संग लैगयो है और बाँके कन्धेपै हाथ धरि लियो है जैसे हाथी हथिनी के ऊपर सँझि धरिलेय है २७ निश्चय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको याने आराधन कीनेहै जा कारण हम सबको त्यागिके प्रसन्न होयके प्यारो गोविन्द याकू पूजान्त में लैगयो २८ हे सखियो ! यह गोविन्द के चरण की रेणुकुं ब्रह्मा महादेव लक्ष्मी सम्पूर्ण अपने पाप दूर करिवे के लिये माधे पै चढ़ावे है २९ ता प्यारी के पावन के खोज हमको व्याकुल बहुत करे हैं देखो हम सबको त्यागिके अकेली एकान्तमें श्रीकृष्णचन्द्र को अधरामृत भोग करे है ३० आगे चलिके कहै है यहाँ बाँके पावनके खोज नहीं दीखे हैं सखी तिनुता अंकुरा लगिके कोमल चरणनमें खेदभयो है ३१ या प्रकार गोपी खोजनकू देखत अचेत होय के विचरतिभई श्रीकृष्ण और स्त्रीनकू छोड़िके यनमें जा गोपीकू अपने संग लेजातभये वह गोपी सब स्त्रीन में अपने कू श्रेष्ठ मानतभई क्योंकि चाहनाकरे जे गोपी हैं तिनैं छोड़िके यह प्यारो मेरो सेवन करेहै ३२ कामी औ

तायानन्दसूनुना ॥ असन्यस्तप्रकोष्ठायाः करेणोः करिणायथा २७ अनयाऽऽराधितो नूनं भगवान्बहुरिरीश्वरः ॥ यन्नोविहायगोविन्दः प्रीतोयामनयद्दहः ३२ धन्याअहोअमीआहयो गोविन्दाङ्गवजरेणवः ॥ यान्ब्रह्मेशोरमादेवी दधुर्धन्यघनुत्तये २६ तस्याअयूनिनःक्षोभं कुर्वन्त्युच्चैःपदानियत् ॥ ये काऽपहृत्यगोपीनां रहोभुङ्क्तेऽव्युताधरम् ३० नलक्ष्यन्तेपदान्यत्र तस्यानूनंनृणाङ्कुरैः ॥ विद्यत्सुजाताङ्घ्रितलामुन्नियेप्रेयसीप्रियः ३१ अन्नप्रसूनावचयः प्रियोर्थेप्रेयसाकृतः ॥ प्रपदाक्रमणेपते पश्यतासकलेपदे ३२ केशप्रसाधनंत्वत्र कामिन्याःकामिनाकृतम् ॥ तानिचूडयताकान्तामुपविष्टमिहध्रुवम् ३३ रेमेतयाच्चास्मरतआत्मारामोऽव्यखण्डितः ॥ कागिनांदर्शयन्दैन्यं स्त्रीणांचैवदुरात्मताम् ३४ इत्येवंदर्शयन्त्यस्ताश्चरुर्गोभ्योविवेकतसः ॥ यांगोपीसनयस्कृष्णो विहायान्याःस्त्रियोवने ३५ साचमेनेतदात्मानं वरिष्ठंसर्वयोपिताम् ॥ हित्वागोपीःकामयानामामसौभजतेप्रियः ३६ ततोगतवावनादेशं ह साकेशयमवधीत् ॥ नपारयेऽहंचलितुं नयमांयन्नतेमनः ३७ एवमुक्तःप्रियामाह स्कन्धमारुह्यतामिति ॥ ततश्चान्तर्द्वेषकृष्णः सावधून्वतप्यत ३८ हाना

कृष्णचन्द्र ने कामिनी के या स्थानमें केश बाहि के सुधारे हैं प्यारी कू वैठाय के केश गुहे जो प्यारोहै सो या स्थानमें निश्चय चैतभयो ३३ श्रीशुकदेवजी कहै हैं आत्माराम अर्थात् अपने स्वरूप में रमण करे असखिहत अर्थात् स्त्रीन के कटाक्षके वश नहीं ऐसहू श्रीकृष्णचन्द्र ता प्यारी के संग रमण करतभये काहे के लिये कामीपुरुषन कू दीनसो दिवायवे के लिये कामीपुरुष पेसे स्त्रीनके वशीभूत अधीन होय जाय है जैसे कौं तैसेही करे हे स्त्री ऐसी दुष्ट होयहैं जो इन्ध्रा में आवै सोई करावैहैं ३४ या प्रकार गोपी अचेतहोय होयके खोजन कौं देखतभई श्रीकृष्ण और स्त्रीनकू छोड़िके यनमें जा गोपी कू अपने संग लेजातभये वत्र गोपी सब स्त्रीनमें अपनेकू श्रेष्ठ मानतभई चाहना करे जो गोपी हैं तिनैं त्यागि के यह प्यारो मेरे संग सेवन करे है ३५ ३६ ता पीछे वह गोपी गर्वित होय के केशन श्रीकृष्णचन्द्र ते बोलत भई मोपे चलो नहीं जायहै जहाँ तुम्हारो मन होय तहाँ ले चलो ३७ या प्रकार जब प्यारी ने कही तब श्रीकृष्णचन्द्र प्यारी ते कहै हैं मेरे कन्याप





कहा याते तैने दृष्टिमें हमारे प्राण हरिलीने हैं तिनके देवके लिये दिखाई दे २ बहुत श्रुत्युन ते कृपाकारिके रत्ताकरी अब क्यों कामदेवकों भेजिके दृष्टिमें मारोहो विपकेजल ते जो मृत्युही ताते रत्ता करी अथासुर आयो ताते इन्द्रेने वर्षाकरी पवन चलाईही ताते विजलीकी आगि ते दृष्टासुर ते यमकेपुत्र व्योमासुर और सम्पूर्ण भयते हे श्रेष्ठ ! तैने वेवेरमें रत्ताकरी है अब क्यों हमें छोड़े है ३ तुम यशोदा के पुत्र नहीं हो सब देहधारीन के बुद्धिके साक्षी हो ब्रह्माने विश्व की रत्ता करिवे के लिये प्रार्थना करी तब हे सखे ! यादवन के कुलमें प्रकट भये ४ हे यादवन में श्रेष्ठ ! हे कान्त ! संसार के भयते तुम्हारे चरण सेवन करें जे पुरुष है तिनकूं अभयरूपी कामनान के देनवारे लक्ष्मी के हाथ को पकानवारी जो तुम्हारी हस्तकमल है ताकूं हमारे माथे पै धरो ५ हे सखे ! हे वीर ! हे वृज-वासीनके दुःख के हरनवारे ! अपने भक्तनके गर्व को दूर करनवारी जाकी मुसिकानि सो हम तुम्हारी दासी हैं तिनकूं सेवन करो पहिले स्त्री हम हैं तिनको अपनी मुखकमल दिखावो ६ प्रणत

मयात्मजाद्विश्वतोभयाहपभतेवयंरक्षितामुहुः ३ नखलुगोपि कानन्दनोभवानखिलदेहिनामन्तरंगमहक् ॥ विखनसाऽर्थितोविश्वगुप्तये सखउदेयिवा  
नूसात्वतांकुले ४ विरचिताभयशृणुधुर्यते चरणमीयुपांसंमृतैर्भयात् ॥ कसरोरुहकान्तकामदांशिरसिधेहिनःश्रीकरग्रहम् ५ ब्रजजनात्तिहन्वीरयोपिनां  
निजजनस्मयध्वंसनस्मित ॥ भजसखेभवतिकङ्करीःस्मनोजलरुहाननञ्चारुदर्शय ६ प्रणतदेहिनांपापकर्षनं तृणचरानुगंश्रीनिकेतनम् ॥ फाणिफणा  
र्पितन्तेपदाम्बुजं कृणुकुत्रेपुनःकृन्धिहृच्छयम् ७ मधुरयागिरावल्गुनाक्ययाधुमनोज्ञयापुष्करेक्षण ॥ विधिकरीरिगावीरमुखतीरधरशीधुनाऽऽप्याययस्व  
नः न तवकथाऽमृतंतप्तजीवनं कविभिरीडितंकलयपापहम् ॥ श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं सुविशृणन्ति तेभूरिदाजनाः ६ ग्रहमितंप्रियप्रेमवीक्षणं विहरण  
अतेध्यानमङ्गलम् ॥ रहसिसंविदोयाहदिरपृशः कुहकनोमनःक्षोभयन्तिहि १० चलसियद्भजाचारयन्पशून्नालिनसुन्दरंनाथतेपदम् ॥ शिलतृणाकुरैः  
सीदतीतिनः कलिलतामनः कान्तगच्छति ११ दिनपरिक्षेपनीलकुन्तलैर्वनरुहाननंविभ्रदाधृतम् ॥ धनरजस्वलंदर्शयन्मुहुर्मनसिनःस्मरंवीरयच्छसि १२

अर्थात् नम्र जे देहधारी हैं तिनके पापको दूर करनवारी गौवनके पाछे पाछे चले काली के फण पै नाचै ऐसो तेरो चरणकमल है ताकूं हमारे कुचन पै धरिके कामदेव की व्यथाकूं दूरि कर ७ हे कमलदललोचन ! सुन्दर है वादय जायें ऐसी तेरी मधुरवाणी सों हे वीर ! तेरी दासी मोहित भई जे हम है तिनकूं जीवन दे ८ संतप्त-पुरुषन कों जियावनवारी कविनने बड़ाई जाकी करी पापन को दूरि करनवारी काननकों मंगलरूप शान्त पेसो तुम्हारी कथारूप अमृत कूं जे पुरुष पृथ्वी में कहे हैं वे बड़े दाताहैं ९ तेरो हंसिसहित मुख प्रेम भरी चितवनि ध्यान में मग्नलरूप तेरो विहार हृदयकूं स्पर्श करनवारी एकान्त की वातें हमारे मनकूं क्षोभ करे है १० हे नाथ ! जासमय गौ चरायवे कूं ब्रज ते चलोहो तब तुम्हारी कमलकी तुल्य सुन्दर चरण सों काकरी तृण शंकुर लगिके कष्ट कूं पावे है तामूं हे कान्त ! हमारी मन चञ्चल होयहैं ११ सन्ध्या समय नील जे केशहैं तिनसू दब्यो ऐसे कमलतुल्य मुखकूं धारण करिके गौवनकी रज जो लड़ी है



( द्वात्रिंशद्विरहालापविच्छिन्नहृदयोद्वारिः ॥ तत्राविर्भूयगोपीस्ताःसात्त्वयापासमानयन् १ स्वमेमागृतकल्लोलविह्वलीकृतचेतसः ॥ सद्यन्तदयनगोपीरुदतोन्दनन्दनः २ वतीसर्वे अस्थाय मे विरह के वार्त्तालाप सौ खेदयुक्त हृदयहोकर कृष्णजी तदाही प्रकटहोकर तिन गोपियों को मान करतेहुये शान्त करतेभये १ अपने प्रेमरूपी अमृतके कल्लोल से विह्वलक्रिये हुये चित्तवाली गोपियोंको दयासमेत कृष्णजी आनन्दयुक्त करतेहुये प्राप्तहोजातेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहेहे हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार गोपी हैं ते गावत चित्रविचित्र विलाप करत श्रीकृष्णचन्द्रके दर्शनकी जिनके लालसा वे गोपी वढे स्वर ते रुदन करतभई १ मुसिकाय है मुरारुमल जाको शूरवंश में जन्म जाको पीताम्बर कूं पहिरे वनमाला को धारण करे साक्षात् मन्मथ कामदेव ताके मन कूं मोहितकरे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र गोपीन के बीचमें प्रकट होतभये २ प्रीतिपूर्वक प्रसन्न होयके प्रफुल्लित है नेत्र जिनके ऐसी सम्पूर्ण अवलोक श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिरे एक संग उठतभई जैसे देहमें प्राण आयये ते हाथ पाव उठे हैं ३ कोई गोपी श्रीकृष्णचन्द्र को हस्तरुमल वढे आनन्दपूर्वक अपने हाथसूं पकृत भई कोई गोपी चन्दन जाँमें लगयो ऐसी भुजाकूं कन्धपै आप उनके हाथको धरतभई ४ कृश

श्रीशुकउवाच ॥ इतिगोप्यःप्रगायन्त्यःपलापन्त्यश्च चित्रया ॥ रुहःसुस्वरंराजन् कृष्णदर्शनलालसाः १ तासामाविर्भूच्चौरिःस्मयमानमुखाम्बुजः ॥ पीनाम्बरभरःस्रज्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः २ तंवलोक्यागतंप्रेष्ठं प्रीत्युरुल्लहशोवलाः ॥ उत्तस्थुर्युगपत्सर्वस्तन्वःप्राणभिरागतम् ३ काचित्कराम्बुजं शौरिर्जगृहेऽञ्जलिनामुदा ॥ काचिद्विधातदवाहुमसेचन्दनभूपिनम् ४ काचिदञ्जलिनाऽगृह्णात्तन्वीताम्बूलचर्वितम् ॥ एकातदङ्घ्रिकमलं सन्तसास्तनयोर धत् ५ एकाभृकुटिमावध्य प्रेमसंभविह्वला ॥ प्रन्तीवैक्षत्कटाक्षैः सन्दष्टदशनच्छदा ६ अपराऽनिमिपद्दृग्भ्यांजुषाणानन्मुखाम्बुजम् ॥ आपीतम पिनात्पत्यस्तस्तच्चरणयथा ७ तंकाचिन्नेत्रान्ध्रेण हृदिहृत्यनिमील्यच ॥ पुलकाद्भ्रुपुगुह्लास्ते योगीवानन्दसंभ्रुता ८ सर्वास्ताःकेशवालोपरमोरस वनिर्द्वयाः ॥ जह्रुर्विरहजन्तापं प्राज्ञप्राप्ययथाजनाः ९ ताभिर्विधून्शोकाभिर्भगवानच्युतोदृतः ॥ व्यरोचताधिकंतात पुरुषःशक्किर्भयथा १० ताःसमा

है अंग जाको ऐसी कोई गोपी श्रीकृष्णके मुखमें ते ताम्बूल को उगारै ताथ अपने हाथ में लेतु भई और काम ते तगायमान जो एक गोपी है सो श्रीकृष्णचन्द्र को चरणकमल है ताथ अपने स्तनन पै धरतभई ५ एक गोपी अपनी भौह चढायके कोपके आवेण सूं विकल होयके अपने ओष्ठूं दातनते दाविके कटाक्षरूपी वाणन ते गारती सी देखत भई ६ और गोपी नहीं लगेहै पलक जिनमें ऐसी दृष्टिसे श्रीकृष्णचन्द्र को मुखकमल भले प्रकार देखयो भी है परन्तु फेर फेर देसत नहीं तुम होतभई जैसे साधु जिनके चरणारविन्द देखत नहीं तुमहोई हैं ७ रोमाञ्च जाके होयआ- वें देहमें ऐसी कोई गोपी नेत्रद्वारा हृदय में ले जायके नेत्रन कूं मृदिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं आलिंगन करतभई जैसे योगीजन आनन्दमें व्याप्त होय है केशव श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन करिके परमआ- नन्दहै तासूं सुखी होयके सम्पूर्ण गोपी विरहके तापको त्यागत भई जैसे ईश्वरको पायके मुमुक्षुजन तापकूं छोड़े हैं अथवा सुपुष्टि अवस्थाको साक्षी है ताथ पायके जाग्रतरूप अवस्थायान् जीव जैसे तापकूं छोड़े हैं ८ ९ दूरभये हैं शोक जिनके ऐसी गोपीनके बीचमें अच्युत भगवान् हे परीक्षित ! अधिक सुन्दर लगतभये जैसे परमात्मा सत्त्वगुण सूं आदिलेके जे शक्ति हैं तिनसूं सुन्दर

लगे है अथवा उपासकपुरुष ज्ञान बल वीर्य्य सूर्य आदिलेकै जे शक्ति है तिनसुं सुन्दर लगे है १० तिन गोपीन कों संग लेके फूले जे कुन्द मंदार तिनकी सुगन्धिकी पवन सूर्य औरा जामें गुञ्जारकरै ऐसे यमुनाजी के पुलिन में आयके सुन्दर लगतभये ११ फेर कैसे पुलिन हैं शरद्वृत्तु के चन्द्रमा की किरणन के समूह ते रात्रिकी अन्धकार जामें ते दूर होयगयो है फेर कैसे हैं यमुना की तरंगन सूर्य कोमल वारु के विखौना जामें विखरहे हैं १२ ता श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शनमें जो आनन्दहै तासुं दूरभये है हृदय के रोग जिनके वे गोपी मनोरथको जो अन्तहै ताकुं पावतभई अर्थ्याव मनोरथ उनके पूरे होतभये जैसे ज्ञानकाण्डमें श्रुति परमेश्वर कंदेलिके आनन्दसुं पूर्ण होयै काम के सम्पूर्ण वन्धन कूं त्यागे हैं कुचनकी केशर जिनमें लगी ऐसी अपनी ओढ़नीन कूं उतार उतार के श्रीकृष्णचन्द्र के वैठिने को तकिया गादी वनावतभई १३ योगेश्वरन के हृदय के भीतर जिनको कल्पित आसन है वे ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण तीनलोक की शोभा कों एक एकही स्थान कहा तीन

दायकालिन्द्यानिर्विशयपुलिनंविभुः ॥ विकसत्कुन्दमन्दारसुरभ्यनिलपट्पदम् ११ शरच्चद्रांशुसन्दोहध्वस्तदोपातमःशिवम् ॥ कृष्णयाहस्ततरलाचि तकोमलवालुरुम् १२ तद्दर्शनाह्लादविधूतहृदुजोमनोरथान्तंश्रुतयोयथाययुः ॥ स्वैरुत्तरीयैःकुचकुङ्कुमाङ्कितैरचीक्लृपन्नासनमात्मवन्धवे १३ तत्रोपविष्टो भगवान्सईश्वरोयोगेश्वरान्तर्हृदिकल्पितासनः ॥ चकासगोपीपरिषद्गतोऽर्चितस्त्रैलोक्यलक्ष्म्येकपदंवपुर्दधत् १४ सभाजयित्वातमनङ्गदीपनं सहास लीलेक्षणविभ्रमभुवा ॥ संस्पर्शनेनाक्लृताङ्गिहस्तयोः संस्तुत्यईपत्कुपितावभापिरे १५ गोप्यऊचुः ॥ भजतोऽनुभजन्त्येकएकएतद्विपर्ययम् ॥ नो भयांश्चभजन्त्येकएतन्नोब्रूहिसाधुभोः १६ श्रीभगवानुवाच ॥ मिथोभजन्तिनियेसख्यः स्वार्थैकान्तोद्यमाहिते ॥ नतत्रसौहृदधर्मः स्वार्थार्थन्तद्धिनान्य था १७ भजन्यभजतोयैवै करुणाःपितरोयथा ॥ धर्मोनिस्पवादोऽत्र सौहृदश्चमुमध्यमाः १८ भजतोऽपिनैवैकेचिद् भजन्यभजनःकुतः ॥ आत्मारामा ह्यासकामाअकृतज्ञागुरुद्रुहः १९ नाहंतुसख्योभजतोऽपिजन्तून्भजाम्यमीपामनुवृत्तिवृत्तये ॥ यथाऽधनोलब्धवनेविनष्टेतिञ्चिन्तयाऽन्यन्नभृतोनवेद २०

लोक की शोभा जामें आयरही ऐसे रूप कों धरि के ता आसन पै वैठारि के गोपीन ने जिनको पूजन करो ऐसे गोपीन की सभा में सुन्दर लगतभये १४ कामदेव के वदावनवारै जे श्रीकृष्ण तिनही दास लीलापूर्वक चित्तवनि सों चलायमान जो भृकुटी है तिनसुं सत्कार करिके गोदमें धरे जो श्रीकृष्णचन्द्र के चरण तिनकूं हाथन ते दावत स्तुतिकरि के बल्लु एक क्रोध ते गोपी बोलत भई १५ सम्पूर्ण गोपी फंदे हैं कि हे महाराज ! एक पुरुष तो भजतेन को भजे हैं वे कौनसे हैं और एक ऐसे हैं कि नहीं भजतेन को भजे हैं वे कौन हैं और एक भजतेन कों न भजतेन कों दोनोनको नहीं भजे हैं वे कौनसे हैं सो हे कृष्ण ! यह हमारै आगे भलेप्रकार समझा के कहो १६ श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र बोले हे सखियो ! जे पुरुष परस्पर भजे हैं अर्थ्याव जितनो वे उनको चाहै तितनो वे उनको चाहै वे कौनसे हैं वे पुरुष तो आप स्वार्थी हैं वे भजनमें स्नेह सुख धर्मा कछुओ नहीं है वह तो केवल अपनोही भजन है १७ और जे नहीं भजतेन कों भजे हैं वे पुरुष दो प्रतार के हैं एक तो करुणावान् दूसरे स्नेही जैसेमाता पिताको पुत्र नहीं चाहे है परन्तु वे चाके ऊपर कृपा करे हैं और या भजन में निर्दोष धर्म है हे सुमध्यामाः सुन्दर है कटि जिनकी ! हे

गोपियो ! या भजन में स्नेह भी है ? ८ कोई पुरुष भजतेन कू भी नहीं भजे है अभजतेन कू कहाँ ते भजेगे वे चारप्रकार के हैं एकतो आत्माही में रमण करे हैं और एक पूर्णानोरथ है जिनके कोई यातही चाहना नहीं है और एक अकृतज्ञ है उपकार कू नहीं समझे हैं और एक गुरुद्रोही है जो उपकारकरे ताहीते द्रोह करे है १९ श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं हे सखियो ! जो कोई प्राणी मेरो भजन करे है तिनको आपर्णा और ध्यान लगाये के लिये मैं उनकू नहीं भजूँ जैसे दरिद्री पुरुष को धन मिले है और वह धन जानरे है तब वह वाकी चिन्ता के बारे भूल प्यास नहीं जाने है २० हे अवलाओ ! मेरे लिये छोड़ी है कोमलर्यादा वेदपर्यादा पति पुन जिनने ऐसी तुमहो तिनकी वृत्ति लगाये के लिये तुमकू देखिवेकों नहीं आयो तुम्हारे पासही खिपिके रहतभयो कइ दूरि नहीं गयोहो याते हे प्रियाओ ! यह छुपण दुरो है ऐसे मो र्यारे में दोष मति लगावो २१ निर्दुषित है सग जिनको ऐसी तुमहो तिनके उपकार को बदलो मोपै देवतानकी बराबर अवस्था होती तौभी नहीं होसके है क्यों जो छोड़ी न जाय ऐसो घरलगी वेडीन कू काटिके भेरो सेवन करतभई यातें तुमहीं करिदेउ कि कृष्ण हमरो ऋणिया नहीं है तो भेरो छुटकारो है

एवंमदर्थोऽस्मिन्नलोके देस्नानां हि नो मय्यनुवृत्तयेऽवलाः ॥ मया परोक्षं भजतातिरोहिणं मास्मयितुं पाऽहं यत्प्रियं प्रियाः २१ न पारयेऽहं निरवद्यं संजुगं स्मसां धुक्स्थं विबुधा गुपाऽपिवः ॥ यामाऽभजच्छुभ्रं रोगे हृद्भ्रूलाः संहरन्त्यतदः प्रतियातुसाधुना २२ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे रासक्रीडायां गोपीसान्त्वनं नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ इदं भगवतो गोप्यः श्रुत्वा वाचः सुपशलाः ॥ जहुरिर्विहजंतापं तदङ्गोपचिताशिपः १ तन्नाभतगोविन्दो रासक्रीडामनुव्रतेः ॥ स्त्रीरत्नैरन्वितः प्रीतैरन्योऽन्यावच्छवाहुभिः २ रासोत्सवः संप्रवृत्तो गोपीगण्डलमण्डितः ॥ योगेश्वरेण कृष्णेन तासां मध्ये द्वायोर्द्वयोः ॥ प्रविष्टेन गृहीतानां कण्ठे स्वनिकटं स्त्रियः ३ यं मन्येरन्नमस्तावद्विमानशतसंकुलम् ॥ दिवौ कसांसदाराणामौत्सुक्यापहृतात्मनाम् ४ ततो दुन्दुभयोनेन्दुर्निपेतुः पुष्पघृष्टयः ॥ ज

मोपै तुम्हारे उपकार को बदलो नहीं होयसके है २२ इति श्रीमन्महाभागवतार्थकृष्णार्थदशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे रासक्रीडायां गोपीसान्त्वनं नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥ \* ॥ \* ॥  
( त्रयस्त्रिंशेततो गोपीगण्डली मध्यगोहरिः ॥ प्रियास्तारमयापास हृदिनीयनकेलिभिः १ तैतीसवै अद्यथाय में गोपियों की मण्डली के मध्य में प्राप्त कृष्णजी तिन प्यारी गोपियों को हृदिनीयन केलियों से रमण करातेभये ? ) श्रीशुकदेवजी कहे हैं या मत्तार जा श्रीकृष्ण के हस्त चरण कू आदिले के अंगनसं वदे हैं मनोरथ जिनके ऐसी गोपी भगवान् श्रीकृष्ण के वचन श्रवण करिके विरह के तापकू त्यागतभई ? तदा गोविन्द श्रीकृष्ण हैं सो अपनी आज्ञाकी करनवारी प्रसन्न होय आपुस में हाथ जिनने पररि लिये ऐसी स्त्रीन में रत्न जो गोपी हैं तिनकू सङ्ग लेऊ रासक्रीडा को चारम्भ करतभये २ गोपीन के समूह हैं तिनसों शोभायमान ऐसो रासको उत्सव है सो योगके ईश्वर श्रीकृष्ण रचत भये मण्डलरूप करिके ठाकी भई जे गोपी हैं तिनके दो दो के बीच में कण्ठ में गलवाहीं डारि गान करत आपहू ठावे भये ३ जिन श्रीकृष्णचन्द्र कू सब गोपी प्यारो भेरे पास है वह कहे प्यारो भेरे पास था मत्तार अपने अपने पास पास मानत भई रास देखिवेकी

इच्छा जिनके भई ऐसे देयता अपनी स्त्रीनकुं लोके आये तिनके विमाननसू आकाश व्याप रहो है ४ देवतान के आये पीछे नगारे वज्रतभये फूलगकी वर्षा होतभई मुख्य मुख्य गन्धर्व अपनी अपनी स्त्रीन को संगलेके श्रीकृष्ण के निम्नल यशको गावतभये ५ प्यारे श्रीकृष्णसहित जे स्त्री हैं तिन के कंकण नूपुर किंकिणीन को रासमण्डल में बड़ी भजनकार शब्द होतभयो ६ जैसे दो दो सोनेके माणयान के बीचमें एक एक नीलमणि सुन्दर लगे हैं तैसे वा रासमण्डल में दो दो गोपीन के बीचमें एक एक भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अतिमुन्दर लागत भये ७ पावन की धरनि भुजान की हलानि मुसिकानि सहित धृकुटीन की चढ़नि कपन की लचकानि कुचनकी और वजनकी हलानि तिनसू पसीना मुँहपे जिनके आय गये चोड़िनकी नारन की गाड़ि जिनकी खुल गई ऐसी श्रीकृष्णचन्द्र की वधू गोपी श्रीकृष्ण कूं गावत जैसे वेप्रमण्डल में धिजुली सुन्दर लगे हैं तैसे सुन्दर लागतभई ८ नाना रंगनसूं फल जिनके रगिरहे रतिही जिनको गुर्गन्धर्वपतयः सस्त्रीकासनद्यशोमलम् ५ बलयानानूपुराणां किङ्किणीनाश्चोपिताम् ॥ सभियाणामभूच्छब्दस्तुमुलोरासमण्डले ६ तत्रातिशुशुभेता भिर्भगवान्देवकीसुतः ॥ मध्येमर्णनाहैमानां महामरकतोयथा ७ पादन्यासैर्भुजविधुतिभिः सस्मितैर्धूलिलासैर्भोज्यन्मध्ये श्रलक्ष्मचपटैः कुण्डलैर्गण्डलो लैः ॥ स्विद्यन्मुखः कवरशनाग्रन्थयः कृष्णवधोगायन्त्यस्तंतडितहवतामेघचक्रैर्विरेजुः ८ उच्चैर्जगुर्नयमानारक्कशब्दोरतिभियाः ॥ कृष्णभिमशो मुदितायद्रीतेनेदमावृतम् ६ काचित्सममुकुन्देनस्वरजातीरामिश्रिताः ॥ उन्नियेपूजितातेनप्रीयतासाधुसाध्विति ॥ तदेवध्रुवमुन्नियेतस्यैमानश्चवद्बदा त १० काचिद्रासपरिश्रान्ता पार्श्वस्थस्यगदाभृताः ॥ जग्राहवाहुनास्फुन्धंश्लथदलयमल्लिका ११ तत्रैकांसगतंवाहुंकृष्णरयोत्पलसौरभम् ॥ चन्दनालि समाधाय हृष्टरोमाचुचुम्बह १२ कस्याश्चिन्नाद्यविक्रिसकुण्डलविविभगण्डितम् ॥ गण्डंगण्डेसन्दधत्याअदासाम्बलचर्वितम् १३ नृत्यन्तीगायतीकाचिरू जञ्जुपुरमेखला ॥ पार्श्वस्थाच्युतहस्ताब्जं श्रान्ताधातस्तनयोः शिवम् १४ गोप्योलब्धाऽच्युतं कान्तं श्रियपूकान्तवत्तलभम् ॥ गृहीतकण्ठयस्तदोभ्यां प्यारी श्रीकृष्णको स्पर्श जिनको होय तासूं वड़ो जिनके आनन्द वे गोपी नृत्य करत ऊँचे स्वर से गावतभई जिनको गीतया विध में छापरहो ९ कोई गोपी मुकुन्द जे श्रीकृष्ण हैं तिनके सग उच्चस्वरन के आलापन की गतिन कूं उठावत भई कैसे स्वरन की जातिलीनी श्रीकृष्णने जो स्वर उठायो है तिनमें मिली है तत्र श्रीकृष्ण प्रसन्न होयके स्यापास स्यापास पेसे बढ़ाई करत भये ताते स्वरनकी जाति लीनीही तिनकूं ध्रुवताल में वाजेके गावतभई जो गोपी हैं सो गोपी को श्रीकृष्णचन्द्र बहुत मान देत भये १० कोई गोपी रासमें अभित होयके पासमें गदाके बारण करनवारे श्रीकृष्ण ठाढ़े हैं तिनके कन्याकों हायते पकरतभई कंकण फूलनके हार जाके शिथिल होयगये ११ तामपय रोपाश्च जाके होय आये ऐसी एक गोपी कमलकी तुल्य जामें सुगन्धि आवै चन्दन जामें लग्यो ऐसी श्रीकृष्णकी भुजाको अपने कन्यापै धरिके लुगन करतभई १२ नृत्यसूं चलायमान जो कपोल ताकूं श्रीकृष्ण के कपोलन ते लगवै ऐसी जो गोपी हैं ताकूं श्रीकृष्ण बीरी को उगार देतभये १३ नूपुर कंधनी जाके वज्र ऐसी कोई एक गोपी नृत्य करत गावत भयो तत्र पास श्रीकृष्ण ठाढ़े हैं तिनको मंगलक्षण हस्तकमल अपने स्तनन पै धरति भई १४



लक्ष्मी कूं अत्यन्त प्यारे ऐसे अच्युत श्रीकृष्णचन्द्र कूं सुन्दर पति पाइ के तिनकी भुजान सूं कण्ठ में गलबाहीं डारि के श्रीकृष्ण कों गावती विहार करत भई १५ कानन में नीलकमल और अलकावली तिनसूं शोभायमान जो कपोल और पसीनान के विन्दु तिनसूं शोभायमान जिनके मुख केशन ते भरभर के फूल गिरि जिनके वे गोपी भौरा गवैया रासकी सभा में ककण नूपुर के भनकारे जे वाजे हैं तिनसूं श्रीकृष्ण के संग दृश्य करत भई गवैया वज्रवैया गन्धर्व्व किन्नरादिक रास देखिके मोहित होय गये तब नूपुर कंकणन के वाजे वजे भौरा गवैया भये सब रिझवैया होयते पावन के ऊपर फूल वर्षावत भये १६ या प्रकार लक्ष्मी के पति श्रीकृष्ण आलिङ्गन हाथन को स्पर्श स्नेह भरी चितवनि वड़े विलास हास हैं तिनसूं वालक अपनी परछाई सूं खेलै है तैसे ब्रजसुन्दरीन के संग रमण करत भये १७ हे कुरुद्वह अर्थात् कौरन के वंश को आनन्द देनवारे राजा परीक्षित ! तिन श्रीकृष्णके अंग में जो आनन्द तासूं विवश है इन्द्रिय जि-

गायन्त्यस्तं विजिह्वरे १५ कर्णोत्पलालकविटङ्ककपोलघर्मवक्त्रश्रयोवलयनूपुरघोषवाद्यैः ॥ गोप्यःसंभगवताननुतुःस्वकेशस्तस्रजोभ्रमरायकरा  
सगोष्ठ्याय १६ एवंपरिष्वङ्गरामिमर्शस्निग्धक्षणेदाभिविलासहासैः ॥ रेमेरेशोब्रजसुन्दरीभिर्यथाऽर्भकःस्वप्रतिविम्बविभ्रमः १७ तदङ्गसङ्गमदाकु  
लेन्द्रियाः केशान्दुःखलंकुचपट्टिकांवा ॥ नाञ्जःप्रतिव्योदुपलंब्रजस्त्रियोविस्रस्तगालाभरणाःकुरुद्वह १८ कृष्णविक्रीडितंवीक्ष्य मुमुहुःखेचरस्त्रियः ॥ का  
मार्दिताःशशाङ्कश्च सगणोविस्मितोऽभवत् १९ कृत्वातावन्तमात्मानं यावतीगोपयोपितः ॥ रेमेसभगवांस्तार्धिरात्मारामोऽपिलीलया २० तासामति  
विहारेण श्रान्तानांवदनानिसः ॥ प्रामृजत्कुरुणःप्रेम्णा शन्तमेनाङ्गपाणिना २१ गोप्यःस्फुरत्पटकुण्डलकुन्तलत्विङ्गरडश्रियासुधितहासनिरीक्षणेन ॥  
मानंदधत्तपद्मभस्यजगुःकुतानि पुरयानितत्करुहस्पर्शप्रमोदाः २२ ताभिर्युतःश्रममपोहितमङ्गसङ्गघृष्टस्रजःसकुचकुङ्कुमरञ्जितायाः ॥ गन्धर्व्वपालि  
भिन्नुद्रुतआविशद्वाः श्रान्तोगर्जाभिरभाडिवभिन्नसेतुः २३ सोऽम्भस्यलंघ्युवतिभिःपरिपिच्यमानः प्रेम्णेशितःप्रहसतीभिरतस्ततोऽङ्ग ॥ वैमानिकैः

नकी और खिसिले हैं माळा गहने जिनके ऐसी व्रज की स्त्री गोपी हैं ते केशन कूं रेश्मी वस्त्रन कूं कुचन के वस्त्रन कूं सम्हारवे कूंन समर्थ होत भई १८ श्रीकृष्ण की रासक्रीडा देखिके आकाश में देवांगना काम सूं पीडित होय के मोहित होत भई तारागण सहित चन्द्रमा आश्चर्य्य मानके चलिवो भूछि गयो तब और ग्रह भी जहाँ के तहाँ रहत भये तासूं राति जो वडि गई तिनमें सुख पूर्व्वक विहार करत भये १९ जितनी गोपन की स्त्रीरहीं तितनेही अपने रूप करिके आत्माराम भगवान् श्रीकृष्ण गोपीन के संग लीला करत रमत भये २० अत्यन्त विहार सूं श्रम जिनको भयो ऐसी गोपीन के मुख के पसीना को देखिके करुणा जिनके आय गई ऐसे श्रीकृष्ण हैं सो प्रेमसों सुख को देनवारी अपनो हाथ तासूं पोंछत भये २१ श्रीकृष्ण के हस्तकमल के लागिवे ते हे आनन्द जिनके ऐसी जे गोपी हैं ते प्रकाशमान सुवर्ण के कुण्डल और केशन की कान्ति सों शोभायमान अमृतसमान हाससमेत चितवनि सों कृष्णजी को पूजन करती भई और तिनके पुण्यकारी कर्मों को गावत भई २२ रासक्रीडा को श्रम जिनको भयो ऐसे श्रीकृष्ण तिन गोपिनकों संग लेके श्रम दूरि करिवे के लिये जलमें धसत भये कुचनकी केशर जामें लगि अंगसंग सू रगड़ी ऐसी

जो माला है ताकी सुगन्धि मूं मन्थर्वन की तुल्य भौरा गायत गावत पीछे चले जाय है जैसे हथिनीन कूं संगलैके हाथी जलविहार करिने कूं जाय है २३ अत्र अर्थात् हे राजन् परीक्षित ! इत उत ते जल में स्नान कू छीटा देय है श्रीकृष्ण कूं देखिके भेग ते हेतो हैं विमानन में बैठे देवता जिनकी स्तुति करै हाथी की तुल्य जिनकी लीला ऐमे आत्माराम श्रीकृष्ण तहूं जल में अथवा गोपीन के मण्डल में विहार करत भये २४ जलविहार करे पीछे जल के स्थल के पुण्य हैं तिनकी सुगन्धि जिन में आवै ऐसी पवन सों सेवित हैं दिशान के अन्त जामें ऐसो जो यमुनाजी को बाग है तामें भौरा गोपी जिनके संग ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र विहार करत भये मद जाके चुने ऐसो हाथी जैसे हथिनीन के संग विहार करे है २५ या प्रकार प्रकाशमान जे रात्री है तिनकूं चन्द्रमा की किरणन मूं सत्य जिनको सङ्कल्प अनुरागती जो गोपी हैं तिनके समूह में विराजमान अपने विषे वीर्य जिनने रोको ऐसे श्रीकृष्ण शरद्वृक्षतुमें रमण करत कविनने कहे जे रसहैं तिनके आश्रय ऐमी शरद्वृक्षतु के चन्द्रमा की किरणन मूं प्रकाशमान जे रात्रि है तिनैं सेवन करतभये २६ राजा परीक्षित प्रश्न करे हैं हे महाराज शुक्रदेवजी ! धर्म के स्थापन करिने के लिये और

कुमुदमवर्षिभिरीड्यमानोरेमेस्यंस्वरतित्रगजेन्द्रलीलः २४ ततश्चकृष्णोपवने जलस्थलप्रमूगन्धानिलजुष्टदिक्रटे ॥ चत्वारभुङ्क्षुप्रमदागणधुनोयथाम  
दव्युद्ध्रिदः करेणुभिः २५ एवंशशाङ्काशुविराजितानिशाः ससत्यकामोऽनुतावलागणः ॥ सिपेवआत्मान्यवरुद्धसौरतः सर्वार्शरत्कान्यकथारसा  
श्रयाः २६ ॥ राजोवाच ॥ संस्थापनायधर्मस्य प्रशमायेतरस्यच ॥ अवतीर्णोऽहिभगवानंशेनजगदीश्वरः २७ सकथं धर्मसेतूनां वक्ताऽर्त्ताऽभिरक्षिता ॥  
प्रतीपमाचरद्वहन् परदारोगिपर्शनम् २८ आसकामोयदुपतिः कुनत्रान्वैजुगुप्सितम् ॥ किमभिप्रायएतन्नः संशयंछिन्धिचसुत्रन २९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥  
धर्मव्यतिकमोदष्टैश्वराणाञ्चसाहसम् ॥ तेजीयसानंदोपाय वद्वेः सर्वभुजोयथा ३० नैतत्समाचरेज्जातु मनसाऽपिह्यनीश्वरः ॥ विनश्यत्याचरन्मौ  
ढ्याद्यथारुद्रोऽधिजंविपम् ३१ ईश्वराणां त्रिचः सत्यं तथैवाचरितं क्वचित् ॥ तेषां यस्त्वनचोयुक्तं बुद्धिमांस्तत्समाचरेत् ३२ कुशलाचरितेनैवाभिहन्वार्थो

अधर्म के नाश करिने के लिये जगत् के ईश्वर श्रीकृष्ण भगवान् परिपूर्ण रूप करिके अवतरे हैं और धर्म की मर्यादान के ऋहन्वारे करनवारे रत्ता करनवारे श्रीकृष्ण विरानी स्त्रीन को सत्य करनो यह धर्म कैसे करतभये पूर्णकाम यादवन के पति श्रीकृष्ण निन्दित कर्म कैसे करतभये याको कष्ट अभिप्राय है सुन्दर है अत्र जिनको ऐसे हे शुक्रदेवजी ! यह जो हमारो सन्देह है ताय दूरि करो २७।२८।२९ यह वचन श्रवण करिके श्रीशुकदेवजी कोलें हे राजन् परीक्षित ! सामर्थ्यवान् कूं धर्म को उलायिवो देख्यो है और सामर्थ्यवान् कूं साहसह देख्यो है ब्रह्मा अपनी पुत्री के पीछे भाज्यो चन्द्रमा दुहरपति की स्त्री के पास गयो जैसे अग्निमें वुरी भली मस्तु डारो ताकूं जराय देइ वाकू दोष नहीं लागेहैं ऐमे तेजस्वी पुरुषन कू दोष नहीं लागेहैं ३० असाधार्यवान् पुरुषन कूं मन से हू न करे और जो अज्ञान ते करे तो मारो जाय जैसे रुद्र विना और कोई समुद्र के विष कूं पीये तो मारो जाय ३१ ईश्वरों के वचनही कों सत्यमाने और उनके आचरण कूं रुहें सत्य माने जैसो उनने वक्षो हैं ताही के अनुसार बुद्धिमान् पुरुष करे राम कृष्ण दोउ अवतारभये हैं रामचन्द्रने जैसो कक्षो तैसोहीकरोहैं याते उनको कहनो करनो दोनों करै श्रीकृष्णने गीतामें जो वक्षो

है ताय करे और उन्ने जे लीला करी है तिनको न करे किन्तु ध्यान करे ३२ हे प्रभो अर्थात् राजन् परीक्षित् ! या संसार में अष्टद्वार जिनके नहीं ऐसे सामर्थ्यान् पुरुष जो अच्छो कर्म करे तापूँ उनको पुण्य नहीं होय है और निकृष्ट कर्म करने से पाप नहीं होय है पुण्य पाप तो देह में अहंकार के वश से लगे है अहंकाररहित पुरुष कूँ कहु टोप नहीं है ३३ समस्त प्राणी पशु पक्षी मनुष्य देवता जीव इनके ईश्वर जो श्रीकृष्ण हैं तिनकूँ पुण्य पाप नहीं लगे है यामें कहा कहनो है ३४ जिनके चरणारविन्द को पराग अर्थात् मरुत्तदे के सेवन करे ते तुमयें जे भक्त हैं ते और योग के प्रभाव सों दूर भये हैं सम्पूर्ण कर्मजन जिनके ऐसे जे मुनीश्वर ज्ञानी ते वन्दनसूँ रहित होयके अपनी इच्छापुर्वक विचरे है और इच्छाकारिके धारण किये है रूप जिनने ऐसे जे भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्र तिनकूँ वन्दन कहा ते होय ३५ गोपी और तिनके पतिन के सम्पूर्ण देहधारीन के साक्षीरूप होयके जो देहके भीतर रहे है तिन श्रीकृष्णने क्रीडा करि के लिये देह धारण किये है ३६ न विद्यते ॥ निपर्ययेणानर्थो निरहङ्कारिणां प्रभो ३३ किमुनाखिलसत्त्वानांतिर्यङ्मर्थदिवौकसाम् ॥ ईशितुश्चेशितव्यानां कुशलाकुशलाननयः ३४ यस्यादपङ्कजपरागनिपेवत्ता योगप्रभावविधुनाखिलकर्मवन्धाः ॥ स्वैश्वरान्तिमुनयोऽपिनह्यमानास्तस्येच्छयाचवपुःकुतएवबन्धः ३५ गोपीनां तत्पतीनाञ्चसर्वेषामेवदेहिनाम् ॥ योऽन्तश्चरति सोऽध्यक्षः क्रीडनेनेहेहभाक् ३६ अनुग्रहाय भूतानां गानुपदेहमास्थितः ॥ भजते तादृशीः क्रीडायाः श्रुत्वा तपो भवेत् ३७ नाभूयन्खलुकृष्णाय मोहितास्तस्य मायया ॥ मन्यमानाः स्वपार्श्वस्थान् स्वाचस्वाचदाराचब्रजौकसः ३८ ब्रह्मरात्रउपावृत्तेवासुदेवानुमोदिताः ॥ अनिच्छन्त्यो ययुर्गोप्यस्वगृहाच्च भगवत्प्रियाः ३९ विक्रीतं ब्रजवधूभिरिदञ्चविष्णोः श्रद्धान्वितोऽनुशृणुयादथवर्णयेद्यः ॥ भक्तिं परां भगवति पूतिलभ्यकामं हृद्दोगमाश्रयपहिनोत्यचिरेणधीरः ४० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वोद्धिं रासक्रीडावर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

अशिरुउवाच ॥ एतदेव यथात्रायां गोपालाजातकौतुकाः ॥ अतोभिरनलुप्तैः प्रयुक्तेऽस्मिन्कावनम् १ तत्रस्नात्वासस्वत्यां देवं पशुपतिं विभुम् ॥ प्राणीनके ऊपर अनुग्रह करि के लिये मनुष्य देहधारण करिके मनुष्य लीला करी है जिन लीलानके श्रवण करे ते मनुष्य कृष्णपरायण होय जाय ३७ ता श्रीकृष्णजी मायामें मोहित जे ब्रजवासी ते श्रीकृष्णको दोप नहीं लगावत भये अपनी अपनी स्त्रीनको अपने अपने पास मानत भये ३८ ब्रह्ममुहूर्त अर्थात् चारघड़ी रात्रि रहे श्रीकृष्ण के कहेते घर आयेकी इच्छा जिनके नहीं ऐसी ध्यासी गोपी अपने अपने घरकूँ आवत भई ३९ श्रीकृष्ण चन्द्र भगवान् ने परमकौतुक जो ब्रजवधू गोपीन के संग रासलीला है ताय जो पुरुष श्रद्धापूर्वक श्रवण करे और कवन करे वह पुरुष भगवान् में परमपक्ति पायके थोड़े दिनमें धीर होयके जलदी देसी हृदयके कामरूप रोग कों त्यागे है ४० इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे पूर्वोद्धिं रासक्रीडावर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

( चतुर्विंशोऽहनाग्रस्तं नन्दं हरिं रमूचत ॥ विद्याग्रं चाद्भिरः शपाञ्च हूँतयाऽवधीत् ॥ रासापदेशतः काम किङ्करीकृत्य कामतः ॥ अनुलुप्तं शनिनये तथा विद्याधराधिपम् २ चौतीसवें अध्याय में अद्भिराजी के शप सों सुदर्शन विद्याधर सर्वरूप होकर नन्दजी को असता भया तिससे कृष्णजी नन्दजी को छुड़ाते भये और शङ्खचूड़ को मारते भये १ रास के अपदेश सूं कामते का-

मदेव को दूतकर ग्रहणकर वश में प्राप्त करतेभये और विद्याधरों के स्वामी सुदर्शन को भी वश करतेभये २) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! एकसमय भयो है कौतुक जिनके ऐसे व्रजवासी देवीकी यात्रा करिने के लिये डैल जिनमें जुते ऐसे गाछान में बैठि के देवी के वन में जातभये १ ता वनमें सरस्वती नदी में स्नान करिके पशुपति जो महादेव हैं तिनकी हे राजन् परीक्षित ! भक्तिपूर्वक पूजा करिके अम्बिकादेवीकीभी पूजा करत भये २ सम्पूर्ण व्रजवासी महादेव हमारे ऊपर प्रसन्न होयें या कारण गऊ, सोना, वस्त्र और मधुसूक्त मधुर अन्न ब्राह्मणन कुं दान करत भये ३ वडो है भाग्य जिनको ऐसे नन्द सू आदिलैके समस्तव्रजवासी वा दिनरात्रि कुं जल को आचमन करिके तीर्थ व्रत करते सरस्वती के किनारे वसतभये ४ वा वन में कोई एक अस्थान भूखो सर्प अकस्मात् आयके सोतेहुये नन्दरायजी को प्रसन्न भयो ५ सर्प ने जब ग्रस्यो तब नन्दरायजी पुकारत भये हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! यह वडो सर्प है मोकों निगले जायहै हे पुत्र ! ये तेरी

आनन्दुरहणै भक्त्या देवीञ्च नृपतेऽम्बिकाय २ गात्रो हिरण्यवासांसि मधुमध्वन्ममाहताः ॥ ब्राह्मणेभ्योददुःसर्वे देवोनः प्रीयतामिति ३ उपुः सरस्वतीतीरे जलं प्राश्य ध्रुनव्रताः ॥ रजनीं तामहाभागानन्दमुनन्दकादयः ४ कश्चिन्महानिहस्तास्मिन् विपिनेऽतिबुभुक्षितः ॥ यदृच्छयागतोनन्दं शयानमुरगोऽग्रसीत् ५ सचुकोशाहिनाग्रस्तः कृष्णकृष्णमहानयम् ॥ सर्पोभांग्रसतेतात प्रपन्नपरिमोचय ६ तस्य चाक्रन्दितं श्रुत्वा गोपालाः सहसोत्थिताः ॥ अस्तञ्जवदद्वारविभ्रान्ताः सर्पविषयधुरुत्सुकैः ७ अलातैर्दहमानोऽपि नामुञ्चन्तमुरङ्गमः ॥ तमस्पृशत्पदाभ्येत्य भगवान्मात्स्वतांपतिः ८ सर्वैर्भगवतः श्रीमत्पादस्पर्शहताशुभः ॥ भजेत्सर्पवपुर्हित्वा रूपं विद्याधराचितम् ९ तमपृच्छच्छूर्पिकेशः प्रणतं समुपस्थितम् ॥ दीव्यमानेन वपुषा पुरुषं हेममालिनम् १० को भवान्परयालक्ष्म्या रोचतेऽद्भुतदर्शनः ॥ कथं जुगुप्सितामेतां गतिं प्रापिष्यति ११ अहं विद्याधरः कश्चित्सुदर्शन इति श्रुतः ॥ श्रिया स्वरूपसम्पत्त्या विमानेनाचरन्दिशः १२ ऋषीन् विरूपानङ्गिरसः प्राहमं रूपदर्पितः ॥ तैरिमां प्रापितो योगीनिं प्रलब्धैः स्वेन पाप्मना १३ शापो मेऽनुग्रहोऽयं

शरण आयो हू तू मोको छोड़ा ६ या प्रकार नन्दजी की पुकार सुनिके हरवराहट जिनके भयो ऐसे व्रजवासी शीघ्रही उठिके नन्दजी कूं सर्प निगलेहै ऐसे देखिके सुलगती लकरियान सूं सर्पको भारत भये ७ सुलगती लकरियान सूं मारोगयो तथापि नन्दरायजी को न छोड़त भयो तब भक्तकी रक्षा करनेवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र वा सर्प के चरणनकी ठोकर भारत भये भगवान् श्रीकृष्ण को सुन्दर जो चरणहै ताके लगे से पाप जाके दूरभये वह सर्प देहको त्यागिके विद्याधर जाको पूजन करै ऐसे स्वरूप को धारण करतभयो ८ ९ प्रकाशमान रूपको धरिके सुवर्णकी माला पहिरे हाथजोरि ठाढ़ो जो पुरुषहै ताय श्रीकृष्ण पूजतभये १० परमशोभायमान अद्भुत है दर्शन जिनको ऐसे तुम कौनहो विवश होयके यह निन्दित सर्पकी योगि तुमको कैसे मिली है ११ यह सुनिके वह सर्प बोल्हो हे महाराज ! सुदर्शन नाम करिके विख्यातमैं कोई विद्याधरहौं सम्पत्ति और शरीरकी जो सुन्दरता है तासू गर्वित होयके विमान में बैठिके दिशान में विचरत भयो १२ स्वरूपको है मद जाके ऐसो मैं अंगिरावंशमें भये ऐसे विरूप जो अप्रावकादिक ऋषि हैं तिनकी हांसी करत भयो तब उनने शाय दीनों तासूं मेरी सर्पयोगि होयगई १३ करुणावान् ऋषीश्च-

रनने मेरे ऊपर कृपा करिबे के लिये मो कौं शाप दियो जा कारण ते त्रिलोकी के गुरु तुमहौ तिनके चरणारविन्द को स्पर्श करते पाप दूर भय और जो वे शाप न देते तो तुम्हारे चरण मेरे कहा ते लगते १४ ससार ते हरपि के शरण आये पुरुष के भयके दूरि करनारि तुमहौ तिनसौं पूछौ हो हे सद्य पापन के दूरि कस्तवारे तुम्हारे चरणस्पर्शमे भरे सय पाप दूरि होयभये १५ हे महायोगिन् ! हे महापुरुष ! हे महासाधुन के पति ! हे प्रज्ञाशुक्त ! हे समस्त लोकन के ईश्वरन के ईश्वर ! तुम्हारी शरण आगो जो मैं हों सो मो कौं आज्ञादेउ १६ हे अन्युत अर्थात् अखण्डरूप ! तुम्हारी दर्शन करे ते शीघ्रही ब्राह्मण के शाप ते छूटिगयो जिनको नामोच्चारण सम श्रोतानकूं अपनेनकूं पवित्र करे हे तुम्हारे चरणस्पर्श ते मैं पवित्र भयो यामें कहा कहनो है या प्रकार दा शार्दैवंश में भये जे श्रीकृष्ण तिनकी आज्ञालेके परिक्रमा देके प्रणाम करिके वह सुदर्शन स्वर्गकूं जात भयो और नन्दरायजी कष्ट ते छूटत भये १७। १८ श्रीकृष्णचन्द्र को पैभव देखिके आ-

कृतस्तैः करुणात्मभिः ॥ यदहं लोकगुरुणापदास्पृशेहताशुभः १४ तंवाऽहं भवभीतानां प्रपन्नानां भयापहम् ॥ आपृच्छेशापनिमुक्तः पादस्पर्शादिमीव हन् १५ प्रपन्नोऽस्मिमहायोगिन् महापुरुषमस्यते ॥ अनुजानीहिमादेव सर्वलोके श्वरेश्वर १६ ब्रह्मदण्डादिमुक्तोऽहं सद्यस्तेऽच्युतदर्शनात् ॥ यन्नाम गृह्णन्नखिलाञ्छ्रोतृनात्मानमेव च ॥ सद्यः पुनाति किं भूयस्तस्य स्पृष्टः पदाहिते १७ इत्यनुज्ञाप्य दाशार्हपरिक्रम्या भिवन्द्य च ॥ सुदर्शनो दिवं यातः कृच्छ्रान्नन्दश्च मोक्षितः १८ निशाभ्यर्कृष्णस्य तदात्मवैभवं ब्रजौकसो विस्मिमतचेतसस्ततः ॥ समाप्य तस्मिन्नियमं पुनर्ब्रजं नृपाययुस्तत्कथयन्त आहताः १९ कदाचिदथ गोविन्दो रामश्चाद्भुतविक्रमः ॥ विज्रहत्तुर्वने राड्यां मध्यगौब्रजयोपिताम् २० उपगीयमानौ ललितं स्त्रीजनैर्वद्धसौहृदः ॥ स्वलंकृतानुलिताङ्गौ सखिण्यौ विरजोऽम्बरौ २१ निशामुखं मानयन्तावुदितोऽप्युपतारकम् ॥ मल्लिकागन्धमत्तलिलजुष्टं कुमुदवायुना २२ जगतुः सर्वभूतानां मनः श्रवणमङ्गलम् ॥ तौ कल्पयन्तौ युगपत्स्वस्रमण्डलमूर्च्छितम् २३ गोप्यस्तद्वीतमाकर्ण्य मूर्च्छितानां विदधृष ॥ खंसहुकूलमात्मानं स्वस्तके शस्त्रजन्ततः २४ एवं विक्रीडतोः

श्चर्य्यं कू मासभये है चिच जिनके ऐसे ब्रजवासी ता पीछे तीर्थ में नियमकू पूर्ण करिके बड़े आनंद तें श्रीकृष्णचन्द्र के चरित्र को कहत ब्रजमें आवत भये १९ काहू समय एक यात्राके पीछे गोविन्द धार आद्भुत है पराक्रम जिनको ऐसे बलराम दोनों भय्या वन के विषे रात्रि में ब्रजकी स्त्रीनके बीच में बिहार करतभये २० बायो है स्नेह जिनने ऐसी स्त्री ललित तिनमें दोनों भय्या सुन्दर आभूषण पहिरे केशर चन्दन लगाये वनमालाकूं पहिरे निर्मल वस्त्र पहिरे गावें है २१ उदय भये हैं तारागण चन्द्रमा जामें ऐसो सन्ध्यासमय ताको सत्कार करे हैं चमेली की सुगन्ध सौ मत्त होयके भौरा गुजार करे हैं कुमोदनी जो फूली हैं तिनसौं लगिके पवन चले हैं २२ सब प्राणीन के मनकूं कानकूं आनन्द को देनवारो जो गीत है ताकूं गावत भये स्वरनके मण्डलकी मूर्च्छना कहा आलापचारी ताकूं एक संग लेइ हैं २३ हे राजन् परीक्षित् ! कृष्ण बलदेवको गायवो सुनिके मूर्च्छा जिनको आयगई ऐसी गोपीनके वस्त्र ढीले होयगये चोटीनकी गाँठ खुल्लिगई ऐसे





करतभई ? अत्र गोपी आपुसमें कहें हैं हे गोपियो ! वहाँ युगपै वांयें कपोलकों धरिके झुकुटीनकों चढ़ायके मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र अश्वर के ऊपर वांसुरी कों धरिके कोमल अंगुलीनसँ वाके छिद्रन कूँ दाविके जा समय आकाश में है गमन जिनको ऐसे देवतान की स्त्री अपने पतिन सहित वासुरी को सुनिके प्रथम आश्चर्य मानिके लाजसहित कामदेव के वाणनसँ चित्त जिनने सोंप डिये है नारेनकी सुधि जिनकों न रही या प्रकार मोहकों प्राप्त होतभई २।३ हे अत्रलायो ! यह आश्चर्य सुनो हारकी तुल्य निर्मल जाकी हैसनि वांसुरी के वजावत समय नीचो मुख करिके जो हैंसे है ताकी हारन में प्रकाशित हैसनि होय है अथवा हार की तुल्य छाती में शोभायमान जाकी हैसनि है और छाती में विजलीकी तुल्य प्रकाशमान स्थिर लक्ष्मी जाके रहै पीडित जननको सुख देने वारो यह नन्दको पुत्र जा समय वासुरी कूँ वजावे है तब दूरिते वांसुरी को शब्द श्रवण करिके हरिगये है चित्त जिनके ऐसे गौ चैल हरिखन के समूह के समूह दन्तन ते कौर काटिके बाह पकरे भये कानन को ऊँचे करिके लोवत से चित्र लिखेकी तुल्य टाढ़े होतभये अज्ञानी पशुपत्नीन की यह दशाहै यह आश्चर्य है ४।५ अत्र अचेतन नदीन में आश्चर्यहै यह कहे हैं हे सती ! मोर-

तभुरधरार्पितवेणुम् ॥ कोमलाबुलिगिराश्रितमार्गं गोप्यईरयतियत्रमुकुन्दः २ दशोभयानवनिताः सहस्रिह्रैर्विस्मितास्तदुपधार्यसलज्जाः ॥ काममार्गणस  
मर्पितचित्ताः कश्चलं ययुरपस्थृतनीव्यः ३ हन्तचित्रमवलाः शृणुतेदं हारहासउरसिस्थिरविद्युत् ॥ नन्दसूनुयमार्त्तजनानानर्मदोयहिंकूजितवेणुः ४ बृन्दशो  
ब्रजवृषाभृगगावोत्रेणुवाद्यहतचेतस आरात् ॥ दन्तदष्टकवलाद्युतकर्णानिद्रितालिखितचित्रमिवासच् ५ वहिणस्तवकधातुपलाशैर्वह्निमल्लपरिवहिविडम्बः ॥  
कहिंचित्सवलआलिसगोपैर्गाः समाह्वयतियत्रमुकुन्दः ६ तर्हिभग्नगनयः सरितेवै तत्पदाभुजजोऽनिलनीतम् ॥ स्पृहयतीर्वयमिवावहुपुरयाः प्रेमवेपित  
सुजास्तिगितापः ७ अनुचरैः समनुवर्णितवीर्ययादिपूरुषइवाचलभूतिः ॥ वनचरोगिरितटेपुत्रन्तीर्षेणनाऽऽह्वयतिगाः सयदाहिन्दवनलतास्तरवआत्मनि  
विष्णुं दयअग्रनरयइवपुष्पफलाढ्याः ॥ ग्रणतभारविटधामधुधाराः प्रेमहृत्तनवः समृजुः स्म ६ दर्शनीयतिलकोवनमालादिव्यगन्धतुलसीमधुमत्तैः ॥ अलिखु

पुच्छ खरिया मेरु मनाशिल पात इनसँ गलनकी तुल्य स्वरूपकरिके कपड एक बलदेव भय्यासहित गोपनसहित जो मुकुन्द हैं सो जा समय वांसुरी वजायके गोवनको बुलावें हैं ता समय वांसुरी की शब्द श्रवण करिके नदीन के मयाह बहते सँ बन्द होयजाय हैं और पवन सँ उडिके गई जो ताके चरणन की रज है ताकूँ हमारी तुल्य आकांक्षा करे है और हमारीही तुल्य नहीं है उत्कृष्ट पुण्य जिनके ऐसी नदीन कूँ मिले नहीं है प्रेम ते जिनकी लहर कैपे जल जिनके निश्चल होय जाइ हैं ६।७ गोप ग्वालवाला देवता जिनके यशकूँ गावें नारायणकी तुल्य सदा स्थिरहै लक्ष्मी जाके वनको विचरनवारो कृष्ण जा समय गोवर्द्धन पर्वतकी शिखर पैं चरें जे गाँ हैं तिन वांसुरी वजायके बुलावें हैं ता समय फूल फल जिनमें लगे उनके वोभते शाखा जिनकी झुकि रहौ प्रेमकारिके हर्षित हैं चित्त जिनके ऐसे वनके लता दृत्त अपनपे में विणुकों प्रष्टकरतेसे मकरन्दकी थारा बहावतभये ८।९ सुन्दरनमें अतिमुन्दर अथवा सुन्दर देखिवे लायक है सामरे ललाट में वेशर को तिनक जिनके वनमालानमें दिव्यहै सुगन्धि जाकी ऐसी तुलसी की सुगन्धि सों मतदारे भौरानके समूह तिनको मिलो भयो गीत बड़ो उच्च शब्द ताप आदर से ग्रहण करिके अश्वर के ऊपर वांसुरी कूँ

धरिके वजावैं हैं ता समय सरोवरन में सारस हंस और पक्षीनके चित्त हरिगये आयके श्रीकृष्णचन्द्र के पास बैठतभये कैसे पक्षी हैं चित्तकों रोकै नेत्रनकों मूंदै मौनकों धारणकरे हैं १०। १? हे गोपियो ! मालान के जे कानन में कुण्डल हैं तिगमूं शोभायमान भयो हैं आनन्द जाके ऐसी वलदेव भय्या सहित कृष्ण सप्त विश्वको आनन्द देकै वासुरी के शब्द सों पूर्ण करे ता समय या महां कृष्णको अपराध न होय ऐसे मेघ मनमें शका मानिके मन्द मन्द गरजे हैं और अपने मित्र श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर फूल वर्षावैं हैं छत्र करिके छाया करे हैं सो वह मेघ याको सांचो मित्र है यह सामरो है १२। १३ हे यशोदा ! अनेक प्रकार के गोपनके खेलन में निपुण ऐसी तुम्हारी पुत्र अधार के ऊपर वासुरी कों धरिके आपसे आपही सीखे ऐसे पढ़ज निपाद ऋषभ गान्धार कूं आदिले के स्वर हैं तिनके आलापये के भेद उठात भयो ता समय इन्द्र महादेव ब्रह्मा ये हैं मुख्य जिनमें ऐसे बुद्धिमान देवता हैं ते मन्द मय्यतारसूं वासुरी कों सुनिके मोहित

लैरलघुगीतमभीष्टमाद्रियन्यहिंसन्धितवेणुः १० सरसिसारसहंसविहङ्गाश्चारुगीतहृतचेतसपत्य ॥ हरिमुपासतेयतचित्ताहन्तमीलितदृशोद्युतमौनाः ११ सहवलःस्रगवतंसविलासःसानुषुक्षितिश्रुतोब्रजदेव्यः ॥ हर्षयन्यहिवेणुखेणजातहर्षउपरम्भतिविश्वम् १२ महदतिकमणशङ्कितचेतामन्दमन्दमनुगजर्जतिमेघः ॥ मुहुदमभयवर्षसुमनोभिश्रद्धाययाचिविदधत्पतपत्रम् १३ विविधगोपरसेपुविदग्धवेणुवाद्यउरुथानिजशिक्षाः ॥ तवसुतःसतियदाधरात्रिभवेदत्तेवेणु रनयत्स्वरजातीः १४ सवनशस्तदुपधाव्यसुरेशाःशक्रशर्वपरमेष्ठिपुरोगाः ॥ कवयआनतकन्धरचित्ताःकश्मलंययुरनिश्चिततत्त्वाः १५ निजपदाञ्जलैर्ध्वजवज्रनीरजाङ्कुशविचित्रललाभैः ॥ ब्रजभुवशमयनखुरतोदं वर्ष्मधुश्रृंगतिरीडितवेणुः १६ ब्रजतिनेनवयंसविलासवीक्षणार्पिनमनोभववेगाः ॥ कुजगतिगमितानविदामःकश्मलेनकवंचसन्वा १७ माणधरःक्वचिदागणयन्गामालयादयितगन्धतुलस्याः ॥ भणयिनोऽनुचरस्यकदाऽसे प्रक्षिपन्सुजमगा यतयत्र १८ क्वाणितवेणुखवक्षितचित्ताः कृष्णमन्वसतकृष्णशुहिरयः ॥ गुणगणार्थमनुगत्यहरियोगोपिकाइवविमुक्तगृहाशाः १९ कुन्ददामकृतकौतु

होतभये नीचैको नारिलचायके कौन स्वरकूं गावैं है ऐसे निश्चय नहीं करिसेकैं हैं १४। १५ ध्वजा वज्र कमल शंकुश इनके चित्रविचित्र चिह्न जिनमें ऐसे अपने चरणकमल करिके ब्रजभूमिको गोवनके खुर परे ते जो खेद है ताकूं शान्त करतभये मतवारे हाथीकी तुल्य जाकी चलनि ऐसी कृष्ण वासुरीको वजायके जा समय चले हैं ता समय विलासपूर्वक चितवनि सूं राखे हैं कामदेवको वेग जिनमें ऐसी हम दृक्जनकी तुल्य जड़ होयके हमकूं चोटीकी सुधि न रही और वस्त्रनकी सुधि न रही १६। १७ प्यारी है सुगन्धि जाकी ऐसी तुलसीकी मालाकूं धरे मणिनकी सुमिरनी हाथमें लैके गोवन को गिनत प्यारे गिन के कनगपै हाथ धरिके जा समय गावैं हैं और वजी जो चांसुरी ताकी देर सुनि के चित्त जिनके हरिगये ऐसी हरिणनकी स्त्री हरिणी ते गुणनको समुद्र जो कृष्णचन्द्र ताके पास आयके गोपीन की तुल्य घरकी आशान कूं त्यागिके सेवन करतभई १८। १९ हे यशोदे ! गोपीन के आनन्द देवे के लिये कुन्दकी मालानसूं आनन्दपूर्वक शृङ्गार जाने किये स्नेहीन के

आनन्दकूँ देनवारो यह तेरो पुत्र नन्दकुमार गोप गौवन कूँ संगलैके जा समय यमुना में विहार करे है ता समय चन्दन की सी सुगन्धि जाँमें आवै शीतल जाँमें स्पर्श है तासों श्रीकृष्णचन्द्र को सन्मान करत अतुल्य मन्द पवन चले है गन्धर्व्यादिक वन्दीजननकीसी नाई वाजे वजावत गायके फूलनकी वर्षा करिके सेवन करतभये २०।२१ वृजकों गौवनकों हितको करनवारो इन्द्रने जब वर्षाकरी तब गोवर्द्धन उठायके रत्नाकरी वडे वडे ब्रह्मादिक आथके चरणन में प्रणाम करै ऐसो कृष्ण सन्ध्यासमय सब गौवनकों एकत्र करिके मित्र जाके यशकों गावैं ऐसो कृष्ण वांसुरी कूँ वजावत अपभरी शोभा सों आनन्द देत गौवनकी रज जाकी माला में छाथरही चन्द्रमाकी तुल्य प्रकाशमान ऐसो यह देवकी के उदरमें प्रकटभयो जो कृष्ण सो हमारे मनोरथ देवे के लिये आवै है २२। २३ कछु एक मन्द मन्द नेत्र जिनके घूमें अपने स्नेहीन कों मानको देनवारो वनमाला कूँ पहिरे पके बेरकीसी नाई पांडु जाको मुख कुण्डलनकी कान्ति सूं कोमल कपोलन कूँ शोभाय-

कवेपोगोपगोधनवृतोयमुनायाम् ॥ नन्दसूनुनघेतवत्सोनर्मदःपूणयिनाविजहार २० मन्दवायुनुवात्यनुकूलं मानयन्मलयजस्पर्शेन ॥ वन्दिनस्त  
मुपदेवगणायै वाद्यगीतबलिभिःपरिवृष्टः २१ वत्सलोब्रजगवांयदगध्रोवन्द्यमानचरणःपथिवृद्धैः ॥ कृत्स्नगोधनमुपोह्यदिनान्तेगीतवेणुनुगेडितकीर्त्तिः  
२२ उत्सवंश्रमरुचाऽपिदृशीनामुन्नयन्खुरजश्छुरितस्रक् ॥ दित्सयैतिसुहृदाशिपप देवकीजठरभूरुराजः २३ मदविघूर्णितलोचनइप्समानदःस्वसु  
हृदांवनमाली ॥ बदरपाण्डुवदनोमृडगण्डं मण्डयन्कनककुण्डलक्षम्या २४ यदुपतिर्द्विरदराजविहारोयामिनीपतिरिवैपदिनान्ते ॥ सुदितवक्त्रउपया  
तिदुरन्तं मोचयन्ब्रजगवांन्दिनतापम् २५ श्रीशुकउवाच ॥ एवंब्रजस्त्रियोरान् कृष्णलीलानुगायतीः ॥ रेमिरेऽहस्सुतच्चित्तास्तन्मनस्क्रामहोदयाः २६  
इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेवृन्दावनक्रीडायांगोपिकायुगलगीतनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥ ॥ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथतर्ह्यागतोगोष्ठमरिष्टोद्विष्टपभासुरः ॥ महींमहाककुत्कायः कम्पयन्खुराविक्षताम् १ रम्भमाणःखतरं पदाचविलिखन्महीम् ॥ उद्य  
मान करत मतवारै हाथी के सो जाको विहार प्रसन्न जाको मुख ऐसो यह यादवन को पति श्रीकृष्णचन्द्र सन्ध्यासमय जैसे चन्द्रपा उदय होयहै तैसे ब्रजकी गौ हम हैं वड़ो जो दिन को ताप है  
ताय दूर करत आवै हैं २४। २५ अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र में है जीवन जिनकों और बड़े हैं उत्सव जिनके ऐसे ब्रजकी स्त्री श्रीकृष्णकी लीलान को  
गाय गाय के दिनन को धितावत भई २६ ॥ इति श्रीमन्महाभागवततार्थरूपिण्यादंशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेवृन्दावनक्रीडायांगोपिकायुगलगीतनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥ \* ॥ \* ॥  
( पट्टनिशेतुहतेऽरिष्टे नारदोक्त्यावलाच्युतौ ॥ वसुदेवसुतौज्ञात्वा कंसोऽक्रूरं समादिशत् १ गोपीरासान्तरायां नतं शङ्खचूडं निहत्य स ॥ अहन् गोपीमहानन्दासहदुष्टमरिष्टकम् २ छत्तीसवें अध्याय  
में अरिष्टासुर के मारेजाने में कंस नारदजी के कहने सूं बलदेव और कृष्णजी को वसुदेवजी के पुत्र जानकर अक्रूरजी को आज्ञा देताभया १ कृष्णजी गोपियों के रासके भीतर आयैहुये शङ्खचूड  
को मारकर गोपियों के वड़े आनन्दके न सहनेवाले अरिष्टासुरको भी मार डालतेभये २ ) श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार देवता गन्धर्व्यादिक गावैं नृत्य करें वाजेनकों बजावैं

फूलनकी वर्षा जिनके ऊपर करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र काँ आये देखिके परमउत्सव भयो याके पीछे ताही सपय व्रजमें बैल को रूप धरिके अरिष्टासुर आवतभयो वड़ो है ठाट और देह जाको खुरनसूं खोदी जो पृथ्वी ताकूं केपावे है ? बहुत रम्याय है पूछ उठाय के खेतनकी मेहन को सींग के अग्र सूं खोदे है २ बीच बीच में गोबर करत जाय मूत्र करत जाय है भयानक जाकी आँखि है राजन् परीक्षित ! अरिष्टासुर के रम्यायने को कठोर शब्द सुनिके गौवन के छीन के बिना समय गर्भ गिरिपरे डरकेमारे पतन होयगये जाके ठाट के ऊपर पर्वत मानि के मेघ आय बैठे हैं तीक्ष्ण पंने जाके सींग ऐसे अरिष्टासुरको देखिके सम्पूर्ण गोप और गोपी भयकेमारे डरपतभये है राजन् परीक्षित ! पशु खिरकन कूं कोडिके डरकेमारे भाजत भये ३।४।५ है कृष्ण ! ऐसे पुकारतभये समस्तव्रजवासी गोविन्दकी शरण आवतभये याके पीछे गोकुलवासीनकाँ भयकेमारे भजते देखिके ६ भति भय डरो याप्रकार सावधान करत अरिष्टासुरको अपने पास डुला-

म्यपुच्छं वपाणि विषाणाग्रेण चोद्धरन् २ किञ्चित्किञ्चिच्छृणुन्मन्त्रयन्स्तब्धलोचनः ॥ यस्यनिर्ह्रादितेनाङ्गनिष्ठेण गवांनुणाम् ३ पतन्त्यकालतो गर्भाः सन्नतिस्मभयेन वै ॥ निर्विशन्ति घनायस्य ककुच्चलशङ्कया ४ तन्तीक्ष्णशृङ्गमुद्रीक्ष्य गोप्योगोपाश्रयतन्मः ॥ पशवोऽदुद्रुवर्भीता राजन्सन्त्यज्यगोकुलम् ५ कृष्णकृष्णेति ते सव्वर्गे विन्दंशरणं युयुः ॥ भगवानपितद्वीक्ष्य गोकुलं भयविदुतम् ६ माभैष्टेति गिरास्वास्य वृपासुरमुपाह्वयत् ॥ गोपालैः पशुभिर्मन्दन्नासितैः किमसत्तम ७ वलदर्पहाऽहं दुष्टानां त्वद्धिधानां दुरात्मनाम् ॥ इत्यास्फोट्याच्युनोऽरिष्टं तलशब्देन कोपयन् न सख्युरंसे भुजभोगं प्रसार्यावस्थितो हरिः ॥ सोऽप्येवं कोपितोऽरिष्टः खुरेणावनिमुल्लिखन् ॥ उद्यत्पुच्छभ्रमन्मेघः क्रुद्धः कृष्णमुपाद्रवत् ८ अग्रन्यस्त विपाणाग्रः स्तब्धामृगलोचनोऽज्युतम् ॥ कटाक्षिप्याद्रवचूर्णमिन्द्रमुक्त्वाऽशनिर्यथा १० गृहीत्वा भृङ्गयोस्नञ्ज अष्टादशपदानिसः ॥ प्रत्यपोवाह भगवान् गजः प्रतिगजं यथा ११ सो पविद्धो भगवता पुनरुत्थाय सत्वरः ॥ अपतत्स्विन्नसर्वाङ्गो निःश्वसन् क्रोधमूर्च्छितः १२ तमापतन्तं सनिगृह्य भृङ्गयोः पदासमाक्रम्य निपात्य भूवले ॥ नि

वन भये है मूर्ख ! हे असाधु ! ग्वाल गौवन के डरपावन ते तो काँ कहा होयगो ७ दुष्ट हैं मन जिनके ऐसे तो सारिखे दुष्टनको वल और मद दूरिकरोहो या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र स्वम् ठाँकि के अरिष्टासुर कूं क्रोध करायके मित्र के कन्या पै सर्प के आकार भुजा है ताकू पसारिके ठाढ़ होतभये या प्रकार क्रोध जाको करायो ऐसे अरिष्टासुर खुरन ते धरती कूं खोदत पूछ उठायके वादरन कू इत उत करिके क्रोधकरिके श्रीकृष्णचन्द्र के पास आवतभयो न ९ आगे कूं सींग जाने वरिलिये पल न जिनमें न लगे ऐसी लाल लाल जाकी आँखें ऐसी जो अरिष्टासुर है सो श्रीकृष्णकी ओर वटाका सूं तिरखो देखिके इन्द्रको छोड़ो वज्र जैसे तैसे जलदी आवतभयो १० भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अरिष्टासुरके सींग पकरिके जैसे हार्थीकाँ हार्थी धक्का देड है ऐसे अठारद्वार उलटे पावन धकावत भये ११ भगवान् श्रीकृष्णने अरिष्टासुरकाँ ढकेलि दियो तब फेर डठिके पसीना जाके श्रयण गयो क्रोधमूर्च्छित होयके उड़े रंझास कूं लेत दौरिके आवतभयो १२ श्रीकृष्ण आयो जो अरिष्टासुर है ताके सींग पकरिके पृथ्वी पै पकारतभये पावते छाती दाविके जैसे गीले कपड़ा काँ निचोरे है तैसे उमेठिके सींग उलारिके मारत भये अरिष्टासुर गिरत भयो चलायमान हैं नेन जाके

ऐसो अरिष्टासुर रुधिर कौ वपन करत मूत्र गोवर करत पौवन कूं पटकत कष्टते मरतभयो देवता श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर फूल वर्षाय के स्तुति करतभये १३।१४ या प्रकार अरिष्टासुर कूं मारिके जाति के मित्रन ने स्तुतिकरी तव गोपीन के नेत्रन कूं आनन्द देनवारै श्रीकृष्णचन्द्र वज्रमें आवतभये १५ अद्भुत जिनके कर्म ऐसे श्रीकृष्णने अरिष्टासुर मारो तव देवता केसो जिनके ज्ञान ऐसे भगवान् नारदजी कंसते जाय के कहतभये १६ यशोदा के कन्याभई है और देवकीके कृष्ण भयोहै बलदेव रोहिणी के पुत्रहैं तेरे भयके मारे वसुदेवजी अपने मित्र नन्दजीके घर रातों रात पहुँचाय आयै है और तैने भेजे ने सब दैत्य कृष्ण बलदेव ने मारे यह वचन नारदजी को श्रवण करिके कंस कोपसूं विकल इन्द्रिय होतभयो १७।१८ ऐसो कंस वसुदेव के मारिवे के लिये पैनी तरवार लेत भयो तव नारदजी मने करतभये और तिन वसुदेवजी के पुत्र कृष्ण बलदेव ते अपनी मृत्यु जानिके देवकी सहित वसुदेव के पौवनमें वेड़ी डारतभयो इतनी वात कहिके नारदजी जब गये तब कंस

बपीडयामासयथार्द्रमम्बरकृत्वाविपाणेनजघानसोऽपतत् १३ असृग्वमचमूत्रशकृत्समुत्सृजन् क्षिपंश्चपादाननवस्थितेक्षणः ॥ जगामकृच्छ्रंनिर्जृतेरथक्ष यं पुष्पैःकिरन्तोहरिमीडिरेसुराः १४ एवंककुब्जिनंहत्वा स्तूयमानःस्वजातिभिः ॥ विवेशगोष्ठसत्रलो गोपीनानयनोत्सवः १५ अरिष्टेनिहतैर्देत्येकृष्णे नाद्भुतकर्भणा ॥ कंसायाथाहभगवान्नारदोदेवदर्शनः १६ यशोदायाःसुतांकन्यां देवक्याःकृष्णमेवच ॥ रामश्चरोहिणीपुत्रं वसुदेवेनविभ्यता १७ न्यस्तौस्वमित्रेनन्देवै याभ्यान्तेपुरुषाहताः ॥ निशम्यतद्भोजपतिः कोपात्प्रचलितेन्द्रियः १८ निशातमसिमादत्तवसुदेवजिघांसाया ॥ निवारितोनारदेनतत्सुतौमृत्युमात्मनः १९ ज्ञात्वालोहमयैःपार्श्वैर्वन्धसहभार्यया ॥ प्रतियातेतुदेवपार्श्वकंसआभाष्यकोशिनम् २० प्रेयामासहन्येतां भवतारामकेशवौ ॥ ततोमुष्टिकचाणूरशलतोशलकादिकान् २१ अमात्यान्हस्तिपंश्चैव समाह्वयाहभोजराट् ॥ भोभोनिशम्यतामेतद्वीरचाणूरमुष्टिकौ २२ नन्दब्रजेकिला साते सुतात्रानकदुःखे ॥ रामकृष्णौततोमह्यं मृत्युःकिलनिदर्शितः २३ भवद्भयामिहसंप्राप्तौ हन्येतांमल्ललीलया ॥ मञ्चाःक्रियन्तांविविधामल्लरङ्गपरिश्रिताः ॥ पौराजानपदाःसर्वे पश्यन्तुस्वैरसंयुगम् २४ महामात्रत्वयाभद्रङ्गद्वार्युपनीयताम् ॥ द्विपःकुवलयपीडोजहितेनममाहितौ २५ आरभ्यतांभनु

केशीकूं बुलाय के भेजतभयो और राम कृष्णकौ तू मारि आउ यह कहत भयो ता पीछे मुष्टिक चाणूर शल तोशल आदि लैके जे मल्लहैं तिनैं बुलाय के और मंत्रीन कूं बुलाय के और हाथीन के महावतनकूं बुलायके भोजवंशीनको राजा कंस बोलतभयो दे वीर ! हे चाणूर ! हे मुष्टिक ! यह मेरी वात श्रवण करो १६।२०।२१।२२ नन्दके गोकुल में वसुदेव के पुत्र कृष्ण बलदेव रहे हैं उनते विधाता नारदजीने मेरी निश्चय मृत्यु बताई है २३ ये जव आवैं ता समय पावनसूं दाविके मल्ललीला करिके मारि डारियो और मछन की जो रंगभूमि है तामें अनेकप्रकार के मंचानन कूं बनावो पुरवासी और देशवासी सम्पूर्ण तिनपै वैठिके मछनकी कुश्ती देखेगे २४ हे महावत ! मङ्गलरूप कुवल्यापीडु हाथी कूं रंगभूमि के दरवाजे पै ठाढ़ो करदेउ मेरे वैरी कृष्ण बलदेव आवैं तव उनें कुवल्यापीडु हाथी पै परचाय डारियो और चतुर्दशी के दिन विधिपूर्वक धनुर्यज्ञकी तयारी करो और सम्पूर्ण कामनान के पूर्ण करनवारै महादेवजी के पूजन के लिये पवित्र पवित्र

पशु पारिके लावो २५ । २६ अपने अर्थके तत्त्वको जाननवारो कंस अपने दहलुआनकुं या प्रकार आज्ञादेके और यादवनमें श्रेष्ठ जो अक्रूर हैं तिनैं तुनायके हाथ भू हाथ पकरिके यह कहतयो २७ हे दानपति अक्रूर ! तुम एक मेरो मित्रताको कार्य्य करो या समय भोजवशी यादवनमें और कोई तुम ते सिवाय आदरसहित अविशय करिके हितको करनवारो नहीं है २८ वहे कार्य्य के करनवारि साधु अक्रूर तुमहो तिनको मैंने आश्रय लीनो है जैसे इन्द्र विष्णु सो आश्रय लैंके अपने मनोरथकू पायगयो २९ अब तुम नन्दके व्रजकों जावो ता नन्दके व्रजमें वसुदेव के पुत्र रहे हैं तिनैं या रथ में बैठारिके शीघ्रही लैआवो ३० विष्णुको आश्रय लैंके देवताने मेरे मारिके लिये कृष्ण बलदेव प्रकट करे हैं नन्दते आदिलैंके सम्पूर्ण व्रजवासीनसहित कृष्ण बलदेवको यहा लेआवो और कहियो कि राजा कंसको चलि के बैठदेआवो ३१ यहा लिवायके लावोगे तब कालकी तुल्य कुवलयापीढ़ हाथी पै घात कराँजेंगे हाथीते वदाचि वछटि जायेंगे तो विजली

यागश्चतुर्दश्यांगयाविनि ॥ विशसन्तुपशून्मेध्यान् भूतराजायमीदुपे २६ इत्याज्ञाप्यार्थतन्त्रज्ञ आहूयगुहपुत्रम् ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिततोऽक्रूः सुवा चह २७ भोभोदानपतेमहं क्रियतामैत्रमाहृतः ॥ नान्यस्वत्तोहिततमोविद्यतेभोजवृष्णिषु २८ अतस्त्वामाश्रितःसौम्य कार्य्यगौरवसाधनम् ॥ यथेन्द्रो विष्णुमाश्रित्य स्वार्थमध्यगमद्विभुः २९ गच्छनन्दव्रजंतत्र सुतावानकहुदुभेः ॥ आसतेताविहानेन रथेनानयमाचिरम् ३० निमृष्टः किलमेष्टुदेवैर्वैकुण्ठ संश्रयैः ॥ तावानयसंगोपैर्नन्दाद्यैः साभ्युपायनैः ३१ घातयिष्यइहानीतौकालकल्पेनहस्तिना ॥ यदिमुक्तांततो गल्लैर्घातयेद्युनोपमैः ३२ तयोर्निह तयोस्तसाञ् वसुदेवपुरोगमान् ॥ तद्वन्धून्विहनिष्यामि वृष्णिभोजदशार्हकान् ३३ उग्रसेनश्चपितरं स्थविरंराज्य कामुकम् ॥ तद्भ्रातरं देवकश्चैत्रान्योविद्वि पोमम ३४ ततश्चैवागहीमिन्न भवित्रीनष्टकण्टका ॥ जरासन्धोममगुरुर्द्विविदोदयितः सखा ३५ शम्बरोनरकोचाणो मथ्येवकृन्सौहृदाः ॥ तैरहं सुरपक्षीयान् हृत्वाभोक्ष्येमर्हीनुपान् ३६ एतज्ज्ञात्वा नयक्षिप्रं रामकृष्णविहा र्भको ॥ धनुर्मखनिरीक्षाऽर्थदंष्ट्रगुहपुराश्रयम् ३७ अक्रूर उवाच ॥ राजन्मनीषितंसम्यक्कुन

तुल्य जे मल्ल तिनपै घात कराँजेंगे ३२ कृष्ण बलदेव जासमय हत होय जायेंगे तब उनके दुःखके मारे व्याकुल ऐसे वसुदेव तैं लेके तिनके भय्या बन्धूनकुं मरवाँजेंगे और वृष्णि भोज दशाह वंश में भये जे यादव तिन सबको मरवाँजेंगे ३३ और उग्रसेन मेरो वृद्धपिता है तो भी जाके राज्य नी चाहना है याहू कुं मरवाँजेंगे और ताके भय्या देवककों और मेरे वैरी जितने हैं तिनकों सबको मरवाँजेंगे ३४ ताके पीछे हे मित्र अक्रूर ! यह पृथ्वी कण्टकरहित होयगी जरासन्ध है सो मेरो श्वशुर है द्विविद मेरो प्यारो मित्र है ३५ शम्बरसुर नरकासुर घाणासुर इनने भोमें स्नेह क्रियो है इनकों संग लेके देवतानकी ओर के राजा हैं तिनकुं मारिके पृथ्वी को भोग करुगो यह बात अपने मनमें जानिके राम कृष्ण बालकन को यहाँ शीघ्र लिवाय आवो वहाँ जायके यह कहियो माया धनुर्बल करे हैं ताकुं चलि के देखिआवो यादवनको पुर मथुरा है ताकी शोभा देखि आवो ३६ ३७ यह वचन राजा कंसको श्रवण करिके अक्रूरजी बोने हे राजन् कंस ! तुमने भलो



विचारो है तुम्हारी मृत्युको दूर करनेबारे यह उपाय है परन्तु होने और न होनेमें मनुष्य समता करे देव जो प्रारब्ध है सोही फल को दाता है ३८ यह पुरुष देव करिके इत जो मनोरथ है तिनकुं  
ऐसे कहिके करे है जो मनोरथ पूर्ण होयजाय तब तो मन में हर्ष माने है न होय तब शोक करे है यामें कहा ध्वनि निवसी कि तुम कहोहौं कृष्ण बलदेव कौं मर्याङ्गो न जाने वेई तुमको मारे  
तथापि तुम्हारी आज्ञा करुंगो ३९ या प्रकार राजा कंस अक्रूर कौं आज्ञादेके भंतिनको छोड़िके महलमें जातभयो तैसे अक्रूर अपने घर जातभये ४० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिएयादश-  
मस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरसम्पेपणनामपट्विंशोऽध्यायः ३६ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

( सप्तत्रिंशेहेतुकेशिष्यच्युतो भाविकर्मभिः ॥ नारदेनस्तुतः क्रीडन् व्योमासुरमथावधीत् ॥ दृपवेपासुरयद्रत्नेकिंशिनहयवेपिणम् ॥ कंसप्राणसंहत्वा कंसं व्यसुभिगक्रोत् २ सैतीसर्वे आध्याय में  
वस्वावद्यमार्जनम् ॥ सिद्ध्यसिद्ध्योः समंकुर्याद्वै बहिफलसाधनम् ३८ मनोरथान्करोत्युच्चैर्जनौ देवहतानपि ॥ युज्यते हर्षशोकाभ्यां तथाऽप्याज्ञां करोमिति  
३९ श्रीशुक उवाच ॥ एवमादिश्य चाक्रूरं मन्त्रिणश्च विमृज्य सः ॥ प्रविवेश गृहं कंसस्तथाऽक्रूरः स्वमालयम् ४० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे  
पूर्वार्द्धेऽक्रूरसम्पेपणनाम पट्विंशोऽध्यायः ३६ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

श्रीशुक उवाच ॥ केशीतु कंसप्रहितः खुरैर्महीं महाहयो निर्जस्यन्मनोजवः ॥ सदा बधूनाश्च विमानसंकुलं कुर्वन्न मोद्रे पि न भीषिताखिलः १ तंत्रासयन्तं भग  
वानस्य गोकुलं तद्ध्रेपितैर्बलि विघ्नैर्णिताम्बुदम् ॥ आत्मानमाजौ मृगयन्त मग्नरीरुपाह्वयराव्यनदन्मृगेन्द्रवत् २ सन्तानि शाभ्यामिमुखो मुखेन खं पिवन्निवा  
भ्यद्रवदत्यमर्षणः ॥ जघान पद्भ्यामग्निवन्दलान्नन्दुरासदरचण्डजवोदुरत्ययः ३ तद्वञ्चयित्वा तमवोक्षजोरुषाप्रगृह्यदोभ्यां परि विच्छिपादयोः ॥ सावज्ञमुत्सृज्य  
धनुःशतान्तरं यथोरागार्थं सुतोव्यवस्थितः ४ सलवधसंज्ञं गुनरुत्थितोरुषाव्यादाय केशीतरसाऽपतच्छरिम् ॥ सोऽप्यस्य वक्रैर्भुजमुत्तरं स्मयन् प्रवेशयामा

कृष्णभी केशीराजस के मोरेजाने में नारदजी से स्तुति को प्राप्त होकर व्योमासुर को मारते भये १ चैलके वेपवाले केशीराजस कंस के भाणके तुल्य भिन्नको  
कृष्णजी मारकर कंसको भाणरहितकी नाई करदेते भये २ ) अथ श्रीशुकदेवजी केहे है राजन् परीक्षित ! मनहू ते है अधिक वेग जाको ऐसो कंसको पठायो केशी दैत्य वडे घोड़ाको रूपधरिके  
टापन तें पृथ्वी कूं लोदत फुरहरी लैक कन्वाके ऊपर वारन सँ आकाश में इत उत विमानन कौं चलायमान करत आवतभयो हीसने मेंही समस्त विश्व जाने डरपायो है कटोर होसनसूं गौवन  
के समूहन कौं भय जाने करयो पुच्छ हलाय वादर जाने चलायमान किये युद्ध करिवे कूं श्रीकृष्णचन्द्र कूं हूँ ऐसे केशी दैत्यको भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र आगे निकसिके अपने पास बुलावतभये तय  
श्रीकृष्ण कूं देखिके सिंहकी तुल्य शब्द करनभयो १ । २ केशी श्रीकृष्णको देखिके मुख सँ मानों आकाशकूं पीजायगो ऐसे मुखको फारिके सम्मुख दौरिके आवत भयो कोई जाको जीति न सके  
वडो जो के वेग महादुराग करिके जीत्यो जाय ऐसो केशीदैत्य कमलदललोचन भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके पिछिले पावनकी दुलत्ती मारतभयो ३ इन्द्रियनका जिनमें पहुँच नहीं ऐसे भगवान् श्री

कृष्णचन्द्र ता दैत्यकी दुलची वचायके क्रीधकरि हाथनसों वार्के दोनों पाँव पकरिके घब्र पन्न फिरायके जैसे गरुड सर्पकुं फँकि देयहै ऐसे भवहा करिके सौ धनुषपर फँकि के ठाढ़े होतभये ४ जब चेत जाको भयो ऐसो केशी दैत्य फेरि उठिके मुख फारिके क्रोधयुक्त दोरिके श्रीकृष्णके पास आवत भयो तब कृष्णजी उसके मुँहमें हँसकर वायें भुजाकों इसप्रकार प्रवेश करदेतेभये जैसे विल में साप प्रवेश करजाता है ५ जैसे तप्त लोहखगे तें जरे है ऐसे भगवान्की भुजालगे ते केशी के दात उखरि के गिरतभयेऔपव न करनेसे जैसे जलनयरोग उदर में उढ़े है ऐसे केशी के उदरमें श्रीकृष्णचन्द्रकी भुजा फूलतभई ६ केशी के उदर में फूली जो श्रीकृष्णकी भुजाहै तासों श्वास जाको रुकिगयो अङ्ग में पसीना जाके आयगयो नेत्रन के तारे निकसिआये ऐसो केशी पोवन को पटकत लीदकरत प्राणरहित होयके पृथ्वीमें गिरतभयो ७ पत्नी ककरीकी तुल्य विदीर्ण और प्राण जाके निकसिगये ऐसो जो केशी को देह ताते बढ़ी है भुजा जावी ऐसे श्रीकृष्ण अपनी भुजा कुं निकासिके गर्व जिनके नहीं बिना परिश्रपही शत्रु जिनने मारथो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर पुष्पनकी वर्षा करिके आश्चर्य मानिके देवता स्तुति करत भये ८ श्रीशुकदेवजी कहे

समथोरंगविले ५ दन्तानिपेतुर्भगवद्भुजस्पृशस्तेकेशिनस्तप्तमयःस्पृशोयथा ॥ बाहुश्चतदेहगतोमहात्मनोयथाऽऽमयःसंववृधेउपेक्षिनः ६ समधमानेनसक्तु  
ष्णवाहुना निरुद्धवायुश्चरणंश्चविक्षिपन् ॥ प्रस्विन्नगात्रःपरिवृत्तलोचनःपातलेरुडंयमृजन्क्षितौव्यसुः ७ तदेहतःकर्कटिकाफलोपमाद्व्यसोरपाकृष्यमु  
जंमहाभुजः ॥ अविस्मिनोऽयत्नहतारिस्तमयैःप्रसूनवर्षेदिविपद्मिरीडितः ८ देवर्षिरुपसंगम्य भागवतप्रवरानुप ॥ कृष्णमक्लिष्टकर्माणं रहस्येतदभापत ९  
कृष्णदृष्णाभमेयात्मन् योगेशजगदीश्वर ॥ वासुदेवाखिलावास सात्वतांप्रवरप्रभो १० त्वमात्मासर्वभूतानामेकोज्योतिरिवैधसाम् ॥ गूढोगुहाशयःसा  
क्षी महापुरुषईश्वरः ११ आत्मनात्माश्रयःपूठ्वं माययासमृजेगुणान् ॥ तैरिदंस्तत्पमङ्गलपः मृजस्यत्स्यवसीश्वरः १२ सत्त्वंभूधग्भूतानां दैत्यप्रमथरक्षमा  
म् ॥ अवतीर्णोविनाशाय सेतूनारंक्षाणाय च १३ दिष्ट्यातेनिहतोदैत्योलिलयाऽयंहयाकृतिः ॥ यस्यह्रेषिनसंज्ञस्तास्त्यजन्त्यनिमिषादिवम् १४ चाणूरं

है हे राजन् परीक्षित् ! भक्तनमें श्रेष्ठ श्रीनारदजी केशरहित हैं कर्म जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के पास आयके एकान्त में यह कहत भये ९ हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे अपमेयात्मन् अर्थात् नहीं प्रमाय करिचे में आवै है स्वरूप जिनको ऐसे योगके ईश ! हे जगत् के ईश्वर ! हे वासुदेव ! हे अखिलावास अर्थात् सबके आश्रय ! हे सात्वतामन्वर अर्थात् सव यादवनमें श्रेष्ठ ! हे प्रभो ! १० जैसे काष्ठनमें ज्योति तैसे सब प्राणीन में व्यापक गूढ अर्थात् सब में रहो हो परन्तु उनको दिखाई नहीं देउहो क्यों बुद्धिके परेहो साक्षीहो स्वरूप देखिचे में नहीं आवै है महापुरुष ईश्वरहो ११ मैं ईश्वर हूँ और सब मेरे वशहैं यह काहे ते तहा नारदजी कहे हैं अपने अग्नीन जो तुमहों सो प्रथम माया करिके सत्त्व रज तम इन गुणन कुं उत्पन्न करिके सम्पूर्ण विदम को उत्पन्न करो हो पालन और संहार करो हो और फेर वैसे हो सत्यरङ्गल्य अर्थात् काहू साधन की अपेक्षा नहीं है या कारण तुमहों ईश्वरहो १२ सो तुम राजारूप जो दैत्य राजस हैं तिनके नाश करिचे के लिये और धर्म मर्यादानकी रक्षा करिचे के लिये अवतार लियो है १३ घोड़ा के रूपको धारिके यह दैत्य आयो सो लीला करिके तुगने मारथो यह बड़ो मझल भयो जाके हींसन को शब्द सुनिके भयके मारे

देवता स्वर्ग कृत्यागिदेह हैं १४ हे विभो अर्थात् समर्थ ! परसों के दिन तुम्हारे हाथन ते चाणूर मुष्टिफ हाथी कों बंसकों मारो ऐसो देखोगो १५ ता अंसके मरे पीछे शंखासुर कालायचन मुरदैत्य नरकासुर इनको बध देखोगो स्वर्ग में ते इन्द्रकू जीतिके कल्पवृक्ष कों लावोगे ताय देखोगो १६ अपनो पराक्रम मोलदेके राजानकी कृत्यानकों व्याहोगे सो देखोगो हे जगत् के पति ! द्वारका में जायके दृगराजा कों पाप मूं छुड़ावोगे सो देखोगो १७ जाम्बवती सी व्याहिके स्पमन्तकर्मणि कूं दायजेमें लावोगे सो देखोगो सादीपनि गुल्के अपने दामते मरे पुत्र सजीव लायके देउगे सो देखोगो १८ मिथ्यावासुदेव को मारिके काशीपुत्री को जरावोगे दन्तवक्र कों मारोगे राजा युमिष्ठिर के यज्ञ में शिशुपाल को मारोगे ताय में देखोगो १९ द्वारकावास करिके जे जे लीला करोगे तिन लीलानकों कबीरवर पृथ्वी में गावोगे सो सब हम देखेंगे २० याके पीछे कालरूप तुम या पृथ्वी को बोझ उतारिबे के लिये अर्जुन के स्थवान् होयके सैन्यान कूं मारोगे

मुष्टिकनैव मल्लानन्यांश्च हस्तिनम् ॥ कंसंच निहतं द्रक्ष्ये परश्वोऽहनि ते विभो १५ तस्यानुशङ्खयवनमुराणां नरकस्य च ॥ पारिजातापहरणमिन्द्रस्य च पराजयम् १६ उद्धाहं वीरकृत्यानां वीर्यशुल्कादिलक्षणम् ॥ नृगस्य गोक्षेपं पापाद्द्वारकायां जगत्पते १७ स्यमन्तकस्य च मणेरानसहभार्यया ॥ मृतपुत्रप्रदानं च ब्राह्मणस्य समधामतः १८ पौरुड्गस्य वधं पश्चात्काशियुर्याश्च दीपनम् ॥ दन्तवक्रस्य निधनञ्चैद्यस्य च महाक्रतौ १९ यानि चान्यानि वीर्याणि द्वारकामावसम्भवाच्च ॥ कर्त्ता द्रक्ष्याम्यहं तानि गेयानि कविभिर्भुवि २० अथ ते कालरूपस्य क्षपयिष्णोः सुष्यवै ॥ अक्षौहिणीनां निधनं द्रक्ष्याम्यर्जुन सारथे २१ विशुद्धविज्ञानघनं स्वसंस्थया समासमवर्धार्थमोषवाञ्छितम् ॥ स्वतेजसा नित्यनिवृत्तमायागुणप्रवाहं भगवन्तमीमहि २२ त्वामीश्वरं स्वाश्रयमात्ममायया विनिर्भिताशेषविशेषरूपनम् ॥ क्रीडाऽर्थमद्यात्तमुष्यविग्रहं न तोऽस्मिं यदुष्टिण सात्वताम् २३ श्रीशुक उवाच ॥ एवं यदुष्टिं कृष्णं भागवतप्रवरो मुनिः ॥ प्रणिपरयाभ्यनुज्ञातो ययौ न दर्शनोत्तमवः २४ भगवानपि गोविन्दो हत्वा कोशिनमाहवे ॥ पशूनपालयत्पालैः प्रीतैर्व्रजसुखावहः २५ एकदा ते प

ताय देखेंगे २१ केवल ज्ञानही है एक मूर्ति जिनकी याही ने स्वरूपानन्द सम्भक्कफार सूं प्राप्त भये है मनोरथ जिनके फलसहित है इच्छा जिनकी अपने तेज से नित्य माया मूं निवृत्त और बः प्रकार के ऐश्वर्ययुक्त जो तुम हो तिन की शरण प्राप्त भयो हो २२ तुम ईश्वर हो अर्थात् औरन के वश कर्मनवा रहे हो अपने आश्रय और के वश नहीं हो अपने अधीन जो माया तामूं महत्तत्त्व अर्द्धकारते आदि लोकें समस्त तत्त्व क्रीड़ा करिबे के लिये जिनने रचे है और ग्रहण किये है मनुष्यरूप जिनने यदुष्टिण सात्वता में श्रेष्ठ जो तुम हो तिनकूं नमस्कार है २३ अब श्रीशुकदेव जी कहे है हे राजन् परीक्षित ! भक्तन में श्रेष्ठ मननशील श्रीकृष्णचन्द्रके दर्शनमें वड़े है उत्सव जिनके ऐसे नारदजी याम्बवर यादवनके पति श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूं प्रणामकरि आज्ञालेके जातभये २४ व्रजवासीनके सुलके करनवार भगवान् गोविन्द श्रीकृष्ण युद्धमें केशीकों मारिके पशुनके पालन करतभये २५ पशुनके पालन करतभये २५ एकसमय गौनन के पालनकर्त्ता

म्यालमाल है ते गोवर्द्धन पर्वत के शिखर पै गौवन कौ चरावत चोर पालन कौ मिय करिके क्षिपा क्षिपी को खेल करतभये २६ हे राजन् परीक्षित ! ताल खेल में कितेकहू बालक चोर बने और कितेकहू रखवारे बने कितेकहू भेड़ बने ऐसे निर्भय होयके खेलत भये २७ इत्तेमें बड़ो मायावी मयैतय को पुत्र व्योमासुर गोपाल को रूप धरिके चोर बनिके जे बालक भेड़ बने हैं तिनमें ते चुरायके लेजातभयो २८ व्योमासुर जे बालक भेड़ बने हैं तिनमें ते चुराय के पर्वत की गुफामें धरिके शिलासे गुफाको द्वार मुंदतभयो तिनमें से कोई चार पांच बाक्की रहिगये २९ साधुनको शरण के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र पनमें विचार करो कि इस तो खेलारो है यह साचोहीं चोर आय पहुँच्यो ऐसे ता व्योमासुरकी चोरी जानिके गोपनको संग लैं के जाय जो व्योमासुरहैं ताकूँ जैसे सिंह बल करिके भोड़ियाकूँ पकरो है ऐसे पक़रतभये ३० बली व्योमासुर पर्वतकी बराबर अपनो रूप धरिके अपनेको लुड़ायो चौहै परन्तु नहीं छूटतभयो श्रीकृष्ण ने पक़रो है तासो आतुरहै ३१ अन्युतजो

शूनूपालां श्रारयन्तोऽद्विसालुपु ॥ चक्रुर्निलायनक्रीडाश्रोरपालापदेशतः २६ तत्रासृकृतिचिचोराः पालाश्चकृतिचिन्तु ॥ मेपायिताश्चतत्रैके विजहुर कुतोभयाः २७ मयपुत्रोमहामायेव्योगोषालेवपष्टृक् ॥ मेपायितानपोवाह प्रायश्चोरायितोवहून् २८ गिरिदय्याविनिक्षिप्यनीतनीतमहाऽसुरः ॥ शि लयापिदधेद्वारस्वतुःपञ्चावशोपिताः २९ तस्यतत्कर्मविज्ञाय कृष्णःशरणदःसताम् ॥ गोपान्नयन्तजग्राह वृकंहरिशिवौजसा ३० सनिजरूपमास्थाय गि रीन्द्रसदृशंवली ॥ इच्छन्विमोक्तुमात्मानं नाशक्रोदग्रहणातुरः ३१ तन्निगृह्याच्यतोदोभ्यां पातयित्वा महीतले ॥ पश्यतां दिविदेवानां पशुमारसमारय त ३२ गुहापिधानं निर्भय गोपान्निःसार्यकृच्छ्रतः ॥ स्तूयमानःसुरगोपैः प्रविशेश्चगोकुलम् ३३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वोद्धि व्योमासुरवधोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

श्रीशु कउवाच ॥ अक्रूगेऽपिचतारात्रिं मधुपुर्यामहामतिः ॥ उपित्वाथमास्थाय प्रययौनन्दगोकुलम् १ गच्छन्पथिमहाभागो भगवत्यम्बुजेक्षणे ॥

श्रीकृष्ण है सो व्योमासुरकी दोनो मुजा पकरिके पृथ्वी में पटाकिके स्वर्गके देवतानके देखत देखत स्वास घोटिके मारतभये ३२ गुफाके ढकनाको फोरिके गोपन कौ कष्ट ते बाहर निकासि के ऊपर देयता विमाननमें स्तुतिकरै पृथ्वीमें गोप जिनकी स्तुतिकरै ऐसे श्रीकृष्ण अपने गोकुलमें आवतभये ३३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपपियांदाशमस्कन्धेपूर्वोद्धिव्योमासुरवधोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥ (अष्टात्रिंशेयथाध्यायवद्गोकुलंगतः ॥ तथैवरागकुराणांभापृहनीनामसुसत्कृतः १ प्रातःकेशिन्नेवैचेद्वादशोनिर्गतेमुनौ ॥ ततोव्योमेवैतेऽक्रूःसायंगोकुलमागमत् २ अद्वीतीसर्वे आध्याय में जैसे ध्यान करतेहुये अक्रूरजी गोकुल को गये तैसेही मलदेवजी और कृष्णजीने धर्म में लेजाकर अच्छी तरहसे सत्कार किया १ प्रातःकाल बारहवें केशी रात्रिसके नाशहोजानेमें नारदपुनिके चलेजाने में फिर व्योमासुर के नाश होजाने में साफ को अक्रूरजी गोकुल में प्राप्त होजातभये २ ) अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! वही है बुद्धि जिनकी ऐसे अक्रूरजी वा दिन रात्रि कू मधु

पुरी में वसि के प्रातःकाल रथ में बैठि के नन्दजी के गोकुल में जातभये ? वडो है भाग्य जिनको ऐसे अक्रूरजी मार्ग में जात १ मलनेत्र श्रीकृष्णचन्द्र में परमभक्ति कू पावतभये और यह विचार करतभये २ धैने कौन मंगलकर्म करो है अथवा तपकरो है या सत्पात्रन कू दानकरो है जाके प्रभावते ब्रह्मा महादेव के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् तिनको दर्शन करुंगो ३ मोको श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन होयगो यह मै दुर्लभमानू हूँ विषयन में हँ मन जाको शूद्रकुलमें जन्म ऐसे पुरुष कौ वेद को उच्चारण जैसे दुर्लभहै ४ ऐसे मतकहो श्रीकृष्णको दर्शन होय किन्तु अथम जो भैं हूँ तार्कू श्री-कृष्णको दर्शन निश्चय होइगो जैसे नदीन के प्रवाह में वहे जे तूणहै तिनमें कोई किनारे पै लागेहै तैसे कामन के दश होय के जो जीवहै तिनमें कोई तरे हूँ ५ मै श्रीकृष्ण के लिवायवे कू चलयो हूँ याते मेरो अब मंगलरूप भयो मेरो जन्म सफलभयो योगी जिनको ध्यानकरै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के चरणकमलको नमस्कार करुंगो ६ वडो आश्चर्य है अत्यन्त दुष्ट १ सने मेरे ऊपर

भक्तिपरासुपगतएवमेतदचिन्तयत् २ किमयाचरितं भद्रं कितं प्रमन्तपः ॥ किंवाऽथाप्यहेतदत्तं यदूक्ष्याम्यद्यकेशवम् ३ ममैतदुर्लभं मन्युत्तमश्लोक दर्शनम् ॥ निपयात्मनो यथाब्रह्मकीर्त्तनं शूद्रजन्मनः ४ मैवं ममाधमस्यापि स्यादेवाच्युतदर्शनम् ॥ द्विप्रमाणः कालनद्या कचिन्नरतिक्लृप्तम् ५ ममाद्यामङ्गलं नष्टं फलवांश्चैव मे भवः ॥ यन्नमस्ये भगवतो योगिध्येयाङ्घ्रिपङ्कजम् ६ कंसो वताद्याकृतमेत्यनुग्रहं द्रक्ष्येऽङ्घ्रिपङ्कजं प्रहितो मुनाहरेः ॥ कृतावतारस्य दुरत्ययंतमः पूर्वोऽतश्च नृनखलगडलतिवपा ७ यदार्चितं ब्रह्म भवादिभिः सुरैः श्रिया च देव्यामुनिभिः ससात्वतैः ॥ गोचारणायानुचरैश्च रदने यद्वेपिकानां कुचकुङ्कुमाङ्कितम् ८ द्रक्ष्यामि नूनं मुकपोलनासिकं स्मितवलोकारुणकञ्जलोचनम् ॥ सुखं मुकुन्दस्य गुडालकावृतं प्रदक्षिणं मे प्रचरन्ति वै मुगाः ९ अप्यद्य विष्णोर्मनुजत्वमीयुषो भारवताराय भुवो निजेच्छया ॥ लावण्यधाम्नो भवितो पलभनं महाननस्यात्फलमञ्जसादृशः १० यद्विधिताऽहं रहितोऽप्यसत्सतोः स्वतेजसाऽपास्ततमो भिदाभ्रमः ॥ स्वमायया गन्धर्वचितैस्तदीक्षया प्राणाक्षधीभिः रादनेष्वभीयते ११ यस्याखिला मीनवहुभिः सुमङ्गलैर्वचोविमि

वडो अनुग्रह करो है जो कंस को भेजो मै आयो अवतार जिनने लियो ऐसे भक्तन के मनके हरनवारै श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द को भैं दर्शन करुंगो प्रथम अमरीपसू आदिले के जे राजाभये है ते जा श्रीकृष्ण के नखलगडल की कान्ति सँ तरिवे में न आवै एसो संसाररूपी अन्धकार कू तरिजातभये ७ जो चरणारविन्द ब्रह्मा महादेव स आदिले के देवतान ने और मताशमान जो लक्ष्मी तोने मुनीश्वरन ने भक्तन ने पूज्यो है और गौवन के चरायवे के लिये जो चरणारविन्द चालवालन के संग वनमें फिरयो है और जा चरणारविन्द में गोपीन के कुचन की केश लगी है वा चरणारविन्द को दर्शन करुंगो ८ सुन्दर जाँमे सुन्दर जाँमे कपोल नासिका और मुसिकानि धरी चितवनि अरुण डोरा जिनमें आय रहे ऐसे कमल से जाँमे नेत्र धूपधुमारी अलकें छूटि रही एसो श्री-कृष्णचन्द्र के मुख को निश्चय दर्शन करुंगो हरिण भरे दाहिने आये है ९ पृथ्वी को भार उतारिवे के लिये अपनी इच्छा सँ अब जाने मनुष्य रूप धारण करो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के सुन्दर रूप को दर्शन करुंगो तब भरे नेत्र सफल होयेंगे १० तहाँ कोई शंका करे है कि हमारी तुल्य कर्मन को करनवारो दिख्यो है देय है तुम कैसे भगवान् कहो हो ताको उत्तर तीन श्लोक कारिके देय हैं

स्वार्थरूप जगत् और कारणरूप महदादिक तत्त्व तिनहुं जो श्रीकृष्णचन्द्र चित्तवनि सूं करे हैं तथापि उनके अहङ्कार नहीं है अपने तेज सूं अज्ञान भेद भ्रम को जिनने दूर करे है अपने अमीन को माया है ता माया की ओर चित्तवनि करिके अपने में रचे जे जीव हैं तिन सूं वृन्दावन के दृत्तन के नीचे और गोपीन के घरन में लीला करिके वद्धमे दिसाई देखै १ ? जिन श्रीकृष्ण के अङ्गार नहीं है तो आत्माराम हैं तिनहुं लीलाकरिजो कैसे वनेहै या शङ्का को उत्तर कहे हैं कि भक्तन के ऊपर कृपा करिबे के लिये लीला करे हैं सबके पापन के दूर करनवारे जे सुन्दर मंगन रूप श्रीकृष्णचन्द्रके गुण जन्म कर्म सूं मिली जे वाणी ते जगत् कूं जिवारें हैं और शोभायमान करे हैं पवित्र करे हैं और जिन वाणीन में श्रीकृष्णचन्द्र के लीला गुण जन्म कर्म नहीं गाये हैं उनको जे कहे हैं और श्रवण करे हैं ते अपवित्र है जैसे मृत्यु भयो शरीर अपवित्र है यादजन के कुलमें जिन श्रीकृष्णचन्द्र ने अवतार लियो है अपनी मर्यादान वों पालनकरें जे देयतान में प्रेष्ट हैं तिनको ससके करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र ईश्वर लीला करिके यशको फैलावत जनमें रहे हैं सबको मंगलरूप जो यश है ताको देवता गावै हैं १२ । १३ महत्पुरुषन को सुन्दर गति के देन-

श्रागुणकर्मजन्मभिः ॥ प्राणान्तिशुरभन्तिपुनन्तिवैजगद्यास्तद्विरक्ताःशवशोभनामताः १२ सचावतीर्णैःकिजसात्तान्वयेस्वसेतुपालामरवर्थशर्मकृत् ॥  
यशोवितन्वन्नजआस्तईश्वरो गायन्तिदेवायदशेषमकलम् १३ तन्त्वद्यनूनमहतान्गतिगुरुं त्रैलोक्यकान्तंहाशिमन्महोत्सवम् ॥ रूपंदधानंश्रियई  
प्सितास्पदं द्रक्ष्येममासन्नुषसःसुदर्शनाः १४ अथावरुढःसपदीशयोस्थात्पधानपुंसोश्चरणंस्वलवधये ॥ धियाद्युनंयोगिभिरप्यहंक्षुत्रं नमस्यआभ्यांत्र  
सखीन्वनौकसः १५ अप्यङ्घ्रिमूलेपतितस्यमेविभुः शिरस्यधास्यन्निजहस्तपङ्कजम् ॥ दत्ताभयंकलभुजङ्गंहसा प्रोद्धेजितानांशरौपिणानुणाम् १६ स  
महंयन्त्रनिधायकौशिकस्तथावलिश्चापजगन्नयेन्द्रनाम् ॥ यद्वाविहोब्रजयोपिनांश्रमं स्पर्शनसौगन्धिःकृगन्ध्यापानुदत्त १७ नमस्युप्यत्यरिबुद्धिम  
च्युतः कंसस्यदूतःप्रहितोऽपि विश्वदृक् ॥ योऽन्तर्बहिश्चेतसएतदीहितं क्षेत्रज्ञईक्षत्यमलेनचक्षुषा १८ अप्यङ्घ्रिमूलेऽवहितंकृनाञ्जलिं मामीक्षितानास्मित

वारे गुरु त्रिलोकी में सुन्दर नेत्रनवारे पुरूपन कूं आनन्द के देनवारे लक्ष्मीकों वाञ्छित रहिये को ठिकानो अतिसुन्दर रूपको धारण करे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को आज मैं निश्चय दर्शन करोंगो प्रातःकाल के समय मेरे श्रेष्ठ सगुन भये हैं १४ दर्शन करे पीछे शीघ्र रथमें ते उत्तरि के ईश्वर राम कृष्णकों निश्चय प्रणाम करोंगो और इन सहित वनवासी सत्तान को प्रणाम करोंगो जिन राम कृष्ण को चरणारविन्द योगीन ने आत्मलाभके लिये केवल यनमें ध्यान कियो है ताकों मैं सत्ताव प्रणाम करोंगो १५ चरण में परो जो मैं हूँ ताके शिर पै समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र अपने हाथ कों धौने कालरूप सर्पकी फुंकार सों हरपिके शरण कूं चाहैं ऐसे मनुष्यन कूं अभयदान जा हाथ ने दियो है १६ जिन श्रीकृष्ण के हाथमें इन्द्र पूजा राखिके इन्द्रता पावतभयो तैसेही राजा त्रिलि संकल्प राखिके त्रिलोकीकी इन्द्रता पावतभयो रासक्रीड़ा में ब्रजकी छाँ गोपीन के श्रम को जो पसीना है ताकूं जा हाथ ते पोक्त भयो और कपलकीसी जा हाथ में सुगन्धि आवै वा हाथ को मेरे शिरपर धरे १७ कंस को सन्देशो लैके कंस को भेज्यो जाऊँहो तथापि समस्त विश्व के जाननवारे श्रीकृष्णचन्द्र वैरी कंस के पास ते यह आयो है याते मोकों न मानेंगे और जो अन्त-



थीभी श्रीकृष्ण मेरे चित्त के बाहर भीतर जो चेष्टा है ताकूँ नित्य ज्ञान करिके देखे हैं ऊपर ते कंस को भेज्यो जाऊँहाँ भीतर तें श्रीकृष्णको ध्यान लगिरहो है जा वातकॉ नित्य ज्ञान करिके अन्तर्यामी जानैहैं १८ चरणारविन्द में गिरयो हाथ जाने जोरि लिये ऐसो जो मैं हूँ ताकूँ मुसिहायके श्रीकृष्णचन्द्र करुणाभरी दृष्टि सों जासमय देखेगे तासमय शीघ्रही दूरि भयेहैं सवपाप जाके नयो है भय जाहो ऐसो धै वड़े आनन्द कों पाऊगो १९ अतिशय करिके हिनकारी जाति कों श्रीकृष्ण के बिना और कोई देवता नहीं ता गोको श्रीकृष्णचन्द्र अपनी लक्ष्मी भुजा पसारिके छाती ते लनागैगे ता समय यह देह पवित्र होय जायगो और दम्भरूप दब्यनहै सोभी या देशको बूढ़ि जायगो २० श्रीकृष्ण ते मिलिके नारि फुल्लायके हाथ जोरिके जब ठाढ़ो होउंगो तब हे अकू ! हे क्राका ! या प्रकार बड़ो जिनको यशवे श्रीकृष्ण मोतें कहेंगे ता समय हम सफलजन्म होयेंगे वड़ोने जाको आदर नहीं कियोहै वा पुरुष कों विह्वार है २१ तिन श्रीकृष्ण के कोई प्यारो और अ-

मार्दव्यादृशा ॥ सपद्यप्यस्तसमस्तकिल्बपो वोढासुदंवीतविशङ्कजिताम् १६ सुहृत्तमंज्ञातिमन्यदैवतं दोर्याबृहद्भयांपरिस्स्यतेऽथमाय ॥ आ

त्माहितीश्रान्त्रियतेनैवमे वन्धश्चरम्मात्मकउच्छ्वसित्यतः २० लब्धवाङ्मसहंप्रणतंकृताञ्जलिं गांवश्यनेऽस्मृततेत्युरुश्रवाः ॥ तदावयंजन्मभृतोमहीयसा

नैवाहृतोयोधिगमुष्यजन्मतत् २१ नतस्यकश्चिद्वदितःसुहृत्तगोनचाप्रियोद्रेष्यउपेक्ष्यएववा ॥ तथाऽपिभक्ताभजतेयथातथा सुरदुमोयद्वदुपाश्रितोऽर्थ

दः २२ किंचाऽयजोमाऽवनतंयदूत्तमः समयन्परिष्वज्यगृहीतमञ्जौ ॥ गृहंप्रवेश्यासप्तमस्तसत्कृत्वं संप्रक्ष्यतेकंसकृतंस्ववन्धुपु २३ श्रीशुकउवाच ॥

इतिशंचिन्तयन्कृष्णं स्वफलकृतनयोऽध्वनि ॥ स्थेनगोकुलंप्राप्तसूर्यश्चास्तगिरिन्दुप २४ पदानितस्याखिललोकपालकिरीटजुष्टामलपादरेणोः ॥ ददर्श

गोष्ठेक्षिनिकौतुहानि विलाक्षिनान्यवजयवाङ्मराद्यैः २५ तदर्शनाह्लादविवृद्धसंभ्रमः प्रेम्णोर्धरोमाऽश्रुकलाकुलेक्षणः ॥ रथादयस्सन्धसतेष्वचेष्टनप्रभोर

मून्यद्विरजारयदोइति २६ देहभृताभियानर्थो हितमादमंगभियंशुचम् ॥ सन्देशाद्योहरेर्लिङ्गदर्शनश्रवणादिभिः २७ ददर्शकृष्णंरामञ्च व्रजेगोदोहनंग

तिशय करिके हितकारी भी नहींहै कोई कुप्यारो नहीं और न कोई वैरीहै न कोई छेड़िने योग्यहै तथापि जो भक्त जैसे भजेहैं तिनको तैसेही भजेहैं जैसे कल्याण जो सेवन करैहै वाहीको बह फल देयहै २० यादवन में प्रेष्ट बड़े भय्या बलदेवजी नीची नारि करिके ठाढ़ो जो मैं हूँ ताय मुसिहाय के आलिगन करिके हाथ पकरिके गर मैं लेजायके पाये हैं समस्त सत्कार जाने ऐसो जो मैं हूँ तासों अपने दानु यादवन में कंसके कर्त्तव्यको पूछेंगे २३ अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार स्वफल के पुत्र अकूर मार्ग में श्रीकृष्णचन्द्र को चिन्तन करत रथ में बैठकर गोकुल पहुँचे इतने में सूर्य अस्ताचल को प्राप्त होयगो २४ सम्पूर्ण लोकन के पालन सरनवारे ब्रह्मादि देवता अपने मुकुटनके ऊपर जिनके चरणनभी रेणु कों धारण करें तेसे श्री-

कृष्णचन्द्र के चरणन के रोज अकूरजी व्रजमें देखत भये जैसे रोजहैं पृथ्वी के गहनेरूप हैं कमल यव अंकुश के जिनमें चिह्नहैं २५ श्रीकृष्णचन्द्र के चरणचित के दर्शन के आनन्द ते भगोहे सन्ध्रम जिनके प्रेम से रोगाञ्च जिनके होय आये वेवन में आस आगये ऐसे अकूरजी रयते उत्तरिके अहो मेरे प्रभु के चरणनकी रज पेसे कहत कहत चरणन के खोजन में लोटत भये २६

देशधारीन को इतनीही पुरुषार्थ है कंसके सन्देश ने आदिलेके दम्भ भय शीघ्र खोड के श्रीकृष्णके चरणन के दर्शन अवणादिकरू जो अक्रूरको प्रेमभयो २७ ब्रजमें गोशाला में गौ दुहियेको गये जे श्रीकृष्ण और बलदेवजी को अक्रूरजी देखतभये पीताम्बर और नीलाम्बर कूं पहिरे हैं शरद्वक्तु के कमल से जिनके नेत्र २८ किशोर जिनकी अवस्था स्याम और गौर जिनकी स्वरूप लक्ष्मी की शोभाके स्थान लक्ष्मी जिनकी भुजा सुन्दर जिनको मुख सुन्दरन में अतिसुन्दर हाथीके कोनो के तुल्य जिनको पराक्रम है २९ ध्वजा वज्र अंकुश कमल को जिनमें चिह्न ऐसे चरणन स्रृं ब्रजको शोभायमान करे हैं महात्मा हैं कृपा भरी मुसिकानि लिये जिनकी चितवनि है उदार रुचिर जिनकी क्रीड़ा है मोतीन के द्यार और वनमाला पहिरे पवित्र चन्दन केशर जिनके लगी है स्नान क्रिये निर्मल जिनके वस्त्र हैं प्रकृति पुरुषरूप हैं काहे ते आदिकारण हैं जगत्के पालन करनवारे हैं पृथ्वीको भार उतारिये के लिये बलराम केशव दो रूप धरि के अवतार लिये हैं ३० ३१ ३२

तौ ॥ पीतनीलाम्बरधरौ शरद्वमुखेशणौ २८ किशोरौ श्यामलश्वेतौ श्रीनिकेतौ वृहज्जौ ॥ सुमुखौ सुन्दरवरो बालद्विदविक्रमौ २९ ध्वजवज्राङ्कुशाम्भोजैरिचिह्नैर्गङ्गिभिर्ब्रजम् ॥ शोभयन्तौ महात्मनौ सानुक्रोशस्मितेक्षणौ ३० उदाररुचिरक्रीडौ सखिणौ वनमालिनौ ॥ पुरयगन्धानुलिप्ताङ्गौ स्नातौ विरजवाससौ ३१ प्रधानपुरुषावाद्यौ जगद्धेतू जगत्पती ॥ अवतीर्णै जगत्यर्थे स्वार्शेन बलकेशवौ ३२ दिशो वितिमिराजन् कुर्वाणौ प्रभया स्वया ॥ यथामारक्तः शैलो रौप्यश्च कनकाचितौ ३३ रथात्तूर्णमवलुत्य सोऽक्रूरः स्नेहविह्वलः ॥ पपात चरणोपान्ते दण्डवद्रामकृष्णयोः ३४ भगवद्दर्शनाह्लादवाष्पपयःकुलक्षणः ॥ पुलकाचिताङ्ग औत्कण्ठ्यात् स्वाख्यानैनाशकनृप ३५ भगवांस्तमभिप्रेत्य रथाङ्गाङ्कितपाणिना ॥ परिरेभेभ्युपाकृष्य प्रीतः प्रणतवत्सलः ३६ सङ्कर्षणश्च प्रणतमुपगुह्य महामनाः ॥ गृहीत्वा पाणिना पाणी अनयत्सानुजोगृहम् ३७ पृष्ठाऽथ स्वागतं तस्मै निवेद्य च वरासनम् ॥ प्रक्षाल्य विधिवत्पादौ मधुपर्कार्हेण माहत् ३८ निवेद्यां चातिथये संवाह्य श्रान्तमाहृतः ॥ अन्नं बहु गुणं मेध्यं श्रद्धयोपाहरद्विभुः ३९ तस्मै भुक्तवते प्रीत्या

हे राजन् परीक्षित ! अपने तेजते दिशान के अन्धकार को दूर करे हैं सुवर्ण करि के जैसे नीलमणि को पर्वत अथवा रूपे को पर्वत जगमगाय है ३३ स्नेह में विह्वल होयके अक्रूरजी शीघ्र रथमें ते उत्तरि के रामकृष्ण के चरणन में दण्डवत् करतभये ३४ हे राजन् परीक्षित ! श्रीकृष्ण के दर्शन स्रूं जो आनन्द भयो तामूं नेत्रन में आम् भरिआये उत्कण्ठते अंगमें रोमाञ्च होय आये मैं अक्रूर दण्डवत् करूं हूं ऐसे कहिये की न समर्थ होतभये ३५ हितके करनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अक्रूर एतदर्थ आये हैं यह जानिके चक्रकी जामें रेखा ऐसे अपने हाथते पकारिके प्रसन्न होय के छानी सों लगाय के मिलतभये मिलिये को कारण यह है कि कंस के मारिये की सामर्थ्य श्रीकृष्ण ने जताई ३६ वड़े हैं मन जिनको ऐसे संकर्षण बलदेवजी दण्डवत् जिनने करी ऐसे अक्रूर जीको छाती सें लगाय के अपने हाथ ते दोनों हाथ पकारि के घरमें श्रीकृष्ण सहित लिवाय जात भये ३७ भलेआये ऐसे कुशल पूंछि के अक्रूरजी को आसन विछाय के विधिपूर्वक पावन को धोयके मधुपर्क दैके पूजन करतभये ३८ विधिपूर्वक पूजा कारिके वैल अक्रूरजी के निवेदन करो मार्गमें परिश्रम जिनको भयो ऐसे अक्रूरजी के चरणारविन्द आदरसों दाविके बहुत जामें गुण

ऐसी पवित्र अन्नकी सामग्री भोजनार्थ अतिथिदा साँ अक्रूरजी के आगे निवेदन करतभये ३९ अक्रूरजी भोजन जब करिबुके तब परमधर्म के जाननवारे बलदेवजी वीरी चन्दन केशर अतर फूलन के द्वार इत्यादिक सँ प्रसन्न करतभये ४० सम्मान जिनको करो ऐसे अक्रूरजी ते नन्दजी पूँछतभये निर्दयी कंसके जीनत तुम्हारी कैसे जीवनहोयहै कसाई जिनको पालक वे भेंड कैसे जिये ४१ प्राणन को पोषणवारो दुष्ट कंस दिलाप करै जो अपनी बहिनि ताके पुत्रन काँ गोस्त भयो ता कंसकी प्रजा तुमहो तुम्हारी कहा कुशल विचारै ४२ या प्रकार मधुरवचन तें पूँछि के नन्दजी ने सत्कार जिनको करो ऐसे अक्रूरजी मार्गके परिश्रम काँ त्यागतभये ४३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थलुण्णिकादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरागमनं नामाऽष्टत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३८ ॥ \* ॥

(नवत्रिंशेपुरीगच्छत्यच्युतेगोपिकोक्तयः ॥ अक्रूरेणाथकालिन्यां विष्णुलोकस्यदर्शनम् १ उन्नतालीसयै अध्याय में मथुरापुरी को जातेहुये श्रीकृष्णजी में गोपियों की उक्ति और अक्रूरजी

रामःपरमधर्मवित् ॥ सुखवासैर्गन्धमाल्यैः परांप्रीतिव्यधात्पुनः ४० पप्रच्छसत्कृतंनन्दः कथंस्थानिरनुग्रहे ॥ कंसेजीवितिदाशाहं सौनपालाइवावयः ४१ योऽवधीत्स्वस्वमुस्तोकाच्च क्रोशन्त्याअसुतृग्वलः ॥ किंनुस्वित्तत्प्रजानां वःकुशलंविष्टुशामहे ४२ इत्थंमुनृतयावाचा नन्देनसुसभाजितः ॥ अक्रूरःपरिप्रेतेन जहावध्वपरिश्रमम् ४३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धे पूर्वार्द्धेऽक्रूरागमनं नामाऽष्टत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३८ ॥ \* ॥

श्रीशुकउवाच ॥ सुखोपविष्टःपर्यङ्के रामकृष्णोरुमानितः ॥ लेभेनोरथावसवर्षान् पथियान्सचकारह १ किमलभ्यंभवति प्रसन्नेश्रीनिकेतने ॥ तथाऽपितत्पराजन्निहाञ्छन्तिकिञ्चन २ सायन्तनाशानंकृत्वाभगवान्देवकीसुतः ॥ सुहृत्सुवृत्तंकंसस्यपप्रच्छान्यच्चिकीर्षितम् ३ श्रीभगवानुवाच ॥ ता तसौम्यागतःकञ्चित्स्वागतंभद्रमस्तुवः ॥ अपिस्वज्ञातिवन्धूनामनीवमनामयम् ४ किंनुनःकुशलंपृच्छे एधमानेकुलामये ॥ कंसेमातुलनाभ्यङ्ग स्वानां नस्तत्प्रजामुच ५ अहोअस्मदभूद्भूरिपित्रोर्द्विजिनमार्थयोः ॥ यद्धेतोःपुत्रमरणं यद्धेतोर्वन्धनंतयोः ६ दिष्ट्वाऽद्यदर्शनंस्वानां मह्यं वःसौम्यकाङ्क्षितम् ॥ स

करके यमुनाजी में विष्णुलोक का दर्शन भयो है १) अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित! शय्याके ऊपर सुखपूर्वक बैठे कृष्ण बलदेवने वड़ो सत्कार जिनको करो ऐसे अक्रूरजी मार्ग में जे जे मनोरथ करतगये हैं ते ते समस्त पूर्णभये १ छः प्रकारके ऐश्वर्य करि परिपूर्ण शोभा के स्थान ऐसे श्रीकृष्ण जब प्रसन्नभये तब कौनसी वस्तुकी प्राप्ति न भई हे राजन् परीक्षित! कृष्ण-परायण जे भक्तहैं तिन कतु वस्तुकी चाहना नहीं है २ देवकीके पुत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र सन्ध्या समय व्यास करिके आपने यादवन में जो कंस को बर्तावहै ताय अक्रूरजी सँ पूँछतभये और जो कछु करिवेको विचारहै ताय पूँछतभये ३ श्रीभगवान् श्रीकृष्ण वृत्ते हैं हे काका! हे साधु! तुम भलेआये तुम्हारी कल्याण होउ जातिके भैया वन्धूनकाँ सुलहै आरोग्यहै ४ अंग अर्थात् हे अक्रूर! मामाहै नाम जाकाँ ऐसी कंस हमारे कुलकाँ रोग बढो तब अपने भय्या वन्धूनकी ता कंसके प्रजाकी कहा कुशल पूँछें ५ हमारे निरपराध माता पितोकाँ हमारे लिये बढो दुःख भयो हमारे लिये उनके

पुत्र भरे हमारे लिये उनको वन्दन भगो ६ हे साधु ! बहुतदिन ते तुम्हारे दर्शनकी अभिलाषा रही अब अपनेनको दर्शनभयो बड़ा मङ्गलभयो हे काका ! तुम्हारी आयवो कैसे भयो यह हमते वर्णन करो ७ श्रीशुकदेवजी बोले मधुवंशोद्भव अक्रूरजी श्रीकृष्णने पूँखे तब सम्पूर्ण वृत्तान्त कहतभये कंस यादवनसूँ वैर करे है और वसुदेवके मारिवको देखिवेको तो भिपहै चाणूरा-दिमनपै घात करायवे के लिये मोहि भेजोहै वसुदेवके श्रीकृष्णको जन्मभयो है यह बात नारदजीकंसते कहि आयै हैं सो सम्पूर्ण अक्रूरजी श्रीकृष्ण ते कहतभये ८।९ श्रीकृष्णचन्द्र और वड़े शत्रुनके पराजय करनवारे श्रीवलदेवजी अक्रूरको वचन श्रवण करिके पिता नन्दजी सँ हैसिके राजाकंसको संदेशो जातावतभये १० नन्दजी गोपनको आज्ञा देतभये सम्पूर्ण दूध दही लौले उ गाड़ान को जोतो ११ कहिके दिन मधुग जायगे राजाकंसको रस देख्यो यामे यह वीचन करो कि जब देहमें रोग दृढिकूँ मास होयैहै तब रस देख्यै ऐसे कंसरूपी रोग बढो है याको रस देख्यो सुन्दर

आतंवर्यतां तात तवागमनकारणम् ७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ पृष्टो भगवता सर्ववर्णायामासमाधनः ॥ वैराग्यवन्धं यदुग्रमुदेववधोद्यमम् ८ यत्संदेशो यदर्थवा दूतः संप्रेषितः स्वयम् ॥ यदुक्कनारदेनास्य स्वजन्मानकदुन्दुभेः ९ श्रुत्वाऽक्रूरवचः कृष्णो नलश्च परवीरहा ॥ महस्य नन्दं पितरं राज्ञादिष्टं विजज्ञतुः १० गोपानस मादिशत् सोऽपि गृह्यतां सर्वगोरसः ॥ उपायनानि गृह्णीध्वं युज्यन्तां शकटानि च ११ यास्यामः स्वो मधुरीं दास्यामो नृपतेरसाच्च ॥ द्रक्ष्यामः सुमहत्तपं यान्ति जानपदाः किल ॥ एवमावोपपत्क्षत्रानन्दगोपः स्वगोकुले १२ गोप्यस्तास्तद्वपश्रुत्य वभूवुर्वथिताभृशम् ॥ रामकृष्णौ पुरीनेतुमक्रूरं जमागतम् १३ काश्चित्कृतहृत्तापश्वासस्नानमुखश्रियः ॥ संसदुकूलवलयकेशग्रन्थश्च काश्चन १४ अन्याश्च तदनुव्यानि निवृत्ताशेषवृत्तयः ॥ नाभ्यजानन्ति मंलोकमात्मलोकं गता इव १५ स्मरन्त्यश्चापराशौ रेनुरागस्मिते रिताः ॥ हृदि स्पृशयि च त्रपदागिरः संसुहुः स्निग्धः १६ गतिं सुललिताञ्चैष्टां स्निग्धहासा वलोकनम् ॥ शोकापहानि नर्माणि प्रोद्दामचरितानि च १७ चिन्तयन्त्यो मुकुन्दस्य लीलाविरहकातराः ॥ समेताः सङ्घशः प्रोत्तुः शुमुख्योऽन्युताशयाः १८

भारी पर्व देख्यो और देशवासीहू जायँगे ऐसे नन्दरायजी अपने गोकुल के कोतवालको बुलायके ढाड़ी पिढायत भये १२ श्रीकृष्णजी हैं एक जीउन जिनके वे गोपी जा समय श्रीकृष्ण बलरामको मधुरापुरी में लेजायवैकू व्रजमें अक्रूरजी आयै हैं यह बात सुनिके अत्यन्त दुःखित होतभई १३ अब गोपीन के दुःखके तत्तण ऊँहैं श्रीकृष्ण मधुरा जायँगे यह बात सुनिके भयो जो हृदयमें ताप ता सौं कितेरु गोपीन के गुन कुम्हिलायगये शिथिलभये हैं वस्त्र ऊँकण केशनकी ग्रन्थि जिनकी ऐसी कोई गोपी होतभई १४ ता श्रीकृष्ण के ध्यानकरे ते निवृत्तभई है इन्द्रियनकी होत जिनकी अर्याव नेत्रन ते देखिवो कानन ते सुनिवो वायी ते बोलिगे नासिका तँ सूँविगे सत्र जिनको छूटिगयो ऐसी और गोपी हैं ते मुक्तिभये तिनकी तुल्य या देहको न जानतभई १५ कोई गोपी स्नेहते मुसिकाय के हृदयको आनन्ददायक चित्रविचित्र जिनकी बोलनि ऐसे वचनकी सुनिके मोहित होतभई १६ मुक्तिके देनवारे श्रीकृष्णचन्द्रकी मनोहर चलनि स्नेह भरी चितवनि शोककी दूरि करनवा-री बोलनि इत्यादिक चेष्टानकूँ वड़े चरितनकूँ स्मरण १७ यह सत्य जायगो यह भयजिनको भयो निरह में कायर अशु जिनके मुँह पै बहिआये श्रीकृष्ण भगवान् में जिनको मनहै ऐसी

हजारन गोपीन के भुएइ छुरि मिलि के सबस्त आपुसमें यह कहत भई १८ गोपी कहती है अहो विधाता ! तरे कहू दया नहीं है देहधारीन काँ भिलाय के मित्रता करवै स्नेह लगावै फेरि उनके मनोरथ पूर्ण न होन पावै तब तक उनकाँ ऐसो न्यारो न्यारो करिदेय है जैसे वालरु सखिनाकाँ इकठोर कोरि के फेरि न्यारो न्यारो करिदेय है १९ तेरो यह कर्म निन्दित है अथ यह कहै है धूमधुवारी छछादार अलकें जायै छुटिरहीं सुन्दर जामें कपोल ऊँची जामें नासिका शोककी हरनवारी मन्दमन्द जामें मुसिकानि तासाँ सुन्दर ऐसे प्यारे श्रीकृष्णचन्द्रको मुख दिखाय के हमारे नेत्रनतें न्यारो करे है यह तेरो कर्म बुरो है दान करि के लेई है याते तू बड़ो कठोर है २० अन्धू लेजाय है मँतो नहीं लेजाऊँ हों कदाचिदु ऐसे विधाता कहै है अरे विधाता निर्दयी ! अकूर या नाम भरि के आयो जो तू है सो तेने हमको कृष्णरूप नेत्र दिये हैं तिनकुँ अज्ञानी की तुल्य हरि के लेजाय है कदाचिदु कहो कि कृष्णको हरि के लिये जाऊँ हूँ तुम्हारे नेत्रनकाँ तौ नहीं हरीं हों तहा कहै है हमारे नेत्रनको तो हरीं है जो तेने नेत्र दियो है तासूं श्रीकृष्ण के एक अंगमें सम्पूर्ण विश्वकी चतुराई देख लेत भई कृष्णरुप विना आंधीगोपी कौनकाँ देखेगी २१ क्षणमें भद्र है

गोप्यऊचुः ॥ अहो विधातस्तवन क्वचिदया संयोज्यमैत्र्या प्रणयेन देहिनः ॥ तांश्चाकृतार्थानि विनियुनङ्ग्य पार्थक्यं विधीतं तेषां विधीतं यथा १६ यस्त्वं प्रदर्यासितकृन्तलावृतं मुकुन्दवक्रं मुकपोलमुन्नमम् ॥ शोकापनोदस्मितलेशसुन्दरं करोपि पारोक्ष्यमसाधुते कृतम् २० क्रूरस्त्वमक्रूरसमाख्ययास्मनश्चक्षुर्हि दूरं हरसेवता ज्ञवत् ॥ यैवैकदेशोऽखिलसर्गसौष्ठवं त्वदीयमद्राक्ष्मवयं मधुद्विपः २१ ननन्दसूनुः क्षणभङ्गसौहृदः समीक्षते नः स्वकृतातुरावत ॥ विहाय गेहान् स्वजनान्मुताचपतींस्तदास्य मद्धोपगतानवप्रियः २२ सुखप्रभातारजनीयमाशिपः सत्यावभूतुः पुरयोपि नां ध्रुवम् ॥ याः सप्रविष्टस्य मुखं व्रजस्पतेः पास्यन्त्य पाङ्गोत्कलितस्मितासवम् २३ तासां मुकुन्दो मधुमञ्जुभाषिणैर्गृहीतचित्तः परवान्मनस्वयपि ॥ कथं पुनर्नः प्रतियास्यते वलाग्राम्याः सलज्जस्मिन् तत्रिभ्रमैर्भ्रमन् २४ अद्य ध्रुवं त्रहशो भविष्यते दाशाहं भोजान्धकवृष्णि सात्वताम् ॥ महोत्सवः श्रीरमणं गुणास्पदं दृक्ष्यन्ति त्वेवाध्वनिदेवकी सुतम् २५ मैतद्विधस्याकरु

स्नेह जाको ऐसो यह नन्द को पुत्र याकी मुसिकानि सों मोहित भई घर भय्या बन्धन काँ त्यागि के श्रौ पुत्र पतिन काँ छोड़ि के साक्षात् जाकी दासी भई है हाय हाय हमें देखेहू नाय है याकूं नये नये प्यारे लगे हैं २२ मथुरा की स्त्रीनकुँ या रात्रि को सरेरो अन्धको होयगो क्योंकि उनके मनोरथ निरचय साधे होथे जव मथुरामें जायगो तब कटाक्षन काँ लिये मुसिकानि रूप जामें रस ऐसे मुख काँ आदर ते देखेगी कदाचिदु दो तीन दिन को जाय है तुम ते जाको प्यार है वात्ता संग जाय है लिवाय के चलयो आवैगो ऐसी व्याकुल क्यों होउ हों तहां गोपी कहे हैं मथुरा की स्त्रीन की मीठी मनोहर बातन सूं प्यारे को चित्त पररो जायगो उनकी लाज भरी मुसिकानि कटाक्षन सों मन जाको चलायमान होग जायगो दोहा कवित्तन के अर्थ कैं ऐसी चतुर स्त्रीन की आँखि जव प्यारो देखैगो तब हे सात्वता ! धैर्यवान् वात्ता के अधीन है तथापि गोत्र की रहनवारी हम है तिनके पास फेरि काहे हो आवैगो २३ । २४ आज तौ मथुरा में दाशाहं वंशी भोजवंशी अन्धकवंशी यादव हैं तिनकी आँखिन काँ निश्चय आनन्द होयगो लक्ष्मी के रमानवारे समस्त जिनमें गुण ऐसे देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण तिनकुँ जे पुरुष मार्ग में देखैगो तिनकी आँखिन

कों निश्चय यहो आनन्द होयगो २५ या सारिले निर्दयी को अक्रूर यह सुन्दर नाम घति होल जो यह निर्दयी बहुत दुःखित जो हम हैं तिनके विना धूँखे प्राणन ते प्यारो कृष्ण है ताकू हमारी आश्रित ते दूर लिये जायहै २६ कठोरहै बुद्धि जाकी ऐसो यह कृष्ण रयमें जाय बैठ्यो है अभामे गोप जलदी गाड़ा होकें ऐसे श्रीकृष्ण के पीछे उतावल करेहैं और दुष्टभी या कू नाहीं नहीं करेहैं श्री सलियो ! कौन कौ दोष देहें आज हमारो दैवही ललटो होय गयो दैव सूयो हो तो तो कोई विघ्न होय जातो हुरो शकुन निचारि के प्यारो यहाही रहतो न जातो २७ गोपी कहेहैं चलिके या श्रीकृष्ण कौ मने कौं याके रय के आगे आड़ी परिके कहेंगी जो जाय है तो हमारी छाती पै रय को पहिया धरिके जा हमारे यह कुल के वहेबूढ़े कहा करेगे आथोक्षण छुटे नहीं ऐसो मुकुन्दको संग तामू दैवने विछुराईहैं याही ते टीन हमारो चिच भयो है २८ जा श्रीकृष्णकी स्नेहभरी मनोहर वाम लीलापूर्वक चितवनि आखि-

एस्यनामभूदक्रूरइत्येतदतविदारुणः ॥ योऽसावनाशवास्यसुदुःखितंजनिंप्रियात्प्रियेज्यतिपारमध्वनः २६ अनाईधोरपससास्थितोरथं तमन्वमीचत्वरय न्तिहुर्मदाः ॥ गोपाअनोभिःस्थविरूपेक्षितं दैवधनोऽद्यप्रतिकूलमीहते २७ निवारयामःसमुपेत्यमाधवं किन्नोऽकरिष्यद्वकुलवृद्धवान्धवाः ॥ मुकुन्दसङ्गा त्रिभिपाद्धुस्स्यजाहेवेनविध्वंसितदीनचेतसाम् २८ यस्यानुरागललितस्मितवल्गुमन्त्रलीलाऽवलोकपरिरम्भणरासगोष्ठयाम् ॥ नीताःस्मनःक्षणमिवक्ष एदाविनातं गोप्यःकथंनवतितेसमतमोदुरन्तम् २९ योऽहःक्षयेव्रजमनन्तसखःपरीतोगोपैर्विशन्खुरजरच्छुरितालकस्रक् ॥ वेणुंकणन्स्मिनकटाक्षनिरीक्षणे न चित्तंक्षिणोत्समुभृतेनुकथंभवेम ३० श्रीशुकउवाच ॥ एवंब्रूवाणविहातुराभृशं ब्रजस्त्रियःकृष्णविपक्वमानसाः ॥ विमृज्यलज्जंरुद्धःस्मसुस्वरं गोवि न्ददामोदरमाधवेति ३१ स्त्रीणामेवंरुदन्तीनामुदितेसवितर्यथ ॥ अक्रूरश्चोदयामासकृतमैत्रादिकोरथम् ३२ गोपास्तमन्वसजन्तनन्दान्दाद्याःशकटैस्ततः ॥ आदायोपायनंभूरिक्ुम्भान्गोरससम्भृतान् ३३ गोप्यश्चदयितंकृष्णमनुब्रज्यान्नुराजिताः ॥ प्रत्यादेशंभगवतः काङ्क्षन्त्यश्चावतस्थिरे ३४ तास्तथातप्यतीर्षीक्ष्य

गन इनकरिके रासकी सभामें वड़ी बड़ी रात्री एक क्षणकी तुल्य वितार् है गोपियो ! या कृष्ण विना विरहखी दुःखके समुद्रकों कैसे तरंगी २९ बलदेवहै सखा जाको गौवन के खुरनकी रज सू धूसरी हैं अलक और माला जाकी ऐसो कृष्ण सन्यासमग्य ग्वालवालन को संग लैके वांसुरी को बजावत आवैहै मुसिकानि कटाक्षभरी चितवनि सों चितको बुरावै है अब या विना कैसे जीवेंगी ३० अब श्रीशुकदेवजी कहैहैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार अत्यन्त विरह में व्याकुल श्रीकृष्णमें लगे हैं मन जिनके ऐसी ब्रजकी स्त्री गोपी लाज छोटिके हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव ! ऐसे पुवारपुकार के रोवतभई ३१ या प्रकार स्त्री रुदन करेही इतने में सूर्य उदय होइ आयो ता पीछे सन्ध्योपासन जिनने करो ऐसे अक्रूरजी रयकों हाकतभये ३२ नन्दादिक सम्भूषे गोप वड़ी बड़ी भेंट लैके दूध दही माखनतें भरे जे कलशहैं तिनकू लैके गाढानमें बैठिके पीछें जातभये ३३ श्रीकृष्णमें आसक्तहैं मन जिनको ऐसी गोपी श्रीकृष्णके पीछे जायके ग्रभजं प्यारो



वगदि के आवै ऐसे श्रीकृष्णको वगदिवे को पैड़ो ठाढ़ी देखतभई ३४ यादवनमें उत्तम श्रीकृष्ण अपने चलिवे के समग्र गोपीन को व्याकुल देखिके जल्दी आऊँगो ऐसे भेम सहित दूतनसे वचन कहवाय के शान्त करतभये ३५ जहा ताई रथकी ध्वजा दीख्यो करी तरताई और जहा ताई रथकी धूरि उड़ती दीखी तवताई श्रीकृष्ण में लागेहँ चित जिनके ऐसी गोपी अत्रहँ वगदि आवै ऐसे विचार करत चित्रकी तुल्य लिलीसी ठाढ़ी होतभई ३६ श्रीकृष्ण के वगदिवे की गई है आश जिनके वे गोपी वगदि के आवति भई श्रीकृष्णकी लीलान को गाय गायके गयेहँ शोक जिनके ऐसे दिनन को वितावत भई ३७ हे राजन् परीक्षित! पवन की तुल्यहै वेग जाको ऐसो रथ तामें वैठिके वलदेव अकूरसहित श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् पाप दूर करनवारी जो यमुना है तहां प्राप्त होतभये ३८ ता यमुना तीरमें हाथ पांय धोइ आचमन करि सीठो निर्मल जल पीके वगीचा में आयके वलदेव सहित रथमें बैठतभये ३९ अकूरजी श्रीकृष्ण वलदेव कूं रथमें बैठारि के उनेते

स्वप्रस्थानेयदूतमः ॥ सान्त्वयामाससेमैरायास्यइतिद्वैत्यकैः ३५ यावदालक्ष्यतेकुर्वावेद्वैत्यरथस्यच ॥ अनुप्रस्थापितात्मानोलेख्यानीवोपलक्षिताः ३६ तानिराशानिवधुगोविन्दविनिवर्तने ॥ विशोकाअहर्नीन्युर्गायन्त्यःप्रियचेष्टितम् ३७ भगवानपिसम्प्राप्तोरामाङ्कुरयुतोदृष्य ॥ रथेनवायुवेगेन कालिन्दी मयनाशिनीम् ३८ तत्रोपस्पृश्यपानीयं पीत्वाभृष्टमणिप्रभम् ॥ दृक्षपण्डसुपञ्चयसराभोरथमाविशत् ३९ अकूरस्तावुपामन्य निवेश्यचरथोपरि ॥ का लिन्द्याद्दृढमाग्न्यस्नानंविधिवदाचरत् ४० निमज्ज्यतस्मिन्सलिले जपन्ब्रह्मसनातनम् ॥ तावेवददृशेऽकूरोगमकृष्णौसमन्वितौ ४१ तौरथस्थौऋथमि हमुतावानकहुन्दुभेः ॥ तर्हिस्वित्स्यन्दनेनस्तदित्युन्मज्ज्यव्यचष्टसः ४२ तत्रापिचयथापूर्वमासीनौपुनरेवसः ॥ न्यमज्जदर्शनंयन्मे सृपाकिसलिलेतयोः ४३ सूयस्तत्रापिसोऽद्राशीत् स्तूयमानमहीश्वरम् ॥ सिद्धचारणगन्धर्वैर्मुखैर्नतकन्धैः ४४ सहस्रशिरसंदेवं सहस्रकृष्णगोलिनम् ॥ नीलाम्बरंविमश्वे तंशृङ्गैरवेतमिवस्थितम् ४५ तस्योत्सङ्गेधनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ॥ पुरुषंचतुर्भुजंशान्तं पद्मपत्रारुणेक्षणम् ४६ चारुप्रसन्नवदनं चारुहासनिरीक्ष

आज्ञा मागिके यमुना के तीर पै आयके विधिपूर्वक स्नान करतभये ४० ता जल में गोता मारिके गायत्री को जपकरत अकूरजी राम कृष्ण को देखत भये ४१ वसुदेन के पुत्र रामकृष्ण रथ में बैठे हैं यहाँ कैसे आयागये कदाचित् रथ में से उतर तों न आये मैं निकसि के देखों तो या भकार अकूरजी कहतभये ४२ फेरि अकूरजी निकसि के देखें तो पहिलेकीसी नाई रथ में बैठे हैं ता समय अकूरजी विस्मित होतभये कि जो जलके भीतर मोकों दोनोंको दर्शन भयो सो कथा मिथ्या है ऐसे विचारि के फेरि गोता मारत भये तब सिद्ध चारण गन्धर्व अमुर नतैक सम्पूर्ण रतुतिकरे हैं शेषजी विराजमान हैं ऐसे देखत भये ४३ ४४ हजार हैं शिर जिनके मुकुटसहित हजार फण हैं नील वस्त्र कूं धारण करे कमल के नालकी तुल्य श्वेत है वर्ण जिनको ऐसे नैलास की तुल्य प्रकाशमान देखत भये ४५ कुण्डली करिके विराजमान तिनके ऊपर मेघों के समान श्याम पीतवस्त्रन कों धारण करे चार हैं भुजा जिनके शान्तस्वरूप पुरुष बमल के पत्ताकी तुल्य हैं अक्षय नेत्र जिनके ४६ सुन्दर प्रसन्नहै मुख जिनको सुन्दर हासभरी चितवनि सुन्दर धकुंधी और नासिका सुन्दर कर्ण सुन्दर कपोल और अरुण श्रोष्ठ लम्बी मोटी है भुजा जिनकी रिशाल इदृशं लक्ष्मी

जिनके विराजमान गोल ग्रीवा त्रिवली जायै परिरही ऐसी सुन्दर जिनकी नाभि ग्रीपर के पत्ता की तुल्य चिकनो उदर ४७ । ४८ बृहत् जिनकी कमर और श्रोणी ता करिके शोभायमान हैं दोनों गाठें जंघा जिनकी लम्बी हैं दोनों गुल्फ गिनकी लाल हैं नल जिनके प्रकाश करिके सुन्दर हैं कोमल अंगुली और अंगुठे तिनमें सुन्दर हैं चरणकमल जिनको ४९ । ५० बहुत मोलन के जे मणि हैं तिनसों जटित जो किरिट कड़े वाजुवन्द और कमर में करवनी यज्ञोपवीत मोतिन के हार चरणन में नूपुर चरणन में कुण्डला तिनमें प्रकाशमान हैं ५१ कमल और शृङ्ग चक्र गदाकुं धारण किये शृङ्गलता को चिह्न जाकी छाती में प्रकाशमान कौस्तुभमणि की जिनके धुकधुकी वनमाला धारे ५२ सुनन्द नन्द जिनमें मुखिया ऐसे पापद सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार ब्रह्मा महादेव ते आदिलेके देवताओं के स्वाामी यरीचि को आदिलेके जो नव ब्राह्मण प्रह्लाद नारद वसु जिनमें मुख्य ऐसे उत्तमभक्त हैं तेन्यारेन्यारे भावते निर्मल बचननते जिनकी स्तुति एवम् ॥ सुभूत्रसंचारुकर्णमुकपोलारुणाधरम् ४७ प्रलम्बपीवरभुजं तुङ्गासोरःस्थलाश्रियम् ॥ कम्बुकण्ठनिम्ननाभिं वलिमपल्लवोदरम् ४८ बृहत्कटिनट श्रोणिकरभोरुद्रयान्वितम् ॥ चारुजानुयुगंचारु जङ्घायुगलसंयुतम् ४९ तुङ्गगुल्फारुणनखरातदीधितिभिर्धृतम् ॥ नवाङ्गुल्यङ्गुष्ठदलैर्विलसत्पादपङ्कजम् ५० सुमहार्दमणित्रातकिरीटकटाङ्गदैः ॥ कटिसूत्रब्रह्मसूत्रहारनूपुरकुण्डलैः ५१ आजमानंपद्मकरं शङ्खचक्रगदाधरम् ॥ श्रीवत्सवत्तसम्भ्राज रत्नैस्तुभंवनमालिनम् ५२ सुनन्दनन्दप्रमुखैः पापदैःसनकादिभिः ॥ सुरेशैर्ब्रह्मरुद्राद्यैर्नवभिश्चन्द्रिजोत्तमैः ५३ प्रह्लादनारदवसुप्रमुखैर्भागवतोत्तमैः ॥ स्तूयमानंपृथग्भावैर्वचोभिरमलारामभिः ५४ श्रियापुष्ट्यागिराकान्त्या कीर्त्यातुल्यैर्योजर्जया ॥ विद्ययाऽविद्ययाशक्र्या माययाचनिषेवितम् ५५ विलोकयसुभृशंभीतोभक्त्यापरमयायुतः ॥ हृष्यत्तनूरोभावपरिक्लित्रात्मलोचनः ५६ गिरागद्गदयाऽस्तौपीत्सत्त्वमालम्ब्यसात्वतः ॥ प्रणम्यमूर्ध्नाऽव हितःकृताञ्जलिपुटःशनैः ५७ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वाद्धिष्कृतप्रतियानेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३६ ॥

अक्रूरउवाच ॥ नतोऽस्म्यहन्त्वाऽविलहेतुहेतुं नारायणंपूरुषमाद्यमव्ययम् ॥ यन्नाभिजातादरविन्दकोशादब्रह्माविरासीद्यातप्लोकः १ भूस्तोयम करे हैं ५३ । ५४ श्री पुष्टि वाणी कान्ति कीर्ति लुष्टि इला ऊर्ज्या विद्या अविद्या शक्ति माया ये जिनकों निरन्तर सेवन करे हैं ५५ ऐसे परिपूर्ण श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करिके अत्यन्त प्रसन्न होयके परमभक्ति जिनकों भई आनन्द ते देह में रोमाञ्च जिनके भये भक्ति मूँजेन में आंसू भरि आये ऐसे अक्रूरजी मायेसूं प्रणाम करिके सावधान होयके हाथजोरिके होलेसे सत्त्वगुण को आश्रय लैके गह्वरवाणी सू स्तुति करतभये ५६ । ५७ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादंशमस्कन्धेपूर्वाद्धिष्कृतप्रतियानेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३६ ॥ \* ॥ \* ॥

( चत्वारिंशेततोऽक्रूरः कृष्णमत्वेरवरंवरम् ॥ प्रणम्यभक्त्या तुष्टाव सगुणानुगुणभेदतः १ चालीसवें अध्याय में अक्रूरजी कृष्णजी को ईश्वरों के ईश्वर मानकर सगुण और निर्गुणभेद ते भक्ति मूं प्रणामकर स्तुति करतभये १ ) अव अक्रूरजी कहें हैं समस्त कारणके कारण नारायण आदिपुरुष अविनाशी जो तुमहौ तिनकुं नमस्कार करूं जिनकी नाभि में भयो जो कमल ताते

ब्रह्मा होत भयो ता ब्रह्माते यह लोक उत्पन्न भयो ? पृथ्वी जल अग्नि पवन आकाश अहङ्कार महत्तत्त्व पुरुष मन इन्द्रिय समस्त इन्द्रियन के अर्थ विषय सम्पूर्ण देवता ये जगत् के कारण हैं ते तुम्हारे अंग ते भये हैं २ ब्रह्मा ते आदिलेके जड़ जो सम्पूर्ण तत्त्व हैं ते अपने स्वरूप को नहीं जाने हैं जीव है सो तत्त्वन को जाने है अपने स्वरूप को जाने है माया के गुणन ते वंशो जीव गुणन ते न्यासो ऐसो जो तुम्हारी स्वरूप है ताहि नहीं जाने है ३ ब्रह्मा के उपासक हैं ते महापुरुष ईश्वर तुम हो तुम्हारी पूजा करैहै इन्द्रिय पञ्चभूत देवता इनके साक्षी अन्तर्यामी जो तुमहो तिन की साधु पूजा करे हैं ४ कोई एक कर्मन में निष्ठा जिनकी ऐसे जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य है ते ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद हैं तिनसों यज्ञन को विस्तार करिके अनेक हैं रूप जिनके ऐसे देवतान को नाम लैलै के पूजनकरे हैं ५ कोई एक ज्ञानी पुरुष समस्तकर्मनको त्यागिके समाधि में आय के ज्ञानरूप जो तुमहो तिनको पूजन करे है ६ और जे पुरुष है ते विष्णुकी दीक्षा लैके तुमहीं हो

गिनः पवनः खमादिर्महान जादिर्मन इन्द्रियाणि ॥ सर्वेन्द्रियार्थाविबुधाश्च सर्वे ये हेतवस्ते जगतोऽङ्गभूताः २ नैते स्वरूपं विदुरात्मनस्ते ह्यजादयोऽनात्मतया गृहीताः ॥ अजोऽनुबद्धः स गुणैरजाया गुणारपरिवेदनते स्वरूपम् ३ त्वां योगिनो यजन्त्यद्वा महापुरुषमीश्वरम् ॥ साध्यात्मं साधिभूतञ्च साधिदैवञ्च मा नो ज्ञानयज्ञेन यजन्ति ज्ञानविग्रहम् ६ अन्ये च संस्कृतात्मानो विधिनाऽभिहितेन ते ॥ यजन्ति त्वन्मयास्त्वं वै बहुमूर्त्यैकमूर्त्तिकम् ७ त्वामेवान्ये शिवोक्तेन मार्गेण शिवरूपिणम् ॥ ब्रह्माचार्यं विभेदेन भगवत्समुपासते ८ सर्वेष्वयजन्ति त्वां सर्वदेवमयेश्वरम् ॥ येऽप्यन्यदेवता भक्ता यद्यप्यन्यधियः प्रभो ९ यथाद्रिप्रधानद्यः पर्जन्या पूरिताः प्रभो ॥ विशन्ति सर्वतः सिन्धुं तद्वत्पातयोऽन्ततः १० सत्त्वं रजस्तम इति भवतः प्रकृतेर्गुणाः ॥ तेषु हि प्राकृताः प्रोता आब्रह्मस्थावरादयः ११ तुभ्यं नमस्तेऽस्तु त्वपि पक्रदृष्टये सर्वार्त्मने सर्वधियाश्च साक्षिणे ॥ गुणप्रवाहोऽयमविद्यया कुनः प्रवर्त्तते देव नृतिर्यगात्मसु १२ अ

एक मुख्य ऐसे वैष्णव हैं ते तुमने कही जो नारदपञ्चरात्र में पूजाकी विधि है तासूं वासुदेव सदर्पण प्रद्युम्न अनिरुद्ध इन भेदनकरिके बहुत जिनके रूप नारायण रूप करिके एक जिनको रूप ऐसे तुमहो तिनकी पूजा करैहै ७ और जे पुरुष हैं शिवने कक्षो जो मार्ग हैं तासूं शिवरूप जो तुमहो तिनकी हे भगवन् ! अनेक प्रकारके हैं भेद जाके ऐसो शैवमार्ग पाशुपतमार्ग है ता करिके उपासना करे हैं ८ हे सर्वदेवतारूप ! हे समर्थ ! जे पुरुष और देवतान के भक्त हैं और देवतान में उनके मन लागि रहे हैं वे सबही ईश्वर तुमहो तिनकी पूजाकरे हैं ९ हे प्रभो ! जैसे पर्वतन ते निकसी भेद्य ने जलसूं पूर्ण करी ऐसी नदी चारों ओर ते बरि बरिहिके समुद्र में जा मिली हैं तैसे सब देवतान के मार्ग अन्तमें तुमही में आय मिले हैं ? १० तुम्हारी जो प्रकृति माया ताके सत्त्व रज तम ये तीनों गुण हैं तिन तीनों गुणनमें दृक्त ते आदिलैके ब्रह्मापत्यन्त सब जीव प्रविष्ट भये हैं अर्थात् तीनों गुणन में रहे हैं वे गुण मायामें रहे हैं या क्रमते जो उपाधि को नाश है ताते सब जीव तुमही में प्रवेश करे हैं ? संसार में नहीं लिस है बुद्धि जिनकी सब के आत्मा सब प्राणीन के बुद्धि के साक्षी तुमहो तिनको नमस्कार है अविद्याको भयो गुण को प्रभाव संसार देवता मनुष्य पशु पक्षी

ये देह जिनकी ऐसे प्राणी हैं तिनमें संसार वर्तै है १२ अग्नि तुम्हारी मुख है पृथ्वी तुम्हारी चरण है सूर्य नेत्र आकाश नाभि दिशा कान हैं स्वर्ग मस्तक है देवता तुम्हारी भुजा हैं और समुद्र कोवि हैं पवन प्राणरूप बलरूप कल्पना करो १३ वृक्ष ओषधि देह के रोम हैं मेघ तुम्हारे केश हैं पर्वत तुम्हारे हाड और नख हैं रात्रि दिन पलकनको खोलिवो मूँदिवो है प्रजापति तुम्हारी मेढ़ है चर्पा तुम्हारी वीर्य कहै है १४ तुम जो अविनाशी पुरुष हो तिनमें पोलन सहित लोक हैं ते रचे हैं बहुत जीवन करिके व्याप्त हैं जैसे जलमें छोटें छोटें कीड़ा चले हैं गूलर में गुनगा उड़े हैं ऐसे मनकी दृष्टि ते जानिवे मैं आवो जो तुम हो तिनमें अनन्त ब्रह्मायु है १५ या संसार में खोलिवे के लिये जो जो रूप बरे हैं तिनसों दूर भये हैं शोक जिनके ऐसे लोक हैं ते आनन्दसुं तुम्हारे यश को गावै है १६ सत्यव्रत को माया दिखायवे के लिये मत्स्यरूप धरिके प्रलय के समुद्र में विचरे जो तुम हो तिनको नमस्कार है मधुकैटभ दैत्यनको मारिवे के लिये हयग्रीव रूप जिनने धरयो ऐसे

गिनर्मखन्तेऽवनिरङ्घ्रिरीक्षणं सूर्यो न भो नाभिरथो दिशः श्रुतिः ॥ द्यौः कंसुरेन्द्रास्तववाहोऽर्णवाः कुक्षिर्मरुताणलंप्रकल्पितम् १३ रोमाणि वृक्षौ पथयः शिरोरुहा मेघाः परस्यास्थिनखानि तेऽद्रयः ॥ निमेषणं रात्र्यहनी प्रजापतिर्मेद्रस्तुष्टिस्तव वीर्यमिष्यते १४ त्वय्यवयात्मन पुरुषे प्रकल्पिता लोकाः सपालान् बहु जीवसंकुलाः ॥ यथा जले संजिहते जलौकसोऽप्युदुम्बरे वा मशका मनोमये १५ यानियानी हरूपाणि क्रीडनार्थं विभर्षिहि ॥ तैरा मृष्टशुचो लोका मुदा गायन्ति ते यशः १६ नमः कारणमत्स्याय प्रलयाब्धिचराय च ॥ हयशीर्ष्णे नमस्तुभ्यं मधुकैटभ मृत्यवे १७ अकूपाराय बृहते नमो मन्दरधारिणे ॥ क्षित्युद्धारविहाराय नमः शूकरमूर्त्तये १८ नमस्तेऽद्भुतसिंहाय साधुलोकभयापह ॥ वामनाय नमस्तुभ्यं क्रान्तत्रिभुवनाय च १९ नमो भृगूणां पतये दत्तत्रयवन्धिच्छदे ॥ नमस्तेऽधुवर्ग्याय रावणान्तकराय च २० नमस्ते वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय च ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतां पतये नमः २१ नमो बुद्धाय शुद्धाय दैत्यदानवमोहिने ॥ म्लेच्छप्रायश्चक्रहन्त्रे नमस्ते कल्किरूपिणे २२ भगवज्जीवलोकोऽयं मोहितस्तव मायया ॥ अहंभैरय सद्ग्राहो भ्राम्यते कर्मवर्त्मसु २३ अहं

जो तुम हो तिनको नमस्कार है १७ मन्दराचल पर्वत के धारण करने वाले बड़े कच्छरूप तुम हो तिनको नमस्कार है पृथ्वी के लिये बराहरूप जिनने धरयो ऐसे जो तुम हो तिनको नमस्कार है १८ साधुन के भय के दूर करने वाले अद्भुत दृसिहरूप जिनने धरयो ऐसे जो तुम हो तिनको नमस्कार है वामन होय के तीनों लोक जिनने नाये ऐसे जो तुम हो तिनको नमस्कार है १९ गर्वाली जो क्षत्रियरूप बन है ताके फाटन वाले भृगुवंशीन के पति परशुरामरूप तुम हो तिनको नमस्कार है रावण के मारन वाले रघुवंशीन में श्रेष्ठ रामचन्द्ररूप तुम हो तिनको नमस्कार है २० यादवों के पति वासुदेवरूप तुम हो तिनको नमस्कार है सङ्कर्षणरूप तुम हो तिनको नमस्कार है अनिरुद्धरूप तुम हो तिनको नमस्कार है २१ दैत्य दानवन के मोहन करने वाले शुद्ध बुद्धरूप जो तुम हो तिनको नमस्कार है म्लेच्छ क्षत्रिय होय जाय हैं तिनमें मारोगे ऐसे कलकीरूप तुम हो तिनको नमस्कार है २२ हे भगवन्! यह जीव तुम्हारी मायामें भूलि रहो है मैं मेरो

ऐसे देह मोहादिक में और कर्ममार्गन में भ्रमणकरे है २२ हे विभो ! आत्मा कहिये देह पुत्र घर स्त्री धन भय्या वन्धु इत्यादिक जो स्वसकी तुल्य तिनको सत्यमानिके भ्रमोंहूँ २४ अनित्य आत्मा दुःखरूपहै तिनकूँ नित्य आत्मा सुखरूप जानूँहूँ सुख दुःख में है क्रीड़ा जाके अज्ञान जापें भरो ऐसो जो मैं हूँ सो अपने प्यारे जो तुमहो तिनको नहीं जानूँ हूँ २५ जैसे अज्ञानी पुरुष काहूँसों ढँक्यों जलहै ताकों छोटिके सूर्य की किरणन सों बारू चपके तामें जलके लिये जायहै तैसे माया सूँहके तुम हो तिनको त्यागिके देहादिकन में लागि रखो है २६ कृपणहै बुद्धि जाकी अर्थोर्विषयन में लगिरही है बुद्धि जाकी ऐसो मैं कामकर्मन सूँ चलायमान मन है ताके रोकिये में नहीं समर्थ हों जोवर इन्द्रिय मन कूँ इत उत चलायमान करे हूँ २७ जो मैं पराधीन हों सो तुमहारे चरणन की शरण आयो हों तुमहारे चरणन की शरण तुमहारी कृपाते भयो है यह मैं मानूँहूँ पुरुषको जब संसार छूटनहार होय है तब हे कमलनाभ ! साधुन की सेवा करे है साधुन की सेवा ते तुम में आयके मति लागे है तुमहारी कृपा बिना साधुनकी सेवा भी नहीं वने है तुम में मतिहूँ नहीं लगिसकेहै २८ विज्ञानहै

चातमात्मजागारार्थस्वजनादिषु ॥ भ्रमामिस्वप्रकल्पेषु मूढः सत्यधियाविभो २४ अनित्यानात्मदुःखेषु विपर्ययमतिर्ह्यहम् ॥ छन्दारामस्तमोविष्टो न जानेत्वात्मनः प्रियम् २५ यथाऽबुधो जलं हित्वा प्रतिच्छन्नं तदुद्रवै ॥ अभ्येति मृगतृष्णायै तद्वत्त्वाऽहं पराङ्मुखः २६ नोत्सहेऽहं कृपणधीः कामकर्महतं मनः ॥ रोदुं प्रमाथिभिश्चाक्षौर्द्रियमाणमितस्ततः २७ सोऽहं तवाङ्घ्रियुगलतोऽस्य स तं दुर्गमं तच्चाप्यहं भवदनुग्रहं ईशमन्ये ॥ पुंसो भवेद्यहिं संसराणापवर्गस्त्वय्यञ्जनाभसदुपासनयामतिः स्यात् २८ नमो विज्ञानमात्राय मर्व्वप्रत्ययहेतवे ॥ पुरुषेण प्रधानाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये २९ नमस्तेवासुदेवाय सर्वभूतक्षयाय च ॥ हृषीकेश नमस्तुभ्यं प्रपन्नं पाहि मामं प्रभो ३० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धेषु बार्हस्पत्येऽङ्कस्तुतिर्नाम चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४० ॥ ॐ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ स्तुवतस्तस्य भगवान् दर्शयित्वा जलेव पुः ॥ भूयः समाहरत्कृष्णो नटो नाट्यमिवात्मनः १ सोऽपि चान्तर्हितं वीक्ष्य जलादुन्मज्ज्य

मूर्ति जिनकी समस्त ज्ञानके कारण पुरुष काल माया इनरूप ब्रह्म जो तुमहो और अनन्त जिनकी शक्ति तिनको मैं नमस्कार करूँहूँ २९ हे समर्थ ! हे इन्द्रियनके प्रेरण चारे चिचके अधिष्ठाता ! सब प्राणीन के आश्रय जो तुमहो तिनकूँ मैं नमस्कार करों हूँ और शरण आयो जो मैं हूँ ताकी रक्षा करो ३० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धेषु बार्हस्पत्येऽङ्कस्तुतिर्नाम चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४० ॥ ( एकचत्वारिंशकेऽहं नृजकं भविशुपुरीम् ॥ ततो वरानदात्तुष्टसुदाम्नो वायकस्य च १ सशङ्कमक्रूरमनः प्रवोद्धय स्वधामसन्दर्शनसत्कृपातः ॥ स्वराजधानीमथुरामपश्यदलंकृतानन्तपरोत्सवाङ्ग्याम् २ ) इकतालीसवें अध्याय में कृष्णजी मथुरापुरी में प्रवेशकर धोबी को मारकर सुदामा माली को प्रसन्नहोकर चर देते भये १ और शङ्कासमेत अक्रूरजी के मन को समझाकर अपने धामके दर्शन की अच्छी दयासूँ अलंकृत अपार भारी वत्सवों सों युक्त अपनी राजधानी मथुराजीको देखते भये २ ) अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! स्तुतिकरें जो अमर हैं तिनको भगवान् जलके भीतर रूप दिखायके फेर समेटत भये जैसे नट अपने स्वागको दिखायके समेटे है १ अक्रूरजी श्रीकृष्णचन्द्रको जलमें ते अन्तर्धान भये देखिके उछरि के जल्दी देसी सम्पूर्ण सन्ध्योपासन करिके आ-

रचर्य मानि के रथ में आवत भये २ श्रीकृष्ण अक्रूजी सँ पूछत भये पृथ्वी में आकाशमें जलमें तुमने आश्चर्य्य देखो होय ऐसे मोहि देखौ है ३ या संसार में पृथ्वी में आकाश में जलमें आश्चर्य्य हैं ते सब आश्चर्य्य विश्वरूप तुम हौ तिन में भरे हैं तुम्हारी दर्शन करो मैंने कहा आश्चर्य्य नहीं देखो या प्रकार अक्रूजी कहत भये ४ तो तुम में सब आश्चर्य्य भरे हैं तिन तुम्हारी दर्शन मैंने कियो है ब्रह्मन् ! पृथ्वी में आकाश में या जलमें कहा आश्चर्य्य देखिओ वाक्री रहो है ५ ऐसे कहि के गान्दिनी के पुत्र अक्रूजी रथको छोड़त भये तीसरे पहर के समय रामकृष्ण कूँ मथुरापुरी में लावत भये ६ हे राजन् परीक्षित् ! मार्ग में ग्राम के रहनवारे पुरुष तहाँ तहाँ आय के वसुदेव के पुन श्रीकृष्ण चलदेव कौ देखि के प्रसन्न होय के वा रूप में दृष्टि लगाय के नहीं निकासत भये अर्थात् देखतही ठाढ़े रहि गये ७ तब ताई नन्द गोप सू आदि लेके सब वनवासी आगे आयके मथुराके बागमें कृष्ण चलदेवके आयवे को वैडो देखत ठाढ़े होत

सत्वरः ॥ कृत्वाचावश्यकंसर्वं विस्मितोरथमागमत् २ तमपृच्छद्भृपीकेशः किन्तेदृष्टमिवाद्भुतम् ॥ भूमौवियतितोयेवा तथात्वांलक्षयामहे ३ अक्रूउवा

च ॥ अद्भुतानीहयावन्नि भूमौवियतितोजले ॥ त्वयिविश्वात्मकेतानि किम्पेदृष्टंविपश्यतः ४ यत्राद्भुतानिसन्वर्वाणि भूमौवियतितोजले ॥ तत्वाऽनु

पश्यतोब्रह्मन् किम्पेदृष्टमिहाद्भुतम् ५ इत्युक्त्वाचोदयामास स्यन्दनं गान्दिनीसुतः ॥ मथुरामनयद्रामं कृष्णश्चैवदिनात्यये ६ मार्गेग्रामजनाराजंस्तत्रत

त्रोपसङ्गताः ॥ वसुदेवसुतौवीक्ष्य प्रीतादृष्टिनचाददुः ७ तावद्भ्रजौरुसस्तत्रनन्दगोपादयोऽग्रतः ॥ पुरोपवनमासाद्य प्रतीक्षन्तोऽवतस्थिरे ८ तान्समे

त्याहभगवानक्रूजगदीश्वरः ॥ गृहीत्वापाणिनापाणि प्रश्रितं प्रहसन्निव ९ भवान्प्रविशतामग्रे सहयानः पुरीगृहम् ॥ वयं त्विहावमुच्यथ ततोदक्ष्यामहे

पुरीम् १० अक्रूउवाच ॥ नाहंभवद्भयार्हितः प्रवेक्ष्यमथुराप्रभो ॥ त्यक्तुन्नाहंसिमानाथ भक्तेवैगक्त्वत्सल ११ आगच्छयामगेहान्नः सनाथान्कुर्वधोक्ष

ज ॥ सहाग्रजः सगोपालैः सुहृद्भिश्चसुहृत्तमः १२ पुनीहिपादरजसा गृहान्नो गृहमेधिनाम् ॥ यच्छौचेनानुत्पद्यन्ति पितरः साग्नयः सुराः १३ अवनित्योद्भि

युगलमासीच्छ्लोक्योत्रलिर्भहान् ॥ ऐश्वर्यमनुलंलेभे गतिं चैकान्तिनांतुया १४ आपस्तेऽङ्गवनेज्यस्त्रील्लोकान्छुचयोऽपुनन् ॥ शिरसाधत्तयाः शर्वः

मये ८ जगत्के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण तिन वनवासीनके पास आयके नम्र जे अक्रू हैं तिनको हाथ ते हाथ पकरि मुसिकात से बोलत भये ९ हे काका ! तुम आगे रथ कूँ लिवाय पुरी में जावो अपने घर जावो हम यहाँ तनिक विश्राम लैके पीछे मथुरापुरी कूँ देखेंगे या प्रकार श्रीकृष्ण भगवान् कहत भये १० अब अक्रूजी कहे हैं हे भभो ! तुम बिना अकेलो मथुरापुरी में न जाऊ गो हे नाथ ! हे भक्तन के ऊपर हित के कारनगरे ! तुम्हारी भक्त हूँ ताय त्यागो माति ११ तुम आवो हम तुम घरचलें हे अधोक्षज ! हे सुहृदन में उत्तम ! अपने चलदेव भय्यासहित और ग्वालचालन सहित हमारे घर चलिके हमें सनायकरो १२ तुम चरणनकी रज सँ हम गृहस्थन के घरकूँ पवित्रकरो तुम्हारी चरणन को धोवन तामू पितृ अग्नि देवता वृत्त होय हैं १३ तुम्हारी चरण युगल धोइके राजा बलि को बड़ो पवित्र यश होत भयो वड़े ऐश्वर्य्य कौ प्राप्त भयो अनन्यभक्तनको जो गति मिलै है ताय पावत भयो १४ तुम्हारे चरणारविन्द को धोवन जल गङ्गारूप होयके



त्रिकोकी कं पवित्र करे है जिन जलन कूं शिवजी अपने शिरपै धारण करे हैं जिन जलन के स्पर्शते साठि हजार राजा सगरके पुत्र स्वर्ग कूं गये १५ । १६ अब श्रीकृष्ण भगवान् बोले वड़े भय्या वलदेवजी कों संग लैके में तुम्हारे घर आऊंगो यादवन सों द्रोह करे जो कंसहै ताय मारिके सुहृदनको भिय विस्तार करुंगो १७ या प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण को वचन कबो सुनिके अक्रुजी विमन होयके पुरी में जायके रामकृष्ण कूं लेआयो ऐसे कंस ते कहिके अपने घर कूं जातभये १८ या पीछे तीसरे पहर के समय वलदेव भय्या सहित भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र गोपन कूं सङ्गलैके देखे के लिये मथुरापुरी में जातभये १९ अब मथुरापुरी को कृष्ण ने देखयो ताकों वर्णन करे हैं स्फटिकमणिन के ऊँचे शहरपनाह के और घरन के द्वार वनेहैं तिनमें वड़े वड़े सोने के किंवार चढ़े है और बन्दनवार बंधे हैं ताँके पीतरके अब भरिबै के कोठे वने हैं चारोंओर चौड़ी खाई वनी है लथान दूरिके वाग रमणीय निकट के वाग तिनसों अतिशोभायमान पुरीहै २० सुवर्णके चौर-

स्वर्याताःसगरात्मजाः १५ देवदेवजगन्नाथ पुरायश्रवणकीर्तन ॥ यदूतमोत्तमश्लोक नारायणनमोऽस्तुते १६ श्रीभगवानुवाच ॥ आयास्येभवतो गेहम् हमार्यसमन्वितः ॥ यदुचक्रदुहंतवा वितरिष्येमुहत्प्रियम् १७ श्रीशुकउवाच ॥ एवमुक्तो भगवता सोऽकूरोविमनाइव ॥ पूर्णप्रविष्टःकंसायकर्मविद्यगृहं यौ १८ अथापराद्धेभगवान् कृष्णःसङ्कर्षणान्वितः ॥ मथुरां प्राविशद्रोपैर्दिदृशुःपरिवारितः १९ ददर्शतांस्फाटिकतुङ्गगोपुरद्वारांबृहद्धेमकपाटतोरणाम् ॥ ताम्राकोष्ठांपरिखाडुगसदामुद्यानरम्योपवनोपशोभिताम् २० सौवर्णशृङ्गाटकहर्म्यनिष्कूटैः श्रेणीसभाभिर्भवनैरुपस्कृताम् ॥ वैदूर्यवज्रामलनीलविड्ढुर्मैकुङ्गाहरिर्द्विर्वलभीपुत्रेदिपु २१ सुष्टुपुजालामुखान्धकुडिमेष्वविष्टपारावतवर्हिनादिताम् ॥ संसिक्लश्चापणमार्गचत्वरं प्रकीर्णमाल्याङ्कुरलाजतण्डुलाम् २२ आपूर्णकुम्भैर्दधिवचन्दनोक्षितैः प्रसूनदीपावलिभिःसपल्लवैः ॥ सञ्चन्द्राम्भकमुकैःसकेतुभिःस्वलंकृतद्वारगृहांसपट्टिकैः २३ तांसंप्रविष्टौवसुदेवनन्दनौ वृत्तौवयस्यैर्नन्देववर्मना ॥ द्रष्टुं समीयुस्त्वरिताःपुरस्त्रियोहर्म्याणिचैवारुरुर्दुर्नपोत्सुकाः २४ काश्चिद्विष्यन्मधुतवस्त्रभूषणाविस्मृत्यचैकंयुगलेष्व

स्ता और माहुरानके महल और वड़ेवड़े कारीगर मनुष्यन के मकान तिन करिके शोभायमान पुरी है वैदूर्यमणि हीरा निर्मल नीलमणि मूंगा मोती पद्मा इनके काम जिन में भये महलन के खजने हैं २१ जाली भरोखान में बैठे परैया मोर जहाँ बोले हैं तिनको शोर होयरहो है बिरकाउ जिनमें भये ऐसे राजमार्ग चौराहे गली जामें वने हैं तिनमें पुष्पनकी माला अंकुर धानकी स्त्री-लैं चावल ये मंगलद्रव्य फैलि रहै हैं २२ दही चन्दनसं बिरके फूल जिनपै धरे ऊपर दीवानकी पंक्ति धरी आमकी डार जिनपै धरी ध्वजा जिनमें फहराय दरियाई के कपड़ा जिनकी नारि सों बंधे गुच्छों सहित केरा के हृत्त सुगारी के हृत्त जिनके पास लगे ऐसे जल के भरे कलश द्वारेन के ऊपर धरे ऐसी शोभायमान पुरीहै २३ वरावर के भिन्न कू संगलैके मथुरापुरी के बीच बाजार में होयके निकसे जे वसुदेवके पुत्र श्रीकृष्ण वलदेवहैं तिनके देखिबैकों पुर की स्त्री दौरि दौरिके आवाति भई है राजन् परीक्षित ! देखिने की इच्छा भई जिनकों वे स्त्री महलन पै चढ़तिभई २४ कोई

स्त्री उतावला के बारे ओढ़नीन को पहिर के लहंगान को ओढ़िके हायन के गहने पावन में पहिरके आवत भई कोई एक स्त्री एक हाय में एक पांव में गहतो पहिर के आवतभई कोई एक स्त्री एक कानमें करनफूल पहिरके एक पाव में पाइजेव पहिर के आवत भई और स्त्री एकही आखिमें काजल लगायके आवतभई २५ कोई एक स्त्री भोजन करैहीं ताकूं छोड़िके आवतभई कहूं व्याहोयरहो होजव कृष्ण बलदेव आये सुने तब देखियेको दूहो आपको भोज्यो दुलहिन आपको भाजी बराती आपको भाजे और कोई स्त्री आगनमें तेल लगावैहीं वे विना स्नान करैहीं आवतिभई कोई सोवत में चठिके आवति भई कोई स्त्री अपने बालकन को दूध प्यावैहीं कृष्ण बलदेव आये सुने तब उनको रोवते छोड़िके आवत भई पानों बालक या लिये रोवै हैं तुम तो दर्शनकरिये को चली हमें क्यों छोड़े जाउहो हमको हूं लेचलो २६ मतवारै हाथीकीतुल्य पराक्रम जिनको ऐसे कमलदललोचन श्रीकृष्णचन्द्र दिगई लीलापूर्वक हैं सनि चितबनि सू तिन स्त्रीनके मन लुरावतभये लक्ष्मीको रमावै

आपराः ॥ कृतैकपत्रश्रवणैकनूपुरानाङ्गाद्वितीयं त्वपराश्रलोचनम् २५ अश्रन्यएकास्तदपास्यसोत्सवा अभ्यज्यमाना अकृतोपमञ्जनाः ॥ स्वपत्यउ  
तथायनिशम्यनिःस्वनं प्रपाययन्त्योऽभमपोह्यमातरः २६ मनांसितासामरविन्दलोचनः प्रगल्भलीलाहसितावलोकनैः ॥ जहारमत्तद्विरेद्विरेद्विक्रमो  
दृशांददब्धैरिमणात्मनोत्सवम् २७ दृष्ट्वा मुहुःश्रुतमनुद्रुतचेतसस्तं तत्प्रेक्षणोत्स्मितसुधोक्षणलब्धमानाः ॥ आनन्दमूर्त्तिमुपगुह्यदृष्टात्मलब्धं हृष्यस्व  
वोजहुरनन्तमरिन्दमाधिम २८ प्रासादशिलारूढाः प्रीत्यरुक्लमुत्सवाभुजाः ॥ अभ्यवर्पन्सौमनस्यैः प्रमदावलकेशवौ २९ दृष्ट्यक्षनैः सोदपात्रैः स्रगन्धैर  
भ्युपायनैः ॥ तावानर्च्यैः प्रमुदितास्तत्र नन्नाद्विजातयः ३० ऊचुः पौराअहोगोप्यस्तपः किमचरन्महत ॥ याह्येतावनुपश्यन्ति नरलोकमहोत्सवौ ३१ रज  
कंकञ्चिदायातं रङ्गकारंगदाग्रजः ॥ दृष्ट्वाऽयाचतवासांसि धौतान्यन्युत्तमानि च ३२ देह्यावयोः समुचितान्यङ्गवासांमि चाहंतोः ॥ भविष्यति परं श्रेयो दातु  
स्तेनान्नसंशयः ३३ सयाचितो भगवता परिपूर्णैर्न सवर्तः ॥ साक्षे पुरुषितः प्राह भृत्योराज्ञः सुदुर्मदः ३४ ईदृशान्येव वासांसि नित्यंगिरिवनेचराः ॥ परिधत्त

ऐसो अपनो रूप है तासू तिन स्त्रीनकी आखिनको आनन्द देत भये २७ बर बर बातें सुनिके ता श्रीकृष्णमें लगे हैं चिच जिनके और तिनकी चितवनि मुसिकानिरूपी अमृतको जो सींचिको है ता सों पायो है सत्कार जिनने रोमाञ्च जिनके होय आये ऐसी स्त्री श्रीकृष्णको देखिके नेत्रद्वारा हृदय में ले जायके आनन्दरूप श्रीकृष्ण को आलिङ्गन करिके हे काम लोभादिकन को दण्ड देनवारै राजन परीचित ! श्रीकृष्ण के विना मिले तें भई जो कामदेव की पीड़ा है ताको त्यागत भई २८ महलन की शिखर पै चढ़ी प्रसन्नता सों प्रफुल्लित हैं नेत्र जिनके ऐसी स्त्री बलदेव श्रीकृष्ण के ऊपर फूल वर्षावत भई २९ दही अक्षत जलके भरे पात्र माला चन्दन भेंट लैके ब्राह्मण वैश्य प्रसन्न होय के कृष्ण बलदेव कूं पूजन करत भये ३० समस्त मथुरावासी आश्चर्य मानि के यह कहत भये गोपीन ने कहा उत्कृष्ट तप कियो है जे गोपी मनुष्यलोक को वड़े उत्सवरूप श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनकूं देखे हैं ३१ वस्त्रन को धोवनवारो और रगनवारो ऐसो एक धोवी मार्ग में सम्मुख आवतो देखिके ताके सुये अतिउत्तम जे वस्त्र हैं तिनकूं श्रीकृष्णचन्द्र भोगत भये ३२ हे धोवी ! पात्र हम हैं तिनके योग्य जे वस्त्र हैं तिन तू दे तो दाता को अभी कल्याण होयगो यामें

सन्देह नहीं है ३३ सप्त ओरते परिपूर्ण भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र धोवी ते वस्त्र माँगे तत्र कंस को दहलुआ बड़ो जाके गर्व वह धोवी क्रोध करिके डाटि के वोलात भयो ३४ नित्य पर्वतन के वन के फिनिनवारे ऐसीही कपड़ा पहिरनवारे हौं हे उद्धुतो ! राजा के वस्त्रन पै क्यों मन चलायो हौं ३५ हे मुखौ ! तुम यहाँ ते शीघ्रही निकसि जावो जो अपनो जीवन चाहौ तो ऐसे फेरि मति मँगियो राजा कंस के प्यादे बहुत फिरे हैं जो धूम करे है ताहि वीरे हैं मारे हैं लुटे हैं तुम तो ये वस्त्र माँगेहौ मोहि यह दीखे है कि तुम्हारेऊ कोई उत्तारि लेइगो ३६ या प्रकार वकै जो धोवी है ताके शिर कौ देवकी के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र कोप करिके अपने हाथ के थाप सँ काटत भये ३७ जब मुख्य धोवी मारो गयो तब वाके दहलुवा धोवी हैं ते वस्त्रनकी पोट पटकि पटकिके चारोंओरको भाजतभये ता सपय श्रीकृष्ण तथा बलदेव जी अपने प्यारे वस्त्र हैं तिनको पहिर के वाकी जे रहे ते गोपनको देत भये और जे रहे ते बहा ही छोड़त भये ३८ ३९ वस्त्र पहिर के चले ताके पीछे प्रसन्न

किमुदुत्ताराजद्रव्याण्यभीप्सथ ३५ याताशुचालिशामैवं प्रार्थयद्विजिजीविषा ॥ वध्नन्तिघ्नन्तिलुम्पन्ति दुसंराजकुलानिवै ३६ एवंविकृत्यमानस्य कुपितोदेवकीसुतः ॥ रजकस्यक्रात्रेण शिरःकायादपातयत् ३७ तस्यानुनीविनःसर्वे वासःकोशान्विमृज्यवै ॥ दुद्रुवुःसर्वतोमार्गं वासांसिजगृहेऽन्यतः ३८ वसित्यात्मप्रियेवस्त्रे कृष्णःसङ्कर्षणस्तथा ॥ शेषायादत्तगोपेभ्योविमृज्यभुविकानिचित् ३९ ततस्तुवायकःप्रीतस्तयोर्वेपमकल्पयत् ॥ विचित्रवपुश्चैत्रैरैराकल्पैरनु रूपतः ४० नानालक्षणेवेषाभ्यां कृष्णरामौविरजतुः ॥ स्वलंकृतौबालगजौपर्वणीवसितैरौ ४१ तस्यप्रसन्नोभगवान् प्रादात्सारूप्यमात्मनः ॥ श्रियंचपरमालोकैवलैश्वर्यस्मृतीन्द्रियम् ४२ ततःसुदाश्रोभवनंमालाकारस्यजग्मतुः ॥ तौदृष्ट्वाससमुत्थाय ननामशिरसाभुवि ४३ तयोरासनमानीय पाद्यञ्चायाहणादिभिः ॥ पूजांसानुगयोश्चक्रे सक्ताम्बूतानुलेपनैः ४४ प्राहनःसार्थकंजन्म पावितंचकुलंप्रभो ॥ पितृदेवर्षयोगह्यं तुष्टाह्यागमनेनवाम् ४५ भवन्तौकिलविश्वस्य जगतःकारणंपरम् ॥ अवतीर्णविहांशेनक्षेममायचभवायच ४६ नहिवांविपमादृष्टिः सुहृदोर्जगदात्मनोः ॥

जो दर्जी है सो तिन राम कृष्ण को लाल हरे पीरे रंग के जे वस्त्र है तिनके माला चम्पकली बाजुबन्द अनेक प्रकार के आभूषण बनाय के शोभा करत भयो ४० कृष्ण बलदेव दोनौ भय्यानेत प्रकार के दर्जी ने बनाये जे वस्त्रन के आभूषण तिन सौ शोभायमान लगे है जैसे पर्व में सामरे गोरे शूद्रारकिये हाथी के छोना सुन्दर लगे हैं ४१ ता दर्जी के ऊपर प्रसन्न भये जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र है सो अपनी वरावर को रूपताय देत भये या लोक में सम्पत्ति देत भये बल ऐश्वर्य स्मरण और हाथ पाँव नाक कान ओंखि जे अच्छे वने रहें इनकी चतुराई देतभये ४२ ताके पाछे सुदपाग माली के घर कृष्ण बलदेव जातभये तिन तौ देविके धरती में शिर लगाय प्रणाम करत भयो ४३ तिन कृष्ण बलदेव कौ आसन विश्वाय के बैठवत भयो और पाद्य अर्घ इत्यादिक पूजा की सामग्रीन सँ पूजा करत भयो माला पान की वीरी चन्दन इत्यादिक अर्पण करत भयो ४४ माली कहत भयो हे प्रभो ! तुम्हारे आइसे सँ हमारो जन्म सार्थक भयो कुल पवित्रभयो और हमारे पितर देवता ऋषि सन्नुष्ट भये ४५ तुम निश्चय या ससार के परणकारण हो जगत् के कल्याण के निमित्त और वृद्धि के लिये अंश करिके प्रवतार लिये हौ ४६ जगत् के हितकारी आत्मा तु-

महीं हो तुम्हारे विषमदृष्टि नहीं है सब प्राणीन में सम बतोंही भजन कनकरनेकों भजो हो ४७ तुमपो भृत्यको आज्ञा करो में तुम्हारी कदा पूजा करो पुरुषकों जो तुम्हारी दर्शन होइ यह वदो अनुग्रह है ४८ हे राजन् परीक्षित् । या प्रकार जानिके प्रसन्न है मन जाको ऐसो सुदामा माली सुन्दर सुगन्धिन के फूलन की वनी जो माला है तिनै निवेदन करत भयो ४९ ते माला पहिरके भिन्न संहित सुन्दर लगी प्रसन्न भये जे वर के देनवारे राय कृष्ण है ते शरण आयो जो सुदामा है ताकुं वर देत भये ५० सुदामा मालीभी सब के आत्मा श्रीकृष्ण है तिनमें डारी न डरे ऐसी भक्ति गौगत भयो भगवान् के भक्तन में स्नेह रहै और जीवमात्र में दया रहै यह वर भोगत भयो ५१ ता माली को यही वर दैके और ताके वंश में सर्वदा रही आवै ऐसी सम्पत्ति दै ते चल आयु यश शोभा दैके चलदेवजी कों संग लैके ताके घरते निकसत भये ५२ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्योदशस्कन्धेपूर्वोद्धेपुरप्रवेशोनामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥ \* ॥

समयोःसर्वभूतेषु भजन्तं भजतोरपि ४७ तावाज्ञापयतंभृत्यं किमहंकरवाणिषाम् ॥ एंसोऽत्यनुग्रहोत्प्रेष भवद्विर्यत्रियुज्यते ४८ इत्यभिप्रेत्यराजेन्द्रमुदा  
माभीतमानसः ॥ शस्तैःसुगन्धैःकुसुमैर्मालांविश्रिचितांदौ ४९ ताभिःस्वलंकृतौप्रतीतौ कृष्णरामौसहानुगौ ॥ गणताग्रपन्नाय ददतुर्वरदौवरान् ५० सो  
ऽपिवन्नेऽचलांभक्तिं तस्मिन्नेत्राखिलात्मनि ॥ तद्भक्तेषुचसौहार्दं भूतेषुचदयांप्रसम् ५१ इतितस्मैवंदत्त्वा श्रियंचान्वयवर्द्धिनीम् ॥ वलमायुर्यशःकान्ति  
निर्जगामसहाग्रजः ५२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वोद्धेपुरप्रवेशोनामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥ \* ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथब्रजन् राजपथेनमाधवः स्त्रियंगृहीताङ्गविलेपभाजनम् ॥ विलोकयकुञ्जयुवतीवराननांप्रच्छयान्तींमहसन्नुसप्रदः १ कात्वंव  
रोर्वेतुहानुलेपनं कस्याङ्गनेवाऋथयस्वसाधुनः ॥ देहावयोरङ्गविलेपमुत्तमश्रेयस्ततस्तेनचिराद्भविष्यति २ ॥ सैनध्रुवाच ॥ दास्यस्म्यहंसुन्दरकंस  
सम्पत्ता त्रिवक्रनामाह्यनुलेपकर्मणि ॥ मद्भावितांभोजपतेरतिप्रियं विनायुवांकोऽन्यतमस्तदर्हति ३ रूपेशलमाधुर्यहसितालापवीक्षितैः ॥ धर्पिता

( द्विचत्वारिंशेऽध्यायेऽनुप्रासोऽभिदा ॥ वधस्तद्विज्ञाणां कंसारिष्टरङ्गोत्सवादिच १ वयालीसवें अध्याय में कुवरी को कृष्णजी सीधीकर धनुष् को तोड़कर धनुष् के रत्नों को मारतेभये और कंस को अरिष्ट और रत्नभूमि के उत्सवादिका वर्णन है ? ) श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित् । माली के घरते निकसे पीछे मयुवश में भये मुख के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र सो राजमार्ग जो बाजार है तामें आयके ग्रहण किये हैं चन्दन के पात्र जाने सुन्दर है मुख जाको ऐसी चली आवै जो तरुण कुवरी स्त्री है ताको देखिके हसिके पूज्यतभये ? सुन्दर है जेवा जाकी ऐसी स्त्री तू कौनही है चन्दन कौन को है हमारे आगे भलेप्रकार कटो यह उचम चन्दन हफकों देइ तौ अभी तेरो कल्याण होयगो २ यह सुनिके कुवरी बोली हे सुन्दर । मैं कंसकी दासीहो कुवरी मेरो नापहैं चन्दन विसिधो यह मेरो काम है मेरो विसो चन्दन कंस को अन्धो लगै है अप तुम विना और चन्दन लगायवे कों कौन पात्र है ३ सुन्दररूप सुकुमारि और रसिकता हैसनि बोलनि चितवनि सुं

मोहित है मन जाको ऐसी कुवरी कृष्ण वलदेव कों गहरो चन्दन देत भई ४ केसर जाँमें परी ऐसो चन्दन सामरे अङ्ग में श्रीकृष्ण ने लगायो कस्तूरी जाँमें मिली ऐसो चन्दन गोरे अङ्ग में बलदेवजी ने लगायो नाभिते ऊपर के अङ्गन में चन्दन लगायके दोनो भय्या बहुत सुन्दर लगत भये ५ श्रीकृष्ण वन्द भगवान् अपने दर्शन को फल दिखायने के लिये सुन्दर जाको मुल तीन स्थान ते देखी जो कुञ्जा है ताकू सीधी करिवे को मन करत भये ६ कुञ्जा के पावन को अपने चरणते दाविके दो अंगुली जाँमें ऊँची करी ऐसे हाथ कों ओढ़ी के नीचे लगायके श्रीकृष्ण कुञ्जा के देह को सूयो मरत भये ७ ता समय मूधे वरावर हैं अङ्ग जाके बड़े हैं कपर और स्नन जाके ऐसी कुञ्जा श्रीकृष्ण के स्पर्श करते शीघ्र उत्तम स्त्री होत भई ८ सूधी भई पीछे रूप गुण उदारता ये सब कुञ्जा में आगये तब कामदेव जाके होय आयो वह कुञ्जा डुपट्टा को पकरिके श्रीकृष्ण ते बोलत भई ९ हे वीर ! तुम आवो घर कों चलो तुम मो पै छोड़ो नहीं जावो हौं हे पुरुष नमैं श्रेष्ठ ! तुमने मेरो

रमादौ सान्द्रमुभयोरनुलेपनम् ४ ततस्तावद्भ्रमणेण स्वर्णैतरशोभिना ॥ सम्प्राप्तपरभागेन शुशुभतेऽनुरञ्जितौ ५ प्रसन्नो भगवान् कुञ्जां त्रिवक्रां रुचिराननाम् ॥ ऋज्वीकर्तुमनश्चक्रे दर्शयन् दर्शने फलम् ६ पद्भ्यामाक्रम्य प्रपदे द्रव्यं ह्युत्तानपाणिना ॥ भगृह्याचिवुकेऽध्यात्ममुदनीनमदच्युतः ७ सातदर्जसमानाङ्गी बृहच्छ्रेणिपयोधरा ॥ मुकुन्दस्पर्शनत्सद्यो बभूव प्रमदोत्तमा ८ ततोरूपगुणौ दार्थ्यसम्पन्ना प्राह केशवम् ॥ उत्तरीयान्तमाकृष्य स्मयन्ती जातहृच्छया ९ एहि वीर गृह्यामो नत्वा त्यक्तुमिहोत्सहे ॥ त्वयो न्मथित चित्तायाः प्रसीद पुरुषर्षभ १० एवं स्त्रियाया च्यमानः कृष्णो रामस्य पश्यतः ॥ मुखं वीक्ष्यानुगानां च प्रहसंस्तामुवाच ह ११ एष्यामि ते गृहं सुभ्रः ॥ पुंसामाधिविकर्शनम् ॥ साधितार्थो गृहाणां नः पान्थानां त्वंपरायणम् १२ विमृज्य माध्यावायया तां ब्रजन्मार्गे वाणिक्पथैः ॥ नानोपायनताम्बूलसगन्धैः साग्रजोऽर्चितः १३ तद्दर्शनस्मरक्षोभादात्मानं न विदन् स्त्रियः ॥ विस्रस्तवासः कबरवलयालेख्यमूर्त्तयः १४ ततः पौरान् पृच्छमानो धनुषः स्थानमच्युतः ॥ तस्मिन् प्रविष्टो ददृशे धनुर्देवदुर्भिमर्गसमच्चितं परमर्द्धिम

मन चलायमान कीनो है मेरे ऊपर प्रसन्न होउ १० या प्रकार स्त्री ने कही ता समय श्रीकृष्ण चन्द्र बलदेवजी मुख देखिके भित्रन को मुख देखिके मुसिकाय के कुञ्जा ते बोलत भये ११ सुन्दर है भुकुटी जिनकी यामें कहा कबो तुम्हारी भुकुटी हमारे मन कों खेचे है हमारो उपरना काहे को खेचे हौं कंस कों मारिके अपने मुहदन को कार्य सिद्ध करिके पुरुषन के मन के दुःख कों दूर करन वारो तुम्हरो घर है तामें आँखो जल बरखवारी काहू सों जान नहीं पहिचान नहीं हमारे घर नहीं परदेशी हैं तिनकू तुमहीं आश्रय हौं तुम्हारे न आवोगे तो जाईगे कहीं मीठे मीठे यवन कहिके कुञ्जा कों छोड़िके चले तब बिनयान ने अनेक भेंट पान माला चन्दन लैके बलदेव सहित कृष्णको पूजन कस्यो १२ १३ श्रीकृष्ण के दर्शन करे तें व्याप्यो जो कामदेव ताके जो भते खो आये कू नहीं जानत भई वख जिनके ढीले होय गये चोटी खुलिगई कङ्कण विसल आये चित्रसी लिखी ठाढ़ी रहिगई १४ ता पीछे अच्युत श्रीकृष्ण मथुरावासीन ते धनुष को ठिकानो पूँछत पूँछत गये धनुषसी शाला में इन्द्र के धनुषकी तुल्य अहुत धनुषरो देखत भये १५ हजारन पुरुष जाकी रत्नाकरें हैं पूजा होइरही है चढ़ी जाकी शोभा है पुरुषन ने पनेकरो तौ भी श्रीकृष्ण जो रावरी धनुषको

उठावत भये १६ खेलकरत चारों हाथ ते उठायके चिह्ना चढ़ाईके पलभर में मनुष्यन के देखत देखत वीचते लैचिके जैसे मतवारो हाथी गाढ़े कू तोरहारो है तैसे तोरिके डारतभये १७ जा समय धनुष दूधो तब वाको शब्द आकाश में और स्वर्ग में पृथ्वी में दिशान में व्याप्त होतभयो ऐसे शब्दको सुनिके कंस को भय होतभयो १८ धनुष के रत्न जे हैं ते अपने अनुचरनसहित को मरि के हाथन में हाथ लेके श्रीकृष्ण के पकरिवेके लिये छेउ लेउ ऐसे कहत चारों ओर ते घेरतभये १९ घेर लेने के पीछे श्रीकृष्ण बलदेव दोनों भय्या मारिवे को पकरिवे को आये जे पुरुष हैं तिन देखि के क्रोध करिके धनुषको एक दूक लैके तिन पुरुषन को मारतभये २० कंसने भेजी जो सेना है ताकू मारिके धनुषशालाके बाहर निकसिके मथुरापुरी कम्पित देखिके हर्षित होयके चितवतभये २१ मथुरापुरी के वासी स्त्री पुरुष राम कृष्णको अद्भुत कर्म देखिके घृष्टा देखिके पराक्रम देखिके देवतान में उत्तम मानतभये २२ ते कृष्ण बलदेव अपनी इच्छापूर्वक निचरे हैं इतने में सूर्य

त ॥ वार्यमाणोदभिःकृष्णः प्रसह्यधनुशददे १६ करेणवागेनसलीलमुद्धृतंसज्यञ्जकृत्वा निमिषेण पश्यताम् ॥ नृणां विहृष्यप्रबञ्जमभ्यतोयथेशुद  
रङ्गमदकथुरक्रमः १७ धनुषोभज्यमानस्य शब्दः खरोदसीदिशः ॥ पूरयामासयंश्रुत्वा कंसस्त्रासमुपागमत् १८ तद्रक्षिणाः सानुचराः कुपिता आतापि  
नः ॥ गृहीतुकामा आवन्नृगृह्यतां वध्यतामिति १९ अथतान्दुराभिप्रायान् विलोक्यबलकेशवौ ॥ क्रुद्धौ धन्वन आदाय शकलेतांश्च जघ्नतुः २० बलञ्जकंस  
प्रहितं हत्वाशालामुखात्ततः ॥ निष्क्रम्य चैरतुह्यौ निरीक्ष्य पुरसम्पदः २१ तयोस्तदद्भुतं वीर्यं निशाम्य पुरवासिनः ॥ तेजः प्रागल्भ्यरूपञ्च मे निरेविवु  
धोत्तमौ २२ तयोर्विचरतोः स्वरमादित्योऽस्तमुपेयिवान् ॥ कृष्णरामौ वृत्तौ गोपैः पुराञ्चक्रटमीयतुः २३ गोप्यो मुकुन्दविगमे विरहातुशया आशासनाशि  
पञ्चतामधुर्यभूवन् ॥ संपश्यतां पुरुषभूषणगात्रलक्ष्मीं हित्वेतराञ्च भजतश्चक्रमेऽयं श्रीः २४ अविक्ताङ्गियुगलौ मुक्ताक्षीरोपसेचनम् ॥ ऊषतुस्तां सुव्रं  
त्रिं ब्रान्ता कंसचिकीर्षितम् २५ कंसस्तु धनुषोभङ्गं रक्षिणां स्वं बलस्य च ॥ वधं निशम्य गोविन्दरामविक्रीडिनं परम् २६ दीर्घप्रजागरो भीतो दुर्निमित्तानि  
र्मतिः ॥ बहून् यचष्टोभयथा मृत्योर्दौत्यकराणि च २७ अदर्शनं स्वशिरसः प्रतिरूपे च सत्यपि ॥ अमरस्यपि द्वितीये च द्वैरूपं न्योति पातथा २८ छिद्रप्रतीनि

अस्त होतभयो सन्ध्या समय भयो तब कृष्ण बलदेव दोनों भय्या गोपन को सफल के मथुरापुरी ते निकसे जहां गाढ़ा छूटे हैं तहां आवत भये २३ श्रीकृष्ण कूटन में ते निकसती घेर गोपीन ने विरह में व्याकुल होयके जे जे चारों कहीं ते सबही श्रीकृष्ण के आंगकी शोभा देखिके मथुरावासीन कू साची होत भई लक्ष्मीजी भजे जे ब्रह्मादिक हैं तिन छोटिके जाही रूप की चाहना करे हैं २४ धोये हैं चरण जिनने ऐसे श्रीकृष्ण बलदेवजी दूधभात को भोजन करिके कंसको विचार जानिके वा राजिकों सुखते वसत भये २५ कंस धनुष को दूधो सुनिके वाके रखवारेन को मरयो सुनिके अपनी सेना को बध सुनो यह कृष्ण बलदेव को केवल खेल है पराक्रम नहीं हो यह सुनिके चिन्ताके मारे राजिको निद्रा नहीं आई डरपयो दुष्ट है बुद्धि जाकी ऐसी कंस मृत्युके जतावन चारे जागत में सोवत में बहुतसे खोटे स्वप्न हैं तिन देखत भयो २६ २७ दर्पण में जल में मुख देखे तो अपनी शिर नहीं दिखाई देई है चन्द्रमा सूर्य दो दो रूप नहीं हैं परन्तु वाक्यों दो दो दि-



खाई दिये २८ अपनी परछाई में छिद्रदीप्ति अंगुरी देके कान में देवे तो धुं धुं शब्द नहीं सुनो जाय वृक्ष सोने के दिखाई दिये कीचमें रेत में अपने पावन के खोज न दीखे २९ स्वप्नमें भूत प्रेत छाती से लगाय लगाय के मिले हैं गथा पै चढ़ो विपकों खात गुड़हर के फूलन की माला पहिरे अकेलो तेलमें भीड़्यों नन दक्षिणदिशाकों चलयो जाय है यह स्वप्न देखत भयो ३० और ऐसे ऐसे स्वप्न में जागत में खोटे खोटे सगुन देखिके गृह्युतें डरप्यो जो कंस हैं सो चिन्ता के गारे सोचत न भयो ३१ हे कुरुवंश भये राजन् परीक्षित ! जैसे तैसे करिके वह रात्रि वीथी सरेरो भयो जलमें तें सूर्ये निमग्नो ता समय कंस मछुनकी कुरती लड़वायवैको जो बड़ो उत्सव है ताकों करावत भयो ३२ पुरुष रत्नभूमि की पूजा करत भये तुरही भेरि वज्रतर्भई माला पताका वस्त्रनकी वन्दनवार इन्ते मन्वान शोभायमान करे ३३ तिन मन्वान के ऊपर ब्राह्मण क्षत्रिय जिनमें मुख्य ऐसे पुरवासी देशनासी आय के सुखपूर्वक बैठत भये ३४ कंस अपने प्रधान दीवान कू संगलैके

रक्षायांप्राणघोपानुपश्रुतिः ॥ स्वर्णप्रतीतिर्वक्षेपु स्वपदानामदर्शनम् २६ स्वप्नेप्रेतपरिषद्ग्नः खरयानंविपादनम् ॥ यायान्नलदमाल्येकस्तैलाभग्नकोदि  
गम्भरः ३० अन्यानिचेत्थंभूतानि स्वप्नजागरितानि च ॥ पश्यन्मरणसंस्तो निद्रालेभेनुचिन्तया ३१ व्युष्टायानि शिकौरुय मूर्ध चाङ्गवःसमुत्थिते ॥  
कारयामासैकंमल्लक्रीडामहोत्सवम् ३२ आनन्दुःपुरुषाङ्गं तूर्यैर्धरनजग्निरे ॥ मञ्चाश्चालंकृताःस्त्रिभिः पताकैश्चैलतोरणैः ३३ तेषुगौराजानपदान्न  
ह्यक्षत्रपुरोगमाः ॥ यथोपजोपंविविशूराजानश्चकुनासनाः ३४ कंसःपरिबृतोऽमात्यैराजमञ्चउपाविशत् ॥ मण्डलेश्वरमध्यस्थो हृदयेनविदूयता ३५ वा  
द्यमानेषुतूर्येषु मल्लतालौचरेषु च ॥ मल्लाःस्वलंकृतादृताः सोपाध्यायाःसमागताः ३६ चाणूरोमुष्टिकःकूटः शलस्तोशलएव च ॥ तआसेदुरुपस्थानं वल्लगु  
वाद्यप्रहर्षिताः ३७ नन्दगोपादयोगोपाभोजराजसमाहुताः ॥ निवेदितोपायनास्तएकस्मिन्मञ्चआविशन् ३८ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्क  
न्धेपूवर्माद्धिमल्लगङ्गोपवर्णनं नामद्वित्रव्यारिणोऽध्यायः ४२ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथकुण्णश्रमश्च कुनशौचौपरन्तप ॥ मल्लकुन्डभिर्निर्घोपं श्रुत्वादद्रुमुपेतुः १ रङ्गद्वारंममासाद्य तस्मिन्नागमवस्थितम् ॥ अपश्य  
खण्डपण्डलन के जे राजा हैं तिन के बीच में एक राजमन्वान है ताके ऊपर बैठत भयो भय के गारे हृदय जाको कम्पित है ३५ नगाड़े वजे हैं मल्ल चट चट खम्भ ठोके हैं जोधियान कूं पहिर के सिन्दूर को पिन्दा लगाय के धूरि मलि के छोटी २ जिनके चुटिया मड़ो जिन के गर्न ऐसे उस्तादन को संग लैके आवत भये ३६ अब मल्लन के नाम लेई है चाणूर मुष्टिक कूट शल तोशल ये अखाड़े में आवत भये मनोहर राजेन कू सुनि के हर्ष जिनके भयो है ३७ कंसके बुलाये नन्दगोप सों आदिलैके और गोप है ते कंस को भेट देके एक मन्वान पै बैठत भये ३८ इति श्री-  
मन्महाभागवतार्थरूपियादशमस्कन्धेपूवर्माद्धिमल्लगङ्गोपवर्णनं नामद्वित्रव्यारिणोऽध्यायः ४२ ॥

( त्रित्रित्यारिणोः इत्येवमत्रोद्गारापेक्षयाः ॥ राजमन्वेशमौभाग्यं चाणूरेण च भाषणम् १ तंतालीसवें अध्यायमें वलदेव और कुण्णजी कुलयापीड़ हाथी को मार कर रत्नभूमि में प्रवेश करते भये

और वहां पर चारु संचालाप भयो है १) अब श्रीकृष्णदेव जी कहे हैं शत्रुन के तपावनवार राजा परीक्षित ! योधी काँ मारिके हमने अपनो ऐश्वर्य जतयो तथापि हमारे माता पिता को नहीं छोड़े है और हम कूँ माख्यो चाहे है याते या मामा के मारिवेमें हमें कुछ दोष नहीं है या प्रकार दोष के दूर करिवे को विचार जिनने विचारो ऐसे कृष्ण बलदेव दोनों भय्या जहाँ बल स्वप्न दोके हैं नगाड़े बजे हैं तिनको शब्द सुनि के देखिबे कौं जात भये ? श्रीकृष्णचन्द्र रङ्गभूमिके दरवाजे पै जाय के देखें तो कुवलयपीड हाथी ठाढ़ो है कैसो हाथी है महा-वतने अपने ऊपर हिलायो है २ शूरेके वंश में भये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र फेंद घोषि के मुख पै छुटिरहोँ जे कुटिल अलङ्कार हैं तिनकाँ सम्हारि के गलेकी लम्बी माला काँ जनेऊ की तुल्य कंधान पै पहिर के मेघ की तुल्य गर्ज के बोलत भये ३ अरे महावत ! हमकाँ मार्ग दे शीघ्र हाथी कू हटाय ले नहीं हटावेगो तो हाथीसाहेत तोकाँ यमलोककाँ पठाऊँगो ४ या प्रकार डाटि के जब कही ता

तकुवलयपीडं कृष्णोऽम्बष्ठप्रचोदितम् २ वद्धापरिकरं शौरिः समुहकुटिलालकान् ॥ उवाच हस्तिपंवाचा मेघनादगभीरया ३ अम्बष्ठाम्बष्ठमार्गानौ देहाप क्रममाचिरम् ॥ नोचेत्सकुञ्जं त्वाद्यनयामियमसादनम् ४ एवं निर्भर्त्सितोऽम्बष्ठः कुपितः क्रोपितं गजम् ॥ चोदयामास कृष्णाय कालान्तकयमोपमम् ५ करीन्द्रस्तमभिद्रुत्य करेण तरसाऽग्रहीत् ॥ कराद्विगलितः सोऽमुं निहत्याडिष्वलीयत ६ संक्रुद्धस्तमचक्षाणो घ्राणदृष्टिः संकेशवम् ॥ परामुशत्पुष्करेण स प्रसह्यविनिर्गतः ७ पुच्छे प्रगृह्यातिवलं धनुषः पञ्चविंशतिम् ॥ विचकर्षयथानागं सुपर्णइवलीलया ८ सपर्यावर्त्तमानेन सव्यदक्षिणतोऽव्युतः ॥ वभ्राम भ्राम्यमाणेन गोवर्त्सेनेव बालकः ९ ततोऽभिमुखमभ्येत्य पाणिना हृत्यारणम् ॥ प्राद्वनपातयामास स्पृश्यमानः पदे पदे १० सधावनक्रीडया भूमौ पतित्वा सहस्रोत्थितः ॥ तं मत्वा पतितं क्रुद्धो दन्ताभ्यां सोहनतक्षितिम् ११ स्वविक्रमे प्रतिहतो कुञ्जोन्द्रेऽत्यमर्षितः ॥ चोद्यमानो महामात्रैः कृष्णमभ्यद्रवदुपा १२ त मापतन्तमासाद्य भगवान्मधुमुदनः ॥ निगृह्य पाणिना हस्तं पातयामास भूतले १३ पतितस्य पदाक्रम्य मुगेन्द्रइवलीलया ॥ दन्तमुत्पाद्य तेनेभं हस्तिपां

समय महावत कुपित होय के कालमृत्यु यम इनकी तुल्य है क्रोध जाके ऐभ हाथी को श्रीकृष्णचन्द्रके ऊपर हूलत भयो ५ हाथी श्रीकृष्ण के पास जाय के जल्दी देसी अपनी सूड में पकरत भयो श्रीकृष्ण हाथी की सूड में ते खिसिल के वाके मूड में मुक्ता मारिके पाँवन में छिप जात भये ६ श्रीकृष्ण को देखिके क्रोध जाके होय आयो सूँवासाँधी की है दृष्टि जाके ऐसे हाथी ने जब सूँड़ पकरिवे को चलाई ता समय पूँछ पकरि पिछिले पाँवन में निकसि गये ७ वड़े बली हाथी की पूँछ पकरि के जैसे गरुड सर्प को घसीटै है या प्रकार पक्षी सधनुषार्थ्यन्त लीला करिके घसीटत भये ८ पूँछ को पकरे जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनकाँ पकरिवे काँ दाहिनी ओर हाथी आवै है तब बाई ओर हाथी आवै है तब दाहिनी ओर भ्रमावे है जैसे गौ के बकरा के सङ्ग बालक फिरै है ऐसे फिरै है ९ ता पीछे हाथी के सामँह आय के थाप मारिके दौरि के पटकत भये पैरमें हाथी स्पर्श करे है १० श्रीकृष्ण तनिक दौरि के खेलिवे के लिये धरती में गिरिके शीघ्रता सूँ ठाढ़े होय गये तब श्रीकृष्ण कूँ गिख्यो मानि के बर हाथी दौतन मूँ पृथ्वी को खोदत भयो ? १ अपनो बल जब पटि गयो तब हाथी के नडो क्रोध भयो महावत ने जब अंकुश मारिके हूल्यो तब क्रोध करिके

श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर दौरेत भयो १२ मधु दैत्य के मारनवारे भगवान् श्रीकृष्ण के सम्मुख चलो जो हाथी ताकी हाथ सूं झुंड पकारिके पृथ्वी में पटकत भये १३ सिंह की तुल्य गजों जो हाथी है ताप पौंच के नीचे दावि के लीला करिके चके दौत लवारिके दौत सों महावत कुं श्रीकृष्णचन्द्र मारतभये १४ जव हाथी मरि गयो तव वाकों छोड़ि के हाथ में हाथी के दौत लैके कौंधि पै धरि के जात भये रुधिर और मधु की वृंद जिनके लागि रही है और पसीनानकी वृंद जिनके मुखकमल पै आई रही है या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र सुन्दर लगतभये कितनेक गोप जिनके सन्न हाथी के दौतही सुन्दर राज जिनके ऐसे कृष्णवलदेवदोनो भय्या हे राजन् परीक्षित् ! रत्नभूमि में जात भये १५ । १६ ता समय मल्लनको वज्रतुल्य दृष्टिआये मनुष्यनको अतिसुन्दर जानिपरे और स्त्रीनको साक्षात् कामदेव स्वरूप धरिके चले आवे हैं ऐसे जानिपरे गोपों को भाईवन्धु जानिपरे दुष्ट राजानको मृत्यु देनवारे हैं ऐसे जानिपरे अपने पिता माता वसुदेव देवकी हैं तिनकुं हमारे पुत्र चले आवे है या विधि जानिपरे भोजपति जो कंसहै ताकों यह जानिपरे कि मेरी मृत्यु चलीआवे है अज्ञानीनको भयङ्कर रूप दृष्टिपरे और ज्ञानीन को परमतत्त्वरूप दृष्टिपरे यादवन को परमदेवतारूप जानि

एवाहनद्धरिः १४ सुनकंदिपमुत्सृज्य दन्तपाणिः समाविशत् ॥ असन्यस्ताविपाणोऽमुञ्चदविन्दुभिरङ्कितः ॥ विरूढस्वेदकणिक् कावदनाम्बुरुहोवभौ १५ वृत्तौ गोपैः कतिपयैर्वलेदवजनार्दनौ ॥ रङ्गविविशतूराजगजदन्तवरायुवौ १६ मल्लानामशानिर्नुणान्सर्वः स्त्रीणां रमरो मूर्त्तिमान् गोपानां स्वजनोऽसतांक्षितिशु जांशास्तास्वपित्रोः शिशुः ॥ मृत्युर्भोजपतेर्विराडविदुपांतस्वंपरंयोगिनांबृष्णीनांपरदेवतेतिविदितोरङ्गतः साग्रजः १७ हतंकुलयापीडं दृष्ट्वा तावपि दुर्जयौ ॥ कंसो मनस्व्यपितदाभृशमुद्धिविजेनृप १८ तौरजतूरङ्गतौ महाभुजौ विचित्रवेषाभरणसगम्बरो ॥ यथानटावुत्तमवेषधारिणौ मनःक्षिपन्तौ प्रभयानिरीक्षता म् १९ निरीक्षतावुत्तमपूरुषौ जनमच्चस्थितानागराट्कानृप ॥ प्रहर्षे गौर्त्तिकलितेक्षणाननाः पुर्णतटस्थानयनैस्तदाननम् २० पिवन्त इव चक्षुभ्यर्णालिहन्त इव जिह्वया ॥ जिघ्रन्त इव नासाभ्यां शिल्पयन्त इव बाहुभिः २१ ऊचुः परस्परं तैवैयथा दृश्यं तथा श्रुतम् ॥ तद्वपुण्माधुर्यं प्रागल्भ्यस्मारिता इव २२ एतौ भगवतः

परे जैसी जाकी भावना ताको तैसेही जानिपरे या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजी को सबलैके रत्नभूमि में जातभये १७ हे राजन् परीक्षित् ! कुलयापीड हाथी कुं मरयो देखिके जीतवे में न आवे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजी कुं देखिके धैर्ययुक्तहू कंस है परन्तु डरपत भयो १८ वही जिनकी भुजा विचित्र जिनके वेष आभूषण माला वस्त्रनकुं धारणकरे ऐसे कृष्ण वलदेव रत्नभूमि में जायके सुन्दर लगत भये उत्तम रूपको धारण करनवारे नट जैसे सुन्दर लगे हैं या प्रकार अपनी कान्ति कर देखनवारे पुरुषन के मन कुं चुरावे हैं १९ हे राजन् परीक्षित् ! भंजानन के ऊपर बैठे जे पुरवासी देशवासी जन हैं ते पुरुषन में श्रेष्ठ जो श्रीकृष्ण वलदेव हैं तिनको देखिके आनन्द के वेग ते दहदहे नेत्र मुख जिनके होयगये ऐसे नेत्रन रुदिके मुखकी शोभा देखिके हृत्त न होत भये २० नेत्र ऐसे चलावे हैं मानों रूपकों धीजायेंगे जिह्वा ऐसी चलावे मानों रूघि लेईगे भुजा ऐसी चलावे हैं मानों छिपिटजायेंगे जैसी श्रीकृष्ण को रूप कानन ते सुनो हो तैसेही आंखिन ते देखिके उनके रूप गुण माधुर्य दिठार्ई मूं दुद्धि जिनकुं होयआई ऐसे पुरुष आपुस में कहत भये २१ । २२ ये जो श्रीकृष्ण वलदेव हैं ते

साक्षात् भगवान् हरि नारायण हैं अंशकारिके या संसार में वसुदेवके घर अवतरे हैं २३ यह जो सांवरो वालक है ताने देवकी के जन्म लियो है अत्रताई खिण्यो रक्षो पिताने गोकुल में पहुँचाय दियो हो नन्दराय के घर में छुड़िऊँ प्राप्तभयो २४ या कृष्ण ने पूतना मारी दूरे के स्वरूपकों धरिके आयो जो तुणावतै दैत्य ताकूँ मारतभये और यमलाजुन छत्त उत्तारि के डारि दिये शंखचूड़ गारखो केशीदानच मारयो धेनुकासुर मारो अघासुर आदिले के और सब दानव मारे २५ या कृष्णने गौ और ग्वाल वनों दव लगी ताते छुड़ाये काली सर्पकों दण्ड दियो इन्द्रको मर्द दूर कियो २६ सात दिन पर्यन्त यह कृष्ण गोवर्द्धन पर्वतकूँ हाथमें लिये रक्षो वर्षा पवन वज्रपात ते गोकुलकी रक्षाकरी २७ गोपी हैं ते या कृष्ण कौ नित्य प्रसन्न हैं सनि चित्तवनि जामें अम जामें नहीं ऐसे मुखकों देखिकै अनेक तापनकूँ दूरि करतयई २८ या कृष्णते यह यदु को वंश बहुत विख्यात होयके सम्पत्ति यश बढ़ाई कूँ पावेगो और या कृष्ण ते रत्ता होयगी या प्रकार जामें नहीं ऐसे मुखकों देखिकै अनेक तापनकूँ दूरि करतयई २८ या कृष्णते यह यदु को वंश बहुत विख्यात होयके सम्पत्ति यश बढ़ाई कूँ पावेगो और या कृष्ण ते रत्ता होयगी या प्रकार

साक्षाद्धरेनारायणस्य हि ॥ अवतीर्णा विहांशेन वसुदेवस्य वेश्मनि २३ एषैकिलदेवक्यां जातो नीतरच गोकुलम् ॥ कालमेतं वसन् गृहो बध्वेन नन्दे वेश्मनि २४ पूतनाऽनेन नीताऽन्तं च कृत्वा तश्च दानवः ॥ अर्जुनो गुह्यकः केशीधेनुकोऽन्ये च तद्विधाः २५ गावः सपाला एतेन दावाग्नेः परिभोचिताः ॥ कालियो दमितः सर्प इन्द्रश्च विमदः कृतः २६ सप्ताहमेकहस्तेन धृतोऽक्षिप्रवरो मुना ॥ वर्षा ताशानि भ्यश्च परित्रातश्च गोकुलम् २७ गोप्योऽस्य नित्यमुदितहसिते प्रेक्षां मुखम् ॥ पश्यन्त्यो विविधां स्नापां स्तरन्ति स्माश्रमं मुदा २८ वदन्येन वंशोऽयं यदोः सुबहुविश्रुतः ॥ श्रियं यशो महत्त्वञ्च लप्स्यते परिरक्षितः २९ सिते प्रेक्षां मुखम् ॥ पश्यन्त्यो विविधां स्नापां स्तरन्ति स्माश्रमं मुदा २८ वदन्येन वंशोऽयं यदोः सुबहुविश्रुतः ॥ श्रियं यशो महत्त्वञ्च लप्स्यते परिरक्षितः २९ अयं चास्याग्रजः श्रीमान्नामः कमललोचनः ॥ प्रलम्बो निहतो येन वत्सकोपे वकादयः ३० जनेष्वेवं ब्रूयाणेषु तूर्थेषु निनदत्सु च ॥ कृष्णरामौ समाभाष्य चाणूतो वाक्यमब्रवीत् ३१ हे नन्दसूनु हे राम भवन्तौ वीरसम्मतौ ॥ निरुद्धकुशलौ श्रुत्वा राज्ञा हतौ दिदृक्षुणा ३२ प्रियं राज्ञः प्रकुर्वन्त्यः श्रेयो विन्दन्ति वै प्रजाः ॥ मनसा कर्मणा वाचा विपरीतमतोऽन्यथा ३३ नित्यं प्रमुदिता गोपा वत्सपाला यथा स्फुटम् ॥ वनेषु मल्लयुद्धेन कीदृन्तश्चारयन्ति गाः ३४ तस्माद्वाङ्मयं प्रियं ययञ्च करवा महे ॥ भूतानि नः प्रसीदन्ति सर्वभूतमयो नृपः ३५ तन्निशम्या व्रीत्कृष्णो देशकालोचितं वचः ॥ निरुद्धमात्मनोऽभीष्टं मन्यमानोऽभिनन्द्य च ३६ कथत भये २९ कमल से जाके नेन ऐसो सुन्दर या कृष्ण को बड़ो भय्या यह राम ताने मल्लमासुर वत्सासुर वत्सासुर आदिक मारे क्यों जी मारे तौ कृष्ण ने बलदेव को नाम क्यों केय है तहाँ कहे हैं देली सुनी बातन में भेद होइ जाय है ३० सय मनुष्य या प्रकार कहत हैं तौलौ नगाड़े वाजे इतने में चाणूर कृष्ण बलदेव कौ सम्मोधन दैके बोलत भयो ३१ हे नन्द के पुत्र ! हे राम ! बल तुम में अधिक है कुरती अच्छी कर जानो हो यह श्रवण करिके कंसराय से देखिवे के लिये बुलाये गये हो ३२ प्रजा मन करिके कर्म करिके वचन करिके राजाको प्रिय करे तौ कल्याण पावे हैं और जे विपरीत करे हैं वे नहीं पावे हैं ३३ प्रतिदिन बखरानके चरावनवारे गोप प्रसन्न होयके वनमें कुरती को खेल करिके गौ चरावे हैं यह बात प्रकट है ३४ ता कारण हम तुम राजा कंसको प्रिय करे राजा प्रसन्न होयगो तौ सब प्राणी हमारे ऊपर प्रसन्न होयगे ३५ चाणूर को वचन सुनिके श्रीकृष्णचन्द्र कुरती करिचो आपको योग्य मानिके बड़ाई करिके देश

समयके उचित वाक्य बोलतभये ३६ या कंसकी तुम प्रजाहो हमवनकी रहनवारी प्रजाहैं राजा कंसको प्रिय नित्य करें याहीमें हमारो भलो है ३७ देखो हम बालकहैं अपनी बराबरके बालकन के सङ्ग कुस्ती लड़ेगे जैसे उचितहोइ तैसी कुस्ती करो मल्लनकी सभामें अधर्म न होय ३८ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र को वचन सुनिके चाणूर बोलो तुम बालक नहीं हो और बलीनमें बलवान् बलदेव बालक नहीं है किशोर नहीं हो हज़ार हाथीको जामें बल ऐसो कुवनयापीडु हाथी खेलमें ही मारिलियो ३९ ताते हमारे संग कुस्ती तुम करो यह अनीति नहीं है हे वृष्णिपंश में भये कृष्ण ! मेरी तुम्हारी कुस्ती होय बलदेव के संग मुष्टिककी होय ४० ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे पूर्वोद्धे कुवलयापीडवधो नाम त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥ \* ॥  
( चतुरचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥ कंसयोषितसयाश्वासस्ताभ्यापित्रोश्च दर्शनम् १ चवालीसवें अध्याय में मल्ल और कंसदिकों को कृष्ण बलदेवजी ने नाशकर कंसकी स्त्रियों को

प्रजाभोजपतेरस्य वयञ्चापिवनेचराः ॥ करवामाप्रियं नित्यं तन्नः परमनुग्रहः ३७ बालावयंतु ह्यवलैः क्रीडिष्यामो यथोचितम् ॥ भवेन्निशुङ्गमाऽधर्मः स्पृशन्मल्लसभासदः ३८ ॥ चाणूरुवाच ॥ नवालोनकिशोरस्त्वं बलश्च वलिनान्नरः ॥ लीलये भो हनो येन सहस्रद्विपसत्त्वभृत् ३९ तस्माद्भवद्भयां वलिभिर्योद्धव्यं नानयोऽत्र वै ॥ मयि विक्रमवर्णैर्यवलेन सह मुष्टिकः ४० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वोद्धे कुवलयापीडवधो नाम त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ एवं चर्चितसङ्कल्पो भगवान्मधुसूदनः ॥ आससादाथ चाणूरं मुष्टिकं रोहिणीसुतः १ हस्ताभ्यांहस्तयोर्वद्धा पद्भ्यामेव च पादयोः ॥ विचक्रपंतुरन्योन्यं प्रसह्य विजिगीषया २ अरलीद्वे अरलिभ्यां जानुभ्यांचैव जानुनी ॥ शिरःशीर्ष्णो रसो रस्तावन्योऽन्यमभिजन्नतुः ३ परिभ्रामणविक्षेपपरिभ्रामवपातनैः ॥ उत्सर्पणापसर्पणैश्चान्योऽन्यं प्रत्यरुन्वताम् ४ उत्थापनैरुन्नयनैश्चालनैः स्थापनैरपि ॥ परस्परं जिगीषन्तावपचक्रतुरात्मनः ५ तद्वत्तावलवद्युद्धं समेताः सर्वयोपितः ॥ ऊचुः परस्परं राजन्सानुकम्पावरुन्वताम् ६ महानयं वताधर्मपरां जसभासदाम् ॥ ये बलावलवद्युद्धं राज्ञोऽन्विच्छन्ति पश्यतः ७

समभायो और वसुदेव देवकी के दर्शन कियो है १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजनपरीचित्र ! या प्रकार निरचय कियो है सङ्कल्प जिनने नीलाम्बर पीताम्बर की कच्छैं बाँधि स्वम्भ ठोंकि के ठाढ़े होय गये ऐसे मधुदैत्य के मारनवारे भगवान् श्रीकृष्ण चाणूर से जुटतभये २ शयन सू हाथ पाँवन सू पाँव मिलायके आपुस में जीतिवे की इच्छा करिके परस्पर चलात्कारते खेलतभये २ अरलीन सों अरली मिलाय के छाली सों छाली मिलाय के छाली सों छाली मिलाय के कृष्ण चाणूर दोनों आपुस में कुस्ती करतभये ३ अब जैसे जैसे परस्पर दाव पेंच करे हैं परिभ्रमण अर्थात् फिरावनो विक्षेप अर्थात् धक्का देनो परिरम्भ अर्थात् हाथते विदारनो अवपातन अर्थात् नीचो पटक देनो उत्सर्पण अर्थात् छोड़िके पीछे से आगे आइ जानो अपसर्पण अर्थात् पीछे जायके ठाढ़े होनो इन दावन करिके लड़तभये ४ उत्थापन अर्थात् पाव और घोंटू मिलिके गिरे हे तिनकों उत्तार देनो चालन अर्थात् बाँधे दाँवकों दूर करदेनो स्थापन अर्थात् हाथ पाव पकारिके मिलाय देनो या प्रकार परस्पर देखको पीडा देतभये ५ स्त्रीनके समूह एकठौरी होयके बैठी हैं ते कहे हैं देखो यह कृष्ण

तो निर्वल है और चाणूर सबल है यह विचार के दया जिन लों आइ गई ऐसी स्त्री आपुस में बोलत भई ६ ये राजसभा के बैठन वोन कंचू चढ़ो अधर्म होय गो राजा के डेपते निर्वल सल की कुशती कराय है ७ देखो वज्रसे कटोर जिनके सब अश्व पर्वतसे उंचे उंचे पल्ल कहा और श्रीकृष्णको स्वल्प अति सुकुमार जिनके अश्व और यौवन अतथा जिनकी भई नहीं किशोर अवस्था जिनकी ऐसे बालक कदा ८ या सभा में निश्चय धर्म नाश होइ है जहा अधर्म होय ता सभा में कवहुं न बैठे ९ और स्त्री कहे हैं विवेकी पुरुष कौ ऐसी सभा में जानो योग्य नहीं है सभा के बैठन वारेन के दोषन कूं स्पर्ण करिके बाल कौ जानिके चुप बैठयो रहै तो दोष पागी होय काहु की भूठी सांची कहे तो दोष लगे अथवा हम काहु की बुरी जानें न भली जानें ऐसे कानन पै हाय धरे तो दोष भागी होय या कारण सभा में जाय नहीं १० शत्रु के चारों ओर दौरा धूरी करे जो कृष्ण है ता के मुख की शोभा देखो तो कुशती में जोर करे है याते मुख के ऊपर पर्सनान की बूंद आय रही है जैसे कमल कोश के ऊपर ओस की बूंद परे तैसे ११ और स्त्री कहे है अरुण जामे नेत्र ऐसे बल देव की मुख की शोभा कूं देखो मुष्टिके ऊपर क्रोध जिनको आइ रखो हासी सहित जो क्रो २ आवै

कवज्रसारसर्वाङ्गौमल्लौशैलेन्द्रसन्निभौ ॥ कचातिसुकुमारगङ्गाँकिशोरौनाभयौवनौ ८ धर्मव्यतिकगोह्यस्य समाजस्य ध्रुवं भवेत् ॥ यत्राधर्मः समुत्तिष्ठेन्नस्थे यंत्रकहिंचित् ९ न सभां प्रविशेत् प्राज्ञस्सभ्यदोषाननुस्मरन् ॥ अत्रान्विब्रजन्नो नरः किल्बिषमभुते १० वलगतः शत्रुगमिभतः कृष्णस्य वदनाम्बुजम् ॥ बीक्ष्यतांश्रमवार्युतं पद्मकोशमिवाम्बुभिः ११ किंनपश्यतरामस्य मुखमाताम्रलोचनम् ॥ मुष्टिकं प्रति सारमर्पहासं संभशोभितम् १२ पुण्यावतत्रभुनोय दयं नृलिङ्गगुहः पुराणपुरुषोवनचित्रमाल्यः ॥ गाः पालयन्महबलः कृष्णयंश्रवेणुं विक्रीडयाञ्चति गिरित्रमार्द्धिताङ्गिः १३ गोप्यस्तपः किमचरन् यदमुष्य रूपं लावश्यसारसमसोर्ध्वमनन्यसिद्धम् ॥ दृग्भिः पिवन्त्यनुसवाभिनवंदुरापमेकान्तधामयशसः श्रिय ऐश्वरस्य १४ यादो हनेऽवहनने गथनोपलेपेच्छेच्छु नार्भरुदितोक्षणमार्जनादौ ॥ गायन्ति त्वैनमनुस्मरन्नाधियोऽश्रुः कण्ठ्यो धन्या व्रजस्त्रिय उरुक्रमचित्रानाः १५ प्रातर्ब्रजद्रुजत आविशतश्च सायं गोभिः समं

तासूं सुन्दर लगे हैं १२ और गोपी कहे हैं वे व्रजभूमि वही पविन हैं जिनके वनके चित्रविचित्र फूलन कूं उरसे पुराणपुरुष श्रीकृष्ण बल देव सहित मनुष्य रूप में छिपि के गौवन कूं चरावत समय वासुरी कूं वजावत और अस्त्रा लक्ष्मी जाके चरण की पूजा करैं वह प्यारो खेलत दोले हैं १३ और स्त्री कहे हैं देखो गोपी कहा तप करत भई जा कारण गिनतें श्रेष्ठ और कोई सुन्दर नहीं और जिनकी वरावर कोई नहीं जाते अधिक नहीं देखो आभूषण वस्त्र बिना ही सुन्दर लगे हैं यश लक्ष्मी ऐश्वर्य इनको एकान्तस्थान अर्थात् सर्वदा वास करैं ऐसी जो प्यारको स्वरूप ताकूं दृष्टि करिके देखे हैं जे गोपी गाय दुहावती वर धान्य बरती वर दधि फिरावती वर उपलेप की वर बालकन कूं भुलावत समय बालक जब रोवें तब उनको राखती वर धरन में बुहारी देनो यासूं आदिले के जो काम हैं तिन कूं करती वर श्रीकृष्ण में आसक्त होय कृष्ण गुण गावे हैं तासमय भेमानन्द सूं आम् जिनके नेत्रन में आय जायें हैं कृष्ण में जो चित्त लगे हैं तासूं सब विषय जिन कूं आय के प्राप्त होय हैं सखियो व्रजकी स्त्री धन्य हैं १४ १५ प्रातः काल जब व्रज ते गो चरायवे कौ जाइ हैं सन्ध्या समय गौवन कूं लैके वासुरी वजावत जन आवै हैं ता समय गोपी या कृष्ण की वासुरी सुनिके शीघ्र अपने घर सूं



निकसि कै मार्ग में आईकै बहुत हैं पुण्य जिनके ऐसी सुन्दर मुसिकानि दयापूर्वक जामें चितवनि ऐसे मुखको दर्शन करे हैं वे गोपी बड़भागिनी हैं १६ हे भरतवंशीनमें श्रेष्ठ राजा परीक्षित! या प्रकार स्त्री आपुसमें कहे हैं ता समय योग के ईश्वर सबके दुःख के दूर करनवारे भगवान् शत्रु कूं मारिबे १७ भयसमेत स्त्रीनकी बात सुनि के पुत्रन में स्नेह सूं जो शोक है तासूं व्याकुल पुत्रनके वलकूं जाने नहीं ऐसे माता पिता देवकी वसुदेव दुःखित होतभये और नन्द वसुदेव दोनों पक्षितातभये हाय! हाय! क्यों भैं अक्रूर के कहे तैं इन दोनों कों मयुरापुरी में लायो घरमें पकरिके कोठरी में मूँदि क्यों न राखे ऐसे नन्दजी पक्षितात भये १८ अनेक प्रकार के जे कुरती के दौव पँच है तिन सूं श्रीकृष्ण चाणूर जैसे आपुसमें लड़त भये तैसेही वलदेव और मुष्टि न लड़त भये १९ वज्रपातकी मुख्य कठोर भगवान् के अङ्ग परे तिन सूं चाणूरके अङ्ग चुरकूट होयभये तासूं अत्यन्त दुःखित होतभये २० शिकरा कैसो है वेग जाके ऐसो चाणूर दोनों हायकी मुष्टि बाँधिके क्रोधमें मारि

कणयतोऽस्य निशम्य वेणुम् ॥ निर्गम्य तूर्णमवलाः पथिभूरिपुण्याः पश्यन्ति सरितमनुसं सदा वलोकम् १६ एवं प्रभापमाणामुस्त्रीपुत्रयोगेश्वरो हरिः ॥ शृंहेन्तुं मनश्च के भगवान् भरतर्षभ १७ सभयाः स्त्रीगिरः श्रुत्वा पुत्रस्नेहशुचातुरौ ॥ पितरावन्वतगेतां पुत्रयोरबुधौ वलम् १८ तैस्तैर्नियुद्धविधिभिर्विविधै रच्युतेतौ ॥ युयुधातेयथाऽन्योन्यं तथैव वलमुष्टिकौ १९ भगवद्वात्रनिष्पातैर्वज्रनिष्पेपनिष्ठुरैः ॥ चाणूरो भज्यमानाङ्गो मुहुर्गर्ला निमवापह २० सश्येन वेगउत्पत्य मुष्टीकृत्य करानुभौ ॥ भगवन्नंवासुदेवं क्रुद्धो वक्षस्यवाधत २१ नाचलत्तप्रहारेण मालाहतइवद्विपः ॥ बाह्वोर्निगृह्य चाणूरं बहुशो आमयन् हरिः २२ शृष्टुष्टेपोथयामाम तरसाक्षीणजीविनम् ॥ विसस्ताकल्पकेशस्य गिन्द्रध्वजइवापतत् २३ तथैव मुष्टिकः पूर्वं स्वमुष्टया भिहतैनवै ॥ बलभेद्रेण वलिना त लेनाभिहतोभृशम् २४ प्रवेपितः सरुधिगुमुद्रमचमुखतोऽर्हितः ॥ व्यमुःपपातोऽन्युपस्थे वाताहतइवाङ्घ्रिपः २५ ततः क्रुटमनुप्राप्तं रामः प्रहस्तांबरः ॥ अव धीक्षीलयाराजन् सावज्ञं नाम मुष्टिना २६ तर्ह्येव हि शलः कृष्णपद्मापहतशीर्षिकः ॥ द्विधाविदीर्णस्तोशलकउभावपि निपेततुः २७ चाणूरे मुष्टिके कूटे शले

के ऊपरकू उखरिके भगवान् वासुदेव की छाती में मारतभयो २१ जैसे हाथी फूलनकी मालाकी चोट से नहीं छिगे है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र चाणूर की मुष्टि के मारे न डिगत भये हरि श्रीकृष्ण चाणूर के दोनों शय पकरि के बहुत घुमाइ कै वेग करिके पृथ्वी में पटकतभये क्षीण भयो है जीवन जाको शिथिलभये हैं आयुपण्य वार और माला जाके ऐसो चाणूर जैसे गौड़देशमें मसिद्ध इन्द्रध्वजा गिरे है तैसे गिरत भयो २२ २३ ताक्षी भकार पहिले मुष्टि जिनके लगी ऐसे वलदेवजी ने थाग जाके मारी ऐसो मुष्टिक कश्चित होय मुखते रुधिर कूं वमन करत पीड़ित हो के प्राण जाके निकसि गये जैसे पवनको मारो घृत्ता उखरि परे है ता प्रकार गिरतभयो २४ २५ हे राजन् परीक्षित! ता पीछे आयो जो कूट गल्ल है ताकूं मारनवारेन में श्रेष्ठ वलदेवजी लीला करिके वाई मुष्टिमें अवज्ञाकरिके मारतभये २६ शल तोशलने विचारी दण्डवत् के भिपसूं पात्र पकरिके पटक दिईगे परन्तु सबके बाहर भीतरकी जाननवारे हैं जा समय दण्डवत् करिवेकें आयो तासमय मारी जो लात तासूं शिर फाँटिगयो ऐसो शल और तोशल दो टूक विदीर्ण होईकै दोनों पृथ्वी में गिरतभये २७ चाणूर मुष्टिक कूट शल तोशल ये मुख्य गल्ल जब मरिबुके ता पीछे और सब गल्ल अपने प्राण वचायेके

लिये भाजत भये २८ बराबर के गोपन को अखाड़े में खोंचिकै नगाड़े वजें वृत्यादिक को करें पावनमें नूपुर जिनके वजे ऐसे श्रीकृष्ण चलदेव गोपनके सकृ भिलिकै विहार करत भये २९ श्री कृष्णचन्द्र और बलदेवजी के चरित्र देखिकै कंस के विना सम्पूर्ण जन प्रसन्न होत भये ब्राह्मण जिनमें मुख्य ऐसे सज्जन पुरुष भले भले ऐसे कहिके स्तुति करत भये ३० बड़े बड़े मल्ल मरिगये कितनेऊ भाजिये तब भोजवंशीनको राजा कंस नगाड़े थमाय देत भयो और यह वचन बोली ३१ खोटे जिनके कर्म ऐसे वसुदेव के वेदानकूं पुरते बाहर निकसि देउ और इनको धन खिनाइ लेउ खोंटी है बुद्धि जादी ऐसे नन्दको वाधिलेउ ३२ खोंटी है बुद्धि जाकी ऐसे असाधु वसुदेवकूं जल्दी मारो शत्रुन में भिलिखी ऐसे पिता उग्रसेन कूं टहलुआन सहित वाधिलेउ ३३ या प्रकार कंस जब वक्त लग्यो तब बड़ो क्रोध जिनके भयो ऐसे अव्यय भगवान् धीरेसूं उकरिके ऊंचे मंचानपै चढ़त भये ३४ धैर्यवान् कंस है सो चली आवै ऐसी जो अपनी मृत्यु है ताकूं देखिके आसन तोशलकेहते ॥ शेषाः प्रहृष्टबुर्मलाः सर्वे प्राणपरीप्सवः २८ गोपान्वयस्यानाकृष्य तैः संमृज्य विजहंतुः ॥ वाद्यमाने पुतूय पुवलगतौ रतनूपुरौ २९ जनाः

प्रजहंतुः सर्वे कर्माणामकृष्णयोः ॥ ऋते कंसं विप्रमुख्याः साधवः साधुसाध्विति ३० हते पुमल्लवर्थेषु विद्धते पुत्रभोजराट् ॥ न्यवारयस्व तूर्याणि वाक्यं च दमुत्राचह ३१ निःसारय तदुर्वृतौ वसुदेवात्मजौ पुरात् ॥ धनं हतगोपानां नन्दवध्नी तदुर्मतिम् ३२ वसुदेवस्तु दुर्भेधा हन्यतामाश्वऽसत्तमः ॥ उग्रसेनः पिता चापि सानुगः परपक्षगः ३३ एवं विकृत्यमानैव कंसे प्रकुपितोऽव्ययः ॥ लघिम्नोत्पत्य तस्मा मञ्चमुत्तुङ्गमारुहत् ३४ तमाविशन्तमालोक्य मृत्युमारम न आसनात् ॥ मनस्वी सहसोत्थाय जग्मुहोऽमि चर्मणी ३५ तं खड्गपाणिं विचरन्तमाशु श्येनं यथादक्षिणसंन्यमम्बरे ॥ समगृहीतद्विपद्वाग्रते जायथोर गंताधर्ममुतः प्रमह्य ३६ प्रगृह्य केशेषु पुलकिरीटं निपात्य रङ्गोपरितुङ्गमश्वात् ॥ तस्योपरि शितस्वयमञ्जनाभः पपात विश्वाश्रय आत्मतन्त्रः ३७ तं संपरेतं वि चकर्मभूमौ हरिर्यथेभं जगतो विपश्यतः ॥ होहेति शब्दः सुमहांस्तदाऽभूदुद्दरीरितः सर्वजनैर्नरेन्द्र ३८ सानित्यदोद्विग्नधिया तमीश्वरं पिबन् वदन्वा विचरन् स्वपञ्चमन् ॥ ददर्श चक्रायुधमग्रतोयतस्तदेवरूपं दुर्वापमाप ३९ तस्यानुजाभ्रातरौऽष्टौ कङ्कन्यग्रीधकादयः ॥ अभ्यधावन्नभिक्रुद्धाभ्रातुर्निवेशका

से उठिकै ढाल तलवार लेत भयो ३५ तलवार हाथमें लैके आकाशमें जैसे शिकरा पत्ती डोलै है तैसे दाई चाई ओर जल्दी जल्दी फिरै जो कंस है ताथ सहारिचे में न आवैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तार्क्ष्य को पुत्र गरुड़ जैसे सर्पकूं पकरिलेइ है तैसे पकरत भये ३६ हलो है किरीटमुकुट जाको ऐसो जो कंस है ताके केशनको पहरिके ऊंचे मंचानपै तें रंगभूमि में पटाकि के कमल है नाभमें जिनके सम्पूर्ण विरत्र जिनके उदरमें अपने अधीन ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कंस के ऊपर कुदत भये ३७ सिंह जैसे हाथीकूं खोंचे है तैसे सब जगत के देवत मृत्युभयो जो कंस है ताकूं पृथ्वीमें घसीटत भये हे नरन के राजा परीक्षित! ता समय समस्त प्रजान के बड़ो हाहाकार शब्द होत भयो ३८ कंस प्रतिदिन चलायमान चित्तसूं जल पीवत वात कहत मार्ग चलत सोवत श्वास लेत चक्रहै आयुध जिनके ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण के दुःख से प्राप्त होनेवाले स्वरूपकूं पावत भयो ३९ ता कंस के कङ्कन्यग्रीध सं आदि लैके छोटे भयगा अत्यन्त क्रोध करिके भयगा कंसको बदलो लेवे के



( पञ्चचत्वारिंशकेऽथपितृनन्दनद्विषयसामान्यम् ॥ उग्रसेनाभिषेकश्च गुरोर्वासात्पुराणमः १ पैतालीसर्वे अध्यायमें वसुदेव देवकी और नन्दादिकों को कृष्णजी समझाकर उग्रसेनजीका अभिषेक कर सान्दीपनि गुरुजीके यहा रहकर वहा सों मथुरापुरी में आगमन वर्णन है १ ) अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! पुरुषनमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णचन्द्र माता पितान कूं अपनी न भयो मनि के मो कूं परमेश्वर मति जानो जननकी मोहन करनारी अपनी मायाकूं फैलावतभये हमकों पुत्र मानिकें अभी संसारके सुख भोगे नहीं हैं पहिलेही ये परमेश्वर हैं यह ज्ञान इनकूं होइ आयोहैं मैं प्रसन्न भयो तब इनको ज्ञान कहा दुर्लभ है मो मैं पुत्रभाव करिकें जो प्रेम करनो है सो दुर्लभ है याते अभी ये परमेश्वर हैं ये इनकों ज्ञान मो मैं न होय या लिये अपनी माया फैलावतभये ? यादवन में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण बलदेवजीकूं संगलैं के माता पितृकेपास आवतभये विनयपूर्वक नमिकें हे माता ! हे पिता ! ऐसे आदरपूर्वक प्रसन्न होयके बोलतभये २ हे पिता ! सर्वदा तुम्हारे चाहनाही बनीरही श्रीशुकउवाच ॥ पितराबुलब्धार्थो विदित्वापुरुषोत्तमः ॥ माभूदितिनिजांमायां ततानजनमोहिनीम् १ उवाचपितरावेत्यसाम्राजःसात्वतर्षभः ॥

प्रश्रयावनतःप्रीणस्त्वन्वनातेतिसादरम् २ नास्मत्तोयुवयोस्तात नित्योत्कण्ठितयोरपि ॥ बाल्यपौगण्डकैशोराः पुत्राभ्यामभवन्कृत्रित् ३ नलब्धोद्वैवहत योवसिनौभवदन्तिके ॥ यांत्रालाःपितृगेहस्थाविन्दन्तेलालितामुदम् ४ सर्वार्थसम्भवोदेहोजनितःपोषितोयतः ॥ नतयोर्यातिनिर्वेशं पित्रोर्मर्त्यःशता युवा ५ यस्तयोरारमजःकल्पआत्मनाचधनेनच ॥ वृत्तिनदद्यात्तंप्रेत्य स्वमांसखादयन्तिहि ६ मातरंपितरंशृद्धं भार्थीसाध्वीमुतंशिशुम् ॥ गुरुंविप्रंप्रपन्नञ्च कल्पोविभ्रञ्छसन्मृतः ७ तन्नायकल्पयोःकंसात्रित्यमुद्दिग्मचेतसोः ॥ मोघमेतेव्यतिक्रान्तादिवसावामनर्चतोः ८ तत्त्वन्तुमर्हथस्तात मातनोपरत न्त्रयोः ॥ अकुर्वतोर्वाशुश्रूपां क्लिष्टयोर्दुर्हृदाभृशम् ९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इतिमायामनुष्यस्य हरेर्विश्वत्मनोगिरा ॥ मोहितावङ्कमारोग्य परिष्वज्याप तुर्मुदम् १० सिञ्चन्तावश्रुधाराभिः स्नेहपाशेनचावृतौ ॥ नकिञ्चिदूचतराजनान्वाष्पनगडौविमोहितौ ११ एवमाश्वास्यपितरौ भगवान्देवकीसुतः ॥ मा

हम पुत्रनतें बाल्यअवस्था पौगण्डअवस्था किशोरअवस्था के सुख कभज तुमकों न होतभये ३ दैवके मोरे हमैं तुम्हारे निकट वासहू न करिसके पितृके घरमें बालकरे हैं लालन पालनहोइहैं आनन्द को पावे हैं हमको कछुओ प्राप्त न भयो ४ धर्म अर्थ काम मोक्ष सब पदार्थ जाते होइ ऐसो यह देह जिन माताने उत्पन्न कियो उनकी यह मरणश्रमर्मा मनुष्य सौर्वर्ष सेवाकरे तथापि उन्मृष्ट नहीं होइहैं ५ जो पुत्र समर्थ होइ के देहसूं अथवा धनते माता पितृकूं जीविका नहीं दैवै वाको परलोकमें यमके दूत वाको मांस वारी कूं काटि के खवावे हैं ६ माता पिता छद्द सुशीला स्त्री पुत्र बालक गुरु ब्राह्मण और जो कोई शरण आयो है इनको जो समर्थ मनुष्य भरण पोषण न करै तो वह भरे तुल्य है ७ असमर्थ कंस के भय के मोरे नित्य है चञ्चल मन जिनको ऐसे हम हैं ता कारण तुम्हारी सेवा बिनाकरे हमारे इतने दिन व्यर्थ बीतगये ८ हे पिता ! हे माता ! परारे अधीन याते तुम्हारी सेवा न करी दुष्ट जाको हृदय पेमे कंससूं अत्यन्त दुःखित हमैं तिनपर तुम क्षमा करिवेकूं योग्यहो ९ या प्रकार माया करिके मनुष्यरूप जिनने धर्यो ऐसे विश्वके आत्मा हरि हैं तिनके चचननसूं मोहित होयके देवकी वसुदेव पुत्रकों गोदमें बैठयके आलिगन करिके आनन्द कूं

पावतभये १० अथ श्रीशक्रदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! स्नेह के रस्सान्ते वंधे मोहित होयगये ऐसे देवकी वसुदेव हैं ते नेत्रन ते आंसुन की धारन ते कृष्ण वलदेव कूं भिजोवत वल्लु भो न वोल्ततभये ११ देवकी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण या प्रकार माना पिता को समाधान करिके नाना जो उग्रसेन हैं तिनको यदून को राजा करत भये १२ श्रीकृष्ण वोल्तत भये हे महाराज ! हम तुम्हारी प्रजा हैं तिन कूं तुम आज्ञा करिये कों योग्यहौ ययाति को शाप है यातें यादवन कों सिंहासन पै बैठवो योग्य नहीं है तुमहू यादवहौ मेरी आज्ञातें तुमकूं दोष नहीं है या प्रकार भगवान् कहत भये १३ मैं हृद्ध कहा अथ राज्य करोगो तहा श्रीकृष्ण कहे हैं मैं दहलुआ होयकै तुम्हारे पास रहूंगे वड़े वड़े देवादिक तुमको भेंट दैयेंगे और राजा दैयेंगे यामें कहा कहनो है १४ कंस के डरके मारे भाजि गये ऐसे जो अपनी जाति के नाते गोते के सम्पूर्ण यहु दृष्टि अन्धक मधु दाशार्ह कुकुरादिक हैं तिनको दिशान ते बुलायकै विदेश में जे वसे हैं तासूं

तामहंतूयसेनं यदूनामकरोन्नृपम् १२ आहवास्मान्महाराज प्रजाश्राज्ञमुर्महसि ॥ ययातिशापाद्यदुभिर्नासितव्यं नृपासने १३ मयिभृत्यउपासीने भवतो विबुधादयः ॥ बलिहन्त्यव्यवन्ताः किमुनान्येनराधिपाः १४ सर्वान्स्वाज्ञातिसम्बन्धान् दिग्भ्यः कंसभयाकुलान् ॥ यदुष्टरायन्धकमधु दाशार्हिकुरादिकान् १५ समाजितान्समाश्वस्य विदेशावासकश्चितान् ॥ न्यासासयत्स्वगेहपुत्रैः सन्तर्प्य विश्वकृत् १६ कृष्णमङ्कुर्य मुर्जेगुप्तालन्धमनोरथाः ॥ गृहेषु परिमिद्धाः कृष्णरामगतज्वराः १७ वीक्षन्तोऽहरहः प्रीता मुकुन्दवदनाम्बुजम् ॥ नित्यं प्रमुदितं श्रीमत्सदयस्मितवीक्षणम् १८ तत्रप्रवयसोऽप्यासन् युवा नोऽतिवलौजसः ॥ पिवन्तोऽर्धैर्मकुन्दस्य मुलाम्बुजमुधांसुदुः १९ अथनन्दं समासाद्य भगवान् देवकीसुतः ॥ सङ्कुर्य श्रारजेन्द्र परिष्वज्येदमूचतुः २० पित युवाभ्यां स्निग्धाभ्यां पोषितौ लालितौ भृशम् ॥ पित्रोरभ्यधिकाभितरात्मजेष्वामनोऽपि हि २१ सपितासाचजननी यौ पुष्णीतांस्वपुत्रवत् ॥ शिशून् वन्धुभिरुत्सृष्टान् अल्पैः पोषणैः २२ यातयूयं व्रजं तात वयं च स्नेहदुःखिताम् ॥ ज्ञातीन्वोदुष्टमुष्यामो विधाय सुहृदांसुदम् २३ एवं सान्त्वय्य भगवान् नन्दं सत्रं कुरु होयरे हैं ऐसे जे यादव हैं तिनको सत्कार करिके बहुत से धन दैके वृत्त करिके सब विश्वके करनवारे श्रीकृष्ण अपने अपने घरन में बसावत भये १५ । १६ कृष्ण वलदेव की भुजान सों रक्षा जिनकी भई प्राप्त भये हे मनोरथ जिनके ऐसे यादवन के श्रीकृष्ण वलदेव के दर्शनते गये हैं ताप जिनके ऐसे पूर्ण होयकै घरमें रमण करत भये प्रसन्न होयके यादव नित्य जामें आनन्द दया सहित जामें मुसिकानि चितवनि ऐसे मुकुन्द के मुखकों नित्य देखै हैं १७ । १८ मुकुन्द के मुखकमल में अमृत है जो ताकूं नेत्रों सूं पीके ता समय कोई हृद्ध है तो भी बड़ो जिनते बल ऐसे तरुण होतभये १९ यके पीछे हे राजन् परीक्षित ! भगवान् देवकी के पुत्र और वलदेवजी नन्दराय के पास आयकै मिलिकै यह बोलतभये २० हे पिता ! तुम स्नेहीनने हमारो पोषण वरयो बहुत लाइ करयो माता पितकों अपने पुत्रन में अधिक प्यार होय है वही पिता है वही माता है जो अपने पुत्रकी तुल्य पोषण करै पोषण करिये में जिनकी सामर्थ्य न भई ऐसे हमारे माता पिता ने हमकों बालकपने तेही छोड़ि दियो है २१ । २२ हे पिता ! तुम व्रजकों जावो अपने सुहृदनकों सुख करिके स्नेहते दुःखित जो तुम ज्ञातिकेहौ तिने देखिये कों हम पीछे आवेंगे २३ याप्रकार अच्युत

भगवान् श्रीकृष्ण ब्रजवासीन सहित नन्दरायजी कूं समभ्यायकै वस्त्र आभूषण सोने चादी के वासन दैके वड़े आदरते पूजन करतभये २४ या प्रकार श्रीकृष्णको वचन सुनि ॥ नन्दरायजी श्रीकृष्ण बलदेव को छाती तें लगायकै प्रेम्में व्याकुल होयकै नेत्रनमें आसू भरि आये ब्रजवासीनको सबलैके वज्रको जात भये २५ याके पीछे हे राजन् परीक्षित ! शूरके पुत्र वसुदेवजी ब्राह्मण पुगेहित बुलायकै पुत्रनको यथायोग्य द्विजन्मासंस्कार वराचत भये २६ तिन अलंकृत ब्राह्मणन को पूजनकर गौवें शृङ्गार करिके दक्षिणा देत भये रेशमी कुल जिन पै परी सोनेकी माला पहिरे ऐसी वखरान सहित दान करतभये २७ वड़े बुद्धिमान वसुदेवजी कृष्ण रामके जन्मनक्षत्रके समय जिन गौवनको मनते दान करतभये कंसने अग्रमर्म करिके हरिलीजी जे गौवें है तिनकी सुधि करिके दान करतभये २८ ता पीछे प्राप्तभये हैं संस्कार जिनके सुन्दर हैं व्रत जिनके ऐसे कृष्ण बलदेव द्विजन्मान को संस्कार पायकै यदुकुल के पुरोहित जो गर्गाचार्य हैं तिनसूं गायत्री को उपदेश

जगन्पुतः ॥ वासोऽलङ्कारकुप्याद्यौरहयाभाससादरम् २४ इत्युक्तस्तौ परिष्वज्यनन्दः प्रणयविह्वलः ॥ पूरयन्नश्रुभिर्नेत्रे सहगोपैर्व्रजं ययौ २५ अथशूभसुतो राजन्पुत्रयोः समकारयत् ॥ पुरोधसा ब्राह्मणैश्च यथावद्विद्विजसंस्कृतिम् २६ तेभ्योऽदादक्षिणागावोरुक्ममाल्यः स्वलंकृताः ॥ स्वलंकृतेभ्यः संपूज्य सव त्साः क्षौममालिनीः २७ याः कृष्णरामजन्मक्षेमनोदत्ता महामतिः ॥ ताश्चाददादनुस्मृत्य कंसेनाधर्मतोहताः २८ ततश्चलब्धसंस्कारौ द्विजत्वं प्राप्य सुब्रतौ ॥ गर्गाद्यदुकुलाचार्याह्वयन्नं व्रतमास्थितौ २९ प्रभवौ सर्वविद्यानां सर्वज्ञौ जगदीश्वरौ ॥ नान्यसिद्धामलज्ञानं गूहमानौ नेरहितैः ३० अथोगुरुकुलेवासमि च्छन्तावुपजग्मतुः ॥ काश्यं सान्दीपनिनाम ह्यवनन्ति पुरवांसिनम् ३१ यथोपसाद्यतोदान्तौ गुरौ वृत्तिमिनिन्दिताम् ॥ ग्राहयन्तावुपेतौ स्मभक्त्या देवमिवाह तौ ३२ तयोर्द्विजं वरस्तुष्टः शुद्धभावा नुवृत्तिभिः ॥ भोवाच वेदानखिलान् साङ्गोपनिषदोगुरुः ३३ सरहस्यं धनुर्वेदं धर्ममन्यायपथांस्तथा ॥ तथा चान्वीक्षि कीं विद्याराजनीतिञ्च पद्मविधाम् ३४ सर्वानवरश्रेष्ठौ सर्वविद्याप्रवर्तकौ ॥ सकृन्निगदमात्रेण तौ सञ्जगदहतुर्नृप ३५ अहोरात्रैश्चतुःपष्ट्या संयतौ तावतीः

लैके ब्रह्मचर्य व्रतमें रहतभये २९ समस्तविद्या जिनते होई याहीते सर्वज्ञ अर्थात् सब वातके जाननवारे सब जगत् के ईश्वर ऐसे जे कृष्ण बलदेव हैं ते स्वतः सिद्ध जो निर्मल ज्ञानहै ताय मनुष्य न की तुल्य चेष्टा करे हैं छिपावें है यज्ञोपवीत भये पीछे गुरुकुलमें बसिबे की इच्छा जिनके भई ऐसे कृष्ण बलदेव कश्यप जिनको गोत्र उज्जैनपुरी में बसे सान्दीपनि गुरु हैं तिनके पास जातभये ३० । ३१ इन्द्रिय जिनने जीती ऐसे कृष्ण बलदेव भले प्रकार गुरुनके पास जायके वड़े आदर तें भक्तिपूर्वक जैसे नारायण को सेवन करे हैं ऐसे गुरु को सेवन करतभये ३२ शुद्धभाव सूं जो सेवे हैं तासूं सन्तुष्टभये ऐसे जो द्विजन्मान में श्रेष्ठ गुरु हैं ते श्रीकृष्ण बलदेवकूं शिक्षादिक अंगन सहित उपनिषद् सहित जो वेद हैं तिनको पढ़ावत भये ३३ मन्त्र देवता को जो ज्ञानहै ता सहित शस्त्र चलायबे को जो धनुर्वेद है ता और धर्मशास्त्र न्याय भीमांसादिक हैं तिन और शब्दते गिलाप करनो युद्ध करनो वाके ऊपर चढ़ जानो समीप जायकै रहनो अपनी ओर फोरिलेनो गिलाप करनो यह छः प्रकारकी राजनीति है ता पढतभये ३४ सम्पूर्ण मनुष्यन में उत्तमन में उत्तम सब विद्यानके चलावनवारे सावधान जो कृष्ण बलदेव सो हे राजन्



परीक्षित ! गुरुके बिना वतायेही सब विद्यानको पढ़तभये ३५ चौसठ रात्रिन में गायत्री वजायत्री नृत्य करिवे सूं आदि लैके जो चौसठ कला हैं तिनैं सीखतभये जब विद्या पढ़ि चुके तब हे राजन् परीक्षित ! कृष्ण बलदेव दोनों भयथा गुरुते गुरुदक्षिणाकी आज्ञाकरी ऐसे कहतभये ३६ सान्दीपनि ब्राह्मण कृष्ण बलदेव की अद्भुत महिमा देखिके मनुष्यन में ऐसी चमत्कारी बुद्धि देखिके स्त्री ने कही प्रभामसेत्रमें समुद्रमें हूविके मरो जो मेरी पुत्रहै ताहि देउ यह वर मागो खो के कहते वही वर मांगतभये ३७ तथास्तु ऐसे अज्ञान करिके वड़े हैं पराक्रमजिनके वड़ो रथ जिनको ऐसे कृष्ण बलदेव रथमें बैठिके प्रभासचेत्रमें समुद्रके किनारै पै जायके एक क्षणभर बैठतभये तब समुद्र कृष्ण बलदेव आयें हैं यह जानिके तिनकी पूजा लावतभयो ३८ तब भगवान् श्रीकृष्ण ता समुद्र ते कहतभये जो हमारे गुरुको बालक तेने यहां वही लहरन करि हुवायो है यो गुरुको पुत्र लायके दे ३९ तब समुद्र बोल्यो हे देव अर्थात् प्रकाशमान कृष्ण ! मैंने तो तुम्हारे गुरुको

कलाः ॥ गुरुदक्षिणयाऽऽचार्य्यच्छन्दयामासतुर्नृप ३६ द्विजस्तयोस्नग्माहिमानगद्भुतं संलक्ष्यराजन्नतिमानुपीमतिम् ॥ संमन्यपत्न्यासमहार्णवेमृतं बालंप्रभासेवरयाम्बमूवह ३७ तथेत्यथारुहामहारथैरथं प्रभासमासाद्यदुस्सन्तविक्रमौ ॥ वेलासुप्रव्रज्यनिपीदतुःक्षणं सिन्धुर्विदित्वाऽहणमाहरत्तयोः ३८ तमाहभगवानाशुगुरुपुत्रः प्रदीयताम् ॥ योऽसाविहत्वयाग्रस्तो बालको महतो भिषिणा ३९ ॥ समुद्र उवाच ॥ नैवाहार्पमंहदेव दैत्यः पञ्चजनो महान् ॥ अन्तर्जलचरः कृष्ण शङ्खरूपधरोऽमुरः ४० आस्नेतेनाहनूनं तच्छ्रुत्वा सत्तरंप्रभुः ॥ जलमाविश्य तंहत्वा नापश्यदुदरेऽर्भकम् ४१ तदङ्गप्रभवं शङ्खमादाय रथमागमत् ॥ ततः संयमनीनाम यमस्य दयित्वांपुरीम् ४२ गत्वा जनार्दनः शङ्खं प्रदध्मौ सहलायुधः ॥ शङ्खनिर्हार्दमाकर्ण्य प्रजासंयमनो यमः ४३ तयोः सपर्यामहर्नो चक्रे भक्त्युपवृंहिताम् ॥ उवाचावनतः कृष्णं सर्वभूनाशयालयम् ॥ लीलामनुष्यहे विष्णो युवयोः क्रवामक्रिम् ४४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ गुरुपुत्रमिहा नीतं निजकर्मनिवन्धनम् ॥ आनयस्व महाराज मन्वासानपुरस्कृतः ४५ तथेति नोपानीतं गुरुपुत्रं यदूत्तमौ ॥ दत्त्वा स्वगुरवे भूयो वृणीष्वेति तमूचतुः ४६

पुत्र नहीं हुआयो है मेरे भीतर रहनवारो शङ्खरूप को धरे ऐमो वड़ो दैत्य है वह हरि लैगयो है निश्चय वाके पास है यह सुनिके समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र शीघ्रतायूं जल में धसिके पञ्चजन दैत्य कूं मारिके वाके पेटमें बालक कूं नहीं देखतभये ४० । ४१ ता दैत्य के अंगमें ते निकसो जो शङ्ख है ताकूं लैके श्रीकृष्ण रथ पै आवत भये यमराजकी अतिथ्यारी सयमनी पुरी है तामें आवत भये ४२ तथा जायके बलदेव सहित श्रीकृष्णचन्द्र शङ्ख वजावत भये प्रजाको दण्ड देनारो धर्मराज शङ्ख को शब्द सुनिके कृष्ण बलदेव की भक्तिपूर्वक पूजा वरत भयो सब प्राणीन के हृदयमें विराजमान जो कृष्ण तिनसों हाथ जोरिके यह बोलतभयो हे विष्णु भगवान् ! लीला करिके तुम मनुष्यरूप हो तुम्हारी कथा सेवा करों ४३ । ४४ अब श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बोले हे महाराज ! यहा गुरुको पुन तू लैथायो है ताको देउ तब यमराज ने कही अपने कर्मन तें वैंप्रो परो है कैसे लाऊं तब श्रीकृष्ण कहे हैं मेरी आज्ञा भई मेरी आज्ञा तें कर्म जो रावर नहीं है ४५ जो आज्ञा ऐसे कहिके यमराज ने लाय दियो जो गुरुको पुत्रहै ताको यादवन में उत्तम जो कृष्ण बलदेव है ते अपने गुरुको दैके और वरमागो ऐसे कहत भये ४६

तब गुरु करतभये हे पुत्र ! तुमने गुरुमेवा भलेप्रकार करी तुम सारितेन को गुरु में भयो मेरे कौन बातकी चाहना ताकी रही ४७ हे वीरो ! तुम अपने घर कों जायो या लोक में और परलोक में तुम्हारी पवित्र कीर्ति होउ तुम्हारे वेद है ते नवीन पढ़ेभये स्फुरण बने रहें ४८ या प्रकार गुरुने आज्ञा जिनहाँ दीनी ऐसे श्रीकृष्ण बलदेव दोनों परया पवनकी तुल्य शीघ्र चलै मेनकी तुल्य जाकी गर्जन ऐसे रथमें बैठिके हे राजन् परीजित् ! अपने पुर कू आवतभये ४९ राम कृष्ण भगवान् बहुत दिन तें नहीं देवे ऐसी प्रजा अब दर्शन करिके वहे आनन्द कों प्राप्त होतभये जैसे गयो धन मिलिबै सू आनन्द होय तैसे आनन्द होत भयो ५० इति श्रीमगहाभागवतार्थरूपिएपादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेगुरुपञ्चांगननं नामअष्टत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

( पदचत्वारिंशेऽध्याये पञ्चमोऽध्यायः ) यशोदानन्दयोश्चक्रेकृष्णः शोकापनोदनम् । गुरोर्ज्ञानमनुप्राप्यसत्त्वार्गोपीरुपाविशत् २ द्वियालीसर्वं  
गुरुकृपात् ॥ सम्यक्सम्प्रादितोवत्सभवद्भ्यांगुरुनिष्कयः ॥ कोनुयुष्माद्विधुरोः कामानामवशिष्यते ४७ गच्छतस्त्वगृहंवीरौ कीर्तिर्वामस्तुपावनी ॥  
छन्दांस्ययातयामानिभवन्तिवहपरत्रच ४८ गुरुणैवमनुज्ञातौ स्थेनानिलरंहसा ॥ आयातौस्वपुंरतात पर्जन्यनिनदेनैव ४९ समनन्दनप्रजाः सर्वादिद्वाराम  
जनार्दनौ ॥ अपश्यन्त्योवब्रह्मानिनिप्लब्धधनाइव ५० इति श्रीमद्भागवतमहापुराणे दशमस्कन्धेऽष्टोत्तशतब्रह्मविद्यायाः श्रीमद्भागवतस्य अष्टमोऽध्यायः ॥

श्रीशुकउवाच ॥ वृष्णीनांप्रवरोमन्त्री कृष्णस्यदयितःसखा ॥ शिष्योबृहस्पतेःसाक्षाद्व्यवृद्धिसत्तमः१ तमाहभगवानुपेष्टं भक्तमेकान्तिनांक्वचित् ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिं प्रपन्नात्तिहरोहरिः २ गच्छोद्धवव्रजंसौम्य पित्रोर्नामद्वियोगार्धिं मत्सन्देशैर्विमोचय ३ तामनमनस्कामत्प्राणामदर्थैत्यङ्गद्वैतिकाः ॥ येत्यङ्गलोकधर्माश्च मदर्थेथानुविभर्म्यहम् ४ मयिताःप्रेयसांप्रेष्ठे दूरस्थेगोकुलस्त्रियः ॥ स्मरन्त्योऽङ्गविमुह्यन्तिविग्रहैत्तङ्गद्व्यविह्वलाः५ धारयन्त्यतिकृच्छ्रेण प्रायःप्राणान्कथञ्चन ॥ प्रत्यागमनसन्देशैर्वल्लव्योपेयदातिगकाः ६ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युक्तउद्धवोराजन् सन्देशंभर्तुराह

आध्याय में कृष्णजी उद्धवजी को गोकुल में पठाकर यशोदा और नन्दजी के शोक को दूर करदेतेभये ? और अत्यन्तसंघत होकर जनेऊ होजाने पर कामचार को छोड़कर गुरुते ज्ञानको प्राप्त होकर भिन्न उद्धव को गोपियों के यहा प्रवेश करातेभये २ ) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् पराजित् ! यादवन में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण के प्यारे मन्त्री सखा सान्नाय् वृहस्पतिके शिष्य वृद्धिगानन में श्रेष्ठ जो उद्धव जी है , शरणागतन के दुःख दूर करनेवारे मनोहर भगवान् श्रीकृष्ण प्यारे एकान्ती भक्त उद्धवजी सँ एकान्त में हायपकरि के वीलतभये २ हे उद्धव ! हे साधु ! तुम व्रजतों जायो हमारे गिला माता काँ प्रसन्न करो और गोपीनकी मेरे पिछुरिबेव में कष्ट भयो है ताय मेरो सन्देश ले जायके दूरकरो ३ मेरे पिपे जिनके मन और प्राण लागि रहेहूँ मेरे अर्थ पति पुत्रादिक त्यागि दिये हैं मैं ही प्यारो जिनको आत्मा हूँ मोमें गन करिके रहैहूँ मेरे लिये या लोक परलोक के सुखन के उपाय जिनने त्यागि दिये है तिनकुँ मैं सुख देखैहूँ ४ प्यारेन को प्यारो मैं जब ते दूरसायो हौं तप से वे गोकुलकी ली है उद्धव ! मेरी सुधि करिके बिरहमें जो मेरी चाह होइहै तासूँ बेवश होयकै मोहित होय जायँ है ५ मेरी प्यारी मोहीं में जिनके मन वे गोपी गोकुलमें

तं निरुसती चेरे में शीघ्र आऊँगो ऐसे मेरे सन्देशे गये हैं तिनसूँ जैसे तैसे विचरे है ६ अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित! या प्रकार जिनसूँ कही ऐसे उद्धवजी वहेआदरते स्वामी श्री-  
 कृष्णचन्द्रके सन्देशेकुँ लैके रथ में बैठिके नन्दरायजी के गोकुलकू जातभये ७ सूर्यास्तसमय सुन्दर जो नन्दरायजीको ब्रजहै तामें प्राप्त होतभये सन्ध्यासमयगौ जो आवें तिनके सुनससों रेणु जो उड़ी  
 है तामू उद्धवजी को रथ ढकिगयो ८ पुष्पवती गौवनके लिये चारोंओर युद्धकर ऐसे मतचारे चलें वहां बहुतहैं तिनको शब्द जहां होयरह्यो है ऐननके बोझन तें व्याईगौ दौरिदौरि के अपने वञ्चनके  
 पास जो आवें हैं तिनसों शोभायमान ब्रज है ९ जहां तहा सफेद गौवन के वखरा फुदकत डोलें हैं गौवनके दुहिने को शब्द जहा होयरह्यो है अर्थात् जा समय दोहा दोहनीकों घोटन पै धरिकें दुहैं ता  
 समय छरछर होयहै जब आधीसी दोहनी होय आवैतव घरघर होयहै मुहताई भरिआवै तव वम्म वम्म होयहै और कोई कहै है वखरा छोड़ो कोई कहै है दोहनी लावो कोई कहै है लेउ कोई कहै है  
 तः ॥ आदायरथमारुह्य प्रययौनन्दगोकुलम् ७ प्राप्नो नन्दब्रजं श्रीमान्मिलोत्रतिविभावसौ ॥ छत्रयानःप्रविशनां पशूनांखुरेणुभिः ८ वासितार्थेऽभिपु  
 ष्यद्भिर्नादितं शुष्मिभिर्धूपैः ॥ धावन्तीभिश्चवासाभिरुधोभारैः स्ववत्सकाच्च ९ इतस्ततो विलङ्घ्यिर्गोवत्सैर्मण्डितसितैः ॥ गोदोहशब्दाभिरवैवैष्णूनां निःस्व  
 नेनच १० गायन्तीभिश्चक्रम्याणि शुभानि वलकृष्णयोः ॥ स्वलंकृताभिर्गोपीभिर्गोपैश्चमुविराजितम् ११ अग्न्यङ्गीतिथिर्गोविप्रपितृदेवार्चनान्वितैः ॥  
 धूपदीपैश्चमाल्यैश्च गोपावासैर्भनोरमम् १२ सर्वतःपुष्पितवनं द्विजालिकुलनादितम् ॥ हंसकारण्डवाकीर्णैः पद्मपण्डैश्चमण्डितम् १३ तमागतं समागम्य  
 कृष्णस्यानुचरं प्रियम् ॥ नन्दः प्रीतः परिष्वज्य वामुदेवधियार्चयत् १४ भोजितं परमान्नं न संविष्टं कशिराजिपौ सुखम् ॥ गतश्रमं पर्यपृच्छत् पादसंवाहनादिभिः १५  
 कच्चिदङ्गमहाभाग सखानः शूरनन्दनः ॥ आस्ते कुशल्यपत्याद्यैर्गोमुक्तः सुहृदुतः १६ दिष्ट्वा कंसोहतः पापः सानुगः स्वेन पाप्मना ॥ साधूनां धर्मशीला  
 नां यदुनां द्विष्टियः सदा १७ अपि स्मरति नः कृष्णो मातरं सुहृदः सखीन् ॥ गोपान् ब्रजं चात्मानायं गावो बृन्दावनं गिरिम् १८ अप्यायास्यति गोविन्दः स्व  
 देउ ऐसी शोर जहा होयरह्यो है बांसुरी बँन तिनको शब्द जहा होयरह्यो है तामू वद ब्रज शोभायमानहै १० बलदेव श्रीकृष्णके मङ्गलरूप कर्मण्कू गावें ऐसी बनीठनी गोपी और गोपहैं तिनसों ब्रज  
 शोभायमान है ११ अग्नि सूर्य अभ्यागत गौ ब्राह्मण पितृ देवता इनके पूजनकी सामग्री जहां धरी हैं धूप होय रही दीवा जिनमें वैं फूल जिनमें धरे ऐसे अे गोपन के घरहैं तिनसों वद ब्रज  
 मनोरमहै १२ सब ओर ते फुलचारी जामें फूलि रही पक्षी बोलैं भौरा गुज्जर राजहंस कारण्डव पक्षी जिनमें बैठे ऐसे कपलनके समूह तिनमें वद ब्रज शोभायमानहै १३ श्रीकृष्णके प्यारे अनुचर  
 उद्धवजी हैं तिनकों आये जानि कै नन्दरायजी प्रसन्न होयतैं मिलतभये कृष्ण के पास ते आये हैं यह जानिके पूजन करत भये १४ परमश्रेष्ठ सामग्रीन को भोजन करायकै शय्यापै सुखपूर्वक  
 पौदायतैं चरण दाविकै मार्गको लेद मिटायकै उद्धवजी तें नन्दरायजी पूछतभये १५ कृष्णकी कुशल पूछिये में आसूनसों कण्ठ रुकिजायगो यह शङ्का निचारितैं प्रथम वमुदेवजी की कुशल  
 पूछे हैं हे वदभागी उद्धव! शूरके पुत्र हमारे सखा वमुदेव लरिकावारेन सहित कश कुशलपूर्वक है कंसके वन्दीसाने ते बूढ़े हैं भय्या वन्नु हितकारी जाके पास हैं १६ पापी कंस सम्पूर्ण

दहलुआन सहित अपने पापन में मर्यो यह बड़ी मज्जल भगो धर्म में जिनको स्वभाव ऐसे जे साधु यादव है तिनमें कंस सर्वदा वैर करै हो १७- हे उद्धवजी ! वह कृष्ण कभऊ हमारी और अपनी माता की सुधि करै है सुहृद सखा गोप हैं तिनकी सुधि करै है आपुही जाकी रक्षा करनवारी या ब्रजकी सुधि करै है गौ वृन्दावन गोवर्द्धन पर्वतकी कभऊ सुधि करै है १८ गौवनके द्वित को करनवारी कृष्ण जब कभऊ अपने भय्या वन्द्यनके देखिवेसों आवंगो ता समय सुन्दर नामें नासिका सुन्दर मुसिकाणि चितवनि ऐसे वाके मुखकुं देखेगे १९ दावाग्नि तें पवन तें इन्द्र की वर्षा तें विप सर्प तें अघासुर तें और वही २ मृत्युन तें महात्मा कृष्ण ने हमारी रक्षा करी २० हे उद्धवजी ! श्रीकृष्ण के पराक्रमन की लीलापूर्वक कटाक्षभरी चितवनि की हंसनि की बोलनि की जब सुधि करै हैं तन हमारी सम्पूर्ण क्रिया शिथिल होय जाय हैं २१ मुकुन्द के चरणन के खोज जिनमें परे ऐसी नदी पर्वत वन में स्थान हैं तिन और वाके खोलिवे के स्थान हैं तिन जव देखै हैं तव हमारो मन कृष्णमय होय जाय है २२ देवतान के कार्य करिवे के निमित्त या संसार में आये जे कृष्ण हैं तिन देवतान में उत्तम मानूं हूं बड़ो गर्भीर गर्वाचार्य को बचनहू ऐसे

जनानुसृष्टीक्षितुम् ॥ तर्हिदक्ष्यामतदङ्गं सुनसंसुस्मितेक्षणम् १६ दावाग्नेर्वातवर्षाविपसर्पश्चरक्षिताः ॥ हस्तयेभ्योभृत्यभ्यःकृष्णेनसुमहात्मना २० स्मरतांकृष्णवीर्याणि लीलाऽपाङ्गनिरीक्षितम् ॥ हसितंभापितंचाङ्गसवर्चनः शिथिलाः क्रियाः २१ सरिञ्खैलवनोद्देशान्मुकुन्दपदभूपिताम् ॥ आक्रीडानी क्षमाणानां मनोयातितदात्मताम् २२ मन्येकृष्णश्चरामञ्च प्राप्ताविहसुरोत्तमौ ॥ सुराणां महदर्थाय गर्गस्यवचनं यथा २३ कंसं नागायुतपाणं मल्लौ गजप तितथा ॥ अवधिष्टां लीलयैव पशूनि वसृगाधिपः २४ तालत्रयं महासारं धनुर्यष्टिभिर्वेभराद् ॥ वभञ्जे केन हस्तेन ससाहमदधाद्विरिम् २५ प्रलम्बो धेनुकोऽ रिष्टृणावत्तौ वकादयः ॥ दैत्याः सुरासुरजितो हतायेनेह लीलया २६ श्रीशुक उवाच ॥ इति संस्मृत्य संस्मृत्य नन्दः कृष्णानुरक्तधीः ॥ अत्युत्कण्ठो भवचू ष्णं प्रेममसरविह्वलः २७ यशोदावर्यमानानि पुत्रस्य चरितानि च ॥ शृण्वन्त्यश्रूयथास्वाक्षीस्नेहस्नुतपयोधरा २८ तयो रित्थं भगवति कृष्णेन नन्दयशो दयोः ॥ वीक्ष्यानुरागं परमं नन्दमाहोद्धवो मुदा २९ उद्धव उवाच ॥ युवांश्च लीलाव्यतमौ नूनं न देहिना गिहमानद ॥ नारायणेऽखिलगुरौ यत्कृतामतिरीह

सुनो है २३ दशहजार हाथी को जामें बल ऐसे कस को और मल्लन को तैसेही कुवलयापीढ हाथी को सिंह जैसे पशुनकुं मारे है ऐसे कृष्ण लीला वरि के मारत भये २४ बड़ो भारी तीन ताल की बराबर धनुष है ताव एक हाथ ने उठाव कै जैसे हाथी लठियाकुं तोरे ऐसे तोरत भये और सात दिन पर्यन्त गोवर्द्धन पर्वत को धारण करत भये २५ प्रलम्बासुर धेनुकासुर अरिष्टासुर तृणावर्त्त वकासुर को आदिलै के और जे सुर असुरन के जीतनवारे दैत्य हैं ते कृष्ण ने लीलाही करि के मारे २६ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! कृष्णमें लगी है बुद्धि जिन को ऐसे नन्दरायजी या प्रकार सुधि करिके आसू कण्ठ में भरि आये प्रेम के भाव में व्याकुल होय कै चुप होत भये २७ वर्णन करे जे पुत्र के चरित्र तिन यशोदाजी सुनिके स्नेह जो बड़ो तामूं स्तनन में दूध उमँगि आयो नेत्रन में तें आसू बहावति भई २८ या प्रकार नन्दराय यशोदा को भगवान् श्रीकृष्ण में परम अनुराग देखिके उद्धवजी नन्दजीते बोलत भये २९ उद्धवजी कहे हैं हे

हे मानके देनवारे नन्दराय ! या संसार में देह गरीब के मध्यमें निश्चय तुम प्रशंसा के योग्य दौ या कारण सबके गुरु नारायण तिनमें ऐसी मति लगाई है ३० ये जो कृष्ण बलदेव हैं ते विश्व के निमित्त उपादान कारण हैं याही ते पुरुष प्रकृतिरूप हैं सब प्राणीन में प्रवेश करिके अनेक प्रकार के प्राणीन को अनेक प्रकार के जो ज्ञान है ताके साक्षात् है और अनादि है ३१ प्राणन की छुटती विरिया यह पुरुष क्षण भर शुद्ध मन को जा श्रीकृष्ण में लगाय के जल्दी देसी कर्मन की वासनान कूं छोड़िके सूर्यकी तुल्य प्रकाशमान ब्रह्मरूप होयके परमगतिकूं पावै है ३२ सब के आत्मा कारण और कारण करिके मनुष्य रूप जिनने धरो ऐसे परिपूर्ण नारायण में अतिशय करिके भक्तिकरो तुमको कहा करनो वाकी रह्यो ३३ अच्युत श्रीकृष्ण थोड़ेही दिन में ब्रज में आयेगे भक्तनके पालन करनवारे भगवान् श्रीकृष्ण जो माता पिता तुमहो तिनकूं आनन्द देईगे ३४ सब यादवन के वैरी कंस कूं राघूमि में मारिके तुमहारे पास आयके श्रीकृष्ण जो क-

शी ३० एतौ हिविश्वस्य च बीजयो नीरामो मुकुन्दः पुरुषः प्रधानम् ॥ अन्वीय भूने पुत्रिलक्षणस्य ज्ञानस्य चेशा तद्मौ पुराणौ ३१ यस्मिञ्जनः प्राणिभोगकाले क्षणं समावेशय मनो विशुद्धम् ॥ निर्हत्य कर्माशयमाशुयाति परांगतिं ब्रह्ममयोऽर्क्षवर्णः ३२ तस्मिन् भवन्ता विलात्महेतौ नारायणे कारणमर्थयुक्तौ ॥ भावं विधत्ता नितरां महत्तमन् किं वाऽवशिष्टं युवयोऽस्मुक्त्यम् ३३ आगमिष्यत्यदीर्घेण कालेन व्रजमच्युतः ॥ प्रियं विधास्यते पित्रोर्भगवान् सात्वतां पतिः ३४ ह त्वाकंसं रङ्गमध्ये प्रतीपं सर्वसात्वताम् ॥ यदा हवः समागत्य कृष्णः सत्यं करोति तत् ३५ माखिद्यते महाभागो दक्षयथः कृष्णमन्तिके ॥ अन्तर्हृदिसंभूतानां मास्तेज्योतिरैव धासि ३६ न ह्यस्यास्ति प्रियः कश्चिन्नाप्रियो वाऽस्त्यमानिनः ॥ नोत्तमो नाधमो वापि समास्यासमोऽपि वा ३७ न मातानपिता तस्य न भार्या न सुतादयः ॥ नात्मीयो न परश्चापि न देहो जन्म एव च ३८ न चास्य कर्मवालो के सदसन्मिथ्यो निपु ॥ क्रीडार्थसोऽपि साधूनां परित्राणां यकल्पते ३९ मत्त्वं रजस्तम इति भजते निर्गुणो गुणान् ॥ क्रीडशतीतोऽत्र गुणैः सूत्रयति हन्त्यजः ४० यथा भ्रमरिका दृष्ट्या भ्राम्यतीति महीयते ॥ चित्ते कर्तारितत्रात्मा कर्त्तव्या धिया स्मृतः ४१ युवयो रे वनैवायमात्मजो भगवान् नृदरिः ॥ सर्वपाप्मात्मजो ह्यात्मा पिता माता स ईश्वरः ४२ दृष्टं श्रुतं भूतं भवद्विविद्यत् स्थास्तुश्चरिणुर्मह दूत भये तां सत्यं करोमि ३५ हे वट्टभागियो ! तुम खेद मतिकरो कृष्णकूं अपने पास ही देखोगे जैसे लकड़ी में ज्योति रहे है ऐसे सब प्राणीन के हृदयमें रहे है ३६ या कृष्णके कोई प्यारो नहीं है और कुप्यारो कोई नहीं है कोई उत्तम नहीं अयम नहीं है और कोई समान नहीं है और वह सब नहीं है और वाके मान नहीं है ३७ न माके माता है न पिता है न स्त्री है न पुत्रादिके वाके देह भी नहीं है और वाको जन्म भी नहीं है ३८ या कृष्ण के कर्मभू नही है संसार में देवादिकनकी मनुष्यादिकनकी जो जो नि हैं तिनमें खेतिने के लिय और साधुनभी रक्षा करिने के लिये प्रकट होई है ३९ निर्गुण भगवान् सत्त्वगुण रजोगुण इन तीनमायाके गुणनकूं श्रमीकार करे है गुणनसूं न्यारे अजन्मा भगवान् कीड़ा करिके विश्वको उपजावै है पालन करे है संसारमें रहे ४० जैसे वास्तक भाई भाई फिर है तब वाकी दृष्टिफरे है तासों पृथ्वी फिरतीसी दिखाई देई है या प्रकार चिच जो कर्त्ता है तामें अहंकारिके आत्मा सोभी कर्त्तासों दिखाई देई है ?

ये भगवान् श्रीकृष्ण तुम्हारे ही पुत्र नहीं हैं सबके पुत्र हैं आत्मा हैं पिता है माता है और ईश्वर है ४२ जो कछु देखिये में आवे और जो सुनिने में आवै जो कन्हु होय चुको और जो होय है और जो होइगो और जो बहुत स्यावर है जलम है जो कछु वड़ो छोड़ो है सो सप श्रीकृष्ण विना आतिशय करिके कथिये कूं योग्य नहीं है परमार्थरूप श्रीकृष्ण हैं सोई सर्वरूप हैं ४३ हे राजन् परीक्षित ! नन्दजी और श्रीकृष्ण के अनुचर उद्धवजीकों याही प्रकार चार्वा करत करत सब राजि वीतिगई गोपी प्रातःकाल उठिके दियाज को चारिके देवरीन को पूजन करिके दही मयति भई ४४ दियाज करिके प्रकाशमान जे मणिन के जड़ाऊ रहने हैं तिनसों सुन्दर लगत भई नेतीन कों लैंचे हैं तामसू भुजान में कढ़ण हलैं हैं नितम्भ जिनके हलन जाय हैं स्तनन पै दार हैं ते भी हलत जाय हैं कुण्डलन करिके प्रकाशमान कपोलैं अरुण केशकी खौरि जिनके मुखपै लगी है ४५ कमलदललोचन श्रीकृष्ण कूं गावैं जो गोपी हैं तिनको गीत स्वर्गपदन्त जातभयो दही के मयिने दहतकञ्च ॥ विनाञ्चुनादस्तुतरंगनाव्यं स एन सर्वपरमार्थभूतः ४३ एवं निशामाश्रुतोर्वीतीता नन्दस्य कृष्णानुचरस्य राजन् ॥ गोप्यः समुत्थाय

दह्यकञ्च ॥ विनाऽन्युनाद्वस्तुतानवाच्यं सएनसर्वपरमार्थभूतः ४३ एवंनिशामाश्रुतोर्व्यतीता नन्दस्यकृष्णानुचरस्यराजन् ॥ गोपयःसमुत्थाय

निरूप्यदीपान् वास्तून्समभ्यर्च्यदधीन्यगन्थन् ४४ तादीपदीप्तैर्मणिभिर्विरेजूरज्जुर्विकर्षद्वजकङ्कणसजः ॥ चलान्नितम्भस्तनहारकुरडलत्विष्यरुपौ  
लारुणकुङ्कुमाननाः ४५ उह्नायतीनामरविन्दलोचनं ब्रजान्नानान्दिवमरपृशङ्खनिः ॥ दध्नश्चनिर्मन्थनशब्दमिश्रितोनिःस्पृतेयेनदिशामङ्गलम्  
४६ भगवत्युदितेसूर्ये नन्दद्वाखिजौकसः ॥ हृद्भारंशातकौभयं कस्यायमितिचानुभू ४७ अक्रूआगतःकिंवायःकंसस्यार्थसाधकः ॥ येननीतो  
मधुरीकृष्णःकमललोचनः ४८ किंसाधयिष्यत्यस्माभिर्भक्तुःप्रीतस्यनिष्कृतिम् ॥ इतिस्त्रीणांवदन्तीनामुद्धवोऽगात्कुवाहिकः ४९ इति श्रीमद्भागवते  
महापराणोद्देशस्य कृष्णवर्द्धनन्दशोकापनयनं नाम पटत्रयार्षोऽध्यायः ४६ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

श्रीशक्रउवाच ॥ तंवीक्ष्यग्रगणानुचंभ्रजस्त्रियः प्रलम्बवाहंनवकञ्जलोचनम् ॥ पतिताम्बापुष्पकमालिनंलसन्मुखारविन्दपरिमृष्टकुण्डलम् । शुचिस्मिन्तः

को जो शब्द है सो भी गतमें मिलिरह्यो है जिन गोपीन के गीतलें दिशान में सम्पूर्ण अमङ्गल दूर होय जाय है ४६ भगवान् सूर्य उदयभयो तब नन्दरायजी के दरवाजे पै सुनहरी साजको रथ ठाढ़ो देखिकै यह कौन को रथ है या प्रकार कहत भई ४७ कहा कंस के कार्य को साधक अनुर आयो है जो अक्रूर कमलदललोचन कृष्ण कूं मधुरा लैगयो हो अपने स्वामी कंसको मरवाय के अत्र क्यों आयो है कहा हमें लेजाय कै हमारे मासके पिण्ड बनायके देगयो या प्रकार गोपी आपुसमें बात करेहीं इतने में उद्धवजी सन्ध्योपासन करिकै आगतभये ४८ । ४९ इति श्रीमन्महाभा-  
गवतार्थखण्डपिण्यां दशमस्कन्धपञ्चविंशोऽध्यायः ४६ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

(सप्तचत्वारिंशकेऽपक्रुष्णदेशेनगोपिका ॥ बोधयित्वोद्धवस्तत्त्वमनुज्ञाप्यामहुरीम् । सैतालीसर्वे अथ्यायं उद्धवजी कृष्णजी की आज्ञासे गोपियों को तत्त्व समझाकर आज्ञा लेकर पथरापुरी को माप्त होजाते भये ? ) अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! लक्ष्मी जिनकी भुजा नवीन कमल से जिनके नेत्र पीताम्बर की पहिरे कमल की जिनके गाला मकराश्रमान



मुखारविन्द्र स्वच्छ कानन में कुण्डल पहरे ऐसे कुण्ण के अनुचर उद्धवजी हैं तिन देखिके व्रज की स्त्री वड़ी आश्चर्य मानत भई १ सुन्दर है रूप जाको ऐसी यह कौन है कहा ते आयो है श्रीकुण्णचन्द्र के सो जाको वेपथै नैसेही गहनेन को पहरे है ऐसी सब गोपी श्रीकुण्ण के चरणारविन्द्र को जिनके आश्रय ऐसे उद्धवजी को चारों ओर ते घेरत भई अश्रनता करिके नह रहैं ऐसी गोपी लाज भरी हैं सनि चितवनि मीठी बोलनि सुं सत्कार जिनको क्रियो एकान्त आसन पै बैठे ऐसे उद्धवजी को श्रीकुण्ण के पास ते सन्देश लैके आयें हैं यह जानि कै पूछति भई २ । ३ यादवन के पति श्रीकुण्ण के तुम सेवकहो यह हम जानें हैं माता पिता के प्रसन्न करिजे के निमित्त तुम कुण्णमूं भेजे हो ४ यादवन में और ऐसों कोई नहीं है जो बाकों स्मरण आवै माता पिता को स्नेह बड़े वैराग्यवान् पुरुष पै भी नहीं छूटे है ५ औरन सों अपने कार्य के निमित्त भित्रता यहां जताई यावत्पर्यन्त काम परो तावत् भित्रता राखी जैसे पुरुष स्त्रीन ते प्यार करै और

कोऽयमपीच्यदर्शनः कुतश्चकस्याच्युतवेपथूषणः ॥ इतिमसर्वाः परिवृक्षस्तुकास्तमुत्तमश्लोकपदाम्बुजाश्रयम् २ तं प्रश्रेयणावनताः सुप्रस्कृतं सब्रीडहामे क्षणमूढतादिभिः ॥ रहस्यपृच्छन्नुपविष्टमासने विज्ञायसन्देशहरं मापतेः ३ जानीमस्त्वांगदुपतेः पापिदंसमुपागतम् ॥ यत्रैह्येतिपित्रोर्भवान्प्रियचिकीर्षया ४ अन्यथागोव्रजेतस्य स्मरणीयं न चक्ष्महे ॥ स्नेहानुमधोवन्धूनां मुनेरपिमुदुस्त्यजः ५ अन्येष्वर्थकृताभैत्री यावदर्थविडम्बनम् ॥ पुमिगः स्त्रीपुक्त्तना यद्धरमुमनस्स्ववपट्पदैः ६ निःस्वन्यजन्तिगाणि काजकल्पं नृपतिं प्रजाः ॥ अश्रीतविद्या आचार्यमृत्विजोदत्तदक्षिणम् ७ खगावीतफलं वृक्षं भुक्त्वा चातिथयो गृहम् ॥ दग्धं शृगास्तथाऽरण्यं जारो भुक्त्वा रतां स्त्रियम् ८ इति गोप्यो हि गोविन्दे गतवाकायमानसाः ॥ कुण्णदूते व्रजं याते उद्धयेत्यक्लौकिकाः ९ गायन्त्यः प्रियकर्मणि रुदन्त्यश्च गतिह्रियः ॥ तस्य संस्पृश्य संस्पृश्य यानिकैशोऽन्ताल्ययोः १० काचिन्मधुकं हृष्टा ध्यायन्ती कुण्णसङ्गमम् ॥ प्रियप्रस्थापि तंदूनं कल्पयित्वेदमब्रवीत् ११ गोप्युवाच ॥ मधुपकितवन्वो मास्पृशान्द्रिंसपत्न्याः कुचविलुलितमालाकुङ्कुमश्रुभिर्नः ॥ वहतुमधुपतिस्तन्मानिनी

भौरा फूलनसूं प्यार करे हैं या चिय या कुण्णेने हम से प्रीति करीरही परन्तु दरिद्री पुरुषहूं जैसे वेश्या त्यागे हैं असमर्थ राजाहूं जैसे प्रजा त्यागे हैं और विद्यार्थी जैसे विद्या पढ़िके गुरुको त्यागे हैं और दक्षिणा पासकै पुरोहित जैसे यजमान को त्यागे हैं ६।७ पत्नी जैसे फलनिवृत्त वृत्तकों छोड़े हैं अभ्यागत भोजन करिके जैसे गृहकों त्यागे हैं हरिण जलेहूये वनकों जैसे त्यागे हैं जार पुरुष भोग करिके जैसे स्त्री को त्यागे हैं या प्रकार कुण्ण हम को त्यागि गयो ८ श्रीकुण्ण के दूत उद्धवजी व्रज में आयो ता समय गोपीन की बाणी देव मन कुण्ण गोविन्द में जाय लगे लौकिक व्यवहार खानपानादिक सब छूटि गये ९ प्यारे के कर्मन हूं गावे हैं श्रीकुण्ण के विशोर और बालअवस्था के जे चरित्र है तिनको स्मरण करिके लाज त्यागि के रुदन करत उद्धव जी ते पूछत भई कोई एक गोपी उद्धव जी को स्वरूप देखिके श्रीकुण्ण के सन्न को ध्यान करिके प्योने प्रसन्न करिजे के निमित्त दूत भेजो है ताप्र अपर मानि कै यह बोलत भई १० । ११ हे मधु ! अर्थात् पुष्पनके रसके पीनवारे ! हे कपटी कुण्ण के मित्र ! हमारे चरणनहूं स्पर्श मति करै प्यारा को देह तो कारो और मुस पारो होय है याकों देखिके कहै है सौति के कुचन सों मीठी

ऐसी जो पुष्पन की माला ताकी केशर तेरी दाढ़ी मूछन साँ लगी है जो तू स्पर्श करेगो तो स्नान करिबो होयगो कदाचित् कहे कि मैं तुम्हारे प्रसन्न करिबे कौं कृष्णसूं भेजो हूँ तहां गोपी कहे है वे जो मथुराकी स्त्री हैं तिनहीं कूं प्रसन्न करौ जैसे तू हमारे पास आयो है ऐसीही यादवन की स्त्रीनके पास जात होयगो कृष्ण को दूत ऐसो निर्लिज्ज है १२ गोपियो ऐसो तुम वा कृष्णको क्यों अनादर करो ही बाने तुम्हारी कहा अनादर करयो है तहा कहे है मोहन करनवारो अपनी अधरायुत है ताथ एक बेर प्यायकै तू जैसे फूलन कौं छोड़ि देइ है ऐसो वह कृष्ण तुरत हमें छोड़ि देत भयो लक्ष्मी वा कृष्ण के चरणकमलकं कैसे सेवन करे है तहा कहे है मैंने जानिलीनी कृष्ण के पीठे पीठे वचनसूं वाको चित्त हरयो गयो है तसू वह परी रहे है १३ बहुत भ्रंशुं शब्दकरै जो भौरा है ताथ हमारे प्रसन्न करिबे के लिये कृष्णकूं गावे है यह मानिकै कहे है हे छः पांव के भौरा ! देख पशु जितने हैं ते चार पांव के हैं तू छःपांवको है याते तू डेढ़ पशु है कैसे कहा गावे है सो तू नहीं जाने है यादवन को पति कृष्ण ताको तू हमारे आगे बहुत गावे है बहुत पुरानो है हमारो देखो भारो है और सखी गायको अपने घरमें बैठो होय ताकूं अच्छो छगै है जा दिनने ते

नांप्रसादं यदुसदसि विडग्भ्यं यस्य दूतस्त्वमीदृक् १२ सकृदधसुधांस्वांमोहिनीं पाययित्वा सुमनसद्वसद्यस्तत्तज्जेऽस्मान् भवादृक् ॥ परिचराति कथंतत्पादपद्मं तु पद्मा ह्यपिवतहतचेता उत्तमश्लोकजल्पैः १३ किमिह बहुषडङ्गे गायसित्वं यदूनामधिपतिमगृहाण मग्रतो नः पुराणम् ॥ विजयसवसखीनां गीयांत त्प्रसङ्गः क्षपितकुचरुजस्ते कल्पयन्ती शमिष्ठाः १४ दिवि सुविचरसायां कां स्त्रियस्तदुरापाः कपटशुचिरहासञ्चू विजृम्भस्य याः स्युः ॥ चरणरज उपास्ते यस्य भूतिर्वयं का अपि च कृपा पक्षे ह्युत्तमश्लोकशब्दः १५ विमृज शिरसि पादं वेद्म्यहं चाटुकारैस्तु नयविदुषस्तेऽभ्येत्यदौत्यैर्मुकुन्दात् ॥ स्मरु न ह विमुष्टा पत्यपत्यन्यलोकाव्यमृजदकृतचेताः किन्नु सन्धेयमस्मिन् १६ मृगशुरिव कपीन्द्रं विव्यधे लुब्धधर्मा स्त्रियमकृतविरूपास्त्रिजितः कामयानाम् ॥ बलिमपि बलिम

कृष्ण मथुरा गये हैं ता दिन ते हमारे घर है न बार है हमपै ते तू कहा लियो चार है जो तेरो गायबो सुनै तो कूं रीभदेयै एक ठौर तो कौं बतावे हैं वहां जा अर्जुन को सत्वा कृष्ण ताकी सखी मथुराकी स्त्री हैं उनके आगे वाको प्रसन्न तू गाउ मथुरा की स्त्रीनके कुचन के रोग अगये हैं कृष्णकी थारी स्त्री तो कौं रीभदेइगी १४ माला ऐसो मति कबो तेरी सुधि करिकै कामदेव ते व्याकुल होयकै तोइ प्रसन्न करिबे के लिये मैं भेजो गयोहौं तहां गोपी कहे हैं कपट करिकै रुचिर जाकी हासी भ्रुकुटीन की चढ़नि ऐसो जो कृष्ण है ताको स्वर्ग में पृथ्वी में म्सातल में जे स्त्री हैं ते कौनसी नापैद हैं लक्ष्मी जाके चरणनकी रजको सेवन करे हैं तहा हमारी कहां चलै है भौरा वा कृष्णको उचपरलोक यह नाम सुनो है जब हम गरीबिनीनकी सुधि लेयगो तब यह नाम रहैगो नहीं तो जात रहैगो १५ अपने पावन साँ लगो ऐसो जो भौरा है ताथ हमपै क्षमा कराये कूं आयो है ऐसो मानिकै गोपी कहे हैं अपने शिरको धरे पावन में ते उठायले पावन में ते नहीं उठे ऐसो जो भौरा है तासूं कहे है मुकुन्द तैं सीलकै दूत वर्गमन सरिकै प्यारे दवन धी जो रचना है तिनकरिकै मनाइवे मैं चलुर जो तू है ताते तेरी सम्पूर्ण वात मैं जानूं हू जब कभऊं रास में मान करती तब अपनी मुकुट उतारिकै हमारे चरणनमें धरतो बहुत खुशामद करतो जैसे वाकी वातनको विश्वास नहीं आवै है ऐसी तेरी वातन को विश्वास नहीं आवै है क्योंजी ऐसो बाने कहा

अपराध कियो है तहां गोपी कहे हैं या ससार में कृष्ण के लिये पति पुत्र यह लोक परलोक सब हमने त्यागि दियो जाकों मनको ठिकानो नहीं ऐसो कृष्ण हमको त्यागि कै चलो गयो अब वाते हम कहा पिलाप करें या प्रकार गोपी कहत भई १६ कृष्ण के पहिले कर्मन की सुधि करिकै हम या कृष्णते भय करे हैं यह वर्णन करे हैं हे भौरा ! कारे रत्न के जे हैं तिनकी कथा हमने सुनि राखी है पहिले अयोध्या में दशरथ को पुत्र राम भयो ताने सुग्रीव की ओर होयकै बधिककी तुल्य बालि काँ माखो व्याध तो मास खायेवे के कारण मारै है याने तो व्यर्थही मारयो बन्दर को कोई मांसहू नहीं खाये दूर्वादल श्याम राम के सुन्दर रूप पै रीकै रावण की बहिन शूर्पणखा आई सीताके बश होयकै लक्ष्मणकै सिखायकै वाके नाक कान काटि लिये दूसरे कारे रत्न को बामन रूप भयो वह राजा बलि पै तें तीन पांव पृथ्वी के मिय सब पृथ्वी लैके कांड कांड करिकै जैसे कौआ घर घेरले हैं तैसे वाकों बांधत भयो तातें हम कारेन की मित्रता संपूर्ण भई अब कदाचिद् भूलिकै कारेन तें मित्रता न करैगी उद्धवजी कहे हैं जब तें मैं आयो हों तवतें वाहीकी बातों कहो हौ तहां गोपी कहे हैं जैसे वामें और गुण हैं तैसे यह अवगुण है वाकू दुःखदायी जानै हैं तथापि वाकी बात हम पै छूटे नहीं है १७ कछु गोपी और कहे है यह बात हम जानै हैं कृष्णकी कथा धर्म अर्थ कामकी जह है ताकी उखारनवारी है तथापि हम पै त्यागी नहीं जाय है

त्वाऽवेष्टयद्धाङ्गवद्यस्तदलमसितसखैर्दुस्सजस्तत्कथार्थः १७ यदनुचरितलीलाकर्णपीयूषविश्रुट्मसृष्टद्वन्विधूतद्वन्धर्मविनष्टाः ॥ सपदिगृहकुटुम्बं दीनमुत्तमृज्यदीनानवहवद्विहङ्गाभिक्षुचर्याचरन्ति १८ वयमृतमिवाजिह्मव्याहृतं श्रद्धानाः कुलिकरुतमिवाज्ञाः कृष्णवधो हरिण्यः ॥ ददृशुस्सकृदेन तन्नखस्पर्शतीव्रस्मरुजउपमन्त्रिन्भणयतामन्यनात् १९ प्रिगसखपुनरागाः प्रेयसाप्रेपितः किं वयमिदमनुरुन्धेमाननीयोऽसि मेऽङ्ग ॥ नयसि कथमिहास्मा बृदुस्सजद्वन्धुपार्ष्वं सततमुत्सिसौम्यश्रीवर्धः साकमास्ते २० अपि वतमधुगुर्मार्थपुत्रोऽधुनास्ते स्मरतिसपितृगेहान् सौम्यवन्धूंश्च गोगान् ॥ क्वचिदपि

देखो जा श्रीकृष्णको लीलाचरित्ररूपी अमृत सो कानन कूं अतिप्रिय अमृत ताकी जो कणिका ताकूं एक बार सेवन करनेसों दूर भये हैं रागादिक जिनके याही ते असवकी तुल्य ऐसे जे पुरुष हैं ते दुःखरूप जे पुत्र पौत्रादिक हैं तिनकों त्यागि कै भोगनकों छोड़ि कै पत्नी की तुल्य घर घर भीख मांगत डोले हैं १८ भौरा कहे हैं ऐसे अब क्यों कहो हौ पहिलेही ता कृष्ण के सङ्ग एकान्त में क्यों न कहत भई तापर गोपी कहे हैं जैसे अज्ञानिनी कृष्णसार हरिण की स्त्री हरिणी वनिके गीतसूं मोहितहोय घायल होय हैं ऐसे हम वा कपटी कृष्णको वचन सत्य मानिकै यह देखत भई कहा जाके नखनके स्पर्श तें बड़ी कामदेव की पीड़ा भई है उपमान्त्रिन् अर्थात् दूत ! वा कपटी की बात जान दे और जान दे और वात कहे १९ इत उत फिर फिराय कै फेरि आयो जो भौरा है तासूं कहे हैं हे प्यारे के सखा ! तू फेरि आयो तो कूं प्यारे कृष्ण ने भेजो है कहा है दूत ! मोकूं पूजा करिबे योग्य है जो तेरे इच्छाहोय सो नर मागिले लक्ष्मी सों संग जाको छूटे नहीं ऐसे कृष्ण के पास हमें ले जायो चाहे है हे भौरा ! वह लक्ष्मी सर्वदा संग रहे है तथापि छाती पै चढ़े है वाकूं दूर करियो तब हम चलैगी २० मथुरापुरी में सुश्रो नन्दको पुत्र कहा अब रहे है हे भौरा ! कभजं वाकों अपने पाता पिता नन्दको स्मरण आवै है और अपने भय्या वन्धुन की सुनि करे है और कभज गोपीनको स्मरण करे है कभजं वह कृष्ण हम दासीनकी बात चलावै है अगरकी तुल्य जामें सुगन्धि ऐसी

अपनी धुआँ हमारे शिर पर कभज आग के रँगो २१ अथ श्रीशुद्धवती कहे हैं हे राजन्परीक्षित ! या प्रकार उद्धवजी श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन की चाहना गोपीन की सुनि कै प्यारे श्रीकृष्ण के सन्देशन संपन्न भये २२ उद्धवजी गोपीनसूँ कहे हैं तुम ने वासुदेव भगवान् श्रीकृष्ण में मन लगायो है अहो गोपियो ! तुम निरचय करिके कृतार्थ भई और लो कर्म तुम्हारी यशहोयगो २३ दान दत्त तप होय जप वेदपाठ इन्द्रियन को रोकियो और अनेक प्रकार के यत्नगण के उपाय सब करिने को फल यही है जो कृष्ण में भक्ति होय २४ वड़े मुनीश्वरन को दुर्लभ ऐसी भक्ति तुम ने उत्तमश्लोक भगवान् श्रीकृष्ण में करी यह वड़ो मंगल है २५ पुत्र पति देह भय्या वन्धु घरन कूँ त्यागिके परमपुरुष भगवान् श्रीकृष्ण तुम ने पतिकरे यह वड़ो मङ्गल भयो २६ हे वङ्ग-भागिनियो ! इन्द्रियन को जिनमें गमन नहीं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र में विरह सँ एकांत भक्ति तुम्हारे भई यह तुमने भरे ऊपर वड़ो अनुग्रह कियो २७ तुमको सुख देनवारी ऐसो प्यारे को सन्देश सकथानः किङ्करीणांगुणिते भुजमगुरुमुगन्धसून्ध्यास्यत्कदानु २१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ अथोद्धवो निशम्यैवं कृष्णदर्शनलालसाः ॥ सान्त्वयन्

प्रियसन्देशैर्गोपीरिदमभापन २२ ॥ उद्धवउवाच ॥ अहोयूयं संपूर्णार्थं भवत्ये लोकपूजिताः ॥ वासुदेव भगवति यासामित्यर्पितमनः २३ दानव तत्पोहो मजपस्वाध्यायसंयमैः ॥ श्रेयो भिविविधैश्चान्यैः कृष्णे भक्तिर्हि साध्यते २४ भगवत्युत्तमश्लोकै भवती भिरनुत्तमा ॥ भक्तिः प्रवर्त्तिता दिष्ट्या मुनीनामपि दुर्लभा २५ दिष्ट्या पुत्रान्पतीन्वेदहान् स्वजनान् भवनानि च ॥ हित्वा वृणीत यूयं यत् कृष्णारुणं पुरुषं परम् २६ सर्व्वं त्मभावोऽधिकृतो भवती नाम बोधने ॥ विरहेण महाभागा महान्मेऽनुग्रहः कृतः २७ श्रूयतां प्रिय सन्देशो भवतीनां सुखावहः ॥ यमादायागतो भद्रा अहं भर्तृहस्करः २८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ भवतीनां वियोगो मे न हि सर्व्वस्मिन्नाकञ्चित् ॥ यथा भूतानि भूतेषु खंवायन्निभूतेषु खंवायन्निजलं मही ॥ तथाऽहं च मनः प्राणभूतेन्द्रियगुणाश्रयः २९ आत्मन्येवात्मनात्मानं मृजेह न्यनुपालये ॥ आत्ममायाऽनुभावेन भूतेन्द्रियगुणात्मना ३० आत्मा ज्ञानमयः शुद्धो व्यतिरिक्तोऽगुणान्वयः ॥ सुषुप्ति

स्वप्न जाग्रद्विर्मायावृत्ति गिरियते ३१ येनेन्द्रियार्थान् न्ध्यायेत सृष्टास्वप्नमदुत्थितः ॥ तत्रिरुन्ध्यादिन्द्रियाणि विनिद्रः प्रत्यपद्यत ३२ एतदन्तःसमाप्तायोगः सुप्तो श्रीकृष्ण के रहस्य कार्य के कर्मवारे ऐसे सन्देश कूँ लै है मङ्गलरूपिणियो ! मैं आगो हों २८ अथ भगवान् गोपीन कूँ उपदेश करे हैं सब को उपादानकारण मैं हूँ ऐसे मोसों तुम कभज दूरि नहीं हो जैसे आकाश पवन तेज जल पृथ्वी ये पञ्चतत्त्व समस्त प्राणीन के देहमें रहे हैं तैसे मन प्राण पञ्चभूत इन्द्रिय और गुण इनको आश्रय हूँ २९ अपनो में अपने करिके अपने कूँ उत्पन्न कर्ल हूँ संसार और पालन कर्ल हूँ अपनी माया के प्रभाव करिके पञ्चभूत इन्द्रिय तीनों गुण इन रूप जो अपनयो है ता करिके सृष्टिकू उत्पन्न पालन प्रलय कर्ल हूँ ३० यहा एक शब्दा है आत्मा पञ्चभूत रूप होय तो वाकूँ पञ्चभूतन के सदा दोष लगे है तदा उत्तर करे हैं आत्मा तो शुद्ध है कोहे ते माया के गुणन में जाय है सब ते न्यारो है ज्ञानरूप है अहंकार ते जानिने में आवे ऐसे आत्मा की न्यारी अवस्था है शुद्धता कैसे तहाँ कहे हैं सुषुप्ति स्वप्न जाग्रत ये जो मनकी वृत्ति हैं तिनसँ प्रतीत होय है आपसूँ नहीं है ३१ अनेक अवस्था यानूँ प्रतीत होय है मन

के रुकिते में जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अवस्था जातिरहे हैं यह दिखायवे कूं मन को निरोध विधान करे हैं जागिके जैसे मिथ्या स्वप्ने को ध्यान करे है ऐसे मिथ्या विषयन कूं जा मनसूं विचार करिके इन्द्रियन कूं पावे है ता मनकूं आलस्य छोड़िके रोको मन जब जाको रुकै है तब कृतार्थ होय है यह कहे है वेद पदे को अष्टांगयोग करे को आत्मा अनतमाके विचारकरे को त्याग तप इन्द्रियन को जीतिवो सांच वोलिवो इत्यादि कर्मन सू विवेकीन को मन रुकै यही फल है जैसे नदीनको अन्त समुद्र में होय है ३२ । ३३ प्यारे में तुम्हारी दृष्टि सें दूर कलं हूं सो तुम्हारी मन भरे विषे लाग्यो रहै और मेरो ध्यान करौ तौ करती वर दूर रहूं हूं जैसे दूर रहे जो प्यारो तामें स्त्री को मन लग्यो रहे है ऐसो जो नेत्रन के आगे रहे तामें चित्त नहीं रहे है ३४ । ३५ लूटी हैं सम्पूर्ण वृत्ति जाकी ऐसे मनकों मो कृष्ण में लगायकै नित्य मेरो ध्यान करती रहोगी तौ शीघ्र मोकूं प्राप्त होउगी ३६ रात्रि में वनमें विहार करनेमें हूं ता भरे सङ्ग नहीं प्राप्त भयो है रास जिनकों ऐसी

साङ्ख्यंमनीपिणाम् ॥ त्यागस्तपोदमःसत्यं समुद्रान्ताद्वापगाः ३३ यत्त्वंहंभवतीनां वै दूरेवत्तेप्रियोदृशाम् ॥ मनसःसन्निकर्षार्थमदनुध्यानकाम्यया ३४ यथादूरचरेप्रेष्ठे मनआविश्यवर्त्तते ॥ स्त्रीणाञ्चनतथाचेतःसन्निष्ठेऽक्षगोचरे ३५ मर्यावेश्यमनःकृत्स्नं विमुक्ताशेषवृत्तियत् ॥ अनुस्मरन्त्योमां नित्यमचिरान्मामुपैष्यथ ३६ यामयाकीडिताराज्यां वनेऽस्मिन्त्रजआस्थिताः ॥ अलब्धरासाः कल्याणयोमापुर्मर्द्वीर्यचिन्तया ३७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंप्रियतमादिष्टमाकर्ण्यत्रजयोषितः ॥ ताऊचुरुद्धवंप्रीतास्तत्सन्देशागतस्मृतीः ३८ ॥ गोप्यऊचुः ॥ दिष्ट्याऽहितोहतःकंसोयदूनांसानुगोऽवकृत् ॥ दिष्ट्वात्सैलंयधसन्वार्धैः कुशल्यस्तेऽव्युतोऽधुना ३९ कश्चिद्द्राग्रजःसौम्यकरोतिपुरयोपिताम् ॥ प्रीतिनःस्निग्धसत्रीदहासोदोरक्षणाञ्चितः ४० कथंर तिविशेषज्ञः प्रियश्चवरयोषिताम् ॥ नानुबध्येततद्वाक्यैर्विभ्रमैश्चानुपूजितः ४१ अपिस्मरतिनःसाधो गोविन्दःप्रस्तुतेकचित् ॥ गोष्ठीमध्येपुरस्त्रीणां ग्रा म्याःस्वैरकथान्तरे ४२ ताःकिंनिशाःस्मरतियामुतदाप्रियाभिर्बृन्दावनेकुमुदकुन्ददशशङ्करभ्ये ॥ रेमेक्षणचरणनूपुरासगोष्ठ्यामस्माभिरीडितमनोज्ञक

गोपी पतिन की रोकी वृज में रहैं ते हे मंगलरूपिणियो ! मेरी लीलान को ध्यानकरि करिके मोर्ही कूं पावतभई ३७ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजनपरीक्षित ! या प्रकार प्यारे श्रीकृष्णने उगदेश करो ताप श्रवण करिके व्रजकी स्त्री गोपी प्रसन्न होय के उद्धवजीसां बोलतभई ३८ अब सम्पूर्ण गोपी कहे हैं कृष्णके सन्देशनसूं स्मरण जिनकों होय आयो यादवन कों दुःख को देनवारो अपने भृत्यन सहित वैरी कंस मरयो यह वडो मंगल भयो पाये हैं सम्पूर्ण मनोरथ जिनने ऐसे हितून सरित श्रीकृष्ण प्रसन्नहैं यह वडो मंगल भयो ३९ हे साधु उद्धव ! गदको वडो मर्या कृष्ण हमसूं जो प्रीति करै हो सो प्रीति कहा मथुरा की स्त्रीनसूं करे हैं वे सुन्दर लाजभरी हैंसनि उदरभरी चितवनिसूं वाको सत्कार करे हैं ४० रतिविशेष को जाननवारो प्यारो कृष्ण मथुराकी स्त्रीनके वचनसूं विलासनसूं जब सत्कार करैगी तब कैसे न वधिगो ४१ हे साधु उद्धव ! गोविंद कभळ प्रसंग पायकै मथुराकी स्त्रीनकी सभामें बैठिके जब वोलैं करे हैं तब गांवकी स्त्री जो हमतिनकी कभळ बात स्मरण करे हैं ४२ उद्धवजी श्रीकृष्णकों कभळ उन रात्रिनको स्मरण आवै है जिनमें कुमोदनी कुन्द फूल रहे चन्द्रमाकी चांदनी सों रमणीय वृन्दावन है तामें पावन में भजन २ नूपुर वज्र

जायें रास में हम जो प्यारी हैं तिनके सङ्ग स्मरण करत भयो सो कदाचित् स्मरण करे है या नहीं ४३ हम जाकी सब मनोहर कथान कूं गावे हैं जैसे श्रीष्णकृतु करि दग्ध जो उन है ता ने सिञ्चन करिवे कों जैसे इन्द्र आवे है तैसे वा कृष्ण के लिये जो शोक है तासूं पजरी भई जो हृषिके तिनकूं हाथके सपरी करिके जीवन करत दाशाईवंशोत्पन्न श्रीकृष्ण कभऊं यहा आयेगो या नहीं यह गोपी कहे है ४४ और गोपी कहे हैं आवैगो २ यह कथा लगाई है कृष्ण यहां काहे कों आवैगो अब बाकों राज्य मिल गयो है शत्रु पारि लियो है राजानकी कन्या व्याधि लीनी है मसख हैं सब मित्र बाके पास हैं अब यहाँ कहा करेगो ४५ और गोपी कहे हैं वीर लक्ष्मी को पति सब बल जाकों प्राप्त याहीते परिपूर्ण ऐसो जो कृष्ण तांकूं वन की रहनवारी हम हैं तिनसूं और राजानकी कन्या हैं तिन सूं कहा प्रयोजन है ४६ आशा को त्याग है सोई चढ़ो सुख है यह पिंगळा वेस्याने एकादश में मण्डो है निराशा वरावर सुख नहीं है यह जाने हैं तथापि कृष्ण ते हमारी आशा छुटे नहीं है ४७ कृष्णकी एकान्त की जो बात है ताथ त्यागिबे कों कौन सपर्य होयगो बाके राखिबे की इच्छा नहीं तथापि लक्ष्मी अंग में तें भ्यारी नहीं होय है ४८ उद्धव ता कृष्ण कूं हम भूलि जायें तो दुः-

थःकदाचित् ४३ अप्येष्यतीहिदाशाहस्तसाःस्वकृतयाशुचा ॥ सजीवयन्नुनोगार्त्रैथेन्द्रोवनमम्बुदैः ४४ कस्मात्कृष्णइहायाति प्रासराज्योद्वताहितः ॥  
नरेन्द्रकन्याउद्धात्य भीतःसर्वमुहद्वनः ४५ किमस्माभिर्वनौकोभिरन्याभिर्वामहात्मनः ॥ श्रीपतेरासकामस्य क्रियेतार्थःकृतात्मनः ४६ परंसौख्यंदिनैरा  
श्यं स्वैरिरग्यग्राहपिङ्गला ॥ तज्जानतीनांनःकृष्णे तथाप्याशादुरत्यया ४७ कउत्सहेतसंत्यक्तमुत्तमश्लोकसंविदम् ॥ अनिच्छतोऽपियस्यश्रीरङ्गाव्रज्य  
वतेकचित् ४८ सरिच्छैलवनोद्वेशागावोवेणुरवाइमे ॥ सङ्कर्षणसहायेन कृष्णेनाचरिताःप्रभो ४९ पुनःपुनःस्मारयन्ति नन्दगोपसुतंवत ॥ श्रीनिकेतै  
स्तरपदैकैर्विस्मर्तुनैवशक्नुमः ५० गत्याललितयोदारहासलीलावलोकनैः ॥ माध्यागिराहताधियः कथंताद्विस्मरामहे ५१ हेनाथहेरमानाथ व्रजनार्थान्ति  
नाशन ॥ मग्नमुद्धरगोविन्द गोकुलं वृजिनार्णवात् ५२ श्रीशुकउवाच ॥ ततस्ताःकृष्णसन्देशैर्व्यपेतविरहज्वराः ॥ उद्धवंपूजयाञ्चक्रुर्ज्ञात्वात्मानमधो

ख न होय सो भूलनो हमकूं नहीं होय है यह गोपी कहे हैं हे प्रभु उद्धव ! हम विचारी कहुं दो घरी कूं जायें परन्तु बाकूं भूले नहीं हैं कदाचित् यमुना पै जायें तो बाकी कारी लहर हमें खायवे कों दौरे है जब गोवर्द्धन पर्यंत कूं देखे हैं तब सुधि आय जाय है वही गोवर्द्धन है जाहि सात दिन हाथ पै राख्यो फेर वन और गाँवन में जायें हैं तब सुधि आय जाय है जिनै धौरी घूमरि करिके बुलावै हो फेरि बाँसुरी श्रवण करे बाकी सुधि आय जाय है बाकों कैसे भूलैं जाने नलदेव जी कूं संग लैके ऐसे आचरण करे हैं ४९ हे उद्धवजी ! नन्द गोप को पुत्र जो कृष्ण है ताके सुन्दर शोभायमान जो वरणन के खोज हैं तिनकूं देखि कै भूलिबे कूं सपर्य नहीं होय है विरह में बारंवार स्मरण करावै हैं ५० मनोहर जिनकी चलनि उदार हैसनि लीलापूर्वक चितवनि मनोहर वचन इन सूं हमारी बुद्धि हरि लीनी वा कृष्ण कूं कैसे भूलैं ५१ अब तो मथुरा की ओर हाथ उठाव के पुकारत भई हे नाथ ! हे रमानाथ ! हे व्रजनाथ ! हे दुःखन के दूरकरनवारे ! हे गोविन्द ! यह नाम तौ गाँवन को पालन करोगे तवहीं रहेगो नहीं तो या नामकों हाथ झारि बैठो और जा समय इन्द्र वर्षों तब यह सकल करघो हो कि अपने व्रजकी मैं रक्षा करूँगो सो अब तो तुम्हारेही विरह



रूप समुद्र में गोकुल दूबो जाय है शीघ्र आय कै थाको उद्धार करो ५२ अथ श्रीशुवदेव जी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! श्रीकृष्ण के संदेशनसू दूर भये हैं विरह के ताप जिनके ऐसी गोपी श्री कृष्ण को परमेश्वर जानि कै और परमेश्वर को आपनो आत्मा निश्चय करिके उद्धृत जी की पूजा करतभई ५३ गोपीन के शोक दूर करिवेके निमित्त कितनेहु मास उद्धृत जी ब्रजमें वास करत भये कृष्णचन्द्र की लीला कथा गाय गाय के व्रजवासीन कूं आनन्द देत भये ५४ जितने दिन पर्यन्त उद्धृत जी नन्द के ब्रज में वसे उतने दिन व्रजवासीन कों कृष्ण की वातनसू क्षण समान बीतत भये ५५ नदी वन पर्वत गुफा पुष्पितवृक्ष इत्यादिकन कूं देखिके हरिदास उद्धृत जी व्रजवासीन कों श्रीकृष्ण कों स्मरण करावत भये ५६ गोपीन के चित्तकूं या प्रकार श्रीकृष्ण में लगिबो है तासूं मन की व्याकुलता देखिके परमपसन्न होय के उद्धृत जी गोपीन कूं दण्डवत् करत बोलातभये ५७ इन गोपन की स्त्रीन को पृथ्वी पै जन्म सफल है काहे से सबके आत्मा जो गोविन्द

क्षजम् ५३ उवासकतिचिन्मासान् गोपीनां विनुदञ्जुचः ॥ कृष्णलीलाकथाङ्गायन् रमयामास गोकुलम् ५४ यावन्त्यहानि नन्दस्य ब्रजेऽवासीत् स उद्धृतः ॥

ब्रजौ कसांक्षणप्रायास्यासन् कृष्णस्य वर्त्तया ५५ सरिद्धनगिरिदोणीर्वीक्षन् कुसुमिताम्बुमान् ॥ कृष्णं संस्मारयन् मे हरिदासो ब्रजौ कसाम् ५६ दृष्ट्वैवमादि

गोपीनां कृष्णवेशात्मविक्रमम् ॥ उद्धृतः परमप्रीतिस्तानमस्य निदंजगौ ५७ एताः परंतनुभृतो भुवि गोपबन्धो गोविन्द एव निखिलात्मनि रूढभावाः ॥ वाञ्छ

न्ति यद्धवाभियोगो भुवनयो वयश्च किञ्च जन्मभिरनन्तकथारसस्य ५८ केमाः स्त्रियो वनचरीऽर्थभिचारदुष्टाः कृष्णे क्वचैव परमात्मनि रूढभावाः ॥ नन्वीश्वरोऽ

नु भजतोऽविदुषोऽपि साक्षाच्छ्रेयस्तनोत्यगदराज इवोपयुक्तः ५९ नायां श्रियोऽङ्ग उ नितान्तरतः प्रसादः स्वयोऽपि तानलिनगन्धर्वान् कुतोऽन्याः ॥ रासोत्सवे

ऽस्य भुजदण्डगृहीतकण्ठलब्धशिषां यददगाद्भवत्त्वर्चनाम् ६० आसामहो चरणेषु जुपामहं स्यां वृन्दावने किमपि गुल्मलतौ पथीनाम् ॥ यादुस्त्यजं स्वज

नमार्थपथं च हित्वा भेजुर्मुकुन्दपदवीं श्रुतिभिर्विष्णुयासम् ६१ यवैश्रियाऽर्चितमजादिभिरासकामैर्योगैश्चरैरपि यदात्मनिरासोऽप्युज्याम् ॥ कृष्णस्य तद्

है तिन में इन को परमभेम भयो है जा मेम कूं ससार तें भयभीत जे मुमुक्षु पुरुष हैं और मुक्त हैं ते इच्छा करे हैं अनन्त श्रीकृष्ण की कथा में जा पुरुष को अनुराग है वाकूं ब्रह्म जन्म सूं कहा प्रयोजन है अथवा एक तो शुद्ध माता पितासूं द्वितीय गायत्री उपदेश सूं तृतीय यज्ञदीक्षा सूं जे ब्राह्मण के तीन जन्म हैं तिनसूं कहा प्रयोजन है ५८ वृन्दावन की विचरनवारी व्यभिचारदृष्टि हरि है दूषित गोपी स्त्री कहों और परमात्मा श्रीकृष्ण में है आलङ्घ्यमान जिनके निरन्तर भगवान् को स्मरण करे हैं ऐसे अज्ञानी पुरुष को भी कल्याण करे हैं जैसे कोई मनुष्य अमृत को सेवन करे यह अमर होय है ५९ सर्वकाल अंग में रही आवै ऐसी लक्ष्मी पै भी यह प्रसन्नता न भई और कमल के गन्ध कीसी है कान्ति जिनकी ऐसी देवगानान कूं जो प्रसाद नहीं मिले सो रासके उत्सव में श्रीकृष्ण के युजदण्डनसूं गलवाहीं लगाय कै पाये हैं मनोरथ जिनने ऐसी व्रजसुन्दरीन कूं मिलत भयो ६० इन गोपीन के चरणरज को सेवन करनवारो वृन्दावन में गुल्म लता ओषधिन में ऋतु मेरो जन्म होव जे गोपी छोड़ी न जायें ऐसे अपने भय्या वन्धु बड़ेन को जो मार्ग है ताकों त्यागि के वेद जाकों हैं ऐसे मुकुन्द श्रीकृष्ण

के मार्ग कू सेवन करत भई ६१ लक्ष्मी ने जाकी पूजन करो और पूर्ण हैं काम जिनके ऐसे द्रष्टादिकन ने जा चरणारविन्द को पूजन करो योगेश्वरने अपने विषे जाको पूजन करो ऐसे श्रीकृष्ण भगवान् के चरणारविन्द कूं राससभा में स्तनन के ऊपर धरि के आलिङ्गन करिकै ताप कों दूर करत भई ६२ नन्द के व्रजकी स्त्रीन ने चरण की रज कों वारंवार नमस्कार कइं हू जिन गोपीन ने हरिकथा जो गाई है सो तिनो लोकन कों पवित्र करे है ६३ अथ श्रीशुभदेव जी कहे हैं हे राजनारीनिवृत्त ! याके पीछे गोपीन सूं यशोदाजी सूं नन्दराय जो गोपन सूं आशा मोंगि के दाशार्हवशोत्पन्न उद्धव जी गमन समय रथ में बैठत भये ६४ उद्धव जी के विदा होने समय नन्दराय जी सूं आदि लोक समस्तग्रजबासी अनेकप्रकार की भेटन कों हाथ में लैके उद्धव जी के पास आय कैं स्नेह ते आँसू जिनके नेत्रन में ते भरिआये ऐसे होकर चोलत भये ६५ हमारे मनकी दृष्टि श्रीकृष्णके चरणारविन्द में लागीरै और हमारी वाणी वा कृष्ण को नाम

भगवतश्चरणारविन्दं न्यस्तंस्तनेपुविजहुःपरिरभ्यतापम् ६२ वन्देनन्दव्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णशः ॥ यासांहरिकयेद्भ्रातं पुनानिभुवनत्रयम् ६३

श्रीशुक उवाच ॥ अथ गोपीरनुज्ञाप्य यशोदानन्दमेव च ॥ गोपानामन्यदा शार्हया स्यन्नाकरुहे रथम् ६४ तन्निर्गतं समासाद्य नानोपायनपाणयः ॥ न  
न्दादयोऽनुरागेण प्रावोचन्नश्रुलोचनाः ६५ मनसो वृत्तयोनस्त्युः कृष्णपादाम्बुजाश्रयाः ॥ वाचोऽभिधायिनीनाम्नां कायस्तत्प्रहणादिषु ६६ कर्मभिमिश्रि-  
माणानां यत्र क्लृप्ता पीश्वरेच्छया ॥ मङ्गलाचरितैर्दानैर्मतिर्नः कृष्ण ईश्वरे ६७ एवं सम्भाजितोगोपैः कृष्ण भक्त्या नराधिप ॥ उद्धवः पुनरागच्छन्मथुरां कृष्ण पा-  
लिताम् ६८ कृष्णाय प्रणिपत्या ह भक्त्युद्रकं ब्रजौकसाम् ॥ वासुदेवाय रामाय राज्ञे चोपायनान्यदात् ६९ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धेषु पञ्चवी-  
र्द्धे उद्धवप्रतियनेन सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथविज्ञाथभगवान् सर्वात्मासर्वदर्शनः ॥ सैरन्ध्रवाःक्रामतसायाः प्रियमिच्छन्गुह्ययो १ महाडोषस्कराढ्यं कामोपायोपवृंहि  
लियो करे हमारो शरीर वा कृष्ण कूं प्रणाम करो करे ६६ अपने कर्मानुसार ईश्वर की इच्छा तें जो काहू योनि में हम जायें तो जो कुछ हमने मङ्गलरूप कर्म करे हैं अथवा दान करे हैं  
तिनको यही फल गोंगे हैं कि कृष्ण में हमारी प्रीतिरहै ६७ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार गोपीन ने कृष्ण में जैसी भक्ति तैसी भक्ति करिके सत्कार जिनको करो ऐसे उद्धवजी सों श्रीकृष्ण  
जाको पालन करे ऐसी मथुरा पुरी में फेर आवत भये ६८ श्रीकृष्ण कों प्रणाम करिके उद्धव जी व्रजवासीन की भक्ति की अधिकता कहत भये और वसुदेव कों प्रणाम करिके वलदेव जी  
कों प्रणाम करिके राजा उग्रसेन कों भेट देत भये ६९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूव्वर्णिते उद्धवप्रतिपत्त्यानेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥ \* ॥ ५

( अष्टचत्वारिंशैऽथकृष्णः कुब्जापरीरमत् ॥ अक्रूरस्यष्टहन्वातंगजाद्वयमादिशत् । सैरन्ध्रीकामपाठ्यपूर्परियत्वमनोरथान् ॥ अक्रूरस्यततःकृष्णस्तेनपार्थानसान्नयत् २ अहतालीसर्वे अन्ध्या-  
य में कृष्णजी कुब्जा के साथ रमण करतभये और अक्रूरजी के घर जाकर तिनको हस्तिनापुर भेजते भये । कुब्जा की कामना पूरीकर और अक्रूरजी के मनोरथों को भी पूर्णकर अक्रूरजी

कुन्ती ने पुत्रों को समझाने धये २) अथ श्रीकृष्णदेवजी कहे हैं राजन्यद्वीचित् ! उद्धवजी जत्र वृज ते आये ताके पीछे सब के आत्मा और राव के देवनारे छः प्रकार के घेयनर्य करिके युक्त ऐसे श्रीकृष्ण तन्त्र काफूसू तपायमान जो कुञ्जा है ताके प्रिय करिके लिये वाके घर जात भये १ कैसो घर है ताको वणन करे ई वड़ेमोलकी अनेक तरहणी गामें वस्तु यही हैं काम के उद्दीपन करननारे चित्र जामें क्लिष्ट हैं मोतीन की फालारि जिनमें लटकै ऐसी पताका फहराय हैं चंदोवा तनि रहे हैं शय्या बिछ रही है सुन्दर आसन बिछे है तुगन्वि की धूप लागि रही है दीया प्रज्वलित होय रहे है माला अतर अरगजा घरे हैं तिनसों शोभायमान घर है २ श्रीकृष्ण कों अपने घरमें आये देखिके कुञ्जा जल्दीदेसी आसनपै ते उठिके हरवराइट जाके भयो या प्रकार सत्वीन कों सन्न लिये श्रीकृष्ण के पास आवत भई सुन्दर आसन विछायके चरण धोइके सत्कार करत गई ३ तैसेही भलेमकार पूजन जिनको क्रियो ऐसे उद्धवजी आसन कूं हाव लागाय के पृथ्वी में

तस् ॥ मुक्तादामपताकाभिर्वितानशयनासनैः ॥ धूपैःपुराभिर्दिपैःसमन्धैर्गमिषिडितम् २ गृहंतमायान्तगवेक्ष्यसासनात्पद्मःममुत्थायहिजातसम्भ्रमा ॥ यथोपसङ्गम्यसखीभिरच्युतंसभाजयामाससदासनादिभिः ३ तथोद्धवःसाधुतयाऽभिपूजितोन्यपीददुर्ग्यामभिमृशयचासनम् ॥ कृष्णोऽपितूर्णशयनंमहावनं विवेशलोकाचरितान्यनुव्रतः ४ सामज्जनलोपदुक्कूलभूषणसगन्धनाम्बूलमुचासवादिभिः ॥ प्रसाधितात्मोपससारमाधवं सवीडलीलोत्स्मितविभ्रमेक्षितैः ५ आहूयकान्तानवसङ्गमद्विद्या विशाङ्कितांकङ्कणभूषितेकरे ॥ प्रगृह्यशय्यामधिवेश्यलेशया ६ साऽनङ्गनसकुचयो हरसस्तथाऽक्ष्णोर्जिघ्रन्यनन्तचरणेरुज्जोमृजन्ती ॥ दोर्भ्यास्तनान्तगतंपरिभ्यक्तान्तमानन्दमूर्त्तिमजहादतिदीर्घनापम् ७ सैवंकैवल्यनाथंतंभ्राप्यदुष्प्रापमीश्वरम् ॥ अङ्गरागार्पणेनाहोर्भगेदमयाचत ८ आहोष्यतामिहप्रेष्ठदिनानिकतिचिन्मया ॥ रमस्वनोत्सहेत्यक्तुंसङ्गन्तेचुरुहेक्षण ९ तस्यैकामवरंदत्त्वा मानयित्वाचमानदः ॥ सहोद्धवेनसर्वेशः स्वधामागमदर्वितम् १० दुराराधं समागम्य विष्णुं सर्वेश्वरेश्वरम् ॥ योवृणोतिभनोभ्राह्ममसत्त्वात्कुमनी

वैठतभये लौकिक लीलान कूं करे ऐसे श्रीकृष्ण हूं जल्दीदेसी सुन्दर विछी जो शय्या है तापै जातभये ४ स्नान करिके चन्दन लगाय सुन्दर वस्त्र पहिन गहने माला अतर अरगजा ताम्बूल और अमृत की सी नाई मादक जे वस्तु हैं तिनसूं अपने कूं बनाय उनायके लाजभरी लीलापूर्वक मुसिकानि कटाक्ष भरी चितवनि सूं मोहति भई ५ नवीन समागम की लज्जासू शङ्कारहित जो कुञ्जा है ताकूं बुलायके कङ्कण करिके शोभायमान जो हाथ है ताको पकरिके शय्या पै बैठायके चन्दन को देनो जाके पुण्य को लेश ऐसी जो कुञ्जा छी है ताके संग श्रीकृष्ण रमण करतभये ६ कामदेव सू तस जे कुच हैं तिनको ताही प्रकार छाती और नेत्रन कों जो ताप है ताथ अनन्त श्रीकृष्ण के चरणारविन्द कूं संधिके स्तनन के मध्य में प्राप्तभये जो सुन्दर आनन्दमूर्त्ति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको भुजानसूं आलिगन करिके बहुत दिनन सूं बढ़ो जो ताप है ताकूं त्यागति भई ७ चन्दन के अर्पण करे ते मोक्तके देननारे दुर्लभ ऐसे श्रीकृष्ण ईश्वर हैं तिन पायके अभागिनी कुञ्जा यह मागति भई ८ अहो प्यारे कुल दिनवासिके मेरे संग रमण करो दे कमलनेत्र ! तुम मोपै त्यागे नहीं जावो हो ९ एक बेर तेरे नित्यहोय जावो करुंगो

ऐसे ता कुञ्जा को कामवर दैके याको सन्मान करिके मानके देनधारे ब्रह्मादिकुन के ईश्वर श्रीकृष्ण उद्धवजी को सत्सत्त्व के सुन्दर जो अपनी घर है तामें आवतभये १० सम्पूर्ण ईश्वरन के ईश्वर दुःख करिके आराधन करिये में आवै ऐसे जो विष्णु तिन मसन्न करिके जो पुरुष विषयनको वरमागे वह बड़ो कुतुह्लि है क्योंकि विषय तुच्छ है ११ धनदेव उद्धवजी को सत्त्व के समर्थ श्रीकृष्ण बहुत कार्य करायये के लिये अक्रूर को भलो मनाइये के निमित्त अक्रूर के घर जातभये १२ अक्रूरजी मनुष्यन में श्रेष्ठ अपने वन्द्य जे श्रीकृष्ण वलदेव हैं तिनको दूर ते देखिके प्रमत्त होयके भिलिके आनन्द पातभये १३ कृष्ण वलदेव उद्धवजी ने नमस्कार जिनको करो ऐसे अक्रूरजी पथात् कृष्ण वलदेव को प्रणाम करतभये और आसन पै बैठे जे कृष्ण वलदेव तिनकी पूजा करतभये १४ हे राजन् परीक्षित् ! कृष्ण वलदेवके चरण को धोवन जो जल है ताय शिरपे चढ़ावत भये पूजा सू दिव्य वस्त्र बन्दन माला उत्तम गहनेन संपूजा करिके चरण धोइके प्रणाम करतभये और गोदमें

बयसौ ११ अक्रूरभवन्कृष्णः सहसामोद्धवः ॥ किञ्चिन्किर्पयन्गगादक्रूरप्रियकाम्यया १२ सतानवरश्रेष्ठानाराद्धक्षिणस्ववान्वयात् ॥ गत्युत्थायप्रसु

दितः परिष्वज्यागिनन्द्य च १३ ननामकृष्णं रामश्च सैरग्यभिवादिनः ॥ पूजयामास विधिवत्कृतानसनपरिग्रहान् १४ पादावनेजननीरापोभारयञ्चिच्छरसानृप ॥

अर्हणेनाम्बरैर्दिव्यैर्गन्धहारभूषणोत्तमैः १५ अर्चित्वा शिरसान्मय पादावह्नुगतौष्टुजन् ॥ प्रश्रयावनतोऽक्रूरः कृष्णरामावभापत १६ दिष्ट्वा पापोहतः कं

सः सानुगोवा मिदं कुलम् ॥ भवद्भयामुष्टुतं कृच्छ्राहुरन्ताच्च समेधितम् १७ शुवांप्रधानपुरुषौ जगद्धेतूजगन्मयौ ॥ भवद्भयानं विना किञ्चित्परमस्ति न चाप

रम् १८ आत्मसृष्टि मिदं विश्वमन्वाविश्य स्वशक्तिभिः ॥ इयते बहुधा ब्रह्मञ्जुतिप्रत्यक्षगोचरम् १९ यथाहि भूनेपुत्राचरेषु मद्यादयो निषुभान्ति नाना ॥

एवं भवाद् केवल आत्मयोगिन्वात्मात्मतन्त्रो बहुधा विधाति २० मृजस्य योलुम्पसिपसि विश्वं रजस्तमः सत्त्वगुणैः स्वशक्तिभिः ॥ न वध्यसे तद्गुण रुर्मभिर्वा

ज्ञानात्मनस्तेनैकवन्धहेतुः २१ देहाद्युपाधेर्निरूपितत्वाद्भूतनासाक्षान्निधात्मनः स्यात् ॥ अतो न वन्धस्तव नैव मोक्षः स्यात्तानि कामस्स यिनोऽपि वैकृः २२

चरणन कुं धरिके दावतभये अधीनतापूर्वक नइके अक्रूरजी कृष्ण वलदेवजी संचोलतभये १५ १६ मन्त्रीनसहित पापी कंस मारो बड़े कष्टते तुमने या गोकुल को उद्धार कियो और कुलकों न दायो यह बड़ो मङ्गलभयो तुम प्रकृतिरूप हो जगत् के कारण हो जगन्मय हो तुम ते पृथक् बहुत कार्य कारण नहीं है १७ १८ आपने रचो जो विश्व है तामें अपनी शक्तिनसहित प्रवेश करिके हे ब्रह्मन् अर्थात् परमेश्वर ! श्रवण करिये में देखिये में देखिये में बहुत प्रकारके प्रतीत होउ हो १९ स्मार जद्रम जे देह हैं तिनमें पृथ्वी को आदिले के पञ्चभूत हैं तिनकुं अनेक प्रकार करिके प्रकाशो हो ऐसे अपने पापी अहेले तो तुमहो सो आपुही जिनके कारण ऐसे पञ्चभूत और पञ्चभूत के बने देह तिनमें बहुत रूप करिके प्रकाशो हो २० रजोगुण तोगुण सत्त्वगुण अपनी शक्ति हैं तिन सों विश्वको उत्पन्न प्रलय पावन करो हो ते गुण और उत्पत्त्यादिक कर्म तिन सों बंधे नहीं हो ज्ञानरूप तुमहो तिनकुं वन्धन कारनवारी अदिद्या नहीं है २१ देहादि उपाधि भंडी साची कहिये में नहीं आवै ताते आत्माको साक्षात् जन्म नहीं है जन्म जाको कारण ऐसो भेद नहीं है तुम में अविद्या नहीं है याते बंधे नहीं हो छूटे भी नहीं हो ऐसे वन्ध मोक्ष दोनों तुम

को नहीं है उलूखलमें मोकों धँवो सुनो है यमुना के भीतर खुल्यो देखो है वन्य मोक्ष कैसे नहीं है हमारे अज्ञानकरिके वन्य मोक्ष दिखाई देउहो तुम धँवोही न छूँहो २२ जगत् के कल्याण करिवे के निमित्त तुमने कबो जो सनातन वेदमार्ग है सो जासमय असाधुन के पाखण्ड मार्गसे वापिस होय है तासमय सत्पुरुष रूपको धारण करोही २३ हे प्रभो ! या संसारमें पृथ्वी को भार उतारिवे के लिये अपने अंग वलदेवसहित वसुदेवजी के घरमें जन्मे हौं देवतानें इतर जे असुर तिनके अंशनेते उत्पन्नभये जे राजा है तिनकी सैकरान अन्नौहिणीन के वध करोगे और यदुल्ल के यशस्कू वधो जो २४ हे ईश ! आज हमारो घर निश्चय वड़भागी है सब देवता पितृ प्राणी मनुष्य देवरूप जो तुमहो तिनके चरणारविन्द को धोवन जल गन्नाख्य तीनों लोकरुन हौं पवित्र करे है सो तुम जगत् के गुरु अन्नोक्षज भगवान् हमारे घरमें आवेहो याते हमारो घर वड़भागी है २५ भक्त हैं प्यारे जिनको सत्य है वाणी जिनकी सबके हितकारी कृतके जाननवारि ऐसे जो तुमहो तिनको त्यागि

त्वयोदितोऽयं जगतो हिताय यदायदावेदपथः पुराणः ॥ वाध्येत पाखण्डपथैः सद्भिस्तदा भवान्सत्त्वगुणैर्विभर्ति २३ सत्त्वप्रभोऽद्य वसुदेवगृहेऽवतीर्णः स्वांशो नभारमपनेतुमिहासिभूमेः ॥ अक्षौहिणीशतवधेनसुरेतरांशराज्ञाममुष्यचकुलस्यशोवितन्वन् २४ अद्येशनोवसतयः खलुभूरिभागायः सर्वदेवपितृभूतान् देवमूर्तिः ॥ यत्पादशौचमलिलं त्रिजगत्पुनाति सत्त्वजगद्गुरुधोक्षजयाः प्रविष्टः २५ कः पण्डितस्त्वदपरांशरां समीयाद्वक्त्रप्रियादृतगिरः सुहृदः कृतज्ञात् ॥ सर्वान्गददाति सुहृदो भजतोऽभिरामानात्मानमप्युपचयापचयौनयस्य २६ दिष्ट्वा जनार्दन भवानिहनः प्रतीतो योगेश्वरैरपि दुरापगतिः सुरेशैः ॥ क्षिन्ध्या शुनः सुतकलत्रधनासंगे हृद्देहादिमोहरशानां भवदीयमायाम् २७ इत्यर्चितः संस्तुतश्च भक्तेन भगवाच्चरिः ॥ अक्रूरं सस्मितं प्राह गीर्भिः संमोहयन्निव २८ श्री भगवानुवाच ॥ त्वं नो गुरुः पितृव्यश्च श्लाघ्यो वन्धुश्चानित्यदा ॥ वयं तुरक्ष्याः पोष्याश्च अनुकम्प्याः प्रजाहिंवः २९ भवद्विधामहाभागानि पेव्या अर्हसत्त्वमाः ॥ श्रेयस्कामैर्नृभिर्नित्यं देवाः स्वार्थानसाधवः ३० न ह्यभ्ययानितीर्थानि न देवामृच्छितामयाः ॥ तेषु न न्यरुक्तालेन दर्शनादेवसाधवः ३१ स भवान्सु

के ऐसो बुद्धिमान् कौन है जो अन्यकी शरण लेई भजन करनेवालेन कूं सम्पूर्ण कामनान कों देउहो और अपने आत्माकूं भी देउहो और तुम्हारे यह उत्तम है यह नीच है यह भेद नहीं है २६ हे जनार्दन ! अपने घरमें आयके दर्शनदीनो यह वड़ो मङ्गलभयो योगेश्वर और देवता ये तुम्हारे स्वरूपकूं नहीं जाने हैं पुत्र स्त्री धन हितकारी घर देहादिकनमें मोहकी रस्सीरूप जो तुम्हारी माया है सो हमको लगिरही है ताय जल्दी काटो २७ भक्त जो अक्रूर है ताने पूजन और स्तुतिकरी ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण वाणीनसूं मोहित करत मुसिकाय है अक्रूर जीते बोलतभये २८ श्रीकृष्ण भगवान् कहे है तुम हमारे गुरुहो चचाहो नित्य स्तुति करिवे योग्यहो वन्धुहो हम तुम्हारे लरिकागरे हैं हमारी रत्नाकरो पोषणकरो हमपै कृपाकरो २९ हे पूज्यनमें श्रेष्ठ ! तुम सदृश वड़भागी कल्याण की जिनके चाहना ऐसे मनुष्यन सों नित्य सेवा करिवे लायकहो देवता आप स्वार्थी नहीं होयें ३० कहा जलपय तीर्थ नहीं है और मृत्तिका शिलान के बने देवता नहीं हैं किन्तु हैं परञ्च वे सब बहुत दिन पर्यन्त सेवा करनेते पवित्र करे हैं और साधु जे हैं ते दर्शनही ते पवित्र करे है ३१ हे अक्रूरजी ! हमारे सुहृदनमें उत्तमहो याते





की इच्छा है ताव और धृतराष्ट्र के पुत्रन ने विपके देवे सँ आदिले के जो कहलु अन्याय करयो है सो सम्पूर्ण वार्त्ता कुन्ती और विदुर अर्जुनी के आगे कहत भये ॥१६ कुन्ती आयो जो भय्या अक्षर है तासँ मिलि के और अपने जन्मस्थान हो स्मरण करि के नेत्रन में आँसू बहावति अक्षर जी तें बोलत भई ७ हे सौम्य अर्थीव साधु ! मेरे माता गिता कभजं मेरो स्मरण नरे हे मेरे भद्रव बहिन भय्या के पुत्र कुलकी स्त्री सरी ये सब व भजं मेरी सुमि करे हे शमणगतन को पालक भक्तन के ऊपर हित को करनवारी भय्या को पुत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कभजं जपनी कुली के पुत्रन की सुधि मेरे हे तपल की तुल्य हैं नेत्र जाके फेसो राग कभजं सुधि करे हे ८ । ९ मेहुहाल के बीच में हरिणी जैसे विर जाय ऐसे वैरीन के बीच में विरी भई शोच कले जो में हुं ताव वचन करि के श्रीकृष्ण कहा समझावैगो पिता जिनके मरि गये ऐसे भालकन को कहा समझावैगो १० हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे निराशे आत्मन् ! हे विरन के पालनकर्त्ता ! हे योगिन्द !

कृतञ्च वार्त्तागर्ह्यैर्दुरादानाद्यपेशलम् ॥ आचख्यौमर्त्तवैवास्मै पृथाविदुग्वचन ६ पृथातुभ्रातरं प्रसन्नं सुपभृत्यतम् ॥ उवाच जन्मनिलयं स्मरन् यश्च कलेक्ष एव ७ अपि स्मरन्ति नतः सौम्यपितरौ भ्रातरश्च मे ॥ भगिन्यो भ्रातृपुञ्जाश्च जामयः सख्यश्च ८ भ्रात्रेयं भगवान् कृष्णः शरख्यो भक्तवत्तलः ॥ पैतृजनो यान् स्मरति रामश्चाश्वरुहेक्षणः ९ मपलमध्ये शोचन्ती वृकाणाहिरिणीमिव ॥ सान्त्वयिष्य निमांवात्मैः पितृहानां श्रवालाहान १० कृष्ण कृष्ण गहायोगिन विश्वात्मन् विश्वभावन ॥ प्रपन्नां पाहि गोविन्द शिशुभिश्चात्र मदीतीय ११ नान्यत्तत्र पदाम्भोजात्पश्या गिराणं नृपाय ॥ विश्वतां गृह्यसंसागदीशनररम्भा पवर्गिकात् १२ नमः कृष्णाशशुद्धाय ब्रह्मणे परमात्मने ॥ योगेश्वराय योगाय त्वामहं शरणं गता १३ श्रीशु कउवाच ॥ इत्यनुस्मर्य शमजं नृक्षेत्रजमदी श्वरम् ॥ प्रारुद्धः खितराजन् भयतां प्रपिनामही १४ रामदुःखमुखोऽब्धो विदुरश्च गहायशाः ॥ सान्त्वयामासतुः कुन्ती तत्पुत्रोत्पत्तिं तुभिः १५ यास्यन् राजानमभ्येत्य विपमं पुञ्जलालसम् ॥ अवदत्सुहृदां मध्ये वन्धुभिर्गौहृदादितम् १६ अद्भूतवाच ॥ सो भो वैचित्रवीर्यर्षेणं कुरुखां कीर्त्तिमर्द्धन ॥ आतस्यु वालकन सवित दुःखित होय न हेरी शरण आई जो में हूँ ताकी रक्षा करो ११ मृत्युक्षी संसार ते भयभीत जे मनुष्य हैं तिनके ईश्वर तुम हो और मोक्ष के देनारी जो चरणकमल है तासँ अन्य को शरण नहीं देसौं १२ शुद्ध अर्थात् धर्मात्मा ब्रह्म अपरिच्छिन्न अर्थात् दलिते में नहीं आवै परमात्मा अर्थात् जीव के सत्ता योगेश्वर अर्थात् शक्तियुक्त योग अर्थात् ज्ञानरूप ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र तुम हो तिनको नमस्कार है तुम्हारी भैंने शरण लियो है १३ अब श्रीशु कदेन जी कहें हैं हे रागनारी क्षितिव ॥ या प्रकार जगत् के ईश्वर अपने भतीजे श्रीकृष्ण तिनकी सुधि करि के तुम्हारी परदादी कुन्ती दुःखित होय के रुदन करत भई १४ वरामर है दुःख और सुख जिन के ऐसे अक्षर और चढो है यश जिन के ऐसे निदुर जी कुन्ती के समझावै हैं तुम्हारे पुत्र धर्म पवन इन्द्र इत्यादिकन के अशतें उत्पन्न भये तुम इतनो शोच क्यों करो हो या प्रकार कहत भये १५ चलने समय अपने पुनन में है स्नेह जाके और भतीजन में निपमता जाके ऐसे राजा धृतराष्ट्र के पास जाय के सुहृदन के मध्य में जे रामकृष्णादिक वधु हैं तिन ने स्नेह ते कहे जे वचन हैं तिन अक्षर जी कहत भये १६ अब अक्षरजी कहें हैं हे वैचित्रवीर्य धृत्-

राष्ट्र कौरवन की कीर्ति के बढ़ावनवारे भयया पाण्डु मेरे हितके पीछे अब तुम राजासिंहासन पे बैठे हो अर्थात् राजा पाण्डु के पुत्र युधिष्ठिरादिक बैठे हैं तुम राज्य बैठे सो उचित नहीं है यह कदात्त करे है १७ अब अक्रुरजी कोहैं बहुत उत्तम राज्य करो परन्तु या 'प्रकार वतोगे तो कल्याण होयगो सो अक्रुर जी कोहैं धर्म करिके पुत्री को पालन करोगे और शील करिके प्रजा को आनन्द देवगे और भतीजेनमें और पुत्रन में समता राजागो तब संसार में कल्याण और यशको पावोगे १८ और जो विपमता राजागो तो संसार में निन्दा होयगी और मरिक्के नरक में जावोगे ता कारण पाण्डवन में और आपने पुत्रन में समता राजा १९ है राजन् धृतराष्ट्र ! या संसार में कहा को सत्सग सर्वजाल नहीं रहे हैं और अपने देह भी सदा नहीं रहै हैं देखो विचार करिके स्त्री पुत्र ये सर्वदा कहाँ रहेगें २० बीच अकेलोही जन्म लेहैं और अकेलोही मरु पावै हैं अकेलोही पुण्यको फल सुख है ताकूं भोगे हैं और अकेलोही पाप को फल परते पाण्डावधुनासनमास्थितः १७ धर्मेषु पालयद्युर्वीप्रजाःशीलिनश्चयन् ॥ वर्त्तमानःसमःस्वेपु श्रेयःकीर्त्तिमवाप्स्यसि १८ अन्यथात्वाचरल्लोकैर्गर्हितो यास्यसेतमः ॥ तस्मात्समत्वेवर्त्तस्वपाण्डवेज्वात्मजेपुत्र १९ नेहचात्यन्तसंवाप्तःकर्त्तवित्केनचित्सह ॥ राजन्स्वेतापिदेहेन किमुजायारमजादिभिः २० एकःपुम्यतेजन्तुरेकएवप्रजियते ॥ एकोऽनुभुङ्क्तेसुकृतमेकएवचङ्कृतम् २१ अधर्मोपचितंविस्तरं हन्यन्येऽलग्नेधसः ॥ सभोजनीयापदेशैर्जैलानीव जलौकसः २२ पुण्यातिगन्धर्भेण स्वबुद्धयातमपरिहृतम् ॥ तेऽकृतार्थप्रहियन्तिप्राणरायःसुतादयः २३ स्वयंकिल्बिषमादाय तैरयक्कोनार्थकोविदः ॥ असिद्धार्थोविश्रत्यन्धस्वधर्मविमुखस्तमः २४ तस्माह्लोकमिमंराजन्स्वप्रपायामनोरथम् ॥ वीक्ष्यायम्यात्मानाऽऽत्मानंसमःशान्तोभवप्रभो २५ ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ यथावदतिकल्याणी वाचंदानपतेभवान् ॥ तथाऽनयानतृप्यामि मर्त्यःप्राप्यथाऽमृतम् २६ तथाऽपिमूढतासौम्यहृदिनस्थीयतेचले ॥ पुञ्जानुरागविपमे विद्युत्सौदामिनीयथा २७ ईश्वरस्यविधिकोन्निविधुनोत्यन्यथापुमान् ॥ भूमेर्भारवताराय योऽवतीर्णोऽयदोःकुले २८ योऽहोर्विमर्शयथ दुःख है ताकूं भोग करे है २१ अज्ञानी पुरुष ने जो पाप करिके धन सञ्चय करयो है ताकूं स्त्री पुत्र भयया वन्द्य होयके लेहैं जैसे जल ही रहनवारी मछरीन को जियावनवारो जल है ताकूं बाके पुन पीलेहैं तब बाको कष्ट होय है २२ पाण्डी है एक मार्ग को खर्व जाके ऐसो पुरुष नरक में परे है यह कहे हैं अधर्म तें अपने मानिके प्राण धन पुत्रादिकन को भयण पोषण करे हैं और जब भोग जिनकूं नहीं मिले है तब वा अज्ञानी पुरुष कूं त्यागि देह हैं २३ जब पुत्रादिक जाको त्यागि देह हैं तब सब के पाप का अपने शिर पे धरिके वही पूर्ण नरक में परे है २४ ता कारण है समर्थ राजा धृतराष्ट्र ! स्वप्न और वाजीगर की भाया तथा मनको विचार ये सब तुमकूं भिषयायुत दिखाई देय हैं तैसेही या संसार कूं पिषयायुत समझिके आपही अपने मनको रोकिके समता राजा शान्त होहो २५ राजा धृतराष्ट्र कहे हैं हे दाननके पति अक्रुर ! जे तुम कल्याणकारक श्रेष्ठ वचन कहो हो तिनकूं श्रवण करत करत मेरो मन तस नहीं होयहैं जैसे मनुष्य अमृतकूं पान करत करत तस नहीं होय है या प्रकार २६ तथापि हे अक्रुर ! मेरो चञ्चल पुत्रन में स्नेह है तासूं विषम जो हृदय है तासूं तुम्हारी प्यारी वात ठहरे नहीं है जैसे स्फटिकमणि के सुदामा पर्वत पे

विजुरी चमकि कै स्थिर नहीं रहे है या प्रकार २७ ऐसो तुम जानो ही फोर मोह क्यों करो हो या प्रकार कदाचिद अक्रूरजी कहो ताको उचर धृतराष्ट्र देह है ईश्वरकी माया कुं कौन पुरुष अन्यथा करिसकै है जो ईश्वर ने पृथ्वी को भार उतारिबे के कारण यादवन के कुल में आयकै अवतार लियो है २८ जो ईश्वर विचारमें न आवै ऐसी जो अपनी माया है तामूं या विद्व कूं उत्पन्न करिकै और तामें प्रवेश करिके कर्म और कर्मन के फलन कूं न्यारे न्यारे करिके जीवन कों देह है जानिबे न आवै ऐसो जो विहार अर्थात् खेल है सोई है मुख्य कारण जा संसारचक्र को ऐसे जो परमेश्वर तुमहो तिनकूं नमस्कार है २९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजनपरीक्षित् ! या प्रकार यदुवंशोत्पन्न अक्रूरजी धृतराष्ट्र को अभिप्राय जानिके सुहृदन सूं आज्ञा मागिके फोर यानिजसाययेदं सूक्ष्मगुणान्विभजतेतदनुगविष्टः ॥ तस्मै नमोऽहवबोधविहारतन्त्रसंसारचक्रगतये परमेश्वराय ३० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्यभिप्रेत्यनु पतेरभिप्रायं सयादयः ॥ सुहृद्भिः समनुज्ञातः पुनर्यदुपरीमगात् ३० ॥ शशंसरामकृष्णभ्यां धृतराष्ट्रविचोदितम् ॥ पाण्डवान्प्रति कौरव्य यदर्थमोषितः स्वयम् ३१ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे ऽष्टादशसाहस्रयां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे एको नपञ्चाशत्तमो ऽध्यायः ४९ ॥ पूर्वार्द्धः समाप्तिमगमत् ॥

इति श्रीमद्भागवते दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धः समाप्तः ॥

मथुरापुरी में आगतये ३० हे कुरुवंशोत्पन्न राजन् परीक्षित् ! वलदेव श्रीकृष्णचन्द्र ने आय जिस कारण अक्रूरजी को पाण्डवन के पास भेजो हो सो सब धृतराष्ट्र की कथित वार्ता अभिप्राय आयकै श्रीवलदेव जी और श्रीकृष्णचन्द्रजी सूं कहतभयो ३१ इति श्रीमच्छुक्यजुर्वेदान्तर्भातभाष्यदिनीशास्त्राध्वेतुवैपाय्रदगोत्रजातविश्वामित्रपुराधिः श्रीमन्नुर्पातजयविशोरदेवात्मजश्रीगिरि-प्रसादवर्मर्ज्ञयापण्डिताद्गद्यमर्भशास्त्रिचितयां श्रीमन्महाभागवतार्थरूपियादशमस्कन्धे एको नपञ्चाशत्तमो ऽध्यायः ४९ ॥

समाप्तश्चायमपूर्वार्द्धः ॐ तत्सत् श्रीगोपीजनवल्लभाय नमस्तु ॐ शान्तिः ३ ॥



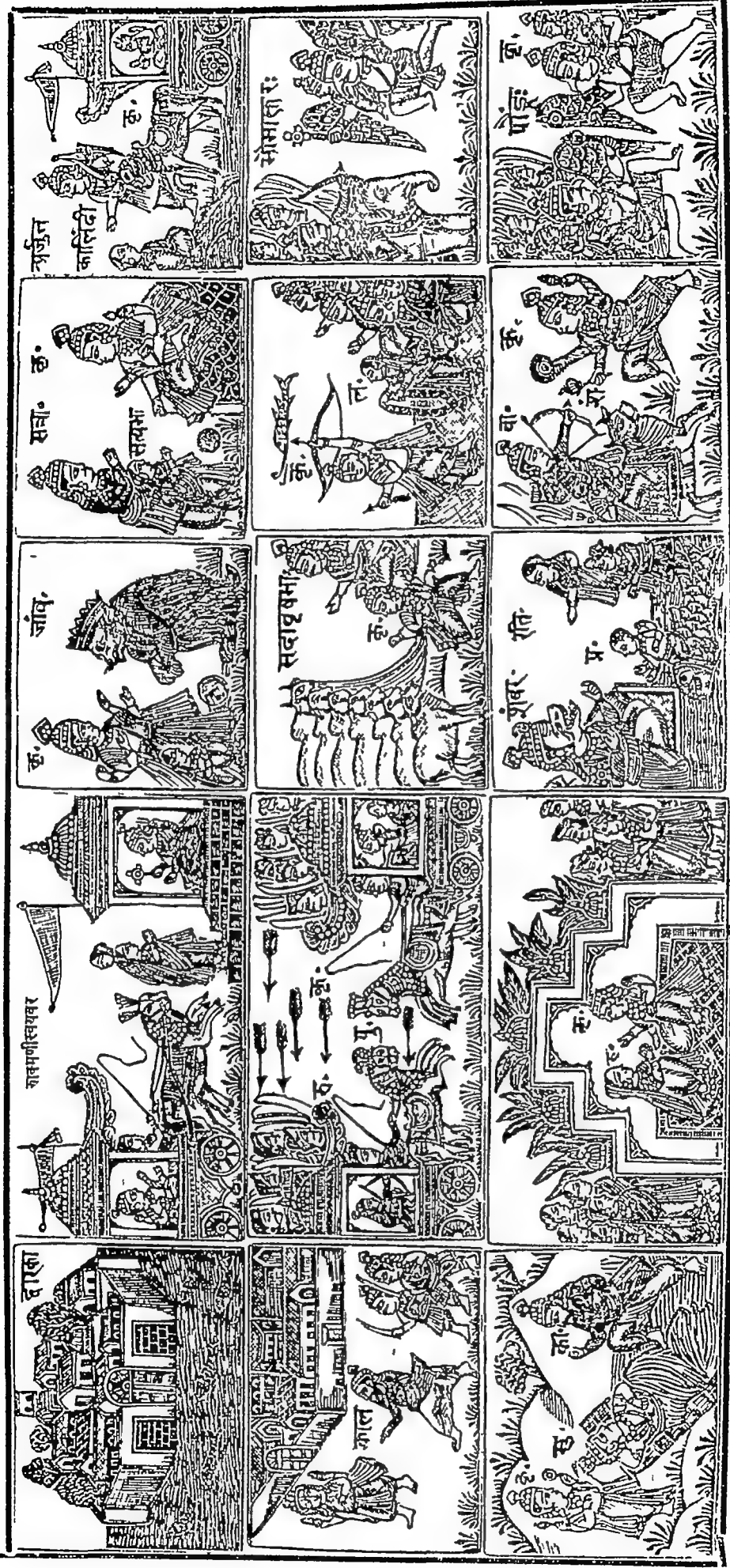


॥ इति श्रीमद्भगवत् दशमस्कन्धपूर्वोद्धृष्टः ॥

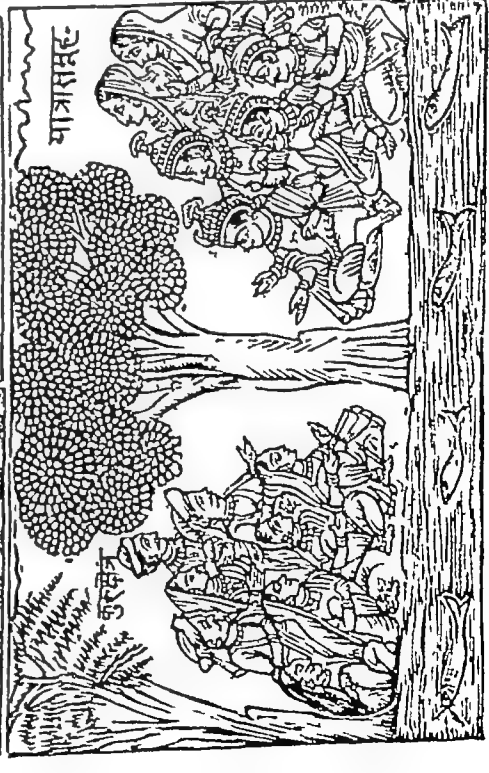
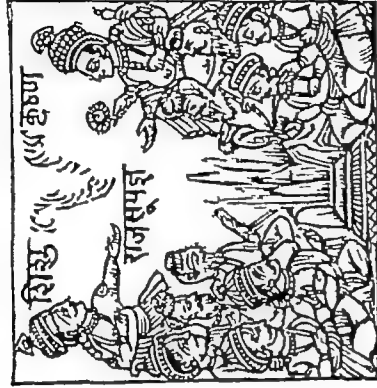
॥ अथ श्रीमद्भागवतं दशमस्कन्धउत्तरार्द्धम् ॥







# दशमस्कन्ध उत्तरार्द्ध



श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ( ततः आशुत्तपेतुजरासन्धप्रयादिन ॥ कारयित्वाऋतुश्रौतुर्गतिनिनाय निर्जनम् ? कपटान्कपटेरेनहृत्पादनयस्ततः ॥ अजयद्यजरासन्धमर्मेणेतुधादिमकम् २ अथ पूर्वार्द्ध के छे पीछे पचासके अध्यायमें जो कहा है ताको वर्णन करे है जरासन्ध के भयतेही मानों समुद्र में किला बनाय के श्रीकृष्ण अपने यादवन को ले जातभये ? कपटी दैत्यन को कृष्णजी काटों सों बिना यज्ञही सू मारिके धर्मवत्सा जरासन्धको धर्मही सू जीतते भये २ ) अब श्रीशुनदेवजी कहे हैं हे भरतवंशीन मैं भये राजन् परीक्षित ! अस्ति और प्राप्ति ये दोनों कंसकी रानी हैं ते अपने पति कंसके मरण भू दुःखित होय के पिताके पर गातिभिई ? दु खित जे अस्ति प्राप्ति हैं ते अपने पिता जो मगधदेशको राजा जरासन्ध हैं ताको सम्पूर्ण अपने विधवापने को कारण जतावति भई २ हे राजन् परीक्षित ! ताही बाल दुःखके भरे अप्रिय वचन सुनिके जरासन्ध जाभाताको शोक न सहिके यादवनभू रहित पृथ्वीकू करिवेको उपाय करतभयो ३ तेईस अत्नौहिणी सेना कू सङ्गले के जरासन्ध यादवन की राजमानी जो मथुरा है ताय सम्पूर्ण दिशान ते घेत भयो ४ मर्यादा त्यागिके मानों समुद्र उमड़यो चल्थो आवे है या प्रकार जरासन्धकी सेना कू आवति

श्रीशुकउवाच ॥ अस्तिःप्राप्तिश्चकंसस्य महिष्योभरतर्षभ ॥ मृतेर्गत्तैरिदुःखोर्त्तैर्यतुःस्मपितुर्गृहान् ? पित्रेमगधराजाय जरासन्धायदुःखिते ॥ वेदया अक्रतुःसर्वमात्तपैवधव्यकारणम् २ सतदप्रियमाकर्ण्य शोकामर्षयुतोन्नुप ॥ अयादवीपहोर्कतुं चक्रैरममुद्यमम् ३ अक्षौहिणीभिर्विशत्या तिसृभिश्च पिसंवृतः ॥ यदुगजधानीमथुगं न्यरुणत्तर्पन्तोदिशम् ४ निरीक्ष्यतद्वलंकृष्णउद्वेलमिवसागरम् ॥ स्वपुंरतेनसंरुद्धं स्वजनञ्चभयाकुलम् ५ चिन्तयामा सभगवान् हरिःकारणमानुषः ॥ तदेराकालानुगुणं स्वावनारप्रयोजनम् ६ हनिष्यामिवलंघेतद्भविभारंसमाहितम् ॥ मागधेनसमानतीतं वश्यानांमर्षभूमं जाम् ७ अक्षौहिणीभिःसङ्ख्यातं भटारश्चक्रुः ॥ मागधस्तुनहन्तव्योभूयःकर्त्तावलोक्यमम् ८ एतदर्थोऽवतारोऽयं भूमारहरणायमे ॥ संरक्षणायसाधूनां कृतोऽन्येषांप्रधायच ९ अन्योऽपिधर्मरक्षायै देहःसंभ्रियतेमया ॥ विरामायायागधर्मस्य कालेप्रभवतःक्वचित् १० एवंधायतिगोविन्दआकाशात्सूर्यं देखिके और ता सेना सों आठनमयूरापुरी को देखिके और स्वजन जे अपने यादव हैं तिनकू व्याकुल देखिके ५ पृथ्वी को भार उतारिने के कारण मनुष्यरूपजिनने धर्यो ऐसे स के दुःखके हरनकरे श्रीकृष्ण ता समय देश कुन के योग्य अपने अवतारको प्रयोजन है ताहि देखिके विचार करतभये ६ जरासन्ध कू छोड़िके या सेना को यत्रकलं अथवा जरासन्ध वों मारिके सेना कू ग्रहण कलं अथवा सेनासहित जरासन्ध कू मारुं ऐसे तीनमकार के मनमें सकल्य विकल्प करिके प्रथम विचार जो सेनावध है ताही कू निश्चय करतभये क्योंकि पृथ्वी को भाररूप यह सेना है याही कू मारुं गो सम्पूर्ण रंगन के राजान की सेनाको जरासन्ध लेआयो है ऐसो समय वारवार न मिलैगो ७ प्यादे अश्व रथ हस्ती इह चतुराक्षिणी अनेक अत्नौहिणी सेना कोही मारियो योग्य है जरासन्ध को मारिवो योग्य नहीं है काहे ते यह काम को है सम्पूर्ण कू समेटि के यहा ले आवैगो में कहां कहा फिहंगो ८ भूमि को वोफ उतारिने वों और साधुन की रक्षा वरिने वों और दुष्टन के वध करिवे के निमित्त मैंने अवतार लियो है ९ कोई समय पाइके पृथ्वी पै वह जे अधर्म हैं तिनके नष्ट करिवे के कारण और धर्म वी रक्षा वरिवे के कारण औरह देह को

में धारण करूं हूं १० या प्रकार गोविन्द श्रीकृष्णचन्द्र विचार करे है इतने में सूर्य की तुल्य गिन हो तेज ध्वजा कवच जिनमें ये और रथवान् सहित दो रथ शीघ्र ही आकाश में उतरत भये ११ बाही समय अनायासपूर्वक आये जे दिव्यशस्त्र हैं तिनें देखि कै हृषीकेश श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी तौ बोलतभये १२ हे आर्य्य अर्थ्यात् श्रेष्ठ ! हे प्रभो ! तुमहीं जिनकी रक्षा करनवारे ऐसे याद बन कूं दुःख आयकै प्राप्त भयो है तम देखो यह रथ आयो है प्यारे शस्त्र आयै है १३ रथमें बैठिके सेना कूं मारो अपने यादवन कों कट दूरिकरो हे ईश ! साधन के कल्याण के निमित्त या संसार में हमारो तुम्हारी जन्म है १४ तेईस अक्षौहिणी सेना आयकै प्राप्त भई है ताको पृथ्वी पै बोक है ताकूं दूरि करो या प्रकार दाशार्धशोतन जे कृष्ण बलदेव हैं ते विचार करिकै कवचन कूं पहिरिकै सुन्दर शस्त्रन कूं लैके रथमें बैठिके कछु थोड़ी सी सेना सद्रक्षकै पुर के बाहिर निकसिके दारुकरै सारथी जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शत्रु कूचजावत भये १५ । १६ ताके पीछे जगमग

वर्चसौ ॥ रथाबुपास्थितौ सद्यः समूतौ सपरिच्छदौ ११ आयुधानि च दिव्यानि पुराणानि यदृच्छया ॥ दृष्ट्वा तानि हर्षाकेशः सङ्कर्षणमथाब्रवीत् १२ पश्यार्य्यव्य

सनं प्राप्तं यदूनं तं भावतां प्रभो ॥ एते रथ आयातो दयितान्यायुधानि च १३ यानमास्थाय जह्येत द्रव्यसनास्त्वान्समुद्धर ॥ एतदर्थं हि नैजान्य साधूनामीशश

र्मभृत् १४ त्रयोविंशत्यनीकार्य्यं भूमेर्भासमपाकुरु ॥ एवं संमन्य दाशाहौ दंशितौ रथिनौ पुरात् १५ निजर्जंगतुः स्वायुधादथौ बलेनाल्पीयसाधुनौ ॥ शस्त्रं

न्दधौ विनिर्गत्य हरिदीरु रुसारथिः १६ ततो भूतपरसैन्यानां हृदि विज्रासने पथुः ॥ तावाहमागधो वीक्ष्य हे कृष्ण पुरुपाधम १७ नस्वयायोद्धुमिच्छामि बाले

नैकेन लज्जया ॥ गुप्तेन हित्व गामन्द नयोत्सेया हिन्युहन् १८ तवराम यदि श्रद्धा युज्यस्व धैर्य्यमुदह ॥ हित्वा वागच्छरैश्च नन्देह स्वयं हि मां जहि १९

श्रीभगवानुवाच ॥ न वै शूरा विकस्यन्ते दर्शयन्त्येव पौरुषम् ॥ न शृङ्खी मोचो राजाना तु रस्यमुर्पतः २० ॥ श्रीशुक उवाच ॥ जरासुतस्तावभिमत्यमाधवौ महा

बलौ धेनवलीयसाञ्चरोत् ॥ ससैन्ययानध्वजवाजिसारथीमूर्या नलौ वायुरिव अभ्रेणुभिः २१ सुपर्णतालध्वजचिह्नितौ रथावलक्ष्यन्त्यो हरिरामयोर्मुवे ॥

स्त्रियः पुगण्डालकदम्यगोपुरं समाश्रिताः संमुहुः शुचार्हिताः २२ हरिः परानीकपयोमुचां मुहुः शिलीमुखान्युत्पन्न पर्पपीडितम् ॥ ससैन्यमालोक्य समसुरा

की सेना के हृदय भयभीत होयै कै कम्पित होत भये कृष्ण बल देवकं देखिके जरासन्ध बोलतभयो हे कृष्ण अभय ! तूं अकेलो बालक है तेरे सङ्ग युद्ध न करुंगो मोकूं लज्जा आवै है हे वन्यून के

मासन्वारे ! हे मूर्ख ! भाजनवारो तूं है तातें तेरे सङ्ग युद्ध न करुंगो १७ । १८ हे राम ! जो तेरे अर्द्धाहोय तो धीरज धरिके युद्ध कर भरे वाणन करिके कछो जो देह है ताकूं त्यागि कै स्वर्ग कूं जा

अथवा संग्रामके बीचमें मोहि मारिले १९ अब श्रीभगवान् कहैं हैं शूबीर हैं ते वक नहीं हैं अपने पुरुषार्थ कूं दिखानैं हैं हे राजन् ! जरासन्ध आसन्नमृत्यु जो तू है ताते तेरो वचन मैं नहीं मानूं हूं २०

ऐसे पवन वादर धूरि ये सूर्य्य अग्नि कूं त्रैरि लेइ है तैसे माधव जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनके पासजायै जरासन्ध वही जलजती जो सेना है तासूं ध्यादे रथ ध्वजा चोड़ा रथवान् इनमू धैरतभयो २१

गरुड की ताल की ध्वजाके हैं चिह्न जिनमें ऐसे जे राम कृष्णके रथ हैं ते युद्ध में नहीं देखे तब पुर अठारी गहल दरवाजेन पै ठाढ़ी जे स्त्री हैं ते शोकमूं व्याकुल होयै कै मोहकरति भई २२ शत्रु ही

सेना रूप नाडारन में सूं चारवार बाणन की भयङ्कर जो वर्षा भी तासूं पीड़ित अपनी सेना कू श्रीकृष्णचन्द्र देखिके देवता असुर जाकी पूजाकरैं ऐसी जो मनुष्यनमें उत्तम शार्ङ्गधनुषहै ताहि द्भारत भये २३ तरकस ते तीर निकालि कै शीघ्र प्रत्यङ्गामें लगाय कै प्रत्यङ्गाकूं सैचिके तीक्ष्ण बाणन के समूहनसूं रथ हाथी घोड़ा प्यादेन कू पारिके जैसे सिलगति लकड़ीकी छुपावने सूं चक्र वधे है तैमे बाणन के पीछे बाण लगावतभये २४ मस्तक जिनके कटिगये ऐसे हज्जारन हाथी गिरतभये बाणन सूं कटी है नारि जिनकी ऐसे घोड़ा गिरतभये रथनके कटि के ने डे और ध्वजा गिरत भई और रथवान् और नायक गिरतभये कटी है भुजा बांधा नारि जिनकी ऐसे प्यादे गिरतभये २५ युद्धमें कटे जो प्यादे हाथी घोड़ा तिनके अंगनमें ते निकसिके असंख्याक रुधिरनकी नदी बहति भई कारि की नदीनकों प्रसिद्ध नदीन सों रुरक बाधिके वर्णन करै है नदीनमें सर्प रहे हैं रुधिरकी नदीन में मनुष्यन की युजा मालों सर्प है नदीन में कछुया रहे हैं रुधिरकी नदीन में मनुष्यन के शिर कटिके कछुयाके मानिन्द बहे हैं नदीन में टापू होइ हैं रुधिरकी नदीन में मरे हाथी टापून के मानिन्द परे हैं नदीन में ग्राह होइ हैं रुधिर की नदीन में घोड़ा ग्राह के मानिन्द मरे परे हैं

चितं व्यस्फूर्जयच्छाङ्गशगसनोत्तमम् २३ गुलान्निपङ्गादथसन्दवच्छात् विकृष्यमुखञ्चिच्छन्वाणपूगान् ॥ निवन्नुत्थान्कुञ्जवाजिपत्तीन् निरन्तरं यद दलानचक्रम् २४ निगिन्नकुम्भाः करिणो निपेतुस्ते कशोऽश्वाः शस्त्रकणकन्धराः ॥ रथाहताश्च धजसूतनायकाः पदातयश्छिन्नभुजोरु कन्धराः २५ सञ्जि द्यमानद्विपदे भवाजिनामङ्गप्रसूताः शतशोऽमुगापगाः ॥ भुजाऽहयः पूरुपशीर्षि कृच्छपाहतद्विपदी पद्मग्रहाकुलाः २६ करोरुमीनानरकेशशैलान् अनुस्रज्ज्वायुधगुल्फसङ्कुलाः ॥ अच्छरिकावर्त्तभयानका महामणिप्रवेकाभरणशमशः २७ प्रवर्त्तिताभीरुभयावहास्रधे मनस्विनाहर्ष करीः परस्परम् ॥ विनि दनताऽग्निमसलेन दुर्मदान् सङ्कर्षेण नापरिभेयते जला २८ वलंतदङ्गार्णवदुर्गैर्भस्वं दुस्तपारं मगधेन्द्रपालितम् ॥ क्षयंप्रणीतं वसुदेवपुत्रयोर्विक्रीडितं तज्जग दीशयोः परम् २९ स्थितयुद्धवान्तं सुवनन्नयस्ययस्समीहतेऽनन्तगुणः स्वलीलया ॥ नतस्य चित्रं परपक्षनिग्रहस्तथाऽपि सत्याहुभिधस्य वर्यमे ३० जग्राह वि

तिनसू व्यस होय रही हैं २३ नदीन में मस्य होइ हैं रुधिर की नदीन में हथेरी पिहरी मस्यके मानिन्द है नदीन में सिवार होइ है रुधिर की नदीन में मनुष्यन के केश सिवार के मानिन्द बहे होले हैं नदीन में तरंग उठे हैं रुधिर की नदीन में मनुष्य तरंग के मानिन्द हैं नदीन में भ्रार भङ्गाडहोइ हैं रुधिर की नदीन में शस्त्र है ते भ्राङ्ग भङ्गाड के मानिन्द हैं नदीन में अपर परे है तिन सूं अति भयङ्कर होइ हैं रुधिर की नदीन में डालें मालों भयङ्कर अपर फिरें हैं नदीनमें काहर पत्थर होइ हैं रुधिर की नदीन में मणि गहने काहर पत्थरके तुल्य हैं २७ बडो है तेज जिनको ऐसे वन-देवीने संग्राम विषे दुष्ट हैं मद्र जिनके ऐमे शुचनकूं मूल तें पारि पारिके रुधिरनकी नदी बहाई कैसी नदी है भयभीत मनुष्यनकों भय की देनवारी और शूरवीरनकों आनन्द की देनवारी है २८ जरासन्य पालन करे समुद्रकी तुल्य दुर्गम भयङ्कर न जाकी थाह है और न पार है ऐसी जो बह सेना है ताकूं है राजन् प्रीक्षित् ! कृष्ण उलटो ! ने पारि पारिके नाश करि दीनो वसुदेव के पुन जगत् के ईश्वर ने कृष्ण चलदेव है तिनकूं सेनाको नाश करिनो क्रीडापात्रही है कछु पराक्रम नहीं है २९ अनन्त हैं गुण जिनके ऐसे भगवान् श्री कृष्णचन्द्र अपनी लीला करिके तीनों लोकनकूं



उत्पन्न पालन संहार करे हैं तिन श्रीकृष्णकं शत्रु जरासन्ध वी सेनाको मारियो कछु आश्चर्य नहीं है तथापि मनुष्यन के अनुसरण करें जो श्रीकृष्ण तिनके कर्म आश्चर्य से कहिये में आने हैं ३०२५ जानो दूष्टिगयो सेना जाकी नष्टभई केवल पाण शेष रहे ऐसे बड़े बलवान् जरासन्धकूं जैसे सिंह सिंहकूं पकरे हैं ता प्रकार बल करिके बलदेवजी पकरतभये ३१ वरुणके मनुष्यन को रस्मान में बाधिलियो शत्रु जाने मारे ऐसे जरासन्धकूं श्रीकृष्ण छुड़ावतभये वयोकि जरासन्ध सौ और कछु काम करावयो है ३२ शूरवीर जाको सतार करै ऐसे जरासन्धकूं चिनोकी के नाथ श्रीकृष्ण बलदेव ने जा सपय छोडि दियो तब लडिजन होय न मनमें विचारत भयो कि घरजायके रुहा करुंगो वनमें जायके तप करुंगो तासपय मार्गमें राजाने मने कस्यो ३३ धर्म के उपदेश करनचारे है पद जिनमें ऐसे नितिके दुष्टिहारक वचन कूं कहि है जरासन्धकूं सपफायो तुम्हारो कोई दुर्गमर्म आयगयो याते तुन्ख यादवन ने तुपकू जीत लियो अत्र तुम लाज मतिकरो ३४

रथारमो जरासन्धगहवलम् ॥ हतानीकावशिष्टासुं बिहगिंहिभौ जसा ३१ वध्यमानंहतारानि पार्श्वैर्वारुणमनुपैः ॥ वारयागासगोविन्दस्तेनकार्थचि  
कीर्पया ३२ संमुक्तोलोकनाथाभ्यां ब्रीडिनोवीरसम्मतः ॥ तपसेकृतमङ्कल्पोवारितगश्रिजभिः ३३ वाक्यैः पवित्रार्थपदेनयनैः प्राकृतैरपि ॥ स्वकर्ममयन्व  
प्राप्तोयं यद्विभस्नेपरागवः ३४ हतेपुसन्वनिक्केपु नृपोवाहदथस्तदा ॥ उपेक्षिनोभगवनापगधान्दुर्गनाययौ ३५ मुकुन्दोऽयश्वतलोनिस्तीणिरिवलाण  
वः ॥ विकीर्यमाणः कुसुमैस्त्रिदशैः अनुगोदितः ३६ माथौरुपसङ्गम्य विजयैर्मुदितात्मभिः ॥ उपगीयमानविजयः भूतमागधवन्दिभिः ३७ शङ्खदुन्दुभयोने  
दुर्भीतूर्यार्यनेकशः ॥ वीणावेणुमृदङ्गानि पुंरप्रविशतिप्रभौ ३८ सिक्कमार्गाहृष्टजनां पताकाभिरलङ्कृताम् ॥ निर्धयां ब्रह्मवोपेण कौतुकावज्जनोरणाम्  
३९ निचीयमानो नारीभिर्माल्यदध्यक्षताङ्कुरैः ॥ निरीक्ष्यमाणः सस्नेहं प्रीत्युत्कलितलोचनैः ४० आयोधनगतं वित्तमनन्तं वीरभूषणम् ॥ यदुराजायततस  
द्वर्धमाहन्तं प्रादिशत्प्रभुः ४१ एवं सप्तदशकृत्वस्तावत्यक्षौहिणीवलः ॥ युयुधेमागधो राजायद्विभिः कृष्णपालितैः ४२ अक्षिण्वं स्नदलंसन् वृष्णयः कृष्णतेजसा ॥

जासमय सम्पूर्णसेना नष्टहोग्य श्रीकृष्ण ने छोडि दियो तासमय वृद्धय के वंशोत्पन्न जरासन्ध उदासीन होयके मग प्रदेशनकूं जातभयो ३५ नर्ही नष्टभई है सेना जिनकी तरथो है शत्रुकी सेनारूप  
सागर जिनने देवतानने पुष्टनकी वर्षाकरी और प्रशंसापूर्वक स्तुतिकरी तब श्रीकृष्णचन्द्र अपनीमथुरापुरीमें आवतभये गये हैं खेद जिनके प्रसन्नभये हैं मन जिनके ऐसे मथुरावासीन सू मिलके  
सूत माणय वन्दीजन जिनके विजय के वचन गावतभये ३६ ३७ ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र जा समयमथुरापुरी में आये तब शङ्ख नगारे अनेकन भेरी तुरही वीणा वासुरी मृदङ्ग ये सब बाजे बजावत  
भये ३८ मार्ग में छिरकाल होय रहे ममन हैं मनुष्य जांमे पताकानभूं शोभायमान वेदवचनि जांमे होयराही श्रीकृष्णचन्द्र के आगमन के आनन्दसूं घर घर चन्दनचार जांमे बंधी है ऐसी मथुरा-  
पुरीकी शोभा होतिभई ३९ श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर स्त्री पुण्यदाि अन्नत अंकुरनकी वर्षा करतिभई स्नेह ते प्रफुल्लित जो नेत्र हैं तिनमें श्रीकृष्णकूं देखे हैं ४० शूरवीर राजानकी शोभाको करनवारो  
रणभूमि में पत्थो जो बहुत धनहै ताकूं लाय ४१ श्रीकृष्णचन्द्र राजा उग्रसेन कूं देतभये ४२ श्रीकृष्णचन्द्र जिनके पालन करनचारे ऐसे यादवनसूं मग प्रदेश को राजा जरासन्ध सत्रह बार तेईम २

अन्तोहिणी सेनालैके युद्ध करतभयो ४२ यादव श्रीकृष्ण के तेजतें जरासन्धकी सम्पूर्ण सेनाबो नाश करतभये हे राजन्परीक्षित ! सम्पूर्ण सेना जब कटिगई शत्रुने खोड़ि दियो तब जरासन्ध आपने देशकू जातभयो ४३ अठारही बार फेर युद्ध होनहारहो ता के बीच में ही नागद्वी की भेज्योवीर जो कालयवनहै सो आय है दिव्यदेतभयो ४४ संसारमें जाके तुल्य कोई गोदा नहीं ऐसी कालायन यादवन कू अपनी बराबरके मानि है तीन किंगोइ मनेच्छन् कू मन्त्र लैके मथुरापुरीकू भेत भयो ४५ बलदेवजीहैं महाय जिनके पेने श्रीकृष्णवन्द कालयवनकू आयो देविके चिन्ता करतभये वड़ो आञ्चर्य है यादवन कू दोनों ओरतें वड़ो कष्टआयोहैं अत तो यह वड़ो बली कालयवन हथकू धरे है फेर जरासन्धहू आज अगना कालिह अथवा परसों पर्यन्त आवैगोही ४६।४७ ओ या समय हम याते युद्ध तरंगे और बीच में जरासन्ध आय गयो तो हमारे दन्धन कू मारगो और जो न मारगो तो बलवान है वीर है अपने पुर में लेजायगो ४८ यातें भनुष्य जहाँ न जाय

हनेपुस्तेबन्गीरे पु त्यक्तोऽयादिरिभिर्नृपः ४३ अप्रादशगसंघ्राग आगामिनितदन्तग ॥ नारदप्रेषितोवीरयवनः प्रतगदृश्यत ४४ रुद्रोधमथुरामेत्यनिसृभिमै  
चक्षुकोटिभिः ॥ नृलोकैचापतिद्वन्द्वोवृण्जिष्ठारामसंगितान् ४५ तदृष्ट्वाचिन्तयत्कृष्णः सङ्कर्षणसहायवान् ॥ अहोयदूनां वृजिनं प्राप्तुं सयतो गहत् ४६  
यवनोऽपि नरुन्धेस्मानद्यनावनमहाबलः ॥ मागघोषद्यवाश्चोवा परस्वोवागमिष्यति ४७ आवयोर्द्वयतो रस्ययागन्ता जरासुतः ॥ बन्धन्वधिष्यत्यथवा  
नेष्यतेस्वपुंरं बली ४८ तस्मादद्यविधास्यामो दुर्गदुर्गगम् ॥ तत्रज्ञातीन्ममाधाय यवनं धानयामहे ४९ इति ममन्धयभगवान् दुर्गद्वारादशयो जनम् ॥  
अनन्समुद्रनगरं कृतस्नाद्धुतगचीकरत् ५० दृश्यते यत्र हित्वाष्ट्रं विद्वानं शिल्पनेपुणम् ॥ रथान् च त्वस्वश्रीभिर्धथावास्तुविनिर्भितम् ५१ सुद्रुमलतोद्यानि  
चित्रोपवनान्वितम् ॥ हेमशृङ्गैर्दिविस्पृग्भिः स्फाटिकाद्यालगोपैः ५२ राजतारकुटैः कोष्ठैर्हस्तैश्च भैरवकुलङ्कितैः ५३ रत्नैश्चैवैर्हर्मैर्हमहाभरकतस्थलैः ५४ वास्तोषपती  
नाञ्च गृहैर्बलिभीमैश्च निर्भितम् ॥ चातुर्वर्ग्यजनाकीर्णयदुदेवगृहोत्तमत् ५५ सुधर्म्यपारिजातञ्च महेन्द्रः प्राहिणोद्धरेः ॥ यत्र चात्र स्थितो मर्त्यो मर्त्यधर्मेन

सकें ऐसी एक किला बनावैगे तामें अपने ज्ञाति के यादवन कू रालिकै कालयवन कू मारगे ४९ या विधि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र मन में विचार करिकै अड़तालीस कोस को समुद्र के बीच में खिला और ता किले के बीच में आश्चर्य अद्भुत नगर रचत भये ५० कैसी नगर है कि जा नगर में सम्पूर्ण निवचर्मा की कारीगरी दिखई देय है राजा के निकटि के वड़े वड़े चाजार और गली और चौक जामें बने हैं ५१ बीच बीच में हवेली बनिवै की जगह छिकि गई है बलदृष्ट और लता हैं जिनमें ऐसे फलन के वाग और चित्र विचित्र फुतचारी के वसीचा लगि रहे हैं स्वर्ण के जिनके शिखर आकाश कू सगरी बरें ऐसे ऊंचे स्फटिक पाणिन के अष्टा बनि रहे हैं और ऊंचे ऊंचे किला के द्वार बने हैं घोड़ान के चैधिने के और अन्न धरिने के लोहे पीतल के स्थान बने हैं तिनके ऊपर सोने के कलश धरे हैं तिनसूं सुन्दर लगे हैं पद्मराग पाणि के जिनके शिखर और महाभरकतपाणि की जिनमें धरती ऐसे सुवर्ण के घर जहाँ बने हैं ५२।५३ देवदान के मन्दिर बने हैं और चित्रसारी बनी हैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये चार वर्ण जागें वैसे हैं यादवन के और देव राजा उग्रधेन के महल जे बने हैं तिनसूं शोभायमान हैं ५४ जा न-

भाग छूटे १७ और तुम्हारे पुत्र रानी ज्ञातिके भयथा वन्धु दीवान प्रधान मन्त्री राज्यकी प्रजा ये सम्पूर्ण अथ कोई नहीं वचे हैं समको कालने नाश करि दियो ? २ काल बलवाननमें बलवान है भगवानकी शक्ति है सपर्य्य अविनाशी है जैसे पशूनको पालन करनवारो ग्वालिया पशून कूं चलावै है ऐसे काल आप क्रीडा करि कै समस्त प्रजाकूं इत उत चलावै है ? ३ सम्पूर्ण देवता कहे हैं हे राजन् मुचुकुन्द ! तुम्हारे कल्याणहोय मोक्षके बिना जो कोई बरचाहो सो मागिलेउ मोक्षको दाता तौ केवल एक अविनाशी विष्णु भगवान ईश्वर है २० या प्रकार जब देवतानने कछो तब चडो है यश जाको ऐसो राजा मुचुकुन्द बहुत दिन देवतानकी जो रत्ना करी तामूं अतिश्रमिहै या कारण शयनके अर्थ निद्रा बर मांगतभयो हे देवताओ ! जो कोई सोवत में मेरी निद्राको भङ्ग करै वह उसी समय भस्म होय जाय या बिपिको बर मागो सोई देवतानने दियो तब राजा मुचुकुन्द देवतानने दीनी जो निद्रा तामूं पर्वतकी गुफामें जायकै सोवतभयो २१ । २२ देवतान ने बरदियो कि

वर्धजिभनाः १७ सुतामहिष्योभवतोज्ञातयोऽमात्यमन्त्रिणः ॥ प्रजाश्रुत्यकालीयानाधुनासन्तिकालिताः १८ कालोबलीयान्बलिनांभगवानीश्वरो

ऽन्ययः ॥ प्रजाःकालयतेक्रीडन्पशुपालोयथापशून् १९ वंद्युणीष्वभद्रन्तेऽतैकैवल्यमद्यनः ॥ एकपेवैश्वरस्तस्य भगवान्विष्णुरन्ययः २० एवमुक्तःस वैदेवानभिवन्द्यमहायशः ॥ निद्रामेवततोवेवराजाश्रमविकर्पितः ॥ यःकश्चिन्ममनिद्रायाभङ्गकुर्यात्सुरोत्तमाः २१ सहिभस्मीभवेदाशुतथोक्तैश्रमुरैस्तदा ॥

अशयिष्ठगुहापिष्टोनिद्रयादेवदत्तया २२ स्वापंयातंयस्तुमध्ये बोधयेत्त्वामचेतनः ॥ सत्वयादृष्टमात्रस्तु भस्मीभवतुतक्षणत् २३ यवनेभस्मसानीते भगवान्मातृवर्पभः ॥ आरमानन्दर्शयामास मुचुकुन्दायधीमते २४ तमालोक्यघनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ॥ श्रीवत्सवक्षसम्भ्राजत्कौस्तुभेनाविराजितम् ॥

२५ चतुर्भुजरोचमानं वैजयन्त्याचमालया ॥ चारुप्रसन्नवदनं स्फुन्मकरकुरण्डलम् २६ प्रेक्षणीयंनृलोकस्य सानुरागस्मितक्षणम् ॥ अपीच्यवयंसंस्तमृगेन्द्रोदारविक्रमम् २७ पर्यपृच्छन्महाबुद्धिस्तेजसातस्यधर्पितः ॥ शङ्कितःशनकैराजा दुर्धर्पमिवतेजसा २८ ॥ मुचुकुन्दउवाच ॥ कोभाननिहसम्प्राप्तोविपिनेगिरिगह्वरे ॥ पद्भ्यांपद्मपलाशाभ्यां विचरस्सुररुग्ण्टके २९ किंस्वित्तेजस्विनतिजोभगवान्वाविभावसुः ॥ सूर्यःसोमोमहेन्द्रोवा लोकरपालोपरोऽपि

जावो तुम अचेतनसोवो जो तुम्हें बीचमें जगवैवो वह तुम्हारी दृष्टि परें तैं तत्काल जरिकै भस्म होय जायगो २३ जा समय कालयवन जरिकै भस्म होयगयो ता समय यादवनमें अष्ट भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बुद्धिमान् मुचुकुन्दकूं अपनो दर्शन करावतभये २४ मेवकी तुल्य श्यामवर्ण पीतवस्त्र धारण करे हृदयमें भृगुलताको जिनके चिह्नहै प्रकाशमान कौस्तुभमाण धारण करे हैं तासों शोभायमान हैं २५ चतुर्भुज वैजयन्ती माला धूं प्रकाशमान हैं सुन्दर प्रसन्न वदन सौ मकराकृति कुरण्डलन में प्रकाशमान हैं २६ मनुष्यनको देखिबे योग्य स्नेह भरी मुशिकानि सहित जिनकी चित्तवनिनवीन जिनकी अवस्था मतवारे सिंहकी तुल्य जिनको पराक्रम है २७ ऐसे श्रीकृष्णकूं देखिकै बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्णचन्द्र के तेजसू पराभव कूं प्राप्तभये ऐसे राजा मुचुकुन्द भय मानिकै होले होले पूंक्षतभये २८ अब राजा मुचुकुन्द पूछे हैं या वनमें पर्वत की गुफामें कौन कहासे आयेहो कमलसे कोमल तुम्हारे चरण यहां बहुत काटेनमें फिरो हो २९ तेजस्वीन के तुम तेज

स्वरूप हो अथवा भगवान् आग्निरूप हो अथवा सूर्य हो किंवा चन्द्रमा हो अथवा इन्द्रहो किंवा समस्त लोकनके पालनकर्त्ता हो अथवा कोई देवता हो ३० ब्रह्मा विष्णु शिव इन तीनों देवतान में से विष्णु भगवान् हो यह में जानेंहुं दिया जैसे अपने प्रकाश ते अंधेरे को दूरि करे है ऐसे अपने तेज सूं या गुफाको अन्धकार तुमने दूरि करो है ३१ हे मनुष्यन में श्रेष्ठ ! हमारी सुनिधि की इच्छा है हमारे आगे निष्कण्ट होयके जो तुम्हें अच्छी लागै तो अपनो जन्म कर्म नाम गोत्र बताओ ३२ हे पुरुषन में श्रेष्ठ समर्थ ! हम तो इच्छाकु के वशमें उत्पन्न भये क्षत्रियन में अथम मान्यता के पुत्र मुचुकुन्द है ३३ बहुत दिनन जो जाग्यो हूं तासूं मोकुं खेदभयो और नोद सूं मेरी इन्द्रिय चलायमान भई हैं या उद्यान वनमें मैं अपनी इच्छापूर्वक सोवै हों अवर्षा काहूने आयके मोकुं उठायो हो ३४ जाने हमें जगयो वह पुरुष अपने पाप ते जरिकै भस्म होयगयो वाके बारे पीछे हे शत्रुनके नाशक ! शोभायमान तुम देखे ३५ नहीं सहिवे में आवै ऐसो जो तुम्हारी तेज है तासूं मेरो तेज

वा ३० मन्येत्वां देवदेवानां त्रयाणां पुरुषर्षभम् ॥ यदवाधेऽगुहाध्वान्तं प्रदीपः प्रभाया यथा ३१ शुश्रूषतामन्यलीकमस्माकं नरपुङ्गव ॥ स्वजन्मकर्मगोत्रा कथं तां यदिरोचते ३२ वयन्तु पुरुषव्याघ्र ऐक्ष्वाकाः क्षत्रवन्धवः ॥ मुचुकुन्द इति मोक्षो यौवनारवात्मजः प्रभो ३३ चिरप्रजागरश्रान्तो निद्रया पहतेंद्रियः ॥ शयेऽस्मिन् विजने कामं केनाप्युत्थापितोऽधुना ३४ सोऽपि भस्मीकृतो नूनमात्मीयेनैव पापमना ॥ अनन्तरं भवाञ्छीमा लैलाक्षितोऽभिप्रशतनः ३५ तेजसा ते विपद्येण भूद्रिष्टं न शक्नुमः ॥ हनौ जसो महाभाग माननीयोऽसि देहि नाम् ३६ एवं सम्भाषितो राज्ञा भगवान् भूतभावनः ॥ प्रत्याह प्रहसन्माया मेघनाद गभीरया ३७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ जन्मकर्मभिधानानि सन्ति मेऽङ्ग सहस्रशः ॥ न शक्यन्तेऽनुसङ्ख्या तुमनन्तत्वा न्मयाऽपि हि ३८ क्वचिद्राजसि विममे पार्थिवान्युरुजन्मभिः ॥ गुणकर्मभिधानानि न मे जन्मानि किञ्चित् ३९ कालत्रयोपपन्नानि जन्मकर्मणि मे नृप ॥ अनुक्रमन्तो नैवान्तं गच्छन्ति परमपं यः ४० तथाप्यद्य नान्यद्गुणेष्वगदतो मम ॥ विज्ञापितो विरिञ्चनपुराहं धर्मगुप्तये ॥ भूमेर्भारायमाणानामसुराणां क्षयाय च ४१ अवतीर्णो यदुकुले गृह

दूरि होयगयो बहुत देखिवे की सामर्थ्य नहीं है महाभाग ! देहधारीन कुं तुम मानिवे योग्यहो ३६ या प्रकार राजा मुचुकुन्द ने कही तब माणीन के पालन करनकारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैंसिके मेव जैसे गरजे है ता प्रकार गरजके बोलतभये ३७ अथ श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं मुचुकुन्द मेरे जन्म कर्म नामन को अन्त नहीं है असख्यात हैं योते में नहीं गिन सकूं हूं ३८ कदाचित् कोई पुरुष बहुत जन्मन में पृथ्वी की धूरिकुं तो गिनि भी लेइ परन्तु मेरे गुण कर्म नाम जन्म गिनती में नहीं आवे हैं ३९ हे राजन् मुचुकुन्द ! भूत भविष्यद् वृत्तपानतीनों काल में विद्यमान ऐसे जे मेरे जन्म कर्म हैं तिनकी वड़े वड़े क्षणीपर संख्या करे हैं तथापि अन्त नहीं पावें हैं ४० तथापि हे मुचुकुन्द ! अवके जन्म कर्म नाम कहूं हूं भोते श्रवण करो धर्म की रत्ताकरिवे के कारण और पृथ्वी पै वोभ जिनको भयो ऐसे जे असुरहैं तिनको नाश करिवेके लिये पाहिले ब्रह्माने मेरी विनती करीरही ४१ तासूं यादवन के कुल में बसुदेव के घर प्रकट भयो हूं बसुदेवको पुत्र

हं याते मोहिं वासुदेव कहै हैं ४२ कालनेमिकंस मैने मारयो साधुन के द्वेपी प्रलम्बसे आदिलै के असुर मैने मारे हे राजन् मुचुकुन्द ! यह जो कालयवन है सो तेरी लीङ्गदृष्टि द्वारा दम्ब होयगयो ४३ हे राजन् मुचुकुन्द ! पहिले तुमने मेरी बहुत प्रार्थना करीरही और मैं भक्तवत्सल हों याकारण तोपै अनुग्रह करिबे कुं या गुफा में आयो हूं ४४ हे राजान मैं ऋषि मुचुकुन्द ! मैं प्रसन्न हों तुम मोपै वर मागो मेरी शरण आये पीछे फेर प्राणी कुं शोच नहीं रहे है ४५ अब श्रीशुकदेवजी कहै है हे राजन् परीक्षित ! यह श्रीकृष्णचन्द्र ने जब कही तब राजा मुचुकुन्द प्रसन्न होय के दृढ़ गंगाचार्य्य जो कहिगये हैं तिनको ( अष्टाविंशतिभेयुगे भगवान् वरिष्यतीति ) वचन स्मरण करिके साक्षात् परिपूर्ण नारायण देन है यह जानिके प्रणाम करिके बोलत भयो ४६ अब राजा मुचुकुन्द आठ श्लोकन करिके स्तुति करै है ईश्वर ! तुम्हारी माया करिके यह मनुष्य मोहित होयगयो है आते मिथ्याभूत जो माया की दृष्टि है तार्थ नहीं देखे है याही ते तुम्हें नहीं भजे है आनकहुन्दुभे ॥ वदन्ति वासुदेवोति वासुदेवसुतं हि माम् ४२ कालनेमिर्हंतः कंसः प्रलम्बाद्याश्च स दृष्टिपः ॥ अयं च यवनो दग्धो राजंस्तेति गमचक्षुषा ४३ सोऽहं तवानुग्रहार्थं गुहामेतामुपागमः ॥ प्रार्थितः प्रचुरं पूर्वं त्वया हं भक्तवत्सलः ४४ वरान्वृषीण्वराजर्षे सवर्णान् कामाचददामि ते ॥ यः प्रपन्नो जनः कश्चिन्न भूयोऽहं ति शोचिषु ४५ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इत्युक्तं त्वं प्रणम्याह मुचुकुन्दो मुदान्वितः ॥ ज्ञात्वा नारायणं देवं गर्गवाक्यमनुस्मरन् ४६ ॥ मुचुकुन्द उवाच ॥ विमोहितोऽयं जन ईशमायया त्वदीयात्वां न भजत्यनर्थदृक् ॥ सुखाय दुःखप्रभवे पुमज्जते गृहे पुगोपि पुरुषश्च वञ्चितः ४७ लब्ध्वा जनो दुर्लभमत्र मानुषं कथं विदव्यङ्गमयत्नतोऽनवा ॥ पादारविन्दं न भजत्यसन्मतिर्गृहान्धकूपे पतितो यथा पशुः ४८ ममैप कालोऽजितनिष्फलो गतो राज्यश्चित्रो नृज्जमदस्य भूपते ॥ मत्प्राप्तमवुद्धेः सुतदारकोशमृष्वसज्जमानस्य दुहन्तचिन्तया ४९ कलेवरैस्मिन् घटकुड्यसन्निभो निरुदमानो न देव इत्यहम् ॥ वृनो रथे भास्यपदारयनीकपैर्गर्गपथं दंस्त्वाऽगणयन् सुदुर्भदः ५० प्रमत्तमुच्चैरिति कृत्यचिन्तया प्रवृद्धलोभं विपये पुलालसम् ॥ तत्र प्रमत्तः सहसा भिपद्यते क्षुल्लो लिहानोऽहिरिवास्त्रमन्तकः ५१

कहा स्त्री और कहा पुरुष दोनों ठगि गये हैं सुख के कारण दुःख जिनमें होय ऐसे वरन में अटक जाय है ४७ कर्म भूमि जो यह पृथ्वी है तामें आयकै यह मनुष्य सुन्दर हाथ पाँव आँखि नाक कान ऐसे मनुष्य देह को पायकै है अनन्य ! तुम्हारे चरणारविन्द को भजन नहीं करै है जैसे हरी घास के निमित्त पशु अन्यक्षप में गिरे है ऐसे खोड़ी जाकी मति ऐसो पुरुष विषयन के निमित्त अन्यक्षू रूप जे घर हैं तिनमें परयो रहे है ४८ हे अजित अर्थात् जीतेवमें न आबो ! केवल यह प्राणीही भूलि रहे हैं सो बात नहीं मेरी भी यही गति है मोको इतने दिन निष्फल ही नीतगये राज्यकी सम्पत्ति पायके मेकू वडो गर्व होयगयो है पृथ्वी तो पालन करनेवारी राजाहों मनुष्यदेह में घेरी आत्मबुद्धि है अर्थात् देहको आत्मा माने हों पुत्र स्त्री खजाने पृथ्वी इनकी नही चिन्ता में आसक्त होय रह्यो हों ४९ जैसे कच्ची घड़ा क्षण में फूटिजाय वारू की भीति जैसे क्षण में गिरि परै या प्रकार देह को भी भरोसो नहीं है ता देह में राजा में हू या प्रकार वदयो है अभिमान जाके रय हाथी घोड़ा प्यादे इनकी जो सेना है ताको पालन करै ऐमे जे मुख्य सेनाय्यत्त तिनकुं सद्र लैकै पृथ्वीपै बोलेहों कालरूप जो तुमहो तिनको स्मरणही

नहीं बखो ऐसो मतवारो रखो याते मेरो समय निष्कलगयो ५० आज यह काम करनो कालिह वह काम करनो है या प्रकार की चिन्ता में मतवारो होय रखो दश होय अत्र थोख होय पचास होय हजार होय लाख होय या प्रकार लोभ दहत जाय है विषयन में चाहना जाके ऐसे पुरुष कुं कालरूप तुम शीघ्र मारि लेउ हो खुग के मारे आठन कुं चाटे ऐसो सर्थ जैसे मूसे कुं मारि लेय है ५१ मनुष्यन को देन अर्थत राजा यह नाम जाको ऐसो यह देह सुरण के साज के रयन पै वा हाथीन पै बैठि कै डोलो है ऐसो देह दुरत्ययकाल करि कै मेरे पीछे कुत्ता स्यार भक्षण करि जाय तो दिष्टा होय जाय पखो रहे तो कीरा परि जाय अग्नि से जराय देउ तो भस्म होय जाय है यह तीन नामन कुं धारण करे है ५२ सम्पूर्ण दिशान कुं जीत कै युद्ध करिवे लायक कोई शत्रु बाकी न रखो चक्रवर्ती राजा सिंहासन पै बैठ्यो बराबर के राजा आय के प्रणाम जाकुं करे ऐसो भी चक्रवर्ती राजा है तथापि मैथुन को हे सुख जिन में ऐसी स्त्रीन के घर में जैसे लकड़ी के बल बन्दर नाचे ऐसे नाच्यो करे है ५३ सत्र विषयन के भोग कुं त्यागि के तप में है वही श्रद्धा जाके अर्थात् पृथ्वी में सोवै ब्रह्मचर्य्य सूर रहै व्रतन कुं करे विषयन के भोगवैकुं दान पुण्य करे है और विचारे है कि या

पुरारैयैहपरिष्कृतैश्चरन् मतङ्गजैर्वानरदेवसंज्ञितः ॥ स एव कालेन दुरत्ययेनेते कलेवरो विद्रुमि भस्मरांक्षितः ५२ निर्दिशत्यदिक्चक्रमभूतविग्रहो वरासन  
स्थः समराजवन्दितः ॥ गृहेषु मैथुन्यसुखेषु योपितं कीडासृगः पूरुष ईशानीयते ५३ करोति कर्मणि तपः सुनिष्ठितो निवृत्तमोगस्तदपेक्षया दत्तः ॥ पुनश्च भूयेय  
महं स्वराडिति प्रवृद्धतर्णेन सुखाय कल्पते ५४ भवापवर्गो भ्रमतो यदा भवेज्जनस्य तर्ह्यव्युत्तसत्समागमः ॥ सत्सङ्गमो यद्दिनैव सद्गुणैः परावशेषे त्वयि जायते  
मतिः ५५ मन्ये ममानुग्रह ईशने कृतो राज्यानुबन्धापगमो यदृच्छया ॥ यः प्रार्थ्यते साधुभिरैकचर्यया वनं विविक्षिद्भिरसृगडभूमिषु ५६ न कामयेऽन्यं तव पाद  
सेवनादकिञ्चन प्रार्थ्यतमादरं विभो ॥ आराध्यकस्तं ह्यपवर्गदं हेरुष्णीत आर्यो वरमात्मवन्धनम् ५७ तस्माद्विमृज्या शिप ईशसर्वतोरजस्तमः सत्त्वगुणानु  
बन्धनाः ॥ निरञ्जनं निर्गुणमद्वयं परत्वांज्ञा सिमां त्रुपुरुषं ब्रजाम्यहम् ५८ चिरमिह वृजिना तैस्तप्यमानोऽनुतापैरिव तपः पडमित्रोऽलब्धशान्तिः कथञ्चित् ॥ श

जन्म में तप कलंगो तप दूसरे जन्म में जाय कै इन्द्र होवंगो या प्रकार तृष्णा जाके बढी है वा पुरुष कुं कसूं सुख नहीं होय है ५४ ऐसे आठ श्लोकन करि कै ईश्वर तें वहि मृग्यन कुं संसार कहि कै अत्र संसार की निवृत्ति कहे है हे अच्युत ! या संसार में जन्म मरण कुं प्राप्त भयो जो जीव है ताकुं जा समय तुम्हारे अनुग्रह करि कै संसार को अन्त होइ तासमय तुम्हारे भक्तन को सङ्ग होइ तासमय सत्र सङ्ग कुं दूरि करि कार्य कारण के नियन्ता जो तुम ईश्वर हो तिनि भक्ति होय है ता भक्ति तें संसार छूटे है ५५ हे ईश्वर ! मेरो अनायास पूर्णक राज्य वन्धन छूटि गयो यह तुमने मेरे ऊपर बड़ो अनुग्रह करयो यह में मानूं हूं राज्य के छूटने के लिये अकेलो होय कै वनमें जाइवै की इच्छा करै ऐसे जे चक्रवर्ती राजा हैं ते भी प्रार्थना करे हैं कि हमारो कोई तरह राज्य छूटि जाइ तौ अकेले होय के वनमें जाय बैठे ५६ हे समर्थ ! निष्किञ्चन साधु जाकी प्रार्थना करै ऐसो तुम्हारे चरणारविन्द को सेवन है ताते और काहू वरकी चाहना नहीं करे हैं हे हर ! मोक्ष के देन वारे जो तुम हो तिनको आराधन करि कै ऐसो कौन विवेकी पुरुष है जो आत्माको बन्धनरूप वर है ताकुं भांगो ५७ हे ईश अर्थात् सच के मेरणा करन वारे ! ता कारण रजोगुण तमोगुण सत्त्वगुण इनको वन्धन और ऐश्वर्य्य तथा शत्रुको मरण



श्रीर-धर्मोदिक को करिवो ये है स्वरूप जिनके ऐसे जे मनोरथ है तिन सबकुं त्यागिकै ज्ञानवन अञ्जन जो उपाधि तामू न्यारे ऐसे निर्गुण अद्वैत पुरुष तुमहौ तिनकी में शरण आयो हूँ ५८ हे ईश ! या संसार में बहुत दिनन ते दुःखन करिके पीड़ित हूँ नहीं गई है ठूण्णा जिनकी ऐसी जे खः इन्द्रिय शत्रु जाके नहीं पाई है शान्ति जाने हे शरण के देनवारे ! हे परमात्मन ! हे ईश्वर ! ज्यो त्यों करिके शोक जापें नहीं भयकौ दूर करनवारो तुम्हारो चरणारविन्द है ताको शरण लियो है मेरी रत्नाकरो ५९ अत्र श्रीभगवान् कहे है हे चक्रवर्त्ती राजन् ! वरदेने कहिकै तुमकुं लोभ उत्पन्न क्रियो तथापि कामना करिकै तुम्हारी मति चलायमान न भई ६० मैने वरदेने कहिकै लोभ उत्पन्न क्रियो सो तोकुं सावधान करयो यह तू जानि भरे जे एकान्ती भक्त है तिनकुं कदाचित् वर आयके प्राप्त होय तथापि उनकी बुद्धि चलायमान नहीं होय है ६१ प्राणायामादिकन करिके मनकाँ अवरोध करे वे भरे भक्त नहीं ऐसे जे पुरुष हैं तिनकी नहीं गई है वासना जापें ऐसो मन है सो हे राजन् मुकुन्द !

रणदसमुपेतस्त्वत्पदाब्जं परात्मन्नभयमृत्तमशोकं पाहि मापन्नमीश ५६ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सार्वभौममहाराज मतिस्ते विमलोजिता ॥ वरैः प्रलोभितस्यापि न कामैर्विहतायतः ६० प्रलोभितो वैर्येत्तमप्रमादाय विद्धितत् ॥ न धीर्मध्ये कम्पानामाशीर्भिभिद्यते क्वचित् ६१ युञ्जानानां भक्तानां प्राणायमादिभिर्मनः ॥ अक्षीणवासनं राजन् दृश्यते पुनरुत्थितम् ६२ विचित्रस्वमर्हो कामं मथ्य वेति तमानसः ॥ अस्त्वेव नित्यदा तुभ्यं भक्तिर्मथ्य न पायिनी ६३ क्षात्रधर्मस्थितो जन्तून् यवधीर्मृगयादिभिः ॥ समाहितस्तत्तपसा जह्य धं मदुपाश्रितः ६४ जन्मन्यनन्तरो जन् सर्वभूतसुहृत्तमः ॥ भूत्या द्विजवत्स्ववै मासुपैष्यसि केवलम् ६५ ॥ इति श्रीमद्भगवत्समाख्या महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे मुचुकुन्दस्तुतिर्नामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ इत्थं सोऽनुगृहीतोऽङ्गकृष्णेन क्षवाकु नन्दनः ॥ तं परिक्रम्य संनम्यानं चक्राम गुहासुखात् १ स वा दयशुल्लकान् मत्प्राप्तं पशून्वाशुल्लकान् प्रसीता  
न ॥ मत्वा कलियुगं प्राप्तं जगाम दिशमुत्तराम् २ तपःश्रद्धायुतो धीरो निःसङ्गो मुक्त संशयः ॥ समाधाय मनः कृष्णे प्राविश द्रव्यमादनम् ३ वदध्यां श्रममासा

नृ॥ भवत्वाकालियुगभातजगनादसृष्टुपरात् २ तपनप्रवृत्तायातापनसंगोऽनु  
 फेरि विषयन में जातो दीरो है ६२ हे राजन् मुकुन्द ! मेरे विपे मनकूँ लगाइ है जहाँ इच्छा आवै तहाँ विचरो तुम्हारी नित्य दृढभक्ति मो में होउ ६३ तत्रधर्म में रहिके शिकार खेलिके जो तैन  
 जीवनकी हिसाकरी सो अत्र सावधान होयकै मेरो आश्रय लैके तप करिके वा पापकूँ दूरकर ६४ हे राजन् मुकुन्द ! दूसरे जन्म में सब प्राणीन के हितके करनवारे ब्राह्मण होयके शुद्धरूपजो मै हूँ

गाँव पावोने ६५ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धोत्तराद्धेमुत्कुन्दस्तुतिनामकपञ्चाशत्तमाऽध्यायः ५ ॥

( द्विगञ्चाश्चत्तमोऽवन्थयाटिगतः सुरीम् ॥ अन्वमोदतसन्देशं कृमिपण्याद्विनवर्णितम् ? वावनयैऽध्याय मे भयकी नाई शीघ्र चलकर कृष्णजी पुरीको प्राप्त होगये और ब्राह्मणके वंशित रुक्मिणीजीके सन्देशको सुनकर प्रसन्न होतेभये ? ) अत्र श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित ! यापकार श्रीकृष्ण ने अनुग्रह जापै करयो ऐसो इक्ष्वाकुनन्दन मुत्कुन्द श्रीकृष्णचन्द्र की परिक्रमा दैकै नमस्कार करिके गुफामें तें बाहर निकसतभयो ? राजा मुत्कुन्द मनुष्यन कूं पशून कूलतान कूं और छोटे २ वृत्तनकूं देखिकै, कलियुग आयगयो यह जानिके उत्तरदिशा कूं जातभये २ तप

रेवती है ताप बलदेवजीकू देतभयो यह प्रथम कहिआये हैं १५ हे कौरवनेक कुलकू आनन्दके देनवारे राजन् परीक्षित् ! भगवान् गोविन्दहैं सो भी स्वयंवर में लक्ष्मी को अंशविदभदेश में जन्मी ऐसी जो भीष्मक की कन्या है ताप व्यावृत्तभये १६ शाल्व तें आदिलैके शिशुपाल की ओर के राजानकू जल्दी जीतिके सव लोकनके देखते जैसे देवतानहू जीतिके गरुड अमृत कू लायो है या प्रकार लावतभये १७ अथ राजा परीक्षित् कहे हैं सुन्दर जाको मुख ऐसी भीष्मक राजाकी पुत्री रुक्मिणी कू युद्धमें तें हरिकै श्रीकृष्णचन्द्र बगवतभये यह हमने तुम्हारेही मुखतें सुनी है हे शुक्रदेवजी ! जरासन्ध शाल्व इत्यादिक राजानकू जीतिके जैसे रुक्मिणी कू लावतभये बड़ों है तेज निनको ऐसी श्रीकृष्णचन्द्र को चरित्र श्रवणकृत्यो चाहों हूं हे ब्रह्मन् ! श्रीकृष्णचन्द्रकी कथा पवित्र हैं मनोहर हैं लोकनके पापनकू दूर करे हैं नित्य नवीन हैं सुनिवे के सार कू जाने ऐसो कौन पुरुष है जो ऐसी कथानकू सुनिके वृत्त होय १८ ॥ १९ ॥ २० अथ श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे

श्रियोमात्रास्वयंवरे १६ प्रमथ्यतरसाराज्ञःशाल्वादीश्चैद्यपक्षगान् ॥ पश्यतांसर्वलोकानां तार्क्ष्यपुत्रःसुयामिव १७ ॥ राजोवाच ॥ भगवान्भीष्मकमुतां रुक्मिणीरुचिराननाम् ॥ राक्षसेनविधानेनउपयेमइतिश्रुतम् १८ भगवञ्छ्रोतुमिच्छामिकृष्णस्यामिततेजसः ॥ यथामागधशाल्वादीजित्वाकन्यासुपाह रत् १९ ब्रह्मनकृष्णकथाःपुरायामाध्वीलौकिकमलापहाः ॥ कोनुत्प्रेतेतश्रृगवानःश्रुतज्ञोनित्यनूतनाः २० ॥ श्रीशुक्रउवाच ॥ राजासीद्भीष्मकोनाम विदर्भा धिपतिर्महान् ॥ तस्यपश्चाभवचपुत्राः कन्यैकाचवरानना २१ रुक्म्यभजोरुक्मरथोरुक्मवाहुरनन्तरः ॥ रुक्मकेशोरुक्ममाली रुक्मिण्येपांस्यसासती २२ सोपश्रुत्यमुकुन्दस्य रूपवीर्यगुणश्रियः ॥ गृहागतैर्गीयमानास्तंभनेनसदृशंपतिम् २३ तांवृद्धिलक्षणौदार्यरूपशीलगुणाश्रयाम् ॥ कृष्णश्चसदृशी भार्या समुद्रोदुमनोदये २४ चन्धूनामिच्छतांदातुं कृष्णायभगिनीनृप ॥ ततोनिवार्यकृष्णद्विद्वरुम्भीचैद्यममन्यत २५ तदेवत्यसितापान्निविद्भीडुम्भं नाभृशाम् ॥ विचिन्त्यासिद्धिर्जकञ्चित् कृष्णायप्राहिणोदद्भुतम् २६ द्वारकांसमसमभ्येत्य प्रतीहारैःप्रवेशितः ॥ अपश्यदाद्यंपुरुषमासीनंकञ्चनासने २७

राजन् परीक्षित् ! विदर्भदेशको पालन करनवारो भीष्मक जाकोंनाम ऐसो बड़ो राजा होतभयो ताभीष्मक राजाके पांच पुत्र होतभये और सुन्दर है मुख जाको ऐसी एक कन्या होतिभई २१ तिन में बड़ो रुक्मी तामूं छोटो रुक्मरथ तामूं छोटो रुक्मवाहु तामूं छोटो रुक्मकेश तामूं छोटो रुक्ममाली ये पांच पुत्र होतभये इन पांचोंनकी वह्नि पतिव्रता रुक्मिणी होति भई २२ घरमें आये जे नारदादिक मुनि हैं तिनने गाये ऐसे जे मुक्तिके देनवारे श्रीकृष्ण तिनको सुन्दर रूप पराक्रम गुणशोभा इनकू श्रवण करिके रुक्मिणी अपनी वराचरिको मानति भई २३ यहां सुन्दर बुद्धि लक्षण उदारता रूप शील और गुणयुक्त रुक्मिणीकू श्रवण करिके श्रीकृष्णचन्द्र अपनी वराचरीकी स्त्री व्याहिवेकू मनमें करतभये २४ माता पिता और भय्या चन्धुनकी सक्की यह इच्छाही कि रुक्मिणी श्रीकृष्णचन्द्रकू देयो परन्तु श्रीकृष्णको शत्रु जो रुक्मी है सो हम अपनी वह्नि कृष्णकू न व्याहैगे ऐसे निषेध करिके या लायकर शिशुपाल है या प्रकार मानतभयो २५ सुन्दरहै नील कटाक्ष जाके ऐसी विदर्भदेशके राजाकी पुत्री रुक्मिणी श्रीकृष्णके व्याहिवेकू पैरो भय्या मनेकरे हैं यह जानिके बहुत उदास मन जाको ऐसी रुक्मिणी कोई एक अपनो स्नेही ब्राह्मणहै तस्यवि-

करिवेमें अद्धा जिनकी भई सद्ग छोड़ि दियोहै सन्देह जिनके मिटिगये हैं ऐसे राजा मुचुहुन्द श्रीकृष्णमें मन लगायके गन्धपादन पर्यतै जातभये ३ नरनारायण को स्थान जो वदरिकाश्रम है तामें जायके सम्पूर्ण द्वंद्व अर्थात् सुख दुःख भृगु प्यास शीत उष्ण इनकुं सहिकै शान्त जिनको स्वरूप ऐमो ओ मुचुकुन्द है सो तप करिके हरिको आराधन करतभयो ४ स्लेन्ध्र जाकुं घेरिहै ऐसी जो मथुरापुरी है तामें भगवान् श्रीकृष्ण फेरि आयके म्लेच्छनकी सेना मारिके आर उगको धनैहै ताप लैक दारकामें पहुँचावतभये ५ श्रीकृष्णचन्द्रके कहैतें मनुष्य बलनके ऊपर धनकुं ला-  
दिकै लैचलेतव जरासन्ध तेईस अत्तौहिणी सेनाकुं सङ्गलैकें आपतभयो ६ हे राजन् परीक्षित ! मायव अ श्रीकृष्ण उलदेवहैं ते शुभ्रुओ सेनाकुं देविकें मनुष्यलीलामें आयके शीघ्र भागवतभये ७ नहैहै भय जिनके ऐसे कृष्ण बलदेव यहन जो उनहैं ताकुं मार्गमेंही त्यागिके यहन भयगीतकी तुल्य कमलसे तोमल चरण हैं तिनहीमूं चट्टन दूरि भाजत भये ८ ईश्वर जो श्रीकृष्ण उलदेवहैं तिन

द्यानरनारायणालयम् ॥ सर्वद्वन्द्वसहः शान्तस्तपसाराधयद्धरिम् ४ भगवान् पुनराब्रज्य पुरीयवनवेष्टिताम् ॥ इत्थाम्लेच्छबलानिन्ये तदीयंद्वारकांयनम् ५ नीयमानेधनेगोभिर्नृभिश्चाव्युतचोदितैः ॥ आजगाम जरासन्धस्त्रयोविंशत्यनीकपः ६ विलोक्यवेगभसं रिपुभैरस्यगाधवौ ॥ मनुष्येवेष्टामापन्नौ राज नृद्वन्द्वतुर्द्वुतम् ७ विहाय विचित्रचुरमभीतौ भीरुभीतवत् ॥ पदभ्यां पद्मपलाशाभ्यां चैलतुर्बहुयोजनम् ८ पलायमानौ तौ दृष्ट्वा मागधं ग्रहसन्बली ॥ अन्य धावद्रथानीकैरीशयोरप्रमाणवित् ९ प्रद्वयदूरं सन्तौ तुङ्गमारुहतां गिरिम् ॥ प्रवर्पणाख्यं भगवान् नित्यदायत्रवर्पति १० गिरीनिलीनावाज्ञाय नाधिगम्यप दंष्ट्रप ॥ ददाहगिरिमेधोभिः समन्तादग्निमुत्सृजन् ११ तत उत्पत्य तस्मादह्यमानतटाडुभौ ॥ दशैकयोजनोत्तुङ्गान्निधेततुरधोभुवि १२ अलक्ष्यमाणौ रिपु णा सानुगेनयदूत्तमौ ॥ स्वपुंरं पुनरायातौ समुद्रपरिखान्त्प १३ सोऽपि दग्धानिति श्रुत्वा मन्यानोवलकेशवौ ॥ बलमाकृष्य मुपहन्यमान् गवाक्ष्मागधोययौ १४ आनत्ताधिपतिः श्रीमान् रेवतो रथतीमुताम् ॥ ब्रह्मणा चोदितः प्रादाद्बलाधितिपुरोदितम् १५ भगवानपि गोविन्द उपयेमेकुरुद्वह ॥ वेदभीभीष्मकमुतां

के बलकुं नहीं जानिकै बली जो मगध देशको राजा जरासन्ध है सो कृष्ण बलदेवकुं भाजे देरिके धंसिकै बहुतसे रथनकुं सङ्गलैके पीछे दौरत भयो ९ बहुत दूर जो भागे तातें अप जिनकुं भयो ऐसे कृष्ण बलदेव है ते प्रवर्पण नामक जो ऊँचो पर्वतहैं तापै चढतभये कैसो पर्वतहैं इन्ज जापै नित्य वर्षा करे है १० हे राजन् परीक्षित ! श्रीकृष्ण बलदेव कुं पर्वतमें छिपे जानिके ता पर्वत में दृष्टिकै तिनके छिपिकों स्थान न मिल्यो तव चाखो ओरतैं आगि लगायके जरासन्धको ११ जरो है शिलर जाको ऐसो जो चवालीस कोस ऊँचो पर्वतहैं तापै तें कृष्ण बलदेव दोनो भय्या उद्वरिकै जरासन्धकी फौजकुं उल्लोचिकै नीचे पृथ्वीमें कूदतभये १२ हे राजन् परीक्षित ! दहलुआन सहित वैरी जो जरासन्ध है ताने न देखे ऐसे यादवन में उत्तम जे कृष्ण बलदेव है ते मयुड जाकी खाई ऐसी दारकापुरी में आवतभये १३ मगधदेश को राजा जरासन्ध है सो भी कृष्ण उलदेव कू मिल्था जरिगये मानिकै चड़ी फौजकुं सङ्गलैकें मगधदेशन कुं जातभयो १४ अथ श्री-  
कृष्णके विवाह कहिने के लिये प्रथम बलदेवजीके पिताह नवपरस्म्यमें कश्चिआये है तथापि फेर एक रत्नोक्तमें कहे हैं शोभायमान आनर्चदेशको राजा रैवतहैं सो ब्रह्मा के कहते आपनी पत्नी

श्रवण करे जे तुम्हारे गुण से कानन की रस्ता हृदय में जाय कै अंग के ताप कूं हर ऐसे मुम्हारे गुणन कूं सुनिके नेत्रवारे पुरुषन के नेनन कूं सुनिके लाज त्यागि कै मेरो विच तुम में लग्यो है ३७ हे मुकुन्द अर्थात् मुक्ति के देनवारे ! मनुष्य न में श्रेष्ठ गुणवान् जो तुमहो तिनमें बड़ी है बुद्धि जाकी ऐसी कौन कुल की कन्या कुल स्वभाव रूप विद्या अवस्था द्रव्य प्रभाव इन करिके कोई उपमा जिनकी देवे में न आवै मनुष्यलोक के मनकू आनन्द के देनवारे जो तुमहो तिनको विवाह समय पति न करै ३८ हे समर्थ ! ता कारण मैंने तुम पति करे हो तुम कूं अपनो देश अर्पण क्यो है मोकूं अपनी स्त्री करो हे कमललोचन ! शूरवीर जो तुम तिनको भाग जो मैं हूं ताय शिशुपाल शीघ्र आयके न छींथे जैसे सिंह के भाग कूं स्मार नहीं की सके ३९ वावली कुवां तळाड वाग यज्ञ दान नियम शत देवता ब्राह्मण गुरु इनकी पूजा करिके ईश्वर भगवान् प्रसन्न करे हैं तो श्रीकृष्णचन्द्र हाथ पकरि कै ले जांचो दमघोष को पुत्र शिशुपाल तें आदि छैके राजा न आवै ४० हे अजित अर्थात् जीतिवै में न आचो ! कादिह विवाह होयगो तामें तुम छिपिके विदर्भ देश में आचो और अकेले मति आचो पीछे तें सेना कू लागये आचो गे शिशुपाल और मगधदेश

सिंहनरलोकमनोऽभिरामम् ३८ तन्मे भवान् (बलवृत्तः) पतिरङ्गजायामात्मापितश्च भवतोन्नविभो विवेहि ॥ मावीरभागमभिमर्शतु चैव आराद्रोमायुवन्मृगपतेर्व  
लिमम्बुजाक्ष ३९ पूर्त्तैष्टत्तनियमव्रतदेवविप्रगुर्वर्चनादिभिरलंभगवान् परेशः ॥ आराधितोयदिगदाग्रजएत्यपाणिगृह्णातुमेनदमघोषमुत्तादयोऽन्ये ४०  
श्वोभाविनिस्वमजितोद्धनेविदर्भान् गुप्तः समेत्यपृतनापतिभिः परीतः ॥ निर्मथ्यचैद्यमगधेन्द्रबलं प्रसह्य माराक्षसेनविधिनोद्धहवीर्यशुल्काम् ४१ अन्तः  
पुरान्तरचरीमनिहत्यबन्धूंस्त्वामुद्धहेकथमिति प्रवदाम्युपायम् ॥ पूर्वेष्टुरस्तिमहवीकुलेदेवयात्रा यस्यां विहिर्नवधूर्गिरिजामुपेयात् ४२ यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजः  
स्नपनं महान्तोवाञ्छन्त्युमापतिरिवात्मतमोपहत्यै ॥ यर्हम्बुजाक्षनलभेयभवत्प्रसादं जह्याममनूव्रतकृशः ॥ अञ्छतजन्मभिः स्यात् ४३ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ इत्ये  
तेगुह्यसन्देशा यदुदेवमयाहताः ॥ विमृश्यकर्तुं यच्चात्र कियतांतदनन्तरम् ४४ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे रुक्मिण्युद्धाहे द्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

को राजा जरासन्ध इनकी जो फौज है ताय जीतिके पराक्रमही है मोल जाको ऐसी जो तुम्हारे अर्ध्रान मैं हूं ताय यहाँ तें हरि के अन्त विवाह करोगे ४१ कदाचिद् कहो कि तुम तो रुक्मिणी पुर के भीतर हो तुम्हारे भय्या वन्धुन के मारे बिना कैसे व्याहूं ऐसी जो तुम मनमें शङ्का करो तो उपाय बताऊं हूं विवाह तें पूर्व दिन बड़ी कुलदेवी अम्बिका की यात्रा होय है ता यात्रा कूं रिबे के लिये और देवी की पूजा करिवे कौं नवधू कन्या बाहिर जाय हैं तहाँ ते मेरो लेजायवो सुगम है जैसे पार्वती कूं शिवजी लेगये ४२ जिनके चरणारविन्द की रज सूं स्नान करिवे कूं बड़े २ साधु महान् अपने अज्ञान दूरि करिवे के लिये इच्छा करे हैं हे कमलदलोचन ! जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्न न होउ तो व्रत करिवे तें दुर्बल जो मेरे प्राण हैं तिन त्यागि देउगी कदाचित् कहो कि प्राण त्यागिवे ते कहा होयगो तहाँ रुक्मिणी कहें हैं वारंवार प्राण त्याग कलंगी तो सौ जन्म में तौ प्रसन्न होउगे ४३ अब ब्राह्मण कहे हैं हे यादवन के देव ! गुप्त संदेशो लोके मैं आयो हू जो यहाँ करिवे योग्य कार्य होय ताय विचारि कै शीघ्र करो विलम्ब मति करो ४४ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यष्टादशमस्कन्धोत्तराष्ट्वरुक्मिण्युद्धाहे द्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

चारिके श्रीकृष्णके लिवाये कू भेजतिभई २६ वह ब्राह्मण जा समय द्वारकापुरीमें प्राप्तभयो तब दारपालनने भीतर पहुँचायो तहां सुवर्ण के सिंहासनपै बैठे जो आदिपुरुष नारायण हैं तिनको दर्शन करतभयो २७ ब्राह्मणहै देवता जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र नाब्राह्मणहूँ देखिके आप सिंहासनपैते उत्तरिक ब्राह्मणको सिंहासनपर बैठायेकैसे अपने आपकी देवता पूजा करेहैं ऐसे वाको पूजनकरत भये २८ भोजनकरयो अप जिनको गयो ऐसे ब्राह्मणके पास साधुनकी गतिरूप जो श्रीकृष्णहै सो आयकै अपने हाथते उनके चरणारविन्दकूं सहरावत निर्विग्रह होयकै पूजतभये २९ हे दिननमें भेट ! ब्राह्मण दृढ़सम्मत जो तुम्हारी धर्ममें है सो बहुत कष्टतैं तो नहीं चले है सर्वदा तुम्हारे मनमें सन्तोष रहे है ३० जा क्राहू प्रकारकरिके ब्राह्मण सन्तुष्ट होयके वर्ते अर्थात् जो कछु वस्तु आयके प्राप्तहोइ वाहीमें सन्तोष करिकै रहे, अपने धर्ममें मूँ व्युत्त न होय तो वही उसके सम्पूर्ण फलको देनवारो है ३१ और जाके मनमें सन्तोष नहीं है वह ब्राह्मण इन्द्रहोपजाउ तथापि लोकन ते लोकनमें डोख्यो करे

दृष्ट्वा ब्राह्मण्यदेवस्तमवरुह्यनिजासनात् ॥ उपवेश्यार्हयाञ्चके यथात्मानं दिवौकसः २८ तं मुकुत्रन्तं विश्रान्तमुपगम्य सताङ्गतिः ॥ पाणिनाऽभिष्टुशन्पादाव  
व्यग्रस्तमपृच्छत २९ कश्चिद्विजवरश्रेष्ठ धर्मस्तेष्वृद्धसंमतः ॥ वर्त्ततेनातिरुच्छ्रेण सन्तुष्टमनसः सदा ३० सन्तुष्टो यद्विचर्त्तत ब्राह्मणो येन केनचित् ॥ अहीयमा  
नः स्वाद्धर्मात्सहस्रयास्त्रिलोकामधुक् ३१ असन्तुष्टोऽसकृल्लोकानामोत्पत्तिमुपेश्वरः ॥ अकिञ्चनोऽपि सन्तुष्टः शेते सर्वोङ्गविज्वरः ३२ विप्रान् स्वलाभस  
न्तुष्टान् साधून् भूतसुहृत्तमान् ॥ निरहङ्कारिणः शान्तान्नामस्येशिरसाऽसकृत् ३३ कश्चिद्दुःखालं ब्रह्मन् राजतोयस्य हि प्रजाः ॥ सुखं वसन्ति निपये पाल्यमानाः  
समेप्रियः ३४ यतस्त्वमागतो दुर्गानि स्तीर्यैह यादिच्छया ॥ सर्वानो ब्रह्मगुह्यञ्चेत्किं कार्यं करवामते ३५ एवं संपृष्टं राप्रश्रोत्राह्वणः परमेष्ठिना ॥ लीलागृहीत  
देहेन तस्मै सर्वमवर्णयत् ३६ ॥ रुक्मिणयुवाच ॥ श्रुत्वा गुणान् भूभवनमुन्दरशृण्वतं ते निर्विशयकर्ण विवैर्हस्तोऽङ्गतापम् ॥ रूपं दृष्ट्वां दृष्ट्वा शिमतामखिलार्थलाभं  
त्वय्यव्युताविशतिचित्तमपेत्रां मे ३७ कात्सामुकुन्दमहतीकुलशीलरूपविद्यावयोदविणधामभिरात्मतुल्यम् ॥ धीरापतिं कुलवतीनद्युणीतकन्याकालेन

है तुष्णा के मारे एक स्थानमें स्थिर होयके नहीं रहे है और जाके पास कुछभी नहीं है और मनमें सन्तोष है वह ब्राह्मण सब अन्न के खेदनकूं दूरि करिके आनन्दपूर्वक सोवै है ३२ आपही तैं विना मागे प्राप्तभई जो वस्तु है लाहीमें सन्तोष है जिनके और सब प्राणीनते क्षितकूं करे विद्यावान् कुलीन अहङ्काररहित शान्त जिनके स्वभाव ऐसे जे साधु ब्राह्मणहैं तिनैं स्थिरनश्यकै गे प्रणामकरूं ३३ हे ब्राह्मण ! जाकीं तुम प्रजा को ता राजा तैं तुमकूं कुशल है जा राजा के देश में ब्राह्मणन को पालन होइ वह राजा मोकूं प्यारो लगे है ३४ समुद्र को उलूथन करिकै जिस कार्य के करिये की इच्छा करिकै जा स्थान तैं तुम या किञ्चा में प्राप्त भये हौ जो कथनयोग्य बात होय तो हगरे आगे सम्पूर्ण कही उप तुम्हारी कक्षा कार्य करे ३५ श्रेष्ठ आसन पै निराजमान होय लीला क-  
रिके धारण करो है मनुष्य देह जिनने ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ने पूछी है पृच्छिये लायक नात जासूं ऐसो ब्राह्मण श्रीकृष्ण तें सब वर्णन करत भयो ३६ रुक्मिणी ने आप एकान्त में लिखिके दीनी जो पत्नी है ताय खोलिकै मेमके है चिह्न जापें ऐसी पत्नी ब्राह्मण श्रीकृष्ण कूं दिलायकै उनकी आज्ञा तें पत्नी कूं वांचे है रुक्मिणी कहे है हे निलोकी गे सुन्दर ! हे अन्त्युत अर्थात् असएडरूप !

(त्रिज्वाशचमेगत्वाविदर्भान्द्रुतेहितः ॥ रुक्मिणीमहरस्कृणोपिपतादिपतायलात् १ तिरपनवै अध्यायं अद्भुत चेष्टायुक्त कृष्णजीविदर्भदेशं जाकर शुश्रूषा के देखते ही जदरती सौ लक्ष्मणी जीको हर लेते भये ? ) अत्र श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् प्रीति ! यदुकुल कं आनन्द के देन वारे श्रीकृष्णचन्द्र विदर्भदेश को संदेशों सुनिके ब्राह्मण को अपने हाथ में हाथ पकरिके हंसकर बोलत भये ? अत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं जैसे रुक्मिणी को मेरे बिपे चित लग्यो है ऐसे ही रुक्मिणी में मेरी हू चित लग्यो है चिन्ता के मारे रात्रि में नींद नहीं आने है मैं जानूं हों रुक्मी ने द्वेप करिके भरे व्याह कूं मने करदियो है २ दुष्टराजान कूं लड़ाई में जीति कै मो विना और कूं जाने नहीं दोषाहित हैं अद्भुत जाके ऐसी रुक्मिणी कूं जैसे काष्ठ मन्थन करिके अग्नि निकसि लेई हैं तैसे ले आजंगो श्रीशुकदेवजी बोले मुरदैत्य के मारन वारे जो भगवान् हैं सो रुक्मिणी के विवाह को नत्तत्र जानि कै हे स्थवान् ! स्य कूं शीघ्र

श्रीशुकउवाच ॥ वैदर्भ्याः सुतसुन्दरं निशम्य यदुनन्दनः ॥ प्रगृह्य पाणिना पाणिं प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ तथाहमपि तच्चित्तो निद्रा खल भो निशि ॥ वेदाहं रुक्मिणोद्वेषान्ममोद्धाहो निवारितः २ तामानयिष्य उन्मथ्य राजन्यापसदान्मुधे ॥ मत्परामनवद्याङ्गीमेधसोऽग्निशिखामिव ३ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ उद्धाहं शस्त्रविज्ञाय रुक्मिण्यामधुसूदनः ॥ स्यः संयुज्यतामाशु दारुक्तेयाहसारथिम् ४ सचार्यैः शैव्यमुग्रीवमेघपुष्पवलाहकैः ॥ युद्धं रथ सुपानीय तस्थौ प्राञ्जलिग्रतः ५ आरुह्य स्यन्दनं शौरिर्द्विजमरोप्यतूणैः ॥ आनत्तोदेकरात्रेण विदर्भानगमद्भयैः ६ राजासकुण्डिनपतिः पुत्रस्नेहवशं गतः ॥ शिशुपालाय स्वांकन्यां दास्यन् रुर्माण्यकारयत् ७ पुरंसं मुष्टसं सिक्कमार्गं रथ्याचतुष्पथम् ॥ चित्रध्वजपताकाभिस्तोरणैः समलङ्कृतम् ८ सगम न्धमाल्याभरणैर्विजोम्बरसूचितैः ॥ जुष्टं स्त्रीपुरुषैः श्रीमदहर्गुरुधूपितैः ९ पितृदेवान्समभ्यर्च्य विप्रांश्च विधिवन्नुप ॥ भोजयित्वा यथान्यायं वाचयामा समङ्गलम् १० सुस्नातां सुदतीन् न्यां कृतकौतुकमङ्गलाम् ॥ अहतांशु रुयुग्मेन भूपिताभूपाणोत्तमैः ११ चक्रुः सामगर्थ्यजुर्मन्त्रैर्ध्वारक्षाद्विजोत्तमाः ॥ पुगे

जोतो या प्रकार स्थवान् सैं कहत भये ३ । ४ शैव्य मुग्रीव मेघपुष्प वलाहक ये हैं नाम बिनके ऐसे जे घोड़ा हैं तिन कूं रथ में जोति कै सम्मुख लाय कै स्थवान् हाथ जोरि कै बोलत भयो ५ शूरवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र रथमें वैदिक और ब्राह्मण कूं वैचारिके शीघ्रगामी जे घोड़ा हैं तिनसूं आनर्तदेश तें चलिके एक रात्रिमें ही विदर्भदेश में आगत भये ६ पुत्रजो रुक्मी ताके वश होय के वाके कहेमैं चलै ऐसो जो कुण्डिनपुरको राजा प्रजाको पालन करन वारे भीष्मक है सो शिशुपाल कूं अपनी कन्या देवेके लिये पुरकी शोभा और पितृ देवतानके पूजन कूं आदिलैके कर्म करानत भयो ७ राजा भीष्मक अपने पुरकूं शोभायमान करावत भयो कैसो पुर है बुहारी जिनमें भई बिरकाव होयस्यो ऐसे राजमार्ग हैं चित्र विचित्र ध्वजा पताका वन्दनवार करिके वह पुर शोभायमान है ८ माला चन्दन फूलन के गहने स्वच्छ वस्त्र इनसों शोभायमान ऐसे स्त्री पुरुष जा पुरमें होलैं हैं अगरकी थप जिनमें लगिरही ऐसे शोभायमान घर हैं ९ हे राजन् प्रीति ! पितृ देवतानको पूजन करिके ब्राह्मणन कों विधिपूर्वक भोजन करायकै राजा भीष्मक रुक्मिणीको यथावत् स्थावत् स्थित वाचन करानत भये १० अत्र कन्या की शोभा कन्याने करयो सुन्दर जाके दांत



ऐसी कन्या है विवाह को वरुण जा के वेश्यो नवीन वस्त्रन कूं पहिरे उत्तम आभूषणन करि शोभायमान है ११ द्विचोत्तम आक्षय्य है ते सामवेद ऋग्वेद यजुर्वेद के मन्त्रन कूं पढ़िके वधू जो रुक्मिणी है ताकी रत्ना करत भये अथर्ववेद के मन्त्रन को जानन वारो जो पुरोहित है सो सूर्यादिक ग्रहनकी शान्ति करिबे के लिये होम करत भयो १२ त्रिविके जानन वारन में श्रेष्ठ जो राजा भीष्मक है सो ब्राह्मणन कूं सुवर्ण रूपो वस्त्र और गुहू भिलाय के तिल और दुग्धकी गौ इनको दान करत भयो १३ यह तो रुक्मिणी के पिता की बात कहे हैं—जैसे राजा भीष्मकने कन्या को मङ्गल कराओ ऐसे ही चंदेलीको पालन करन वारो राजा दमघोष है सो अपने पुत्र शिशुपालको मन्त्र के जानन वारे ब्राह्मणन सूं सम्पूर्ण विवाह के उचित मङ्गल कर्म करवात भयो १४ मंद जिनके बुबे सुवर्णकी है माता जिनके ऐसे हाथीन के समूह और रथ प्यादे घोड़ा इनकी चतुरंगिणी सेना कूं सगलैकै राजा दमघोष कुण्डिनपुर में आवत भयो १५ विदर्भ देशको जो राजा भीष्मक

हितोऽथर्वविद्वे जुहावग्रहशान्तये १२ हिरण्यरूपवासांसि तिलांशुगुडमिश्रिताम् ॥ प्रादाद्धेनुश्च विभो राजा विधिविदां वरः १३ एवं वेदिपती राजा दमघोषः सुताय वै ॥ कारयामास मन्त्रज्ञैः सर्वमभ्युद्योचितम् १४ मदच्युद्धिर्गजानीकैः स्यन्दनैर्हैममालिभिः ॥ पर्यश्वसङ्कुलैः सैन्यैः परितः कुण्डिनयौ १५ तैर्विविदर्भाधिपतिः समभ्येत्यामिपूज्यम् ॥ निवेशयामास सुदा कल्पितान्यनिवेशने १६ तत्र शाल्वो जरासन्धो दन्तवक्रो विदूरथः ॥ आजग्मुश्चेद्यपक्षीयाः पौरण्डकाद्याः सहस्रशः १७ कृष्णरामद्विपोयताः कन्यांचैद्यायसाधितुम् ॥ यद्यागत्य हेतुः कृष्णो रामाद्यैर्यदुभिर्धृतः १८ योत्स्यामः संहतास्तेन इति निश्चितमानसाः ॥ आजग्मुर्भूभुजः सर्वे समग्रवलाहनाः १९ श्रुत्वैतद्भगवाञ्चरामो विपक्षीयन् पृथग्यम् ॥ कृष्णञ्चैकं गतं हतुं कन्यां कलहराङ्कितः २० वलेन महता सार्द्धं भ्रातस्नेहपरिभुजः ॥ त्वरितः कुण्डिनं प्रागाद्राजश्वरथपत्तिभिः २१ भीष्मकन्या वारोदा काङ्क्षन्त्यागमनं हरेः ॥ प्रत्यापत्तिमपश्यन्ती द्विजस्याचिन्तयत्तदा २२ अद्वोत्रियामान्तरित उद्धाहो मेऽलपराधमः ॥ नागच्छत्यरविन्दाक्षो नाहं वै स्रजत्रकारणम् ॥ सोऽपि नावर्त्ततेऽद्यापि मत्सन्देहोऽहो द्विजः २३

है सो शिशुपाल के पास आयकै पूजन करिकै वनायो जो और एक स्थान है तामें प्रसन्न होयके वसावत भयो १६ तथा शाल्व जरासन्ध दन्तवक्र विदूरथ शिशुपाल और पौरण्डक आदिलैकै हजारन राजा आवत भये १७ कृष्ण राम तें वर करिबे की है यत्र जिनको और कन्या कूं शिशुपाल के विवाह करिबे के लिये उद्यम जिनने कस्यो है कदाचित् रामसों आदिलैके यादवन कूं संगलैके कृष्ण आयकै कन्या कूं चुरायकै लै जायगो तो वाके संग युद्ध करेगे ऐसे मन्त्रे निश्चय करिके अञ्छे २ सिपाही घोड़ा हाथीन कूं सगलैके सम्युर्ण राजा आवत भये २० १९ भगवान् वलदेवजी शत्रु शिशुपाल के पत्न के राजानको उद्यम सुनिकै और कन्या लेवें कूं श्रीकृष्ण अकेले गयो है वहा कलाह होगी यह शङ्का मानिकै भयथा श्रीकृष्णको स्नेह जिन कूं आयगयो ऐसे वलदेवजी हाथी घोड़ा रथ प्यादे नकी चतुरंगिणी सेना कूं लैकै शीघ्र कुण्डिनपुर में आवत भये २० २१ श्रेष्ठ है जंघा जाकी ऐसी भीष्मककी कन्या रुक्मिणी हरि जो श्रीकृष्ण है तिनके आयबे को पैंडो देखा ब्राह्मण पत्री लैके गयोहो वह जो लौटिके न आयो तब चिन्ता करति भई २२ मन्दभागिनी जो मै हूं ता भरे विवाह में एकर रानी अब नाकी रही है परन्तु कमल से है नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र नहीं आयपहुँचे

याको कारण मैं नहीं जानूँ हूँ मेरो संदेशो ब्राह्मण लैकेगयो सो भी नहीं आयो है २३ नहीं है दोष जिनमें ऐसे श्रीकृष्णने भेरे पाणिग्रहण को निश्चय उपाय किया होइगो परन्तु कन्या अभीतिं पाती लिखि लिखि भेजेहै यह दोष देखिके नहीं आयो २४ सो अभागिनीकूं विधाता ईश्वर अनुकूल नहींहै और देवी गौरी रुद्राणी पार्वती सतीये अनुकूल नहींहैं—या प्रकार गोविन्द श्रीकृष्णने हरयोहै मन आको ऐसी बाला जो रुक्मिणी है सो चिन्ता करिके आम् जिनमें भरिआये ऐसे नेत्रनकूं मंदति भई अवतारि श्रीकृष्णके आयवे को समय वीत्यो नहीं जाने है २५ । २६ हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार गोविन्द श्रीकृष्णके आइवे को पैढो देखै ऐसी जो रुक्मिणी ताकी वारि ऊरु भुजा नेत्र ये अङ्ग फरकत भये स्त्रीन के वार्ये अङ्ग फरकने शुभ होइहै प्यारी बात के जनावनवारे है २७ याके पीछे ब्राह्मण तुम आगे जाय के खरि करी या प्रकार श्रीकृष्ण ने आज्ञा जाकूं दीनी ऐसी ब्राह्मण अन्तर्गुर में डोलै फिरै जो राजा की पुत्री रुक्मिणी है ताय देखत भयो २८ प्रतिव्रता

अपिमथ्यनवद्यात्मा दृष्ट्वा किञ्चिज्जगत्सितम् ॥ मत्पाणिग्रहेणूनं नायाति हि कृतोद्यमः २४ दुर्भगायानमेधाता नानुकूलो महेश्वरः ॥ देवीवाविमुखा गौरी रुद्राणी गिरिजासनी २५ एवं चिन्तयती बाला गोविन्द हतमानसा ॥ न्यमीलयत कालज्ञा नेत्रे चाश्रुकलाकुले २६ एवं भ्रवाः प्रतीक्षन्त्या गोविन्दागम नन्तुप ॥ वाम ऊरुर्भुजो नेत्रमस्फुरन् प्रियभाषिणः २७ अथ कृष्ण विनिर्दिष्टः स एव द्विजसत्तमः ॥ अन्तःपुरचरि देवी राजपुत्रो ददर्श ह २८ सातं महद्वदनम व्यग्रात्मगतिसती ॥ आक्षय्यलक्षणाभिज्ञा समपृच्छच्छुचिस्मिता २९ तस्या आवेदयत्प्राप्तं शंसयदुनन्दनम् ॥ उक्त्व सत्यवचनमात्मोपनयनं प्रति ३० तमागतं समाज्ञाय वैदर्भीदृष्टमानसा ॥ न पश्यन्ती ब्राह्मणा य प्रियमन्यन्ननामसा ३१ प्राप्तौ श्रुत्वा स्वदुहितुरुद्राहप्रेक्षणोत्सुकौ ॥ अभययाचूर्णघोषेण रामकृष्णौ समर्हणैः ३२ मधुपर्कमुपानीय वासांसि विरजांसि च ॥ उपायानान्यभीष्टानि विधिवत्समपूजयत् ३३ तयोर्निवेशनं श्रीमदुपकृत्य महामतिः ॥ ससैन्य

जो रुक्मिणी है सो मसज है मुख जाको और नहीं चञ्चल है देह की गति जाकी ऐसे ब्राह्मण कूं देखि कै कार्य करिके आयो है या लक्षण कूं जानि के पवित्र जाकी मुसिकानि ऐसी रुक्मिणी पूंछति भई २९ तव रुक्मिणी तें श्रीकृष्णचन्द्र आयो है यह ब्राह्मण कहत भयो और राजान कूं जीति कै रुक्मिणी कूं ले आऊंगो यह सत्य वचन जो श्रीकृष्णचन्द्र ने वक्षो हो ताकूं भी कहत भयो ३० श्रीकृष्ण कूं आयो जानिके हर्षित है मन जाका ऐसे विदर्भदेश के राजा की पुत्री रुक्मिणी विचार करे है कि या समय ब्राह्मण कूं सर्वस्व देऊं सो भी थोड़ो है ऐसे ब्राह्मण के देवे योग्य कोई वस्तु नहीं देखिके प्रणामही करत भई परचाव घन भी देत भई ३१ अपनी कन्या को विवाह देखिवे की इच्छा करिके आयो जे श्रीकृष्ण चलदेव हैं तिनं सुनि के राजा भीष्मक नगाड़े वजावत पूजन की सामग्री लैके सम्मुख जात भयो ३२ मधुपर्क लायके आगे धरत भयो सुन्दर वस्त्र और अनेक प्रकार की भेंट निवेदन करिके विधिपूर्वक राजा भीष्मक जैसे कन्या के वर की पूजा करे है या प्रकार श्रीकृष्ण बलदेव को पूजन करत भयो ३३ नइ ब्रुद्धिमान् राजा भीष्मक कृष्ण चलदेव के लिये सुन्दर स्थान बनाइ कै सेना दहलुआन सहित यथायोग्य आ-

तिथ्य करत भयो ३४ या प्रकार एक ठौर भये जे राजा हैं तिनमें जैसो जाको पराक्रम है जैसी अवस्था है और जैसो जाके बल है जितनो जाके धन है ताको ताही प्रकार सम्पूर्ण वस्तुन करिके राजा भीष्मक पूजन करत भयो ३५ विदर्भपुर के जे वासी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र कूं आयो सुनिके नेत्ररूप अञ्जलीन मूं श्रीकृष्ण के मुखकमल कूं पीवत भये ३६ दोपरहित जो रुक्मिणी है सो श्रीकृष्णचन्द्र की स्त्री होइवे योग्य है तेसेही श्रीकृष्णचन्द्र रुक्मिणी के पति होनेके योग्य हैं ३७ जो कुछ हमने पुण्य करे हैं ताके प्रभाव करिके त्रिलोकी को नरनवारी ईश्वर प्रसन्न होय के अनुग्रह करो और हम यही अनुग्रह चाहे हैं कि श्रीकृष्णचन्द्र रुक्मिणी को पाणिग्रहण करे ३८ या प्रकार प्रेयवद्ध होय के सम्पूर्ण पुरवासी कहत भये कन्या जो रुक्मिणी है सो पुर तें बाहिर निकसि कै प्यादे जाकी रक्षा करे ऐसी देवी आम्बिका के मन्दिर में जाति गई ३९ मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र के चरणकमल को भले प्रकार ध्यान करत आम्बिका भवानी के चरणारविन्द के

योःसानुगयोरातिथ्यंविदधेयथा ३४ एवंराज्ञांमेतानां यथावीर्ययथावयः ॥ यथाबलंयथावित्तं सन्वैःकाभैःसमर्हयत् ३५ कृष्णमागतमाकर्ण्य विदर्भपुर वासिनः ॥ आगत्यनेत्राञ्जलिभिःपुस्तनमुखपङ्कजम् ३६ अस्यैवभार्याभिवितुं रुक्मिण्यहर्हिनापरा ॥ असावप्यनवद्यात्मा भैषम्याःसमुचितःपतिः ३७ किञ्चित्सुचरितंयन्नस्तेनतुष्टिलोककृत् ॥ अनुगृह्णानुगृह्णानुवैदर्भ्याःपाणिमच्युतः ३८ एवंप्रेमकलावद्धावदन्तिस्मपुरौकसः ॥ कन्याचान्तःपुरात्प्रागाद्गटे गुप्ताऽम्बिकालयम् ३९ पङ्क्यांविनिर्ययौद्रुं भवान्याःपादपल्लवम् ॥ साचानुध्यायतीसम्यग्मुकुन्दचरणाम्बुजम् ४० यतवाङ्मातृभिःसाद्धं सखीभिःपरिवारिता ॥ गुप्तराजभटैःशूरैः सन्नद्धैरुद्यतायुधैः ॥ मुदङ्गशङ्खपणवास्तूर्यभेर्यश्चजघ्निरे ४१ नानोपहारमालिभिर्वासुल्याःसहस्रशः ॥ स्रगन्धवस्त्राभरणैर्द्विजपत्न्यःस्त्रलङ्कृताः ४२ गायन्तश्चस्तुवन्तश्चागायकावाद्यवादकाः ॥ परिवार्यवधूंजग्मुः सूतमागधवन्दिनः ४३ आसाद्यदेःसिददन् धौतपादकरा म्बुजा ॥ उपस्पृश्यशुचिःशान्ताप्रविवेशाऽम्बिकान्तिकम् ४४ तावैष्वयसोवालां विधिज्ञाविपूयोपितः ॥ भवानोवन्दयाञ्चक्रुर्भवपत्नीभवान्विताम् ४५ नमस्येत्वाऽम्बिकेऽभीक्ष्णंस्वसन्तानयुतांशिवाम् ॥ भूयात्पतिर्भगवान्कृष्णस्नदनुमोदताम् ४६ अद्भिर्गन्धाक्षतैर्धूपैर्वासःसङ्माल्यभूषणैः ॥ नानो

दर्शन के निमित्त पौवनही जात गई ४० मौन धारण क्रियो है पुरोहितानी सङ्ग और सखी सेहली जाके सङ्ग हैं कवच पहिरि पहिरि कै शस्त्र हाथन में लैके पहिरदार राजा के सिपाही रक्षा निमित्त जाके सङ्ग हैं मुदङ्ग शङ्ख ढोल तुरही भेरि ये वाजे सङ्ग वजत भये ४१ उत्तम उत्तम हज्जारन वेश्या सङ्ग में नाचत जाति गई माला चन्दन वस्त्र गहनेन सूं युद्धार करिके और अनेकप्रकार की सम्री भेंट लैके द्विजन की स्त्री सग जाति गई ४२ गवैया हैं ते और वाजेन के वजवैया हैं ते और सूत जागा वन्दीजन हैं ते रुक्मिणी कू बीच में करिके गावत और स्तुति करत जात भये ४३ देवी के मन्दिर में जाय कमलरूपी पाव हाथ धोइ आचमन करि पवित्र होयकै शान्त है स्वरूप जाको ऐसी रुक्मिणी आम्बिका देवीके पास जाति गई ४४ विधिकी जाननवारी जे दृढ़ ब्राह्मणन की स्त्री हैं ते वाला जो रुक्मिणी है तापै महादेव की पत्नी महादेवसहित जो भवानी है ताकी पूजा करावति गई ४५ हे आम्बिके पार्वती ! अपने सन्तानसहित जो मङ्गलरूपिणी तुम हो तिनें बारबार

प्रणाम करूं हू भगवान् जो श्रीकृष्ण हैं सो मेरे पति होव या प्रकार शिर नवाइ कै रुक्मिणी प्रार्थना करत भई ४६ जल चन्दन अक्षत धूा वस्त्र माला फूल गहने और नानाप्रकारकी सामग्रीन की भेंटन सूं और न्यारी न्यारी जे दीवान की पंक्ति हैं तिन सूं देवीकी पूजा करति भई ४७ तारी प्रकार तिन सामग्रीन सूं और नोन के पुआ। पान कलाधेसुपारी गाढ़े इन सूं सौभाग्यवती जे ब्राह्मणन की स्त्री हैं तिनकी पूजा करत भई ४८ रुक्मिणी देवी के और ब्राह्मणन की स्त्रीन कूं नमस्कार करत भई और प्रसाद है ताइ लेत भई ब्राह्मणन की स्त्री आशीर्वाद देत भई ४९ ताके पीछे मौन कूं त्यागि के जड़ाऊ जो सुंदरी है तासूं शोभायमान जो हाथ है तासूं दासी को हाथपरिके देवी के मन्दिर सूं बाहिर निकसति भई ५० ईश्वर की मायाकी तुल्य बड़ेबड़े जे शूस्वीर राजान की मोहनवारी सुन्दर जाकी कटि कुण्डलन करि शोभायमान हैं मुख जाको रजोदर्शन जाके भयो नहीं रत्नकी जड़ाऊ कौंधनी पहिरे मकटभये हैं स्तन जाके और मुखपै छूटे जे के शंख तिन सूं नेत्र जाके चलायमान है ५१ सुन्दर जाकी मुखियानि कुँदुरु के फल की तुल्य अरुण जे ओष्ठ हैं तिनकी कान्ति सूं अरुणता जिनमें भलकै ऐसे जे दांत हैं तेई हैं मानों कुन्दकली जाके

पद्मरवलिभिः प्रदीपावलिभिः पृथक् ४७ विप्रस्त्रियः पतिमतीस्तथातैः समपूजयत् ॥ लवणाणूपताम्वलकगडमूत्रफलेक्षुभिः ४८ तस्यैस्त्रियस्ताः प्रददुः शेषां युयुजुराशिपः ॥ ताभ्यो देव्यैनमश्चक्रे शोपाञ्चजगृहेधूः ४९ मुनिव्रतमथ्यत्क्वा निश्चक्रामाभ्यिकागृहात् ॥ प्रगृह्य पाणिना भृत्यारत्नमुद्रोपशोभिना ५० तां देवमायामिव वीरमोहिनीं सुमध्यमांकुण्डलमण्डिताननाम् ॥ श्यामानितम्बाग्निपारलोखलां व्यञ्जस्तनीकुन्तलशङ्कितेक्षणाम् ५१ शुचिस्मितां विम्वफलाधरद्वृतिशोणायमानद्विजकुन्दकुड्मलाम् ॥ पदाचलन्तीं कलहंसगामिनीं सिञ्जत्कलानूपुरधामशोभिना ५२ विलोक्य वीरामुमुहुः समागता यशस्विनस्तत्कृतहृच्छयादिताः ॥ यां वीक्ष्य तेनृपतयस्तदुदारहासव्रीडावलोकहृते चेतस उडिभनास्त्राः ५३ पेतुः क्षितौ गजस्थायगता विमूढायात्राच्छलेन हरयेऽर्पयतीं स्वशोभाम् ॥ सैवंशो नैश्चलयतीं चलपद्मकोशौ प्राप्तिं तदा भगवतः प्रसमीक्षमाणा ५४ उत्सार्थं वागकरजैरलकानपाङ्गैः प्रासान्द्रिद्यैक्षन् नृपान् ददशेऽच्युतं मा ॥ तां राजकन्यारंथमारुक्षतीं जहारकृष्णोऽदिपतां समीक्षनाम् ५५ रथंसमारोप्य सुपर्णलक्षणं राजन्यचक्रं परिसूयमाधवः ॥ ततो ययौ रामपुरो

राजधंस हंसिनी की तुल्य है गमन जाको भनतकार शब्दकूं करै ऐसे जो सुन्दरनूपुर ताकी जो शोभा ता करिकै है शोभा जाकी ऐसे चरणनसूं चलै है ऐसी रुक्मिणीकूं देखिकै जे बड़े बड़े यशस्वी राजा तिनकूं व्यापों जो कामदेव तासूं पीड़ित होयके मोहित होत भये ता रुक्मिणी की उदार हंसनि लज्जापूर्वक चितवनि इनसूं हरि गये है चित जिनके ऐसे जे राजा है ते दृष्टियारनकूं छोड़ि के ५२ । ५३ हाथी रथ घोड़ा पै तें मूढ़ होयकें पृथ्वी में गिरत भये कैसी रुक्मिणी है यात्राके मिय करिकै श्रीकृष्णचन्द्रकूं अपनी शोभा दिखावै है या प्रकार चलायमान कमलकोश की तुल्य कोमल जे चरण हैं तिनैं होले होले चलाय के ता समय श्रीकृष्ण के आयनेको पैदो देखे ऐसी जो रुक्मिणी है ५४ सो वागें हाथ के जे नख हैं तिन सूं अलकन कूं उठाय कै आये जे राजा हैं तिनैं कटाक्ष करिके लाजसूं देखत भई और आगे ठाढ़े जो श्रीकृष्ण हैं तिनैं देखत भई रथमें बैठ्यो चाहे ऐसी जो भीष्मकराजकी कन्या रुक्मिणी है ताथ श्रीकृष्णचन्द्र शत्रुनके देगत हरत भये ५५ गरुडकी

है ध्वजा जामें ऐसे रथमें बैठारि है त्रिचयनकी सेनाकूं जीतिके श्रीकृष्ण जातभये जैसे स्यारनके श्रीचर्मते अपने भागकूं लैके सिंह चलयोजाय है ऐसे रामहैं मुख्य जिनमें ऐसे यादवनसहित रुक्मिणी कूं लैके श्रीकृष्णचन्द्र होलै जात भये ५६ जरासन्ध है मुख्य जिन में ऐसे अभिमानी राजा हैं ते यशको जामें नाश ऐसो अपने आपमान है ताथ नहीं सहासतभये अहो हम कूं थिकार है जैसे सिंहन के यशकूं स्यार है ऐसे धनुर्धरी जे हम हैं तिनको यश ग्वारियानने हरिलियो ५७ इति श्रीमनाहाभागवतार्थरूपियादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धे रुक्मिणीहरणनामत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

(चतुःपञ्चाशत्तमे तु जित्वाराज्ञोऽरिपत्नगान् ॥ रुक्मिण्येव च विरुप्याथ यैः स्याः पाणिपुत्रेऽग्रहीत् १ चौवनवें अध्याय में शत्रुके पत्ते के राजाओं को कृष्णजी जीतकर रुक्मीको विरूपकर द्वारकापुरीमें रुक्मिणीजी के साथ विवाह करतेभये १) अत्र श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार अत्यन्त है क्रोध जिनके कवचनकूं पहिरे ऐसे जे सम्पूर्ण राजा हैं ते अपनी अपनी सवारीनपै चढ़ि

गमैः शनैः मृगालमध्यादिव भागहृद्धरिः ५६ तं मानिनः स्वाभिर्भव्यशः शयं परे जरासन्धशानसेहिरे ॥ अहोधिगस्मान्यश आसधन्वनां गोपैर्हतं केसरिणां भृगैरिव ५७ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे रुक्मिणीहरणनामत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ इति सर्वे सुसंस्थावाहना रुद्धांशिताः ॥ स्वैः स्वैर्वलैः परिक्रान्ता अन्वीयुर्धृतकामुक्ताः १ तानापतत आलोक्य यादवानीकयूथपाः ॥ तस्थुस्तस्मन्मुखाराजन् विस्फूर्ज्य स्वधनुं पिते २ अश्वपृष्ठे गजस्कन्धे रथोपस्थे च कोविदाः ॥ मुमुचुः शस्वर्पाणि मेघा आदिष्वपो यथा ३ पत्युर्वलंशरासारैश्च न्नर्वीक्ष्य सुमध्यमा ॥ सव्रीडमैक्षत्तद्वक्त्रं भयविह्वललोचना ४ ग्रहस्य भगवानाहमास्मभैर्वा मलोचने ॥ विनद्धयत्यधुनैव तत्तावकैः शात्रवं वलम् ५ तेषां तद्विक्रमं वीरागदसङ्कर्षणादयः ॥ अमृष्यमाणानां रवैर्जघ्नुर्हयजान् रथान् ६ पेतुः शिरांसिरथिनाम शिवनांगजिनां भुवि ॥ सकुण्डलकिरीटानि सोष्णीपाणि च कोटिशः ७ हस्ताः सासिगदेष्वासाः करभा ऊर्वोऽङ्गयः ॥ अश्वाश्च तस्मात्तगोष्ठ्वरमर्त्य शिरांसि च ८ हन्यमान वलानीका वृष्टिर्णिर्जयकाङ्क्षिभिः ॥

के सेनाकूं संग लैके धनुपनकूं उठायकै पीछे तें आवत भये १ यादवनही सेनाके जे यूथ हैं तिनके पालन करनवारे जे मुख्य मुख्य यादव हैं ते राजानकूं देखिके हे राजन् परीक्षित ! अपने धनुपन कूं टंकार करिके सम्मुख ठाढ़े होत भये २ युद्ध करने में निपुण जे राजा हैं ते घोड़ान की पीठि पै हाथीन के कन्धा पै रथ के ऊपर बैठिके जैसे पर्वतन के ऊपर मेघ जल वर्षावें हैं ऐसे वायुन की वर्षा करतभये ३ सुन्दर हैं कटि जाकी ऐसी जो रुक्मिणी हैं सो पति जो श्रीकृष्ण हैं तिनकी सेनाकूं वायुन सूं ठकी देखिके भयकरिके विह्वल है नेत्र जा के ऐसी लाजसूं श्रीकृष्णको मुख है ताथ देखतिभई ४ भगवान् जो श्रीकृष्ण हैं सो हसिके बोलत भये हे नामलोचने अर्थात् मनोहर है नेत्र जाके ! ऐसी जो तू सो भय मति करै अत्रहीं तुम्हारी ओर के जे यादव हैं ते शत्रुन की सेना कूं आवहीं नाश कर देईगे ५ गद सङ्कर्षण कूं आदि कैके जे शूरवीर हैं ते तिनके पराक्रम कूं नहीं सहिसके घोड़ा हाथी रथ हैं तिन वायुन सूं नाश करत भये ६ रथन में बैठे हैं तिन के और घोड़ान पै चढ़े हैं तिनके और हाथीन पै बैठे हैं तिनके कुण्डल मुकुट पगड़ीन सहित करोड़न शिर कटिके पृथ्वी पै गिरत भये ७ तरवार गदा धनुपन सहित जे हाथ हैं ते कटिके गिरत भये करभन की

तुल्य जे जंग है ते कटिके गिरत भरे घोड़ा राचर हाथी ऊंट गग मनुष्य इनके कटिके शिर गिरत भये ८ जीतिवै की है इच्छा जिनके ऐसे जे यादव हैं तिन ने मारे हैं सेना के झुण्ड जिन के ऐसे जरासन्ध सं आदि लैके राजा है ते विपुल होयके जात भये ९ मानो स्त्री जाकी हरिगई ऐसो व्याकुल शोभा जाकी हत भई उतसाह जाओ गयो सुख जाको शुष्क होयगयो ऐसो राजा है ते जरासन्ध है ताके पास आयकै सब राजा बोलत भये १० हे पुरुषन मैं ब्रिह राजा शिशुपाल ! तुम अपने मनकी उदासीनता कूं त्यागो देहधारीन कूं सुख और दुःख सर्वदा नहीं रहे हैं ? शिशुपाल है ताके पास आयकै सब राजा बोलत भये १० हे पुरुषन मैं ब्रिह राजा शिशुपाल ! तुम अपने मनकी उदासीनता कूं त्यागो देहधारीन कूं सुख और दुःख सर्वदा नहीं रहे हैं ? जैसे काठकी पुतरी नचावनवारेकी इच्छा करिके नाचे है ऐसही ईश्वर के अधीन जो जीव है ताकूं सुख दुःख श्रेय है ? २ कृष्णतें सत्रहवार तेईस अक्षौहिणी सेनालैके युद्धमें हाथो केवल एकवेर जैसे काठकी पुतरी नचावनवारेकी इच्छा करिके नाचे है ऐसही ईश्वर के अधीन जो जीव है ताकूं सुख दुःख श्रेय है ? २ कृष्णतें सत्रहवार तेईस अक्षौहिणी सेनालैके युद्धमें हाथो केवल एकवेर जीत्यो तथापि मैं शोच नहीं करूं कदाचित् हर्ष नहीं मानूं हे देवके वश जो काल है ताने समस्तजगत् चलायमान कियो है यह मैं जानूं १३। १४ वड़े बड़े शूरवीरनेके यूय तिनके पानन करन

राजानोविमुखाजगुर्जरासन्धपुरःसराः ६ शिशुपालंसमभ्येत्य हतदारमिवाऽऽतुम् ॥ नष्टपिपंगतोत्साहं शुष्यद्वदनमब्रुवन् १० भोभोःपुरुषशार्दूल दौर्म नस्यमिदंत्यज ॥ नपियाभियोगराजनिष्ठादेहिपुट्टयते ११ यथादारुमयीयोपिष्टृतयतेकुहकेच्छया ॥ एवमीश्वरतन्त्रोऽयमीहतेसुखदुःखयोः १२ शौरेःसप्त दशाह्नै संयुगानिपराजितैः ॥ त्रयोविंशतिभिःसैन्यैर्जिग्यएकमहंपरम् १३ तथाप्यहंनशोचामि नप्रहृष्यामिर्कहिंचित् ॥ कालेनैवैवयुक्तेन जाननिवद्रावि तंजगत् १४ अधुनापिवयंसर्वे वीरयूथपयूथपाः ॥ पराजिताःफलगतन्त्रैर्दुभिःकृष्णपालितैः १५ रिपवोजिग्यधुनाकालआत्मानुसारिणि ॥ तदावयं विजेष्यामोयदाकालःप्रदक्षिणः १६ एवंप्रबोधितोमित्रैश्चैद्योऽगात्सानुगःपुरम् ॥ हतशेषाःपुनस्तेऽपि ययुःस्वसंपुंनुपाः १७ रुक्मीतुराक्षसोदाहं कृष्ण द्विडसहस्रस्वसुः ॥ पृष्ठतोऽन्वगमत्कृष्णमक्षौहिण्यावृतोवली १८ रुक्म्यमर्धसुसंरब्धः शृण्वतांसर्वभूजाम् ॥ प्रतिजज्ञेमहानाहुर्दशिनःसशरासनः १९ अहत्वासमेरकृष्णमप्रत्यूह्यचरुक्मिणम् ॥ कुण्डिनंनप्रवेक्ष्यामि सत्यमेतद्रवीमिवः २० इत्युक्त्वाथमारुह्य सारथिप्राहसत्वरः ॥ चोदयाश्वाचयन् कृष्ण

वारनेके जे यूय तितके पालन करनवारे जे हमें ते थोड़ी है सेना जिनकी कृष्ण है पालन करनवारे जिनको ऐसे यादवन तें अब हरिगये ? ५ या समय उनके दिन अच्छे है तासूं हम शत्रुनकूं जीतत भये जब हमारे दिन अच्छे आवेंगे तब हम जीतेंगे ? ६ याप्रकार मित्रने समझायो तब शिशुपाल अपने चाकर दहलुआनकूं संगलैके अपने देशकूं जातभयो मरेन ते वाकी वचे जे राजा है ते भी अपने २ पुरन कूं जातभये १७ कृष्णको वीरी जो रुक्मी है सो वहिनिको युद्धमें ते हरिके लेजायवो है ताकूं नहीं साहिके एक अक्षौहिणी सेना कों संगलैके वली जो रुक्मी है सो कृष्णके पीछे दौरत भयो ? ८ असहनता जाकूं आइगई क्रोधित होयकै कवच जाने पहिर लियो धनुष ग्रहण करिके सब राजान के श्रवण करत वही है भुजा जाकी ऐसो रुक्मी प्रतिज्ञा करतभयो ? ९ युद्ध में कृष्ण मारे बिना और रुक्मिणीके वगडाये बिना कुण्डिनपुरमें न आऊंगे यह मैं सत्य कहूं २० रुक्मी या प्रकार कहिके रय में वैठि के रयवान् भूं कहत भयो कि जहाँ कृष्ण है तहाँ शीघ्र योद्धान



कं हाँकिकै लौ चलो वाके संग मेरो युद्ध होयगो २१ वही है दुष्टबुद्धि जाकी गौवन को चरावनारो जो कृष्ण है ताके पराक्रम के मद कूं पने वाणन सूँ मारि के अब हरिलेङ्गो ऐसो कृष्ण जोरावरी मेरी बहिनि कूं हरिलेङ्गो है २२ खोंढी है बुद्धि जाकी ऐसो रुक्मी है सो ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र के वल कू न जानि के कुत्सित शब्दन कूं कहत अकेलो रथकूं दौरायके ठाढ़ो रह २ ऐसे गोविन्द श्रीकृष्ण कू पुकारत भयो २३ दृढ़ धनुष् कू खैंचिकै श्रीकृष्ण के तीन वाण मारत भयो और है यादवन के कुल कूं दोप के लागवनवारै ! यहाँ तू जण भर ठाढ़ो रह ऐसे कहत भयो २४ अरे जैसे होम की सामग्री कूं कौया लैजाय है ऐसे मेरी बहिनि कूं चुराय कै कहाँ लिये जाय है बड़ोमायावी कण्ठ करिकै युद्धकरै जो तूहै ता तेरो मद में अब हरिलेङ्गो २५ मेरे वाणन सूँ पीड़ित होयके जवताई न सोबैगो तवताई बन्या कूं त्यागि दे अब श्रीकृष्णचन्द्र मुसिकाय कै वाके धनुष् कूं काटिकै छःवाणन सूँ रुक्मी को वेधतभये २६ आठ वाण करिकै रथ के चारों

स्तस्यमेस्युगं भवेत् २१ अद्याहं निशितैवाणैर्गोपालस्य सुदुर्मतेः ॥ नेष्ये वीर्यमदं येन स्वसाभे प्रसमं हता २२ विकृत्यमानः कुमतिरि श्वरस्याप्रमाणवित् ॥  
रथैर्नैकेन गोविन्दं तिष्ठतिष्ठेत्यथाह्वयत् २३ धनुर्विकृष्य सुदृढं जघ्न कृष्णं त्रिभिः शरैः ॥ आहवात्रक्षणं तिष्ठ यदूनां कुलपांसन २४ कुत्रयासि स्वसारं मे मुपि  
त्वाध्वाङ्गवद्धविः ॥ हरिष्येऽद्य मंदमन्दं मायिनः कूटयोधिनः २५ यावन्न मेहतो वाणैः शयीथा मुञ्चदारिकाम् ॥ स्मयन् कृष्णो धनुश्छिन्नपापद्भिर्विव्याध रुक्मि  
णम् २६ अष्टभिश्चतुरोवाहान् द्वाभ्यां मृतं ध्वजं त्रिभिः ॥ सचान्यद्धनुरादाय कृष्णं विव्याध पञ्चभिः २७ तैस्ताडिनः शरौ धैस्तु चिच्छेद धनुश्च्युतः ॥ पुनर  
न्यदुपादत्त तदप्यच्छिनददययः २८ परिघं पट्टिशं शूलं चर्मण्यं सीशक्रितो मरौ ॥ यद्यदायुधमादत्त तत्सर्वसोऽच्छिनद्धरिः २९ ततो रथादवप्लुत्य खड्गपा  
णिर्जिघांसया ॥ कृष्णमर्धद्ववत्क्रुद्धः पतद्भ्रष्टवपावकम् ३० तस्य चापततः खड्गं तिलाशश्चर्मचेपुभिः ॥ छित्वाऽसिमादेति गमं रुक्मिणं हन्तुमुद्यतः ३१  
दृष्ट्वा भ्रातृवधोद्योगं रुक्मिणीभयविह्वला ॥ पतित्वा पादयोर्भर्तु र्नुवाच करुणं सती ३२ योगेश्वरा प्रमेया रमन् देवदेव जगत्पते ॥ हन्तुं नार्हसि कल्याण भ्रा

वोद्धान कूं और दो वाणन सूँ रथवान् कूं वेधतभये तीन वाणन करिकै ध्वजा काटतभये इतने में रुक्मी और धनुष् कूं लैके श्रीकृष्णचन्द्र कूं पांच वाणन सूँ वेधतभयो २७ वाणन करिके ताड़ित जे अच्युत श्रीकृष्ण है ते रुक्मी को धनुष् काटतभये तब फेरि रुक्मी और धनुष् लेतभयो ताहूँ कूं नहीं है नाश जिनके ऐसे भगवान् काटतभये २८ परिघ अर्थात् बेंड़ा पट्टिश अर्थात् पट्टा त्रिशूल डाल तरवार वरखी नेजा और जे जे हथियार रुक्मी लेतभयो ते ते सम कृष्णचन्द्र काटतभये २९ ता पीछे रुक्मी रथमें तें कूदिकै हाथ में तरवार लैके मरिचे की इच्छा करिकै जैसे पतद्वाग्री के सम्मुख जाय ऐसे श्रीकृष्ण के सम्मुख जातभयो ३० चलयो आवै जो रुक्मी है ताकी डाल तरवार कूं वाणन तें तिल भरि काटिकै पैनी धारकी तरवार लैके श्रीकृष्णचन्द्र रुक्मी के मारिचे कूं उद्यत होतभये ३१ भय्या के मारिचे को उद्यम देखिके भयसू व्याकुल होयके पतिव्रता जो रुक्मिणी है सो पति जो श्रीकृष्णचन्द्र है तिनके चरणन में गिरिके करुणा जाये आय जाय ऐसे वचन कूं बोलतभई ३२ हे योगके ईश्वर ! हे अममेयात्मन् अर्थात् नहीं प्रमाण करिचे में आवै है स्वरूपा जिनको ! हे देवतानके देव ! हे जगत्के पालन करनेवारे श्रीकृष्ण ! हे महापुत्र !

अर्थात् बही है भुजा जिनकी ऐसे जो भरे भयान्क मतिमारी तुम्हें योग्य नहीं है ३३ अब श्रीशुद्धदेवजी कहें हैं राजन् परीक्षित् ! आस करिकै अन्न जाके मैं शोक करिकै मृत्यु जाको शुक होगयो और कष्ट जाको रुचि गयो कायस्ता मूं गिरी है सुवर्ण की माला जाकी ऐसी रुचिपणी ने ता समय श्रीकृष्णचन्द्र के चरण पदारे ता समय करुणा आइगई तामूं रुचमी कूं नहीं पास्तभये ३४ दुष्टकर्मन कूं करै ऐसी जो रुचमी है ताकूं वस्त्र तें बांधि के दाढ़ीमहित मूढ़ मूडिकै चाको अभद्ररूप करतभये तत्ताई यादगन में जे शूरवीर हैं ते अद्भुत जो रुचमी की सेनाई ताज जैसे हाथी कमलिनीन कूं मर्दन करै है या मकार मर्दन करतभये ३५ चलदेवमी श्रीकृष्णचन्द्र के पास आयेके रुचमीकूं देरातभये कैमो रुचमी है शिर जाको मुहिंगयो मृतक के तुल्य बैद्यो ठाढ़ो देखिकै करुणा जिनकूं आय गई ऐसे सामर्थवान् जे चलदेवजी हैं ते रुहतभये ३६ हे कृष्ण ! तेने यह निन्दितकर्म करयो हमारी यामें बिन्दा होयगी शिर दाढ़ी मुड़ाय कैं उरो रूप करिदेनो

तर्ममहाभुज ३३ ॥ श्रीशुद्धवाच ॥ तयापरित्रासविक्रमिताङ्गयाशुचावशुष्यन्मुखरुद्धकण्डया ॥ कातर्थाविविस्त्रसितहेगमालया गृहीतपादः करुणोन्यव सैत ३४ चैलेनवद्धातमसाधुकारिणं सशश्रुकेशं प्रवपन्नव्यरूपपत् ॥ तावन्नगर्दुःपरसैन्यमद्भुतं यदुप्रीरानलिनीयथागजाः ३५ कृष्णान्तिकमुपब्रज्य ददशुस्तत्ररुक्मिणम् ॥ तथाभूतंहतमायंहृष्टासङ्कर्षणोविभुः ॥ विमुच्यवद्धं करुणो भगवान्कृष्णमववीत् ३६ असाधिवंदतयाकृष्णकृत्तनगस्मज्जगुप्सितम् ॥ वपनंश्मश्रुकेशानां वैरूप्यं सुहृदोवधः ३७ मैवास्मान्साध्यसूत्रेथाभ्रातुर्वैरूप्यचिन्तया ॥ सुखदुःखदोनचादन्योस्ति यतः स्वकृत्तनभुक्पुपान् ३८ वन्धुर्वधाहं दोषोऽपि नवन्धोर्वधमर्हति ॥ त्याज्यः स्वेनैवदोषेण हतः किंहन्यतेपुनः ३९ क्षत्रियाणां यं चर्मगः प्रजापतिविनिर्भितः ॥ आताऽपि भ्रातरंहन्याद्येनघोरत रस्ततः ४० राज्यस्यभूमैर्वित्तस्य स्त्रियोमानस्यतेजसः ॥ मानिनोऽन्यस्यवाहेतोः श्रीमदान्धाः क्षिपन्तिहि ४१ तवेयं विपमाशुद्धिः सर्वभूतेषु दुर्हृदाम् ॥ यन्म न्यसेसदऽभद्रं सुहृदां गदगद्गवत् ४२ आत्ममोहो नृणामेव कल्पते देवमायया ॥ सुहृदुर्हृदुदामिनिदतिदेहात्ममपानिनाम् ४३ एककण्ठपरोह्यात्मा सर्वेषामपि

यही अपने नातेदार को मारनो है अब याकूं दोहिदे ३७ अन् रुक्मिणी कूं समझावे हैं हं सुशीले ! भयको कुरूप होयगयो या ईषी तें ह्म कूं दोष मति लगावै यह पुरुष अपने चर्मन को फल भोगे है सुख दुःखको देनवारो और कोई नहीं है ३८ फेर श्रीकृष्ण कूं समझावे हैं अपने नातेदार ने मारिये योग्य अपराध करो भी छोड़ तयापि न मारै वक्तु अपराधी करिकै त्यागिदेनो यह पोहलेही अपने दोषकरि मरि स्यो है फेरि वाकूं कहा मारिये ३९ फेरि रुक्मिणी कूं समझावे हैं क्षत्रियन को यही धर्म विमता ने बनायो है जा चर्म यं भयया भयया कूं मारि डारे मारे मसुल की कौन बात है यह वड़ो घोरचर्म है ताते हमारो कहा दोष है ४० फेरि श्रीकृष्ण कूं समझावे हैं हे कृष्ण ! राज्य के निमित्त पृथ्वी के लिये घनके लिये स्त्री के लिये प्रतिष्ठा के लिये तेजके लिये और और वस्तुके लिये श्रीमदान्ध्र अभिमानी राजा लहै हैं ह्मकूं उचित नहीं है ४१ फेरि कृष्ण कूं समझावे हैं सन् प्राणीन में दुष्ट जाको दृढ अर्थात् सब बात को बुरो निवारै ऐसे जे शिशु पालादिक हैं तिनको बुरो चाहो ही और अपने भयान्को बळो चाहो ही रुक्मिणी तुम्हारी विपम दुद्धि है अज्ञानी पुरुषनकूं जैसे होय तैसे ४२ यह हमारो भिन है यह शत्रु है यह राखर है या

प्रकार देहाभिप्रायी पुरुषन कूं देयमाया करिकै एक मोह रन्यो है ४३ समस्त देहधारीन में एकही शुद्ध आत्मा है नाही कूं अज्ञानीपुरुष अनेकरूप करिकै माने है जैसे जल के भरे घटमें एतही सूक्ष्म को प्रतिबिम्ब अनेक होयकै दीखे है जैसे एक आकाश घटादिकन में बहुत रूप करिकै दीखे है ४४ तैसे द्रव्य अर्थात् अधिभूत माण्डूइन्द्रिय च-यात्मगुण आधिदैविक इतने है स्वरूप जाके ऐसे आत्मा में आविया ने रचे हैं वेही देहधारीन कूं संसार में भटकौवे हैं ४५ हे पतिव्रता रुक्मिणी ! मिथ्यादेह आत्मा कूं संयोग नहीं है और या देहते वियोग भी नहीं देदेह मिथ्या कोहे ते है तहां कहे हैं देह कूं प्रकाशकता आत्मा ते है जैसे सूर्य ते चक्षु इन्द्रिय रूप कूं प्रकाशे है ४६ जन्म मरणादिक जे छगविकार हैं ते देहकूं हे आत्मा कूं कदाचित् नहीं है जैसे चन्द्रमाकी कला घटे बड़े है चन्द्रमा रुडाचित् घटे बड़े नहीं है जैसे अपावसके दिन कलानके घटने तें चन्द्रमाको नाशकहिचे है तैसे या आत्माक देहके नाश तें मरण कहिचे में आवे है ४७ जैसे पुरुष सोवतमें स्वप्नमें अपनपे कूं और विषयन के देहिनाम् ॥ नानेवगृह्यनेमूढैर्यथाज्योतिर्यथानमः ४४ देहआद्यन्तवानेप द्रव्यमाणगुणात्मकः ॥ आत्मन्यविद्ययाक्लृप्तः संसारयतिदेहिनाम् ४५ नात्मनो

ऽन्येनसंयोगो वियोगश्चासनः सति ॥ तद्धेतुत्वास्तत्प्रसिद्धेऽङ्गभाभ्यांयथास्वेः ४६ जन्मादयस्तुदेहस्य विक्रियानाऽऽत्मनः क्वचित् ॥ कलानामिवनैवेन्दोर्मूर्तिर्ह्यस्यकुहुरिव ४७ यथाशयानआत्मानं विषयान्फलमेवच ॥ अनुभुङ्क्तेऽयमसत्यर्थे तथाऽप्रोक्त्यवधोभवम् ४८ तस्मादज्ञानजंशोकमात्मशोपविमोहनम् ॥ तत्तज्ज्ञानेननिर्हृत्य स्वस्थामवशुचिस्मिन्ते ४९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ वैमनस्यं परित्यज्य मनोबुद्ध्यासमादधे ५०

प्राणान् शोषतस्मृष्टोद्विह्वलिर्हन्तवलप्रभः ॥ स्मरन्विरूपकरणं वितथात्ममनोऽपथः ५१ अहत्वाहुर्मतिकृष्णमप्रत्यह्ययवीयसीम् ॥ कुण्डिनं न प्रवेक्ष्यामीत्युक्त्वा तत्रावसदुपा ५२ भगवान्भीष्मकमुतामेवंनिर्जित्यभूमिपान् ॥ पुरमानीयविधिवदुपयेमेकुरुदह ५३ तदामहोत्सवो नृणां यदुपुन्यगृहेगृहे ॥ असूदन न्यभात्रानां कृष्णेयदुपतौनृप ५४ नरानार्यश्चमुदिताः प्रमृष्टमणिः कुण्डलाः ॥ पारिवर्धमुपाजहूर्वयोश्चित्रवाससोः ५५ सावृष्णिपुन्युत्तभितेन्द्रकेतुभिर्वि

भोगिवे को फल के न सुख ताकूं मिथ्या भोगकरै ताहीप्रकार अज्ञानी पुरुष संसार कूं पावै है ४८ यवित है मुसिकानि जाकी ऐसी रुक्मिणी ता कारण तें अज्ञान तें भयो जो आत्मा कूं शोक करन चारो मोहहैं तांय तत्त्वज्ञान सूं दूरि करिकै अपने शान्तरूप में स्वस्थ होबो ४९ अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार भगवान् बलदेवजी ने समझाई तब सुकुमार हैं अन्न जाके ऐसी रुक्मिणी मनकी उडासीनता त्यागिके बुद्धितें मनकूं सायधान करतिभई ५० केवल प्राणही जाके वाकी रहे शत्रुनने छोड़िदियो सेना जाकी पारोगई प्रभाव जाको गयो व्यर्थ भयो है मनोरथ जाको शिर मूढिके भयो है कुरूप जाको लोटी है बुद्धि जाकी ऐमे श्रीकृष्ण कूं मारे विना और छोटी बहिनके बगदाये विना या कुण्डिनपुर में न आऊँगो या प्रतिज्ञा के मारे बहा भोजकटपुर वसायकै रहतभयो ५१ ५२ हे कौरवन कूं आनन्द के देनचारे राजन् परीक्षित ! भगवान् जे श्रीकृष्णहैं ते या प्रकार राजान कूं जीतिके भीष्मककी पुत्री रुक्मिणी कूं द्वारकापुरी में लायकै विधिपूर्वक विवाह करतभये ५३ हे राजन् परीक्षित ! यादवनकी पुरी द्वारकामें यादवनके पालन करनचारे जे श्रीकृष्ण हैं तिनमें अनन्य है भाप जिनको ऐसे मनुष्यन के घरमें मरुल होतभयो ५४

आनन्द जिनके भयो उज्जयन्ती हैं मगिनके जहाऊ गहने जिनके ऐसे ही पुरुष चित्रचित्र हैं वल्ल जिनके ऐसे दूल्हो दुलहिनि जो रुक्मिणी कृष्ण है तिनके देवेके लिये सुन्दर ३ वस्तु लायत भये ५५ ऊँची च्वना और चित्रचित्र माला वल्ल रत्नकी नन्दनारे तिनमें और दादरपै धानकी खोलें अंकुर फूल और जलके भरे कलश और अग्रकी धूप दीप इत्यादिकनसूं वह यादवनकी पुरी द्वारका सुन्दर लगति भई ५६ बुलाये जे प्यारे राजा हैं तिनके हाथिन के मदचुव तासूं शोभायमान है और खिरकाव होयगयो है और दरसाजेनपै केला सुपारीन केजे हल्ललगे हैं तिनसूं शोभायमान है ५७ खुसी के मारे दोरे दोरे फिरें ऐसे जे द्वारकावासी हैं तिनमें कुलदेश सूजयदेश के कयदेश विदभदेश यदुदेश और कुन्तिदेश के वासी जे राजा हैं ते विवाह में मिलि है आनन्दकुं पावत भये ५८ जहा तहा गायो जो रुक्मिणीको हरिकै लै जायगो है ताकूं राजा और राजानकी कन्या अथवा करिकै बडो आश्चर्य मानति भई ५९ हे राजन् परीक्षित ! द्वारकापुरीमें पुरवासीनके लक्ष्मीपति जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं और लक्ष्मी जो रुक्मिणी है ता सहित दर्शन करिकै अति आनन्द होत भयो ६० इति श्रीपद्मनाभगवतार्थोपपादशमस्कन्धे उत्तरांशे रुक्मिणीविवाहोत्सवे चतुः ॥

चित्रमाल्याम्बरलनोरणैः ॥ वभौ प्रतिद्वार्युपवल्समङ्गलैरापणकुम्भभारुधूपदीपकैः ५६ सिक्कभागामिदं द्युद्धिराहून् प्रेण्डभूभुजासु ॥ गजैर्द्वारि सुपरासृष्टभा  
ण्णोपशोभिता ५७ कुरुसृञ्जयैकैक्यविदभैयडुकुन्तयः ॥ मिथामुमुदिरेत्स्मिन् सम्भ्रमात्परिधावतासु ५८ रुक्मिण्याहरणं श्रुत्वा गीयमानं ततस्ततः ॥  
राजानो राजकन्याश्च वधूवधूशिविस्मिताः ५९ द्वारकायामभूद्राजन् गंहामोदः पुरैकसाम् ॥ रुक्मिण्यारमयोपेतं दृष्ट्वा कृष्णं श्रियः पतिम् ६० इति श्रीमद्भा  
गवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरांशे रुक्मिण्युद्धाहोत्सवे चतुः पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ कागस्तु वासुदेवांशो दग्धः प्राशुदमन्युना ॥ देहोपपत्तये भूयस्तमेव प्रत्यपद्यत १ सप्तवजातौ वैदर्भ्या कृष्णवीर्यसमुद्भवः ॥ इहम्न इ  
ति विख्यातः सर्वतोऽत्र मः पितुः २ तं शम्बरः कामरूपी हृत्पातो रुमनिर्देशम् ॥ सविदित्वा तग्नः शत्रुं प्राशोदन्वत्यगादुग्रहम् ३ तं निजं गारवलवान्  
( ५५ वज्रवाशचेतेषु पद्मनोऽजनि कृष्णतः ॥ शम्बरंणाहुतः सोऽथ व्रतगतं दान्तयाऽगमत् १ पद्मन्हा निलाभाद्यैः शम्बराहरणादिना । कुटुम्बिनामपस्यादिसुखदुःखमसूचत् २ पचपत्नये अथाय  
में श्रीकृष्णजीसूं पद्मन्गजी उदय होत भये और शम्बरामुरने पद्मन्गजी को हरलिया फिर पद्मन्गजी शम्बरामुर को मारकर खी समेत द्वारकापुरी में भाग हो जाते भये १ कृष्णजी पद्मन्गजी हानि  
और लाभादिकों और शम्बरामुरके हरने आदिसू कुटुम्बियोंको सुग और दुःरा सूचित करते भये २ ) अत्र श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! वासुदेवको अश जो कामदेव है सो रुद्रके क्रोधवरिके  
पहले भस्म होयगयो फेरि देह पावके लिये वासुदेव हैं तिनमें अ वत भयो १ वही कामदेव श्रीकृष्ण के गीर्ण में होय रुक्मिणी के जन्मलैके पद्मन्ग नाम वरिके विख्यात होत भयो पिता श्रीकृष्णसूं  
सन और ते गुणनर्भ न्यून नहीं हैं २ इच्छापूर्वक रूपक धारण करै ऐसे जो शम्बरामुर हैं सो अपनी शत्रु जानिके दश दिनके बालककूं हरिके समुद्रमें डारिके धरकूं आवत भयो ३ वडो बलवान् परस्य

वालक कू निगलतभयो वा मत्स्यकू मछरीनकी है जीविका जाके ऐसो धीमर बहो जाल ढारिके और मछरीनके सद्ग पकरतभयो ४ वा बडे मत्स्यकू लाय के धीमर शम्बरामुरकी भेट करत भयो शम्बरामुर ने रसोइयानकू दियो रसोइया रसोई में लाय कै छुरीते अहुत मत्स्यकू बिदीण करतभये ५ ता मछरीके उदर में वालककू देखिने रसोइया मायावती जो शम्बरामुरकी स्त्रीहै ताप देत भये शक्ति है चित्त जाको ऐसी मायावती सं आयके सब वृत्तान्त नारदजी कहतभये यह वालकको स्वल्प तेरो पति कामदेव है श्रीकृष्ण तें रत्नमणी में उत्पन्नभयो है या प्रकार उत्पत्ति और शम्बरामुर समुद्र में डारिआयो वहाँ याकू मत्स्य निगलियो या प्रकार मत्स्य के उदरमें प्रवेशहै ताप कहत भये ६ वह जो शम्बरामुरकी स्त्री है सो कामदेव की स्त्री रही रति वाको नाम बड़ी यशस्विनीही पति कामदेव को देह दग्ध होय गयो सो याके देहके उत्पन्न होयवकी मतीत्ताकरैही ७ वह जो मायावती कामदेवकी स्त्रीहै सो शम्बरामुरने भंग भात करवेके निमित्त अपने पास राखीरही

मीनः सोऽप्यपरैः सह ॥ वृनोजालेन महता गृहीतो मत्स्यजीविभिः ४ तं शम्बराय कैवल्योऽप्याजुहुराय नम् ॥ सुदामहान संनीत्वाऽवद्यच्च त्रिधितिनऽद्भुतम्

५ दृष्ट्वा तदुदरे बालं मायावत्यै न्यवेदयन् ॥ नारदोऽरुथयत् सर्वतस्याः शङ्किते चेतसः ॥ बालस्य नत्वं मुत्पत्तिं मत्स्योदरनिवेशनम् ६ सा च कामस्य वै पत्नी रतिर्नाम यशस्विनी ॥ पत्युर्निर्दग्धदेहस्य देहोत्पत्तिं प्रतीक्षती ७ निरूपिता शम्भरेण सा संपौदनसाधने ॥ कामदेवं शिशुं बुद्ध्वा च केस्नेने हंत दाभं के ८ ना तिदीर्घेण कालेन सकाष्णीरुढयौवनः ॥ जनयामास नारीणां वीक्षन्तीनाञ्च विभ्रमम् ९ सा तं पतिं पद्मदलायतेक्षणं प्रलम्बवाहुं नरलोकमुन्दरम् ॥ समीडहा सोत्तमि तन्नुवेक्षती प्रीत्योपतस्थे गतिरङ्गसौरैः १० तामाह भगवान् कार्ष्णिमर्मा तस्ते मतिरन्यथा ॥ मातृभावमतिक्रम्य वर्त्तसे कामिनीयथा ११ ॥ रतिरुन्नाच ॥ भवान्नारायणमुतः शम्भरेणाऽऽहूतो गृहात् ॥ अहन्तेऽधिकृता पत्नी रतिः कामो भवान् प्रभो १२ एतन्ना निर्देशं सिन्धवाक्षिपच्छम्भरोऽमुरः ॥ मत्स्योऽग्रसीत्त दुदरादितः प्राप्सो भवान् प्रभो १३ तमिमञ्जुहिर्दुर्जपदुर्जं यशस्तुमात्मनः ॥ मायाशतविदं तच्च मायाभिर्मोहनादिभिः १४ परिशोचति ते माता कुरीवग

सो उस वालक कू कामदेव जानिके ता समय वालक में स्नेह करति भई ८ ओडे सेही दिनन में मास भईहै यौवन अवस्था जिनकी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के पुत्र प्रद्युम्न देखनवारी स्त्रीनकू मोह उत्पन्न करतभये ९ कमलदलसे बडेहै नेत्र जिनके लम्बीहैं भुजा जिनकी मनुष्यलोक में सुन्दर ऐसे पति प्रद्युम्न कू लाजभरी मुमकानि रूं उठी जो श्रुती तासूं देखिके भीति करिके सुरतसम्बन्धी जे भावहै तिन करिके सेवन करति भई १० अब श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्नजी रतितें बोलतभये हे मातः ! तुम्हारी मति और प्रकार भई है मातृभावकू त्यागि कै अब स्त्री की तुल्य आचरण करौ हौ ११ अब रति बोले है हे प्रभो ! तुम नारायण के पुत्रहौ शम्बरामुर तुमकू चुरायकें घरमें लै गयोहो मैं तुम्हारी स्त्री हूं रति पेरो नाम है तुम कामदेवहौ १२ नहीं व्यतीतभये है दश दिन जिनके ऐसे तुमहौ तिनकू शम्बरामुर समुद्र में पटकत भयो तब मत्स्य तुमकू निगलतभयो हे प्रभो ! तुम मत्स्य के पेट में तें आयेहौ १३ निरस्कार करिवे में न आवै ऐसो जो अपनो शत्रु शम्बरामुर है सो सैकस्त मायान को जाननवारो है ताकू मोहनादिक मायान सू मारौ १४ पुत्रके स्नेह करि अतिव्याकुल दीन गयो है पुन जाको ऐसी तुम्हारी माता कुररी अर्थात् विदि-

हरीकी तुल्य शोच करे है बिना चखराकी गौदी तुल्य ग्राहुर है १५ या प्रकार मायावती स्त्री कहिकै सब मायान की नाश करनवारी जो महाभाया विद्या है ताय महात्मा प्रभुज जी हैं तिन देत भई १६ प्रभुज जी शम्भरासुर के पास आयकै असह्य वचननसू तिरस्कार करिकै कलह उत्पन्न करिकै युद्ध करिने के अर्थ बुतावत भये १७ सोंटे ताम्रन सूं तिरस्कार जाको कसो ऐसो शम्भरासुर जैसे ठोकर लगे ते सप्य फुंकारे है या प्रकार क्रोधकरिकै लाल है नेत्र जाके ऐसो शम्भरासुर गदा हाथमें लैके निकसतभयो १८ शम्भरासुर गदाकुं फिरायकै महात्मा प्रभुज जी के ऊपर फेंकिकै वज्रपातकी तुल्य जो कटोर शब्द है तारूं अधिक शब्द करतभयो १९ भगवान् प्रभुज जी अपने ऊपर चली आवै जो गदाहै ताय गदासूं दूरि करिकै वैरी शम्भरासुर के ऊपर क्रोध करिकै है राजन् परीक्षित् ! अपनी गदा फेंकतभये २० शम्भरासुर भय कारीगरने दिसाई ऐसी दैत्यनकी भाया ताको आग्रहकै आकाश में जायके श्रीकृष्ण के पुन प्रभुज जी के ऊपर पतयरन की वर्षा

तप्रजा ॥ पुत्रस्नेहाकुलादीना विवत्सागौरिवाऽस्तुरा १५ प्रभाष्यैवंदौ विद्यां प्रष्टुम्यायमहात्मने ॥ मायावतीमहामायांमर्वायाविनाशिनीम् १६ सच शम्भरभयेत्य संशुगायसमाह्वयत् ॥ आविपह्यैस्तमोक्षैः क्षिपन्सज्जनयन्कलिम् १७ सोऽधिक्षिप्तोऽहर्वचोभिः पदाहतइवोरगः ॥ निश्चक्रामगदापाणि रमर्पत्ताम्रलोचनः १८ गदामाविभ्यतरसा प्रष्टुम्यायमहात्मने ॥ प्रक्षिप्यन्यनदन्नादं वज्रनिष्पेषनिष्ठुरम् १९ तामापतन्तीभगानन् प्रष्टुम्योगदयागदाम् ॥ अपास्यशत्रवेकृद्धः प्राहिणोत्स्वगदांतुप २० सचमायांसमाश्रित्य दैतेयीमयदर्शिताम् ॥ सुमुचेऽस्त्रमयंवर्ष कण्णोवैहायसोसुरः २१ बाध्यमानोऽस्त्र वर्षेण रौक्मिणेयोमदारथः ॥ सत्वात्मिकामहाविद्यां सर्वमायोपमर्दिनीम् २२ ततोगौह्यकगान्धर्वैषाचोरगरक्षसीः ॥ प्रायुङ्क्षुशनशोदैत्यः कर्षिण न्ययधमयतस्तताः २३ निशातमसिमुद्यम्य सकिरीटं सकुण्डलम् ॥ शम्भरस्यशिरःकायाचास्त्रश्मथ्र्योजसाऽहत् २४ आकीर्यमाणोदिविजैः स्तुवद्भिः कुसुमो तकरैः ॥ भार्गव्याऽम्बरचारिस्या पुरीनीतोविहायसा २५ अन्तःपुरत्रंराजल्ललनाशतसङ्कुलम् ॥ विवेशपत्न्यागगनाद्विद्युतेववलाहकः २६ तंदृष्ट्वाजल दश्यामं पीतकोशेयवाससम् ॥ प्रलम्बचाहुंताम्राक्षं सुस्मितं रुचिराननम् २७ स्वलङ्कृतमुलाम्भोजं नीलकलकोदिभिः ॥ कृष्णं गत्वास्त्रियोद्गीतानिलित्यु करतभयो २१ पतयरनकी वर्षासूं पीडित ऐसे जो हविमणी के पुत्र प्रभुज जी सो सगस्त मायानकी नाश करनवारी सचमुखी जो अपनी मायाहै ताय बुलावतभये २२ पीछे शम्भरासुरहै सो मुद्यक गन्धर्व पिशाच सर्प राजसनही सैकरान माया छोएतभयो ता समय श्रीकृष्ण के पुत्र प्रभुज जी सच मायानको नाश करतभये २३ प्रभुज जी पैनी तरवार उठायकै किरीट और कुण्डलसहित और रक्त दादी सक्ति जो शम्भरासुर को शीशहै ताय बल करिकै घस्ते काटतभये २४ रतुति करते जे देवता हैं तिनने पुष्पनके ढेरनी जिनपै वर्षा करी ऐसे प्रभुज जी आकाश की विचरनवारी स्त्री ने आकाशमार्ग दीयकै द्वारकापुरी में पहुँचाय दिये २५ हे राजन् परीक्षित् ! सैकरान स्त्री जागें रहै ऐसो जो अन्तःपुर है तामें आकाश तें उतरिकै गैस विजुरी सहित मेघयावै या प्रकार आवतभये २६ वर्षाकी घटानकी तुल्य सात्रे रेशमी पीरे बहानकुं पीहेर लम्बी गिनकी भुजा अरुण जिनके नेत्र सुन्दर जिनकी मुसिकानि मनोहर जिनको मुख नीली टेढ़ी अलकावलीन सूं शोभायमान जिनको



मुलारविन्द ऐसे प्रद्युम्न नी कूं देखिके श्रीकृष्ण आये हैं यह मानिके स्त्री लज्जित होय के जहां तहां छिपती भई २७ । २८ कुत्र स्त्री कोई विलक्षणता देखिके श्रीकृष्ण नहीं हैं ऐसे जानिके प्रसन्न होइ के आश्चर्य मानिके स्त्रीन में श्रेष्ठ जो रति है तास हव जो प्रद्युम्न नी हैं तिन के पास आवति भई २९ यां के पीछे ता समय मनेह करिके स्तनन में दूध चुबे और नीले हैं कटाक्ष जाके मनोहर हैं वचन जाके ऐसे विदर्भ देश के राजाधी पुत्री रुक्मिणी है सो नष्ट भयो जो अपनो पुत्र है ताको स्मरण करत भई ३० मनुष्यन में श्रेष्ठ मलकी तुल्य हैं नेत्र जाके ऐसी यह बालक कौन तो है और कौन स्त्रीने यांकुं गर्भ में राख्यो है और यांकुं यह कौन स्त्री प्राप्त भई है ३१ मेरो भी पुत्र नष्ट होयगयो सूतिकाग्रह में तें वांकुं कोई लैगयो है जो कदाचित् कहुं जीवत होयगो तो याही भी बराबरी होयगो और ऐसी वांकुं रूप होयगो ३२ शार्ङ्ग है धनुष् जिनको ऐसे श्रीकृष्णकी तुल्य रूप याने कैसो पायो है याको स्वरूप और हाथ पायगो की चलनि बोलनि हैं सनि चितवनि सब श्रीकृष्णकी समान हैं ३३

सत्रत्रह २८ अवधार्य शनैरी पद्वैलक्षयेन योपिनः ॥ उपजग्मुः प्रमुदिताः सस्त्रीलं मुविस्मिताः २९ अथ नत्नासिता पाङ्गी वैदर्भी वल्लभापिणी ॥ अस्म

रस्वमुतेनं स्नेहस्तु न पयोधग ३० कोन्वयं न वैदूर्यः कस्य वा मल्लक्षणः ॥ धृतः क्रयावाजडेर केयलवधात्पनेन वा ३१ मगचाप्यात्पमजानशो नीनोयः

मूतिकागृहात् ॥ एतत्तुल्ययोरूपोयदि जीवतिकुत्रचित् ३२ कथं त्वनेन सम्प्राप्तं सारूप्यं शार्ङ्गधन्वनः ॥ आकृत्याऽवयवैर्गत्यास्त्रहासावलोकनैः ३३ मए

वाभवेन्नूनं यो मे गर्भे धृतोऽर्भकः ॥ अमुष्मिन् भीतिराधिका वामः स्फुरति गेभुजः ३४ एवं मीमांसमानायां वैदर्भ्यां देवकी सुतः ॥ देवक्या न रुदुन्दुभ्यामुत्तम

श्लोक आगत ३५ विज्ञातार्थोऽपि भगवांस्तूष्णीमासजनादनः ॥ नारदोऽकथयत् सर्वशम्भराहरणादिकम् ३६ तच्छ्रुत्वा महाशचर्यं कृष्णान्नः पुरयो

पितः ॥ अभ्यनन्दन् बहून् वदन् प्रहृष्टमिवाऽऽगतम् ३७ देव की वसुदेवश्च कृष्ण रागौ न थास्त्रियः ॥ दम्पती तौ परिषज्य रुक्मिणी त्रययुर्मुदम् ३८ नष्टं प्रहृ

स्ममाया तमाकर्ण्य दारकौ रुसः ॥ ब्रह्मो मृत इवाऽऽयातो बालो दिष्ट्येति हाश्रुच ३९ यै मुहुः पितृस्वरूप निजेश भावास्तन्मातरा यदभजन् न ह्नुह रूढभावाः ॥

जो बालक मैने गर्भ में ग्रहण न स्थो हो निश्चय वह यही है यामें मेरी प्रीति बड़ा है और मेरी वाई भुजा फरकति है ३४ विदर्भ देश के राजाकी पुत्री रुक्मिणी या प्रकार विचार करे ही इतने में उत्तम है यश जिनको ऐसे देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण वन्द देवकी वसुदेव कूं संगलै के आवत भये ३५ पत्नी सहित पुत्र आयो है या बात कूं जाने है तथापि चुप होत भये इतने में नारदजी आयके शम्भरासुर हरिकै लैगयो समुद्र में पटकि पायो तब मछरी निगलति गर्भ यामें आदिलै के सब वृत्तान्त करत भये ३६ कृष्ण के अन्तः पुरकी स्त्री हैं सो वडो आश्चर्य श्रवण करिके बहुत दिनन मू देखे नहीं मृतक जैसे गतिके आवे या प्रकार आयें जे प्रद्युम्नजी निनकी प्रशसा करति भई ३७ देवकी वसुदेव और श्रीकृष्ण बलदेव तथा और स्त्री हैं ते और रुक्मिणीजी स्त्री पुरुष जे प्रद्युम्न हैं तिनमूं मिलिके आनन्द कूं प्राप्त होत भये ३८ समस्त दारकावासी नष्ट भये प्रद्युम्न कूं आयें सुनिके अहो वडो आश्चर्य है मृतककी तुल्य यह बालक आवत भयो ऐसे कहत भये ३९ पिता जो श्रीकृष्ण है तिनकी बराबरी है सरूप जिनको ऐसे प्रद्युम्नजी में हथारे पाते हैं यह एक न्न में भाव जिनकूं भयो ऐसी प्रद्युम्नजीकी माता रुक्मिणी कूं आदिलै के श्रीकृष्णकी रानी हैं ते प्रद्युम्नजी की

सेवन करत भई यह कहु आरचर्य नही है छदपी वास करै ऐं भे जो श्रीकृष्ण तिनके पुत्र कामदेव तिनको मनमें स्मरणमात्र मन चलायमान होइहै साक्षात् प्रीतिमान् के दर्शन करे तें स्त्री सेवन करे  
यामें कहा कहनो है ४० ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशस्कन्धे उत्तरार्द्धे प्रष्टुमनोत्पत्तिनिरूपणामप्यप्यञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥ \* \* \*

( पदपञ्चाशत्तमैमिथ्याऽभियोगेमणिपाहरत् ॥ कन्यागाम्भवतः प्रापकृष्णः सत्राजितस्तदा ? पुत्रादिकामसौख्यस्य निष्ठुमुक्त्वाऽतिचञ्चलाम् ॥ अर्थशानर्यतामाहस्यमन्तहरणादिना २ छपनवे  
अध्याय में फूँटे कलङ्क में कृष्णजी जाम्बवान् सों मण्डि लाते भये और उसकी कन्या और सत्राजित् की कन्या कूं प्राप्त होते भये ? पुत्रादिकाम सुख की अत्यन्त चञ्चल निष्ठा कहकर स्यमन्तक  
मणिके हरणआदि सूं अर्थ की अर्थता कहते हैं २ ) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! कियो है पाप जाने ऐसो सत्राजित् अपने पाप की निष्ठितिके अर्थ अपनी कन्या कूं स्यमन्तक

चित्रनतत्त्वलुमास्पदविभ्विम्बे कामेस्मरेऽक्षिविषये किमुतान्यनार्यः ४० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशस्कन्धे उत्तरार्द्धे प्रष्टुमनोत्पत्तिनिरूपणामपञ्च

पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥ \* \* \* ॥ \* \* \* ॥ \* \* \* ॥ \* \* \* ॥

श्रीशुकउवाच ॥ सत्राजितः स्वतन्त्रां कृष्णायकृताकिलिपः ॥ स्यमन्तकेन मणिना स्वयमुद्यम्यदत्तवान् १ ॥ राजोवाच ॥ सत्राजितः किमकरोद्ब्रह्मन्  
कृष्णस्य किलिपम् ॥ स्यमन्तकः कुनस्तस्य कस्मादत्तासुताहरेः २ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ आसीत्सत्राजितः सूर्यो भक्तस्य परमभला ॥ प्रीतस्तस्मै मणिमादा  
त्सूर्यस्तुष्टः स्यमन्तकम् ३ सतं विभ्रन्मणिकण्डे भ्राजमानो यथाश्रविः ॥ प्रविष्टोद्धारकांजंस्तेजसानोपलक्षितः ४ तं विलोक्य जनादूरात्तेजसामुष्टुष्टयः ॥  
दीव्यतेऽक्षैर्भगवते शशंसुः सूर्यशङ्किताः ५ नारायणनमस्तेऽस्तु शङ्खचक्रगदाधर ॥ दामोदराश्विन्दाक्षगोविन्दयदुनन्दन ६ एष आयाति सविता त्वादि  
दृष्टुर्जगत्पते ॥ मुष्णन् गमस्ति चक्रेण नृणां चक्षुर्विति गमगुः ७ नन्वन्विच्छन्ति ते मार्गत्रिलोक्या विवर्धर्षभाः ॥ ज्ञात्वाऽद्यगूढं यदुषु द्रष्टुं त्वां यात्यजः प्रभो ८

नाम मणिके साथ श्रीकृष्णचन्द्र कूं देवे को उपाय करिके देत भयो ? अब राजा परीक्षित् कहे हैं हे शुकदेवजी ! सत्राजित् श्रीकृष्णचन्द्र को कहा अपराध करत भयो और स्यमन्तकमणि कहा  
तें आई और कौन कारण अपनी कन्या श्रीकृष्णचन्द्र कूं दीनी यह सब हमारे आगे वर्णन करो २ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं सत्राजित् सूर्य को भक्त परमभित्र हो सूर्य प्रसन्न होय कै सन्तुष्ट  
होय कै सत्राजित् स्यमन्तकमणि देत भये ३ सत्राजित् मणिकूं कण्ठ में पहिरि कै सूर्य के प्रकाशकी तुल्य प्रकाशमान होय कै द्वारकापुरी में आये ता समय हे राजन् परीक्षित् ! वाके तेज  
सूं सत्राजित् आवै है यह जानिये में नहीं आवत भयो ४ तेज की चिकाचौध्री सू भिची है दृष्टि जिनकी ऐसे जन हैं ते सत्राजित् दूरि तें आवत देखिके राजा उग्रसेन की सभा में चौपरि खेतें जे  
श्रीकृष्ण हैं तिनसूं यह सूर्य आवै है ऐसे शङ्कित होय कै कहत भये ५ हे नारायण ! हे शङ्ख चक्र गदा धारण करनेवारे ! हे दामोदर ! हे कमलनेत्र ! हे गोविन्द ! हे यदुवनकं आनन्द के देनवारे ! तुम  
कूं नमस्कार है ६ हे जगत् के पति ! तुम्हारे दर्शन के लिये यह सूर्य आवै है तीक्ष्ण किरणन के समूह तें मनुष्यन के नेत्रन कूं डुरावत आवै है प्रभो ! ७ त्रिलोकी के देवतान में जे श्रेष्ठ हैं ते तु-

इहारे मार्ग कूँ दूँ दे हैं यादवन में तुमकूँ क्षिप्र्यो जानिकै देखिबे के लिये सूर्य आवै है ८ अब श्रीशुद्धदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित् ! कमलनेत्र श्रीकृष्णचन्द्र अज्ञानी पुरुषन के यवन मुनिके हेतुके चोलत भये यह सूर्यदेव नहीं है मणि करिकै प्रकाशमान सत्राजित् आयै है ९ करे हे मङ्गलोत्सव जाँमे ऐसो जो अपनी घर है ताँगे आय है देवता के मन्दिर में सत्राजित् ब्राह्मणन ते पूजा कराय गणिकूँ धरावत भयो १० हे प्रभो राजन् परीक्षित् ! वह मणि प्रतिदिन चार मनको भार ऐसे आठ बार सुवर्ण उगलैही और जहाँ ना मणि होइ ता देश में दुर्भिक्ष न परै है और अलालमत्तु तथा अरिष्ट अर्थात् अपद्रव नही होइ हे सूर्य नहीं होय हैं और अशुभ नहीं होय हैं मायावी पुरुष वा देश में नहीं वसे हैं ११ एक समय यादवन के राजा उग्रमेन के लिये श्रीकृष्णचन्द्र ने मणि जाते माँगी ऐसो सत्राजित् लोभ के वशहोय के मणि कूँ न देत भयो श्रीकृष्ण कूँ नाहीं कैसे करू यहू न विचारत भयो १२ बड़ो है म-

श्रीशुकउवाच ॥ निशम्यबालवचनं प्रहस्याम्बुजलोचनः ॥ प्राहनासौरविदेवः सत्राजिन्माणिनाज्वलन् १ सत्राजिस्त्वगृहश्रीमत् कृत्तकौलुकमङ्गलम् ॥  
प्रविश्यदेवसदने गणिं विप्रैर्यवेशयत् १० दिनेदिनेस्वर्णभारानष्टौसमूजतिप्रभो ॥ दुर्भिक्षमार्थरिष्टानि सपर्याधिव्याधयोऽशुभाः ॥ नसन्तिमायिनस्तत्र  
यत्राऽऽस्तेऽभ्यर्थितोमणिः ११ सयाचितोमणिंकापि यदुराजायशौरिणा ॥ नैवार्थकामुकः प्रादाद्याच्चाभङ्गमतर्कयन् १२ तमेकदामणिंकरेष्टे प्रणिभुच्यमहा  
प्रभम् ॥ प्रसेनोदयमारुह्य मृगायांव्यचरदने १३ प्रसेनंसहयंहत्वा गणिमाच्छिद्यकैसरी ॥ गिरिविशज्जाम्बवता निहतोमणिमिच्छना १४ सोऽपिचक्रेकुमा  
रस्य मणिंकीडनकंविभे ॥ अपश्यन्भ्रान्तरभ्राता सत्राजित्पर्यतप्यत १५ प्रायःकृष्णेननिहतोमणिश्रीवोवनंगतः ॥ भ्राताममेतितच्छ्रुत्वा कर्णेकर्णेऽज  
पञ्जनाः १६ भगवांसनदुपश्रुत्य दुर्गेशोलिसमात्मनि ॥ माण्डुप्रसेनपदवीमन्वपद्यतनागैरः १७ हतंप्रसेनमश्वञ्च वीक्ष्यकैसरिणात्रने ॥ तत्राद्रिपृष्ठे  
निहतपृक्षेणददृशुर्जनाः १८ ऋक्षराजविलंभीमगन्धेनतममावृतम् ॥ एकोविंशशृङ्गवानवस्थाप्यवह्निःप्रजाः १९ नत्रदृष्ट्वागणिश्रेष्ठं बालकीडिनकंकृतम् ॥

काशु जाको ऐसी मणि कू पकसमय सत्राजित् को भय्या प्रसेन कण्ठ में पहिणि कै चोड़ा पै चढ़िकै वन में शिकार गेल्लिये कू जात भयो १३ चोड़ा सहिन जो प्रमेन है ताय गारि कै मणि कू लैके पर्वत में जाय जो सिंह है ताय मणि लेये की इन्ध्रा जाकू ऐसो जाइवाय चूत मारत भयो १४ जाम्बवान् अपने विल में जाय कै मणि को विलोना करत गयो सत्राजित् अपने भय्या प्रमेन कू शिकार भेल्लि है वन में ते नहीं आगो देखिकै शोच करत भयो १५ मणि कण्ठ में पहिरि कै भेरी भय्या वन में गयो हो और या मणि पै कृष्ण को दैत हो यातें वटुआ यह जानि पढ़ै है भय्या कू कृष्ण ने मारयो या प्रकार सत्राजित् के मुख तें श्रमण करिकै सम्पूर्ण मनुष्य कान कान में कइत भये १६ भगवान् श्रीकृष्ण अपने कू लग्यो जो दूर्यशस्व कलङ्क है ताय श्रवण करिकै द्वागकासीन कू प्रसेन के स्त्रीन दूँदिये कू जात भये १७ वन में सिंह ने मारयो जो प्रसेन और चोड़ा ताय देखि कै और आगे पर्वत के ऊपर चूत ने मारयो जो सिंह है ताय समस्त द्वागकासी मनुष्य देवन भये १८ अंगेगे जायें दाय स्रो वही भयानक जो चक्रराज जाम्बवान् को विल छे ताँमें सत्र गजा कू गारिहिर टाढ़ी करिकै श्रीकृष्णचन्द्र आपकी भीतर जात भये १९

तहाँ बिलमें बालक के खेलेवे कूँ बिलौना ररी ऐसी जो माखि है ताथ देखि है गाणिके लेवे का मनोरथ करिके बालक के पास ठाढ़े होतभये २० यथम कसू देले नहीं ऐसे मनुष्य श्रीकृष्ण-  
चन्द्र कूँ डरये कीर्त्ती नाई थाई पुकारतिभई बलीनमें नली जाम्बवान् श्रुत थाइकी पुकार श्रवण करिके क्रोधितहोय सम्मुख दौरिके आवत भयो २१ क्रोधी जाम्बवान् श्रीकृष्ण के प्रभाव कूँ  
नहीं जानिके और सागरण पुरुष मानिके अपने स्वामी श्रीकृष्णके संग युद्ध करत भयो २२ परस्पर जीतिवे की है इच्छा जिनको ऐसे श्रीकृष्ण और जाम्बवान् हैं तिनको शत्रु पत्यर वृत्त भुजा  
इनसू वढ़ो भयानक युद्ध होत भयो जैसे मास के लिये दो शिकरा पत्नी लड़े हैं तैसे २३ वज्रपातकी तुल्य कठोर के मुष्टि हैं तिनसू खेदरहित अट्टाईस दिन राति परस्पर युद्ध होत भयो २४ सम्पूर्ण प्राणीन  
कुण्णचन्द्र की मुष्टिन के परिरे तें डीली भई है नस जाकी और घट्यो है बल जाकी पसीना अंगमें जाके आगयो ऐसी जाम्बवान् वढ़ो आश्चर्य मानिके बोलत भयो २५ सम्पूर्ण प्राणीन

सवैभगवतातेनयुयु  
तच्छ्रुत्वाऽभ्यद्रवत्कुण्डोजाम्बवान् बलिनान्वरः २१ सवैभगवतातेनयुयु  
हंसं कृतमतिस्तिस्मन्नतस्थेऽर्भकान्तिके २० तमपूर्व्वनरंहं द्वाधात्रीबुकोशं भीतवत् ॥ तच्छ्रुत्वाऽभ्यद्रवत्कुण्डोजाम्बवान् बलिनान्वरः २१ सवैभगवतातेनयुयु  
धेस्वामिनाऽऽत्मानः ॥ पुरुषं प्राकृतं मरुताकुपितो नानुभावति २२ द्रव्यं युद्धं सुतुलमुभयोर्विजिगीपतोः ॥ आयाशमदुर्मैदोर्भिक्रव्यार्थेन योसि २३ आ  
सीत्तदष्टाविंशतिगतेतरमुष्टिभिः ॥ वज्रनिष्पेपरुषैरविश्रममहर्निशम् २४ कृष्णमुष्टिनिष्पातनिष्पष्टाङ्गोरुन्धनः ॥ क्षीणसत्त्वः स्विन्नगात्रस्तमाहा  
तीवविस्मितः २५ जानेत्यांसर्व्वभूतानां प्राणञ्जो जः सहो बलम् ॥ विष्णुपुराण पुरुषं प्रभविष्णुमधीश्वरम् २६ त्वंहि विश्वमृजं स्रष्टा मृज्यानामपि यच्च सत् ॥  
कालः कलयताभीशः परात्मा तथाऽऽत्मानम् २७ यस्येपद्रुः कलितरोपमृदाक्षमोक्षैर्नर्मादिशश्लुभितनकतिमिद्विलोऽब्धिः ॥ सेतुः कृतः स्वयश उज्ज्वलिता  
चलङ्कारक्षः शिरांसि भुवि गेतुरिपुश्रतानि २८ इति विज्ञातविज्ञानश्रुश्रानमभ्युनः ॥ व्याजहारमहाराज भगवान् देवकीसुतः २९ अभिश्रयारविन्दाक्षः  
पाणिनाशक्रेण तम् ॥ कृपया परयाभक्तं प्रेमगम्भीरयागिरा ३० मणिहेतोः रिहप्राप्तानयमृषपते बिलम् ॥ मिथ्याऽभिशापं प्रमृज्जात्मानोमणिनाऽमुना ३१  
के जे प्राण तिनमें जो बल है और सहो बल अर्थात् इन्द्रिय हृदय देह इत्यादि कूनको बल तुमहो यह मैं जानूं हूं काहे ते विष्णु भगवान् तुमहो पुराण पुरुषहो कृपालुहो सबके ईश्वर हो २६  
विश्व के सृजनवारे जे अस्मादिक हैं तिनके तुम निरवय निमित्त कारणहो और उरान्तिके योग्य जे पदार्थ हैं तिनके उपादान कारण हो और सबके मेरुवारे हैं तिनके ईश्वर कालरूप तुम  
हो तथा आत्मा जे जीव हैं तिनके उत्कृष्ट आत्माहो २७ विष्णु पुराण पुरुषहो याही तें मेरे इष्टदेव रघुनाथहो यह कहे हैं जिन रघुनाथजी को कछु एक प्रकाशो जो क्रोध है तासू जो  
कटाक्षन को छुटिभो है तिनसू दुःखितहें मगर और वढ़े वढ़े ग्राह जाँ ऐमो समुद्र मार्ग देतययो और जिन रामचन्द्रने अपनो यश प्रकट करिके लिये पुल भोग्यो लङ्का जरई अखान करिके राजस  
रायण के शिर काटिके पृथ्वी में डारतभये सो तुम मेरे स्वामी रघुनाथहो यद्वै मैं जानूं हूं २८ या प्रकार भयोहै ज्ञान जानू ऐसो जो कृताराज जाम्बवान् है तासूं हे राजन् परीक्षित ! देवकी के पुत्र  
अन्युतभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बोलतभये २९ कमल से हैं नेन जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सुखको देनवारी जो अपनो हाथ है ताथ परमकृपाकरिके भक्त जो जाम्बवान् है ताके ऊपर थारिके मेममभित

चाणी करिके बोलतभये ३० हे ऋत्तन के राजा जाम्बवान् ! हम मणि लो के कारण तेरे यहां विलम्ब आये है मिथ्या कलङ्क हमकूं लगयो है ताय मणि लैजाय है दूरि करी ३१ या प्रकार जाते कही ऐसो जाम्बवान् बड़े आनन्दपूर्वक अपनी कन्याजाम्बवती ताय मणिसहित पूजा करिवे के निमित्त श्रीकृष्णकंठे तभयो ३२ सङ्गये जे द्वारकावासी मनुष्यहैं ते जाम्बवान् के विलम्ब भये जे श्री कृष्ण हैं तिनको भिक्षुसिधो नहीं देखिके बारह दिन मतीक्षा करिके दुःखितहोइ द्वारकापुरी में आवत भये ३३ विलम्ब तें श्रीकृष्णचन्द्र निकसे नहीं यह बात भ्रवण करिके देवकी रुक्मिणी वसुदेव और मित्रजन तथा झगति के मनुष्य सम्पूर्ण शोच करतभये ३४ सम्पूर्ण द्वारकावासी दुःखितहोयकै सत्राजितकूं गारी देतसन्ते श्रीकृष्णचन्द्रकी मासिके निमित्त महाभाया जो दुर्गादेवी है ताकी पूजा करतभये ३५ देवीकी पूजा करिवे तें श्रीकृष्णचन्द्रकूदेलैगो याप्रकार द्वारकावासीनकूं देवीने आशीर्वाद दियो तब सिद्धभयो है मनोरथजिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र स्त्रीकूं संगलै के द्वारकावासीन इत्युक्तः स्वांडुहितरं कन्यां जाम्बवतीमुदा ॥ अर्हणार्थसमणिना कृष्णायोपजहारह ३२ अट्टद्वानिर्गमंशैरेः प्रतिप्रश्यविलज्जनाः ॥ प्रतीक्ष्यद्वादशाहानिदुः

खिताः स्वपुंरयुः ३३ निशम्यदेवकीदेवी रुक्मिरयानकडुडुभिः ॥ सुहृदेज्ञातयोऽशोचन् विलात्कृष्णमनिर्गतम् ३४ सत्राजितं शपन्तस्ते दुःखिनाद्वार कौकसः ॥ उपतस्थुर्महामायां दुर्गाकृष्णोपलब्धये ३५ तेषां दुर्व्युपस्थानात्प्रत्यादिष्टाऽऽशिपासच ॥ प्रादुर्भवसिद्धार्थस्सदारोहर्षयन्हरिः ३६ उपलभ्य हृषीकेशं मृतं पुनरिवाऽऽगतम् ॥ सहपत्न्यामणिप्रीनं सर्वजातमहोत्सवाः ३७ सत्राजितं समाहूय सभायां राजसन्निधौ ॥ प्राप्तिचारुयायभगवान् मणित स्मैन्यवेदयत् ३८ सत्रातिव्रीडिनोरत्नं गृहीत्वाऽवाक्युलस्ततः ॥ अनुप्यमानो भवनमगमत्स्वेनपाप्मना ३९ सोऽनुध्यायंस्तदेवाध्वंवलवद्विग्रहाकुलः ॥ कथं मुजाम्यात्प्रजः प्रसीदेद्वाऽव्युतः कथम् ४० किंकृत्वासाधुमहांस्यान्नशपेद्वाजनोयथा ॥ अदीर्घदर्शनं क्षुद्रं मूढं द्रविणलोलुपम् ४१ दास्येदुहितरंतस्मै स्त्रीलंतरलेभवच ॥ उपायोऽयं समीचीनस्तस्य शान्तिर्न चान्यथा ४२ एवं व्यवसितो बुद्ध्या सत्राजितस्वसुतांशुभाम् ॥ मणिवस्त्रयमुद्यम्य रुक्णायोपजहा

कूं आनन्द देत मकट होतभये ३६ जैसे कोई मृतक पुरुष फेरि बगदि कै आवै है ऐसे मणिकूं पहिरिके स्त्रीकूं संग लैके आये जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें प्राप्तहोयकै समस्त द्वारकावासीनके बड़ो आनन्द होतभयो ३७ सभामें राजा उग्रसेनके पास सत्राजितकूं बुलाय कै जाम्बवान् ऋत्तन तें मणि लाये हैं यह कहिके भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र सत्राजित कूं देतभये ३८ सत्राजित मणिकूं लैके अतिलज्जित होय मुख नीचो करिके अपने पाप तें परचात्ताप करत घरकूं जातभयो ३९ बलवान् श्रीकृष्णचन्द्र सत्राजित जो विरोध परयो तामूं व्याकुल जो सत्राजित है सो अपने पूर्व अपराधकूं रात्रिदिन विचारकरत अपने पापकूं कैमे दूरिकरूं और कैसे अन्युत भगवान् प्रसन्नहोयं येमे विचार करतभयो ४० औन कर्म करे तें येरो भलोहोइ भेने बिना विचारे श्रीकृष्ण कूं दोष लगायदीनो भें कृष्ण मन्दबुद्धि हूं द्रव्यको लोभी हूं अब मोकूं जैसे प्राणी बुरो न कहै ऐसो कोई कार्य करूंगे यह विचार करतभयो ४१ या प्रकार विचार करिके अब उपाय निश्चय करैहैं श्रीकृष्णचन्द्र कूं मैं अपनी कन्यादेवीगो और पीछे तें भेंट में मणिकूं गो यही सुन्दर उपाय है और तरह मेरो अपराधदूरि न होयगो याप्रकार बुद्धिसूं निश्चय करिके सत्राजित मंगलरूप जो अपनी कन्या है ताय और

पणिकुं आपही उपाय करिकै श्रीकृष्णकुं देतभयो ४२।४३ सुन्दर स्वभाव रूप उदारता ये गुण जामें विद्यमान और कृतवर्मा ते आदि लैकै यादवन ने मांगी ऐसी जो सत्यभामा है ताय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र विधिपूर्वक व्याहतभये ४४ हे राजन् परीक्षित ! श्रीकृष्णचन्द्र कहतभये हमकुं मणि नहीं चाहिये सूर्यभक्त जो तुमहौ तिनहिकै मणिरहे और याको जो सुवर्ण होय ताय हमारे भिजवाय दियोकरो-तुम्हारे पुत्र नही है तुम्हारा जो धनहै सो हमारोही है यह भगवान्को गूढ़आभिप्रायहै ४५ इति श्रीमन्महाभागतार्क्ष्यपण्यदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेस्यमन्तकोपाख्यानैपद्मज्वालयोऽध्यायः ५६।

( सप्तञ्चाशत्तमेतुनःशतधनुर्वे ॥ मात्स्यदुर्धेशोपाष्टिकृष्णोक्तराक्षुतान्मण्येः ? अक्षुरपुररीकृत्य मण्येःपात्रमयाच्युतः ॥ उपात्मन्त्यतेमकान्तेसामोऽगादृगजाह्वयम् २ सत्तामनवै आशाय मे फिर कृतधन्वा के वधमें कृष्णजी अक्षुरजीसौ मणि लेकर मात्स्यके कलङ्कको दूर करतेभये ? अक्षुर को कृष्णजी मणिका पात्र अंगीकार कर उनसे एकान्तमें सलाहकर बलदेवजी समेत हस्तिनापुर जाते ॥

॥ ४३ ॥

रह ४३ तांसत्यगामांभगवानुपयेमेयथाविधि ॥ बहुभिर्याचितांशीलरूपौदार्यगुणान्विताम् ४४ भगवानाहनमणिं प्रतीञ्छामोवयंनृप ॥ तत्राऽस्तं देव भक्तस्य वयञ्चफलभागिनः ४५ इति श्रीमद्भागवतमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेस्यमन्तकोपाख्यानैपद्मञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ विज्ञातार्थोऽपिगोविन्दो दग्धानाकर्यपारुडवान् ॥ कुन्तीअकुल्यकरणे सहसामोययौकुरुन् १ भीष्मं कृपं सविदुरं गान्धारीद्रोणमे वच ॥ तुल्यदुःखौ च सङ्गम्य हाकष्टमितिहोचतुः २ लब्ध्वैतदन्तराजञ्छतधन्वानमूचतुः ॥ अक्षुरकृतवर्माणौ मणिः कस्मान्नगृह्यते ३ योऽस्मभ्यं सम्प्रति श्रुत्य कन्यारत्नं विगर्ह्य नः ॥ कृष्णयादात्र सन्त्राजित्कस्माद्भ्रातरमन्विष्यात् ४ एवं गिञ्जमतिस्ताभ्यां सन्त्राजितमसत्तमः ॥ शयानमवधीक्षोभात्सपापः क्षीण जीवितः ५ स्त्रीणां विप्रकोशमानानां क्रन्दन्तीनामनाथवत् ॥ हत्वा पशून्सौनिकवन्मणिमादायजग्मिवान् ६ सत्यभामाचपितरं हर्नवीक्ष्यशुचाऽर्षिता ॥

नयलपक्षातातोतिहाहनास्मृतिमुद्यती ७ तैलद्रोशश्चांमृतंप्राप्तस्य जगामगजसाह्वयम् ॥ कृष्णाय विदितार्थाय तस्माऽऽचर्योपितुर्वधम् ८ तदारुर्येश्वरौ भये २ ) पाण्डव लाक्षाशुर तें विल में होयकै बाहिर निकसिगये या प्रकार जानैहैं तथापि पाण्डवनकुं जरै सुनिकै और कुन्तीकुं जरै सुनिकै कुलोचित व्यवहार करिकै लिये बलदेवजीकुं सत्र लैकै श्रीकृष्णचन्द्र कुरुदेशन कुं जातभये ? भीष्मापितामह विदुरसाहित कृपाचार्य गान्धारी द्रोणाचार्य इनसुं मिलिकै बराबर है दुःख जिनके ऐसे कृष्ण बलदेव हैं ते हाय पाण्डव जरिगये वडो कष्टभयो या प्रकार कहिकै बोलतभये २ कछु एक दिननके पश्चात् हे राजन् परीक्षित ! अक्षुर और कृतवर्मा ये दोनों शतधन्वा ते बोलतभये सन्त्राजित ते मणि क्यों न छिनाय लेउ—जो सन्त्राजित अपनी बन्ध्या रत्न हमकुं त्यागिकै कृष्णकुं व्याहिदीनी वह सन्त्राजित भय्या प्रसेनके पीछे क्यों नहीं जाय अर्थात् परे क्यों नहीं ३।४ या प्रकार अक्षुर और कृतवर्माने वह भाई है बुद्धि जाकी जीणभयो है जीवन जाको ऐसो पापी असाधु जो शतधन्वा है सो शय्यापै सोवते सन्त्राजित को शिर काटतभयो ५ स्त्री जे हैं ते अनाथकी तुल्य पुकारिकै रोदन कस्यो करी कसाई जैसे पशून कुं मारै ऐसे शतधन्वा सन्त्राजितकुं मारिकै जातभयो ६ सत्यभामा अपने पिता सन्त्राजित कुं बस्यो देखिकै अहो पिता ! अहो पिता ! हाय मैं परी या प्रकार मोहित होयकै विलाप करतिपरै ७



मृतक जो पिता को देह है ताकूँ तैलकी कोठी में राखिकै सत्यभाषा हरितनापुर कूँ जाति भई सञ्जाजित्कूँ शतधन्याने माख्यो यह गात श्रीकृष्णचन्द्रने जानिलीनी तथापि मेरो पिता शनधन्या ने माख्यो यह बात दुःखित होय कै कहति भई ८ हे राजन् परीक्षित् ! ईश्वर जे श्रीकृष्ण वलदेव है ते सञ्जाजित् को परण श्रवण करिकै मनुष्यलीला में आयकै अहो हमकूँ बडो बट्ट है या प्रकार बहिकै आखिन में तें आसूँ लायकै पिलाप करतभये ९ सत्यभामा और भन्या वलदेवजी इनकूँ मूलकै श्रीकृष्णचन्द्र हरितनापुरतें द्वारकापुरी में आयकै शनधन्याकै पारिवे को और बातें माण लेने को प्रारम्भ करतभये १० श्रीकृष्ण ने मेरे पारिवे को उपाय कियो है यह बात शनधन्या जानिकै माण वचायवे के लिये भयभीतहोयकै कृतवर्म्मार्ते सहाय के निमित्त कहतभयो तब बड कृतवर्म्मार् वोलत भयो ११ ईश्वर जे श्रीकृष्ण वलदेव है तिनको अपराध मैं न करुणो कृष्ण वलदेव को अपराध करिकै कौनको कल्याण होयगो १२ या कृष्ण ते द्वेप वरिकै कंस लक्ष्मी ते अपट्ट होयकै

राजन्ननुमृत्यनुलोकनाम् ॥ अहोनःपरमं ऋष्टमित्यस्त्राक्षौ विलेपतुः ६ आगत्य भगवांसं स्मात्सार्थः साग्रजः पुरम् ॥ शनधन्या नमारेगे हन्तुं हर्षमणि ततः १० सोऽपि कृष्णोद्यमं ज्ञात्वा भीतः प्राणपरीप्सया ॥ साहाय्ये कृतवर्म्माणमया च तस्य चाब्रवीत् ११ नाहमीश्वरयोः कुर्यात् हलं न रामकृष्णयोः ॥ कोनुक्षेमाय ऋत्वेन तयोर्ध्वजिनमाचक्ष्व १२ कंसः सहानुगोऽपीतो यद्देपात्त्याजितः श्रया ॥ जरातन्वः सप्तदश युगान् विरथोगतः १३ प्रत्याख्यातः सचाक्रं पाणिं ग्राहयामास ॥ सोऽप्याह को विरुद्धेति विद्वानीश्वरयोर्विलम्बम् १४ यद्दंलीलया विश्वं मृत्यवतिहन्ति च ॥ चेष्टा विश्वमृजो यस्य न विदुर्भोहिताऽजया १५ यः ससहायनः शैलमुत्पाट्यैकेन पाणिना ॥ दधारलीलया बाल उच्छिन्नीन्ध्रमिवाभकः १६ नमस्तस्मै भगवते कृष्णायान्धुन क्रमर्षणे ॥ अनन्तायादिभूताय कूटस्थायाऽऽत्मने नमः १७ प्रत्याख्यातः सतेनापि शतधन्या महामणिम् ॥ तस्मिन्नथस्याश्वगारुह्य शतयोजनगंगयौ १८ गरुडं यजगारुह्य थं रामजनादौ नौ ॥

अनयातां महावेगैरश्वैराजन् गुरुद्वहम् १९ मिथिलाया उपवने विमृज्य पतितं ह्वयम् ॥ पद्भ्यामधावत्सं व्रसनः कृष्णोऽप्यन्यद्वद्वदुपा २० पदाते भगवांस्त भयान सहित परिगयो और जरासन्ध सत्रह बार युद्धमें हारिकै अन्तमें निरथ होयकै गयो १३ कृतवर्म्माण ने शतधन्या तें मने करदीनी तत्र अक्रूर तें सहाय करिवे के लिये कहत भयो तत्र अक्रूरहू बोलतभये ईश्वर जो श्रीकृष्ण हैं तिनके पराक्रम कूँ जानिकै कौन पुरुष उनतें विरोध करेगो १४ जो ईश्वर लीला करिकै या विश्वकी उत्पत्ति पालन नाशकरे है और माया सँ मोहित होयकै उनकी चेष्टा कूँ ब्रह्मादि न नहीं जाने है १५ जो सातवर्ष की अवस्था में श्रीकृष्णचन्द्र एगहाय सँ गोवर्द्धन पर्वत कूँ उत्सारिकै जैसे बालक छतौना कूँ उठाव लेइ है ऐसे उठावतभये १६ अट्टतै कर्म जिनके ऐसे जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र तिनके अर्थ नमस्कार है अन्त जिनको नहीं सबके आदि नाराण निर्भिकार सबके आस्था तिनकूँ नमस्कार है १७ या प्रकार अक्रूर ने जब नहीं करी तब शतधन्या मणिकूँ अक्रूर के पास धरिके चार सौ कोस चलै ऐसे घोड़ा पै चढ़िकै भाजतभयो १८ राम और श्रीकृष्ण हैं ते गरुड के छाँपकी है ध्वजा जामें ऐसे जो रवई तामें सवार होयकै शीघ्रगामी जे घोड़ा हैं तिन करिकै हे राजन् परीक्षित् ! शत्रुको मारनवागे जो शतधन्या है ताके पीछे दौरत भये १९ शतयोजनतें अधिक न चलिसकै ऐसे जो घोड़ा है मो मिथिलापुरी के बाग में गिरणो लाय

त्यागिके भयभीत होयकै पाव प्यादो भाजतभयो और श्रीकृष्णकूं क्रोध करिकै पीछे दौरतभये २० पांव प्यादो जो शतभवा है ताकूं पांव्यादे श्रीकृष्ण भगवान्ठोरिनै पकरिकै तीक्ष्णभारके चक्र  
 सें शतधन्या को शिर काटिकै वाके वखन में मणिकूं दूदतभये २१ नहों मिली है मणि जिनकूं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजीके पास आयकै व दूतभये देसो शतभवाकू दयाही मारयो वातै मणि  
 नहों निकसी २२ ताके पीछे बलदेवजी कहतभये शतधन्या काहू पुरुषके पास मणिकूं धरि आयो है वा पुरुष कू दूदो और तुम द्वारकाकूं जावो २३ श्रीकृष्ण सम बातकूं जाने है मणि को मोतै  
 छिपाव कियो है यह मानिकै बलदेवजी मनमें क्रोध करिकै बोलतभये याको अधिभाय यह है कि द्रव्य ऐसो निषिद्ध एदार्थहै याके लिये श्रीकृष्ण बलदेवजी को मन विगिरियो तो मनुष्यनकी  
 कहा कया है मेरो अतिप्रिय निदेश देशको राजा बहुलाश्व है ताय देखिवे कूं जाउँगो हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार श्रीकृष्ण तें कहिकै यादवनकूं आनन्द देनवारे बलदेवजी मिथिलापुरीमें प्रवेश  
 स्य पदातिस्तिरगनेपिना ॥ चक्रेण शिर उत्कृत्य वामसोऽन्ययिचिन्माणिम् २१ अलब्धमणिरागत्य कृष्ण आह्वानान्निकम् ॥ बृथाहनः शतधनुर्भणिस्र  
 न्ननिविद्यते २२ तत आह्वलोलूतनं समणिः शतधन्वना ॥ कस्मिंश्चित्पुरुषेऽन्यस्तस्तमन्वेपपुंगव २३ अहं विदेहमिच्छामि द्रुं प्रियतमं मम ॥ इत्युक्त्वा मिथि  
 लांगत्रनिवेशयदुनन्दनः २४ तं दृष्ट्वा सहसोत्थाय भौथिलः प्रीतमानसः ॥ अहं यामासन्निधिवदहंणीयं समर्हणैः २५ उवाच सत्सर्गाकतिचिन्मिथिलायां रामा  
 विसुः ॥ मानितः प्रीतियुक्तेन जनकेन महात्मना ॥ ततोऽशिक्षद्द्रां काले धार्तराष्ट्रसुयोधनः २६ केशवोद्वारकामेत्य निधनं शतधन्वनः ॥ अप्रापि च मणैः  
 ग्राह प्रियायाः प्रियकृद्धिभुः २७ ततः सकारयामास क्रियावन्धोर्हृतस्य वै ॥ साकं मुहूर्द्ध भवान् यायाः स्युः सम्परायिकाः २८ अक्रूरः कृतवर्मा च श्रुताशत  
 धनोर्वधम् ॥ व्यूषतुर्धयवित्रस्तौ द्वारकायाः प्रयोजकौ २९ अक्रूरप्रोपिनेऽरिष्टान्यासन्वैद्वारकौ कसाम् ॥ शारीरायानसास्तापामुद्धैर्विकर्मातिक्ताः ३० इ  
 त्यङ्गोपदिशन्येके विस्मृतप्रागुदाहृतम् ॥ मुनिवासानिवासे किं घटेनाग्निदर्शनम् ३१ देवेऽवर्पितकाशीशः श्वफलेऽप्रागताय वै ॥ स्वसुतांगान्दिनो  
 करतभये २४ प्रसन्न है मन जाको ऐसो मिथिलापुरी को राजा बलदेवजीकूं आयै देखिकै शीघ्र उठिकै पूजन करिवे योग्य जे बलदेवजी है तिनकी पूजनकी सामग्रीनसूं पूजा करतभयो २५ ता  
 मिथिलापुरी में समर्थ बलदेवजी कितनेज वषे वास करतभये भीतियुक्त महात्मा जो जनकहै तातें सत्कार जिनने पायो ऐसो धृतराष्ट्र को पुन दुःखोंधन सो बलदेवजी स गदा चलायवो सीलत  
 भयो २६ प्रिय कार्य के करनवारे समर्थ केशव भगवान् द्वारकापुरी में आयकै शतभवाको नाश और मणिकी अप्राप्ति है ताय प्यारी जो सत्यपामा है तासूं ऊठतभये २७ ताके पीछे भगवान् श्री-  
 कृष्णचन्द्र अपने सुहृदनकूं सगलैकै मृतक सजावित की परलोककी सावन जे क्रिया हैं तिनैं करावतभय २८ सज्जानित तें मणिके हरिलेने में शिक्ता करनवारे जे अक्रूर और कृतवर्मा है ते शतभवा  
 को मरण सुनिकै श्रीकृष्णसूं भयभीत होयते द्वारकापुरी तें भाजतभये २९ द्वारका तें अक्रूर कू भिजवाय दियो ता समय द्वारकावासीनकूं देवता और मनुष्य ये हैं कारण जिनके ऐसे जे शरीर  
 के मनके ताप है ते और अरिष्ट है ते वारंवार द्वारकापुरी में होतभये ३० हे राजन् परीक्षित ! कोई एक शब्द है ते प्रथम श्रीकृष्ण की महिमा कहो है तासूं फेरि कहै है मुनिनको है वास जिनमें ऐसे

श्रीकृष्णचन्द्र या द्वारकापुरी में रहें तहां दुःखहोई यह पात कहा अनेहै ३१ या प्रकार दूषित करिकै फेरि और धूपिन सो मत कहे हैं एक समय इन्द्र जब न वर्षोत्तव काशीको राजा अपनी कन्या मा-  
न्दिनी के प्राप्तभये जो स्वफलक हैं तिन देतभयो तव काशी के देशन में मेघ वर्षतभयो ३२ पिता स्वफलक ही तुल्य है प्रभात जाको नैसो अकूर जहां रहे तहां तथा इन्द्र वर्षाकरै और ता देश  
में प्राणीनकुं खेद नहीं होय है मरी नहीं परे है ३३ या प्रकार वृद्धेन कौ वचन सुनिकै केवल अकूरही यहां ते गयो सो नहीं मणिहूण्ड यहवात अवण करि निश्चय करिकै अकूर के काशीते डुलाय  
कै श्रीकृष्णचन्द्र बोलतभये ३४ अकूरकी पूजाकरिकै हे काका अकूर ! याप्रकार सम्बोवन दैकै प्यारी बात कहिकै सप्त विष्टय के जाननपारे अकूर के मनकी जानिकै श्रीकृष्णचन्द्र मुनि-  
काय के बोलत भये ३५ हे दानन के पति अकूर ! शतधन्या स्यमन्तरुमणि तुम्हारे पास धरिगयोहैं सो तुम्हारे पास है यह हम पहिले तेही जाने हैं ३६ सत्राजित के पुत्र नहीं याते जाकू पिण्ड

प्रादात्ततोऽवर्षस्मकाशिपु ३२ तत्सुतस्तत्प्रभावोऽसावक्रूरोयग्रयग्रह ॥ देवोऽभिवर्षतेतन्नोपतःपानमारिक्ताः ३३ इतिवृद्धवनःश्रुत्वानैतावदिहकारणम् ॥  
इतिमत्वासमानायगाहाक्रूरं जनार्दनः ३४ पूजयित्वाऽभिभाष्यैर्नक्षत्रयित्वाऽपियाः कथाः ॥ विज्ञाताऽखिलचित्तज्ञःस्वयमानउवाचह ३५ ननुदानपतेन्यस्त  
स्त्रय्यास्तेशतधनना ॥ स्यमन्तकोमणिः श्रीमान्विदितपूर्वमेवनः ३६ सत्राजितोऽनपत्यत्वादृष्टीशुद्धिहितुःसुताः ॥ दायंनिनीयापःपिण्डान्विसुव्यर्ण  
चशेषिनम् ३७ तथाऽपिदुर्द्धरस्त्वन्यैस्त्रय्यास्तासुत्रतेमणिः ॥ किन्तुमामग्रजःसम्यङ्नप्रत्येतिगण्णिप्रति ३८ दर्शयस्वमहाभाग बन्धूनांशान्तिमावह ॥  
अव्युच्छिन्नामखास्तेऽद्यवर्त्तन्तेरुद्रगवेदयः ३९ एवंसामभिरालब्धःश्वपलकतनयोमणिम् ॥ आदायवाससाञ्चञ्चन्ददौसूर्यसप्तप्रभम् ४० स्यमन्तकंदर्शयि  
त्वाज्ञातिभ्योरजःआत्मनः॥विमृज्यमणिनाभूयस्नस्मैप्रत्यर्पयत्प्रभुः ४१ यस्त्वेतद्भगवतईश्वरस्यविष्णोर्वीर्याब्जवृजिनहंसुमङ्गलञ्च ॥ आख्यानं पठतिशृणो  
त्यनुस्मरेद्बाहुण्कीर्तिदुरितमपोह्ययातिशान्तिम् ४२ इति श्रीमद्भगवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तराद्धैस्यमन्तकोपाख्यानेसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

जलदान दैकै ऋण चुकायकै शेष धन रहेगो ताय चाही कन्या के पुत्र लेईगे यह शास्त्र की आज्ञाहै ३७ सुन्दरहै त्रत जिनको ऐसे हे अकूर ! तुम हमतें कदाचित् न कहो तथापि हम जानेंहैं मणि और  
पै नहीं रहिसकै तुम्हारे पास है तथा अकूरजी कहे हैं हमारे पास है तुम्हें कहा प्रयोजनहै तंत्र श्रीकृष्ण कहे हैं वड़े भयया बलदेवजी-या मणिके पीछे भरो विश्वास नहीं करे हे ३८ श्रीकृष्णचन्द्र  
कहे हैं हे बड़भागी अकूर ! तुम मणि दिखायकै बन्धुनकुं शान्तिकरौ भरे पास मणि नहीं है यह मति कहाँ जो कदाचित् मणि न होवै तो सुवर्ण की वेदी बनाय बनाय कै अतएव यज्ञ क्रहातें काशी  
में जायकै वरते ३९ या प्रकार साग भेदन करिकै समभायो ऐसो स्वफलक को पुत्र अकूर वस्त्र तें ढकी सूर्य केसो है तेज जाको ऐसी मणि लैकै श्रीकृष्णचन्द्रकुं देतभयो ४० श्रीकृष्णचन्द्र  
स्यमन्तक मणि अकूरजी तें लैकै जाति के भयया धन्युनकू दिखायकै मणि कृष्णने लीनी है यह जो अपने काँ भिथया कलङ्क लग्यो ताह दूरि करिकै फेरि प्रभु श्रीकृष्णचन्द्र अकूरजी कुं नहै  
मणि सम्पूर्ण करत भये ४१ ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको कथो वीर्ययुक्त पुरुषन के दुःख को हरनवारो सुन्दर मंगलरूप जो स्यमन्तक मणि को संग है याकुं जो कोई पुरुष पड़े

श्रवण २ र स्मरण करे वह कुत्सित पाप के मलजल के दूर करिके कल्याण के पात्र है ४२ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यंशदशमस्कन्धे उत्तरादौ स्थानतकोपाख्याने सप्तमोऽध्यायः ५७ ॥  
(अष्टमश्वाशचमेवुक्तुः ५७ चक्रेऽग्रहीत् ॥ कालिन्दीमित्रविन्दाञ्च तस्या भद्रा और लक्षणा इन पात्रों का व्याह करते भये १ अग्ने लाभ के लिये श्रेष्ठ तपस्या करती हुई कालिन्दीजी को कृष्णजी मास होकर प्यारे ग्रन्थाय में कृष्णजी कालिन्दी मित्रविन्दा सस्या भद्रा और लक्षणा इन पात्रों का व्याह करते भये १ अग्ने लाभ के लिये श्रेष्ठ तपस्या करती हुई कालिन्दीजी को कृष्णजी मास होकर प्यारे स्थानवाले शस्तिनापुरको मास हेतु भये २) अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र सात्यकि तैं आदिलैं के पहिले लाना शुरुमें जरि गये यह श्रवण करी ही फेरि दुपद के घरमें सबने देखे ऐसे जे पाण्डव हैं तिनैं देखिये के लिये श्रीकृष्णचन्द्र इन्द्रस्थ में जात भये १ सभके ईश्वर जे श्रीकृष्ण हैं तिनैं आये देखिके जैसे प्राण के आये तैं इन्द्रिय चैतन्य होय ऐसे वीर पाण्डव उठत भये २ श्रीकृष्णचन्द्र के मिलिये में अङ्गसंग जो भयो तासू गये हे पाप जिन के ऐसे वीर पाण्डव स्नेहभरी मुसिकानि सहित श्रीकृष्णचन्द्र को मुखारविन्द देखिके आनन्दकू मास होत

श्रीशुकउवाच ॥ एकदापाण्डवान्द्रुं प्रतीतान् पुरुषोत्तमः ॥ इन्द्रप्रशंगतः श्रीमान् युधानादिभिर्धृतः १ दृष्ट्वा तमागतं पार्थ मुकुन्दमखिलेश्वरम् ॥  
उत्तस्थुर्गपदीराः प्राणामुख्यमिवाऽऽगतम् २ परिष्वज्या च्युतं वीरा अङ्गसङ्ग्रहतैनसः ॥ सानुरागस्मितं वक्रं वीक्ष्य तस्य मुदं ययुः ३ युधिष्ठिरस्य भीमस्य कृ  
त्वा पादाभिवन्दनम् ॥ फाल्गुनं परिभ्याथ यमाभ्यां चाभिवन्दितः ४ परमासन आसीनं कृष्णारुणमनिन्दितम् ॥ नवोढा व्रीडिता किञ्चनैरेत्याभ्यवन्द  
त ५ तथैव सात्यकिः पार्थः पूजितश्चाभिवन्दितः ॥ निपसादाऽऽमनेऽन्ये च पूजिताः पश्युपासिताः ६ पृथां समागत्य कृता भिवादनस्तयातिहादं द्रिदृशाऽभि  
रग्निमतः ॥ आपृष्ट्वांस्तं किंशलं सहस्रनुपां पितृव्यसारं परिपृष्ट्वान्वयः ७ तमाहमेवैकैक्यरुद्धकण्ठाश्रुलोचना ॥ स्मरन्तीतान् बहून्नेकेशान् क्लेशापायात्मा  
दर्शनम् ८ तदैव कुशलं नो भूत्सनाथास्ते कृतवागयम् ॥ द्वातीन्नाः स्मरता कृष्णप्रातामेव प्रेषितस्त्वया ९ न तेऽस्ति स्वपर आन्निर्विश्वस्य सुहृदात्मनः ॥ तथाऽपि

भये ३ श्रीकृष्णचन्द्र वहे जे युधिष्ठिर और भीमसेन हैं तिनके चरणन में नमस्कार करिके और वरा गरि को जो अर्जुन है तासू मिलत भये पीछे छोटे जो नकुल और सहदेव हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र के प्रणाम करत भये ४ श्रेष्ठ आसन पैं बैठे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं पाँच पाण्डवन भी स्त्री है तथापि निन्दा जाकी नहीं ऐसी नई विवाहिता लजावती जो द्रौपदी है सो हीले होले आइ के प्रणाम करति भई ५ जैसे पृथाके पुत्र जे पाण्डव हैं तिनने पूजा जाकी करी अगिवादन करचो ऐसो सात्यकि यादव आसन पैं बैठत भयो पूजा जिनकी करी पेरु और हू श्रीकृष्णचन्द्र के संग बैठत भये ६ फेरि श्रीकृष्णचन्द्र कुन्ती के पास आय के प्रणाम करत भये कुन्ती की वदनि जो कुन्ती है ताके कुशल पूछत भये श्रीकृष्ण के वन्धुनकी कुशल कुन्ती ने पूछी है ७ प्रेमकी व्याकुलता तैं रुचया है पाण्डु जाको नेननगें आसू जोके आगये ऐसी कुन्ती कीरवन ने जे कष्ट दिये हैं तिनकी सुधि करिके भक्तन के लेश कूं दूर करिये क लिये दर्शन देई ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हूं बोलत भई ८ हे कृष्ण ! जाति के वन्धु जे हम हैं तिनको स्मरण करिके जा समय तुमने मेरे भयया अक्रूर कूं त्वनरिते लिये भेजयो हो ताही

समय हमारी कुशल होतिथई और तैंने हप मनाथ करे ० सपसन् बिश्य के दिननारी आत्मा जो तुमहो जिनके गह आपनो है यह पगगो है यह भ्रम जिनके नहीं तथापि जो कोई तुम्हो सनदा स्मरण करै है तिनके हृदय में स्थित होयके सप छेशनकूंदरि करोहो १० अग राजा युधिष्ठिर रुहे है हे ब्रह्मादिजन के ईश्वर ! हमने राधा सत्पागु तियो है यह मैं नहीं जानूँ जो तुम योहेश्वरनके देखिने में आबो सो हम पिपयासक्तन कूं दियाई दिये ११ या प्रकार राजा युधिष्ठिरने प्रार्थना जिनकी रुगी ऐये श्रीकृष्णचन्द्र उन्मस्यनिवासीनके नेचलूँ यानन्दतेत यपा ह्वुके महीना वास करतभये १२ एक समय शूरीर जे शुब्रैह जिनके भासनगारे जो अर्जुनहो गो मानरके छापेकीहै ज्ञा जाय ऐये सभ में चडित गाणडीव धनुमुहूँल है गागनहो भरयो तरुम लंकै तावबभिशिर के पदुत सर्प और मृगहैं जाय ऐसो बड़ो वनहै तामें श्रीकृष्ण के भंग शितार सेलिवे कूं जातभयो १३।१४ ता तन में व्याघ्र सुकर भैया करु यथोन् दिग्ग शरभ अभाज् पाठयान के जीवरोन गंडा

स्मरतांशश्चत्केशान्हंसिहदिस्थितः १० ॥ युधिष्ठिरा उवाच ॥ किंन आचरितं श्रेयो न वेदादृग्धीश्वर ॥ योगेश्वराणां हृद्देशो यन्नादृष्टकुम्भसाम् ३१ इति वै  
वार्षिकान्मासान् रात्र्या सोऽभ्यर्चितः सुखम् ॥ जनयन्नयनानन्दमिन्द्रस्थौकसाविभुः १२ एकदारथमारुह्य विजयोदानरध्वजम् ॥ गार्गावंधनुरादाय तू  
णौ चाक्षयसायकौ १३ साकंकुष्णेन सज्जद्धो विहर्षगुहने वनम् ॥ बहुव्यालमुग्रकीर्ण प्राविशतरवीरहा १४ तत्राविध्यच्छैर्व्याघ्रान् मूरान् च महिमान् रुरु  
न् ॥ शरभान् गवयान् लङ्गान् हरिणाञ्छशाशस्तकान् १५ तानिन्युकिङ्कराज्ञे मेध्यानपर्वण्युपागते ॥ दृढपरीतः परिश्रान्तो जीमत्सुर्यमुनामगात् १६  
तत्रोपस्पृश्य विशदंपीत्याचारिमदार्यौ ॥ कृष्णोद्दर्शितुः क्रन्धां चरन्ती चारु दर्शनाम् १७ तामासाद्य वरोहां मुद्रिजां रुचिराननाम् ॥ पप्रच्छ ये पितः सख्या  
फाल्गुनः प्रमदोत्तमाम् १८ कात्वंकस्यासि शुश्रोणि कुतोऽसि किञ्चि भीषसि ॥ मन्येत पापतिमिच्छन्ती सर्वं कथयशो भने १९ ॥ कालिन्धुवाच ॥ अहं देवस्य  
सवितुर्द्विहितापतिमिच्छमी ॥ विष्णुं च रेणवं धरंदंतपः परममास्थिता २० नान्यं पतिवृणुषीरतमृते श्रीनि केतनम् ॥ तुष्यतां मे स भगवान्मुकुन्दोऽनाथ संश्रयः २१

मृग सरहा सेही इनकं वाणन तें वेतत भये १५ अभावाच्या पूर्णमासी ये पर्वत्र जव आय के मासभये तप टाळुमा हें ते पत्रिअ अ पणु हें तिनें राजा गुणिष्ठर के पास लातत भये शिकारलेलिते में अन जाकुं भयो प्यासलागी तप अर्जुन यमुनापै जातभयो १६ पहारशी अ श्रीकृष्ण और अर्जुनहें ते यमुना के तटप आय के निम्नल जल हो आचपन करि के पी के जप डादे भये तप सुन्दर एक कन्या पैडी दे- खतभये १७ सुन्दर हें अंजा जाभी अष्ट हें दात जाके पनोहर हें गुण जाको पेती जो ममदा कन्या है ता के पास भेलो जो श्रीकृष्ण ने अर्जुन ते सो पूंअत भयो १८ हे सुयोगि अर्थात् सुन्दर है कटिजाती तुम कौनहो और कौनकी पुत्रीहो नहाते आईहो तुम्हारे मनपै कहा करिये की हें तुम्हारे पति करिये की इच्छा है मं जानों हें सुन्दरी । सप गात लहो १९ कालिन्दी कहें हें मसूर्यदेव पी पुनीहें वर के देन गारे जो पिपणुहें तिनें पति करिये की इच्छा करि के मनो तप कलहं २० हे वीर ! सुन्दर जे श्रीकृष्ण हें तिनके विना और हें पतिग हंरुंगी अनाय के आश्रय जो मुकुन्द भगवान् हे गो गेरे ऊपर नगवा हो २१ ?

कालिन्दी नाम करिके विख्यातहूँ और भरे पिता सूर्य ने बनायो जो यमुनाको जल है तामें यावत्पर्यन्त श्रीकृष्णचन्द्रको दर्शन न होइगो तबलौ वासकछ्छी २२ औतीहै निद्रा जाने ऐसो जो अर्जुन है सो वासुदेव श्रीकृष्णचन्द्रके पास आयकै जैसे कालिन्दीने कही तैसेही कहत भयो कालिन्दी भरेनिमिच तप करे है या वातकूं जानिकै श्रीकृष्णचन्द्र रथमें वैठाय है धर्मराज राजा युधिष्ठिर के पास आयत भये २३ ता समय पाण्डवन ने जिनकूं आज्ञादीनी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र देवतानको कारीगर जो विषकर्मों है तामूं कहिके पाण्डवन के लिये चित्र विचित्र अद्भुत नगर निर्माण करावत भये २४ अपने पाण्डवन के प्रिय करिके लिये इन्द्रप्रस्थ में वास करै ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् सो इन्द्रको जो खाण्डव वनहैं ताथ अग्नि कूं देवेके लिये अर्जुन के स्थवान् होत भये २५ हे राजन् परीक्षित ! जब अग्नि कूं खाण्डव वनदियो तब अग्नि प्रसन्न होयकै अर्जुनकू धनुष और रत्न के घोड़ा तीरनेके भरे तरकस और हथियारन मूं भेदन न होय ऐसो कवच देतभयो २६

कालिन्दीतिगमाख्याता वसामियमुनाजले ॥ निर्भिभतेभवनेपित्रा यावद्व्युतदर्शनम् २२ तथाऽवदद्गङ्गाकेशो वासुदेवायसोऽपिताम् ॥ रथमारोग्यत द्विद्वान् धर्मराजमुपागमत् २३ यदैवकृष्णःसन्दिष्टः पार्थानापरमाद्भुतम् ॥ कारयामासनगरं विचित्रंविश्वकर्मभणा २४ भगवांस्तत्रनिवसन् स्वनाभिं यच्चिर्वीर्पया ॥ अग्नयेखाण्डवन्दत्तुमर्जुनस्याऽऽससारथिः २५ सोऽग्निस्तुष्टोधनुर्दाह्यच्छ्वेतान्शर्यन्तु ॥ अर्जुनायाक्षयौतूणौ वर्मचामेवमस्त्रिभिः २६ मयश्चमोचितीमहैःसर्भांसख्यउपाहृत ॥ यस्मिन्नुद्युर्ध्वधनस्याऽऽसीजलस्थलहृशिभ्रमः २७ सतेनसगनुज्ञातः सुहृद्भिश्चानुमोदितः ॥ आययौ द्वारकांसूयः सात्यकिप्रमुखैर्वृतः २८ अथोपयेमेकालिन्दीं सुपुण्यर्धक्षज्जिते ॥ वितन्वन्परमानन्दंस्वानांपरममङ्गलम् २९ विन्दानुविन्दावावन्त्यौदुर्योधनवशानुगौ ॥ स्वयंवरेस्वभगिनीं कृष्णेसक्कान्यप्रेभताम् ३० राजाधिव्यास्तनयां भिन्नविन्दापितृवसुः ॥ प्रसह्यहन्तवान्कृष्णो राजन्गङ्गांपश्यताम् ३१ नग्नजिन्नामकौशल्यआसीद्राजाऽतिधार्मिभः ॥ तस्यसत्याऽभवत्कन्या देवीनाग्नजितीनुग ३२ नतांशेकुर्मुपावोढमजित्वासप्तगोदृपान् ॥

अग्नि तें बचायो ऐसो जो मयनामा दैत्यहैं सो सभा बनायकै अर्जुनकूं देतभयो जा सभा में जलमें स्थल और स्थल में जल या गकार दुर्योधनकी दृष्टिमें भ्रम होतभयो २७ राजा युधिष्ठिरने आज्ञा जिनकूं दीनी सुहृदन ने प्रशंसा जितकी करी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सात्यकी भिनमें मुख्य ऐसे यादवनकूं संगलकै फेरि द्वारकापुरी में आवतभये २८ जो के पीके सुन्दर पवित्र धृत नक्षत्रमें कालिन्दी कूं व्याहतभये परममङ्गलरूप जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अपने यादवनकूं परमानन्द देतभये २९ दुर्योधनकी आज्ञामें वतैं ऐसे जे उजैनपुरी के राजा विन्द और अनुविन्द दोनों भयगहैं ते श्रीकृष्ण चन्द्रमें मन जाको लाग्यो ऐसी जो अपनी वहिनि है ताथ स्वयंवर में मने करतभये ३० पिता वसुदेवकी वहिनि जो राजाभेदी ताम्नी पत्नी जो मित्रविन्दा है ताथ श्रीकृष्णचन्द्र सव राजान के देखत हे राजन् परीक्षित ! बल करिकै लावत भये ३१ हे राजन् परीक्षित ! अयोध्यापुरी को पालन करनचारो बड़ो धर्ममतिरा राजा नग्नमित नाम करिकै होतभयो ता राजा के प्रकाशमान सत्यानाम करिकै रन्या होतिर्भई पिताको नाम नग्नजित् हैं यातें गकूं नागगजितौ भी कहैं हैं ३२ पैंने हैं सींग भिनके चोर डाटि में न आवैं राजान की गन्यन सुशाय ऐंभ परवने जो सात बैल हैं



तिनके नाथे बिना राजा है ते जानजिती कूं नहीं व्याहत भये ३३ यादवन के पति भगवान् हैं सो सात बैलन कूं एक रांग नाथे वह या कन्या कूठ्याहै यह बात कूं श्रवण करिकै बड़ी सेना कूं संग छैके अयोध्यापुरी में जात भये ३४ अयोध्यापुरी को राजा नगजित् प्रसन्न होयकैं उडिकैं भले आये या प्रसार प्रशंसा करिकैं सुन्दर आसन पिछाय है चरण बोह कै बड़ी पूजाकी सामग्रीन सूं पूजन करत ययो ३५ राजा नगजित् की कन्या है सो आये जो लक्ष्मी के पति श्रीकृष्ण हैं तिनैं अपने योग्य पर देमि कै इच्छा करति गई और कहति भई कि जो धैने ब्रतन करिकैं मनमें धाख्यो है तो यह श्रीकृष्णचन्द्र भरो पति होउ और धरे मनोरथन कूं सत्य करो ३६ जिन भगवान् के चरणकमल की रज हूं लक्ष्मी और कमल तैं है जन्म जाको ऐसो ब्रह्मा तथा महादेव और लोकपाल थे समस्त शिर पै धारण करे है ऐसे तुम ईश्वर अपनी करीये धर्म मर्यादा हैं तिनके पालन करिवे की इन्हा करिकैं लीला करिकैं वृंदिशदि मूर्तिन कूं

तीक्ष्णशृङ्गान्सुदुर्द्धर्षान् वीरगन्यासहान्बलान् ३३ तांश्रुत्वावृपजिल्लभ्यांभगवान्मात्स्वनांपतिः ॥ जगामकौशल्यपुरं सैन्येनमहतावृतः ३४ राकोश लपतिःप्रीतः प्रत्युत्थानासनादिभिः ॥ अर्हणेनापिगुरुणाऽपूजयत्प्रतिनन्दितः ३५ वरंवलोक्याभिमनंसमागतं नरेन्द्रकन्याचक्रमरमापतिम् ॥ भूयादयं मेपतिराशिपोऽमलाः करोतुसत्यायदिमधृनोब्रतैः ३६ यत्पादपङ्कजरजःशिरसाविभक्तिं श्रीरजजःसगिरिशःसहलोकपालैः ॥ लीलाननुःस्वकृनसेतुपरी पसेशः कालेदधत्सभगवान्मम केनतुष्येत् ३७ अर्चितंपुनरित्याह नारायणजगत्पते ॥ आत्मानन्देनपूर्णस्य कस्वाणि हिमल्पकः ३८ ॥ श्रीशुक्र उवाच ॥ तमाहभगवान्बृहदः कृतासनपरिश्रहः ॥ मेवगम्भीरयात्राचासस्मितंछुरुनन्दन ३९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ नरेन्द्रयाञ्ज्याकृत्रिभिर्विगर्हिता राजन्यवन्धोर्निजधर्मवर्त्तिनः ॥ तथाऽपियाचेतवसौहृदेच्छया कन्यांत्वदीयानिष्टुलकदावयम् ४० ॥ राजोवाच ॥ कोऽन्यस्तेऽभ्यविकीनाथ कन्यावरडहेप्सितः ॥ गुणैकधाम्नोयस्याह्ने श्रीर्वसत्यनपायिनी ४१ किन्त्वस्माभिःकृतःपूर्णं सजयःसात्वतर्षभा ॥ पुंसंवीर्यपरीक्षार्थं कन्यावरपरीप्सया ४२ ससैतेगोघृपावीर दुर्दा

धारण करो हो सो तुम भगवान् मेरे ऊपर कैसे प्रसन्न होउगे ३७ पूजन करिकैं फेरि नगजित् राजा कहत भये है नारायण ! हे जगत् के पति ! आत्मा के आनन्द करिकैं पूर्ण जो तुम हो तिन को मैं तुन्ख कदा पूजन कलं ३८ अब श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे कौरवन के कुल कूं आनन्द देनवारे राजा परीक्षित ! आसन पै बैठि करि श्रीकृष्णचन्द्र मेव की तुल्य गर्ज करिकैं मुसिकात राजा नगजित् तैं बोलत भये ३९ हे राजन् नगजित् ! निजधर्मवर्त्ती जे क्षत्रिय हैं तिनहूं याचना करियो कविन ने मने कखो है तथापि स्नेह करिकैं हम तुम्हारी कन्या कूं मोगे हैं कहु मोल के देनवारे हम नहीं हैं ४० अब राजा नगजित् कहे हैं हे नाथ ! सधस्त गुण जिन में रहैं और लक्ष्मी सर्वदा जिनके अंग में वास करैं ऐसे तुग तैं अधिक यात्सार में कान बरदें ताकू कन्या देउंगो ४१ हे यादवन में अष्ट ! पुरुषन के पराक्रम की परीक्षा लेवे के निमित्त और कन्याके वरकी परीक्षा के लिये हमने प्रथम एक प्रतिज्ञा करी है ४२ हे वीर छत्र ! शिक्षा जिनकू न

भई और वशमें न आवें ऐसे सात बैल है तिनके मारे दूने हैं अंग जिनके ऐसे बहुत राजानेके पुत्र परे हैं ४३ हे यदुनन्दन ! हे लक्ष्मी के पति ! जो तुम इन बैलन कूं अपने वश करि लोउ तो मेरी कन्या कूं सम्मत करदौ ४४ समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र या प्रकार राजा नग्नजित् की प्रतिज्ञा श्रवण करिके फेंड चौमि के अपने सात रूप धरि के लीलाही करिके बैलन कूं पकरत भये ४५ दूरि भयो है गर्व जिनको गयो है उल जिनको ऐसे बैलन कूं शूरवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र रसानतें चौमि के जैसे तालक काष्ठ के बैल कूं लेंधे है ऐसे रौचन भये ४६ ताके पीछे आश्चर्यमान राजा नग्नजित् प्रसन्न होयके श्रीकृष्णचन्द्र कूं अपनी कन्या देतभयो समर्थ जो भगवान् श्रीकृष्ण हैं सो अपनी वरागारि की कन्या है ताय विधिपूर्वक व्याहृत भये ४७ राजा नग्नजित् ही रानी हैं ते अपनी कन्या कूं प्यारी पति पाय के परमानन्द पावत भई और बड़ो उत्सव भयो ४८ शत्रु भेरी नगाड़े वजत भये और गीत गाजे वजावत भये ब्राह्मणन के आशीर्वाद होत भये सु-

न्ताडुखग्रहाः ॥ एतैर्भगनाः सुबह्नो भिन्नगान्त्रानृपात्मजाः ४३ यदिगे निगृहीताः स्युस्त्वगैव यदुनन्दन ॥ वरो भवान् भिमनोडुहितुर्भेश्रियः पते ४४ एवं समग्रमा कर्यं वद्धा परिकरं प्रभुः ॥ आत्मानं रासधाकृत्वा न्यगृह्णास्त्रीलयैव तान् ४५ वद्धा तान् दामभिशरौ र्भिर्भगनदर्पचिह्नौ जराः ॥ व्यरुर्पल्लीलया वद्धान् चालोदा रुमयान् यथा ४६ ततः प्रीतः सुतारं राजा ददौ कृष्णाय विस्मितः ॥ तां प्रत्यगृह्णाद्भगवान् विधिवत्सदृशं प्रभुः ४७ राजपत्न्यश्च दुहितुः कृष्णं लब्ध्वा प्रियं पतिम् ॥ लेभिरे परमानन्दं जातश्रपस्मोत्सवः ४८ शङ्खभेयान् कानेदुर्गीतवाद्यादिजशिपः ॥ नराचार्यः प्रमुदिताः सुवासः स्रगलङ्कृताः ४९ दशधेनुसहस्राणि पारिवर्धमदाद्विभुः ॥ युवतीनां त्रिसाहस्रं निष्कृत्रीयसुत्राससाम् ५० नवनागसहस्राणि नागाश्च नृगुणान् यान् ॥ रथाश्च नृगुणान् शवान् शवाच्यतगु णान्नान् ५१ दम्पतीरथमारोग्य महत्यासेनयावृतौ ॥ स्नेहपक्लिन्नहृदयो यापयामास कोशलः ५२ शुत्वै न दुरुधूर्भूगानयनं पथिकन्यकाश्च ॥ भगनवीर्याः सु दुर्मर्पाय दुर्भिर्गोद्विपैः पुरा ५३ तानस्य तः शस्त्रातान् वन्धुप्रियकृदर्जुनः ॥ गार्हदीवीकालयामास सिंहः क्षुद्रगान्निव ५४ पारिवर्धमुपागृह्य द्वारकामेत्यम

न्दर वज्र गालान मू शोभायमान नर नारी है ते प्रसन्न होत भये ४६ सामर्थ्यवान् राजा नग्नजित् दाइजे में दश हजार गौ देत भयो धुकधुकी है कण्ठ में जिनके सुन्दर वलन कूं पहिरे ऐसी तीन हजार दासी देत भयो ५० नव हजार हाथी देत भयो और द्वा-भीन मूं सौगुणे अर्थात् नवलाख रथ और रथन मूं सौगुणे अर्थात् नवतिरोड घोडा देतभयो और घोडानमूं सौगुणे अर्थात् नवअर्ध गनुष्य देत भयो ५१ स्नेह करिके व्यापण है हृदय जाको ऐसो कोशलदेशको राजा नग्नजित् अपनी अन्यासहित श्रीकृष्णचन्द्र कूं रथ में वैशारि के वही सेनाकूं संग लीके पहुँचावत भयो ५२ यादवन और बैलन ने पहिले राजान को मद दूरि करि दियो है तथापि असहनता जिनके प्रियवान ऐसे राजा कृष्ण या कन्या कूं लिये जाय है यत्र नात श्रवण करिके मार्ग में आय के रोरुतभये ५३ वन्धु जे कृष्णचन्द्र है तिनके प्यारको करनवारो गार्हदीव है वन्धु जाको ऐसो अर्जुन सो चाणन कृचला में ऐसे जे राजा है तिनें सिंह जैसे छोटे छोटे जानवर मृगन कूं भजवै ऐसे भजावतभयो ५४



शब्द करिके अनेक युद्धके यन्त्र है ते उलटे चलन लगे और धूरन के मन हृदय थर थर कांपत भये गदाके धारण करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र बड़ो जो गदा है तामूं भौमासुर के नगरको कोट है ताय तोरत भये ५ मलयकाल के दक्ष के शब्दकी तुल्य है भयङ्कर शब्द जाको ऐसी जो पाञ्चजन्य शस्त्र है ताकी शब्द सुनिके पाच है शिर जाके ऐसी खाई के जलके भीतर सोई जो मुरदैत्य है सो उठत भयो ६ अतिखोटी है चितवनि जाकी मलयकाल के सूर्य और अग्नि के तुल्य है तेज जाको भयंकर है रूप जाको ऐसी जो मुरदैत्य है सो त्रिशूल हाथमें लैके पाचों मुख फारिके निलोकी कू मानों निगलि जायगो ऐसी दौरिके श्रीकृष्णचन्द्र के मध्मच आदत भयो जैसे गरुड़ सर्प के सम्मुख जाय ऐसे ७ मुरदैत्य त्रिशूलकू फिरायकै वड़े जोरतें गरुड़ के ऊपर चलायके पाचों मुख फारिके शब्द करत भयो बड़ो जो शब्द है सो द्वाबाधुगी समस्त दिशान और अन्तरिक्षमें फैलिके ब्रह्माण्ड कूं व्याप्त करत भयो ८ ता समय श्रीकृष्णचन्द्र गरुड़ के ऊपर चलयो आवै जो त्रिशू-

स्विनाम् ॥ प्राकारंगदयाशुर्व्या नित्रिभेदगदाधरः ५ पाञ्चजन्यधनिं श्रुत्वा युगान्ताशानि भीषणम् ॥ मुरः गयान उरस्यस्थौ दैत्यः पञ्चशिराजलात् ६ त्रिशू

लमुद्युम्यमुदुर्निरीक्षणो युगान्तसूर्यान् लरोचिरुत्पणः ॥ अस्सिलोकीमिव पञ्चभिर्मुखैरभ्यद्रवत्तार्क्ष्यमुतं यथोरगः ७ आविध्यशूलंतं रसागरुमते निरस्य न

क्रैर्वधनदत्तसपञ्चभिः ॥ सरोदसीसर्वोदिशोऽम्बरं महानापूरयन्नरुडकटाहमावृणोत् ८ तदाऽपतदैत्रिशिखंगरुमते हरिः शराभ्यामभिनित्रिधौजसा ॥ मुखे

पुनंचापिशैरैरनाडयत्तस्मै गदांसोऽपिरुषव्यमुञ्चन ९ तामापतन्तर्निगदयागदांसुधे गदाग्रजोनिर्बिभेदिसहस्रधा ॥ उद्यम्यवाहूनभिवावतोऽजितः शिरांसि

चक्रेण जहारलीलया १० व्यसुः पपाताऽम्भसि कृत्तशीर्षो निरुत्तन्ध्रोऽद्विरिवेन्द्रतेजसा ॥ तस्यात्मजाः सप्तपितुर्वधातुराः प्रतिक्रियाऽमर्षजुपः समुद्यताः

११ ताम्रोऽन्तरिक्षः श्रवणो विभावसुर्वसुर्नभस्वानरुणश्च सप्तमः ॥ पीठपुरस्सृत्य चमूपतिष्ठधे भौमप्रयुक्कानि रगन्धूनायुधाः १२ प्रायुज्जतासाद्यशरानसीचू

गदाः शङ्खवृष्टिशूलान्यजितैरुपोत्पणः ॥ तच्छस्त्रकूटं भगवात्स्वमार्गणैरगोघीर्ष्यस्तिलशश्चकर्त्त ह १३ तावृपीठमुख्याननयद्यमालयं निकृत्तशी

ल है ताके वायन तें तीन टुक करत भये और मुरदैत्य के पाचों गुल्मन में पाच वाग मारत भये मुरदैत्य भी क्रोध करिके श्रीकृष्ण के ऊपर गदा चलावत भयो ९ गद के वड़े भया जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो युद्ध में चली आवै जो मुरदैत्य की गदा है ताकी अपनी गदाई ताकी अपनी गदाई तासमय गुजान कूं उठाय कै दौगिके सम्मुख आयो जो मुरदैत्य है ताके शिरन कूं श्रीकृष्णचन्द्र लीलाही करिके चक्रभू कटन भये १० कटे है शिर जाके गये है प्राण जाके ऐसी मुरदैत्य है सो इन्द्रके वज्रसू कट्यो है शिर जाको ऐसी पर्वत जैसे गिरत भयो ऐसे जलमें गिरत भयो पिता जो मरयो है तामूं आतुर बदलो लोने के लिये असहनता भिनके आई गई ऐसी मुरदैत्य के सातपुन ताअ अन्तरिक्ष शरण विभावगु वसु नभस्वान् अरुण ये सवारिके भौमासुर के कहे तें शङ्खन कूं लैके लडिबैकूं रोनाको पालन करनवारी जो पीठ नामक मुख्य है ताय आगे करिके निकसन भये १ १ २ २ रोप करिके भयानक जे मुरदैत्य के पुन हैं ते आयकै श्रीकृष्ण के ऊपर क्रोध करिके वाय तरवार गदा वर्यो गुर्न त्रिशूल इत्यादिक शस्त्र चलावत भये तब बड़ो हं पशकृप जिनको ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपने वायन तें तिनके चलाये भये जे शस्त्र है तिन तिल तिनकी वरावर

दूक करिके काटत भये ? ३ पीठ है मुख्य जिनमें ऐसे जे मुटैत्यके पुत्र हैं तिनके शिर ऊरु भुजा पाँव कवच इनकू काटिके मारिके यमलोक कू गँधुचावत भये पृथ्वी को पुत्र जो नरकासुर है सो श्री कृष्ण के चक्र बाणनभू कटे देखि के असहनता जाके आइगई सो मद जिनके चुपे समुद्र में तें निकसे ऐसे जे हाथी हैं तिनकू संगलीके निकसनभयो ? ४ सूर्य के ऊपर जैसे विजुलीमहित मयहोइ ऐसे गरुड़ के ऊपर सत्यभामा सहित बैठे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनदेखिके भौमासुर वरखी चलावतभयो औरसम्पूर्ण जे योद्धाह ते एक संग वेधत भये ? ५ गदके नड़े भय्या जो श्रीकृष्ण है सो चित्र मिचित्र हैं पक्ष जिनके ऐसे बाणनभू भौमासुर की सेनाको काटत भये कटे हैं भुजा अंघ्रा ग्रीवा देहजामें मरे हैं घोडा हाथी जामें ऐसी करत भये ? ६ हे कुरुंग क आनन्द देनवारे राचा परीक्षित् जो जो शत्रु योद्धा न चलाये तिन सबहूँ श्रीकृष्णचन्द्र तीक्ष्ण तीन तीन बाणनभू एक एक दूर काटतभये ? ७ श्रीकृष्ण ऊपर जाके चढ़े ऐसे गरुड़ने अपनी चौच और पङ्कन तें मारे जे हाथीहैं ते

पौरुषु जौद्धिगर्मणः ॥ स्वानीकपानच्युतचक्रमायैस्तथानिरस्ताजराकोधरासुतः १४ निरीक्ष्यदुर्मपण आसन्नदैर्गजैःपयोधिप्रभवैर्निराक्रमत् ॥ द्वासार्धगुरुडोपरिस्थितं सूर्योपरिष्टास्ततडिङ्गनंयथा ॥ कृष्णंसनसमैव्यसृजञ्चतर्धो योधाश्चसर्भयुगपरस्मविदग्धुः १५ तद्धोमसैन्यंभगवान्गदाग्रजो विचित्रवाजैर्निशितैःशिलीमुखैः ॥ निरुत्तवाहूरुशिरोध्रिग्रहं चकारतर्ह्येवहताश्चकुञ्जस्य १६ यानियोधैःपयुक्कानि शस्त्रास्त्राणिकुरुद्वह ॥ हरिस्त्रान्यञ्चि नत्तीक्ष्णैःशौरैकैकशस्त्रिभिः १७ उह्यमानःसुपर्णेन पक्षाभ्यांनिघ्नतागजान् ॥ गरुमताहन्यमानास्तुण्डपक्षनखैर्गजाः १८ पुरमेवाऽविशन्नार्चानरकोयुध्य युध्यत ॥ दृष्ट्वाविद्रावितसैन्यं गरुडेनार्दितस्वकम् १९ तम्भौमःप्राहरञ्चह्वयावज्रःप्रतिहतोयतः ॥ नाक्रमततयाविद्धोमालाहनद्वद्विपः २० शूलंभौमोऽच्युतंहनुमाददेवितथोद्यमः ॥ तद्धिमर्गात्पून्वमेव नरकस्यशिरोहरिः ॥ अपाहृद्रजस्थस्य चक्रेणक्षुरनेपिना २१ सकुरदलंचारुकिरीटभूषणं वभौपृथिव्यां पतितंसमुज्ज्वलत् ॥ हाहेतिसाध्वितृपयमुश्वरागाल्यैर्मुकुन्दंयिक्रान्तइडिरे २२ ततश्चभूःकृष्णमुपेत्यकुरदले प्रनप्तजान्धूनदरत्नभास्वरे ॥ सवैजयन्त्याव

पीडितहोयकै पुरमें जातभये और नरकासुर रणमें युद्ध करतभयो गरुड़ने पीडा जाकू दीनी ऐसी जो अपनी सेना है ताकू भाजी देखिके ? ८ । १६ भौमासुर गरुड़ के वरखी मारतभयो ता वरखी सू वज्रहू ताडितहोतभयो वरखी जाके लगी तथापि गरुड़ फूलकी माला लगेत हाथी जैसे चलायमान न होय ऐसे चलायमान नहीं होतभयो दृयाहै उद्यम जाको ऐसो भौमासुर श्रीकृष्णके मारिके कू त्रिशूल छेतभयो भौमासुर त्रिशूल चलाय न सस्यो नाते पहिलेही हाथी पै वैठ्यो जो भौमासुर है ताकू शिर पैनी पार के चक्रमें श्रीकृष्णचन्द्र काटतभये २०। २१ कुरदलन सहित जो मनोहर किरीट है तामू शोभायमान पृथ्वी में परयो प्रकाशमान जो भौमासुर को शिरहै सो सुन्दर लगतभयो अथि देवताहैं ते हाय हाय भले भले कहन फूजनकी वर्षा श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपरकारत मृत्ति करत भये २२ भौमासुर मरयो ताके पीछे पृथ्वी श्रीकृष्ण के पास आयकै तपायमान जो सुबर्ण है तामें रत्नजड़े तिनमें प्रकाशमान जे कुरदलनहैं तिनें और वैजयन्ती वनमाला और प्रथेता को

छत्र तथा महामणि देतभई २३ हे राजन परीक्षित् ! विश्व के ईश्वर देवतान में श्रेष्ठ ब्रह्मादिक जिनकी पूजा करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूहाय जाने जोरि लिखे ऐसी नम्र ओ पृथ्वी है सो भक्तिपूर्वक श्रीकृष्णचन्द्रकी ओर बुद्धि लगाय के स्तुति करनभई २४ अब पृथ्वी कहे है हे मेरे मन के देव ईश्वर ! हे शङ्ख चक्र गदाके धारण करनवारे ! तुमकुं नमस्कार है हे परमात्मन् ! भक्तनकी इच्छा के लिये धारण क्रियो है साकाररूप जिनने ऐसे जो तुमहो तिनमें जिनकी ऐसे जे तुमहो तिनकुं नमस्कार है कमलकी माला धारणकरे जे तुमहो तिनकुं नमस्कार है कमलकी इत्यर्थ हे नेत्र जिनके ऐसे जे तुमहो तिनकुं नमस्कार है कमलकी तुल्य हैं चरण जिनके ऐसे जे तुमहो तिनकुं नमस्कार है २६ तुम जो भगवान् ३. मुदेव अर्थात् समस्त प्राणी जिनमें नासकरें ऐसे जे तुमहो तिनकुं नमस्कार है विष्णु अर्थात् सबके हृदयमें व्यापक जे तुमहो तिनकुं नमस्कार है पुरुष सम्पूर्ण कार्यन के आदि कारण जे तुमहो तिनकुं नमस्कार है पूर्णज्ञानस्वरूप जे तुमहो तिनकुं नमस्कार है २७ और आप अजन्माहो या विश्वके उत्पत्तिकर्त्ताहो ब्रह्माहो याही तें अजन्माहो अनन्तशक्तिहो याही तें विश्वके उत्पत्तिकर्त्ताहो तथा शङ्काहै यथोभी पित्रादिकहैं ते पुत्रादिभनके उत्पत्तिकर्त्ता

नमालयाऽर्पयत्पाचेतसंछत्रमथोमहामणिम् २३ अस्तौषीदथविश्वेशं देविदेवराधितम् ॥ पूजलिः पूणताराजन् भक्तिपूवणयाधिगा २४ ॥ भूमिरुवाच ॥ नमस्ते देवदेवेश शङ्खचक्रगदाधर ॥ भक्तेच्छोपात्तरूपाय परमात्मनोऽस्तुते २५ नमः पङ्कजमालिने ॥ नमः पङ्कजेनेत्राय नमस्ते पङ्कजाङ्गये २६ नमो भगवते तुभ्यं वासुदेवाय विष्णवे ॥ पुरुषायाऽऽदिगीजाय पूर्णबोधाय ते नमः २७ अजाय जनयित्रीऽस्य ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥ परावरात्मन भूतात्मन् परमात्मनोऽस्तुते २८ त्वं त्रैलोक्यसमस्तपूज्यो तमो निर्गोधाय विभर्त्य संवृतः ॥ स्थानाय सत्त्वं जगत्तो जगत्पते कालः प्रधानं पुरुषो भवान्परः २९ अहंपयोज्यो तिरया निलो नभो मात्राणि देवा गन इन्द्रियाणि ॥ कर्त्ता गहानित्य विलं चराचरं त्वस्थद्वितीये भगवन्मयं भ्रमः ३० तस्याऽऽत्मजोऽयं तव पादपङ्कजं भीतः पूजन्नासि हरो पसादिनः ॥ तत्पालयै नं कुरु हस्तपङ्कजं शिरस्य मुख्याऽखिला कल्मपापहम् ३१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इति भूम्याऽर्थितो वाग्भिर्भगवान्

है और पित्रादिकन के उत्पत्तिकर्त्ता उनके पूर्वपुरुष हैं और पूर्वपुरुषन के उत्पत्तिकर्त्ता पञ्चभूत हैं और पञ्चभूतन के अपने कर्मद्वारा जीव हैं ये कहा करूं हैं तथा पृथ्वी कहे हैं हे कार्यकारणरूप ! हे समस्त प्राणीनके आत्मा ! हे परमात्मा ! तुम सर्वरूपहो तुमकुं नमस्कार है २८ यहा एक शङ्काहै कि तीनों गुणन करिके विश्वकुं उत्पन्न पालन संहार करे हैं और तीनों गुण मायाके हैं और माया को जो भक्तनवारी पुरुष है और कालनिमित्त है यह बात भसिद्ध है मैं कहाकरूं हैं तथा पृथ्वीकहे हैं—आवरण रहित जो तुमहो सो हे सपर्य ! जा समय विश्वकुं रन्वो चाहो हो तब तुम रजोगुणकुं धारणनरो हो और है जगत् के पति ! जगत् के पालन करिके सत्त्वगुणकुं धारण करो हो और कालरूप तुमहो मायारूप तुमहो पुरुषरूप तुमहो और सवर्त न्यारेहो याते सगके उत्पन्नकर्त्ता तुमहो हो २९ मैं पृथ्वी जल ज्योति पवन आकाश शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध देवता मन इन्द्रिय शब्दकार तत्त्व या प्रकार समस्त स्थावर जंगम हे भगवन् ! तुम जे आद्वितीय हो तिनमें यह अप है ३० हे शरणगतन के दुःखके हरनारे ! भौमासुरको पुत्र भगदत्त भयभीत होयकै तुमहारी जो चरणकमल है तामें आयकै पस्वो है ताते याको पालन



करो और समस्त देशनगो हरनगो जो तुम्हारी हस्तमल है ताथ या के शिरगै राखी ३१ अस्तिपूर्वक नञ्द्रोयको पृथ्वी ने गायी करि याप्रकार स्तुति जिनकी करी ऐसे भगवान् ई सो अथयद्वै  
सर्वसम्पत्तिमुक्त जो भौमासुरको घर है तामे जातभये ३२ भौमासुरने पराक्रमकरि है हरी ऐसी जे अनेक राजाचकी सोलहजार दन्या है तिन भौमासुरके महलनमें देखतभये ३३ नरन में वीर  
जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन आये देविके सम्पूर्ण स्त्री मोहितहोयके देखने प्राप्तकरे देने मनोवाञ्छित पति श्रीकृष्णचन्द्र है तिन गन्धर्व वर करतिथई ३४ यह मेरो पतिहोइ यह विमाता अनुमोदनकरौ  
या प्रकार समस्त कन्याभावनरिके श्रीकृष्णचन्द्र में अपनो अपना मन लगावति भई ३५ सच्यै वस जिन के ऐसी जे दन्या है तिन पालकीन में वैठारिके द्वारकापुरी में भिजवावन भये उद्वेगके  
खजाने और रय घोडा और जो बड़ी द्रव्य है ताथ भिजवावतभये ३६ चार चारै दात जिन के शीघ्रगामी रवेतरंग ऐसे चौसाठि पेरानत के कुलके हाथी है तिन श्रीकृष्णचन्द्र भिजवावतभये ३७

भक्तिनम्रया ॥ दरगामयं भौगृहं प्राविशत्सकलजिह्व ॥ ३२ तत्र राजन्यकन्यानां पट्गहस्थाधिकायुतय ॥ भौमाह्वानां विक्रम्य राजा नोददशेहरिः  
३३ तं प्रविष्टस्त्रियोर्वीक्ष्य नखीरविमोहिनाः ॥ मनमानाञ्चिरऽभीष्टं पतिदेवोपमादिनञ्च ३४ यूयात्यतिरयं गृहं प्रातातदनुमोदताम् ॥ इति सवर्गा पृथक्कृष्णे  
भावेन हृदयं दधुः ३५ ताः प्राहिणोद्द्वारवतीं मुष्टविजोऽम्बराः ॥ नखनैर्महाकोशान् नखान् हविर्णमदत् ३६ पेरान्तकुले गांश्च चतुर्दन्तान् स्तरस्त्रि  
नः ॥ पारङ्गुंश्च चतुःपट्णिं प्रपयामास केशवः ३७ गत्वा मुरेन्द्रमवनन्दत्वाऽदिरौ चक्रुः ॥ पूजितस्त्रिदशेन्द्रेण सेहन्द्राण्यचसभियः ३८ चोदितो भा  
र्ययोत्पाट्य पारिजातं गुरुमति ॥ आरोग्यमेन्द्रान्विवृधाग्निर्त्योपानयत् पुरुष ३९ स्थापितस्त्य गामाया गृहोद्यानोपशोभनः ॥ अन्वगुर्भमराः स्वरगा  
स्तद्वन्धारावत्पटाः ४० ययाच आनम्य किरीटकोटिभिः पादौ स्पृशन्नच्युतमर्थसाधनम् ॥ सिद्धार्थं तेन विगृह्य न गृहान हो सुगणान् च न गोऽधिगाल्यताम् ४१  
अयोमुहूर्तपक्षस्मिन्नागारे पुताः स्त्रियः ॥ यथोपयेमे भगवांता वङ्गपुत्रोऽयम् ४२ गृहेषु तासां मनपाय्य तस्यैकृन्निरस्तसाग्या निशयेऽन्यवस्थितः ॥

इन्द्रलोक में जायकै अदिति कू कुण्डन दिये तन इन्द्राणी लादिव इन्द्रने संतपभापासहित श्रीकृष्णचन्द्रकी पूजा करी ३८ सत्यभामा ने श्रीकृष्णचन्द्र से कही तन इन्द्रचन्द्र से उखारि गरुड के ऊपर  
धरिके इन्द्रसहित देवतानकू जीति है द्वारकापुरी में आवत भये ३९ सत्यभामा के महल के वगीचाहूँ सो भायमान करै ऐसे। कलमट्टन वर्गीचा में लगावत भयो ताकी गन्ध सूचिके के निमित्त स्वर्गमू  
चालिके गौरा आगत भये ४० किरीटन के जे अग्रभाग है तिन चरण में लगाय के नमस्कार करि है सम्पूर्ण अर्थ के सिद्ध करन वारे जे श्रीकृष्णचन्द्र है तिनसू चिन्ती करत भयो तव मिद्धयथेह मनो  
रथ जाके पेसो इन्द्र श्रीकृष्ण के सग मुख करन भयो देवतानकू वङ्गो ज्यो नई ये अपने कू गन्धवाने है तिन भिन्नार है ४१ वाके पीछे एकही मुहूर्तमें सोलहजार एकसौ आठ महल है तिनमें सर्वत्र  
परिपूर्ण ऐसे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र है सो जितनी स्त्री है उतनेही स्वरूप गरि है सनकू यथायोग्य व्याहन भये ४२ पुरुषन के विचार में न आने ऐसे कर्म है तिनकू करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र है सो  
और गृहस्थन के घर है उनकी वरावरि नहीं है तो अधिक कहाँ तें होइय ऐसे जो रानीन के घर है तिनमें सर्वदा रहिक अपने स्वरूप के आनन्द लूं परिपूर्ण है तथापि गृहस्थ के घर्म कर्मकू

करत जैसे साधारण गृहस्थ तबे लक्ष्मी के अंश जे स्त्री हैं तिनके सङ्ग रमण करत भये ४३ ब्रह्मादिक देवता जिनके मार्ग छुं नहीं जानें ऐसे जे लक्ष्मी के पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनहुं या प्रकार सेवन करति भई ४४ एक एक रानी के पास सौ सौ दासी हाथ जोरे ठाकी हैं तथापि सन्मुख जायकै लिवारुलाइयो आसन विछाययो सुन्दर पूजा-करनी चरण भोवनो धीरी लगानो चरण दावनो पञ्जा करनो अतर अरगजा लगाइयो पुण्य चढावनो केशन को सुधारियो शय्या विछावनो स्नान करावनो भेट को धरियो इनकरिकै श्रीकृष्णचन्द्रकी सेवा आपही करती भई ४५ ॥

(अथ पण्डितपेकृष्ण. परिहासेनका निमणीम् ॥ कोपयित्वा तत. भेषकलहेतामसान्त्वयत् १ रामारामजनानन्दमहोदयविदम्बनैः ॥ रुकेमपया. भेषकलहच्छब्दानैश्चर्यामीर्यते २ साठवें अध्याय में रेमेरमाभिर्नि १ काशसंस्तुतो ये ते रोगार्हकमेधिकं श्चरन् ४३ इत्थं मापति मवाप्यपतिस्त्रियस्तावद्वा दयोऽपि न विदुः पदवीं यदीयाम् ॥ भेजुमुदाऽविरतमे धितयाऽनुरागाहासावलोकनवसङ्गमजल्पलज्जाः ४४ प्रत्युद्गमासनवराहं पादशोचताम्बूलविश्रमणवीजनगन्धमालयैः ॥ केशप्रसारशयनस्नपनोप होर्वासीशताअपि विभोविदधुः स्मदास्यम् ४५ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे पारिजातहरणनरकवधो नामैकोनपष्ठितमोऽध्यायः ५६ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ कर्हि चित्सुखमासीनं सतलपन्थं जगद्गुरुम् ॥ पतिपदं चरद्वेषी व्यजनेन सखीजनैः १ यस्त्वेतल्लीलाया विश्वं सृजत्यच्यवनीश्वरः ॥ सहिजातस्वसेतूनां गोपीथाय गृहपुत्रः २ तस्मिन् न गृहे भ्राजन्मुक्तादामत्रिलम्बिना ॥ विराजिते धितानेन दीर्घमणिमयैरपि ३ मल्लिकादामभिः पुष्पैर्द्विरेककुलनादिते ॥ जालान्ध्रप्रविष्टैश्च गोभिश्च चन्द्रमसोऽमलैः ४ पारिजातवनामोदवायुनोद्यानशालिना ॥ धूपैर्गुरुजराजञ्जालरन्ध्रविनिर्गतैः ५ कृष्णजी परिहासं स्रुं रुक्मिणीजी को कोपकराकर फिर मेमकलह में तिनको शान्त करते भये १ रामाराममहानन्द विदम्बनो सौ रुक्मिणीजी के प्रेमकलह के छद्म स्रुं ऐश्वर्य वर्णित है २ ) अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! काहू समय एक शय्यायै सुखगर्वक बैठे ऐसे जगत् के गुरु अपने पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें भोज्यक राजा की पुत्री रुक्मिणी सलीनसहित चमर करिके सेवन करति भई १ जो अजन्मा भगवान् लीला करिके या विश्वकू उदग्न सहार पालन करे हैं वे भगवान् अपनी धर्ममर्यादानकी रक्षा करिके के निमित्त यादवन में आयके प्रकट होत भये २ ) अथ वर और शय्या को वर्णन करे हैं प्रकाशमान मोतीनकी झालरि जामें लटकै ऐसे चंदोवा दान्यो है तासूं प्रकाशमान है और मणिन के दीपक धरे हैं तिन स्रुं प्रकाशमान है ३ चमेली की माला है तिनसूं शोभायमान और फूल हैं तिनमें भौरान के समूह गुञ्जत हैं जारी झरोकान में होयकै आई जे चन्द्रमाकी निर्मल किरण तिनसूं शोभायमान ४ वागीचा करिके शोभायमान ऐसे वल्लहकी सुगन्ध है तासूं शोभायमान जारी झरोकान में होयकै निकसी ऐसी अगर की धूप हैं तिनसूं शोभायमान ऐसे जो गहन है ता महल के भीतर शय्या बिछी है तावै दूध के

फेनकी तुल्य कोमल श्वेत जो विद्यौना बिखो है ताके ऊपर सुखपूर्वक बैठे ऐसे जगत् के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र तिनैं रक्षिणी सेवन कारतिभई ॥ ६ दीरानी डाँड़ी जाकी ऐसी जो चरहै तास सखी के हाथ में तैके श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर होरै ऐसी जो रक्षिणी है सो या मन्त्र ईश्वर को सेवन करतभई ७ रक्षिणी श्रीकृष्ण के पास प्रणिन के जगज्ज नूर है तिनसुं मनस्कार शब्द करति सुन्दर लगतिभई कैसी रक्षिणी है ताको वर्णन करे हैं अंगुरीन में मुंदरीनकूं पहिरे और पहुँचे में ऋण है हाथ में जगज्ज डाँड़ी को ईश्वर है सारी के ओर सँ ठके जे कुच हैं तिनमें ऐसरि लगी है तासु अरुण जो मोतीन को हार है ताकूँ कटिमें पहिरे जो वड़े मोलकी कौधनी ताम्र शोभायमान है ८ लीला करिकै घारण करयो है देह जिनमें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तिनके योग्य है रूप जाको और नहीं है आप बिना गति जाकी ऐसी रूपवती लक्ष्मी जो रक्षिणी है तास देहिकै प्रसन्न होय मुसिप्रियकै श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो प्रलोक कुण्डल धुकुकी इनसुं शोभायमान जो मुन

पयःफेननिभेशुभ्रे पर्यङ्केकाशिपूचमे ॥ उपतस्थेसुखासीनं जगतामीश्वरंपतिम् ६ बालव्यजनमादाय रत्नदण्डं सखीकरात् ॥ तेनवीजयतीदेवी उपासां चक्रईश्वरम् ७ सोपाच्युतं कणयतीमणिनूपुराभ्यां रेजेऽङ्गुलीयवलयव्यजनाग्रहस्ता ॥ वस्त्रान्तर्गुदकुचकुङ्कुमशोणहारभारान्तिस्त्वधृतयाचपरार्थका ज्ञया ८ तारूपिणी श्रियमनन्यगतिनिरीक्ष्य यालीलयाधृतनोन्मूलरूपा ॥ ग्रीतः स्मयन्नलङ्कुरदलनिर्गङ्गकण्डवकोलसस्त्रिमतस्तुधांहरिरात्रपौ ९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ राजपुत्रीप्सिताभूषैर्लोकपालनिभूतिभिः ॥ महाऽनुभावैः श्रीमङ्गी रूपौदार्यवलोजितैः १० तान्प्रामासार्थिनोहित्वा चैवादिन् स्मरदुर्मदान् ॥ दत्ताभ्रात्रास्त्रपिन्नात्र कस्मान्नोवष्टेऽसमान् ११ राजभ्योनिभ्यतः सुभूः समुद्रं शरणं गतात् ॥ चलवद्भिः कृतद्वेषात् प्रायस्त्यक्तनृपासना न् १२ अस्पृष्टवर्मनांपुंसामलोकपथमयुपात् ॥ आस्थिताः पदवीं सुभूः प्रायः रादिन्ति योपितः १३ निष्कञ्चनावयं शश्वन्निष्कञ्चनजनप्रियाः ॥ तस्मा त्प्रायेण न ह्याढ्या मां भजन्ति सुमध्यमे १४ ययोरात्मसमाविचं जन्मैश्चर्याकृतिर्भवः ॥ तयोर्विवाहोर्भोगी च नोत्तमाधमयोः कञ्चित् १५ वैदभ्यंतद

है तामें मन्द मन्द मुसिकाय जो रक्षिणी है तारूँ बोलतभये ९ अब श्रीवासुदेवजी कहे हैं हे भीष्मराजाकी पुत्री रक्षिणी ! इन्द्र कुनेर वरुणकी तुल्य है वैभव जिनके वड़े हैं प्रभाव रूप उदारता बल जिनमें ऐसे जे राजा है तिनमें तुम्हारी चाहनाकरी १० वड़ी चाहना जिनके कामदेव सँ पीड़ित ऐसे शिशुपाल सँ आदिलोक के राजा तुम्हारे लेये के लिये आये तिनैं छोटिके तुम्हारी वरावारि करि वे के नहीं ऐसे हममें तिनैं कौन कारणतें व्याहति भई और तुम्हारी भय्या पिता उनें दैभी चुस्योहो ११ हे सुभू ! अर्थात् सुन्दर हैं भुक्ती जाकी राजानतें हम डरतें हैं समुद्रको आयकै शरणो लियो है जोरावरन ते शत्रुताकी है बहुधा राजसिंहासन हं छोड़ि दियो है १२ नहीं जानिये मैं आवै है मार्ग जिनको ऐसी स्त्रीनके कहे में न चलैं ऐसे पुरुषनको जे स्त्री हाथ पकड़ै हैं अर्थात् व्याहरी जाय है हे सुभू ! अर्थात् सुन्दर हैं भुक्ती जाकी ऐसी रक्षिणी वे स्त्री बहुधा दुःखित होय हैं १३ और हम निष्कञ्चन है और निष्कञ्चनजनक में प्यारी हों ता कारण है सुमध्यमे रक्षिणी ! जो हों धनबारे हैं ते हम दरिद्री होय जायेंगे या भयतें बहुधा मेरो भजन नहीं करे हैं १४ जिनके नरावरि को धन है वरावरि को जन्म है वरावरि को पुण्य है और वरावरि को रूत जाति है और सदा

जिनको एकलौटि निर्बीह होय है तिनकोही विवाह और मित्रता होय है १५ हे विदर्भ देशके राजा की पुत्री रुक्मिणी ! नहीं है वडो विचार जाके ऐसी तू है ताने घरावरि केनको व्याहृष्टोय है यह बात जाने विना गुणन करिकै दीन जो हय है तिनकूं वरोहै परन्तु तुम कहा करो भिक्षुक नारदादिकन ने हमारी भूँठी बढाई करी तासूं तुम्हारे मन में आइगई ? व अत्रहं तुम अपनी वराचरि को क्षत्रियहोय ताको हाय पकरिलेउ जा क्षत्रिय तें या लोक परलोकके मनोरथन कूं पावोगी ? १७ रुक्मिणी कहे हैं—तुम क्यों ले आयेहो—तहां श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं—हे वामोक्ष ! शिशुपाल शाल्य जरासन्ध दन्तवक्र कूं आदि लैके जे राजा हैं ते गोमूं सच शत्रुता करे हैं तेरो वडो भयया स्वमभी वर करे है १८ हे भंगलरुपिणी ! पराक्रम के मद करिके आभरे गर्भवन्त जे राजा हैं तिनको गर्व दूरि करिवे के निमित्त तव लोक लै आयोहो और असाधुनको तेज है ताकूं गै हरिलेउहूं १९ हम घरमें देहमें उदासीन है हमारे स्त्रीकी पुत्रकी द्रव्यकी चाहना नहीं है आत्मा

विज्ञाय त्वयादीर्घसमीक्षया ॥ वृतावयंगुणैर्हाना भिक्षुभिः श्लाघिनामुया १६ अथाऽऽत्मनोऽनु रूपं वै भजस्व क्षत्रियपथम् ॥ येन त्वमाशिपः सत्याद्दहासुत्रच तास्यसे १७ चैद्यशाल्वजरासन्धदन्तवक्रादयोदृपाः ॥ मम द्विषन्ति वामोरुक्षणी चापितवाभजः १८ तेषां तीर्थमदान्वानां हृत्सानां स्मयन्तु च ये ॥ आनी ताऽसिमयाभद्रे तेजोऽपहरताऽसताम् १९ उदासीना वयंगूं नं नरस्यपत्यार्थं कासुकाः ॥ आत्सललब्ध्याऽऽस्महे पूर्णां गेहयोज्योतिरक्रियाः २० ॥ श्रीशुक उवाच ॥ एतावदुक्त्वा भगवानात्मानं वल्लभाभिव ॥ मन्यमानां विश्लेषात्तदर्थं दण्ड उपारमत् २१ इति त्रिलोकेश पतेस्तदाऽऽत्मनः प्रियस्य देव्यश्च तत्पूर्वमभि यम् ॥ आश्रुत्य भीताहृदि जाते वपथुरि नन्तान्दुरन्तारुदती जगाम ह २२ पदामुजातेन नत्वारुणश्रिया सुबलित्वन्यश्च भिखनाशितैः ॥ आसिञ्चतीं कुङ्कुम रूपितौस्तनौ तस्थावधो मुख्यतिष्ठः खरुद्धवाक् २३ तस्याः सुदुःखगशोकविनष्टबुद्धेर्हस्ताच्छ्रद्धलया तोष्यजनं पपात ॥ देहश्च विक्रवधियः सहसैव मुह्य न्ममेव वायुविहताप्रविभीर्त्यकेशान् २४ तद्वद्व्याभगवान्कृष्णः प्रियायाः प्रेमबन्धनम् ॥ हास्यप्रौढिम जानन्त्याः करुणः सोऽन्वकम्पत २५ पर्यङ्कादवह

के आनन्दसूं सदा पूर्ण रहे हैं ज्योति की तुल्य साक्षोभात्र क्रिया रहित वर्तें २० अत्र श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! रुक्मिणी के मनके हरनचारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो कभजं न्यारी न होय तातें अपनको बहुत वल्लभा मानें ऐसी रुक्मिणी तें इतनो काहिकै सुग होतभये २१ या प्रकार त्रिलोकी के ईश्वर पालन करनचारे अपने प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र तिनको कभजं न सुन्यो ऐसी कुप्यारो वचन है ताय श्रवण करिकै हृदयमें मयो है कम्प जाके ऐसी रुक्मिणी देवी है सो भयभीत होयके रोदन करति वही चित्ताकूं पावतिथई २२ नत्वारुणश्रिया सुबलित्वन्यश्च भिखनाशितैः जो सुकुमार चरण है तासूं पृथ्वी कूं लिखै है और अज्जन सू ड्याम जे आंसू आंखिन में तें चलै हैं तिनसूं केसर जिनमें लगी ऐसो स्तननकूं भिजोवत नीचे कूं है मुख जाको अत्यन्त दुःखसू रुकी है वाणी जाकी ऐसी रुक्मिणी ठाढ़ी चुपरोति भई २३ अभिय वचन सुन्यो तासूं भयो जो दुःख और त्यागि देनेकी शक्ताकरिके भयो जो शोक है तिनसूं गई बुद्धि जाकी ऐसी जो रुक्मिणी है ताके ठीले भये हैं कळण जामें ऐसो जो हाथ है ताते चमर गिरतभयो व्याकुल है बुद्धि जाकी ऐसी रुक्मिणी की देह शीघ्र मोहित होयके केशनकूं फैलायके जैसे कैलाको हुल गिरै है या प्रकार गिरत

भई २४ दास्य की जो डिडाई है ताय न जाने पेसी जो प्यारी रुचियणी है ताको प्रेपस्मान देखि कै रसगुना जिनके छाउगई ऐसी श्री कृष्ण चन्द गुण कनक भई २५ चारु है भुना जिनके ऐसी श्री कृष्ण चन्द्र पल्लव पैत शीघ्र नीचे उतारि कै रुचियणी कूं उडाइ कै नेशनहूँ समझारि कै सुगंध वपन वी तुल्य जो नोपन राय है नानू गोदा भये २६ आँख जिनमें पायरे ऐसी नेननहूँ प्रीत शोकरि कै नाहित जे स्तन है तिन पै पाछि कै हे राजन पगीचिन्त ! नहीं है और विषय जाके ऐसी पतिव्रता सोरगणी है ताय युवानस आनपन करि कै हामी जो दमी नानू नन्तावमान है निच जाको प्रीत करि हामी योय नहीं कृपणा ऐसी जो लक्ष्मणी है ताय सा युवकी गीसगई श्री कृष्णचन्द्र समस्तारा भये २७ अन्तर श्री भगवत् श्री कृष्णचन्द्र कंठे है विदग्ध देश के राजा की पुत्री मेतल डवा मनि करो तू मेरे बिना और काहूँ नहीं जाने है यह मैं जानूँ है सुन्दरी ! तु कडा करेगी यह मुनिवै के निचे राखी करीश २८ स्नेह के नीय करि कै करे है नानू गोदा और चना मलन कलप रा-

ह्याशु ताम्र आग्य चतुर्भुजः ॥ केशान् ममुह्यत दक्कं पाशु जटपद्मपाणिना २६ प्रमृज्याश्रु हलेनेत्रे स्तनोत्तं नापहतो गुचा ॥ आश्लिष्य नाहुना गाज्जलनन्य विषयां सतीम् २७ सान्त्वयामास सान्त्वज्जः कृपया रूपणा प्रभुः ॥ दास्य गोद्विभ्रपचित्तागतदहामना गतिः २८ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ मागते दूर्ध्वमुखा जानैस्वाम तपरायणाम् ॥ तद्वचः श्रोतुममेन क्षेप्य चरितगद्गने २९ मूलप्रप्रेमसंभारस्फुरितावभीक्षितम् ॥ कटाक्षे पारुणापाङ्गे मुन्दरश्रुमुदीनदम् ३० अयं हि पर मोलाभो गृहेषु गृहमेधिनम् ॥ यन्नभनीयते यामः प्रिययाभीरुभाषिनि ३१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ भवभगवत्ताराजन् वेदभीपरिमान्विता ॥ ज्ञात्वा तत्परिहा सोक्तिं प्रियत्यागभयं जहौ ३२ वसापेक्षपभंगुं मन्वीक्षन्ती गगवन्मुलम् ॥ सत्रीडहासकृचिरस्तिग्धापाङ्गेन भारत ३३ ॥ शक्तिमस्युवाच ॥ नन्वेवमेतदस्विन्दर विभोचनाऽऽह यद्वैभवान् गगवतो सदृशी विभूयः ॥ कस्वैमहि मन्यभितो भगवास्वधीशः काहंगुणपकृतिज्ञगृहीतपादा ३४ सत्यं भयादिव गुणे भयउरु क्रमान्तः शोतेरामुद्रउपलम्बनमात्र आरामा ॥ नित्यं कदिन्द्रियगणे कृतविप्रदस्सं त्वत्सर्वकैर्नृपपदं विधुतंत गोऽन्वम् ३५ त्वत्पादपद्मम करन्दं भुषां भुनीनां

दास जाय और देवी हैं प्रकृती जायें ऐसी जो मुरा है ताकी गोया देखि कै लिखे हांसी ररीश ३० हे उरगोपनी ! अपनी प्यारी के संग शोभी करि कै समग व्यतीत करनो दूरस्थान कूं नर में गही लाभ है ३१ अय श्रीशुकदेवजी कहें हैं राजन् पगीचिन्त ! या प्रह्लाद भगवान् श्री कृष्णचन्द्र ने शाना करी ऐसी जो विदग्ध देश के राजा की पुत्री रसिणी है सो प्यारे ने मोने रसि के कही है यह जानि कै और प्यारो मोझें त्यागि देइयो यह जो मन में अयो ताय ताहूँ न्यागनि भई ३२ हे भारत शोकात राजन् पगीचिन्त ! आज भरी है तवि गोदर स्निग्ध कटाक्षन कूं सुन्दर जो मूल है ताय देसत पुरुषन में श्रेष्ठ कृष्णचन्द्र तिनमूं बोलनि भई ३३ श्री कृष्णचन्द्र ने जो अपने में अचपुण कहे निगूं गुण करि कै रुचियणी रचन करे है प्रथम श्री कृष्णने कही तुम हमारी वरापारि नी नहीं हो हमारो हाथ कैसे पकड़्यो ताको उत्तर रुचियणी देइ है हे कमलदललोचन ! तुम शो तिनकी परामर्ष में नहीं हैं दूषकार के ऐक्यरगुन को तुम हो तिनकी बात सत्य है अपनी परिभा तनिके आप आहुन तीनों ब्रह्मादिजन के ईश्वर ऐसे तुम हो और सकामपुरुषन ने मा के पाँच पकरे ऐसी सत्यगुणी मनोगुणी रूप जो माया में है सो परामर्ष में बड़ो कमर है ३४ और जो

कृष्णने कही कि राजान के भयके मारे समुद्र में आये रहे ताको उत्तर रुक्मिणी देखै हे उरक्रम ! अर्थात् वही है पराक्रम जिनको यातें तुमकूं भय नहीं है यह कहो यह बात सत्य है सत्यगुण रजोगुण तमोगुण हैं तेही राजा हैं तिनके भयतेही मानों समुद्रकी जैसे थाह नहीं है ऐसे हृदयकी बातजानिबे में नहीं आवै हे ऐसो जो प्राणीन को हृदय है तामें चैतन्यघन जो तुमहीं सो निश्चलता करिकै प्रकाशोद्गो और जो रावरन न हमने वैरकृत्यो है यह जो तुमने कहीं सोभी सत्य है क्योंकि विषयन में लगी हैं इन्द्रिय जिनकी ऐसे पुरुषन ने तुममें विरोध करचो है उनमें तुम्हारी अप्रतीति है और जो श्रीकृष्णने कही हमारे राज्य आसन नहीं है ताको उत्तर रुक्मिणी देखै बहुत नामें अविवेक ऐसो जो राज्यआसन है सो तुम्हारे सेवक छोड़ि देखै तुमने छोड़यो यामें कहा कहनो है ३५ और जो श्रीकृष्णने कही कि हमारो मार्ग जानिने में नहीं आवै है और स्त्रीनके अर्थीन में नहीं हूं ताको उत्तर रुक्मिणी देखै तुम्हारे चरणारविन्द के मकरन्द को सेवनकरें ऐसे जे मुनि हैं तिनको मोंर्ग पशुरूप जे मनुष्य है तिन पै प्रकट नहीं होय है और जानिबे में नहीं आवै है तुम्हारो मार्ग जानिबे में न आवै यामें कहा आश्वर्य है हे व्यापक ! तुम्हारे अनुवर्ती जे भक्त हैं तिनकी चेष्टा न्यारी

वत्सार्स्फुटं पशुभिर्ननुदुर्विगाढ्यम् ॥ यस्मादलौकिकमिवेहितमीश्वरस्य भूमस्तवेहितमथोऽनुयेभवन्नम् ३६ निष्कञ्चनो ननु भवान्नप्रतोऽस्ति किञ्चिदस्मैवलिवलिभुजोऽपि हन्त्यजाद्याः ॥ नन्वाविदन्यसुतपोऽन्तकमाढ्यतान्धाः प्रेष्ठो भवान्चलिभुजागपितेऽपि तु भगम् ३७ त्वं वै सप्तपुरुषार्थमयः फलात्मा यद्वाञ्छया सुप्रनयो विमृजन्ति हस्तनम् ॥ तेषां विभो ममुचितो भवतः समाजः पुंसः स्त्रियाश्च तयोः भुल्लुङ्खिनोर्न ३८ त्वं न्यस्य दण्डमुनिभिर्गदितानुभाव आत्माऽऽत्मदश्च जगतामिति मेव नोऽस्ति ॥ हित्वा भवदभ्रवउदीरित कालवेगधस्ताशिपोऽजभवना कपतीन्क्रुनोऽन्ये ३९ जाढ्या च स्तवगदाग्रजयस्तुभूपाच विद्रव्यशार्ङ्गनिनदेन जहर्थमात्मम् ॥ सिंहो यथा स्वचलिमीशपशून्स्वभागं तेभ्यो भयाद्यदुर्ध्वशरणं प्रपन्नः ४० यद्वाञ्छयानुपशिक्षामणोऽङ्गैर्वैन्यजाय

है तुम्हारी न्यारी है यामें कहा आश्वर्य है ३६ और निष्कञ्चन जे पुरुष हैं तिनकूं हम भिय लागे हैं और धनिक पुरुष हैं ते हम दरिद्री होय जायेंगे या हरके मारे हमारो भजन नहीं करे हैं यह जो श्रीकृष्णने कही ताको उत्तर रुक्मिणी देखै जिनमें कुञ्ज न्यारो नहीं ऐसे तुम निष्कञ्चन हो दरिद्रताकी निष्कञ्चनता तुममें नहीं वने है प्रजान तें भेंट ले ३७ ऐसे जे ब्रह्मादिक देवता ते तुमकूं भेंट देखै प्राणनकूं पोषणकरें धनाढ्यताके मदकरिकें ओधरे ऐसे जे पुरुष हैं ते कालखण जो तुमहीं तिनकूं नहीं जाने है ब्रह्मादिकनकूं तुम प्यारे हो ३७ जिनके चावरिको जन्म है तिनको विनाह और भिन्ता होय है यह जो श्रीकृष्णने कही तानो उत्तर रुक्मिणी देखै तुम सस्यूर्ण पुरुषारूप हो परमानन्दरूप हो सुन्दर है बुद्धि जिनकी वे पुरुष तुम्हारी प्राप्ति के लिये सा वस्तु त्यागि देखै हे मभो ! उन पुरुषन को और तुम्हारो सेव्य सेवक भाव है सुख दुःखमें व्याकुल परस्पर ऐसे स्त्री पुरुष हैं तिनके स्वायी सेवक भाव नहीं है ३८ और भिन्नारिने भूमी बड़ाई करी है यह जो श्रीकृष्णने कही ताको उत्तर रुक्मिणी देखै लुब्धो है कालको दण्ड जिनतें ऐसे जे मुनी शर्द्ध तिनने मायो है प्रभाव जिनको ऐसे जो जगतके आत्मा और भक्तनकूं मोक्ष के देनवाये यह जानिके मैंने तुममें यरो है कहा करिकै तुम्हारी सुकुती को जो चढानो ताधूं प्रकट भयो जो बाल ताको जो वेग ताधूं दूरि गये हैं मनोरन गिनके ऐसे जे ब्रह्मादिक हैं तिनकूं त्यागि कै तुम्हें यरो है और तुन्छन की कहा चलाई है ३९ अपने





मेरे रनेहोय तव श्रीकृष्ण ने कहीं स्नेह भये ते तो कूँ कहा लाम होइगो ताको उत्तर देखै है तुम्हारे चरणारविन्द मैं अनुराग है सोई वड़ो लाभ है और जा समय या विश्वके वढ़ायवे के लिये रजोगुण कूँ अङ्गीकार करिकैं मो माया की ओर देखोगे वही वड़ो अनुग्रह है ४६ या प्रकार श्रीकृष्णवन्द ने मे जे वातें कहीं तिनको उत्तर दैके मसन है चित जाको ऐसी रुक्मिणी मन्त्र सो कहे है हे मधुसूदन ! तुमने कही अपनी वरावरि के क्षत्रियको अथवा हाथ पवरि लेउ यह मैं भित्था नहीं मानूँ हूँ जैसे काशी के राजा की पुत्री अम्बा अम्बालिका ये तीनों बन्यानमें तैं अम्बा कन्याकी शाल्वराजा में जैसे रतिभई तेसे मेरी रति तो तुम्हारे विपरी भई है ४७ और हे अच्युत ! विदाहिता जो व्यभिचारिणी स्त्री है वाको मन नवीन पुरुषन में जात है विवेकी पुरुष ऐसी स्त्री स्त्री कूँ राले नहीं है कदाचित् रालै तो या लोक और परलोक में भ्रष्टहोय है ४८ अब श्रीकृष्णवन्द कहे है हे राजपुत्री रुक्मिणी ! तुम्हारी वात सुनिधे के लिये मैंने ऐसी कही है मेरे वचनको

छयउपाचारजोऽतिमात्रो मामीक्षमेतदुहनः परमानुकम्पा ४६ नैवालीकमहं मन्ये वचस्तेमधुसूदन ॥ अम्बायाइवाहिप्रायः कन्यायाः स्यादतिःक्वचित् ४७  
व्यूहायाश्चापिपुंश्चल्यामनोऽभ्येतिनवन्नवम् ॥ बुधोऽसतीनविभृयात्तविभ्रडुभयच्युतः ४८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधयेतच्छ्रेतुकामैस्त्वं राजपुत्रिपल  
भिभता ॥ मयोदितं यदन्वार्थसन्धे तत्सत्यमेव हि ४९ यान्यान्कामयसेकामान् मथ्यकामाय भामिनि ॥ सन्तिह्येकान्तभक्तायास्तव कल्याणिनिर्यदा ५०  
उपलब्धं पतिभेमपातिव्रत्यञ्चनेऽनवे ॥ यद्वाक्यैश्चाल्यमानायानधीर्भयपकर्पिता ५१ येमांभजन्तिदाम्पत्ये तपसात्र चर्यया ॥ कामात्मानोऽपैवर्गेश  
मोहितामममायया ५२ मांप्राप्यमानिन्यपगर्गसम्पदं वाञ्छन्ति ये सम्पद एव तत्पतिम् ॥ तेमन्दभाग्यानि रयेऽपियेदृणांमात्रात्मकत्वान्निरयः सुसङ्गमः ५३  
दिष्ट्वागृहैश्चर्यसकृन्मयितया कृताऽनुवृत्तिर्भवमोचनीखलैः ॥ सुदुष्कराऽसौसुतरादुराशिषोह्यमुग्धारायानिकृतिं जुपः स्त्रियाः ५४ नत्वादृशीं प्राणयिनीं  
द्विणीं गृहेषु पश्यामिमामिनिनिययास्वविवाहकाले ॥ मासान्नृपानवगणय्यरहोहरोमे प्रस्थापितोद्विजउपश्रुतसरकथस्य ५५ आतुर्विरूपकरण्युधिनिर्जि

जो जो तुमने उत्तर बहो सो सब सत्य है ४६ हे भामिनी ! हे मङ्गलरूपिणी ! जो जो वस्तुकी तुम चाहना करो हो सो सो एकान्त भक्ति है जाकी ऐसी जो वू है ता तेरे नित्य बनी रहे हैं ५० हे निष्पाप रुक्मिणी ! तुमने पतिभेमपापको और पतिव्रताको जो धर्म है सो तुमने पायो वचन करिकैं डिगाई तथापि तुम्हारी बुद्धि सो भोतें चलायमान न भई ५१ विषयन मैं है आत्मा और मन जिनको ऐसे पुरुष तपस्या करिकैं ब्रह्मचर्य करिकैं स्त्री पुरुषके भोग को जो सुख है ताके लिये मेरी भजन करे हैं वे पुरुष मेरी माया तैं मोहित हैं अर्थात् भूलि रहै हैं ५२ हे भामिनी ! मोक्षसाहित सम्पूर्ण सम्पत्तिनको देनवारो मैं हूँ ताप पायकैं विषयनकी चाहना करे हैं विषयनको देनवारो मैं हूँ ताकी चाहना नहीं करे हैं वे पुरुष अभाग्य हैं जो विषय मनुष्यन कूँ कुत्तानकी सूकरन की योगि में हूँ मिले हैं विषयन में मन रहे हैं ५३ हे घरकी महारानी ! संसारकी लुङ्गावनवारी चाहना जामें नहीं ऐसे मनकी दृष्टि तेने मोमें लगायो स्त्री है अभिप्राय जाको याहीते अपने प्राणनको भरणपोषणकरे दूसरे कूँ ठो ऐसी जो स्त्री है ताके मनकी दृष्टि मोमें नहीं लागे है ५४ हे भामिनी ! सोलहहजार एकसौ आठ महलन में तुम्हारी वरावरि प्यारकी करनवारी और

स्त्री नहीं देखूँ हूँ जा तौने आपने विवाह के समय आये जे राजा है तिनकुँ त्यागि कै मेरी बात सुनि कै पाती लिखि कै भरे पास द्यामख भिन्नगो ५५ युद्ध में तेरे भयया रुन्धीहुँ जीतिलियो बाको शिर मूढिकै विरूप करिदिओ हो और अनिरुद्ध के विवाह में चौपर खेलत बाकू माख्यो यह भयया के मारिये को दुःख दुगारे त्यागिने के भयने माके सहाख्यो और दलु न कही ऐसी ऐसी तेरी बातन जे हमको बुराकरि राखे हैं ५६ भरे दुलायो कू कोई जाने नहीं ऐसे एहान्ती दूत कुँधरे पास खेल्यो जा मेकुँ आयने में प्रितल भयो ता या विश्वकुँ गुन्य मानि के और राजा भरे योग्य नहीं है यह निश्चय करि कै देह के त्यागिने की इच्छा करति भई यह बात तेरे बिना नापै वनैहै हम तेरी इहा प्रणसा नरै ५७ अथ श्रीकृष्णदेव जी कहे हैं हे राजन् प्रीति १ या मकार आ तमारग जगत् के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र मनुष्यन को अनुकरण करि कै राख्यो की बातें करि करि के स्त्रीन के संग रण करत भये ५८ समर्थ सम्पूर्ण लोकेन के गुरु सम के दुःख के हरन तारे जे श्रीकृष्ण

तस्य प्रोद्धाहर्षर्णचतुर्द्वधमक्षगोष्ठ्याम् ॥ दुःखं सुस्थमसहोऽस्मदयोगभीत्या नैवान्वीः किमपि तेन वयं जितास्ते ५६ दूतस्त्वयाऽऽल्लभने मुनिवि  
क्लमन्त्रः प्रस्थापितो मध्विचिरायति शून्यमेतत् ॥ मत्वा जिहास इदमङ्गमनन्ययोग्यं विष्ठेत तत्त्वयि गंयं निनन्दयामः ५७ ॥ श्रीगुरु उवाच ॥ एवं सौ रतसं  
लापैर्भगवाञ्जगदीश्वरः ॥ स्वर्तो रसयारिमे नरलोकं विडम्बयन् ५८ तथाऽन्यासामपि निभृष्टे गृहवा निव ॥ आस्थितो गृहमेधीयाब्धं वर्षा ल्लो दगुरुह  
रिः ५९ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे कृष्णरुक्मिणीसंवादेनाम पष्ठिनमोऽध्यायः ६० ॥ ॐ ॥

श्रीशुक्र उवाच ॥ एकैकशस्ताः कृष्णस्य पुत्रान् दश दशावलाः ॥ अर्जिजनन्नवमान् पितुः सत्त्वर्त्तमसम्पदा १ गृहादनगर्गवीक्ष्य राजपुत्रयोर्योऽच्युतं  
स्थितम् ॥ प्रेष्ठयं समस्तस्वं न तत्तत्त्वाविदः स्त्रियः २ चार्वजकोशवदनाय तवाहुने त्रस्ये महाभसवीक्षितवल्गुजलैः ॥ रामो हिताभगवतो न मनो विजिहंतु  
स्वैर्विभ्रैः समशक्रन्वनिता विभूषः ३ स्मायावलो कलवदर्शित भावहरिभूषण्डलप्रहितसौरतगन्त्रशौण्डे ॥ पत्न्यस्तु पोडश महत्तमनङ्गवाणैर्यस्येन्द्रि  
चन्दैः सो और रानीन के मंदलन में रहि कै गृहस्थन के से धर्म सिन्धु हैं ५९ इति श्रीमद्भागवतार्थकृष्णरुक्मिणीसंवादेनाम पष्ठिनमोऽध्यायः ६० ॥ ॐ ॥

( एक पष्ठिनमेश्वरैः पुत्रपौत्रादिसन्ततिः ॥ अनिरुद्धविमोहे च रुक्मिणीसमुद्रगन्धः १ अष्टाभिरुशतद्वयसहस्रस्त्रीसमुद्रगन्धः ॥ कोटिशः पुनपौत्रादीनरिदरैर्योजयत् २ इत्येतत्तं अध्यायं कृष्ण  
जी के पुन और पौत्रादि नौकी सन्तति और अनिरुद्धजी के विवाह में वलदेवी मूं रुक्मी का नाश यणन है १ कृष्णजी सोलह हजार एकसौ आठ स्त्रियों से उत्पन्न करोड़न पुत्र पौत्रादि जन के  
विवाह कर देते भये २ ) अथ श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे राजन् प्रीति १ श्रीकृष्णचन्द्रकी एक पुत्ररानी पिता श्रीकृष्णचन्द्रकी तुल्य हैं रूप गुण जिनमें ऐसे दश दश पुत्रनकुँ उत्पन्न करती भई १  
चरते कहे वाहर जायें नहीं अपने पास हैं आये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं राजानकी पुत्री देखि कै और श्रीकृष्ण आत्माराम हैं या बात कुँ नहीं जानिके आपनो जारो मानति भई २ व्यापक  
जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् हैं तिनको कमलकोश अर्थात् मध्य ताकी तुल्य है सुकुमार मुख बड़े नेत्र प्रेमसहित हंसनि रसभरी चितवनि मनोहर तोलनि इत्यादिकनसूं मोहित जे स्त्री

हे ते अपने अनेक करिके पूर्ण जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको मन मोहित करिने कूं नहीं समर्थ होति भई ३ गूढ षोडशविंशत्युक्त ज्ञान जतायो अधिप्राय ता करिके मनको हरनवारी जे भुक्तुडीरूप मण्डल हैं ता करिके पठाये जे सुरतिमन्त्रकी मन्त्र हैं तिनमें पैने जे कामशास्त्रविहित प्रसिद्ध साधन हैं तिन करिके मोलह हजार रानी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्रके मनमें अत्यमान करिके सपर्ये न होति भई ४ ब्रह्मादिक जिनके मार्ग कूं नहीं जानें ऐसे लक्ष्मीके पति श्रीकृष्णचन्द्र कृपा प्रकार पति पाय के छानके नदयो जे आनन्द ताम्र स्नेहभरी हैं सनि चित्तनिहै ताय और दास्य चित्तयानिपूर्वक नवीन सङ्गमें बोलनिहै ताय और बोलनिहै जो लाजहै ताय सेवन करति भई ५ एकएक रानीके सम्मुख सो सो दासी दाय जोरे दाही हैं तथापि सम्मुख ताय के भेग करिके लिवाय लाइयो आसन निधाययो सुन्दर पूजन करिके चरणयोदो वीरी लगाइयो चरणयोदो वीरी लगाइयो पद्मकरिवो शतर अरगना लगाइयो पुष्प चढावनो

यंविमथितुं करणैर्न शक्नुः ४ इत्थं मापति भवाय पतिस्त्रिगस्ता ब्रह्मादयोऽपि निविदुः पदवीयदीयाय ॥ भेजुंदाऽनिरमेधिनयानुशाहासात्रलो कनवसङ्गमं लालसाद्यम् ५ प्रत्युद्गमासनवराहणपादरौचताम्बूलविश्रमणीजनगन्धमाल्यैः ॥ केशप्रसारशयनसनपनोपहार्यैर्दासीशता अपि विमोविदधुः स्मदास्यम् ६ तासां यादशपुत्राणां कृष्णस्त्रीणां पुरोदिताः ॥ अष्टौ महिष्यस्तत्पुत्रान् प्रद्युम्नादीन् वृणामि ते ७ चारुदेष्णः मुदेष्णश्च चारुदेहश्च वीर्यवान् ॥ सुचारुश्चारुगुप्तश्च भद्रचारुदत्तश्च अपरः ८ चारुचन्द्रो विचारुश्च चारुश्च दशमो हरः ॥ प्रद्युम्नप्रमुखा जाता रुक्मिण्ययांनावमाः पितुः ९ भानुः भुभानुः स्मभानुः प्रभानुर्भानुमांस्तथा ॥ चन्द्रभानुर्बृहद्भानुरतिभानुस्तथाऽष्टमः १० श्रीभानुः प्रतिभानुश्च सत्यभामात्मजा दश ॥ राम्यः सुमित्रः पुरुजिच्छतजिच्च सहस्रजित ११ नुर्भानुमांस्तथा ॥ विजयश्चित्रकेतुश्च वसुमान् बृहद्विहः कतुः ॥ जाम्बवत्याः सुताद्येते साम्बाद्याः पितरामताः १२ वीरश्चन्द्रोऽश्वमेनश्च चित्रगुर्वगवान्वधुपः ॥ आमः शङ्खर्वसुः श्रीमान् कुन्तिर्नार्गनजितेः सुताः १३ शु १ः कविर्द्विषो वीरः सुबाहुर्भद्रएकलः ॥ शान्तिर्दर्शः पूर्णपासः कालिन्ध्याः मोग क्रोडरः १४ प्रवोपो गान्त्रवान् सिहो वलः

केशनकूं सुधारितो शय्या चिह्वावनो स्नान करानवतो भेदको धरियो इन करिके श्रीकृष्णचन्द्रकी सेवारतिभई ६ दशदशैं पुत्र जिनके ऐसी जे श्रीकृष्णकी रानीहैं तिनमें जे आठ पटरानी प्रथम कही हैं तिनके प्रत्युद्गम रू आदिलैक जे पुत्र हैं तिनैं तेरेआगे कहूं हू ७ प्रद्युम्न हैं मुख्य जिनमें गुणन में पितामूं कमती नहीं ऐसे चारुदेष्ण मुदेष्ण यलवान् चारुदेह सुचारु चारुगुप्त तैसेही भद्रचारु चारुचन्द्र विचारु चारु ये दशपुत्र श्रीकृष्णचन्द्रसूं रुक्मिणीमें उत्पन्न होत भये ८ ९ भानु सुभानु स्वर्भानु प्रभानु भानुमान् चन्द्रभानु बृहद्भानु तैयोही आठवों प्रतिभानु ये दश पुन सत्यभामा के उत्पन्न होत भये और साम्ब सुमित्र पुरुजित शतजित सहस्रजित १० विजय चित्रकेतु वसुमान् द्रिड कतु ये राम्य सू आदिलैक श्रीकृष्णचन्द्रकी मुख्य हैं गुण जिनमें ऐसे दश पुत्र जाम्बवती के होत भये १२ वीरचन्द्र अश्वमेन चित्रगु वेगवान् हय ग्राम शंकु तथा शोभायमान वसु और कुन्ति ये दश नाम्बजिती के पुत्र होत भये १३ श्रुत रुक्मि हय और सुबाहु और भद्र हैं नाम जाको ऐसी एक पुत्र शान्ति दर्श पूर्णपास और इन सब सूं छोटी सोमक ये दश पुत्र कालिन्दी के होत भये १४ प्रवोपो गान्त्रवान् सिंह वल प्रवल अङ्ग महाशक्ति सह ओज

अपराजित ये दशपुत्र लक्ष्मणा के होत भये १५ वृक हर्ष अनिल गृध्र वर्द्धन उवाच महाश पावन वेद्वि क्षुधि ये दश मित्रविन्दा के पुत्र होत भये १६ सग्रापनिज दृष्टमेन शूर प्रहरण अरिजित् जय सुभद्र वाम आयु सत्यक ये दश पुत्र भद्रा के उत्तराव होत भये ये श्रीकृष्णचन्द्र की आठ रानीन ते न्यारी जो रोहिणी है ताके दीप्तिमान् ताम्रतप्त कं आदि लैकै पुत्र होत भये जैसे रोहिणी के पुत्र कहै ऐसेही और सोलह हजार रानीन के भी दश दश पुत्र जानिलीजै हे राजन् परीक्षित् ! भोजकटपुर में रुक्मी की जो पुत्री रुक्मवती है ताभे मधुमन जी तें चलवान् अनिरुद्ध नाम करिकै पुत्र होत भयो हे राजन् परीक्षित् ! ये जो श्रीकृष्णचन्द्र पुत्र हैं तिनके पुत्र औरनाती करोड़न होत भये और श्रीकृष्ण तें जन्मे जे पुत्र हैं तिनभे सोलह हजार माता होती भई १७ ॥ १० ॥ अब राजा परीक्षित् कहै हे संग्राम के विषे श्रीकृष्णने तिरस्कार जाको कर्यो ऐसो रुक्मी वैरी श्रीकृष्ण के पुत्र मधुमन जी हैं तिन कूं अपनी कन्या कैसे विवाहन भयो वह तो कृष्ण के मारिने

प्रवलऊर्द्धगः ॥ माद्र्याः पुत्रा महाशक्तिः सह ओजोऽपराजितः १५ वृको हर्षोऽनिलो गृध्रो वर्द्धनो ब्राह्मणवच ॥ महाशः पावनो वह्निर्भिन्निविन्दात्मजाः क्षुधिः १६ संग्रामजिद्वृहत्सेनः शूरः प्रहरणोऽरिजित् ॥ जयः सुभद्रो भद्राया वाम आयुश्च सत्यकः १७ दीप्तिमांस्ताम्रतप्तया रोहिण्यास्तनया हरैः ॥ प्रद्युम्नाच्चानिरुद्धो भूद्रुक्मवत्यां महाबलः १८ पुत्र्यांतुरुक्मिणो राजन् नाम्ना भोजकटपुरे ॥ एते पांपुत्र पौत्राश्च वभूवुः कोटिशो नृप ॥ मातरः कृष्णजातानां सहस्राणि च पौण्डश १९ ॥ राजोवाच ॥ कथं रुक्म्यारिपुत्राय प्रादादुहि नंर्युधि ॥ कृष्णेन परिभूतस्तं हन्तुं रन्ध्रं प्रतीक्षते ॥ एतदाख्याहि मे विदन् द्विपोर्वैवाहिकं मिथः २० अनागतमतीतं च वर्त्तमानमतीन्द्रियम् ॥ विप्रकृष्टं व्यवहितं सम्यक् पश्यन्ति योगिनः २१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ वृत्तः स्वयं वरे साक्षाद नङ्गोऽङ्गयुतस्तया ॥ राज्ञः समेतानिर्जित्य जहारैः करथो युधि २२ यद्यप्यनुस्मरन् नैव रुक्मीकृष्णावमानितः ॥ व्यतरद्वागिनेयाय सुतां कुर्वन् स्वसुः प्रियम् २३ रुक्मिण्यास्तनयां राजन् कृतवर्मसुतो वली ॥ उपयेभे विशालाक्षीं कन्यां चा रुमतीं किल २४ दौहित्रायानिरुद्धाय पौत्रीरुक्म्यददाद्धरेः ॥ रोचनं वष्टवैरोऽपि स्वसुः प्रियचिकी

को उपाय करे हो हे विवेकी शुकदेवजी ! शत्रुनको आपुस में विवाह कैमे भयो यह मेरे आगे वर्णन कीजिये २० जो कदाचित् कहो कि हम या बात कूं कहा जानै ताको उत्तर राजा देइ है योगीश्वर हैं ते जो आगे होनहार हे ताथ और जो धीतगई है ताथ और जो वर्त्तमान है ताथ और जो हमारे देखिबे सुनिबे में नहीं आवै है ताथ दूरि की बात है ताथ और भीतिकी ओट में जो वस्तु धरी है ताथ भले प्रकार देखि लेइ हैं २१ अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित् ! रुक्मी की पुत्री जो रुक्मवती है ताके स्वयवरमें आवे जे राजा है तिनैं जीतिकै एक है रथ जिन के ऐसे अद्रसदित जो कामदेव मधुमनजी हैं सो युद्ध में हरि कै लागत भये २२ यद्यपि रुक्मीको श्रीकृष्ण ने तिरस्कार कस्यो या नैर को स्मरण करै है तथापि वहिनि के भलो मनाइवे के लिये भानजो जो मधुमन है ताकूं अपनी कन्या देत भयो २३ श्रीकृष्णचन्द्र की सब रानीन के एक एक कन्या भई यह दिखाइवे के लिये वही रानी जो रुक्मिणी है ताकी कन्या को विवाह कहै हैं हे राजन् परीक्षित् ! सुन्दर है बुद्धि जाकी विशाल है नेत्र जाके ऐसी रुक्मिणी की पुत्री है ताथ चलवान् जो कृतवर्मन को पुत्र है सो विवाहत भयो २४ यद्यपि वैर रंधि रखो है तथापि रुक्मी

अपनी वंशिति को भली मनाईवे के कारण श्रीगुण को नाती अपनी दौहिती ऐसो जो अनिरुद्ध है ताकूँ अपनी रीचना नाम नातिनी कूँ देत भयो नाते में विवाह करनो अथर्म है या बात कूँ रुक्मी जाने भी है परन्तु स्नेह के रस्सान में बंधो है या कारण विवाहि देत भयो २५ हे राजन् परीक्षित ! ता विवाह में रुक्मिणी बलदेवजी श्रीकृष्णचन्द्र और साम्ब प्रद्युम्न कूँ आदि लीकै श्री कृष्णचन्द्र के पुत्र है ते रुक्मी के भोजकटनागपुर में जात भये २६ विवाह होयजुमयो ता पीछे कलिङ्गदेशको राजा है मुख्य जिनमें ऐसे गर्ववन्त जे राजा है ते रुक्मी ते बोलत भये पासेन करिकै बलदेव कूँ नीति छेउ २७ हे राजन् रुक्मी ! यह बलदेव पासे खेल नहीं जाने है परन्तु थाकूँ खेलिये को व्यवसन गहो है या प्रकार जातै कही ऐसो रुक्मी बलदेवजी कूँ बुलाय कै तिनके सङ्ग पासेन करिकै खेलत भयो २८ बलदेवजी सौ मोहरन को ता पीछे हजार मोहरन को फेरि दश हजार मोहरन को दौव दौव रुक्मी जीतत भयो ता समय कलिङ्गदेश को राजा दांत

पया ॥ जानन्नधर्मतद्यौनं स्नेहपाशानुबन्धनः २५ तस्मिन्नभ्युदये राजन् रुक्मिणीरामकेशवौ ॥ पुरंभोजकं जगत्तममुत्तमप्रद्युम्नकादयः २६ तस्मिन्निवृत्त उद्राहे कालिङ्गप्रमुखावृणाः ॥ हसास्ते रुक्मिणं प्रेक्षुर्बलमक्षौर्विनिर्जय २७ अनक्षौह्याराजन्नापितद्वयसर्नमहत् ॥ इत्युक्तो बलमाहूय तेनाक्षैरुक्म्यदीव्यत २८ शतंसहस्रमयुतं रामस्तत्राऽऽददेपणम् ॥ तन्तुरुक्म्यजयत्तत्र कालिङ्गः प्रहसद्वलम् ॥ दन्तान्मन्दर्शयन्नेनामृष्यत्तद्धलायुधः २९ तनोक्षैरुक्म्यगृह्णाद्वल हन्तत्राजयद्वलः ॥ जितवानहमित्याह रुक्मीकैवमाश्रितः ३० मन्युनाश्रुभितः श्रीमान् समुद्रहवपर्वणि ॥ जात्यारुणाक्षोऽतिरुषा न्यर्षुदंगलहगाददे ३१ तंचापि जितवान्मोधर्मेण च्छलमाश्रितः ॥ रुक्मीजितं मया त्रेमेव दन्तुपांश्चिकाहते ३२ तदाऽवर्षी त्रिभोनाणी वलैर्नैर्नजितो गलहः ॥ धर्मभोवचनेनैव रुक्मी वदति वैमृषा ३३ तामनादृत्य वैदेर्मेदुष्टराज्यचोदितः ॥ सत्कर्पणं परिहसन् वभापे कालचोदितः ३४ नैवाक्ष कोविदायूयं गोपालावनगोचराः ॥ अक्षैर्दीव्य नितराजानोवाणैश्च न भवादृशाः ३५ रुक्मिणैव माधिक्षितो राजभिश्चोपहासितः ॥ क्रुद्धः परिघमुद्यम्य जघ्ने तन्मुण्डमर्षदि ३६ कलिङ्गगन्तरसा गृहीत्याद

दिखाय कै बलदेवजी की बहुत हासी करत भयो तब हल है हयियार जिनके ऐसे बलदेवजी हासी कूँ नहीं सझारत भये २९ ता पीछे रुक्मी लाय गोहर को दौन लगावत भयो ताकूँ बलदेवजी जीते ता समय कपटकरिकै भेने जीत्यो है या प्रकार रुक्मी कहत भयो ३० पावस पूर्णमासी कूँ समुद्र में जैसे क्षोभ होय है या प्रकार क्रोध करिकै क्षोभ जिनके भयो और स्वाभाविक है अरुण नेत्र जिनके ऐसे बलदेवजी अत्यन्त रोप करिकै दश करोड़ मोहरन को दौव लगावत भये ३१ धर्म करिकै वह जो दौव है ताव बलदेवजी जीतत भये तब रुक्मी छल करिकै कहत गयो कि ये जीत्यो हो ये मेरे पास के राजा हैं इन वृष्णि लेउ या प्रकार रुक्मी को और बलदेवजी को विवाद होयराखो इतने में आकाशवाणी भई धर्म तें बलदेवजी दौव जीते हैं रुक्मी को वचन मिल्यो है ३२ ३३ नासमय आकाशवाणी को अनादर करिकै दुष्ट राजान ने सिलायो ऐसो जो बिदर्भदेश को राजा रुक्मी है सो बलदेवजी की हासी करत काल को प्रेरयो यह वचन बोलत भयो ३४ गौवन के चराबनवारे बनवासी तुम पासे नहीं लेत जानो हो पाँवेन भूँ और बाणनभूँ राजा खेले हैं तुम पाँवेन से नहीं खेले हैं ३५ या प्रकार रुक्मी ने अनादर जिनको करयो और राजान ने हासी करी



पेसे चलदेवजी क्रोध करिके वेंहो उठाय के भंगवसधा में रुक्मी कूं मारत भये ३६ ता समय भाज्यो जो कलिहृदय को राजा है ताय दशवै पैड पै दारि कै क्रोध करिके जिन दांतन हूं दिव्याय के हौसी करीही तिन दांतनकू चलदेवजी कारि डारत भये ३७ चलदेवजी ने वेंडे सूं मारे याने हाय जिनके टूटे जंघा शिर करि हूं भीने पेले और जे राजा हूं ते भयभीत होयकै भाजतभये ३८ हे राजन् परीक्षित् ! रुक्मी सारो मारो मयो ता समय रुक्मिणी चलदेवके स्नेह दृष्टि के डरके मारे श्रीकृष्ण भली बुगी महुदू नदी कटत भये भली भई यह कहने तौ रुक्मिणी दुगो मानती हुरी यह कहते तौ चलदेवजी बुरो मानते याते चुपही होतभये ३९ श्रीकृष्णचन्द्र है आश्रय जिनके याहीतें सिद्धभये है सम्पूर्ण मनोरथ जिनके पेये राम सूं आदि लैंके यादवह ते नवीनवसुसहित जो अनिरुद्ध है ताय सुन्दर रथमें बैठायकै रुक्मीके भोजकदपुर तें द्वाकापुरीमें आवतभये ४० इति श्रीममहाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धे उत्तराखंडे अनिरुद्धवितापेक्षिपवगोनामैकपट्टितोऽध्यायः ६१ ॥

( द्वियुक्पट्टितमेकपतिरुद्रस्यरोचनम् ॥ कन्याराममाख्यमाख्येनहुहाहुगा ? अनिरुद्धदेहै अन्यस्मिन्माख्ययादवसंयुगे ॥ श्रीकृष्णः श्रीहरीप्रित्वाद्यागमाहून्मायाचिह्ननत् २ वासठवै ज्ञायाय

शमेपदे ॥ दन्तानपातयल्लुद्धोयोऽहसाद्धिद्युनैर्द्विजैः ३७ अन्येनिर्भिन्नवाहसृशिरसोरुधिवेक्षिताः ॥ राजानोदुहुनुर्भीतावलेनपरिघाहिनाः ३८ निहतेरुद्धिम  
णिश्यालेनावर्तारसाध्वसाधुवा ॥ रुक्मिणीवलयोराजवस्नेहगङ्गाभयाद्धरिः ३९ ततोऽनिरुद्धं सहस्रमूर्धन्यायं यत्तमागेय्यमुः कुशस्थलीम् ॥ रामादयो नोज  
वटदशार्हाः सिद्धाखिला र्थागधुमुदनाश्रगाः ४० इति श्रीमद्रामायणे महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तराखंडे अनिरुद्धवितापेक्षिपवगोनामैकपट्टितोऽध्यायः ६१ ॥

राजोवाच ॥ वायस्यतनयाधूपासुपयेमेयदूतमः ॥ तत्रयुद्धमसूद्धेरंहरिशङ्करयोर्मदत्तम् ॥ एतत्सर्वमद्राथोगित् गगारुमातुं तवर्हसि १ ॥ श्रीगुरु उ  
वाच ॥ बाणः पुत्रशत्रुज्येष्ठो बलरासीन्महात्मनः ॥ येन वामनरूपाय हरयेऽदायिमेदिनी २ तस्यौरसः पुनोबाणः शिवभक्तिराः सदा ॥ गान्धोवदान्योवा  
मांश्च सत्यसन्धोऽदुहन्नः ॥ शोषिताख्येपुरे रम्ये सराज्यमक्रोतपुरा ३ तस्यशम्भोः प्रसादेन किङ्कगहवनेऽमराः ॥ सल्लाहुर्वीचेन तारुडोऽनोपयन्मृदुम् ४

में बाणासुर की मन्था से रमण करतेहुये अनिरुद्धजी का बहुत भुजावाले बाणासुरने वन्दन करादियो ? दूसरे अनिरुद्धजी के विचारमें बाणासुर और यादवोंके मुद्रामें श्रीकृष्णजी श्रीपद्मादेव की को भीतर बाणासुर के भुजाओं को काटते भये २ ) अब राजा परीक्षित् कहे हैं कि हे शुक्रदेवजी ! यादवन में उत्तम अनिरुद्धजी बाणासुर की कन्या ऊपाहुं विवाहत भये और विवाहमें श्रीकृष्णचन्द्र और मन्नादेवजी चोर युद्ध होतमयो सो सम्पूर्ण मेरे सम्पूर्ण मेरे सम्पूर्ण रुधिवे कूं योग्यो ? अब श्रीबृकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! विष्णुने जब वामनरूप धारण करि है पृथ्वी मागी तन सम्पूर्ण पृथ्वी जिनने दानकरी ऐले महात्मा राजा बलिके सौ पुत्र होतभये तिन में ज्येष्ठ पुत्र शिवको अत्यन्त भक्त समको गान्धवान् युद्धिमान् गतगङ्गा तल है इत जाओ ऐसो गङ्गासुर नाम करिके होतमयो शोषित नाम करिके रमणीरूप में राज्य करतमयो २ । ३ ता बाणासुर के शिवजी की कृपा वरि है सम्पूर्ण देवता दन्तुगान की तुल्य ठाके रह गक समय तापडव नृत्यमें हजार हाथनसू बाजेहुं वताय शिवजी कूं बाणासुर ने भसवकरथो तव मन प्राणीन के ईश्वर शरस्य भक्ततल्ल भगवान् शिवजी बाणासुरहूं वरदेवे की इच्छा करतभये तन शिवजी

ते तुम मेरे पुरकी रक्षा करो यह घर यागत भयो ४ । ५ पराक्रम मूं दुष्ट है मद जाके ऐसी वाणासुर है सो अपने पास रहै जो शिवजी तिनके चरणारविन्द कूं मूर्य नै सो है तेज जाको ऐसी जो किरीट है तामूं स्पर्श करिकै एक समय बोलत भयो ६ हे लोकन के गुरुः पर महादेव ! नहीं भये हैं पूर्ण मनोरथ जिन के ऐसे जे पुरुष हैं तिनके मनोरथन के पूर्ण करनारे दलदल रूप जो तुम हो तिनकूं नमस्कार है ७ और हे देव ! तुमने हजार भुजा गोकुं हीनी हैं इनको अवतरु केवल बोझही भयो है याने तिलोकी में तुम्हारे बिना और कोई गोकुं तरावर को युद्ध करिबेदू नहीं मिले है ८ खुजली जिन में चली ऐसी भुजान मूं युद्ध करिये के लिये है सम्पूर्ण के कारण शिवजी ! मैं पर्वतन कूं चूर्ण करत दिशान के हाथी है तिनके पास जानभयो तन मेरे भयके मारे बेभी दिशान कूं छोड़िके भागत भये ९ या प्रकार ता वाणासुर को वचन सुनिकै भगवान् शिवजी कोय करिकै फइतभये दे मूढ़ ! जा समय तेरी अगा दृष्टी ता समय मेरी वरावरिके नूं तेरो युद्ध होयगो १०

भगवान् सर्वभूतेशः शररयो भक्तवत्सलः ॥ वरेण च्छन्दयामास सनं वज्रे पुराऽधिपम् ५ स ए रुद्राऽऽह गिरिं पार्वर्यथ धीर्य दुर्मदः ॥ किरिटेनार्कियै न सं स्पृशंस्तपदाऽमुजम् ६ न सस्येत्तां महादेव लोकानां गुरुभीश्वरम् ॥ पुंममपूर्व कामानां कामपूरागराङ्घ्रिषु ७ दोः सहसंस्तयादत्तं परं भाराय मेऽभवत् ॥ त्रिलोक्यां प्रति योद्धारं न लेभेत्सहने सपम् ८ रुद्रस्यानिर्भेदो भिर्युत्सुर्दिग्गजानहम् ॥ आद्यायां चूर्णयन्नदीन् भीतास्तेऽपि प्रहृष्टवुः ९ तच्छ्रुत्वा भगवा न्क्रुद्धः केतुस्ते भज्यते यदा ॥ त्वद्वर्षं न भवेन्मूढांगं मत्प्रमेनेते १० इत्युक्त्वा कुमदिहृष्टः स्वगृहं प्राविश द्रुव ॥ प्रतीक्षन् गिरिशादेशं स्ववीर्यनशनं कुधीः ११ तस्योपानामद्वहिता स्वमेपाद्युस्मिनरतिम् ॥ कन्याऽसुभतकान्तेन प्रागदृष्टु नेन सा १२ सानन्नमपश्यन् पीक्षासि कान्तेति वादिनी ॥ सखीनां गम्य उत्तस्थौ विह्वलाग्नीडिताभुशम् १३ बाणरयमन्त्रीकुम्भाग्रद्विभ्रजलेखाचतसृता ॥ सख्यपृच्छन्त सखीसूपां कौतूहलमसन्विता १४ नंतं वं मुगयसे मुञ्चः कीदृशस्ते मनोरथः ॥ हस्तग्रहं न तेऽद्यापि राजपुत्रयुपलक्षये १५ ॥ उपो नाच ॥ दृष्टः कश्चिन्नारः स्वप्ने श्यामः कमललोचनः ॥ पीतवासा बृहद्ग्राहुर्योऽपि तां हृदय

हे राजन् परीक्षित ! शिवजी ने या प्रकार जातें कही ऐसी कुबुद्धि वाणासुर अपने घर कू जात भयो और अपना बल उद्धि पराक्रम को है नाश जामें ऐसी शिवजी की आज्ञा है ताको पैड़ो देते है ? १ ऊपा है नाम जाको ऐसी वाणासुर की कन्या है सो अपनी कन्यापन की अयस्या में स्वममें प्रधुम्नजी के पुन अनिरुद्ध के सज रति पावति भई कैसे अनिरुद्ध है प्रथम कपजं देते हैं न मुने हैं ? २ पीछे ऊपा तथा अनिरुद्ध कूं नहीं देखिकै बड़ी छडिजत होयकै हे ज्ञान ! तुम कहागये या प्रकार पुकारति विदल होयकै समीनके बीचमें गिरति भई ? ३ वाणासुर को मन्त्री जो कुम्भाग्रद्व है ताकी पुत्री चित्र लेखा सखी है सो आश्चर्य मानिकै अपनी सखी ऊपा मूं पूछति भई १४ हे सुभु अर्थात् सुन्दर हैं भृकुटी जाकी ऐसी ! हे ऊपा ! तू कौन कू देखे है और तेरो कैसो मनोरथ है हे राजाजी पुत्री ! तेरे हाथ को पकरन वारो पति है ताप अतक मैं नहीं देख हू पति पति तूं कैसे पुकारति है १५ या प्रकार चित्रलेखा को वचन सुनिकै ऊपा बोलति भई सावरो स्वरूप कमल से हैं नेत्र जाके पीताम्बर कू

पाहिरे वही है भुजा जाकी स्त्रीनकुं मनोहर ऐसी पुरुष स्वसममेने देख्यो है १६ वह जो कान्त है ताय मैं दूँदूँ आपनो अधराभुत प्याइकै इच्छा जाके वनी रही ऐसी जो मैं हू ताय दुःस के समुद्र में पटकिकै वृद्ध चलयो गयो १७ यह वचन सुनिकै चित्रलेखा बोली है ऊपा ! तेरो दुःख मैं दूरि कलंगी जा पुरुष ने तेरो मन हरयो है वह जो त्रिलोकी में गहूँ होइगो तो ले आऊँगी परन्तु वाइ बताय दे १८ चित्रलेखा इतनो कहिकै देवता गन्धर्व सिद्ध चारण पन्नग इनके चित्र लिखति भई दैत्य विद्याधर यक्ष मनुष्य इन सबहुँ लिखति भई १९ और मनुष्यन में यादवन के चित्र लिखति भई गुरुभेन को चित्र तथा वसुदेवको बलदेवजी को तथा कृष्ण और प्रद्युम्नजीको चित्रलिखति भई जब प्रद्युम्नजी को चित्र ऊपाने देख्यो तब तो श्वशुर जानिकै लज्जित होति भई २० गुरुदेवजी कहे हैं हे पृथ्वीपति राजा परीक्षित ! अनिरुद्ध कुं लिख्यो देखिकै लाज सू नीचे कुं है मुख जाको ऐसी ऊपा भरे मनको हसनवारो पुरुष यही है ऐसे मुसिकायकै सखीत कहति भई २१

ज्ञमः १६ तमहंमृगयेकान्तं पार्ययत्वाऽग्रंमधु ॥ कपियातःस्पृहयतीक्षित्वामांघ्रिजिनाण्वे १७ ॥ चित्रलेखोवाच ॥ व्यसनंतेऽपकर्षामि त्रिलोक्यांयदि भाव्यते । तमानेष्येनरंयस्ते मनोहर्त्तातमादिश १८ इत्युक्त्वादेवगन्धर्वसिद्धचारणपन्नगान् ॥ दैत्यविद्याधरान्यक्षान् मनुजान्श्चयथाऽलिखत् १९ मनु जेपुचसावृष्णीञ्चदूरमानकडुन्डुभिम् ॥ व्यलिखद्दामकृष्णौ च प्रद्युम्नवीक्ष्यलज्जिता २० अनिरुद्धबिलिखितंवीक्ष्योपाऽवाञ्छुखीह्रिया ॥ सोऽसावसावितिप्रा हस्मयमानामधीपते २१ चित्रलेखातमाज्ञायपौत्रं कृष्णस्ययोगिनी ॥ ययौविहायसाराजनृद्धारंकारं कृष्णपालिताम् २२ तत्रमुसंमुपस्थङ्के प्राद्युम्निगमास्थिता ॥ गृहीत्वाशोणितपुरं सख्यैर्मियमदर्शयत् २३ सात्रतमुन्दरं विलोक्यमुदितानना ॥ दुष्प्रेक्ष्येस्वगृहेपुम्भी रेमेप्राद्युम्निनासयम् २४ परार्थवासः स्वगन्धधूपदीपासनादिभिः ॥ पानभोजनभक्ष्यैश्च वाक्यैः शुश्रूषयाऽर्चितः २५ गूढः कन्यापुरेशश्चतप्रवृद्धस्नेहयातया ॥ नाहर्गणान्मधुबुधे उपयाऽपहनेन्द्रियः २६ तांनथायद्वीरेण भुजमानंहितव्रताम् ॥ हेतुभिर्वक्ष्याम्यक्रुप्रीतां दुस्वच्छदेः २७ भटाओवेदयाश्चक्रुर्गजंस्तेदुहितुर्वयम् ॥ विचेष्टितंलक्षयाधः

योगीको है बल जाकुं ऐसी चित्रलेखा है सो ताय श्रीकृष्णचन्द्रको नाती जानिकै आकाशमार्ग होयकै हे राजन् परीक्षित ! कृष्ण जाको पालनकर ऐसी द्वारकापुरीमें जातभई २२ योगीको आश्रयलैकै चित्रलेखा है सो द्वारकापुरी में पलंग के ऊपर सोवै ऐसे जे अनिरुद्ध हैं तिन शोणितपुरमें लायकै सखी जो ऊपाहै ताय धारै कुं दिलावति भई २३ सुन्दर वर जो अनिरुद्ध है ताई देखिकै प्रसन्न है मुग्न जाको ऐसी जो ऊपाहै सो पुरुष के देखिये में न आवै ऐसी जो अपनो घर है तामें अनिरुद्ध के संग रमण करति भई २४ वड़े मोलके बख्त, माला, सुगन्ध, धूप, दीप, आसन इत्यादिकन सू और पीवे की सामग्री तथा भोजन और भक्षण वचनन सं पूजन करति भई २५ ऐसे अनिरुद्धजी कन्याके पुरमें छिपकै निरन्तर वृद्धो है स्नेह जाको ऐसी जो ऊपाहै ताने ठरी है इन्द्रिय जिन की ऐसे अनिरुद्धजी मोहित होइकै वास करत कितने दिन रात्रि चले जाइ हैं ऐसे नहीं जानत भये २६ यादवन में घोर जो अनिरुद्ध है ताने भोगी याही तें दूरिभयो है कन्यापन को व्रत जाको अरगन्तु भसव ऐसी जो ऊपाहै ताके छिपाइये में न आवै ऐसे जो कारण हैं तिनकुं देखिके प्यादेहैं ते वाणामसुसं आइकै कहतभये २७ हे राजन् वाणामसुर ! कन्याके कुलकुं दोष लगानवारो कुतस्त

तुम्हारी कन्या वो चलने के साथ हम देखे है २८ हे समय वाणासुर ! हम सावधान होइ के घर के भीतर कोई पुरुष जाकू देखिन सकै या प्रकार जाकी रखवारी करी ऐसी कन्या के दोपकू नहीं जाने है कहीं तें होयगयो है २९ कन्या को दोप जाने सुन्यो याते बड़ो दुःख जाके ऐसो वाणासुर शीघ्रही कन्या के घरमें जायकै यादवन में उत्तम जे अनिरुद्ध है तिनकू देखत भयो ३० कामदेव के पुत्र त्रिभुवन में एक सुन्दर श्यामस्वरूप पीताम्बर कू पहिरे कमल से नेत्र बड़ी जिनकी युजा काननमें कुण्डल और केश जिनकी कान्ति सूं और मुसिकानिपूर्वक चितवनि सूं शोभायमान जिनको मुख ३१ सब ओर तें मङ्गलरूप जो प्यारी है ताके सङ्ग पासे खेलै हैं ता प्यारी के अङ्ग सङ्ग सूं स्तन की केसरि जामें लगी ऐसी जो वसन्तऋतु की चमेली की माला है ताय पहिरे ऐसे जे अनिरुद्ध है तिन ऊपर के आगे बैठे देखिकै आश्चर्य मानत भयो ३२ शत्रून कू लिये अनेक प्यादेन सहित आयो जो वाणासुर है ताय देखिकै मधुवंशोत्पन्न अनिरुद्धजी लोइ को बड़ो उठाय के मारिरे के कन्यायाः कुलदूषणम् २८ अनपायिभिरमाभिर्गुप्तायाश्च गृहेभ्यो ॥ कन्यायादूषणं पुमिर्दुष्प्रेक्ष्यानविज्ञहे २९ नतः प्रव्यथितो वाणो दुहितुः श्रुतदूषणः ॥

तरितः कन्यकागारं प्राप्तो द्वाक्षीद्यदूहम् ३० कामात्मजं तं भुवनैकमुन्दरं यामं पिशङ्गाभ्वरमम्बुजक्षणम् ॥ बृहदुजंकुण्डलकुन्तलत्विपास्मितावलोकनं चमण्डिताननम् ३१ दीव्यन्तमक्षैः प्रियया भिनृणया तदङ्गसङ्गस्तनकुङ्कुमस्रजम् ॥ बाहोर्दधानं मधुमाल्लिकाश्रितां तस्याग्रआसीनमेक्षविस्मितः ३२ सतंप्रविष्टुनमाततायिभिर्भैरवोऽरुवलोक्तयमाधवः ॥ उद्यम्यमूर्ध्वपरिधंवस्थितो यथान्तकोदण्डधरो जिघांसया ३३ जिघृक्षया तान्परितः प्रसर्पतः शुनो यथासूकरयूथपोऽइनत् ॥ तेहन्यमाना भवनाद्धिनिर्गता निर्भिन्नमूर्द्धोरुभुजाः प्रदुदुबुः ३४ तं नागपार्श्वे लिनन्दनो वलीघ्नन्तं स्वसैन्यं कुपितो बन्धवह ॥ ऊपाभृशं शोकविपादाविबलवद्धं निशम्याश्रुफलाक्ष्यरौ दिपत् ३५ इति श्रीमद्भगवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे अनिरुद्धवन्धनो नामाद्विपश्चित्तमोऽध्यायः ६२ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ अपश्यतां चानिरुद्धं तद्वन्धूनां च भारत ॥ चत्वारो वापि क्रमासावतीयुस्तुशोचताम् १ नारदात्तदुपाकर्ण्य वार्तावद्धस्य कर्म च ॥

लिये जैसे दण्ड कू धारण करिकै काल दौरै है तैसे ठाढ़े होत भये ३३ पकरि के लिये चारथो ओर तें चले आवैं ऐसे जो प्यादे है तिनै सूकरन के यूथको पालन करनवारो जो मुख्य सूकर है सो जैसे कुत्ता कू मारे है ऐसे मारत भये मार जिनकू दीनी याही तें दूढ़े हैं भाये ऊरु भुजा जिनकी ऐसे जे प्यादे हैं ते निकसिके भाजत भये ३४ राजा बलि कू आनन्द को देनवारो ऐसो जो बली वाणासुर है सो क्रोध करिकै अपनी सेना कू मारै जो अनिरुद्ध है ताय रस्सान तें बाधत भयो ता समय अरन्त जो शोक और खेद तिनसूं व्याकुल आम् जाके नेत्रनमें आयगये ऐसी जो ऊपा है सो वैं अनिरुद्धजी कू देखिकै रोवति भई ३५ इति श्रीमन्महाभागवतार्थकृष्णयां दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे अनिरुद्धवन्धनो नामाद्विपश्चित्तमोऽध्यायः ६२ ॥ \* ॥

( त्रिपुरुषपठितमेवाथवाणयाटनसङ्गरे ॥ स्तुतिज्वरेण रुद्रेण वाणवाहूभिर्दोहरेः १ तिरसठवें अध्याय में वाणासुर और यादवों के युद्धमें महादेवजी के डरसूं वाण सुर की भुजा काटनेवाले कृष्णजी की स्तुति वर्णित है १ ) अथ श्रीशुवद्वंजी कहे है हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित ! अनिरुद्ध के देखे बिना भय्या बन्धुन कू शोच करत क्यों करत क्यों ? ता समय

नारदजी तें अनिरुद्धजी के दन्धनसौ ६ मी और बात सप्त श्रवण करिके श्रीकृष्णचन्द्र हे देवता जिनके ऐसे जे यादव हे ते बाणासुर के शोखितपुत्र के जात भये २ भयुक्त युयुधान गद्ग साभ्य सारण नन्द उपनन्द और भद्रा तें आदित्यके रामकृष्ण के आज्ञाकारी मुख्य मुख्य यादव हे ते सम्पूर्ण मिलिके बारह अक्षौहिणी सेना संग नागानुर के पुर कूं चाख्यो और ते लेमतभये ३ । ४ यादवन ने बाणासुर के पुर के तोड़े जो बाग परकोटा अंदागी दरवाजे तिनकूं देविके क्रोधमें भरिके बारह अक्षौहिणी सेनालैके बाणासुर निकसतभयो ५ बाणासुर के लिये आगे पुत्र ने स्कन्द हे तिनकूं और गयानकूं सङ्गलैके नादिया पै चढिके रामकृष्ण तें युद्ध करिये के लिये भगवान्शिवजी आयके प्राण होतभये ६ दे राजन् परीक्षित ! श्रीकृष्णचन्द्र और शिवजी से बडो भयानक और युद्ध होतभयो कैसो रोवाञ्च ठाढ़े होई ऐसो आश्चर्य युद्ध होतभयो और मधुमक्षो स्वागिकार्थिक को युद्ध होत भयो ७ कुम्भापट और कूर्मर्षी ओ युद्ध लडेवकी के सप्तभयो श्रीकृष्ण

प्रययः शोषितपूरं वृष्णयः कृष्णदेवताः २ प्रद्युम्नो युयुवागश्च गद्गः मास्वोऽवसारणः ॥ नन्दोपनन्दश्च द्यागमकृष्णानुमर्त्तिनः ३ अक्षौहिणीभिर्दादराभिः समेताः सर्वतोदिशम् ॥ रुधुर्नाणनगरं समन्तात्सात्वतर्षभाः ४ मज्यमानपुरोद्यानमाकाराह्वलगोपुरम् ॥ भक्षमाणोरुमादित्यस्तुल्यैस्तेन्योऽभिनिययौ ५ बाणैर्भगवान्छुद्रः समुनैः प्रमथैर्हतः ॥ आरुहानन्दिवृषमं युधुधेरामकृष्णयोः ६ आसीरस्तुमुलं युद्धमश्नुनरोमहर्षणम् ॥ कृष्णशङ्करयोरानजन् प्रद्युम्नगुहयोरपि ७ कुम्भाशङ्कुकपक्वण्भिर्पां बलेन सहसंयुगः ॥ साम्भ्यस्यबाणपुत्रेण बाणेन सहसात्यकेऽनन्तादयः सुराधीशामुनयः सिद्धचारणाः ॥ गन्धर्वाप्सरसोयक्षाविमानैर्द्रुमाग्रमन् ८ शङ्करानुचराञ्छौरिर्मृतप्रमथगुह्यागन् ॥ डाकिनीयातुधानांश्च वेतालान्ममविनायकान् १० प्रेतमातृपिशाचांश्च कूष्माण्डान् चक्रराक्षमान् ॥ द्रावयामासतीक्ष्णाग्निः शरैः शार्ङ्गधनुश्च्युतैः ११ पृथग्विधानि प्रायुक्तं पिनाकयस्त्राणि शाङ्गिणे ॥ प्रत्यक्षैः शंभयामास शाङ्गिपाणिर्विस्मितः १२ ब्रह्मास्त्रस्य च ब्रह्मास्त्रं वायव्यस्य च पार्वतम् ॥ आग्नेयस्य च पर्जन्यं नैजं पाशुपतस्य च १३ मोहयित्वा तु गिरिशं जृम्भणस्त्रिणजृ

के पुन साम्भ्य को बाणासुर के पुत्रके सङ्ग होतभयो और नाणासुर को सात्यकी के सङ्ग युद्धभयो ८ देवतान में मुख्य जे ब्रह्मादिक हे ते और मुनि सिद्ध चारण गन्धर्व असुर यज्ञ ये सम्पूर्ण विमानन में वैठिके युद्ध देखिये कूं आहतभये ९ ता समय शङ्कर महादेवके अनुचर जे भूत प्रेत गुप्तक डाकिनी यातुधान वेताल विनायक प्रेतमातृ पिशाच कूष्माण्ड ब्रह्मराक्षस इन सा के शूरवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र अपने शार्ङ्ग धनुष में तें निहासि के पैनी हे भाल जिनकी ऐसे बाणगूं भजावत भये १० । ११ पिनाक नाम धनुष है विद्यमान जिनके ऐसे शिवजी श्रीकृष्णचन्द्रके ऊपर न्यारे न्यारे शस्त्र चलावतभये नहीं है आरचर्य जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शिवजी कूं परागिरि के स्थान में शान्त करतभये १२ शिवने ब्रह्मास्त्र चलायो ताहूं ब्रह्मास्त्र तें शान् करतभये जन वायु है देवता जाको ऐसो अस्त्र शिवजीने चलायो तब श्रीकृष्णचन्द्र पर्वतहै देवता जाको ऐसे अस्त्र कूं चलावत भये ता समय धूमिगयो परचत् अग्नि है देवता जाको ऐसे अस्त्र कूं चलायकै शिवजी अग्नि लगावत भये ता समय श्रीकृष्णचन्द्र पैमहै देवता जाको ऐसे अस्त्र कूं चलायते येन वरसाय के अग्नि कूं गान्त करतभये फेर शिवजी अग्नो पाशुपत पर चलायत

भये तां श्रुत्वा चन्द्र अपने नारायणाल सं शान्त करतभये १३ फेरि श्री कृष्णचन्द्र ने जृम्भणात् चलायो तां शिवजी जम्भार्द्धलाई तासूं मोहित करि कै वाणासुरकी सेनाई तरवारि गदा नखान  
मारतभये १४ मयुजजी के वाणन के समूहन तें चाम्यो ओर तें भीड़ित ऐसी जो रमायिका विवेक है सो अपने अङ्गन में तें लखिर वहावत वाहन जो मोर है तांई भजाय कै रथमें तें भाजत भयो  
असहगता जो के ऐसी रथी वाणासुर है सो संग्राम में सात्यकी याद के खोडि के श्री कृष्णचन्द्र के सम्मुख आगतभयो १७ रथमें वडो है गद जा के ऐसी वाणासुर ५०० पञ्चशत धनुष कूं एक सग  
नैचि के पृत्त पत्त मृगु पैं दो दो वाण लगावत भयो १८ ता समय भगवान् श्री कृष्णचन्द्र वाणासुर के ५०० पञ्चशत धनुष कूं एक सग अथवा ५०० पञ्चशत धनुष कूं एक सग  
स्मिन्नम् ॥ वाणस्पृष्टनानां शौरिर्जघाना गिगदेपुभिः १४ रक्तदः प्रहृष्टवाणैर्घोर्घातमानः समन्ततः ॥ असृग्विमुञ्चन् गजैर्भयः शिलिनाऽप्याक्रमद्वयात् १५  
कुम्भारडः कृप कर्णश्च पेततुर्मुमलाहितौ ॥ डडुवस्तदनी कानि हत चाथानि सर्वतः १६ विशीर्यमाणं स्रवणं दद्वानाणोऽयमर्पणः ॥ कृष्णगम्यहनत्पक्ष्ये  
रथीहितैव सारयकिम् १७ धनुं ग्राह्ययुगपद्वाणः पञ्चशतानि ॥ एकैस्मिञ्चरौ दौढौ सन्दधेरण्डुर्मदः १८ तुगेऽतस्त्वेकृणस्य पुत्रप्राणरिक्षया २० तवस्तिर्यङ्मुखो  
रिः ॥ सारिंरथमश्वांश्च हत्वा शस्त्रमपूरयत् १९ तन्माता कोटगनाम नगनामुक्रशिरोरुहा ॥ पुगेऽतस्त्वेकृणस्य पुत्रप्राणरिक्षया २० तवस्तिर्यङ्मुखो  
नगनागनिरीक्षन् गदाग्रजः ॥ वाणश्च तावद्विशिखन्नयन्वाऽविशत्पुंसम् ॥ माहेश्वरो वैष्णवश्च युयुभतेज्जरावुगौ २३ माहेश्वरः समाकन्दन् वैष्णवेन वलाहितः ॥ अलङ्घ्या  
शोदश २२ अथ नारायणो देवस्त्वं दद्वान् व्यसृज्ज्वरम् ॥ शरणाभीहृषीकेशं तुष्टावप्रयताञ्जलिः २४ ॥ ज्वर उवाच ॥ नमामित्वाऽनन्तशक्तिपरे शं सर्वान्मानं हेवलं क्षिमाञ्जय ॥ नि  
ऽभयमन्यत्र भीनो माहेश्वरो ज्वरः ॥ शरणाभीहृषीकेशं तुष्टावप्रयताञ्जलिः २४ ॥ ज्वर उवाच ॥ नमामित्वाऽनन्तशक्तिपरे शं सर्वान्मानं हेवलं क्षिमाञ्जय ॥ नि  
योडानकं गारिकै रयकं तोरि कै जीतको शय् रजागतभये १९ ता समय कोटराई नाम जाको ऐसी जो वाणासुर की माता है सो अपने केशनकू खोलि कै नङ्गी होय कै पुत्र के माण वचायने के लिये  
श्री कृष्णचन्द्र के सम्मुख दाही होति भई २० नङ्गी खीकूं शस्त्रमें देखि को मन है या मारण श्री कृष्णचन्द्र मुख फेरि कै वाडे होतभये इतने में दूखो है रथ जाको दूखो है धनुज जाको ऐसी वाणासुर  
रणमें तें भाजि कै पुरों जागतभयो २१ भूतन के गण जा समय भाजि गये तम तीनों हैं शिर जाके और तीनि हैं पाय जाके ऐसी जो ज्वर है सो दशो दिशान में जरावत दाण्डें शोत्पन्न जो श्री कृष्णचन्द्र  
हुइ तरतभये २३ विष्णु के शीतजग ने चलते पीडा जाकूं दीनी ऐसी जो शिवजी को तप्तज्वर है सो रोदन करत भयभीत होय कै अपनी रक्षा के अर्थ और कोई निर्भय स्थान नहीं पाय के परग  
पा नगीहो कर हाथ जोरि कै श्री कृष्णचन्द्र की स्तुति करतभयो २५ अतन्व है शक्ति जिन भी ब्रह्मादिकन के ईश्वर सग के आत्मा तुम्ह चैतन्यमय विश्व के उत्तमोत्तम पालन संहार करनगारे



ऐसे जे तुमहौ तिनकुं नमस्तार करू हूँ विश्व को उत्तमोदन पालन संहार ब्रह्म ते होय है मोतें नहीं जो ऐसे श्रीकृष्ण कहैं ताको उत्तर उवर देइ है वेद जाको वर्णन करै ऐसो जो ब्रह्म है सो तुमहीं ही सर्वविकार रहित हो य तें रुढ़िबे में नहीं आबो हो २५ काल दैव कर्म जीव स्वभाव द्रव्य स्पर्श रूप रस गन्ध शरीर प्राण अहङ्कार विचार अर्थात् ग्यारह इन्द्रिय और पञ्चमहाभूत अर्थात् पृथ्वी अप तेज वायु आकाश इन तत्त्वनको बनो यद् देह है सो जैसे बीज तें अंकुर फेरि बीज होइ है या प्रकार कर्मन तें देह फेरि देह तें कर्म फेरि कर्मन तें देह ऐसे जलनो सो प्रवाह चल्यो जाय है यही तुम्हरी माया है ताके निषेय के अवशिष्टो अर्थात् माया जिनमें नहीं ऐसे तुमहीं तिनकी शरण में आयो हूँ २६ कदाचित् कहो कि मैं देवकी को पुत्रहौ ऐसो मो में कैसे बने है ताको उत्तर महे है लीला करि मैं मत्स्यादिक अवतारनकुं लै के देवतान को पालनकरो हौ तथा वर्णोश्रम के धर्मन कूं पालन करो हौ और धर्म के करनवार जे साधु हैं तिनको पालन करो हौ हिसासहित जो पापमार्ग हैं तिनको नाशकरो हौ या कारण पृथ्वी को बोझ उतारिबे के लिये तुम्हरो जन्म है २७ शान्ति करिबे कूं आवै शीतल उग्र अत्यन्त भयानक जो तुम्हरो

पलन करो हो हिंसासहित जो पापमार्ग हैं तिनको नाशकरो दो या कारण पृथक् को बंध उतारन कालेन तु

श्वे त्पत्तिस्थानसंग्रहेतुं यत्तद्ब्रह्मब्रह्मालिङ्गं प्रशान्तम् २५ कालादेवकमेजाविःस्वर्गावादिद्वयक्षत्राणि जात्यानि च भूतानि तेषामन्तर्यामी ज्ञात्मा विभक्तोऽन्यथा ॥ अस्मिन्नेतच्छ्रौतेषु ॥  
तन्निर्णयप्रपद्ये २६ नाना भावैर्लोचनैर्वोपपन्नैर्देवान् माधूल्लोकसेतून् विभर्षि ॥ हंस्युन्माग्नाहिंसया वर्तमानाञ्जन्मैतत्ते भारहरारायभूपेः २७ ततोऽहं ते जसा  
दुःसहेन शान्तो ब्रेणात्यलघेन जरेण ॥ तावत्तापो देहि नां ऽङ्घ्रिमूलं नो सेनैर्न यावदाशानुबद्धाः २८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ त्रिशिरस्ते प्रसन्नोऽस्मि व्येतु  
ते मज्जवराद्रुक् ॥ योगौ स्मरति संवादं तस्य त्वन्न भवेद्भयम् २९ इत्युक्तोऽव्युत्तमानम्य गतो माहेश्वरोजरः ॥ बाणस्तुरथमारुढः प्रागाद्योत्सृज्य तार्दनम्  
३० ततो वाहुसहस्रेण नानायुधयोऽपुरः ॥ सुमोच परमक्रुद्धो बाणांश्चक्रायुधेषु ३१ तस्यास्य तोऽस्त्रारण्यसमृच्चक्रेण क्षुरनेभिना ॥ चिच्छेद्भागवान् महू  
३२ ततोऽहं ते जसा

तुम विषेभये परब्रह्महौ और उयोति सूर्यादिकनके तुम प्रकाश करनवारे यातें काहू के जानिये में नहीं आयेहौ कदाचित् कहो तो कैसे प्रतीत होय है तहां शिवजी कहे हैं निर्मल हैं मन जिन के ऐसे पुरुष आकाशकी तुल्य निलेप निर्गुण तुम देखे हैं ३४ क्यों जी निर्गुण को ज्ञान तो रहो तब शिवजी कहे हैं लीला करिके तुमने आश्रय करयो जो ब्रह्माण्ड है सो भी जानिये में नहीं आवे है जैसे गूलरके फल के भीतर रहें जे जीवहैं ते गूलरके फलकूं नहीं जाने हैं तैसे या अभिमाय से ब्रह्माण्ड रूप करिके शिवजी स्तुति करे हैं आकाश तुम्हारी नाभिहै अतिन तुम्हारी मुखहै जल तुम्हारी वीर्यहै स्वर्ग तुम्हारी शिरहै दिशा तुम्हारे कान हैं पृथ्वी तुम्हारे चरणहै चन्द्रमा मनहै और सूर्य तुम्हारे नेत्र हैं में शिव तुम्हारी आत्माहै समुद्र तुम्हारी उदर है इन्द्र तुम्हारी मुखा हैं ३५ वृत्त जिनके रोमहैं मेघ केशहैं ब्रह्मा जिनकी बुद्धिहै प्रजापति लिङ्ग है धर्म जिनको हृदय है लोकन करिके कल्याण करिये में आवो ऐसे तुम पुरुष हो ३६ सो हे अलण्डरूप ! यह तुम्हारी अतार धर्म की रक्षा करिये के कारण और जगत् के कल्याणके निमित्त है और पालन जिनको तुमने कियो ऐसे हग सप्तलोकन को पालन करे हैं ३७ जाग्रत् स्वम सुषुप्ति

ह्यणिवाद्ये ॥ यंपश्यन्त्यमलात्मानआकाशमिवकेवलम् ३४ नाभिर्नभोऽग्निर्मुखमम्बुतोद्यौःशीर्षमाशाःश्रुतिरङ्घ्रिर्बुधौ ॥ चन्द्रोमनोयस्यहृगर्कञ्चात्मा अहंसमुद्रोजठंभुजेन्द्रः ३५ रोमाणि यस्यौपधयोऽम्बुवाहाः केशाविस्त्रिधिविषणोविसर्गः ॥ प्रजापतिर्हृदयस्यधर्मः सवैभवात्पुरुषोलोककल्पः ३६ तवावतारोऽयमकुण्डधामन् धर्मस्यगुणैर्यजगतोभवाय ॥ वयञ्चसर्वेभवतानुभाविता विभावयामोभुवनानिसप्त ३७ त्वमेकआद्यःपुरुषोऽद्वितीयस्तुभ्यः स्वहृग्धेतुरहेतुरीशः ॥ प्रतीयसेऽथापियथाविकारं स्वमाययासर्वगुणप्रसिद्धौ ३८ यन्मायामोहितधियः पुत्रदागृहादिषु ॥ उन्मज्जन्तिनिमज्जन्ति प्रसङ्गावृजिनार्णवे ३९ देवगुणेनापिहितोगुणांस्त्वमात्मपदीपोगुणिनश्चभूमन् ३६ यन्मायामोहितधियः पुत्रदागृहादिषु ॥ उन्मज्जन्तिनिमज्जन्ति प्रसङ्गावृजिनार्णवे ३९ देवदत्तमिमलब्ध्वा नृलोकमजितेन्द्रियः ॥ योनाद्रियेतत्पदादौ सशोच्योह्यात्मवञ्चकः ४१ यस्त्वाविमृजतेमर्त्यआत्मानंप्रियमीश्वरम् ॥ विपर्ययेन्द्रियार्थाधि

तीन हैं अवस्था जिनकी ऐसे जे पुरुष है तिनके तुम कारणहौ और शुद्धहौ याही तें अद्वितीय पुरुष हौ और सन विश्वके कारण हौ आप कारण करिके रहितहौ तथापि सम्पूर्ण विषय है तिनके प्रकाश करिये के लिये अपनी माया करिके जैसे जो देह तामें तैसेही प्रतीत होउही ३८ अपनी व्याख्या जो वादर हैं तिन सों मनुष्यन कूं दृष्टि करिके दृश्यो जो सूर्य है सो वादरन कूं प्रकाशे है और वादरनके वाहर रूप हैं तिनकूं प्रकाशे है हे भूमन् ! या प्रकार अहङ्कार जो अग्नो कार्य है तामूं जीवनके देखिये में दृके जो तुमहो सो प्रकाशो हौ सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुणहैं तिनमें और जे गुणहैं जगधि जिनकूं ऐसे जे जीवहैं तिनकूं प्रकाशो हौ ३६ जिनकी माया करिके मोहित हैं बुद्धि जिनकी ऐसे पुरुष हैं ते पुत्र स्त्री शुशालिकन में अटकिके दुःखरूपी समुद्र में डकरे दूधे हैं देवादिक योनिन कूं पावें हैं यह डकरनो है और वृत्तादिक योनिनकूं पावें हैं यह डूबनो है ४० ईश्वरने दीनी जो मनुष्य योनि है तांय प्राप्त होयकें नहीं जीती हैं इन्द्रिय जाने ऐसे पुरुष तुम्हारे चरणनको आदर नहीं करेहैं वह पुरुष शोच करिये योग्यहै और आत्माको उगनवारो है ४१ प्यारे पुत्रादिकन के लिये जो पुरुष प्यारे जो तुम आत्मा हौ तिनकूं

त्यागो है वह पुरुष अमृतहूँ त्यागिकै निपकूँ पीवै है ४२ मैं शिव और ब्रह्मा देवता तथा निर्मल हैं अन्तःकरण जिनके ऐसे मुनि हैं ते आत्मा प्यारे जो ईश्वर तुमहो तिनकी सब प्रकार करिकै शरण प्राप्त भये है ४३ जगत् के उत्पत्ति पालन नाश इनके कामग और सबमें समान शान्तस्वरूप हितकारी आत्मा ईश्वर अनन्य और कोई बसविरि जिनकी नहीं बड़ो कोई नहीं जगत् के आत्मा आश्रय ऐसे जो तुमहें यही तिनैं संसार त्यागिवैके लिये हम भजे हैं ४४ हे प्रकाशमान ! यह वाणसुर मोकूँ वाञ्छित है मेरी प्यारी है आत्मागी है मैंने याहूँ अभय दीनो है यातैं जैसी तुम्हारी दैत्यन के पति प्रह्लाद के ऊपर छुपावै ऐसी याके ऊपर छुपा करौ ४५ तब श्रीभगवान् कृष्णजी बोले हे शिवजी ! तुम हमतैं कहौ सो तुम्हारी प्रिय हम करेगे तुमने जो निश्चय करयो सो हमने भले प्रकार मान्यो ४६ विरोचक के पुत्र राजा बलि तिनको पुत्र यह वाणसुर है सो मारिवे योग्य नहीं है कोहे ते मैंने प्रह्लाद को वर दीनो है कि तेरे वश में जो होयगो ताकूँ मैं

विप्रमत्तयुतं त्यजन् ४२ अहं ब्रह्माऽथ विबुधा मुनयश्चागलाशयाः ॥ सर्वोत्तमाना प्रपन्नास्त्वामात्मानं प्रेष्ठमीश्वरम् ४३ तं त्वाजगत्स्थित्यदुद्यान्तं हेतुं समप्रशा-  
न्तं मुहुदात्मदैवम् ॥ अनन्यमेकं जगदात्मकैर्न भ्रातृवर्गोऽपि भजामदेवम् ४४ अग्रं मेष्टोदयितोऽनुवर्त्ती मयाऽभयं दत्तमस्य देव ॥ स स्याद्यतांतं ह्रवतः प्रसा-  
दो यथाहितं दैत्यपतौ प्रसारः ४५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यद्वाऽऽस्त्य भगवंस्त्वन्नः कस्यामपि यंतव ॥ भवतो यद्व्यवसिनं तन्मे साधनुमो दिनम् ४६ अवध्योऽयं  
ममाग्रे पर्वैरोचनिसुतोऽसुरः ॥ प्रह्लादाय वरोदचो न वध्यो गे तवान्नयः ४७ दर्पोऽपि शमनायास्य प्रवृक्णावाहवो मया ॥ सूदितं च वलं भूरि यच्च भारा यितं भुवः  
४८ चत्वारोऽस्य भुजाः शिष्टा भविष्यन्त्य जराधराः ॥ पार्षदमुखो भवतो न कुतश्चिद्द्रव्योऽसुरः ४९ इति लब्ध्वाऽभयं कृष्णं प्रणम्य शिरसाऽसुरः ॥ प्राद्युम्नि  
रथमारोह्य सर्वधाममुपानयत् ५० अक्षौहिण्या परिबृत्तं सुवासः समलङ्कृतम् ॥ स पत्नीकं पुरस्कृत्य ययौ रुद्रानुमोदितः ५१ स्वराजधानीं समलङ्कृतं ध्वजैः सतो-  
रौ रक्षितं सर्गार्चनरात्रि ॥ विवेश शङ्खान् कण्डुगिरिस्वतैरभ्युद्यः पौरमुहूर्द्धिजातिभिः ५२ य एवं कृष्णविजयं शङ्करेण च संयुगम् ॥ संसरेत्प्रातरुत्थाय  
नतस्मरस्यात्पराजयः ५३ इति श्रीमद्भागवते महापुण्ड्रपादोऽष्टमोऽध्यायः ६३ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

नहीं मान्यो ४७ फेरि कृष्ण कहन भये कि याको गर्व करिवे कि मैंने ये याकी हजार भुजा कटी हैं और पृथ्वी पै जो बोक होय रखो है सो मैंने दूरि करि दियो है ४८ कष्टिने तैं चार भुजा लेवा की रहौ ते अदर अदर होईगी और यह दैत्य नागासुर नहीं बहते है भय जाकूँ ऐसो तुम्हारे पार्षदमें मुख्य होयगो ४९ याप्रकार अभय पाय है वाणासुर श्रीकृष्णचन्द्र कूँ चारचार प्रमाण करि है जयः ताहिनि सनिकुदृक् रथमें बैठारिकै रिदा समभयो ५० अक्षौहिणी सेना जा के संग तुम्हारे वल्लभं शोभायमान ऐसे स्त्रीसहित जो अनिरुद्ध है तिनहूँ आगे करि है शिवजीने अनुमोद विनको करग ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र जातभये ५१ तोरगन सहित भे ध्वजा हैं तिनहूँ शोभायमान मार्गमें तथा चौराहेन में खिरकाउ जावें होइ रखो ऐसी जो अपनी दानावती राजधानी है तामें पुरवासी सुहृद् अल्पानतैं सत्कार विनन पायो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो राजा डोल नगाड़नके जो शब्द हैं तिन सहित प्रवेश करतभये ५२ यह जो श्रीकृष्णकी जीत है ताथ और श्रीकृष्णको शिव

भी को युद्ध है तोय ओ पुरुष मातः सपय उतिके रपरण करै है वाकी नभं डार नहीं होय है ५३ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपियादशपस्कन्धे उत्तराखंडोऽध्यायः ६३ ॥ ( चतुः पट्टिगेण्डोऽष्टोत्तराश्वोक्तयाराहोऽस्मान्निजयत् ॥ असस्वहरिदोपोक्तयाराहोऽस्मान्निजयत् २ चोसठवै अश्याय में दुण्णभी दृगजी सो शापमूं छुड़ातेथय और द्राघ्यणभी द्वपके हरेनालो दोपोंकी उक्तिमूं अभिमानी राजाओं को शिक्षा देतेथये १ विभूतिभाग्यभोगादि मदरूं तवाद्ध मनोरममालो यदुनं- शियों को कुण्णभी दृगजे उद्धारेते मरंगभूं शिक्षादेतेथये २ ) अथ श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित् ! एक समय सायव प्रभुधन चारु भालु गद इत्यादिक यादवनके पुत्रहैं ते विशार करिवेके निमित्त वनभ जातभये ३ ता रगों बहुत देरलाई छोडा करिके पास जिनकूं लगी ऐसे यादवनके पुत्र हैं ते जलमूं डूबत निना जलको दूय है तामें अमुत एक जीव परयो देखत भये २ पर्वत की

शशिकुलाय ॥ एकदोषघ्नं राज्ञा मुन्यदुष्कारकाः ॥ विहर्त्तुसाम्यद्युष्मचारुगानुगदादयः १ क्रीडित्वामुचिरंतत्र विनिवन्तः पिपसिताः ॥

जलं निरुद्धं मेरुपे ददृशुः सत्त्वगद्गतम् २ कृकलासंगिरिनिभं वीक्ष्य विस्मितमानसाः ॥ तस्य चोद्धरणेयत्वं चक्षुस्तेक्ष्णयाऽन्विताः ३ चर्मजैस्तान्त्वैः पाशैर्वद्धुं प्रतितगर्भैः हाः ॥ नाशकुञ्चपमुद्धर्त्तुं कृष्णयात्रय्युक्तसु हाः ४ तत्राऽऽगत्यारविन्दालो भगवान्विश्वभावनः ॥ वीक्ष्योज्जहार वामेन तं करेण सलीलाया ५ स उत्तमश्लो ककशभिमुष्टो विहाय राद्य-कृकलासरूपम् ॥ सन्तप्तचार्माकरचारुवर्णः स्वर्ग्यद्भुतालङ्काराणाम्बररू ६ प्रपञ्चविद्वानपितृन्निदानं जनेषु विख्यापयितुं मुकुन्दः ॥ कस्तवं महाभागवरेण्यरूपो देवो च भर्ता गणयामि नूनम् ७ दृशाभिर्मात्राकृतेन कर्मणा सम्प्रापितोऽस्य तदर्हः सुभद्र ॥ आत्मानमाख्याहि विव्रतसतां नोपनम्यसे नः क्षममन्नवज्जुम् ८ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इति सगराजासंप्लुष्टः कृष्णेनाननमूर्त्तिना ॥ माधवं प्रणिपत्य आह किं भिदेना किं वच्चे

चराचर जो कदयेटा है ताय देनि है आनवर्यमुक्त है मन जिनके कृपा जिनकुं आइ गई ऐसे जे यादवन के बालक है ते करकेटा के निकगिने को उपाय करतभये ३ बालक है ते गिरचो जो करकेटा है ताय चाम के ओर सूत के रस्मान सूं बाधिके निमसिगे नूं नहीं समी होतभये तब उत्कण्ठायुक्त जे बालक है ते श्रीकृष्णचन्द्र तें आइके कहत भये ४ भिखरे करनवारे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो तदा आइ है करकेटा कुं देविके लीला करिके वायें हाथ ते निकासतभये ५ उत्तम है यशजिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के हाथ लगे तें शीघ्रही करकेटा के रूपकुं त्यागि कै तत्त सुवर्णकी तुल्य सुन्दर वर्ण जाने अद्भुत आभूषण बहू मालानकुं धारण करे देससखा होत भयो ६ मुक्ति के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र ताके करकेटा होइये के फारगहू मानेभी हैं परन्तु जनन में बिलयात करिवेते निमित्त पूंजनभये हे बड़भागी ! ऐ है रूप तेरो ऐसो तू कौन है भैं तोऊ देवतान में उत्तम निशय देवता मानूं हूं ७ हे मंगलरूप ! या लायक तू नहीं है कौन कर्म तें तोऊं करकेटा की योनि प्राप्त भई जो हगकुं कहने योग्य मानो हो तो जानो चाहै जो हम हैं तिनके आगे अपनो रूप कहो ८ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! अनन्तहैं मुक्ति जिनही ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र

ये या प्रकार धुँदलो ऐमो जो राजा नृग है सो सूर्य की तुल्य है तेज जाको ऐसे किसी संश्रुणचन्द्रकू मणाम करिकै वीलतभयो ६ राजाभुग कहेहै है सपर्य १ म इच्छाकुको पुत्र नृग नाम राजा है दानी राजान की बात चली होयगी तब मेरो नामहू आपके कानमें परो होइगो १० हे नाथ ! सब प्राणीन की बुद्धि के सार्त्ती तुम हो सो कहा जानो हो करिकै ज्ञान जिनको तादित नहीं भयो है तथापि तुमने वृक्षी है तो तुम्हारी आज्ञा तें कहूँगो ११ हे नाथ ! जितनी पृथ्वीकी रेणुका हैं और जितने आकाश में तारागण हैं तथा जितनी वर्षा की धूँदै हैं तितनी गौवनयो मेने दान कत्तो है १२ दूध देनवारी तरुण जिनकी अवस्था शील रूप गुण जिनमें विद्यमान कपिला और नीतिपूर्वक संचय करी सुवर्ण मूं सोन और लोखें सुखर लोखें वखरा जिनके सग और वज्र माला गहनेनकू पहिरे ऐसी गौवें देत भयो १३ भले प्रकार शोभायमान गुण शील जिन में विद्यमान दध्रविना दुःखित कुटुम्बी पासण्डरहित हैं आचार जिनके तपस्या करिकै प्रसिद्ध वेदकू

सा १ ॥ नृगउवाच ॥ नृगोनामनेन्द्रोऽहमिक्षाकुतनयःप्रभो ॥ दानिष्ठाख्यायमानेषु यदिनेकर्णमस्पृशय १० किन्तुतेऽविदितंनाथ सर्वभूतात्मसाक्षिणः ॥ कालेनावपाहनदृशोवक्ष्येऽगापितवाऽऽज्ञया ११ यावन्त्यगंसिकताभूमेर्यावन्त्योदिवितारकाः ॥ यावन्त्येवपर्पधाराश्च तावतीरद्वंद्वमगाः १२ पयस्विनीस्तरुणीःशीलरूपगुणोपपन्नाःकपिलाहेमशृङ्गीः ॥ न्यायार्जिताल्प्यखुराःसर्वत्साडुकूलमालाभरणाददावहम् १३ स्वलङ्कृतेभ्योगुणशीलवद्भयःसीदत्कुटुम्बेभ्यश्चनव्रतेभ्यः ॥ तपःश्रुतब्रह्मादन्यसद्भयःप्रादांयुवभ्योद्विजपुङ्गवेभ्यः १४ गोभूहिस्त्रयायतनाश्चहस्तिनः कन्याःसदासीस्तिलरूप्यशय्याः ॥ वासांसिरत्नानिपरिच्यदात्त्रथानिष्टंयज्ञैश्चरितंचूर्तम् १५ कस्यचिद्विजमुख्यस्य भृष्टागोर्भमगोधने ॥ संपृक्ताऽविदुपासाच भयादत्तादिजातये १६ तांनीयमानांतस्वामी दृष्ट्वेवाचममेतितम् ॥ ममेतिप्रतिग्राह्याह नृगोभेदत्तवानिति १७ विप्रौविवदमानौसामूचतुःस्वार्थसाधकौ ॥ भवान्दाताऽपहर्त्सति तच्छ्रुत्वाभेऽभवद्भ्रमः १८ अनुनीताबुभौविप्रौ धर्मकुच्छ्रगतेनवै ॥ गवांलक्षंप्रकृष्टानां दास्याभ्येपाप्रदीयताम् १९ भवन्तावनुगृह्णीतां किङ्करस्याविजानतः ॥

पदों तरुण जिनकी अवस्था ऐसे द्विजन में अष्ट ब्राह्मणनकू दान करिकै देतभयो १४ गौ पृथ्वी सुवर्ण महल घोड़ा हाथी इत्यादिक दानकरे और दासीनसहित कन्यादान करे तिल रूपा शय्या वस्त्र रत्न और आच्छादन के अष्ट वस्त्र स्थन के दानकरे यज्ञकरे कुर्यां तात्ताय यावली वनवाये १५ ऐसों में हों परतु गोभू एक सङ्कट आय के प्राप्तभयो सो श्रवण करो कोई एक श्रयाचक प्राज्ञाण की गौ भाजिकै मेरी गौवन में मिलिगई वह गौ मने पिना जाने ब्राह्मण कू दान करिदीनी १६ वा गौ को मालिकै सो वा गौ कू ले जाती देखिके यह गौ मेरी है या प्रकार कहत भयो दूसरो ब्राह्मण कहत भयो कि यह गौ मोहू राजा नृगने दान करिकै दीनी है १७ या प्रकार आपुस में विवाद करै अपने अपने प्रयोजनकू सिद्ध करयो चाहै ऐसे दोनों ब्राह्मण आयकै कइनभये जाकू दान करिकै दीनी ही यह ब्राह्मण कन्तभयो कि राजा तुही याको दाता है और जाकी गौ है कि कहा को दाता है विरानी गौ पुण्य कर है यह वाचा करिकै भोक् भ्रमभयो १८ धर्म में कष्ट जाकू प्राप्तभयो ऐमो जो म हू तने दोनों ब्राह्मणन की निन्ती करी कि महाराज वा गौ के चदले सुन्दरी सुन्दरी एक लत्त गौ देंओ यह गौ दीजिये १९ मैं तुम्हारी दासहूँ मैंने जानी नहीं

कि यह गो तुम्हारी है मेरे ऊपर अनुग्रह करो धीरे धीरे नरकमें गिरूँ जो मैं हूँ ताकी कष्ट तें रक्षा करो २० हे राजन् दृग ! और तेरी ताल गौ मोकूँ नहीं अपेक्षित है जो दान करि कै दीनी है सोई लेउंगो यह कहिकै जा ब्राह्मण कूँ गौ दीनी ही वह गौकूँ त्यागिकै चरकूँ जात भयो २१ हे देवतानके देव जगत्के पालन करन वारे ! याके पीछे यमके दूत आयकै धर्मराजके पास मोकूँ लैगये तथा धर्मराज ने मोसू पूछी २२ हे राजन् दृग ! तुम्हारे दान और धर्मको लोकके प्रकाशको मैं अन्त नहीं देखूँ हूँ परन्तु यत्किञ्चित् तुम्हारी पाप है और सम्पूर्ण शुभ है सो मथम तुम पाप भोगोये अथवा शुभ २३ या प्रकार धर्मराज ने कबो तब प्रथम पाप भोगोयो ऐसे मैंने कबो चाही समय धर्मराजने आज्ञा करी कि याकू गिराई देउ करकेटाकी योनिमें अफनी रक्षा करै हे प्रभो ! गिरतेही अफनो करकेटाको रूप देरात भयो २४ हे केशव ! ब्राह्मणनको भक्त दाता तुम्हारे दर्शनकी इच्छा जाके ऐसो मैं तुम्हारी दास हूँ ताकूँ अब पर्यन्त नहीं बल भई है २५ हे प्रभो ! योगेश्वर वेद रूप नेन करिकै

समुद्धत मां कृच्छ्रात्पतन्तं निरयेऽशुचौ २० नाहं प्रतीच्छे वैराजान् नित्युक्ता स्वाभ्यामप्ययुनिभिच्छामीत्यपरोययौ २१ एतस्मिन्नन्तरेयाम्येदुतैर्नीलोयमक्षयम् ॥ यमेन पृष्ठस्तत्राहं देवदेवजगत्पते २२ पूर्वत्वमशुभं बुद्धु उताहो नृपते शुभम् ॥ नान्तं दानस्य धर्मस्य पश्येलोकस्य भास्वतः २३ पूर्वदेवाशुभं बुद्धु इति ग्राहपते तिसः ॥ तावद्वाक्षमात्मानं कृकलासंपतन्मयो २४ ब्राह्मणस्य वदान्यस्य तव दासस्य केशव ॥ स्मृतिर्नाद्यापि विध्वस्ता भवत्संदर्शनायिनः २५ सत्वं कथं मम विभोऽक्षिपथः परात्मा योगेश्वरैः श्रुतिहशाऽगलहृदि भाव्यः ॥ साक्षादधोक्षज उरुव्यसनान्धबुद्धेः स्यान्मेऽनुदृश्य इह यस्य भवापवर्गः २६ देवदेवजगन्नाथ गोविन्द पुरुषोत्तम ॥ नारायण हृषीकेश पुरयश्लोकाव्युताव्यय २७ अनुजानीहि मां कृष्ण यान्तं देवगतिं प्रभो ॥ यत्र कापि स तथेतो भूयान्मे त्वत्पदास्पदम् २८ नमस्ते सर्वभावाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥ कृष्णाय वासुदेवाय योगानां पतये नमः २९ इत्युक्त्वा तं परिक्रम्य पादौ स्पृष्ट्वा स्वमौलिना ॥ अनुज्ञातो विमानाग्रमाश्रय श्रयतां नृणाम् ३० कृष्णः परिजनं प्राह भगवान् देवकीसुतः ॥ ब्रह्मण्यदेवो धर्मात्मा राजन्यानुशिक्षयन् ३१

निर्मल हृदयमें जिनकी भागना करै और इन्द्रियनकी जिनमें पहुँच नहीं ऐसे परमात्मा जो तुमही सो अति दुःखन करिकै अधरी है बुद्धि जाती ऐसो मैं हूँ ताकूँ कैसे प्रत्यक्ष दिखाई दीनी है यह आश्चर्य है या संसार में जा पुरुष को संसार छूट्नहार होइ है ताकूँ तुम्हारी दर्शन होइ है २६ हे देवनके देव ! हे जगत्के नाथ ! हे गोकुन्द ! हे पुरुषनमें उत्तम ! हे नारायण ! हे इन्द्रियनके प्रेरणवारे ! हे पवित्र है यशजिनको ऐसे ! हे अलपट रूप ! हे अविनाशी ! २७ हे कृष्ण ! हे समर्थ ! हे भगव ! हे शक्ति जिनकी ऐस तुमही ऐस तुमही तिन और वासुदेव अर्थात् सब प्राणीनके आश्रय कृष्ण अर्थात् सर्वदा आनन्द रूप कार्यको है जन्म जिनतें विश्वके कर्त्ता तथापि विकार रहित हो काहे तें अनन्त गाया है शक्ति जिनकी ऐस तुमही तिन और वासुदेव अर्थात् सब प्राणीनके आश्रय कृष्ण अर्थात् सर्वदा आनन्द रूप ( कृपिर्धूमाचः शब्देन अर्चनीति वाचकः ॥ तयो रैव परं ब्रह्म कृष्ण इत्याभिययत इति ) वेदनके कहे जे यज्ञादिक कर्म और सृष्टिनके कहे जे कुत्रा वावली तालाव इत्यादिक कर्मनके फलदाता जो तुमही तिनकूँ नमस्कार है २९ राजा दृग या प्रकार कहिकै श्रीकृष्ण वन्दकी परिक्रमा दैके अपने मुकुट तें चरणकूँ स्पर्श करिकै आज्ञा लैके सन प्राणीनके देरात विमान में चढ़त भयो ३० ब्राह्मण-



न की भक्ति करिके देव गर्व में है मन जिनको ऐसे देवकी के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो क्षत्रियनकी शिक्षाके लिये आने जे परिहार य दय हैं तिनसू कहत भये ३१ अग्निभी तुल्य है तेज जिनको ऐसे जे पुरुष हैं तिनको ओढो भी भोग्यो ब्रह्म अंश नहीं पवैह और आने कूं ईश्वर माने जे राजा है तिनकी कौन कथा है ३२ हलाहल जो विप है ताकूं मै विन नहीं मानूं ह वाके दूरि करिवे की औपय है परञ्च ब्रह्म अंश है सो विप है या पृथ्वीमें ब्रह्म अंशके दूरि करियेको उपाय नहीं ३३ विप है सो सानवारे कूं मारे है अग्निलगै सो जलसूं शान्त होइ है और अग्निके जराइये में जड वाकी रहि जाति है परंतु ब्रह्म अंशरूप जो लसई है तापें ते जन्मी जो अग्नि सो मूलसहित कुनकूं भस्म करे है ३४ शास्त्रने याको निषेय कस्यो तेमो जो ब्रह्म अंश है सो भोगे तें तीन पीढ़ीन को नाश करे है जो भोगे ताकू वाके पुनकूं वाके पौत्रकू और राजाके बलतें अथवा छीनके जो ब्रह्म अंशको भोग करै तौ दश अगिली और दश पिछली एत आप ऐसे इकईस पीढ़ीको नाश करे है ३५ जो कि

हुनं वन ब्रह्म त्रं भुक्तमग्नेर्मेनागपि ॥ ते जीयसेऽपि किमुत राजा मीश्वरमानिनाम् ३२ नाहं हालाहलं मन्ये विपं यस्य प्रति क्रिया ॥ ब्रह्मस्वंहि निषोक्तं नास्य प्रतिविधिर्भुवि ३३ हिनस्ति विपमचारं वद्विग्निः प्रशम्यति ॥ कुलं समूलं दहति ब्रह्मस्माराणि पात्रकः ३४ ब्रह्मस्वंदुःखं नृजानं भुक्तं हनि त्रिपुरुषम् ॥ प्रसह्य तु वत्साऽद्भुक्तं दशपूर्वां ब्रह्म परान् ३५ राजानो राजकुलयाश्च तावतोऽब्दा निरङ्कुशः ॥ निरयं येऽभिमानन्ते ब्रह्मस्वं साधुना लिशः ३६ गृह्णन्ति यावन्तः पांशून् च कन्द तामश्रु विन्दवः ॥ विभाणां हितवृत्तीनां वदान्यानां कुटुम्बिनाम् २७ राजानो राजकुलयाश्च तावतोऽब्दा निरङ्कुशः ॥ कुम्भीपाके पुपच्यन्ते ब्रह्मदायापहारिणः ३८ स्रद्धां पराक्षां च ब्रह्मवृत्तिर्गच्छपः ॥ पट्टिर्पमहसाणि विष्ठायां जायते क्रुमिः ३९ न मे ब्रह्मयन्तं भूयाद्यद्गृह्णाऽदृष्टपापुनराः ॥ पराजिताश्च युवराज्याद्वनयुद्धे जिनोऽहयः ४० विप्रं कृतागसमपि नैव दुह्यन्त मामकाः ॥ द्रन्तं वदुशपन्तं वा न मरुः कुरुन नित्यशः ४१ यथाऽहं प्रणम्ये विभाननुकालं समाहितः ॥ तथानमतयूयश्च योऽन्यथा मे स दण्डमाक् ४२ ब्राह्मणार्थं ह्यपहतो हर्षात् पातयत्यधः ॥ अजानन्तमपि ह्येनं नृगं ब्राह्मणगौरिव ४३ एवं विश्राव्य गगवाचमुमुन्दो

लक्ष्मीसूं आपरे ऐसे जे राजा है ते अगनो नरकमें गिरिवो नहीं देखे हैं अ मूर्ख पुरुष ब्रह्म अंश पै मन चलावै है वे पुरुष नरकमें जायने की इच्छा करे हैं ३६ कुटुम्बी उदार हरिगई है जीविका जिनकी याते रोदन करे ऐसे जे ब्राह्मण हैं तिनके नेत्रमें आसूनी धूंद गिरिके जितनी पृथ्वी की रेणु भीजै हैं तितने वर्षपर्यन्त ब्राह्मण के धनके हरनवारे निरंकुश जे राजा हैं ते और राजान के दीवान प्रधान दहलुया हैं ते कुम्भीपाक नरक में पड़े है ३७। ३८ जो पुरुष अपनी दीनी अथवा और की दीनी ब्राह्मण की जीविका है ताप हरे यह पुरुष साठिदजार वर्षपर्यन्त विष्टा को कीडा होइ है ३९ भरे घरमें ब्राह्मण को धन मति आचो जे मनुष्य ब्राह्मण के वनकी चाहना करे हैं वे अत्यायु होइ है पराजय कूं प्राप्त होइ है और राज्य तें भ्रष्ट होय कै मनुष्यन कूं भय के देनवारे सर्प होइ है ४० अ पराजय कूं करै मारतो आवै बहुत गारी देखे ऐसे ब्राह्मणतें भी द्रोह मतिकरो नित्य नित्य नगस्कारही करो ४१ जैसे सावधान होइ है समय समय तें ब्राह्मणन कूं नमस्कार करे हं तैसे तुप हं नैसे तुप हं नमस्कार करो और जो कोई मेरी आज्ञाकू न मानैगो वह पुरुष भरे दण्ड कू पावेगो ४२ हरयो जो ब्राह्मण को वन है सो हरनवारे कूं नरक में डारै है या बात



भई पुरके स्त्रीजन है तिनकूं प्यारो ऐसो कृष्ण भूरी है ६ पद दृष्ट्य कथजू अपने बन्धनकी भी रुधि नोरे है अपने पिता माता भी रुधि नोरे है कथजं अपनी माताकूं एत वार देवत्व हूं भी आवैगो बड़ी हैं भुजा जाती ऐसो कृष्ण कमजं हमारी सेवा की रुधि करे हे १० हे दयालु शोचन रामर्ष बलदेवजी ! या कृष्ण हे लिये माता पिता भय्या प्रति पुत्र बहिनि स्मजनये सब दुःख करिकै भी छोड़े न जायें ऐसे हमने ब्रह्म दिये ११ तिन हमनूं शीघ्रही छोड़िकै हमें कूं तोरि नै कृष्ण जात यगो कदाचित् कहो कि जव गयो रो तव दयो नही रोक्यो ताको जवाव देई हैं वा ने मनमें विरवास आवै गयो तामूं न रोक्यो वाके बचनको विरवास लुप्त करो हो यद बलदेवजी कहैं ताको उत्तर वाके भीठे भीठे वचन स्त्रीनके मन में कैसे न आवैं कहनबारी बहुत हैं याते नाना प्रकार के वचन हैं १२ तहाँ और गोपी कहैं नही स्थिर है चित्त जाको ऐसे कृष्ण को जो है वचन ताव विवेकिनी जे पुरभी स्त्री हैं ते कैसे सत्य माने हैं और गोपी कहैं है चित्र विचित्र है कथा जाकी प्रकार के वचन हैं १३ तहाँ और गोपी कहैं नही स्थिर है चित्त जाको ऐसे कृष्ण को जो है वचन ताव विवेकिनी जे पुरभी स्त्री हैं ते कैसे सत्य माने हैं और गोपी कहैं है चित्र विचित्र है कथा जाकी

कबिदास्तेमुखं कृष्णः पुरस्त्रीजनवल्लभः ६ कबिस्मरतिवाग्वन्धून्पितरं भ्रातरञ्चसः ॥ अग्रसौमातरं रंभं सहृदयागमिव्यति ॥ अपिवास्मरतेऽस्माकमनु  
सेवां महाभुजः १० भ्रातरं पितरं भ्रातृन् पतीन् पुत्रान् स्मरति ॥ यदर्थे जाहिमदाशार्हं दुरत्यजात्स्वजनान्प्रभो ११ तानः सद्यः परित्यज्य गतः सञ्जिन्नसौ  
हृदः ॥ कथं नु तादृशं स्त्रीभिर्न श्रद्धीयेत भापितम् १२ कथं नु गृह्णन्त्यनवस्थितात्मनो वचः कृतधनस्य बुधाः पुरञ्जियः ॥ गृह्णन्ति वै चित्रकथस्य सुन्दरस्मितावल्लो  
कोच्छसितस्मरातुराः १३ किं न स्तरकथया गोप्यः कथाः कथयताऽपराः ॥ यात्यस्माभिर्विना कालो यदितस्य तथैव नः १४ इति ग्रहसितं शौरिर्जल्पितं चारुमीक्षि  
तम् ॥ गर्तिभिमपरिष्वङ्गस्मरन् योरुद्धः स्त्रियः १५ सङ्कर्षणस्ताः कृष्णस्य सन्दर्शो हृदयंगमैः ॥ सान्त्वयामास भगवान् नानाऽनुनयकोविदः १६ द्रौमासौ त  
त्र चावासीन्मधुं माधवमेव च ॥ रामश्च पासु भगवान् गोपीनां रतिमावहन् १७ पूर्णचन्द्रकलामृष्टे कौमुदीगन्धवायुना ॥ यमुनोपवने रेभे सेविते स्त्रीगणेषु ह  
तः १८ वरुणप्रेषिना देवी वारुणी वृक्षकोटरात् ॥ पतन्ती तद्वनं सर्वं स्वगन्धेनाध्यासायत् १९ तंगन्धं धुधाशया वायुनोपहृतं वलाः ॥ आब्रायोपगत

ऐसो जो कृष्ण ताकी सुन्दर मुसकानि चितवनि मूं जोधित जो कामदेव तामूं आतुर होयकै सत्य माने हैं १३ और गोपी कहैं है गोपियो ! वाकी बातमूं हमें कथा काम है और बात क्यों न कहो हमारे पिता जैसे वाको काल व्यतीत होइ है तैसे वाके पिता हमारो भी काल व्यतीत होय है वाकूं सुल मूं चीतै है हमकूं दुःखमूं चीतै है इतनीही अन्तर है १४ या प्रकार श्रीकृष्ण की इसनि बोलनि सुन्दरि चितवनि गोपजनकी चलानि प्रेमपूर्वक आलिंगन इनकी रुधि करिकै सब स्त्री रोदनकरति भई १५ अनेक प्रकार समझायवे मैं निपुण ऐसे जो भगवान् सङ्कर्षण हैं सो मनोहर जो श्रीकृष्ण के सदेश है तिनकूं कहिकै समझावत भये १६ ता व्रजमें भगवान् बलदेवजी रात्रिनमें गोपीन कूं आनन्द देत चैन वंशाख दो महीने पर्यन्त वास करत भये १७ पूर्ण चन्द्रमा की कलार हैं तिन करिकै शोभायमान कुपोदिनीनकी सुगन्धयुक्त पवन जहा आवै ऐसो जो यमुनाजी को वाग है तागें स्त्रीन हूं संगलै के रमण करत भये १८ वरुण की पठार्ई छुई वाखणी जो मदिरा देवी है सो वृत्तनकी रीतोरि में तें गिरिकै सपस्त वन है नाय अपने यन्त्र करिकै सुगन्धित करत भई १९ पवन ने मासु करी ऐसी जो मदिरा के भारकी सुगन्ध है ताव मूं बिकै बलदेवजी तहां आयकै स्त्रीन

कू संगलै है गदिरा पान दूरत भये २० छीन ने गाये हैं चरित्र जिनके और हवा है शब्द गिनको मतवारे अमल करिके विहल है नेत्र जिनके ऐसे बलदेवजी बनमें विचरतभये २१ बनमाला परिरे पूरु कान में कुण्डल पहिरे मतवारे वैजयन्ती माला दू धारणकरे ताखू शोभायमान पसीना के बिन्दुन करिके शोभायमान गन्द गन्द हास्ययुक्त जो कमलरूप मुस है ताय धारणकरे २२ जल-क्रीड़ा करिचे के लिये ईश्वर समर्थ बलदेवजी यमुनाकू बुलावतभये तन मतवारे हैं या कारखों बलदेवजीके वचनको अनादर करिके नहीं आवति भई ऐसी जो यमुना नदी है ताय जोधकरिके हलके अग्रभागसू खैचतभये २३ हे पागिनी ! या कारख तें नहीं आई है अपनी इच्छापूर्वक विचरे जो तू है ताके हलके अग्रभागसू सैकरान सपट कर्कशो २४ हे राजवपरीजित् ! या प्रकार ड-राई जो यमुना है सो भयभीत होय है चकित होइके चरणन में गिरि है यदुनन्दन बलदेवजी भूँ बोळतभई २५ हे राम ! हे राग ! हे मषाहाओ अर्थात् वड़ी हैं भुजा जिनकी ! हे ससारके स्वामी !

स्तत्र ललनाभिःसंपपौ २० उपगीयमानचरितो वनिताभिर्हलायुधः ॥ वनेषुव्यचरक्षीवो मदविहललोचनः २१ सगव्येककुण्डलोमसो वैजयन्त्या चमालया ॥ विभ्रस्मिस्तसुलाभोजं स्वेदग्रालेयभूषितश्च २२ सञ्जालुहावयमुनां जलक्रीडाभ्रीश्वरः ॥ निजंवाक्यमनादृत्य मत्तइत्यापगांवलः ॥ अ नागतांरुलाग्रेण कुपितोविचर्कहं २३ पापेवंशमवज्ञाय यन्नायासिमयाऽऽहुता ॥ नेष्येत्नांलाङ्गलाग्रेण शतवाक्यमचारिणीम् २४ एवंनिर्भस्तिताभीता यमुनायदुनन्दनश्च ॥ उवाचचकितावाचं पतितापादयोर्नृप २५ रामराममहाबाहो नजानेतवविक्रमश्च ॥ यस्यैकांशेनविधृता जगतीजगतःपते २६ परंभावंभगवतो भगवन्मामजानतीश्च ॥ ओकुमर्हसिविश्वात्मन् गपन्नाभङ्गवत्सल २७ ततोव्ययुधद्यमुनां याचितोभगवान्बलः ॥ विजगाहजलंस्त्री भिःकरेणभिरिवेभराद् २८ कामंविदृत्यसलिलादुत्तीर्णायसिताम्बरे ॥ भूषणानिमहाहर्षिण ददौकान्तिःशुभांलजश्च २९ वसित्वावाससीनीले माला ॥ मामुच्यकाञ्चनीम् ॥ रेजेस्वलङ्कुतोलिशो माहेन्द्रइववारणः ३० अद्यापिदृश्यतेराजन् यमुनाकुण्डवर्धना ॥ बलस्यावन्तवीर्यस्यवीर्यमूचयतीवहि ३१ तुम्हारे पराक्रम हूं मैं नहीं जानूं हूं भिन तुम्हारी एक अंश जो शेषजी हैं तिनने समस्त पृथ्वी कूं सहस फणन में ते एक फण पै धारण करि राख्यो है २६ हे भगवन् ! तुम्हारे अष्ट प्रभाबकूं नहीं जानूं हूं अब शरण आई जो मैं हूं ताकूं हे निरयके आत्मा ! हे भक्तन पै हितकरनवारे ! बोद्धिबे कूं योग्यहो २७ ता पीछे याचना जिनमें करी ऐसे जे भगवान् बलदेवजी हैं सो यमुनाकूं बोद्धितभये जैसे हाथी बहिनीन के संग विहार करें ऐसे यमुना में विहार करते भये २८ इच्छापूर्वक विहार करिके जलमें ते निद्रसे ऐसे जे बलदेवजी हैं तिनकूं लक्ष्मी नीलाम्बरको धोती उपरना हैं तिनं देतभई वड़े मोळने आयूपण और सुन्दरमाला देतभई २९ नीलाम्बर की धोती और नीलाम्बर कोही उपरना पहिरिके सुवर्ण की माला पहिरिके भले प्रकार शोभायमान चन्दन गिनके लग्यो ऐसे

\* यथोक्तैरङ्गो ॥ यदगप्रदिताकास्मै मालामन्त्राण्डुवाग् ॥ सधुप्राप्तेतयायुक्ते गोलिङ्गधारयच्छति ( हरिकेशेव गच्छति लक्ष्मीतावयम् ) जातकृपमयैःकुण्डलैश्चभूषणम् ॥ आक्षिपचपकाःस्यदिव्यभवनभूषणम् ॥ देयमानतिष्ठतिविवोराणां भूषणभिर्यादि ६ ॥



हे राजन् परीक्षित ! मन्द है बुद्धि जाकी ऐसी जो पौण्ड्र है ताको संदेशो श्रवण करिकै ता समय राजा उग्रसेन तैं आदि लैके जे सभासद हैं ते अतिशय करिकै हस्तभये ७ हसिके भगवान् श्री कृष्णचन्द्र दूत तैं बोलत भये हे मूढ़ ! कृत्रिम जे सुदर्शनादिक चिह्न है तिनसूं तू अपनी ऐसी वच्चाई करे है तिनकूं तोपै ते छुड़ा लेउगे ८ हे अज्ञानी ! जा समय तूं अपने मुख मूं डंकि है और उजळीचील गीध वगुलाने आयकै घेरयो ऐसी तू मरि कै सोवैगो ता समय कुत्तानको शरण लेइगो अर्थात् वे तोकुं भक्षण करेंगे ९ तासमय जो सम्पूर्ण श्रीकृष्णचन्द्रने अनानद करिकै कछो सो तैसेही दूत अपनी स्वामी जो मिथ्या वासुदेव है ताकूं सत्र शरण करावत भयो और श्रीकृष्णचन्द्र रथमें बैठि कै काशीपुरी में जातभये वयोंकि ता समय पौण्ड्रक भी अपनी मित्र काशी को राजा है ताके आयो है याते ता समय श्रीकृष्णचन्द्रहू प्राप्त होतभये १० ता समय महारथी जो पौण्ड्रक है सो भी श्रीकृष्णचन्द्र के युद्ध को उद्यम है ताज जानिकै दो अर्जोहिणी सेना सन्न लैके शीघ्रही

स्यालपमेधसः ॥ उग्रसेनादयः सभया उच्चैर्जहमुस्तदा ७ उनाचद्वनं भगवान्परिहासकथामनु ॥ उत्सद्येमुदाचिह्नानि येस्त्रमेवंत्रिकृत्यसे ८ सुतं दपि धायान्न मङ्कगृध्रवैर्धृतः ॥ शयिष्यते हस्तत्र भविता शरणं शुनाम् ९ इति दूतस्नदाशेषं स्नामिने सर्वमाहरत् ॥ कृष्णोऽपरिथमास्थाय काशीमुपजगाम ह १० पौण्ड्रकोपितदुष्टो गमुपलभ्य महारथः ॥ अक्षौहिणीभ्यां संयुक्तो निश्चक्राम पुराददुनम् ११ तस्य काशिपतिर्भिन्नं पाण्डिग्रहोऽन्याद्युप ॥ अक्षौहिणीभिस्तिगृधिरपश्यतौ गृहं हरिः १२ शङ्खाथ्यसिगदाशार्ङ्गं श्रीवत्साद्युपलक्षितम् ॥ निश्राणं कौस्तुभगणि वनमालाविभूषितम् १३ कौशेयवाससीपीने वसानं गुरुध्वजम् ॥ अमूल्यमौल्याभरणं स्फुरन्मकरकुण्डलम् १४ दृष्ट्वा तमात्मनस्तुल्यवेषं कृत्रिगमास्थितम् ॥ यथानटं रङ्गगतं विजहास भृशं हरिः १५ शूलैर्गदाभिः परिक्षैः शङ्खवृष्टिप्रासतोगैः ॥ आसिभिः पाण्डिशैर्बाणैः प्राहरन्मयोदरिम् १६ कृष्णस्तुतं पौण्ड्रककाशिराजयोर्बलंगजस्यन्दनवाजिपत्नितम् ॥ गदासिचक्रेषु भिरार्दयन् दृशं यथा युगान्ते द्रुतगुक्थुक्थज्जाः १७ आयोधनं तदथवा जिम्बुज्जरादिपत्नरोत्तरिणाऽनखगिडतैः ॥ वभौ चित्तं मोदन् वनं मनस्विनामा

काशीपुरी तें बाहर निकसत भयो ११ ता पौण्ड्रकको मित्र काशीकी रत्ता वरनवारो जो राजा है सो मित्रकी सहाय करिके लिये गीछे तें आवत भयो तत्र तीन अर्जोहिणी सेना जाके संग ऐसे पौण्ड्रककू भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र देखत भये १२ शङ्ख चक्र तरवारि गदा धनुष भृगुलता इनसूं आदि लैके जे चिह्न हैं तिनसूं देख्यो जाय है और कौस्तुभगणि कूं धारण करे वनमाला कूं परिके शोभायमान है १३ गेयसी पीरेवोती उपरनानकूं पहिरे गरुडको व्याणो जाकी ध्वजमें है वडे गोलके है मुकुट और आपूपण जाके मकराकृत कुण्डलन करिके मकाशमान है १४ जैसे रगभूमिमें वेप वनायकी प्राप्त भयो जो नन्द है तैसे अपनी वरावरिके वनाये भये रूपकूं धारण करे ऐसी जो मिथ्या वासुदेव है ताज देखिके श्रीकृष्णचन्द्र बहुत हँसतभये कयोंकि नकली ने ज्योंकी त्यों नकल उतारी है १५ त्रिशूल गदा चैंड़े वरखी गुर्जे नेजा तोमार तरवारि पट्टा बाण ये हथियार वरी श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर चलावत भये १६ जैसे मलयभी अग्नि जरायुजस्देज अथद्वज रज्ज्वज इन चार प्रकारके प्राणीनकूं पीड़ा देई है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र मिथ्यावासुदेवकूं और काशीके राजा कूं और तिनके हाथी रथ घोड़ा प्यं दे हैं जायें ऐसी जो चलुरंगिणी सेना है ताज गदा तरवारि चक्र



वाण इनमें बहुत पीड़ा देत भये १७ चक्रधूँ काटेनये जे रथ छोड़ा हाथी प्यादे गये छंट जायें परे ऐसी जो रणभूमिहै सो सुन्दर लगत भई जो कोई शूरवीर हैं तिनहुँ देखि कै आनन्द होत भयो जैसे प्रलयकालमें भयानक शिवजीके खेलियेको स्थान सुन्दर लगै है या प्रकार १८ सेना मारे पीछे शूरवीरशोत्पन्न जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते पौण्ड्र हत कहत भये शो भोः पौण्ड्रक ! तू दूतके वचन सुं मोते कहत भयो वे तेरे शत्रु छुड़ा देउंगो १९ हे अज्ञानी ! मोरो नाम जो वासुदेवहै सो तेने अपनो नाम भूठोही धरितीनो यह तेरो नाम छूटि जायगो और जो तेरे आगे युद्ध न करूंगो तो तेरो शरण लेउंगो २० या प्रकार तिरस्कार करिकै पैंनेवाणनसूँ पौण्ड्रकभो रथ तोरि कै जैसे इन्द्र अपने वज्रते पर्वत के शिखर काटै है तैसे चक्रते श्रीकृष्णचन्द्र पौण्ड्रकको शिर काटत भये २१ तैसेही काशीके राजाको वाणन करिकै देखतें शिर उखारिकै काशीपुरीमें पटकत भये जैसे कमल कोशुकूँ पवन पटकैहै ऐसे पटकत भये २२ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र भिवसहित जो पौण्ड्रकहै ताय

क्रीडनं भूतपतेरिवोत्पणम् १८ अथाह पौण्ड्रकं शोरिभौ भोः पौण्ड्रकयद्भवान् ॥ दूतवाक्येन सायाह तान्पस्त्राययुतमृजामिते १९ त्याजयिष्येऽभिधानं मे यत्त्वयाऽज्ञमृषाद्युतम् ॥ ब्रजामिरारण्यतेऽद्य यदिनेच्छामिसंयुगम् २० इति क्षिप्त्वा शितैर्वाणैर्विशिक्त्य पौण्ड्रकम् ॥ शिरोऽवृश्चदथाङ्गेन वज्रेणैन्द्रो यथागिरेः २१ तथा काशिपतेः कायाच्छिर उत्कृत्य पत्रिभिः ॥ न्यपातयत्काशिपुर्ध्यां पद्मकोशमिवानिलः २२ एवं मत्सरिणं हत्वा पौण्ड्रकं सप्तशहरिः ॥ द्वारकामाविशरिमं द्वेर्गीयमानकथाभृतः २३ सनिर्यं भगवच्छानप्रध्वस्ताऽखिलवन्धनः ॥ विभ्राणश्चहरे राजन्स्वरूपं तन्मयोऽभवत् २४ शिरःपतितमा लोक्य राजद्वारं सकुण्डलम् ॥ किमिदं कस्य वा वक्त्रमिनि संशयिरेजनाः २५ राज्ञः काशिपतेर्ज्ञात्वा गहिष्यः पुञ्जवान्भवाः ॥ पौराश्चहाहता राजन् नाथनाथेति श्रावन् २६ सुदक्षिणस्तस्य सुतः कृत्वा संस्था विविचि पितुः ॥ निहत्य पितृहन्तारं यास्य म्यपचिति पितुः २७ इत्यात्मनाऽनिंघाय सोपाध्यायो मे ह्वरम् ॥ सुदक्षिणोऽर्ध्यामास परमेण ममाधिना २८ प्रीतोऽविमुक्तो भगवांस्तस्मै वरमदा दूनः ॥ पितृहन्तवधोपायं सवेव रसं पिपातस् २९ दक्षिणार्धिनपरिवरा ब्राह्मणैः सममृत्विजम्

मारिकै सिद्धने गयो है कथारूप अमृत गिनको ऐसे श्रीकृष्ण द्वारकापुरीमें आनत भये २३ हे राजन् परीक्षित ! भगवान्के ध्यानतें दूरि भये हैं सन मनोरथ जाके ऐसो पौण्ड्रक हरिके स्वरूप कं हरिको नाम मिथ्या मानिकै अपनो नाम हरिमय मानत भयो २४ काशीमें राजाके द्वारपै कुण्डल सहित परयो जो शिर है ताय देखिकै यह कहा है कौनको मुक्त है या प्रकार मनुष्य सन्देह करत भये २५ पीछे हे राजन् परीक्षित ! काशीके राजाको शिर जानि कै रानी हैं ते और पुन भयता वन्द्यु तथा पुरवासी है ते हे नाथ ! हाथ हाथ मरे मरे या प्रकार काहि कहिके रोडन करत भये २६ ता वाशी के राजाको सुदक्षिण नाम करिकै पुत्रहै सो अपने पिताकी परलोद क्रिया करिकै पिताको मारनवारी कृष्णहै ताय चारिकै पिताको मृगण जुहाउंगो २७ या प्रकार बुद्धिधूँ निरचय करिकै उपाध्यायन महित गो सुदक्षिणहै सो परम समाधि लगाय कै शिवजीका पूजन करत भयो २८ विशेष करिकै अविमुक्त जो भगवान् शिवजी हे सो प्रसन्न होय कै ता सुदक्षिणहै तू वर मांग या प्रकार कहत भये तव सुदक्षिणहै सो पिताको मारनवारी जो है ताके वधतो उपाय पाबिद्धत वरहै ताय मांगत भयो २९ ऋषिदत्त वरहै ताय मांगत भयो २९ ऋषिदत्त कीसी नाई ( ऋषिजगृतिनजमि वस्तुनियोग करगंय वस्तुनियोग करगंय देवदृष्टिजमिति शु-

तेः) अपनी आज्ञाको करनगरो ऐसो जो कृत्याको अग्निहै ताय ब्राह्मणनकुं सायलैके सेवन करि वह अग्नि प्रमथगण हैं तिनकुं संगलैके मारणकी जो विधिहै ता करिकै तेरे मनोरथ सिद्ध करैगो ३० ब्राह्मणकी भक्ति करिके रहित जो पुरुषहै तायै चलावैगो तो तेरो सङ्कल्प सिद्ध होयगो यामें कहा कह्यो ब्राह्मणकी भक्ति करै जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनयै चलावैगो तो उलटो परेगो या प्रकार आज्ञा जाकू दीनी ग्रहण कर्योहै नियम जाने ऐसो जो सुदक्षिणहै सो श्रीकृष्णकुं घातसुं पारिविके लिये जैसे शिवजी ने आज्ञादीनी तैसेही करत भयो ३१ वह जो कुपह है तामुं अति भयानक मूर्तिमान् अग्नि उठतभयो तप्त ताब्रही तुल्यहै शिखा और दाढ़ी जाकी नेत्र और मुखसुं अंगारनकुं उगिलै ३२ दातन करिकै भयानक जे भुकुटीदण्ड तिनसुं कठोर है मुख जाको अपनी जीभतें ओठनके अग्रभाग कुं चाटै जाज्वल्यमान जो विशूनहै नाकू अग्रण करैहै ३३ और बड़े तालसे लम्बे पात्र हैं तिनपूं पृथ्वी कुं कँपात और दशो दिशानकुं जरावत भूत प्रेतन

अभिचारविधानेन सचाग्निः प्रगर्ध्वतः ३० साधयिष्यति सङ्कल्पमवक्ष्यग्रे प्रयोजितः ॥ इत्यादिप्रस्तथा च के कृष्णायाभिचरन्व्रती ३१ ततोऽग्निरुत्थितः  
कुर्यान्मूर्त्तिमाननिर्भाषणः ॥ तप्तताम्रशिखारमश्रुङ्गरोद्गारिलोचनः ३२ दंष्ट्रेऽश्रुकुटीदण्डकठोरास्यः स्रजिह्वया ॥ आलिहन्मृत्किणीनग्नोविधुनं  
स्त्रिशिखंज्वलत् ३३ पद्भ्यांतालप्रमाणभ्यां क्रमयन्नवनीतलम् ॥ सोऽभ्यधावद्धृतोभूतैर्दार्कांप्रदहन्दिशः ३४ तमाभिचारदहनमायान्तैर्द्वारकौकसः ॥  
विलोक्यतत्रमुःसर्वं वनदाहेमुभायथा ३५ अक्षैः समायांकीडन्तं भगवन्तं भयातुराः ॥ त्राहिन्नाहित्रिलोकेश वह्नेः पदहतः पुरम् ३६ श्रुत्वा तज्जनवैक्लव्यं  
दुष्टास्वानांच साध्वसम् ॥ शरण्यः संप्रहस्याह माभैष्ट्यविनाः स्म्यहम् ३७ सर्वस्यान्तर्वहिः ताक्षी कृत्यां माहे श्वरं विभुः ॥ विज्ञायत द्विधा तार्थं पार्श्वस्थं  
चक्रमादिशत् ३८ तत्सूर्यकोटिप्रतिमं मुदर्शनं जाज्वल्यमानं प्रलयाऽनलप्रभम् ॥ स्वतेजसा खंक्नु भोऽथरोदसी चकं मुकुन्दास्त्रिमयाग्निमादियत् ३९

कुं संगलैकै वह अग्नि द्वारकापुरी में आवतभयो ३४ वनके पजरिचे में मृग जैसे त्रासकुं पावैहैं ऐसे चलीआवै जो कृत्याग्नि है ताय देगिकै समस्त द्वारकावासी त्रासकुं पावतभये ३५ पावेन मूं सभागं खेलैं ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनसुं भयकरिकै वृणकुल जे द्वारकावासी हैं ते हे त्रिलोकीके ईश्वर! अग्नि करिके पजरै जो पुरहै ताकी तुम रत्ताकरो ऐसे कहतभये ३६ मनुष्यनकी व्यामूलताहै ताय सुनिहै और अपने पुरमें यादवनकुं हरवराहटहै ताय देखिकै शरणागतनके रक्तक जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो दैसिकै भय मतिकरों गै रत्ता कलंगो या प्रकार कहतभये ३७ सबके भीतर बाहर के देखनवरे सपर्य जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो महादेवकी कृत्याग्नि है यह जानिकै ताके नाश करिचे के निमित्त पास ठाढ़ो जो चक्रहै ताकू आज्ञा करतभये ३८ करोड़ सूर्यकी धरावरि है तेज जाको प्रलयकालकी अग्निकी तुल्य है कान्ति जाकी अपने तेज करिकै आकाश दिशा यावा पृथ्वी इनकुं प्रकाशै ऐसो जो मुकुन्द को अस्त्र चक्र सुदर्शनहै सो ता अग्निकुं पीड़ा देतभयो ३९

ॐ अत्राज्ञप्ये प्रमाजित इति शृण्वे मयोजितो भविष्यतीति सूचितम् तस्य ब्रह्ममन्त्रतत्वात् १ ॥



के देशनके ऊपर पट्टिके चूर्ण करते भयो और जिन देशन में कि मित्र नरकासुर के मारनारे श्रीकृष्णचन्द्र रहे हैं उन देशन कू बहुत कष्ट दैतभयो ४ दश हजार हाथी को है वल जामें ऐसी द्विदि वानर समुद्र के नीच में डाँडो होयके भुजान तें जलकू उन्नारि के समुद्र के तट के जो देश हैं तिन्हें हुवावन भयो ५ दुष्ट वानर है सो वहे वहे ऋषिन के आश्रमन में जाय के वृत्तन कू तोहि के मल मूत्र करि के यज्ञ की अग्नि कू दूषित करत भयो ६ वड्डो है गर्व जाके ऐसी जो वन्दर है सो पुरुष और स्त्रीन कू पकारि के पर्वत की गुफा में क्रन्दनन में धारि के जैसे भुङ्गी की डान कू मँढे देई है ऐने मूदत भयो ७ या प्रजा देशनमें उपद्रव करत कुनकी स्त्रीनकू टोप लगाय के मनोहर गीत है ताम्र सुनिके वानर रैवतक पर्वतमें जातभयो ८ ता रैवतक पर्वत में जायके यादवन के पालनवारे कृपल की माला पहिरे सुन्दर देखिबे योग्य है सन अंग जिनके स्त्रीन के बीचमें बैठे ऐसे जो राग बलदेव जी हैं तिन देखत भयो ९ कैसे वलदेवजी देखे सो कहें—वरुण है देवता जाको ऐसी

नागायुतमाणिवेलाकूलानमज्जयत् ५ आश्रमाद्यपिमुखानां कृत्वाभग्नवनस्पतीन् ॥ अदृपयच्छक्रुन्मूत्रैरनीनैवतानिकान्खलः ६ पुरुषान्योपितोदसः क्षमाभृद्गोणिगुहासुसः ॥ निक्षिप्यचापधाञ्छैलैः पेशस्कारीवकीटकम् ७ एवंदेशान्विप्रकुर्वन् द्रुपयश्चकुलस्त्रियः ॥ श्रुत्वामुललितंगीतं गिरिरैवतकंय यौ ८ तत्रापश्यद्यदुपतिं रामंपुंकरमालिनम् ॥ मुदर्शनीयसन्वाहं ललनायूथमध्यगम् ९ गायन्तंवारुणीपीत्वा मदबिबललोचनम् ॥ विभ्राजमानं वपु पाप्रभिन्निभित्रवारणम् १० हृष्टः शालामृगः शालामारुढः कम्पयन्नुमान् ॥ चक्रे किल किलाशब्दगात्मानं सम्प्रदर्शयन् ११ तस्य धार्ष्ट्यैर्कपेर्वाक्ष्य तरुणो जा तिचापलाः ॥ हास्यप्रियाविजहमुर्वलदेवपरिग्रहाः १२ ताहेलयामासकपिभ्रूश्रैः सम्मुलादिभिः ॥ दर्शयन्स्वगुदंतासां रामस्य च निरीक्षतः १३ तं ब्रान्वा प्राह तच्छुद्धो वनः प्रहस्तानगः ॥ सबच्चयित्वा ग्रावाणं मदिरा कलशं कपिः १४ गृहीत्वाहेलयामास धूर्तस्तं कोपयन् हसन् ॥ निर्भिद्य कलशं रुष्टो वासां स्यास्फा लयदुर्वलम् १५ कदर्थी कृत्यवलवान्विप्रचक्रे मदोद्धतः ॥ तं तस्या विनयं दृष्ट्वा देशांश्च तदुपहृतान् १६ छुद्धो मुसलमादत्त हलं चारि जिघांसया ॥ द्विद्विदो

मदिरा कू पी के गौं मद करि के विद्वन हैं नेत्र जिनके पगवारे हाथी की तुल्य देह करि के प्रकाशमान हैं १० दुष्ट जो शालामृग वन्दर है सो वृत्त की शालानपै चाँदके उनकू हलायन आपे कू दिलाय के किचिर किचिर शब्द करतभयो ११ वह जो वन्दर है ता की धृष्टता देखि के स्वभाष तें चञ्चल है सो जिनकू प्यारीलगे ऐसी जो वलदेवजी के समकी सी हैं तेहू हँसति गई १२ वह जो वन्दर है सो छुद्धो चढ़ाय के सामें मुँह मुँहिके स्त्रीनकू अपनी गुदा दिवाय के उलदेवजी के देखत स्त्रीन की अवज्ञा करतभयो १३ प्रहार करनवारेन में श्रेष्ठ ऐसे वलदेवजी को ध करि है वन्दर के पत्थर मारतभये वह धूर्त वन्दर पत्थर कू वचाय के मदिरा को कलश है ताय लै के हँभि के वलदेवजी कू क्रोध कराय के अवज्ञा करनभयो १४ जो वन्दर है सो मदिरा के कलश कू फोरि के स्त्रीन के वस्त्रन कू नैचि के फारत भयो वड्डो बलवान् मद करि के उद्धत जो वन्दर है सो वलदेवजी की कदर्थना करि के दुःख दैतभयो ता वन्दर की अनम्रता देखि के और उपद्रव जिनमें गचायो ऐसे देशनकू देखि के १४।१५।१६

क्रोध जिनके व्यापनो ऐसे बलदेवजी ता बैरी के पारिने न हल मनन देव भयो नही पगान्गी चन्दर है सो नो हात नें जावतुत के उबारिके १७ शीघ्रता नूं पाय आय के ता वृत्तकी चोट बलदेवजी के गये में पाग भयो पर्वतकी तुला पाये में चलयो आ। जो शाल को टुत है नाग १८ पतवान् बलदेवजी परत भये और प्रगने मूलकूं या चन्दर के मारत भये मूलक नगिके कळो है पायो जाको ऐसो जो चन्दर है सो मूलक ही चोट कूं नही पालिके जेमे येव में गेह ही धार ते पर्वत सुन्दर लगे है ऐमे रुधिर ही धारा जो वही तामूं सुन्दर लगनभयो वही है को १ जाके ऐसो चन्दर फेरि और जो वृत्त है तामूं बलने उगारिके बाते पतानूं साफ करिके बलदेवजी के मारत भयो ता बलदेवजी ११ वृत्त के दूस्दूस्द करतभये ताके पीछे और जो वृत्त है तामूं उगारिके बलदेवजी के मारत भयो तव ना वृत्त के बलदेवजी मौ दूत करतभये १६। २०। २१ या पगार भगवान् बलदेवजी के साथ युद्ध करिके फेरि जव वृत्त रुडि गये तव चारयो और ते

ऽपिमहावीर्यः शालमुद्यम्य पाणिना १७ अभ्येत्य नरसानेन बलं मुह्यन् ननाडयत् ॥ तन्तुमदर्शयो मुद्धि। तन्तमनलो यया १८ प्रतिजघ्न हवलवान् सुनन्देना हनचतम् ॥ सुसलाहतमस्त्रिपक्षोऽभिरैजोऽक्रथारया १९ गिरिवैयोगिरिकया गङ्गां नानुनिनायन् ॥ पुनरन्यं समुत्तिष्ठ्य कृतानिष्पन्नभीजया २० तेनाहनत् सुमंक्रुद्धस्तेवलः शतवाऽब्धिनत् ॥ तनोऽन्यं रुगाजघ्नेतं चापिशतवाऽब्धिनत् २१ एवं युद्धयन् भगवता गाने भगने पुनः पुनः ॥ आकृष्य मर्धतो वृक्षान्निर्वृश मक्रोद्धनम् २२ ततोऽमुद्यच्छलावर्पलस्योपर्यमर्पिनः ॥ नरमर्धचूर्णया गामलीलायामुमलायुधः २३ सवाहूनालसङ्काशौ मुष्टीकृत्य कपीश्वरः ॥ आसाद्यरो हिणी पुत्रेन। २४ पञ्चस्य खरुजत २४ यादवंदोऽपि नंदो भ्यंत्यक्ता मुमललाङ्गलो। जत्रावभर्दयत् कृद्धः सोऽपतदुधिरंगन् २५ चरुपेतेन पतता सटङ्कः सवनस्प निः ॥ पर्वतः क्रुशार्दूल वायुगानैर्ग्वामासि २६ जयशब्देन गः शब्दः साधुसाध्विति चाम्भरे ॥ सुरसिद्धसुनीन्द्राणामासीत् कुमुदवर्षिणाम् २७ एवं निहत्य द्वि विदं जगद्व्यतिकरावहम् ॥ संस्तूयमानो भगवाञ्जनेऽस्मत्पुरमाविशत् २८ इति श्रीमद्भगवते महापुराणे दशगल्हन्धे द्विविदवधो नाम सप्तपष्ठितमोऽध्यायः ६७॥

वृत्तन में उगारिके नहीं रयो है एतद वृत्त गाँ ऐसो या पगदू करत भयो २२ ताके पीछे गई है अमहनता जाते ऐसो जो चन्दर है सो बलदेवजी के ऊपर पत्थर नरसावत भयो मूलक है इथियार जिनको ऐसे बलदेवजी चन्दरने पतार में परसाये तिन कीला करिके चूर्ण करतभये २३ चन्दरन हो ईपर जो चर चन्दर है सो नाटुत की परापर चड़ी भुजाई तिन ही मूठी रागिके रोहिणीपुत्र जो बलदेवजी हैं तिनके पास जाय के छातीमें मुष्टि मारतभयो २४ यादवन के इन्द्र जो बलदेवजी हैं सो भी हल मूलक तुलागिके को १ करिके भुजाने चन्दरके एण्ड कूं मर्दन करतभये ता समय चर चन्दर रुधिर जो वमनवर गिरिके मरतभयो २५ है कौरवनों सिद्धराजा परीक्षित! गिरयो जो चन्दर है तामूं भ्रान्तसहित और वृत्तनत देव जो पर्वत है सो पंगतभये जैसे जलम पवनसूं चौका कायै या पगार २६ आकाशम गर्ग में देवता सिद्ध मुनीश्वर हैं ते पूजन की रयी रस्त जयशब्द और नमःशब्द और भले भले शब्द करतभये २७ या प्रकार जगत् को नाश करनचारो जो चन्दर

है ताय गारि है जननने स्तुति जिनकी करी ऐसे भगवान् बलदेवजी द्वारकापुरीमें आवत भये २८ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्याद्यंशमस्कन्धउत्तरार्द्धेद्विविधवधोनामसप्तपष्ठितोऽध्यायः ६७ ॥  
( अष्टपष्ठितमेसाम्मेनिरुद्धे कौरवैर्युधि ॥ तद्विभोत्तायराणेणजह्मथविरुपेणम् १ अटसठयं अथायगे कौरवाँने सामको संग्राममें बाध लियो तउ उनके छुड़ाने के लिये बलदेवजीने हस्तिनापुरको लींचोहै १ ) अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! युद्धमें जीतनगरो जो जाम्बवतीको पुन साम्हैं सो दुर्योधनकी पुत्री जो लक्ष्मणाहै ताय स्वयंवर में तें हरिकै लावतभयो १ तसमय समूर्ण कौरव क्रोधकरिकै बोलतभये यह बालक बडो अनज्रहैं हमारो अनादर करिकै नहीं है काम जाके ऐसी हमारी कन्याकू बलतें हस्तभयो २ अनज्र जो यह बालकहैं ताय बाधिलेउ यादव हमारो कहा करेगे जे यादव हमारी प्रसन्नताम् एडिकूं प्राप्तभये हैं हमारी दीनीभई पृथ्वीको भोग करे हैं ३ या बालक कूं धैव्यो सुनिकै जो यादव यहा आयेगे तौ दूरि भयो है गर्व जिनको

श्रीशुकउवाच ॥ दुर्योधनसुताराजलक्ष्मणांसमितिजयः ॥ स्वयंवरस्थामहरत् साम्बोजाम्बवतीसुतः १ कौरवाःकुपिताऊचुर्दुर्विनीतोऽयमर्भकः ॥ कदर्थीकृत्यनःकन्यामकामामहरद्वलात् २ वध्नीतेमंडुभिनीतं किंकरिष्यन्तिवृष्णयः ॥ येऽस्मत्प्रसादोपचितां दत्तानोगुजतेमहीध्व ३ निगृहीतंसुतंश्रुत्ताय द्येप्यन्तीहवृष्णयः ॥ भग्नदर्पाःशमंगयन्ति माणाइवसुरंगताः ४ इतिकर्णःशलोभूरियज्ञकेतुःसुयोधनः ॥ साम्भोरेभिरेववृद्धं कुरुद्वानुमोदितः ५ हृद्व्वाऽनुधावतः साम्बोधात्ताराष्ट्रान्महारथः ॥ प्रगृह्यारुचिरंचापं तस्थौसिंहइवैकलः ६ तंतेजिघृक्षवःकृद्वारिष्यतिष्ठतिभापणः ॥ आसाद्यधन्विनोत्राणैःकर्णाशयःसमाकिरन् ७ रोऽपविद्धःकुरुश्रेष्ठकुरुभिर्धुनन्दनः ॥ नाघृष्यत्तदचिन्त्यार्भःसिंहःकुद्रसृगैरिव ८ विस्फूर्ज्यरुचिरंचापं सर्वान्विठ्याधमायकैः ॥ कर्णादीन्पट्थान्धीरस्ताविद्धिर्युगपत्पृथक् ९ चतुर्गिरचतुरोवाहानैकैर्केनचसारथीन् ॥ रगिनश्चमेह्वेष्वासांस्तस्यतचेऽभ्यपूजयन् १० तन्नुतेविरथंचक्रुश्चत्वारश्च ऐसे माणायाम करे तें जैसे इन्द्रिय शान्त होती हैं ऐसे शान्तिकूं पावेंगे ४ याप्रकार भीष्मजीने अनुमोदन जिनकूं कस्यो ऐसे कर्ण शल भूरि यज्ञकेतु दुर्योधन भीष्म सहित ये छ. बाधिनेको उपाय करतभये ५ महारथी जो लाग है सो पीछे दौरे चलो आये जे छः धृतराष्ट्रके अनुयायी तिनं देखिकै सुन्दर धनुष् हाथों लैंके सिंहकी हृष्य अमेलोही डाढ़ो होत भयो ६ कर्ण है मुख्य जिनमें ऐसे धनुषके धारण करनवारे छः हैं ते क्रोधमें गरिकै सामके पकरिके लिये ठाढ़ो रहु ऐसे कहत पास आय कै बाणन कूं चलावत भये ७ हे राजन् परीक्षित ! यादवन कूं आनन्द के देनवारे अचिन्त्य भगवान् श्रीकृष्णबन्ध को पुत्र जो साम्भ है ताके कौरवनने बाण मारे तव छुद्र जानरन के पराक्रम कूं सिंह जैसे नहीं सहारे हैं ऐसे नहीं सहारत भयो ८ वीर जो साम्भ हैं सो मनोहर धनुषकू चढ़ाय कै कर्णादिक जे छः रथी हैं तिनं छः बाणन करिकै एक सङ्ग वेधतभयो ९ चार बाण करिकै रथके चारों घोड़ान कूं और एक बाण करिकै रथवानन कूं वेधन भयो बड़े बड़े हैं धनुष जिनके ऐसे जे छः रथी हैं ते साम्भ के पराक्रमकी प्रशंसा करतभये १० तिन कौरवनमें ते चारजने तौ चारों घोड़ानकू मास्त भये और एकजने रथवानकूं मास्तभयो एक धनुषकूं तोरत



भयो या पदार सब मिलिकै साम्भ कं त्रिरु करत भये ११ कौरव हैं ते कष्ट स्यूयुद्ध में बालक साम्भकू विरथ करिकै वाधिकै अपनी कन्या है ताथ लैके जीतिकै अपने पुरमें जात भये २ हे राजन परीक्षित ! नारदके कहे ते साम्भ कूं वै-यो सुनिकै भयो है क्रोध जिनके ऐसे यादव राजा उग्रमेन के कहे तें कौरवन सूं लड़िये को उद्यम करत भये १३ फलियुग के पापन के नाश करनवारे जो बलदेवजी है सो कौरव यादवन को परस्पर विरोध न होइ यह त्रिचारिकै कवच जिनने पहिरे हथियार बाधे जे यादव है तिन संप्रदाय कै १४ सूर्य की तुल्य है कान्ति जाकी ऐसे रथ में बैठि कै ब्रह्मणन कूं सक्त लिये कुलमें दृढ़ हैं तिनकूं सक्त लैके जैसे ग्रहणसाहित चन्द्रमा गमन करे है ऐसे हस्तिनापुरकूं जात भये १५ बलदेवजी हस्तिनापुर में जाय कै वस्ती के बाहर बगीचा में उहरिकै कौरवनको अभिप्राय जानिये के लिये धृतराष्ट्र के पास उद्धवजी कूं नेजत भये १६ उद्धवजी अभिप्राय के पुत्र धृतराष्ट्र कूं प्रणाम करिकै भीष्मजी कूं और बाह्यिक सहित द्रोणाचार्य कूं

तुरोहयान् ॥ एनस्तुसारिषिजघने चिच्छेदान्धःशरासनम् ११ तम्वद्धु॥ विरथीकृत्यकृच्छ्रेणकुरवोयुधि॥ कुमारंस्वस्यकन्याञ्च स्रपुंजयिनोऽविशन् १२ तच्छु  
रानारदोक्तेन राजन्मञ्जानमन्यवः॥ कुरुष्वधृत्यद्यमश्चकुरुष्वेनप्रचोदिनाः१३रान्प्रयित्वातुतान्नामः सन्नहान्नवृष्णिपुङ्गवान् ॥ नैच्छत्कुरुष्णवृष्णिनां क  
लिकलिमलापहः १४ जगामहास्तिनपुरंरथेनाऽऽदित्यवर्चसा ॥ ब्राह्मणैःकुलवृद्धैश्च वृत्तश्चन्द्रवग्रहैः १५ गत्वागजाद्वयंरामो बाह्योपवनमास्थितः ॥ उ  
द्धवंप्रेषयामास धृतराष्ट्रंभुत्सया १६ सोऽभिवन्द्याभिवक्रापुञ्चं भीष्मद्रोणञ्चवाह्मिन् ॥ दुर्योधनञ्चविधिवद्राममागतमब्रवीत् १७ तेऽनिप्रीतास्तगाकश्यपे  
प्राप्तंरामंमुहत्तमम् ॥ तमर्चयित्वाऽभिययुःपर्वमङ्गलपाणयः १८ तंमङ्गम्यथान्यायं गामर्धननयेदयन् ॥ नेपांयेतत्प्रभावज्ञाः प्रणमुः शिरसावलम्ब १९ बन्धून्  
कुशलिनःश्रुत्वा पृश्नाशिवगनामयम् ॥ परस्परमथोरामोवभापेऽविक्रवंचः २० उग्रमेनःक्षितीशो यद्धाज्ञापयत्प्रभुः ॥ तद्वयग्रधियःश्रुत्वा कुरुष्वंभवि  
लम्बितम् २१ यद्युयं ॥ गृहवस्त्वेकंजित्वाऽधर्मपाथार्मिकम् ॥ अन्नधनीताथतनृष्ये ॥ वन्धूनामैक्यकाम्यया २२ वीर्यशौर्यवलोन्नद्धमात्मशक्तिसमं वचः ॥ कुर

दुर्योधन कूं विधिपूर्वक प्रणाम करिकै बलदेवजी आयें हैं यह कहत भये १७ वड़े हितकारी बलदेवजी है तिनकूं आये सुनिकै अतिप्रसन्न भये ऐसे जे सम्पूर्ण कौरव हैं ते उद्धवजी को पूजन करिकै भेंटन कू हाथ में लैके बलदेवजी के सम्मुख जातभये १८ ते कौरव रीतिपूर्वक बलदेवजीतें मिलिकै गौ और अर्घ्य है ताथ देत भये और तिन कौरवन में जे पलदेवजी के प्रभावकूं जानें हैं ते शिर नवाड कै प्रणाम करत भये १९ समस्त बन्धुन की कुशल श्रवण करि आपुस में कुशल जो पृथ्विकै पीछे जाके श्रवण करे तें व्याकुलता होइ ऐसी बचन बलदेवजी कहत भये २० सामर्थ्यवान् पुरुषी के ईश्वर राजा उग्रसेनेने जो आज्ञा तुमकूं करी है ताथ एकाग्रबुद्धिसूं श्रवणकरिकै शीघ्रकरो २१ अब राजा उग्रमेनको वचन कहे हैं बहुत जो तुमही तितने शत्रुर्म करिकै धर्मोत्पत्ता बालक कूं बाधितियो यह जो तुम्हारी अपराध है सो बन्धुनकी आपुस में ऐक्यता रहे विरोध न होय याकारण हमने सहाय लियो अत तुम शीघ्र साम्भकूं लाय कै अर्पण करो २२ पराक्रम गुरता बलको

ॐ यद्ययमित्युपेतंवाक्यम् ७ ॥ + मृपेसहे अथाशु तमागोय समर्पयततिशेष ७ ॥

भरयो और अपनी सायर्थ के समान ऐसे जो बलदेवजी को प्रचन है ताय श्रवण वरिके कोप करिके कोरम बोलत भये २१ अहो नरे आरवर्थ की गत है देखो काल की गति वही दुरतथ है पावके पहिरिचेकी लूती मुकुट करिके सेवित जो शिर है ताग चढ़यो चाहे २२ इनके यहाते जब ते घृथां व्याहिके लाये ततये यादव नते सभन्य भयो है हमारे मग पलंगये सोवे है संग थेठे है संग भोजन करे है यादव हमने अपनी घरागरि के करिलिये और हमने ही इनके राज्यासनदियो है २५ चमर पट्टा शङ्ख श्वेतवज्र किरीट आसन शय्या ये वस्तु हमारी दानी यादव भोगकरे है २६ जैसे सर्पनकू जो दूध पिवावे ताही कू काटे है ऐसे देनचारेनकू लटे भये ऐसे यादवन कू राज्यासी वस्तु छत्र चापरादिक है तिनके देनेगू पूर्ण भये हमारी मसनता सू वदे अय हमही कू आज्ञा करत है नडे कष्ट भी बात है इनकू लाजहू न आई ऐसे यादव वदे निलेज है २७ भीष्म द्रोण अर्जुन इत्यादि कौरवनके दिये विना यस्तु कू इन्द्र है ते ग्रहण करे जैसे भेड़ सिंह के मुल

चोबलदेवरय निशम्योचुः प्रकोपिताः २३ अहो महच्चित्रमिदं कालगत्यादुरतया ॥ आरुरुक्ष्युपानदै शिरोमुकुटमेवितम् २४ एते योनेन समृद्धाः सदृश रयासनाशनाः ॥ वृष्णयस्तु हयतां नीता अस्मद्वत्तृपासनाः २५ चामव्यजने शास्त्रमातागजवपाण्डुरम् ॥ किरीटपासनशय्यां भुञ्जन्त्यस्मदुपेक्षया २६ अलं यदूनानरे वलाज्जनैर्दतुः प्रतीपैः फणिनामिवासुनम् ॥ येऽस्मत्प्रसादोपचितो हियादवा आज्ञायन्त्यद्यग्नत्रपादन २७ कथमिन्द्रोऽपि कुरुभिर्भीष्मपद्मे णाज्जुनादिभिः ॥ अदत्तमवरुन्धीत सिंहग्रस्तमिवोरणः २८ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ जन्मबन्धुश्रियो बल्लगदास्ते भरतर्षभ ॥ आश्रवयामं दुर्वोच्यमासभ्याः पुरगाविशन् २९ दृष्ट्वा कुरुणान्दौःशील्यं श्रुत्वाऽवाच्यानि चाच्युतः ॥ अघो चरकोपसंख्यो दुष्पेक्ष्यः प्रहसन्मुहुः ३० नूनं नानामदो नृच्छः ॥ शान्तिनेच्छन्त्य साधवः ॥ तेषां हि प्रशमोदयः पशूनां लगुडो यथा ३१ अहो यदूनमुसंखान् कृष्णञ्च कुपितं शनैः ॥ सान्त्वयित्वाऽभ्येतेषां शममिच्छन्निहागतः ३२ इमं मन्दमतयः फलहाभिरताः खलाः ॥ तं मामेव ज्ञायमुहुर्दुर्भापान्मानिऽद्युच ३३ नो ग्रमेनः फिलविभुर्भोजवृष्यागन्ध हेस्वरः ॥ शक्रादयो लोकरपालायस्यो देशाः

की वस्तु कू कैसे ग्रहण करि सकै है २८ अब श्रीशुकदेवजी कहै है भरतवंशीनं अष्ट राजा परीक्षित ॥ अष्ट कुलमें जन्म बन्धु उन इनसू वदे है गद जिनके ऐसे जे असाधु कौरव है ते कहिये योग्य नहीं ऐसे वचन बलदेवजीकू सुनायकें पुरमें जात भये २९ कौरवनकी दुष्टता देखि और कहिये योग्य नहीं ऐसे वचन अरण करिके देखे न जायें ऐसे बलदेवजी वारवार हंसिके बोलत भये ३० नाना प्रकारके मद है तिनकू मर्यादा जिनने त्यागि दीनी ऐसे जे अस धु कौरव है ते निश्चय शान्ति नहीं चाहे है इन दुष्टनके शान्ति करिये कू दण्डही है जैसे पशु लट्ट मारे तेही समके है या प्रकार ३१ वडो है क्रोध जिनके ऐसे यादवनकू होले होले समझायकें और क्रोधमें भरे जे श्रीकृष्ण हैं तिनकू समझायकें इन कौरवनको मिलाप करायवेके निमित्त मैं यहा आयो हूँ ३२ परञ्च मन्द है बुद्धि जिनकी कलहप्रिय अधिपानी कौरव है ते परी अवज्ञा करिके निन्दित वचन कहत भये ३३ भोज वृष्णि अन्यत्र ये यादवनके गोत्र हैं तिनके ईस्वर इन्द्रते आदिले के वदे

बड़े लोकपाल देवता जिनकी आज्ञा वचन हैं सो कहा कौरवन्तं आज्ञा करिवेकू समर्थ नहीं हैं ३४ जिन श्रीकृष्णचन्द्रने इन्द्रकी सभा पावनधूं हृदी और देवतानको कल्पवृक्ष लायके अपने महलके वगीचामें लगायो ते कहा योग्य नहीं हैं ३५ ब्रह्मादिकन की ईश्वरी जो लक्ष्मी है सो साक्षात् जिनके चरणारविन्दको सेवनकरै वे श्रीकृष्णचन्द्र लक्ष्मी के पति सो कहा राजानकी वस्तुनके योग्य नहीं हैं ३६ जिन श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्दकी रज है सो सपस्त लोकनके पालन करनवारै जे ब्रह्मादिक तिनके मुकुटन करिके युक्त जे माये हैं तिनपै चरण करी है और सेवन करचो जो गदातीर्थ ताहूकू पवित्र करनवारो है जिनके अशके अंश जे ब्रह्मा महादेव लक्ष्मी है ते और हम सम्पूर्ण बहुत दिन पर्यन्त चरणारविन्द की रेणुधूं माये पै धारण करै हैं इन श्रीकृष्णचन्द्र के राज्य/सन कहा पदार्थ है ३७ कौरवनने जो पृथ्वी को दूकदियो है ताय यादवभोगे है और हम पांवकी जूती ठहरै कौरव शिर ठहरै ३८ अहो ऐश्वर्य करिके मतनारे की तुल्य अभिमानी जे कौरवहै

नुवार्त्तिनः ३४ सुधर्माऽऽक्रम्यतेयेन पारिजातोऽमराङ्गिणः ॥ आनीयमुज्यतेसोऽसौ नकिलाध्यासनाहणः ३५ यस्यपादयुगंसाक्षाच्छीरुपास्तेऽखिलेश्वरी ॥ मनार्हतिकिलश्रीशोनरदेवपरिच्छदान् ३६ यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजोऽखिललोकपालैर्मौल्युत्तमैर्धृतमुपासितनीर्थेषु ॥ ब्रह्माभवोऽहमपियस्यनलाः कलायाः श्रीश्चोद्रेहमचिरमस्यनृपसनेक ३७ भुञ्जेनेकुरुभिर्दत्तं भूतखण्डवृणयः किल ॥ उपानहः किलवयं स्वयंतु कुवः शिरः ३८ अहो ऐश्वर्यमत्तस्थौ दहनिवजगत्रयम् ४० लाङ्गलाग्रेणानगरमुद्विदार्थमजाह्वयम् ॥ विचक्रपसगङ्गायांप्रहरिष्यन्नमर्पितः ४१ जलयानमिवाघूर्ण गङ्गायानगरंपतत् ॥ आकृष्यमाणमालोक्य कौशवाजानमम्रताः ४२ तमेवशरणं जग्मुः सकुटुम्बाजिजीविपवः ॥ सलक्ष्मणंपुरस्कृत्य सामंप्राञ्जलयः प्रभुम् ४३ रामरामाखिलाधार प्रभावंविदामते ॥ मूढानां गः कुडुच्छीनां क्षन्तुमर्हस्यतिक्रमम् ४४ स्थित्युत्पत्त्यययानां त्वमेको हेतुर्निराश्रयः ॥ लोकान्कीडनकानीश कीडतस्तेवदन्ति हि ४५ तमेवमूर्ध्नी

तिनके कर्कश देके वचनकूं सुनिके दण्डको देनचारो होयकै एसो कौन पुरुषहै जो सहसकौ ३६ अब इन कौरवन करिके रहित पृथ्वी कूं करिदेङ्गो या प्रकार भई है असहनता जिनके ऐसे बल-देवजी हलकू ग्रहण करिके मानो जिलोकी कूं भस्म करिदेङ्गो ऐसे क्रोध करिके डाढ़े होतभये ४० भई है असहनता जिनके ऐसे बलदेवजी हलके अग्रभाग ते हस्तिनापुर कूं उलारिके नाश करिके के लिये गङ्गामें खेवत भये ४१ नौकाकी तुल्य भ्रमण करत गङ्गाजी में गिरयो जाय ऐसे नगरकूं देखिके भयो है अम जिनके ऐसे कौरव लक्ष्मणासहित जो सांव है ताय आगे करिके हाथ जोरि कै कुटुम्बतहित जीवनकी इच्छा करिके समर्थ जे बलदेवजी हैं तिनकी शरण जातभये ४२ । ४३ हे राम ! हे राम ! हे समके आश्रय ! तुम्हारे प्रभावकूं नहीं जानें जे हम मूढ़ कुडुछि हैं तिनके ऊपर तुम क्षमा करिवे योग्यहौ ४४ स्थिति उत्पत्ति नाश इनके तुम एक निराश्रय कारणहौ दे ईश ! कीडा करो जो तुमहौ तिन तुम्हारे लोकनकूं खिलौना करे हैं ४५ हे अनन्त ! दे सहसमूर्ध्नेन अर्थात् हजार

१ लाक्षश्रेण दग्धिणत प्रापामूले नितलतेन बद्धिद्वयं दरादय ५ ॥ २ निर्माविप १, २, ३, ४, ५, ६ ॥



(एकोनसप्ततितमो गार्हस्थ्यध्यात्ममन्दिरम् ॥ कृष्णस्य नारदो दृष्ट्वा विदितोऽगात्ततः स्तुवन् ? उनहत्तरवें आध्याय में नारदजी कृष्णजी की प्रत्येक मन्दिर की गार्हस्थ्य देना हर त्रिप्रययुक्त होकर स्तुति करते द्रुपे चले जाते भये ? ) अब श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! नरकासुर कूं माखो सुनिकै तैसेही अकेले श्रीकृष्णचन्द्र ने बहुत स्त्री व्याही यह बात सुनिकै देखिने की इच्छा भिनेके भई ऐसे नारदजी द्वारकापुरी में आवन भये ? वैसे नारद हैं यह बड़ो आश्चर्य है कि एक देह तें एक सन्न न्यारे न्यारे धरन में सोलह हजार स्त्रीन कूं एक संग व्याहत भये २ या प्रकार उत्पद्यता जिनके भई है अन् द्वारकापुरी वो वर्णन करे हैं फले जे उद्यान अर्थात् बिना लगाये वन और उपवन अर्थात् वस्ती के समीप लगाये भये यगीचा तिनमें पत्नी भैं रा जो बोले है तिनको शोर जामें होय रलो है ३ फले जे इन्दीवर अम्भोज कहार कुमुद उत्पल ये कमलन के भेद हैं तिन करिकै व्याप्त ऐसे जे सरोवर हैं तिनमें उच्चस्तर करिकै ईस सारस गे बोले हैं तिनको शोर

श्रीशुक्रउवाच ॥ नरकं निहन्ति श्रुत्वा तथोद्वहं च योगिनाम् ॥ कृष्णे नैकेन वहीनां तद्विदुः समनारदः १ चित्रं तदेकेन द्रुपद्युगपत्पृथक् ॥ गृहेषु द्रव्यष्टसादृशं स्त्रिय एक उदावहत् २ इत्युत्सु को द्वात्रिंशती देवर्षिर्द्रुपमागमत् ॥ पुष्पितोपवनारामाद्विजालिकुलनादिताम् ३ उत्फुल्लेन्दीवरान्भोजकह्लारुमुदोत्पलैः ॥ छुरिते पुनरस्मूचैः कूजितां हंससारसैः ४ ग्रासादलैश्चैव भिर्जुष्टां स्फाटिकराजतैः ॥ महामरकतपूर्यैः स्वर्णरत्नपरिच्छदैः ५ विभक्त्वा पथ्य च त्वरापणैः शालासभाभीरुचिरां सुरालयैः ॥ संसिक्तमार्गाङ्गणमीथि देहलीं पतत्पताका ध्वजवातितापाम् ६ तस्यामन्तःपुरं श्रीमदचित्तं सर्वविषययैः ॥ हरैः स्वकौशलं यत्र त्वद्वाकारस्यैव दर्शितम् ७ तत्र पोडशभिः भद्रा सहस्रैः रागलङ्कृतम् ॥ विवेशैकतमं शौरैः पत्नीनां भवनं महत् ८ विष्टब्धं विदुमस्तम्भैर्वैदूर्यफलकोत्तमैः ॥ इन्द्रनीलमयैः कुड्यैर्जगत्या चाहत् त्रिपा ९ वितानैर्निर्भिर्तैस्त्वद्गामुक्ता दामाविलम्बिभिः ॥ दान्ते रासनपथ्यं ध्वजैर्मण्युतमपरिष्कृतैः १० दासीभि

जामें होय रखो है ४ स्फटिकमणि चांदी और महामरकतमणिन करिकै प्रकाशमान सुवर्ण की रत्न की सामग्री जिनमें धरी ऐसे नवलाग जामें महल बने हैं ५ न्यारे न्यारे बने जे राजमार्ग और गली कूचा बाजार तिन करिकै और शाला सभा देवनानके मन्दिर बने हैं तिन करिकै शोभायमान द्वारका है छिरकाउ जिनमें होय रखो ऐसे मार्ग औरगन गली देहरी जामें बनी हैं छोटी छोटी पताका जिनमें फहरायै ऐसी बड़ी बड़ी खजा है तिनमें १० जिनमें नहीं आवै है ६ या द्वारकापुरीमें सम्पूर्ण लोकपाल जाकी पूजा करै ऐमे श्रीकृष्णचन्द्र को अन्तःपुर है ता अन्तःपुर की रचना में विश्वकर्मा ने सम्पूर्ण अपनी चतुराई दिव्याई है ७ सोलह हजार महलन करिकै शोभायमान अन्तःपुर है तामें श्रीकृष्णचन्द्र की रानीनके जे भवन है तिनमें तें एक भवन में नारदजी जातभय ८ कैसे भवन में गये हैं ताको वर्णन करै हैं पूंगान के सरूप जामें लगे हैं और वैदूर्य मणिके फलकोत्तप अर्थात् खम्भधन की चौकी बनी है इन्द्रनीलमणि की भीति बनी हैं नहीं गई है शोभा जाकी ऐसी जहाँ भूमि बनी है ९ मोतन की भालारि जिनमें लगी ऐसे विश्वकर्मा ने बनाये जे चंदोरा हैं तिन करिकै वह भवन शोभायमान है मणि जिनमें लगी तिनमें शोभायमान ऐसे द्वाथी-

दाँत के चौकी और पलंग बिछे हैं तिन करिकै शोभायमान है १० धुकधुकी जिनके कपठ में सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरे ऐसी जे दासी हैं तिन करिकै शोभायमान है जामा पगड़ी पटुका मणिन के सुएडल पहिरे ऐसे जे पुरुष हैं तिन करिकै शोभायमान है ११ हे राजन् परीक्षित ! रत्न के दीपान की जे पंक्ति लागि रही हैं तिनके प्रकाश करिके अन्यकार जा भवन में तें दुरि भयो और घरन के भीतर अगर की जो धूप दीनी ताको धुआँ जाली भरोखान में होय के निकसे ताय देखि कैं मानों वादर आयें हैं यह जानि कैं मोर शब्द कूं करिकै भवन के चित्र विचित्र बज्जोन के ऊपर वृत्त करे हैं १२ ता मङ्गल में अपनी बरामरि के गुण रूप अवस्था गहने जिनके ऐसी हजार दासीनकूं सत्र लैंके सर्वकाल सुवर्णही डांडी को चपर पला लैंके यादवन के पति जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके ऊपर होरे ऐसी जो स्त्री रुक्मिणी है ता सहित श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन नारदजी करत भये १३ समस्त धर्म के जाननमारेग में श्रेष्ठ जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ते नारदजी कूं देखि के रत्नमणी सहित

निष्कलङ्कश्रीभिः सुवासोभिलङ्कृतम् ॥ पुम्भिः सक्नु कंष्णीपसुवस्त्रमणि कुएडलैः ११ रत्नपदीपनिष्कलङ्कतिभिर्निरस्तध्यानं तं विचित्रवलर्भीपुंशि खरिडनो  
ऽङ्ग ॥ नृत्यन्ति यत्रानिहिता गुरुधूपमथैर्निर्यान्तर्माध्यघनचुद्धयउन्नदन्तः १२ तस्मिन्समानगुणरूपवयःसुवेषदासीसहसयुतयाऽनुसंवर्गद्विरया ॥ निप्रोद  
दर्शचमत्स्यजेनरुग्मदण्डेनसात्त्वतपतिपरिवीजयन्त्या १३ तं मन्त्रिरीक्ष्य भगवान्सहसोत्थितः श्रीपद्व्यङ्कतः सफलधर्मभृतां वारिष्ठः ॥ आनम्यपादयुग  
लं शिरसाकिरीटजुष्टेन सञ्जलिबीविशदासनेस्मे १४ तस्यावनिज्य चरणौ तदपःस्वमूर्द्धा विभ्रज्जगद्गुरुतरोऽपि सतां पतिहिं ॥ ब्रह्मयदेवद्विनियद्विगुणना  
गयुक्त्वं तस्यैव चारणशौचमशेषनीर्थम् १५ सम्पूज्य देववन्द्यपि वदर्थमृषिपुराणे नारायणो नरसखो विधिनोदितेन ॥ वारायाऽभिभाष्य मितयाऽमृतमिष्टया तं  
प्राह प्रभो भगवते करवा महोक्तिम् १६ ॥ नारद उवाच ॥ नैवाऽद्रुतं त्वयि विभोऽखिललोकनाथ मे त्रीजने पुत्रकलेषु दमः खलानाम् ॥ निश्रेयसाय हि जगत्स्थिति  
रक्षणार्थ्यां सैरावतार उरुगायविदाममुष्ठु १७ दृष्टं न दद्विगुणलं जनतापवर्गवत्त्वादिभिर्हृदिविचिन्त्यमगाधो वै ॥ संसारकूपपतितोत्तराणवलम्बध्यायंश्च

पलंगमें तें शीघ्र उठिकै किरीटयुक्त शोभायमान जो शिर है तासूं चरणन में नगस्कार करिकै हाथ जोरि कै अपने आसनमें बैठत भये १४ जगत्के अतिशय करिकै गुरु साधुनके रत्नक ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो नारदजी के चरण ओइके चरणारविन्द को धोयन जल है ताय अपने माथेमें चढ़ावत भये जिन श्रीकृष्णचन्द्र को चरणोंदक गङ्गा सबकूं पवित्र करै है तिनमें ब्रह्मयदेव यह गुणयुक्त नाम ज्यों बो ल्यों बने हैं १५ नर है सखा जिनको ऐसे चपिन में श्रेष्ठ नारायण नारदजी हैं तिनको शास्त्रोक्त विधिपूर्वक पूजन करिकै अमृत की तुल्य प्रमाणीभूत मधुरवाणी करिकै सम्भाषण करत भये कि नारदजी आप आयें नइो मङ्गल भयो हे समर्थ भगवान् ! वृष तुम्हारे महा पूजन करै यह कहत भये १६ अथ नारदजी कहे हैं हे समर्थ ! सत्य जीवन ते पवित्रना करौ हो और दुष्टन कूद पड देत हो ऐसे समस्त लोकन के नाथ जो तुम ही तिनमें आश्चर्य नई है बहुगणकार गायत्रे में आवो जगत् की स्थिति और रत्नासाहित तल्याण करिके लिये अपनी इच्छापूर्वक अवतार लेत हो यह मैं भले प्रकार जानूं हूं दुष्टन कूद पड देनो और साधुन को सत्कार करनो यह तुम कूं योग्य है १७ जननकूं मोक्ष हो देनन रो चरणमाल है ताकूं उडो है ज्ञान जिनके ऐसे ब्रह्मादिक देवता हृदयमें ध्यान करै



संसाररूप कुत्रा में दूगो जो जीव है ताकू निकसिये को आश्रय ऐसी तुम्हारे चरणारविन्द को दर्शन करयो जैसे सुनि रही आवै तैसे चरणारविन्द को व्यान करत भे विचरुं यह अनुग्रह भरे ऊपर करो १८ हे राजन परीक्षित ! योगेश्वर जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी योगमाया जानिये के लिये श्रीकृष्णचन्द्र की और रानी है ताके महल में जात भये १९ ता महल मेंभी प्यारी सत्य-भामा के सङ्ग और उद्धवकी के सङ्ग चौपार खेलें जे श्रीकृष्णचन्द्र तिनैं नारदजी देखत भये परम भक्तिपूर्वक उठिकैं आसन दिखाय कै अर्घ्य दैकैं पूजन करत भये २० तुम कव आये या प्रकार अज्ञानी की तुल्य श्रीकृष्णचन्द्र नारदजीते पूछत भये पूर्ण जो तुम हो तिनको हम अपूर्ण कहा पूजन करै २१ हे ब्रह्मन् ! हम पूर्ण नहीं है तथापि हम तें कछु कहौ हमारो यह जन्म है ताथ सार्थक करो नारदजी आश्चर्य मानि कै वरां तें उठिकैं और मन्दिर में जात भये २२ ता महल में भी छोटे २ बालकन कूं खिलावैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखत भये ता पीछे और महल में जायकैं देखैं

राम्यनुगृहाणयथास्मृतिः स्यात् १८ ततोऽन्यदविशेद्वहं कृष्णपत्न्याः सनारदः ॥ योगेश्वरेश्वरगाङ्गयोगमायाविवित्सया १९ दीव्यन्तमक्षैस्तत्रापि प्रिययाचोद्धवेन च ॥ पूजितः परयाभक्त्या प्रत्युत्थानासनादिभिः २० पृष्ट्वा विदुषाऽसौ रुदायातो भवानिति ॥ कियते किं नु पूर्णानामपूणैस्मदादिभिः २१ अथापि द्विहि नो ब्रह्म अन्मैतच्छाभनं कुरु ॥ सतु विस्मि त उत्थाय तूष्णीमन्यदगाद्गृहम् २२ तत्राप्यचष्ट गोविन्दं लालयन्तं सुताञ्जिशूत्रम् ॥ ततोऽन्यस्मिन् गृहेऽपश्यन्मज्जनानायकृतोद्यमम् २३ जुह्वन्तं च वितानाग्नीन् यजन्तं पञ्चभिर्मखैः ॥ भोजयन्तं द्विजान् क्वापि भुञ्जानमवशेषेऽपि नम् २४ कापि सन्ध्यामुपासीनं जपन्तं ब्रह्मवाग्यतम् ॥ एकत्र चासिचर्मभाञ्चरन्तमसिर्वत्सम् २५ अश्वैर्गजैरथैः क्वापि विचरन्तं गदाग्रजम् ॥ क्वचिच्छयानं पर्यङ्के स्तूयमानञ्च न्दिभिः २६ मन्त्रग्रन्थं च कस्मिंश्चिन्मन्त्रिभिश्चोद्धवादिभिः ॥ जलक्रीडारतं क्वापि वारमुखाऽवलामृतम् २७ कुत्रचिद्विजमुख्येभ्यो ददन्तं गाः स्वलङ्कृताः ॥ इतिहासपुराणानि शृण्वन्तं गङ्गलानि च २८ हसन्तं हास्यकथया कदाचित्प्रियया गृहे ॥ क्वापि धर्मसेवमानमर्थकामौ च कुत्रचित् २९ ध्यायन्तं मेकमासीनं

तो स्नान को उपाय करै हैं २३ काहू महलमें श्रीकृष्णचन्द्र अग्निहोत्र करै हैं और महल में पञ्चयज्ञ करै है काहू महल में ब्राह्मणन को बन्धो जो प्रसाद ताथ आप भोजन करै हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २४ काहू महलमें सन्ध्यापासन करै है और कहुँ मौन होयकैं गायत्री जपै हैं एत महल में हाछ तलवार लैकैं फिरै हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २५ काहू महलमें घोड़ान पै रथन पै चादिकैं डोली हैं और काहू महलमें पलंगपै सोवैं बन्दीजन जिनकी स्तुतिकरै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २६ काहू महल में उद्धवादिक मन्त्रन के सङ्ग सलाह करत देखे और काहू महलमें इतिहास पुराण मङ्गलरूपी वाक्य श्रवण करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २७ काहू महल में शृङ्गार करिकैं गौवन कूं ब्राह्मणन के अर्थ देखै हैं और काहू महलमें श्रुतिहास पुराण मङ्गलरूपी वाक्य श्रवण करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २८ काहू महल में हाँसीकी नात कहिकैं प्यारी के सङ्ग श्रीकृष्णचन्द्र देखै हैं और काहू महल में अपने धर्म की सेवन करै हैं काहू महलमें अर्थ और कामकूं सम्पादन करै हैं २९ काहू महल में माया मं अतीत जो परब्रह्म है तातो



करनवारे श्रेष्ठ धर्मन कूं करै ऐसे अकेले श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनहीं समस्त घरन में नारदजी देखतभये ४१ अनन्त है पराक्रम जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की योगमाया को बड़ो उदयहै ताय वारं-  
वार देखिकै भयो है कौतुक जिनके ऐसे नारदजी आश्चर्य मानतभये ४२ या प्रकार अर्थ काम धर्म इनमें श्रद्धायुक्त है मन जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ने भले प्रकार पूजन जिनको करयो ऐसे  
नारदजी प्रसन्नतापूर्वक श्रीकृष्णचन्द्रको मनमें स्मरण करत जातभये ४३ या प्रकार मनुष्यनके मार्ग में वतै समस्त जीवन के कल्याण करिवे के निमित्त ग्रहण करी है अनेक मूर्ति जिनने ऐसे  
श्रीकृष्णचन्द्र सोलह हजार श्रेष्ठ स्त्रीनके बीचमें लाजभरी स्नेहकी चितवनि हँसनि तिनसूं सेवितहोयै रमण करतभये ४४ हे राजन् परीक्षित् ! विश्वकी प्रलय और उत्पत्तिके कारण ऐसे जे हरि  
भगवान् हैं तिनके और से जे वने नहीं ऐसे जे असाधारण कर्म हैं तिन या संसारमें जे पुरुष गावे हैं अथवा श्रवणकरै बड़ाई करै उन पुरुषनको मोक्षके देननारे जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन  
में भक्ति होइहै ४५ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णगार्हस्थ्यदर्शननामैकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६६ ॥ \* ॥ \* ॥

नददर्शह ४१ कृष्णस्यानन्तवीर्यस्य योगमायामहोदयम् ॥ मुहुर्दृष्ट्वाऽपि भूदिस्मितो जातकौतुकः ४२ इत्यर्थकामधर्मेण कृष्णेन श्रद्धितात्मना ॥ सम्य-  
क्समाजितः भीतस्तेभवानुस्मरन् ययौ ४३ एवमनुष्यपदवीमनुवर्त्तमानो नारायणोऽखिलभवाय गृहीतशक्तिः ॥ रेमेऽङ्गवोऽशसहस्रराङ्गानां सद्बीडसौ-  
हृदनिरीक्षणहासजुष्टः ४४ यानीह विश्वविलयोद्भववृत्तिहेतुः कर्मण्यनन्यविषयाणि हरिश्चकार ॥ यस्त्वङ्गगायति शृणोत्यनुमोदते वा भक्तिर्वेद्भगवति  
ह्यपवर्गमार्गो ४५ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे कृष्णगार्हस्थ्यदर्शननामैकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६६ ॥ \* ॥ \* ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथोपस्युपवृत्तायां कुक्कुटावकूजतोऽशपन् ॥ गृहीतकण्ठ्यः गतिभिर्माधव्यो विरहातुराः १ वयांस्यरुरवन्कृष्णं बोधयन्तीव निन्दनः ॥  
गायस्त्वलिप्त्रनिद्राणि मन्दाखनवायुभिः २ मुहूर्त्ततनुवैदर्भी नामुष्यदतिशोभनम् ॥ परिरमण विशलेपातिप्रयत्नाहन्तरङ्गता ३ ब्राह्मेमुहूर्त्तैरुत्थाय वायु-

( ततस्तु सप्ततितमे कृष्णस्याद्विक्रमणि ॥ दूतनारदयोऽकार्यकार्यमन्त्रविचारणम् ? जगन्मल्लचारित्रमाद्विक्रिजगदीशितुः ॥ नारदेन कचित्किञ्चिद्दृष्टया हयथाक्रमम् २ सत्तर्क्चै अथायमं कृष्ण-  
जीके दिनके कर्ममें दूत और नारदजी के कार्यमें सलाह करनी योग्यहै यह वर्णनहै ? संसारके स्वामी कृष्णजी के संसारके मल्ल दिनके चरित्र नारदजी नवहं कुत्र देखतेभये तिनको क्रमसूं  
कहते भये २ ) अत्र श्रीशुकदेवजी कहै है हे राजन् परीक्षित् ! पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने ग्रहण करै हैं कण्ठ जिनके ऐसी जे श्रीकृष्णचन्द्रकी रानी हैं ते प्रातःकाल होत आयो तब मुरगा बोले तिन  
विरहमें व्याकुल होयकै कोशति भई कि अरे अभाग अग्रहीं ते तुम बोले श्रीकृष्णचन्द्र प्रातःकाल जानिकै उठेगे ? प्रातःसमय गई है निद्रा जिनकी ऐसी पत्नी बोलतभये और कल्पवृक्षकी पवन सूचिके  
भौरा गूजतभये सो यानों श्रीकृष्णचन्द्र कूं वन्दीजन गावे हैं २ प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र की मुजान के बीचमें प्राप्तभई ऐसी जो विदर्भदेश के राजाकी पुत्री लक्ष्मणी है सो ब्राह्मिन् को जो प्रियोगई  
ताय देखिकै अतिसुन्दर जो प्रातःकाल है ताय नहीं सहतिभई ३ प्रसन्न हैं इन्द्रिय जिनकी ऐसे मधुवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र ब्राह्म मुहूर्त्त अर्थात् सूर्योदयतें दो घड़ी पहिले उठिकै जल

को आचमन करिके माया तें वरे जो अपनो स्वरूप है ताको ध्यान करतभये ४ कैसे स्वरूप को ध्यानकरो ताको वर्णन करे हैं एक अथलण्ड स्वयंज्योति स्वरूप उपाधिरहित अविनाशी सर्वकाल अविचारहित ब्रह्म जाको नाप या विश्व ही उत्पत्ति और नाश इनको कारण अपनी शक्ति करिके लखिये में आवै ऐसी सत्तामात्र आनन्दरूप है ५ ध्यानकरे पीछे निर्मल जलमें विधिपूर्वक स्नान जिनने कस्यो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र धोती उपरनाकूं पहिरिके सन्ध्यापासनादि जे कर्म और अग्निहोत्र इनकूं करिके मौन होयकै गायत्री जप करतभये ६ उदयभग्नो जो सूर्य है ताथ अर्चदै के अपने अंश जे देवता ऋषि पिदुहैं तिनको तर्पण करिके ज्ञानवान् श्रीकृष्णचन्द्र ब्राह्मणन को पूजन करतभये ७ सुब्रह्मं सूं सींग जिनके मढ़े वड़ी सूत्री मोतिनकी माला जिनके परी दूधदेई परस्परकी व्यानी बछरा जिनके संग सुन्दर वल्लनकी झूलैं ओढ़े ८ खे मूं सुसनके अग्रभाग जिनके मढ़े ऐसी गौ एक एक महलमें तें प्रतिदिन शोभायमान सत्पात्र जे ब्राह्मण हैं तिनकूं रंशमी वस्त्र मृगबाला और

परस्परयमाधवः ॥ दध्यौप्रसन्नकरण आत्मानंतमसः परम् ४ एकंस्वयंज्योतिरनन्यमव्ययं स्वसंस्थयानित्यनिरस्तकलमपम् ॥ ब्रह्माख्यमस्योद्भवनाशहेतु भिःस्वशक्तिभिर्लक्षितभावनिर्वृतिम् ५ अथाप्नुतोऽभस्यमलेयथाविधिक्रियाकलापपरिधायवाससी ॥ चकारसन्ध्योपगमादिसत्तमोद्भुतानलोब्रह्मजजापवा ग्यतः ६ उपस्थायाकमुद्यन्ततर्पयित्वाऽऽत्मनःकलाः ॥ देवानुपीनपितृबृह्दन्नाचविप्रानभ्यर्च्यचात्मवान् ७ धेनूनांरुक्मशृङ्गीणां साधूनांमौक्तिं हंसजाम् ॥ पयस्विनीनांशृङ्गीनांसवत्सानांमुवाससाम् ८ ददौरूप्यखुराग्राणां क्षौमाजिनतिलैः सह ॥ अलङ्कृतेभ्योविभ्रेभ्योवद्वंद्वं + दिनेदिने ९ गोविप्रदेवताबृहद्गुरु रूचभूतानिसर्व्वशः ॥ नमस्कृत्याऽऽत्मासंभूतीर्महलानिसमस्पृशत् १० आत्मानंभूयामासनरलोकविभूषणम् ॥ वासोभिर्भूषणैः स्त्रीगैर्दिव्यसगनुलेपनैः ११ अवेक्षमाज्यंतथाऽऽदर्शगे वृषद्विजदेवताः ॥ कामांश्चसर्व्ववर्णानि पौरान्तःपुरचारिणाम् ॥ प्रदाप्यप्रकृतीः कामैः प्रतोष्यप्रत्यनन्दत् १२ संविभज्याश्रनोविप्रान्

तिल इनसहित दान करतभये ९ अपनी मिथुति जे गौ ब्राह्मण देवता बृहद् गुरु हैं तिनें नयस्कार करिके महलबस्तु जे कपिला तें आदिलैंकै गौ हैं तिनको स्पर्श करतभये १० नरलोक कूं भूषणरूप जो अपनी आत्माहै ताथ वस्त्रनमूं और दिव्यमाला अरगजा चन्दन इत्यादिकन गूं शोभायमान करतभये ११ मृतमें मुखारविन्द कूं देखिके तैसेही दर्पण में देखिके गौ दैल ब्राह्मण देवता इनको दर्शन करिके पुरके अन्तःपुरके रहनवारे जे सर्व्व वर्ण हैं तिनकी मनोवाञ्छित जे कामना हैं तिनकूं दैकै और प्रधान दीवानैं तिनें कामनासूं सन्तुष्ट करिके आनन्दकूं पावतभये और माला बीरी चन्दन अरगजा ईनें मथम ब्राह्मणन कूं दैकै सुहृदन कूं दैकै प्रधान दीवान कूं दैकै आप अग्नीकार करतभये यामें गुरुस्थन को धर्म दिलायो अर्थात् गुरुस्थनको ऐसो चाहिये जो सद्गुरु दैके आप अग्नीकार

+ चद्रमिति चिरव्याप्यवृत्तान्कृष्णान् शुद्धं स्तोमृगान् मण्यारमृतोऽदराभ्यक्तपद्मानिमसंचेति श्रुत्युत्तारि ससोत्तरसत्तवद्वये गंक्ष्ययुष्मणचतुर्दशलश्रुतेन गणितानि योगेक भगतेभवाविद्वयनमस्तत्र ये मृगाश्च गुडश्च १ इत्यान् एतेर्गंगारि कुगान् धान्यमूर्तिमिमागारं निमुतापिचतुर्दशेति ततश्चपदद्वयमिमांसेनरामुग्रश्च चतुर्दशानलयाण्यसह विंशतशक ॥ बद्धचतुर्थं नम्रमदृष्टाणित्रयोदशोद्विद्विज्ञेचप्रतिश्रुचैति ५ ॥

करे १०। १३ इतने में रथवान् सुग्रीवसू आदिकों के जोड़े हैं तिनकू जोतिके परमअद्भुत रथकूलायक प्रणाम करिके आगे ठाढ़ो होतभयो १४ रथवान् को हाथ संह हाथ पकरिके सात्यक उद्धव कू संगलोक रथमें बैठतभये जा प्रकार मूर्धसुमेरु पर्वत के ऊपर तैसे १५ लाज भरी प्रेमभी चितवानिधुं आनन्दः पुरकी स्त्रीन ने देखे जाभूं भयो है हास्य जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र वडे कष्ट तें उन श्रीभक्त खोडिके उनके मतकू हरिके निकसतभये १६ या प्रकार सन घरनमें न्यारे २ निकसिके पीछे सब एकरूप होयकौ सब यादवनकू संगलोक श्रीकृष्णचन्द्र सुग्रीवो सभामें जातभये हे राजन् परीक्षित ! सुग्रीवो सभामें जे गये हैं तिनकू क्षु या पिपासा शीत गर्भो शोक मोदये वाधा नहीं करे हैं १७ ता सभामें श्रेष्ठ यादव जिनके आसपास बैठे तिनमें उषम व्यापक श्रीकृष्णचन्द्र अपनी कान्ति करिके दिशान कू प्रकाशमान करतभये जैसे आकाश में तारागणन के बीचमें चन्द्रमा शोभा कू प्राप्तहोइ है तैसे १८ हे राजन् परीक्षित ! ता सभाके बीचमें भांड हैं ते नानाप्रकारकी

स्रग्नाग्नानु तेपनैः ॥ सुहृदः प्रकृतीदरिणुपायुक्ता तः स्वयम् १३ तावत्सून उपानीय स्यन्दनं परमाद्भुतम् ॥ सुग्रीवाद्यैर्हयैर्युक्तां गणम्यावस्थितोऽग्रतः १४ गृहीत्वा पाणिना पाणिं रारथे सनमथारुहत् ॥ सात्त्विक्युद्धा संयुक्तः पूर्वोद्दिभिन्नभासरः १५ ईक्षितोऽन्तः पुरस्त्रीणां सव्रीडभेमवीक्षितैः ॥ कृच्छ्रादिमृष्टो निरगाजजा तहासोऽहन्मनः १६ सुधर्मोख्यासभां सन्निवृष्टिभिः परिहारितः ॥ प्राविशद्यन्निविष्टानां न सन्त्यङ्गपद्वयः १७ तत्रोपविष्टः परमासने विशुर्वगोस्वभासा ककुभोऽवभासयन् ॥ वृत्तो नृसिंहैर्भुविर्भुवनगोयथोदराजोदिवितारकागणैः १८ तत्रोपमन्त्रिणो राजन् नानाहास्यरसैर्विभुम् ॥ उपतस्थुर्नटाचार्यार्थानर्तक्यस्ताण्डवैः पृथक् १९ मुदङ्गवीणा मुरजवेणुतालदस्वनैः ॥ ननु तुर्जगुस्तुह्वुश्च सूतमागधवन्दिनः २० तत्राहुर्ब्राह्मणाः केचिदासीना ब्रह्मवादिनः ॥ पूर्वैर्वापां पुरययशासा राज्ञां चाकथयन् कथाः २१ तत्रैकः पुरुषो राजन्नागतोऽपूर्वदर्शनः ॥ विज्ञापितो भगवते प्रतीहारैः प्रवेशितः २२ सनमस्कृत्य कृष्णाय परेशाय कृतार्जुनालिः ॥ राज्ञामावेदयदुःखं जरासन्धानि गोघजम् २३ येचदिग्गिजयेतस्य सन्नर्तिनययुर्नृपाः ॥ प्रसह्यरुद्धास्तेनासन्नयुतेद्विगिरित्रजे २४ कृष्णकृष्णा प्रमेयात्मन् प्रपन्नभयभञ्ज

हासी की वार्ता करिके श्रीकृष्णचन्द्र को सेवन करतभये और नटनमें जे मुख्य हैं ते अपने न्यारे २ जे गवय्या हैं तिनकू संगलोक सन्मुख ठाढ़े होतभये १९ मुदंग वीणा मुरज मासुरी भ्रातृ शङ्ख इनकू वजाय के नृत्य करतभये और सूत मागध वन्दीजन हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र के सन्मुख स्तुति करतभये २० कोई एक ब्राह्मण कहिये मैं अतिशुद्धिमान ते वेदकी ऋचा पढ़िके व्याख्या करतभये कोई ब्राह्मण पवित्र है यश जिनको ऐसे पहिले राजान की कथान कू कहतभये २१ हे राजन् परीक्षित ! प्रथम कथज देखयो नहीं ऐसो एक अपूर्व नवीन पुरुष आवनभयो जब ख्यो दीवारेन ने श्रीकृष्णचन्द्र ते जायकै खरि करी तब कृष्णचन्द्रने कही जावो खियाय लावो तब जाकू सभाके भीतर पहुँचाय दियो २२ ब्रह्मादिकन के ईश्वर जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकू वह पुरुष हाथ जोरिके नमस्कार करिके जरासन्ध ने रोक जे बीचसहजार आठसौ राजा हैं तिनके दुःख कू कहतभयो २३ जरासन्ध के दिग्विजय के समय जिन राजान ने जायकै भेद न दीनी ने बीचसहजार आठसौ राजा हैं तिनमें पकरिके गिरिव्रजनाम किआ है तामें रोकितभयो २४ हे कृष्ण ! हे अश्वमेयात्मन् अर्जुन् नहीं प्रमाण करिये मैं आवै है प्रभान जिन

को ! हे शरणागतनके भयके काटनचारे ! या संसार तें भयभीत तुम तें न्यारी है बुद्धि जिनकी ऐसे हम तुम्हारी शरण आये हैं २५ जो लोक अतिशय करिके पापकर्ममें लागि रहा है सो तुमने जतायो अपनो जामें भलो होइ ऐसी तुम्हारी पूजन सेवनरूप जो कर्म है ताथ भूलिरहा है जो तुम बलवाच या संसार में जीये की आशा है ताकूं शीघ्र काटोहो ऐसे जो काखरूप तुमहो तिनकूं नमस्कार है २६ जगत् के ईश्वर जो तुमहो सो या संसार में साधुनकी रत्ना करिये के लिये और दुष्टनकूं दण्ड देवे के लिये अंग करिके अवतार लिये हो कोई जरासन्य सरीखो जो रावर तुम्हारी आज्ञाकूं नहीं माने है अथवा जे प्राणी अपने कर्मनको फल भोगे है यह हम नहीं जाने हैं अर्थात् यह जरासन्य तुम तें जोरावर है जाके कर्म में दुःख लियो है याही तें हम रोंकि राखे है २७ हे ईश्वर ! परार्थीन स्वमही तुल्य मिथ्या जो राजागनेके सुख को बोझै ताथ सर्वदा जामें भय लायो रहै ऐसो श्रुतकमी तुल्य जो शरीर है ताधूं धारण करे हैं अपनये में रहे आबो ऐसे सुख

न ॥ वयं त्वां शरणं ग्रामो गय गीताः पुत्राभिधयः २५ लोको विक्कर्मो नेरतः कुशले प्रमत्तः कर्मण्ययन्त्वद्विदेते भवद्वैनेसे ॥ यस्तावदस्य बलवानिह जीविताशां राद्यश्चिन्न न न्यनिमिपायनमोऽस्तु तस्मै २६ लोके भगवज्जगदिनः कलयाऽवतीर्णः सद्रक्षणाय बलनिग्रहणाय चान्यः ॥ कश्चित्पदीयमति याति निदेशमीश किं याजनः स्वकृतमुन्वतितन्न विद्मः २७ स्वप्रापिनं नृपगुलं परतन्त्रमीश शस्त्रद्वयेन मृतकेन धुंवाहमः ॥ हित्वा तदात्मनि सुखं तदनीह लभ्यं क्लेशयामहेऽतिक्रय एा स्तवमाययेह २८ तन्नो भवान्प्रणतशोकहराङ्घ्रिगोबद्धान् विरयुङ्क्ष्वमगधाह्वयकर्मणाशात् ॥ यो भूभुजोऽयुतमगङ्गाजवीर्येभो विभ्रदुरोधभवने मृगराडि वावीः २९ यो वै त्वयाद्धिनववृत्त उदात्तचक्रभग्नो मृधेलु भवन्तगनन्तवीर्यम् ॥ जित्वा नृलोकानिरतं सकुटुदुर्गो घृष्टमत्पजारुजतिनोऽजिततद्विधेहि ३० ॥ दू त उवाच ॥ इति मार्गधर्मरुद्धा भवदर्शनकाङ्क्षिणः ॥ मपन्नाः पादमूलं ते दीनानां शं विधीयताम् ३१ ॥ श्रीशुभ उवाच ॥ राजदूतेऽब्रुवत्येवं देवर्षिः परमद्युतिः ॥

रूप जो तुमहो तिनैं त्यागिकै या संसार में तुम्हारी माया करिके कृष्ण जे हम है ते दुःखकूं प्राप्तये हैं २८ ता कारण हे कृष्ण ! मैं तुम्हारी हूं तुम कूं नमस्कार है या प्रकार जिनने कही तिन पुरुषन के शोक कूं हरे हैं चरणारविन्द जिनके ऐसे तुम जरासन्य है नाम जाको ऐसी कर्मरूप फापी मूं धंधे जो हम हैं तिनैं छुड़ावो कदाचित् कही कि तुमहीं पराक्रम करिके क्यों न छुटिजाओ ताको उत्तर राजा देइ है जो अबेलो जरासन्य दण्ड हजार हाथीन के बलकूं धारण करिकै जैसे सिंह भेड़न कूं रोंकत भयो ऐसे वीरसहज्जार आठसै राजा हैं तिनैं रोंकत भयो २९ ग्रहण क्रियोहै चक्र जिनने ऐसे हे कृष्ण ! तुम हो तिनम् अठारह वार जरासन्य लड़यो तामें सत्रह वार तुमने हराय दियो परचास बढ़ो है पराक्रम जिनको ऐसे जो तुम हो सो मनुष्यलीला करो हो तिनैं एकवार जीति कै दड़यो है गर्व जाके ऐसो जरासन्य तुम्हारी प्रजा हम हैं तिनैं पीड़ा देइ है यहाँ जो आपकूं योग्य होय सो करो ३० अथ दूत कहै है या प्रकार जरासन्य के रोंके तुम्हारे दर्शन की याज्ञावाले तुम्हारे चरणारविन्दको शरण जिनने लियो ऐसे दीन राजान कूं जामें सुख होयै सो कीजै ३१ श्रीशुभदेव जी बोले कि हे परीक्षित ! या प्रकार राचान को दूत वहे



हो इतने में श्रेष्ठ है कान्ति जिनकी पीरी जटान कूं धारण करे ऐसे श्रीमन्नारदजी जैसे सूर्य्य प्रकट होइ है ऐसे प्रकट होतभये ३२ सम्पूर्ण लो कन के महान् ईश्वर जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो नारदजीकूं ये देखि कै अपनी सभा में जे बैठे है तिन सहित शिर नवाय है प्रणाम करतभये ३३ आसन पे बैठे ऐसे नारदजी को विधिपूर्वक सत्कार करिके श्रद्धापूर्वक मधुर मधुर सो नारदजीकूं ये देखि कै नारद जी जिलोकी में कहूं भय तो नहीं है लोकन में फिरो जो तुमहो तिनसूं हों वहां लाभ है वर बैठेही सवरी खरि मिलि जाय है ३५ ईश्वर चनन करिके दृष्ट करतभये ३४ श्रीकृष्ण पूछै हैं नारद जी जिलोकी में कहूं भय तो नहीं है लोकन में फिरो जो तुमहो तिनसूं हों वहां लाभ है वर बैठेही सवरी खरि मिलि जाय है ३५ ईश्वर के निम्माण करे लोकन में ऐसी कोई बात नहीं है जो तुम न जानो अब पाण्डवजन की कथा करिने की इच्छा है यह हम तुमतें पूछै हैं ३६ तब नारदजी बोले है समर्थ ! ब्रह्मा के मोह करन बोरे जे तुमहो तिनकी मायान को पार नहीं ऐसी मैंने बहुत माया देखी है हे व्यापक ! अपनी शक्तिन करिके प्राणीन के भीतर विचरो हो अग्नि की तुल्य दक्यों है तेज जिनको ऐसे तुम मो

विश्रुतिपङ्कजटाभारं प्रादुरासीद्यथारविः ३२ तंदद्व्याभगवान्कृष्णः सर्वलोकेश्वरेश्वरः ॥ ववन्दउत्थितः शीर्ष्णाससभ्यः सानुगोमुदा ३३ समाजयित्वा विधि वत्कृतासनपरिग्रहम् ॥ वभापेसूनुतैर्वाक्यैः श्रद्धया तर्पयन्मुनिम् ३४ अपिस्विदद्यलोकानां त्रयाणामकुतोभयम् ॥ ननुभूयान्भगवतो लोकात्पर्यटतो गुणः ३५ नहितेऽविदितं किञ्चित्तोकेष्वीश्वरकर्तृषु ॥ अथपृच्छामहेयुष्मान्पाण्डवानां चिकीर्षितम् ३६ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ दृष्टमया तेन हृशोडुरत्यया माया विभो विश्वसृजश्चागमिनिः ॥ भूतेषु भूमांश्चरतः स्वशक्तिर्भिवह्नेरिव च्छन्नरुचो न मेऽद्भुतम् ३७ तवेहितं कोऽहं तिसाधुवेदितुं स्वमाययेदं सृजतो नियच्छतः ॥ यद्विद्यानात्पतयाऽवभासते तस्मै नमस्तेस्वविलक्षणतमने ३८ जीवस्थयः संसरतो विमोक्षणं न जानतोऽनर्थं न हाञ्छरीरतः ॥ लीलावतारैः स्वयंशः प्रदीप कं प्राज्वालत्यच्चातमहं प्रपद्ये ३९ अथाप्याश्रावयेद्ब्रह्मन् नरलोकाविडम्बनम् ॥ राज्ञः पेतृष्वस्वैयस्य भक्तस्य च चिकीर्षितम् ४० यक्षयति त्वां मखेन्द्रेण राजरूयेन पाण्डवः ॥ पारमेष्ठ्यकामो नृपतिस्तद्भवाननुमोदताम् ४१ तस्मिन् देवकृतवरे भगवन्तैर्वसुशदयः ॥ दिदृक्षवः समेष्यन्ति राजानश्च यशस्विनः ४२ अवणत्की

क तें पूछो हो यह आश्चर्य्य नहीं है ३७ अपनी माया करिके या विश्वकूं उपजावो हो और संहारकरो हो ऐसे जो तुमहो तिनकी चेष्टा कौन पुरुष भलेगहार जानिये कूं योग्य है अपने स्वल्प करिके विचार में न आये ऐसे जे तुमहो तिनको नमस्कार है ३८ आविद्या करिके अनर्थ कूं प्राप्त करनवारो जो देह है तासूं जन्म मृत्युहूं पावै और ता अधिद्या करिके शरीर तें नृदिवे के उपाय कूं नहीं जानै ऐसे जो जीवहै ताकूं लीलावतारन करिके दीपकरूप जो अपना यश है ताय प्रकाश करतभये जो तुम हो तिन तुम्हारी शरण प्राप्तभयो हूं ३९ तौ भी हे ब्रह्मन् ! मनुष्यन जो आ तुम्हारे करो जो तुमहो तिनकूं तुम्हारी फूसी को पुत्र भक्त ऐसे राजा युधिष्ठिर जो कछु कस्यो चाहे है ताय सुनाऊं ४० पाण्डुको पुत्र चक्रवर्ती राज्य करिये की इच्छा भई ऐसी जो राजा युधिष्ठिर है सो यज्ञगाह जो राजसूययज्ञ है ता करिके तुम्हारी पूजन कस्यो चाहे है यह आप अनुमोदन करौ ४१ हे देव ! या यज्ञमें तुम्हारे दर्शन करिये के निमित्त इन्द्रादिक देवता आयेगे और वड़े

यशस्वी राजा आर्षे ४२ हे ईश्वर ! ब्रह्मरूप जो तुमही तिनकी कथान के श्रवण करे तें तुम्हारी ध्यान करे तें चायडाल है तेऊ पवित्र होइ जाय है तुम्हारे दर्शन करे तें पवित्र होई यामें कदा कहनो है ४३ हे जिलोकी के भगलरूप ! तुम्हारी निर्मल यश स्वर्ग में रसतल में पृथ्वी में फैलि रखी है और दिशान कूं चंदोवा की तुल्य शोभायमान करे है कैसो फैलो है सो कहे है स्वर्ग में मन्दकिनीरूप पाताल में भोगवतीरूप और या संसारमें तुम्हारी चरणोदक गङ्गा रूप होयकै सम्पूर्ण विश्व कूं पवित्र करे है या कारण तुम्हारे चले तें यज्ञमें बड़ो भगल होयगो ४४ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार नारदजी ने कही तब ता सभा में अपनी ओर के जे यादव बैठे हैं तिनकूं जरासन्ध के जीतिने की इच्छा करिके जब अच्छी लगी तब मनो-हर वचनन सूं मुसितात अपने भक्त उद्धवजी सू श्रीकृष्णचन्द्र बोलत भये ४५ श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं उद्धवजी तुम हमारे परमनेत्र हो परमहितकारी हो गुह्य बातन के अभिप्राय

सैनाद्धयानात्पूयन्तेऽन्तेऽवसायिनः ॥ तव ब्रह्ममयस्येश किमु तेऽक्षाऽभिमर्शिनः ४३ यस्यामलन्दि वियशः प्रथितं रसायां भूमौ च ते भुवनमङ्गलदिग्वितानम् ॥  
मन्दाकिनीति दिवि भोगवतीति चाधोगङ्गे निचेह चरणाम्बुपुनति विरश्म ४४ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ तत्र तेष्वात्मपक्षेऽवगृह्यत्सु विजिगीषया ॥ वाचःपेशैः स्मयन्भूय मुद्धवं प्राहेकेशवः ४५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ त्वं हि नः परमं चक्षुः मुहुन्मन्त्रार्थं तत्स्ववित् ॥ तथाऽत्र ब्रह्मनुष्ठेयं श्रद्धाभ्यः करवामतत् ४६ इत्युपामन्त्रितो भर्त्रा सर्वज्ञेनापि मुग्धवत् ॥ निदेशं शिरसाऽऽधाय उद्धवः प्रत्यभापत ४७ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तराखण्डे भगवद्वा निसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

श्रीशुक उवाच ॥ इत्युदीरितमाकर्ण्य देवैरुद्धवोऽब्रवीत् ॥ सभ्यानां मतमाज्ञाय कृष्णस्य च महामतिः १ ॥ उद्धव उवाच ॥ यदुक्तमृषिणा देव साचिन्त्यं यक्ष्यतस्त्वया ॥ कार्यपैतृष्वस्त्रस्य रक्षा च शरणैषिणाम् २ यष्टव्यं राजसूयेन दिक्चक्रजयिनाविभो ॥ अतो जरासुतजय उभयार्थोमतो मम ३ अस्माकंच कूं जानो हो यते जो यहाँ योग्य होय ताय वतावो चाकूं हम श्रद्धापूर्वक करों ४६ सब बातके जाननवारे श्रीकृष्णचन्द्र मानों कछु नहीं जाने हैं ऐसे भोरे की तुल्य रीय के पूँछे ऐसे जो उद्धवजी हैं सो श्रीकृष्णचन्द्र की आज्ञा कूं शिरगै धारिके बोलत भये ४७ ॥ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्या दशमस्कन्धे उत्तराखण्डे भगवद्वा निसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥ \* ॥ \* ॥

( अर्थक सप्ततितम उद्धवस्य तु पन्तः ॥ इन्द्रप्रसंगते कृष्णे पार्थानां परमोत्सवः १ राजसूयमपि कृत्वा भीमदुष्योधनादिषु २ कलिमुत्पाद्य तत्साराभूषणमहरत्प्रभुः ३ इह कर्तव्यं अध्याय में उद्धवजी की सलाह सूं हस्तिनापुर कूं कृष्णजी के जाने माँ कुन्तीके पुत्रोंका परमोत्सव वर्णित है १ कृष्णचन्द्रजी राजसूयका घटानाकर भीमसेन और दुष्योधन आदिकों में लड़ाई उत्पन्न कराकर ताके द्वारा पृथ्वीके भारको हरे भये २ ) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार वड़ी है बुद्धि जिनकी ऐसे उद्धवजी हैं सो श्रीकृष्णचन्द्र को कछो वचन सुनिके और नारदजी को मत कहा है कि यज्ञमें जायगो ताय जानिके और सभाके बैठनवारे जे यादव हैं तिनको मत कहा कि राजान की रक्षा करिवो ताय जानिके और श्रीकृष्णचन्द्र को मत कहा कि दोनों कार्य करनो ताय जानिके बोलत भये ३ उद्धवजी कहे हैं हे प्रकाशवान् श्रीकृष्णचन्द्र ! नारदजीने जो कछो कि तुम्हारी पूजन करवो चाहै ऐसे राजा मुधिष्ठिर हैं ताकीऊ सहायता करिवो योग्य है और शरणा-

मल जे राजा है तिनकी रत्नाकरनो भी योग्य है २ हे समर्थ ! सम्पूर्ण दिशान के राजानकी है जीत जामें ऐसो राजसूय यज्ञ करिके पूजन होयगो याहीतें जरासन्धहू जीत्यो जायगो यामें दोनों कार्य सिद्ध होयगे यज्ञ और शरणागतन की रत्ना ३ यज्ञमें आप चलोगे याही तेहमारें वड़े मनोरथ सिद्ध होयेंगे और हे गोविन्द ! बंधे राजानकूं लुहावोगे यामें आपकी वडो यशहोगो ४ वडी चाहना करिके जरासन्धके मारिवे की इच्छाकरें ऐसे यादवन कूं देखिके कहें हैं जरासन्ध की वरावारि है वल जामें ऐसो जो भीमसेन है ताके विना दश हजार दूथीके समानहैं वल जामें ऐसो जरासन्ध वड़े धली राजानके जीतिवे में नहीं आवे है क्योंकि भीमसेन तेंही विधानने बाकी मृत्यु रची है ५ द्वंद्वयुद्धमें जरासन्ध जीत्यो जायगो और सैकड़न अचौहिणी सेनानकूं संगलैंकें जो पुरुष जीत्यो चाहैं तो न जीति सकैगे वह जरासन्ध ब्राह्मणन को भक्तहैं याते बाके पास जायकै ब्राह्मण मांगें तो कभउं माने न करैगे ६ दुःकनामा अग्निहैं उदरमें जाके ऐसो जो भीमसेन है सो ब्राह्मण को वेप धरिक्कै जरासन्धने युद्धकी भिन्ना मांगें तुम्हारे निरुद्धमें भैं द्वंद्वयुद्ध करूंगे तो भीमसेन जरासन्धकूं मारैगो यामें कछु सन्देह नहीं है ७ माकृतरूप करिके रहितजो तुमहो तिन तुम्हारे कर्म जे विश्वकूं उत्पत्ति

महानथोह्येनैव भाविष्यति ॥ यशश्चतवगोविन्द राज्ञोवद्धान्विमुञ्चतः ४ सवैदुर्विपहोराजानागायुतसमोवले ॥ वलिनामपि चान्नेपां भीमसमवलंविना ५  
द्वैथेमनुजेतव्योमाशताक्षौहिणीयुतः ॥ ब्रह्मराजोऽभ्यर्थितो विभर्त्तयाख्यातिकर्हिचित ६ ब्रह्मवेपथरो गत्वा तं भिक्षेत वृकोदरः ॥ हनिष्यति न सन्देहो द्वैथेतव  
सन्निधौ ७ निमित्तं परभीशस्य विश्वसर्गनिरोधयोः ॥ हिरण्यमर्भः शर्वश्च कालस्यारूपिणस्तव ८ गायन्ति ते विशदकर्मगृहे पुद्गे यो राज्ञां स्वयशश्च वयमा  
तमभिगोक्षणं च ॥ गोप्यश्च कुञ्जरापतेर्जनकात्मजायाः पित्रोश्च त्वव्यशरणां मुनयो वयञ्च ९ जरासन्धवधः कृष्णभूर्यथा यो पश्यते ॥ प्रायः गाकविपाकेन तव चा  
भिमतः क्रतुः १० ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इत्युद्धवचो राजान् सर्वतो भद्रमच्युतम् ॥ देवर्षिर्दुदृढारचकृष्णश्च प्रत्यजयन् ११ अथाऽऽदिशत् प्रयाणाय भग

करियो नाश करियो तिनमें ब्रह्मा और महादेव ये नाममात्र हैं तातें तुमहीं पास रहितै जरासन्धको संहार करोगे भीमसेन गो तो केवल नाप होयगो ८ राजानकी रानी हैं ते अपने घरमें तुम्हारे निम्नमेल यशनकूं गावें हैं और जब उनके बालक रोवें हैं तब कहें हैं तब ! तुम काहे कूं रोदन करोही जो कोई अनाथ होइ सो रोवै तुम्हारे शिरपैतौ नाथ श्रीकृष्णचन्द्रहैं मतिरोवो जैसे गोपी शङ्ख-चूड़यो मारियो और अपनो छुटियो गावें हैं और गजराजको छुटियो ग्राहकी मृत्यु जैसे गावें हैं और जनकनन्दनी जानकी को छुटियो रावणको मारियो जैसे गावें हैं और माता पित्तको छुटियो ९ सको मारियो पाई है शरण जिनने ऐसे मुनि और हम भक्त गावें हैं ऐसे जरासन्धको मारियो और अपने पतिनको छुटियो गावें हैं ६ हे कृष्ण ! जरासन्धके मरेतें वडो कार्य सिद्ध होयगो शिशु-पालाटिकन को मारियो सहजमें होय जायगो राजानके पुण्यको फल उदय होयगो और यज्ञ होइ यह तुमकूं सम्मत है राजा युधिष्ठिर के पासगये ते सब बात बनेगी १० अथ श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजान् परीक्षित ! सब ओर तें मदलरूप उडी जामें युक्ति ऐसो जो उद्धनजी को वचनहै ताकी नारदजी उड़ाई करतभये और श्रीकृष्णचन्द्र उड़ाई करतभये यामें आयो कहा अनिरुद्ध तैं आदिलैंकें यादव हैं ते उड़ाई न करतभये ११ याके पीछे देवकी के पुत्र समर्थ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र चलिने के निमित्त उहलुवा और दारुक स्थान

स्वाधीन के महावतन तें आदिलैक जे ह तिन और वसुदेवादिकन तें आदिलैक जे यादव ह तिन आज्ञा करत भये १२ सापग्रीन सहित प्रथम स्त्रीनकू चलायकै सङ्कल्पणी तें आज्ञापांगिकै यादवन के राजा जो उग्रसेन ह तिनतें आज्ञापांगिकै हे शत्रुन के मारनवारै राजन् परिचित् । सारथीलैकै आयो गरुड़की ध्वजा जामें ऐसी जो अपनो रथ ह तामें चढत भये १३ ता पीछे रथ हाथी प्यादे सवार इनमें जे मुरख ह तिन करिके तीन अपनी सेना ह ताकू लैके मृदंग भेरी नगाड़े शङ्ख रणसिंहा इनके शब्दकरिके शोर जामें होइ रह्यो ऐसी जे दिशा ह तिनमें तें निकसत भये १४ सुन्दर वज्र गरुड चन्द्र गाला पड़िरे डाल तलवार राग में लिथे दोनो ओर सिपाही जिनके चले जाय मनुष्य ह वहत वारें घोड़ा जिनमें ऐसी जे सोनेकी पालकी ह तिनमें वैठिके पतिव्रता जे श्रीकृष्णचन्द्र की रानी ह तें अपने पुत्रकू संग लैतै अपने पति जो श्रीकृष्णचन्द्र ह तिनके पीछे जात भई १५ चाकरन की स्त्री और वेश्या ह ते शृंगार करिके चटार्दन के बने घर तथा कमलन के और वनातन के डेरा तख्ख इत्यादिक जे सम्पूर्ण वस्तु ह तिनका मनुष्य छँट वेल भँसा गया खबर गाड़ा हाथी इनगै लादिके जात भये १६ वड़ो है शोर जामें ऐसी सेना है सो वड़े वड़े स्वजानके वज्र छत्र चामर

वाचदेवकी सुनः ॥ भृत्यान् दारुजै ज्ञादीननुज्ञाप्य गुरुन्विभुः १२ निर्गमय्यावरोधान् स्वात् ससुतान् सपरिच्छदान् ॥ सङ्कर्षणमनुज्ञाप्य यदुराजश्च शत्रुहन्  
सूतोपनीतं स्रथमारुहद्रुद्धजम् १३ ततो रथोद्धिपभटसादिनायकैः करालयापरिवृत्त आत्मसेनया ॥ मृदङ्गमेय्यानकशङ्खगोसुखैः प्रघोषघोषितककुभोनि  
राक्रमत् १४ नृत्राजिकाञ्चनशिविकाभिरच्युतं सहारगजाः पनिमनुव्रताययुः ॥ वराम्बराभरणविलेपनस्रजः सुसंवृतान् भिरसिचर्मपाणिभिः १५ नरोद्गोम  
हिपखराश्रतर्यनः करेणुभिः गरजिनवारयोपितः ॥ स्तलंकृताः कटकटिभ्रमलाम्बराद्युपस्कराययुराधियुज्यसर्वतः १६ बलंबृहद्भुजपटञ्चत्रामैव रायुत्राभरणकि  
रीटमर्मभिः ॥ दिवाऽणुभिस्तुमुलरवंधमैवैर्यथाऽर्णवः क्षुभिततिमिङ्गलोर्गभिः १७ अथोमुनिर्यदुपतिनासभाजिनः प्रणम्यन्तं हृदि विदधद्विहायसा ॥ निश  
म्यन्तद्वयनमितमाह्वनाईणो मुकुन्दमन्दर्शननिर्द्धुनेन्द्रियः १८ राजदूतमुवाच दंभगवान् श्रीणयन् गिरा ॥ माभैष्टूतभद्रं बोधातपि प्यामि मागधम् १९ इत्युक्त्वा प्र  
स्थितो दूतो यथावदवदद्भुवान् ॥ तेऽपि संदर्शनं शौरेः प्रत्यैक्षन् यन्मुपुक्षवः २० आनत्तमौ वीरमरुं स्त्रीन्वा विनशन् हरिः ॥ गिरिजदीरतीयाय पुरग्रागत्र जाकरा

इन करिके और सुन्दर हथियार गहने किरिट खलर इत्यादिकनकी चमक है ता करिके और मूर्धभूषी किरण ह तिन करिके दिवम में सुन्दर लगति भई जैसे स्रोभ कूं प्राप्त भये जे ग्राह और लहर है तिन करिके जैसे समुद्र सुन्दर लगे है १७ याके पीछे यादवन के पति श्रीकृष्णचन्द्रने सत्कार जिनको करयो और पूजादीनी और श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन तें सुखी ह इन्द्रिय जिनकी ऐसे युनि नारद ह मो श्रीकृष्णचन्द्र कू प्रणाम करिके और श्रीकृष्णचन्द्र ने निश्चय करयो है ताप अथवा करिके और उनके स्वरूप को हृदय में ध्यान करिके आकाशमार्ग में होय के जात भये १८ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र वाणी करिके दूत कूं प्रसन्न करन भये हे दूत ! तुम राजान सँ जायके कहो कि तुम मति भय करो तुम्हरो फलमाग होयगो जरसन्ध कू मैं मारुंगो १९ यापकार श्रीकृष्णचन्द्र ने कही तब दूत यहा से चलिके राजान के पास आयते श्रीकृष्णचन्द्र आवे ह यापकार कहत भयो तब जरसन्ध के चन्द्रीखाने तें छुडिचै की इच्छा जिनके ऐसे राजा है ते श्री

कृष्णचन्द्र को दर्शन कर होयगो ऐं मे पैटो देखन भये २० ता पीछे आनचै सौधीर मारवाइ कुलचै इग देशन कूं उलनह्वन करिके तथा पर्वत नदीनकूं और पुर ग्राम त्रग आकर इन सवन कूं उलानि के २१ ताके पीछे हपद्वती और सरस्वती नदी कूं तारिके और पञ्चाल देशन कूं तथा मत्स्यदेशन कूं उलाविके मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र उन्द्रप्रस्थ में आवत भये २२ मनुष्यन कूं दुर्लभ जिनको दर्शन ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र आये श्रवण करिके प्रसन्न होय के अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर है सो उपाध्यायन कूं सद्गुरु के पुरके बाहर निकसत भये २३ गीत और वाजेनको जो शब्द है ता करिके और नदी जो वेद को शब्द है ता करिके राजा युधिष्ठिर है सो जैसे आदरयुक्त इन्द्रिय प्राण लेवे को आवे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के सम्मुख लिवाइये कूं आवत भये २४ श्री कृष्णचन्द्र के दर्शन करिके आदि है हृदय जाको ऐसो जो पाण्डु को पुत्र राजा युधिष्ठिर है सो बहुत दिनन में देखे अत्यन्त प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनै वारंवार आलिंगन करतभये २५ लक्ष्मी के रहिये को निर्मल स्थान ऐसो जो श्रीकृष्णचन्द्र को अग है ताय भुजानतें आलिंगन करिके दूरि भये हैं पाप जाके हर्षित है वनु जाको नेत्रन में अश्रुयुक्त और विस्मृत है समस्त लौकिक

न २१ ततो हपद्वती तीर्त्वा मुकुन्दोऽथ सरस्वतीम् ॥ पञ्चालानथ मत्स्यांश्च शक्रप्रस्थमथागमत् २२ तमुपागतमाकर्ण्य प्रीतो दुर्दर्शनं नृणाम् ॥ अजातशत्रु निरगात् सोपाध्यायः सुहृदुतः २३ गतिवादित्रघोषेण ब्रह्मघोषेण भूयसा ॥ अभयतासहर्षिकेशं प्राणाः प्राणमिवाऽऽहतः २४ दृष्ट्वा विक्लिनहृदयः कृष्णं रूनेहेन पारुडवः ॥ चिराद्दृष्टं प्रियतमं सस्वजेऽथ पुनः पुनः २५ दोभ्यो परिष्वज्य मामलालयं मुकुन्दगात्रं नृपतिहताशुभः ॥ त्वेभ्यो निर्वृतिमश्नुलोचनो हव्यत्तनुर्विस्मृतलोकाविभ्रमः २६ तं मातुलेयं परिभ्रम्य निर्वृतो भीमः स्मयन् प्रेमजवाकुलेन्द्रियः ॥ यमौकिरीटी च सुहृत्तमं मुदा प्रवृद्धवाण्याः परिरेभिरेऽच्युतम् २७ अर्जुने न परिष्वक्तो यमाभ्यामभिवादितः ॥ ब्राह्मणेभ्यो नमस्कृत्य वृद्धेभ्यश्च यथाऽर्हतः २८ मानितो मानयामास कुरुसृञ्जयके कयाच ॥ सूतमागधगन्धर्वान् चिन्दनश्चोपमन्त्रिणः २९ मृदङ्गशङ्खपटहवीणापणवगोमुखैः ॥ ब्राह्मणैश्च त्रिविन्दाक्षं तुष्टुर्ननुर्तुर्जगुः ३० एवं सुहृद्भिः पर्यस्तः पुरयश्लोकशिखामणिः ॥ संस्तूयमानो भगवान् विवेशालंकृतं पुरम् ३१ संसिक्लवर्त्मकरिणामदगन्धतौर्यैश्चित्रध्वजैः क्रनकतोरणपूर्णकुम्भैः ॥ मृष्टात्मभिर्नवदुकूलविभूषणस्रगन्धैर्धृत्यवहार जातं ऐसो राजा युधिष्ठिर परममुख कूं पावतभयो २६ मामा के पुत्र जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं आलिंगन करिके प्रसन्न जो भीमसेन है सो प्रेम के वेग करिके आकुल हैं इन्द्रिय जाकी ऐसो होत भयो वड़े है नेत्रन में आसूजिनके ऐसे नकुल सहदेव और किरीट है विद्यमान जाके ऐसो अर्जुन ये सप्त अत्यन्त शितकारी जे श्रीकृष्णचन्द्र है तिनै आनन्दपूर्वक आलिंगन करत भये २७ अर्जुन वरावरि को है यातें श्रीकृष्णचन्द्र कूं छाती ते लगाय के पिलत भयो और नकुल सहदेव ने नमस्कार करी यथायोग्य ब्राह्मणन कूं और वृद्धन कूं नमस्कार करिके २८ मानिचे के योग्य ऐसे जे कुलदेश सृञ्जयदेश और केरुय देश के राजा है तिनै और सून मागधगन्धर्व भाटवन्दीजन है तिनै सत्कार करत भये २९ मृदंग शङ्ख ढोल वीणा नगाड़े बांसुरी इनकूं वजाय है ब्राह्मण कमल के समान नेत्रनभाले श्रीकृष्णजी की स्तुति करत भये और नाचत गावतभये ३० याप्रकार सुहृदनकूं संगलैके पुण्य है यश जिनको ऐसे जे युधिष्ठिरादिके हैं तिनके मुकुन्दगणि ऐसे

जो भाग्यान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सबने स्तुति करी तब शोभायमान जो सुधिष्टिर को पुर नामें प्रवेश करन भये ३१ हाथीन के मद चुने तारुं और सुगन्धयुक्त जे जल हैं तिनहुं छिरकाय जायें होय रह्यो ऐसे जायें मार्ग हैं पितृविचित्र जे अज्ञा है तिन करिकें सुवर्ण के तोरण और जल के पूर्ण कलश तथा नमीन वल्ल गहने माला केसरि अंतर अरगजा इन करिकें शृंगार क्रियो है आत्मा जिनने ऐमे जे पुरुष गौर स्त्री हैं तिन करिकें शोभायमान ऐसे कौरवन के राजा युधिष्ठिर हैं तिनके महल देखत भये ३२ महल को वर्णन करै हैं प्रकाशमान दीपान की पंक्तिन करिकें और महल के भरोलान में तें निकसी जो धूपकी सुगन्ध ता करिकें शोभायमान हैं और प्रकाशमान जायें पताका हैं तथा रूपे के शिखरन के ऊपर सोने के कलश विराजमान हैं ऐसे कौरवन के राजा युधिष्ठिर के महल देखत भये ३३ मनुष्यन के नेत्रनकुं सौन्दर्यरूपी अमृत के पीत्रे को पात्र ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कुं आये श्रवण करिकें उत्कण्ठा करिकें ढाले भये हैं केशन के और वल्लन के वनन जिनके ऐसी जे स्त्री हैं ते घरन के कार्यन कुं शीघ्र त्यागिकें और शरयान के ऊपर पतिन कुं त्यागि कै देखिबे केनिमित्त राजमार्ग जो वाजार है तामें आवति भई ३४ हाथी घोड़ा रथ प्यादे इनकी भीर जायें होय

भिर्गुप्रतिभिरचविराजमानम् ३२ उर्द्धासदीपत्रालिभिः प्रतिमञ्ज जालनिर्यातधूपरुचिर्ध्विलसत्पताक्रमम् ॥ मूर्द्धन्यहेमकलशैरजतोरुजृङ्गैर्जुष्टददर्शभवनैः सुरराजधाम ३३ प्राप्तिनिश्चयनरलोचनपानपात्रमौस्तुक्यविश्लाथितकेशदुकूलबन्धाः ॥ सद्योविमृज्यगृहकर्मपतिश्चतल्पे द्रष्टुं युयुवनयः रमनरेन्द्रमार्गो ३४ तस्मिन्सुसंकुलइभाश्वरथद्विपङ्क्तिः कृष्णसभास्यमुपलभ्यगृहाधिरुढाः ॥ नाथ्योविकीर्यकुमुभैर्पनसोपगुह्यमुस्वागतं विदधुस्तस्मयवीक्षितेन ३५ ऊजुःस्त्रियः पथिनिरीक्ष्यमुकुन्दपत्नीस्तारागथोदुपसहाः किमकार्यमूभिः ॥ यच्चक्षुषांपुरुषमौलिरुद्राहासलीलाऽवलोककलयोत्सवमातनोति ३६ तत्रतत्रोपसङ्गम्य पौरामङ्गलपाणयः ॥ चक्रुः सपथ्यांकृष्णाय श्रेणीमुख्याहतैनसः ३७ अन्तःपुरजनैः प्रीत्या मुकुन्दः कुल्लोचनैः ॥ ससम्भ्रमैरभ्युपेतः प्राविशद्वाजमन्दिरम् ३८ पृथ्वाविलोक्यभ्रात्रेयं कृष्णं त्रिभुमनेश्वरम् ॥ प्रीतात्मोत्थाय पथ्यङ्कात्तस्तनुपापरिस्वजे ३९ गोविन्दं गृहमानीये देवदेवेशमादृतः ॥ पूजायां नाविदरुक्

रही ऐसो जो राजमार्ग है तामें रानीन सहित जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन देखिकें घरन के ऊपर चढ़ी जे स्त्री हैं ते फूलन कुं वरसाय कै मनसुं आलिंगन करिकें मुसिकानिपूर्वक जो चितवनि है तारुं देखिकें भले आये या प्रकार रहति भई ३५ जैसे चन्द्रमा सहित तारागण ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की रानी हैं तिन मार्ग में देखिकें इन रानीन ने कहा पुण्य करयो है देसो पुरुषन में मुकुन्दतुल्य श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो जिन स्त्रीन के नेत्रनकुं उदारहास लीलापूर्वक चिनानि के लेशसुं आनन्दकुं विस्तार करै है ऐसे सप्त स्त्री कहति भई ३६ दूरि भये हैं पाप जिनके ऐसे जे पंक्तिन में मुख्य पुरके व सी हैं ते पान सुगारी वताशे नारियल ये सब मंगलनस्तु हैं तिनकुं दाय में लैके श्रीकृष्णचन्द्र की पूजा करत भये ३७ मकुल्लिन हैं नेत्र जिनके खुशी के मारे हरवराहट जिनकुं भयो ऐसे जे अन्तःपुरके वासीजन हैं तिनने प्रीतिपूर्वक सम्मुख आयकें सत्कार जिनकुं क्रियो ऐसे जे मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो राजा के मन्दिर में जात भये ३८ त्रिलोकी के ईश्वर अपने घरयो के पुत्र जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन देखिकें प्रसन है गन जाओ ऐसी कुन्ती अपनी बहू द्रौपदी सहित पलग पैतें उठिकें श्रीकृष्णचन्द्र मं धिलति भई ३९ देवन के देव और ब्रह्मादिकन के ईश्वर जो गोविन्द



श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन पर में लाय के आनन्द करिके सुगि जाऊँ नहीं ऐसे राज युधिष्ठिर है सो पूजा करिये की जो विधि है ताय भी न जानत भये ४० हे राजन् परीक्षित ! द्रौपदी और चहुँन जो सुभद्रा है ताने प्रणाम जिनकुं वरी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो पिता दसुदेवर्षि चहुँन जो कुन्ती है ताकुं और वडेन जो स्त्री हैं तिनकुं प्रणाम करत भये ४१ सासु कुन्ती ने आज्ञा जाकुं दीनी ऐसी जो द्रौपदी है सो सम्पूर्ण जो श्रीकृष्णचन्द्र की रानी हैं रुक्मिणी सत्यभामा भद्रा जाम्बवती इनको पूजन करति भई ४२ कालिन्दी भिन्नविन्दा लक्ष्मणा पतिव्रता नागनजिती इनकुं और जे संग आई हैं तिनकुं बख माला अत्तर अरगजा चन्दन इत्यादिकन करिके पूजा करति भई ४३ धर्मराज जो राजा युधिष्ठिर है सो सेना दहलुगान मन्त्रिन और रानीन सहित जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनै नित्य नये सुख भूँ रासत भये ४४ अर्जुनसहित जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अग्नि कू खाण्डवनसू रुद्र करिके जा मय नापा दैत्य ने राजा युधिष्ठिर कुं दिव्यसभा बनाय है दीनी वा मय दैत्य कुं

तुं प्रमोदो पहो नृपः ४० पितृव्यसुर्गुरुणीणां कृष्णरचक्रेऽभिदानम् ॥ स्वयंचकृष्णयाराजन् भगिन्याचाभियन्दिताः ४१ श्वश्रासंचोदिता कृष्णा पत्नीश्च गर्वाणि ॥ आनर्च्यं त्रिभिर्गणैः सत्यां भर्षां जाम्बवती तथा ४२ कालिन्दी भिन्नविन्दाश्च शैव्यानागनजितीसतीम् ॥ अन्याश्चाभ्यागतायास्तुवासः खड्गमण्डनादिभिः ४३ सुखं निवासयामास धर्मराजो जनार्दनम् ॥ ससैन्यं सानुगामात्यं सभार्यं च नवनवम् ४४ तर्पयित्वा खाण्डवेन वह्निफाल्गुनसंयुतः ॥ मोचयित्वा मयं येन राज्ञो दिव्यसभाकृता ४५ उवासकृतिचिन्मासान् राज्ञः प्रियचिकीर्षया ॥ विहनून्थमारुह्य फाल्गुनेन भैरवैर्धृतः ४६ इति श्रीमद्भागवतम् हा प्रमाणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे कृष्णस्येन्द्रपस्थगमनं नामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ एकदा तु मया मध्य आस्थितो मुनिभिर्धृतः ॥ ब्राह्मणैः क्षत्रियैश्चैत्र्यादिभिर्ययुधिष्ठिरः १ आचार्यः कुलवृद्धैश्च ज्ञानिसम्बन्धिवान्वेषः ॥

श्रुत्वा तमेव चेतोपामाभाषेदमुवाच ह ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ क्रतुराजेन गोविन्द राजसूयेन पावनीः ॥ यक्ष्ये विश्वनीर्भवतस्तत्समादयनः प्रभो ३ त्वत्पादुके च न तं छुडायत भये ४५ रथ में सवार होय के अर्जुन कुं तथा और योद्धान कुं संग लैंके विहार करत राजा युधिष्ठिर के भिय करिने के निमित्त कितने मास पर्यन्त वास करत भये ४६ इति श्रीमन्महाभगवत्पार्वतीखण्डाष्टमोऽध्यायः ७१ ॥

( ततो द्विचतस्रितमो राजा काश्यानिवेदिते ॥ हुड्कायं पागं हुड्काभीषेनावातयद्धरिः १ वहचरत्तं अध्याय ये राजा युधिष्ठिरसुं कार्यं निवेदितं होये माँ जरासन्ध कुं दुःसन्धुं जीतेनेवाला समभकर कृष्ण जी भीमसेनसू नाश करत भये २ ) अथ आशुकेदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! एक समय मुनीश्वर ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य भट्टया आचार्य और कुल में छुड तथा ज्ञानिके सम्बन्धी मान्य इन सहित सभी के बीच बैठे ऐसे राजा युधिष्ठिर हैं सो इन सबके श्रवण करत भी कृष्णभक्त वत्सल ! या प्रभार सम्बोधन दैंके जोलत भये १ २ हे समर्थ ! यज्ञन को राजा जो राजसूय यज्ञ है ता करिके पवित्र मर्मवदारे जे तुलसीदेव देता है तिन को पूजन करुगो यह कार्य आप सिद्ध करो ३ अभद्रकी नाश करनारी जे हुम्हारी चरणपादुका हैं तिनको जे पुरुष सेवन ध्यान

और पदिन होय कै चाणी मूं नाम लेत है हे कमलनाभ ! वेही पुरुष संसार तं छूटत है और जो चाहना करे है वे गनौरय उनहीं के सिद्ध होय है और कैसीही चक्रवर्ती मों न होय विना भक्ति व छु नहीं होय है ४ ता कारण हे देवनके देव ! यह लोक या संसार में तुम्हारे चरणारविन्दकी सेवा के प्रभाकरू देखे है सो हे समर्थ ! जे पुरुष कर्मभारिदिकनकूं मोल माने कौरय मृज्जय हैं तिनको मोह दूरि करिवे के निमित्त जे तुम्हें भजे हैं तिनभूं और जे नहीं भजे हैं तिनकूं अपने भजनको प्रताप दिवावो ५ सबके आत्मा समदर्शी आत्मासुख को अतुल्य जिनकूं ऐसे ब्रह्म जो तुम हो तिनके आपनो विरानो यह भेदबुद्धि नहीं है जैसे कलहन्त वी जो सेवन करे ताही कूं फल प्राप्तहोइ है ऐवहीं जो तुम्हारी सेवन करे तिनहीं पै प्रसन्न होत है औसी जो सेवा करे ताकूं तैसीही फल देउही यामें विपरीत नहीं है ६ अब श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् बोले ह राजन् युधिष्ठिर ! हे शत्रुने के नाश करनवारे ! तुमने यह भलो निश्चय करयो है या यज्ञते करे तैं लोकनमें तुम्हारी भंगल रूप कीर्ति फैलेगी ७ हे समर्थ राजा युधिष्ठिर ! यह सब यज्ञको राजा राजसूय यज्ञ तुमने करनो विचारो है सो ऋषि और पितृ तथा देवता और समस्त प्राणीन कूं प्यारो

आविरतं परिचरन्ति ध्यायन्त्यभद्रनशनेषु वयोगुणन्ति ॥ विन्दन्ति ते कमलनाभभावापवर्गमाशासते यदि न आशिर्पशान्दये ४ तदेव देव भवतश्चरणारविन्दसेवानुभावमिह पश्यतु लोकपः ॥ यत्वां भजन्ति न भजन्त्युनवो भये पानिष्ठाप्रदर्शय विभो कुरु मृज्जयानाम् ५ न ब्रह्मणः स परभेदमतिस्तव स्यात् सर्वार्थगनः समदृशः स्वमुखानुभूतेः ॥ संभवतां सुरतरोरिव ते प्रसादः सेवाऽनुरूपमुदयो न विपर्ययो न ६ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सम्यगव्यवसितं राजन् भवता शत्रु रुशी न ॥ कल्याणी येन ते कीर्तिलोका ननु भविष्यति ७ ऋषीणां पितृदेवानां सुहृदामपि नः प्रभो ॥ सर्वेषामपि भूतानां गीतः क्रतुराडयम् ८ विजित्य नृपतीन् सर्वान् कृत्वा च जगतीं वशे ॥ संभृत्य सर्वसंभाराना हरस्व महाक्रतुम् ९ एते ते भ्रातरा राजल्लोकपालांशसम्भवाः ॥ जितो स्मर्यात्भवता नेऽहं दुर्जयोऽऽहुतात्मभिः १० न कश्चिन्मत्प्रलोकं तेजसायशसा श्रिया ॥ विभूतिं विवांऽभिभवेदेवंऽपि किमु पार्थिवः ११ ॥ श्रीशुक्र उवाच ॥ निशम्य गवद्भूतं प्रीतः कुलमुखा मनुजः ॥ भानुर्दग्धिजयेऽयुक्क विष्णुने जोऽपवृहितान् १२ सहदेवं दक्षिणस्यामा दिशत्सहस्रमृज्जयैः ॥ दिशि प्रतीच्यान कुलमुदीच्यामव्यसाचिनम् ॥

हे ८ समस्त राजानकूं जीतिकें सम्पूर्ण पृथ्वी कूं वशमें करिकें समस्त वस्तुन कूं इकठौरी करिकें बड़े यज्ञं तुम करो ९ हे राजन् युधिष्ठिर ! ये तेरे भत्या लोकनके पालन व रनवारे जे देवता तिनके अंश तें उदत्त भये हैं परन्तु इन्द्रिय जिनने जीती नहीं है यतें पै वशमें नहीं आऊं हू और इन्द्रियजित् जो तू है ताके वशमें हूं १० भरो आश्रय जाने लियो ऐसो जो पुरुष है ताकूं लोक में तेज यश श्री और वैभव करिकें कोई देवता भी पराभन नहीं करिसकै है तौ राजा कहा तें करि सकैगो ११ अत्र श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को वचन सुनिकें प्रसन्नता सं प्रफुल्लित है मुग्न जाको ऐसो राजा युधिष्ठिर है सो भगवान् ने तेज तें बड़े ऐसे जे अपने भ्राता हैं तिनैं दिशान के जीतिने के लिये भेजत भगो १२ मृज्जयदेश के राजान कूं मंग करिकें दक्षिण दिशा के राजान के जीतिने कूं सहदेव कूं आज्ञा देत भये और मत्स्यदेश के राजान कूं संग करिकें पश्चिमदिशा के राजान के जीतिने कूं नकुन कूं आज्ञा देत भये और कैरव्यदेश के राजान

कू संग करिकै उत्तरदिशाके राजान के जीतिवै कू अर्जुन कू आदा देत भये और मद्रदेश के राजान कू संग करिकै पूर्वदिशा के राजान के जीतिवै कू भीमसेन कू आदा देत भये १३ हे राजन् परीक्षित् । सहदेव नकुल अर्जुन भीमसेन जे वीर हैं ते सम्पूर्ण दिशान तें राजान कू नल करिकै जीति के यत्न कस्यो चाहै ऐसो अज्ञातशत्रु जा राजा युधिष्ठिर है ताकू बहुत द्रव्य लाय के देत भये १४ और सब दिशानके राजा जीते गये परञ्च पूर्वदिशा की राजा जरासन्य जीतिवै में नहीं आयो या बात कू श्रवण करिकै अतिचिन्ता जाकू भई ऐसो राजा युधिष्ठिर ताकू जो उपाय लखवजी ने श्रीकृष्णचन्द्र कू बतायो हो सो उपाय श्रीकृष्णचन्द्र राजा युधिष्ठिर तें कहत भये १५ तब तो भीमसेन अर्जुन श्रीकृष्णचन्द्र तीनों ब्राह्मण वनिकैं हे राजन् परीक्षित् ! जहा बुद्धय को पुत्र जरासन्य गिरिवज्र नाम किला में रहे है तहा जात भये १६ ब्राह्मण को वेप पारण करे ऐमे जे क्षत्रिय हैं ते अभ्यागतन के आश्रय के समय ब्रह्मभक्त गृहस्थ घरमें रहे ऐसो जो राजा जरा-

प्राच्यां वृद्धोदां मत्स्यैः केकयैः सह मदकैः १३ ते विजित्य नृपान् च वीरा आजहुर्दिग्भ्य ओजसा ॥ अजातशत्रुवेभूरिद्विषिणं नृपयक्षयते १४ श्रुत्वा ऽजितं जरासन्धं च  
पतेर्धायितो हरिः ॥ आहो पायंतमेवाऽद्य उद्धवो यमुना च ह १५ भीमसेनो ऽर्जुनः कृष्णो ब्रह्मालिङ्गधरा स्रगः ॥ जग्मुर्गिरिभ्रजं नान वृद्धद्वयमुतो यतः १६ ते गत्वा  
निथय वेलायां गृहेषु गृहेषु धनं ॥ ब्रह्मरथं समयाचेरनूजन्ना ब्रह्मालिङ्गिनः १७ राजन् विद्धयति थीन् पाप्तानर्थिनो हूमागता च ॥ तन्नः पयच्छ भद्रन्ते यद्वयं का  
मया मेहे १८ किन्दुर्गर्पं निक्षिपन् किमकार्यमसाधुभिः ॥ किन्नदेवं यदान्यानां कः परः समदर्शिनम् १९ यो निरयेन शरीरेण सतांगेयं यशो ध्रुवम् ॥ नाचिनो  
तिस्वयं कल्पः स वाच्यः शोच्य एव सः २० हरिश्चन्द्रो रान्तिदेव उच्छ्वसिः शिविर्बलिः ॥ व्याधः क्रपो तोवहवो ह्यध्वेण ध्रुंगताः २१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ स्वयैराहु

सन्धैहै ताते धित्ता मागत भये । ७ हे राजन् जरासन्ध ! हम दूरि तें आयै है मांगनारे अतिथि हैं तिनें तुम जानो जो हम चाहना करै है वह वस्तु तुम हम कूँटेउ तुम्हारी कल्याण होयगो यह वस्तु हम माँगै हैं या प्रहार नाम लैके क्यों न कहो तहा करै है नाम लैके पुन मांगोगे तो पुन कब दियो जायगो और मुकुट तें आदिलैके आपूण्य मांगोगे तो भिखारीन कूँ कैसे देउंगो तथा रत्नजटित गहनो पुत्रादिकों के योग्य है सो दूसरे कूँ कैसे दियो जाय ऐसे जरासन्ध करै ताको उत्तर कहै हैं । ८ सहनशील जे पुरुष हैं ते कहा नहीं सहि सके है दुर्जनन स क्या नहीं करने योग्य है और दातान कूँ कौन वस्तु देवे योग्य नहीं है और समदर्शीन के कौन दूसरो शत्रु है याते नाम लेवे तें कहा है जो माँगें सो देउ । ९ साधु जाकूँ गांव ऐसे नित्य यशकूँ जो पुरुष अनित्य देह तें आप सपर्य होयकै नहीं करै वह पुरुष निन्दा योग्य है और शोच करिने योग्य है २० राजा हरिश्चन्द्र तथा रन्तिदेय और मुहलन्ध्रपि राजा शिनि तथा चलि चरिफ और ऋषोत्पत्ती और ऐसे बहुत

[illegible]

महात्मा या अतिरूप देह करिके धुवनोक्त में जातभये २१ अव श्रीशुकदेवजी कहै है राजन् परीक्षित ! करुण बोलनि और स्वरूप इनको तथा गुणके प्रत्यङ्ग के घटे जिनमें परिरहे ऐसे पहुँचने कूँ देखिके ये क्षत्रियन में नीच हैं यह जानिके द्रौपदी के स्वयंवर में पहिले मैंने देखे हैं यह विचार करतभयो २२ ये क्षत्रियन में नीच है परन्तु ब्राह्मण को स्वाग वरें हैं या कारण दियो न जाय ऐसेजो अपनो आत्मा है ताय भी इनहु भिक्षा देउंगो कदाचित् माँगो तो २३ विष्णु भगवान् ने ब्राह्मण को स्वरूप वाग्न अवतार धरिके पेशकर्यते भ्रष्ट जाकू करि दियो ऐसो राजा बलि ताकी निर्माल कीर्ति अब पर्यन्त पृथ्वी पै सुनी जाति है २४ इन्द्र के अर्थ लाक्ष्मी हरिवे के लिये ब्राह्मण को रूप धरिके प्राप्त भये ऐसे जे विष्णु भगवान् हैं तिनकू जाने भी हैं कि भरे छलिवे के लिये आयें हैं और शुक्राचार्य ने मने भी कर्यो तथापि दैत्यन को राजा बलि है सो वाग्नजीकूँ पृथ्वी दान करत भयो २५ एक दिन औ यह देह पतनहोयगी परन्तु जीवतहुँ क्षत्रियकी देहसूँ ब्राह्मण के अर्थ निर्मल यश कूँ न करे तौ या देखसूँ कहा प्रयोजन है २६ या प्रकार निश्चय करिके उदार है बुद्धि जाकी ऐसो राजा जरासन्ध है सो श्रीकृष्ण अर्जुन भीमसेन इनसूँ कहतभयो

निभिस्तांस्तु प्रकोष्ठैर्ज्याह्नैरपि ॥ राजन्यवन्धनविज्ञाय दृष्टपूर्वानचिन्तयत् २२ राजन्यवन्धनविज्ञानिविभ्रति ॥ ददामिभिक्षान्वेतेभ्य आत्मानमपि दुस्त्यजम् २३ वनेर्नुश्रूयनेकीर्तिर्विजितादिश्वकल्मषा ॥ ऐश्वर्यार्थीन्द्रशितस्यापि विप्रव्याजेन विष्णुना २४ श्रियं जिहीर्षतेन्द्रस्य विष्णवे द्विजरूपिणे ॥ जानन्नपि महीं भादोद्धार्यमाणोऽपि दैत्यराट् २५ जीवता ब्राह्मणार्थ्य कोऽन्वर्थः क्षत्रवन्धुना ॥ देहेन पतमानेन नेह ना विपुलं यशः २६ इत्युदासमतिः प्राह कृष्णा अर्जुनवृकोदरान् ॥ हे विभाव्रियनां कामोददास्यात्मशिरोऽपि वः २७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ युद्धं नो देहि राजेन्द्र बन्धुशोयदि मन्यसे ॥ युद्धार्थिनो वयं प्रासारा जन्यानां नराङ्गिणः २८ अमौ वृकोदरः पार्थस्य भ्राताऽर्जुनो ह्ययम् ॥ अनयोर्मातुल्यं मां कृष्णं जानीहि ते रिपुम् २९ एवमावेदितो राजा जहासोच्चैः स्म मागधः ॥ आहवागमर्षिनो मन्दायुद्धं न हि ददामिवः ३० न त्वया भीरुणा योत्स्येयुर्धिविक्लवचेतसा ॥ मथुरां स्वर्णं त्यक्त्वा समुद्रं शरणं गतः ३१ अयं तु वयसाऽनुत्प्लोनाति सत्त्वनो मे समः ॥ अर्जुनो न भवेद्योद्धा भीमस्तु त्यज वलौ मम ३२ इत्युक्त्वा भीमसेनाय प्रादाय महर्तुगिदाम् ॥ द्वितीयां वयमादाय निर्जगाम तु हे ब्राह्मणो ! जो तुम्हारे इच्छ-होय सो वर माँगो तब श्रीकृष्ण केरि पक्षी करै हैं जो माँगो सो देउंगे तब जरासन्ध कहै है बारंवार कदा कहो हौ शिरपर्यन्त माँगो तो देउंगो २७ तब तो श्रीकृष्ण-चन्द्र भगवान् बोले है राजान के इन्द्र राजन् जरासन्ध ! तुम्हारे मन में आवै तौ इन्द्रयुद्ध देवयुद्ध के निमित्त हम क्षत्रिय तुम्हारे पास आयें हैं अन्न के लेनवारे ब्राह्मण हम नहाइ २८ तब जरासन्ध ने धुँक्खो तुम कौनहौ श्रीकृष्णचन्द्र कहै हैं दृक्कामा अग्नि जाके उदर में ऐसो पृथा को पुत्र यह भीमसेन है और याको भय्या यह अर्जुन है और इनके मामा को पुत्र तेरो पहिलो वीरो में श्रीकृष्णचन्द्र हैं यह जानिले २० या प्रकार श्राण करिके मगधदेशको राजा जरासन्ध बहुत हैंसत भयो पीछे क्रोध में भरिके हे मूर्ख ! मैं तुमकूँ युद्ध देउंगो या प्रकार कहत भयो ३० अरे हरयो कना व्याकुल है चित्त जाको ता तेरे संग में युद्ध नहीं करूंगे भरे हरतैं तू अपनी मथुरापुरी त्यागि कै समुद्र में जायकै वस्यो है ३१ अर्जुन है सो भो तैं अवस्था में न्यून है और न मेरी

वराचर बलवान् है याति कृच्छ्रं न योद्धा न दोग्यो हां भीममेव मेरी परापर बला में है याके संग युद्ध होयगो ३२ इतनी चान करिक भोमसेन नूँ दही गदा दैक और दूसरी गदा आग लेके दुग ते चाहर निकसन भयो ३३ ता पीछे उहो है मद् भिनने ऐमे चीर अ भीममेन जरासन्ध है ते परस्पर मिलिके रणभूमि में बचकी तुल्य अ गदा है तिन करिके प्रहार करत भये ३४ रणभूमि में प्राप्त अ नट है तिनके पायें दाहिने अ विचित्र मण्डल है तिनमें जैसे विचर ऐमे भोमसेन और जरासन्ध है तिनको युद्ध मुन्दर लगत भयो ३५ ता पीछे है राजन् परीक्षित् ! टाँत है विजयमान जिनके ऐसे हाथीन के टाँतन को जैसे शब्द होयहै तैसे ठाँनों चीरन की चली अ गदा है तिनको यम जैसे पिसे ऐमे चटवटा शब्द होन भयो ३६ पुद्गल है बड़ो है तोप जिनके ऐसे हाथीन की लड़ाई में आक की लकड़ी जैसे नूर्ण होय जाय है तैमे भुजान के वेग में आयुममें चलीकेभी अ गदाई ते रुन्या कमर पाँ हाथ अता जनु इनमें लतिके चूर्ण होतयई ३७ या प्रकार जम दोनों की गदा दृष्टि ॥ ३ तम क्रोश्री अ मनुष्यन में चीर भीममेन जरासन्ध है ते लोहे की तुल्य है सार्थ जिनको ऐसी मुहीनकी मार शरीरमें पागतये हाथीन की तुल्य आयुम में मारे ऐसे अ जरासन्ध

राद्वहिः ३३ ततः समेखलेचीरो संयुक्तावितेतरौ ॥ जघनतुर्वज्र रुद्रपाभ्यामगदाभ्यां रणदुर्भदौ ३४ गण्डलानिविचित्राणि सव्यं दक्षिणमेव च ॥ चरतोः शु शुभे युद्धं नटयोस्विरज्जिणोः ३५ तनश्चटवटाशब्दो वज्रनिर्गोपमन्निभः ॥ गदयोः क्षिप्रयोराजन् दन्तयोस्विदन्तिनोः ३६ तैवैगदेभुजजवेन निपात्यमा ने अन्योऽन्योऽपमकटिपादकरोरुजघ्न ॥ चूर्णवभूमतुरुपरयथा कर्कशाखे संयुज्य नोद्विदयोस्विदीप्तमन्धोः ३७ इत्थंतयोः प्रहतयोगोर्गदयोर्द्वयोर्गो क्रुद्धोऽस्म मुष्टिभिरस्यः स्पर्शैरपि प्राम् ॥ शब्दस्तनयोः प्रहृतोरिभयोर्गिवाऽऽनीचिर्घातिवज्रपरुषस्तलताडनोत्थः ३८ तयोरेव प्रहृतोः सगशिश्नावलौ जसोः ॥ निर्दिशेपम भूतुद्धमक्षीणजवयोर्नृप ३९ एवंतयोर्महाराजयुज्यनोः सप्तविंशतिः ॥ दिनानि निर्गस्तत्र मुहूर्त्तानि शिशितिष्ठतोः ४० एकदामातुल्यैवैवै प्राहराजन् युकुटोदरः ॥ नशक्नोऽहं जरासन्धं निर्जेतुं युधिमाधव ४१ शत्रोर्जनममृतीविद्धाञ्जीविनं च जराकृतम् ॥ पार्थमाप्यायन्स्वेन तेजसाऽचिन्त्य छरिः ४२ सञ्चिन्त्याग्नि धांपायं भीमस्यामोघदर्शनः ॥ दर्शयामामविटपं पाटयन्निवसंजया ४३ तद्विज्ञाय महासत्त्वो भीमः प्रहृतांतयः ॥ गृहीत्यापादयोः शत्रुं गतयामास भूनले ४४

भीमसेन है तिनकी मुक्ती लागि है उक्तो जो शब्द है सो जैसे बिना चादर पक्षपातको शब्द होय ता प्रकार कठोर शब्द होत भयो ३८ हे राजन् परीक्षित् ! नहीं दृष्ट्यो है वेग जिनको और पराचर दाँड पैच बल प्रभाव जिनको मुक्ती मारे ऐमे अ भीमसेन जरासन्ध है तिनको परापर युद्ध होत भयो ३९ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार दिनमें तो युद्ध करे और रातिमें विप्रकी तुल्य एकठोर रहे ऐसे अ भीमसेन जरासन्ध है तिन नूँ युद्ध करत सत्ताई सटिन गीतगये ४० हे राजन् परीक्षित् ! एकसपय दृढतामा आगि है उदर में ऐसी भीमसेन है सो माया के पुत्र श्रीः कृष्णचन्द्र है तिनमें जेलत भयो है माधव ! युद्ध में जरासन्ध नूँ नहीं जीति सकूं ४१ शत्रु जो जरासन्ध है ताको जन्म भयो है ताग और जैसे राकी मृत्यु होयगी ताग और जगनाम राजसी ने दो दूक जोरिके जिवाय दियो ताग जानें ऐसे अ श्रीः कृष्णचन्द्र है सो अपने तेज करिके भीमसेन नूँ गुण करिके जरासन्ध गी मृत्यु को उपाय विचारत भये ४२ सफल है दर्शन जिनको ऐसे श्रीः कृष्णचन्द्र है सो





सुन्दर प्रसन्न मुन्यहै और प्रकाशमान एकराकृत कुण्डलनकू धारण करे ३ नमस्त जिनके प्राथम विगममान गदा द्यु चक्र इनकू पारण करे पाँच किरीट छार कड़ा कौनगी चानूरन्त इनकू पहिरे ४ और प्रकाशमान सुन्दर मणि श्री गाय तथा गलेमे पारपर्यन्त वनमाला कू गारण करे ऐसे रूपकू देगिके राजान कू लट्ठिमी परि गई देगिके नेत्र ऐसे चलाये मानों रूपरो पीजायगे जीभ ऐसी चलावे मानो चाटि जायेगे नाक ऐसी फुलावे मानों मूँघि जायेगे भुजा ऐसी चलावे मानों स्वरूपको आलिङ्गन करिलेंगे गाय जिनके दूरिभये ऐसे राजा है ते शिरन से श्रीकृष्णचन्द्रके चरणनय प्रणाम करतभये ५ । ६ श्रीकृष्णचन्द्रके दर्शन तें जो आनन्दभयो तामूं दूरि भयो है वन्दीखाने को केश जिनको हाथ जोरे ऐसे समस्त राजा हर्षकेश जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान हैं तिनही चाखीन करिके स्तुति करतभये ७ इन्द्रादिक देवतान के देव जो ब्रह्मादिक तिनके ईश्वर है शरणागतनके कष्ट के हरनयारे ! हे अविनाशी ! हे कृष्ण ! या वीर संसार तें दुःखितभये तुम्हारी शरण लियो ऐसे जे हम हैं तिनकी रक्षा करो ८ हे नाथ ! हे मयुषूदन ! यह जो जरामन्थ है ताप दोषलगायकै रूप नहीं देने हैं हे प्रभो ! राजा जे हम हैं तिनको राज्य अष्टभयो यह तुम्हारी अनुग्रहभयो ९ राज्य ऐश्वर्य

पलाक्षिनम् ॥ किरीटहारकटकटिमुत्राङ्गदचितम् ४ भ्राजदमणिग्रीवं निवीतं वनमालया ॥ पिवन्त इव चक्षुर्भ्यालिहन्त इव जिह्वया ५ जिब्रन्त इव नासाभ्यां रमन्त इव वाङ्मयिभिः ॥ प्रणे मुहन्त पाप्मानो मूर्द्धभिः पादयोर्हरेः ६ कृष्णसन्दर्शनाद्वाद्यस्तसंरोधनक्लगाः ॥ प्रशशं मुहुषीकेशं गीभिः प्राञ्जलयो नृपाः ७ राजानञ्जुः ॥ नमस्ते देवदेवेश प्रपन्नार्त्तिहरावयय ॥ प्रपन्नान्पाहिनः कृष्णनिर्विषान्त्रोसंमृतेः ८ नैनं नाथानुसूयामो मागधं पशुमदन ॥ अनुग्रहो यद्वतो गङ्गाः ज्यञ्च्युनिप्रभो ९ राज्यैश्वर्यमदोन्नद्धो न श्रेयो विन्दते नृपः ॥ त्वन्मायामोहितो नित्यागम्येन सम्पदोऽचलाः १० मृगतृष्णा यथावाला मम्यन्त उदकाशयम् ॥ एवं वै कारिकी मायामयुक्ता वस्तुवक्षते ११ वयंपुरा श्रीमदनष्टदृशो जिगीषयाऽस्या इतरे न स्पृशः ॥ घ्नन्तः प्रजाः स्माअनिनिर्झणाः प्रभो मृत्युं १२ रस्ताऽविगणय्य दुर्मदाः १२ तपूवकृष्णाद्यगभीरं हमा दुःखन्तं त्रीर्थेण विचालिताः श्रियः ॥ कालेन न नवाभवतोऽनुक्रमया विनष्टस्पर्शरणोऽस्मरामते १३ अथोन राजयं मृगतृष्णिरूपितं देहेन शश्वरपनतारुजां भुवा ॥ उपासितव्यं स्पृहयामहे विभो क्रियाफलं प्रेत्य च कर्णरोचनम् १४ तन्नः समादिशोपायं येन ते

के पद करिके खोजी है पर्यादा जाने ऐसो जो राजा है सो तो कल्याण भू नही प्राप्त होय है और तुम्हारी माया मूं मोहित होय है अनित्य जे समझा है तिन अचल माने है १० जैसे अज्ञानी बालक मृत्यु की किरणनसूं चपकै जो दाव है ताप जल को सरोवर माने हैं ऐसी ही अज्ञानी पुरुष हैं ते जाना मृष्टि असत् रूपी जो माया है ताप सत्य माने है ११ धन के मट करिके फूटे हैं नेत्र जिनके और पृथ्वी के जीतिवे की इच्छा करिके आपुस में भई है ईर्ष्या जिनके अपनी प्रज्ञानकूं पारे अत्यन्त निर्दयी और है सपर्य ! आगे तुप कालरूप ठा है हो तिनको प्रवादर करिके पहिले दुष्ट है पद जिनको ऐसे हम होत भये १० हे कृष्ण ! गम्भीर वेग और नहो पराक्रम जाको ऐसो तुम्हारी मूर्ति जो काल है ताने हम दास भी तें अष्टकोर अप तुम्हारी कृपा करिके दूरि भये हैं गन्ध जिन के ऐसे हम तुम्हारे चरणनको स्पर्ण करे हैं ११ हे विभो ! याके पीछे नित्य आयु जाती स्त्रीण होय और रोगनकी खानि अधीत एक न एक रोग जागें खतावरीय ऐसी जो देख है तामूं मृगतृष्णारूप जो

मिथ्या राज्य है ताकी इच्छा हम नहीं करे हैं और कर्मन के फल जे रम्यादिक हैं तिनकी इच्छा हम नहीं करे हैं ते केवल कानन सँ अथगमात्र हैं १४ या संसार में भूले जे हम हैं तिनकूँ तुम्हारे चरणारविन्द की भूल न होइ ऐसो उपाय बतायो १५ भक्तन के क्लेश कूँ दूरि करनवोर शुद्ध अन्तःकरण के प्रकाशक हरि परमात्मा और तुम्हरो नाम लेइ ताके क्लेश के काउनवारे गोविन्द ऐमे जो तुमहो तिनकूँ प्रणाम करे हैं १६ अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! जरासन्ध के वन्दीखाने तें छूटे ऐसे जे राजा हैं तिनने स्तुति जिनकी करी ऐसे जे शरण के योग्य करुणावान् जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते मनोहर बाणी करिके राजान तें बोलतभये १७ अथ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं हे राजाओ ! जेभे तुम ने चारुणा करी तैसे सबको ईश्वर जो आत्मा में हूँ ता मो में आज ते लोकें तुम्हारी निश्चय दृढभक्ति भई १८ हे राजाओ ! सत्यवादी जे तुमहो तिनने मेरो भजन करियो यह भलो सत्यसङ्कल्प निश्चय कियो है और मनुष्यन कूँ धन ऐश्वर्य सँ मद है तासू इच्छापूर्वक विचारिजो और लम्पतता है ताय देखू हूँ १९ कृतवीर्य को पुत्र चक्रवर्ती राजा सरस्वतारु एकसगय जमदग्नि ऋषिकी गौ हरिकै ले आयो तब वाकूँ परशुरामजी ने पुत्र

चरणान्जयोः ॥ स्मृतिर्यथानविरमदपि संस्रतामिह १५ कृष्णायवा मुदेवाय हरये परमात्मने ॥ प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमोनमः १६ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ संस्तूयमानो भगवान् राजभिर्भुक्त्वन्यनैः ॥ तानाहं करुणस्तात शरण्यः शलक्षणयागिरा १७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अद्य प्रभृतिवो भूपामभ्यात्मन्य खिलेश्वरे ॥ सुहृद्वाजाय ते भक्तिर्वाटमाशंसितं तथा १८ दिष्ट्वा न्यवसितं भूपा भवन्तं ऋतभाषिणः ॥ श्रियैश्वर्यमदो न्नाहं पश्य उन्मादकं नृणां य १९ हेहयो नहुपो वेनो रावणो नरकोऽपरे ॥ श्रीमदाङ्गशिवाः स्थानाद्देवैर्देत्यनेश्वराः २० भवन्त एतद्भिज्ञा यदेहाद्युत्पाद्यमन्त त्व ॥ मां यजन्तोऽध्वर्युक्ताः प्रजाधर्मैण रक्ष थ २१ सन्तन्वन्तः प्रजातन्तून् सुखं दुःखं भवौ ॥ प्राप्तं प्रापस्व सेवन्तो मच्चित्ता विचरिष्यथ २२ उदासीनाश्च देहादावात्माशमाधृतव्रताः ॥ मथ्यावेश्य मनः सम्यग्दमामन्ते ब्रह्मया स्यथ २३ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इत्यादिश्यन् पान्कृष्णो भगवान् भुवनेश्वरः ॥ तेषां न्ययुक्त्वा पुरुषान् स्त्रियो मज्जनकर्मणि २४ सपर्याका

सहित मारचो और राजा नहुप मदोनमत्त होयकै इन्द्राणी के पास जायवे के लिये ब्राह्मणन कूँ पालकीमें लागय के चलयो तब ब्राह्मणन ने वाकूँ ऐश्वर्य तें अष्ट करिके सत्य करिदियो और राजा वेन मतवारो होयकै ब्राह्मणनको तिरस्कार करचो तब ब्राह्मणनने हुक्कार शब्द करिके मारचो और राक्षसनके राजा रावणने सीताकी आकांक्षा करी तन रामचन्द्रने माख्यो तथा दैत्यनको राजा नरकासुर अदितिके कुण्डल हरिलायो तब मैनेही मारचो और कितनेहुँ देवता तथा दैत्य राजा बनके मदतें स्थानन तें अष्ट श्रेयगये २० और तुम सम्पूर्ण होतै उत्पन्न जे देहादिक हैं ते नाश हो-  
यगे यह जानिके यज्ञन करिके मेरो पूजन और प्रजाकी रक्षा करो २१ और पुत्रादिकन कूँ उत्पन्न करो सुख दुःख जन्म मृत्यु जो प्राप्त होय ताको सेवन करो मो में चित्तकूँ लगायकै विचरो २२ आत्मामें है रमण जिनको धारण कियो है व्रत जिनने ऐसे जे तुमहो ते देह में और घरन में उदासीन होयकै भले प्रकार मो में मन लगावोगे तो अन्तमें मो ब्रह्मकूँ पावोगे २३ अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! त्रिलोकी के ईश्वर जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो या प्रकार राजानकूँ आत्मा करिके तिनको उवटन स्नान चौर इन कर्मन के करायवे के निमित्त स्त्री पुरुषनकूँ लगावत

भये २७ हे भरतशोचन् राजन् परीक्षित ! सुन्दर स्नान जिनने करे ऐमे जे राजा हैं जिनकी जरासन के पुत्र मरदेन मूं राजान के योग्य जे उस आभूषण माला चन्दन इन करिके पूजन करगन भये २५ सुन्दर स्नान जिनने किये वस्त्र आभूषण करिके शोभित और नानाप्रकार के भोगन करिके युक्त ऐमे जे राजा हैं जिनहूं अथ अथ भोजन कराय के राजान के योग्य जे ताम्बूलादिक हैं जिन देत भये २६ मुकुन्द श्रीकृष्णने पूजा जिनकी करी और मरगुमान कुरदलन हूं पहिरै लन्दीखाने के केसरें टुटायै ऐमे जे राजा हैं जे जेगे नपी मृतु के पीछे आसाय गे नारायण मुन्दरलगे हैं ऐमे सुन्दर लगतभये २७ पणि और सुवर्ण के पहनेन करिके शोभायमान जे राजा हैं जिनने सुन्दर योड़ा जिनमें सो ऐमे जे राई जिनमें बैठाये है मनोहर वचनन मूं प्रमत्त करिके श्रीकृष्णचन्द्र इनके देश-नहूं भिजवावत भये २८ पड़े महात्मा जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं जिनने लन्दीखाने के कष्ट तें दुहाये ऐमे जे राजा हैं ते जगन् के पति जे श्रीकृष्णदेव गिा को जान और उनके रूपनको ध्यान करन मार्ग जे जातभये २९ जे समस्त राजा जैसे महापुरुष श्रीकृष्णचन्द्र जे दुहाये और गीये पूजा कराई रहस्य वृत्तान्त अपनी मजा के योगे करन भये और जा प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र ने शिक्षा दीनी है मेरी आला-

रयामाम सहदेवेन भारत ॥ नरदेवोचिर्वैश्वर्भणोःस्त्रियलेपनेः २५ भोजयित्वा वरात्रेन मुस्तानान्ममलंकृतान् ॥ भोगेश्वविचित्रैर्बुक्तांस्ताम्बूलाद्यैर्नृपो चितैः २६ तेषूजितामुकुन्देन राजानोमृष्टकण्डलाः ॥ विरेजुर्गोचिताः क्लेशात्प्रावृडन्ते यथाप्रहाः २७ स्थान्मदश्चानागेष्व गणिकाञ्चनभूषितान् ॥ प्री णध्यमृतेवैद्विभैः स्वदेशान्प्रत्ययापयत् २८ तत्पुंमोचिताः कृच्छ्रात् कृष्णेनसुमहारगता ॥ ययुस्तमेध्यायन्तः कृतानिचजगरतेः २९ जगदुःप्रकृति भ्यस्तं महापुरुषचेष्टितम् ॥ यथाऽन्वशामद्रगांस्तथाचक्रुस्तन्दिताः ३० जगसन्ध्यातयित्वा भीमसेनेनकेशवः ॥ पार्थीभ्यांसंयुतः प्रायात्सहदेवेनपूजितः ३१ मत्तातेखाण्डपस्थं शङ्खान्द्रमुर्जितारयः ॥ हर्षयन्स्वमुहूर्दोद्वर्गंचामुत्तावहाः ३२ तच्छ्रुत्वाभीतमनसुडन्प्रस्थनिवागमिनः ॥ मेतिरेमागधंशान्तं राजाचासमनोरथः ३३ अभिमन्यावराजानं भीमार्जुनजनादिनाः ॥ सर्व्वमाश्रायायच्छ्रुत्वापनायदनुपिडनम् ३४ निशम्यधर्मराजस्वतः केशवेनानुक्रमि तम् ॥ आनन्दाश्रु रुक्मांमुञ्चत् प्रेरणानोवाच पित्रेन ३५ इति श्रीमद्भागवतमहापुर्णोदशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे कृष्णार्ध्यागमने त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

स्य द्योडि के करतभये ३० वेश्य जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं मो भीमसेन करके जगमन्य को यातकषाय के और मरदेव सें पूजन अणनो कराय है भीमसेन अर्जुन हूं मद्रलै के आवतभये ३१ दुष्ट है हृदय भिनको ऐसे जे शत्रु हैं जिनहूं द्रुम के देनगरे और अपने मुहृदन हूं आनन्द के देनगरे ऐमे जे श्रीकृष्ण भीमसेन अर्जुन हैं ते पैरी जगमन्य कृष्णारि है इन्द्रप्रस्थ में जायकै शत्रुन हूं वजावत भये ३२ शङ्खनको शब्द गुनिके प्रसवई मन जिनके ऐसे जे इन्द्रप्रस्थ के निवासी हैं ते जरासन की मृत्पृ भई यदमानतभये और राजा युधिष्ठिर के मनोरय पूर्ण होते भये ३३ योके पीछे भीमसेन अर्जुन श्रीकृष्णचन्द्र आयकै राजा युधिष्ठिर हूं मणाम करिके अपने जो पशु करे सो मन सुनावतभये ३४ धर्मराज के पुत्र जो राजा युधिष्ठिर हैं मो जगमा मरदेव के नश करनचारे श्रीकृष्णचन्द्रने जो कार्य करयो ताप अरण करिके नेत्रन सूं आनन्द के आंगूठी धार नशावत भैममें विषुनहोव है हछु न योलत भये ३५ इति श्रीभागवतभागवतार्थहृदि षोडशपरस्कन्धे उत्तरार्द्धे त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

(चतुर्थपुष्पसहितमेराजसूयक्रियादिगे-॥ अग्रज्जागसद्गैनेचैयतादिवर्णते ? राजसूयमुत्ते हत्वाजरासन्तदन्तरे ॥ चैवंतदन्तेकुर्वन्तं वाँमैकलिपिवावपत् २ चौहतरवै आध्याय मंत्राक्षर्यो ने राजसूयगद्ग की क्रिया करवाई यामे प्रथमही पूजा के मस्तकसूं गिणुपालका नाश आदि वर्णित है ? राजसूययज्ञ के मुखमें जरासन्ध को मारकर ताके बीच में शिशुपाल को मारकर अन्तमें लड़ाईका बीज सा बोते भये २ ) अब श्रीशुभदेवीजी कहे हे हे राजन् परीक्षित ! या प्रभार राजा युधिष्ठिर जरासन्धको वध सुनिके मसन्नहोयके श्रीकृष्णचन्द्र संचलितभयो ? जे पुरुष तिलोरी के मुखहैं सन लोकन के वड्डे इशरहैं वे भी दुर्लभ पाय है तुम्हारी आश्रकूं थिरपै धारण करैहैं २ दे व्यापक ! कपल सेहैंनेत्र गिनके ऐसेतुमहो सो ईश्वर आणेंकूं मानें ऐसेजो छुपण ह्वैहैं तिनकी आज्ञाकूं हे व्यापक ! तुम व्याप करो होय यह अत्यन्त अनुररण है ३ एक आदितीय अर्थात् कोई जिनकी वरावर नहीं और कोई जिनतें वडो नहीं ऐसे जो परमात्मा तुमहो तिनको नेत्र परेपकार के लिये जो कर्म हैं तिनसे न्यूनथी नहीं होयहै जैसे सूर्यको उदय अस्तमें आवत जात में तेज घटै बडै नहीं है ४ कदाचित् कहो कि मैं परमेश्वरहूं तो सचकी आज्ञा करनो यह मन्द कर्म क-

श्रीशुकउवाच ॥ एवं युधिष्ठिरराजा जरासन्ध्वधं विभोः ॥ कृष्णस्य चानुगावंतं श्रुत्वा प्रीतस्त्वमब्रवीत् १ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ ये स्युल्लोकोपगुरवः सर्वे लोकमहेश्वराः ॥ वहनिदुर्लभं लब्ध्वा शिरसैवानुशासनम् २ स भवानविन्दक्षोदीनानामीशमानिनाम् ॥ धत्तेऽनुशासनं भूमंस्तदत्यन्तविद्वन्भवत् ३ न ह्येकस्याद्विनीयस्य ब्रह्मणः परमात्मनः ॥ कर्मभिर्वर्द्धते तेजो ह न ते च यथाशवेः ४ नैव तेऽजितभक्तानां ममाहमिति माधव ॥ रन्तं वेति च नानाधीः पशूनामिवैव कुता ५ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इत्युक्त्वा याज्ञिये काले वने युक्तः न ममृत्स्विजः ॥ कृष्णानुमोदितः पार्थो ब्राह्मणान् ब्रह्मवादिनः ६ द्वैपायनो भरद्वाजः सुमन्तुर्गौतमोऽसितः ॥ वसिष्ठश्च यवनः ऋग्वैमैत्रेयः कवपस्त्रितः ७ विश्वामित्रो नाम देवः सुमतिर्जमिनिः क्रतुः ॥ पैलः पराशरो गार्ग्यवैशम्पायन एव च ८ अथर्वानि कश्यपो धौम्यो रामो भार्गव आसुरिः ॥ वीतिहोत्रो मधुच्छन्दावीरसेनोऽकृतव्रणः ९ उपहूनास्तथा चान्ये द्रोण भीष्मकृपादयः ॥ धृतराष्ट्रः सहस्रतुर्बिदुरश्च महामतिः १० ब्राह्मणाः क्षत्रियवैश्याः शूद्रा यज्ञादिदृक्षवः ॥ तत्रैयुः सर्वराजानो राज्ञां प्रकृतयो नृप ११ ततस्ते देवयजनं ब्राह्मणाः स्वर्णलाङ्गलैः ॥ कृष्णा तत्र यथा मनां दीक्षया रनो योग्य न ही हे सो के हे हे मधु शोत्स्वन् श्रीकृष्ण ! रे अजित अर्थात् काहू के जीतिवै न आबो ! नैसे अज्ञानी पुरुषन के देह में अशुद्धार और देह के समीपन में पमता रहे है ऐसे तुम्हारे भक्तन के मे ते नू तेरो यह बुद्धि नहीं होगे ५ अ न श्रीशुकदेव जी के हे हे राजन् परीक्षित ! श्रीकृष्ण ने प्रसंसा जाती करी ऐसी कुन्ती को पुन जो राजा युधिष्ठिर है सो या प्रकार कहिके यज्ञ करिने योग्य जे वसन्त काल हैं ता में वेद के पढ़नारे जे योग्य ब्राह्मण हैं तिन होता उद्गाता अथर्व्यु इत्यादिक करण करत यथो ६ द्वैपायन, भरद्वाज सुमन्तु गौतम आसित वसिष्ठ च्यवन कृष्ण मैत्रेय त्वप जित ७ विश्वामित्र वापदेव सुमति जमिनि क्रतु पैल पराशर गार्ग्यवैशम्पायन ८ अथर्वानि कश्यपो धौम्यो रामो भार्गव आसुरि वीतिहोत्र मधुच्छन्द वीरसेन अकृतव्रण ९ तैसे ही तुलाये जे और द्रोणाचार्य भीष्मजी कृपाचार्य तें आदि लैं के स्तोत्र है ते आबत भये और पुत्रन संहित धृतराष्ट्र और वेदबुद्धिम न बिदुर जी आवत भये तथा यज्ञ देगि वने के निमित्त ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र हैं ते और सम्

राजा हैं ते और उनके प्रधान दीवाने हैं ते हे राजन् परीक्षित १०। ११ ता पीछे ब्राह्मण है ते यज्ञ करिबे की भूमि में सुवर्ण के हल चलाय के भूमिशोधन करिके जैसे वेद में विधि है तैसेही राजा युधिष्ठिर कू यज्ञदीक्षा करत भये १२ जैसे पहिले वरुण के यज्ञमें सुवर्णकी सामग्रीपात्र होत भये ऐसही याहू यज्ञमें होत भये और ब्रजा महादेव कूं सज्ञ लैंके तथा इन्द्रादिक देवतान कूं सज्ञ लैंके लोकपाल हैं ते आवत भये १३ गणनसहित सिद्ध गन्धर्व विद्याधर और वड़े २ सर्प हैं ते और मुनीश्वर यज्ञ राक्षस खग किन्नर चारण इनके समूह आवत भये १४ और आये जे राजा हैं तिनकी सम्पूर्ण स्त्री हैं ते पाण्डु को पुत्र जो राजा युधिष्ठिर है ताके राजसूययज्ञमें आवति भई १५ नहीं भयो है आश्चर्य जिनके ऐसे सम्पूर्ण श्रीकृष्णचन्द्र को भक्त जो राजा युधिष्ठिर है ताको यश भलेमकार सिद्ध भयो या प्रकार मानत भये जैसे देवतान ने वरुण कूं यज्ञ करायो तैसेही देवतान की तुल्य है कान्ति जिनकी ऐसे जे ऋत्विज हैं ते राजसूय यज्ञ करिके विधिपूर्वक महाराज युधिष्ठिर सूं यजन करावत भये १६ अतिशय करिके सावधान पृथ्वीके पालन करनवारे राजा युधिष्ठिर ने जा दिन सोमवह्नी कूटी गई वा दिन यज्ञ करावनवारेन को तथा अकिरेनृप १२ है माः क्रिलो पकरण वरुणस्य यथापुरा ॥ इन्द्रादयो लोकपाला विराश्च भवसंयुताः १३ सगणाः सिद्ध गन्धर्व विद्याधर महोरगाः ॥ मुनयो यक्षरक्षांसि खग किन्नाचारणाः १४ राजानश्च समाहूता राजपत्यश्च नर्वशः ॥ राजसूयं समीयुः स्मरान्नः पाण्डुमुतस्य वै १५ मे निरेकृष्ण भक्तस्य सूपन्नमविस्मिताः अयाजयन्महारजं याजकादेववर्षसः ॥ राजसूयेन विधिवत् प्राचेतसमिवाभराः १६ सौत्येहन्यवनीपालो याजकाबृसदसस्पतीन् ॥ अपूजयन्महाभागान् यथावत्सुसमाहितः १७ सदस्याग्रवार्हणा हवै विमृशन्तः सभासदः ॥ नायगच्छन्नैनैकान्त्यात् राहदेवस्तदाऽव्रतीत् १८ अर्हति ह्यव्युतः श्रैष्ठ्यं भगवान् सात्त्वतां पतिः ॥ एष देवताः सर्वदिशः कालधनादयः १९ यदात्मकमिदं विशवं क्रतवश्च यदात्मकाः ॥ अग्निराहुतयो मन्त्राः साङ्गयोगश्च यत्परः २० एक एवादिती योऽसमवैतदात्म्यमिदं जगत् ॥ आत्मनाऽऽत्मा श्रयः सभाः सृजत्यवतिहन्त्यजः २१ विविधानीह कर्मणि जनयन् यदवेक्ष्य ॥ इहेत्यदयं सर्व्वः श्रेयो धर्मादिलक्षणम् २२ तस्मात्कृष्णाय महते दीयतां परमार्हणम् ॥ एवं चेत्सर्व्वभूतानामात्मनश्चार्हणं भवेत् २३ सर्व्वभूतात्मभूताय कृष्णायानन्यदर्शिने ॥ देयशान्ताय च बहुभागी जे सभामें मुख्य हैं तिनकी पूजन करयो १७ सभाके बैठनवारेन में प्रथम पूजन योग्य कौन है यह विचार करन करत एक की अपेक्षा एक बड़ो है यातें कगहूको निश्चय जय ग भयो तब युधिष्ठिर को भयया सहदेव बोलत भयो १८ भक्तन के पालन करनवारे असएह जिनको रूप समस्त देवता देस काल धनदिक्षण जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् हैं ते या यज्ञमें पूजा करिबे के पात्र हैं १ यह समस्त विन्ध या श्रीकृष्णको ईश्वररूप है और यज्ञादिक है तेहू श्रीकृष्णरूप है अग्नि आहुति मन्त्र साख्य योग ये सब श्रीकृष्णपरायण हैं २० हे सभाके बैठनवारे ! नहीं है जन्म जाको ऐसी एक अद्वितीय जो यह श्रीकृष्ण है सो आपही स्वरूप जाको ऐसी यह विन्ध है ताव अपने आत्माही करिके दूसरे की सहायता बिना उत्पन्न पालन नाश करे है २१ सब जनन के अनुग्रह तें या संसार में अनेक तरहके लपयोगादि कर्म हैं तिनकूं करिके धर्मादिक है स्वरूप जाको ऐसे कल्याण कूं करे है अनेकमतार के सम्पूर्ण कर्म और कर्मन के फल ये सब श्रीकृष्ण के

अर्थीन है २२ ता कारण सवते बड़े जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पूजादेख इनके देने भेस प्रणीन की पूजा होजायगी और जो कोई पूजायोग्य होयगो ताहू की होजायगी २३ जो पुरुष पूजा के अनन्त फल की चाहना करै वह पुरुष सन प्राणीन के आत्मा और भेदभाव जिनके नहीं ऐसे शान्त परिपूर्ण रूप जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पूजा देइ २४ श्रीकृष्ण के प्रभार कू जानै ऐसे सद-देव इतनी कहिके चुप होत भयो ता समय सम्पूर्ण जे श्रेष्ठ पुरुष हैं ते सहदेव को वचन आण करिके भले २ या प्रभार यदाई करत भये २५ स्नेह करिके विद्वन प्रसन्न जो राजा युधिष्ठिर है सो तिन ब्राह्मणन ने कछो जो वचन है ताय सुनिके और सभा में बैठे हैं तिन ते हृदयको अभिप्राय जानिके इन्द्रियन के गेरण करनबारे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन हो पूजन करत भयो २६ लो भय्या मन्त्री सब कुटुम्ब के पुरुषनसहित जो राजा युधिष्ठिर है सो श्रीकृष्णचन्द्र के चरण धोइकै लोकन जो पवित्र करनवारो जो चरणारविन्दको धोयन जल है ताय आनन्द करिके शिरपै चढ़ानत भयो २७ पीरे रेशमी वस्त्र और महुत योल के जे आभूषण हैं तिनसु पूजन करिके आभूषे नेत्रन में जाके ऐसो राजा युधिष्ठिर श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन करिवेहु नहीं समर्थ होतभयो २८ या

पूर्णय दत्तस्यानन्तयमिच्छता २४ इत्युक्त्वा सहदेवो भूषणानुभाषवित् ॥ तच्छ्रुत्वा तु ध्रुवः सर्वे साधुसाध्विति सत्तमाः २५ श्रुत्वा द्विजे रितं राजा ज्ञात्वा हार्दं  
समामदाय ॥ गमर्हयद्धृषी केशं प्रीतः प्रणयविह्वलः २६ तत्पादावबन्धि जयापः शिरालो कपावनीः ॥ स गार्ह्यः सानु जामात्यः सकुटुम्बोऽवहन्मुदा २७ वासोभिः  
पीतकौशेयैर्भूषणैश्चमहाधनैः ॥ अर्हयिरनाऽश्रुणोक्षो नाशकस्तमवैक्षितुम् २८ इत्थं मया जितं वीक्ष्य सर्वे भ्राजन्त यो जनाः ॥ न गोजयेति नेयुस्तं निपेतुः पुण्यद्रु  
ष्टयः २९ इत्थं निशाम्य दमघोषमुतः स पीठोद्धृत्याय कृष्णगुणवर्णन जातमन्युः ॥ उत्तिष्ठ पयवाहुभिदमाहमदस्यमर्षी संश्रावयन् भगवते परुषाण्ययीतः ३० ई  
शोद्धरस्य यः काला इति सत्यवती श्रुतिः ॥ वृद्धानामपि यद्वबुद्धिर्बालवाक्यैर्विभिद्यते ३१ शृंगपात्रविदां श्रेष्ठानामन्यध्वं बालभाषितम् ॥ सदसस्पतयः सर्वे च  
ष्णो यत्पम्पनोऽहणे ३२ तपोविद्याव्रतधरा ज्ञानविध्वस्तकल्मषान् ॥ परमर्षीन् ब्रह्मनिष्ठान् वै गोरुपालैश्च पूजितान् ३३ सदस्पतीन निक्रम्य गोपालः कुल

प्रकार राजा युधिष्ठिर ने पूजा जिनकी करी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करिके जोरी हैं अजली जिनने ऐसे सम्पूर्ण जन नमोनमः और जयजय शब्द करिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं मणाम करिके फलन की वर्षा करत भये २९ या प्रभार दमघोष को पुत्र शिशुपाल है सो सुनिके अपने पीठ मूं उठिके श्रीकृष्णचन्द्र के गुणन को वर्णन भयो तामूं भयो ई कोष जाके ऐसो भुजाकूं ऊंची उठाय के ईपी जाते भई ऐसो निर्भय होय सभाओं श्रीकृष्णको बडोर वचन गुलाय के यश्च बोलतभयो ३० नईहै नाश जाको ऐसो सगर्हपात्र जो काल है सो प्रमलैहै यश्च वेदकी श्रुति सत्य है ऐसे कालकरिके हृद हृद जे सभा में बैठे हैं तिनकी बुद्धि या बाल सहदेव के कहने तें चलायमान होय गई ३१ हे पात्रके जाननबारेन में श्रेष्ठो सभा के पतियो! यह कृष्ण पूजाके योग्य है या बालक सहदेव को वचन सन गति मानो ३२ तपकूं हरे विद्या पैं व्रतन कूं करे ज्ञान करिके ध्यस्त भये हैं पाप जिन के और अस्र गें निष्ठा है जिनकी लोकपाल पूजा करै ऐसे श्रेष्ठ ऋषि हैं तिन और सभाके पतियैं तिन



सन्तुष्ट्यागि के गायन को चरावनचारी कुन कूं दोष लगावचारी पूजा के योग्य कैम होय है जैसे यज्ञ में देवतान के योग्य जो बलि है ताय वीजा कैसे ग्रन्थ करिवे योग्य है ३३ । ३४ न जाको कोई कण है न आश्रम है भौर न कोई कुल है सम्पूर्ण धर्मन में वहिष्कृत जैसे मनमें आवै तैसेही करे गुणन करिके हीन ऐसो कृष्ण कैः पूजायोग्य होय है ३५ राजा यथातिने इनके कुल कू शाप दियो और सत्पुरुषन ने जातिभू याहर किया और सर्वरा दृष्टा गदरा पान करे ऐसो इनको कुल ता कुल में जो कृष्ण है सो कैसे पूजा योग्य होय है ३६ ब्रह्मर्षि जिनको सेवन करे ऐसे देशन कूं त्यागि कै ब्रह्मतेज जामें न रहे ऐसे समुद्र के किलाको आश्रय लैकै यादव चोरनी तुल्य प्रजाकूं बाधा करे है ३७ नष्ट भयो है भंगल जाको ऐसो शिशुपाल ऐसे ऐसे अमंगल वचन कहतभयो जैसे सिंह स्यारकी बोलनि पै मन नहीं देखै ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकं निन्दा श्रवण करिके काननकूं मृदि कै क्रोध करिके शिशुपाल कूं गारी देत जात भये ३८ भगवान् की निन्दा सुनिके अथवा भगवत्परायण जो पुरुष है ताकी निन्दा सुनिके जो पुरुष या स्थान तें न छडिजाय वह पुरुष अपने

पांसनः ॥ यथा नाकः पुरोडाशं मपर्याकथमर्हति ३४ वर्णाश्रमकुलापेतः सर्वधर्मवहिष्कृतः ॥ स्वैरवर्त्ती गुणैर्हीनः सपथ्याकथमर्हति ३५ ययातिनैर्पाहिंकुलं शंसं मर्द्दिमहिष्कृतम् ॥ दृथापानरतं शरत्पथ्याकथमर्हति ३६ ब्रह्मर्षिमेवितान् देशान् त्रिवैतः ब्रह्मवर्चसम् ॥ समुद्रं दुर्गमाश्रित्य बाधन्ते दस्यवः प्रजाः ३७ एवमादीन्यभद्राणि वभाषेनष्टमङ्गलः ॥ नोवाच किञ्चिद्भगवान् यथासिंहः शिवारुनम् ३८ भगवन्निन्दनं श्रुत्वा दुस्सहं तत्सभासदः ॥ कर्णेऽपि धाय निजं गमुः शपन् आश्रेदिरुपा ३९ निन्दां भगवतः शृण्वंस्तत्परस्य जनस्य वा ॥ ततो नोपैतियः सोपि यात्यधः सुकृताञ्च्युतः ४० ततः प्राणदुमुताः क्रुद्धा मत्स्यैकं यस्तृज्जाः ॥ उदयुधाः ममुत्तस्थुः शिशुपालजिघांसवः ४१ ततश्चैद्यस्त्वसम्भ्रान्तो जगृहे ह्रस्वचर्मणी ॥ भर्त्सयन् कृष्णपक्षीमान् राज्ञः सदासिभारत ४२ तावदुत्थाय भगवान् स्रान्निवार्य स्वयं रुपा ॥ शिरःक्षुरान्तचक्रेण जहारापततोरिपोः ४३ शब्दः कोलाहलोऽप्यासीच्चिद्रुपाले हतमहात् ॥ तस्यानुयायि नोभूपादुडुवर्त्तिवितैपिणः ४४ चैद्यदेहोऽतिथं ज्योतिर्वासुदेवमुपाविशत् ॥ परयतां सर्वभूतानामुल्केन भुवि स्वाञ्च्युता ४५ जन्मत्रयानुगुणितैर्वैरसंरब्धया

पुण्य तें छष्ट होय कै नरक में गिरे है ४० ता पीत्रे क्रोध जिन के भयो ऐम जे पाण्डु के पुत्र हैं ते और मत्स्य देश के कयदेश मृजयदेश के राजा हैं ते शस्त्रन कू उठाय कै शिशुपाल के मारिवे के लिये ठाढ़े होत भये ४१ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित् ! ता पीत्रे नहीं भयो है हस्त्रराहत जाके ऐसो जो शिशुपाल के सो कृष्णचन्द्र के पक्षी जे राजा है तिनके मारिवे कूं सभा में डाल तलवार लेत भये ४२ यह मेरो पापद है मेरी वारावरि यामें बल है यह सनकू पारेगो याते में ही पाकूं मारूं यह चिचारिके ताही समय उठिके भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपनी ओर के राजानकू मनेकरिके सम्मुख आवै जो वैरी शिशुपाल है ताको शिर छुरा की तुल्य है पैनी धार जाके ऐसे चक्रमूषासों काटत भये ४३ ता समय शिशुपाल के मारे जाने में बड़ो कोलाहल शब्द होत भयो और शिशुपाल के पिछगपू जे राजा हैं ते जीचे वी इच्छा करिके भाजत भये ४४ ता समय शिशुपाल के देह में तें निकसी जो ज्योति है मो सब प्राणीनके देखन श्रीकृष्णचन्द्र में मिलति भई जैसे आकाश

तु गिराओ जो तारा है सो पृथ्वी में मिलि जाय या प्रचार ७५ पहिले जन्म में हिरण्यकशिपु भये और दूसरे जन्म में रावण दुम्भकर्ण भये तीसरे जन्म में शिशुगल दन्तवक्र भये या प्रकार तीन जन्मों चरयो आयो जो वैर है तारुं तन्मय होय गई ऐसी जो बुद्धि है ता करिके रूपको ध्यान करत २ वाही रूपक पावत भयो अर्थात् पार्षद होत भयो क्योंकि जैसी जो भावना भये या प्रकार तीन जन्मों चरयो आयो जो वैर है तारुं तन्मय होय गई ऐसी जो बुद्धि है ता करिके रूपको ध्यान करत २ वाही रूपक पावत भयो अर्थात् पार्षद होत भयो क्योंकि जैसी जो भावना करे तैसी ईताको जन्म होय है ४६ चक्रवर्ती राजा युधिष्ठिर है सो यज्ञ के करानवारे ब्राह्मणनरु और वड़े वड़े संगमें बैठे हैं तिनकुं वड़ी दक्षिणा देत भये त्रिधिपूर्वक सप्तहो पूजन करि है यज्ञान्त स्नान करत भये ७७ योगेश्वरन के ईश्वर जो श्रीकृष्णचन्द्र है सो राजा युधिष्ठिर को यज्ञ सिद्ध करिके सुहृदन ने विनती करी तब कितनेहु मास अर्थान्त वास करत भये ४८ ता नीछे जाय देने स्नान करत भये ७७ योगेश्वरन के ईश्वर जो श्रीकृष्णचन्द्र है सो राजा युधिष्ठिर है तासू आज्ञा भागि के सपर्य देवकी के पुत्र अपनी स्त्रीन और मन्त्री कू सन्न लैके अपनी द्वारकापुरी में आगत भये ४९ नैकुण्ड के नसनवारे अजय विजय की इच्छा न करे ऐसी राजा युधिष्ठिर है तासू आज्ञा भागि के सपर्य देवकी के पुत्र अपनी स्त्रीन और मन्त्री कू सन्न लैके अपनी द्वारकापुरी में आगत भये ४९ नैकुण्ड के नसनवारे अजय विजय

धिया ॥ ध्यायंस्तन्मयतायातो भावो भवकारणम् ४६ अतिवर्गभ्यः समसदस्येभ्यो दक्षिणा विपुलामदात् ॥ सर्वान्मम ज्ञय विधिवच्चक्रेऽनभुयो कराद् ४७ साधयित्वा कर्तुं राज्ञः कृष्णो योगेश्वरश्च ॥ उवासक निचिन्मासान् सुहृद्भिरभिधाचिः ८८ ततोऽनुज्ञाप्य राजानम निच्छन्नमपीश्वरः ॥ ययौ स भार्य्यसा मातर्यः स्वपुं देवकीमुतः ४९ वर्णितं दुष्टाख्याने मया ते बहुधिरतरम् ॥ वैकुण्ठवासिनो जन्मविप्रशापात्पुनः पुनः ५० राजसूयावधृष्येन स्नानो राजा युधिष्ठिरः ॥ ब्रह्मदत्तसभामध्ये शुशुभे सुराडिव ५१ राज्ञा सभाजिनाः सर्वे सुरमानवलेचराः ॥ कृष्णं क्रतुश्च शंसन्तः स्वधापा नित्यमुदा ५२ दुर्ध्वो धनमृते पापं कलिं कुरुकुलामयम् ॥ योनसे हे श्रयं स्त्रीनां दृष्ट्वा पापमुत्स्यताम् ५३ यद्दं कीर्त्ये दिष्णोः कर्मैश्च दधधादिकम् ॥ राजमोक्षवितानं च सर्वपापैः प्रमुच्यते ५४ ॥ इति श्रीमद्भागवत महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे शिशुपालवधो नाम चतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ इति श्रुतं नेम

राजोवाच ॥ अजातशत्रोस्तं दृष्ट्वा राजसूयमहोदयम् ॥ सर्वमुमुदिर ब्रह्मदृष्टेः सपागताः १ दुर्ध्वो धनं वर्ज्जयित्वा राजानः सर्पयः सुराः ॥ इति श्रुतं नेम पार्षद है तिनको और सनहादिकन को शाप लगयो तातें वारंवार जन्म भयो यह कथा राजन् तुम्हारे आगे भैने बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन करी ५० राजसूय यज्ञ करिके पश्चात् स्नान जिनने पार्षद है तिनको और सनहादिकन को शाप लगयो तातें वारंवार जन्म भयो यह कथा राजन् तुम्हारे आगे भैने बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन करी ५० राजसूय यज्ञ करिके पश्चात् स्नान जिनने क्रियो ऐसे राजा युधिष्ठिर है सो ब्राह्मण और क्षत्रियन की सभा के मध्य में बैठे इन्द्र की तुल्य सुन्दर लगत भये ५१ राजा युधिष्ठिर ने सत्कार धिनको करयो ऐसे सम्पूर्ण देवता मनुष्य आकाश के विचरनवारे प्रमयण है ते श्रीकृष्णचन्द्र और यज्ञकी प्रशंसा करत वड़े आनन्द सू अर्पने २ लोकन कूं जात भये ५२ कारन के कुलकूं कलियुगलप कुलको पागी जो दुर्ध्वो धन है सो पाण्डु पुत्र महामन युधिष्ठिर की वड़ी लक्ष्मी कूं देखि है कुदत भयो ५३ शिशुपाल के वचनूं आदिले के जे श्रीकृष्ण के कर्म हैं और वीरसहजारा आठसौ राजा वन्य तें छुड़ाये युधिष्ठिर को यज्ञ करायो या मस्तक कूं जो पुरुष कहै यह सब पापन तें छुटि जाय है ५४ ॥ इति श्रीमद्भागवत महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे शिशुपालवधो नाम चतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ (पञ्चयुग्मसंति ते ये ज्ञानवृक्षसम्पन्नः ॥ सूर्याभनस्य चान्नान्यामा भक्षो ह्यश्विपाद् ? पचरत्तरेव अध्यायम् यज्ञान् स्नानम् सम्प्रप अन्नान्ति यं दक्षिणं क्षणं दुर्ध्वो धनका मानमहं वक्षित है ?)

अब राजा परीक्षित कहें हैं हे शुक्रदेवजी ! अज्ञातशत्रु राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ की वड़ी शोभा देखिके जे मनुष्यन के देव राजा आये ते सम्पूर्ण प्रसन्न होत भये ? और राजा ऋषि देवता आये हैं ते सम्पूर्ण दुर्योधन के बिना आनन्द कूं पावत भये यह भैंने तुम्हारे मुख से सुनी सो दुर्योधन के आनन्द क्यों न भयो याको कारण भरे आगे वर्णन करो २ ऋषीधर कहें हैं महात्मा तुम्हारे दादे जो राजा युधिष्ठिर हैं तिनके राजसूय यज्ञमें सब यज्ञा वस्तु प्रेषवश होय के सबही की दहल में युक्त होत भये ३ किसने कौन दहल लीनी सो कहें हैं भीमसेन कूं रसोई को अधिष्ठाता और दुर्योधन सर्व को मालिक क्योंकि यह हमकूं शत्रु जानिके द्रव्य बहुत उठावंगो तो यागें हमारो यश होयगो और सहदेव कूं आये गयेन की पूजा करनो नकुल सब सागग्रोन कूं लेआवें ४ गुरुनकी दहल अर्जुन करत भये श्रीकृष्णचन्द्र जो यज्ञमें आवें तिनके पांव धोइके पाँखि देई परासा परोसी में द्रौपदी प्रवृत्त भई बहो है मन जानो ऐसो कर्ण दान देवे की दहल में लगत भयो ५ युयुधान विकर्ण हादिक्य और जे विदुर कूं आदिलैके हैं ते और भूरिश्रवा कूं आदिलैके वाहीक के पुत्र हैं ते और जे सन्तर्दन कूं आदिलैके हैं ते बड़े यज्ञमें अनेकप्रकार के

गवंस्तत्रकारणमुच्यताम् २ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ पिनामहस्यतेयज्ञे राजसूयेमहात्मनः ॥ बान्धवाःपरिचर्यायान्तस्याऽऽगन्नेमवन्धनाः ३ भीमोमहानसाध्य क्षो धनाध्यक्षःसुर्योधनः ॥ सहदेवस्तुपूजार्थानंकुलोदव्यसाधने ४ गुरुशुश्रूषणेजिष्णुःकृष्णःपादावनेजने ॥ परिवेषणेद्रुपदजा कर्णेदानेमहामनाः ५ युयुधानोविकर्णश्चहादिक्योविदुरादयः ॥ बाह्मिकपुत्राभूयार्थायैचसन्तर्दनादयः ६ निरूपितामहायज्ञे नानाकर्मसुतेतदा ॥ प्रवर्तन्तेस्मराजेन्द्रराज्ञःप्रियचिकीर्षवः ७ ऋत्विक्कर्मदस्यबहुवित्तमुहत्तमेपुस्विष्टेपुसूतसमर्हणदक्षिणाभिः ॥ चैद्येचसात्वतपतेश्चरणंविष्टेचक्रुस्ततस्त्ववभृथस्नपनंद्युनद्याम् ८ मुदङ्गशङ्खपाणवधुन्धुर्यार्थानकगोमुवाः ॥ वादित्राणिविचित्राणि नेदुरावभृथोत्सवे ९ नर्तक्योननुतुहंष्टा गायकायूथशोऽजगुः ॥ वीणावेणुतलोद्वादस्ते पांसदिवसस्पृशत् १० चित्रध्वजपताकाशैरिभेन्द्रस्यन्दनार्वाभिः ॥ स्वलंकृतैर्भेदैर्भूपानिर्ययूरुममालिनः ११ यदृमुअयक्रास्वोजकुरुकैकयकोसलाः ॥ कम्पयन्तोभुवर्भैर्गजमानपुरःसराः १२ सदस्यत्विग्द्विजश्रेष्ठा ब्रह्मघोषेणभूयसाऽदेवर्षिपितृगन्धर्वस्तुष्टुः १३ स्वलंकृतानरानाथ्यैर्गन्ध

कर्मन्त में लगाय दिये ता ममय है राजान के इन्द्र राजा परीक्षित ! महाराज युधिष्ठिर के भिय करिवे के निमित्त समस्त प्रवृत्त होतभये ६ । ७ ऋत्विज और सभाके चैठनगरे तथा धिवेकी सुहृद् हैं ते सुन्दर मनोहर वचन गहने दक्षिणा इनसूं पूजन करैं और शिशुपाल कूं श्रीकृष्णचन्द्र के चरण की प्राप्ति होयचुकी ता पीछे स्वर्ग की नदी जो गङ्गाहै तागें यज्ञकी समाप्ति को स्नान करत भये ८ यज्ञधी समाप्तिकी जो उत्सव है तागें मुदङ्ग शङ्ख डोलक खंभरी नगारे नरसिंहा ये चित्रविचित्र वाजे वाजतभये ९ नाचनगरी हैं ते नाचत भई आनन्द जिनके भयो ऐसे गवैयान के मुँह के झुंड गावतभये तिनके वीणा वेणु हथेरी चजैं हैं तिनको शब्द स्वर्गपर्यन्त जातभयो १० चित्रविचित्र ज्वजा पताका जिनके ऊपर ढंकी ऐसे वड़े शायी और घोड़ान वै बैठिके सुवर्ण की मालान कूं पहिरिके प्यादेन कूं सद्र लौके राजा हैं ते निकसत भये ११ राजा युधिष्ठिर हैं आगे जिनके ऐसे जे सृजय काम्योज कुछ केरुय कोसज इन देशन के राजा हैं ते सेनान सूं पृथ्वी को

कंपावत जातभये १२ सभाके बैठनचारे और ऋत्विज तथा ब्राह्मण हैं ते चड़ी वेदकी ध्वनि करत जातभये और देवता ऋषि पितृ गन्धर्व ये पुष्पनकी वर्षा करिकै स्तुति करतभये १३ चन्दनमाला गहने वस्त्र इनमूं श्रृंगार जिनने भरयो तेसे ले स्त्री पुरुष हैं ते नानाप्रकार के रसन कूं लेपन और छिराव करतभये १४ तेल और मासन सुगन्ध के जल हन्दी केसर इत्यादिकनकूं स्त्री पुरुष नृ ते लेपन करत और छिरावत परस्पर विहार करतभये १५ या उत्सवके देखिये के निमित्त जैसे जैसे उत्तम विमाननमें बैठिकै देवागना निक्रमे हैं या प्रकार प्यादे जिनकी रक्षा करें ऐसी राजा युधिष्ठिर की रानी रथन में पालागीन में बैठिकै निकमत भई लाज भरी हंसनिमूं शोभायमान है मुन जिनके ममिया श्वशुरन के लरिका और सत्ता जिनकूं छिरिकै ऐसी राजा युधिष्ठिर की रानी सुन्दर लगत भई १६ भीजे हैं वस्त्र जिनके याही ते प्रकट हैं अंग कुच जवा जिनके और उत्कण्ठा मूं केश जिनके खुलि रहे तिनमूं फूल भरे ऐसी अ रानी हैं ते देवस्नकूं और सखानकूं भिजोवति भई सुन्दर विहारन मूं मलिन हैं बुद्धि जिनकी ऐसे कामी पुरुषनके पनकूं चलायमान करतभई १७ सुवर्ण की माला पहिरे सुन्दर वोड़ा जुने ऐसे जो रथहैं तामें बैठे राजा युधिष्ठिर

सम्भूषणाम्बरैः ॥ विलिम्पन्त्योऽग्निपिञ्चन्योविजहृविचैरैः १४ तेलगोसगन्धोदहरिद्रासान्द्रकुङ्कुमैः ॥ पुष्पिर्भलिताःप्रलिम्पन्त्योविजहृवर्गयोपिनः १५ गुमानुभिर्निर्गमस्तुपलब्धुमेतदेवोयथादिविविमानवैर्नृदेव्यः ॥ तामातुलेयसविभिःपरिपच्यमानाः सश्रीडहासविकसद्दनाविरैजुः १६ तादेवसानुत सखीन्सिपिचुर्दृतीभिः क्लिन्नाम्बगविघृतगात्रकुचोरुमध्याः ॥ औत्सुक्यमुक्ककशब्दव्यवमानमालयाः शोभंदधुर्मलधियांलचिरैर्विहारैः १७ समस्राह्यमारुढः सदश्वंरुक्ममालिनम् ॥ व्यरोचनस्वपत्नीभिः क्रियाभिःकतुराडिच १८ पत्नीसंयादावभृथैश्चरित्वातेतमृत्विजः ॥ आचान्तंस्नापयाश्चकुर्गङ्गायांसहकृष्णया १९ देवद्वन्द्वभयोनेदुर्नन्दुभिभिःसमम् ॥ मुमुक्षुःपुष्पवर्षाणि देवर्षिपितृमानवाः २० सस्तुस्नत्रततःसर्व्वेवर्णाश्रमयुनानराः ॥ महापातक्यपि यतःसद्योमुच्येतकिल्बिषात् २१ अथराजाऽहतेक्षौमे परिधायस्मलंकृतः ॥ ऋत्विक्प्रमदस्यनिप्रादीनानर्चाभरणाम्बरैःस्वन्नुज्ञातिलुपाचमित्रसुहृदोऽन्यांश्च सर्व्वशः ॥ अभीक्ष्णंपूजयामास नारायणपरोनृपः २३ सर्व्वेजनाःसुरुचोमणिःकुण्डलसगुष्णपिम्बश्च रुडकुलमहाधर्म्यहाराः ॥ नार्यश्चकुण्डलयुगालक

हैं सो जैसे क्रियानसहित यज्ञ सुन्दर लगे है या प्रकार स्त्रीन सहित सुन्दर लगतभये १८ ऋत्विज हैं ते पत्नीसंयात् और आयुष्मन् नाम करिकै जे दो यज्ञ हैं तिनकूं करिके गंगामें द्रौणदी सहित आचमन जिनने क्रियो ऐसे राजा युधिष्ठिरकूं स्नान करावत भये १९ देवतानके नगारे तथा मनुष्यनके नगारे उगतभये देवता ऋषि पितृ मनुष्य हैं ते फूलनकी वर्षा करतभये २० वर्षाशुक्त जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये चारोवर्ण और ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी ये चार आश्रम ता गंगामें सन स्नान करतभये उड़ो पापी पुरुष गामें स्नान करिकै शीघ्र पाप तें छूटियात है २१ स्नान करे पीछे राजा युधिष्ठिर नगीन रेशमी घोड़ी उपरना पहिरिकै भलेप्रकार शोभायमान होयके ऋत्विज और सभाके बैठनचारे हैं तिन और ब्राह्मणादिक हैं तिन गहने और वस्त्रन मूं पूजन करतभये २२ नारायणको है आश्रय जिनने ऐसे राजा युधिष्ठिर हैं सो बन्धु जाति के राजा मित्र सुहृद और सम्पूर्ण हैं तिन सबको वारंवार पूजन करतभये २३ देवतान की तुल्य है

क्रान्ति जिनकी और पशियानके गडाऊ कुण्डल भाला पगड़ी जामा पटुका चड़े मोलके द्वार इनके पहिरे जे पुरुष हैं ते और दोनों कुण्डल अलकनके समूह जिन करि है शोभायमान हैं मुत्त जिनके ऐसी स्त्री हैं ते सुवर्ण की करघनी पहिरि हैं सब सुन्दर लगत भई २४ हे राजन् परीक्षित् ! स्नान करे पीछे राजा युधिष्ठिरने पूजन जिनको कखो चड़े हैं शील सभाव जिनके ऐसे श्रुतिवज और सभा के बैठन गये तथा वेद के पढ़न वारे हैं ते और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र हैं ते और राजा आर्य हैं ते २५ और देवता श्रुति पिठ हैं ते और समस्त प्राणी तथा दहलु आन सहिन लोकपाल हैं ते राजा युधिष्ठिर तें पूजन करायकें आश्रा मागिकें अपने अपने धरनकें जात भये २६ हरि धगवनके भक्तन में राजर्षि जो राजा युधिष्ठिर हैं तिनके राजसूय यज्ञकी जो बड़ी शोभा है ताकी प्रशंसा करत करत नहीं तुम होत भये जैसे मनुष्य अपन पीयत पीयत नहीं तुम होय २७ सुहृद् सम्बन्धी नन्धु और श्रीकृष्णचन्द्र इनके मिलिखिये में कायर है मन जाको ऐसी राजा युधिष्ठिर प्रेम करि है राखत भयो २८ हे राजन् परीक्षित् ! तिन राजा युधिष्ठिरको प्रिय करिवे कूं माम्ब है आदिमें जिनके ऐसे पुत्र हैं तिन और यादवनमें शूरीर हैं तिन द्वारकामें भिजायकें आप इन्द्रप्रस्थ में रहत भये २९

बृन्दजुष्टवक्रश्रियः कनकमेखलया विरेजुः २४ अर्थात् विजोगहाशीलाः सद्रस्या ब्रह्मवादिनः ॥ ब्रह्मक्षत्रियविदूशद्वारा जानोये समागताः २५ देवर्षिपितृभूता नि लोकपालाः सहानुगाः ॥ पूजितास्नमनुज्ञाण स्वधामानिययुर्नृप २६ हरिदासस्य राजर्षे राजसूयमहोदयम् ॥ नैवात्प्यनप्रशंसन्तः पितृवर्मर्योऽमृतं यथा २७ ततो युधिष्ठिर राजा सुहृत्समन्विधान्धवान् ॥ प्रेम्णानिमासयामा मरुणं च त्यागकातरः २८ भगवानपितत्राङ्गन्यवासी तत्प्रियं करः ॥ प्रस्थाप्य यद्वीरांश्च साम्नादींश्च कुशस्थलीम् २९ इत्थं राजा धर्मसुतो गनोऽथ गहाणवम् ॥ सुदुस्तरं समुत्तीर्य कृष्णेनऽऽसीदन्तः पुरेतस्य वीक्ष्य दुर्योधनः श्रयम् ॥ अतः पद्मराजसूयस्य महित्वं चाच्युतात्मनः ३० यस्मिन्नेन्द्रादिति जेन्द्रसुरेन्द्रलक्ष्मीनानां विभान्ति किल विश्वसृजो पक्लृप्ताः ॥ ताभिः पतीन्नुप दगजसुनोपतस्थे यस्या विपक्लृदयः कुराडप्यत् ३१ यस्मिन्सन् दामयुतेर्महिषीसहस्रं श्रोणी भरेण शनकैः कणदङ्घ्रि शोभम् ॥ मध्ये सुचारु कुचकुङ्कुमशोणहारं श्रीमन्मुखं च लकुण्डलकुन्तलादयम् ३२ सभायां मयक्लृप्तायाः कापि धर्मसुतोऽधिराट् ॥ दृत्तो नु जैर्वेन्धुभिश्च कृष्णेनापि स्वचक्षुषा ३४ आसीनः

धर्म के पुत्र जो राजा युधिष्ठिर हैं सो अतिशय करिकें तखो न नाय दे सो जो मनोरथरूपी चढ़े समुद्र है ताय श्रीकृष्णचन्द्र की सहायता तें तारिकें सब खेद दुरि होत भयो ३० एक समय पुरके मध्यमें राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ की शोभा देखिकें और श्रीकृष्णचन्द्रमें है मन जाको ऐसे राजा युधिष्ठिरकी महत्ता देखि है और राजा युधिष्ठिर के अन्तःपुरमें मय करीगर ने बनाई जे अनेक प्रकार की राजानकी असुरन की देवतानकी विभूति हैं तिन सहित कुण्डल राजा की पुत्री द्रौपदी है सो अपने पतिको सेवन करत भई और जा द्रौपदी में है आसक्त मन जाको ऐसी कौरवनको राजा दुर्योधन हैं सो ताकें पावन भयो ३१ । ३२ राजा युधिष्ठिर के अन्तःपुरमें ता समय मधुपति श्रीकृष्णचन्द्र की रागीन के समूहको वर्णन करे हैं कटिके बोझते चरणन में हल्ले होले वर्म जे नूपुर तिनमें जो भायमान हैं और मध्यमें अत्यन्त सुन्दर कुचनमें जो केसर ताम्रं अरुण जिनके हार हैं और चलायमान कुण्डल और केशन करिकें युक्त शोभायमान जिन

के दुग ऐसी रानीन के समूह शोभा कूँ प्राप्त होतभये ३३ मय दैत्यकी निर्माण करी जो सभा है तामें क्राह समय अपने आज्ञाकारी भय्या वधुन सहित और हित अहित के जाननधारे जे श्री कृष्णचन्द्र हैं तिन सहित धर्म पुत्र चक्रार्चो राजा युधिष्ठिर हैं ते ३४ साक्षात् सिंहासन पै जैसे इन्द्र विराजमान होय ऐसे सुवर्ण के सिंहासन पै विराजमान होय के राज्यकी शोभा जिनकूं सेन करै और वन्द्यजन जिनकी स्तुति करै ऐसे शोभायमान होतभये ३५ दे राजन् परीक्षित ! ता समय भयानकूं सङ्ग लै के किरिट धारण करे माला पहरे हाथ में तरवार लिये क्रोध करिके द्वारपाल गणन कूं डाटतो अभिमानी दुर्योधन आवत भयो ३६ भयदैत्यकी वनाई सभा में शङ्कूं सूते में जल दीलै और जल में सूजो दीलै ऐसी मायाचित जो सभा है तामें भयदैत्यकी मायासू मोहित होय के दुर्योधन अथ सूँ सूँ जल मानिके जापा उठावत भयो और सूखो जानि जल में गिरतभयो ३७ हे राजन् परीक्षित ! दुर्योधन कूँ देखिके भीमसेन हँसत भयो स्त्री जे हैं ते हँसत भई और राजा युधिष्ठिर ने मनेकरे तथापि श्रीकृष्णचन्द्र ने सनकारदिये तासूं और भी सन राजा हँसतभये ३८ हास्य देखिके भई है लाज जाकूं नीचे कां है मुख जाकूं ऐसी दुर्योधन क्रोध करिके सभामें ते

काञ्चनेसाक्षादासनेमघवानिव ॥ पारमेष्ठ्यश्रियाजुष्टः स्तूयमानश्चवन्दिभिः ३५ तत्रदुर्योधनोमानि परीतो भ्रातृभिर्भृप ॥ किरिटमालीन्यविशदग्निह स्तःक्षिपचरुपा ३६ स्थलेऽभ्यशृङ्गाद्वस्त्रान्तं जलंगतास्थलेऽपतत् ॥ जलेचश्चलवद्भ्रान्त्या मयमायाविमोहितः ३७ जहासभीमस्तंहद्वा स्त्रियोनुपतयोऽपरे ॥ निवार्यमाणोऽप्यङ्गपङ्ग राज्ञाकृष्णानुमोदिताः ३८ सर्वाडितोऽवाग्मदनोरुपाज्वलन् निष्क्रम्यतूष्णीं प्रययौ गजाह्वयम् ॥ हाहेति शब्दः सुमहानभूत्सताम जातशत्रुर्भिगनाइवाभवत् ॥ वभूवतूष्णीं भगवान्भुयोभं समुज्जिहवीर्ध्रमतिस्मयद्दृशा ३९ एतत्तेऽभिहितं राजन् प्रत्युष्टोऽहमिह त्वया ॥ सुयोधनस्य दौ सारम् राजसूये महाकनौ ४० ॥ इति श्रीमद्भगवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे दुर्योधनभङ्गो नाम पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

श्रीशुक्र उवाच ॥ अथान्यदपि कृष्णस्य शृणु कर्मजुं नृप ॥ क्रीडानशरीरस्य यथासौ भवति हितः १ शिशु गालसखः शाल्मोक्षो किमशुद्धाह आगतः ॥

निस्सिकै चुगचुगतो हस्तिनापुर कूं जातभयो साधुन के बड़ो हाहाकार शब्द होतभयो और अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर उदास होतभयो और जिन दृष्टि सूँ सूँ जल और जल में सूतो यह भ्रमभयो पृथ्वी को वोफ उतारयो चाहै ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो भीमादिकन को हास्य और दुर्योधन को अपमान करिके चुप होतभये यही भारत को बीज है ३९ हे राजन् परीक्षित ! राजसूय जो बड़ो यज्ञ है तामें दुर्योधन कूँ कुन कैसे भयो यह तुमने प्रश्न क्यो ताको उत्तर तुम्हारे सम्मुख वर्णन करो ४० इति श्रीमन्महाभगवतार्थकृपिण्यादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे दुर्योधनभङ्गो नाम पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

( तत पदसप्ततितमेष्टिणशाल्मवद्वाच्ये ॥ युधमद्व्यप्रहारेण रणान्धप्रचुम्बननिर्गमः १ सम्पाद्य र्मभराजस्य राजसूयमहोदयम् ॥ निहत्यसौ भराजादीनयोपारयदच्युतः २ छिद्रतर्जने अश्रयामे यादव शीर शाल्व के भारी युद्धमें छुषान् की गदा की चोट सों युद्ध सें मरुन की को निकलनो भयो है ? कृष्णजी युधिष्ठिर की राजसूय के बड़े उदय को सम्पादन कर सौ भराजादिकों को नाश कर



तिस पीछे शान्त होजातेभये २) अब श्रीशुभदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित् ! या के पीछे क्रीड़ाकरिकै मनुष्यशरीर धारण कियो ऐरो श्रीकृष्णचन्द्र के औरहू जो अद्भुत कर्म है जैसे सौभ विमान वो पति शाल्व माखो ताप श्रवण करो १ शिशुपाल को मित्र शाल्व रुक्मिणी के विवाह में आयो तब संग्राम में यादवन ने जीति लियो ताही प्रकार जरासन्धादिक राजा हैं ते जीति लिये २ सब राजान के श्रवण करत राजा शाल्व प्रतिज्ञा करतभयो कि समस्त पृथ्वीकूं यादवकुल रहित करुगो अब तुम सब भोरे पराक्रम कूं देखो ३ हे राजन् मूढ़ जो शाल्व है सो प्रतिज्ञा करिकै देवप्रभु पशुपति जो शिवजी हैं तिनको नित्य नित्य धूलिकी मुट्ठी फाकिकै आराधन करत भयो ४ शीघ्र तुष्ट होयें ऐसे भी शिवजी हैं परञ्च श्रीकृष्णको देखी जो शाल्व है ताहूँ वरदेवो निष्फल मानिकै शीघ्र प्रकट न भये किन्तु शरण आयो जो शाल्व है तासूं एक वर्ष के पश्चात् यह कहत भये कि तू वर मांग ५ ता समय देयता असुर मनुष्य गन्धर्व सत्त्व राजस इनसू भेदन न होय और जरा कूं इच्छा होय तरा पहुँचावै यादवन कूं भय को देनचरो ऐसो विमानदेव यह वर मांगत भयो ६ तैसोही होयगो ऐसे प्रतिज्ञा करिकै शिवजी ने आज्ञा जाहूँ दीनी ऐसो

यद्युगिर्निजितःसङ्ख्ये जरासन्धादयस्तथा २ शाल्वःप्रतिज्ञामकरोच्च्युवतंसर्वभूजाम् ॥ अयादवीक्ष्मांकरिष्ये पौरुषंममपश्यत ३ इतिमूढःप्रतिज्ञाय देवंपशुपतिंप्रभुम् ॥ आराधयामासतृप पांसुमुष्टिसकृदग्रसत् ४ संवत्सरान्तेभगवानाशुतोपउमापतिः ॥ वरेणच्छन्दयामास शाल्वंशरणयागतञ्च ५ देना सुरमनुष्याणां गन्धर्वोऽगरक्षसाम् ॥ अभेद्यंकाप्रगंवेत्रे सयानंदृष्णिभीपणम् ६ तथेतिगिरिशादिष्टोभयःपरपुञ्जयः ॥ पुरंनिर्भग्यशाल्वाय प्रादात्सौभग यस्मयम् ७ सलब्ध्वाकामंगयानं तमोधामदुरामदम् ॥ यथोद्धास्वतीशाल्वोवैरंघ्रिणकृन्स्मान् ८ निरुध्यसेनयाशाल्वो महत्याभारतर्पभ ॥ पुरीत्रमञ्जोप वनान्युद्यानानिचसर्वशः ९ सगोपुराणिद्वाराणि प्रासादादालतोलिकाः ॥ विहारान्सविमानाश्रयान्निपेतुःशस्त्रद्वयः १० शिलादुमाराशानयःसर्पा आसारार्क्षराः ॥ प्रचण्डश्चक्रवातोऽभूदजसाञ्छ्वादितादिशः ११ इत्यर्घ्यमानासौभेन कृष्णस्यनगरीभृशम् ॥ नाभ्यपद्यतशंराजंस्त्रिपुरेणयथामही १२ प्रद्युम्नोभगवान्दीक्ष्यवाध्यमानानिजाःपजाः ॥ माभेष्टस्यभ्यधाद्वीरोथारूढोमहायशः १३ सात्यकिश्चारुदेष्णश्च साम्बोऽद्भुरःसहातुजः ॥ हार्दिकयो

जो मयदैत्य है सो वैरीन के पुरकूं जीतनचरो सौभ जाको नाम लोहेको वनायो जो विमानहै ताय शाल्व कूं देत भयो ७ मन चाहै तहां चलयो जाय अन्धकार जागें छाव रहो कोई जाहूँ पाइ न सकै ऐसो जो विमान है ताय पाइ नै कृष्णेने करयो जो वैरहै ताको स्मरण करिकै द्वारकाको जात भयो ८ हे राजन् परीक्षित् ! शाल्वहै सो वही सेना करिकै द्वारकापुरी कूचरिहै सम्पूर्ण जे फूलन के वाग उद्यान हैं तिनैं तोरत भयो ९ और पुर के दरवाजे हैं तिनैं और महल अट्टा अट्टारी भीतिस्थान है तिन सबकूं तोरत भयो और विमान में तें शस्त्रकी वर्षा होतिभई १० और शिला वृक्ष विजुली हैं ते तथा सर्प और जलकी घारा धूरि ये गिरतभये वड़ीपवन चली धूरिस् सगुणीदिशा आच्छादित होय गई ११ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार सौभ विमानसू पीड़ित जो श्रीकृष्णचन्द्र की पुरी द्वारका है सो जैसे विपुलदैत्य करिकै पृथ्वी कूं सुख प्राप्त न भयो ऐसे सुखकूं न पावति भई १२ वड़ो है यश विनको ऐसे महारथी जो भगवान् प्रमुन्न

हैं सो अपनी प्रजाकु दुःखित देखिके मति थयकरो या प्रहार कहिके सम्मुख आवतभये १३ और सात्यके चारुदेवण साम्ब और छोटे भय्या समेत अक्षर तथा होदिक्य भानुविन्द गद शुक्र सो-  
रण और वदे हैं धनुष जिनके ऐसे मे रथन के युयपन के यथन के पालन करनचारे हैं ते कवच पहिरिके रक्षित होइके रथ हाथी घोडा प्यादेन कूं सफलके निकसत भये १४ । १५ ताके पीछे  
असुरनको जैसे देवतान के संग युद्ध भयो हो तेसे रोमाश्च जामे ठाढ़ होइ आवें ऐसे भयानक युद्ध शाल्व की ओरकेन को यादवन के संग होत भयो १६ जैसे रात्रि के अन्धकार कूं सूर्य दूरि  
करि देइहैं ऐसे रुक्मिणी के पुत्र जो मधुनजी हैं सो सौभ विमान के पति शाल्व की मायानकूं दिव्य असुरनूं ज्ञानभर में नाश करत भये १७ सोने के पुंख लोहेकी भालि छोटी २ गाठि जिन  
में ऐसे पचीस बाणन करिके शाल्व की सेनान को पालन कानचारी है ताव वेधतभये १८ मधुनजी सौ बाण शाल्वके और एक एक बाण प्यादेन के तथा दश दश बाण सारथीन के और तीन  
तीन बाण मोडा हाथीन के मारत भये १९ महात्मा मधुन को वड़ो अहुत पराक्रम देखिके अपनी पराई सेना में जे सय योद्धा हैं ते मधुनजी की मंशसा करत भये २० मयदैत्य को निर्माण

भानुविन्दश्च गदश्चशुकसारणी १४ अपरेचमहेष्वासारथयूथयथाः ॥ निर्दुर्दशितागुसारथेभाश्चपदातिभिः १५ ततःप्रवदुतेयुद्धं शाल्वानांयदुभिरस  
ह ॥ यथासुराणांविबुधैस्तुमुलंगोरुमहर्षणम् १६ ताश्चसौभपनेर्माया दिव्यास्त्रैरुक्मिणीमुतः ॥ क्षणेननाशयामास नैशंतमइवोष्णमुः १७ विव्याधपञ्च  
विशत्या स्वर्णपुष्करयोमुखैः ॥ शाल्वस्यध्वजिनीपालं शूरैःसन्नतपर्वभिः १८ शतेनाताडयन्धाल्वमेकैकेनास्यसैनिकान् ॥ दशभिर्दशभिर्नैतृन्वाहना  
नित्रिभिस्त्रिभिः १९ तदद्भुतंगदहर्म्म प्रद्युम्नस्यमहारमनः ॥ दृष्टातंपूजयामासुःसर्वेस्वपरभैनिकाः २० बहुरूपैकरूपंतदृश्यतेनचदृश्यते ॥ मायामयं  
यकृतन्दुर्विभाव्यंपरैरभूत् २१ क्वचिद्भूमौक्वचिद्वयोमि गिरिसूर्द्धिंजलेक्वचित् ॥ अलातचक्रवदभ्राम्यत्सौभंतदुःखस्थितम् २२ यत्रयत्रोपलभ्येत ससौ  
भःसहसैनिकः ॥ शाल्वस्नतस्ततोऽमुश्चञ्छरान्साततयूथपाः २३ शूरैरग्न्यर्क्षसंस्पर्शैराशीविपहुरासदैः ॥ पीडयमानपुरानीकः शाल्वोऽमुद्यत्परैरि  
तैः २४ शाल्वानीकपशस्त्रौर्ध्वैर्घृणिणवीराभृशार्दिताः ॥ नतत्यज्जूरणंस्वंलोकदयजिगीपत्रः २५ शाल्वामातोद्युमान्नाम प्रद्युम्नंप्राक्प्रपीडितः ॥ आ  
क्रथो मायामय जो विमानहै ताके कभजं बहुत रूप होय जाय हैं कभजं दीखै है और कभजं नहीं दिखाई देइ है या प्रकार शत्रुन के विचार में न आवतभयो २१  
कभजं वह विमान पृथ्वी में आय जाय है कभजं आकाश में जाय है कभजं पर्वत के ऊपर जाय है कभजं जल में जाय है ऐसे सुलगती लकड़ी की तुल्य दुरवस्थित जो विमान है सो या प्रकार  
चलायमान होत भयो २२ विमानसहित सेनासहित जहा जहा शाल्व दिखाई देय है तहां तहां यादवन में मुख्य हैं ते बाणनकूं छोड़त भये २३ अग्नि सूर्यकी तुल्य गरम है सूर्य जिनको त्रिप  
की तुल्य सहारे न जाय ऐसे चैरीन ने चलाये बाण हैं तिनमूं पीडित विमान और सेना जाकी ऐसो शाल्व मोहकूं पायत भयो २४ शाल्व की सेना के शस्त्रन त अत्यन्त पीडित और  
यह लोक परलोक के जीतिवे की इच्छा जिनकूं लुगिरही ऐसे जे यादवन में शूरवीर हैं ते अपनी अपनी युद्धभूमिकूं नहीं त्यागनभये २५ मधुन ने पाईले गदा जो पारी तामूं पीडित भयो ऐसो

जो शाल्व को मन्त्री बली नाम करिकै युमान है सो लोहे की बड़ी गदा छाती में मारिकै पुकारतयो २६ धर्म को जाननवारी जो श्रीकृष्णचन्द्र को डारुक्त रथवान् ताको पुत्र जो मधुञ्जी को रथवान् है सो गदा करिकै दूरी है छाती जिनकी ऐसे वैरीन के दण्ड को देनवारे जो मधुञ्जै तिन रण में तें लेजात भयो २७ दो बड़ी में भयो है चेत जिनकूं ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र के पुत्र मधुञ्जै सो रथवान् तें बोलत भये अहो रथवान् ! तूं रण में तें यो कू भजायकै ले आयो यह बुरो कर्म क्रियो २८ व्याकुल है चित्त जाको ऐसो रथवान् जो तू है ताने कलङ्क लगायो ऐसो मैं हूँ ता विना यादवन के कुल में जाने जन्मलियो वह रण में तें भाज्यो नहीं सुन्यो गयो है अब मोहीं कूं भजाय लायो २९ धर्मरूप जो रण है तामें तें भाजिकै आयो कुशल जातें पूछी ऐसो जो मैं हूँ सो पिता श्रीकृष्ण बलदेव के पास जायकै कहा अपनी कुशल कहूँ ३० भयान की खी जे भाभी हैं ते हे वीर ! युद्ध में तें शत्रुन के सम्मुख तें नपुसक होयकै कैसे भाजि आये हमसूं तो कहो ऐसे हैसिकै मोसूं कहेंगी ३१ ऐसे श्रमण करिकै रथवान् बोल्यो हे चिरञ्जीव ! हे समर्थ ! धर्मको ज्ञाता जो मैं हूँ सो तुमकूं रण में तें निहासि लायो धर्म मेंही कलौ है कि रथ के बैठनवारे कूं कष्ट साधगदयामौ न्या व्याहत्यन्यनदद्वली २६ मधुमन्गदयाशीर्णवस्त्रस्थलमरिन्दमम् ॥ अपोवाहरणात्सूतो धर्मविहारुकात्मजः २७ लब्धसंज्ञो मुहूर्तेन कर्षिणः साराथिमववीत् ॥ अहो असाध्विदसूतयद्रणान्मेऽपसर्पणम् २८ नयदूनां कुले जातः श्रूयते रणविज्युतः ॥ विनामल्लीविनिचेन सूतेन प्रासकिल्विपात् २९ किञ्चिदक्ष्येऽभिसङ्गम्यपितरो रामके शवौ ॥ युद्धात्सम्यगपक्कान्तः पृष्टस्तत्राऽऽत्मनः क्षमस्व ३० व्यक्ते मे कथयिष्यन्ति हसन्त्यो आत्तु जामय ॥ क्लेशं कथं कथं वीर तवान्यैः कथप्रतां मुधे ३१ साराथिरुवाच ॥ धर्मविजानताऽऽयुष्मन्कृतमेतन्मया विभो ॥ मृतः कृच्छ्रगतं रक्षेदथिनं साराथिथी ३२ एताद्विदित्वा तु भयान्मयाऽपो वाहितोरणात् ॥ उपस्पृष्टः परेणेति मूर्च्छितो गदया हतः ३३ इति श्रीगद्गागवत महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तराखण्डे पट्टमसर्गोऽध्यायः ७६ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ स उपस्पृष्टः स खिलं दंशितो धृतकाम्बुकः ॥ नयमांछु मृतः पार्श्वे वीरस्य त्याहाराथिम् १ विधमन्तं स्वमै न्यानि द्युमन्तरुकिमणी सुतः ॥ प्रतिहत्य प्रत्यविध्यन्नाराचैरष्टभिः स्वयम् २ चतुर्भिश्च तुरोवाहान् सूते मे केन चाहनत् ॥ द्वाभ्यां धनुश्चक्रे तु शरैश्च शरैश्चान्येन वै शिरः ३ गदसात्यक्रिसाश्चाद्याजघ्नुः आयकै उपस्थितहोय तौ साराथी अर्थात् रथवान् रत्नाकरै और साराथी के ऊपर आयके मष्टहोय तौ बैठनवारी रत्नाकरै ३२ शत्रुने गदा जो मारी तासूं तुमकूं पीड़ा गई और मूर्च्छा आई गई सूं धर्म जानिकै तुमकूं रण में तें निहासि लायो ३३ इति श्रीमद्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे उत्तराखण्डे पट्टमसर्गोऽध्यायः ७६ ॥ \* ॥ ३४ ॥ ॥

( सप्तपुरुषमहात्म्येनानामायाविचक्षणः ॥ कृपेनागत्य शाल्वस्तु हतः सौभक्षश्च शिखितम् १ सतहत्तरवै आध्याय में कृष्णजी ने आकर अनेक प्रकार की मायाओं में निपुण शाल्वको मारा और विमान को चूर्ण कर डाला ? ) अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं राजन् परीक्षित ! मधुमन्जी हाथ पात्र धोइकै कवचकूं पहिरिकै धनुषकूं हाथ में लैके वीर जो युमान है ताके पास मोकूं लेवल यह रथवान् तें कहत भये १ रुक्मिणी के पुत्र मधुमन्जी अपनी सेना के योद्धानकूं मारै ऐसे जो युमान है ताव घेरिकै आठ बाणनसूं मारत भये २ अब आठ बाणनकूं पृथक् पृथक् करेहैं चार बाणनसूं चारों

योद्धानकं और एक बाणभू रथवानकू मारतभये दो बाण करिके धनुष और ध्वजाकू काटत भये और एक बाणसू युमान को शिर काटत भये ३ गद सात्यकि साम्बद्ध आदिलै के जे यादव है ते विमान को पालन करनमारो जो शाल्व है ताकी सेना कूं मारत भये कटी है नारि जिनकी ऐसे सम्पूर्ण विमानके बैठनवारै हैं ते समुद्र में गिरत भये ४ या प्रकार यादवन को और शाल्व की और तेन को जो परस्पर युद्ध भयो ताकूं सुनिकै व्याकुलता होय आवै ऐसो भयानक युद्ध सत्ताईस दिन होतभयो ५ अब श्रीशुद्धदेवजी कहे हैं ऐ राजन् परीक्षित ! धर्मके पुत्र जो राजा युधिष्ठिर हैं तिनने तुलापे ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो इन्द्रप्रस्थमें गये राजसूययज्ञ होय चुक्यो और शिशुपाल मारि चुक्यो ६ ता पीछे कौरवमें जे दृष्ट हैं तिनमें आज्ञा मागिके मुनिनदू आज्ञा मागिके और पुत्रन समेत कुन्ती मूं आज्ञा मागिके मार्ग में कुत्तिसत शकुन देखत द्वारकापुरी में आवत भये ७ खोट शकुननकू देखिके कहत भये कि वड़े भयया बलदेवजी सहित मैं यहा यज्ञमें आयो हूं शिशु पाल की ओरके राजा निश्चय मेरी पुरी कूं मारंगे ८ अपने यादवन को कष्ट देखिके बलदेवजीकू द्वारकापुरी की रक्षा करिने के निमित्त देखिके विमान और शाल्व कूं देखिके केशव भगवान्

सौ भपतेबैलम् ॥ पेतुः समुद्रसौ भेयाः सर्वे संखिन्नकन्धाः ४ एवं यदूनां शाल्वानां निधनतामि तेतरम् ॥ युद्धं त्रिणवरात्रं तदधूतमुलमुल्यणम् ५ इन्द्रप्रसंगतः कृष्ण आहूतो धर्ममूनुना ॥ राजसूयेऽथनिर्वृत्तेशिशुपाले च संस्थिते ६ कुरुवृद्धाननुज्ञाप्य मुनींश्च समुतां पृथाय ॥ निमित्तान्यतिघोराणि पश्यन् व्हा स्वतीययौ ७ आहवाहमिहायात आर्घ्यमिथाभि सङ्गतः ॥ राजन्माश्चैव पक्षीयाननंहनुः पुरीमम ८ वीक्ष्य तरुदं न स्वानां निरूप्य पुररक्षणम् ॥ सौभं च शाल्वराजं च दारुप्रं प्राह केशवः ९ रथं प्रापय मे गूत शाल्वस्यान्तिकमाशु वै ॥ सम्भ्रमस्तेन कर्त्तव्यो मायावीसौ भरोडयम् १० इत्युक्त्वा चोदयामास रथमास्थाय दारुक्रः ॥ विशन्तं ददृशुः सर्वे स्वपरे चारुणानुजम् ११ शाल्वश्च कृष्णमालोक्य हतप्राय बलेश्वरः ॥ प्राह स्तृष्णमूताय शक्तिं भीमरवांसधु १२ तामापतन्ती नभसि महोल्काभिवरंहसा ॥ मासयन्ती दिशः शौरिः सायकैः शतधा च्छिनत् १३ तंच पण्डशभिर्विद्धा वाणैः सौभं च वैभ्रमम् ॥ अविध्य च्छरा नन्दो हः खंसूर्यद्वरशिभिः १४ शाल्वः शौरिरेतदोः सव्यं सशार्ङ्गशार्ङ्गवन्धनः ॥ विभेदन्यपतच्छराऽर्जुणासीत्तदुत्तम् १५ हाहा क्रोरो मदाना

श्रीकृष्णचन्द्र रथवान् ते बोलत भये ६ हे रथवान् ! शीघ्र भरे रथकूं शाल्वके समीप प्राप्त कर या विमान को राजा जो शाल्व है सो बड़े मायावी है तू सम्भ्रम मत कर १० या मत्तार जातें कही ऐसो जो रथवान् है सो रथपै बैठिके हाकत भयो अपनी पराई सेना में हैं ते रथकी बन्ना में अरुण को छोड़ो भय्या गरुड है ताव देखत भये ११ घृतक की तुल्य सेना को राजा जो शाल्व है सो युद्ध में श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिके उनके रथवान् के ऊपर भयानक है शब्द जायें ऐसी बरखी कूं फकत भयो १२ दिशान कूं पकाय करत वड़े तारे की तुल्य आकाश में चली आवै ऐसी जो बरखी है ताको कृष्णजी बाणन करिके सौ खण्ड करत भये १३ शाल्वकूं सोलह बाणनदू वैधिके आकाशमार्ग में भ्रमण करै जो विमान है ताव जैसे सूर्य तिरगुन करिके आकाश कूं वेग ऐसे बाणन के समूह करिके नेम भये १४ शार्ङ्गमनुष है विषमान जिनके ऐसे जे शौरि श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी धनुषसहित जो बाणमुत्रा है ताव शाल्व वैधत भयो तन श्रीकृष्ण के हाथ तें धनुष गिरत

भयो यह वड़ो आश्चर्य होतभयो १५ हाथमें तें मनुष्य कूं गिरयो देखिकै प्राणीन के वड़ो होहाकार शब्द होत भयो औ विमान को राजा जो शाल्व है सो ऊँचे स्वरसू गजिकै श्रीकृष्णचन्द्र तें यह कहत भयो १६ कि हे मूढ़ ! हमारो सखा भय्या जो शिशुपाल है ताकी स्त्री कूं जो तू देखतही हरि लायो और सभाके बीच असावधान मेरो सखा शिशुपाल तैंने मारयो १७ तो कूं काहु ने जीत्यो नहीं है ऐसे अपनपे कूं माने जो तू है सो मेरे सम्मुख ठाढ़ो रहैगो तो यहा आदैगो नहीं किन्तु तीक्ष्ण वाणनसू मृत्युकू पहुँचाय देउंगो १८ अब श्रीकृष्ण कहे हैं हे मूर्ख ! तू दृष्टा कहे है निकटही मृत्यु है ताय नहीं देखे है शूरवीर हैं ते अपनो पुरुषार्थ दिलावैं हैं और जे बहुत बोलें हैं ते कछु पराक्रम नहीं करें हैं १९ या प्रकार कहिकै श्रीकृष्ण भगवान् है सो बड़े बेग की जो गदा है ताय क्रोध करिकै कण्ठ के नीचे के हाड़ में मारत भये तब शाल्व रुगिर को बपन करत कापतभयो २० गदा चले पीछे शाल्व छियत भयो ताके दो घड़ी पीछे एक पुरुष आयके शिर छुँकाय सीङ्गितानान्तत्रपश्यताम् ॥ विनद्वामौ भराडूचैरिदमाहजनार्दनम् १६ यत्रयामूढनः सख्युर्भ्रातुर्भार्याहृतेक्षनाम् ॥ प्रमत्तः ससभामध्ये त्रयाव्यापा दितः सत्वा १७ तदग्राद्यनिशितैर्वायैरपराजितमानिनम् ॥ नयाम्यपुनरावृत्तिं यदि तिष्ठेर्भमाग्रतः १८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वृथा त्वंकथसे मन्दनपश्यस्यन्ति रेऽन्तकम् ॥ पौरुषं दर्शयन्ति स्म शूरानवहुभाषिणः १९ इत्युक्त्वा भगवाञ्छाल्वंगदयाभीमेव गया ॥ तताडजत्रौ संबन्धः सचकम्पेव मन्त्रमृक् २० गदायासोन्निवृत्तायां शाल्वस्तन्तरधीयत ॥ ततो मुहूर्त्त आगत्य पुरुषः शिरसाऽच्युतम् ॥ देवक्या प्रहितोऽस्मीति नत्वा प्राहवचोरुदन् २१ कृष्णकृष्णमहाबाहो पिता ते पितृवत्सल ॥ बद्धाऽपनीतः शाल्वेन सौनिकेन यथापशुः २२ निशम्य विप्रिं कृष्णो मानुषीं प्रकृतिं गतः ॥ विमनस्को दृष्ट्वा स्नेहाद्वभापे प्राकृतो यथा २३ कथं रामसम्भ्रान्तं जित्वाऽजयं सुरासुरैः ॥ शाल्वेनाल्पीयसानीतः पितामेव लवान्विधिः २४ इति ब्रुवाणे गोविन्दे सौभराट् प्रत्युपस्थितः ॥ वसुदेवमिवानीय कृष्णञ्चेदमुवाच सः २५ एष ते जनिता तोयदर्थं गृहजीवसि ॥ वधिष्ये वीक्षनस्तेऽमुमीशश्चेत्पाहिवालि सा २६ एवं निर्भर्त्स्य मायावी लहनेनानकदुन्दुभेः ॥ उत्कृत्य शिरादाय लसं सौभं समाविशत् २७ ततो मुहूर्त्तं प्रकृता बुध्नुतः स्वबोध आस्ते स्वजना श्रीकृष्णचन्द्र कूं नमस्कार करिकै रोदन करिकै देवकी ने भेल्यो हू यह वचन कहत भयो २१ हे कृष्ण ! हे महाबाहो अर्थात् वड़ी है भुजा जिनकी ! हे पिता के हितके करनवारे ! जैसे कसाई पशुकूं वाधिके लेजाय ऐसे शाल्व तुम्हारे पिताकूं वाधिके लेगयो २२ ऐसो अप्रिय वचन श्रवण करिकै मनुष्य स्वभाव में प्राप्त भयो है मन जिनको ऐसे दयावान् श्रीकृष्णचन्द्र वेपन होयके जैसे प्राकृत मनुष्य कहे ऐसे रहतभये २३ हरवराहट जिनके नहीं और देवता असुर जिनकूं जीति न सकैं ऐसे बलदेवजी कूं जीतिके तुच्छ शाल्व भरे पिताकूं कैसे लेगयो निध्रता बलवान् है कदाचित् लेगयो होयगो २४ या प्रकार श्रीकृष्ण कहे हैं इतने में विमानको राजा शाल्व आयो और मायारूपी वसुदेव निर्ममाण करिके लायके श्रीकृष्ण से बोलत भयो २५ यह तेरो उत्पन्न करनवारो पिता है जोके लिये तू यहा जीवे है तेरे देखत याकूं मारुंगो हे मूर्ख ! तेरी सागर्थ्य होय तो याकी रक्षा कर २६ मायावी जो शाल्व है सो या मन्त्रादरपयके माया के वसुदेव जो वनाय

कै लायो हो तिनको तरवार से शिर काटिकै हाथ में लैके आकाश में विमान हो तामें जातभयो २७ स्वतःसिद्ध ज्ञान जिनको ऐसे भी श्रीकृष्णहैं परन्तु अपने जनन के सङ्ग दो घड़ी पर्यन्त मनुष्यन को स्वभाव जो शोक करिवो तामें ह्वत्त भये ताके पीछे वढ़ो है प्रभाव जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र पयदैत्य ने मरुटकरी शाल्व ने चलाई ऐसी आसुरीभाया जानत भये २८ ज्ञान जिनकुं भयो ऐसे अच्युत जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो वा सग्राम में दूत चनिकै जो आयो हो ताव देखत भये और ता वसुदेव के देखकुं भी नहीं देखत भये जैसे जागे पीछे स्वम की वस्तुकुं नहीं देखे हैं और विमान में बैठो आकाश में विचरै ऐसो जो बैरी शाल्व है ताव देखिकै मारिने को उग्रम करत भये २९ अत्र श्रीशुभदेवजी कहे हैं हे राजान मैं अष्टपि राजा परीक्षित ! पूर्वापर प्रसंग को विचार न करै ऐसे कोई ऋषि हैं ते या प्रभार कहे हैं जो अपने कयन तैं विरोध परै ताको स्मरण नहीं करै कथा विरोध परै ताको दृष्टान्त कहे हैं राजसूयज्ञमें वलदेवजी सहित श्री कृष्णचन्द्र नहीं गये हैं क्योंकि पहिले कहिआये हैं सङ्कर्षण सू अज्ञा मांगिकै श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिर के यज्ञमें गये और यहाँ कथो वलदेवसहित मैं यज्ञ में आयो यह पूर्वापर सङ्गति को वि-

नपङ्गतः ॥ गद्धानुभावस्तदबुध्यदामुरीं मायांसशाल्वप्रसृतांमयोदिताम् २८ नतत्रद्वर्तनपितुःकलेवरं प्रबुद्धाजौसमपश्यदच्युतः ॥ स्वाभयथाचाम्बर चारिणंरिपुं सौभस्थमालोक्यनिहन्तुमुद्यतः २९ एवंवदन्तिराजर्षे ऋषयःकेचनान्विताः ॥ यत्स्ववाचोविरुद्धेत नूनंतेनस्मरन्त्युत ३० कशोकगोहोस्ने होवा भयंवायेऽन्नसम्भवाः ॥ क्वालिशिनविज्ञानज्ञानैश्वर्यंस्वखगिडनः ३१ यत्पादसेवोर्जितयाऽस्मविद्यया दिन्यन्त्यनाद्यात्मविपर्ययग्रहम् ॥ ल भन्तआत्मानमवन्तमैश्वरं कुतोनुमोहःपरमस्यसद्गतेः ३२ तंशस्त्रपूगैःप्रहरन्मोजसा शाल्वंशरैःशौरिमोघविक्रमः ॥ विद्धाऽच्छिन्नदर्ममधनुःशिरमणिं सौभक्षशत्रोर्गदयारुरोजह ३३ तच्छृण्वहस्तेरितयाविचूर्णितं पपाततोयेगदयासहस्रया ॥ विमृज्यतद्भुतलमास्थितोगदामुद्यमशाल्वोऽच्युतमभ्य गादुद्धुतम् ३४ आधावनःसगदन्तस्यचाहुं भल्लेनक्षित्वाऽथथाङ्गमद्भुतम् ॥ वधायाशाल्वस्यलयार्कसन्निभं विभ्रद्भौसार्कद्वोदयाचक्षः ३५ जहारते रोध परैहै ताको स्मरण नहीं करै हैं शुभदेवजी कहे हैं राजा यह हमारो मत नहीं है और ऋषिन को मतहै ३० अत्र शुभदेवजी अपनो मत कहे हैं अज्ञानसं होवै ऐसे जे शोक मोह स्नेह भय ये कदां और अवगट है विज्ञान ज्ञान ऐश्वर्य जिनको देवता जिनकी स्तुतिकरै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कहा ३१ जिनके चरण की सेवा करिकै पुष्ट भई ऐसी जो आत्मविद्या है ता करिकै मैं लख्यो हू दुःखीहूँ यहहै स्वरूप जाको ऐसे देखमें अहङ्कार है ताव दूरि करै हैं अपनेमें मैं अनन्त ईश्वर के स्वरूप कू पावे हैं यातैं साधुन की गति जे परम श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकुं मोह कहा ते होय ३२ सफल है पराक्रम जिनको ऐमे शूरवंशोत्पन्न जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते वल करिकै शस्त्रनके समूहनतैं मारो ऐसो जो शाल्व है ताव वेष्टि तैं ऋषि और धनुष है ताव और शाल्व के शिर में जे मणि हैं तिनैं काटत भये और बैरी श हा वो जो विमान है ताव गदा करिकै तोरत भये ३३ श्रीकृष्णचन्द्र के हाथकी चलाई भई जो गदाहै तासूं हज्जारन दूरु होयतैं वह विमान चूर्णीभूत होयके जलमें गिरत भयो ता समय शाल्व विमानकुं त्यागिकै पृथ्वीपै ठाढ़ो होयतैं गदा हाथमें उठायेके श्रीकृष्ण के ऊपर दौरत भयो ३४ गदासहित दौरो चलो आवै जो शाल्व है ताको गदा





रोग है नाथ दूरि करै तब सुखी होय ऐसे व या प्रकार पठोर वाधय भिक्षु श्रीकृष्ण के मोय में गदा भारिकै सिद्धकी तुल्य दन्तवक गर्जतभयो जैसे हाथी के अकुशे लगे ऐसे गदा लागति भई ७ सग्राम में गदा जिनके लगी तथापि श्रीकृष्णचन्द्र न डिगतभये परचात् श्रीकृष्णचन्द्र भी कौमोदकी जो बड़ी गदा है ताकूं दन्तवक की दानी में भारतभये ८ गदा करिकै निहीण भयो है दुदय जाको ऐसो जो दन्तवक है सो मुखते रुधिर कूं वामन करत पाणनकु त्यागिके नेश हाथ पाव फैलायनै पृथ्वी में गिरतभयो ९ ता पीवे दन्तवक के शरीर ते अद्भुत सूक्ष्म ज्योति निकसिकै सब पाणीन के देखत हे राजन् परीक्षित ! शिशुपाल के च भैं जैसे श्रीकृष्णचन्द्र पर प्रवेश करति भई तैसेही प्रवेश करति भई १० परया दन्तवक ने शोक करिकै व्याकुल ऐसो जो विदूरय है सो तलवार डाला लैके श्रीकृष्ण के भारिवेके लिये नड़े बड़े श्वासन कूं लेत आकतभयो ११ हे राजान के इन्द्र परीक्षित ! चलयो आवे जो विदूरय है ताको मुकुट और कुण्डलसहित जो शिरहै ताकूं छुरा की तुल्य है थार जाकी ऐसे चक्र भूं श्रीकृष्णचन्द्र काटतभये १२ औरन पै सहस्रो न जाय ऐसो जो सौभ विमान है ताप और शाल्य कूं तथा भनयान सहित जो दन्तवक है ताप मारि

८वाडयन्मूर्ध्नि सिंहवद्वयनदच्चसः ७ गदमाऽभिहतोऽप्याजौ नचचालयदूदहः ॥ कृष्णोऽपितमहनगुर्व्या कौमोदक्यास्ननान्तरे ८ गदानिभिन्नहृदयउद्ध मञ्जुविंमुखात् ॥ प्रसारयैकशवाह्वीन् धारयान्यपतद्वयमुः ६ ततभूक्ष्मनंज्योतिः कृष्णगानिषादद्भुतम् ॥ पश्यतासर्वभूतानां यथैवेद्वयवेधेनुरा १० विदूरथस्तुतदभ्राता भ्रातृशो रुपरिभुतः ॥ आगच्छदसिचर्मभा मुच्छ्वसंस्तजिजवासाया ११ तस्यचापततः कृष्णश्चक्रेणक्षुनेमिना ॥ शिरोजहारराजेन्द्र सकिरीटंमकुण्डलम् १२ एवंसौभञ्जशाल्वञ्च दन्तवक्त्रंमहानुजम् ॥ हताहुर्विपहानन्यैरीडितःसुमानैवैः १३ मुनिभिःसिद्धगन्धर्वैर्निद्याधमहोरौः ॥ अपत्रोभिःपितृगणैर्यक्षैःकिन्नरचारणैः १४ उपगीयमानविजयःकुसुमैरिभिवर्षिः ॥ वृनश्चद्रुष्णिप्रवरैर्विशालंकृचांगुभि १५ एवंयोगेश्वरःकृष्णोभग वाज्रगदौश्वरः ॥ ईपतेपशुदृष्टीनां निर्जितोजयतीतिसः १६ श्रुत्वायुद्धोद्यमंगमः कुष्णासदृपादयैः ॥ तीर्थधिपेकव्याजेन गन्धस्यःप्रययौकिल १७ स्नानात्प्रभासेस्तत्तर्पदेवर्षिपितृमानवान् ॥ सरस्वतीप्रतिस्रोतं ययौत्राह्मणसंवृनः १८ पृथूदकंविन्दुमरस्त्रिनकूणंसुदर्शनम् ॥ विशालेन्द्रमूर्ध्नि १९ च

जुने तत्र देवता और मनुष्य सर्व स्तुति करतभये १३ मुनीवर सिद्ध गन्धर्व विद्याधर और नड़े सर्व अस्त्रा पितृनके गण यत्त किन्नर चारण इन सूत्रने गाई है जीत जिनकी और फूल परमाये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र यदपन कूं सङ्गलैके शोभायमान जो द्वाकापुरी है तामें जातभये १४ १५ या प्रकार योगके ईश्वर और जगत् के ईश्वर जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो नरासन्पाडिञ्च ने जीते पते पञ्चग की तुल्य है दृष्टि जिनकी अज्ञानी पुरुषन कूं हारे जीते मतीत होई है १६ पाण्डव कौरवन कूं एक तुल्य मानें ऐसे जे पलटोगी है सो उनके युद्धको उग्रग श्रवण करिके तीर्थस्नान को भिष करिके यात्रा करतभये क्योंकि यहा रहोगे तो जाकी ओर न ढोउंगे सोई वुरो मानेगो १७ प्रभासतीर्थ में स्नानकरिके देवता ऋषि पितृ मनुष्यन वो तर्पण करिके व ह्मणन कूं समुनैके सरस्वती के प्रपाद के समुद्रा पलटोगी जातभये १८ हे भातवंशोत्तम राजा राजा परीक्षित ! पृथूदक विन्दुसर त्रिनकूण सुदर्शनी १ विशाल-चक्रतीर्थ चक्रते ग और पूर्व-दिनी

सरस्वती और यमुना के जे तीर्थ तथा गद्दा के तीर्थ और जहाँ ऋषि यज्ञ करै या नैमिषारण्यमें बलदेवजी जातभये १९ । २० वहु है यज्ञ जिनके ऐसे जे मुनि हैं ते बलदेवजी कू आया जानि के मशसा करिके उठिके प्रणाम करिके यथायोग्य पूजन करत भये २१ ब्राह्मणन सहित पूजा जिनकी करी और आसन कू अहीकार करिके बलदेवजी हैं सो वेदव्यासको शिष्य जो रोमहर्षण है ताथ वैठो देखतभये २२ बलदेवजी कू देखिके उठ्यो नहीं और नही करी है प्रणाम अञ्जली जाने ब्राह्मणन तें ऊँचो वैठ्यो जो सूत है ताथ मधुवंशोत्पन्न बलदेवजी देखिके क्रोध करतभये २३ मतिलोमज अर्थात् ब्राह्मणी माता और पिता क्षत्रिय ऐसो यद् सूत है सो इन ब्राह्मणन तें कैसे ऊँचो वैठ्यो है तैसेही धर्म के पालन करनवारे जे हम हैं तिनते ऊँचो वैठ्यो है ता कारण दुष्ट है बुद्धि जात्री ऐसो सूत मारिवे योग्य है २४ कदाचिद् कहो कि विना जाने ऊँचो वैठ्यो है सो नहीं भगवान् वेदव्यास को शिष्य है और महाभारत सहितजे पुराण तिनकू पढ़िके और केंप्रार्चिसरस्वतीम् १६ यमुनामनुयान्येव गङ्गामनुवभारत ॥ जगामनौमिपयत्र ऋपयःसत्रमासेन २० तमागतमभिप्रेत्य मुनयोदीर्घसन्निधिः ॥ अभि

वन्द्यथान्यायं प्रणम्योत्थाय चार्चयन् २१ सोऽर्चितः सपरीवारः कृतासनपरिग्रहः ॥ रोमहर्षणमासीनं महर्षेः शिष्यमैक्षत २२ अप्रत्युत्थायिनं सूतमकृत प्रह्वणञ्जलिम् ॥ अध्यासीनञ्च नान्निप्रिश्चुकोपो दीक्ष्यमाधवः २३ कस्मादसाविमाच विप्रानध्यास्ते प्रतिलोमजः ॥ धर्मपालांस्तथैवास्मान् वधमर्हति दुर्मतिः २४ ऋपेर्भगवतो भूत्वा शिष्योऽधीत्यब्रू निच ॥ सेतिहासपुराणानि धर्मशास्त्राणि सर्वशः २५ अदान्तस्याविनीतस्य वृथापण्डितमानिनः ॥ नगुणाय भवन्ति तस्म नदस्येवाजितात्मनः २६ एतदर्थो हिलोके स्मिन्नवतारो मया कृतः ॥ वध्यामेधर्मध्वजिनस्ते हि पातकिनोऽधिकाः २७ एतावदुक्ता भगवान्निवृत्तोऽसद्वधादपि ॥ भावित्वात्कुशाग्रेण कस्येनाहनप्रभुः २८ होहेति वा दिनः सर्वे मुनयः खिन्नमानसाः ॥ ऊचुः सङ्क्षर्पणं देवमधर्मस्ते कृतः प्रभो २९ अस्य ब्रह्मासनन्दतप्तमस्माभिर्गृह्णन्दन ॥ आयुश्चात्मा क्लमं तावदावत्सत्रं समाप्यते ३० अजानतैवाचरितस्त्वया ब्रह्मवधो यथा ॥ योगेश्वरस्य भवतो

नाम्ना योपिनियामकः ३१ यद्येतद्ब्रह्मादृत्यायाः पावनं लोकापावन ॥ चरिष्यति भवाल्लोकं संग्रहोऽनन्यचोदिनः ३२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ करिष्ये वध समस्त धर्मशास्त्रन कू पढ़िके २५ इन्द्रिय जाने रोंकी नहीं नम्रता जामें है नहीं वृथा अपने कू पण्डित माने ऐसे कू शास्त्र गुण के लिये नहीं होय है जैसे नहीं जीत्यो है मन जाने ऐसे नदही विद्या वाकू गुण के लिये नहीं होय है २६ एतदर्थही या लोकमें अवतार भेने लियो है धर्मध्वजजी अर्थात् जाति में छोटे उत्तम स्वरूप कू धरे ऐसे जो अधिक पापी पुरुष हैं सो मारिवे के योग्य हैं २७ समर्थ जो भगवान् बलदेवजी हैं सो इतनो कहिके असत् जो सूतको वध है ताते निवृत्तभये हैं परन्तु होनहारही तासूं हाथमें जो कुशाही तासूं सूत कूं मारतभये २८ खेदयुक्त हैं मन जिन के ऐसे जे सख्यगूँ मुनि हैं ते हाहाकार गुब्द करिके हे समर्थ ! यह कहा क्यो ऐसे देव बलदेवजी तें कहतभये २९ हे यादवन कूं आनन्द के देनवारे ! हमने या सूत कूं ब्रह्मासन दियो है और या वत् पर्यन्त हमारो यज्ञ पूर्ण न होयगो तावत्पर्यन्त शरीर कू खेद न होय ऐसी अवस्था दीनी है ३० विना जाने जैसे ब्राह्मण को वधकरें ऐसे या सूतको वध तुमने करयो है योगके ईश्वर जो

तुमहो तिनकूं योग्य नहीहै वेद जे दै ते भी नाहीं नाहीं करै हैं हे लोकनके पवित्र करनवारै ! और नहीहै कहनवारो जिनकूं पेसे जो तुमहो सो या ब्रह्महत्याको प्रायश्चित्त करोगे तौ लोकनकूं शिक्षा हो-  
यगी और जो न करोगे तो आगे कोई-ब्राह्मणकूं पारिके हाथहू न धोवैगे ३१ । ३२ अत्र श्रीभगवान् वलदेवजी बोले लोकनके अनुग्रह करिने के निमित्त मैं सूतके वधको प्रायश्चित्त करेगो जो  
प्रायश्चित्तन में मुख्य प्रकार होय सो भोळू बतावो ३३ हे मुनीश्वरो ! या मूलकूं तुमने वड़ी अवस्था दीनीही और इन्द्रिय भली वनीरैंहै यह दीनो होई अत्र तुमहारे जो इच्छा होय सो सब कहो मैं  
अपनी योगमाया के चलतैं सिद्ध करि देखैगे ३४ अब सब ऋषीश्वर बोले हे राम ! जैसे तुमहारे अस्त्रको पराक्रम को मृत्युको और हमारो वचनये सब सत्यहोयैं सो विचारकरौ ३५ तब श्रीभगवान्  
वलदेवजी बोले आपुही पुत्ररूप होयकैं पिता उत्पन्न होयहै यह वेदकी आज्ञाहै याते या रोमहर्षणको पुत्र जो उदस्रगहै सो तुमहारे पुराण को वक्ता होय या उदस्रवा की वडी आयु होय और इ-  
न्द्रिय अच्छी वनीरैंहै बलवान् होय साक्षात् याकू न जियावो याते मृत्यु और शास्त्रकी सत्यताभई और पुत्ररूप करिकैं आयु बल इन्द्रिय सिद्ध भई यातें तुमहारे वचन सिद्ध भयो ३६ हे मुनिनमैं श्रेष्ठो !

निर्वर्तेशं लोकानुग्रहकाम्यया ॥ नियमः प्रथमेकलेपयावान्सतुविधीयताम् ३३ दीर्घमायुर्वैतस्य सत्त्वमिन्द्रियमेवच ॥ आशासितंयत्तद्ब्रूत साधयेयोगमा  
यया ३४ ॥ ऋपयऊचुः ॥ अस्त्रस्यतववीर्यस्य मृत्योरस्माकमेवच ॥ यथाभवेद्वचःसत्यं तथारामविधीयताम् ३५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ आत्मावैपुत्र इ  
त्पन्नइतिवेदानुशासनम् ॥ तस्मादस्यभवेद्वक्त्रा आयुरिन्द्रियसत्त्ववान् ३६ किंवःकामोमुनिश्रेष्ठाब्रूताहंकरवागयथ ॥ अजानतस्त्वपचितिं यथामेचिन्त्य  
ताम्बुधाः ३७ ॥ ऋपयऊचुः ॥ इत्स्वलस्यमुतोघोरोवत्स्वलोनामदानवः ॥ सद्रूपयतिनःसन्नेमेत्यपर्वणिपर्वणि ३८ तंपापंजहिदाशार्ह तन्नःशुश्रूषणंप  
रम् ॥ पूयशोणितविरमूत्रसुरामांसाभिवर्पिणम् ३९ ततश्चभारतैवर्पं परीत्यमुसमग्रहितः ॥ चरित्वाद्वादशमासांस्तीर्थस्नानीविशुद्ध्यसे ४० ॥ इति श्री  
मद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेवलेदेवचरित्रेवत्स्वलवधोपक्रमोनामाष्टमसतितमोऽध्यायः ७८ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ ततःपर्वण्युपावृत्ते प्रचण्डःपांसुवर्षणः ॥ भीमोवायुरभूद्राजन् पूयगन्धस्तुसन्वशः १ ततोऽमेध्यमयंवर्षं बल्वलेनविनिर्मितम् ॥ अभ  
तुम्हारे कौन वस्तुकी चाहना है सो तो कहैं पकलंगो हे विवेकियो ! प्रायश्चित्त कूं नहीं जानूं जो भैंहूं ताकूं भलेपकार प्रायश्चित्त विचारो ३७ अत्र ऋषीश्वर बोलेघोरहै रूप जाको ऐसो इत्यलको  
पुत्र बल्वल नाग दानवहैं सो अगावस पुनो आयकै हमारे यज्ञकूं भ्रष्ट करैहै ३८ हे दशार्हशोत्पन्नवलदेवजी ! पीव रुधिर विष्ठा मूत्र मदिरा मांस इनकी वर्षा करै ऐसो जो पापी बल्वलहै ताप मारो  
यही हमारी बड़ी सेवाहै ३९ ता पीछे अत्यन्त सावधान होयकै कामक्रोधादिकन कूं त्यागिकै भारतखण्ड की परिक्रमा करिकै एकवर्ष पर्यन्त तीर्थन में स्नान करोये तब शुद्ध होउगे ४० इति श्री-  
मन्महाभागवतार्थखण्डाष्टादशमस्कन्धोत्तरार्द्धेवलदेवचरित्रेपुल्लवधोपक्रमोनामाष्टमस्तुतितमोऽध्यायः ७८ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

(उनाशीतितमेरापोबल्ललद्विजलुष्टे ॥ निहत्यतीर्थस्नानार्घ्यःग्नूहत्यामणनुदत् १ उनसीनें अध्यायमें बलदेवजी ब्राह्मणनकी प्रसन्नता के लिये बल्ललको मारकर तीर्थस्नानादिकन संभूत

की हत्या को दूर करते भये ? ) अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! ता पीछे अभावास्था पूर्णमासी पर्व आया तब धूरि जाँ मैं वर्ष ऐसी भयानक प्रचण्ड पवन चलत भई और चारचो और ते राधिनी दुर्गन्ध आचति भई १ ता पीछे बल्ल दैत्यने करी ऐसी विष्ठा मूचकी नर्पा यज्ञशालामें होति गई और विशूल लिये चलल भी दृष्टि आवन भयो २ विदीर्ण कियो जो काजरको पहाड़ ताची दुल्य बड़ी है देह जाको ताते तावेसे लाल है शिला और डाढ़ी जाके दाढ़ करिके भयानक भुङ्कुनीन सू लग्यो है मुख जाको ऐसो जो बल्ल है ताय देखि है ३ शयुक्ती सेना जो विदीर्ण करन चारी जो मूल है ताको स्मरण करिके दैत्यनको मारन चारो जो हल है ताको स्मरण करत भये ता समय पार्षद रूप जे हल मूल है ते जलरी आवत भये ४ आकाशमें विचरै जो दल्ल है ताय हलके अग्रभाग सँ खँचिके क्रोधयुक्त जो बलदेवजी हैं सो ब्रह्मदेवी जो बल्ल है ताके माथे में मूसल मारत भये ५ फूज्यो है माथो जाको ऐसो जो बल्ल है सो रुधिर को वमन करत दीनशब्द उच्चारण करत जैसे वज्र के मारे गेरू को पर्वत गिरे ऐसे पृथ्वी में गिरत भयो ६ मुनीश्वर है ते बलदेवजी की स्तुति करिके सफल आशीर्वादन कूं दै के जैसे बडभागी देव वा वृत्रासुर के मारन वारे

बडज्ञशालायां सोऽन्वदृश्यत शूलधृक् २ तं विलोक्य बृहत्कार्यं भिन्नाञ्जनचयोपमम् ॥ तप्तनाम्रा शिखाशृङ्गं दंष्ट्राभ्रमुकुटीमुखम् ३ सस्मारमुमलं रामः परसैन्यविदारणम् ॥ हलञ्च दैत्यदमनं ते तूर्णमुपतस्थतुः ४ तमाकृष्य हलाग्रेण बल्ललंगने चरम् ॥ मुसलेनाहनत क्रुद्धां मुद्भिन् ब्रह्मदुहं बलः ५ सोऽपतङ्गुविनिर्भिन्नललाटोऽमृक् समुद्रमृजन् ॥ मुञ्चन्नात्तं स्वर्शैलौ यथावज्जहतोऽरुणः ६ संस्तुत्य मुनयो रामं प्रयुज्यावितथा शिपः ॥ अभ्यपिञ्चन्महाभागा वृत्रघ्नं विबुधा यथा ७ वैजयन्तीं दडुर्मांलां श्रीधामा म्लानपङ्कजाम् ॥ रामाय वाससी दिव्ये दिव्यान्या भरणानि च ८ अथैश्वर्यपनुज्ञातः कौशिकीमेत्य ब्राह्मणैः ॥ स्नात्वा सरोवरमग्राद्य चः सरयु रासवत् ९ अनुत्तोनेन सरयूं प्रयागमुपगम्यतः ॥ स्नात्वा सन्तर्ध देवादीञ्जगाम पुलहाश्रमम् १० गोमतीं गण्डकीं स्नात्वा विपाशांशोण आलुनः ॥ गयां गत्वा पितृनिष्ठा गङ्गासागरसङ्गमे ११ उपस्पृश्य महेन्द्राद्रौ रामं दृष्ट्वा भिवाद्य च ॥ सप्तगोदावरीवेणां परमार्थं मरथीततः १२ स्कन्दं दृष्ट्वा ययौरामः श्रीशैलं गिरिशालयम् ॥ द्विविडे पुमहापुर्यं दृष्ट्वाऽर्द्धिवेङ्कटं प्रभुः १३ कामकोष्णीं पुरीकाञ्चीं कावेरी च सरिद्राम् ॥ श्रीरङ्गाख्यं महापुर्यं

इन्द्रको अभिषेक करै ऐसे अभिषेक करत भये ७ लक्ष्मी के वसिष्ठ के स्थान ऐसे को गल कमलनची वैजयन्ती गाला और दिव्य नीलास्मर के धोती उपरना और अनेक प्रकार के आभूषण हैं ते चल देवजी कंदे त भये ८ या के पीछे मुनिने आज्ञा जिन कूं दीनी ऐसे बलदेवजी ब्राह्मणन कूं संग लै के कौशिकीनदी में आय है स्नान करिके जा सरोवर में ते सरयु निकली तहां आवत भये ९ सायू के प्रयाग के किनारे किनारे होय के प्रयाग में आय स्नान करिके देवादि कम को तर्पण करिके पुलह ऋषि तो आश्रम जो हरितेज है तामें जा भये १० चहा ते गोमती और गण्डकी तथा विपाशा में स्नान करिके शोणनदी में स्नान जिनने कखो ऐसे बलदेवजी गया तीर्थ में जाय के पितरन हो पूजन करिके गंगा और समुद्र को जहा संगम भयो है तहां जात भये ११ ता पीछे महेन्द्र पर्वत में परशुरामजी को दर्शन करिके प्रयाग करिके सप्तगोदावरी और वेणा तथा पद्मा में जाय के भीमरथी में जात भये १२ ता पीछे समर्थ नलदेवनी स्वागिकार्तिकेय को दर्शन करिके महादेव जहा

विराजै ऐसे जो श्रीशैल पर्वत है तहां जात भये और द्रविड़ देशन में वड़ो पुनीत जो वेङ्कट पर्वत है ताको दर्शन करिकै कामकोष्णी पुरी और काञ्चीपुरी में जात भये और नदीन में अण्ड जो कावेरी है तामें स्नान करिकै वड़ो पवित्र और जहा नित्य हरि विराजमान रहै ऐसे जो श्रीरद्रनाम विल्यात स्थान है तहा जात भये १३ । १४ वहा ते ऋषभप्रदि पर्वत जो हरिको क्षेत्र है तहा जायकै दक्षिणदेश में जो मथुराहै तहां जात भये वहा ते वेङ्कट पावन के नाश करनवारे जे सेतुवन्ध राभेश्वर है तहा जात भये १५ वहा जायकै हलायुध चलदेवजी दशहजार भौ ब्राह्मणन कूं देत भये पश्चात् कृतमाला नदी और ताम्रपर्णी नदीन में होयकै मलयाचलकुलाचल पर्वतन में जात भये १६ तहां विराजमान जे अगस्त्यमुनि हैं तिनकी नमस्कारपूर्वक स्तुति करत भये तब अगस्त्यजीने आशीर्वाद दैके आज्ञा जिनकू दीनी ऐसे चलदेवजी दक्षिणदेश में जो समुद्र है तहा जायकै कन्या नाम जो दुर्गादेवी है ताको दर्शन करत भये १७ ता पीछे फाल्गुन जो अनन्तपुरहै तामें नित्य विष्णु भगवान् विराजै ऐसे जो उत्तम पञ्चास्सरस नाम सर है तामें स्नान करिकै दश हजार गौवन को संकला करत भये १८ वहा ते चलि कै भगवान् चलदेवजी

यत्र सन्निहितो हरिः १४ ऋषभादिहरेः क्षेत्रं दक्षिणं मथुरांतया ॥ सामुद्रं सेतुमगमनहापातकनाशनम् १५ तत्रायुनमदाब्देनूत्राह्वाणे भ्योहलायुधः ॥ कृतमा लांताम्रपर्णी मलयंचकुलाचलम् १६ तत्रागस्त्यं समासीनं नमस्कृत्याभिवाद्य च ॥ योजितस्तेन चाशीर्भिरनुज्ञातो गतोऽर्णवम् ॥ दक्षिणतत्र कन्याख्यां दुग्गादिर्विददर्शयः १७ ततः फाल्गुनमासाद्य पञ्चास्तरसमुत्तमम् ॥ विष्णुः सन्निहितो यत्र स्नात्वाऽस्पृशेद्गवायुतय १८ ततोऽभिब्रज्य भगवान् केरलांस्तु त्रिगर्त्तकान् ॥ गोकर्णं रथं शिवक्षेत्रं सान्निभ्यं यत्र धूर्तः १९ आर्यद्वैपायनी दृष्ट्वा शूर्पारकमगाद्वलः ॥ तार्पीपयोष्णीं निर्विन्ध्यामुपस्पृश्याथ दण्डकम् २० प्रविश्येवागमद्यत्र माहिष्मतीपुरी ॥ मनुनीर्थमुपस्पृश्य प्रभासं पुनरागमत् २१ श्रुत्वा द्विजैः कथ्यमानं कुरुपाण्डनसंयुगे ॥ सर्वराजन्यनिवनं भारमेनेहनं भुवः २२ सर्भीमदुर्थो धनयोर्गदाभ्यामुच्चतोर्म्ये ॥ वारयिष्यन् विनशनं जगाम यदुनन्दनः २३ युधिष्ठिरस्तु तं दृष्ट्वा यमौ कृष्णार्जुनौ वपि ॥ अभिवाद्या भवं स्तूष्णीं किं विवक्षुरिहागतः २४ गदापाणी उभौ दृष्ट्वा संवौ विजयैः पिपौ ॥ मण्डलानि विचित्राणि चरन्ता विदमव्रवीत् २५ युगं तुल्यवलोवीरौ हेराजन्

केरल और त्रिगर्त्त देशमें होय कै जहां धूर्जटि शिवजी विराजै ऐसे जो गोकर्ण नाम करिकै शिवक्षेत्र है तहा जात भये १९ वहां तें चलदेवजी आर्यार्द्रोपवासिनी जो देवीहै ताको दर्शन करिकै शूर्पारक क्षेत्रमें आवत भये वहा तें तार्पी और पयोष्णी निर्विन्ध्या नदीमें आचमन करिकै दण्डकारण्य में आवत भये २० जहा माहिष्मती पुरीहै वा रेवानदी पै जात भये फेरि मनुनीर्थ में आचमन करिकै प्रभासक्षेत्र में आवत भये २१ तब कौरव और पाण्डवन के संग्राम में सब क्षत्रियन को नाश भयो यह ब्राह्मणन को वचन अथवा करिकै पृथ्वी को बोझ उतरयो यह मानत भये २२ यादवन कूं आनन्द के देतवारे जो चलदेवजी हैं सो संग्राम में गदान संयुद्ध करै ऐसे जे भीमसेन दुर्गोधन हैं तिन मने करिवे कूं कुरुक्षेत्र में जात भये २३ राजा युधिष्ठिर नकुल सहदेव कुरुण और अर्जुन ये चलदेवजी कूं देखिकै प्रणाम करिकै कहल कहनेनो इच्छा करिकै यहा आयें हैं या भयके भारे चुप होत भये २४ गदा हाथमें लिथे क्रोधमें भरे एहनो एक जीत्यो चाहै निज



विचित्र मण्डलन में फिर ऐसे जे भीमसेन दुर्योधन हैं तिन देविकै बोलत भये २५ हे राजन् दुर्योधन और भीमसेन ! तुम दोनों शूरवीर हो तुम तुम्हारी बल है एक भीमसेन में कुछ बल अधिक है यह मैं जानूं हूं दूसरो दुर्योधन है तामें दाव पंच अधिक है यह मैं जानूं हूं २६ ता कारण वरावरि है पराक्रम जिनमें ऐसे जे तुम दोनों हो तिनके बीचमें एकहूकी जीति हार न होयगी याते निष्फल युद्धकूं शान्तकरो २७ हे राजन् परीक्षित ! परस्पर कुतिसत वचन और दुष्कृतन कूं स्पर्ण करिकै वैश्यो है वैर जिनको ऐसे जे भीमसेन दुर्योधन हैं ते प्रयोजन भव्यो वाक्य नहीं मानत भये २८ भीमसेन दुर्योधन को ऐसेही विखलो कर्म है यह मानिकै बलदेवजी द्वारकापुरी में आवतभये तहा उग्रतेन रूं आदिलैकै प्रसन्न जे ज्ञातिवाले यादव हैं तिनसूं मिलतभये २९ निष्ठतभये हैं समस्त विरुद्ध जिनते फेरि नैमिषारण्य में आयो ऐसे यज्ञमूर्चि जे भगवान् बलदेवजी हैं तिनैं आनन्दपूर्वक सब ऋषीश्वर संव यज्ञन करिकै यजन करावतभये ३० समर्थ भगवान् बलदेवजी तिन ब्राह्मणन कूं विशुद्धज्ञान देतभये जा ज्ञान करिकै आत्मा में विश्व और विश्वमें आत्माकूं जानै है ३१ यज्ञारे पीछे स्नान जिनने कियो सुन्दर वस्त्र आभूषणन करिके अलंकृत

हे वृकोदर ॥ एकंप्राणाधिकं मन्यते कं शिष्याधिकम् २६ तस्मादेकतरस्येह युवयोः समवीर्ययोः ॥ न लक्ष्यते जयोऽन्यो वा विरमत्वफलो रणः २७ न तद्वाक्यं जगृहतुर्वद्धैरौ नृपार्थवत् ॥ अनुस्मरन्तावन्योन्यं दुरुक्लंष्टुना निच २८ दिष्टं तदनुमन्वानो रामो दारवर्तीयौ ॥ उग्रसेनादिभिः श्रितैर्ज्ञातिभिः समुपागतः २९ तंपुनर्नैमिषं प्राप्तुं पयोऽयाजयन्मुदा ॥ क्रतवङ्गं क्रतुभिः सर्वान् विवृत्ताखिलविग्रहम् ३० तेभ्यो विशुद्धविज्ञानं भगवान् व्यतरद्विभुः ॥ येनैवाऽऽत्मन्यदो विश्वमात्मानं विश्वगं विदुः ३१ स्वपत्याऽवभृयस्नातो ज्ञातिवन्धुमुहद्वृतः ॥ रेजे स्वज्योत्स्नये वेन्दुः सुवासाः सुज्वलं कृतः ३२ ईदृग्वियान्यसंख्यानि बलस्य बलशालिनः ॥ अनन्तस्याप्रमेयस्य मायामर्त्यस्य सन्ति हि ३३ योऽनुस्मरेतरामस्य कर्माणि यद्भुतकर्मणः ॥ सायंप्रातरनन्तस्य विष्णोः सदयितो भवेत् ३४ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे बलदेववर्तीथ्यात्रानिरूपणं नैकोनाशीतितमोऽध्यायः ७६ ॥

राजोवाच ॥ भगवन् न्यानि चान्यानि मुकुन्दस्य महात्मनः ॥ वीर्याण्यनन्तवीर्यस्य श्रोतुमिच्छामहे प्रभो १ कोलुश्रुत्वा स हृदग्रह्यष्टुत्तमश्लोकसत्क ज्ञाति बन्धु सुहृद् इनकूं सद्गलैकै जैसे अपनी चादनी करिकै चन्द्रमा शोभाकूं प्राप्त होय है ऐसे अपनी क्षीन साहित शोभाकूं प्राप्त होतभये ३२ बलवान् अनन्त अप्रमेय अर्थात् प्रमाण करिबे में न आवें माया करिकै मनुष्य रूप जिनने धारण कस्यो ऐसे बलदेवजी के ऐसे ऐसे अनेक लीला चरित्र हैं ३३ अद्भुत है कर्म जिनके ऐसे अनन्त बलदेवजी हैं तिनके कर्मन कूं जो पुरुष सायकाल प्रातःकाल समय स्मरण करै वह श्रीकृष्णचन्द्रको प्यारो होय है ३४ इति श्रीमद्भागवतार्थखण्डे बलदेववर्तीथ्यात्रानिरूपणं नैकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

( अथाशीतितमेकृष्णः श्रीदामानं युहागतम् ॥ सम्पद्यथापृच्छदं ये गुरुत्वास रुपा मुदा ? अस्मीति अध्यायमें कृष्णजी घरमें आयो द्रव्यकी इच्छावाले सुदामाजी वी अन्धे प्रकार पूजाकर आनन्दसूं गुरुके वासकी कथाको धूत्रतभये ? ) अब राजा परीक्षित प्रश्न करे हैं हे भगवन् समर्थ शुक्रदेवजी ! अनन्त है पराक्रम जिनके ऐसे मुक्तिके देनवारे जो महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पराक्रम-

मनकूँ मेरी श्रवणकरिवे की इच्छा है ? हे ब्रह्मन् शुनदेवजी ! उत्तम है यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रके विषयन में वैराग्यकी उत्पत्ति करनवारी जो मनोहर कथा है तिनै निस्तर सुनिकै काम के वाणनतें खेदको प्राप्तभयो ऐसो सारको जाननवारो कौन पुरुष है जो श्रवण न करै २ जा वाणी में भगवान् के नाम गुण निकसैं वही वाणी सफल है और जिन हाथनतें भगवान् की सेवा पूजा कर्म वर्न वेही हाथ सफल है स्थावर जङ्गम जीवनमें अन्तर्ध्यामीरूप होयकै वसे जे भगवान् हैं तिनको जो स्मरण करै वही मन सफल है और जिन काननसू भगवान् की पवित्रकथा सुनै वेही कान सफल है ३ स्थावर जगम सब भगवान् के रूप हैं यह मानिकै जो पुरुष शिरसूँ प्रणामकरै वही शिर धन्य है स्थावर जंगम भगवान् को रूप जानिकै जिन नेत्रनसू देखै वेही नेत्र धन्य है और भगवान् अथवा भक्तजनन के चरणनको धोवन जल नित्य जिन अंगनमें लगै वेही अंग सफल है ४ अथ श्रीसूतजी सनकादिकन सं कहैं विष्णुराज राजा परीक्षितने पूछे वासुदेव भगवान् में हूँयो है हृदय जिनको ऐसे जो वेदव्यास के पुत्र भगवान् शुनदेवजी कहैं हैं हे राजन् परीक्षित ! कोई एक ब्राह्मण ब्रह्मके जाननवारन में उत्तम विषयन में वैराग्यवान्

थाः ॥ विरमेतविशेषज्ञो विपश्चः काममार्गणैः २ सावाग्ययातस्य गुणान्नगुणीते करौ च तत्कर्म करौ मनश्च ॥ स्मरेद्धमन्तं स्थिरजङ्गमे पु श्रृणोति तत्पुण्यक  
थाः सत्कर्णः ३ शिरस्तुतस्योभयलिङ्गमानमेतदेव तपस्यतितद्धिचक्षुः ॥ अङ्गानि विष्णो रथतज्जनानां पादोदकं यानि भजन्ति नित्यम् ४ ॥ भूत उवाच ॥  
विष्णुरातेन संपृष्टो भगवान् वादरायणिः ॥ वासुदेवे भगवति निमग्नहृदयोऽब्रवीत् ५ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ कृष्णस्यासीत् सखाकिश्चिद्ब्राह्मणो ब्रह्मवित्तमः ॥  
विरक्तइन्द्रियार्थेषु प्रशान्तात्मा जितेन्द्रियः ६ यदृच्छयोपपन्नेन वर्त्तमानो गृहाश्रमी ॥ तस्य भार्यकुचैलस्य क्षुत्क्षामा च तथा विधा ७ पतिव्रतापतिप्राह म्ला  
यतावदनेन सा ॥ दग्दिदासीदमाना सा वेपमानाऽभिगम्य च ८ ननु ब्रह्मन् भगवतः सखासाक्षाच्छ्रियः पतिः ॥ ब्रह्मण्यश्च शरण्यश्च भगवान् सत्त्वतर्पभः ९ त  
मुपैहि महाभाग साधूनां च परायणम् ॥ दास्यति द्विविण्भूरि सीदते ते कुटुम्बिने १० आस्तेऽधुना द्वारवत्यां भोजघृण्यन्वके श्वरः ॥ स्मरतः पादकमलमात्म  
नमपियच्छति ॥ किं त्वर्थकामान् भजते नात्यभीष्टाञ्जगद्गुरुः ११ स एव भार्ययाऽप्रोवदुशः प्रार्थितो मृदु ॥ अयं हि परमोलाभ उत्तमश्लोकदर्शनम् १२ इति

शान्त मन जितेन्द्रिय कृष्णको भिन्नहो ६ गृहस्थाश्रम कूँ वर्तें जो कछु अनायासपूर्वक प्राप्त होय ताहींमें अपनो देह निर्वाह करै जीर्ण वस्त्रनकूँ धारण करै ऐसो ब्राह्मणहो ताकी तैसीही स्त्री रही शुश्रा  
सूँ पीडित होनेसे समस्त अङ्गनकरि कुशित और अन्न प्राप्त होय ताय पतिकूँ परोसिदेई आप भूखी रहिजाय ७ बहुत दुःखित और भयकै मारे थर थर कापै ऐसी जो पतिव्रता स्त्री है सो दरिद्री जो  
पतिहै ताके समीप आयकै बोलाति भई ८ हे ब्राह्मण ! साक्षात् लक्ष्मीके पति ब्रह्मभक्त शरणगतके पाठक यादवनमें श्रेष्ठ जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो तुम्हारे सखा सुने हैं ९ अहो वड्ढागी  
ब्राह्मण ! साधुनकूँ परमयाश्रय जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पास तुम जाओ दु खित कुटुम्बी जो तुमहो तिनैं बहुत सों द्रव्य देखोगे १० भोज घृणिण अन्यक्त ये यादवन के गोत्रहैं तिनके ईश्वर जो श्री  
कृष्णचन्द्र हैं सो अन्न द्वारकापुरी में है वे चरणकरल के स्मरण करनवारे कूँ आत्मापर्याप्त देय हैं ११ जगत् के गुरु जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो भजन करनवारे अपने भक्तन कूँ परिणाम में दुःखरूप

ऐसो जो धन और विषय इनको देनो कछु बहुत नहीं है या प्रकार कोमल वचनन सँ खीने बहुत प्रार्थना करी तब तो सुदामा ब्राह्मण उत्तम है यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन होयगो यह बड़ो लाभ है १२ या प्रकार मनमें विचार करिके जायये की इच्छा करत भये कि हे मंगलरूपिणी ! तेरे घरमें कछु भेटदेवेकू होय तो दे खाली हाथ कैसे जाऊं ? ३ तब सुदामा की ली काहू परोसी ब्राह्मण के घरते चारिमुट्ठी चावल मागिके कपड़ा की चीरमें बांधिके सुदामाकू श्रीकृष्ण के लिये भेंट देति भई १४ ब्राह्मणन में श्रेष्ठ जो सुदामा है सो चावलन कू लैके श्रीकृष्ण को दर्शन मोकू कैसे होयगो ऐसे विचार करत द्वारकापुरी में जात भये १५ द्वारकाके ब्राह्मण हैं सङ्ग जाके ऐसो जो सुदामा ब्राह्मण है सो तीन चौकी उल्लयन करिके और तीन छयोदीनकू उल्लयन करिके जिनके पास काहूके जानेकी सामर्थ्य नहीं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को ही है धर्म जिनके ऐसे जे अन्धक टुपिण यादवनके घर हैं १६ तिन घरन के बीचमें सोलह हजार श्रीकृष्णचन्द्र की रानीनके घरमें सँ एक जो सुन्दर घर है तामें सुदामा प्रवेश करत भयो ता समय ब्रह्मकी प्राप्तिमें जो आनन्द प्राप्त होय तैसे आनन्द कं पावत ययो १७ प्यारी रुक्मिणी की शय्या के ऊपर विराजमान जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो दूर ते

संचिन्त्य मनसा गमनाय मतिन्दधे ॥ अप्यस्तु पायनं किञ्चिद्गृहे कल्याणि दीयताम् १३ याचित्वा चतुरो मुष्टीन् विभान् पृथु कृतगुलान् ॥ चैलखण्डेन तान् बद्धा भर्त्रे प्रादादुपायनम् १४ सतनादाय विप्राग्रयः प्रययौ द्वारकां किल ॥ कृष्णसंदर्शनं भवं कथं स्यादिति चिन्तयन् १५ त्रीणि गुल्मान्यतीयाय तिस्रः कक्षाश्च सद्भिजः ॥ त्रिप्रोऽभ्यन्वकवृष्णीनां गृहेष्वच्युतधर्माणि १६ गृहं द्वयष्टसहस्राणां महिषीणां हरेर्द्विजः ॥ विवेशैकतमं श्रीमद्रह्यानन्दं गतो यथा १७ तं विलोक्याच्युतो दूरात् प्रियापथ्यं क्लृप्तास्थितः ॥ सहस्रोत्थाय चाभ्येत्य दोभार्थं पर्यग्रहीन्मुदा १८ सख्युः प्रियस्य विप्रैर्धनं सङ्गातिनिर्धनः ॥ प्रीतोऽप्यमुञ्चद विव्रन्दून् नेत्राभ्यां पुष्करेक्षणः १९ अथोपवेश्य पर्यङ्के स्वयं सख्युः समर्हणम् ॥ उपहृत्या वनिज्यास्य पादौ पादावनेजनीः २० अग्रहीच्छिरसारा राजन् भगवा ल्लोकपावनः ॥ व्यलिम्पद्दिव्यगन्धेन चन्दनागुरुकुङ्कुमैः २१ धूपैः सुरभिभिर्भिन्नं प्रदीपावल्लिभिर्भुदा ॥ अर्चित्वा वेद्यानाम्बूलं गात्रस्वागतसन्नरीत् २२ कुर्वैलं मलिनं क्षामं द्विजन्धमनिस्तनतम् ॥ देवीपर्यचरत्साक्षात्पराव्यजनेन वै २३ अन्तःपुरजनोदृष्ट्वा कृष्णेनागलकीर्तिना ॥ विरिमतो भूदतिप्रीत्या

देखिके शीघ्र डाढिके आयकै भुजा पसारिके बड़े आनन्दपूर्णक सुदामाजी सँ मिलत भये १८ प्यारे सखा जो सुदामा ब्राह्मण हैं तिनके मिले ते अति आनन्दपूर्णक प्रसन्न भये ऐसे जो कमलदल लोचन श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके नेत्रन सँ आसून की बूंदें टपकती भई १९ हे राजन् परीक्षित ! लोकरन के पवित्र करनचारे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सुदामा सँ मिलिके पलंग के ऊपर बैठा य कै सखा जो सुदामा हैं तिनकू भेंट दैके चरण धोइके धोवन जो जल है ताथ अपने शिरपै चढ़ावत भये और दिव्य गन्ध चन्दन अगर केसर इनकू सुदामाजी के लगावत भये २० । २१ श्रेष्ठगन्धयुक्त धूपदीनी और बराबरि दीपक वरायकै धरि दिये बड़े आनन्द तें भिन्न जो सुदामा हैं तिनकी पूजा करिके ताम्बूल की बोरी दैके सम्मुख ठाढ़ो करिके भिन्न भल्ले आये ऐसे कहत भये २२ फटे मलिन वस्त्र पहिरे और कृशित अंग में नसँ जाके निकसिरहँ ऐसो जो सुदामा ब्राह्मण है ताथ साक्षात् देवी रुक्मिणी है सो चमर ढोरिके पखा करिके सेवा करति भई २३ निर्मल

है कीर्ति जिनकी ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने पूसन्नतापूर्वक सत्कार जाको कथ्यो ऐसो जो अवधूत सुदामा है ताय देखिके अन्तःपुर के वासी जन आइचर्य मानत भये २४ भिन्नाको मांग-  
नवारो अवधूत याही तें निन्दित अधम शोभाहीन ऐसे या सुदामा ने या संसारमें कौन पुरय करे हैं २५ जैसे वड़े भय्या बलदेवजी तें मिले तैसे त्रिलोकी के गुरु लक्ष्मी जिनके अंगमें वास  
करे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शय्या के ऊपर बैठी रुक्मिणी कूं त्यागिके याम् आयकें मिले २६ हे राजन् परीक्षित ! सुदामा और श्रीकृष्णचन्द्र दोनों परस्पर हाथ पकरिके पहलेही गुरुकुल में जब  
वास करथो हो तब की अपनी ललित वात कहत भये २७ अत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बोले हे धर्म के जाननवारो ! हे ब्राह्मण ! दक्षिणा जिनने पाई ऐसे जे श्रीगुरु हैं तिनके पास तें जग तुम  
विद्या पढिके आये तब से तुमने अपनी बराबरि की स्त्री व्याही कि नहीं व्याही कछु विचार करिये के चिह्न दिखाई देइहैं और बलु विषयादिकन के भोग दिखाई नहीं देइहैं यातें न भयो होइगो  
यह सन्देह है २८ हे विवेकी मित्र सुदामा ! तुमशरो चित्त विषयन करिके बहुधा चलायमान नहीं है यह मैं जानूँ तैसेही घरन में बह्मादिकन में तुम अत्यन्त पूसन्न नहीं हो विवेकी हो तुमकूं ऐसो

अवधूतंसभाजितम् २४ किमनेनकृतं पुरयमवधूतेनभिषुणा ॥ श्रियाहीनेनलोकेऽस्मिन् गहिंतेनाधमेनच २५ योऽसौत्रिलोकगुरुणा श्रीनिवासेनसम्भू-  
तः ॥ पर्यङ्गस्थांश्रियंहित्वा परिष्वक्तोऽप्रजोयथा २६ कथयाञ्चकतुर्गाथाः पूर्वगुरुकुलेसतोः ॥ आत्मनोललिताराजन् करौगृह्यपरस्परम् २७ ॥ श्रीभ-  
गवानुवाच ॥ अपिब्रह्मन्गुरुकुलाद्भवतालव्यदक्षिणात् ॥ समावृत्तेनधर्मज्ञभार्योदासदृशीनवा २८ प्रायोगेहेपुतेचित्तमकामविहतेतथा ॥ नैवातिथीयसे  
विद्वन्धनेपुविदितंहिमे २९ केचित्कुर्वन्तिकर्मभाणि कामैरहतचेतसः ॥ त्यजन्तःप्रकृतीर्देवीर्यथाऽहंलोकासंग्रहम् ३० कश्चिद्गुरुकुलेवासं ब्रह्मन्स्मरसि  
नौयतः ॥ द्विजोविज्ञायविज्ञेयं तममःपारमश्रुते ३१ सवैसरर्म्मणांसाक्षाद्विजोतेरिहसम्भवः ॥ आद्योऽङ्गयत्राऽऽश्रमिणां यथाऽहंज्ञानदोगुरुः ३२ नन्य  
र्थकोविदाब्रह्मन् वणाश्रमवतामिह ॥ येमयागुरुणावाचातरन्त्यञ्जोभवाण्यवम् ३३ नाहमिज्याप्रजातिभ्यां तपसोपशमेनवा ॥ तुष्येयंसर्वभूताहमागुरुशु

ही योग्य है २९ जो वदाचित् कहो कि चाहना नहीं तो घरमें रहिये तें कहा प्रयोजन है ताके उत्तर श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं—जैसे मैं ईश्वर लोकन के सिखायवे के लिये कर्म करूँ तैसेही ईश्वर  
की मायाने रची जे विषयवासना हैं तिनें त्यागिके कामना करिके नहीं हैं चलायमान मन जिन के ऐसे भी कोई पुरुष कर्मन कूं करे हैं ३० हे ब्राह्मण ! हम तुम जब गुरुके घरमें जायकें रहैत तब  
को कभकं स्मरण करो, हो कि नहीं जिन गुरुतें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य जानिये योग्य जो आत्माको स्वरूप है ताय जानिके पुरुष संसार तें छुटिजात है ३१ या संसारमें जहां जन्म लेइ है वह  
पिता पृथम गुरुहैं और फेरि जो यज्ञोपवीत करिके वेद पढ़ावे सन्याया गायत्री सुन्दर कर्म सिखावै वह दूसरो गुरुहैं जैसो मो ईश्वरकूं पूजे तें पिता गुरु तें या दूसरे गुरुकूं पूजे और ब्रह्मचारी दृहस्य  
नानपस्य संन्यासी ये चारथो आश्रमी हैं इन सबकूं ज्ञान देनवारो जो गुरुहैं सो साक्षात् मैं हूं ३२ जे पुरुष मनुष्य जन्म घारण करिके गुरुरूप जो मैं हूं ताके उपदेश तें संसारलुपी समुद्र के पारजगे  
हैं हे ब्राह्मण सुदामा ! वे पुरुष ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इन चारि वर्णन में और ब्रह्मचारी दृहस्य वानप्रस्थ संन्यासी इन चारथो आश्रमन में हैं तिनके मध्य में अर्थ मैं निपुण मैं हूं ३३ ज्ञानके

देनचारे जो गुरु हैं तिनमें अधिक और सेवा लायक कोई नहीं है याही तें तिन गुरुन के भजनतें और कोई अधिक धर्म नहीं है समस्त प्राणीन को आस्था जो मैं हूं सो यज्ञ करिवो गुरुस्थ को धर्म और ब्रह्मचारी को धर्म इन करिके और तप करिवो वानप्रस्थको धर्म और शान्ति संन्यासी को धर्म इन सब करिके सन्तुष्ट नहीं होऊँहूँ जैसो गुरुभी सेवा करे तें तुष्ट होऊँहूँ ३४ हे ब्राह्मण ! जब गुरुन के समीप जायकें वसे हैं तब को स्मरण आवै है इन्ग्रन लाइने के निमित्त एकसमय गुरुकी स्त्रीने कहीरही तब हमतुम एकवड़े वनमें गयेरहै ३५ ता समय ऋतुके विनाबड़ी भयङ्कर पवन चलीरही मेघ वर्षा कठोर गर्जनि भई ३६ तबताई सूर्य अस्त होय गयो चारों ओर दिशानमें अन्धकार छाया रह्यो जल दृष्टिपरै ऊँचो नीचो कलुन दिखाई दियो ३७ बार बार पवन चली जल वर्षे तिनमें हम अतिदुःखित भये दिशानमें भूलि गये चारखो ओर जलही जल जायें होय गयो ऐसे वनमें आपसमें हाथ पकरिके आतुर होयकै लकड़ीके चोभनहुँ शिर श्रृपयायथा ३४ अपिनः स्मर्यते ब्रह्मन् वृत्तं निवसतां गुरौ ॥ गुरुद्वारैश्चोदितानामिन्धनानयेनैकचित् ३५ प्रविष्टानां महारण्यमपत्तौ सुमहद्विज ॥ वातव

र्षमभूत्तीव्रं निष्ठुरास्तनयिलत्रः ३६ सूर्यश्चास्तंगतस्तावत्तमसाच्चावृतादिशः ॥ निम्नंकूलजलमयं न प्राज्ञायतकिञ्चन ३७ वयंभृशंतत्रमहानिलाम्बु भिर्निहन्यमानामुहुरम्बुसंक्ष्वे ॥ दिशोऽविदन्तोऽथपरस्परंवेनेगृहीतहस्ताः पविश्रिमातुराः ३८ एतद्विदित्वाउदितैरवौसान्दीपनिगुरुः ॥ अन्वेपमाणो नः शिष्यानां चाग्योऽपश्यदातुरान् ३९ अहोहेपुत्रकायूयमस्मदर्थेऽतिदुःखिताः ॥ आत्माधैप्राणिनां प्रेष्ठस्तगनाद्वत्यमत्पराः ४० एतदेव हि सन्निध्वयैः कर्त्तव्यं गुरुनिष्कृतम् ॥ यद्वै विशुद्धभावेन सर्वार्थात्मापणं गुरौ ४१ तुष्टोऽहं भोजि श्रेष्ठः सत्याः सन्तुमनोरथाः ॥ छन्दांस्ययातयामानि भवन्ति वहपरत्र च ४२ इत्थं विधान्यनेकानि वसतां गुरुश्रेष्ठमसु ॥ गुरोर्नुग्रहेणैव पुमान्पूर्णः प्रशान्तये ४३ ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ किमस्माभिरनिर्वृत्तं देवदेवजगद्गुरो ॥ भवतासत्यकामेन येषां वासो गुरावसूत ४४ यस्य च्छन्दोमयं ब्रह्मदेह आवपनं विभो ॥ श्रेयसांतस्य गुरुपु वासोऽत्यन्तविडम्बनम् ४५ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे श्रीदामचरितेऽर्शातितमोऽध्यायः ८० ॥

वै धरे होलतभये ३८ सान्दीपनि जो गुरु आचार्य हैं सो बालक शिष्य इन्धन लेवेकू गये हैं यह वात जानिके प्रातःकाल जब सूर्य उदय भयो तब हम शिष्यनकूँ हूँइत हँइत वन में गये है ता समय लकड़ीन के चोभ करियै धरे वल्ल जिनके भीजि गये ऐसे दुःखित जो हम हैं तिन देसत भये ३९ ता समय कृपा करिके तीन श्लोक के तिनमें हम कृतार्थ होयगये हे पुत्रो ! तुम हमारे छिये बहुत दुःखित भये प्राणीनकूँ देह बहुत प्यारो है ताको निरादर करिके हमारी सेवा करखो ४० सत्पात्र शिष्यन कू याही प्रकार गुरुन की सेवा करनी योग्य है शुद्ध भावना करिके धर्म अर्थ काम मोक्ष ये चारखो पदार्थ जानूं प्राप्त होई ऐसे देह कूँ गुरुके अर्पण करि देय ४१ हे द्विजनमें श्रेष्ठो ! तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्न भयौ हूं तुम्हारे मनोरथ सत्य होयें तुमने भोतें जो वेद पढ़ैं ते या लोक और परलोकमें नहीं गयो है सार जिनको ऐसे अर्थीव नवीन पढ़े याद वनेरहैं ४२ गुरुनके घरमें वसे जे हम हैं तिनके ऐसे ऐसे अनेक चरित्र हैं गुरुन की कृपा करिके पुरुष ते पूर्ण मनोरथ होयकै





भोजन करिके और दूसरी मुट्ठी जब मारी तभी श्रीकृष्णपरायण जो रुक्मिणी है सो परमेष्ठी श्रीकृष्ण को हाथ पकरि कै कहति भई कि मित्र के घरकी वस्तु आपुही भोजन करि ज उगे कछु हमकुं भी रहन देउगे एक तो यातें आय के हाथ पकरयो दूसरो कारण आगे कहे हैं १० हे विश्व के आत्मा ! एक मुट्ठी चावल भोजन करिके सम्पूर्ण विश्व की सम्पत्ति याकुं देबुके और दूसरी मुट्ठी भोजन करिके कहा पोकुं देबुकीगे यह लोक और परलोक में तुम्हारे संतुष्ट भये तेही पुरुषकुं सम्पत्ति प्राप्त होय हैं ११ ब्राह्मण सुदामा वा राजिकुं श्रीकृष्णचन्द्र के मन्दिर में रहिके भोजन करिके जल पीके मानों स्वर्ग में आयो हूं ऐसे अपने कुं पानिके सुख मानत भये १२ हे राजन् परीक्षित ! प्रातःकाल जब भयो तब विश्व के पालन करनेवारे आत्मा के आनन्द में मग ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सुदामा कुं प्रणाम करिके मार्ग में पहुँचावनकुं संग पीछे पीछे आवत भये और मित्र सुदामा तुमने यलो दर्शन दियो ऐमे अधीनता के वचन सँ आनन्द जिनकुं दियो ऐसे सुदामा अपने घरकुं आवत भये १३ सुदामा कुं जब घन नहीं मिलयो तब मोकुं घन देव ऐसे श्रीकृष्ण तें न कहत भयो वड़े जो श्रीकृष्ण हैं तिनके दर्शनतें आनन्द जिनके भयो ऐसे सुदामा लज्जित होय

जंगुदेहस्नं तरपरापरमेष्ठिनः १० एतावताऽलं विश्वात्मन् सर्वसम्पत्समुद्भये ॥ अस्मिँल्लोकेऽथवाऽमुष्मिन् गुप्तं स्वत्त्वोपकारणम् ११ ब्राह्मणस्तां नुरजनीसु पितराऽव्यु नमन्दिरे ॥ भुक्त्वा पीत्वा सुखं मेने आत्मानं स्वर्गं तं यथा १२ रवो भूने विश्वभावेन स्वमुखेनाभिवन्दितः ॥ जगाम स्वालयं तात पथ्यनुब्रज्य नन्दितः १३ सत्रालब्ध्वा धनं कृष्णान्नतुयाचितवान् स्वयम् ॥ स्वगृहान्नन्नीडितोऽगच्छन् महदर्शनं निर्वृतः १४ अहो ब्रह्मण्यदेवस्य दृष्टा ब्रह्मण्यनामया ॥ यद्वरि द्रनमोलक्ष्मीमाश्लिष्टे चित्रतोरसि १५ काहं दरिद्रः पापीयान् कृष्णः श्रीनिकेतनः ॥ ब्रह्मवन्द्यरिति स्माहं बाहुभ्यां परिभिन्नः १६ निवासितः प्रियाजुष्टे पथ्यं द्वातरो यथा ॥ माहिष्यावीजितः श्रान्तो बालव्यजनहस्तया १७ शुश्रूषया परमया पादसंवाहनादिभिः ॥ पूजितो देवदेवेन विप्रदेवेन देवयत् १८ स्वर्गमा पवर्गभयोऽंशुं रसायां भुवि सम्पदाम् ॥ सर्वसा मापि सिद्धिनां मूलं तच्चरणार्चनम् १९ अधनोऽयं धनं प्राप्य गद्यञ्चर्चनं मां स्मरेत् ॥ इति कारुणिको नूनं धनं मे भूरिनाददात् २० इति तच्चिन्तयन्नन्तः प्राप्सो निजगृहान्ति क्रमम् ॥ सूर्या न लेन्दुसङ्काशौ विमानैः सर्वतो वृतम् २१ विचित्रोपवने द्यानैः कूजद्विजकुलाकु

अपने घरकुं जात भये १४ अहो वड़ो आश्चर्य है ब्राह्मण की भक्ति करनेवारेन के देवता श्रीकृष्णचन्द्र की ब्रह्मणिके मैंने देखी लक्ष्मी कुं छाती में धारण करनेवारे श्रीकृष्ण हैं सो दरिद्री जो मैं सुदामा हूं तामुं छाती लगायके मिले १५ दरिद्री पापी ऐसो ब्राह्मण मैं कहां और लक्ष्मी जिनके अंग में वास करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तहां पोयें उनमें वड़ा अन्तर है सो भुजा पसारिके मोसुं मिले १६ जैसे बलदेवजी कुं बैठवें ऐसे रुक्मिणी जायें बैठी वा पलंगके ऊपर मोकुं बैठाय लियो मार्ग की परिश्रम जाके भयो ऐसो जो मैं हूं ताकुं चपर है हाथ में जाके ऐसी रुक्मिणी पै पंखा दूरवायो १७ वड़ी सेवा करिके पावन को दानो घोवनो पोछनो इत्यादिक जें सत्कार हैं तिन करिके देवन के देव ब्रह्मदेव श्रीकृष्णचन्द्र ने देवतान की पूजा करें ऐमे मेरी पूजा करी १८ जे मुक्त हैं तिनकुं और पुत्र की तया रसातल की सम्पत्तिन कुं और सम्पूर्ण सिद्धिज कुं श्रीकृष्णके चरणारविन्द को पूजन है सोई कारण है अर्थात् श्रीकृष्ण के चरण कमल की पूजा करै तब पदार्थ

मिलें दरिद्री जो सुदामा है सो धन पायकें बहुत मतधरो होयकै गोकुं शूलि जायगो या कारण करुणावाञ्छ श्रीकृष्ण गोकुं यतिकिञ्चित् भी धन न देत भये १६ । २० या प्रकार सुदामाजी मनमें विचार करत अपने घरके पास आवत भये कैसो घर को समीप है ताको वर्णन करै हैं सूर्य अग्नि चन्द्रमा की तुल्य जिनको प्रकाश ऐसे चारोओर विमान धरे हैं २१ चित्र विचित्र वर्गीचा लागिरे है तिनमें पत्नीन के झुड के झुंड बोलि रहे हैं फूले हैं कुमुद अम्भोज कटार उत्पल जिनमें ऐसे जल हैं २२ और शृङ्गार करे पुरुष और हिरन कैसे हैं नेत्र जिनके ऐसी स्त्री जहा तहां डोले हैं ऐसी शोभा देखिकै और विमानन को प्रकाश देखिकै आश्चर्य मानिकै यह कहा है कौनको स्थान है फेरि विचारत भये कि यह तो हमारोही राहिये को स्थान है कैसो होय गयो या प्रकार ऐसे बड़भागी जे सुदामा है तिनकुं देवतान की तुल्य है शोभा जिनकी ऐसे स्त्री पुरुष गावत बजावत सम्मुख लिवायेव क आवत भये २३ । २४ पतिकुं आये सुनिकै भयो है आनन्द और हस्वराहट जाके ऐसी जो सुदामा की स्त्री है सो जैसे साक्षात् रूप धरिके कमल वनमें तें लक्ष्मी निकसे या प्रकार जलदीहीते घर ते बाहर निकसति भई श्रीकृष्णचन्द्र स्वर्ग कूं सुदामाके मइल में लाये याते सुदामा और

लैः ॥ प्रोफुल्लकुमुदाम्भोजकह्लारोत्पलवारिभिः २२ जुष्टं स्वलंकृतैः पुम्भिः स्त्रीभिश्च हरिणाक्षिभिः ॥ किमिदं कस्य वा स्थानं कथं नदिदमित्यभूत् २३ एवंमी मांसमानंतं नरानार्योऽमरप्रभाः ॥ प्रत्यगृह्णन्महाभागं गीतवाद्येन भृगुसा २४ पतिमागतमाकर्ण्य पत्न्युद्धर्पाऽतिसंभ्रमा ॥ निश्चक्रामगृहाक्षूर्णं रूपिणी श्रीरिव लयात् २५ पतिव्रतापतिदृष्ट्वा प्रेमोत्फुरताऽश्रुलोचना ॥ भीलिताक्षग्नमदबुद्ध्या मनसापरिपस्वजे २६ पत्नीर्वीक्ष्य विस्फुरन्ती देवीवैमानिकीमिव ॥ दासीनानिष्ककण्ठीना मध्ये भान्तीं सविस्मितः २७ प्रीतः स्वयंतया युक्तः प्रविष्टो निजमन्दिरम् ॥ मण्डिस्तम्भशतोपेतं महेन्द्रभवनं यथा २८ पयः केन निभाः शय्यादान्ता रुक्मपरिच्छदाः ॥ पथङ्काहेमदण्डानि चामरव्यजनानि च २९ आसनानि च हेमानि मृदू पस्तरणानि च ॥ मुक्तादामा विलम्बीनि वितानानि शुमानि च ३० स्वच्छस्फटिककुडयेषु महामारकतेषु च ॥ रत्नदीपाञ्जना लल्ललनारत्नसंयुतान् ३१ विलोक्य ब्राह्मणस्तत्र समृद्धाः सर्वसम्पदाश्च ॥ त

सुदामा की स्त्री दोनों देवस्वरूप होय गये २५ प्रेम करिकै चाहना जाके भई नेत्रन में आंसू आगये ऐसी पतिव्रता जो सुदामा की स्त्री है सो पतिकुं आये देखिकै नेत्र मूंदिकै बुद्धि करिकै विचार करति भई कि नमस्कार करिवो योग्य है ऐसे निश्चय करिकै मन सूँ आलिङ्गन करत नमस्कार करति भई २६ जैसे विमान में बैठी देवी प्रकाश है ऐसे धुरधुकी है कण्ठ में जिनके ऐसी दासीन के मध्य में प्रकाशमान अपनी स्त्री कूं देखिकै सुदामाजी आश्चर्य मानत भये २७ प्रसन्न होयकै ता स्त्री कूं सद्ग लोक अपने मन्दिर में धसत भये कैसो मन्दिर है सैकडन मण्डिन के स्तम्भ जामें लगे मानों इन्द्रको भवन है २८ दूध के रवेत भगन की तुल्य कोमल रवेत विखौना जिनपै विखे ऐसे हाथीदाँत के सोने से जटित पलंग जा मन्दिर में विखे हैं और सरण की डाढ़ी जिनमें ऐसे चमर पखा धरे हैं २९ कोमल हैं विखौना जिनमें ऐसी सुवर्ण की चौकी विखी हैं मोतिन की माला जिनमें लटकैं ऐसे प्रकाशमान चंदोवा तनि रहे हैं ३० निर्मल स्फटिक मण्डिन की भीतैं वनी हैं तिनमें और महामरकतमण्डिन की भीतैं हैं तिनमें खीरवसहित जा मन्दिर में रत्नके दीवा प्रकाशित हैं ३१ ता मन्दिर में सब सम्पत्तिन की वृद्धि देखिकै स्थिर होयकै अक-

स्मात् भई जो अपनी सम्पत्ति है सो कहां तें आई ऐसे विचार करत भये ३२ सदाको दरिद्री भाग्यहीन जो मैं हूं ताके वढ़ो है वैभव जिनके ऐसे यादवन में उत्तम जो श्रीकृष्णचन्द्र है तिनकी चितवनि विना निश्चय और कोई या सम्पत्ति को कारण नहीं है ३३ जो कृष्ण ने चितवनि करिकै वही जो सम्पत्ति दीनी है सो मैं तोकूं देखूं हूं यह क्यों न कहि दीनी तहां सुदामा कहे हैं पूर्णमनोरथ लक्ष्मी के पति यातें बहुत हैं भोग जिनके ऐसे दशावयवोत्पन्न श्रेष्ठ जो भरे सखा श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो मागनवारे पुरुषन कूं कहे विनाही बहुत सों धन देखें हैं आप देवे लायक जो वस्तु है ताथ मेधकी तुल्य देखे हैं यामें तात्पर्य कहा निकस्यो जैसे सम्पूर्ण कूं भरि देइ ऐसो जो उदार मेध है सो कभज एक बहुत वर्षा कूं थोड़ी मानिकै लाज के मारे दिनमें नहीं बरसे किन्तु रातिमें वर्षा करिके वाके खेत कूं डुबाय देय है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हू भोग वैभव के आगे ताभक्त के देवे लायक जे इन्द्रादिक पद हैं तिनें तुच्छ मानिकै और ता भक्त के भजन कूं बहुत मानि कै वाके विना कहेही बहुतसी सम्पत्ति देखें हैं ३४ आप बहुत देखें ताथ थोड़ो माने हैं और सुहृदन के थोड़े दिये को भी बहुत माने हैं मैं चावलनकी एकमुट्टी लोगो ताथ महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र मसन

कैयामासनिर्व्यग्रः स्वसमृद्धिमहेतुकीम् ३२ नूनंवैतैतन्ममहुर्मगस्य शश्वदरिद्रस्यसमृद्धिहेतुः ॥ महाविभूतेस्वलोकतोऽन्योनैवोपपद्येतयदूतमस्य ३३ नन्ववृषाणोदिशतेसमक्षं याचिष्येभूर्यपिभूरिभोजः ॥ पर्जन्यवत्तत्स्वयमीक्षमाणोदाशाहंकाणामुपभःसखामे ३४ किञ्चित्करोत्युर्वीपयस्वदत्तं सुहृत्कृतंफलं त्रयपिभूरिकारी ॥ मयोपनीतं पृथुर्कैकमुष्टिं प्रत्यग्रहीत्प्रीतियुतो महात्मा ३५ तस्यैवमेसौहृदसख्यमैत्रीदास्यं पुनर्जनमनिजन्मनिस्यात् ॥ महाऽनुभावेन गुणालयेन विपज्जतस्तत्पुरुषप्रसङ्गः ३६ भक्तायचित्राभगवान्हिमम्पदोराज्यं विभूतीर्नसगर्ह्यत्यजः ॥ अदीर्घवोधायविचक्षणः स्वयं पश्यन्निपातंधनिनामदोद्भवम् ३७ इत्थं व्यवसितो बुद्ध्या भक्तोऽतीव जनार्दन ॥ विपयाज्ञायतायत्यक्ष्यन् बुभुजेनातिलम्पटः ३८ तस्यैवैदेवदेवस्य हरेर्यज्ञपतेः प्रभोः ॥ ब्राह्मणाः प्रभवो देवं न तेभ्यो विद्यते परम् ३९ एवं सविप्रो भगवत्सुहृत्तदा दृष्ट्वा स्वभृत्यैरजितं पराजितम् ॥ तच्छानेव गोदश्रयि तात्मन्वधनस्तच्छामलेभेऽचिरतः सतां

होयकै लेत भये ३५ श्रीकृष्णको भक्तन पै हित देखिकै तिनकी भक्ति कूं मागे है श्रीकृष्णचन्द्र मूं मेरो प्रेम सख्यभाव मित्रता दास्यभाव जन्म जन्ममें होउ और मोकूं कछु धन दौलत नहीं अपेक्षित है वढ़ो है भाव जिनको और सम्पूर्ण हैं गुण जिनमें ऐसे श्रीकृष्णको और तिनके भक्तन को सत्सङ्ग होय ३६ क्यों जी भक्तिको फल सम्पत्ति पायकै फेरि क्यों भोगो हौ तहां सुदामा कहे है प्यारो है ज्ञान जाकूं ऐसे भक्तकूं भगवान् श्रीकृष्ण अनेक प्रकार की सम्पत्ति नहीं देइ हैं ऐश्वर्य स्त्री पुत्रादिक नहीं देइ हैं क्यों भगवान् विवेकी हैं भक्त अज्ञानी हैं धनवान् पुरुष कूं नरक होय है यह आप देखें हैं भरे भक्ति नहीं रही यातें सम्पत्ति भई है यातें उनकी भक्ति मैं मांगूं हूं ३७ या प्रकार बुद्धि मूं निश्चय जाने कियो और श्रीकृष्णको अत्यन्त भक्त ऐसो सुदामा है सो विपयन कूं सहजमें त्यागिने को अभ्यास करत स्त्री के सङ्ग भोग करत भयो विपयन में अति आसक्त नहीं होत भयो ३८ श्रीकृष्णचन्द्र ब्रह्मभक्त है यामें कुछ आश्चर्य नहीं यह कहे हैं देवन के देव पाप के हरनवारे यज्ञ के पति समर्थ ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके ब्राह्मणन को भाव है तथा स्व देवता हैं तित ब्राह्मणन तें परे और कोई देवता नहीं है ३९ या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को मित्र जो सुदामा ब्राह्मण है सो और नै



भये बढ़ा है तेज जिनको सुवर्ण की माला और दिव्य फूलनकी माला वस्त्र धारण करे ऐसे जे यादव हैं ते देवतानके विमान की तुल्य है प्रकाश जिनमें ऐसे रथनमें और जलकी तरङ्ग जैसे उठे ऐसी है चाल जिनकी ऐसे वोड्डान पै और वादन कीसी है कान्ति जिनकी ऐसे शब्द करते हुये हाथीन के ऊपर विद्याधरन कीसी है कान्ति जिनकी ऐसे सिंघाहीन सहित मार्ग में ऐसे देवाङ्गनान सहित आकाश में देवता सुन्दर लगे हैं ऐसे सुन्दर लगतभये बढ़ो है भाग्य जिनको बहुत सावधान ऐसे यादव कुरुक्षेत्र में व्रत स्नान करिके ७। ८। ९ वस्त्र और फूलन की माला सुवर्ण की मालान कूं पहिरे ऐसी गौ ब्राह्मणन कूं दान करिके देतभये यादव हैं ते परशुरामजी ने करे जे सरोवर हैं तिनमें और दिन अथवा बाही दिन फिर स्नान करिके १० श्रीकृष्णचन्द्र में हमारी भक्ति होय यह सङ्कल्प करिके ब्राह्मणन ने आज्ञा जिन कूं करी ऐसे कृष्णही हैं देवता जिनके ऐसे जे यादव हैं ११ ते आय यथेच्छा भोजन करिके शीतल है छाया जिनकी ऐसे वृत्तन के नीचे बैठत भये ता कुरुक्षेत्र में आय जे सुहृद् सम्बन्धी नाते गोते के राजा हैं तिनें देखत भये १२ कौन कौन

भागा उपोष्य सुसमाहिताः ६ ब्राह्मणेभ्यो ददुर्बेनूर्वासः सशुक्रममालिनीः ॥ रामहृदपुत्रिविधित्युनराप्त्यवृणयः १० ददुःस्वन्नोद्विजाग्रयेभ्यः कृष्णेनोभक्तिरस्तिवति ॥ स्वयञ्चतदनुज्ञातावृणयः कृष्णदेवताः ११ भुक्त्वोपविविशुः कामं स्निग्धञ्छायाङ्घ्रिपाङ्घ्रिपु ॥ तत्राऽऽगतां स्तेददृशुः सुहृत्सम्बन्धिनो नृपा न् १२ मत्स्योशीनरकौ सत्यविदर्भकुरुमृज्यान् ॥ काम्वोजकेकयाचमद्रान् कुन्तीनानत्ते करलान् १३ अन्योश्चैवाऽऽत्मपक्षीयान् परांश्च शतशो नृप ॥ नन्दादीन् सुहृदो गोपां गोपीश्रोतकण्ठिताश्चिरम् १४ अन्योऽन्यसंदर्शनहर्परहसा प्रोत्सृष्टहृदकसरोरुहश्रियः ॥ आश्लिष्य गार्होदयनैः स्रजजलाह्वयत्न चोरुद्धगिरो ययुर्मुदम् १५ स्त्रियश्च संवीक्ष्य मिथोऽतिसौहृदस्मितामलापाङ्गदृशोऽभिरेभिरे ॥ स्तनैः स्तनान् कुङ्कुमपङ्कूरूपितान् निहत्य दोर्भिः प्रणयाश्रुलोचनाः १६ ततोऽभिवाद्याने वृद्धान् यविष्ठैरभिवादिताः ॥ स्वागतं कुशलं पृष्ट्वा च कुङ्कण कयां मिथः १७ पृथाभ्रातृन् स्वमूर्वीक्ष्य तत्पुत्रान् पितरावपि ॥ भ्रातृ

राजा हैं तिनको नाम लेय हैं मत्स्यदेश उशीनर कौसल विदर्भ कुरु सृजय काम्वोज केकय मद्र कुन्ती आनर्त केरल इन देशन के राजान कूं १३ और अपनी ओर के राजा हैं तिन कूं और सैकरान राजा हैं तिन कूं हे राजन् परीक्षित्! सम्पूर्ण यादव देखत भये और नन्दजी सँ आदि लैं जे जो हितकारी गोप हैं तिनें और बहुत दिनतें कृष्णदर्शन की चाहना जिनके लगि रही ऐसी जे गोपी हैं तिनें देखत भये १४ परस्पर दर्शन जो भयो तासू जो आनन्द उमड़यो तासूं फूले हैं हृदय और मुत्तकमल जिनके ऐसे जो यादवन के भले प्रकार मिलिके नेत्रनमें तें आंसू बहे और देहमें रोमांच होय आये कण्ठ रुक गये या प्रकार बहुत आनन्द कूं पावत भये १५ अस्यन्त स्नेह करिके जो मुसिकानि तासूं निर्मल है कटाक्ष करिके टपि जिनकी और स्नेहके आसू हैं नेत्रन में जिनके ऐसी स्त्री हैं ते स्त्रीन कूं देखिके केसर जिन में लगी ऐसे स्तनन कूं स्तननतें लगायकें भुजान तें आपुस में मिलति भई १६ छोटिन ने दण्डयव जिनकूं करी ऐसे जे यादव है ते वृद्धन कूं प्रणाम करिके भले आये प्रसन्न हो ऐसे कुशल पूछि है आपुसमें कृष्णकी कथा कूं पूछत भये १७ कुन्ती है सो भय्या बहिनि यतीजे माता और भव्यान की स्त्री इन सबकूं

देविकै और मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र कूँ देखिके आपुस में प्रेम की बात चीत करिके नेत्रनतें आंसूनकूँ छोड़ति भई १८ अब कुन्ती बोली हे श्रेष्ठ भटया ! नहीं भये हैं पूर्ण मनोरथ जाके ऐसी मैं आत्मा कूँ मादूँह जो कारण ते आपत्ति परे हैं तब श्रेष्ठ जो तुम हो सो मेरी बातको स्मरण भी नहीं करो ही १९ जाको देव सृष्टो नहीं है वा स्वजन को सुहृद् हैं ते और जातिके हैं ते पुत्र भटया माता पिता ये स्मरण नहीं करे हैं २० अब वसुदेवजी कहे हैं देवहिनि ! देवके खिलौना हम मनुष्य हैं तिन दोष मति लगावो लोक ईश्वर के अर्थीन होयके कर्म करे है अथवा ईश्वरही कर्म क रावे है २१ हे देहिनि ! कंस के सताये जो हम सब ते दशो दिशान में चलेगये अवर्षों फेरि दैवले घर में बसाये हैं २२ अत्र श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! वसुदेव उग्रसेनादिक यादवन ने पूजा जिन की करी ऐसे जे राजा हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र को भले प्रकार दर्शन करिके परमानन्दकूँ पावत भये २३ भीष्मपितामह द्रोणाचार्य अम्बिका को पुत्र धृतराष्ट्र तैसेही पुत्रन सहित

पत्नीमुकुन्दश्च जहौमङ्गलथाशुचः १८ ॥ कुन्त्युवाच ॥ आर्यभ्रातरहमन्ये आत्मानमकृताशिपम् ॥ यद्वा आपरमुमदात्तां नानुस्मरथसत्तमाः १९ सुहृदो

ज्ञातयः पुत्राभ्रातरः पितरावपि ॥ नानुस्मरन्तिस्वजनं यस्य दैवमदक्षिणम् २० ॥ वसुदेव उवाच ॥ अम्बमास्मानमूयथा दैवकीडनकान्नरान् ॥ ईशस्य द्विवशे

लोकः कुरुते कार्यतेऽथवा २१ कंसप्रतापिताः सर्वेऽवयं यातादिशोदश ॥ एतर्ह्येव पुनः स्थानं दैवेनाऽऽसादिताः स्वसः २२ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ वसुदेवोऽग्रमे

नार्द्यैर्यदुभिस्तेऽर्चितानृपाः ॥ आसन्नच्युतसन्दर्शपमानन्दनिर्वृताः २३ भीष्मो द्रोणोऽभिमकापुत्रो गान्धारीसमुनातथा ॥ सदाराः पाण्डवः कुन्ती सृञ्ज

यो विदुरः कृपः २४ कुन्तिभोजो विराटश्च भीष्मको नग्नजिन्महान् ॥ पुरुजिद्वृद्धपदः शल्योऽष्टकेतुः सकाशिराट् २५ दमघोषो विशाखाक्षौ मिथिलो मदकेकयौ ॥

युधागन्युः सुशर्मा च समुतावाहिकादयः २६ राजानो ये च राजेन्द्र युधिष्ठिरमनुव्रताः ॥ श्रीनिकेतं वपुः शौरैः सखी कंवीक्ष्य विश्विस्मताः २७ अथ ते रामकृष्णा

भ्यां सम्यक् प्रसप्तमर्हणाः ॥ प्रशशंसुर्मुदायुक्ता वृष्णीन् कृष्णपरिग्रहान् २८ अहो गोजपतेयं जन्मभाजो नृणां मिह ॥ यत्पश्यथा सत्कृष्णं दुर्दर्शमपि यो

गिनाम् २९ यद्विश्रुतिः श्रुतिनुतेदमलंपुनाति पादावने जनपयश्च वचश्च शास्त्रम् ॥ भूः कालभर्जितभगाऽपि यदङ्घ्रिपद्मस्पर्शोऽत्यशक्तिरभिवर्पति नोऽखिलायां

गान्धारी स्त्रीन सहित पाण्डव कुन्ती सृञ्जय विदुर कृपाचार्य २४ कुन्तिभोज राजा विराट भीष्मक और बड़े नग्नजित् पुरुजित् दुपद शल्य काशी के राजा सहित धृष्टकेतु २५ बड़े हे नेत्र

जाके ऐसो राजा दमघोष मिथिलापुरी को राजा मद्रदेश को राजा और केकयदेश को राजा युधामन्यु सुशर्मा और पुत्रन सहित बाहिकादिक हैं ते २६ हे राजान के इन्द्र राजा परीक्षित !

महाराज युधिष्ठिर के आज्ञाकारी जे राजा हैं ते सम्पूर्ण रानीन सहित सुन्दर जो श्रीकृष्ण को रूप है ताव देविके आरच्य मानत भये २७ दर्शन करे पीछे रामकृष्ण तें भले प्रकार मात भयो है

सत्कार जिनकूँ ऐसे जे राजा हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र हैं मुख्य जिनमें ऐसे यादवन की सप्त प्रशसा करत भये २८ योगीजननकूँ दुर्लभ है दर्शन जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको सर्वदा तुम दर्शन करो ही

याही ते भोजवंशीन के पालन करन चारे राजा उग्रसेन या संसार के मनुष्यन में सफलजन्मा ही २९ श्रुति जिनकी स्तुतिकरें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की कीर्ति और चरणारविन्द के धोवन को जल गंगा



मुखारविन्द वी वचनरूप वेद ये या विश्व कूं अत्यन्त पवित्र करे हैं काल करिके दग्ध है गाहात्म्य जाको ऐसी भी पृथ्वी जिन श्रीकृष्णचन्द्र के चरणमल के स्पर्श तें प्रकट भई है शक्ति जामें ऐसी होय कै हृषीकेश चारथो ओरतें सम्पूर्ण कापनानक पूर्ण करे हैं ३० तिन श्रीकृष्णचन्द्र को तुम दर्शन करोहो स्पर्श करोहो पीछे चलोहो वात चीत करो हो संग सोचोहो वैठोहो भोजन करोहो और श्रीकृष्णचन्द्र के संग तुम्हारे विनाशदि सम्बन्ध होय है और देह सम्बन्ध होय है प्रवृत्तिमार्गमें रहो जो तुमहो तिनके घरनमें स्वर्ग मोक्ष दोनोनकी चाहनाकूं दूरि करैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तुम्हारे घरनमें आप विराजमान हैं याही तें तुम सफल जन्माहो ३१ अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजनगरीचिंत ! नन्दरायजी ता कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्णचन्द्र कूं आदि लोके जे यादव है तिनकूं आये जानि कै गोपनसहित और गाढान में लदी जे वस्तु है तिन सहित देखिवे के लिये यादवन के पास आवत भये ३२ बहुत दिनान तें दर्शन जो न भयो तासूं कायर हैं चित्त जिनके ऐसे यादव हैं ते नन्दरायजीके दर्शन करिके जो आनन्द भयो तासूं देहमें प्राण आये तें जैसे हाथ पाव उठे हैं ऐसे उठिके भले प्रकार मिलत भये ३३ वसुदेवजी नन्दरायजी सूं मिलिके प्रसन्न होयकै मेममें दिहल

च ३० तदर्शनस्पर्शनानुपमप्रज्जलपश्यासनाशनस्योनसपिशुबन्धः ॥ येषां गृहे निरयवर्ग निवर्त्ततां वः स्वर्गापवर्ग विरमस्वयमासविष्णुः ३१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ नन्दस्तत्र यदूच प्राप्ताञ्ज्वात्वा कृष्णपुरोगमा च ॥ तत्राऽऽगमद्वुनोगोपैरनस्थार्थो दिदृक्षया ३२ तं दृष्ट्वा कृष्णयो हृष्टास्तन्वाणामिवोत्थिताः ॥ परिपस्वजिरेगाढं चिरदर्शनकातराः ३३ वसुदेवः परिष्वज्य सम्भीतः प्रेमविह्वलः ॥ स्मरन् हंसकृतान्क्लेशान् पुत्रन्यासं च गोकुले ३४ कृष्णरामौ परिष्वज्य पितरा वभियाद्य च ॥ न किञ्चनोचतुः प्रेम्णा साश्रुकण्ठौ कुरूदह ३५ तावात्गासनमारोप्य बाहुभ्यां परिभ्रम्य च ॥ यशोदा च महामागा सुतौ विजहतुः शुचः ३६ रोहिणी देवकी चाथ परिष्वज्य ब्रजे श्वरीम् ॥ स्मरन्त्यौ तत्तृतामैत्रौ वाष्पकण्ठ्यौ समूचतुः ३७ का विश्रमेतवामैत्रीमनिवृत्तान् ब्रजे श्वरि ॥ अत्राप्यैन्द्रमैश्वर्यं यस्यानेह प्रति क्रिया ३८ एतावदृष्टपितरौ युवयोः रम्यपित्रोः सम्पीणनाभ्युदयपोषणपालनानि ॥ ग्राप्योपतुर्भवति पक्ष्महयदृक्क्षणेन्यस्नावकुत्र च भयौ न स तांपरः स्वः ३९ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ गोप्यश्च कृष्णमुपलभ्य चिरादभीष्टं यत्प्रेक्षणे दृशिषु पक्ष्मकृतं न शपन्ति ॥ दृग्भिर्दृष्टतमलं परिरभ्य सर्वस्वस्तद्वा विमापुर

होत भये और कंसने जे वष्ट दिये तिनकूं और गोकुल में जायकै श्रीकृष्णचन्द्र कूं पहुँचाय आये ताको स्मरण करत भये ३४ हे कौरवन कूं आनन्द के देनेवारे राजा परीक्षित ! कृष्ण बलदेव हैं ते माता पिता जां नन्द यशोदा हैं तिनसूं मिलिके पूणाम करिके प्रेमविह्वल भये आमुन तें कण्ठ जो रुँकि गयो तातें कलु भी न बोलत भये ३५ वड़ोहै भाग्य जाको ऐसी यशोदा और नन्दजी पुत्र जे कृष्ण बलदेव हैं तिनकूं अपने आसन पै बैठाय कै मुजानेन आलिंगन करिके नेनन तें आंसू बहावत भये ३६ पीछे रोहिणी और देवकी है ते व्रजकी रानी यशोदा सूं मिलि है और यशोदाने करी जो मित्रता है ताको स्मरण करिके आंसू कण्ठमें भरिके यह कहति भई ३७ हे व्रजकी रानी ! जाको वदलो न होइ सकै ऐसी तुम्हारी मित्रता कूं जौन भूलै इन्द्रको पेरवश्य पाय कै या संसार में तुम्हारी मित्रताको वदलो नही होय सकै है ३८ हे यशोदे ! नहीं देखै माता पिता जिनने ऐसे गे कृष्ण बलदेव हैं ते तुम जो माता पिताहो तिनके पास राखे तब तुमसूं प्यार करिके बहिनो गोपण मालन

हे तिन पायकै निर्भय तुम्हारे पास वास करत भये जैसे पलक नेत्रन की रक्षा करै ऐसे तुमने इनकी रक्षा करी यह तुमकुं योग्यही है क्यों साधुनकुं यह अपनो यह विरागो एतादृश बुद्धि नहीं होय है ३६ अथ श्रीगुरुदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित ! श्रीकृष्णचन्द्र के देखत समय आखिनमें पलक लगायकै जो अन्तराय करै हैं ऐसे विधवा कू गोपी गारी देखै बहुत दिनतें आशा जिनकुं लागि रही ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकुं पायकै गोपी नेत्रनकी रस्ता हृदयमें लोजायकै अत्यन्त आलिङ्गन करिकै योगारूढ़ योगीजननकुं भी दुर्लभ ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको भाव अर्थात् श्रीकृष्णरूप जो है ताकुं पावति भई ४० या प्रकार है भ्रम जिनको ऐसी गोपीन के पास एकान्तमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जायकै आलिङ्गन करिकै कुशल पूछिकै मुसिकायकै यह बोलत भये ४१ हे सखियो ! अपने जननके कार्य करिवेकुं भये हैं परन्तु शत्रुनके मारिये में है चिच जिनको याही तें विलम्ब भयो ऐसे जो हम हैं तिनको कदाचित् स्मरण करोहो ४२ यह कृष्ण कृतघ्नी है यह शङ्का मानिकै कहा गोपियो तुम हमारी अवज्ञा करो हो मै कुछ भी नहीं करू हूं होनहारकुं करै ऐसो जो भगवान् ही सो प्राणीनको संयोग और वियोग करै ४३ जैसे वायु वादरनके समूह कुं तृणकुं रुईकुं धूलिकुं उड़ायकै संयोग करै है और फेरि वियोग करै है तैसेही समस्त प्राणीन को उत्पत्तिकर्त्ता जो ईश्वर है सो सबकुं भिलावे है फेरि न्यारो न्यारो करिदेय है यामें मोकुं कहा दोष है ४४ प्राणीनकी जो मोमें भक्ति है

पिनित्ययुजांडुरापम् ४० भगवांस्तास्तथाभूताविविक्तउपसङ्गतः ॥ आश्लिष्यानामयंपृष्ट्वा प्रहसन्निदमब्रवीत् ४१ अपिस्मरधनःसख्यः स्वानामर्थचिकीर्षया ॥ गतोश्चिरायिताञ्शुपक्षपणचेतसः ॥ ४२ अप्यवभ्यायथास्मान्स्विदकृतज्ञाविशङ्कया ॥ नूनंभूतानिभगवान् युनक्तिवियुनक्तिच ४३ वायुर्यथाघनानीकं तृणंतूलंरजांसिच ॥ संयोज्याऽऽक्षिपतेभूयस्तथाभूतानिभूतकृत् ४४ मयिभक्तिर्हिभूतानाममृतत्वायकल्पते ॥ दिष्ट्यायदासीन्मस्मिन्नेहोभवतीनामदापनः ४५ अहं हि सर्वभूतानामादिरन्तोऽन्तरं बहिः ॥ भौतिकानां यथाखंवाभूर्वायुर्ज्योतिरङ्गनाः ४६ एवं ह्येतानि भूतानि भूतेष्वत्माऽऽत्मना ततः ॥ उभयं मदयथ परे परयताऽऽभातमक्षरे ४७ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ अध्यात्मशिक्षागोभ्यप्यंकृष्णेन शिक्षिताः ॥ तदनुस्मरणं ध्वस्तजीवकोशास्तमभ्यगन् ४८ आ

सोई जन्म और मृत्युसे छुड़ावे है तुरवारो मोमें स्नेहभयो याते मोकुं प्राप्त होउगी यह वड़ो मङ्गल है ४५ कैसे तुमहो जिन स्नेह करिकै हम पावैगी ऐसी इच्छा जब गोपीनके भई तो अपना रूप कहे हैं हे गोपियो ! जैसे पञ्चभूतनके बने जे घटादिक हैं तिनके आकाश जल पृथ्वी वायु तेज ये आदिमें भी हैं और अन्तमें भी हैं याही प्रकार जेते हैं जन्म जिनको ऐसे मनुष्य और पशुतें आदितै हैं और ग्रहदान तैं हैं जन्म जिनको ऐसे पत्नी इत्यादिक और पसीना तैं हैं जन्म जिनको ऐसे खटमल जुआ इत्यादिक और उद्भिज्ज अर्थात् वृक्षादिक जे चार प्रकारके प्राणी हैं तिनके आदि में हूं और अन्तमें भी हूं भीतर बाहर हूं यातें व्यापक मैं हूं ता मोकुं प्राप्त भईहो ४६ यहां एक शङ्का है चारि प्रकारके प्राणी हैं तिनको भोक्ता जो आत्मा है सोई आदि अन्तमें हैं और व्यापक जो आत्मा है तामें सम्पूर्ण प्राणी वास करै हैं तुम्हारी प्राप्ति हमें कैसे भई तहा कहे हैं जैसे घटादिकनके आदिमें भी हैं और अन्तमें भी हैं ऐसे चारि प्रकारके प्राणी अपने कारण ते भूत हैं तिनमें वतें हैं भोक्ता आत्मामें नहीं रहे हैं आत्मा है सो देहनमें भोक्तरूप करिकै व्यापक है पञ्चभूतरूप देहरूप जो भोग करिवे योग्य पदार्थ है ताथ और भोगको करनवारो जो आत्मा है ताथ परिपूर्ण जो मैं हूं



चन्द्र की पूरासा करे हैं इतने में अन्धक और कौरवन की स्त्री हैं ते आपुस में गोविन्द की कथा हैं तिन कहति भई है राजन् परीक्षित् ! त्रिलोकीमें गाईं जे कथा हैं ते तुम्हारे आगे वर्णन कलं हूँ तुम श्रवणकरो ५ अब द्रौपदी कहे है हे विदर्भ देशके राजा की पुत्री ! हे सत्यभामा ! हे कालिन्दी ! हे शैव्या अर्थात् मित्रविन्दा ! हे रोहिणी ! हे लक्ष्मणा ! - हे सोलह हजार श्रीकृष्णचन्द्रकी रानियो ! स्वयं भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके अपनी माया सँ लोकनके लुल्य जैसे विवाह भये तैसे अपने अपने विवाह की बात हमारे आगे कहो ६ । ७ अब रुक्मिणी अपने विवाह की बात कहे हैं - जरासन्हादिक राजा हैं ते मोहिं शिशुपाल के विवाहवे के लिये घनुपूक उठायकैं जब आये ता समय जीतिवे में न आवैं ऐसे योद्धान के शिरपै चरण धरिकैं श्रीकृष्णचन्द्र जैसे वकरीन के समूह में ते सिंह अपनी चलिंकू लेआवैं ऐसे लावत भये तिन श्रीकृष्णको लक्ष्मी जापें वासकरैं ऐसो जो चरण है ताकी में पूजा कलं हूँ ८ सत्यभामा अपने विवाह की बात कहे हैं - भय्या भसेन कूँ सिंह ने मारयो तासूँ दुःखितहैं हृदय जाको ऐसो जो मेरा पिता सत्राजित् है ताने भय्या कलङ्क लगायो तब कृष्णजी जाम्बवान् को

कुर्वन्स्वमायया ७ ॥ रुक्मिरयुवाच ॥ चैद्यायमार्पयितुमुद्यतकाम्मुकेषु राजस्वजेयभटशेखरिताङ्घ्रिणः ॥ निन्येष्टुगेन्द्रइवभागमाविथयात्तच्छ्रानिके तचरणोऽस्तुममार्चनाय ८ ॥ सत्यभामोनाच ॥ योमेसनाभिवधतसहदातेनलिसाभिशापमपमार्ष्टुमुपाजहार ॥ जित्वर्क्षराजमथलमदात्सतेन भीतःपि ताऽदिशतमांभवेऽपिदत्ताम् ९ ॥ जाम्बवत्युवाच ॥ ग्राह्नायदेहकृदसंनिजनार्थदेवं सीतापतिं त्रिनवहान्यमुनाऽभ्ययुव्यत् ॥ ज्ञात्वापरीक्षितउपाहरदर्हें णंमां पादौ भृगुह्यमखिनाऽहमभ्युदासी १० ॥ कालिन्द्युवाच ॥ तपश्चरन्तीमाज्ञाय स्वपादस्पर्शनाशया ॥ सख्योपेत्याऽग्रहीत्पाणिं योऽहन्तदगृहमाजनी ११ ॥ भद्रोवाच ॥ योमांस्वयंवरउपेत्यविजित्यभूपात् निन्येश्वयूगमिवात्मवल्लिद्विपारिः ॥ भ्रातृश्चमेऽपकुरुनस्वपुंश्रियौकस्तस्यास्तुमेऽनुभवमङ्गयवने जनत्वम् १२ ॥ सत्योवाच ॥ ससौक्षणोऽतिवल्गवीर्यमुतीक्ष्णशृङ्गात् पित्राकृतान्क्षितिपरीर्यपरिक्षणाय ॥ तान्वीरुधर्मदहनस्तरसांनिगृह्य क्रीडन्बन्धव्यह

भीतकर मणि सत्राजित् को देते भये तासूँ भयभीत जो फरो पिता है ताने अक्रूरादिकन कूँ देनकही जो मैंही ताथ श्रीकृष्णचन्द्रही कूँ देत भयो ९ अथ जाम्बवती अपने विवाह की बात कहे हैं देश को उत्पन्न करनवारो जो मेरो पिता है सो श्रीकृष्णचन्द्र कूँ अपनो स्वामी ईश्वर सीता को पति नहीं जानिकैं सत्ताईसदिन पर्यन्त श्रीकृष्णचन्द्र के सङ्ग युद्ध करे पीछे भई है परीक्षा जाकूँ ऐसो मेरो पिता सीताके पति दुष्टदेव जानिकैं चरण पकरिकैं स्यमन्तकमणिसहित मोकूँ श्रीकृष्णचन्द्र की सेवा करिवे के लिये देत भयो यह श्रवण करिकैं द्रौपदी ने कही तुम चड़ी श्रेष्ठहौं तहां जाम्बवती कहे है मैं तो इनकी दासी हूँ १० अथ कालिन्दी अपने विवाह की बात कहे हैं - श्रीकृष्णचन्द्र के चरणस्पर्श की आशा करिकैं तपकलं जो मैं हूँ ताको अर्जुन सहित जायकैं हाथ पकसत भये मैं तिन श्रीकृष्णचन्द्र के घरकी बुहारी देनवारी हूँ ११ अथ भद्रा अपने विवाह की बात कहे हैं - लक्ष्मी जिनके वत्तःस्थल में वास करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र स्वयंवर में जाय के राजान कूँ जीतिकैं और तिरस्कार करैं ऐसे जे मेरे मरया हैं तिनैं भी जीतिकैं हाथीन को शत्रु सिंह जैसे कुचान के बीच में अपनी बलिंकू लेआवैं ऐसे मोकूँ अपने पुरमें लावतभये तिन

श्रीकृष्णचन्द्रके चरण गोदने की सेवा मोहूँ जन्म जन्ममें भयो करै यह मेरी प्रार्थना है १२ अथ सत्या अपने विवाहकी बात कहे है-बड़ो है बल पराक्रम जिनमें बड़े पैने जिनके सींग और शूरवीरन के बड़े मदकूँ दूरि करनवारे राजानके पराक्रमभी परीक्षा लेवेके कारण भरे पिताने पाले ऐंमे जे सात ब्रैलहैं तिनें पकरिके जैसे बालक काष्ठकी दकरीके ब्रह्मानहूँ बाधेहैं ऐसे सहजमें श्रीकृष्णचन्द्र बाधि लेतभयो १३ पराक्रमही है मोल जाको ऐसी धैहूँ ताय हाथी घोडा रथ प्यादेन सहित दासीन सहित जो भैं ताय मार्गमें क्षत्रियनकूँ जीतिके श्रीकृष्णचन्द्र या प्रकार लावतभये तिनको मोहूँ दास्यभाव होत यह मेरी प्रार्थना है १४ अथ मित्रविन्दा अपने विवाह की बात कहेहै-हे द्रौपदी ! मेरे मामाके पुत्र जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें बुलायके तिन श्रीकृष्णचन्द्रमें लग्योहैं मन जाको ऐसी जो भैं हूँ ताय मेरो पिता अक्षौहिणी सेना और सखियन सहित देतभयो १५ अनेक कर्मन करिके भटकूँ ऐसी जो भैं हूँ ताकूँ जन्म जन्ममें श्रीकृष्णचन्द्र के चरणकमल को स्पर्शहोय जा चरणारविन्द के स्पर्श ते मोक्ष है नाम जाको ऐसो कल्याण मोहूँ प्राप्तहोय यह मेरी प्रार्थना है १६ अथ लक्ष्मणा अपने विवाह की बात कहेहै हे रानी द्रौपदी ! वारंवार नारदने गाये जे श्रीकृष्णचन्द्रके जन्म

थाशिशवोऽजतोऽकान् १३ यदर्थ्यवीर्यशुलकाणां दासीभिरवतुगङ्गिणीम् ॥ पथिनिजित्यराजन्यान् निन्येतदास्यमस्तुमे १४ ॥ मित्रविन्दोवाच ॥ पिता मेमातुलोयाय स्वयमाहूयदत्तवान् ॥ कृष्णेकृष्णायतचिपामक्षौहिण्यासखीजनैः १५ अस्यमेपादसंस्पर्शोभवेज्जन्मनिजन्गनि ॥ कर्मभिभ्राम्यमाणा यायेनतच्छ्रेयआत्मनः १६ ॥ लक्ष्मणोवाच ॥ मगापिराश्यव्युतजन्मकर्मश्रुत्वामुहुर्नारदगीतमासह ॥ चिंचंसुकुन्देकिलपद्महस्तया वृतःसुसंमृश्यवि हायलोकपान् १७ ज्ञात्वामममतंसाधि पिताडुहितवत्सलः ॥ बृहत्सेनइतिख्यातस्तत्रोपायमचीकरत् १८ यथास्वयंवराज्ञि मत्स्यःपार्थेपसयाकृतः ॥ अ यंतुवाहिराच्छनोदृश्यतेसजलेपरम् १९ श्रुत्वैतत्सर्वतोभूपाआययुर्मपितुःपुरम् ॥ सर्वाक्षशस्त्रतत्त्वज्ञाः सोपाध्यायाःसहस्रशः २० पित्रासम्पजिताःसर्वे यथावीर्य्यथावयः ॥ आदङुःसशरंचापं वेडुंपर्पदिमद्धियः २१ आदायव्यमृजन्केचित्सज्यंकुर्त्तुमनीश्वराः ॥ आकोष्ठंज्यांसमुत्कृष्यपेतुरेकेऽमुनाहताः २२

कर्म हैं तिनें श्रवण करिके जैसे मित्रविन्दा को चित लग्योहै ऐसे मेरो भी चित श्रीकृष्णचन्द्रमेंही लगतभयो कगलहै हाथमें जाके ऐसी जो लक्ष्मी है ताने लोकरपालन कूँ त्यागिकै बरहैं याहीते मेरो चित श्रीकृष्णचन्द्र में लगतभयो १७ हे सुशीले द्रौपदी ! पुत्रीपै है हित जाको ऐसो जो बृहत्सेन नाम करिके विख्यात मेरो पिताहै सो मेरे मनकी बात जानिके श्रीकृष्णचन्द्रके आश्वके लिये उपाय करतभयो १८ हे रानी द्रौपदी ! जैसे तेरे स्वयंवर में अर्जुन के आश्वके लिये मत्स्य रच्योहो ऐसे मेरोहूँ पिता मत्स्य रचावतभयो यह सुनिके द्रौपदी कहेहैं फेरि अर्जुनही क्योंनो वेधतभयो तहां लक्ष्मणा कहे है तेरे स्वयंवरकी मखरीरही सो वाहर ते दहीरही भीतरते नहीं दहीरही याते स्वयंवर में लगाय के ऊपर कूँ दृष्टि करिके देखे तें दिखाई देरही और भरे स्वयंवर की मखरी ऐसी नहींरही किन्तु स्वयंवरकी जड़मेंधरच्यो जो कलशहै ताके जलमें केवल परखाई दिसाई देरही देखिवो तौ नीचे जलमें और वेधिवो ऊपर ऐसी मखरीकूँ श्रीकृष्णचन्द्रके विना कौन वेधिसकै १९ स्वयंवर रच्यो है यह बात श्रवण करिके सम्पूर्ण अक्ष शस्त्रनके तत्त्वके जाननवारे उपाध्याय अर्थात् सिखावनवारेन कूँ सबलैकै हजारन राजा भरे पिताके पुरमें आवतभये २० ता समय जैसो जाको

पराक्रम और ऐसी जाकी अवस्थारही तैसोही ताको पूजन भेरो पिता करतभयो मोहों में है बुद्धि जिनकी ऐसे राजा मत्स्य के वैधिने कुं सभा में बाणसहित जो धनुष् है ताथ ग्रहण करतभये २१ कोई एक राजाई ते धनुष् कुं लेकर चढ़ानेही माँ असमर्थ होकर पटकतभये और कोई एक प्रत्यक्षाकुं कोष्ठ पर्यन्त लौचिके धनुष्की चपेटतेही गिरतभये २२ और जे शरीर जरासन्धग्रम् ८ चन्देली को राजा भीमसेन दुर्योधन कर्य ये अपने अपने धनुष् पे मत्स्या चढ़ाय कै कैसे मखरी लागीहै यहभी जानिने कू न समर्थ होतभये २३ जलमें मखरी की परकाई देखिकै जा विधि मखरीलागीरही सो जानिकै उगय को करनवारो जो अर्जुन है सो बाण चलावतभयो बाण मखरी कटो नहीं यामें आयो कहा अर्जुनकुं ज्ञानतो बड़ो परन्तु बल नहीं २४ सम्पूर्ण ज्ञनिय हाकि कै वैठिरहे और अभिमानीन के अभिमान दूरिभये ता समय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र धनुष् कुं लेहै लीलाही करिके प्रत्यञ्चा चढ़ाय है २५ धनुष् में बाण लगाय कै एकरीवार मखरीकुं जलमें देखिकै मध्याह्नमय अभिजित् नक्षत्र जन आयो अर्थात् सप्त कार्यन के सिद्ध करनवारो मुहूर्त्त में मखरी कुं बाण सू काटिकै पटकतभये २६ स्वर्ग में देवतान के नगरे वज्रतयये पृथ्वी

सञ्चकृत्वाऽपरेवीरा मागधाम्पठचेदिपाः ॥ भीमोदुव्योधनः कर्णेन विन्दंस्तदवस्थितिम् २३ मत्स्याभासं जले वक्ष्यति ॥ पार्थोयत्तोऽमृजद्वारं नाञ्चिन्नत्पस्पृशेपरम् २४ राजन्येपुनिवृत्तेषु भग्नमानेषु मानिषु ॥ भगवान्धनुर्गदाय सञ्चकृत्वाऽथलीलया २५ तस्मिन्सन्धाय विशिखं मत्स्यं वक्ष्यसकृज्जले ॥ छिन्नेषुणाऽपातयत्तं मूर्ध्नि च ॥ भिजितिस्थिते २६ दिविदुन्धुभयोनेदुर्गयशब्दयुताभुवि ॥ देवाश्चकुसुमासारान् मुमुचुर्हर्षविह्वलाः २७ तद्गङ्गाविशमहंकलनूपुराभ्यां पद्भ्यां प्रगृह्य कनकोज्ज्वलरत्नमालाम् ॥ नूले निवीय परिधाय च कौशिकाग्रये सप्रीड्हासवदनाकवरीधृतसक् २८ उन्नीय चक्रमुरुक्तलकुण्डलत्विङ्ग एडस्थलं शिशिरहासकदाक्षमोक्षैः ॥ रात्रौ निरीक्ष्य परितः शनैर्मुरोरंसेऽनुक्लहदयानिदधेस्वमालाम् २९ तावन्मुदङ्गपटहाः शङ्खभेर्यानादयः ॥ निनेदुर्नटनर्तकयोननुर्गायिकाजगुः ३० एवं वृते भगवति मयेशेऽनुपश्रुताः ॥ नसेहिरियाज्ञमेनि स्पृष्टन्तोऽहच्छयातुराः ३१ मांतावद्रथमारोप्य हयरत्नचतुष्टयम् ॥ शार्ङ्गमुद्यम्य सन्नद्धस्तथावाजौ चतुर्भुजः ३२ दारुरुश्चोदयामास कावचोपस्करं रथम् ॥ मितपांभू सुजांराज्ञि मृगा मेषजय शब्द होतभयो देवता आनन्द में विह्वल होयकै बहुत पुण्य की वर्षा करत भये २७ लाज भरीहै हसनि जामें ऐसो जो मुग्ध और चोटीमें माला गुहे ऐसी जो पै हूँ सो नवीन रेशमी सुन्दर घोटी उपरना पहिरि ओढ़िकै सुवर्णमें जड़ी जो रत्नकी मालाहै ताथ हाथमें लैकै और मनोहर हैं नूर जिन में ऐसे चरण करिकै द्वैपदी ! मैं रत्नभूमि में जात भई २८ श्रीकृष्णचन्द्र मैं है आसक्त हृदय जाको ऐसी जो मैं हूँ सो बड़ेहैं केश जांभे और कुण्डलन करिकै शोभायमानहैं रूपल जामें ऐसे मुख कुण्डलायकै सन्तापको दूरि करनवारो है हास जिनमें ऐसे कटाक्षगूर्वक जे चितवनहैं तिन करिकै राजानकुं चाख्यो ओरतें देखिकै होले होले जायकै मुरारि जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके कन्यायै माला धरति भई २९ ता समय मुदंग होल शङ्ख भेरी नगारे आदि लौकै वाजेहैं ते वज्रतभये नट और दृत्यकारीहैं ते नाचतभये और गवैया गावतभये ३० हे यज्ञसेनकीपुत्री द्वैपदी ! यापकार मैंने भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जन वश करे तब ईर्ष्या जिनके भई काम करिके



आतुर ऐसे जे राजानके यूय हैं ते नहीं सहत भये ३१ सुन्दर चार घोड़ा जामें जुते ऐसी जो रथ हैं तामें वा समय वैठायकै शार्ङ्गधनुषकूं उठायकै कवच पहिरकै चार हैं भुजा जिनके ऐसे श्रीकृष्ण-चन्द्र सग्रापमें ठाढ़े होत भये ३२ हे रानी द्रौपदी ! रथवान है सो सुनहरी साजको जो रथ है ताथ हाकि देत भयो और जैसे भ्रमन के देखत सिंह चढ्योगाय ऐसे राजान के वीचमें राजानके देख-तेही जात भये ३३ कोई एक राजा हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र के मार्ग में रोकिये कूं आगे जायकै धनुष कूं जे सिहके रोकिये कूं कुचा ठाढ़ो होय ऐसे मार्ग में सावधान होय के ठाढ़े होत भये ३४ शार्ङ्गधनुष में ते निकसे जे बाणनके समूह तिनसूं कटी हैं भुजा पाव नारि जिनकी ऐसे कोई क्षत्रिय युद्धमें गिरत भये और कोई एक हैं ते संग्रामकूं छोड़िके भाजत भये ३५ ता पीछे यादवनके पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अत्यन्त शोभायमान जिनसूं सूर्य ढकिजाय ऐसे ध्वजानके वस्त्र जामें उड़े और चिरविचित्र वन्दनवार वैथी स्वर्ग और पृथ्वीमें स्तुति जाकी होय ऐसी द्वारकादुरी में जैसे सूर्य अस्ताचल में प्रवेश करत भये ३६ मेरो पिता है सो मित्र नातेन मोतेन कूं और वन्धुन कूं वेड़े मोलकें वस्त्र गहने शय्या आसन और जे साज है तिनसूं पूजन करत

णांमृगराडिव ३३ तेऽन्वसज्जन्तराजान्यानिपेठुं पथिकेचन ॥ संयचाउद्धृतेष्वासाग्रामसिंहायथाहरिस् ३४ तेशार्ङ्गच्युतबाणौघैः कृतवाह्विङ्गिकन्धशः ॥ निपेतुःप्रधनेकेभिर्देकेसन्त्यज्यदुद्रुबुः ३५ ततःपुरीयदुपतिरत्यलंकृतां रविच्छदध्वजपटचित्रतोरणाम् ॥ कुशस्थलीदिविभुवित्राभिंसंस्तुतां समाविशत्तरणिशिवस्वकेतनम् ३६ पितामेपूजयामास सुहृत्सम्बन्धिवान्धवाच्च ॥ महाहंवासोऽलङ्कारैः शय्यासनपरिच्छदैः ३७ दारीभिःसर्वसम्पद्भिर्भटेभरथवाजिभिः ॥ आयुधानिगद्वाहीणि ददौ पूर्णस्य भक्तिनः ३८ आत्मारामस्य तस्येमावयवैर्गृहदासिकाः ॥ सर्वसङ्गनिवृत्त्याऽद्धातपसाचवभूविभ ३९ ॥ माहिष्यजुहुः ॥ भौमनिहृत्यसगणं युधिनेन रुद्धाज्ञात्वाऽथ नः क्षितिजयेजितराजकन्याः ॥ निर्मुच्य संसृतिविमोक्षमनुरमरन्तीः पादाम्बुजं परिखिनायय आशकाशः ४० नवयंसाधिवसाम्राज्यं स्वाराज्यं भौज्यमभ्युत ॥ वैराज्यपारमेष्ठ्यं च आनन्यं वाहरेः पदम् ४१ कामयामह एतस्य श्रीमत्पादरजःश्रियः ॥ कुचकुङ्कुमगन्धाढ्यं मू

भयो ३७ सम्पूर्ण सम्पत्ति है विद्यमान जिनके ऐसी दासी और प्यादे दारी रथ घोड़ान सहित और बहुत मोलके हथियारन सहित मोकं मेरो पिता परिपूर्ण जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें देत भयो ३८ ये आठों हम हैं ते आत्मामें रमण करें जे श्रीकृष्णचन्द्र तिनकी सब संगनकूं त्यागिकै अपनो धर्म करिकै साक्षात् धरकी दासी भयो चाहै हैं ३९ सोलह हजार रानी एकसे व्याही हैं याते एक सङ्ग अपने व्याह की बात कहै हैं गणनसहित भौमासुर है ताथ युद्ध में मारिकै पीछे पृथ्वीकूं जीतता विरियां जीते जे राजा हैं तिनकी कन्या हम हैं तिनकूं भौमासुर ने रोक्य है यह जानिके संसार तें छुड़ावनचारी जो चरणारविन्द है ताथ स्पर्ण करें ऐसी हम हैं तिनें वन्दीसोने तें छुहाये वोही है कारण जिनके और फाह बात की इच्छा नहीं ऐसे भी श्रीकृष्णचन्द्र विवाहन भये ४० हे द्रौपदी ! हम चक्रवर्ती राज्य कूं नहीं चाहै चक्रवर्ती राज्य और इन्द्रपद इनके भोगनको जो भोगिये है ताथ नहीं चाहै अणिमादिक सिद्धिन कूं नहीं चाहै और ब्रह्मलोक और मोक्ष तथा वैकुण्ठमाम इनकी चाहना नहीं करें हैं गदा के धारण करनकरे जो ये हैं तिनके लक्ष्मी के कुचनकी केसर जामें लगी ऐसी सुन्दर जो चरण की रज है ताथ माये के ऊपर चढ़ायने की चाहना



तिनसूं बोलत भये ८ अथ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे है—अहो बड़ो आश्चर्य है हम सफ नज्मभये सब जन्मको साफल्य हगहूँ मासभयो देवतान कूं भी दुष्टभ ऐसे योगेश्वरन को दर्शनभयो ९ ती प्रेमान करनो याहीकू तपजाने केवल प्रतिपादी कूं देवतादेखें ऐसे मनुष्यनकूं योगेश्वरन कूं दर्शन स्पर्शन कूं प्रश्न शिरसों नमस्कार चरणनको पूजन आदिक करियो ये कहा मिले हैं १० जलभय तीर्थ नहीं हैं सो नहीं है सो नहीं है बहुत दिन देवतानकी पूजाकरै तवपविन करै और साधु महात्मा दर्शनहीं पवित्र करे हैं ११ अग्नि सूर्य चन्द्रमा तारागण पृथ्वी जल आकाश पवन वाणी मन ये सेवनकरेते भी इन भेदबुद्धि करिके देखे है ऐसे पुरुषके अज्ञान कूं दूरि नहीं करे हैं और विवेकी पुरुषहैं ते दो यहीकी सेवा करतेही अज्ञान कूं दूरि करि देइहैं १२ बात पित्त श्लेष्म इन तीनि धातुन को रच्यो जो देह है ताथ आत्मा जाने हैं और सौ आदिहून में आत्मबुद्धि मानें तथा पृथ्वी को विकार जे प्रतिमा है तिनमें जा पुरुष की

तोयतवाचोऽनुश्रुयतः ८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अहोवयं जन्मभृतो लवंगकारस्यै न तत्फलम् ॥ देवानामपि दुष्पापं यद्योगेश्वरदर्शनम् ९ किं स्वल्पतपसां नृणामर्चायां दिवचक्षुषा ॥ दर्शनस्पर्शनप्रश्नप्रदपादार्चनादिकम् १० न ह्यस्मयानितीर्थानि न देवामृच्छलाभयाः ॥ ते पुनन्त्युरुक्तालेन दर्शनादेव साधवः ११ नाग्निर्न सूर्यो न च चन्द्रतारकानभूर्जलं श्वसनोऽथ वाह्यनः ॥ उपासिता भेदकृतो हरन्त्येवं विपश्चितो घ्नान्ति मुहूर्त्तसेवया १२ यस्यात्मा बुद्धिः कुणपे त्रिधा तु के स्वधीः कलत्रादिपुष्पौ मण्डयधीः ॥ यत्तीर्थबुद्धिः सलिलेन कर्हि विज्जनेष्वभिज्ञे पुष्पपूजगोबरः १३ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ निशम्यैरथं भगवतः कृष्णस्याकुण्ठमेधसः ॥ वचोदुरन्वयं विप्रास्तूष्णीमासनस्रमद्धियः १४ चिरं विमृश्य मुनय ईश्वरस्येशितव्यताम् ॥ जनसंग्रह इत्युचुः स्मयन्तस्तं जगद्गुरुम् १५ ॥ मुनय ऊचुः ॥ यन्मायाया तत्त्वविदुत्तमात्रयं विमोहिता विश्वमृजामधीश्वराः ॥ यदीशिन व्यायति गूढ ईहया अहो विचित्रं भगवद्विचेष्टितम् १६ अनीह एतद्बहुधैक आत्मना मृजतयवत्यत्तिनवद्व्यनेयथा ॥ भौमैर्हि भूमिर्वहुना मरूपिणी अहो विभूम्नश्रितं विदुस्त्वनम् १७ अथापि काले स्वजनाभिगुप्तये विभर्षि सत्त्वं खल

यह पूजाकरिये योग्य देवता हैं ऐसी बुद्धि है और जलकूं तीर्थ मानें और विवेकी पुरुषनमें भाव नहीं राखें ऐसे पुरुषगोंके चारो ढोवनवारे गथा हैं १३ अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! नहीं मन्द है बुद्धि जिनकी ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को दुरन्वय वचन श्रवण करिके श्रमयुक्त हैं बुद्धि जिनकी ऐसे ब्राह्मण झुप होत भये १४ ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र को कर्मनमें जो अधिकार है ताथ बहुत देर पर्यन्त विचारिके जननकी शिज्ञा के लिये हमारी स्तुति करे हैं या प्रकार मुनीश्वर मुसिकाय के जगत्के गुरु जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनसूं बोलत भये १५ तत्त्वके जाननवारनमें उत्तम और विश्व के रचनवारे जो ब्रह्मादिक हैं तिनके ईश्वर ऐसे जे हमें ते जिनकी माया करिके मोहित भये मनुष्यरूप धारिके मनुष्यन कैसे कर्म करो हौ कदाचित् कहो कि मैं ईश्वर हू तो कर्म क्यों करूं हू तथा कहे हैं तुम्हारी चेष्टा विचारिवें नहीं आवै है १६ चेष्टा न करो अर्थात् हाथ पांयन कूं न चलावो ऐसे जे एक तुमहो सो अपने आत्मा करिके या विश्वकूं बहुत प्रकार उत्पत्ति पालन और सशर करो हौ जैसे पृथ्वी है सो घटादि विकारन करिके बहुत नाम जाके ऐसी होय है कदाचित् कहो कि मैं कैसे उत्पत्ति पालन सशर करूं हूँ तो वसुदेव को पुत्र हू तथा कहे हैं परिपूर्ण

जो तुमहो तिनको वसुदेव के घर जन्म है यह विचित्र लीलागात्र है सत्य नहीं है १७ समयगै अपने भक्तन की रक्षा करिवे के लिये और दुष्टन के दण्डदेवे कूं शुद्ध सतीगुणी रूप कूं धारण करो हो और आप अपनी लीला करिके सनातन जो वेदमार्ग है ताय प्रवृत्त करो हो जो तुम काहू के पुत्र नहीं हो तो भी चारि वर्ण और चारि आश्रम इनके आत्मा परमपुरुषहो याही तें ब्राह्मणन को बहुत सत्कार करो हो यह कहे हैं १८ शुद्ध जो वेदहैं सो तुम्हारो भीतर को रूणहैं तप करिवो वेदको पढ़िवो इन्द्रियनको रोकिवो इन करिके कार्य और कारण दोउनते परे जो ब्रह्महैं ताकी प्राप्ति होयहैं १९ ई ब्रह्मन्! वेदके कारण आत्मा जो तुमहो तिनको बतावनवारो जो ब्रह्मकुलहैं ताय पूजो हो ताही कारण ते ब्राह्मणन की भक्ति करनवारो जे पुरुष हैं तिनमें श्रेष्ठ हो २० ताते ईश्वर जो तुमहो तिनकूं हमारो जो सत्कार करनो हैं सो पुरुषन के शिजा करिवे के लिये हैं और हम हैं ते तुम्हारे संग तें कृतार्थ भये यह कहे हैं साधुन की गति जो तुमहो तिनको सङ्ग भयो तासूं हमारो जन्म विद्या तप दृष्टि ये सम्पूर्ण सफलभये काहेसे तुम समस्त कल्याणनकी अवधि हो २१ नहीं मन्दहैं बुद्धि जिनकी और अपनी योगमाया करिके ढकी है माहिमा

निग्रहाय च ॥ स्वलीलयावेदपथंसनातनवर्णाश्रमात्मापुरुषःपरो भवान् १ ८ ब्रह्मतेहृदयं शुक्लं तपःस्वाध्यायसंयमैः ॥ यत्रोपलब्धं सद्व्यक्तमव्यक्तञ्च ततः परम् १ ९ तस्माद्ब्रह्मकुलं ब्रह्मञ्छास्त्रयोनेस्त्वमात्मनः ॥ सभाजयासि सद्धामतद्ब्रह्मण्याश्रणी भवान् २० अद्यनो जन्मसाफल्यं विद्यायास्तपसोद्दशः ॥ त्वया संगम्य मद्भृत्या यदन्तःश्रेयसां परः २१ नमस्तस्मै भगवते कृष्णाय अकुण्डभयं ॥ स्वयोगमायया च्छन्नमहिम्ने परमात्मने २२ नयं विदन्त्यमी भूपाएका रामाश्च वृष्णयः ॥ मायाजवनि काञ्छन्नमात्मानं कालमीश्वरम् २३ यथाशयानः पुरुष आत्मानं गुणतत्त्वदृक् ॥ नाममात्रेन्द्रियाभातं न वेद रहितं परम् २४ एवं त्वानाममात्रेषु विषयेष्विन्द्रिये हया ॥ मायया विभ्रमचित्तो न वेद स्मृत्युपपन्नात् २५ तस्याद्यते ददृशिमाम्ङ्गिमघौघमर्पतीर्थी स्पदं दृढि कृतं सुविपकयोगैः ॥ उत्सिक्तभक्त्युपहृताशयजीविकोशा आपुर्भवद्व्रतिमथोऽनुगृहाण भवान् २६ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इत्यनुज्ञाप्य दाशार्हं धृतराष्ट्र्युधिष्ठिरम् ॥ राजर्षे स्वाश्रमान् जिनकी ऐमे परमात्मा भगवान् जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं नमस्कार है २२ मायास्वी चिक सूं ढके स्पृष्ट्यादिकन के कारण ऐसे ईश्वर आत्मा जो तुमहो तिनैं ये राजा नहीं जाने हैं और एक रगान में हैं सुख जिनकूं ऐसे यादव हैं तेभी नहीं जाने हैं २३ जैसे पुरुष सोवत में स्वग्रह जे पिछ्या पदार्थ हैं तिनैं सत्य माने हैं मनतें सिद्ध व्याघ्रादि रूप आप वनिजाय हैं अपने स्वरूप कूं नहीं जाने हैं २४ याही प्रकार स्वमादितुल्य जे विषय पदार्थ हैं तिनमें इन्द्रियन की प्रवृत्ति रूप माया ता करिके चलायमान है चित्त जाको ऐसो पुरुष विवेक के नाश तें तुमें नहीं जाने हैं २५ पापन के समूहन कूं दूरि करे ऐसो गद्गास्वी तीर्थ जा में तें प्रकटभयो और पक्क हैं योग जिनके ऐसे योगी जननने केवल हृदयमें ध्यान जाको करयो परन्तु उनकूं भी दिवाई नहीं दियो ऐसो जो तुम्हारो चरणारविन्द हैं ताको हम दर्शन करतभये याते हम भक्तनकूं भक्ति करिये कूं अनुग्रह करो कदाचित् कहौ कि भक्ति करिके कहा करोगे पहिले की तुल्य तग करे जावो तहां कहे हैं उदय भई जो भक्ति तासूं जरयो है लिंग देह जिनको ऐसे जे पुरुष हैं तेही तुम्हारे स्वरूपकूं पाइगये और नहीं २६ अब शुकदेवजी कहे हैं हे राजान मैं ऋषि राजा परीक्षित् ! या प्रकार मुनीश्वर

हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र और राजा धृतराष्ट्र तथा युधिष्ठिर इन सँ आज्ञा मानिकै अपने अपने आश्रमन में जायवे की इच्छा करतभये २७ बड़ो है यश जिनको ऐसे वसुदेवजी हैं सो तिन मुनिन कूँ जाते देखिकै उनके समीप जायकै सावधान होइकै यह कहतभये २८ अथ वसुदेवजी कहे हैं सम्पूर्ण देवतारूप तुमहौ तिनकूँ प्रणामहै हे ऋषीश्वरो ! मेरी एक नात्ता तुम श्रवण करो जैसे कर्म करिकै कर्म को नाश होय सो हमें बतावो २९ श्रीकृष्णचन्द्र कूँ छोड़िके हमसँ कल्याण पूछे हैं या प्रकार आश्चर्य जिनके भयो ऐसे नारदजी ब्राह्मणने रुहे हैं हे ब्राह्मणो ! वसुदेवजी श्री कृष्णचन्द्र कूँ अपनी पुत्र मानिकै जानिवे के लिये अपनी कल्याण हमसँ पूछे हैं यह बड़ो आश्चर्य नहीं है ३० श्रीकृष्णचन्द्र कूँ बालक माननो आविधा करिकै है यह कहे हैं या संभार में मनुष्यन के पास रहे ते अनादर होय जायहै जैसे गंगातीर को रहनवारो जो पुरुषहै सो गंगाछोड़िकै शुद्ध होयवे के लिये और जल में स्नान करिवे कूँ जायहै ३१ जा श्रीकृष्ण को ज्ञान काहु कारण ते

गन्तुं मुनयोदधिरेमनः २७ तदीक्ष्य तानुपव्रज्य वसुदेवो महायशः ॥ प्रणम्य चोपसंगृह्य वभापेदं सुयन्त्रितः २८ ॥ वसुदेव उवाच ॥ नमो वः सर्वदेवेभ्य ऋ

पयः श्रोतुमर्हथ ॥ कर्मणा कर्मनिहारी यथास्यान्नस्तदुच्यताम् २९ ॥ नारद उवाच ॥ नातिचित्रमिदं विभावसुदेवो बुधुस्तया ॥ कृष्णं मत्वाऽर्भकं यन्नः

पृच्छति श्रेय आत्मनः ३० सन्निकर्षोऽत्र मर्त्यानामनादरण कारणम् ॥ गार्हो हि त्वायथान्यामभस्तत्र त्रयो याति शुद्धये ३१ यस्यानुभूतिः कालेन लयोत्पत्त्यादि

नास्य वै ॥ स्वतोऽन्यस्माच्च गुणतो न कुनश्च न रिष्यति ३२ तं क्लेशकर्मपरिपाकगुणप्रवाहैरव्याहतानुभवभीश्वरमादितीयम् ॥ प्राणादिभिः स्वविभवैरुपगूढ

मन्यो मन्येत सूर्यमिव मेघहिमो परागैः ३३ अथोत्तुर्मुनयो राजान्नाभाष्यान कडुन्दुभिम् ॥ सर्वपांशुयथां गज्ञां तथैवाच्युतरामयोः ३४ कर्मणा कर्मनिहारी

एवमाधुनिरूपितः ॥ यच्छ्रद्धया यजेद्विष्णुं सर्वयज्ञेश्वरं मलैः ३५ चित्तस्योपशमोऽयं वै कविभिः शास्त्रचक्षुषा ॥ दर्शितः सुगमो योगो धर्मश्चात्ममुदावहः ३६

अयं स्वस्त्ययनः पन्थादि जातेर्गृहे मधिनः ॥ यच्छ्रद्धया सविचेन शुक्लेने ज्येत पुरुषः ३७ विचैपणां यज्ञदानैर्गृहे दर्शितैः पणाम् ॥ आत्मलोके पणदिव कालेन विमु

भी नहीं नष्ट होय है सोई कहे हैं जैसे काल करिकै काकरी फटि जायहै और या विश्वको उत्पत्तिकरिचो पालन और नाश करिचो इनसँ भी नहीं जायहै और जैसे आपते विजुकी चमकिके

विलाय जायहै और जैसे गुण करिकै पूर्णरूप को नाश होय और रूपान्तरकी प्राप्ति होय ऐसेभी नहीं जायहै ऐसे जो आदितीय ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनके प्रभावकूँ क्लेश कर्म अर्थात् रागद्वेषा-

दिकन करिकै करे जे कर्म तिन कर्मन के फल जो सुख दुःख हैं तिन करिकै और सत्त्वगुण रजोगुण इनके वारंवार प्रवाहको तुल्य जो आइचो है ता करिकै प्राकृत पुरुष प्राण इन्द्रिय जो अपने

कार्य हैं तिनसँ आच्छादित माने हैं जैसे वादर तुषार और राहु के असे ते सूर्य मालूम होयहै ऐसे ३२ । ३३ इतनो कहिके पीछे हे राजन् परीक्षित ! मुनिहैं ते सब राजानके श्रवण करत और तैसे

ही श्रीकृष्ण और बलदेवजी के श्रवण करत वसुदेवजी कूँ बोधन करत बोलतभये ३४ कर्म करेते कर्म कटै यह भलो पुरुषो अर्थात् पूर्ण यज्ञन करिकै सब यज्ञन के ईश्वर जे भगवान् हैं तिन

को पूजन करो ३५ कविन ने शास्त्ररूप नेत्रन करिकै विचके शान्ति करनवारे आत्मा कूँ आनन्द को प्राप्ति करनवारो धर्मरूप यज्ञ करिकै पूजन करिचो है सो सुगम उपाय दिखायो है ३६ यह स्थ

जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य हैं तिनकूं यही कल्याण को मार्ग है निष्काम होयकै प्राप्तभयो जो शुद्धद्वय है ता करिकै ईश्वर को पूजन करै ३७ हे वसुदेवजी यज्ञकरिकै दान करिकै विवेकी पुरुष धनकी चाहना कूं त्यागे और घरमें उचित भोजन भोगनकू भोगिकै स्त्रीपुत्रनकी चाहना कूं त्यागे और या देहके मरे पीछे स्वर्गलोकादिकनकी प्राप्ति कूं नाशवान् सदाभिकै तिनकी चाहना कृत्यागै ग्राम में त्यागी है चाहना जिनने ऐसे समस्त धीर पुरुष तपकरिवे के लिये वनमें जातभये ३८ हे समर्थ वसुदेवजी ! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य हैं ते देव ऋषि पित्र इन तीनों को ऋण या जन्म में है तासूं उद्धार होई यज्ञ करिकै देवतान को ऋण और विद्या पढिकै ऋषिन को ऋण तथा पुत्र उत्पन्न करिकै पितरन को ऋण चुकावै इन ऋणन के चुकाये विना जो कर्ममें को त्याग करै तो वह पुरुष नरकमें भिरे ३९ बड़ी है बुद्धि जाकी ऐसे वसुदेव अव तुम दो ऋणन तें तो छूटिगये विद्या पढे यातें ऋषिन के ऋण सू उद्धारभये और पुत्रभयो यातें पितरन के ऋण सू उद्धारभये अव यज्ञ करिकै देवतान के ऋण तें उद्धार होयकै शुद्ध कूं त्यागि संन्यास ग्रहण करौ ४० हे वसुदेवजी ! तुम वही भक्ति करिकै जगत् जे हरि भगवान् हैं तिनको पूजन करतभये वेई हरि भगवान् आयकै -

जेद्वयुधः ॥ ग्रामेत्यक्लैपणाः सन्वै ययुर्धारास्तपोवनम् ३८ ऋणैस्त्रिभिर्द्विजो जातो देवर्षिपितृणां प्रभो ॥ यज्ञाध्ययनपुत्रैस्तान्ग्रनिस्तीर्यरयजन्त्यतेत् ३९  
तत्वं द्यमुक्तो द्वाभ्यां वै ऋषिपित्रोर्महामते ॥ यज्ञैर्देवर्षिमुन्मुच्य निःश्रेणोऽशरणो भव ४० वसुदेव भवाच्चूनं भक्त्या परमया हरिम् ॥ जगतामीश्वरं प्रार्चयः स य  
द्वापुत्रनागतः ४१ ॥ श्रीशुक्र उवाच ॥ इति तद्वचनं श्रुत्वा वसुदेवो महामनाः ॥ तानृषीन् त्विजो वने मूर्द्धाऽऽनम्य प्रसाद्य च ४२ त एनमृपयोर राजन् वृताधर्मैण  
धाबिकम् ॥ तस्मिन्नया जयन्क्षेत्रे मलैरुत्तमकल्पकैः ४३ तदीक्षायां प्रवृत्त्यां ब्रह्मण्यः पुष्करस्रजः ॥ स्नाताः सुवाससो राजानः सुषुब्धलंछिताः ४४ तन्म  
हिष्यश्च मुदितानिष्कण्ठयः सुवाससः ॥ दीक्षाशालामुपाजग्मुरालिमावस्तुपाणयः ४५ नेदुर्मदङ्गणदहशङ्खभेर्यान् कादयः ॥ ननु तुर्नटनर्तक्यस्तुलुबुः  
सूतमागथाः ॥ जगुः मुकण्ठयोगन्धर्व्यः सङ्गातंसहभर्तकाः ४६ तमभ्यपिषन् विधिवदक्रमभक्तमृतिव्रजः ॥ पत्नीभिरष्टादशभिः सोमराजिगिवोदुभिः ४७

तुम्हारे पुत्रहोतभये ४१ अव श्रीशुक्रदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! वढ़ो है मन जिनको ऐसे वसुदेवजी या प्रकार ब्राह्मणन को वचन सुनिकै प्रसन्न नवायकै प्रसन्न करिकै तिन ऋषिन कूं यज्ञके करनवारे ऋषिजिन को वरण करतभये ४२ हे राजन् परीक्षित् ! धर्म करिकै वरण जिनको करयो ऐसे जे ऋषि हैं ते घर्मात्मा वसुदेवजी कूं ता कुरुक्षेत्रमें उत्तम मामग्रीन करिकै यजन करावत भये ४३ हे राजन् परीक्षित् ! जा समय वसुदेवजी कूं यज्ञकी दीक्षा भई ता समय कमलन की माला पहिरिकै यादव और स्नान करिकै सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरि शृंगार करिकै राजा आवतभये ४४ और युक्तयुकी है कण्ठ में जिनके सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरे केसरि चन्दनलगे ऐसी राजानकी स्त्रो हैं ते पूजाकी सामग्री कूं हाथ में लैके जहा यज्ञशालाही तथा आवाति भई ४५ गृहद्वैत शङ्ख भेरी नगारेन कूं आदिलैके जे जागे हैं ते वाजतभये नट और नृत्यकी करनवारी जे हैं ते नाचति भई सूत और जागा स्तुति करतभये सुन्दर हैं कण्ठ जिनके ऐसी जे गन्धर्व्वपत्नी हैं ते अपने पतिनसहित सुन्दर गीतन कूं गावति भई ४६ नेत्रन में अञ्जन जिनने लगायो और सब अङ्गोंमें मालन लगायो ऐसे वसुदेवजी को विधिपूर्वक अठारह स्त्रीन सहित ऋत्विज अभिषेक करतभये जैसे तारागण सहित





अपने देशनकू जातभये ५७ । ५८ कुण्ण राम उग्रसेनादिक यादवनने वड़ी पूजा जिनकी करी ऐसे गोपालनसहित जो नन्दरायजी हैं ते वन्धु ने यादवहैं तिनसूं स्नेह करत वसतभये ५९ मसजहैं मन जिनको ऐसे वसुदेवजी सहजमें यज्ञ करिको मनोरथरूपी वडे समुद्रकू पार उतारिके अर्थात् यज्ञकू पूर्ण करिकै सब सुहृदनकूं सकलकै नन्दरायजीको हाथ पकरिकै यह कहतभये ६० अत्र वसुदेवजी कहे हैं हे भय्या नन्दरायजी ! मनुष्यनकूं स्नेहरूपी फासी जो ईश्वरने करीहै ताय ज़रबीर वलसूं और ज्ञानी ज्ञानसूं नहीं काटि सकेहैं उपमादेवे योग्य नहीं और जाकी उपमा भी नहीं ऐसी जो भिज्ता करीहै सो कदाचित् न जायगी और तुम्हारे उपकारकू जाने नहीं ऐसे हम हैं तिनसूं श्रेष्ठ जो तुमहो तिनने भिज्ताकरी ६१ । ६२ वसुदेवजी कहे हैं हे भय्या नन्दरायजी ! हम असमर्थ हैं याते कछु तुम्हारी उपकार नहीं करिसकैं और अब धन करिकै आये हैं नेत्र जिनके ऐसे हमहैं ते सम्मुख तुम बैठेहो तिनै नहीं देखेहैं ६३ हे मानके देनवारे भय्या नन्दजी ! जो अनो भलोचाहै तारुप वरसलः ५६ वसुदेवोऽज्ञसोत्तीर्थ्य मनोरथमहार्णवम् ॥ सुहृदतः प्रीतमनानन्दगाहकरोस्पृशन् ६० ॥ वसुदेवउवाच ॥ आतरीशकृतः पाशोन्मुणायः स्नेह संज्ञितः ॥ तंडुस्त्यजमहं मन्ये शूराणामपियोगिनाम् ६१ अस्मात्स्वप्रतिकल्पेयं यत्कृताज्ञेपुमत्तमैः ॥ मैत्र्यर्षिताऽफलावापि न निवर्त्तेत कर्हिचित् ६२ प्रागकर्ण्यच्चकुशलं भ्रातर्वीनाचरामहि ॥ अधुना श्रीमदान्धाक्षानपश्यामः पुरःसतः ६३ माराज्यश्रीरभूत्पुंसः श्रेयस्कामस्यमानद ॥ स्वजनानुनवन्धूना न पश्यतिययाऽन्धहृक् ६४ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवं सौहृदशैथिल्यचित्तआनकदुन्दुभिः ॥ रुरोदतत्कृतामैत्र्यां स्मरन्नश्रुविलोचनः ६५ नन्दस्नुमख्युः प्रिय कृत्प्रेम्णा गोविन्दरामयोः ॥ अद्यश्वइति मासांस्त्रीन् यदुभिर्मानितोऽवसत् ६६ ततः क्रौमैः पूर्यमाणः सन्नजः सहवान्ववः ॥ पराध्वार्षणक्षौमनाऽनर्ध्वपरि च्छदैः ६७ वसुदेवोऽग्रसेनाभ्यां कुण्णोद्धववलादिभिः ॥ दत्तमादाय पारिवर्हयापितो यदुभिर्यौ ६८ नन्दो गोपाश्रगोप्यश्च गोविन्दचरणाम्बुजे ॥ मनःक्षिप्तं पुनर्हर्त्तुमनीशामथुरांगयुः ६९ बन्धुपुत्रप्रतियतिपुष्ट्ययः कृष्णदेवताः ॥ वीक्ष्य प्रावृषणमासनां ययुर्दारिवर्ती पुनः ७० जनेभ्यः कथयां च कुर्याद्वेदवमहोत्सवम् ॥

कूं राज्य सम्पात्ति कदाचित् मतिहोउ जा सम्पत्तिसूं आधरा दृष्टिहोयजाय है तब यह पुरुष अपने नाते गोतेवारेनकूं और भय्या वन्धुनकूं नहीं देखेहैं ६४ अब शुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार स्नेह करिकै शिथिलहै चित्त जिनको आयु नेत्रन में आयामये ऐसे वसुदेवजी हैं सो नन्दजीनेकरी जो मित्रता है ताको स्मरण करिकै रोदन करतभये ६५ सरा जो वसुदेव हैं तिनमें धितकेकरनवारे यादवनने सत्कारकस्यो ऐसे जो नन्दजीहैं सो कुण्ण वलदेवके प्रेमकरिके प्रातःकाल जब चलैं तब आयके कहै वावा भोजन करिकै चलैं तब कहे दिन थोड़ो रखो अब कहां रात्रिमें वसोगे ऐसे आज काल्हि करत करत तीनमहीना वास करतभये ६६ ताके पीछे वड़े मोछके आपूपण और रेशमी वल्ल अनेक धातिके वड़े मोलकी वस्तुनभू कामना न करिकै ब्रजवासीन सहित नन्दरायजी पूर्ण करिदिये और वसुदेव उग्रसेनतैं तथा कुण्ण उद्धव वलदेवजी सूं आदिलकै यादवन ने दीनी जे सामग्री तिनैं ग्रहण करिकै उनने जब विदाकरो ता आवत भये ६७ । ६८ नन्दगोप गोपीन को गोविन्द श्रीकुण्ण के चरणरगल में लग्यो जो मनहैं ताय फेरि निकासिवे कूं असमर्थ होयकै मथुरादेशनमें आवतभये ६९ कुरुनेत्र में ते मन बन्धु

चलेगये तब श्रीकृष्णचन्द्र हैं देवता जिनके ऐसे यादव वर्णच्छतुर्गुं समीप आई देखिके फेरि द्वारकापुरी कू आगतभये ७० सब यादव हैं ते वसुदेवजी के यज्ञभयो है ताय और कुरुक्षेत्रकी यात्रा में सुहृदनको दर्शन आदिक भयो है ताय प्रजानतें रहतभये ७१ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे तीर्थयात्रानुर्यनवामचतुरशीतितितमोऽध्यायः ८१ ॥

( पञ्चाशीतितमेरामकृष्णौ सम्प्रार्थितौ सुतौ ॥ विवेक्षणम गोपात्रेयुतानपुत्रानयच्छताम् ? नन्दयित्वा कुरुक्षेत्रे यात्रायां सुहृदो महून् ॥ तत्त्वज्ञानंततः पित्रोऽदिशन्मनसूनुभिः २ पचासीविं अध्यायमें भले प्रकार प्रार्थना क्रियेगये बलदेव और कृष्ण ये दोनों पुत्र वसुदेवजी को ज्ञान और देवकीजी को ज्ञान और देवकीजी को उनके परेहुये पुत्रनकूं देतेभये ? कुरुक्षेत्रकी यात्रा में बहुत मित्रनको आनन्दितकर मृतक वसुदेव देवकी जी के पुत्रनको लारर उनको तत्त्वज्ञान देतेभये २ ) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! कुरुक्षेत्रकी यात्राकरे पीछे एकसमय आयके करो है चरणनमें मणाम जिनने ऐसे पुत्र जे श्रीकृष्ण बलदेवकी हैं तिनकी प्रशंसा करिके श्रीतिर्व्वक वसुदेवजी बोलतभये ? पुत्रन के प्रभाव को जनाननारो जो मुनिन की कह्यो वचन कि तुम्हारे पुत्र परमेश्वर हैं ऐसे सुनिके श्री-

यदाऽऽसीत्तीर्थयात्रायां सुहृत्संदर्शनादिकम् ७१ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे तीर्थयात्राऽनुवर्णनं नाम चतुरशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

श्रीवादायणिरुवाच ॥ अथैकदात्मजौ प्रसौ कृतपादाभिवन्दनौ ॥ वसुदेवोऽभिनन्द्याह प्रीत्यासङ्कर्षणान्भ्युतौ ? सुनीनां प्रवचः श्रुत्वा पुत्रयोर्द्धाम सूचकम् ॥ तर्द्धार्थैर्जातविश्रम्भः परिभाष्याभ्यभाषत २ कृष्णकृष्णमहायोगिन् सङ्कर्षणसनातन ॥ जानेवामस्ययत्साक्षात्प्रधानपुरुषौ परौ ३ यत्र येनय तोयस्य यस्मै यद्यद्यथायदा ॥ स्यादिदं भगवान्साक्षात्प्रधानपुरुषेश्वर ४ एतन्नानाविधं विश्वमात्मसृष्टमधोऽक्षज ॥ आत्मनाऽनुप्रविश्यात्मन् प्राणोजी वोविभर्षजः ५ प्राणादीनां विश्वसृजं शक्नोयाः परस्यताः ॥ पारतन्त्र्याद्वैसाहृदयोरंशैश्चैव प्रवृत्ताम् ६ कान्तिरस्तेजः प्रभासत्ताचन्द्रान्मयर्क्षेक्षिविद्यु

कृष्ण बलदेव के पराक्रम देखिके भयो है विश्वास जिनके ऐसे वसुदेव जी सम्बोधन देखे बोलतभये २ हे कृष्ण ! हे महायोगिन् ! हे संकर्षण ! हे सनातन ! या विश्वके कारण जे प्रकृति पुरुष हैं तिनके भी कारण ऐसे साक्षात् ईश्वर तुमहो यह मैं जानूँ ३ जायें जा करिके जाते जाको सम्बन्धी जाके अर्थ जो जो जैसे जा समय यह विश्व होय है सो समस्त प्रकृतिपुरुष के साक्षात् भगवान् ईश्वर तुमहो ४ हे अयोक्तज्ञ ! नेत्रनतें देखिये मैं न आओ काननतें सुनिने मैं न आओ वाणी तें कहिये मैं न आओ ऐसे कोई इन्द्रिय जामें पहुँचें नहीं हे सबके आत्मा ! आपने रच्यो जो यह नानाप्रकारको विश्व है तामें अपने करिके प्रवेश देख्ये प्राणरूप होयके अजन्मा जो तुमहो सो ज्ञानशक्ति कूं धारण करोहो ५ पृथक् पृथक् है शक्ति जिनकी ऐसे प्राणादिक या विश्व के कारण जानिये मैं आवे है परमेश्वर कूं कारणरूप करिके सर्वरूप जैसे कहोहो यह शंता जा भई ताको समाधान यह है कि प्राणादिकन में जे शक्ति हैं ते ईश्वरकी है जैसे विरव के काननवरे प्राण ते आदितैं के जे तत्त्व हैं तिनमें जे शक्ति हैं ते परमकारण जो ईश्वर है ताहीकी है काहेतें प्राणादिक ईश्वरके अधीन हैं ता कारण और जैसे तीरमें वेधियेकी स्वतन्त्र शक्ति नहीं है किन्तु पुरुष की शक्तिसूं वेधे है ऐसे प्राणादिकन में ईश्वर शक्ति है प्राणादिक जइहैं और ईश्वर चैतन्य है जइ पदार्थ कूं चैतन्यकी अधीनता योग्य है तहा कहे हैं प्राणादिकन में शक्ति नहीं है तो क्रिया कैसे

करे हैं ताको उत्तर करे हैं चेष्टाकर जे प्राणादिक हैं तिनकी चेष्टा यहां कछु शक्ति नहीं है जैसे पवनकी शक्ति करिके गुण हले है ऐसे क्रिया करे हैं ६ अथ पराधीनता कहे हैं चन्द्रमा में जो पक्षाश है और अग्नि में जो तेज है और सूर्य में जो प्रकाश है तथा नक्षत्र में बिजुलीन में जो चमक है सो सब तुमहीं हो और पर्वत में जो स्थिरता है सो तुम्हारीही गुण है तथा पृथ्वी में सबको भार धारण करिवो और सुगन्ध ये सब तुमहीं हो तुम्हारी शक्ति है ७ हे देव ! जल विये ते वृक्षि होय जाय प्राण वधि जाय यह जलन में तुम्हारीही शक्ति है वे जल और जलन में रसगुण है सो तुमहीं हो और हे ईश्वर ! पवन में ओज अर्थात् पनको बल और इन्द्रियनको बल देहको बल चेष्टा चलनो यह सब तुम्हारीही रूप है ८ दिशान में जो खालीपन है सो और दिशा है ते सब तुम्हारीही रूप हैं और आकाश तथा आकाश में जो शब्द रूप गुण है सो सब तुम्हारीही रूप हैं ९ नेत्रन में दर्शन शक्ति और कानन में श्रवण शक्ति काय जिह्वामें रसकी ग्रहणशक्ति इत्यादिक जे इन्द्रियन में विषयन के ग्रहण करिवे की शक्ति तुमहीं हो और इन्द्रियन के अधिष्ठाता देवता हैं ते तुमहीं हो देवता इन्द्रियन हू भरे

तान्न ॥ यत्स्थं सञ्चरन्ते भूमेर्वृत्तिर्गन्धोऽर्थतो भवान् ७ तर्पणं प्राणनमो देवत्वं तं श्रुतदसः ॥ ओजः सहो बलं चेष्टा गतिर्योस्तवे श्वर ८ दिशां त्वमवकाशो

ऽसि दिशः खं स्फोट आश्रयः ॥ ना देवर्णस्त्वमोङ्कार आकृतीनां पृथक्कृतिः ६ इन्द्रियं त्विन्द्रियाणां त्वं देवाश्च तदनुग्रहः ॥ अवबोधो भवान् बुद्धेर्जीवस्यानुस्मृतिः

सती १० भूतानामसि भूनादि शिन्द्रियाणां च तैजसः ॥ वैकारिको विकल्पानां प्रधानमनुशायिनाम् ११ नश्वरोऽपि ब्रह्म भावेषु तदसित्वमनश्चरम् ॥ यथाद्रव्य

विकारेषु द्रव्यमात्रं निरूपितम् १२ सत्त्वं रजस्तम इति गुणास्नद्धस्तथाः ॥ त्वय्यद्धा त्रह्मणि परे कल्पिता योगमायया १३ तस्मान्न सन्त्यमीभावा यार्हित्वयि

विकल्पिताः ॥ त्वंचामीपुनिकारेषु ह्यन्यदा व्यावहारिकः १४ गुणप्रवाह एतस्मिन् ब्रह्मास्त्वखिलात्मनः ॥ गतिं सूक्ष्मा मवोधेन संसरन्तीह कर्मभिः १५

यदृच्छयानुतां प्राप्य मुकल्पामि बहुल्लभाम् ॥ स्वार्थप्रपन्नस्य योगतं त्वन्मायये श्वर १६ असावहं मवैते देहे चास्यान्वयादिषु ॥ स्नेहपाशैर्निबध्नानति

हैं यह तुम्हारी शक्ति है बुद्धि में निश्चय करिवे की जो शक्ति है सो तुमहीं हो और जीवन कू श्रेष्ठ वार्त्ताको स्मरण है यह तुम्हारी शक्ति है १० पृथ्वी जल तेज वायु आकाश इन पञ्चभूतनको कारण

तामस अहंकार तुमहीं हो और इन्द्रिय जाते भई ऐसे राजस अहंकार तुमहीं हो देवता जाते भये ऐसे सात्त्विक अहंकार तुमहीं हो तथा जीवन कूं संसार जाते होइ ऐसी माया तुमहीं हो ११ नाश-

वान् पदार्थन में जो शेष है अर्थात् जागो नाश नहीं होय ऐसे तुमहीं हो जैसे शक्तिका मुखण के वने जे घड़ा मुंदरी कड़ा इत्यादिक सब नाशवान हैं शक्तिका मुखण को नाश नहीं होय है तैसे १२

सत्त्वगुण रजोगुण तोगुण इनकी जे वृत्ति है ते साचात् परब्रह्म जो तुम हो तिनमें योगमाया करिके कल्पित है १३ जाते कल्पित है ताही कारण ते तीनों गुणनसू आदि लेके जे पदार्थ हैं ते सब तुम्हा-

रेही विये कल्पित हैं तां कैसे प्रतीत होय है तदा कहे हैं कल्पना करिये के समय प्रतीत पात्रही तुपमें होय है और तुम उन पदार्थन में कारणरूप करिके रहो हो और समय व्यवहार जिनमें नहीं भेद

जिनमें नहीं ऐसे जिन इन तत्त्वनको नाश होय जाय है तब तुमहीं शेष रहो हो १४ यह जो गुणनको प्रारूप संसार है तागें सम के आत्मा जो तुम हो तिनकी संसार ते न्यारी जो गति है ताय नहीं

जाने ऐसे जे अज्ञानी पुरुष हैं तिनको देखे जो अभिमान है तामूं करे जे क्रम में ते तिन करि के या संसार में जन्मे हैं १५ सुन्दर हाथ पाव नाक कान सब इन्द्रिय जाँमे बहुत दुर्जम ऐसे देह के या संसार में कोई एक पुण्य के फल मूं पाइके साथ में भूलि रख्यो ऐसे जो मैं हूं ताकी जो अवसर है सो ईश्वर तुम्हारी माया करि के टापी गइ १६ मैं ब्राह्मण हूं क्षत्रिय हूं या प्रकार देखे अभिमान और या देह के सम्बन्धी स्त्री पुत्रादिक परे है यह अभिमान ऐसे स्नेह के रस्सान ते यह जगत् तुमने वाधि राख्यो है १७ हम तुम्हारे पुत्र हैं तुम कहा हमारी स्तुति करो हो नहा वसुदेवजी ऊँ है तुम हमारे पुत्र नहीं हो माया और मायाकी ओट देखनवारो पुरुष इनके ईश्वर साक्षात् तुमही पृथ्वी मैं क्षत्रियनको जो भार है ताके उद्धार के लिये नाश करि के प्रकट भये हो १८ ता कारण है दीनमनु ! शरण मास भयो जो पुरुष है ताके संसार के भय के दूरिकरनवारें ऐसे जो तुम्हारे चरणारविन्द हैं तिनकी मैं शरण प्राप्त भयो हूं तुम तो बड़े सुखी हो वृथा क्यों रोद करो हो ऐसे जो कदाचित् श्रीकृष्ण कहैं तथा वसुदेवजी कहैं इतनी जो नियम की लालसा है ता करि कै मरणधर्मा शरीर कूं आत्मा मान्यो और तुम परमेश्वर कूं पुत्र मान्यो १९ प्रमम जन्म में

भवान्मन्वर्षमिदं जगत् १७ युवाननः सुतौ साक्षात्प्रधानपुरुषश्चरौ ॥ भूभाक्षत्रक्षणअचतीर्णोतिथात्थह १८ तत्तेगतोऽस्म्यरणमद्ययदाविन्दमापन्नसंसृतिभयापहमार्त्तबन्धो ॥ एतावताऽतमलमिन्द्रियलालसेन मर्त्यात्सहृद्वत्वायिपरेयदपत्यबुद्धिः १९ सूतीगृहेननुजगादभवानजनौ संजज्ञइत्यनुगुं निजधर्मगुप्त्यै ॥ नानातनूगमनबुद्धिद्वज्जहासिकोवेदभूम्नउरुगायविभूतिमायाम् २० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ आकर्येत्यं पितुर्वाक्यं भगवान्मातावतर्षभः ॥ प्रत्याहप्रथयानम्रः प्रहसञ्ज्वल्लक्षणायागिरा २१ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वचोवःसमेवतार्थं तातैतदुपमन्गहे ॥ यन्नःपुत्रान्वसमुद्दिश्य तत्त्वग्रामउदाहृतः २२ अहंशूयमसावाश्यैर्ममचक्षारकौकसः ॥ सर्वेऽप्येवंयदुश्रेष्ठविमृश्याः सचराचरम् २३ आत्माह्वैरुःस्वयंज्योतिर्नित्योऽन्योनिर्गुणोऽगुणैः ॥ आत्मसमूहैस्तत्कृतेषु भूतेषुबहुवेयते २४ संवायुर्ज्योतिरापोमृस्तत्कृतेषुयथाशयम् ॥ आविस्तिरोऽल्पभूयैर्कोनानात्वंयात्यसावपि २५ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंभगवताराजन्

सुतपा पृथिन भये फेरि करण्य अडिति भये अय वसुदेव देवकी भये यह तीन जो है तिनके तीनवार अपने धर्मभी रक्षा करि के लिये अजन्मा आयके जन्म्यो हूं यह आपने सूक्तिकाष्टमैं हम मूं कबीरही तुम्हारे आदिकै जाने जन्म लियो है यह चतुर्भुज देव है ऐसे जो कदाचित् श्रीकृष्ण कहैं तथा वसुदेवजी कहैं हैं आकाशी तुल्य निर्मल जो तुमहो सो अनेक लून कूं धरण करो हो है उरुगाय उद्धृत प्रकार मायवै में आयो ! व्यापक हो तिनकी वैभव रूप जो गाथा है ताकौ जाने है २० अय श्रीशुभदेवजी कहैं हैं हे राजन् परीक्षित ! यादवन में श्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र मा प्रकार पिताको वचन सुन के अमीनतापूर्वक नम्रदोयके हँसके मनोहर वाणीसुं गोलतभये २१ श्रीकृष्णभगवान् ऊँ है हे पिता ! हम पुत्रनके ऊपर धरि के सब तत्त्व कहि दीनो यह जो तुम्हारी वचन है ताकौ योग्य मानूं २२ हे यादवन में श्रेष्ठ पिता वसुदेवजी ! तुम और मैं भयया मलदेवजी तथा जे सप द्वाराकावासी यादव हैं तिन और स्थावर मंगम जगत्तैं ताकौ ब्रह्मरूप जानो २३ यहाँ एक शब्दा है नाना विचारवान् हैं तिनकूं ब्रह्मरूपता कैसे बने ताको उत्तर दृष्टान्त मूं कहैं हैं आत्मा एक स्वयंमकाश नित्य है सचेत पृथक् है निर्गुण है आपने रचे जे सत्त्वगुण रजोगुण तमो-

गुण तिन करिकै उतपन्न जे देह हैं तिनमें बहुत प्रकार प्रतीत होइ है फेरि ऐसी देह तागें तैसीही प्रतीत होइ है जैसे आकाश पवन ज्योति जल पृथ्वी ये पञ्चभूत उपपादि पदार्थन में कहूं प्रकट कहूं अन्तर्धान कहूं थोड़े कहूं बहुत प्रतीत होइ हैं ऐसे एक आत्मा जो ब्रह्मस्वरूप है सो अनेकरूप करिकै प्रतीत होइ है २४ । २५ अत्र श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन्परीक्षित ! या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को बहो वचन सुनिकै हरि गयो है भेद भाव जिनको प्रसन्न पन होयके वसुदेवजी स्तुति करखु के ताके पीछे हे कौरवन में श्रेष्ठ राजा परीक्षित ! सर्वदेवता रूप जो देवकी है सो पुत्र जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनने सान्दर्भीपनि गुरुके भरे पुत्र लाय दिये यह सुनिके आश्चर्य्य मानिके कंसने मारे जे पुत्र है तिनकी सुपि करिकै व्याकुल होयके नेतन में आसू आय गये ऐसी कृपण की तुल्य होयकै बोलति भई २७ । २८ देवकी कहें हैं हे राम ! हे राम ! हे अमयेयात्मन् अर्थात् नई प्रमाण करिने में आवे है स्वरूप जिनको ! हे कृष्ण ! हे योगेश्वरनके ईश्वर ! विश्वके रचनवारे ब्रह्मादिक है तिनके ईश्वर आदिपुरुष तुम हो तिनमें जानूं २९ कालने दूरि करे है घोरज जिनके शस्त्र पर्यादा जिनने त्यागि दीनी पृथ्वी पै भार जिनको भयो ऐसे जे

वसुदेवउदाहृतः ॥ श्रुत्वा विनष्टनानाधीस्तूष्णीं प्रीतमना अभूत् २६ अथ तत्र कुरुश्रेष्ठ देवकीसर्वदेवता ॥ ॥ श्रुत्वा नीतिं गुरोः पुत्रमात्मजाभ्यां सुविस्मिता २७ कृष्णरामौ समाश्रय्य पुत्रान् कंसविदितान् ॥ स्मरन्ती कृपणं ग्राह वैक्लव्या दश्रुलोचना २८ ॥ देवक्युगाच्च ॥ रामरामा प्रमेयात्मन् कृष्णयोगो शरोश्वर ॥ वेदाहं वां विश्वमृजामीश्वरावादिपूरुषौ २९ कालविश्वस्सत्त्वानां राज्ञामुच्छास्त्रवर्तिनाम् ॥ भूमेर्भारायमाणानामवतीर्णैः किलाद्यमे ३० यस्यां शांशांशभागेन विश्वोत्पत्तिलयोदयाः ॥ भवन्ति किल विश्वात्मस्तत्वाद्याहं गतिं गता ३१ चिरान्मृतमुतादाने गुरुणा किल चोदितौ ॥ आनि न्यथु पितृस्थानाद्गुरवे गुरुदक्षिणाम् ३२ तथा मे कुरुनं कामं युवां योगेश्वरेश्वरौ ॥ भोजराजहाना न पुत्रान् कामयेद्गुमाह्वानम् ॥ ३३ ॥ अगिरुवाच ॥ एवं संचोदितौ मात्रा रामः कृष्णश्च भारत ॥ सुतलंसंविशिशतुर्योगमाया मुपाश्रितौ ३४ तस्मिन् प्रविष्टा बुलभ्य दैत्यराट् विश्वात्मदैवमुत्तरांशं तमनः ॥ तद्दर्शनाद्वाहदपरिबुताशयः सद्यः समुत्थाय ननमसान्वयः ३५ तयोः समानीय वरासनं मुदा निविशयोस्तत्र महात्मनोस्तयोः ॥ दधारपादानव

राजा है तिनके नाश करिने के लिये भरे आयकै प्रकट भये हौ ३० हे सन के कारण ! हे विश्व के आत्मा ! तुम्हारी अंश पुरुष है ताको अंश माया ता मायाके अंश सच्च रज तम इन तीनों गुणन के परमाणुमात्र लेश करिकै या विश्वके उत्पत्ति पालन प्रलय होत हैं ऐसे जे तुमहौ तिनकीमें शरण प्राप्त भयो हूं ३१ बहुत दिनन के भरे पुत्रन के लायेवै कुरु ने आज्ञा जिनकें दीनी ऐसे तुम यमलोक ते गुरुके भरे पुत्र लायके दक्षिणा में देत भये ताही प्रकार हे योगेश्वरनके ईश्वर ! कंसने मारे जे भरे पुत्र हैं तिनमें देख्यो चाहूं तुम लायके भरे पनोरथ कूं पूरो करौ ३२ । ३३ अत्र ऋषीश्वर कहें हैं हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित ! माता देवकी ने या प्रकार जिनते कही ऐसे जे राम कृष्ण हैं ते योगमायाको आश्रय लेके सुतललोक में प्रवेश करत भये ३४ तथा दैत्यन को राजा जो बलि है सो विश्वके आत्मदेवता और अपने इष्टदेव ऐसे जे कृष्ण बलदेव हैं तिनं सुतललोकमें प्रविष्टहुये देखिकै उनके दर्शन सूं आनन्द होयके परिपूर्ण है अन्तःकरण जाको



ऐसो परिचारसहित शीघ्र उठिके नमस्कार करत भयो ३५ राजा बलि गङ्गे आनन्दपूर्वक सुन्दर आसन पिछावत भयो ता आसनपै बैठे जे महात्मा श्रीकृष्ण बलदेव है तिनके चरणारविन्द को धोवन जल है ताग कुटुम्बसहित अपने माये पै चढावत भयो जिन चरणारविन्द को धोवन जल गङ्गा ब्रह्मायुं आदिलेके समस्त जगदुं पात्र करे है ३६ राजा बलि बहुत मोलके बल्ल आश्रयण चन्दन अतर अरगजा पान दीपक अमृत ती तुल्य स्वादिष्ठ भोजनादिक है तिन करिके और पूजन भी जे वस्तुहै तिनकरिके तथा अपनो गोत्र द्रव्य देहकू अर्पण करिके वड़े वैभवं श्रीकृष्ण बलदेव को पूजन करत भयो ३७ है राजन् प्रीति ! बलिराजा भगवान् के चरणारविन्दकूं चारंवार मस्तक पै धरिके भेम करिके आनन्द के आसू हैं नेत्रन में जिनके देह में जिनके रोमाञ्च होय आये ऐसे गहद अक्षर बोलत भये ३८ अब राजा बलि कहे हैं समस्त विषम जिनने फणके ऊपर धरि राख्यो ऐसे अनन्त शेषरूप तुम हो तिनकूं प्रणाम है और सब जगत् के

निज्यतज्जलं सवृन्द आब्रह्मपुनद्वदम्बुह ३६ समर्हगामासस्तौ विभूतिभिर्महार्हवस्त्राभरणानुलेपनैः ॥ ताम्बूलदीपाऽमृतभक्षणदिभिः स्वगोत्रविचात्मस  
मर्पणेन च ३७ सइन्दसेनो भगवत्पदाम्बुजं विभ्रन्मृदुः प्रेमविभिन्नयाधिया ॥ उवाच हानन्दजलाकुलेक्षणः प्रहृष्टो मानुषगददाक्षरम् ३८ ॥ बलिरुवाच ॥  
नमोऽनन्ताय वृद्धे नमः कृष्णाय वैधसे ॥ साङ्ख्ययोगविज्ञानाय ब्रह्मणे परमात्मने ३९ दर्शनं वा हि भूवानां दुष्प्राप्य दुर्लभम् ॥ रजस्तमः स्वभावानां यन्नः  
प्राप्तौ गच्छया ४० दैत्यदानवगन्धर्वाः सिद्धविद्याप्रचारणाः ॥ यक्षरक्षः पिशाचाश्च भूतप्रमथनायकाः ४१ विशुद्धसत्त्वधाम्न्यज्ज्ञा त्वयि शास्त्रशरीरि  
णि ॥ नित्यं निवर्द्धवैरारने वयस्त्रानेनादृशाः ४२ केचनोद्विष्यन्ते भक्त्या केचन कामतः ॥ न तथा सत्त्वसंस्थाः सन्निकृष्टाः सुरादयः ४३ इदमित्थमिति  
प्रायस्नवयोगेश्वर ॥ न विन्दन् रगपि योगेशो गमायां कुतो वयम् ४४ तन्नः प्रसीद निरपेक्ष विमृग्य युगमत्पादारविन्दधिषणान्यगृहान्वकूपात् ॥ निष्क  
म्य विश्वशरणाङ्ग्युपलब्धवृत्तिः शान्तो यथैतत्तत्सर्वं सखैश्चरामि ४५ शार्धस्मान्नीशितव्येश निष्पापान्मकुरुनः प्रभो ॥ पुमान्मयच्छ्रद्धया तिष्ठन् श्रोतुना

रचनवारे कृष्ण तुमहो तिनकूं नमस्कार है सारुभशाल योगशास्त्र इनके विस्तार करनवारे ब्रह्म परमात्मा जो तुमहो तिनकूं प्रणाम है ३९ योगेश्वरन कूं भी तुमहारो दर्शन दुर्लभ है सो हमकूं भयो यह आश्चर्य नहीं है यद्यपि प्राणीनकूं तुमहारो दर्शन दुर्लभ है तथापि तुमहारी कृपा करिके काहू काहू कूं मुलम होय जाय है याते रजोगुणी तमोगुणी है स्वभाव जिनके ऐसे हम असुरन कूं अनायासपूर्वक आपने दर्शन दियो ४० वड़ो आश्चर्य है शत्रु हमहें ते सत्त्वगुणी भक्तन ते भी बडभागी हैं यह कहे हैं—दैत्य दानव गन्धर्व सिद्ध विद्यात्र चारण यत्न राक्षस पिशाच भूत प्रम-  
थनमें मुख्य हैं ते ४१ शास्त्रके रक्षा करनवारे सत्त्वगुणी है स्वभाव जिनके ऐसे भे तुमहो तिनसू नित्यशुभा हमने करी तथा औरनने भी वैर वा मि राख्यो है ४२ कोई एक शिशुपालादिक है ते वैर करिके जो भक्ति है तासू तुमकूं जैसे पागपे और गोपीन ने आदिलेके कामभक्ति करिके जैसे तुमकूं पागपे तैसे सत्त्वगुणी देवता तुमकूं न मासभये ४३ हे योगेश्वरन के ईश्वर ! या प्रकार ऐभी जो तुमहारी योगमाया है ताग योगेश्वर नहीं जानै है तो हम असुर कहा जानें ४४ ताते हमपै आप प्रसन्न होउ जैसे कोई वातकी जिनके इच्छा नहीं ऐसे पुरुष जाकूं हूँ ऐसे जो तुमहारी चरणारविन्द है ताको

आश्रय लैके चरणारविन्दते न्यारी जो घररूप कूप है ताते निकसि कै विश्वकी रक्षा करनवारे जे वृत्त हैं तिनकी जरन में आपही ते गिरे जे फल फूल हैं तिनको भोजनकरुं ऐसो मैं शान्त होयकै अकेलो विचरुं अथवा सवके सहाय करनवारे जे महात्या पुरुष हैं तिनके संग विचरुं ४५ थोड़ो जिनको पुण्य ऐसे पुरुषनकुं पतादश भाव कैसे होय ऐसे जो दृढचित्त भगवान् कहै तहा राजा बलि कहै हैं जैसे पतादशभाव होय तैसे हमकुं शिक्षा देवे कुं योग्यहौ है सब जीवनके ईश ! हे प्रभो ! हमकुं शिक्षा देव और हमारे पापनकुं दूर करो जो पुरुष अद्रा करिकै तहा रानी आज्ञा कुं करै वह विधि निषेध तें मुक्त होयजायहै ४६ अत्र भगवान् श्रीकृष्ण कहै हैं यह जो स्नायम्भुव मन्वन्तरहै तामें मरीचि प्रजापतिके ऊर्णा स्त्री में छ' पुत्र होत भये एक समय तुम्हारी आज्ञा कुं करै वह विधि निषेध तें मुक्त होयजायहै ४७ ता पापवर्मसुं असुरयोनिकुं पावतभये ताही समय हिरण्यकशिपुके देवतारूप बैओ पुत्रहैं ते अपनी कन्या सरस्वतीके साथ मैथुनसुं रमण करनेमो उद्यत जो ब्रह्माहै ताय देखिके हस्तभये ४७ ता पापवर्मसुं असुरयोनिकुं पावतभये ताही समय हिरण्यकशिपुके जन्म लेतभये तेई बैओ हिरण्यकशिपुके यहा ते योगमायाके भरे-हे राजनपरीक्षित ! देवकी के उदरमें जन्म लेत भये तेई कसने मारे सो अत्र तुम्हारे पासहैं इन्हें देवकी अपने पुत्र मानिके शोच

याविमुच्यते ४६ श्रीभगवानुवाच ॥ आसन्मरीचैः पद्पुत्राऊर्णायां प्रथमेऽन्तरे ॥ देवाः कञ्जहसुर्वीक्ष्य सुतां यमि तुमुद्यतम् ४७ तेनासुरीमगन्त्र्यो निमधुना सवद्यकर्मणा ॥ हिरण्यकशिपोर्जाता नीतास्ते योगमाया ४८ देवक्या उदरे जाताराजन्कंसविहिंसिताः ॥ साताञ्जशो च त्यात्मजान् स्यांस्तद्दमेऽभ्यास तेऽन्तिके ४९ इत एतान् प्रणेष्यामो मातृशोकापनुत्तये ॥ ततः शापादिनिर्मुक्ता लोकं यास्यन्ति विज्वराः ५० स्मरोद्भीधः परिष्वङ्गः पतङ्गः क्षुद्रभृदृघृणी ॥ पांडिमे मत्प्रसादेन पुनर्यास्यन्ति सद्गतिम् ५१ इत्युक्त्वा तान् समादाय इन्द्रमेनेन पूजितौ ॥ पुनर्दास्वती गेत्य मातुः पुत्रानयच्छताम् ५२ तान् दृष्ट्वा बालकान् देवी पुत्रस्नेहस्तुतस्ती ॥ परिष्वज्याङ्कमारेण्यमूढ्यर्जिघ्रदभीक्ष्णशः ५३ अपाययत्स्तनं भीता सुतस्पर्शपरिभुता ॥ मोहिता मायाया विष्णोर्भया मृष्टिः प्रवर्त्तते ५४ पीत्वाऽमृतं पयस्तस्याः पीतशेषं गदाभृतः ॥ नारायणः संपर्शप्रातिलब्ध्वात्मदर्शनाः ५५ तेन मस्कृत्य गोविन्दं देवकीपितरं बलम् ॥ भिपनांस

कोरे है ४८ । ४९ माता देवकी के शोक दूर करिवे के निमित्त यहां ते इन बैओ पुत्रनकुं ले जायेगे ता पीछे शापते छूटिके सेदरहित होयके देवलोक में जायेगे ५० स्मर उद्भीध परिष्वङ्ग पतंग क्षुद्रभृदृघृणी ये छः पुत्र हैं ते भरे प्रसाद करिकै मुक्त होजायेगे ५१ ऐसे जब वही तत्र राजा बलिने पूजन जिनको कस्यो तेसे श्रीकृष्ण बलदेव तिन पुत्रन रू संग लैके द्वारकापुरी में आयके माता देवकी कुं पुत्र देतभये ५२ पुत्रन में जो स्नेह ता करिकै स्तनमें दुग्ध चुबै ऐसी देवकी तिन बालकन कुं देखिकै मोद में वैठायके छातीते लगायके वेर और माथो सूंचति भई ५३ मृष्टि माता देवकी कुं पुत्र देतभये ५४ पुत्रन में जो स्नेह ता करिकै स्तनमें दुग्ध चुबै ऐसी देवकी तिन बालकन कुं देखिकै मोद में वैठायके छातीते लगायके वेर और माथो सूंचति भई ५४ गदा के धारण उत्पन्न करनगरी जो विष्णु भगवान् की माया है तामुं मोहित और पुत्रन को जो छाती लगायवो तामें मग्न ऐसी जो देवकी है सो प्रसन्न होयके पुत्रन कुं स्तन प्यावति भई ५४ गदा के धारण करनवारे जो श्रीकृष्णचन्द्र है तिनके पीवेतें वच्यो अर्थात् भगवान् को प्रसाद ऐसो जो वह अमृतरूप देवकी को दुग्ध है ताय पान करिकै और नारायण श्रीकृष्णचन्द्रके अंगके स्पर्श करेतें हम देवता हैं यह ज्ञान जिनकुं भयो ५५ ऐसे जे बालक है ते गोविन्द श्रीकृष्णचन्द्र कुं और देवही तथा पिता वसुदेवजी कुं और वलदेवजी कुं नमस्कार करिकै सन प्राणीन के देसत देवतान को

धाम जा देवलोका है तामें जात भये ५६ हे राजनपरीक्षित् ! एकाशमान जो देवकी है सो मरे पुत्रन को आयवो फेरि जायवो है ताय देखिकै विस्मित होयके श्रीकृष्णकी रची माया मानति भई ५७ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित् ! अनन्तहै पराक्रम जिनको ऐसे जो परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पराक्रम को अन्त नहीं जिनके या पूकारके अद्भुत चरित्र हैं ५८ अथ श्रीसूत जी कहे हैं हे ऋषीश्वरो ! व्यासपुत्र जे शुकदेवजी हैं तिननं वर्णन करे और समस्त जगदेके पापनके दूरि करनवारे भक्तन के कानन कुं आनन्ददायक ऐसी अमृतलयी कीर्ति जिनकी ऐसे मुरारि श्रीकृष्णभगवान् के चरित्रनकुं भगवान् में चित लगायके जो पुरुष श्रवणकरे अथवा श्रवण करावै वह पुरुष कालको और मायाको जामें जोर नहीं ऐसो जो भगवान् को धामहै ताय पावै है ५९ इति श्रीपद्महाभागवतार्थरूपिण्यादाशमस्कन्धेउत्तरार्द्धमृताग्रजानयनमपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥

( पडशीतितमेदम्भात्सुभद्रामर्जुनोऽहरत् ॥ गत्वाचमिथिलांकृष्णो नृपविप्रावनन्दयत् ॥ पित्रोःस्वज्ञानमादिश्य सुभद्रांफाल्गुनायच ॥ जगामिमिथिलांकृष्णःस्मभक्तप्रियंकुचतः २ क्षियासीव षर्षभूतानांयुर्धामदिनौकसास् ५६ तंहृद्वादेवकीदेवीमृतागमननिर्गमम् ॥ मेनेसुविस्मितामायां कृष्णस्परचितानुप ५७ एवंविधान्यद्भुतानि कृष्णस्यप रमात्मनः ॥ वीर्यार्णयनन्तर्वीर्यस्यसन्त्यनन्तानिभारत ५८ सूतउवाच ॥ यद्वदमनुशृणोतिश्रावयेद्भामुरारेश्ररितममृतकीर्त्तवर्णिंतन्यासपुत्रैः ॥ जगद धमिदलंतद्भक्तसत्कर्णपूरं भगवतिक्वचित्तोयातितत्क्षेमधाम ५९ ॥ इतिश्रीमद्भागवतेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धमृताग्रजानयनमपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५ राजोवाच ॥ ब्रह्मन्वेदितुमिच्छामः स्वसारंरामकृष्णयोः ॥ यथोपयेमेविजयोयाममासीत्पितामही १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ अर्जुनस्तीर्थयात्रायां प र्यटन्नवनीप्रसुः ॥ गतःप्रभासमश्रुणोन्मातुलेयीसआत्मनः २ दुर्योधनाग्रामस्नां दास्यतीतिनचापरे ॥ तस्मिन्सुःसयतिर्भूत्वा त्रिदण्डीद्वारकामगात् ३ तत्रवैवापिकान्मासानवात्सीत्स्वार्थसाधकः ॥ पौरैःसभाजितोऽभीक्ष्णं रामेणजानताचसः ४ एकदागृहमानीय आतिथ्येननिमग्नयतम् ॥ श्रद्धयोपहृतं

अन्धाय में अर्जुन दम्भ सं सुभद्रा को हस्तेभये और कृष्णजी मिथिलापुरीमें जाकर राजा और ब्राह्मण को आनन्दित करतेभये १ अपने भक्त के प्रिय करनेवाले कृष्णजी पिता और माताको अपना ज्ञान देकर और सुभद्राको अर्जुनको देकर फिर मिथिलापुरीको जातेभये २ ) अब राजा परीक्षित् प्रश्न करे हैं हे ब्रह्मन् शुकदेवजी ! रामकृष्ण की वहिनि जो सुभद्राही ताय अर्जुन जैसे व्याहतभये जो सुभद्रा हमारी दादी होतीभई यह हम जाननेकी इच्छाकरे हैं १ यह प्रश्न सुनिकै श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! एक समय समय अर्जुन है सो तीर्थयात्रा करिवे कुं पृथ्वी में फिरत प्रभास तीर्थ में जातभयो तदा जायके अपनेमामा की पुत्री सुभद्रा है ताय वलदेवजी दुर्योधन कुं विवाह देखे और वसुदेवादिक नहीं देखेगे यह बात सुनिकै ता सुभद्रा के लेवे की है इच्छा जाके ऐसो अर्जुन संन्यासी बनिकै तीनदण्ड धारण करिकै द्वारकापुरीमें आवतभयो २ ३ अपने कार्य कुं सिद्ध करयो चाहै ऐसो अर्जुन चार महीना वर्षाके द्वारकापुरी में जितवतभयो द्वारकापुरी मनुष्यन ने आयके वारवार अर्जुन को सन्मान करयो है और संन्यासी बनिके अर्जुन आयो है यह न जाने ऐसे वलदेवजी ने भी सत्कार करयो ४ एक दिन संन्यासी है या

भावसु अर्जुन को निमन्त्रण करिके घरमें बुलाय कै श्रद्धापूर्वक बलदेवजी ने जो भोजन परोस्यो ताय अर्जुन भोजन करतभयो ५ द्वारका में शूरवीरन के मनकूँ हरे ऐसी सुन्दर कन्या है ताय अर्जुन देखतभयो प्रसन्नता करिके प्रफुल्लित है नेत्र जिनके ऐसे अर्जुन रतिके अभिप्राय करिके चलायमान जो मन है ताय सुभद्रा में लगवातभये ६ स्त्रीन के हृदय में वसिजाय ऐसे अर्जुन कूँ देखिके हासी सहित लाजभरे कटाक्षन कूँ करे और अर्जुन मेंही लागे है हृदय और नेत्र जाके ऐसी सुभद्रा भी चाहना करति भई ७ वढ़ो जो बलवान् कामदेवहै ता करिके चलायमानहै चित जाको ऐसो अर्जुन केवल सुभद्रा को ध्यान करत हरण करिवे को जो अवसर है ताय देखत बलदेवजी ने जो सम्मान क्रियो है ताको सुख नहीं पावतभयो ८ वढ़ी जो देवी की यात्राहै तामें रथमें बैठिके निकसी ऐसी सुभद्राकूँ माता पिता जो देव ही व वसुदेव है तिनकी और कृष्णजी की सम्मतिसुँ महारथी अर्जुन हरतभयो ९ रथ में बैठिके धनुष कूँ छेके अर्जुन है सो चारयो ओरते रौंके जो प्यादे है तिनै भजायके उनके पुकारतही जैसे सिंह अपनेभागकूँलेजायहै ऐसे लेजातभयो १० अर्जुन सुभद्राकूँ छेके गयो यह बात श्रवण करिके जैसे पूषमासीकूँ समुद्र उमड़े तैसे क्रोध जिनके उपाड़े भैक्ष्यं वलेनबुजु फिल ५ सोऽपश्यत्तत्रमहतीं कन्यावीरमनोहराम् ॥ प्रीत्युत्कृष्टेक्षणस्तस्यां भावक्षुब्धं मनोदधे ६ साऽपितंचकमेवीक्ष्य नारीणांहृदयंगमम् ॥ हसन्तीब्रीडितापाङ्गी तन्न्यस्तहृदयेक्षणा ७ तांपरं समनुव्यायन्नन्तरं प्रेमुरज्जुनः ॥ नलेभे संभ्रमचिन्तः काभेनातिबलीयसा ८ महत्यां देवयात्रायां रथस्यांडुर्गनिर्गताम् ॥ जहारानुमतः पित्रोः कृष्णस्य च महारथः ९ रथस्थो धनुरादाय शूरांश्चारुन्वतो भटान् ॥ विद्रव्यकोशतांस्वानां स्वभागं मुग्धराडिव १० तच्छ्रुत्वा श्रुभितोरामः पर्वणीवमहार्णवः ॥ गृहीतपादः कृष्णेन सुहृद्भिश्चान्वशाम्यत ११ प्राहिणोत्पारिवर्हाणि वरवध्वंसिदावलः ॥ महाधनो परस्करेभ रथाश्च वनरयोपितः १२ श्रीशुक उवाच ॥ कृष्णस्यासीद्विजश्रेष्ठः श्रुतदेव इति श्रुतः ॥ कृष्णैकभक्त्या पूर्णार्थः शान्तः कविरत्नम्पटः १३ सउवासविदेहपु मिथिलायां गृहाश्रमी ॥ अनीहयागताहार्यनिर्व्वर्त्तितनिजक्रियः १४ यात्रामात्रं त्वहर्देवाहुपनमस्युत ॥ नाधिकं तावतातुष्टः क्रियाश्चक्रे यथोचितः १५ तथानद्राष्ट्रपालोऽङ्गबहुलारव इति श्रुतः ॥ मैथिलो निरहं मान उभाप्य च्युतभियौ १६ तयोः प्रसन्नो भगवान् दारुकेणाऽऽह नरथम् ॥ आरुह्य साकं मुनिभि आयो ऐसे बलदेवजीकूँ सुहृद न सहित श्रीकृष्णचन्द्रने चरण पकरिके शान्तकरे ११ बलदेवजी वड़े आनन्दसँ वहिनि वढ़नोई है तिगको दहेज पीछेत भिजवावत भये बहुत सो धन और वस्त्र वासन इत्यादिक सामग्री हाथी रथ घोड़ा पुरुष स्त्री इनसबकूँ भिजवावतभये १२ खव श्रीशुकदेवजी कहे है श्रीकृष्णकी जो एकपाकि ताकरिके सम्पूर्ण है मनोरथ जाको शान्तस्वभाव विवेकी विषयनमें आसक्त नहीं ऐसो श्रुतदेव या नाम करिके मसिद्ध जो ब्राह्मणहै सो श्रीकृष्णचन्द्र को भक्त होतभयो १३ विना उपाय करे मिले जो भोजन ताही सौ निवाह करिके अपने कर्मनकूँ करे ऐसो गृहस्थी ब्राह्मणहै नो विदेह देशमें जो मिथिलापुरी है तामें वास करतभयो १४ जितनेमें शरीरको निर्वाह होइ उतनो भोजन प्रातिदिन अनायासपूर्वक आयोष्य है और अधिक नहीं परख उतनेहीमें सन्तोष करिके यथायोग्य सन्ध्योपासनादिक वर्त्मनकूँ करीकरे १५ हे राजन् परीक्षित ! जैसे श्रुतदेव ब्राह्मण भक्तहो तैसेही मिथिलादेशको पालन करनवारी जनकके वंशमें भयो निरभिमान ऐसो बहुलारव

नाम करिके विख्यात राजा है सो श्रीकृष्ण को भक्त होतयो ब्राह्मण और राजा ये दोनों श्रीकृष्णके प्यारे हैं १६ तिन दोनों भक्तन के ऊपर प्रसन्न भये ऐसे समय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो रथवानने लायके ठाढ़ो करयो जो रथहैं तामें बैठिके मुनिनकुं संग लेके विदेह देशनकुं जातभये १७ कौन कौन मुनि संग लिखे तिनको नाम लेइ है नारदजी वामदेव अत्रिऋषि वेदव्यामजी परशुरामजी शुक्रदेवजी कहै हैं ये भी संग गयो और वृहस्पति करव मैत्रेय च्यवनऋषि आदि लेके और भी संग गये १८ हे राजन् परीक्षित! मार्गमें ग्रहनके सो तेज जिनको ऐसे मुनिनकुं संग लेके तहा तहा आयो जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके लिये पुरवासीजन हाथनमें अर्घलेके स्तुति करतभये जैसे उदय भये सूर्यकुं अर्घ देइहैं तैसे १९ आनर्देश धन्व कुरु जागल कङ्क मत्स्य पाञ्चाल कुन्ति मधु क्रैक्य कोसल आणे इन देशनके तथा और देशनके वासी जो स्त्री पुरुष हैं ते उदार हैंसनि शुक्त स्नेहभरी चितवनि जामें ऐसो श्रीकृष्णचन्द्रको मुखारविन्दहैं ताय दृष्टि भरि देवतभये २० अपनी दृष्टि करेते दूरिभयो है अज्ञान जिनको ऐसे पुरुषनकी दृष्टि कुं कल्याण देत और तत्त्वज्ञान देत दिशान के अनपथ्यन्त फँलिरहे पापनकुं नाशकरत देवता और मनुष्यन ने गायो जो

विदेहान्प्रययौमसुः १७ नारदोवामदेवोऽत्रिः कृष्णो रामोऽसितोऽरुणिः ॥ अहंवृहस्पतिः करवो मैत्रेयश्च्यवनादयः १८ तत्रतत्रतमायान्तं पौराजानपदानृ  
प ॥ उपतस्थुः सार्धहस्ताग्रहैः सूर्यमिवोदितम् १९ आनर्त्तधन्वकुरुजाङ्गलकङ्क मत्स्यपाञ्चालकुन्तिमधुकैक्यकोसलाणां ॥ अन्ये च तन्मुखसरोजमुदारहास  
स्निग्धेक्षणं नृपपुद्गलशिभिर्नृनार्यः २० तेभ्यः स्ववीक्षणविनष्टमिहहृद्भ्यः क्षेमं त्रिलोकगुरुर्थहृशं च यच्छन् ॥ भृशवन्दिगन्तधवलं स्वयशोऽशुभधनं गतिं  
सुरैर्नृभिरगाच्छक्नैर्विदेहान् २१ तेऽव्युत्तं प्राप्समाकर्ण्य पौराजानपदानृप ॥ अमीयुर्मदितास्तस्मै गृहीताहं पाणयः २२ दृष्ट्वा तत्तमश्लोकं गीत्युरुल्ला  
ननाशयाः ॥ कैर्धृताञ्जलिभिर्नमः श्रुतपूर्वास्तथा मुनीन् २३ स्वानुग्रहाय संप्राप्तं भवानौतं जगद्गुरुम् ॥ मैथिलः श्रुतदेवश्च पादयोः पेततुः प्रभोः २४ न्यमं  
न्त्रयेतां दाशार्हमातिथ्येन सह द्विजैः ॥ मैथिलः श्रुतदेवश्च युगपत्संहताञ्जली २५ भगवांस्तदभिप्रेत्य द्वयोः प्रियचिकीर्षया ॥ उभयोराविशद्देहमुभाभ्यां नद  
लक्षितः २६ श्रोतुमप्यसतांदूराज्जनकः स्वगृहागतान् ॥ आनीतेष्वासनाश्रयेषु सुखासीनान्महामनाः २७ प्रवृद्धभक्त्या उद्धर्पहृदयास्त्राविलेचाणः ॥ न

अपनो यशहैं ताय श्रवण करत चित्तोकी के गुरु श्रीकृष्णचन्द्र होले विदेहादिक देशनको जानभये २१ हे राजन् परीक्षित! ते सम्पूर्ण पुरवासी देशवासी जनहैं ते श्रीकृष्णचन्द्र त्राये सुनिने हर्षित होयके पूजाके योग्य सामग्रीनकुं हाथमें लेके सम्मुख आवतभये २२ उत्तमहैं यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करिके प्रीति संप्रकृष्टित भये हैं मुख और अन्तःकरण, जिनके ऐसे पुरुष हाथनकुं जोरिके शिरसूं लगायके नमस्कार करतभये तैसेही पहिले मुनि राखे जे मुनि हैं तिन पणाम करतभये २३ जगत् के गुरु जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं ते हमारे अनुग्रह कारने के लिये आयो हैं या प्रकार मानिके मिथिलापुरी को राजा बहुलाश्व और श्रुतदेव ब्राह्मण ये दोनों श्रीकृष्णके चरणनमें परतभये २४ मिथिलापुरी को राजा बहुलाश्व और श्रुतदेव ये दोनों एक संग हाथ जोरिके ब्राह्मणनसहित जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको आतिथ्यभाव करिके निमन्त्रण करतभये २५ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रदोनोन को निमन्त्रण मानिके दोनोन के प्रिय करिके लिये दो रूप धरिके

दोनों के घर जातधये ताससय राजा और ब्राह्मण यह नहीं जानें हैं कि ये दो रूप करे हैं २६ बड़ो है मन जाओ चडी भक्ति करि के हृदयमें हर्ष जाओ भयो नेत्रनमें आसू जा के आगये ये तो जनकवंशी राजा बहुलाराय है सो असत्य पुरुषन के सुनिवे में भी न आवे ऐसे भगवान् अपने घरआये लायके विचार्ये जो श्रेष्ठ आसनहैं तिनपै सुख तें पैठ ऐसे जे मुनिहैं निनं नमस्कार करि के तिनके चरणन कूं थोड़के लोकन के पवित्र करनयारो जो चरणन को जलहैं २७ । २८ ताय कुटुम्ब सहित राजा बहुलाराय अपने माथे पै चढ़ाय के ईश्वर और ईश्वरकी बराबर जो ब्राह्मणहैं तिनको गन्ध पुष्प माला वस्त्र आभूषण धूप दीप अर्घ्य गौ वैल इन सामग्रीन सूं पूजन करतभये २९ और मधुरवागीन सूं प्रसन्न करत गोदमें धरे जो श्रीकृष्ण के चरण हैं तिन हौले होले दावत आनन्द करिके अन्नसूं वसमये जे ब्राह्मणहैं तिनसूं यह कहतभये ३० अब राजा बहुलाराय कहे हैं हे समर्थ ! सब प्राणीनके आत्मा साक्षी स्वयंमकाश तुमहीं हो याही कारण तें तुम्हारे चरणारविन्दको स्मरण करूं जो मैं हूं ताकूं तुमने दर्शन दियो है ३१ जो मोकूं एकान्ती भक्त प्यारो है ऐसो भक्त्योके सम्बन्धने बलदेवजी प्यारे नहीं हैं स्त्री के सम्बन्धने लक्ष्मी प्रिय नहीं है पुत्र के सम्बन्धने ब्रह्मा

त्वातदङ्गीन्प्रक्षाल्य तदपोलोकपावनीः २८ मकुटभोवहन्मूर्द्धां पूजयाञ्चकईश्वरान् ॥ गन्धमाल्याम्बराकल्पधूपदीपार्घ्यगोधूपैः २९ वानामधुरयाप्राण  
त्रिदामाहात्रतर्पितान् ॥ पादावङ्कगतौविष्णोःसंपृशञ्जनकैर्मुदा ३० राजोवाच ॥ भवान्हिसर्वभूतानामात्मासाक्षीस्वहृषिभोः ॥ अथनमस्तपदा  
म्भोजं स्मरतांदर्शनगतः ३१ स्ववचस्तद्वर्तकतुमस्मद्दृष्टमगोचरोभवान् ॥ यदात्थैकान्तभक्तान्मेनानन्तःश्रीरजःप्रियः ३२ कोलुस्त्वचणाम्भोजमेवंविदिमृ  
जेत्पुमान् ॥ निष्कञ्चनानांशान्तानांमुनीनांयस्त्वमात्मदः ३३ योऽवतीर्ययदोर्वशोनृणांसंसरतामिह ॥ यशोवितेनेतच्छ्रान्त्यै त्रैलोक्यवृजिनापहस्य ३४  
नमस्तुभ्यंभगवते कृष्णायानुशान्तं तर्पयिष्ये ॥ नारायणायानुशान्तं तर्पयिष्ये ३५ दिनानिकतिचिद्भूमन् गृहान्नोनिब्रह्मिजैः ॥ रामेतः पादरजमा पुनी  
हीदंनिमेःकुलम् ३६ इत्युपामन्त्रितो राज्ञा भगवल्लीकभावनः ॥ उवासकुर्वन्कल्याणं मिथिलानस्योपितास्य ३७ श्रुतदेवोऽच्युतंप्राप्तं स्वगृहाञ्जन

प्यारे नहीं हैं यह आपको बहो जो बचन है ताय सत्य करिवेके लिये आपने हमकूं दर्शन दियो है ३२ भक्त तुम्हें प्रिय हैं या प्रकार जाने है ऐसो कौन पुरुष तुम्हारे चरणारविन्दकूं त्यागेगो निष्कञ्चन अर्थात् कछु जिनके पास नहीं शान्त जिनको स्वभाव ऐसे जे मननशील मुनिहैं तिनकूं तुम अपनी वद दे चुके हो ३३ ऐसे तुम यदुर्वश में अवतार लेके संसार में भ्रमे जे माणी हैं तिनके संसार छुड़ाये के लिये त्रिलोकी को जो दुःख है ताय दूरिकरै ऐसे यशको विस्तार करत भये ३४ नहीं नाश होय ज्ञ न जिनको अत्यन्त शान्त तपकूं करो ऐसे नाशायण व्यापि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जो तुम हो तिनकूं नमस्कार है ३५ हे व्यापक ! सर्वत्र जो तुम हो सो सब ब्राह्मणन सहित कुछ दिन हमारे घरनमें बसिके अपने चरणरूपल की रज सू यह निगि राजा को कुल है ताय पवित्र करो ३६ राजा बहुलाराय ने या प्रकार जिनने कही ऐसे लोकन के पवित्र करनयारो जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो मिथिलापुरी के पुरुष स्त्रीनके बलयाण करतेहुये बितने दिन पर्यन्त वास करत भये ३७ जैसे जनकवंशोत्पन्न बहुलाराय राजा कूं प्राप्त भये ऐसे श्रुतदेव ब्राह्मण भी प्राप्तहुये जो श्रीकृष्णचन्द्र और मुनि हैं तिनने नमस्कार करिके अत्यन्त हर्षित होय



के वस्त्रं धुपायन नाचनभयो ३८ लाय के चित्रो जे तूण पटा दुनु के जायन ई नियै चालणन मोक्ष श्रीकृष्णचन्द्र ई आर है, भनो आर ऐमे चरई हरिके श्रीमदित भुन्देय प्रालण है सो आनन्द नू उनहे चरण गोचन भयो ३९ भयो है इय जो के और यास करे है मरण मतोय जाने गयो, चरभाषी जो भुन्देय प्रालण है सो चालारिन्द के भोजन चलन नू पादामनहित समस्तकुल नू पवित्र करन भयो ४० आर जे मू आदि लोक फल ई निम हरिके तथा गुणगुण मूचिहा नुलमी हुनु वचन और जो कोई अनायास पूजा की मागगी है निम हरिके और सरवरुण हू परान ऐमे नू दान हरिके भुन्देय नामण भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हो पुनन हरिके आराधन करी भयो ४१ मन नीयेनहू पवित्र करे है चरणेणु जिनकी और श्रीकृष्ण के नामे को दान ऐमे जे ब्राह्मण ई जिनसे मदई मो पावन अन्यरु न परयो जो धं हू पाहुं यह संगन कोन करण ते भयो या प्रकार ब्राह्मण तर्क करन भयो ४२ सी भयवा पुन इन मरहुं मंग लेई पास आयके ईउनो पाँर श्रीकृष्णजी के वरण तो दारै जो धुआँ है मो चन्देवरार ईउ और आतिथ किंयहुये भगवान्

कोयथा ॥ नत्वा मुनीन्मुमं हृष्टो धुन्वन्वासो नर्त्तह ३ = तृणपीठवृमीध्वेतानानि तेपुत्रैश्चमः ॥ स्वागतेनागिनन्वाहून् सभादर्योऽननिजेमुदा ३६ तद्

मभसामन्नाभामआरमानंसगृहान्नमम् ॥ स्नापगात्रकउच्छर्पेण्यमन्त्रेणो१५ः २० कर्नाहणेरीगशिवाशुनात्रुगिर्मुद्रामुभ्यातुवसीकुशाम्बुजैः ॥ आ

राधयागासम्योपपन्नया सपश्यामत्त्विविच्छेदान्ध्रुवा ४१ सर्वकंयागासकुतोगमान्भद्रगुहान्वद्भूषणतितस्वमत्तमः ॥ यः सर्वान्निथीहृषदपाद्रेणुभिः कु

एणनचास्यास्मानकनैयुमः ४३ संपाविश्वकृताः ४३ श्रुतद्वयवाच ॥ नाद्यना

[illegible][illegible]

कहत भयो ५२ अथ शुनडेन रहे है जा मरण शक्तिन त्रिके गा विज्जुं मंगि के प्पगणी सचा हरिके योगे मणिपु मगगुसुन जो तुम हो सो हम् हुं मासभये परन्तु ना स

१५ नुस्खारी तयान भूंसुने तुम्हें

जन के ऐसे पुरुषन के हृदय में भी ही परन्तु प्राणि दुर्गिरी और वृश्चगी तथा संस्रियो तुम्हारे नामों लीपें तुन्दरं ; अन्न-तरंग गिन के केने पुरस्सन के नम सखीदा पास रहो हो

हृत्कारं शृणु मे दूरे भयो ह प्रभिमानं जिनहो मेमे एतत्तनं हू मोक्ष के जननारे हो और देश मुक्षे जाके अभिमान नहीं मेमे पुण्यन हू आप समार देत हो साये महद्विज्ञात कारण माय

दोनों लपाधि हैं तिन सेवन करो ही अपनी माया करिके आप ढके नहीं ही और जीवनकी दृष्टि जिनने ढकि राखी है ऐसे जे तुम हो तिनकूं प्रणाम है ४८ ऐसे तुम हम अपने भृत्यनकूं शिक्ता देव हे देव अर्थात् प्रकाशमान ! तुम्हारी कहा हम पूजनकरै यावत् आप नेत्र के आगे नहीं आवो हो तावत् मनुष्यनकूं लेश रहे हैं ४९ अब श्रीशुकदेव जी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार श्रुत-देव ब्राह्मण को कक्षो वचन सुनिकै शरणागतन के दुःख के हरनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपने हाथ सँ ब्राह्मण को हाथ पकरिके हँसिके यह बोलतभये ५० मेरो आदर बहुत और ब्राह्मणन को थोड़ो कियो देखि के लोकन के शिक्तक भगवान् हैं सो मोते भी ब्राह्मणन में श्रद्धा बहुतकरी चाहिये या प्रकार श्रुतदेव कूं सिखावे हैं हे ब्राह्मण ! तुम्हारी भलो करिवे के लिये ये मुनि मास हुये हैं यह तुम जानो हो अपने चरणन की रेणु डारिके लोकन के पवित्र करिवे के लिये मोसहित विचरत हैं ५१ देवता क्षेत्र तीर्थइनके दर्शन स्पर्शन अर्चन करे तें बहुत कालमें होले होले पवित्र होय हैं सो भी महात्मान की इच्छा होय तो और ब्राह्मण तो शीघ्रही पवित्र करे है ५२ या ससारमें समस्त प्राणीन की अपेक्षा करिके ब्राह्मण जन्मही ते श्रेष्ठ है और जो तप करिके विद्या पाड़े

तरुद्धदृष्टये ४८ सत्वंशाधिस्वभृत्यान्नः विदेवकरवामहे ॥ एतदन्तोनुणंक्लेशो यद्भवानक्षिगोचरः ४९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ तदुक्तामित्युपाकरणं भगवान् प्रणतार्त्तिहा ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिं प्रहसंस्तमुवाचह ५० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ब्रह्मंस्तेऽनुग्रहायस्मप्राप्तान्निष्कृमन्मुनीन् ॥ सञ्चरन्तिमयालोकान् पुनन्तःपादरेणुभिः ५१ देवाःक्षेत्राणितीर्थानि दर्शनस्पर्शनार्चनैः ॥ शनैःपुनन्तिकालेन तदप्यर्द्धत्तमेक्षया ५२ ब्राह्मणो जन्मना श्रेयान् सर्वेषांप्राणिना मिह ॥ तपसाविद्यायातुष्ट्या किमुमत्कलयायुतः ५३ नब्राह्मणान्मेदयितं रूपमेतच्चतुर्भुजम् ॥ सर्ववेदमयोविप्रःसर्वदेवमयोहाहम् ५४ दुष्टप्रज्ञाआविदित्ने वमवजानिनन्त्यसूयवः ॥ गुरुंभांविपूमात्मानमर्चादाविज्यदृष्टयः ५५ चराचरमिदंविश्वं भावयेचास्यहेतवः ॥ मद्धूपाणीतिचेतस्याधत्तेविप्रोमदीक्षया ५६ तस्माद्ब्रह्मच्छपीनेतान् ब्रह्मन्मच्छ्रद्धयाऽर्चय ॥ एवंवेदर्वितोऽस्म्यद्धानान्यथाभूरिभूतिभिः ५७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ सइत्थंप्रमुणऽऽदिष्टःसहस्रृणान्चद्विजो

के सन्तोष करिके हमारी कला सँ युक्त होयकै श्रेष्ठ होय तौ यामें कहा कहनो है ५३ जो ब्राह्मण मोकूं प्यारो है सो चतुर्भुजरूप प्यारो नहीं लोग है सम्पूर्ण वेदमय ब्राह्मण है और देवतारूप में हू ५४ खोधी है बुद्धि जिनकी गुणन में दोषन कू देखें पूजादिकमें पूज्यबुद्धि ऐसे पुरुष हैं ते भी ब्राह्मण वेदमयहैं ऐसे नहीं जानिके गुरुरूप ब्राह्मणरूप सबको आत्मा जो मैं हू ताको अनादर करे है ५५ स्थावर जंगम जो यह विसव है और जे या विश्व के वारण महदादिक पदार्थ हैं तिनकूं ब्राह्मणहैं सो मेरो स्वरूप जानिके मेरोही सर्वत्र दर्शन है ता करिकै चित्त में राखे है ५६ हे ब्राह्मण श्रुतदेव ! श्रद्धा करिके ब्रह्मच्छपिन को पूजन करो मो में इनमें एक सौ भाव करोगे तो मेरी साक्षात् पूजा होयजायगी भेदभाव करिके मेरी बहुत सी सम्पत्ति करिके भी पूजा करोगे तो मैं प्रसन्न नहीं होउँगो ५७ अब श्रीशुकदेव जी कहें हैं हे राजन् परीक्षित ! ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रने जाकूं आज्ञा दीनी ऐसो जो श्रुतदेव ब्राह्मण है सो श्रीकृष्णचन्द्र सहित जे ब्राह्मण हैं तिन एक

भाव सँ आराधन करिके सुन्दर गति कूँ पाय गयो और मिथिलापुरी की राजा है सो भी सुन्दर गति कूँ पाय गयो ५८ हे राजन परीक्षित ! या प्रकार भक्तन की भक्ति करे ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण-चन्द्र है सो अपने भक्त बहुलाश्व और श्रुतदेव इन के यहाँ वास करिके सन्मार्ग अर्थवत् उपासनाकाण्ड ज्ञानकाण्ड कर्मकाण्ड इन तीनों काण्डन को उपदेश करि फेरि द्वारकापुरी में आवत भये ५९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपियादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे श्रुतदेवानुग्रहो नाम पटशतितमोऽध्यायः ८६ ॥ \* ॥ \* ॥

( सप्तशीतितमे नारायणनारदवादतः ॥ वेदैः स्तुतिर्गुणालम्ब्या निर्गुणा विधिवर्धते ? सत्तासी वै अध्यायं नारायण और नारदजी के वादसँ वेदनने गुणनके आलम्बवाली स्तुति निर्गुणकी अवधिताई वर्णन की है ? ) पहिले अध्यायके अन्त में भगवान् वेद को मार्ग ब्रह्मपर है ऐसे उपदेश करिके जातभये यह कह्यो तहाँ वेदन कूँ ब्रह्म परस्व नहीं वने है यह मानिके राजा परीक्षित प्रश्न करे हैं हे ब्रह्मन् ! निर्देश करिधे में न आवै निर्गुण और साक्षात् कार्य कारण इनते परे ऐसो जो ब्रह्मतामें गुणवृत्ति श्रुति साक्षात् कैसे विचरे है ? तथा शुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित !

समान् ॥ आराध्यै कालमभावेन मैथिलश्चापसद्वृत्तिषु ५८ एवं स्वभक्त्यो राजन् भगवान् भक्तभक्तिमान् ॥ उपित्वाऽऽदिश्य सन्मार्गं पुनर्द्वारवतीमगात् ५९ ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुगाणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे श्रुतदेवानुग्रहो नाम पटशतितमोऽध्यायः ८६ ॥ \* ॥ \* ॥

परीक्षितवाच ॥ ब्रह्मन् ब्रह्मण्यनिर्देश्ये निर्गुणे गुणवृत्तयः ॥ कथंचरन्ति श्रुतयः साक्षात्सदसतः परे १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ बुद्धीन्द्रियमनः प्राणाञ्जनाना ममृजत्पुमुनः ॥ मात्राऽर्थश्च भवार्थश्च आत्मनेऽकल्पनाय च २ सैषा ह्यपनिपद्ब्राह्मी पूर्वेपां पूर्वं जैर्धृता ॥ श्रद्धया धारयेद्यस्तां क्षेमगच्छेदकिञ्चनः ३ अत्र ते वर्णयिष्यामि गाथां नारायणा न्यिताम् ॥ नारदस्य च संवादं धृपेर्नारायणस्य च ४ एकदानारदोलोकात् पश्यत्स्वभगवत्प्रियः ॥ सनातनमृपिन्द्रं हुं ययौ नारायणा श्रमम् ५ ययौ भारतवर्षेऽस्मिन् क्षमायस्वस्तये नृणां ॥ धर्मज्ञानशमोपेतमाकल्पादास्थितस्तपः ६ तत्रोपविष्टमृपिभिः कलापग्रामवासिभिः ॥ परीतं प्रणतोऽपृच्छदिदमेव कुरुद्वह ७ तस्मै ह्यनोच ब्रह्मवानृषीणां श्रुतवतामिदम् ॥ यो ब्रह्मवादः पूर्वेपां जनलोकां निवासिनाम् ८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ स्वा

मभु जो हैं सो जनन के लिये बुद्धि इन्द्रिय मन प्राण इनकूँ सृजत भये काहे के अर्थ मात्रा जे विषय तिनके अर्थ और जन्मलक्षण जे कर्म तिनके करायने के लिये और आत्मा कूँ लोकनके भोग के अर्थ तथा मुक्तिके लिये सृजे है २ यह जो ब्रह्मपर अपनिपद् है सो पहिलेन के पहिले भये ऐसे जे सनकादिक है तिनने प्रथम धारण करी है जो पुरुष निष्कञ्चन होय के श्रद्धापूर्वक याहि धारण करै सो कल्याणकूँ प्राप्त होइ है ३ यहाँ तरे अर्थ नारायण करिके युक्त जो गाथा है ताया हम वर्णन करे हैं जा गाथा में नारद जी को और ऋषि नारायण जी को संवाद है ४ परसमय भगवान् के प्यारे नारदजी सम्पूर्ण लोकन में फिरत फिरत सनातन ऋषि कूँ देखिके के निमित्त नारायण के आश्रम में आवत भये ५ जो नारायण या भरतखण्ड में मनुष्यनके क्षेम के लिये और मङ्गल के लिये धर्म ज्ञान शम इन करिके युक्त जो तप है ताकूँ कल्पपर्यन्त करे हैं ६ हे परीक्षित ! तथा कलापग्राम के वासी ऋषिन सहित बैठे जे नारायण तिनमूँ नम्र होयके यह पूछत



ताकू सेवन करिके पाप और दुःखन कू त्यागे हैं जो तुम्हारी कथामात्र करिके पापनको त्याग होइ है तहां कहा कहनो है और जे स्वरूप के स्मरण करिके त्यागे हैं अन्तःकरण के रागादिक काल के गुण जरादिक ते जिनते पापकू दूरि करे हैं यामें कहा कहनो है हे परमेश्वर ! तुम्हारी परम अखण्ड आनन्द अनुभव स्वरूप को भजन करिके दुःखन कू त्यागे यामें कहा कहनो है ? ६ अब जे पुरुष तुम्हारी भजन नहीं करे हैं तिनकी निन्दा और प्राण गरी तुम्हारी भजन करे हैं तिनको सफल जीवन है या प्रकार स्तुति करे हैं जे प्राणधारी तुम्हारी भजन करिके इवासन कू पूरी करे हैं ते सफलजन्मा हैं और जो बिना भजनकरे इवास लेई हैं वे लोहार की धौकनीकी तुल्य वृथा रवास लेई हैं तुम्हारे भजनके बिना कृतघनीनकू फल सिद्ध नहीं होई है अब या प्रकार कहे हैं जाके अनुग्रह करिके महत्तत्त्व अहङ्कारादिक जे तत्त्व हैं ते या देखकू सुजत भये ता देखने अबमयादिकोशन में प्रवेश करिके ताता आकार करिके चेतन करे हैं सो तुमही सो कहे हैं अबमयादिकन कैसो है आकार जाको ऐसो पुरुष अबमयादिकनमें मिलि रखो है ऐसो तो सत्य अहमैं कैसेहो तहां कहे हैं अबमयादिकन के अन्तमें हो याते पुच्छ करिके वर्णन करे हैं स्थूल सूक्ष्म इनतें परेहो

पुनःस्वधामविधुताशयकालगुणः परमभजनित्येपदमजससुखानुभवम् १६ दृतयइवश्वसन्त्यसुभृतोयदितेनुविधामदहमादयोऽण्डमसृजन्त्यदनुग्रहतः॥  
पुरुषविधोऽन्वयोऽन्नचरमोऽन्नमयादिपुनःसदसतःपरन्त्वमथयेदष्ववशेषममृतम् १७ उदरमुपासेत्येयम्पिवर्त्मसुक्षूर्पदृशःपरिसरपच्छर्तिहृदयमारुणयोदहरम् ॥  
ततउदगादनन्ततवधामशिरःपरमं पुनरिहयत्समेत्यनपतान्तिकृतान्तमुखे १८ स्वकृतविचित्रयोनिपुत्रिशन्निवेहेतुयातरतमतश्चकास्यनलवत्स्वकृतानुकृतिः॥ अथवितथास्वमूष्णवितथंतवधागसमं विरजधियोऽन्वयन्यभिचिपश्यवएकरसम् १९ स्वकृतपुरुष्वमीष्विवाहिरन्तरसंवरणंतवपुरुषंवदन्त्यखिलशक्तिश्च तौशकृतम् ॥ इति नृगतिविविच्यकवयोनिगमावपनं भवतउपासतेऽङ्घ्रिमभवंभुविविश्वसिताः २० दुस्वगमात्मतत्त्वनिगमायतवात्तनोश्चरितमहामृता

और इनमें अतिशेषरूपहो याते सत्यहो शाखा इन्द्रकी तुल्य शुद्धरूप दिलायेवे के लिये अबमयादिकन में सम्बन्ध कबो हो ? ७ ऋषि के मार्ग में जे कूटस्थि हैं ते उदरब्रह्मकी उपासना करे हैं और जे अरुणवंशीय हैं ते नाडीन के चलित्रे को स्थान सूक्ष्म हृदय में स्थित ऐसे ब्रह्मही उपासना करे हैं हे अन्त ! तुम्हारी मासिको जो स्थान सुप्पणा जाको नाम सो शिरकू प्राप्त होत भयो कैसो धाम है कि जाय प्राप्तहोय के करि मृत्युको मुक्त जो यह संसार है तामें नहीं परे हैं ? ८ तुम्हारे करे ऐसे चित्र विचित्र ऊँच नीच मध्यम देहादिक तिनमें कारणरूप होई है पहिलेही विद्यमानहो याते पूर्ववेशे करत तारतम्यता करिके प्रकाशो हो जैसे काष्ठ में अग्नि ऐसे अपनी करी जे योनि तिनमें अनुकरण करोहो याते पिष्टयापृत योनि में समान एकरस सत्य ऐसो तुम्हारा स्वरूप ताय निर्मल हैं बुद्धि जिनकी तथा गये हैं व्यवहार जिनके ते पुरुष जाने हैं १९ अपने कर्मन करिके प्राप्तभये जे नारादिक देह हैं तिनमें भोक्तृत्व करिके वर्तमान है और भीतर बाहर आवरण नहीं हैं जाके ऐसे जीवकू समस्त शक्तिनके धारण करनवाँरे जो तुम तिनको अंश सो कह्यो है सो कहे हैं या प्रकार कवि हैं ते जीवकी गतिकू विचारिके वेदनको उत्पत्तिस्थान और नहीं है संसार जाते ऐसे तुम्हारे वरणकी उपासना करे है या प्रकार कियो है विश्वास जिनने ऐसे कविन कू मर्त्यलोक में यही उचित है २० हे ईश्वर ! दुर्बोध जो आत्मतत्त्व है ताके जनार्दवे के निमित्त एकदकरी

है मूर्ति जिनने ऐसे जे तुमहो तिनको चरित्रही बड़ो अमृतरूप समुद्र है तामें अवगाहन करिके दूरि भयो है अम जिनको ऐसे कोई एक तुम्हारे भक्तहैं ते मोक्षभी ईच्छा नहीं करे और तुम्हारे चरणफलमें अवगाहन करत इसकी तुल्य रमण करे हैं ऐसे भक्तन के कुलके संग करिके घर जिनने त्यागि दिये हैं २१ तुम्हारी सेवाको मार्ग जो देहहै सो आत्मा और प्राणके नुल्य आचरण करे है तथापि सम्पुल हितकारी प्यारे आत्मा जो तुमहो तिनमें साक्षात् भाव करिके नहीं भजनकरे हैं याते आत्मघाती है अहो वड़ोकष्टहै मिथ्याभूत देहादिकनके सेवनते असत् उपासना में हैं वासना जिनकी ऐसे नीच देहकं धारण करनवारे नड़ो भयरूप जो संसारहै ताँमें भ्रमणकरे हैं याते आत्मघाती हैं २२ जीती हैं प्राण मन इन्द्रिय जिनने ऐसे दृढयोगके करनवारे मुनि हृदय में जाकी उपासना करे हैं ताही प्रकार शत्रु हैं ते भी तुम्हारे स्मरण ते तुमकूं प्राप्तभये है तथा शेष के शरीरकी तुल्य जे तुम्हारे भुज्दण्डहैं तिनमें आसक्तहै बुद्धि जिनकी ऐसी जे स्नाई ते सम्पूर्ण समान दृष्टि करिके तुमकूं देखे हैं और तुमकूं प्राप्त भई है याही प्रकार हम जे श्रुतिहैं ते तुमकूं कृपा करिये में समान हैं कैसी हम है तुम्हारे चरण धारण करे हैं या प्रकार तुम्हारे स्मरणको प्रभाव

विधपरिवर्त्तपरिश्रमणाः ॥ नपरिलपन्ति केचिदपवर्गमपीश्वरते चरणसरोजसकुलसद्गुविमृष्टदाः २१ त्वदनुपथंकुलायमिदमाराममुहप्रियवचरितथो न्मुखेत्वयिहितेप्रियआत्मनिच ॥ नवतरमन्यहोअसदुपासनयाऽऽत्महनोयदनुशयाभ्रमन्त्युरुभयेकुशरीरभृतः २२ निभृतमरुमनोऽज्जटदयोगयुजोहृदिय न्मुनयउपासतेतदरयोऽपिययुऽस्मरणात् ॥ स्त्रियउरगेन्द्रभोगभुजदण्डविपक्कधियोवयमपितेसमाःसमदशोऽङ्घ्रिसरोजसुधाः २३ कइहुतुवेदवतावरजन्मल योऽप्रसरंयतउदगाहपिर्यमनुदेवगणाउभये ॥ तर्हिनसन्नचासदुभयंनचकालजवःकिमपिनतत्रशास्त्रमवकृष्यशयीतयदा २४ जनिममतःसतोद्युतिमुता त्मनिचेचभिदां त्रिपणसुतंस्मरन्त्युपदिशन्तितारुपितैः ॥ त्रिगुणगयःपुमानितिभिदायदबोधकृतात्वयिनततःपरत्रसभवेदवबोधसे २५ सदिवमनस्त्रिद्व

है २१ हे भगवन् ! या संसार में पूर्वसिद्ध जो तुमहौ तिनकूं आधुनिक उत्पत्ति विनाश इन करिके युक्त जो पुरुषहै सो कैसे जानेगो अर्थात् नहीं जानेगो जिन तुमते ब्रह्मा उत्पन्न भयोहै जा ब्रह्मा के पीछे आध्यात्मिक आधिदैविक देवतानके गण उत्पन्नभये जा समय तुम सबको संहार करिके सोचो हौ ता समय जीवनकूं ज्ञानसाधन नहीं है याते मलयके समय स्थूल जो आकाशादिक सो नहीं है और सूक्ष्म महदादिक सोभी नहीं है तथा स्थूल सूक्ष्म करिके आरब्ध जो शरीर सो भी नहीं है और शरीरको कारणरूप कालको विषयभाव है सो भी नहीं है ऐसे भये सन्ते ता समय इन्द्रिय प्राणादिक केलु नहीं हैं और सबको जनावनवारो जो शास्त्र सो भी नहीं है २४ मिथ्याभूत यह जगत्है ताकी उत्पत्तिहै या प्रकार वैशेषिकादिक आचार्य कहे हैं और इकाईम प्रकार के दुःखन को जो नाश है सो मोक्षहै ऐसे नैयायिक माने हैं और साख्याचार्य हैं ते आत्मा में भेद भाव माने हैं तथा कर्म फलके व्यवहारकूं मीमांसक सत्य कहे हैं ते सम्पूर्ण आरोपित भ्रम करिके ही उपदेश करे हैं तच्चदृष्टि करिके उपदेश नहीं करे हैं वास्तव ते पुरुष त्रिगुणमयहोय तो सब जीव जिसके हैं सो सम्भव नहीं है यह कहे हैं त्रिगुणमय पुरुष है यह जो भेद है सो तुम्हारे विषे अज्ञान करिके कियो है तुम कैसेहो अज्ञानते परे हौ सङ्गरहित हौ ज्ञानधनहौ याते तुम अवोध हौ सो नहीं सव है २५ जो असत् नहीं उपजेहै और त्रिगुणमय पुरुष नहीं है तो यह मगध भयोहो





कैसे है कारणभाव करिके जो विकार तिनै त्यागिके जो है सो सर्वव्यापक है फेरि बैसो है कि जो कहै हैं हम जाने हैं तिनने नहीं जान्यो है और जे कहै हैं हमने नहीं जान्यो है तिननेही जान्यो है ३० प्रकृति और पुरुष इनको जो जन्म है सो नहीं सम्भव है क्यों प्रकृति पुरुष अजन्मा है या कारण प्रकृति पुरुषके सम्बन्ध वरिके जीव जन्म लेइ है जैसे जल में ववूला है ते केवल जल करिके नहीं उत्पन्न होइ है और केवल पवन करिके भी नहीं उत्पन्न होइ है किन्तु दोनों से उत्पन्न होइ है तुम जो कारणरूप ईश्वरहौ तिनके विषे अनेक नाम रूप गुण इन करिके सहित जीव लीन होइ है ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे शूद्रमें सम्पूर्ण वनस्पतीनके रस लीन होइ है और जैसे समुद्र में सम्पूर्ण नदी लीन होइ है ऐसे ३१ जीवनके विषे तुम्हारी माया करिके अमहैताय जानिके सुन्दर है बुद्धि जिनकी ऐसे पुरुष संसारके निवृत्त करनवारे जे तुमहौ तिनके विषे भावना करै हैं वैसे अमे हैं वारंवार जन्म लेइ हैं और जे तुम्हारे शरण होइके भजन करै हैं तिनकुं संसारको भय नहीं होइ है माहे तैं तीनि हैशीत उष्ण वर्षा नेमि जाके ऐसो संवत्सररूपी काल सो तुम्हारी भूमिरूप है और जे तुम्हारे शरण नहीं हैं तिनके तुम रत्नक नहीं हौ किन्तु भयकारक हौ याते बुद्धिमान हैं ते तुम्हारे विषे भाव करै हैं ३२

नियन्त भवेत्सममनुजानानां यदमतं मतदृष्टया ३० न घटन उद्भवः प्रकृतिपूरुषयोरजयो रुभययुजा गवन्त्यसुभृतोजलवुद्वुदवत् ॥ त्वयितइमेततो विविधनामगुणैः परमेसरितइवाणैवेमधुनिलित्युरशो परसाः ३१ नृपुतवमायया भ्रममपीष्ववगत्य भृशं त्वयिसुधियोऽभवेदधतिभावमनुप्रभवम् ॥ कथमनुवर्त्ततां भवभयन्तवयदभुक्कुटिः मृजतिमुहृस्त्रिणैर्मिरभवच्छरणेषु भयम् ३२ विजितहृपीकवायुभिरदान्तमनस्तुरंगं यदहयतन्तियन्तुमनिलोलसुपायसिद्धिः ॥ व्यसनशतान्विताः समवहायगुरोश्चरणं वाणिजइवा जसन्त्यकृतकर्णधराजलधौ ३३ स्वजनमुतात्मदारधनधामधराऽसुरैस्त्वयिसति किं नृणां श्रयत आत्मनिसर्व्वरसे ॥ इतिसदजानतां मिथुनतोरतये चरतां सुखयतिकोन्विहस्वविहतेस्वनिरसनभगे ३४ भुविपुरुषगतीत्थसदनान्युपयोविमदास्नउतभवत्पदाभुजहृदोऽघिभेद्विजलाः ॥ दधतिसकृन्मनस्त्वयिय आत्मनि नित्यसुखेन पुनरुपासते पुरुषसारहरावसथान् ३५ सतइदमुत्थितं सदिति चेन्ननुतर्कहतं

जीती है इन्द्रिय प्राण जिनने तिन करिके हू अतिचञ्चल दमन करिने कूँ अशक्य ऐसो मनरूप घोड़ा ताय जीतिवैकूँ जे यव करै हैं ते उपाय करिके खेदकूँ प्राप्त होइ है और चहुत व्यसनन करिके व्याकुल होइ है काहे तैं कि आर्जुन मन जीतिये है तिन गुरुनके चरणनकूँ त्यागिके यव करै हैं ते दुःखकूँ पावै हैं जैसे नहीं कियो है नावको खेवनवारो जिनने ऐसे बनिया समुद्रमें दुःख पावै ऐसे ३३ तुम्हारी जो पुरुष आश्रय लेइ है ताकूँ स्वजन पुत्रदेह स्त्री इन घर पृथ्वी प्राण रथ इनसुं कहा प्रयोजन है कैसे तुमहौ आत्मा सब सुख आनन्दरूप जो तुमहौ तिनको जो पुरुष आत्मामें सेवन करै ताकूँ इन तुच्छ पदार्थन सुं कहा प्रयोजन है सत्य परमार्थ सुखकूँ नहीं जानिके स्त्री पुरुष मिलिके रतिके लिये विचरे है तिनकूँ या संसारमें कौन सुख है अर्थात् कोई नहीं कैसो संसार है आपते मिथ्याभूत और साररहित है याते तुम्हारी भी भजन करिवो उचित है ३४ आश्चर्य कूँ त्यागिके तुम्हारे चरणारविदकूँ हृदय में धारण कियो है जिनने याही ते पापको दूरि करनवारो है चरणोदक जिनको ऐसे जे तुम्हारे भक्त ऋषि हैं ते पृथ्वीमें बहुत पुण्यतीर्थ क्षेत्रनकूँ सेवन करै हैं अथवा बहुत है भगवान् को भजनरूप पुण्य जिनके ऐसे गुरु महात्मानके आश्रमन को सेवन करै हैं वे पुरुषके सारके हरनवारे जे घर दितिनै नहीं



यति संन्यासी है ते हृदयमें स्थित ऐसी जे कामकी वासना है तिने नहीं उलारे हैं तिन असाधुन के हृदयमें तुम स्थित हो परन्तु नहीं मिलो हो कैसे नहीं मिलो हो जैसे कण्ठ में स्थित मणि भूले पीछे नहीं मिळे है तैसे तुम नहीं मिलो हो उन संन्यासीन कूँ केवल तुम्हारे स्मरण नहीं है तो कहा है जे इन्द्रियन के वृप्ति करनवारे हैं तिन कूँ या लोक में दुःखही है काहे ते दुःख है जाते लोकन को आराधन करने धन सञ्चय करने भोग करने परब छियाय के करने ताते या लोक में दुःख होइ है और तुम्हारी प्राप्ति के छिये संन्यास लियो है सो तुम्हारी प्राप्ति भई नहीं और अपने निजधर्म को अतिक्रमण कखो याते तुम्हारी दण्डरूप नरक ताकी प्राप्ति भई यांम् परलोक में भी सुख नहीं दोनों लोकन ते भ्रष्ट भये ३९ गुण और ऐश्वर्य करिके युक्त है भगवन् ! तुम्हारे ज्ञान करिके युक्त ऐसी जो भक्त है सो वर्मफलके देनवारे जो तुम ईश्वर तिन ते उठे प्राचीन पुण्य पाप तिनके फल जे सुख दुःख तिन स्मरण नहीं करे है और देशभिमानीन की प्रवृत्ति निवृत्ति की करनवारी ऐसी जे विधि नियमरूप बाणी तिन नहीं जाने हैं तुम्हारे भक्त के देशभिमानी नहीं है या कारण ते कार्य अकार्य को बोध नहीं है यह योग्य है जा कारण ते मनुष्यन करिके दिन दिन में श्रवण करिके चित्त में धारण किये ऐसे तुम सो भक्तन कूँ मोक्षगति होइ कैसे तुम भक्तन ने धारण कियो हो तहां कहे हैं युग युग में उपदेश को जो

पदाद्भवतः ३६ त्वद्वगमीनवेत्तिभवदुत्थशुभाशुभयोगुणविगुणान्वयांस्तर्हिदेहभृताश्चरिः ॥ अनुयुगमन्वहंसगुणगीतपरंपरया श्रवणभृतोयतस्त्व  
मपवर्गगतिर्मनुजैः ४० ह्युपतयएवतेनययुरन्तमनन्तयात्वमपियदन्तराऽण्डनिचयाननुसावरणाः ॥ त्वद्वरजांसिवान्तिवयसासहयच्छुनयस्त्वयि  
हिफलन्यतन्निरसनेनभवन्निधनाः ४१ श्रीभगवानुवाच ॥ इत्येतदब्रह्मणःपुत्राआश्रयात्मानुशासनम् ॥ सनन्दनमथाऽऽनन्दुःसिद्धाज्ञात्वाऽऽत्मनोगतिम्  
४२ इत्यशेषसमाम्नायपुराणोपनिषदसः ॥ समुद्धृतःपूर्वजातैर्व्योमयानैर्महात्मभिः ४३ त्वैतदब्रह्मादायादश्रद्धयाऽऽत्मानुशासनम् ॥ धारयंश्चरगां

विस्तार ता करिके सम्प्रदाय के अनुसार करिके धारण किये हो यांम् यह कहे हैं जे तत्त्वज्ञानी हैं तिनकूँ तो कर्म को अधिकार नहीं और जे नित्य तुम्हारी कथा श्रवण कीर्त्तन इत्यादिक करे हैं तिनकूँ तुम्हारे चरणकी प्राप्ति होइ है याते उनकूँ विधि निषेध नहीं है और जे हैं ते योग के कण्ठ करिके इन्द्रियन कूँ लड़ावे हैं तिन पुरुषन कूँ या लोक परलोक में दुःखही है ४० हे भगवन् ! स्वर्गादिक लोकन के पति जे ब्रह्मादिक हैं ते भी तुम्हारे प्रताप कूँ नहीं पावतभये तुमहीं अपने अन्त कूँ नहीं प्राप्त होउ हो ब्रह्मादिक न पावें यांम् कहा आश्चर्य है तहां भगवान् कहे हैं जो मैं अपने अन्त कूँ न जानौं तो सर्वशक्ति और सर्वज्ञ कैसेहूँ तहां कहे हैं तुम्हारे वैभव को अन्त नहीं है जैसे शरी के शृङ्ग नहीं जानने ते सर्वज्ञता शक्ति जाति रहे है किन्तु नहीं जाय है जो शरी के शृङ्ग होई तो मिलै जा तुम परमेश्वर के मध्यमें दश गुण अधिक सात आवरण तिन करिके युक्त ब्रह्माण्डन के समूह ते कालचक्र करिके अन्त डोलै हैं जैसे आकाश में एक सङ्गरज भ्रमण करे हैं ऐसे याते श्रुति हैं ते पर्यवसान कूँ तात्पर्य करिके प्राप्त होइ हैं साक्षात् कहे हैं सगुण रूप जो तुमहीं तिनके गुणन को अन्त नहीं है निर्गुण है ताकूँ अगोचर नहीं जाते तात्पर्य मैं कहे हैं ४१ नारायण नारदसूँ कहे हैं या ब्रह्मा के पुत्र सनकादिक वेदनकी स्तुति श्रवण करिके आत्मा की गति जानि के सनन्दनजी को पूजन करत भये ४२ या प्रकार आकाशमें है गमन जि-



है ? ) अब राजा परीक्षित पूछकरे हैं कि हे महाराज शुकदेन जी ! देवता असुर मनुष्यन यो जे अंगणलरूप शिव को भजन करे हैं ते वह्नुधा धनवान् होय हैं और लक्ष्मी के पति श्री कृष्णचन्द्र को जे भजनकरे हैं ते धनवान् नही होय हैं और निपय भी नहीं भोगे हैं यह हम जान्यो चाहें हैं यामें हमारे वडो सन्देह है विकृद्द है सभाब जिनको ऐसे जे स्वामी हैं तिनके भजन करनबारेन की और गति होइ है कही जो शिवजी विप्रति लगवें श्पशान में वास करे आक धवरो जिनकें प्यारो लगे ऐसे अमङ्गलरूप शिवजी हैं जिनके कछु नहीं तिनको जे भजन करे हैं ते लक्ष्मीवान् होइ हैं और भोग भोगे हैं और लक्ष्मी के पति अच्छे भोग भोगे सुन्दर वस्त्र पहिरे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं जे भोगे हैं ते वह्नुधा दरिद्र होइ है यह स्वामीनी गति और है उचित तो यह है जो स्वामी होय तैसोही सेवकहोय सो नहीं यह सन्देह है ? २ अब शुकदेवजीकहे हैं हे राजन् परीक्षित ! शिवजी में शक्ति रहे है गुणनको जो आपुसमें संवर्षण है तांहुं तमोगुण तीन प्रकार को है ताहिंकुं कहैं सात्त्विक अहंकार और राजस अहंकार तागास अहंकार ऐसे तीन प्रकारके अहंकारके अधिपुता शिवजी हैं सो तीनप्रकारके हैं ३ ता अहंकारते पृथ्वी जल तेज वायु आवाणये

विरुद्धशीलयोः पूर्वोर्विरुद्धाभजतांगतिः २ श्रीशुकउवाच ॥ शिवः शक्रियुतः शश्वत्रिलिङ्गो गुणसंघनः ॥ वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेत्यर्हत्रिधा ३ ततो  
विकारा अभवन् षोडशासीपुकिञ्चन ॥ उपधावन् विभूतीनां सर्वान् सामश्नुते गतिम् ४ हरिर्हि निर्गुणः साक्षात् पुरुषः प्रकृतोः परः ॥ स सर्वद्वगुपदष्टा तं भजन्निर्गुणो भ  
वेत् ५ निवृत्तेष्वश्वमेधेषु राजा युष्मत्पितामहः ॥ श्रूयन् नृभगवतो धर्मान् पृच्छादिदमच्युतम् ६ स आह भगवांस्तस्मै प्रीतः शुश्रूषवे प्रभुः ॥ नृणां निःश्रेय  
सार्थाय योऽवतीर्णो यदोः कुले ७ श्रीभगवानुवाच ॥ यस्याहमनुगृह्णामि हरिष्येतद्धनं शनैः ॥ ततोऽधनन्त्यजन्यस्य स्वजनादुत्खुः खितम् ८ स यदा नि  
तथोद्योगो निर्विषः स्याद्धने हया ॥ मत्परैः कृतमैत्रस्य करिष्ये मदनुग्रहम् ९ तद्वत्त्वपरमं मूढम् चिन्मात्रं सदन्तकम् ॥ अतो मांसुद्धाराध्यं हित्वा ज्ञया

पञ्चभूत और दश इन्द्रिय तथा एक मन ये सोलह विकार भये हैं इन विकारनमें कोई एक विकारवान् उपाधिरूप विकार के भजन करते सम्पत्ति मिले है उपाधि जाकू छगि रही है वाके भजन करे ते उपाधि होइ है ४ निर्गुण साक्षात् माया ते परे सबके देखनवारे साक्षीभूत जो हरि भगवान् है तिनको जो पुरुष भजनकरे वह निर्गुण होइ है ५ अस्वमेय यज्ञ जब पूर्ण होय चुक्यो तब तुम्हारे दादे राजा युधिष्ठिर वैष्णव धर्मनकू श्रवण करिके पीछे श्रीकृष्णचन्द्र ते यह पूछत भये ६ मनुष्यनके कल्याण करिवे के लिये यदुकुलमें आप अवतरे ऐसे समर्थ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो प्रमन होय के सुनने की इच्छाबले राजा युधिष्ठिर ते यह कहत भये ७ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं कि जा पुरुष के ऊपर मैं कृपा करूँ हूँ ता पौछे जब दक्षिणी होइ जाय है तब दुःखी की तुल्य दिखाई देई है बाकू भय्या वन्धु सब त्यागि देई हैं ८ भय्या वन्धुन के दठते फेरि कमाई में लगे तप भरे अनुग्रहते निष्फल उग्रम हो; है तब धनके कमाइने ते भी वैराग्य आय जाय है ता समय मत्परायण जे साधु हैं तिनसूं मित्रता करे है वा पुरुष के ऊपर मैं असाधारण अनुग्रह करूँ ९ वह परब्रह्म सूच्य है चैतन्य है सर्वव्यापी है नाशरहित



है यति ये आराधन करिने में नहीं आऊँ हूँ मोक्ष स्थातिके यह पुरुष और देवतानकू भजे है १० सेवनकरे पीछे शीघ्र प्रसन्न होय जे देवताहँ तिनमूँ जो राज्य और धन प्राप्त भयो है तासुं उद्धत होय जे मत्वारो होयके उन्मत्त होयके वरके देनवारें जे देवताहँ तिन भूलि जायँ और अवज्ञाकरे है ११ अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! ब्रह्मा विष्णु शिव इत्यादिक जे देवता हैं ते शाप देई और प्रसन्न होई हैं और शिव ब्रह्मा ये दोनों शीघ्रही प्रसन्न होई हैं और श्रीकृष्णचन्द्र शीघ्रही प्रसन्न नहीं होई हैं और जोय प्रसन्न होई ताकूँ शाप नहीं देई हैं १२ ब्रह्मा और शिवजी ये शीघ्र शाप देई हैं यामें एक माचीन इतिहास है सो वर्णन करे हैं शिवजी ठाकुरकूं वरदैके कष्ट पावतभये १३ सौंटी है बुद्धि जाकी ऐसो शकुनिको पुत्र दृक्कासुर मार्ग में नारदजी कूँ देखिके ब्रह्मा विष्णु महादेव इन तीनों देवतान में जल्दी कौन प्रसन्न होई है यह पूछतभयो १४ तब नारदजी कहतभये कि तू महादेव को सेवन कर शीघ्र तेरो मनोरथ सिद्ध हो-

न भजते जनः १० ततस्त आशुते पेभ्यो लब्धगज्यश्रियोद्धताः ॥ मत्ताः प्रमत्ता वदान्विस्मरन्त्यवजानते ११ श्रीशुकउवाच ॥ शापप्रसादयोरीशा ब्रह्मविष्णु शिवादयः ॥ सद्यः शापप्रसादोऽङ्ग शिवो ब्रह्मानवाच्युतः १२ अत्रचोदाहरन्तीमिति हासं पुरातनम् ॥ दृक्कासुराय गिरिशो वरं दत्त्वा पसङ्कटम् १३ वृकोनापा सुरगुञ्जः शकुनेः पथिनारदम् ॥ दृष्ट्वाऽऽशुतोपपञ्च देवेषु त्रिपुटुर्मतिः १४ स आह देवंगिरि समुपाधावाऽऽशुसिञ्चसि ॥ योऽल्पाभ्यांगुणदोषाभ्यामाशुतु व्यतिकुप्यति १५ दशास्यत्राणयोस्तुष्टः स्तुवतोर्विन्दनोरिव ॥ ऐश्वर्यमनुलं दत्त्वा तत आपसुसङ्कटम् १६ इत्यादिष्टस्तमसुर उपाधावस्त्वगान्नतः ॥ केदार आत्मक्रव्येण लुहानोऽग्निमुलंहरम् १७ देवोपलब्धिमप्राप्य निर्वेदात्सप्तमेऽहनि ॥ शिरोऽवृथस्त्वधितिना तर्क्षार्थं क्लिन्नमूर्द्धजम् १८ तदामहाकारुणिकः सधूर्जैर्द्विर्थावयंचाग्निर्वोत्थितेऽनलात् ॥ निगृह्य दोर्भाभुजयोर्नृन्वायत्तत्स्पर्शनाद्भ्यू उपस्कृताकृतिः १९ तमाहवाङ्मालमलंघणीष्वमे यथाऽभिक्रामं

यगो जो शिवजी थोड़े गुणनसू शीघ्र प्रसन्न और थोड़े दोष करिके क्रोषित होई है १५ वन्दीजन की तुल्य स्तुति करे ऐसे जे रात्रण और वाणासुर तिनके ऊपर प्रसन्नभये ऐसे जे शिवजी हैं सो बड़ो ऐश्वर्य देके तिन असुरनते आपही कष्ट पावतभये रात्रणने तो कैलास उलारि लियो और वाणासुरने कही कि भेरे पुरकी रक्षा करो १६ या प्रकार नारदजीने कही ता समय दृक्कासुर आपने देहते शिवजी को सेवन करतभयो केदारतीर्थ में शिवजी के अर्थ अपने शरीरको मांस काटिके अग्नि में हवन करतभयो १७ महादेव की प्राप्ति न भई तब निर्देह आयगयो ताते सगमदिन तीर्थ में जो स्नान कियो तासुं भीत्रे हैं वार जाँ ऐसो जो शिव है ताव लुरीलैके काटनलग्यो १८ ता समय उड़े कल्याणवान् शिवजी हैं सो मूर्तिमान् अग्नि की तुल्य है प्रकाश जिनको ऐसे अग्नि-कुण्ड में ते निकसिने हाथनते असुरकी भुजा पकरिके बैसि कोई दुःखने गारे गरिउकूं आवै ताव मने करे हैं ऐसे मने करतभये शिवजी के हाथके स्पर्श ते वाको देह ज्यों को त्यों होइगयो १९ दृक्कासुर में ते निकसिने कहतभये कि हे दृक्कासुर ! तू तप करिके पूर्ण भयो अत्र चरमाग जो तेरी इच्छा होइ सोही पर देउंगो जे मेरी शरण मनुष्य आवै है तिनके ऊपर गलपात्र के चढ़ायेतही प्रसन्न होय

जाऊँ हों वहु आश्चर्य है तेने दृष्टाही अपने देहकू दुःख दियो २० तब वह अत्यन्त पापी जा जा पुरुषके शिरपै मैं हाथधरूँ वह पुरुष मरिजाय या प्रकार सम्पूर्ण भागीनके भयको देनवारो जो वा है ताय महादेवजी सँ मागतभयो २१ हे भरतवंशोत्पन्न राजन् परीक्षित् ! या प्रकार दृक्तासुरको वचन श्रवण करिके उदासीन से होयके अचब्दी वांतेहैं ऐसे मुसिकायके जैसे सर्पकू दूध प्यावे हैं ऐसे दृक्तासुरकू वर देतभये २२ या प्रकार जातिकही निश्चय पावर्त्तकी है चारुना जाके ऐसो असुर है सो वर भिऱ्याहै या सत्यहै यह परीक्षा लेवेके लिये महादेवजी के मायेपै हाथ धरिवे को उपाय करतभयो तासमय अपने कर्तव ते मयभीत होयके शिवजी भाजतभये २३ असुर जिनके पीछे लग्यो ऐसे शिवजी हरिके कपतेहुये स्वर्गपर्यन्त भाजे और पृथ्वीको जहाँ पर्यन्त अन्तहो तदातार् भाजे फेरि उत्तरदिशामें भाजिके गये २४ ता समय उपायकू नहीं जानिके सम्पूर्ण देवता चुप होत भये ता पीछे प्रकाशमान माया ते परे ऐसो जो वैकुण्ठधाम है तामें जात भये २५ जा दै-

वितरामितेवरम् ॥ प्रीयेयतोयेननुणांप्रपद्यामहोत्वयाऽऽत्माभृशमद्योतेवृथा २० देवंसवत्रेपापीयान् वंभूतभयावहम् ॥ यस्ययस्यकरंशीर्ष्णि धास्येसाम्प्रिय तामिति २१ तच्छ्रुत्वाभगवान्द्रोढुर्मनाइवभारत ॥ ओमितिप्रहंसंस्तस्मै ददेऽहेरभृत्यथा २२ इत्युक्त्वाऽसोऽसुरोनूनं गौरीहरणलालसः ॥ सतद्वरपरीक्षांशाम्भोर्मूर्ध्निकिलासुरः ॥ स्वहस्तं धातुमारंभे सोऽविभ्यस्त्वकुनाञ्जिवः २३ तेनोपमृष्टः संत्रस्तः पराधावतसवेपथुः ॥ यावदन्तं दिवोभूमेः काष्ठानामुदगादुदक् २४ अजानन्तः प्रतिविधिं तूष्णीमासन्सुरेश्वराः ॥ ततोवैकुण्ठमगमद्भास्वरंतमसः परम् २५ यत्रनारायणः साक्षान्यासिनांपरमागतिः ॥ शान्तानान्यस्तदण्डानां यतोनावर्त्तते गतः २६ तंतथाव्यसनंदद्वा भगवान्बुजिनार्दनः ॥ दूरतप्रत्युदियाद्भूत्वा वटुकोयोगमायया २७ मेखलाऽजिनदण्डाक्षस्तेजसाऽग्निरिवज्वलन् ॥ अभिवाद्यामासचतं कुशपाणिर्विनीतवत् २८ श्रीभगवानुवाच ॥ शाकुनेय भवानव्यक्तं श्रान्तः किंदूरमागतः ॥ क्षणं विश्रम्यतांपुंस आत्माऽयं सर्वकामधुक् २९ यदिनः श्रवणयाऽलं युष्मद्व्यवसितं विभो ॥ भगयतांप्रायशः पुंभिर्भूतैः स्वार्थान्समीहते ३० श्रीशुकउवाच ॥ एवंभगव

कुण्ठधाम में शान्त जिनको स्वभाव और दूर भयो है कालको दण्ड जिनते ऐसे संन्यासीन कू परमागति अर्थात् प्राप्त होयवे योग्य ऐसे नारायण हैं सो साक्षात् विराजमान हैं २६ दुःखन के दूर करनवारो जो भगवान् नारायण हैं सो दौरेखो चल्थो आवै है ता प्रकार कष्ट जाकू ऐसो जो दृक्तासुर है ताई दूरेही देखिके अपनी योगमाया करिके ब्रह्मचारी को वेप मंजुकी कौ मनी मृग-खाला दण्ड माला इनकू पहिरिके तेजसू अग्निही तुल्य प्रकाशमान होयके आयके कुशा है हाथमें जिनके ऐसे भगवान् हैं सो जैसे कोई नम्र होईके मणाम करे ऐसे मणाम करावत भये २७ २८ अब श्रीभगवान् कहें हैं हे शुकनिके पुत्र ! तो कू निश्चय खेदहै दूर कोदेकू आयो कृणभर विश्राम ले पुरुष कू समस्त कामनान को देनवारो यह देह है ताकू पीड़ा मतिदेय २९ हे समर्थ ! जो तुम्हारा अभिप्राय हमारे आगे सुनाइवे योग्य है तो कहो जनहै सो बहुधा पुरुषनकी सहाय ते अपने कामकू करे है या कारण तुम हमसू कहो ३० अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन्

परीक्षित ! या प्रकार अमृतरूप वचनन वरि के भगवान् ने पूछ्यो तब भयो है खेद जावो ऐसो वृकासुर है सो जैसे प्रथम तप वर्यो हो ताय कहत भयो ३१ अव श्रीभगवान् व है जो शिवने तुमकुं वर दियो है तो ताके वचनकुं हम सत्य नहीं माने हैं यह शिव दत्त के शाप करि के पिशाचन की दशाकुं प्राप्त भयो है और ऐत पिशाचन को राजा है ३२ हे दानवनन को राजा है ३२ हे दानवनन के इन्द्र ! जगत्को गुरु जो महादेव है ताके वचनमें तोकू विरयास है तो हे वृकासुर ! तू शीघ्र अपने शिरपै हाथ गरि के परीक्षा ले ३३ हे दानवननमें श्रेष्ठ ! या महादेव को वचन कैसे सत्य होयगो यह तो मिथ्यावादी है ऐसे महादेव को मार जो फेरि कर्मऊं मिथ्या न बोलैगो ३४ या प्रकार मनोहर विचित्र विचित्र जे भगवान् के वचन हैं तिन करि के श्रेष्ठ भई है बुद्धि जाकी ऐसो कुबुद्धि वृकासुर है सो भूलि के अपने शिरपै अपने हाथ धरत भयो ३५ शिरपै हाथ धरे पीछे वज्रको मारो जैसे गिरे है ऐसे जगभरमें भिन्न शिर करि के गिरत भयो ता समय स्वर्ग में जय जय और नमः शब्द तथा साधुशब्द होत भयो ३६

तापृष्टो वचसाऽमृतवर्षिणा ॥ गतक्लमो ब्रवीचरम् ॥ यथापूर्वमनुष्ठितम् ३१ श्रीभगवानुवाच ॥ एवं चेत्तद्विद्वान् वयं श्रद्धाधीमहि ॥ यो दक्षशापात्पैशाच्यं प्राप्तः भेतपि शाचराट् ३२ यदि वस्तत्र विभ्रमो दानवेन्द्रजगद्गुरौ ॥ तर्ह्यज्ञाशुस्नशिरसि हर्सेन्यस्य प्रतीयताम् ३३ यद्यसत्यं वचः शुम्भोः कथं चिदान्वर्षम् ॥ तदैवं त्रह्यसदाचं न यद्वक्ता नृतपुनः ३४ इत्थं भगवताश्चित्रैर्वचोभिः समुपश्लैः ॥ भिन्नधीर्विस्मृतः शर्षिण स्वहस्तेऽकुमतिर्व्यधात् ३५ अथापत द्विन्नाशिरावज्जाहन इव क्षणात् ॥ जयशब्दो नमः शब्दः साधुशब्दोऽभवद्विनि ३६ मुमुचुः पुष्पवर्षाणि हते पापेषु कामुरे ॥ देवर्षिपितृगन्धर्वान् मोचितः सङ्कटाच्छिवः ३७ मुक्रं गिरिशमभ्याह भगवान् पुरुषोत्तमः ॥ अहो देवमहादेव पापोऽयं स्वेन पापमना ३८ हतः को नुमहस्वीश जन्तुर्वै कृतकिल्विपः ॥ क्षेमी स्यात्किमुविश्वेशेऽकृतागस्को जगद्गुरौ ३९ य एवमव्याकृतशक्त्युदन्वतः परस्य साक्षात्परमात्मानो हरेः ॥ गिरित्रिमोक्षं कथयेच्छृणोति वा विमुच्यते संसृतिभित्थाऽरिभिः ४० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे रुद्रमोक्षणं नामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

श्रीशुक्र उवाच ॥ सरस्वत्यास्तेराजन्तुः पयः सत्रमासत ॥ वितर्कः समभूत्तेषां त्रिष्वधीशेषु को महान् १ तस्य जिज्ञासया ते वै भृगुर्वह्यमुतं नृप ॥ तज्ज्ञस्यै पापात्मा वृकासुर गत्योता समय देवता ऋषि पितृ गन्धर्व ये फूलनकी वर्षा करत भये और शिवजी कष्ट ते छूटत भये ३७ जय शिवजी कष्टे छूट तव पुरुषोत्तम भगवान् कहत भये अहो देव महादेव ! यह वृकासुर पापी अपने पाप करि के मर्यो है ३८ हे ईश ! वह नको अपराध करे तो कौन प्राणी कल्याण कृपास होई हे देतो विश्व के ईश्वर जगत् के गुरु तुमही तिनके अपराध करेते भलो कदापि नहीं होय है ३९ वचन और मानते कहिये मैं न आने ऐसी अनेक शक्ति जिनमें रहै सब के कारण साक्षात् परमेश्वर जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने शिवजी कृं कष्टते छुड़ाय दियो यह जो चरित्र है ताय जो पुरुष व है और सुने वह संसार ते और चैरिनते छूटि जाय है ४० इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यष्टादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे रुद्रमोक्षणं नामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥ \* ॥

(नवाशीतितमो देवः को महानि तिसंशये ॥ परीक्ष्य विष्णोः स्तुतिर्पुनर्भयोऽवर्णयद्गुणः ? नवासीवै अध्याय में कौन देव बड़ा है या संशय में धुगुजी परीक्षा कर विष्णुजी की श्रेष्ठता मुनिन स्रं वर्णन

करते भये ? ) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! एक समय सरस्वती नदीके तटप्रे ऋषि यज्ञकरे हैं तहाँ ब्रह्मा विष्णु शिव इन तीनों देवतान में कौन बड़ा है ऐसी आपुस में भागरी होतभयो ? हे राजन् ! इनमें कौन बड़ा है तावी परीक्षाके लिये ब्रह्माके पुत्र भृगुकुं पठावतभये सो भृगु परीक्षा करिवे के निमित्त ब्रह्माकी सभामें जातभये २ ब्रह्माके स्वभावकी परीक्षा के लिये ब्रह्माके प्रणाम स्तुति कछु भी न करतभये ब्रह्माजी अपने क्रोधपूर्ण प्रज्वलित होयके भृगुके ऊपर क्रोध करतभये ३ श्रीहरिते है जन्म जाको ऐसो ब्रह्मा अपने पुत्रके अर्थ चित्तमें उल्यो जो क्रोध है ताथ आपुही शान्त करतभये जैसे अपने कारण जलसूं अग्नि शान्त होईहै ऐसे ४ वहा से भृगुजी कैलास पर्वतपर शिवजी भय्या जा भृगुहैं ताथ उठिके मिलि-वे कू भीति करिके आरम्भ करतभये ५ भृगुजी महादेवजी सूं मिलिवे की इच्छा न करतभये क्यों कि तू अंगलहैं तोयूं न मिलूंगो यह सुनिके महादेवजी बड़ा क्रोध करिके लाल नेत्र करिके हाथ में त्रिशूल छेकै मारिवे को प्रारम्भ करतभये ६ ता समय पार्वती महादेवजी के पावनमें परिके कहति भई कि हे महाराज ! आपको आताहैं याकू कैसे मारोही ऐसी वाणी करिके शान्त कराति

प्रेयामामुः सोऽभ्यगाद्ब्रह्मणःसभाय २ नतस्मैग्रहणंस्तोत्रं चक्रेसत्परिक्षया ॥ तस्मैशुक्रोभगवान् प्रज्वलन्स्वेनेतेजसा ३ सआत्मन्युत्थितंमन्युमा

त्मजायात्मनाप्रभुः॥ अशीशामद्यथावह्निं स्वयोन्यावारिण।ऽऽत्प्रभूः ४ ततःकैलासमगमतसंतदेवोमहेश्वरः॥ परिब्धुंसमरेभउत्थायभ्रातरंसुदा ५ नैव्य

त्वमस्युत्पथगइतिदेवश्रुकोपह।शूलमुद्यम्यतंहन्तुमारैभेतिगलोचनः ६ पतित्वापादयोर्देवी सान्त्वयामासतंगिरा॥ अथोजगामैवैकुण्ठं यत्रेदेवोजनार्दनः

७ शयानांश्रयउत्तमङ्गं पदावक्षस्यताडयत्॥ ततउत्थायभगवान् सहलक्ष्म्यासतांगतिः ८ स्वतल्पादवस्थाय ननामशिरसामुनिम् ॥ आहतेऽरागतंब्रह्मन्

निपीदान्नाऽऽसनेक्षणम् ॥ अजानतामागतान्वः क्षन्तुमर्हथनःप्रभो ९ अतीवकोमलोत्तात चरणौतेमहामुने ॥ इत्युक्त्वाविप्रचरणौ मर्दयन्स्वेनपाणिना

१० पुनीहिसहलो कंभां लोकपालांश्चमदगतान् ॥ पादोदकेनभ्रतस्नर्थानांतीर्थकारिणा ११ अद्याहंभगवैल्लक्ष्म्याआसमेकान्तभाजनम् ॥ वत्स्यत्युर

क्षिमेभूतिर्भवत्पादहतांहसः १२ श्रीशुक्रउवाच ॥ एवंब्रुवाणैवैकुण्ठेभृगुस्ननमन्द्रयागिरा ॥ निर्वृतस्तर्पितस्तूष्णीं भक्त्युत्कृष्टोऽश्रुलोचनः १३ पुनश्चसत्र

भई ताके पीछे भृगु वैकुण्ठमें जातभये जहा जनाईन भगवान् वास करेहैं ७ लक्ष्मीकी गोदमें सोवैं जो विष्णु हैं तिनके हृदयमें पांवकी लात मारतभयो तदनन्तर साधुनकी गति जे विष्णु है ने लक्ष्मीमाहित पलंगपर ते उठिके पृथ्वीमें मस्तक धरिके भृगुजी कूं प्रणाम करतभये ८ और कहतभये कि हे ब्रह्मन् ! तुप भलेथाये नेक आसनपर बैठिजावो हे समर्थ ! आपके आयवेकू नहीं जानैं जे हम तिनके अपराधकूं क्षमाकरो ९ हे तात ! हे महामुनि ! तुम्हारे चरण कोमल हैं और मेरी छाती कटोर है तुम्हारे चरणमें चोट लगी होगी या मत्तार कहेके अपने हाथ ते ब्राह्मण के चरणनकूं सहारावन लगे १० गगादिक तीर्थनकी पवित्र करनवारो जो तुम्हारो चरणोदक है ताकरिके लो रुन सयेत मोको और धरे भीतरके लोकपालन को पवित्रकरौ ११ हे भगवन् ! श्रव मैं लक्ष्मीके वास करिवे को एकान्त पात्र भयो तुम्हारे चरणस्पर्श ते पाप दूरिभये मेरी छाती में लक्ष्मी वास करे १२ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार नारायण के कहतेहुये

तिनकी मनोहर वाणी करिके तुम होयके भक्ति करिके चाह जिनके आंसू नेत्रनमें आयगये ऐसे भृगुजी सुखी होयके चुप होतभये १३ हे राजन् परीक्षित ! भृगुजी फेरि अपने यज्ञमें आयके वेदके पढ़नवारि मुनिन सूं तीनों की जो बात देखि आयै ताथ सम्पूर्ण कहतभये १४ भृगुकी बात सुनिके आश्चर्ययुक्त भये और सन्देह जिनके दूरिभये ऐसे मुनि हैं ते इतनो अपनो अपराध क्रियो परन्तु क्रोध न आयो विष्णु भगवान्में ही शान्ति है और काहू देवतामें नहीं है याते सबते बड़े विष्णुभगवान् हैं यही निश्चय करतभये १५ साक्षात् धर्म और धर्म के लिये ज्ञान तथा वैराग्य और आठप्रकारके ऐश्वर्य और आत्माके मलनकू दूरि करनवारो यश ये सम्पूर्ण भगवान्के विषयी हैं १६ दूरि भयो है कालको दण्ड जिनते शान्तस्वभाव और समानचित्त जिनके निष्कृञ्चन अर्थान् काहू वस्तुकी जिनके चाहना नहीं ऐसे जे साधु मुनि हैं तिनकू भगवान् प्राप्त होयवे योग्य हैं यह कहै हैं १७ सत्त्वगुण है सो भगवान् को प्यारो रूप है और ब्राह्मण हैं ते भगवान् के इष्ट देवता हैं जिनके ऐसे भगवान् हैं तिनको नहीं है कोई बातकी चाहना जिनके निषुण्ण है बुद्धि जिनकी ऐसे शान्तपुरुष भजन करै हैं १८ तिन भगवान् ने अपनी गुणिनी माया करिके सत्त्वगुणी

मात्रज्य मुनीनांब्रह्मवादिनाम् ॥ स्वानुभूतमशेषेण राजन्भृगुरवर्णयत् १४ तन्निशम्याथमुनयोविस्मितामुक्तसंशयाः ॥ भूयांसंश्रद्धुर्विष्णुं यतःशान्तिर्य

तोऽभयम् १५ धर्मःसाक्षाद्यतोज्ञानं वैराग्यं नतदन्वितम् ॥ ऐश्वर्यं चाष्टधा यसमाद्यश आत्ममलापहम् १६ मुनीनान्यस्तदगडानां शान्तानां समचेतसाश्च ॥

अक्रिञ्चनानां माधूनां यमाहुः परमांगतिम् १७ सत्यं यस्य प्रियामूर्तिं ब्रह्मणा स्तिवष्टदेवताः ॥ भजन्त्यनाशिपः शान्तायं वानिपुणबुद्धयः १८ त्रिविधा कृ

तयस्तस्य राज्ञसा अमुराः सुराः ॥ गुणिन्या मायया सृष्टाः सत्त्वं तत्तीर्थसाधनम् १९ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ एवं सारस्वता विप्रानुणां संशयानुत्तये ॥ पुरुषस्य पदा

भोजसेवया तदगतिगताः २० ॥ मूत उवाच ॥ इत्येतन्मुनितनयास्य पद्मगन्धर्पीयुषं भवभयभित्परस्य पुंसः ॥ सुरलोकं श्रवणपटैः पिवन्त्यभीक्ष्णं पान्थो

ध्वभ्रमणपरिश्रमं जहाति २१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ एकदा द्वा रावत्यां तु विप्रपत्न्याः कुमारकः ॥ जातमात्रो भुवं स्पृष्ट्वा ममारकिलभारत २२ विप्रोगृहीत्वा

मृतकं राजद्वार्युपधाय सः ॥ इदं प्रोवाच विलपन्नातुरो दीनमानसः २३ ब्रह्माद्विषः शठधियो लुब्धस्य विषयात्मनः ॥ क्षत्रवन्धोः कर्मदोषात्पञ्चत्वं मे गतोऽभ

रजोगुणी तमोगुणी तीनप्रकारके राज्ञस असुर और देवता रचे हैं तिनमें सत्त्वगुणीरूप है सोही पुरुषार्थ को हेतु है १९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार सरस्वती के तीर- वासी ब्राह्मण हैं ते मनुष्यन के सन्देह दूरि करिवे के लिये श्रीकृष्ण के चरणारविन्द की सेवा करिके श्रीकृष्णचन्द्रकी ही गतिकू पावतभये २० अब सूतजी कहे हैं हे ऋषीश्वरो ! व्यासेष्टममुनि के पुत्र जे शुकदेवजी हैं तिनके मुखकमलकी सुगन्ध जाँमें मिली ऐसी जो अमृततुल्य संसार के भयको काटनवारो श्रेष्ठपुरुष श्रीकृष्णचन्द्र को सुन्दर यश है ताथ कानरूपी दोनान में भारे दो जो पुरुष पानकरेगो वह संसार के आचामनके परिश्रममूं छूटि जायगो २१ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या चरित्रमें श्रीकृष्णचन्द्र को उत्कर्ष कह्यो अब श्रीकृष्णचन्द्र की ही उत्कर्ष निकसे ऐसी और चरित्र है ताथ वर्णनकरे हैं एक समय द्वारकामें हे राजन् परीक्षित ! एक ब्राह्मणकी स्त्री को पुत्र जन्म होत पृथ्वीको स्पर्श करते ही मरतभयो २२ वह ब्राह्मण मरे पुत्रकूं लैके राजा

उग्रसेन की ब्यादी पै धरिके बिलाप करत आनुर होय दीनपन होयके यह कहत भयो २३ ब्राह्मणन को द्वेपी शठबुद्धि लोभी विपयनमें आसक्त है मन जाको ऐसो जो क्षत्रियनमें अग्रम यद् राजा है ताके कर्मदोष ते भेरो पुत्र मरयो है भेरो कुछ दोष नहीं है २४ हिंसामें है विहार जाको लोटोस्वभाव जाको नहीं जीती है इन्द्रिय जाने ऐसो जो राजा है ताय जे मजा सेवन भरे हैं वे दरिद्री नित्यही दुःखयुक्त रहकर लेशकूं पावे हैं २५ याही प्रकार ब्राह्मणभ्रातृ के निकट ब्राह्मणचन्द्र के निकट ब्राह्मणकी बात अवणकरिके नवम बालक जब भरिबुको तब ब्राह्मण ते बोलत भयो २७ हे ब्राह्मण ! तू काहे के निमित्त भेरे पुत्र मरे हैं २६ काहू एकसमय अर्जुनहैं सो श्रीकृष्णचन्द्र के निकट ब्राह्मणकी बात अवणकरिके नवम बालक जब भरिबुको तब ब्राह्मण ते बोलत भयो २७ हे ब्राह्मण ! तू काहे के निमित्त भेरे पुत्र मरे हैं तेरो स्थान जो द्वारकाहैं तामें धनुषको धारण करनवारो कोई क्षत्रियन में अग्रमहू नहीं है जो ब्राह्मणकी सेवाकरै जैसे यक्षमें ब्राह्मण इबड़े होय बैठे हैं ऐसे ये यादव मिलि बैठे हैं २८ हे भगवन् ! जिन यादवन के जीवत धन स्त्री पुत्र जिनके गये ऐसे ब्राह्मण शोच करै हैं प्रजाके पोषण करनवारो क्षत्रियन के वेपसू अपने प्राणनको पोषण विचारै नटके समान करै हैं २९ हे

कः २४ हिंसाविहारनृपति दुःशीलमजितेन्द्रियम् ॥ प्रजाभजन्यःसीदन्तिदरिद्रानित्यदुःखिताः २५ एवंद्वितीयंविप्रिर्पिस्तृतीयंत्वमेवच ॥ विमृज्यसन्तुप  
द्वारि तांगार्थासमगायत २६ तामर्जुनउपश्रुत्य कर्हिचिरेकेशवान्तिके ॥ परेतेनवमेबाले ब्राह्मणंसमभाषत २७ किंस्विदब्रह्मंस्वन्निवासे इहनास्तिध  
नुर्धः ॥ राजन्यबन्धुरेतेवै ब्राह्मणाःसन्नमासते २८ धनदारात्सजापृक्कायत्रशोचन्तिब्राह्मणाः ॥ तैवैराजन्यवेपेण नराजीवन्यसुभराः २९ अहंप्र  
जांवांगवन्क्षिप्येदीनयोरिह ॥ अनिस्तीर्णप्रतिज्ञोऽग्निं प्रवेक्ष्येहतकल्मषः ३० ब्राह्मणउवाच ॥ संकर्षणोवासुदेवःप्रद्युम्नोधनिवनांवरः ॥ अनिरुद्धोऽप्रति  
रथोनत्रातुंशकुत्रान्ति यत् ३१ तत्कथंनुभवान्कर्मदुष्करंजगदीश्वरैः ॥ चिकीर्षित्वंवालिश्यात्तन्नश्रद्धंमहेवयम् ३२ ॥ अर्जुनउवाच ॥ नाहंसंकर्षणोब्रह्म  
न् नकृष्णःकार्ष्णिरेवच ॥ अहंवाअर्जुनोनामगाएहीवयस्यवैधनुः ३३ मावमंस्थाममब्रह्मन् वीर्य्यंयम्वक्तोषणम् ॥ मृत्युंविजित्यप्रधने आनेष्येतेप्रजां  
प्रभो ३४ एवंविश्रम्भितोविप्रः फाल्गुनेनपरंतप ॥ जगामस्वगृहंप्रीतःपार्थवीर्य्यनिशामयन् ३५ प्रसूतिकालआसन्ने भार्यायाद्विजसत्तमः ॥ पाहिपाहि

ब्राह्मण ! दीन जो तुमहौ तिनके पुत्रनकी मैं रत्ना कलंगो और जो मोपै रत्नान होयगी अर्थात् मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण न होयगी तो ब्राह्मण की प्रीति करे विना नहीं गये हैं पाप जाके ऐसो मैं अग्नि में ज-  
रूंगो ३० अब ब्राह्मण कहे हैं सङ्कर्षण वासुदेव और धनुर्दारीन मैं श्रेष्ठ प्रद्युम्नजी तथा जाकी वरावरिको योद्धा कोई नहीं ऐसो अनिरुद्ध ये सब भेरे बालककी रत्ना करिवे कूं जो समर्थ न होत  
भये ३१ तो जगत् के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जा कर्म कूं न करिसके वा कर्मकूं तू अर्जुन कैसे करिसकेगो तू अज्ञानते करयो चाहे हैं यह ह्म निश्चय नहीं माने हैं ३२ अब अर्जुन कहे हैं  
के हे ब्राह्मण ! तैंने वैन कायरन के नाम भेरे सम्मुख लिये मैं संकर्षण नहीं हूं कृष्ण नहीं हूं कृष्णको पुत्र प्रद्युम्न नहीं हूं गाएडीव है धनुष जाको ऐसो अर्जुन नामी क्षत्रिय हूं ३३ हे ब्राह्मण ! तू मेरो  
अपमान मतिकरे गहादेवको भसव करनवारो भेरो पराक्रम है हे समर्थ ब्राह्मण ! संग्राम विप्रे मृत्युकूं जीतिके तेरे पुत्र लायके देउँगो ३४ हे शत्रुन के तापके दूरि करनवारो राजा परीक्षित ! या प्र-



कार धृष्टता के वचन करिके विश्वास जाकू दियो ऐसो जो ब्राह्मण है सो अर्जुनके पराक्रमकू श्रवण करिके प्रसन्न होय अपने घरकू आवत भयो ३५ जब स्त्रीकू प्रसूतिकाल को समय आयो तब ब्राह्मण है सो मृत्यु ते पुत्र की रक्षा कर रक्षा कर या प्रकार यांवार आतुर होय अर्जुन ते कहत भयो ३६ ता समय अर्जुन पवित्र जल को स्पर्श करिके शिवजीकू नमस्कार करिके दिव्यशस्त्रन को स्पर्श करिके प्रत्यंचाचढ़ाय माण्डवीधनुषकू हाथमें लेत भयो ३७ अनेक अस्त्रनमें मिलाये जे बाण है तिन करिके सो घरके धरको आच्छादित करत भयो निरखे बाण चलाये ऊपरकू चलाये नीचेकू चलाय के घरके ऊपर बाणन को अर्जुन पंजरा सों करत भयो ३८ तापीछे ब्राह्मण की स्त्री के जन्मयो जो बालक है सो बारवार रोदन करिके शीघ्र ही शरीर सहित आकाशमार्ग होयके जात भयो और बेर देह परयो रहे हो अवकी देह भी न रह्यो ३९ ता समय ब्राह्मण श्रीकृष्णचन्द्रके निश्चय ही अर्जुन की निन्दा करत यह कहत भयो मेरी मूढ़ता देखो जा मैंने या नपुंसक अर्जुन को कछो सत्य मान्यो ४० प्रहस्रजी और अनिरुद्ध तथा बलदेवजी और श्रीकृष्णचन्द्र ये सम्पूर्ण मिलिके जाकी रक्षा न करिसे ते जाकी रक्षा करिवेकू और कौन समर्थ है ४१ मिथ्यावादी जो अर्जुन है ताय धिक्कार है खोटा है बुद्धि मंजां मृत्योरित्याहारुन मतानुरः ३६ स उपस्पृश्य शुभ्यम्भोन मस्कृत्य महेश्वरम् ॥ दिव्यान्यस्त्राणि संस्पृश्य सज्यं गार्हो वमाददे ३७ न्यरुणत्सूतिकागारं शरैर्नानाऽन्नयो जितैः ॥ तिर्यगूर्ध्वमथः पार्थश्चकार शरपञ्चमम् ३८ ततः कुमारः संजानो विपत्त्या रुदन्मुहुः ॥ सद्योऽदर्शनमापेदे सशरीरो विहायसा ३९ तदाह विशो विजयं विनिन्दन् कृष्णमन्त्रिणौ ॥ मौल्यं पश्य न मेयोऽहं श्रद्धेर्हो वक्तव्यम् ४० न प्रद्युम्नो नानिरुद्धो न रामो न चकेशवः ॥ यस्य शोको परित्रातुं कोऽन्यस्तद्विनेश्वरः ४१ धिगर्ज्जनं मृपावादिं गतात्मश्लाघिनो धनुः ॥ दैवोपमुष्टयो मौढ्यादानि नीपति दुर्भतिः ४२ एवं शपति विप्रपौ विद्यामास्थाय फाल्गुनः ॥ ययौ संयमनीमाशु यत्राऽऽस्ते भगवान् ४३ विप्रापत्य मचक्ष्माणस्तत ऐन्द्रीमगात्पुरीम् ॥ आग्नेयानैर्ऋतौ सौम्यावायव्यां वारुणीमथ ॥ रसातलं नाकपृष्ठं धिष्ण्यान्यन्यान्पुदायुधः ४४ ततोऽतज्ज्वलद्दिग्गमुनो ह्यनिस्तीर्णप्रतिश्रुतः ॥ अग्निं विविधैः कृष्णेन मृत्युक्लः प्रतिपेधता ४५ दर्शयेद्विजमूनं स्रेमाऽवज्ञाऽऽत्मनमात्मना ॥ येनेहिकीर्त्तिं निमलां मनुष्याः स्थापयिष्यन्ति ४६ इति संभाष्य भगवान् अर्जुनेन सहेश्वरः ॥ दिठ्यं रथमास्थाय पतीर्त्तौ दिशमाविशत् ४७ सप्त जाभी ऐसो यह अर्जुन है सो दैवने हरयो जो बालक ताय मूढ़ता रू लायो चो है ४२ या प्रकार जब ब्राह्मणने खोटो वचन कछो तब अर्जुन विद्याकू गारण करिके जहा कि भगवान् यम विराजे है वा संयमनीपुरी को शीघ्र जात भयो ४३ तहा यमराज की पुरी में पुत्र कू न देख्यो तब वहां ते अर्जुन इन्द्र की पुरी में जात भयो फेरि अग्नि की पुरी में जात भयो निर्यतिकी पुरी में जात भयो कुता पीछे नहीं पिययो है ब्राह्मण को पुत्र जा कृ याते अष्ट भई प्रतिता पाकी अग्नि में धसिये की इच्छा करे ऐसे अर्जुनकू श्रीकृष्णचन्द्र नाहीं करत भये ४५ ब्राह्मणके पुत्रकू मैं लाय देउंगो तू अग्नि में जरे मति तुम लाइ देउंगे तो मोकू कहा तहा श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं कि जे निन्दा करेगे तेही मनुष्य हमारो यश भी कहेगे अर्जुनके रथवान् श्रीकृष्ण जे ब्राह्मण के पुत्र लाय दिये महाराज अर्जुन

लाय दे तो यामें कथा सन्देह है ४६ समर्थ जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो या प्रकार कहिके अर्जुनकूं सङ्ग लैके अलौकिक जो अपनी रथ है तामें चद्रिकै पवित्रमदिशकूं जात भये ४७ सात सातहें पर्वत जिनमें ऐसे जे सात द्वीप हैं तिनैं उल्लंघन करिके तथा सात समुद्रनकूं और लोकालोकपर्वतकूं उल्लंघन करिके वढो जो अन्यकार है तामें धसतभये ४८ हे भरतवंशीन में श्रेष्ठ राजा परीक्षित ! ता अन्यकार में शैव्य सुग्रीव मेघपुष्प बलाहक ये हैं नाम जिनके ऐसे रथके घोड़ानकी गति शिथिल होति भई ४९ महाभोगेश्वरनके ईश्वर जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते घोड़ानकी शिथिल गतिकूं देखिके हजार सूर्यको है तेजजामें ऐसो आपनो सुदर्शन चक्र है ता रथके आगे चलिवेकी आज्ञा देतभये ५० अतिवीर सयन मकृतिको परिणामरूप जो वढो अन्यकार है ता य आपनी उत्कृष्ट कान्ति करिके विदीर्ण करत मनकी तुल्य है वेग जाको ऐसो सुदर्शनचक्र है सो जैसे प्रत्यक्षा ते छूटिके रामचन्द्रको बाण सेनामें प्रवेश करे है ऐसे प्रवेश करत भयो ५१ चक्रके पीछे जो गमन है ता करिके वा अन्यकार ते परे वर्तमान ऐसो श्रेष्ठ व्यास जो भगवान् को प्रकाशरूप है ता देखिके चक्रचोपी जाकी आखिन कु लगी ऐसो अर्जुन दोनों नेत्रनकूं मंदत भयो ५२ ता पीछे बड़ी पवन

द्वीपान्सप्तसिन्धून्सप्तसप्तगिरीनथ ॥ लोकालोकंतथास्तीत्यविवेशसुमहत्तमः ४८ तत्राश्वाः शैव्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकाः ॥ तमसिअग्रगतयोवभूवर्भे रत्तर्पभ ४९ तानृद्व्याभगवान्कृष्णोमहायोगेश्वरेश्वरः ॥ सहस्रादित्यसङ्काशंस्वचक्रं प्राहिणोत्पुः ५० तमः सुधोरंगहनंकृतं महद्विदारयद्भ्रितरेणरोचिपा ॥ मनोजवंतिर्विशेषमुदर्शनं गुणच्युनोरामशरोयथाचमूः ५१ द्वारेण चक्रानुपथेनतत्तमः परमपंड्योतिरनन्तपारम् ॥ समश्नुवानंप्रसमीक्ष्यफाल्गुनः प्रताडिनास्त्रोऽपिदधेऽक्षिणीउभे ५२ ततः प्रविष्टः मलिनभस्वनावलीयसैजद्वृद्धदृग्भिभूषणम् ॥ तत्राद्भुतैवैभवनेद्युपत्तमं भ्राजन्मणिस्तम्भमहस्रशोभितम् ५३ तस्मिन्महाभीममनन्तमद्भुतं सहस्रमूर्द्धन्यफणामणिद्विभिः ॥ विभ्राजमानंद्विगुणोत्वणेक्षणं सिताचलांभशितिकशजिह्वम् ५४ ददर्शतद्भोगसुवासनीं च भुं महानुभावं पुरुषोत्तमोत्तमम् ॥ सान्द्राम्बुदाभं मुपिशङ्गवासं प्रसन्नचक्रं रुचिरायतेक्षणम् ५५ महामणित्रातकिरीटकुण्डलप्रभापरिक्षिप्तसहस्रकुन्तलम् ॥ प्रलम्बचार्वाष्टमुजंसकौस्तुभं श्रीवत्सलक्ष्म्यावनमालयावृतम् ५६ सुनन्दनन्दप्रमुखैस्त्रयार्षदैश्चक्रादिभिर्मूर्ध्निधैर्निजायुधैः ॥ पुष्ट्याश्रियाकीर्त्यजयाऽखिल

जो चली तामूं उड़ी जे लहरैं तिनसूं शोभायमान जो जल है तामें वह रथ जात भयो ता जलमें प्रकाशमान वस्तु हैं तिनमें श्रेष्ठ और देदीप्यमान ऐसे हजारन मणिनके स्वभ लगे हैं तिनसूं शोभायमान जो अद्भुत भवन है ता देखत भये ५२ ता भवन में बढो है देह जाको अद्भुत सहस्रमस्तकनमें जे मणि तिनकी कान्ति करिके प्रकाशमान दो हजार नेत्रन करिके शोभायमान स्फटिक मणिके पर्वतकी तुल्य है कान्ति जाकी और नीली श्वेत हैं जिहा जाकी ऐसे शेषनाग कूं अर्जुन देखत भयो ५४ ता शेषनाग को देह है सुखदायक आसन जिनके वढो प्रभाव जिनके ऐसे पुरुषन में जो उत्तम तिनके उत्तम जो भूपा पुरुष हैं तिनैं अर्जुन देखत भये कैसे भूपा पुरुष हैं वर्षाऊ मेघकी तुल्य है कान्ति जिनकी सुन्दर पीतवस्त्रन कूं धारण करे प्रसन्न है मुल जिनको मनोहर वड़े हैं नेत्र जिनके ५५ वर्दी मणि जिनमें जड़ी ऐसे जे किरीट और कुण्डल तिनकी कान्ति करिके शोभायमान हैं केश जिनके लम्बी सुन्दर हैं आठ भुजा जिनकी कौस्तुभमणि कूं धारण करे मृगुलताको

है ताके उत्सव करिके प्रकाशमान हैं मुख जिनके ऐसी शोभायमान होतीभई ?० तिन स्त्रीनके स्तनन को लग्यो है केसर मालामें जिनके और खेलमें जो आसक्त हैं तामूं कस्यायमानहैं शिरको जुड़ो जिनको और स्त्रीनने वारंवार छिरके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र आप स्त्रीनकूं छोड़ा देते और स्त्रियन सूं सोचे जाकर जैसे हथिनीन के सन्न हाथी रमणकरे ऐमे स्त्रीनके सन्न रमण करतभये ? नट है तिनकूं और नाचनवारीन कूं गीत गायके तथा बाजे वजाय के जीतिका करे तिनकूं श्रीकृष्णचन्द्र और उनहीं स्त्री हैं ते क्रीड़ा करिके अलङ्कार और मल्ल ये देतभये ?२ या प्रकार विहारनरे जे श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनकी चलनि बोलनि देखनि मुसिकानि और हास्यकी वार्त्ता क्रीड़ा आलङ्कन इनकारिके निरवय स्त्रीनकी बुद्धि हरिगई है ?३ मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र में हैं एक बुद्ध जिनकी ऐसी स्त्री हैं ते प्रथम चुपहोयके फेरि श्रीकृष्णचन्द्र को व्यान करत उन्मत्त होयके जड़की तुल्य होयके जे वचन कहति भई तिन वचनन कूं में कहूं सुनो ?४ श्रीकृष्णचन्द्र के भेष नरिके स्त्रीनकी यह दशा होयगई मानों हमारे पास ते प्यारो दूरिगयोहै याते मतबारेकी तुल्य वार्त्ता कहनेलगो है दया दीहरी ! तोकूं नहिं नहीं आवैहै विलाप करे है सोये नहीं हैं संसारमें छिप्यो है ज्ञान जिनको

नो रेमे करेणु भिरिवेमपतिः परीतः ११ नटानान्तं क्रीनां वगीतवाद्योपजीविनाम् ॥ क्रीडाऽलङ्कारवासांसि कृष्णोऽदात्तस्य च स्त्रियः १२ कृष्णस्यैवं विहरतो गत्यालापो क्षितस्मिन् ॥ नर्मक्षेत्रे लिपिष्वङ्गैः स्त्रीणां किलहृताधियः १३ ऊर्जुर्मुकुन्दे कधियोगिरुन्मत्तवज्जडम् ॥ चिन्तयन्त्योऽरविन्दक्षं तानि मे गदतः शृणु १४ ॥ महिष्य ऊचुः ॥ कुररि विलपसित्वं वीतनिदानशेषे स्त्रपितिजगतिराज्यामीश्वरोगुप्तबोधः ॥ वयमिव सखि कच्चिद्वाहनिर्भिन्नचेतानलिननयनहासो दारलीलक्षितेन १५ नेत्रे निमीलयसिनक्लमदृष्टवन्धुस्त्वं रोषीपिकरणं वनचक्रवाकि ॥ दास्यंगता वयमिवाच्युतपादजुष्टां किंवा खजं स्पृहयसे कशेरुणवोडुस्य १६ भो भोः सदानिष्टनसे उदनन्नलब्धनिद्रोऽधगतप्रजागरः ॥ किंवा मुकुन्दापहनातगलाञ्छनः प्रासादं शतं चगतोऽदृश्ययाम् १७ त्वं यक्षमण्यवलवताऽसि गृहीत इन्दोक्षीणस्तमो न निजदीधितिभिः क्षिणोऽपि ॥ कचिन्मुकुन्दगदिनानियथा वयं त्वं विस्मृत्य भोः स्थगितगीरुपलक्ष्यसेनः १८ न किंत्वा चरितमस्माभिर्मल

ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र रात्रिमें सोवैहैं तू बोलिके सोचन नहीं देखै यह तोकूं उचित नहींहै यह कहैहै सखी ! कहा हमारीसी नाई कपलनेत्र श्रीकृष्णचन्द्रकी हास उदार लीलापूर्वक चितवनिमूं तेरो चित अधिगयोहै याही ते पुकारैहै ? ५ हेचकरी ! तेरेनेन नहींलगेहैं रात्रिमें नहीं देख्योहै अपनो पतिजोने अर्थात् विचुर गयोहै पति जाको ऐसी तू करुणा जामें उपनै ऐसे रोदन करेहै बड़ो खेदहै अथवा दारयभावमें प्राप्त भई जे हम हैं तिनही तुल्य श्रीकृष्णचन्द्रके चरण ही प्रमादी जो मालाई ताय अपनी चोटीयै चढायोपकी इन्काकरेहै याही ते रोने है ? ६ हे समुद्र ! नहीं प्राप्तभई है निद्रा जाके नित्य जागरण करत सदा पुकारे जो तू है अथवा हमारीसी दूरत्यय दशा तेरी भी है जैसे भोग करिके मुकुन्दने हमारे कुचनकी केसर लीनीहै ऐसे तोहूं भी माथिकै लक्ष्मी पौस्तुभमणि ये निकसिलीनां है ऐसो हमकूं दिखाई देखै ? ७ हे चन्द्रमा ! तोहूं बलिष्ठ जो चयीको रोगहै ताने ग्रहण करिलियो है याही ते तू चीणताकूं प्राप्तभयो है अपनी किरणन करिके अन्धकार कूं नहीं दूरि करेहै हमारीसी नाई मुकुन्दकी रहस्यवार्त्तानकूं भूलिके ताही चिन्ताके मारे चीण होयगयोहै अर्थात् यकीहै वाणी जाकी ऐसो हमकूं दिखाईदेयहै ? ८ हेमलयाचलकी पवन ! हमने तेरो कहा अप्रियकरेहै जो तू गोविन्द

के अङ्ग कटाक्षसूँ भिदेभये हमारे हृदय में कामदेवकूँ प्रेरणकरे है १६ हे मेघ ! हे श्रीमन् ! यादवनके इन्द्र जे श्रीकृष्णचन्द्र है तिनको तू निरचय प्यारो मित्र है याहीते प्रेमकरि के वंशो जो तूहें सो भृगुलता को है चिह्न जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको हमारी नाई ध्यानकरे है वही है चाहना जाके पेरो आइहृदय जो तूहें सो अपने मित्र श्रीकृष्णचन्द्रको स्मरण करि के बारंवार हमारी तुल्य मानो आमुनकी धारा बहावे है परन्तु ताको प्रसंग दुःखदायी है २० शोभायमान है कण्ठ जाको ऐसी है कोकिल ! अमृतकूँ निवात्रे ऐसी कोमलवाणी करि के प्यारी यात कूँ कहें ऐमे जे श्रीकृष्णचन्द्र है तिनके तू वचनकूँ भेहे अव तेरो मैं कहा प्रिय करूँ तू मोते कह २१ हे उदारबुद्धे ! हे पर्वत ! तू चलेभी नहीं है औरबोलेभी नहीं है वड़े अर्थकी चिन्ताकरे है जैसे वसुदेवतन्दनके चरणनकूँ हम अपने स्तननसूँ प्रियेकी चाहना करे है ऐसे तूभी अपने शिखरनसूँ धरिवेकी इच्छाकरे है जो धरैगो तो हमारीसी दशा तेरीभी होगी २२ हे समुद्रकी पत्नी नदियो ! अत्र ग्रीष्मस्तुर्मे समुद्र मेघनके द्वारा अमृतकी धारा वर्षायके तुम्हें नहीं आनन्ददे है वड़ो कष्ट है याहीते तुम्हारे हृद सुखि के छटिगईहौ कमलनकी शोभाऊ जाति रही है जैसे वाङ्मिज पति यदुपति श्रीकृष्णचन्द्रकी स्नेह भरी चिनबनिके परे बिना हमारे हृदय चुरायेगये यानिलतेऽप्रियम् ॥ गोविन्दापाङ्गनिभिन्ने हृदीरयसिनःस्मरम् १६ मेघश्रीमंस्त्वमसिदमितोयादेवन्दस्यनूनं श्रीवत्सङ्कवयमिवभवान्चयायतिप्रमवद्धः ॥ अत्युत्कण्ठशवलहृदयोस्मद्विधोवाष्पधाराः स्मृत्वास्मृत्वाविमृजसिमुहुःखदस्तत्प्रसङ्गः २० प्रियरावपदानिभापसेऽमृतसञ्जीविकयाऽनयागिरा ॥ क रवाणिकिमद्यतेप्रियंवदमेवलिगतकण्ठकोकिल २१ नचलसिनवदस्युदारबुद्धे क्षितिधरचिन्तयसेमहान्तमर्थम् ॥ अपिवतवसुदेवनन्दनाङ्गिवयमिवकाम यसेस्तनैर्विधर्तुम् २२ शुष्यद्भद्राःकरशितावतसिन्धुपत्न्यःसम्प्रत्यपास्तकमलश्रियइष्टभर्तुः ॥ यद्भद्रयंयदुपतेःप्रणयावलीकमप्राप्यमुष्टहृदयाःपुरुकशिताः स्म २३ हंसस्वागतमास्यतांविषययोबूह्यङ्गशौरेःकथां दूतं त्वानुविदामकच्चिदजितःस्वस्त्यास्तउक्तपुरा ॥ किवानश्चलसौहृदःस्मरतिनक्तंस्माद्भजामेवंगक्षो द्रालापयकामदंश्रियमृतेसैवैकनिष्ठास्त्रियाम् २४ इतीदृशेनभावेन कृष्णयोगेश्वरेश्वरे ॥ क्रियमाणेनमाधव्योलोभिरेपरमाङ्गतिम् २५ श्रुतमात्रोऽपियःस्त्री हम लटी है ऐसे २३ तासमय दैवयोग सूँ आयो जो इस ताकूँ दूत मानिकेँ कहे हैं हे हंस ! तू भूल्यो आयो बैठ दूध पीले हे मिन ! श्रीकृष्णचन्द्रकी कथा कह हण तोरूँ वाको दूत जानें हैं कहा श्री कृष्णचन्द्र कुशलसूँ हैं चलायमान है स्नेह जाको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रने एकान्तमें जो हमसूँ वक्षो ताको कभऊँ स्मरणकरे हैं जो वक्षो कि स्मरण करिकेही हमकूँ पठायो है तापर कहे हैं हे तपस्वी के दूत हंस ! हम किस हेतु वाको भजें जो कहो कि कामके अर्थ बुलावें हैं तो उन्हीं को लक्ष्मी को लक्ष्मी तो केवल कृष्णकेही आश्रित है ताको वखो जे केसे आ- वगे तापर वहे हैं कि स्त्रीन में कहा लक्ष्मीही एक कृष्णके आश्रित है हम सबभी तो वादी के आश्रित है २४ योगेश्वरन के ईश्वर जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनमें ऐमे भाव करिके श्रीकृष्णचन्द्र की स्त्री हैं ते वैष्णव की गतिकूँ पावति भई २५ बहुत से गीतन करिके बहुत प्रकार गाये ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो श्रवण करते स्त्रीन के मन कूँ जोरावरी हरि लेइ हैं और देसनवारी स्त्रीनके मनकूँ

हरे धामों के कहा कहनो है २६ जगत् के गुरु जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं जे स्त्री हमारो पति है ऐसी बुद्धिकरि प्रेपपूर्वक चरण सेवा ते आदि लेके यथोचित सेवा करति भई तिन स्त्रीनको तप राजा तेरे आगे कहा वर्णन करूं २७ याप्रकार साधुनकी गति जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो वेदविहित धर्म को अनुष्ठान करिके घरमें रहिके धर्म अर्थ विषय यामकार सेवन होत हैं ऐसे संसारी पुरुषन के चारंगार दिखावत भये २८ युद्धस्थन को उत्कृष्ट जो धर्म है ताय करे ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके सोलह हजार एकसौ आठ रानी होति भई २९ तिन स्त्रीनमें रत्न की तुल्य जे सोलह हजार एकसौ आठ रानी हैं तिनमें रुक्मिणी ते आदि लैके जे आठ रानी पहले कही और हे राजन् ! तिनके पुत्र भी अनुक्रमपूर्वक कहे ३० नहीं पूमाण करिवे में आवै है गति जिनकी ऐमे ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो जितनी अपनी भार्यारहीं तिनमें एक एक भार्या में दश दश पुत्रन कुं उत्पन्न करत भये ३१ वडो है पराक्रम जिनको ऐसे अठारह महारथी होत भये

एां प्रसह्याऽऽकपते मनः ॥ उरुगायोरुगीतो वा पश्यन्तीनां कुतः पुनः २६ याः संपर्ष्य चरन् प्रेम्णा पादसंवाहनादिभिः ॥ जगद्गुरुं भर्तुं बुद्ध्या तासां किं वर्यते तपः २७ एवं वेदोदितं धर्ममनुतिष्ठन् सतांगतिः ॥ गृहं धर्मार्थकामानां सुहृद्वादर्शयत्पदम् २८ आस्थितस्य परं धर्मं कृष्णस्य गृहे मेधिनाम् ॥ आसन्नपो दशमाहस्त्रं महिष्यश्च शताधिकम् २९ तासां स्त्रीरत्नभूतानामष्टौ याः प्रागुदाहृताः ॥ रुक्मिणी प्रमुखाराजंस्तत्पुत्राश्चानुपूर्वशः ३० एकैकस्यां दशदशकृष्णोऽजी जनदारमजान् ॥ यावत्त्यज्यात्मानो भार्या असौ घगतिरीश्वरः ३१ तेषामुदायवीर्याणामष्टादशमहाराथाः ॥ आसद्युदारयशसस्ते पांनानामनिभशृणु ३२ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च दीप्तिमान् च भानुरेगच ॥ साम्बो मधुर्वहद्भुनिश्चित्रभानुर्वहद्भुः ३३ पुष्करो वेदवाहुश्च श्रुते देवः सुनन्दनः ॥ चित्रवाहुर्विरूपश्च क्रविर्नर्म्यो घण्वच ३४ एते पामपिराजेन्द्र तनुजानां मधुद्विपः ॥ प्रद्युम्न आसीत् प्रथमः पितृवद्विक्मिणी सुतः ३५ सरुक्मिणे दुहितरमुपये मे महारथः ॥ तस्मात्सुतोऽनिरुद्धोऽभूत् प्रागायुतवत्तान्वितः ३६ स चापिरुक्मिणः पौर्त्वी दौहित्रो जगृहेततः ॥ वज्रस्तस्याभवद्यस्तु गौसलादवशेषिनः ३७ प्रतिवाहुर्भूतस्मात्सुवाहुस्तस्य चाऽऽत्मजः ॥ सुवाहोऽशान्तसेनोऽभूच्च न सेनस्तुतस्तुतः ३८ न ह्येतस्मिन्कुले जाता अधना अवहृन्मजाः ॥ अल्पायुपोऽल्पवीर्याश्च अवहृन्मयाश्च

तिनके नामनकुं हे राजन् ! मोते श्रवण करौ ३२ प्रद्युम्न अनिरुद्ध दीप्तिमान् भानु साम्ब मधु बुद्धवानु चित्रभानु श्रुते देव सुनन्दन चित्रवाहु विरूप कवि न्यग्रोध ३४ हे राजानके इन्द्र राजन् परीक्षित ! मधुदैत्य के मारनगारे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके सच पुननमें रुक्मिणीके पुत्र जे प्रथम प्रद्युम्नजी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र की तुल्य गुणनमें होत भये ३५ महारथी मधुम्न रुक्मिणीकी पुत्री कुं विवाहत भये तिन प्रद्युम्नजी ते रुक्मिणीकी पुत्रीमें दश हजार दायीकी हैं वल जामें ऐसी अनिरुद्ध पुत्र होत भयो ३६ अनिरुद्ध है सो रुक्मिणीकी पोती रोचना कुं विवाहत भये ता रोचनामें अनिरुद्धके वज्र पुत्र होत भयो जो वज्र प्रभासक्षेत्र के मुसल तें बाकी रखौ ३७ ता वज्रके प्रतिवाहु पुत्र भयो सुवाहुके शान्तसेन भयो शान्तसेनके शतसेन

भयो ३२ या यदुकुल में धनहीन पूजाहीन कोई नहीं जन्मतभयो और थोड़ी है आयु जिनके पराक्रम रहित ब्राह्मणन की भक्तिहीन ऐसी कोई नहीं उत्पन्न होत भयो ३६ हे राजन् परीक्षित ! यदुवंश में जन्मे विख्यात हैं कर्म जिनके ऐसे पुरुषनकी संख्या दश हजार वर्ष में भी नहीं करने कूं समर्थ होयसके है ४० तीन करोड़ अष्टासी सौ यदुकुलके असंख्य वालकन के पढ़ावनवारे आचार्य्य होतभये यह मैने श्रवण कस्यो है ४१ महात्मा यादवनकी संख्या कौन करिसके है जा कुलमें हजारन के दश हजार तिनके लाख इतने यादवन कूं लैंके द्वारकापुरी में उग्रसेन वास करतभये ४२ देवता असुरन के युद्धमें मरे जे दारुण दैत्य हैं तेही मनुष्यन में उत्पन्न होयके गर्ववन्त होयके प्रजान कूं चावा दैतभये ४३ हे राजन् परीक्षित ! तिन असुरनके दण्डदेवे के लिये हरि जे भगवान् हैं तिनने आज्ञा जिनकूं दीनी ऐसे देवता यदुकुलमें अवतार लेतभये ४४ तिन यादवन की प्रभुतामें भगवानही प्रमाण होतभये तिन श्रीकृष्णचन्द्रके आज्ञानुदर्शी सय यादवन होयके छिड़ कूं प्राप्त होतभये तिनके कुलकी एकसौ एक संख्याहुई ४५ सोइवो और बैठिवो चलिवो तथा वोलियो कीड़ा स्नानादि कर्म करनेमें श्रीकृष्णचन्द्र में हैं चित्त जिनके ऐसे यादवहैं

जह्निरे ३६ यदुवंश समूतानां पुंसां विख्यात कर्मणाम् ॥ संख्यानशक्यते कर्तुं मपि वर्षायुतैर्नृप ४० तिस्रः कोट्यः सहस्राणामष्टाशीतिशतानि च ॥ आसन्न्य दुकुलाचार्याः कुमारानामिति श्रुतम् ४१ संख्यानं यादवानां क्रः करिष्यति महात्मनाम् ॥ यत्रायुतानामयुतलक्षेणस्ते स आहुः ४२ देवासुराहवहनादैनै ययेमुदारुणाः ॥ ते चोत्पन्नामनुष्येषु भजादृसाववाधिरे ४३ तन्निग्रहाय हरिणा भोक्ता देवाय दौःकुले ॥ अवतीर्णाः कुलशतन्ते पामेकाधि कं नृप ४४ तेषां माणं भगवान् प्रभुत्वेनाभवच्छरिः ॥ ये चानुवर्तिनस्तस्य बधुधुः सर्वयादवाः ४५ शय्यासनाटनालापक्रीडास्नानादिकर्मसु ॥ न विदुः सन्तमात्मानं वृणयः कृष्णचेतसाः ४६ तीर्थचक्रे नृपो न्यदजनि यदुपुत्रः स रिपादशौचं विद्विद् स्निग्धाः स्वरूपं ययुरजितपराश्रीर्थ्यदर्थेऽन्ययतः ॥ यन्नामामङ्गलं श्रुतमथ गदि तं यत्कृतो गोत्रधर्मः कृष्णस्यैतन्नचित्रं क्षितिभरहरणं कालचक्रायुधस्य ४७ जयति जननिवासो देवकी जन्मवादो यदुवरपरिषत्सर्वैर्दोर्भिरस्यन्नधर्मम् ॥

ते अपने आत्माकूं नहीं जानतभये ४६ यासूं प्रथम श्रीगङ्गाजी है सोही अधिक तीर्थहो जव यादवनमें श्रीकृष्णचन्द्र को यशरूपी तीर्थ प्रकटभयो तव सूं अपनो चरणोदकरूप जो गङ्गातीर्थहैं ताकूं भी न्यून करत भयो आहुटी समस्त तीर्थन के ऊपर विराजें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रसूं जिन पुरुषनने वर कस्यो और जिनने स्नेह कस्यो वेभी तद्वत् प्राप्तभये देखो जा लक्ष्मी के निमित्त ब्रह्मादिक उपाय करे है काहुकूं प्राप्त भई जो लक्ष्मी है सो भी श्रीकृष्णचन्द्रकी है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को नाम श्रवण करते कथनकरते समस्त पापन को नाशकरे है और जितने ऋषिन के वंशहैं तिनमें धर्म चलायो कालचक्र है हरियार जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रसूं दुष्टनको मारिवो पृथ्वीको बोक उतारियो यह कछु आश्चर्य्य नहीं है ४७ सब जीवनके अन्तर्यामीरूप होयते वसे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सर्वदा उत्कर्षतापूर्वक विराजमानहैं देवकी में जन्मभयो यह कथनमात्र है यादवन में जे उत्तमहैं ते जिनकी सभाके पार्षद हैं इन्का मात्र करिके अधर्म के नाश करिबे में समर्थ हैं तथापि कीड़ा के निमित्त अपनी भुनान ते प्रधर्म कूं दूरि करिके स्यावर जंगम सय जीवन को दुःख जिनने दूरि कस्यो सुन्दर मुसिकानि युक्त जो अपनो श्रीमुराहैं तासूं व्रजकी स्त्री गोपिका और पुर मथुरा



द्वारका की स्त्री हैं तिनके कामदेव वदावत सर्वदा विराजमान रहें ४८ अपने धर्म की रक्षा करिवे के लिये ग्रहण करें हैं मत्स्य कूर्पादिक अवतार जिनने ऐसे यादवन में उत्तम जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके जे रूप धरिने उनके योग्य कर्म करें हैं तिनके श्रवण करिके पुरुष पापकर्म में छूटि जायें ४९ तीनों कालमें बड़ी मुक्ति के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र की शोभायमान कथा को श्रवण

स्थिरचरवृजिनमःमुस्मितश्रीमुखेन ब्रजपुत्रनितामंत्रद्वयन्कामदेवम् ४८ इत्थंपरस्यनिजवर्मरिक्तयात्तलीलातनोस्तदनु रूपविडम्बनानि ॥ कर्मभाणि कर्मकषणानियदूतमस्य श्रूयादमुष्यपदयोऽनुवृत्तिमिच्छन् ४९ मर्यस्तयाऽनुसवमेधितयामुकुन्दश्रीमत्कथाश्रवणकीर्तनचिन्तयैति ॥ तद्धामदुस्तर कृतान्तजवापवर्गग्रामाद्वनक्षितिभुजोऽपिययुर्गदर्याः ५० ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तराद्धेष्टादशसाहस्रवांसंहितायवैयासिक्यांश्री कृष्णचरितानुवर्णनं नामनवतितमोऽध्यायः ६० ॥

श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

कीर्तन विचार करिके पुरुष हैं सो कालकी जायें गति नहीं ऐसो जो भगवान् को धाम है ताय प्राप्त हो रहै यह श्रवण करिके चक्रवर्ती राजा भी अपने राज्य त्यागि के श्रीकृष्णचन्द्र की प्राप्तिके निमित्त ग्रामके बाहर वन में जात भये ५० ॥ इति श्रीमद्यजुर्वेदान्तर्गतमाव्यन्दिनीशास्त्राध्येतुर्देयाग्रपदगोत्रजातश्रीमन्युपतिजयकिशोरदेवात्मजाविश्वामित्रपुराधिपश्रीगिरिमसादवर्माश्यामर्दकीपुरनिवा- ॥

\*

\*

समाप्तश्चायं दशमस्कन्धः अंतस्तत् श्रीगोपीजनबलभार्येणमस्तु अंशान्तिःशान्तिःशान्तिः ॥

मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने लखनऊ में छपा दिसम्बर सन् १९०५ ई० ॥



॥ इति श्रीमद्भागवतं दशमस्कन्ध उत्तराद्धिम् ॥

